Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

otnot on Chennai and

# 1991 Jan-May

CVV118

MALAN

078598

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

028 598

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उ उ जनवरी 1991

7 रुपए

1991 **3** 571**क** 

बगदाद से आंखों देखा हाल

<sup>बगदाद</sup> के निकट एक शिविर में <sup>इ</sup>राकी सैनिकों का प्रशिक्षण dation Chennai and eGangotri

3

होंन

गर्व

आ

घट

नह

# SELECITABLE OF THE STATE OF THE Rothmans KING SIZE



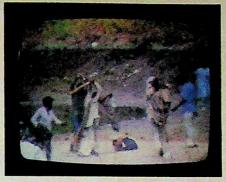
THE BEST TOBACCO MONEY CAN BUY

Made in India under licence by Godfrey Phillips (India) Ltd. Rs.20/- PER PACK

Inclusive of all taxes

Statutory Warning: Cigarette smoking is injurious to health

3 नसर मुझसे पूछा जाता रहा है कि 'इंडिया टुडे' का संपादक होने के नाते मुझ पर मेरी पत्रिका में छुपने वाली सामग्रियों को लेकर काफी बाहरी दबाव पड़ता होगा. और मैं बड़े गर्व से जवाब देता रहा था कि पंद्रह वर्षों से यह पत्रिका चला रहा हूं मगर आज तक मुझे किसी ने यह धमकी नहीं दी कि अगर मैंने उसकी बात न मानी तो नतीजे बुरे हो सकते हैं. मगर अफसोस यह है कि पिछले पखवाड़े की घटनाओं के बाद मैं अब इस तरह का दावा नहीं कर पाऊंगा.



महम कांड पर 'न्यूजट्रैक' की वीडियो फिल्म

पिछले पखवाड़े 'इंडिया टुडे' पर हमला किया गया. और यह कोई पहला हमला नहीं है. लेकिन यह हमला कुछ अलग किस्म का था. पहले के हमलों में तो हर रंग और ढंग के नेता अपने लिखित या जबानी बयानों में हमारी आलोचना करते, हमें गालियां देते रहे. पहले कभी हम पर शारीरिक तौर पर हमला नहीं किया गया था. मगर इस बार खोटे इरादों और बदले की

भावना से नंगा हमला किया गया.

3 जनवरी को हमारे मुद्रक और सहयोगी कंपनी थॉमसन प्रेस की, जो हरियाणा के फरीदाबाद में है, बिजली बेवजह काट दी गई. हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री ओमप्रकाण चौटाला का संरक्षण प्राप्त मजदूर संघ ने थॉमसन प्रेस के कर्मचारियों को आतंकित करने की जो मुहिम चला रखी थी उसकी यह चरम परिणति थी.

वैसे तो प्रेस कर्मचारियों पर हमले जून 1990 से ही शुरू हो गए थे मगर इनमें तेजी पिछले महीने आई जब 15 लोगों को बुरी तरह पीटा गया. यह सच है कि मजदूर संघों की हिंसक राजनीति आज के उद्योग जगत के लिए आम बात हो गई है. मगर 100 से भी कम मजदूरों का कोई गुट अगर 1800 मजदूरों के लोकतांत्रिक रूप से

निर्वाचित संघ को स्थानीय पुलिस व प्रशासन की शह पर गुंडागर्दी के जिरए अपदस्थ करना चाहे, और निशाना उस पत्र या पित्रका के संस्थान से जुड़ी कंपनी को बनाया जाए जो हिरियाणा के शासकों की आलोचना करता रहा हो तो पूरा मामला प्रेस पर हमले, उसे सबक सिखाने की खतरनाक साजिश का बन जाता है

बदले की इस कार्रवाई की वजहें साफ हैं—'इंडिया टुडे' और इसकी वीडियो पत्रिका 'न्यूजट्रैक' ने महम उप-चुनाव में हुई हिसा की आलोचनात्मक खबरें जो दी थी! बल्कि उस हिंसा के सजीव फिल्मांकन के कारण ही चौटाला की मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़नी पड़ी थी.

साफ है कि समाचार जगत के लिए चुनौतियां और मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं. उग्रवादियों की धमकियां तो निंदनीय हैं ही, लोकतंत्र के प्रतिनिधियों की ऐसी साजिशें शर्मनाक और खतरनाक दोनों हैं. सौभाग्य से ऐसी घटनाएं हमारे लोकतंत्र के भटकाव के कुछ उदाहरण भर ही हैं. पिछले पखवाड़े जब हर राजनैतिक दल के नेताओं ने एक स्वर से इन हमलों की निंदा की तो यह तथ्य और स्पष्ट

होकर सामने आया. संसद में हंगामा मचने के बाद सरकार को प्रेस में बिजली फिर जोडनी पड़ी.

जहां तक हमारी अपनी बात है, ऐसे दमन का मुकाबला करने का एक ही उपाय है—निष्पक्ष और निर्भीक होकर प्रकाशन जारी रखना. खुशी की बात यह है कि इस व्यवस्था के भीतर ही सुधार के जो उपकरण हैं वे काम कर रहे हैं क्योंकि ऐसे लोगों की संख्या

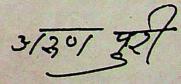
> अच्छी खासी है जो प्रेस की स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं. लेकिन भटकाव जो हैं वे सामान्य बात न बन जाएं इसके लिए निरंतर सतर्कता जरूरी है.



बदहाल है और मुरक्षा व्यवस्था निहायत चौकस. पंजियार के मुताबिक, "इतनी नियंत्रित परिस्थितियों में पहले मैंने कभी काम नहीं किया." लेकिन इन दोनों को वहां की आम जनता में भारतीयों के प्रति काफी सद्भाव दिखा.



बगदाद में शेखर और प्रशांत



#### अगले पन्नों पर

म्मोटी	
बास रपट	7
मुब्रह्मण्यम स्वामी: जनाब शेखचिल्ली	14
भाजपाः दूसरी पीढ़ी की अगुआई	17
आविकार मा दूदता बाध .	20
रियाणाः गला घोटने की कोशिश	24

पंजाब: मुश्किल राह, अहम पड़ाव	26
मध्य प्रदेशः भाजपा की अग्निपरीक्षा	36
आवरण कथा	
इराकः जंग का जुनून	42
विशेष लेख	
बलियाः तकदीर संवरने का इंतजार	58
नए मंत्री: राज की रौनक, और रोना	61

पडताल		
	डकैतियों की बाढ़	74
परवे के उस	पार	94
चर्चित चेहरे	t	98

आवरणः प्रशांत पंजियार



डॉक्टर सुमेधा साहनी एम.बी.बी.एस., एम.डी.

क म क वा म

### क्या गेहूँ, चावल और सिंडजयों में चिकनाई है?

बिल्कुल, कुदरती तौर पर। यह चिकनाई विखाई तो नहीं देती, लेकिन यह प्रोटीन तथा बिटामिनों की तरह हैरिन्वास्थ्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। समस्या तो तब शुरू होती है जब हम खाना पकाते समय तेल तथा चिकनाई का इस्तेमाल अधिक करते हैं।

#### चिकनाई तथा सेहत

राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद के अनुसार भारतीय खाने में हमारे शरीर की असली ज़रूरत के मुकाबले दुगनी या तिगुनी बिकनाई होती है। कारण यही है कि हम खाना पकाने में बहुत खादा तेल इस्तेमाल करते हैं। संस्थान चेतावनी देता है कि ज़्यादा तेल शरीर के लिए खासतौर से हृदय के लिए नक्सानदायक है।

#### इस समस्या से कैसे बचें

जो चिकनाई आपको अनाज, दालों और सिब्ज़यों से अदृश्य रूप में प्राप्त हो रही हैं, बही पर्याप्त है। केवल इतना करें कि जिस तेल या बनस्पित से आप अपना भोजन पकाते हैं उसकी मात्रा माप कर इस्तेमाल करें अर्थात परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए प्रतिदिन केवल दो चम्मच। अधिक तेल या ची का अर्थ है शरीर के लिए कोई न कोई समस्या. भला इस की आवश्यकता ही क्या है। कम तेल से भी बेहद स्वादिष्ट खाना पकाया जा सकता है। इन स्वादिष्ट व्यंजनों को आज्माइए और स्वयं ही देख लीजिए।

# कम तेल

यानि

अधिक

तंदरुस्ती

#### कंडा बटाटा नी सुकी भाजी

भारतीय व्यंजनों के साथ परोसा जा सकने वाला हत्का गुजराती व्यंजन ½ किलो आल् (छिलके सिहत तीन चौथाई उबालें, छील लें और काट लें); ½ किलो कटे हुए प्याज़; ! छोटा चम्मच जीरा; चुटकी भर हींग; एक बड़ा चम्मच तेल; नमक; ½ छोटा चम्मच हत्वी; ½ छोटा चम्मच मिर्च पावडर; ! छोटा चम्मच धीनया पावडर; ½ छोटा चम्मच जीरा पावडर; डेढ नींच का रस

विधि: तेल गर्म करें। ज़ीरा और हींग डाल दें। ज़ीरा चटखना बंद हो जाए तो प्याज़ डाल दें। आंच धीमी कर दें और प्याज हल्के लाल होने तक भूनें। आलू डाल दें। बाकी मसाला भी डाल दें। धीमी औंच पर आलू पूरी तरह तैयार हो जाने तक पकाएं (तीन-चार व्यक्तियों के लिए पर्याप्त)

#### चना दाल

स्वादिष्ट और आसानी से पकाया जा सकने वाला दक्षिण भारतीय व्यंजन।

½ किलो चने की दाल रात भर भिगो कर रखें। 1 छोटा चम्मच हत्दी; 1 बड़ा चम्मच कटी हुई अदरक; 1 बड़ा चम्मच कटी हुई अदरक; 1 बड़ा चम्मच कटा हुआ लहसुन; ½ कप इमली का पानी, नमक तुड़का: 3 छोटे चम्मच तेल; 3 तोड़ी हुई लाल मिचें, 1 बड़ा चम्मच कटी हुई अदरक; 1 बड़ा चम्मच कटा हुई अदरक; च चम्मच जीरा।

विधि: दाल और सारी सामग्री को उपयुक्त पानी डाल कर उबाल लें. पानी उतना ही डालें कि दाल और अन्य सामग्री डूब जाएं। दाल पक जाए लेकिन साबृत रहे. अगर दाल पकने के बाद पानी बच जाए तो गिरा दें। तेल गर्म करें, ज़ीरा डाल दें, जीरा चटखना बंद कर दे तो तुड़के की बाकी सामग्री डाल दें। आधा मिनट हिलाएं और दाल में मिला दें (4-6 व्यक्तियों के लिए पर्याप्त)

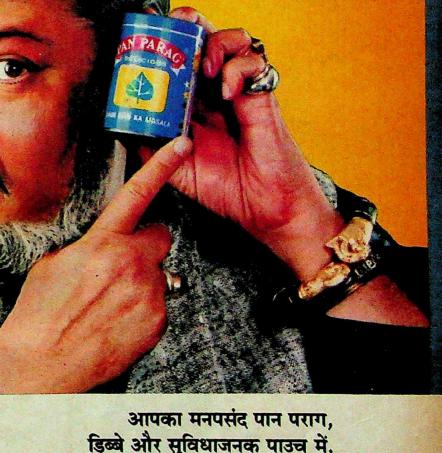
स्वादिष्ट तथा कम तेल युक्त पकवान तैयार करने की विधियां मंगवाने के लिए लिखें, पो.बॉ. नं. 55 नई दिल्ली-110001.

> 66 कम तेल सेहत का साथी सिर्फ़ दो चम्मच हैं काफ़ी ??

विसहनों के बारे में टैक्नालॉजी मिशन द्वारा जन हित में प्रकाशित

ASP-D/TMO/1/HIN/90-

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri CLATIC CONTROL CONTRO



# डिब्बे और सुविधाजनक पाउच में.

अब स्वादिष्ट पान पराग जैसे चाहें वैसे लीजिए. डिब्बे या पॉकेट पाउच में... जहाँ जी चाहे ले जाइए — लुत्फ़ उठाइए. और पसंदीदा पान पराग के साथ ज़िंदगी की मौज-मस्ती का मज़ा लीजिए.



भारत का सब से अधिक बिकने वाला पान मसाला

पान पर भारे पान का मसाली

कोठारी उत्पादन



राम राज छुटत मुद्दा किय

> गया जा भड़ मेंधव

किय सुलः की एक इस संभा बुरहा

> व्यक नेता इंसा उद्देष राज

हितं दिख गया करत सांप्र नही

गंभी दिय दया कोई और

जा दिल

के वे तक

मुस्त विव

#### राजनीति का रंग

'दोमुहेपन की दास्तान' (31 दिसंबर) पढ़ी. 'राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद' विवाद पर राजनीति का रंग ऐसा चढ़ा है कि छुड़ाए नहीं छुटता क्योंकि पिछले 2-3 दशक में ऐसा कोई मुद्दा नहीं मिला जिससे 'वोट बैंक' को प्रभावित किया जा सके यह मुद्दा उस मेंढक की तरह हो गया है जिसे तराजू में तोलने की कोशिश की जा रही है. जब-जब वह शांत होता है उसे भड़का दिया जाता है.

संधवा (म.प्र.)

अविनाश वाबीकर

■ यह सही है कि दोहरी नीति का अनुसरण अपने वोट बैंक को मजबूत करने के लिए ही किया जा रहा है. लेकिन अयोध्या विवाद को मुलझाने की दिशा में शेखावत ने अपनी पार्टी की अड़ियल नीति के विरुद्ध संबंधित लोगों को एक मेज पर लाकर सराहनीय प्रयास किया है. इस तरह के विचार-विमर्श से समाधान की संभावना बढ़ सकती है.

बुरहानपुर (म.प्र.)

मुनील बरोले

#### वोटों की तिजारत

'हर दल के अपने खेल' (31 दिसंबर) में व्यक्त विचार सच के बहुत करीब लगे. हमारे नेताओं के लिए अपने राजनैतिक हितों के आगे इंसानी जान की कोई कीमत नहीं. हर दल का उदेश्य वोटों की तिजारत है. धर्म से, इंसानियत से इनका तभी तक नाता है जब तक इनके राजनैतिक हित सुरक्षित हैं.

कानपुर (उ.प्र.)

ए.एच. इदरीसी

■ संकीर्ण मानसिकता और क्षुद्र राजनैतिक हितों का जितना विकराल स्वरूप इन दिनों दिखाई दे रहा है, वैसा पहले कभी नहीं देखा गया. किसी ने जात-पांत पर झगड़ा शुरू करवाने की कोशिश की तो किसी ने सांप्रदायिकता का दावानल सुलगाने में कसर नहीं छोड़ी जबिक अयोध्या का मामला इतना गंभीर कभी नहीं रहा, जितना इसे अब बना दिया गया. आज से 150 वर्ष पहले स्वामी दयानंद सरस्वती ने जात-पांत के आधार पर कोई फैसला करने के खिलाफ लेख लिखा था, और आज 21वीं सदी की दहलीज पर खड़े देश में मंडल रिपोर्ट लागू करने की सिफारिश की जा रही है.

चमनलाल कपूर

हैरत की बात है कि मंदिर-मस्जिद विवाद के केंद्र में जो मूल कारण है, उसकी ओर अभी तक किसी का घ्यान नहीं गया है. वह है हमारी सुस्त न्याय व्यवस्था जिसमें वर्षों तक किसी विवाद का फैसला ही नहीं होता. यदि न्याय



पंजाब में दहशत राज्य ही नहीं केंद्र सरकार की भी निष्क्रियता का मुंहबोला सबूत है. हैरत की बात है कि इतने बड़े पुलिस और सुरक्षा बलों के रहते सरकार आतंकवादियों पर काबू नहीं कर पा रही.

दिल्ली

स्मृति आनंद

वर्ष: 5, अक 6, 16-31 जनवरी 1991

 संपादकीय कार्यालय: लिविग मीडिया इंडिया ति., एफ-14/15, फनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3315801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार लिवमीडिया, नई दिल्ली. • मुख्य सर्कुलेशन कार्यासय: इडिया टुडे मर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001 फोन 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN. तारः सर्वुलेट, नई दिल्ली. • मुख्य विज्ञापन कार्यासयः 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2. नरीमन पाइट, मुंबई-400021 फोन 2026152, 2029326, 2029435, देलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, मुंबई. • क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यासयः के-॥ कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001, फोन: 3325378, 3323578, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN. तार. लिवमीडिया, नई दिल्ली फागुन चैबर्स, 28 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105, फोन : 477188, टेलेक्स : 041 6177 INTO IN. तारः लिवमीडिया, मद्राम ● 74/1 मेंट मार्क्स रोड, बगलूर-560001 फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्म: 0845-2217 INTO IN. तार: लिक्मीडिया, बंगलूर • 12-मी, एवरेस्ट 46-मी, चौरगी रोड, क्लकता-700016. फोन: 225398. 221922, टेलेक्स: 21-7138 INTO IN, तार. लिवइन-मीडिया, कलकता. • कांपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया सि विश्व भर में सर्वाधिकार मुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया दुंडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को सौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. • लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाणित तथा यामसन प्रेम इंडिया लि फरीदाबाद, हरियाणा में मुदित

व्यवस्था इतनी ढीली नहीं होती तो यह विवाद इतना विकराल नहीं बन पाता.

भीलवाडा (राज.)

अजय मूंदड़ा

#### स्पष्ट नीति जरूरी

'सेना की मदद क्यों नहीं' (कसौटी, 31 दिसंबर) विचारोत्तेजक लगी. जब पंजाब और कश्मीर में सुरक्षा बलों का पलड़ा भारी रहता है तो बुद्धिजीवी मानवाधिकारों के हनन की बात करते हैं. जब आनंदराम आतंकवादियों के हाथों मारे गए तो उसकी वजह आनंदराम की ज्यादित्यां बताई गईं. जब गिल कठोर कदम उठाते तो उन्हें निरंकुश कहा जाता था. जब हालात बेकाबू हो उठते तो फिर कड़े कदम उठाने के आदेश. आज सेना बुलाने का आग्रह तो कल सेना की ज्यादित्यों का विरोध. क्या कोई स्पष्ट सलाह या राय नहीं दी जा सकती? गोरबपुर (उ.प्र.)

#### वैसा बोध कब?

'आरक्षण की विसंगति' (अंतर्कथा, 31 दिसंबर) पढ़कर मन में संतोष और विदूपता के भाव उपजे. भारतीय विशेषज्ञों के प्रतिभा पलायन के बारे में बहुत कुछ कहा जाता रहा है. अवसरहीनता और वेरोजगारी के मुद्दे भी उछाले जाते रहे हैं जबिक असली मुद्दा मानसिक समाज-बोध का है. कई वर्षों से इंजीनियर, डॉक्टर आदि प्रशासनिक सेवाओं में आ रहे हैं तो उनके सामने प्रश्न रोजगार का नहीं, नकली सामाजिक प्रतिष्ठा का है. उन वैज्ञानिकों को क्या सचमुच सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त है जिनके बूते भारत प्रक्षेपास्त्र और प्राकृतिक गैस से डीजल तेल बनाने में सक्षम हुआ है.

मुजफ्फरपुर (बिहार) डॉ. रमेश किरण

एक हरिजन युवक पर आरक्षण के पिरंप्रेक्ष्य में आपके विचार निहायत ही एकतरफा और प्रभावहीन लगे. लिखित परीक्षा में अधिक अंक मिलने के बावजूद मौिखक परीक्षा में कम अंक की वजह से असफल होना कोई असामान्य घटना नहीं है. उपर की

#### पाठकों से

विश्वविद्यालयीन शिक्षा जगत से जुड़े पाठकों से हमारे नए स्तंभ 'विश्वविद्यालय परिक्रमा' के लिए सहयोग आमंत्रित है. सामग्री का हर तथ्य जांचा-परखा तो हो हो, सामग्री ताजा, संक्षिप्त और फोटो के साथ हो. हर महीने की 5 और 20 तारीख तक सामग्री हमें मिल जाए. प्रकाशित होने पर समुचित पारिश्रमिक विद्या जाएगा.

आमदनी और लापरवाही की हद तक निर्िचतता ही सरकारी नौकरी का आकर्षण है जिसके कारण दिल्ली जैसे शहर में ऊंचे वेतनों वाली प्राइवेट नौकरियों के बडी संख्या में होने के बावजूद आरक्षण का सर्वाधिक विरोध हआ. हरिजन युवक कोई अपवाद नहीं.

आगरा (उ.प्र.)

राकेश सतसंगी

#### पक्षपातपूर्ण

'कटाक्ष' (31 दिसंबर) में चंद्रशेखर पर अजीत नैनन का कार्टन पक्षपातपूर्ण लगा. णायद वे चंद्रशेखर को मक्कार और कृतझ घोषित करना चाहते हैं जबकि चंद्रशेखर के भाषणों में मक्कारी नहीं झलकती. जहां राजीव, वी.पी. सिंह और आडवाणी एक-दूसरे की खामियां गिनाते नहीं थकते. चंद्रशेखर ने कभी किसी नेता के खिलाफ जहर नहीं उगला. जाकिर अली 'मरहम' इंदौर (म.प्र.)

#### सही तस्वीर

'ऊंचा जीवन, क्षुद्र विचार' (31 दिसंबर) आज के बृद्धिजीवियों की एकदम सही तस्वीर पेश करता है. बौद्धिकता को इन्होंने शो-पीस और सफलता का जरिया बना लिया है. इन्हीं क्षद्रताओं के चलते लोगों का इन पर से भरोसा उठता जा रहा है.

इलाहाबाद (उ.प्र.)

सहारनपुर (उ.प्र.)

राजेशमोहन चौधरी

जावेद मसुद

#### आदिम युग की ओर

'पाशविकता का तांडव' (31 दिसंबर) अलीगढ़ की स्थिति का निष्पक्ष वर्णन है, देश के सांप्रदायिक दंगों की एक वजह यह भी है कि आज एक भी ऐसा नेता नहीं है, जो दोनों ही संप्रदायों में लोकप्रिय हो. विश्वासपात्र नेता के अभाव में ही धार्मिक नेता राजनैतिक नेता बन बैठते हैं और उसी का परिणाम सांप्रदायिक दंगों के रूप में भगतना पडता है.

#### देर आयद, दूरुस्त आयद

'आतंक का बंधक' (31 दिसंबर) पढकर तो यही लगा कि असम में राष्ट्रपति शासन लागू करने के अलावा कोई और रास्ता नहीं बचा था. सेना के वहां जाने से उल्फा की तो कमर टूटी ही, वहां के लोगों में भी आत्मविश्वास बढने लगा है. बर्दवान (प. वंगाल) संतोष मंडल

 'विदेशी हटाओ' के नारे पर सवार होकर सत्ता में आई अगप सरकार खुद उल्फा जैसे

बुद्धिजीवी, जिन्हें 'धब्बा' तक दिखा जाने वाला दर्पण होना चाहिए, देश के बेहद नाजुक मसलों पर भी अपने स्वार्थ को तिलांजिल नहीं दे पाते. यही वजह है कि निष्पक्ष और बेबाक विचार और समस्याओं के समाधान सुझा सकने वाले लोगों की देश में भयंकर कमी हो गई है.

पटना (बिहार)

अंजनी कुमार



लेख ने कई बडे-बडे 'बुद्धिजीवियों' की पोल खोल कर रख दी है और इस से निश्चित ही उन लोगों में हडकंप मच जाएगा जो बुद्धिजीवी कहलवाने के लिए बेताब हैं. ऐसे बुद्धिजीवियों के लिए प्रयोग किया जाने वाला शब्द 'घुमंतू सेल्समैन' बिलकुल उपयुक्त लगता है.

गैर-काननी उग्रवादी संगठन के हाथों की कठपतली बन गई. असम को प्रधानमंत्री का आभारी होना चाहिए कि उन्होंने राष्ट्रपति शासन लागु कर फोडे को नासुर बनने से रोक

बीकानेर (राज.)

हरीश बजाज

#### करारा व्यंग्य

कहानी 'बस एक क्रॉस' (31 दिसंबर) में लेखिका ने भारतीय समाज तथा नारी की व्यथा पर करारा व्यंग्य कसा है जो काफी हद तक सही है. रेखाचित्रों ने इसे और भी पैना बना दिया है.

छिदवाडा (म.प्र.)

अखिल शर्मा

#### यह कैसी विडंबना

'सौमनस्य सहेजता समुदाय' (31 दिसंबर) में गरासिया लोगों के बारे में यह पढकर दुख हआ कि यह समुदाय अब इतिहास की वस्तु बनकर रह जाएगा. कितने अफसोस की बात है कि जिस समूदाय से लोगों को सदभाव की सीख लेनी चाहिए उसे यह समाज दत्कार रहा है. धार्मिक संकीर्णता के विष ने हमें बरबाद कर रखा है. भारत इतनी तहजीबों की सूंदरता समेटे है जो शायद जन्नत में भी संभव न हो. झांसी (उ.प्र.)

 लेख मन को गहरे छु गया. मैं भी गुलबर्गा (कर्नाटक) का राजपूत हूं. आज भी उत्तर भारत के राजपूत पूर्व रियासत हैदराबाद के राजपतों को नीची नजर से देखते हैं. कट्टर अंधविश्वास, हिंदओं की रूढिवादिता, अदरदर्शिता और स्वजनों को ठकराने जैसे दुर्गुणों की वजह से ही भारत जैसे विशाल देश के तीन ट्कडे—भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश हो चुके हैं. हिंदुओं की कट्टरता ने ही उनके भाइयों को इस्लाम कबूल करने पर मजबूर किया है. अब उनसे रोटी-बेटी का व्यवहार कर उन्हें दोबारा पा सकते हैं.

गुलबर्गा (कर्नाटक)

ठाक्र नरसिंहराजा आर्य

#### ओछे विचार

'मैं सियासी सलाह नहीं देता' (31 दिसंबर) में चंद्रास्वामी ने सरदारों को मूर्स कहकर एक संप्रदाय विशेष को तो चोट पहंचाई ही, अपनी ओछी मानसिकता भी जाहिर की. बीकानेर (राज.)

 व्यक्तिगत दुराग्रह की वजह से पूरी सिख जाति के लिए 'मूर्ख' शब्द का इस्तेमाल कर चंद्रास्वामी ने अपनी असलियत उजागर की. इलाहाबाद (उ.प्र.) गुरमीत सिंह पीकू

हेमंत सालगांवकर

अटरू (राज.)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रियायत देने की हैसियत

जाब के सिख उग्रवादियों की खातिर संविधान में संशोधन तक करने की प्रधानमंत्री चंद्रशेखर की पेशकण को एक ऐसे प्रधानमंत्री का अपनी हद से गुजरना माना जाएगा जो एक असुविधाजनक गठजोड़ के सहारे उधार की सत्ता भोग रहा हो. तर्क दिया जा सकता है कि उन्होंने संवैधानिक सीमा नहीं तोड़ी है. यह सच है कि नेता जब तक सदन में अपना बहुमत साबित कर सकता है तब तक उसको मिले जनादेश के बारे में कोई वैधानिक प्रश्न नहीं खड़ा किया जा

की का ति

गज

की

हद

ना

ार्मा

₹)

दुख

स्तु

ोख

है.

कर

रता

वाल

वर्गा त्तर के

ट्टर

ास, जैसे

देश

भौर

ही

पर

का

आर्य

31

मूर्ख

त्राई

यास

संख

कर

तेकू

सकता. लेकिन अपने यहां जिस तरह की भी लोकतांत्रिक व्यवस्था बन गई है उसकी परंपराओं और शालीनताओं ने भी कुछ सीमाएं निर्धारित की है.

बहरहाल, उक्त पेशकश के बाद चंद्रशेखर ने अपने कदम वापस खींचे हैं. उन्होंने अकालियों से कोई वादा नहीं किया है और वार्ताओं के लिए कोई शर्त नहीं रखी गई है. यह भी स्पष्ट है कि वार्ताओं में क्या कुछ होता है उससे राष्ट्र को अंधेरे में नहीं रखा जाएगा. लेकिन चंद्रशेखर सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न से कतरा रहे हैं. वह यह कि अकाली अगर समाधान के लिए सहमत होते हैं तो भी चंद्रशेखर संविधान में संशोधन के लिए आवश्यक



समर्थन किसी तरह नहीं जुटा पाएंगे. चंद्रशेखर को यह एहसास हो जाना चाहिए कि वे अब जो भी बोलते हैं वह किसी चुनावी मंच से किसी पार्टी नेता की हैसियत से नहीं बल्कि भारत के प्रधानमंत्री की हैसियत से बोलते हैं जिसमें राष्ट्रीय प्रतिबद्धता का तत्व भी होता है.

संविधान संशोधन की पेशकश न केवल लोकतांत्रिक आचरण के विरुद्ध है बल्कि रणनीति के हिसाब से भी बड़ी भूल है. यह सच है कि बगावतों को शांत करने के लिए पहले भी रियायतें

दी गई हैं. मगर पंजाब के मामले में एक कमजोर प्रधानमंत्री ने समझौता वार्ता से पहले ही यह पेशकश की है जबिक यह अंतिम रियायत होनी चाहिए थी. उग्रवादियों की भाषा में इसे सरकार द्वारा शांति के लिए लालायित होना माना जाएगा. तब तो उग्रवादी यह सोचेंगे कि वार्ता से पहले ही इतनी बड़ी रियायत मिल रही है तो क्यों न चांद-तारे ही मांग लिए जाएं. इसलिए अचरज नहीं कि इंका समेत तमाम पार्टियों ने इस पर हैरत जाहिर किया है. अकालियों या उग्रवादियों के साथ बातचीत स्वागत योग्य है लेकिन इसके लिए संविधान संशोधन की एकतरफा रियायत से बचना ही श्रेयष्कर होगा.

# योजना के योग-दुर्योग

टाओ-बिठाओ प्रवृत्ति का शिकार ए योजना आयोग भी बन गया है. लगभग एक साल में इसके चार उपाध्यक्ष बदले गए और लगभग इतने ही सदस्य भी. लेकिन नतीजा कुछ खास निकला नहीं इसमें आश्चर्य की कोई बात भी नहीं है क्योंकि यह आयोग कुल मिलाकर उन नौकरशाहों और नेताओं का आश्रयस्थल सा बन गया है जिन्हें कहीं और नहीं खपाया जा पाता.

इस बीच आठवीं योजना को तैयार करने की गतिविधियां तेजी से चलती रहीं मगर इसे अंतिम रूप देने का काम

बत्म होता नहीं दिखता. हालांकि नए उपाध्यक्ष मोहन धारिया ने आश्वासन दिया है कि अंतिम मसौदा मार्च '91 तक तैयार हो जाएगा लेकिन स्थिति यह है कि 1990 बत्म होने के बाद भी इसके आकार पर फैसला नहीं हो पाया है. योजना अवधि का पहला वर्ष समाप्त होने को आ रहा है और नीति संबंधी विकल्पों पर खाड़ी संकट और राष्ट्रीय राजनैतिक मजबूरियों अपशकुनी छाया पड़ रही है.

न्या इस योजना से फर्क पड़ेगा? खाड़ी संकट गुरू होने से पहले तक अर्थव्यवस्था बिना किसी योजना संकेत के अच्छी उड़ान भर रही थी. इस तथ्य के मद्देनजर सवाल यह उठता है



कि क्या केंद्रीकृत नियोजन नब्बे के दशक में प्रासंगिक रह पाएगा. पंजाब, कश्मीर और असम की समस्याओं का कोई आर्थिक पहलू है तो यह कि राज्यों की आर्थिक नीतियों को तय करने के लिए दिल्ली एक अनुपयुक्त स्थान है. नियोजन की जरूरत अगर है तो यह नीचे के स्तर पर.

वैसे भी, केंद्रीकृत योजना आयोग लक्ष्यों को हासिल करने के मामले में प्रभावी नहीं रहा. सातवीं योजना को छोड़ दें तो विकास के लक्ष्य अक्सर छूटते ही रहे हैं. नेहरू के जमाने में

इतना तो था कि आयोग को अपने कामकाज के बारे में जानकारी थी. यह उस व्यवस्था का केंद्रबिंदु था जो योजना सर्चों को वांछित और अवांछित श्रेणियों में बांटती थी. यहीं कारण था कि आयोग विभिन्न मुद्दों पर बहसों को प्रभावित करता था. लेकिन उदारीकरण, और नियंत्रणों में छूट आदि के एक दशक के बाद स्थितियां बदल गई हैं. अगर राज्य-व्यवस्था के पूर्ण नियंत्रण वाले दौर में योजना आयोग चीजों को दुरुस्त नहीं कर पाया तो अब वह अर्थव्यवस्था के बारे में भविष्यवाणियां करने में सक्षम नहीं रह गया है. बिल्क अब तो आयोग के बारे में भी कोई भविष्यवाणी कर पाना मुश्किल है.

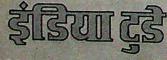
#### आपकी चहेती पत्रिका आपके दरवाज़े पर न खरीदने का झंझट... न खत्म होने का डर



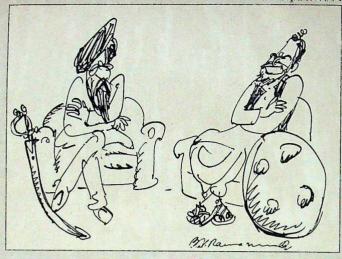
इस सुविधा का लाभ उठाइए. अपनी चहेती इंडिया टुडे घर बैठे — नियमित पाइए. न खरीदने जाने की जरूरत... न अंक खत्म होने का डर, इंडिया टुडे समय से पहुंच जाए आपके घर! बस कूपन भर कर भेज दीजिए, देर मत कीजिए!

हाक पताः

मूल्य वार्षिक क. 132/मुगतान का माप्यम-चेकािडमांह ड्राफ्ट
दिल्ली, बप्बई, कतकता और मदास के चेकािडमान्ड ड्राफ्ट
एमआईसीआर वाले ही होना चाहिये।
(दिल्ली से बाहर के चेकाें के लिए।०/- क. प्रति चेक की
अतिरिक्त राशि देय है।)
दर व फाकश केवल भारत में लागू।
कृषया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर
भेजें।
लिविंग मीडिया इंडिया लि,
भो. बां. नं. 706,
फरीदाबाद-121 007 (हरियाणा)



MILESTONES/IT/120



- हमें न्यायपालिका की रक्षा करनी है. अगर वे (लोकसभा अध्यक्ष रिव राय) न्यायपालिका की अवमानना करते हैं तो मैं उन्हें गिरफ्तार भी करवा सकता हूं.
  - सुब्रह्मण्यम स्वामी, हिंदुस्तान टाइम्स
- मैं राष्ट्रीय स्तर का नेता नहीं बनना चाहता हूं.
- शरद पवार, नई दुनिया
- मैं भाजपा का हूं इसका मतलब यह नहीं है कि मैं जहां जाऊं वह भाजपा का कार्यक्रम बन जाए.
   अटल बिहारी वाजपेयी, स्वतंत्र भारत
  - कांग्रेस (इ) से अभी तलाक का कोई सवाल नहीं. अभी तो हनीमून की स्टेज है.
     ओमप्रकाश चौटाला, हिंदुस्तान
  - मंडल आयोग का विरोध करने वालों को बुलडोजर से चटनी बना देंगे.
    - लालू प्रसाद यादव, इंडियन एक्सप्रेस
- गांधी के इस देश में लोग भूखे सोते हैं और देवीलाल जैसे नेता मुकुट की चमक से उनकी भूख मिटाना चाहते हैं.
   मजनलाल, दैनिक ट्रिब्यून
  - अब राजनीति में लोग सुविधा भोगने के लिए आते हैं.
    - भैरों सिंह शेखावत, राजस्थान पत्रिका
- हम चुनाव से बचने के लिए जनता दल (स) सरकार का समर्थन नहीं कर रहे सीताराम केसरी, आज
- कपिलदेव को भलीभांति पता है कि वह कितनी लंबी दूरी तक और कितने लंबे समय तक आगे जा सकता है. वास्तव में मेरी जिंदगी में ढोंग-ढकोसले का कोई स्थान नहीं है.
   कपिलदेब, नई दुनिया
- मैं सीढ़ियां चढ़ रही हूं. नीचे देखने का कोई सवाल नहीं है. मुझे नहीं मालूम ये सीढ़ियां यह मुझे कहां पहुंचाएंगी.
   माधुरी बीक्षत, स्टारइस्ट
- इमेज से मैं कभी डरी नहीं और न ही उसकी चिंता की. दर्शकों के बीच अगर मेरी बुरी सास की पहचान बन गई है तो इसका मुझे कोई अफसोस नहीं है.
- मैं तो बस एक ही चाहत रखता हूं कि मेरी कोई फिल्म इस कदर सफल हो कि
  मेरे बच्चे जो आज तक अमिताभ, आमिर या सलमान के फैन हैं वे मेरे फैन बन
  जाएं.



बोरोलीन प्रसाधन सामग्री नहीं CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Response 1075

राय)

टाइम्स

दुनिया

पा का भारत

टेज है. *दुस्तान* 

वसप्रेस

द्रिब्यून

पत्रिका

तर रहे

, आज

ने लंबे

दुनिया

लूम ये

अगर नहीं नसता

हो कि न बन नागरण

#### इज्जत पर बन आई

 राजीव गांधी और उनकी पार्टी अयोध्या और पंजाब जैसे ज्वलंत मुद्दों पर भले ही रहस्यमय चुप्पी साधने और बनावटी उदासीनता दिखाने के दोपी हों,



लेकिन कभी-कभी तुच्छ मुद्दों पर उनकी खीझ इतनी बढ़ जाती है कि उनके तेवर देखते ही बनते हैं, खास तौर पर उस समय जब मामला राजीव की दुस्साहसी प्रवृत्ति के प्रदर्शन का हो.

हाल ही में राजीव गांधी जब राजधानी के एक महिला महाविद्यालय में गए तो कुछ छात्राओं ने उन्हें घेर लिया और शिकायत करने लगीं कि रेलवे आरक्षण उपलब्ध न होने के कारण वे देशाटन पर नहीं जा पा रही हैं. मदद को हमेशा तैयार राजीव ने अपने एक सहायक को रेलमंत्री जनेण्वर मिश्र से बात करने को कहा.

लेकिन मिश्र इतने व्यस्त थे कि फोन पर मिले ही नहीं. राजीव का सहायक जब भी फोन करता, हर बार यही जवाब मिलता कि मिश्र "बैठक में व्यस्त हैं." उधर लड़कियां बार-बार राजीव के सहायक को फोन कर रही थीं. आखिरकार, सहायक का धैर्य जवाब दे गया. उसने मिश्र का नंबर मिलाया और लगा चिल्लाने कि "इज्जत दांव पर लगी हुई है." दूसरी तरफ बैठे हुए शस्स के लिए इतना ही पर्याप्त था और वह चुपचाप सब कुछ सुनता रहा. जाहिर है, जब तक आप चिल्लाएं

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं, सत्ता में बैठे लोग आपकी पुनने वाले नहीं भले ही वे आपकी दया पर निर्भर हो.

#### गाय से बातचीत

● राजनीति में दोस्त का दुण्मन और दुण्मन का दोस्त बन जाना आम बात है. लेकिन जब मामला 'मेनका गांधी स्टाइल' की राजनीति का हो तो और भी विचित्र बात हो सकती है. हाल ही में एक दिन उत्साही पर्यावरण राज्यमंत्री बिना किसी कार्यक्रम के उप-प्रधानमंत्री देवीलाल के विलंगडन क्रीसेंट स्थित निवास पहुंची और सीधे पिछवाड़े चली गईं. वहां वे लगभग आधा घंटे तक रहीं जिससे कई राजनीतिकों की भौहें तन गईं.

मेनका की इस यात्रा के महत्व के बारे में अटकलों का बाजार तुरंत गरम हो गया. लेकिन मेनका का कहना है कि वे देवीलाल की गाय से बातचीत करने गई थीं. कुछ भी हो, जब तक गाय खुद न कुछ बताए, कोई भी नहीं जान



सकता कि दोनों के बीच क्या बातचीत हुई.

#### जमा है जोड़ा

 चंद्रशेखर के विध्वंसक बाउंसरों और देवीलाल की खतरनाक गुगली के बावजूद वी.पी. सिंह के बोफोर्स अफसरशाहों की टीम का आखिरी



जोड़ा अभी भी मैदान में जमा हुआ है. इन बाउंसरों से बुरी तरह घायल संयुक्त सचिव भूरेलाल और संयुक्त निदेशक एस. माधवन प्रधानमंत्री कार्यालय में बने हुए हैं. हालांकि प्रधानमंत्री ने शुरू में ही उन्हें संकेत दे दिया था कि उन्हें हटा दिया जाएगा.

इस जोड़े के जमे रहने की वजह विशुद्ध राजनैतिक है, चंद्रशेखर ने पुनर्विचार किया और बोफोर्स जांच को कांग्रेस (इ) के खिलाफ तुरुप के पत्ते के रूप में इस्तेमाल करने का फैसला किया. इन दोनों अधिकारियों के बने रहने का यदि कोई विरोध कर रहा है तो वे हैं वाणिज्य और विधिमंत्री सुब्रह्मण्यम स्वामी. प्रधानमंत्री के फैसले की वजह राजनैतिक है लेकिन स्वामी इसलिए बोफोर्स जांच को दवाना चाहते हैं कि बोफोर्स के नए अध्यक्ष हावर्ड में उनके सहपाठी थे. जाहिर है व्यक्तिगत संबंध ज्यादा मजबूत होते हैं.

#### आदेश वापस

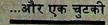
● हाल ही में सशस्त्र बल अपनी बहादुरी की जगह अपनी वासना की भूख के लिए सुर्खियों में छाए हुए थे. "अपने साथी अफसरों की पित्नयों पर प्रेम के डोरे डालने वाले" जनरलों से संबंधित यह कांड शांत भी नहीं हुआ था कि सेना एक बार फिर खबरों में आ गई. इस बार मामला यह था कि सेना मुख्यालय ने अर्दिलियों की पुरानी व्यवस्था को लागु करने की कोशिश की.

लगभग एक महीना पहले सेना मुख्यालय ने फैसला किया कि अफसरों को अर्दली मुहैया कराने का मकसद उनकी वर्दियों, डोरियों, बैजों और पदकों को दुरुस्त रखने में उनकी मदद करना था. ऐसी स्थिति में सीमा पर तैनात अफसरों के परिवारों को सीमा से दूर दिए गए क्वार्टरों में



अर्दिलियों को क्यों काम करना चाहिए जहां उनका इस्तेमाल घरेलू नौकरों जैसा होता है.

सो, पिछले महीने आला-कमान ने अर्दली नियुक्त करने पर रोक लगा दी. इस पर अमल के लिए अलग परिवार कालोनियों में सेना पुलिस भी भेजी गई. लेकिन आदेश जब तक भेजा जाता, अफसरों ने उनका जोरदार विरोध करना शुरू कर दिया. नतीजा यह कि अर्दली वापस आ गए.



(सुनी-सुनाई)

भारतीय जनता पार्टी बिहार में दो धड़ों में बंटकर आपस में घमासान कर रही है.

राजधानी में चर्चा है कि यदुवंशी राज में 'यादवी युद्ध' न होगा तो और क्या होगा? इंटरप्राइसि कं०, 1143 144, चौक आजाद गर्ल बाजार, • बाजार, □ बप दीपक सुभाप बाज सन्स, चौक गंज, □ ब्रा

ने० सुशीन

१० ओम ह

पे० सत्य प्र

FET #, 90

धनवाला,[

नेहरू रोड़,

बाजार, 🛛

कोतवाली र

थर, • भे०

16, 17 टाउ

🗆 इलाहा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

का सार्थी



#### अधिकृत विक्रेता

उत्तर प्रदेश

सहपाठी

त्र बल अपनी खियों में साथी प्रेम के रलों से भी नहीं र फिर मामला लय ने स्था को

ले सेना या कि कराने वर्दियों. कों को करना मा पर रों को र्टरों में

स्तेमाल

आला-

रने पर

मल के

नयों में

लेकिन

जाता,

विरोध

जा यह

संबंध

🗋 इलाहाबाद: मै॰ गुर प्रसाद हीरा लाल जैन, जैन भवन चौक, 💌 मैं नाबल्टी हाउस, 6-C, कमला नेहरू रोड, • मैं अल्का इंटरप्राइसिस, 30 एम०जी० रोड, सिविल लाईन, ● मै० जैन ट्रेडिंग कं∘, 1143, कटरा क्रौसिंग, ● मै॰ एस॰ नसीम अहमद एण्ड कं॰, 144, चौक 🗆 आगराः मै० आगरा बर्तन भंडार, 30/113, आजाद गली, कसेरथ वाजार, • मै० आहुजा बर्तन मंडार, कसेरथ बाजार, • मे॰ ओसवाल बर्तन भंडार, दौलत मार्किट, जौहरी बाजार, □ अनुपाराः मै० मोती रेडियो सेन्टर, □ अलीगढ़ः मै० वय तीपक वर्तन भंडार, महावीर गंज, ● मै० तीपक वर्तन भंडार, सुभाव बाजार, रेलवे रोड़, 🔲 बेहराइचः मै० श्याम तास एण्ड सन्त, चौक बाजार, 🗆 बान्दा: में व बंगात क्रोकरी हाउस, गृती गंज, 🗆 बिलया: मै० विजय गन हाउस, स्टेशन रोड, 🗀 बस्ती: मैं मुरीति कुमार सर्तन सरचेन्ट, मंगल बाजार, 🔲 देवरियाः मैं अोम स्टोर्स, समीप कोतवाली, मोती लाल रोड़, 🔲 देहरावृनः में o सत्य प्रकारा एण्ड कं o, 70/5, पलदन बाजार, • में o कैपिटल स्टोर्स, 99 पलटन बाजार, ● मै० वाता राम, विनोद कुमार, धनवाला, फिल्लाबाद: मे॰ राज लास एण्ड क्रोकरी स्टोर्स, नेहरू गेड़, • मै० सालिग राम भोला नाथ बर्तन स्टोर्स, चौक बाजार, □ गोरखपुरः मै० अमर क्रोकरी सेंटर, माया बाजार कोतवानी रोड, • मैं । गणेशी लाल राम निवास अजेसिंस, गोल घर, • वे० मोर्डन क्रोकरी युजियम, 18 बाटर वनर्स बिल्डिंग, गोल यर, • वै ० फैन्सी बर्तन हटोसं, रेती चौक, • वै ० विजय अजेसिंस, 16, 17 टाउन हाल मार्किट, ● मै० गणेशी साल एण्ड सन्स, सिनेमा

रोड़, • मै॰ श्री गणेश इंटरप्राइसिस, 16 वाटर वर्क्स बिल्डिंग, 🗆 हरदोई: मै० श्याम लाल एण्ड सन्स, रेलवे गंज, • मै० काशी राम बनवारी लाल, रेलवे गंज, 🗆 हलद्वानी: भै० सरवार क्रोकरी हाउस, नैनीताल रोड़, 🗆 हापुड़: मै० क्रोकरी सेन्टर, रेलवे रोड़, झांसी: मै० काशी प्रसाद मिथेले शरण, शराफा बाजार, • मै० बम्बई स्टील एम्पोरियम, 175 जवाहर चौक, 🗌 जौनप्र: मै० ग्लास स्टोर्स, हर लालका रोड़, 🗆 कानपुर: मै० एशिया लाईट हाउस, मैस्टन रोड, ● मै० एस०एम० रशीव एण्ड सन्स, 43/205, मैस्टन रोड, • मै॰ गोपी लाल गुप्ता एण्ड कं०, 46/63, हटीया, • मै॰ लक्ष्मी बर्तन स्टोर्स, 108/130 सीसामऊ बाजार, • मै॰ नफीस क्रोकरी हाउस, मुलगंज, • मै० कुमार फेंसी स्टोर्स, 114 नवीन मार्किट, • मै॰ मौ॰ हनीफ मो॰ अनीस, मैस्टन रोड, • मै॰ कच्चा कुमार, उमेश चन्त्र, 68/10 भूसा टोली, • मै॰ रस्तोगी स्टील सेंटर, 67/5 हुला गंज, 🗌 लखनकः मै० कन्हैया लाल, पराग बास, पीली कोठी, याहिया गंज, ● मै० इंदर चन्द जैन एण्ड सन्स, अमिनाबाद, • मै॰ राम सरन एण्ड कं॰, अमीनाबाद, • मै॰ संसार एजेंसिस, ममताज मार्किट, • मै॰ चमन लाल अग्रवाल एण्ड सन्स, नजीराबाद, 🗆 लखीम पुर खेरीः मै० अम्बर लाल, राघे श्याम, चंगा भवन मैन बाजार, 🗆 मैरठः मै० शकुन बर्तन भंडार, बेगम पुल, ● मै० दाता राम गुप्ता एण्ड सन्स, वेली बाजार, ● मै० कृष्णा क्रोकरी एण्ड डिपार्टमेंटल स्टोर्स, सदर बाजार, ● मै० सोना इलेक्ट्रीक एजेंसी, 184 सदर बाजार, 🗆 नजीबाबाद: मै० श्याम लाल एण्ड सन्स, चौक, 🗌 मुजपफर नगरः मै० मित्तल इंटरप्राइसिस, 101 भगत सिंह रोड, 🗆 रामप्रः मै० अप्रवास क्रोकरी हाउस, मिस्टन गंज, • मै० सैलक्शन एम्पोरियम, 22 साफदर गंज, 🗆 रायबरेलीः मै० गुम्ता ट्रेडर्स, कापर गंज, 🌢 मै० राधे श्याम धनश्याम वास गुप्ता, मलखाना, • मै० राज बन्ध्, मिलन सिनेमा रोड, 🗌 रुपायधियाः मै० राम बूत स्टोर, पो०ओ० रुपायधिया, • मै० श्री राम स्टोर्स, पो०ओ० रुपायधिया, 🗆 सहारनप्रः मै॰ निहाल चन्द हरबंस लाल, 15 नेहरू मार्किट, • मै० जसवंत राय नरेन्त्र कुमार, लक्ष्मी मार्किट, 🔲 शाहजहांपुरः मे० सहगत गिपट सेन्टर, गोविन्द गंज, • के० सहगत क्रोकरीज, सदर बाजार, 🗆 शामलीः मै० स्गन चन्द सोहन ताल बड़ा बाजार, 🗌 सुल्तान पुर: मै० कमाती चलनी हाउस, शाह गंज, • मै॰ दशरय सात एण्ड सन्स, चौक थटेरी, 🛘 वाराणसीः मै० भारत ग्लास स्टोर्स, दाल मंडी, • मै० आइडियल ग्लास हाउस, दाल मंडी, • मै० मिलल ट्रेडर्स, D-11/8 कोतवाल प्रा, बांस फाटक, • मै० गिरधर बास एण्ड सन्स, बांस फाटक, • मै॰ मोहन साल कृष्ण चन्द्र, D-10/15 विश्नाथ गली, • मै० स्टेनलेस स्टील सेन्टर, बांस फाटक, • मै० ग्लास एवड प्लाईबुड सेन्टर, CK/39 9, दाल मंडी, 🗆 मुरावाबादः मै० नवीन ग्लास एजेंसी, कटरा पूरन जाट, गंज बाजार, 🗆 गोंडाः मै० पारस स्टील एम्पोरियम, उतरोली रोड,

कलकत्ता

कलकत्ताः मै० कृष्णा ट्रेडिंग कं०, P-11, चितप्र स्पर,

#### पशु और नारी

महाकवि उसने तुलसीदास की इस चौपाई को गांठ बांध लिया था—'ढोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी...' सो धनबाद के उस ग्वाले ने अपनी बीवी से भी वही बरताव किया जो वह अपनी भैंस से करता था. और लेने के देने पड गए.

उस ग्वाले के यहां एक बच्चे का जन्म हुआ और घर में खृशियां मनाई जाने लगीं, लेकिन यह रौनक ज्यादा देर नहीं रही मां की छाती में दूध ही नहीं उतर रहा था और बच्चा भूख से वेहाल था. पति महोदय ने आव देखा न ताव और भैंस को सुई लगाने वाली पिचकारी उठाई,



भैंस के थनों में दूध उतारने वाली दवा सुई से बीवी के शरीर में उतार दी. और फिर वही हआ जो होना था. बेहाल औरत को अस्पताल पहुंचाना पड़ा.

# Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

#### शोभायमान प्रतिभा

 यह बात उस जंगल की नहीं जिसमें हिरन और बाघ एक ही घाट पर पानी पीते थे. यह बात किसी ऐसे साम्यवादी यूटोपिया का किस्सा भी नहीं है जहां शारीरिक श्रम और मानसिक श्रम करने वालों की हैसियत में कोई फर्क नहीं होता. यह बात विविधताओं के देश भारत में बसे प्रतिमाओं के प्रदेश बिहार की एक 'मानो या न मानो' वाली सत्यकथा है. यहां के दरभंगा जिले के एक महानुभाव की बहुमुखी प्रतिमा देखकर तो शायद आइंस्टीन जैसे जहीन वैज्ञानिक या लियोनार्दो दा विसी जैसे महान चित्रकार भी शरमा जाएं. बहरहाल, दरमंगा के ये महानुभाव एक ही साथ शिक्षा क्षेत्र के सबसे बड़े और सबसे छोटे पद पर काम कर रहे हैं.

इस हस्ती की प्रतिमा की जानकारी जब प्रदेश के उच्च शिक्षामंत्री नवल किशोर शाही को हुई तो वे हैरत में पड़ गए. यह कैसी हस्ती है जो एक तरफ तो चिकित्सा महाविद्यालय में चपरासी है और दूसरी तरफ दरभंगा के ब्रह्मानंद महाविद्यालय में प्राचार्य. मंत्री जी ने सोचा कि इस प्रतिमा के तो दर्शन करने ही चाहिए. सो, उन्होंने इन महोदय का ठिकाना पता लगाने के निर्देश दे दिए. पर उनका ठिकाना मालम पड़ने से पहले ही एक और हैरतअंगेज बात पता चली. पता चला कि ये महानुभाव एक संस्कृत विश्वविद्यालय के डीन भी हैं. अब इस बात की जांच-पड़ताल चल रही है कि इन सज्जन की प्रतिमा और किस-किस पद की शोमा बढा रही है.

#### रूठे तो ऐसे

■ कहीं कोई मंत्री किसी बात पर रूठ जाए तो आफत तय जानिए. लेकिन मिर्जापुर शहर में जो रूठा वह मंत्री का ड्राइवर था. यह बात दीगर है वहां कहर किसी पर नहीं बरपा.

उत्तर प्रदेश के ये राज्यमंत्री दौरे पर गए थे. वे दिन भर व्यस्त रहे. शाम को जब वापसी की बेला आई तो मालुम पडा कि ड्राइवर महोदय रूठे हुए हैं, खाना नहीं खा रहे. मंत्री जी मनाने पहुंचे तो यह ड्राइवर उन्हीं पर "मैं खाना नहीं बरस पडा, खाऊंगा. यहां कोई पूछने वाला नहीं. आप लोग तो खा लेते हो और मैं यहीं भूखा पड़ा रहता



हूं.'' ड्राइवर के गूस्से के आगे असहाय मंत्री जी ने एक राजपत्रित अधिकारी को उसके भोजन-पानी का खयाल रखने के काम पर लगा दिया.

#### गधों का प्रतिकार

 आजादी हर किसी को प्यारी है. इसलिए आजादी पर लगने वाली पाबंदियों का जोरदार विरोध होता है.

जम्मू के पुलिस अधीक्षक (यातायात) का महकमा याता-



यात की अन्य समस्याओं को तो आसानी से मुलटा ले रहा था पर समस्या पेश आ रही थी शहर के गधों की वजह से ये गधे तो ट्रैफिक संकेतों का कोई खयाल ही नहीं रखते थे. जहां जी आया लोट गए, जहां मौका मिला हजुम बनाकर गर्दभ संगीत सभा की शुरुआत कर दी. बहुत सोच-विचार के बाद गधों के घूमने-फिरने पर पाबंदी लगा दी गई.

पर आजादी के मतवाले गध निकल पड़े विरोध प्रदर्शन करने यानी जम्मू के पुलिस मुख्यालय की घास चरने. वहां उन्होंने काफी देर तक सड़क का यातायात रोके रखा. एक घंटे बाद जब जैसे-तैसे बला टली तो पुलिस परेशान थी कि गधों ने अगली बार फिर घेरा तो उनसे कैसे निपटेंगे.

#### तरी पर तड़ी

 जिंदगी में 'तरी और ताकत' है तो सब कुछ है. पर इस 'तरी और ताकत' के लिए दौलत चाहिए. 'हिम्मते मदां, मददे खदा.' सो इंदौर के रामानंद नगर में रहने वाले एक 'सज्जन' ने हिम्मत दिखाई और 'तरी और ताकत' हासिल करने की हैसियत पा ली.

इसके लिए उनका नुस्खा भी अजीब था. उन्होंने दारू के जाम में शुद्ध घी मिलाकर पीना शुरू कर दिया. पर ताकत आने में तो समय लगता है, और पुलिस ताकत आने से पहले ही पहुंच गई व साहब 'खातिर-तवज्जो' के लिए 'समुराल' भेज दिए गए.

हुआ यह कि उनके अनूठे नुस्खे की खबर उनके पड़ोसियों को मिली तो वे अचंभे में पड गए. उन्हें तरी में कुछ काला नजर आया तो पुलिस को खबर की. बाद में जांच-पड़ताल करने पर यह पता चला ये साहब एक बैंक में चोरी करके लाखों की दौलत लाए हैं और उसी से गुलछर्रे उड़ा रहे हैं.



केपिटलगेन पर, नहीं कोई कर? बेघरों को भी भिले घर

NHB (एनएचबी) 9% कैपिटल बॉण्ड्स

- कैपिटल गेन सौ प्रतिशत कर मुक्त
- 9% ब्याज का सालाना अग्रिम भुगतान.
- बेघरों को घर दिलाने में सहायक इस बात का संतोष.

प्रमुख आवास वित्तिय संस्थान होने के नाते हमारा फ़र्ज़ है अधिक से अधिक लोगों को मकान उपलब्ध कराना. एक ऐसा मकान जिसे वे अपना कह सकें. इस काम के लिए हमें अधिक-से-अधिक धन इकट्ठा करना है.

इसिलए आप अपनी दीर्घकालीन संपत्ति — ज़मीन, मकान, शेयर, मेक्योरिटिज़, आभूषण आदि — की बिक्री से प्राप्त पूंजी को एनएचबी 9% कैपिटल बॉण्ड्स में लगाइए और पाइए, करमूक्ति के साथ-साथ कई और आकर्षक लाभ — एक ऐसा अवसर जो देश की आवास समस्या को सुलझाने में भी मदद करें.

- लगायी गयी पूंजी पर आपको सालाना 9% ब्याज मिलता है,
   जिसे आप अर्धवार्षिक आधार पर प्राप्त कर सकते हैं.
- या, अगर आप चाहें तो बॉण्ड्स खरीदने की तारीख़ से तीन महीने बाद, 9% सालाना की दर से पूरे तीन साल का अग्रिम ब्याज, कमीशन काटक़र प्रति 1000 रु. की पंजी पर 240 रु. के हिसाब से प्राप्त कर सकते हैं. इसमें बीच के 3 महीने

का भी ब्याज शामिल है— इस प्रकार आपको एक दिन के भी ब्याज का नुकसान नहीं होता.

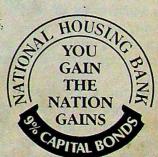
- आयकर अधिनियम 54E 1961 के तहत कैपिटल गेन कर मुक्त.
- व्याज उपार्जन के स्रोतों पर कोई कर कटौती नहीं.
- धारा (1) (xvie) के तहत 5 लाख रु. तक की छूट, जिसमें संपत्ति कर 5(1A) के तहत अन्य 6 इलिजिबल एसेट्स भी शामिल हैं.
- आयकर अधिनियम 80L के तहत ब्याज कर मुक्त.
- पैसा भेजने का खर्चा एनएचबी उठाएगा.
- 150 से भी अधिक केंद्रों पर सालोंभर सममूल्य पर उपलब्ध.

नीचे लिखे पते पर आवेदन पत्र उपलब्ध हैं और यहीं पर स्वीकार भी किए जाते हैं.

राष्ट्रीय आवास बैंक (बंबई तथा दिल्ली)

• कैनफ़िना कार्यालय • इश्यू संबंधी इन 9 बैंकों की 142

शाखाएं 51 केन्द्रों पर इलाहाबाद बैंक, आंध बैंक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, कनारा बैंक, सिटी बैंक (साखर भवन बंबई), फ़ेयरग्रोथ फ़ाइनांशियल सर्विसेज़, इंडियन बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक ऑफ़ मैसूर, दि वैश्य बैंक लिमिटेड.



इश्यू प्रबंधकः कैनबैंक फाइनांशियल सर्विसेज लिमिटेड.



(भारतीय रिज़र्व बैंक के पूर्ण स्वामीत्व में)

निजी आवास का सुनहरा विश्वास

तीसरा माला, बंबई लाइफ बिल्डिंग, 45 वीर निरमन रोड, बंबई 400 023 फोन: 222702, 224347. अछठा माला, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, 18-20, कस्तुर्बा गांधी मार्ग, नई दिल्ली 110 001. फोन: 3712016, 3712036.

ORTUNES

बात तय हर में गड्बर कहर

यमंत्री । भर

त्रापसी डाकि

खाना मनाने

हीं पर

नहीं वाला

ते हो रहता

आगे

एक

उसके

खने के

में पड

काला

खबर

करने

ब एक

वों की सी से

#### सुब्रह्मण्यम स्वामी

# जनाब शेखचिल्ली

अपने आका बदलने में माहिर केंद्रीय कानून और वाणिज्यमंत्री नए-नए दुश्मन पैदा करने और जिस थाली में खाते हैं उसी में छेद करने का काम मुस्तैदी से कर रहे हैं

-परंजय गृहा ठाक्रता और ब्यूरो रिपोर्टे

"किसी पद की शोभा मेरी वजह से बढ़ती है, न कि किसी पद की वजह से मेरी शोभा बढती है"

—सुब्रह्मण्यम स्वामी, जनवरी 1989

मंत्रिमंडल से बरखास्त करने और संसद से निकाले जाने की मांग पर अडे रहे. आखिरकार स्वामी के बिना शर्त माफी मांगने पर ही तूफान थमा.

लेकिन उन्होंने अपने गैरजिम्मेदाराना बयानों से अपने लोगों को नाराज कर लिया जाने के बाद ही ठंडा हुआ.

इसके त्रंत बाद ही एक और नया तुफान खडा करने में स्वामी ने ज्यादा देर नहीं लगाई. स्वामी के मंत्रालय के एक अधिकारी ने जद (स) सांसदों की बरखास्तगी के सवाल पर लोकसभा अध्यक्ष

अगर किसी व्यक्ति को बहुत ज्यादा बकबक करने की आदत हो तो इस बात की संभावना काफी है कि उसे थुककर चाटना पड जाए, खासकर अगर वह व्यक्ति सुब्रह्मण्यम स्वामी हों जो कुछ लोगों की नजर में शेखचिल्ली, कुछ की नजर में शोहदा और दूसरे नाराज लोगों की नजर में एक सिरदर्द की हैसियत दो साल पहले जिस व्यक्ति

ने यह कसम खाई थी कि वह सरकारी पद पर नहीं बैठेगा, आज वही व्यक्ति पहली बार मिले ऐसे पद की भद पीटने में लगा हुआ है. पिछले पखवाड़े जब इस हावर्ड शिक्षित केंद्रीय वाणिज्य, विधि एवं न्यायमंत्री ने लोकसभा अध्यक्ष रवि राय को गिरफ्तार कराने की

धमकी दी तब संसद में तूफान खड़ा हो गया. उन्होंने यह टिप्पणी तब की जब रवि राय ने जनता दल (स) के 37 सांसदों को वी.पी. सिंह सरकार के लिए नवंबर में सदन में विश्वास मत पर बहस के दौरान व्हिप की अनदेखी करने के सवाल पर सफाई देने के लिए और समय देने में आनाकानी की. संसद में हंगामा मचता रहा और लोकसभा को कई बार स्थगित करना पड़ा. स्वामी पर संसदीय लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था को ही अपमानित करने का आरोप लगाया गया. कुछ सांसद उन्हें

कार्टूनः जयंतो बनर्जी है. उनके तेजी से बदलते समर्थकों में फिलहाल जो उनके साथ हैं वे लोग भी व्यक्तिगत बातचीत में शंका जाहिर करते हैं कि इतने लोगों से दुर्व्यवहार करके वे कितने दिन कायम रह सकते हैं. यहां तक कि इंका और जनता दल (स) के उनके सहयोगी भी उनकी आलोचना करने से बचते रहे. उनका मानना है कि वे राजनैतिक प्रतिद्वंदियों की बोलती बंद कराने के हथियार साबित हो सकते हैं. यह तूफान स्वामी द्वारा बिना किसी शर्त के माफी मांगे

की कार्रवाई के खिलाफ दिल्ली हाईकोर्ट में हलफनामा दाखिल करके यह दावा जता दिया कि इस मुद्दे की न्यायिक समीक्षा की जा सकती है. मौजूदा नियमों के मूताबिक ऐसा हलफनामा मंत्री की मर्जी के बिना दाखिल नहीं किया जा सकता.

नतीजा वही हुआ. 8 जनवरी को संसद में न्यायपालिका और विधायिका के संबंधी को लेकर जोरदार हंगामा उठ खड़ा हुआ आखिर प्रधानमंत्री को घोषणा करनी ही पड़ी कि 'संसद ही सर्वोच्च है.' उन्होंने हलफनामे में भी अपेक्षित बदलाव करने की आश्वासन दिया.

यह उफान अभी ठंडा पडा भी नहीं था कि लंदन में छपे स्वामी के बयान ने नया बसेड़ा सड़ा कर दिया. इस बयान में उन्होंने भारत सरकार द्वारा आयात भूलक बढ़ाए



मुंह खोल कारनामे और उद > उन्हें सह-निदे दी. उ के.टी.एस बोफोर्स निकालन माना ज विवाद र के लिए दल के चुटकी हे मंत्री खुट

वन गए

उन्हों वी.एस.

हुए राज

जाने के

डरकर संज्ञा दे डाली. अपने इर कर दी

मिलने '

जाएगा. राजीव सकता ह

ही जा

(उदारी

करने क

पर प्रधा

ऐसा वव

का संवा

सही बत लेकि

जाने के फैसले को विदेशी मुद्रा की कमी से डरकर उठाए गए "हताशा भरे कदम" की संज्ञा देकर सरकार की छीछालेदर कर डाली. 'फाइनेंशियल टाइम्स' को दिए गए अपने इस वक्तव्य में उन्होंने यह भी घोषणा कर दी कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से ऋण मिलने पर इस कदम को वापस ले लिया जाएगा. इंटरव्यू में उन्होंने कहा, "अगर मैं राजीव गांधी और चंद्रशेखर को साथ बैठा सकता हूं जिसका अधिक से अधिक श्रेय मुझे ही जाता है, तो प्रधानमंत्री को इस (उदारीकरण) धारणा के प्रति रजामंद करने का भी मुझे भरोसा है." दबाव पड़ने पर प्रधानमंत्री ने दावा किया कि स्वामी ने ऐसा वक्तव्य नहीं दिया है. लेकिन अखबार का संवाददाता अभी भी अपने समाचार को सही बता रहा है.

दा

हैं

गैर नया

यादा देर

के एक

ा अध्यक्ष

**खिला**फ

त मुद्दे की

. मौजूदा

लफनामा

खल नहीं

को संसद

के संबंधी

ड़ा हुआ

करनी ही

' उन्होंने

करने का

नहीं था न ने नया

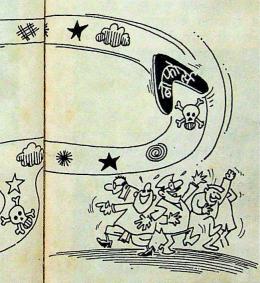
में उन्होंने

क बढ़ाए

दाखिल

ादों की

लेकिन ऐसा नहीं कि बिना सोचे-समझे



#### अपने बारे में स्वामी



मैं संघर्षशील व्यक्ति हूं.
मुरा, मुंदरी और दौलत में
मेरी आसक्ति नहीं है. दूसरे
नेता राजनीति और अपनी
रखैलों में व्यस्त रहते हैं तो
मैं राजनीति में व्यस्त
रहता हूं

मैं देवदूत हूं.

मैंने कहा कि मैं बन सकता हूं और आज मैं कैबिनेट मंत्री हूं. लक्ष्य ऊंचा रखने से कुछ न कुछ हासिल हो ही जाता है. (उनके इस बावे के बारे में याव बिलाए जाने पर कि वे 1990 तक प्रधानमंत्री बन जाएंगे.)

> मेरे जैसे लोग विरले ही होते हैं.

#### स्वामी के बारे में अन्य



सुब्रह्मण्यम स्वामी की बातों और कामों से यह साफ पता चलता है कि हावर्ड विश्वविद्यालय भी

भयंकर भूलें कर सकता है. अरुण नेहरू, पूर्व वाणिज्यमंत्री



उन्हें देखकर मुझे उस रोगी की याद आती है जिसे शौचालय की दीवारों पर गंदी तस्वीरें बनाने में

काफी आनंद मिलता है. रामकृष्ण हेगड़े, कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री



आज के जिस निराशाजनक माहौल में विश्वनाथ प्रताप सिंह और लालकृष्ण आडवाणी जैसे

राष्ट्रीय एकता के विध्वंसक पैदा हो गए हैं, उसमें स्वामी अपनी तमाम बेवकूफियों के बावजूद देश प्रेम के प्रति प्रतिबद्ध व्यक्ति लगते हैं कमलाकांत तिवारी पूर्व इंकाई मंत्री

मुंह बोल देने की कला में माहिर स्वामी के कारनामे सिर्फ यहीं तक सीमित हैं. कुछ और उदाहरण मुलाहिजा फरमाइए:

अन्होंने बोफोर्स मामले में सीबीआई के सह-निदेशक के. माधवन की भी भद पीट दी. उन्होंने अतिरिक्त महान्यायवादी के.टी.एस. तुलसी द्वारा सीबीआई की बोफोर्स संबंधी एफआईआर में गलितयां निकालने की कोशिश की थी. इस मामले में माना जा रहा है कि यह काम बोफोर्स विवाद में फंसे राजीव गांधी की मदद करने के लिए किया गया. इस घटना पर जनता दल के प्रवक्ता एस.जयपाल रेड्डी को यह मंत्री खुद ही न्यायपालिका के लिए खतरा बन गए हैं।

रे उन्होंने कार्यवाहक मुख्य चुनाव आयुक्त वी.एस. रमा देवी के दावे की अनदेखी करते हुए राजीव के जाने-माने चहेते और पूर्व कैबिनेट सचिव टी.एन. शेषन को इस पद पर नियुक्त कर दिया. इस बारे में उनकी दलील बस यही थी कि उन्हें नहीं पता था कि रमा देवी भी इस पद पर बने रहने को उत्सक हैं.

भारत अंतरराष्ट्रीय व्यापार लिमिटेड (बीबीआईएल) के अध्यक्ष एस.वी.एस. राघवन को उन्होंने ठीक उस मौके पर बरखास्त कर दिया जब सार्वजनिक क्षेत्र का यह सबसे बड़ा व्यापार संगठन जापानी व्यापार संगठनों के साथ माल के बदले माल की शर्त पर 800 करोड़ रु. के सौदे पर हस्ताक्षर करने जा रहा था. यही नहीं, बल्कि बीबीआईएल को भी बोरिया-बिस्तर लपेटने का हुक्म सुना दिया गया. और इस बारे में स्वामी की दलील यह थी कि बीबीआईएल न सिर्फ कई सार्वजनिक प्रतिष्ठानों को हड़पने जा रहा था बल्कि वह उनके वाणिज्य मंत्रालय के अधिकार क्षेत्र में भी दखल देने लगा था.

इस सबको देखते हुए इन आरोपों को झुठला पाना मुश्किल हो जाता है कि स्वामी उन्हीं राजीव की उंगलियों पर नाच रहे हैं जिन पर वे कभी लल्लू-पंजू होने का आरोप लगाया करते थे.

मजेदार बात यह है कि पिछले पखवाड़े जिस समय पूरा विपक्ष स्वामी की आलोचना करने में जुटा हुआ था उस समय उनके बचाव का पूरा ठेका इंका सांसद लिए हुए थे. जिस समय स्वामी के अखबारी बयानों के मामले में रिव राय ने विपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी को फिर से बहस गुरू करने की अनुमित दी, उस समय इंका के आधा दर्जन से अधिक सांसद अध्यक्ष के इस फैसले का विरोध करने के लिए सदन के बीचोबीच आ खड़े हुए. तब जयपाल रेड्डी का कहना था, "स्वामी तो चंद्रशेखर के नहीं, राजीव गांधी के समर्थक जैसा व्यवहार कर रहे हैं. वे एक बेहया और बेईमान दलाल हैं."

हालांकि स्वामी ने 'इंडिया ट्डें' के साथ बातचीत करने से इनकार कर दिया लेकिन इससे पहले वे खुद ही कह चुके हैं कि चंद्रशेखर और राजीव को इकट्टे काम करने के लिए राजी करने का अधिकांश श्रेय "मुझे ही" जाता है. इस पूरे दौर में स्वामी को शावाशी देने का काम अकेले इंका नेता कमलाकांत तिवारी ने किया है. पूर्व सूचना एवं प्रसारणमंत्री तिवारी का कहना था, "निराशा और विषाद के

मौजदा वातावरण में जहां एक ओर राष्ट्रीय एकता को तोडने वाले वी.पी. सिंह और आडवाणी जैसे लोग पैदा हो रहे हैं, वहीं स्वामी जैसे लोग अपने भड़काऊ सनकीपन के बावजद अपेक्षाकृत

अधिक देशभिक्त का परिचय दे रहे हैं."

'भडकाऊ सनकीपन' के लिए मशहर स्वामी मौके को देखते हुए उपयुक्त दृश्मन तलाशने में भी काफी माहिर हैं. आजकल इस सूची में सबसे ऊपर अरुण नेहरू और वी.पी. सिंह का नाम है. इन दोनों के बारे में उनका आरोप है कि बोफोर्स की सौदेबाजी में वे भी पूरी तरह शामिल थे. खासकर अरुण नेहरू को तो वे पेटेंट संबंधी गैट कानुनों तथा

जाने के लिए कोसते हैं. लेकिन उनके चिरस्थायी दृश्मनों की सूची भी वरकरार है.

मंत्रालय में फाइलों का ढेर छोड

भाजपा नेता अटल बिहारी वाजपेयी पर वे दारूबाजी और बिस्तरबाजी के आरोप तो लगाते ही रहते हैं. 'इंडिया टडे' ने जब वाजपेयी से संपर्क किया तो उन्होंने स्वामी के बारे में किसी भी तरह की टिप्पणी करने से इनकार कर दिया. कर्नाटक के पूर्व मूख्यमंत्री रामकृष्ण हेगड़े ने तो स्वामी के कुछ आरोपों को लेकर दो करोड रु. का मानहानि दावा ठोका हुआ है.

स्वामी ने हेगड़े और उनके बेटे पर विदेशी वैंकों में पैसा जमा कराने का आरोप लगाया था.

स्वामी के कुछ विरोधियों की मान्यता है कि वे प्रचार की अपनी

जरूरत को घ्यान में रखते हुए भी अपने दूश्मनों का चुनाव करते हैं. 1977 में जनता आंधी के कंधे पर चढकर बंबई से उन्होंने चुनाव जीता लेकिन 1980 में इंदिरा गांधी की वापसी ने उन्हें फिर से गुमनामी के गड्ढे में धकेल दिया. मगर 1982 में इस्राएल की यात्रा के बाद धुमधडाके के साथ वे फिर खबरों में आ धमके. बाद में स्वर्ण मंदिर में भिडरांवाले के साथ भेंट करके उन्होंने घोषणा की कि मंदिर के भीतर किसी तरह के हथियार

#### दोमुहापन

और वर्तमान अतीत प्रधानमंत्रियों के बारे में सुब्रह्मण्यम स्वामी के विचार तेजी से बदलते रहे हैं जो उनके बयानों से जाहिर होता है. इसके कुछ उदाहरणः

> राजीव गांधी भारत के अब तक के सबसे कमजोर प्रधानमंत्री

मैं राजीव गांधी, इंका और उनकी राजनीति का विरोधी हं —जनं. '8**9** 

जहां तक विचारा-धारा का सवाल है, राजीव और मुझमें कम ही मतभेद हैं -नवं. '90



वी.पी. सिंह सभ्य व ईमानदार हैं--मार्च. '88

विश्वनाथ प्रताप सिंह जब राजीव सरकार

में थे तो वे भी बोफोर्स सौदे में शामिल थे - दिसं. '90 वी.पी. सिंह ने मंडल आयोग की रिपोर्ट का इस्तेमाल लोगों के दुखों को मुनाने के लिए

—विसं. '90



चंद्रशेखर संगठन विरोधी व्यक्ति हैं. वे गुटबाजी को बढावा देते हैं उनमें निर्णय क्षमता नहीं है - फर. '84

का भारतीय राजनीति में बड़ा योगदान ---अप्रै. '88

चंद्रशेखर पक्का समाजवादी नहीं माना जा सकता और मैं भी कोई पक्का पूजीवादी नहीं हं.—दिसं. '90

मौजद नहीं हैं. इसी तरह 1986 में उन्होंने भारत में 'तमिल ईलम' का संपर्क कार्यालय खोलने की घोषणा की.

इधर वे सऊदी हथियार व्यापारी अदनान खाशोगी को चंद्रास्वामी की मौजदगी में हार पहनाकर, वी.पी. सिंह के खिलाफ जयप्रकाश नारायण के लिखे कथित पत्र की प्रतियां बांटकर और अमेरिकी खुफिया एजेंसी फेयरफैक्स के हवाले से वी.पी. सिंह के वित्त मंत्रालय द्वारा कछ भारतीय नेताओं खिफयागीरी की खबर उछालकर प्रसिद्धि

प्राप्त कर चुके हैं.

राजनैतिक कलाबाजियों का प्रदर्शन भी स्वामी की बड़ी खासियत रही है. 70 वाले दशक के आरंभ में उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक समर्थक के रूप में तत्कालीन जनसंघ के माध्यम से अपना राजनैतिक जीवन शुरू किया और 1974 में राज्यसभा के सदस्य बने, फिर वे मोरारजी देसाई की शरण में चले गए. तीन साल बाद जनता पार्टी की अध्यक्षता के सवाल पर अपने गुरु चंद्रशेखर के साथ उन्होंने टक्कर ली. 1984 में उन्हें पार्टी से निकाल दिया गया. तब उन्होंने अपना अलग दल बनाने की सोची लेकिन आखिरकार लोकदल का पल्लू पकड़ कर 1988 में राज्यसभा की सदस्यता हासिल कर ली. वी.पी. सिंह के उभरने पर स्वामी को कुछ देर उपेक्षा का शिकार होना पडा. लेकिन इस दौरान राजीव का समर्थन करने वाले कमल धंडोना जैसे आप्रवासी भारतीयों और ललित सूरी जैसे धन्ना सेठों के साथ उनका प्रेम प्रसंग भी चलता रहा. बाद में वी.पी. सरकार के गिरने और चंद्रशेखर सरकार में प्रतिभाशाली लोगों की कमी के कारण वे मंत्री बन गए.

हालांकि स्वामी को राजनैतिक जोड-तोड़ में माहिर माना जाता है लेकिन उनकी इस खुबी के बावजूद जद (स) के कई समर्थक अकेले में यह कहने से नहीं चुकते कि स्वामी पार्टी के लिए मुसीबत बने हए हैं. एक स्थायी और भरोसेमंद आधार की कमी का ही शायद यह परिणाम है कि स्वामी अक्सर उसी थाली में छेद करने लगते हैं जिसमें उन्हें खाना परोसा जाता है. चंद्रशेखर के कुछ विरोधियों की मान्यता है कि वे स्वामी की इन हरकतों की ओर जानवृझकर आंखें मूंदे रहते हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि संसद का ध्यान बडे मुद्दों के बदले छोटे-मोटे मुद्दों पर ही लगा रहे.

अगर यह सच है तो मानना होगा कि चंद्रशेखर ने अपना साथी चुनने में बहुत समझदारी दिखाई है.

मा

जा

ublic Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samai Foundation Chennai and eGangotri

# दूसरी पीढ़ी की अगुआई

पार्टी के हाल में हुए संगठनात्सक चुनावों के बाद दूसरी पंक्ति के वे नेता आगे किए गए जो हिंदुत्व की लहर को नई ऊर्जा और उग्रता से चलाएं

-भास्कर रॉय

उन्होंने

संपर्क

ापारी की पह के

लिखे और

स के त्रालय

पर

सिद्धि

दर्शन

है. 70

ाष्ट्रीय

ल्प में

अपना

1974

र वे

गए. पक्षता

साथ र्टी से

अपना रेकिन

कर

ासिल

वामी

पड़ा.

मर्थन

वासी

धन्ना नलता

गिरने शाली

गए.

जोड-

निकन ) के नहीं

तीबत

सेमंद

थाली

खाना

कुछ

ति की

आंखें

संसद

-मोटे

T कि

बहत



"सरिया ध्वज को क फहराए रखने की जिम्मेदारी नौजवान कंधों पर आ गई है. चुनाव में मैदान मारने की तैयारी कर रही

भारतीय जनता पार्टी ने हाल में हए संगठनात्मक चुनाव में दूसरी पंक्ति के उन नेताओं को आगे किया है जो लालकृष्ण

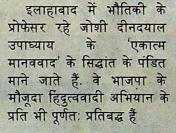
उम्मीदों भरे चुनाव के लिए कमर कस रही है तो इसने अपने प्रदेशों की अध्यक्षता भी ऐसे लोगों को सौंपी है जिन्होंने अपना राजनैतिक जीवन विश्वविद्यालयों से शुरू किया. जिन प्रदेशों में भाजपा एक शक्ति के रूप में उभरी है, वहां के अध्यक्षों की सूची इस प्रकार है: दिल्ली के देशबंध् कॉलेज के अध्यापक ओमप्रकाश कोहली दिल्ली की ताकतवर पार्टी इकाई के अध्यक्ष वने हैं; नौजवान रामविलास शर्मा हरियाण इकाई के; पिछड़े नेता एन एस.

विधायकों वाली इस पार्टी ने दक्षिण में संगठन को व्यापक बनाने पर जोर दिया है. कर्नाटक, केरल और आंध्र प्रदेश में पार्टी ने आधार काफी बढ़ाया है. पार्टी ने इन सांगठनिक चुनावों के माध्यम से यहां के इतने जिलों में अपनी इकाइयां खड़ी की हैं जितनी पहले कभी नहीं बनी थीं.

पार्टी के उद्देश्यों और महत्वाकांक्षाओं के बारे में अधिक स्पष्ट बोलने वाले नेताओं की जमात अब पार्टी की गतिविधियों के केंद्र में आ गई है. ओम-

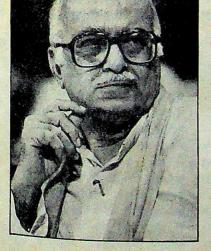
#### मुरली मनोहर जोशी

राष्ट्रीय अध्यक्ष



इस समय हो रहा हिंदू पुनरुत्थान एक राष्ट्र के रूप में भारत की पहचान का ही सबूत है"





आडवाणीः नेपथ्य में

आडवाणी के हिंदुत्ववादी अभियान को नई ऊर्जा और उग्रता से आगे बढ़ाएं. इलाहाबाद विश्वविद्यालय में भौतिकी के अध्यापक रह चुके 56 वर्षीय मुरली मनोहर जोशी को आडवाणी की जगह पार्टी का अध्यक्ष बनाना यही बताता है. दीनदयाल उपाध्याय के दर्शन एकात्म मानववाद के आधिकारिक विद्वान माने जाने वाले जोशी नई लाइन के आडवाणी से भी अधिक उग्र समर्थक हैं.

इतना ही नहीं, पार्टी जबिक अब तक के अपने सबसे महत्वपूर्ण और बहुत

फरंदे महाराष्ट्र के; रामदास अग्रवाल राजस्थान के; लखीराम अग्रवाल मध्य प्रदेश के और ताराकांत झा बिहार इकाई के अध्यक्ष बनाए गए हैं.

कुछ राज्यों में नेता का चुनाव नए क्षेत्रों में पार्टी का आधार बढाने की रणनीति के तहत ही किया गया लगता है. हरियाणा में पहली बार एक गैर-पंजाबी को यह सोचकर नेतृत्व सौंपा गया है ताकि पार्टी की पैठ ग्रामीण इलाकों में भी गहरी हो. इसी प्रकार महाराष्ट्र में ब्राह्मणवाद विरोधी रुख के मद्देनजर पिछड़ी जाति के नेता को पार्टी का अध्यक्ष बनाया गया है. पुरे देश की विधानसभाओं में 562 प्रकाश कोहली कहते हैं, "मैं बचपन से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में रहा हूं और इस बात पर मुझे गर्व है. जो कोई स्वयंसेवक राजनीति में आना चाहता है उसके लिए भाजपा को चुनना स्वाभाविक ही है." अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के अध्यक्ष रह चुके कोहली जैसे दूसरे नए लोग भी आज पार्टी के महत्वपूर्ण पदों पर हैं. पार्टी के संगठनात्मक चुनावों की देख-रेख कर रहे सुंदर सिंह भंडारी कहते हैं, "विस्तार करती पार्टी में नई पीढ़ी सामने आए, यह स्वाभाविक है."

और नई पीढ़ी के साथ ही नई छवि भी बनती है, पार्टी द्वारा शिक्षाविदों और प्रमोद पुष्करण

ओमप्रकाश कोहली

अध्यक्ष, दिल्ली इकाई

व्यवसायी वर्ग की पकड ढीली करने के लिए आडवाणी ने इनका चयन किया.

पीर्टी ने जो नई टीम चुनी है वह इस वैचारिक लड़ाई को आगे ले जाने में सक्षम है"

लखीराम अग्रवाल

अध्यक्ष, मध्य प्रदेश

इनके पूर्नानवीचन से जाहिर है कि व्यवसायी वर्ग की पकड मजबूत हई है

**मि**रा चुनाव यह बताता है कि पार्टी में गुटबाजी नहीं, लोकतंत्र है"



बुद्धिजीवियों को लाना बेवजह नहीं है. आडवाणी ने अपनी पार्टी वालों को यह तो समझा ही दिया है कि घोर हिंदुवादी होने में कोई बुराई नहीं है. और पार्टी मानती है कि हिंदुत्व वाले मुद्दे पर सैद्धांतिक संघर्ष लंबा खिंचने वाला है. अब यह नया नेतृत्व हिंदुवाद के ध्वज को और ऊंचा लहराएगा. कोहली ने कहा, "पार्टी ने जो नई टीम चुनी है वह इस वैचारिक लड़ाई को आगे ले जाने और इसकी अलग पहचान को स्पष्ट करने में सक्षम है."

पार्टी संगठन को कम वर्ष देने के बावजूद जोशी का चनाव सिद्धांतों पर उनकी पकड को देखकर ही किया गया है. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेतृत्व वर्ग का समर्थन पाए जोशी भाजपाई दर्शन के राजनैतिक लक्ष्य को स्पष्ट तरीके से समझते हैं. आडवाणी ने 'छद्म धर्मनिरपेक्षता' का नारा प्रचारित किया, तो जोशी उनसे भी आगे जाकर लोकतंत्र के नेहरूवादी मॉडल की व्यर्थता का नारा देते हैं. वे कहते हैं, "लोकतंत्र की नेहरूवादी मॉडल की संस्थाएं असल में पश्चिम के लोकतंत्रों की नकल भर हैं और इस देश के मानस से मेल नहीं बातीं." सोच-समझकर बोलने वाले जोशी अब धर्मनिरपेक्षता पर जारी बहस में नए जुनून के साथ शामिल होंगे.

दरअसल, संगठनात्मक चुनावों की प्रक्रिया शुरू होने से पहले ही पार्टी के वरिष्ठ नेताओं ने आपस में बातचीत करके अपेक्षाकृत नए चेहरों को सामने लाने का फैसला किया था. खुद आडवाणी भी नए लोगों को लेने के पक्ष में थे. इन चनावों ने पार्टी को नया नेतृत्व तो दे दिया लेकिन इस प्रक्रिया में पार्टी की अनुशासित छवि जरूर बिखर गई. राष्ट्रीय अध्यक्ष का चुनाव तो वड़ी स्गमता से सर्वसम्मति से हो गया पर प्रदेशों में गूटबाजी एकदम खुलकर सामने आई. अधिकांश राज्यों में केंद्रीय नेतृत्व को बीचबचाव करना पडा.

मसलन, दिल्ली भाजपा को नियंत्रित

करने वाली तिकड़ी-मदनलाल खुराना, केदारनाथ साहनी और विजय कमार मल्होत्रा-ने यहां के उपाध्यक्ष रामभज का नाम अध्यक्ष पद के लिए प्रस्तावित किया था. एक अन्य गृट ने दूसरे प्रमुख नेता मेवाराम आर्य का नाम प्रस्तावित किया. बीचबचाव करके आडवाणी ने ओमप्रकाश कोहली के नाम पर समझौता कराया.

जस्थान में भैरों सिंह शेखावत और ललित किशोर चतुर्वेदी के बीच की प्रानी दश्मनी फिर से उभर आई. चतुर्वेदी गूट ने प्रशासनिक और संगठनात्मक क्षमता के लिए विख्यात सतीश अग्रवाल का समर्थन किया, तो शेखावत ने धनी व्यापारी रामदास अग्रवाल को आगे किया. ओडीसा में कई खानों के मालिक अग्रवाल जीत भी गए. एक नाराज कार्यकर्ता ने शिकायत की. "अग्रवाल तो राजस्थान के भी नहीं हैं. पहली बार हमें एक आप्रवासी अध्यक्ष मिला है."

लेकिन जैसी दूषित गूटबाजी मध्य प्रदेश में दिखी, उससे केंद्रीय नेतृत्व परेशान है, क्योंकि यह भाजपा का गढ़ है. पहली बार यहां केंद्रीय नेतृत्व का उम्मीदवार निर्विरोध नहीं चुना जा सका. मुख्यमंत्री सुंदरलाल

#### विभाजन-व्यथा

स्य गठनात्मक चुनाव कराना अगर भाजपा के आत्मविश्वास का परिचायक है तो बिहार इकाई का टटना इसके केसरिया बाने पर कीचड़ के छींटों जैसा है. जब प्रदेश भाजपा के लोग ताराकांत झा के निर्विरोध अध्यक्ष चने जाने पर खुशियां मना रहे थे तब 10 भाजपा विधायकों के गृट के नेता इंदर सिंह नामधारी पास ही में 10,000 लोगों की सभा को संबोधित कर रहे थे. इन विधायकों ने 'संपूर्ण क्रांति दल' नाम से नई पार्टी का गठन किया है.

पार्टी के टूटने के बाद भी झा का चुनाव केंद्रीय नेतृत्व द्वारा दांवपेंच खेलने के बाद ही संभव हो सका. पूर्व विधायक रामदास राय ने अध्यक्ष पद के लिए अपना दावा पेश किया था और कहा था कि अगर उनके नाम पर सर्वसम्मति नहीं होती तो वे चुनाव लडेंगे.

विभाजन के बावजूद प्रदेश भाजपा ने यह जताने की कोशिश की कि जैसे

कुछ हुआ ही नहीं. पार्टी के नेता यशोदानंदन सिंह ने कहा, "नामधारी और उनके समर्थकों द्वारा नई पार्टी बना लेने से उनका असली चेहरा सामने आ गया है. और हम भी राहत महसूस कर रहे हैं, मानो फोड़ा फूट गया हो.

लेकिन जल्दी ही साफ हो गया कि नए दल से मिलने वाली चुनौती के कारण भाजपा को अपनी रणनीति बदलनी होगी. पार्टी ने अभी भी बागियों के लौट आने की उम्मीद से अपने दरवाजे खुले रखे हैं. लगता है संपूर्ण क्रांति दल और जद गठजोड़ की चुनौती के आगे भाजपा राज्य में मंडल या मंदिर के मुद्दे को भूना नहीं पाएगी.

नामधारी बिहार के वनवासी इलाके में काफी प्रभाव रखते हैं. दक्षिण बिहार के 13 जिलों को मिलाकर वनांचल बनाने की मांग नामधारी और दूसरे बागी नेता समरेश सिंह करते रहे हैं.

अब ताराकांत झा के सामने सिर्फ पार्टी को एकजूट रखने की ही नहीं, पूरे दक्षिण बिहार को नामधारी-समरेश सिंह की पकड़ में जाने से रोकने की चुनौती भी है. -फरजंब अहमव पटवा पूर्व मु कडा म वि

> सकने हावी चाहते साल त पिछले आए है अपनी वनवार मिल उ

> > वैसे निर

सि

वार विद

टोर

परि

पाट

रोहित जैन

वाल का

व्यापारी ओडीसा

जीत भी

नायत की,

नहीं हैं.

ो अध्यक्ष

ाध्य प्रदेश

रेशान है,

हली बार

निर्विरोध

सुंदरलाल

नेता

सधारी

र्वे बना

ने आ

स कर

ग कि

ती के

ानीति

गियों

अपने

संपूर्ण

नौती

न या

इलाके

बहार

गांचल

दूसरे

हें हैं. सिर्फ

ों, पूरे

मरेश

ने की

अहमव

#### रामदास अग्रवाल

अध्यक्ष, राजस्थान इकाई

असंतुष्ट गतिविधियों निबटने में वे भैरोसिंह शेखावत की मदद करेंगे

हिमारा लक्ष्य केंद्र में सत्ता पर काबिज होना है. हम कामयाब होंगे ही"

#### ताराकांत झा

अध्यक्ष, बिहार इकाई

इन्हें दक्षिण बिहार को इंदर सिंह नामधारी गुट से बचाए रखना होगा

मधारी के संबंध जनता दल से हैं, यह अब एक खुला रहस्य है"



पटवा के उम्मीदवार लखीराम अग्रवाल को पूर्व मुख्यमंत्री वीरेंद्र कुमार सखलेचा से कड़ा मुकाबला करना पड़ा.

विधानसभा चुनाव के समय टिकट न पा सकने वाले सखलेचा फिलहाल सत्ता पर हावी गुट से अपना हिसाब चुकता करना चाहते थे. उन्हें 36 फीसदी वोट मिले. छह साल तक राजनैतिक वनवास भोगने के बाद पिछले साल ही सखलेचा पार्टी में वापस आए हैं और वे बहुत लोकप्रिय भी नहीं हैं. अपनी अलोकप्रियता और लंबे राजनैतिक वनवास के बावजूद सखलेचा को इतने वोट मिल जाना राज्य भाजपा में गुटबाजी और असंतोष का ही परिचायक है. सखलेचा कहते हैं, "पार्टी नेतृत्व और उसके तौर-तरीकों के प्रति कार्यकर्ताओं की नाराजगी जताने के लिए मैंने चुनाव लड़ा."

किन प्रदेश भाजपा ने इस चुनाव को पार्टी में अंदरूनी लोकतंत्र के प्रमाण के तौर पर पेश किया. अग्रवाल कहते हैं, "मेरा चुनाव यह बताता है कि पार्टी में गुटबाजी नहीं, लोकतंत्र है." लेकिन वास्तविकता यह है कि केंद्रीय नेतृत्व ने टकराव को टालने की भरपूर कोशिश की. पार्टी के एक बुजुर्ग बताते हैं, "आज हमें अपने यहां कांग्रेसी संस्कृति घुसती नजर आ

और सचमूच ऐसे संकेत हैं भी. मध्य प्रदेश में पार्टी के चुनाव ने अनुशासित पार्टी वाली इसकी छवि को काफी क्षति पहुंचाई है. जिस मजबूत जमीन पर प्रदेश भाजपा के दिग्गज-कुशाभाऊ ठाकरे, सूदरलाल पटवा, कैलाश सारंग और सरदार आंग्रे-खड़े थे, वह बहुत कुछ दरक चुकी है. 45 में से 35 जिला इकाइयों के अध्यक्ष भी बदले गए. ग्वालियर में जल संसाधनमंत्री शीतला सहाय और लस्कर के विधायक भाऊ साहब पोटनिस की लड़ाई की चर्चा हर जगह है. प्रदेश अध्यक्ष के चुनाव के दिन भोपाल में मतदान स्थल पर विरोधी गुटों में हिंसक झडपें न हों, इसके लिए बडी संख्या में पुलिस तैनात की गई थी.

अनेक राज्यों में गुटबाजी के उभरने के बावजूद हाल के चुनाव भाजपा की संगठन शक्ति और चुनाव करा लेने के आत्मविश्वास को भी जाहिर करते हैं. सुंदर सिंह भंडारी कहते हैं, "दूसरी पार्टियों में जो कुछ हो रहा है उसे देखते हुए पार्टी में चुनाव करा लेना हमारी एक बड़ी उपलब्धि ही है. जब पद कम हों और दावेदार अधिक, तो कुछ प्रतिद्वंद्विता स्वाभाविक और अपेक्षित ही है."

लेकिन पार्टी बहुत उत्साह में है. आडवाणी जैसी बड़ी हस्ती का स्थान उनसे छोटे कद का नेता ले, इससे पार्टी के लोगों में बहुत उत्साह है और उनका आत्मविश्वास घमंड का रूप ले रहा है.

इन नए नेताओं को पार्टी की मौजूदा स्थिति का भी एहसास है जिसमें भाजपा अन्य पार्टियों से अलग-थलग पड़ गई है और सबकी साझा दुश्मन हो गई है. यह एक मुश्किल स्थिति है. लेकिन आडवाणी और वाजपेयी जैसे कुशल और अनुभवी योद्धाओं के सहारे का, और हिंदुवादी लहरं के ज्वार का एहसास बहुत बड़ा संबल माना जा सकता है.

सिद्धांतविद्

#### अब नई पौध

ए नेतृत्व के साथ ही भाजपा में नए सिंद्धांतिवदों-रणनीतिज्ञों की टोली भी उभर आई है. लालकृष्ण आडवाणी वैसे तो परदे के पीछे से इस टोली का निर्देशन करते रहेंगे पर नए अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी ही इसकी अगुआई करेंगे. पार्टी के सिद्धांतिवद् माने जाने वाले प्रमुख पत्रकार के.आर.मलकाणी और जय दुबाशी इस टोली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे. मलकाणी पार्टी के असबार 'आर्गेनाइजर' के संपादक थे. विद्यार्थी परिषद के नेता और संघ के प्रवारक गोविदाचार्य भी नीति निर्धारण प्रक्रिया के महत्वपूर्ण अंग होंगे. और इस टोली के नवीनतम सदस्य पूर्व अतिरिक्त महाधिवक्ता अरुण जेतली भी विद्यार्थी परिषद के नेता रहे है.

यह टोली अक्सर अनौपचारिक रूप से मिलती है और विभिन्न मुद्दों पर पार्टी का रुख तय करती है. किसी खास मुद्दे पर संवाददाताओं को कौन संबोधित

करेगा, इसका फैसला भी कई बार यही टोली करती है. महत्वपूर्ण मुद्दों पर यही टोली प्रेस बयान भी तैयार करती है और यह किसके नाम जारी हो, यह भी तय करती है. जोशी और आडवाणी को छोडकर बाकी लोग प्रचार से दूर ही रहने की कोशिश करते हैं.

इन लोगों का मुख्य काम विभिन्न मुहों पर पार्टी अध्यक्ष को सुझाव और राय देने का है. अक्सर उनकी राय को थोडे फेरबदल से पार्टी लाइन में शामिल कर लिया जाता है. आडवाणी के आग्रह पर पार्टी मुख्यालय आए गोविदाचार्य का पार्टी संगठन के अंदर भी काफी असर है. परदे के पीछे से काम करने और जोड-तोड के लिए वे विख्यात हैं.

आम मुद्दों के अलावा कानुनी मामलों पर भी जेतली की राय पूछी जाती है. हाल में जब चुनाव चिन्ह वाला विवाद उठा तो वे ही भाजपा की ओर से चुनाव आयोग के सामने उपस्थित हुए थे. नया नेतृत्व जब औपचारिक रूप से कामकाज संभाल लेगा तो टोली में और भी कई नामों के जुड़ने की संभावना - भास्कर रॉय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरदार सरोवर परियोजना

# सब्र का टूटता बांध

परियोजना के विरोधी और समर्थक संघर्ष की पूरी तैयारी के साथ म.प्र.-गुजरात सीमा पर आमने-सामने

- उदय माहरकर, फेरकुआ में

मध्य प्रदेश-गुजरात सीमा पर बसे शांत-से पुरवे फेरकुआ में जैसे महायुद्ध की तैयारियां हो रही हैं. एक तरफ हैं बाबा आम्टे की अगुआई में हजारों बनवासी और पर्यावरण कार्यकर्ता, तो दूसरी तरफ गुजरातियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं की फौज जो उन्हें गुजरात में न घुसने देने को कमर कसे हुए है. लड़ाई का महा है नर्मदा बांध परियोजना.

एक पक्ष अडिंग है कि भडूच जिले में नर्मदा नदी पर सरदार सरोवर परियोजना (एसएसपी) पूरी होकर ही रहेगी. पर बाबा आम्टे के नेतृत्व में दूसरा पक्ष 6,400 करोड़ रु. की इस बड़ी परियोजना को ठप कराने को कटिबद्ध है.

क्रिसमस के दिन मध्य प्रदेश के बड़वानी से संघर्ष-यात्रियों के दल ने खाद्य सामग्री के ट्रकों से लैस अपनी यात्रा शुरू की. गुजरात सीमा पर पहुंचने से पहले ये लोग नर्मदा घाटी से होकर गुजरे जहां दूसरी तरफ बांध समर्थकों की सेना मौजूद थी.

दोनों पक्षों के लक्ष्य स्पष्ट हैं. नर्मदा घाटी में वनवासियों को इस परियोजना के खिलाफ एकजुट करने वाली मेधा पाटकर कहती हैं, "यह परियोजना सामाजिक दृष्टि से अन्यायपूर्ण, पर्यावरण को तबाह करने वाली और आर्थिक रूप से अलाभकारी है."

बांध समर्थक एक कार्यकर्ता इतनी ही शिह्त से इसका जवाब भी देता है, "ये लोग सिर्फ विस्थापितों के हितों की लड़ाई लड़ रहे हैं. पर हम गुजरात के लाखों सूखा पीड़ितों और बाढ़ पीड़ितों के हितों के लिए आवाज उठा रहे हैं. यह बांध लोगों की विपदाओं का एकमात्र समाधान है. यही गुजरात की जीवन रेखा है."

दोनों ही पक्ष शक्ति प्रदर्शन पर आमादा हैं. जैसे ही बांध विरोधी दस्ते ने सीमा की



बांध विरोधी <mark>रैलीः</mark> तीखे तेवर

बाबा आम्टे

# 'जान दे देना पसंद करूंगा'

70 वर्षीय बाब<mark>ा आम्टे ने</mark> पिछले पखवाड़े हमारे संवाददाता **उदय** माहूरकर से बातचीत की. मुख्य अंगः

• आप सरदार सरोवर परियोजना के खिलाफ क्यों हैं ?

मूलतः मैं सभी बड़े बांधों के निर्माण के विरुद्ध हूं क्योंकि ये ऐसे विकास का प्रतीक हैं जो दूसरों की कीमत पर थोड़े से लोगों का भला करते हैं.

 गुजराती लोगों का तो कहना है कि आपने वनवासियों को गलत पट्टी पढ़ाकर उन्हें एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा कर दिया.

यह आरोप निराधार है. ऐसी कोई रंजिश हो इसकी जगह मैं जान दे देना पसंद करूंगा.

 क्या आप यह लड़ाई जीत सकेंगे?
 बड़े बांधों के निर्माण का मेरा विरोध एक दिन जरूर सार्थक होगा.

 अगर सरकार निर्माण को जारी रखने पर अड़ी रही तो?

जान देने तक को तैयार हूं. और मेरी
मृत्यु से वह लक्ष्य जरूर हासिल हो
जाएगा जो मेरे जीवन काल में पूरा नहीं
हो सका. साथ ही मैं विस्थापितों के ऐसे



गहीदी जत्थों का गठन करूंगा जो नर्मदा में जल समाधि लेने का प्रण करेंगे.

• कोई और हल संभव नहीं?

हम तो परियोजना पर फिर से विचार किए जाने की मांग कर रहे हैं. लेकिन पहले जंगलों में पेड़ों की कटाई पर रोक लगनी चाहिए. इसी प्रकार विस्थापितों को हटाए जाने और बांध के तल में चल रहे निर्माण कार्य को रोक दिया जाना चाहिए.

 आपने यह आरोप भी लगाया है कि निर्माण कार्य में भारी पैमाने पर भ्रष्टाचार हुआ है.

सभी ठेकेंदारों ने राजनैतिक पार्टियों की जेबें गरम की हैं. हम चाहते हैं कि अधिकारी बांध का निर्माण करने वाले जयप्रकाश एसोसिएट्स की संपत्ति की जांच करें.

 क्या आपकी यह मांग व्यावहारिक है कि उस परियोजना को बंद कर दिया जाए जिस पर 1000 करोड़ रु. सर्च किए जा चुके हैं?

इस सचाई के महेनजर कि बांध के पूरा होने तक उस पर 11,000 करोड़ क से भी अधिक खर्च आएगा, जिंदगियों से ताल्लुक रखने वाले इस अहम मसले के लिए यह कीमत तो बहत थोडी है.



बांध समर्थकों का प्रदर्शनः विकास की चाह

बाबुभाई पटेल

नर्मदा

र से

रहे हैं.

कटाई

प्रकार

ांध के

रोक

ाया है

ने पर

र्टियों

हैं कि

वाले

त की

हारिक

विया

किए

ांध के

डि मृ

यों से

लि के

# 'विरोधियों के दिमाग बंद हैं

सरदार सागर परियोजना के सबसे बड़े समर्थकों में से एक 80 वर्षीय बाबूभाई जणभाई पटेल हाल में अपने प्रबल विरोधी चिमनभाई पटेल की सरकार में नर्मदा विकासमंत्री का पद स्वीकार करके सुर्खियों में आ गए. मंत्री बनने के बाद उन्होंने पहला काम यह किया कि परियोजना तेजी से आगे बढ़ाई जिससे खर्च में बढ़ोतरी रुक जाए. इस विवादास्पद परियोजना पर संवाददाता उदय माहरकर से उनकी बातचीत के अंशः

• क्या बांध विरोधियों के साथ कोई समझौता संभव है?

हां, अगर मांगें विस्थापितों की समस्या तक सीमित रहें. बांध की ऊंचाई एक इंच भी कम करने का मतलब है कच्छ, उत्तर गुजरात और राजस्थान के सूखे वाले इलाके में पर्याप्त पानी नहीं मिलना.

• बांध विरोधियों का कहना है कि विस्थापितों को देने के लिए पर्याप्त जमीन नहीं है.

पुनर्वास संबंधी हमारा प्रस्ताव क्रांतिकारी है. विस्थापितों में से



भूमिहीन लोगों को भी पांच एकड जमीन दी जा रही है.

• इन कार्यकर्ताओं का यह आरोप भी कि इस परियोजना से कच्छ, सौराष्ट्र और उत्तर गुजरात के सुखाग्रस्त इलाके की मात्र 10 फीसदी जमीन ही सिचित हो पाएगी.

इस बांध से कुल 19 लाख हेक्टेयर जमीन सिचित होगी जिसमें से 13 लाख हेक्टेयर इन्हीं इलाकों और राजस्थान की है. यह बांध मरुस्थल के विस्तार पर भी रोक लगाएगा. जिन 4720 गांवों को पीने का पानी मिलेगा उनमें से 2568 गांव सौराष्ट्र, कच्छ और उत्तर गुजरात के हैं.

 बाबा आम्टे और दूसरे कार्यकर्ताओं ने इतना कड़ा रुख क्यों अपनाया है? उन्होंने दिमाग बंद कर रखा है.

गतिरोध कैसे ट्रटेगा?

सरदार सरोवर परियोजना पर पूरा गुजरात एकमंत है. ये बांध विरोधी सिर्फ एक लाख विस्थापितों के लिए चिंतित हैं. लेकिन हमारी चिंता सूखे वाले इलाके के करोड़ों लोगों और नर्मदा की बाढ से प्रभावित होने वाले 75 लाख लोगों की है जिनमें अधिकांश

फ कूच किया, बांध्र समिर्थन संगठनों ने विकेर कि मुख्यमंत्री विमनभाई पटेल और पर्यदा विकासमंत्री बाबूभाई पटेल के समर्थन से एक भारी रैली आयोजित की. 'बांध बचाओ' की पुकार लेकर आए 80,000 लोगों की रैली से फेरकुआ ठसाठस भर गया. उल्लसित भीड को संबोधित करते हुए मूख्यमंत्री ने बताया, "मैं बाबा को बता देना चाहता हूं कि गुजरात की जनता और संरकार इस मामले पर एकजूट है. उनका संकल्प आज भी उतना ही दृढ़ है, जितना महात्मा गांधी और सरदार पटेल के जीवनकाल में था."

ऐतिहासिक तथ्य बताते हैं कि इस योजना का अतीत ही विवादास्पद रहा है. 1946 में सरदार वल्लभभाई पटेल के दिमाग की उपज इस परियोजना की नींव 60 के दशक के गुरू में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने रखी थी. पहले ही दिन से यह ऐसे विवाद में फंसी कि दशकों गुजर गए. विवाद का मुद्दा यह था कि बांध की ऊंचाई कितनी हो, और परियोजना से विस्थापित होने वाले किसानों और वनवासियों की जिम्मेदारी कौन-सा राज्य लेगा.

इस तरह यहां के लोग इस मुद्दे के साथ ही बड़े हुए हैं और इस बारे में उनकी राय अडिंग है. सीमा पर दोनों पक्षों के बीच वाक्युद्ध उस समय चरम पर था जब नर्मदा समर्थक दल उस जगह जा पहुंचा, जहां नर्मदा विरोधी दल डेरा लगाए था. दोनों तरफ से लाउडस्पीकर से या मुंह-जवाबी जोरदार नारेबाजी हुई. बांध समर्थकों की ओर से चुनीभाई वैद्य ने तो विरोधी खेमे में जाकर यह घोषणा तक कर दी कि सरकार इस मामले पर पुनर्विचार करेगी, यह सोचना ही बेकार है.

विवाद की तह में विस्थापित होने वाले लोगों, जिनमें ज्यादातर वनवासी हैं, भाग्य जुड़ा हुआ है. बाबा आम्टे का कहना है कि वे सिद्धांत रूप से इतनी बड़ी सभी सरकारी परियोजनाओं के खिलाफ हैं. बांध विरोधी कार्यकर्ताओं के साथ चिमनभाई पटेल सरकार के व्यवहारों से क्षब्ध हो कर बाबा आम्टे ने घोषणा की है कि वे पद्मश्री और पद्मभूषण की उपाधियां सरकार को लौटाने जा रहे हैं जो उन्हें उनके सामाजिक कार्यों के सम्मान स्वरूप दी गई हैं.

बांध विरोधियों की सबसे बड़ी शिकायत यह है कि इतने ज्यादा लोगों को पुनर्स्थापित करना असंभव ही होगा. मध्य प्रदेश के निमाड़ क्षेत्र में, जहां आंदोलन को बल मिला है, तकरीबन एक लाख लोग होंगे. इनमें से ज्यादातर विस्थापित वनवासी ही हैं.

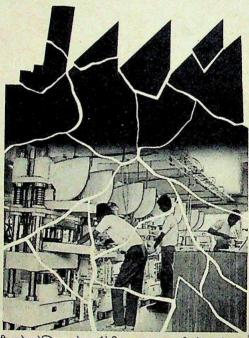
उनकी दूसरी शिकायत है कि यह



# खास कारण हैं कि आपको युनाइटेड इंडिया की मशीनरी ब्रेकडउन डन्श्यूरेन्स पालिसी क्यों लेनी चाहिए.

- 1. उत्पादन से संबंधित
  "महत्त्वपूर्ण मशीनों में से एकं भी ठप हो
  गईं तो उत्पादन का पूरा काम तो रुक
  ही जाता है, उत्पादन का नियत कार्यक्रम
  भी समय पर पूरा नहीं हो पाता."
- 2. बिक्री से संबंधित.

"कंपनी की सफलता या असफलता कंपनी के उत्पादनों के बाजार में लगातार उपलब्ध होने पर बहुत निर्भर करती है. उत्पादन समय पर न पहुंचाए जाने का मतलब है वितरकों और ग्राहकों का विश्वास खो देना और प्रतिस्पर्धियों को पैर जमाने का मौका देना."



- 3. मुनाफे से संबंधित.
  "मशीन बंद, तो समझिए कैश-फ्लो में
  गडबड़ी, पैसे की तंगी. रोज के कामकाज
  में लगी पूंजी, गैर-उत्पादक लागत में
  फंस जाती है. इस सबसे मुनाफा काफी
  कम हो जाता है."
- 4. देखभाल से संबंधित.

  "टर्बाइन्स, कम्प्रेसर्स, पंप्स, जनरेटर्स,
  ट्रांसफॉर्मर्स सभी कीमती मशीनें हैं. इनकी
  रोजर्मर्रा की देखभाल तो मुमिकन है
  लेकिन इनका अचानक ठप हो जाना
  महंगां पड सकता है."

म शीनरी चाहे इलेक्ट्रिकल हो या मैकेनिकल, काम कर रही हो या बंद, उसकी संफाई की जा रही हो या जांच, ओवरहॉलिंग हो रही हो या उसे हटा कर इंश्योर्ड कराई, सीमाओं में ही फिर से बिठाया जा रहा हो — यूनाइटेड इंडिया अचानक हो जानेवाली क्षति या टूट-फूट की स्थिति में भरपाई करती है. मशीनरी ब्रेकडाउन यांनी मशीन के ठप हो जाने से मुनाफे में आ जाने वाली कमी जैसी स्थितियों के लिए इस पॉलिसी की विस्तारित सविधा भी उपलब्ध हो सकती है.

हां तो, आप बड़ी फैक्टरी के मैनेजर हो या लघु उद्योगपति, इस बात का पहले से पक्का इन्तजाम कर लें कि मशीनरी के ठप हो जाने और फिर से पैसा लगा सकने की हालत न होने की वजह से आपका सारा कामकाज ही न रुक जाए.

यूनाइटेड इंडिया की बीमा पॉलिसी को बना लीजिए — अपनी पॉलिसी का अटूट हिस्सा.



यूनाइटेड इंडिया इन्श्यूरेन्स कं. लि.

(जनरल इन्श्यूरेन्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया की सहायक संस्था) २४, व्हाइट्स रोड, मद्रास ६०००१४.

जल्दी करें. आप हमारे 1120 से भी ज्यादा कार्यालयों में कहीं भी संपर्क कर सकते हैं.

HTA 7762

परियोजना बेहद खर्चीली होगी. इसकी निर्माण लागत 11.000 करोड़ रु. तक पहुंच जाएगी. तीसरे, बांध के पानी से सिर्फ 10 फीसदी सूखाग्रस्त क्षेत्र की सिंचाई

उनका आंदोलन इन मुद्दो पर केंद्रित है:

 विस्थापित होने वालों को एकजूट करना.

 परियोजना की मंजूरी वापस लेने के लिए पर्यावरण मंत्रालय पर दवाव डालना.

▶ इसके लिए सबसे ज्यादा अनुदान देने वाले देश जापान के जरिए परियोजना के लिए वित्तीय सहायता न देने का दवाव विश्व

करोड़ रु. की कृषि उपज का नुकसान हुआ. कई लाख पणु कीडे-मकोडों की तरह मर गए. किसान और भूमिहीन मजदूरों की रोजी छिन गई. चुनीभाई वैद्य कहते हैं,

भये खबरें कि इस परि-योजना से न केवल अमीर किसानों और उद्योगपतियों को फायदा होगा, दृष्प्रचार के सिवा कुछ नहीं" चनीभाई वैद्य, बांध समर्थक



पुनर्स्थापित

सरदार सरोवर परियोजना स्थलः विवादों की मार

वैक पर डालना.

762

अभियान को इतनी सफलता तो मिल ही गई है कि विश्व बैंक के एक अधिकारी ने इस परियोजना के विरोध में आवाज उठाई है. उन्होंने तब तक सहायता स्थिगित रखने की मांग की है

"जब तक गुजरात सरकार विस्थापित लोगों से संबंधित कई खामियों को दूर नहीं करती."

दूसरी तरफ बाध समर्थक इन्हें गुजरात के विकास में बाधा मानकर बेहद उत्तेजित हैं. 1984 से 87 तक लगातार पड़े सूखे की भयावह यादें उनके जेहन में हमेशा के लिए वस गई हैं. तब राहत कार्यी पर 1,500 करोड़ रु. खर्च करने पड़े थे. 5,000

यह परियोजना सामाजिक दृष्टि से अन्यायपूर्ण, पर्यावरण को तबाह करने वाली और आर्थिक रूप से अलाभकारी है"

मेधा पाटकर, सामाजिक कार्यकर्ता

"गुजरात की जनता और सरकार दोनों ही इस मुद्दे पर एकमत हैं. ये खबरें कि इस परियोजना से केवल अमीर किसानों और उद्योगपतियों को फायदा होगा, दृष्प्रचार के सिवा क्छ नहीं है."

बांध समर्थक अभियान में कुछ ऐसे सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं, जो पहले परियोजना के कट्टर विरोधी थे. अनिल पटेल जैसे पहले के कट्टर विरोधी 1987 में इसके तब प्रमुख समर्थक बन गए थे जब तत्कालीन मूख्यमंत्री अमरसिंह चौधरी की सरकार ने वनवासियों को पुनर्स्थापित करने के लिए नई योजना की घोषणा की.

> अब पटेल कहते हैं, "इससे ज्यादा लाभदायक योजना तो कोई हो ही नहीं सकती. जो लोग वाकई वनवासियों का हित चाहते हैं, उन्हें करने कार्यक्रम लागू करने में सरकार की मदद करनी चाहिए."

विरोधी कार्यकर्ताओं का कहना है कि वे राज्य सरकार से बात करने की तैयार हैं, बगर्ते सरकार नदीं की तलहटी में निर्माण कार्य रुकवा दे. लेकिन इस पर कोई ध्यान दिए जाने की उम्मीद नहीं है. जिसं पैमाने पर और जिस गति से निर्माण कार्य हो रहा है, वह हैरान करने वाला है. मसलन, प्रतिदिन औसतन 5,600 क्यूबिक मीटर निर्माण कार्य हो रहा है. इसे 7,000 क्यूबिक मीटर किए जाने की उम्मीद है. मजदूर और इंजीनियर तीन शिफ्टों में चौबीसों घंटे काम करते हैं. हर शिफ्ट में 800 मजदूर काम करते हैं. प्रति दिन एक करोड़ रु. खर्च हो

इतनी बडी परियोजना बड़ी गति से आगे बढ़ रही है. यह परियोजना अब जिस मुकाम पर यह हैं, वहां यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि इसके विरोधी इसे रुकवाने में सफल हो सकेंगे. निर्माण जारी रखने के सरकारी फैसले और उसके पीछे भारी जन-समर्थन से बांध विरोधियों की लडाई

कठिन ही होगी. सो, लड़ाई की पूरी तैयारी है. और हजारीं लोग इसमें शामिल होंगे. इस संघर्ष में पुलिस की भाग-दौड़ सबसे ज्यादा द्रवित करती है, जो इसी कोशिश में है कि लड़ाई संगीन न हो जाए.

हरियाणा

# गला घोंटने की कोशिश

#### थॉमसन प्रेस गुंडागर्दी और सरकारी पक्षपात का शिकार



दबाव का पिछले डरावना प्रेत पखवाड़े एक बार फिर उभर आया. 'इंडिया ट्डे' और 'न्युजटैक' प्रकाशक लिविंग मीडिया

इंडिया लिमिटेड का गला घोंटने के हिसक

प्रयासों पर लोकसभा में हंगामा खडा हो गया. इस मामले पर सभी दलों के सदस्यों ने एक साथ आवाज उठाई. उन्होंने 'इंडिया ट्डे' को छापने वाली थॉमसन प्रेस की बिजली काटने और उसके कर्मचारियों के साथ गुंडागर्दी करके आतंक का माहौल बनाने के प्रयासों की कड़ी भर्त्सना की.

इंद्रक्मार गूजराल ने सदन में कहा, "महम कांड के लिए जिम्मेदार व्यक्ति ही प्रेस का मूंह बंद करने की कोशिश कर रहा है." लालकृष्ण आडवाणी का कहना था कि यह लोकतंत्र की हत्या के समान है. इंका नेता पी.वी. नरसिंह राव की राय थी कि प्रधानमंत्री को इस पर तूरंत कार्रवाई करनी चाहिए क्योंकि मामला राज्य सरकार द्वारा दमन का है.

'इंडिया ट्डे' की सहायक फरीदाबाद

थॉमसन प्रेस महम उपचनाव में की गई धांधली को 'इंडिया टुडें' और 'न्यूजटैक' द्वारा उजागर करने के बाद से ऐसे हमलों का निशाना बना हुआ है. उपचुनाव के दौरान हुई हिंसा को, जिसे 'न्यूजटैक' ही कैद कर पाया, वी.पी. सिंह और उनके मंत्रियों ने देखा और चौटाला पर मुख्यमंत्री पद से हटने के लिए दबाव डाला था. यॉमसन प्रेस के 1,800 कर्मचारियों में से ज्यादातर की यूनियन हिंद मजदूर संगठन (एचएमएस) के अध्यक्ष आर.डी. यादव कहते हैं, "चौटाला प्रेस को बंद करवाना चाहते हैं और इसके लिए वे लोक मजदूर संघ (एलएमएस) का इस्तेमाल कर रहे

झगड़े की श्रुरुआत दोनों संघों की आपसी रंजिश के बहाने की गई. चौटाला के एलएमएस ने पहले एचएमएस समर्थकों पर हमले किए. यादव बताते हैं, "एलएमएस लाठी के बूते जमना चाहती है. अन्यथा



विरोध प्रदर्शन करते हुए थामसन प्रेस कर्मचारी

उन्होंने चुनाव की हमारी मांग क्यों नामंजूर की. और प्रशासन उन्हें गूंडा राज फैलाने के लिए शह दे रहा है." इस पर एलएमएस के नेता राजेंद्र शर्मा का जवाब है, "पुलिस हमारी कोई मदद नहीं कर रही.

लेकिन प्रशासन का पक्षपाती रवैया देखने के लिए किसी सबूत की जरूरत नहीं. पुलिस ने एचएमएस सदस्यों को गिरफ्तार करने और उनके खिलाफ मामले दर्ज करने में देर नहीं लगाई, एलएमएस के खिलाफ एचएमएस की एफआईआर की जांच तक नहीं की गई. एलएमएस की गुंडागर्दी के एक शिकार थॉमसन प्रेस के हेल्पर निरंजन सिंह की एक टांग में फ्रैक्चर हो गया और सिर पर गहरी चोट की वजह से उन्हें तीस टांके लगाने पड़े. निरंजन बताते हैं, "एलएमएस के सदस्यों ने, जो प्रेस के कर्मचारी भी नहीं हैं, मुझे पीटा. मैंने हमलावरों के नाम भी बता दिए थे. फिर भी कोई कार्रवाई नहीं की गई.'

एचएमएस सदस्यों का आरोप है कि गुंडे खलेआम प्रेस के कर्मचारियों को डराते-धमकाते हैं. यादव पूछते हैं, "अन्यथा यह कैसे हआ कि एलएमएस का एक भी कर्मचारी अब तक नहीं पकड़ा गया?" जिला पुलिस प्रमुख रेशम सिंह कैफियत देते हैं, "हम किसी का पक्ष नहीं ले रहे. जितनी चोट आई है, हमें तो उसी के हिसाब से मामला दर्ज करना होता है. एचएमएस कर्मचारियों पर ज्यादातर भोथरे हथियारों से हमले किए गए. हम क्या कर सकते हैं? कानुन ही पेचीदा हो गया है."

विहिप

तेवर

निकल

विवाद

वन ग

दलीलं

(विह

कमेटी

प्रदान

गहरा

जनवर

बना त

विधि

देखेंगी

प्रतिनि

समिति

रिपोर्ट

जाता

लड़ाई

वातर्च

खेमों

कट्टरपं

आ गर

विद्वानं

के वि

विहिप

हम प

वातर्च

क्योंकि

है. ने

के सा

हिंसा के अलावा पिछले एक महीने में 15 कर्मचारियों पर हमला बोला जा चका है. 3 जनवरी को थॉमसन प्रेस की बिजली काट दी गई. कार्य निदेशक विनोद कुमार ने बताया, "बिजली काटने की कोई वजह हमें नहीं बताई गई." उपायुक्त मुशील कुमार की कैफियत है, "फरीदाबाद में वैसे भी विजली की कमी है. केवल में खराबी आ गई थी. अब उसे दुरुस्त किया जा रहा है." लेकिन खराबी की सूचना प्रेस को नहीं दी गई. इंका के भजनलाल की टिप्पणी थी, "बिजली जानबुझकर काटी गई."

संसद में भारी हंगामा होने के बाद प्रधानमंत्री ने उत्तेजित सांसदों को बताया कि बिजली तकनीकी गडबडियों की वजह से कट गई. उन्होंने शाम तक बिजली दोबारा जोडने का आश्वासन भी दिया.

लेकिन हिंसा जारी रही. अगली ही सुबह एक और कर्मचारी को पीट दिया गया. कर्मचारी काम छोड दिल्ली स्थित हरियाणा भवन जा पहुंचे और देवीलाल तथा ओमप्रकाश चौटाला के खिलाफ नारेबाजी की. 10 जनवरी को माकपा स संबद्ध सीटू, भाजपा से संबद्ध भारतीय मजदूर संघ और एचएमएस ने फरीदाबाद में चक्का जाम किया. प्रदर्शनकारियों की अजित सिंह, जॉर्ज फर्नांडीस और सुभाषिनी अली ने संबोधित किया.

विरोध के तौर पर पत्रकारों ने एक दिन के लिए संसद की कार्रवाई का बहिष्कार किया. एडीटर्स गिल्ड ने भी विरोध में आवाज उठाई. गृह राज्यमंत्री सुबोधकात सहाय ने माना, "यह बहुत शर्मनाक रहा, पर हरियाणा में सत्ता की चूलें थामे बैठे लोगों पर कोई असर होता नहीं दिखा.

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गया और उन्हें तीस ाताते हैं, प्रिस के ोटा. मैंने थे, फिर

है कि गुंडे ने डराते-न्यथा यह एक भी गया?" फियत देते हे. जितनी हिसाब से एचएमएस हिथयारों सकते हैं?

महीने में जा चुका ने विजली कुमार ने वजह हमे लि कुमार वैसे भी तराबी आ रहा है. ने नहीं दी प्पणी थी,

हो बताया की वजह ह बिजली दिया. अगली ही पीट दिया ली स्थित देवीलाल खिलाफ माकपा से भारतीय **फरीदाबा**द

के बाद

रे एक दिन बहिष्कार विरोध मे सुबोधकांत ाक रहा थामे बैठ दिखा.

ारियों की

सुभाषिनी

(दर बवेजा



प्रसन्न मुद्रा में बातचीत करते नेता

विहिप-बीएमएसी

तेवर तो तने हए पर बातचीत जारी

रे लियों, जुलूसों और कार सेवाओं के धूल-धूसरित और खूरेज मैदाने जंग से निकलकर राम जन्मभूमि-वाबरी मस्जिद विवाद अब बुद्धिजीवियों के बीच वाक्युद्ध बन गया है. पिछले हफ्ते अपनी-अपनी दलीलों के समर्थन में विश्व हिंदू परिषद (विहिप) और वाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी ने ढेर सारे दस्तावेजों का आदान-प्रदान किया.

इसके अलावा दोनों पक्षों के सबूतों की गहराई से जांच-पड़ताल के लिए 10 जनवरी को विशेषज्ञों की चार समितियां बना दी गईं जो ऐतिहासिक, पुरातात्विक, विधि और राजस्व रिकार्ड के पहलुओं को देखेंगी. इनमें विहिप और बाबरी कमेटी के प्रतिनिधि भी होंगे. विशेषज्ञों की ये समितियां 5 फरवरी को अपनी-अपनी रिपोर्ट पेश करेंगी.

प्रधानमंत्री चंद्रशेखर को यह श्रेय तो जाता ही है कि उन्होंने दोनों पक्षों को लड़ाई के मैदान से बाहर लाकर पहली बार वातचीत की मेज पर बैठाया. इन दोनों खेमों में अस्थायी तौर पर ही सही, कट्टरपंथियों की जगह समझदार लोग आगे आ गए और भड़काऊ नारों की जगह प्रमुख विद्वानों, इतिहासकारों और पुरातत्वविद्वों के विचारों, तकों और सिद्धांतों ने ले ली विहिप नेता सूर्यकृष्ण कहते हैं, "अब तक हम पर यह आरोप लगाया जा रहा था कि वातचीत में हमारी दिलचस्पी नहीं है क्योंकि हमारी मांग का कोई आधार नहीं हैं लेकिन अब हमने अपना मामला लोगों के सामने रखने का फैसला किया है."

बाबरी कमेटी के नेता भी सुलह वातचीत की प्रक्रिया के प्रति आशावादी हैं. उन्हें उम्मीद है कि "उनके दस्तावेजों की तरफ लोगों का ध्यान चले जाने से विहिप के लिए इतिहास को तोड़ना-मरोड़ना संभव नहीं रह जाएगा."

लेकिन दोनों पक्षों की फौरी प्रतिक्रिया यह रही कि उन्होंने सरसरी तौर पर एक-दूसरे के सबूतों को नकार दिया. जिससे बातचीत को जारी रखना असंभव हो गया.

स डकाऊ नारों की जगह अब प्रमुख विद्वानों, इतिहासकारों और पुरा-तत्वविदों के विचारों, तर्कों और सिद्धांतों ने ले ली है

विहिप नेताओं का मानना है कि बाबरी कमेटी के दस्तावेज टिप्पणियों से भरे हए हैं और उनमें पूरातात्विक सबूतों का अभाव

दूसरी तरफ बाबरी कमेटी के सदस्य जावेद हबीब का दावा है कि उनके पास उस एफआईआर की फोटोकॉपी है जो कांस्टेबल माता प्रसाद ने मस्जिद में मूर्तियों के रखे जाने के दूसरे दिन 23 दिसंबर 1949 को दर्ज कराई थी.

बाबरी कमेटी के नेताओं ने दिल्ली, लखनऊ और अलीगढ़ के विद्वानों और विश्वविद्यालय शिक्षकों से सलाह-मशविरा किया, शुरुआती 80 पृष्ठ के दस्तावेज के अलावा उन्होंने अपने जवाब के साथ 200

पेश किए. बाबरी कमेटी के सदस्य जफरयाब जिलानी इस समन्वयकर्ता थे.

चूंकि बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी के सभी नेता दिल्ली में नहीं रहते, इसलिए उसके काम में कुछ हद तक रुकावट आई. दूसरी तरफ विहिप पेशेवराना ढंग से काम करने में जूट गई. विहिप से सहानुभूति रखने वाले लोग राम जन्मभूमि-वाबरी मस्जिद से संबंधित दस्तावेजों और जानकारी के साथ पूरे देश से विहिप विशेषज्ञ समिति के पास सुझाव भेजने लगे. इस समिति के पास दस्तावेजों का ढेर जमा हो गया और उसने 21 पेज का एक प्रस्ताव पत्र तैयार किया.

लेकिन दोनों खेमों के अपनी वात पर अड़े रहने और एक-दूसरे के नजरिए का सम्मान न करने के कारण इस मुद्दे के जल्दी हल होने की उम्मीद नहीं दिखती. विहिप अपनी इस मांग से एक इंच भी पीछे हटने को तैयार नहीं दिखती कि मंदिर मस्जिद के स्थान पर ही बनेगा. विहिप के सर्वेसर्वा अशोक सिहल कहते हैं, "हमें ढहाना शब्द पसंद नहीं. हमारी दिलचस्पी तो मूल मंदिर के जीर्णोद्धार में है." उधर हबीब कहते हैं, "हम समझौते के लिए तैयार हैं, झुकने के लिए नहीं."

दोनों पक्षों के कड़े रवैये के कारण आशंकाएं हैं, तो सरकार की ईमानदारी के प्रति भी गलतफहमियां हैं. विहिप और बाबरी कमेटी के प्रतिनिधिमंडल जब अपना जवाव सौंपने गृह राज्यमंत्री सूबोधकांत सहाय के घर गए तो उस समय वे भोंडसी में प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के फार्महाउस में थे. इससे स्पष्ट है कि सरकार इस मामले में मुस्ती दिखा रही है और उसकी दिलचस्पी सिर्फ समय काटने में है. सूर्यकृष्ण कड़वाहट से कहते हैं, "पता नहीं सरकार इस मामले में कितनी गंभीर है."

बातचीत से हटने का दोष हालांकि कोई भी पक्ष अपने ऊपर लेने को तैयार नहीं है पर साथ ही वे अपनी भावी रणनीति भी बना रहे हैं. विहिप समिति 15 जनवरी से इलाहाबाद में शुरू होने वाले हिंदू संप्रदायों के प्रमुखों के तीन दिवसीय सम्मेलन-मार्गदर्शन मंडल-में बातचीत के नतीजे की रिपोर्ट देगी. माना जाता है कि यह सम्मेलन राम जन्मभूमि आंदोलन के लिए नया मार्गनिर्देश देगा.

क्षीण संभावनाओं के बावजूद मंदिर-मस्जिद विवाद पर पहली बातचीत से विहिप और बाबरी कमेटी के बीच की मानसिक खाई को पाटने का महत्वपूर्ण उद्देश्य पूरा हो गया है.

उत्तर प्रदेश

# कटौती कला

#### यादव पर कांग्रेस (इ) का हमला



संसदीय भाषा का अजनबी-सा शब्द 'कटौती प्रस्ताव' (अनुदान मांगों में कटौती का विपक्ष का प्रस्ताव) अब जल्द ही

आम आदमी की जबान पर चढ़ जाएगा. 21 जनवरी से शुरू होने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा के वजट सत्र के दौरान इंका ने कटौती प्रस्ताव पेश करने का नादानी भरा फैसला किया है. वैसे, इंका का एक मकसद पहले ही पूरा हो चुका है. विधानसभाष्यक्ष हरेकृष्ण श्रीवास्तव ने इंका को सदन में विपक्ष की हैसियत दे दी है. अब उसका दूसरा मकसद है मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव की नींद हराम करना. अगर इंका के 94 सदस्यों ने जनता दल (88) और भाजपा (55) के साथ प्रस्ताव के पक्ष में वोट दे दिया तो 121 विधायकों वाली मुलायम सिंह की जनता दल (स) सरकार गिर जाएगी.

पर इंका यही संकेत दे रही है कि वह मुलायम सिंह सरकार को समर्थन देने के



फैसले पर कायम रहेगी. जब इंका विधायक दल के नेता नारायण दत्त तिवारी ने इस बात को सही बताया कि उनकी पार्टी कटौती प्रस्ताव लाएगी, इस पर पार्टी के एक विधायक ने कहा, "एक बार अगर हम कटौती प्रस्ताव ले आए तो इसके खिलाफ वोट दे पाना नामुमिकन होगा क्योंकि यादव को समर्थन के फैसले पर पार्टी के भीतर विद्रोह भड़क उठेगा. और फिर हम जनता को अपने इस फैसले की ठीक से सफाई भी नहीं दे पाए हैं."

पर पार्टी ने जिस तेवर के साथ

जनता दल नेताओं के साथ विधान-सभाध्यक्ष श्रीवास्तव (दाएं से दूसरे)

तिवारी को विपक्ष का नेता बनाए रखने के मुहिम चलाई है उससे तो यही लगता है कि मुलायम सिंह के खिलाफ उसका रवैसा कड़ा हो गया है. जब जनता दल नेता रेवतीरमण सिंह ने इस पद के लिए अपना दावा पेश किया था; उसी समय से इस मुद्दे पर उलझन बनी हुई थी. अपना पक्ष रखने के लिए इंका ने मुख्य सचेतक प्रमोद तिवारी की अगुआई में एक

आईएएस

#### तबादलों की आंच

तर प्रदेश में नौकरशाहों और उ मुस्यमंत्री में ठन गई है. पिछले वर्ष राज्य में नौकरशाही में भारी उलटफेर के बाद आईएएस अधिकारियों के संघ ने मुख्य सचिव को ज्ञापन देकर शिकायत की कि ये अधिकांश तबादलें राजनैतिक कारणों सें किए गए, कि ऐसे तबादलों से प्रशासन कुप्रभावित होता है और अधिकारियों को परेशानी होती है. लेकिन ऐसी शिकायतों से मुख्यमंत्री को कोई फर्क नहीं पडा. अभी 1 जनवरी को उन्होंने 22 अधिकारियों के तबादले कर दिए.

संघ के विश्लेषण के मुताबिक 1990 में 81 प्रतिशत बड़े अधिकारियों के तबादले किए गए. यानी इस बार राज्य के 409 आईएस अधिकारियों में से 334 के तबादले किए गए. इनमें से 53 के तबादले दोबारा किए गए. यहां तक कि 40 में से 38 प्रमुख सचिवों व विभिन्न विभागों के सचिवों,

उ.म. केंडर अधिकारियों के कुल आईएएस के फुल तबादले अधिकारी 1987 515 349 174 1988 524 377 91 1989 538 396 129 1990 538 409 334 औसत कार्यकाल महीनों में अधिकारी 1.1.88 1.1.89 1.1,90 31.12.90

9.73

20.92

22.25

10.04

19.38

14.92

9.41

10.00

9,93

और 13 में से 10 मंडल आयुक्तों के तबादले किए गए संघ के ज्ञापन में कहा गया है, "इन तबादलों से अधिकारियों को लग रहा है कि कामकाज से ज्यादा प्रभावी चीज है उपयुक्त राजनैतिक

> यह बात सच भी है क्योंकि जिन अधिकारियों के तबादले नहीं किए गए उनमें से अधिकांश विवादों से घिरे रहे हैं. इनमें से

चार सचिव भी हैं जिनके खिलाफ सतर्कता विभाग जांच कर रहा है-जापन में कहा गया है कि साल के बीच में तबादलों से अधिकारियों का जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है जिसके कारण उनके कामकाज पर भी असर पड़ता है.

पिछले वर्ष राज्य में हुए दंगों से निबटने में प्रशासन की सुस्ती की एक वजह यह भी हो सकती है कि 63 में से 54 जिलाधिकारियों के तबादलें किए गए. अलीगढ़, आगरा, गोंडा

भेजा. "देखिए समर्थन कुछ स् लिखित कटौती बोट दे ने कह शतों ब इस शतों

प्रतिनि

आधार बनाने अयोध्य दंगों के न्यायाध न्यायिक पर

भीतर

जनता

हस्ताक्ष की म असंतुष्य दावा संभावि अग्निहो दयाल-पद पर ठंडा ज

और जिलाधिय गए, एक कैसे उम्म में ही मैं लूंगा जो हों."

लेकिन इन तबाव एक विराह हम आई शासको है पूर्व कांग्रेश है मुलाय मुश्किलें जगह सत्त संघ ने

संघ ने बनाने की राजनैतिब अपनी कु मुख्यमंत्री की फुरसा

19.08

11.07

जिलाधीश

आयुक्त

सचिव

प्रतिनिधिमंडल विधानसभाष्यक्ष के पासि पासि by Arva Samai Foundation Chennal and eGangotri भेजा. प्रमोद तिवारी ने अध्यक्ष से कहा, "देखिए कि इंका कटौती प्रस्ताव का कैसे समर्थन करती है." बाद में जनता दल के कुछ सदस्यों ने मांग की कि इंका को लिखित वादा करना चाहिए कि वह कटौती प्रस्ताव लाएगी और इसके पक्ष में वोट देगी. अपने फैसले में विधानसभाष्यक्ष ने कहा कि वे आश्वस्त हैं कि इंका इन शर्तों को पूरा करेगी.

इस बीच मुलायम सिंह ने इंका की शर्तों को पूरा करने के लिए आर्थिक आधार पर आरक्षण के लिए आयोग बनाने की घोषणा की है. इसके अलावा अयोध्या में हुई मौतों और सांप्रदायिक दंगों की जांच के लिए उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को नियुक्त करने के बारे में न्यायिक राय भी मांगी है.

पर मुलायम सिंह की स्थिति पार्टी के भीतर भी खराब हुई है. 2 दिसंबर को जनता दल (स) के 14 विधायकों के हस्ताक्षर से जारी बयान में उनसे इस्तीफे की मांग की गई! बाद में लखनऊ में असंतुष्टों ने 30 विधायकों के समर्थन का दावा किया मुलायम सिंह ने तीन संभावित विद्रोहियों—राम अग्निहोत्री, अनवर मुहम्मद और प्रभु दयाल-को सार्वजनिक निगमों में अध्यक्ष पद पर विठाकर बगावत को कुछ हद तक ठंडा जरूर कर दिया. —दिलीप अवस्थी

सरे)

खने के

गता है

रवैया

न नेता

अपना

स मुद्दे

रखने

प्रमोद

ातों के

में कहा

यों को

ज्यादा

नैतिक

क्योंकि

ले नहीं

धेकांश

नमें से

खलाफ

हा है.

ाल के

यों का

जिसके

असर

रंगों से

नी एक

63 में

बादले

गोंडा

एक

फतेहपुर जैसी जगहों जिलाधिकारी आठ महीने में ही बदल दिए गए एक जिलाधिकारी पूछते हैं, "आप कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि चंद महीनों में ही मैं किस तरह ऐसे संपर्क कायम कर लूंगा जो दंगों को रोकने के लिए सहायक

लेकिन बड़े पैमाने पर किए जाने वाले इन तबादलों के पीछे मकसद क्या होता है. एक वरिष्ठ सचिव का कहना है, ''लगता है हम आईएएस अधिकारी ही राजनैतिक शासकों के मुख्य निशाना बन गए हैं." एक पूर्व कांग्रेसी मंत्री के मुताबिक, "हो सकता रे मुलायम सिंह यादव उन लोगों के लिए मुक्तिलें छोड़ जाना चाहते हैं जो उनकी जगह सत्ता में आने वाले हैं."

संघ ने तबादलों की एक उपयुक्त नीति बनाने की मांग की है कहा है कि तबादले राजनैतिक मकसद से न किए जाएं. लेकिन अपनी कुर्सी बचाने की फिक्र में लगे पुस्यमंत्री को इन बातों की ओर घ्यान देने की फुरसत कहां है. —विलीप अवस्थी

अर्तकथा इंद्रजीत बधवार

# सुनकर गुनते भी हैं

त्तर प्रदेश में आगरा से बदायूं जिले के बीचोबीच काठगोदाम तक जाने वाली छोटी रेल लाइन से आधा किमी दूर शाम के कुहासे से ढ़का, संकरी गलियों तथा झोंपड़ीनुमा कच्चे-पक्के मकानों का गांव बसोमा अयोध्या से बहुत दूर है. ठाकुर, ढीमर, मुराव, अहीर और कुछ मुसलमान परिवार यहां बसते हैं. उनके शाश्वत जीवन-चक्र में वर्ष का यह समय गेहूं, आलू, सरसों के नवजात पौधों को पानी देने और फूलगोभी तथा लाल, धवल शलगम, गहरे लाल गाजर, हरी मिर्च तोड़कर उन्हें पड़ोस की मंडी में मंगलवार के बड़े बाजार में पहुंचाने का होता है.

लेकिन हिंदू धर्म के उग्र उन्मेष के इस वर्ष में बसोमा की नियति कुछ और बड़ी बातें करने की थी. इसी तरह कुछ किमी पूर्व में स्थित अब्दुल्लागंज और करीब 15

किमी उत्तर में स्थित खीरिया, भूरा, भद्रोल जैसे गुमनाम गांवों से भी उम्मीद की जा सकती थी. भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी ने रथ यात्रा शुरू की तो उन्होंने कहा कि ऐसे ही गांव देश के आधुनिक इतिहास में सबसे बड़े जनांदोलन के मार्गसूचक बनेंगे.

हिंदू भावना उभारने और देश के किसानों में तीव्र जागृति पैदा करने की अपनी योजना के तहत भाजपा अयोध्या में मरे कार सेवकों के अस्थि अवशेषों को दूर-दराज के गांवों तक ले गई. नए साल के श्रुरुआती दिनों में भाजपा के विधायक और कार्यकर्ता 'शहीदों' के अस्थिकलश के साथ जीपों, मोटरसाइकिलों में इन गांवों तक पहुंचे. इन गाडियों पर लगे माइकों से

आवाज गूंज रही थी कि हिंदुत्व खतरे में है. गांव की चौपालों तथा स्थानीय मंदिरों

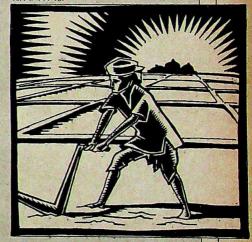
पर की गई सभाओं में भारी भीड़ जुटी.

भीड़ शांतचित्त होकर सुन रही थी. कुछ बैठे थे, कुछ लाठियों के सहारे झके थे. वक्ता नारा लगाता 'बोलो सियाराम चंद्र की ....' और भीड़ में गूंज उठता 'जय'. यह नारा तो वे हमेशा से लगाया करते हैं. भाजपा के कार्यकर्ता इसे अपनी सफलता मान रहे थे. लेकिन सभा खत्म करते हुए उन्होंने लोगों की उस फुसफुसाहट की ओर शायद ध्यान नहीं दिया, "ठीक है, पर डीजल की कीमतों पर क्या कहना है? ट्यूबवेल तो सूखे पड़े हैं." "कर्ज से छुटकारा नहीं है" वगैरह.

ताजा इतिहास के महान जनांदोलन के नए ग्रामीण रंगरूट बिखरने लगे. अब वे आपस में बात कर रहे हैं. भकोरा के महेश्वर सिंह कह रहे हैं, "क्या मजाक है! हिंदू अपने मृतकों के अवशेषों को बड़े जतन से रखते हैं. इन शहीदों के परिवारवालों ने कैसे मंजूर किया कि उनके अवशेष लेकर राजनीतिक लोग देश भर में घूमें?"

फतेहपूर गांव के प्रधान शेर सिंह हिकारत से कहते हैं, "हमें क्या मालूम कि उन कलशों में क्या है? किसकी अस्थियां हैं उनमें?" हरिजन जाति जाटव के हरदयाल कहते हैं, "हम गांव के मंदिर में तो घुस नहीं सकते, फिर हमें अयोध्या में राम मंदिर से क्या वास्ता?" रुन्तुड्रया के रामफल कहते हैं, "राम तो हमारे दिल में बसते हैं, मंदिर में नहीं. हमें अपने धर्म के बारे में वोट चाहने वाले राजनैतिक लोगों से जानने की जरूरत नहीं है. वे महंगाई कम क्यों नहीं करवाते?"

मैंने महेश्वर से पूछा, सभा में इतनी भीड़ क्यों जुटी? बाजार में गाजर, शलगम, हरी मिर्च पहुंचाने के लिए गाड़ी भरते हुए उन्होंने मजाक में कहा, "गांववाले हमेशा घुमंतू नौटंकी दलों के लिए उमड़ पड़ते हैं."



पंजाब

#### मुश्किल राह, अहम पड़ाव

#### समाधान की एक और कोशिश पर अशुभ छाया



पंजाब के साथ अजीब सेल दोहराया जाता रहा है. केंद्र में नई सरकार आती है. पंजाब की गुत्थी सुलझाने के लिए जोर-शोर से

तैयारियां होने लगती हैं. और कुछ ही दिनों बाद सब कुछ बिखर जाता है. फिर सारे प्रयास धराशायी. उत्साह की जगह उदासीनता घर जाती है.

राजीव गांधी सत्ता में आए थे, तब यही हुआ था. उसके बाद विश्वनाथ प्रताप सिंह के समय में भी यही कहानी दोहराई गई. और अब बारी चंद्रशेखर की है. नए प्रयासों से जगी उम्मीदें तब विरोध में बदल गईं जब पिछले नेताओं की लीक से हटकर प्रधानमंत्री चंद्रशेखर ने अकाली नेता सिमरनजीत सिंह मान से सार्वजनिक मुलाकात की और उनका विवादास्पद जापन लिया.



पिछले वर्ष 26 दिसंबर को संयुक्त अकाली दल की एक बैठक में मान को केंद्र से बात करने का अधिकार सौंपा गया. इसके दो दिन बाद वे प्रधानमंत्री से मिले. लेकिन विरोध की जड़ वह ज्ञापन है जिसमें कहा गया है कि "सिखों के सामने यही रास्ता बचा है कि वे भारत द्वारा

चंद्रशेखर के साथ मान

मान्य अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत आत्म-निर्णय के अधिकार की मांग करें." मान ने बताया कि यह मांग संविधान की धारा 51 के तहत है. लेकिन वे चतुराई से यह अनदेखी कर गए कि यह धारा

सिमरनजीत सिंह मान

# 'हक चाहिए'

पुलिस अधिकारी से अकाली नेता बने सिमरनजीत सिंह मान विवादों को उछालने की कला में माहिर हो गए हैं. सबसे ताजा विवाद आत्मिन्णिय के अधिकार की उनकी मांग को लेकर उठा है. पिछले पखनाड़े प्रमुख संवाददाता कंवर संधू से हुई उनकी बातचीत के कुछ अंशः

 आप यह कहते रहे हैं कि विश्वताथ प्रताप सिंह सरकार के अनुभव के बाद आप केंद्र से कोई संपर्क नहीं रखेंगे, फिर आप प्रधानमंत्री से बात करने क्यों गए?

इसकी कई वजहें हैं. एक तो यह कि चंद्रशेखर ने खुद बातचीत की इच्छा जाहिर की थी. अगर मैं नहीं जाता तो पहल भारत सरकार के हाथ में रहती. दूसरे, सिख कौम ने आत्मनिर्णय के मुद्दे पर बातचीत का सर्वसम्मत अधिकार मुझे दिया. तीसरे, मैं सिखों के मामले पर ध्यान केंद्रित कराना चाहता था.

 आत्मिनिर्णय की मांग समाधान की राह में आड़े नहीं आएगी?

यह मांग नहीं, अधिकार है.

 पर क्या यह भारतीय संविधान के दायरे से बाहर नहीं है?

नहीं. 1979 में भारत सरकार आत्मिनर्णय के अधिकार के बारे में संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रस्ताव मान चुकी है. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 में भी कहा गया है कि भारत सरकार जिस अंतरराष्ट्रीय समझौते पर दस्तखत करेगी, उस पर अमल करेगी.

 आत्मिनिर्णय के अधिकार से आपका अमिप्राय क्या है?

खाड़कुओं को बातचीत के लिए आने दीजिए, फिर हम बताएंगे कि इसका मतलब क्या है.

 प्रधानमंत्री से बातचीत के बाद आपकी राय में क्या होना चाहिए? अब तो गेंद केंद्र के पाले में है और अगले दौर में खाड़कुओं को भी शामिल किया जाना चाहिए.

• तब आपकी क्या भूमिका होगी? बेहतर है केंद्र खाड़कुओं को सीधा

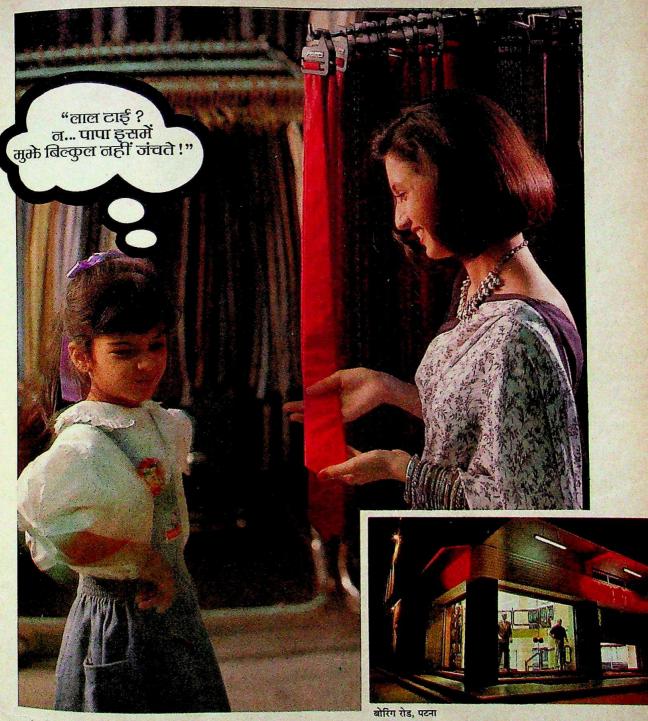
बहुतर ह कद्र खाड़कुआ का साधा न्यौता दे. पर अगर मुझे कहा गया तो मैं मदद के लिए उपलब्ध हं.

बातचीत पर जो आलोचनाएं हुई
 हैं, उसके बारे में कुछ कहेंगे?

इंका, भाजपा और वामपंथी बताएं कि ज्ञापन में मैंने जो कहा है, उस पर उनका क्या विरोध है. वे कह रहे हैं कि मान ने आतंकवादी गतिविधियों की निंदा नहीं की है. सचाई यह है कि मैंने हमेशा आतंकवाद की निंदा की है.

 वी.पी. सिंह की तुलना में आप चंद्रशेखर को कैसे आंकते हैं?

चंद्रशेखर अधिक खुले दिल और आत्मिविश्वास वाले व्यक्ति हैं. क्रांतिकारी और विद्रोही भी हैं. उनमें खाड़कुओं सरीखा उत्साह है. मुझे चुनाव के जरिए अमन और बातचीत पर भरोसा है, गोलियों पर नहीं.



लाल न पसंद, तो न सही. रेमण्ड रीटेल शॉप में तो रंगों की बहार बिछी है – सूटिंग. शर्टिंग. ट्राउज़रिंग. सफ़ारी फ़ैब्रिक्स. कम्बल. *पार्क एवेन्यू* रेडीमेड. एक्सेसरीज़ और टॉइलेटरीज़.



जियार

ात्म-न ने यारा यह यारा

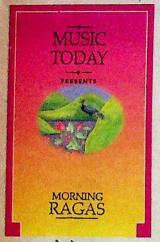
रेम्एड

पुरुषों के लिए भारत की सर्वोत्कृष्ट श्रृंखला - अब ६८ शहरों में.

## इाडया दुड प्रस्तुात म्यूराजक दुड.

Digiti भोर स्ने अधिकात्रियं जका स्रोता स्थान

दिन से रात तक के रंगों की अनूटी संगीत यात्रा. एक-एक घंटे के 16 ऑडियो कैसेटों पर प्रतिष्ठित संगीतकारों के चुनिंदा राग उनके विशिष्ट अंदाज में, विशुद्ध खर की पकड़ डिजिटल पद्धति से तैयार कैसेटों पर और आपके घर डाक अथवा कृरियर से पाने की सुविधा.



### भोर के राग

भाग-1 (कोड ए 90001) ललित

राजन और साजन मिश्र (गायन) भैरव

शाहिद परवेज (सितार) अहीर भैरव

श्रुति सदोलिकर (गायन)

माग-2 (कोड ए 90002)

मियां की तोड़ी अमजद अली खां (सरोद)

भटियार पंडित जसराज (गायन)

विभास

श्रुति सदोलिकर (गायन)

भाग-3 (कोड ए 90003) जौनपुरी

पद्मा तलवलकर (गायन) बिलासखानी तोडी

अमजद अली खां (सरोद) देसी तोडी

हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)

भाग-4 (कोड ए 90004)

कुकुम बिलावल मिल्लकार्जुन मंसूर (गायन) देशकार

शाहिद परवेज (सितार) **मै**रवी पद्मा तलवलकर (गायन)

**MUSIC** TODAY PRESENTS **AFTERNOON** RAGAS

### दोपहर के राग

भाग-1 (कोड ए 90005)

शुद्ध सारंग अमजद अली खां (सरोद)

मिल्लकार्जुन मंसूर (गायन) गौड़ सारंग

पद्मा तलवलकर (गायन)

भाग-2 (कोड ए 90006) बृंदावनी सारग

हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी) मधमद सारंग

पंडित जसराज (गायन)

धनी

शाहिद परवेज़ (सितार)

भाग-3 (कोड ए 90007) भीमपलासी

मिल्लकार्जुन मंसूर (गायन) पटदीप

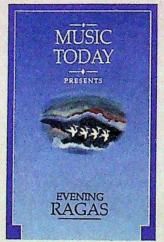
श्रुति सदोलिकर (गायन) मांड

शाहिद परवेज (सितार)

भाग-4 (कोड ए 90008) मुल्तानी

राजन और साजन मिश्र (गायन)

मधुवंती हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी) पोलू अमजद अली खां (सरोद)



### सांध्य के राग

भाग-1 (कोड ए 90009)

माखा पंडित जसराज (गायन)

श्री

श्रुति सदोलिकर (गायन) हंसध्वनि शाहिद परवेज (सितार)

भाग-2 (कोड ए 90010) पूरिया

राजन और साजन मिश्र (गायन) श्याम कल्याण

अमजद अली खां (सरोद) नंद

मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)

भाग-3 (कोड ए 90011) शुद्ध कल्याण

पद्मा तलवलकर (गायन) मांझ खमाज

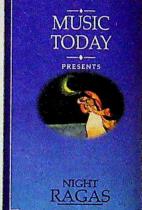
हरिप्रंसाद चौरसिया (बांसुरी) दुर्गा

राजन और साजन मिश्र (गायन)

भाग-4 (कोड ए 90012) यमन

शाहिद परवेज़ (सितार) शंकरा पंडित जसराज (गायन)

मिश्र घारा श्रुति सदोलिकर (गायन)



फ़िनिश

सुपरफ़

के वॉ

### रात्रि के राग

भाग-1 (कोड ए 90013)

शुद्ध नट मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन) केदार

पद्मा तलवलकर (गायन) झिंझोटी

हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)

भाग-2 (कोड ए 90014)

बागेश्वरी

पंडित जसराज (गायन) हमीर

पद्मा तलवलकर (गायन) तिलक कामोद

शाहिद परवेज़ (सितार) भाग-3 (कोड ए 90015)

मालकौंस हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)

मारु विहाग श्रुति सदोलिकर (गायन) जैजैवंती

राजन और साजन मिश्र (गायन)

**भाग-4 (कोड ए 90016)** नायकी कान्हड़ा श्रुति सदोलिकर (गायन)

देश पंडित जसराज (गायन)

दरबारी अमजद अली खां (सरोद)

(टैक्स पैकिंग और भेजना शामिल) @ 45 के. प्रति कैसेट

### विशेष पेशकश

इंडिया दुडे की एक रेगुलर 'एड्रेसबुक' मुफ्त. मुजिक टुडे के 16 केसिटों के एक साथ आईर पर आप पाएंगे 85 ह. मूल्य की एक रंगुलर इंडिया टुडे एड्रेस बुक मुफ्त.

इंडिया टुडे 'कंपैक्ट एड्रेंस बुक' मुफ्त प्युक्ति टुडे के 8 से 15 कैसेटों का आर्डा एक साथ देने

पर आप पाएंगे 50 ह. मूल्य की एक इंडिया दुडे कंपैक्ट एड्रेस नुकः मुपत

मुफ्त कंपैक्ट

- \* दिल्ली से बाहर के स्थानों के चेकों के साथ 10 रू. की अतिरिक्त ग्रीश
- मुंबई, कलकता, मद्रास और दिल्ली के चेक/हमांड हाफ्टों का एमआईसीआर होना आवश्यक,
- कैसेट आपके घर रजिस्टर्ड इक या कृरियर से पहुंचाए जाएंगे. \* डिलीवरी के लिए कृपया 3-6 सप्ताह का समय दें.
- " उपहार देने के लिए कृपया उपहार पाने वाले का नाम और पता संलग्न ऑर्डर फार्न पर लिखकर थेते. 4, 8, 16 या सम्मित्रण कैसेटों के उपहार ऑर्डरों को विशेष आकर्षक डिब्बों में पैक करके भेत्रे जायेंगे. मुफ्त एड्स
- बुक अनया विवास न होने पर दाता की भेजी जायेगी. पुप्त एहें देव वींग मुक्कि दुढ़े के उम करे और म्यूजिक दुढ़ें , पोट बॉक्स ने 29, नई हिन्दी-1000 के पत्ते पर भेजें.
- कृपवा ऑर्डर फार्म कम्प्यूटर प्रोसेसिंग सुविधा हेतु अंग्रेजी मे ही मरे अगर संलयन ऑर्डर फार्म न मिले तो अपना ऑर्डर अपने नाम, पता और देव राशि के साक प्यतिकार है blic Domain. Guru पोप्ट बॉक्स-29, वह दिल्ली-110001 को फेब दें है दर व पेसक्स सिर्फ भारत में ही लागू है.

	4	आंडर फाम
कोड नं.	कैसेट संख्या	मैं 'मुज़िक दुढ़े' कैसेटों के लिए नीचे लिखे विवरण के अनुसार 45 ह. प्रति कैसेट की दर से
ए 90001		(टैक्स, पैकिंग और भेजना शामिल) ऑर्डर देना चाहता/चाहती है।
ए 90002		मेरे लिए 🛘 उपहार 🔲
ए 90003		
ए 90004		म्यूजिक दुढे को देव ह. का रेखांकित चेक (दिल्ली से बाहर के ऑर्डेर्प
ए 90005		क लिए 10 है और जोर्दे। विसंह हाएई संस्थात का उस तमे हैं।
ए 90006	-	आहर किए कसटा की संख्या
ष् 90007		कुल देव राशि
₹90008		My Name
₹90009		Address
<b>Q 90010</b>		
ए 90011		Pin Phone No.
ए 90012	-	Gift forPhone No
¥ 90013		
7,90014	III	Addression, Haridwar
Kul Kangi	ri Collect	lon, Harldwar
ए 90016		Pin

कैसेटों पर

013)

॥यन)

ायन) ांसुरी)

014)

ान) ायन)

(M

015) ांसुरी)

पन)

गायन) 016) ान) न) रोद)

त्सेट की दर से

के ऑडेंग्रें

Digitized by Arya Sa

ndation Chennai and eG

पैरीवैर से रचें रंगबिरंगा संसार !

फ़िनिश चिकनी चमकदार. सांचे में ढले आकार. पैरीवैर सुपरफ़ाइन और पैरीवैर कैस्केड में से चुनिए. अनेक प्रकार के वॉटर क्लोज़ेट, टंकियां, टब, वॉश बेसिन वगैरह.

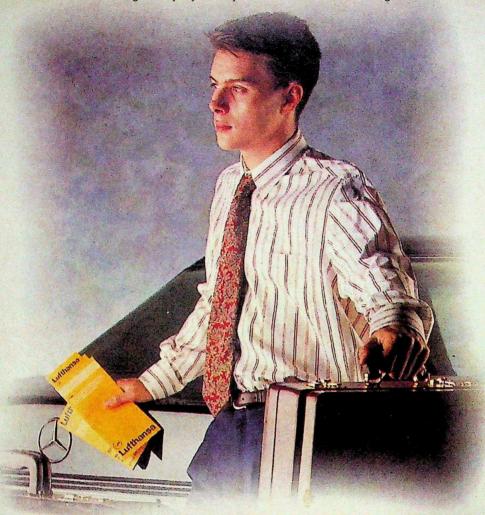


आपकी पसंद के लिए बीस से ज्यादा मनभावन रंग. हल्के गुलाबी से लेकर सुर्ख लाल तक, झिलमिर मोतिया, प्यारे ऑफ़ व्हाइट और प्लेटिनम ये से लेक अपने में अलग कॉफ़ी-ब्लैक और धूलिया भूरे तक. य फिर पानी से मेल खाते नीले और हरे रंगों की कोमल मनचाही किस्में.

अपनी कलपना का भी भरिए रंग! काली पृष्ठभूरि पर सफ़ेद मूढ़ा, मोतिया पर लाल दरी... बस इसी तरह त बनेगा ग्लैमररूम ! पैरीवैर से बना ग्लैमररूम !!

आई.डी. पेरी (ईंडिया) लिमिटेड सिरीमक्स डिवीज़न, डेर हाउस, मद्रास-600 011.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



## Zodiac for Hans Schmidt

The latest to capture the imagination of the Germans is not automobiles.

At 220 km/h, the Germans are sitting up and noticing the fastest moving fashions to hit the road. Zodiac. Exported to Europe's leading fashion houses. The international look of the season is now parked in India. Slip into gear. And you'll appreciate why Herr Schmidt now chooses to test drive the latest - Zodiac.

The soul of Europe. The spirit of Zodiac.

SHIRTS TROUSERS TIES SOCKS BELTS WALLETS HANDKERCHIEVES Only 10% of Zord white December of Handker Chieves and India.



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा से संबंधित है, न कि देश के आंतरिक मामलों से

दूसरी पार्टियों ने ज्ञापन का विरोध करने में जरा भी देर नहीं लगाई. भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी ने आत्म-निर्णय के अधिकार को 'खतरनाक सिद्धांत' बताया तो माकपा ने इसे "आतंकवादियों के सामने घुटने टेकना" करार दिया. इंका अध्यक्ष राजीव गांधी ने तो धारा 51 को 'अप्रासंगिक और अव्यावहारिक' ही घोषित कर दिया.

चंद्रशेखर के काम उनकी बातों की बनिस्बत अधिक प्रभावी होते हैं. बातचीत शुरू होने से कुछ दिन पहले ही वे पंजाब के अलोकप्रिय पुलिस प्रमुख कंवरपाल सिंह गिल को केंद्र में ले आए. राज्य के मूख्य सचिव के पद पर एस.एल. कपूर की जगह आयात-निर्यात के मूख्य नियंत्रक तेजेंदर खन्ना को लाया गया है.

इस बीच मान मूश्किलें बढ़ाते ही जा रहे हैं. बाकी अकाली गुट चुप्पी साधे हुए हैं. लेकिन बादल गुट के एक नेता ने 'इंडिया टुडे' को बताया, "मान को यह एहसास हो जाने दीजिए कि इससे पहले हम अगर सफल नहीं हुए तो इसलिए नहीं कि इसके लिए कोशिशें नहीं की गईं.' यानी मान बातचीत के इस रास्ते पर फिसल भी सकते हैं.

अकाली दल की एक मांग यह भी है कि बातचीत में शामिलं होने के लिए उग्रवादियों को भी औपचारिक निमंत्रण भेजा जाए. उधर, उग्रवादी नेता गुरचरण सिंह मनोचहल ने पंजाब के एक दैनिक में हस्ताक्षरयुक्त लेख छापा कि सभी अकाली गुट उनके अधीन हो जाएं. इसके बाद नए प्रयासों को झटका देने के लिए एक नई पार्टी 'बब्बर अकाली दल' का गठन 25 दिसंबर को किया गया.

जैसी कि उम्मीद थी, मान ने चंद्रशेखर से मिलने की पहल खुद नहीं की. दोनों को बातचीत की मेज तक पहुंचाने का श्रेय जनता दल के दो कार्यकर्ताओं दर्शन सिंह जिहा और कैप्टन विक्रम सिंह, और चंडीगढ़ के एक वकील रंजन लखनपाल को है इसके अलावा केंद्रीय नागरिक उड्डयन राज्यमंत्री हरमोहन धवन ने भी मान से गुप्त बातचीत की.

चंद्रशेखर-मान की बातचीत से समाधान की राह निकल सकती है बशर्ते अकाली दल बातचीत में व्यावहारिक नजरिया अपनाएं. अन्यथा यह बातचीत कहीं नहीं पहुंच पाएगी. केंद्र की मौजूदा सरकार वैसे ही पंगु है. अगली सरकार अकालियों की इन शर्तों पर शायद उनसे बातचीत को राजी न हो. - कंवर संध्

## खाखले वादे

### यादव की जुमलेबाजी जारी



अक्खड़ मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने नव वर्ष पर एक अनुठा संकल्प लिया. आकाशवाणी के पटना केंद्र से जनता को शुभकामना संदेश में

उन्होंने वादा किया कि नया वर्ष बिहार के 'उन्नति, समृद्धि और ग्रामीण पुनर्निर्माण का वर्ष होगा.'

उनके दावों को बड़बोलापन कहा जा सकता है क्योंकि 10 महीने पहले सत्तासीन होते समय भी उन्होंने ऐसे ही बड़े वादे

किए थे. दूसरी बात यह कि उन्नति और समृद्धि के लिए संसाधन हैं कहां? पटना में कौन नहीं जानता कि राज्य की अर्थव्यवस्था कितनी **खस्ता**हाल है? आखिर बिहार भी तो उसी देश का हिस्सा है-जिसके सरकार की माली हालत राज्य से भी बदतर है. यानी 13,000 करोड रु. का बजट घाटा, 12 फीसदी मुद्रास्फीति और भुगतान संतुलन की नाजुक स्थिति.

की घोषणाएं मतदाताओं को बहलाने की तरकीब ही मानी जाएंगी. यादव के वादों की बानगी ही ऐसी है. उनका वादा था

कि उनकी सरकार नई औद्योगिक नीति लागु करेगी, ऊर्जा क्षेत्र में निजी निवेशकों को आमंत्रित करेगी, संथाल परगना में कन्-सिध विश्वविद्यालय स्थापित करेगी और एक लाख नई नौकरियां मृहैया कराएगी.

मगर असलियत यह है कि यादव के शासन में बिहार गरीबी के दलदल में और गहरे धंसा है. 1990-91 का अनुमानित बजट खर्च 1,805 करोड़ रु. से घटाकर 1.391 करोड कर दिया गया क्योंकि प्रशासन अतिरिक्त स्रोतों से आय का प्रबंध नहीं कर पाया. चालू परियोजनाओं के लिए बजट का 80 फीसदी तय था, लेकिन पिछले अक्तूबर तक विकास कार्य के लिए 594 करोड़ रु. ही जारी किए गए. इनमें से खर्च सिर्फ 325 करोड़ रु. ही हो

पाए. विपक्ष के नेता जगन्नाथ मिश्र इसके लिए यादव की अकर्मण्यता और अव्यवस्था को जिम्मेदार मानते हैं.

यादव निजी बातचीत में सारा दोष नौकरणाही के मंत्थे मढ देते हैं कि इसने उन्हें अंधेरे में रखा. सचाई तो यह है कि शुरू के छह महीने तो यादव नई रणनीति बनाने की जगह भ्रष्टाचार दूर करने और प्रशासन को चुस्त करने के लिए सरकारी दफ्तरों पर छापों की मुहिम छेड़े रहे. इसके बाद मंडल मुद्दा विस्फोट की तरह आया. इसके बाद मंदिर विवाद उभर आया. नतीजतन, इतने दिन राजस्व वसूली नहीं हो पाई.

यादव ने पैसा जुटाने का अपना तरीका खोज निकाला जो कि कामयाब नहीं रहा. पिछले वर्ष के मध्य में उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम कोल इंडिया लिमिटेड (सीआईएल) और उसकी तीन सहयोगी

हालत कतना खराब नरु साल का वादा 'उन्होति, समृद्धि और ग्रामीण पुनर्निर्माष्ट्र, हारवं वादा कइला में का जाला॥

> कंपनियों के अधिकारियों को बुलाकर 90 करोड़ रु. की बकाया रकम देने को कहा. लेकिन खनिज उपकर के जरिए 1,125 करोड़ रु. वसूलने के उनके इरादे धरे के धरे रह गए. सुप्रीम कोर्ट के फैसले के अनुसार राज्य विधायिका को खनिजों के अधिकार की रॉयल्टी पर उपकर लगाने के अधिकार नहीं हैं. बाकी कंपनियों ने भी यही कियां.

> जगन्नाथ मिश्र का कहना था कि सरकार को या तो केंद्र सरकार से इस प्रावधान में संशोधन करवाना चाहिए या इन खनिज कंपनियों की जमीन पर भारी कर लगा देना चाहिए.

यादव यदि बिहार को खुशहाल बनाना ही चाहते हैं तो उन्हें कुछ ठोस काम करके दिखाना होगा - फरखंव अहमव

g

n

ip

st

## अल्फ्रा नेशनल द्विए

नैशनल की अल्फ़ा गोल्ड सीरीज़ ने सारे दक्षिण-पूर्वी एशिया में हलचल मचा रखी है. जापानी हों या कोरियावासी, फिलिपीन्स के लोग हों या थायलेंड के, सभी को टीवी चाहिए तो बस अल्फ़ा ही. इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं क्योंकि इनका निर्माण होता है 🔀 नैशनल की जग प्रसिद्ध टेक्नोलॉजी द्वारा.

34

## अल्फ़ा स्नलोस द्वार

वही नैशनल टेक्नोलॉजी अब भारत में आपके लिए लाए हैं सलोरा ई सी पी. दो कलर टीवी- 51 सें.मी. (20") और पोरटेबल 36 सें.मी. (14"). आप तक पहुंचने से पहले ये टीवी हमारी प्रयोगशालाओं में संपूर्ण रूप से जांचे-परखे जाते हैं, तािक ये बरसों तक चलें ऐसे-जैसे बिल्कुल नए.

तो आज ही पधारिये अपने नज़दीकी सलोरा डीलर के यहां और चुन लीजिए अपना मनपसंद अल्फ़ा.









एशिया

गवासी ने टीवी

ात नहीं

प्रसिद्ध

ो द्वारा.

लाए हैं

( 20")

हुंचने से

रूप से

से-जैसे

रुल नए.

के यहां

अल्फा.

( होंग्रे

### पवार की मुखालफत बढ़ी

छ समय के लिए तो यही सवाल क् चर्चा में रहा कि कर्नाटक और अांध्रप्रदेश के बाद अब बारी क्या महाराष्ट्र की है? पिछले पखवाड़े देश के तीसरे प्रमुख इंकाशासित राज्य महाराष्ट् में जिस तरह की गहमागहमी का माहौल रहा, उसे देखते हुए पिछले साल दो दक्षिणी राज्यों में घटित घटनाक्रम की याद ताजा हो आई. इसलिए बंबई में भड़के सांप्रदायिक दंगे में छह लोग मारे गए तो यह अफवाह फैल गई कि मुख्यमंत्री शरद पवार को त्रंत हटाया जा रहा है.

विद्रोह की पहली आवाज वित्तमंत्री रामराव आदिक ने नागपुर में विधानसभा के शरद सत्र की समाप्ति के ऐन वक्त पर उठाई. उन्होंने पार्टी के 'इंदिरा भक्तों' से आह्वान किया कि वे एकजूट हो जाएं.

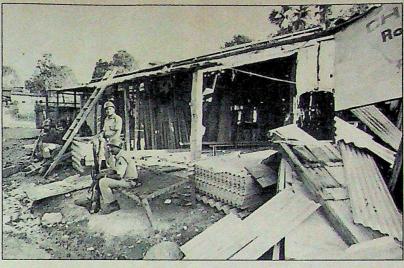
आदिक का कहना था कि पवार के नेतृत्व में पूराने निष्ठावान लोगों को वह सब नहीं मिला जिसके वे हकदार हैं. आदिक के बयान से तो यही जाहिर हुआ कि इंका आलाकमान ने ही उन्हें पवार की गद्दी डांवाडोल करने का निर्देश दिया.

आदिक शातिर नेता हैं. उनके बारे में मशहूर है कि

वे बिलावजह कुछ नहीं कहते. जनाधार तो उनका है नहीं पर इस कमी को वे दिल्ली में आर.के. धवन जैसे दिग्गज नेताओं से अपने संबंधों के जरिए पूरा कर लिया करते हैं. राजनैतिक समीक्षकों ने उनकी वात का निष्कर्ष यही निकाला कि आलाकमान मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के घनिष्ठ संबंधों से चितित है और अंततः उसने पवार को तख्त से वेदखल करने का फैसला कर लिया है.

आदिक के बयान देने के करीब एक सप्ताह बाद ही राजधानी मुंबई में सांप्रदायिक हिंसा फैल गई. मुंबई के जोगेश्वरी इलाके में हिंदू-मुसलमानों के बीच हुई हिंसात्मक झड़पों में छह लोग मारे गए और अनेक घायल हुए.

हालांकि हिंसा फैलाने का आरोप एक इंका पार्षद पर है लेकिन हकीकत में दंगा णुरू हुआ कुछ गरममिजाज नौजवानों के पुलिस पर हमला बोलने से. खेल मैदान



पर एक लडके को छुरा मारे जाने से ये नौजवान गुस्से में आ गए थे. पुलिस ने भीड पर गोली चलाई और तीन लोग मारे गए. उसके बाद इस झडप ने सांप्रदायिक रूप ले लिया. वैसे दंगे तो निश्चय ही स्थानीय झगडे के कारण भड़के दंगाग्रस्त जोगेश्वरीः स्थानीय झगडा

दोहराया कि "इंका में दूसरी या तीसरी पंक्ति का कोई नेता नहीं, सब कुछ राजीव गांधी ही हैं."

तकरीबन उसी समय अखबारों में इस आशय की खबरें छपने लगीं कि

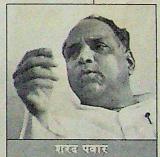
आलाकमान पवार के साथ-साथ इंका की राज्य शाखा के अध्यक्ष सुशील कुमार शिंदे को भी हटाने पर विचार कर रहा है. शहरी विकासमंत्री शिदे शिक्षामंत्री विलासराव देशमुख दोनों ही मुख्यमंत्री पद के सशक्त दावेदार समझे जाते हैं.

पिछले पखवाड़े राज्य इंका खेमों में इस अफवाह को गंभीरता से लिया जा रहा था कि पवार को हटाया जा सकता पर इस बात पर संदेह ही था कि आलाकमान इस काम में सफल हो सकेगा. 288 सदस्यीय विधानसभा में इंका को प्राप्त बहुमत संदिग्ध ही है (141 और 10 निर्दलीय) और पवार इतने ताकतवर जरूर हैं कि एक हद के बाद अपने साथ अच्छी-खासी संख्या को ले जा सकें.

इसके अलावा शिवसेना और भाजपा के बढ़ते प्रभाव और राज्य के मराठवाडा जैसे पिछड़े इलाकों में वी.पी. सिंह की सभाओं में विशाल जनसमूह जूटने को देखते हुए इतना तो स्पष्ट हो ही जाता है कि विभाजित इंका मतदाताओं का. सामना करने की स्थिति में कदापि नहीं होगी. लिहाजा अब उम्मीद है कि पवार को दिल्ली में पार्टी का कोई वरिष्ठ पद लेने के लिए कहा जा सकता है.

**एम. रहमान** 





लगता है आदिक ने आलाकमान की शह पाकर ही पवार पर दिल्ली से हमला बोला

और उनका राज्य की राजनैतिक स्थिति से कोई संबंध नहीं था.

लेकिन आदिक ने पवार के खिलाफ मृहिम जारी रखी. वे पहले तो दिल्ली गए और वहां धवन, गुलाम नबी आजाद और दूसरे नेताओं से भेंट की. राजधानी में उन्होंने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री को लक्ष्य कर कहा कि "कोई नेता अपने कद से बडा नहीं. जो कोई भी राजीव गांधी के नेतृत्व को चुनौती देगा, हम उसका विरोध करेंगे." फिर मुंबई लौटते ही उन्होंने बागी तेवर कछ ढीले कर लिए लेकिन यह भी

लेने क

पहला

चुनावे

अंतिम

कोई

शिकार

'चुना

वातर्च

सरका

नहीं स

18 क

जनता

कि ः

चिन्ह

वजह

इसे र

दिसंब

जो न

भी थी

को दि

अपना

देखरेख

निदेश

कि ज

आयोग

की मा

इंका

प्रक्रिय

धांधलं

मसलन

उम्मी

आगे

चिपक

अभाव

ती

शि

वि

मध्य प्रदेश

## भाजपा का अग्रिपरीक्षा

### पंचायत चुनावों से पार्टी के काम-काज पर फैसले की उम्मीद



गंगाराम अब 70 साल की उम्र में काफी परेशान और खिन्न हैं. दस साल पहले काम की तलाश में वे नरसिंहपुर जिले में अपने पूरखों के गांव को

छोडकर रायसेन जिले के खरवई में आ बसे थे. और आज जबिक उनके तीन बेटे भी काम करने लगे हैं, उनके लिए 12 लोगों के परिवार का भरण-पोषण करना मुश्किल हो गया है. ये बूजूर्ग हताशा में कहते हैं, "कीमतें आसमान छू रही हैं. किसी को गरीब की परवाह नहीं है." पिछले साल विधानसभा चुनावों में इस परिवार ने भाजपा को वोट दिए थे और अब उसे लगता है कि धोखा हआ.

मध्य प्रदेश में दस माह पूरानी भाजपा सरकार को 23 जनवरी को अग्निपरीक्षा से

गुजरना होगा. उस दिन पंचायत चुनावों में लगभग 3.50 करोड ग्रामीण जनता मतदान करेगी. मुख्यमंत्री सुंदरलाल पटवा मानते हैं, "यह मेरी सरकार के लिए जनमत संग्रह होगा." पहली दफा दलगत आधार पर होने वाले इन तीन आयामी पंचायत चुनावों से हवा के रुख का पता चलेगा.

1.65 लाख पंचों के पद के लिए 2.21 लाख प्रतिद्वंद्वी हैं और 13,710 सरपंच पदों के लिए 61,759 उम्मीदवार हैं. 459 जनपद ब्लॉक अध्यक्ष पदों के लिए 1,906 उम्मीदवार खड़े हैं और 45 जिला अध्यक्ष पदों की खातिर 175 उम्मीदवार हैं. (देखें चार्ट)

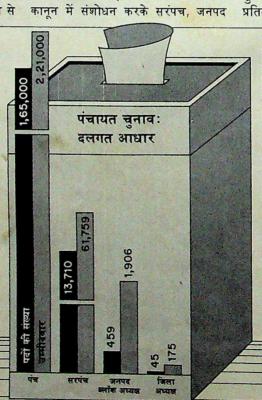
इस चुनाव में दो ही मूख्य प्रतिद्वंद्वी हैं-भाजपा और इंका, क्योंकि राज्य में दूसरे दल नगण्य हैं. फिर भी इन दोनों दलों को जनपद अध्यक्ष, सरपंच और पंचों के सभी पदों के लिए उम्मीदवार नहीं मिल पाए. इससे ग्रामीण हलकों में दलों



की कम पैठ का अंदाज होता है. 1.65 लाख पदों के लिए भाजपा और इंका 75,000 उम्मीदवार ही जुटा पाई. पंचायत में 4,300 से अधिक वार्ड ऐसे हैं जहां कोई उम्मीदवार खडा ही नहीं है.

नतीजतन, वडी संख्या में पंच तथा सरपंच और कुछ जनपद अध्यक्ष निर्विरोध चन लिए गए. लगभग एक चौथाई पंचों की कोई मुखालफत नहीं हुई. यही नहीं, 300 सरपंच और तीन जनपद अध्यक्ष भी निर्विरोध निर्वाचित हो गए.

भाजपा ने पिछले साल पंचायती राज कानन में संशोधन करके सरंपच, जनपद



चनाव प्रचार की तैयारी

अध्यक्ष और जिला प्रमुखों के सीधे चुनाव का प्रावधान कर दिया. राज्य के इतिहास में पहली दफा हर स्तर पर महिलाओं के लिए सीटें आरक्षित भी की गईं. साथ ही महिलाओं के आरक्षित स्थानों में अनुसूचित जाति व जनजाति का आरक्षण भी किया गया. संशोधित कानन के तहत पंचायतों को अधिक अधिकार दिए गए हैं. पटवा कहते हैं, "चुनाव घोषणापत्र में किए गए वादों के म्ताबिक हम पूर्ण विकेंद्रीकरण के प्रति प्रतिबद्ध हैं और पंचायत चुनाव उसी दिशा

में एक अगला कदम है."

वैसे, विकेंद्रीकरण की यह प्रक्रिया इतनी आसान भी नहीं होगी. अफसरशाही में इसके प्रबल विरोधियों की दलील है कि इससे ग्रामीण स्तर पर भ्रष्टाचार और राजनैतिक हस्तक्षेप बढेगा. इस पर प्रदेश इंका उपाध्यक्ष हजारीलाल रघवंशी की टिप्पणी है, "पटवा अफसरशाही के चंगूल में हैं जिसे पंचायतों को असली अधिकार देना कभी मंजूर नहीं होगा. अंततः यह कसरत बेमतलब ही साबित होगी.

दरअसल, भाजपा को छोड़कर इन चुनावों में दूसरे दलों ने बेमन से पैर रखा. हर विपक्षी दल चुनाव के समय का विरोधी था. इंका ने ती इन चुनावों को टालने के लिए सरकार के इनकार करने पर विधानसभा के शीतकालीन सत्र की बहिष्कार तक किया. विपक्ष के नेता भ्यामाचरण शुक्ल ने कहा, "यह लोकतंत्र की हत्या है." उनके दल क लोगों ने हाईकोर्ट से स्थगन आदेश

36 इंडिया टुडें • 31 जनवरी, 1991



लेने की भी असफल कोशिश की.

धे चुनाव

इतिहास

इलाओं के

साथ ही

अनुसूचित

भी किया

त्रायतों को

रवा कहते

र वादों के

के प्रति

उसी दिशा

की यह

भी नहीं

सके प्रबल

कि इससे

चार और

ा. इस पर

जारीलाल

है, "पटवा

हैं जिसे

कार देना

अंततः यह

त होगी.

छोड़कर

ने बेमन से

चुनाव के

का ने तो

के लिए

**करने** पर

न सत्र का

क्ष के नेता

हा, "यह

ाके दल <sup>के</sup> गि आदेश विपक्ष की आपत्ति के तीन आधार हैं. पहला इसका समय है. 14 दिसंबर को चुनावों की घोषणा हुई और नामांकन की अंतिम तिथि सिर्फ 12 दिन बाद थी. हर कोई अजीव स्थिति में फंस जाने की शिकायत करता है. शुक्ल ने गुस्से में कहा, "चुनाव की तिथि सभी राजनैतिक दलों से बातचीत के बाद तय होनी चाहिए थी. सरकार का कहना है कि यह प्रक्रिया थम नहीं सकती क्योंकि इसकी तैयारी में करीब 18 करोड़ ह. खर्च हो च्के हैं."

शिकायत का दूसरा आधार कानूनी है.

जनता दल(स) की दलील है
कि उम्मीदवारों को चुनाव
चिन्ह मुहैया न करा पाने की
वजह से उसे असुविधा होगी.
इसे राजनैतिक दल के बतौर 26
दिसंवर को ही मान्यता मिली
जो नामांकन की अंतिम तिथि
भी थी. इस पार्टी ने जनता दल
को दिए गए चक्र चिन्ह पर भी
अपना दावा किया है. चुनाव की
देखरेख करने वाले पंचायतों के
निदेशक सत्य प्रकाश मानते हैं
कि जनता दल (स) को चुनाव
आयोग ने अभी राजनैतिक पार्टी
की मान्यता नहीं दी है.

तीसरी आपत्ति कुछ गंभीर है.
तीसरी आपत्ति कुछ गंभीर है.
इंका का आरोप है कि चुनाव
प्रक्रिया में कई खामियां हैं जिससे
धांधली की व्यापक संभावनाए हैं.
मसलन, मतपत्र छुपे नहीं होंगे.
उम्मीदवार का नाम लिखकर उसके
आगे पार्टी के चिन्ह का स्टिकर
चिपका दिया जाएगा. मतपेटियों के
अभाव में कनस्तरों का प्रयोग किया

जाएगा. इसके अलावा पर्याप्त सरकारी अधिकारियों के अभाव में 1.50 लाख से अधिक बाहरी लोग बूथों पर तैनात होंगे. जाहिर है, राज्य सरकार ने पर्याप्त तैयारी और चुनाव मशीनरी बनाए बगैर ही भारी काम हाथ में ले लिया है.

पूर्व मुख्यमंत्री मोतीलाल वोरा का मानना है कि यह सब 'सत्तारूढ़ दल के फायदे' के लिए हो रहा है. उन्होंने कहा, "कनस्तर मतदान के दो दिन बाद जिला मुख्यालय में खोले जाएंगे. कौन भरोसा दिलाएगा कि हाथ से लिए मतपत्र बदल नहीं दिए जाएंगे?" मध्य प्रदेश में सबसे

नूनी है. नहीं दिए जाएंगे?'

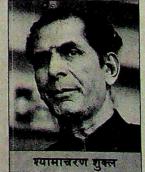
मुंदरलाल पटवा



पचायत चुनाव विकेंद्रीकरण की दिशा में एक अगला कदम हैं



पुनाव की तिथि राजनैतिक दलों से बातचीत के बाद तय होनी चाहिए थी"



बिजली केंद्र का उद्घाटन करते लक्ष्मी नारायण शर्मा

अधिक बिकने वाले दैनिक 'भास्कर' ने जब एक मतपत्र और पार्टी चिन्ह के स्टिकर की तस्वीर छापी तो भारी हंगामा मचा. अखबार के संवाददाता का कहना है कि उसे यह 'एक नेता के पास' से मिला.

भाजपा चुनावों में भारी विजय की उम्मीद लगाए है. इसी वजह से वह तमाम विरोधों के बावजूद चुनाव पर अड़ी रही. उसने दिल्ली के विरोध को भी दरकिनार कर दिया कि मार्च में जनगणना के बाद चुनाव कराए जाएं. मगर लगता है, इस खेल में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी जाएगी. सत्तारूढ दल मतदाताओं को फुसलाने के लिए ग्रामीण विकास की कई योजनाओं की घोषणा कर रहा है. मंत्री और मूख्यमंत्री तक राज्य भर में योजनाओं ग्रामीण डलाकों परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन करते घूम रहे हैं. पिछले पखवाड़े सहकारितामंत्री लक्ष्मी नारायण शर्मा ने भोपाल जिले के गंगा गांव में पार्टी ध्वजों के साथ बिजली के केंद्र का उद्घाटन किया. ऊर्जामंत्री कैलाश जोशी ने 31 दिसंबर को किसानों को बिजली कनेक्शन में रियायत की घोषणा की.

विपक्षी दल भारी हाय-तौबा मचा रहे हैं. मगर पटवा का कहना है, ''हम राज्य में विकास का काम नहीं रोक सकते. हर हाल

> में पंचायत चुनाव जनप्रतिनिधित्व कानून के तहत नहीं आते.'' प्रदेश इंका महासचिव रसूल अहमद सिदीकी की टिप्पणी थी, ''इससे भाजपा की खोखली नैतिकता की पोल खुल गई.''

चुनाव प्रचार में राम जन्मभूमि का मुद्दा कोई असरकारी होता नहीं लगता, हालांकि भाजपा ने इसी पर पूरा दांव लगाया है. आदमपुर गांव के खेतिहर मुन्नालाल ने कहा, "हर कोई महंगाई और मिट्टी तेल,

डीजल तथा खाद जैसी जरूरी चीजों के अभाव से परेशान है." और वे सब इसका दोष सरकार पर ही मढ़ते हैं. ऐसे में भाजपा को भारी विजय शायद मिले.

भाजपा की मुश्किल यह है कि उसने सत्तारूढ़ पार्टी के बतौर कभी चुनाव नहीं लड़ा. पहली दफा वह ऐसा कर रही है. और उसे सत्ता में होने की कीमत भी चुकानी पड़ेगी.

- नरेंद्र कुमार सिंह



### सनद रहे

आरोपः 25 वर्षीया 'साध्वी' ऋतंबरा पर भड़काऊ भाषण देने का. दिल्ली पुलिस ने यह



आरोप लगाते हुए राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद पर 'साध्वी' के भाषणों के कैसेट की विक्री और प्रचार-प्रसार पर रोक लगा दी. यही नहीं, उन पर भारतीय दंड संहिता की धारा 153 के

तहत फौजदारी मामला भी दायर किया.

तमाचाः ओडीसा के मुख्यमंत्री बीजू पटनायक द्वारा तीन युवकों को. मुख्यमंत्री के हाथों तमाचा खाने वाले ये युवक उनके निवास के सामने प्रदर्शन कर रहे लोगों में शामिल थे. इन युवकों ने जब पटनायक को भद्दी वातें कही तो पटनायक को गुस्सा आ गया. वे उनकी ओर झपटे, उनकी धुनाई की और फिर उन्हें पुलिस के सुपूर्व कर दिया.

नियुक्तः मद्रास हाईकोर्ट ने भारतीय ओलंपिक संघ के अध्यक्ष पद पर सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीण एस.नटराजन को नियुक्त किया है. वे बी.एस. आदित्यन और विद्याचरण गुक्ल के दावों के निपटारे तक पद पर रहेंगे. गुक्ल और आदित्यन को तब तक ओलंपिक संघ से दूर रहने को कहा गया है.

सम्मानितः 63 वर्षीय मराठी नाटककार विजय तेंडुलकर कालिदास सम्मान से. म.प्र.



सरकार का 1 लाख रुपएं का यह राष्ट्रीय सम्मान उन्हें वर्ष 1990 के लिए दिया गया है. तेंडुलकर ने 'सखाराम बाइंडर' और 'घासीराम कोतवाल' जैसे ऐसे कई नाटक लिखे हैं जिनका

नाटक लिख है जिनका अनेक भाषाओं में अनुवाद हुआ है. तेंडुलकर पद्म विभूषण से भी सम्मानित हैं. निधनः आपातकाल के दौरान की गई ज्यादितयों की जांच करने वाले आयोग के

अध्यक्ष, 85 वर्षीय न्यायमूर्ति जे.सी. शाह का. इंदिरा गांधी की सत्ता में वापसी के कारण जांच आयोग की रिपोर्ट कभी सामने नहीं आ सकी. शाह का निधन वंबई में पेरिफेरल सकुलेटरी



वजा

आपट

कंपर्न

डाया

चेन '

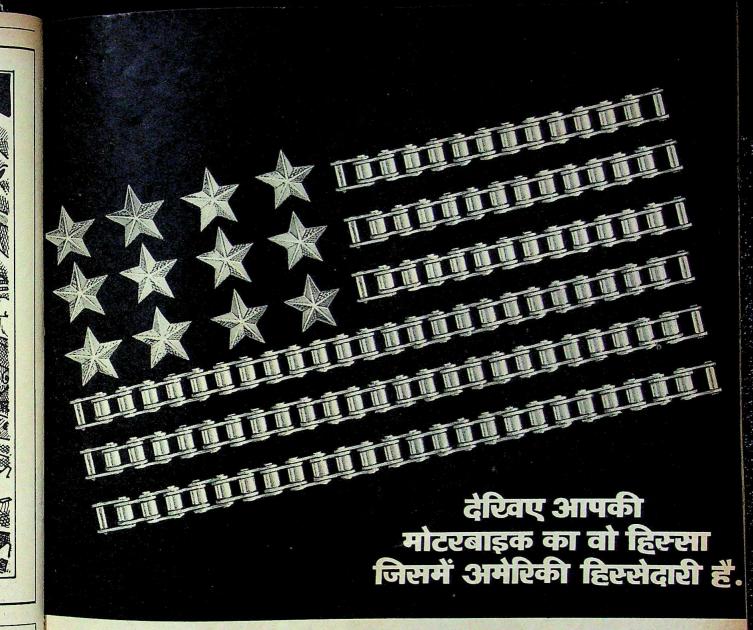
मोटर

चुनत

लेकि

पेरिफेरल सर्कुलेटरी फेलियर और फेफड़ों के निमोनिया से हुआ.

पुरस्कृतः हिंदी के जाने-माने उपन्यासकार और निबंधकार डा. शिवप्रसाद सिंह अपने बहुर्चीचत उपन्यास 'नीला चांद' के लिए 1990 के साहित्य अकादमी पुरस्कार से. 'नीला चांद' में मध्यकालीन काशी के इतिहास को विषयवस्तु बनाया गया है. 'अलग-अलग वैतरणी' और 'गली आगे मुड़ती है' उनके अन्य चिंचत उपन्यास हैं.



अगिक पास चाहे राजदूत हो या हीरो हौण्डा या यामाहा या टी वी एस सुजुकी या कावासाकी वजाज या बुलेट या येजदी या....

आपकी मोटरबाइक कोई भी हो, एक चीज़ सभी में शुरू से वही लगाई जाती है. जिसे एक अमेरिकी कंपनी के भारतीय सहयोगी बनाते हैं. आपकी चेन. डायमंड सुपर चेन.

इसे डायमंड चेन कंपनी, अमेरिका के तकनीकी सहयोग से भारत में बनाते हैं टी आई डायमंड चेन लिमिटेड. और यही है वो चेन जिसे हर मोटरबाइक निर्माता अपनी बाइक में लगाने के लिए चुनता है.

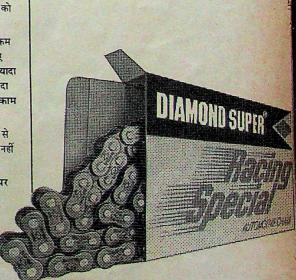
लेकिन डायमंड सुपर ही क्यों ? डायमंड चेन कंपनी, अमेरिका को इस क्षेत्र में सौ वर्षों की कुशलता का अनुभव है. और टी आई डायमंड के तकनीशियनों व अन्य अधिकारियों को यह कार्यकुशलता हर समय उपलब्ध रहती है.

ये दोनों मिलकर ऐसी चेन बनाते हैं जो बहुत कम खिंचती है. इसे बाहर से कठोर बनाने के लिए खास प्रक्रिया से गुजारा जाता है. इसीलिए ये ज्यादा चलती है. अधिक मोटी प्लेटें इसे देती हैं ज्यादा मज़बूती. और बढिया लुब्रिकेशन होने से यह काम करती है-बेआवाज बेरोकटोक.

इन खूबियों के होते हुए, वैसे तो आपको शुरू से मोटरवाइक में लगी डायमंड सुपर बदलनी ही नहीं पड़ती... काफी लंबे समय तक.

लेकिन जब बदलनी पड़े तो सिर्फ डायमंड सुपर चेन ही लीजिए.

और बढ़ाते जाइए अपना विजयी सिलसिला.



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar में शुरू में यही, इसलिए हमेशा यह

एक 🕼 उत्पादन.

कार

अपने

लिए

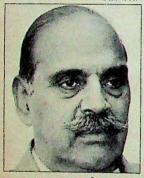
से. नहास अलग उनके

### पंजाब पंजाबी में पछाडा

• कम-से-कम एक मामले में सरकार और उग्रवादी दोनों ही एकमत हैं. पंजाबी भाषा और गुरमुखी लिपि के मुद्दे पर पंजाब सरकार और उग्रवादी खुद को एक ही पक्ष में पाते हैं. लेकिन पंजाबी भाषा का इस्तेमाल करने का फरमान डॉ. सोहन सिंह वाली पंथक कमेटी ने ही जारी किया है और इस अभियान को 'ऑपरेशन मातुभाषा' नाम दिया है.

सरकारी भाषा नीति 1967 में ही लागू हो गई थी, पर लगभग 20 साल से इस पर कभी अमल नहीं हुआ. मगर अब इस फरमान के बाद फौरन उस पर अमल शुरू

हफ्ते भर के भीतर ही चंडीगढ के पास मोहाली कस्बे में लगे सभी साइनबोर्ड केसरिया रंग के हो गए



राज्यपाल मल्होत्रा

और उन पर अंग्रेजी की जगह गुरमुखी लिपि ने ले ली. गुरमुखी टाइपराइटरों को निकालकर झाडा-पोंछा गया. इसके साथ ही पंजाबी सीखने की किताबों की भी मांग अचानक बढ गई है क्योंकि सरकारी अमला अपनी पंजाबी दुरुस्त करने की जरूरत महसूस करने लगा है.

और तो और, राज्यपाल ओमप्रकाण मल्होत्रा ने अपने पद और गोपनीयता की णपथ पंजाबी में ही ली और इस भाषा का प्रचलन बढ़ाने के अनेक उपायों की फौरी घोषणा की. पंजाबी भाषा विभाग ने भी, जो दो साल से 'पंजाबी दिवस' मनाने के लिए मुश्किल महसूस करता आ रहा था, अब पंजाबी के लिए हफ्ते भर का कार्यक्रम बनाया है. एक अधिकारी ने माना, "पंजाबी के मामले में तो उग्रवादियों ने सरकार को पछाड़ दिया है."

### मध्य प्रदेश दैनिक अखबारों का द्वंद्व





महेश्वरी और अग्रवालः अखबारी युद्ध

• मध्य प्रदेश में पिछले पखवाडे हिंदी के दो अखबार 'नवभारत' और 'भास्कर' विज्ञापन युद्ध में उलझ गए. इसमें 'भास्कर' ने पहल की. 'भास्कर' का दावा है कि भोपाल से प्रकाशित यह दैनिक अधिक बिकता है. 'नवभारत' ने अपने प्रतिद्वंद्वी पर 'आंकडों में हेरफेर' करने का आरोप लगाया.

'भास्कर' का इंदौर संस्करण 64,000 विकता है जो 'नवभारत'

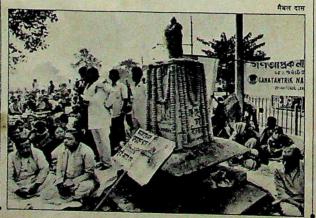
के इंदौर और भोपाल के संस्करणों की कुल मिलाकर 39,000 प्रतियों की विक्री से कहीं अधिक है. लेकिन ये दोनों ही अग्रणी अखबार 'नई दुनिया' (विक्री 1.28 लाख) से काफी पीछे हैं. वैसे, 'नई द्निया' की बिक्री इन दिनों घट रही है. बहरहाल, अखवारों के बीच होड़ बढ़ने से पाठक का ही भला होता है. उसे 12 पृष्ठों का अखबार 1 रु. 40 पैसे में मिल जाता है

### पश्चिम बंगाल मूर्ति स्थापना पर बवाल

• मुख्यमंत्री ज्योति वस् ने जब घोषणा की कि प्रधानमंत्री चंद्रशेखर मध्य कलकत्ता में विडला तारामंडल के निकट हो ची मिन्ह की मूर्ति का अनावरण करेंगे, तो इंका ने भी उसी स्थान पर स्वामी विवेकानंद की मूर्ति स्थापित करने का संकल्प ले लिया. पार्टी ने केंद्रीय इस्पात व खानमंत्री अशोक सेन को प्रधानमंत्री चंद्रशेखर को

यह लिखने के लिए राजी कर लिया कि वे बस् का निमंत्रण स्वीकार न करें. लेकिन चंद्रशेखर पहले ही उनके निमंत्रण को स्वीकार करने की हामी भर चके हैं. इंका को डर है कि बस्, बेमन से ही सही, प्रधानमंत्री के करीब होते जा रहे हैं और हो ची मिन्ह की मूर्ति इस दिशा में पूल का

### स्वामी विवेकानंद की मूर्ति के आगे प्रदर्शन



### आंध्र प्रदेश ईश्वर इच्छा

 आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. मरि चेन्ना रेड़ी ने कुर्सी पर रहते आखिरी क्षणों में ठेकेदार तथा प्रदेश इंका के तेजतर्रार उपाध्यक्ष टी. सूव्वीरामी रेड्डी को तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम् का अध्यक्ष बना दिया. तिरुपति मंदिर (जिसकी वार्षिक आय करीव 100 करोड़ रु. है) इसी संस्था के अधीन आता है.

पद भार ग्रहण करने से पूर्व परंपरा के मुताबिक सुब्बीरामी रेड़ी तिरुपति शहर के बगल में पहाड़ी पर चढे, सिर मुंडवाया और हाथी से आशीर्वाद पाकर भगवान वेंकटेश्वर के सामने शपथ लेने के लिए उपस्थित हए. रेड़ी कहते हैं, "यह सब भगवान की ही कृपा है.

देवस्थानम के नए अध्यक्ष की



रेड़ीः बड़ी योजनाएं

योजनाएं बड़ी-बड़ी हैं. मसलन, प्रसिद्ध तीर्थ को सूदर बनाने के लिए मंदिर तक जाने वाली सड़क की मरम्मत और तोरण द्वारों का निर्माण, दिल्ली के निकट 10 एकड़ भूमि में वेंकटेश्वर मंदिर बनवाना, तिरुमाला में अतिथि गृहों की संख्या में वृद्धि और तीर्थयात्रियों को कमरे आरक्षण करवाने के लिए कंप्यूटरीकृत व्यवस्था वगैरह.

उन्होंने दूसरे लोगों के अलावा रिलायंस कंपनी के अनिल अंबानी और पारले के रमेश चौहान से भी मंदिर के लिए दान का वचन ले लिया है. रेड्डी कहते हैं, "मंदिर से आध्यात्मिक और सांसारिक भावनाएं जुड़ी होती हैं. इसलिए मैं श्रद्धालुओं के भगवान दर्शन मे सहायक होना चाहता हूं." श्रद्धालुओं की आशा यही है कि उनकी कुछ योजनाएं तो सच साबित हों.

## कु ही मिनटों में, आप इस पेपर पर संगमरमर का फर्श बना सकते हैं

**बुख्यमंत्री** ्सी पर

ठेकेदार

जतर्रार

रेड्डी को

नम का

न मंदिर

करीव

ांस्था के

से पूर्व

वीरामी

गल में

मुंडवाया

पाकर

ने शपथ

ए. रेड्डी

नी ही

यक्ष की खीद्र रेड्डी

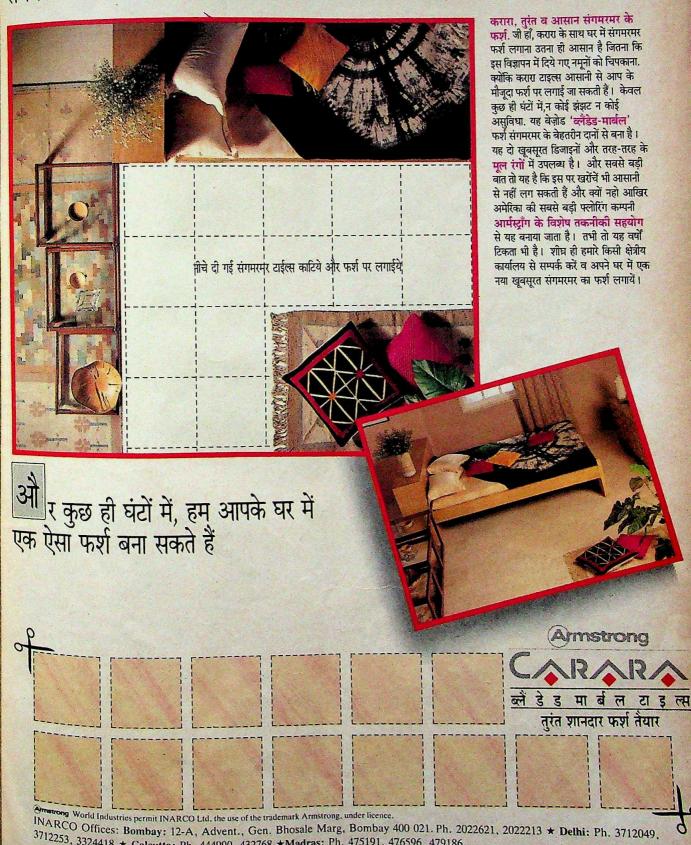
मसलन, नाने के ो सड़क ारों का न्ट 10 मंदिर अतिथि और

लिए

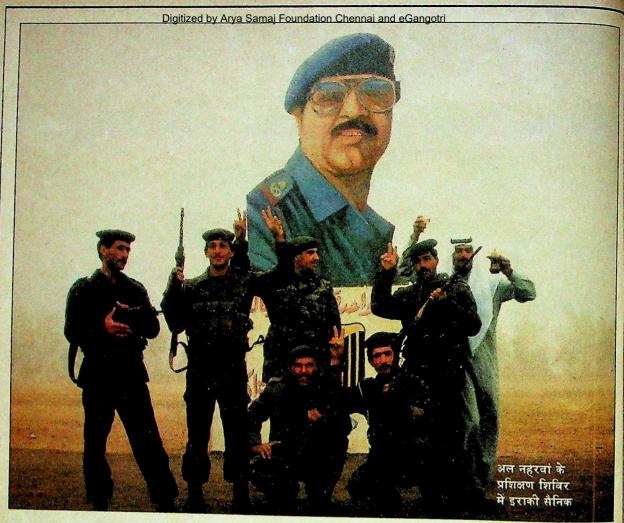
अलावा अंबानी

ा से भी चन ले दिर से सारिक लिए मैं र्शन में

ो सच



3712253, 3324418 \* Calcutta: Ph. 444990, 432768 \*Madras: Ph. 475191, 476596, 479186



## इराक

# जा जा जुन्त

—लेखः शेखर गुप्ता, वगदाद में फोटोः प्रशांत पंजियार

गदाद में फिलहाल जितना अमन-इत्मीनान का माहौल है उसे देखकर नहीं लगता कि यह उस देश की राजधानी है जो आठ वर्ष लंबे युद्ध के असर से उबरने और दुनिया को एक और युद्ध में झोंकने की कोशिशों में लगा हो. बगदाद को देखकर यह भी नहीं लगता कि वहां किसी भी पल बरपा होने वाली कयामत की कोई दहशत तारी हो. उलटे, लोग एक उम्मीद भरी, दबी-दबी उत्तेजना से भरे लगते हैं. इसकी लंबी-चौड़ी शानदार सड़कों पर टैंकों की गड़गड़ाहट नहीं सुनाई पड़ती बल्कि दिन भर कारों की चिल्ल-पों मची रहती है. और ऐसा नहीं है कि ये कारें हफ्ते भर बाद संभावित आणविक युद्ध के आतंक से शहर से पलायन कर रही हों बल्कि इनकी भागदौड़ 35 लाख लोगों के इस प्राचीन शहर की जीवंतता की द्योतक है.

शाम ढलते-ढलते इनमें से कई कारें टिगरिस नदी के किनारे बने उन रेस्तराओं के आगे खड़ी हो जाती हैं जहां लजीज मछली 'मसगौफ' तलकर परोसी जाती है. और कई कारें आरामदेह होटलों, नाइट क्लबों, कैसीनो और नाचघरों के वाहर खड़ी हो जाती हैं जहां लोग अपनी शाम रंगीन करने आते हैं. शहर में इस आशंका को लेकर कोई दहशत नहीं दिखती कि युढ़ छिड़ा तो सैकड़ों अत्याधुनिक बमवर्षक विमान बगदाद पर बम और मिसाइलों की झड़ी लगा देंगे. इसलिए यहां रात में ब्लैकआउट नहीं होता. बिल्क बगदाद किसी संपन्न यूरोपीय शहर की तरह जगमग करता रहता है. इराकी लोगों के पास इन सब की अपनी व्याख्या है, "आप समझते हो, हम पागल हैं? जी नहीं, हमें बंदूक की नली के आगे नाचने में मजा आता है." पिछले सही इरावि दिवस रेस्तर रंगरेि ज्यादा पत्निय् थीं. में ही ए

किया, में सी के अ लिए और शामि हाथ होगी मुमि इन प मर्दों व पीछे अनुपा अनुपा कि ई इराक

अधिव

चुका ही

अमेरि संयुक्त

हैं. क पांवों हाथ फेंकक अपने भावन य इराक रेडियं

वगदा

माहौ

पश्चि

वीच

जाते

को 1

तैयार

आवा

अपने

पड़ेग

कर ह

वाद

अब न

42 इंडिया दुंडे • 31 जनवरी 1981

और यहां का जीवन पिछले हफ्ते इस कथन को सही साबित करता दिखा. इराकियों ने वार्षिक सेना दिवस पर होटलों और जमकर रस्तरांओं इनमें मनाई. रंगरेलियां ज्यादातर सैनिक, उनकी पित्यां तथा महिला मित्र थीं. मेरीडियन होटल में ऐसे ही एक शब्स ने यहां लोगों के मूड का सही बयान किया, "15 तारीख को अगर मैं सीमा पर हुआ तो लड़ाई के अलावा दूसरी वातों के लिए मौका ही नहीं मिलेगा. और अगर मैं लड़ाई में शामिल नहीं हुआ तो एक हाथ में व्हिस्की की बोतल और दूसरे मुमिरिनी." मौज-मस्ती की इन पार्टियों में औरतों ने मर्दों को संख्या के मामले में पीछे कर दिया. उनका अनुपात तीन-दो का था. यह अनुपात इसलिए भी सही है कि ईरान के साथ युद्ध में इराक अपने दस लाख से अधिक जवानों को गंवा चुका है और लगभग इतने ही जवान सीमा अमेरिका की अगुआई वाली संयुक्त सेना के सामने तैनात हैं. कई मर्द तो अपने कृत्रिम पांवों के सहारे, अक्सर अपने हाथ की छड़ी भी फेंक-फेंककर नाच रहे थे मानो वे

अपने अपंग शारीर के रगों में दौड़ रही भावनाओं को उछाल रहे हों. यह सब बेतुका भले ही लगे पर आज

इराक में यही माहौल है. एफएम रेडियो पर होने वाले प्रसारण भी वगदाद के इस अति यथार्थवादी माहौल का एहसास कराते हैं. पिंचमी संगीत की स्वरलहरियों के वीच समाचारों के मुख्य अंश सुनाए जाते हैं: "इराक ने अमेरिकी विमानों को मार गिराने के लिए मिसाइलें तैयार कर ली हैं" या सहाम की आवाज गूंजती है: "अमेरिकियों को अपने ही खून की नदी में तैरना पड़ेगा." आदि-आदि. और रोंगटे खड़े कर देने वाले इन समाचारों के तुरंत बाद ही उद्घोषक कहता है, "हां, तो अब पेश हैं टीना टर्नर !"

वाहर

ो शाम

आशंका

कि युद्ध

मवर्षक

लों की

ात में

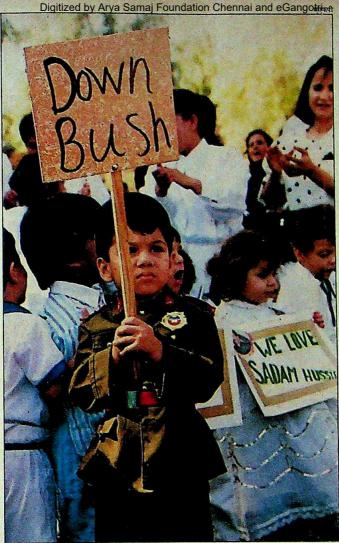
(किसी

जगमग

ास इन

समझते

क की



बगदाद में अमेरिकी दूतावास पर प्रदर्शन करते बच्चे

### जनमानस के लिए यह बुश बनाम सद्दाम की लड़ाई है

इराकी लोग उन्मादी नहीं हैं. हां, युद्ध को लेकर उनमें कोई खौफ नहीं रह गया है.

वैसे भी वे गर्व से कहते हैं कि उनके समाज

630,000 तुर्की 1,035,000 5,500 सीरिया ईरान जॉर्डन सऊदी अरब

ने युद्ध का टीका लगा लिया है. इसीलिए पिछले हफ्ते अमेरिकी में विदेशमंत्री जेम्स बेकर और इराकी विदेशमंत्री तारिक अजीज की वार्ता असफल हो गई और एक तरह से तय हो गया कि युद्ध होगा ही, तब भी इराकियों में न तो सौफ था और न ही वे सदमे में डूबकर प्रार्थना आदि में जुट गए. बल्कि बिलकुल निरपेक्ष भाव से उन्होंने युद्ध की तैयारी शुरू कर दी. रूसी जेडएसयू-234 विमानभेदी तोपें ऊंची इमारतों पर लगाई जाने लगीं और शहर के प्रवेश द्वारों पर मिसाइलें लगा दी गईं. मामूली अफरातफरी सिर्फ अफवाह से मची कि पेट्रोल की विक्री बंद करने पर विचार किया जा रहा है. हजारों कारें पेट्रोल पंपों पर कतारबद्ध खड़ी हो गई. बाकी, सब कुछ सामान्य लग रहा था.

अंतरराष्ट्रीय सद्दाम हवाई अड्डे पर हवाई हमले का दैनिक अभ्यास बदस्तूर जारी रहा. राष्ट्रपति भवन के द्वार के मेहराब पर लगी तोपों पर तैनात सैनिकों की संख्या सामान्य से कुछ बढ़ गई. और नुक्कड़ों पर अत्याधुनिक कलाश्निकोव लेकर खडे संतरियों की

तादाद भी थोडी बढी. इसके अलावा आतंक सिर्फ बचे-खुचे विदेशी नागरिकों और दूसरे देशों के कूटनियक हलकों में ही दिख रहा

करीब दर्जन भर दूतावास रातीरात बंद हो गए और कुछ दूसरे भी बंद होने की प्रक्रिया में थे. देश के बाहर अम्मान की ओर जाने वाली उडान में भारी भीड थी क्योंकि इराकी विमानों के लिए सिर्फ जॉर्डन ने ही अपना आसमान खुला रखा है. अमेरिका के कार्यवाहक राजदूत जोसेफ विल्सन भी देश छोड़ रहे थे, हालांकि एक दिन पहले तक वे दावा कर रहे थे कि वे 'पूरी तरह मुरक्षित' महसूस कर रहे हैं.

मगर इराकियों के साथ मुश्कल यह है कि वे बाहर जाना भी चाहें तो कहां जाएं. बाथ पार्टी के शासनकाल



इराकी राजधानी में ब्रिटिश दूतावास पर पश्चिमी देशों के खिलाफ कलाकारों का प्रदर्शन

प्रायोजित प्रदर्शन प्रायः रोज होते हैं और ये तनाव बढ़ाए रखने में सहायक हैं

सत्ता का ढांचा

## सब सहाम के आदमी

द्भाराक में पार्टी को सरकार से अलग रखने का दिखावा नहीं किया जाता. समूचा सत्ता तंत्र बाथ पार्टी के नियंत्रण में है. यह व्यवस्था बहुत हद तक

पूर्वी यूरोप के पूर्व कम्युनिस्ट प्रशासनों से मिलती है. मगर कुछ भिन्नताएं भी हैं.

मसलन, यहाँ सर्वोच्च नेता सद्दाम हुसैन की पकड़ बहुत मजबूत है.

नौकरशाही को अमूमन पार्टी के नियंत्रण से बाहर रखा जाता है पर इसका दो-तिहाई से ज्यादा हिस्सा बाथ समर्थक माना जाता है. सेना में, बाथ पार्टी को छोड़ दूसरे राजनैतिक संगठन का सदस्य बनना अपराध समझा जाता है.

निचले स्तरों पर पार्टी की पकड़ विस्तृत नेतृत्व के जिरए बनी हुई है. इस नेतृत्व के दायरे में करीब 15 लाख लोग हैं.

सर्वोच्च निर्णायक सर्वोच्च निर्णायक संस्था क्रांतिकारी कमान परिषद (क्राकप) है जिसकी बागडोर सद्दाम हुसैन के हाथ में है. एक तरह से इसका गठन कम्युनिस्ट पोलितब्यूरो की तर्ज पर हुआ है. मगर चीन और सोवियत संघ की व्यवस्थाओं के विपरीत क्राकप का कोई सदस्य णायद ही कभी सद्दाम पर उंगली उठाने की जुर्रत करता है. के दो दौरे व गए हैं लगात नहीं आखि इरार्क जिसे कया इस्ला खिला स्वाभि है. स चाहे उन्मा इसमें छवि लिया इंतज

तैरने

विना

उप-

थे र

गया

साहि

नामं

मिल

स्था

होने

सद्दाम के अधिकांश सहायक उन्हीं की तरह 50-55 वर्ष के आयु वर्ग में हैं, जो उन्हीं के साथ पार्टी संगठन और विभिन्न क्रांतियों से गुजरकर निकले हैं. खुद वे राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री दोनों पदों पर काविज हैं. माना जाता है कि सत्ता पर सद्दाम, उपराष्ट्रपति इज्जत इन्नाहिम और प्रथम उप-प्रधानमंत्री ताहा यासीन रमधान की त्रिमूर्ति का नियंत्रण है.

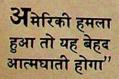
इतनी ही नियंत्रित इराकी व्यवस्था है, जिसमें प्रमुख नेताओं की जीवनियां भी शायद ही प्रकाशित होती हैं. सत्ता पर काबिज प्रमुख लोग निम्नलिखित हैं:

इज्जत इब्राहिम (55 वर्ष) क्राकप के उपसभापित और उपराष्ट्रपित हैं. वे कृषि नीतियों के माहिर और पार्टी के पुराने कार्यकर्ता हैं. बगदाद विश्वविद्यालय से विधि स्नातक यह नेता जासूसी संगठनों को नियंत्रित करता है. कुछ राजनियक उन्हें रक्त कैंसर से पीड़ित मानते हैं.

ताहा यासीन रमधान (55 वर्ष) प्रथम

दो मुसल-मान देशों को लड़ाना अमेरिकी साजिश है"

सादी मेहदी सालेह स्पीकर, नेशनल असेंबली



इज्जत इक्राहिम उपसमापति, क्राकप



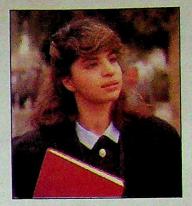


के दो दशकों के दौर में इराकी लोग विदेशी दौरे की सुविधा से एकदम वंचित कर दिए गए हैं. यहां तक कि सद्दाम हुसैन भी लगातार उड़ने वालों के क्लंब के काबिल नहीं हैं. अरब देशों की सीमा उन्होंने आबिरी बार 1972 में लांघी थी. इसलिए इराकी उस जंग की तैयारी में जुट गए हैं जिसे उनका नेता अपनी विशेष शैली में 'क्यामत की जंग', 'काफिरों के खिलाफ इस्लामी जेहाद', 'साम्राज्यवादियों के बिलाफ इंकलाबी जंग' और 'देश के स्वाभिमान की रक्षा की आखिरी जंग' कहता है. सद्दाम हसैन का अंततः आकलन दूनिया चाहे जिन शब्दों में करे, उन्हें आततायी, उन्मादी या 1990 का हिटलर कहे, पर इसमें दो राय नहीं कि उनकी करिश्माई छवि ने लोगों को इतना सम्मोहित कर लिया है कि वे उस 'आखिरी जंग' का इंतजार कर रहे हैं ताकि सद्दाम के आह्वान के अनुसार वे 'अमेरिकियों को उनके खुन में तैरने' पर सचम्च मजवूर कर दें.

गौरतलव बात तो यह है कि इराक के विनाश की पूरी आशंका वाले युद्ध का उन्माद सभी सामाजिक और आर्थिक तबके

के लोगों में व्याप्त है. दक्षिणी इलाके में छह बड़ी लड़ाइयां लड़ चुके सफा मुहम्मद अपने कटे हुए बाएं पांव की ओर बगावती मुद्रा में नजर डालते हैं और फिर अपने सही-सलामत दाहिने पैर की ओर देखकर सडक की दुकान से एक कुल्हाड़ी उठा लेते हैं, "मैंने ईरान के खिलाफ जंग में एक पैर दे दियाः अब इस जंग में अपना दूसरा पैर भी कुर्वान कर दूंगा. आप देखिएगा मैं 'बूश' को किस तरह टुकड़े-टुकड़े करता हूं." यह कहते हुए उनका चेहरा लाल हो उठता है.

हरे पर खुन उतरने का यही भाव 40 किमी दूर बगदाद के मुस्तानसीरिया विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के प्राध्यापकों के कक्ष में और भी स्पष्ट दिखता है. 1963 में बाथ पार्टी की पहली विजय (देखें वॉक्स) के अवसर पर वना यह विश्वविद्यालय सत्ताधारियों का बौद्धिक केंद्र है और सलमान अल वसीती शायद इसके सबसे उम्दा प्रतिनिधि. इस ठिगने, टकले प्राध्यापक को कोई भी आसानी से किरानी वगैरह समझकर उनकी अनदेखी कर सकता है. लेकिन उनकी



जैनब अहमद छात्रा

पिछली जंग में मेरा अंकल और भाई मारा गया. अब किसकी बारी

उप-प्रधानमंत्री हैं. वे सेना में मेजर पद पर थे जब क्रांति से पहले उन्हें हटा दिया गया. वे उद्योगमंत्री रहे हैं.

इसका ार्ज पर

पंघ की

ा कोई

उंगली

न्हीं की

हैं, जो विभिन्न

खुद वे

दों पर

ता पर

म और

यासीन

स्था है,

यां भी

ना पर

कप के

केषि

पुराने

ाय से

नों को

उन्हें

प्रथम

तारिक अज़ीज़ (53 वर्ष) विदेशमंत्री हैं और सरकार का नरम पक्ष प्रस्तुत करते हैं. बगदाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में स्नातक अज़ीज बाथ पार्टी में नामी लेखक और वैचारिक के रूप में तेजी से उभरे. उन्होंने सरकार के मौजूदा प्रमुख प्रवक्ता नाजी अल हदीथी के साथ मिलकर पार्टी अखबार 'अल थवारा' की स्थापना की. सत्ता तंत्र में एकमात्र ईसाई होने का गौरव भी उन्हें हासिल है.

सदाऊं हमादी उप-प्रधानमंत्री और आर्थिक मामलों के विशेषज्ञ हैं. वे अरब देशों के मामलों का भी अतिरिक्त प्रभार संभालते हैं. अमेरिकी विश्वविद्यालय से स्नातक हमादी की भूमिका सुपरिभाषित नहीं है पर माना जाता है कि कृषि और विदेश नीति के मामलों में उनकी राय को प्रमुखता दी जाती है.

ताहा महीउद्दीन मारौफ (60 वर्ष) क्राकप के एकमात्र ऐसे सदस्य हैं जो बाथ पार्टी से नहीं जुड़े हैं. वे उत्तर के

अल्पसंख्यक कुर्द कबीले से हैं और इटली में इराक के राजदूत भी रह चके हैं.

हसैन कामिल हसन (करीब 40 वर्ष) के बारे में व्यापक रूप से माना जाता है कि वे अपने सस्र सद्दाम हसैन के उत्तराधिकारी हैं. वे सेना के पूर्व अधिकारी हैं और सद्दाम के बेहद विश्वस्त सहायक भी. महत्वपूर्ण विभाग सैन्य उद्योग के साथ ही उद्योग व तेल मंत्रालय के प्रभारी होने के अलावा वे भारत-इराक संयुक्त आयोग के सह अध्यक्ष हैं.

सादी मेहदी सालेह (54 वर्ष) नेशनल असेंबली के स्पीकर होने के साथ-साथ पार्टी कार्यकर्ताओं की बहलता वाली मिलीशिया-पॉपुलर आर्मी-के प्रमुख भी हैं. बाथ पार्टी के ये महासचिव सद्दाम के गहनगर टिकरिट में उनके बचपन के दोस्त भी रहे हैं. उनका सितारा बुलंदी पर जा रहा माना जाता है.

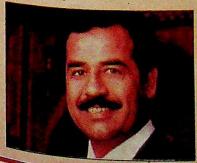




जग हई तो हमारा पहला निशाना इज्राएल होगा" तारिक अजीज विदेशमंत्री

प्रसलमानों को काफिरों से लड़ना होगा" ताहा यासीन रमधान प्रथम उप-प्रधानमंत्री

### सद्दामः सर्वोच्च नेता



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



मु. सईद अल सहाफ राज्यमंत्री

हैं मारे 30 लाख लोग मारे जाएंगे तो भी डेढ़ करोड़ इराकी बचेंगे पर हमने रासायनिक हथियार दागे तो कोई इज्जाएली नहीं बचेगा"



सैयद अशूर मछली विक्रेता

सीरा बखेड़ा यहूदियों की साजिश का नतीजा है और हमारे पास अब आखिरी लड़ाई लड़ने के सिवा कोई चारा नहीं है"

उपलब्धियों से आंखें नहीं चुराई जा सकतीं-आयोवा से स्नातकोत्तर डिग्री, बर्रामधम से पीएचडी. सरकार उनकी खशामद करना पसंद करती है. दौरे पर आए विदेशी पत्रकारों से उनकी एक बैठक जरूर करवाई जाती है. मृद्भाषी अल वसीती नाप-तोल कर बोलते हैं. वे किसी चीज का पक्ष नहीं लेते, चाहे कवैत की दिनदहाडे डकैती हो या उनकी अपनी सरकार द्वारा रासायनिक हथियारों का भंडारण. "अगर आप आतंक के जरिए संतुलन कायम करने पर बात करना चाहते हैं तो खुब कीजिए. हमें इस पर गर्व है." वे घमासान की भविष्यवाणी करते हैं, "हम तेल के दरिया पर बैठे हैं. हम इसे फूंक देंगे. इसके साथ-साथ हम भी कुर्बान हो जाएंगे." साथ ही वे बाइबिल से उद्धरण देते हैं, "जिंदा कुत्ते से कहीं ज्यादा बेहतर होता है मरा हुआ शेर."

अल वसीती के मुताबिक सद्दाम हुसैन की कामयाबी की मुख्य वजह न केवल राष्ट्रवादी भावना बिल्क अरब शान को जगाना ही है. अभी तक सारी दुनिया अरब लोगों को निठल्ला, मूर्ख समझती रही है. सद्दाम ने दुनिया को दिखा दिया कि अरब लोग भी बुद्धिमान और तेजतर्रार हो सकते हैं. इराकी सिद्धांतिवदों का मानना है कि पिष्चमी देश अरब के विशेषज्ञों का फायदा तो उठाते हैं मगर पूरे अरब को ऐसे काहिल, अशिक्षित शेखों की दुनिया के रूप

में देखना चाहते हैं जिन्हें घूस देना और झांसा देना बहुत सरल हो. यही वजह है पश्चिमी देशों के साथ तनातनी की.

इराकियों ने पश्चिम के सामने एक भिन्न तरह का अरब पेश किया है. इसकी एक खास मिसाल हैं व्यवहारकुशल और ईसाई विदेशमंत्री तारिक अजीज, जो अक्सर अमेरिकी टेलीविजन पर बेकर से बीस नजर आते रहे हैं ऐसे ही दूसरे शस्स हैं इराकी सरकार के मुख्य प्रवक्ता, बाथ पार्टी के विचारक और इराक के एकमात्र अंग्रेजी दैनिक 'बगदाद ऑब्जर्वर' के मुख्य संपादक नाजी अल हदीथी. वे कहते हैं, "अमेरिकियों की मुश्किल यह है कि उनका पाला लंबे समय तक अरब के ऐयाश, डकैत, बरबाद हुए शेखों से ही पड़ा है. उन्हें उन अरव लोगों से निबटना आता ही नहीं जो मूर्ख नहीं हैं. वे हमें नहीं समझ सकते."

सा इसलिए भी है क्योंकि पूरव की दुनिया को पश्चिम ठीक-ठीक नहीं समझ सकता. इसलिए युद्ध शायद अवश्यंभावी है. "हमें अपनी इज्जत प्यारी हैं. बुश एक दिन हमारे लिए समय सीमा तय कर सकते हैं और फिर दूसरे दिन बात करने को तैयार हो सकते हैं. मगर सद्दाम कुवैत से पीछे हटकर अपने लोगों का सामना नहीं कर सकते." हदीथी अपनी जीत के बदले अमेरिकियों को जीतने न देने पर जोर देते हैं. "हम अरब-इज्ञाएल युद्ध से

राष्ट्र व

तभी रि

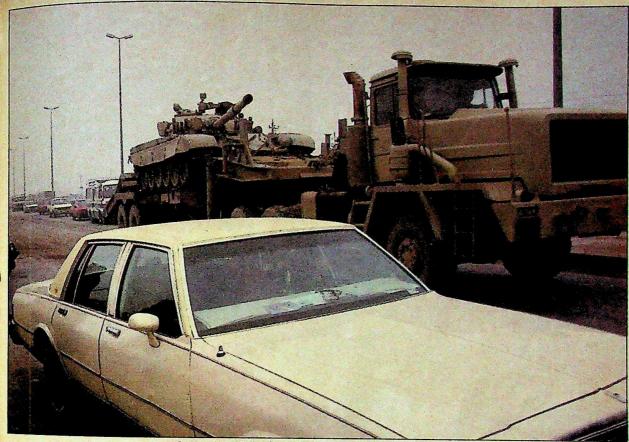
सद्दाम हुसैन

## पूरा अरब हथियाने की चाह

'रत की ही तरह इराक की सम्यता भी प्राचीन है. लेकिन मुल्क के बतौर यह एक अपेक्षाकृत यूवा राष्ट्र है. यूक्रेट्स और टिगरिस के बीच के उपजाऊ मैदान में 6,500 ई.पू. मेसोपोटामिया सभ्यता फूली-फली थी. यहां का सबसे समृद्ध क्षेत्र होने की वजह से इराक सिकंदर से लेकर तुर्क और अंग्रेजों के आक्रमण का निशाना बना रहा. सातवीं शताब्दी में कुदिसिया युद्ध में फारस के लोगों की तबाही के बाद यहां खलीफाशाही रही. हारुन-अल-रशीद के शासन में तो बगदाद इस क्षेत्र की सांस्कृतिक और व्यावसायिक राजधानी ही बन गया. लेकिन मंगोल हमलावरों ने खलीफाशाही को मिटा दिया.

सदियों की अराजकता के बाद 1920 में इराक ब्रिटिश साम्राज्य के मान्यताप्राप्त

देश के रूप में दूनिया के नक्शे पर उभरा अंग्रेजों ने कठपूतली शासक शाह फैसल के जरिए इराक की हुक्मत चलाने की कोशिश की. 1941-45 में फिर अंग्रेजों की दखलंदाजी के बाद '50 के दशक के अंत में जाकर अब्दूल करीम कासिम के तहत इराक में स्थायी सरकार बन पाई. लेकिन तब तक अरब देशों और इराक में समाजवादी दृष्टिकोण और अखिल अरव का नारा लेकर एक नई ताकत उभर चुकी थी. 'बाथ' (पूर्नानर्माण) नाम की यह पार्टी पहले दिमक्क और काहिरा विश्वविद्यालयों के प्रांगण से शुरू हुई और समूचे अरब देशों में फैल गई. बाथ पाटी के पक्षधरों का मानना था कि अंतर्वगीय मतभेदों की वजह से इस्लाम लोगों का एकजुट करने में सक्षम नहीं है. पार्टी की उद्देश्य पूरी अरब जमीन को मिलाकर एक



सऊदी अरब की सीमा तक ले जाई जा रही इराकी बख्तरबंद गाड़ी

### दूसरे विश्व युद्ध के बाद यह सबसे बड़ा सैनिक अभियान है

राष्ट्र का निर्माण करना था.

देना और वजह है

ामने एक है. इसकी शल और ीज, जो वेकर से सरे शस्स ता, बाथ एकमात्र के मुख्य कहते हैं, के उनका श, डकैत, उन्हें उन नहीं जो क्ते."

के पूरव ठीक नहीं शायद त प्यारी य सीमा देन बात र सद्दाम ोगों का ो अपनी

ने न देने न युद्ध से

र उभरा

फैसल के

नाने की

ग्रेजों की

के अंत में

के तहत

. लेकिन

राक में

ल अरब

भर चुकी

की यह

काहिरा

हुई और

ाथ पार्टी

तर्वर्गीय

ोगों को

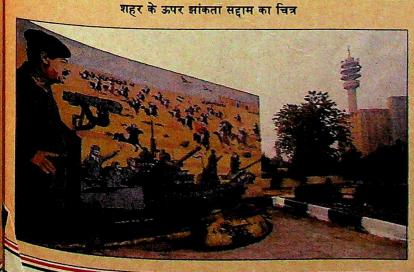
गर्टी का

कर एक

4 अप्रैल 1947 को जब पार्टी गठित हुई तभी फिलिस्तीन का मुद्दा उभर आया. और इसके उद्देश्यों को मजबूत आधार

मिल गया. नासिर के असर के कारण मिस्र में जहां इसका आधार घटा, इराक के शहरों में बाथ की जड़ें मजबूत हुई. पार्टी पर इराक में प्रतिबंध लगने के

सद्दाम का मत है कि अखिल अरब आंदोलन एकीकरण की ताकत है



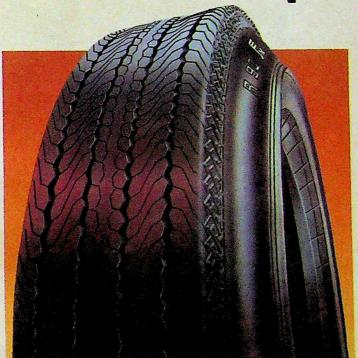
बाद यह भूमिगत आंदोलन बन गया. तभी '50 के दशक के मध्य में सद्दाम हसैन इसमें शामिल हुए, अक्तूबर 1959 में उन्होंने प्रधानमंत्री कासिम की हत्या की कोशिश की. वे नाकाम रहे लेकिन जरूमी टांग ले सीरिया भाग गए. वहां से वे काहिरा गए और नासिर के चहेते बने. इराक लौटकर उन्होंने भूमिगत आंदोलन जारी रखा. 8 फरवरी 1963 को पार्टी ने कासिम की सत्ता उखाड़ फेंकी. लेकिन बाथ पार्टी कुल नौ महीने सत्ता में रह पाई. जुलाई 1968 में सहाम हुसैन के नेतृत्व में पार्टी फिर सत्ता में आई. सीरिया में भी बाथ के ही सैनिक अधिकारियों ने सत्ता संभाल ली.

और आज सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात को छोड़ सारे अरब देशों में इस पार्टी के संगठन हैं. सहाम अरब देशों का मुखिया बनने की लालसा में काम कर रहे हैं. आंदोलन के अखिल अरब स्वरूप और इस पर सद्दाम हुसैन की पकड़ के डर से ही प्रतिद्वंद्वी अरब राज्य उनकी दहशत में जी रहे हैं.

जरारमंग्रिय किया दूसरे डिजाइन में हे टिके रहने की इतनी क्षमता?

Line is Matter 120/1/11.

## तो आप जानगए.



-90 को 511 गुणवत्ता परीक्षणों से गुज़रना होता है. हो सकता है आप इसे ज्यादा मार्ने...

लेकिन जब कभी आप तेज़ बारिश में डूबी या पिघलती बर्फ़ से ढकी सड़क पर होंगे तो आप भी शायद वहीं कहें जो हमारे अत्तर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ ने कहा था.

सबसे पहले तो R-90 की तारीफ़ आप इसलिए करेंगे कि इसका ट्रैंड बहुत तेज़ी से पानी को बाहर फेंकता है, और बरसात के दिनों में भी, ज़मीन पर इसकी पकड़ ढीली नहीं पड़ती. फिर चाहे आप गति बढ़ाएं, स्टेयरिंग कार्टे, या ब्रेक लगाएं, आप मान जाएंगे कि R-90 टीक आपके इशारे से ही काम करता है. आपको यह जानकर खुशी होगी कि तेज़ गर्मी को सहने के लिए इसके ट्रैड में एक खास ताप-प्रतिरोधी पदार्थ मिलाया गया है. टायर की प्लाइयां नायलॉन पॉलीमर की बनी हुई हैं जिसमें अधिक ताप सहने की शक्ति है.

इसलिए अब एक बात तो तय है. जब अगली बार भारत की बेरहम गाड़ी चालन परिस्थितियों से आपका सामना होगा तो आप भी वहीं मानने लगेंगे जो हजारों हजार कार मालिक R-90 के बारे में मानते आ रहें हैं कि —

"यह एक करिश्मा है!"

**190 एग्जीक्यूटिव** कार टायर — डिज़ाइन का एक करिश्मा.



काफी कुछ सीख चुके हैं. हम किसी की हैं समकता है अवाब E मार्चु साम के किसी कि किसी कि किसी कि किसी कि किसी कि कि छोटा और तेज युद्ध लडकर भागने नहीं देंगे. यह विश्व भर में अंतहीन लडाई होगी जिसमें एक ओर अरब तथा मुसलमान होंगे और दूसरी ओर अमेरिका तथा इज्राएल.'

इराकी व्यवस्था का हर अहम शख्स पिछले पखवाडे इसी 'रणनीति' पर जोर देता दिखा कि यदि लडाई शुरू होती है तो रासायनिक और जैविक बम से लैस इराकी मिसाइलों का पहला हजूम इजाएल की ओर दागा जाएगा. हो सकता है एक बार में एक साथ 50-60 मिसाइलें दागी जाएं. मिसाइल प्रतिरोधी सूरक्षा इनमें से कितनों को बरबाद कर पाएगी ?

खाक कर दे. विदेश राज्यमंत्री और भारत में राजदूत रहे मूहम्मद सईद अल सहाफ को इसकी चिंता नहीं, "तो क्या हआ ? हमने सब सोच लिया है. इज्राएल हममें से कितनों को मार लेगा ? 30 लाख को? 15 लाख इराकी फिर भी बच जाएंगे. और अगर हमारे दोहरे रासायनिक बमों ने उनके 30 लाख लोग मार दिए तो वहां लड़ाई के लिए कोई भी नहीं बचेगा."

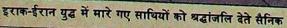
सडकों व गलियों के मिजाज का सही अंदाज लगाना जरा मुश्किल है. क्रांति के तीन दशकों और बाय पार्टी के नियंत्रण के बाद इराक अब बंद समाज में बदल गया है और तकरीबन किसी में भी खुलकर



सलमान अल वसीती प्रोफेसर

हिम तेल के दरिया पर बैठे हैं. हम इसमें आग लगा देंगे. कत्ते की तरह जिंदा रहने से बेहतर है शेर की तरह मरता"





दस लाख जानें गंवाने के बावजूद इराकी उस युद्ध को मूल रहे हैं

बात करने का साहस नहीं है. पत्रकारों को सरकारी 'दुभाषियों' के बिना कहीं भी जाने की इजाजत नहीं है. पर यह देख पाना कठिन नहीं है कि इराकी जनता अमेरिका के आगे हथियार डालने के मूड में नहीं है. लेकिन आर्थिक और व्यापारिक पाबंदियों ने इराक की हालत खस्ता की हुई है. और वह हताशाजनित दूस्साहस पर उतारू है. हर चीज 2 अगस्त वाली कीमत से अब 10 से 20 गुना महंगी हो गई है. 2 अगस्त को ही सद्दाम ने क्वैत को "इराक का 19वां प्रांत " बनाने का फैसला किया था. गेहूं का आटा, जो इराक में ही होता है, 100 गुना दामों पर; चीनी 30 गुना दामों पर और खाद्य तेल चार गुना दामों पर बिक रहे हैं. इराकी चाय के शौकीन बहुत हैं और आवश्यक वस्तुओं में चाय ही ऐसी चीज है जो बाजार से सबसे पहले गायब हो गई है, हां, मांस और सब्जियों की कोई कमी नहीं क्योंकि उनका घरेलू उत्पादन होता है. लेकिन लगभग सारे के सारे मुर्गे हलाल हो चुके हैं और अब अंडे भी खत्म होने वाले हैं. तीन महीने पहले तक एक डॉलर में दो दीनार मिल जाते थे जबिक सरकारी दर 3.3 डॉलर प्रति दीनार है. लेकिन अब आप एक डॉलर में 7 दीनार खरीद सकते हैं जो







बच्चे मॉर्टन के खाद पर मोहित और बड़े हैं इसकी शुद्धता के कायल। वर्षों से पूरे परिवार का मनपसंद है मॉर्टन।

चॉकलेट व कोकोनट कूकीज, रोज एक्लेयर्स, सुप्रीम चॉकलेट तथा कोकोनट टाफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स तथा अन्य अनेक मजेदार स्वादों में उपलब्ध।

और अब केसर बाइट। केसर का कमाल जिसका स्वाद बेमिसाल।



मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री।

पो० ओ० मढ़ौरा-८४१४१८, सारन, बिहार

चेतावनी :

MORTON स्वीदस का लोगो एवं रैपर अंपर गैंगेज सृगर एंड इन्डस्ट्रोज लि॰ का पंजीकृत व्यापार-चिह्न है। किसी भी प्रकार से व्यापार-चिह्न अधिकारों का उलघन ऑभयोजनीय है।

CC-0. In Public Domain: Gurukul Kangri Collection, Haridwar



सेना दिवस समारोहों में भाग लेते इराकी सैनिक और उनके परिवार के लोग

### हिंसा और कलह के इतिहास ने इराकियों में युद्ध की भावना भर दी है

कि सरकारी दर का 2.3 गुना है. सद्दाम सिटी मेडिकल टीचिंग हॉस्पिटल में हर रोज तीन बच्चों की मौत कुपोषण के कारण होती है बाजार में दूध नहीं है और दवा की दुकानें खाली पड़ी हैं. न दर्द निवारक दवाएं हैं, न एंटीबायोटिक और न एंटीहाइपरटेंसिव दवाएं. अल रणीद स्ट्रीट पर दवा दुकानदार, 68 वर्षीय अनवर खलील कहते हैं, "यह मुल्क कई साल तक जंग द

ज्यादा हमारे अगर लडेगा ही प भ्खम है कि पर फ वजह है. पि इव्राहि खाद्यान अग वढाना को फि सरका खत्म ह की वर्ष कर दि इसे सह कुदिसि

ईरान

खिलाप दुःस्वप्न रही है

सहाम

यार स

रहेगा.

देश से

होटल व

जाने के

जहां ता

खाडी में भारतीय

## बड़ी मुसीबत का अंदेशा

ड़ी में एक दु:स्वप्न समाप्त हुए दो महीने भी नहीं बीते कि उससे बड़ी मुसीबत सामने आ गई है. उस समय तो मात्र एक लाख लोगों को कुवैत से निकालना पड़ा था, अब इस क्षेत्र में युद्ध की आशंका से सरकार खाड़ी के देशों से सभी 12 लाख भारतीयों को बाहर ले आने की आकस्मिक योजना बना रही है. प्रमुख विमान सेवाओं के खाड़ी देशों की सेवाएं बंद करने और समुद्री मार्ग के बंद होने की आशंका से मामला और पेचीदा हो गया है.

विदेश मंत्रालय किसी भी आकस्मिकता से निवटने के लिए तैयारी कर रहा है. इस दरम्यान इराक में फंसे पड़े 2,900 भारतीयों के लिए मुश्किलों की शुरुआत हो चुकी है. जेनेवा वार्ता के सफल होने की आस में ही वे 10 जनवरी तक रुके रह गए थे. लेकिन जैसे ही जेम्स बेकर

ने वार्ता के असफल होने की घोषणा की, भारतीयों ने अपने वतन लौटने की तैयारियां शुरू कर दीं.

बगदाद के सबसे महंगे होटल अल रशीद के कर्मचारियों का एक जत्था बस से जॉर्डन सीमा पर पहुंचा, जहां अगस्त-सितंबर में एशियाई शरणार्थी रहे थे. लेकिन कागजी औपचारिकताएं पूरी करने के चक्कर में इन्हें अम्मान से 50 किमी दूर एक अस्थायी शिविर में रहना पड़ा. राजदूत गजेंद्र सिंह कहते हैं कि दूतावास ऐसे और 'अतिथियों' के इंतजाम के लिए तैयार हो रहा है.

इनमें उन 126 नर्सों में से कुछ नर्सें भी हो सकती हैं जो बगदाद के विभिन्न अस्पतालों में फंसी पड़ी हैं. पिछले एक पखवाड़े में वे नियमित रूप से भारतीय दूतावास में आकर इराक से बाहर जाने का वीसा लेने के लिए बैठती हैं. इनमें से बहुत कम ने ही अपने करार के अनुसार न्यूनतम कार्यकाल पूरा किया है और इस स्थिति में उनको काम देने वाली कंपनी उन्हें रोक सकती है.

अब ये भारतीय मजदूर इराक में रहे या जाएं, दोनों ही हालत में उनके लिए वरवादी है. पिछले नौ महीनों से इन मजदूरों की कमाई भारत नहीं पहुंच पाई उनके पास डॉलर नहीं है सो वे बगदाद से अम्मान का हवाई टिकट नहीं ले सकते और न ही तुर्की जाने के लिए वीसा मांग सकते हैं क्योंकि वहां भी विदेशी मुद्रा जरूरी है. वे करीव-करीव कंगाली की हालत में हैं. अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली की नौकरी छोड़कर सद्दाम सिटी अस्पताल में आई बीनी साइमन कहती हैं, "हम बरबाद हो गए इन मज़ंदूरों के पास खाने की चीजें भी बहुत कम हैं. दूतावास ने तीन महीने की जो राशन दिया था वह भी समाप्त है

जॉर्डन की सीमा बंद होने और युर्ड गुरू होने पर बगदाद और अम्मान के बीच का रेगिस्तान भी सुरक्षित नहीं

जंग लड़ता रहा है. इसलिए हमारे यहां ज्यादातर बीमारियां मानसिक हैं और हमारे पास नींद की गोली ही नहीं है." अगर लड़ाई हुई तो इराक आखिरी दम तक लडेगा और पश्चिम को जीत काफी महंगी ही पड़ेगी. अगर लड़ाई नहीं हुई तो वे भसमरी से हार जाएंगे. सरकार का वादा हैं कि फसल कटने के बाद हालात सुधरेंगे. पर फसल चार महीने बाद कटेगी. यही वजह है कि ईरान से दोस्ती गांठी जा रही है पिछले पखवाड़े उप-राष्ट्रपति इज्जत इब्राहिम "बिरादरान मुस्लिम राज्यों" से बाद्यान्न लेने तेहरान गए थे.

अगर ईरान की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाना एक नाटकीय बदलाव है, तो पूरे देश को फिर उसी युद्धोन्माद में झोंक देना इराक सरकार की ढिठाई है जो एक साल पहले सतम हो गया था और जिसने देश के युवकों की बलि ले ली थी और खजाने को खाली कर दिया था. जब जंग चल रही थी, तो इसे सद्दाम कुदिसिया कहा जाता था. जंग-ए-कुदिसिया 637 ई. में हुई थी जिसमें अरब ने ईरान को मात देकर बगदाद में अबासिद बिलाफत व्यवस्था कायम की थी. अब इसे दु:स्वप्न की तरह भुलाने की बात कही जा रही है. राष्ट्रीय असेंबली के अध्यक्ष और सद्दाम के जिले टिकरिट के उनके लंगोटिए यार सादी मेहदी सालेह के अनुसार, "यह

मुस्लिम देशों को आपस में लड़ाने और कमजोर करने की अमेरिका व पश्चिम की साजिश थी.'

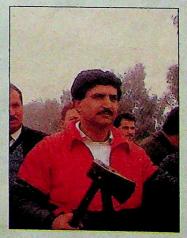
परंतु जंग हरेक गली के नुक्कड़ पर कोई-न-कोई निशानी छोड गई इराकियों ने व्यर्थ की लड़ाई में जो कीमत चुकाई है उसे विदेशी कम करके आंक सकते हैं. हर परिवार ने लड़ाई में एक से अधिक सदस्य खोए हैं. इराक में अब तक 10 लाख लोग मारे जा चुके हैं. फिर भी, जनता में एक ऐसी लड़ाई के, जिसका नतीजा हार के सिवाय और कुछ नहीं हो सकता, प्रति उत्साह होना अविश्वसनीय ही लगता है-वह भी एक ऐसे नेता के आह्वान पर जिसने अतीत में भारी भूलें की हैं.

इराकी उन भूलों के लिए अपने तानाशाह से भले ही चिढे बैठे हों लेकिन वे अपनी चिढ़ का इजहार नहीं करते. यह वे कर भी नहीं सकते क्योंकि हर नुक्कड़ पर 'आका' उन पर नजर रखे होता है. हर दुकान और घर, कारों और नौकाओं, हर जंगह सद्दाम हुसैन का चेहरा मौजूद रहता है-शायद याद दिलाने के लिए कि बाथ पार्टी द्वारा तैयार खुफिया संगठन मुखेब्रात का जाल चारों ओर बिछा हुआ है. सद्दाम को खुदा की हैसियत देना राज्य अपना पहला फर्ज मानता है. हल्की आलोचना के लिए कठोर दंड मिलता है. यदि आपको



ऐदा जब्बोरी टेलेक्स ऑपरेटर

इस्लाम ने कभी अमेरिकी लोगों को हमारी पाक जगहों पर काबिज होने की हिदायत नहीं दी. अमेरिकियों को खदेड़ दिया जाना चाहिए"



सफा मुहम्मद अपंग सैनिक

आठ साल ईरान के खिलाफ चली जंग में मैंने अपनी एक टांग गंवाई. अब इस जंग में दूसरी टांग भी कुर्बान कर दूंगा लेकिन बुश को नहीं बल्शुंगा"

रहेगा. सो, अनेक भारतीय तुर्की होकर देश से निकलने की योजना बना रहे हैं. होटल कर्मचारियों की एक टोली इस्तंबूल जाने के लिए तुर्की सीमा की ओर बढ़ी जहां तापमान शून्य के नीचे था.

लेकिन भारतीयों के भागने के दूसरे दौर की यह शुरुआत भर है. राजनियक वार्ता असफल होने और युद्ध शुरू होते ही खाड़ी के भारतीयों के उजाड़ शिविरों में बदहाली में रहने के दृश्य आम हो जाएंगे.

कुवैत के बाद अब भारतीयों को दूसरी बार भागना पड़ रहा है



नके लिए से इन हुंच पाई गदाद से ले सकते ोसा मांग

ीद स्ट्रीट

। अनवर

साल तक

अनुसार

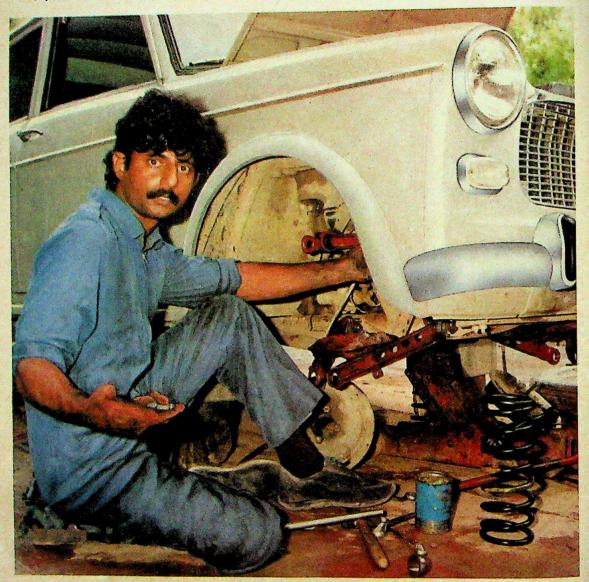
और इस

ति कंपनी

क में रहे

शी मुद्रा गाली की ायुर्विज्ञान छोडकर ाई बीना हो गए चीजें भी महीने का प्त है. और यु म्मान के क्षेत नहीं

### "मेरा अपना घर?"



### "यकीन नहीं होता!"

यकीन कीजिए। अब गृह ऋण खाता स्कीम की मदद से कोई भी अपना घर बना सकता है।

गृह ऋण खाता स्कीम बचत से जुड़ी एक विशेष योजना है जो आपको गृह ऋण लेने योग्य बनाती है। यह स्कीम इतनी आसान और सुविधाजनक है कि इससे वेतन-मोगी, दिहाड़ी पर काम करने वाले मज़दूर, व्यावसायिक, व्यापारी तथा किसान को भी फ़ायदा हो सकता है। इसके अतिरिक्त इस स्कीम में कर छूट का आकर्षण भी है।

गृह ऋण खाता स्कीम एक राष्ट्रीय योजना है। देश-भर में किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक या कई अन्य अधिसूचित बैंकों की नज़दीकी शाखा से सम्मर्क कीजिए, और आज ही अपना गृह ऋण खाता खोलिए।



राष्ट्रीय आवास बैंक NATIONAL HOUSING BANK

जत

विर

अमे

(भारतीय रिज़र्व वैंक के पूर्ण स्वामित्व में) हिन्दुस्तान टाइम्स हाऊस, छठी मंज़िल, 18-20, कस्तूरवा गांधी मार्ग, नई दिल्ली- 110 001.

बॉम्बे लाइफ़ बिल्डिंग, तीसरी मंज़िल, 45, वीर नरीमन रोड, फोर्ट, मुम्बई-400 023-

हमारा लक्ष्य : सबके लिए आवास

Chaitra-D NHB 1590 HIN

अपने घर की कोई बाहरी दीवार रंगनी हो और उस पर सद्दाम की तस्वीर या पोस्टर हो तो उसे हटाने के लिए सरकार की मंजरी लेनी होगी. किसी अधिकारी के घर में सद्दाम की तरह-तरह की तस्वीरें देखी जा सकती हैं-सेना की वर्दी में, बाय पार्टी की वर्दी में, घोड़े की सवारी करते हुए आदि. दूसरी जगहों पर उन्हें राइफल चलाते हुए, बालू के बोरे के पीछे से निशाना साधते हुए, किसी बच्चे का गाल थपथपाते हए देखा जा सकता है. या इराक के नक्शे के बीचोबीच वे इराक के महान शासकों-प्राचीन काल के बेबीलोन के नेबुचादनज्जर से लेकर मध्यकाल के खलीफा हारून अल रशीद तक—के बीच गर्व से खडे मिलेंगे.

स्म हाम को समर्पित विभिन्न संग्रहा-लयों में, जिनमें शियाओं के पवित्र शहर कर्बला का संग्रहालय भी शामिल है. उन्हें पैगंबर मुहम्मद के भतीजे और दामाद हजरत इमाम अली का वंशज दिखाया गया है. वे पहली बार 1959 में मुर्खी में आए जब उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री अब्दुल करीम कासिम पर

विफल जानलेवा हमला किया. कासिम की गोलियों से छलनी कार सेना के संग्रहालय में रखी हुई है.

लेकिन सद्दाम के कट्टर आलोचक तक यह मानते हैं कि वे उन्मादी नहीं हैं. हो सकता है वे अपने तीन दशक के राजनैतिक कैरियर की सबसे बड़ी (और शायद आबिरी) भूल कर रहे हों, लेकिन उनका तर्क बिलकुल स्पष्ट है, चाहे वह कितना ही अटपटा क्यों न लगे. यह उनके लिए अपने को समूचे अरब जगत के नेता के रूप में स्थापित करने का सबसे अच्छा मौका भी फिलिस्तीन को कुवैत से जोड़ने की उनकी घोषणा को अरब जगत में एक महान काम माना जाएगा.

वाकी इस्लामी दुनिया में भी सहाम से सहानुभूति जताई जा रही है. अमेरिकी कार्रवाई का पाकिस्तान में विरोध हो रहा है और अमेरिका ने अपने नागरिकों को वहां से वापस आ जाने को कहा है. मिस्र समेत कई

ANK

023.

B 1590 HIN



कामिल मु. फादिल चायवाला

आपके पास अगर पैसा है तो आप जो भी चाहें खरीद लें मगर महंगाई 20 गुना बढ

दूसरे इस्लामी देशों में सहाम के समर्थन में प्रदर्शन की खबरें मिली हैं. पिछले हफ्ते बगदाद से 60 किमी उत्तर अल नहरवां सैन्य शिविर में 13 देशों से आए सैकडों अरब नागरिक सैनिकों ने इन नारों के साथ मार्च किया: याह्या अल बाथ (बाथ जिदाबाद), या हिल्ली,हिल्ली/खुल्ली अल इस्तेमार युवल्ली (अरव राष्ट्र जागो, साम्राज्यवाद के चंगूल से निकलो).

सहाम और उनके सहयोगियों का कहना है कि खाडी संकट खत्म हो जाने के बाद वे (सहाम) दूसरी लंडाई भी जीत लेंगे. जिस क्षण वे इज्राएल को लड़ाई में घसीटेंगे, पूरा इस्लामी जगत उद्वेलित हो जाएगा और बीच में ही पश्चिमी ताकतों का साथ छोड देगा. इसके अलावा वे इस लड़ाई को शिक्षित, बुद्धिमान अरबों और अज्ञानी, भ्रष्ट शेखों के बीच की लडाई के रूप में पेश कर रहे हैं. अपने सारे गलत कार्यों के बावजूद सहाम को इस बात का श्रेय तो जाता ही है कि उन्होंने इराक को समूचे, इस्लामी जगत में सबसे उदार. धर्मनिरपेक्ष और प्रगतिशील व्यवस्था दी. उनकी तुलना में शेख रूढिवादी, असहिष्ण

हैं और औरतों के साथ भेदभाव करते हैं. सहाफ "शेख हमसे इसलिए घृणा करते हैं क्योंकि हम उन्हें खत्म कर देंगे. उन सभी को खत्म कर देंगे." फिलिस्तीन के पुराने, जाने-परखे नारे के अलावा सद्दाम अपनी इसी छवि को अरबों और मुसलमानों के

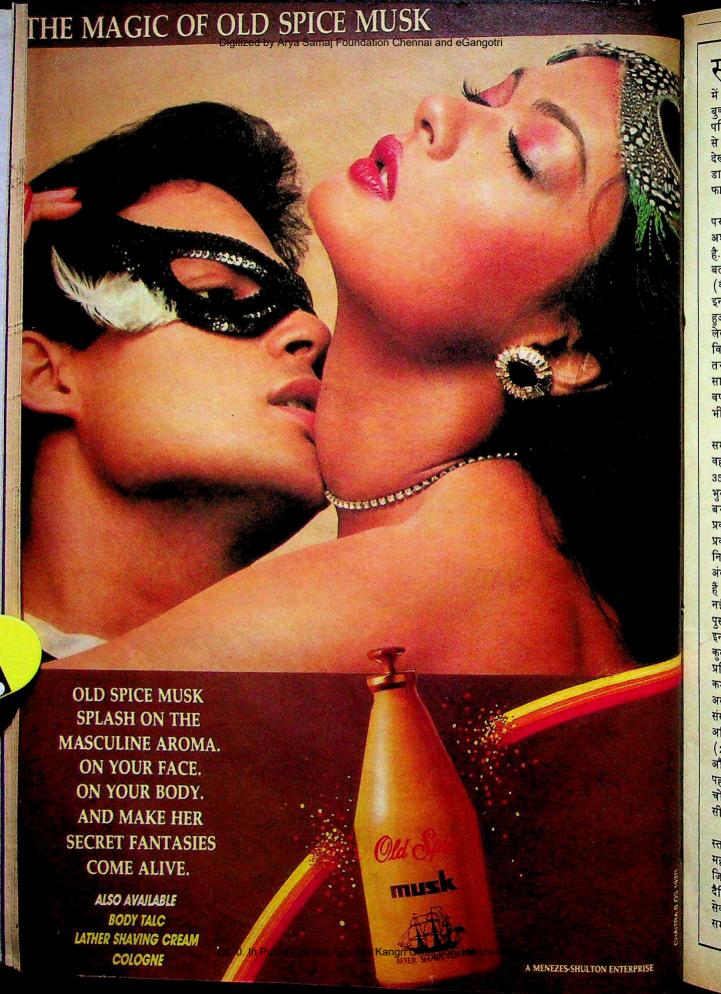
बीच भुना रहे हैं.

क्वैत पर कब्जा करके उन्होंने शायद बहुत कुछ दांव पर लगा दिया है. मध्य पूर्व की चौपड़ पर खेल खेलना, यहां प्यादे को पीटना और वहां ऊंट को पीटने की धमकी देना एक चीज थी, लेकिन चौपड़ को घर ले आना और पूरी द्निया को मुक्त करने की कीमत मांगना बिलक्ल दूसरी चीज है. जब तक उन्हें अपनी इज्जत बचाने का कोई रास्ता नहीं मिल जाता, वे अपनी पहली और आखिरी हार की ओर बढते ही जाएंगे और उनकी मूर्खता की कीमत पूरी द्निया को चुकानी होगी.



अल शुजा बाजार में बिकता कुवैत से लूटा गया माल

फतह के बाद हाथ लगा माल पर्याप्त नहीं है



डालता है, पैसे चुकाता है और आनन-फानन में चल देता है.

अोडीसा भर में फुटपाथ के बुकस्टॉलों पर यह दृश्य अब आम हो चला है. अश्लील पित्रकाओं की जैसे बाढ़ आ गई है. ऐसी पित्रकाओं का नाम ही काफी कुछ बता दिया करता है, जैसे 'केमित कोरिबी' (कैसे करें), 'कामाग्नि' और 'मस्तराम'. इनमें मसाला भी शोर्षक के अनुरूप ही हुआ करता है. खास तौर से गुमनाम लेखक की 'सुहाग रात' का वर्णन, चुंबन के विभिन्न प्रकार और काम-सुख बढ़ाने के तरीके इन पित्रकाओं में जरूर होते हैं.

साथ में सेक्स के कई उत्तेजक वर्णन और अश्लील तस्वीरें भी हुआ करती हैं.

बौद्धिक और आदर्शवादी
समुदाय जहां इससे परेशान है,
वहीं ऐसी पित्रकाओं की संख्या
35 तक पहुंच गई है.
भुवनेश्वर, कटक और
बरहमपुर में ही ज्यादातर
प्रकाशित इन पित्रकाओं के
प्रकाशन का कामकाज रातोरात
निबटा करता है. कई तो कुछ
अंकों के बाद बंद हो जाया करती
हैं और उनकी जगह कोई और
नई पित्रका छपने लगती है.

पुस्तक या छोटे अखबार के आकार में इनका मूल्य औसतन 6 रु. हुआ करता है. कुल मिलाकर इनकी बिक्री 1.5 लाख प्रतियों तक पहुंच गई है, जबिक अपेक्षाकृत कम शिक्षित राज्य ओडीसा में प्रमुख अखबार भी दो लाख प्रतियों की बिक्री की संख्या बमुश्किल पार कर पाते हैं. सबसे अधिक चलने वाली पत्रिकाओं में 'कामना' (25,000 प्रतियां), 'कामाग्नि' (20,000) और 'अनंग रंग' (17,000) शामिल हैं. पहले भी इस तरह की कुछ पत्रिकाएं तो चोरी-छिपे बिका करती थीं पर अब सब सीमाएं टूट गई हैं.

अधिकतर पत्रिकाएं वैसे अभी भी छोटे स्तर पर ही हैं लेकिन इस धंधे में अब जे. महापात्र जैसे बड़े नाम भी आ गए हैं, जिन्होंने कटक से प्रकाशित अपने अंग्रेजी दैनिक 'न्यूज ऑफ दी वर्ल्ड' को बंद कर सेक्स पत्रकारिता को अपनाना बेहतर समझा. आधुनिक प्रेस के मालिक होने के

ओडीसा

## काम से कमाई

### अश्लील पत्रिकाओं की संख्या बढ़ी

कारण उन्होंने 'अनंग रंग' और 'कामना' को बेहतर तरीके से छापा. उनके पूर्व व्यवस्थापक एम. रहमान ने उनकी सफलता का लाभ उठाते हुए पत्रिका प्रेस की ग्रुरुआत कर दी और अच्छा मुनाफा देने वाली पत्रिका 'नूत जौबन' (नया

राम'.
 जिटो: संस्ते प्रेम एकॅसी
 तक सीमि
 में और '
 वैसे,
 महापात्र
 उनके शव
 नहीं. वे
 पत्रिका प्रे

द्भिन पत्रिकाओं में लुभावने शीर्षक, अश्लील तस्वीरें और सेक्स के उत्तेजक वर्णन होते हैं

यौवन) सहित अब तीन पत्रिकाएं निकालते हैं.

अश्लील साहित्य के मौजूदा दौर की शुरुआत अंग्रेजी अखबार 'ट्यूजडे' ने की, प्रेस की दुनिया की एक प्रसिद्ध हस्ती और पूर्व मुख्यमंत्री जे.बी. पटनायक के दामाद सौम्यरंजन पटनायक के अखबार 'ट्यूजडे' में बलात्कार, हत्या और सेक्स की कहानियां भरी होती थीं और इसीलिए वह तत्काल बिकने भी लगा. बाद में 'फाइडे' नाम का एक और अखबार भी निकलने लगा. लेकिन किसी कारणवश ये दोनों ही बंद हो गए.

वैसे, आजकल इन अश्लील प्रकाशनों के कारण साहित्यिक और समाजशास्त्री सभी परेशान हैं. राज्य की साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष एम.

नीलमणि साहू अफसोस से कहते हैं, "गंभीर साहित्य प्रासंगिकता खो चुका है. समाज पर अब इसका कोई असर नहीं होता." उत्कल विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में रीडर, राता राय चेतावनी भरे लहजे में कहते हैं, "अश्लील साहित्य निकालने वाले महज पढ़ने-पढ़ाने तक सीमित नहीं रहेंगे. वे तो सेक्स के क्षेत्र में और 'पराक्रम' करेंगे."

वैसे, इस तरह की आशंकाओं से महापात्र जैसे लोग कतई सहमत नहीं हैं. उनके शब्दों में, "हमारे प्रकाशन अश्लील नहीं. वे तो सेक्स की शिक्षा देते हैं." पत्रिका प्रेस के प्रशांत सेनापित कहते हैं,

"कौन कहता है कि आम लोगों को भाने वाली चीज अच्छा साहित्य नहीं." कुछ तो यह तर्क भी देते हैं कि वे आम जनता में पढ़ने की आदत बढ़ा रहे हैं.

कई लोगों को यह साहित्य भा भी गया है. भुवनेश्वर स्थित इंडियन एक्सप्रेस समूह के एजेंट को अब अश्लील साहित्य लेने में कोई उच्च नहीं. भगीरथी दास जैसे प्रसिद्ध लेखक भी "मेरे पित की पत्नी कौन?" जैसे लेख लिखने लगे हैं. 'पिरती पाथो खाशरा' (काम-क्रीड़ा का स्थान फिसलन

भरा है) जैसे उपन्यास भी प्रमुख प्रकाशन संस्थानों से निकलने लगे हैं. उत्कल विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार शांतनु आचार्य के अनुसार, 'एक दशक बाद तो लेखकों को प्रकाशक ही नहीं मिलेंगे.''

पुलिस या तो इस काम में शरीक है या फिर बहुत हद तक कभी दिखावे के लिए छापा मार आती है. पिछले अगस्त में पित्रका प्रकाशन में छापा पड़ा और रहमान गिरफ्तार कर लिए गए. लेकिन जमानत पर रिहा होते ही वे फिर से कमाई में जुट गए. अपराध शाखा के पुलिस महानिरीक्षक ए. बी. त्रिपाठी के शब्दों में, "इसका हल सामाजिक ही हो सकता है." सामाजिक संस्थाएं और लोगों की नैतिकता के रक्षक कुछ खास नहीं कर पा रहे हैं. और लगता तो यही है कि अश्लील साहित्य का बाजार अभी गरम रहेगा.

बलिया

# तकदीर संवरने का इंतजार

चुनाव क्षेत्र के पिछड़ेपन के प्रति चंद्रशेखर की अनदेखी से असंतोष का माहौल

फरजंद अहमद, बलिया में

पराण की कथाओं के अनुसार महर्षि भृगु ने क्रोध में एक बार भगवान विष्णु तक को लात मार दी थी. उन्हीं महर्षि भृगु का आश्रम बिलया में है और बिलया पिछले महीने भृगु की ही परंपरा का पालन करता दिखा जब इसकी एक प्रतिभावान संतान चंद्रशेखर प्रधानमंत्री बनने के बाद पहली बार दौरे पर आए. उनके साथ प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव भी थे. इस अवसर पर आयोजित जनसभा में जिले के लोगों ने भृगु मुनि बाला गुस्सा दिखा दिया.

प्रधानमंत्री चंद्रशेखर ने जब मुख्यमंत्री से जनसभा को संबोधित करने का आग्रह किया तो लोगों ने मुलायम सिंह पर पत्थरों, जूतों-चप्पलों की बौछार कर दी. मुलायम इस कड़वे व्यवहार से अपमानित और नाराज होकर बौखलाए हुए मंच से उतरने लगे तो चंद्रशेखर उनके पीछे दौड़े और उन्हें मनाने की बहुत कोशिश की. मगर मुलायम सभा स्थल से चले गए. इसके बाद चंद्रशेखर ने लोगों को फटकारा कि उन्हें "व्यवहार करने का सलीका तो सीखना चाहिए."

इस अशोभनीय घटना ने प्रधानमंत्री के चुनाव क्षेत्र बलिया के भाग्य के खुलते द्वार को फिर से बंद कर दिया. उम्मीद थी कि प्रधानमंत्री बलिया के विकास के लिए भारी-भरकम योजना की घोषणा करने वाले हैं. इसीलिए राज्य के मुख्यमंत्री यादव को भी वे अपने साथ लाए थे.

जिलाधिकारी शंकर अग्रवाल मानते हैं कि विलया के लिए, जिसे विकास के नाम पर अब तक खुरचन ही नसीब होती आई है, यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण घटना रही. बिहार से सटा यह जिला तीन बड़ी निदयों—गंगा, घाघरा और टोंस—का अभिशाप जमीन के कटाव के रूप में झेलता रहा है. यहां की 20 लाख में से 12 लाख की आबादी ठाकुरों, ब्राह्मणों और भूमिहारों की है. पिछड़े,

जिनमें यादव प्रमुख हैं, 5.5 लाख हैं: इसी कारण बिलया की उक्त सभा में मुलायम का अपमान किया गया. और दो महीने पहले चंद्रभेखर की कार पर भी युवकों ने पथराव किया था. युवक जानना चाहते थे मंडल आयोग की रिपोर्ट पर वी.पी. सिंह सरकार के प्राचना दल से इस्तीफा क्यों नहीं दिया.

लेकिन यहां के लोग सबसे ज्यादा नाराज यहां के पिछड़ेपन के कारण हैं. जिले की 70 फीसदी आबादी निरक्षर है और

ENGLOSIFICATION OF THE PRINT OF

जीवन का आधार केवल खेतीबाड़ी है. लोगों में बढ़ते असंतोष को देखकर जिला प्रशासन ने एक विस्तृत अध्ययन

लिया में चंद्रशेखर का गांव इब्राहिमपट्टी ही जैसे समृद्धि का द्वीप-सा दिखता है

इब्राहिमपट्टी में मंदिर का निर्माणः विवादास्पद

मभी फोटो: क्रम्म मुनाने कि

रिपोर्ट-प्रस्तावि में अभ का जिब्र जिले से 177 कि सड़क है 3,2000 गांवों मे उद्ये एक कप् युवकों स्वास्थ्य

विस्तरों
की 20
जरूरतें
वदहाल
गंभीर
ले जाने
प्राथिमिक

चुनाव ।

और मि

नाचे थे

दल (स उम्मीद जितना के बाद होगा. ए कहा कि इसी उ प्रधानमं भेला क

गए कि यहां के नहीं कि उन्हें एव वे इस द एक स्थ है, ''इस

कद्र न व उनवे कि चंद्रा उपेक्षा व विख्यात

इब्राहिम इसके अ की इस और आ सर्गना'

इत्रार्गि के बगल और आ मैदान में

रिपोर्ट- 'बलिया की मुख्य समस्याएं और प्रस्तावित समाधान'—तैयार की है. रिपोर्ट में अभावों और प्रस्तावित नई योजनाओं का जिक्र किया गया है. कहा गया है कि इस जिले से कोई राजमार्ग नहीं गुजरता, महज 177 किमी सड़क है और 160 गांवों में कोई सड़क है ही नहीं. जिले में बिजली के केवल 3.2000 उपभोक्ता हैं और केवल 47 फीसदी गांवों में बिजली पहुंची है.

उद्योग के नाम पर एक चीनी मिल और एक कपडा मिल है. इस कारण बेरोजगार यवकों की बड़ी फौज तैयार हो गई है. स्वास्थ्य सेवा का बहुत ही बुरा हाल हैं. 150 विस्तरों वाला जीर्ण-शीर्ण अस्पताल ही यहां की 20 लाख आबादी की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतें पूरी करता है. ऑपरेशन थिएटर बदहाल हैं और कोई रक्त कोष नहीं है. गंभीर रोगी को 150 किमी दूर वाराणसी ले जाने के अलावा कोई उपाय नहीं है. प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा के 23 केद्रों की हालत तो और भी वूरी है.

चंद्रशेखर जब प्रधानमंत्री बने तो इस चुनाव क्षेत्र में लोगों ने दिवाली मनाई थी और मिठाइयां बाटी थीं. युवक मस्ती में नाचे थे और जनता दल रातोरात जनता दल (स) बन गया था. यहां के लोगों को उम्मीद वंधने लगी थी कि अमेठी का जितना विकास राजीव के प्रधानमंत्री बनने के बाद हुआ, उतना ही बलिया का भी

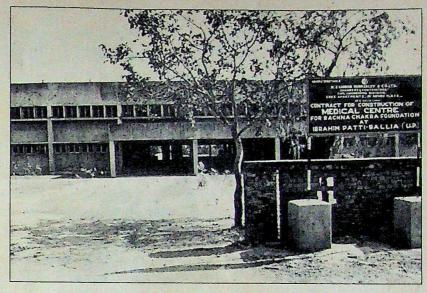
ाडी है.

त अध्ययन

होगा. एक किसान रामप्रकाश सिंह ने कहा कि इस बार लोगों ने चंद्रशेखर को इसी उम्मीद से वोट दिए थे कि वे प्रधानमंत्री बनेंगे और यहां के लोगों का भला करेंगे. 1984 में वे इसीलिए हार गए कि 1980 का चुनाव जीतने के बाद यहां के विकास के लिए उन्होंने कुछ नहीं किया. लिहाजा, 1989 में जनता ने उन्हें एक और मौका दिया. सौभाग्य से वे इस वार प्रधानमंत्री भी वन गए हैं. एक स्थानीय पत्रकार स्नेहरंजन कहते हैं, "इस बार उन्होंने यहां के लोगों की कद्र न की तो वे जमानत भी खो देंगे."

उनके समर्थक यही मानते आए थे कि चंद्रशेखर ने इस पूरे क्षेत्र की तो उपेक्षा की है मगर अपने निजी संगठनों, विख्यात त्यासों और अपने गांव इत्राहिमपट्टी का पूरा खयाल रखा है. इसके अलावा उन्होंने अपने खास लोगों की इस तरह मदद की कि वे राजनैतिक और आर्थिक रूप से ताकतवर 'माफिया सर्गना' माने जाने लगे हैं.

इबाहिमपट्टी में उनके पुश्तैनी मकान के बगल में एक विशाल बंगला बना है और आगे एक हरा-भरा मैदान है. इस मैदान में उनका बड़ा चित्र लगा है. पीछे



इब्राहिमपट्टी में ही निर्माणाधीन अस्पतालः बनने से पहले ही बवाल

### बसे ज्यादा चर्चा रचनाचक्र फाउंडेशन ट्स्ट की ओर से बन रहे 150 बिस्तरों वाले अस्पताल की है

भारत का मानचित्र बना है. चित्र के नीचे लिखा है—'भारत के भाग्य विधाता'. इस बंगले के आगे ही मद्रै के सुप्रसिद्ध मीनाक्षी मंदिर की शैली का एक वड़ा मंदिर भी बन रहा है. मंदिर का निर्माण चंद्रशेखर के

**∘द्रशेखर ने पिछले चुनाव में** विक्रम सिंह का पक्ष लिया

सुर्यदेव सिंह के भाई विक्रम सिंह



भतीजे जयप्रकाश की देखरेख में हो रहा है, जो इसके खर्च संबंधी सवाल पर गोलमोल जवाब देकर किनारा कर जाते हैं. वे कहते हैं, "इसे जनता से इकट्ठे किए गए चंदे से बनाया जा रहा है. लेकिन मैं यह नहीं

जानता कि पैसा कौन दे रहा है और

किसे दे रहा है."

उक्त विशाल बंगले के पास ही भारी-भरकम पूंजी वाले रचनाचक्र फाउंडेशन ट्रस्ट की ओर से एक स्कूल का निर्माण किया जा रहा है. लेकिन सबसे ज्यादा चर्चा है इस ट्रस्ट द्वारा बनवाए जा रहे 150 बिस्तरों वाले अस्पताल की. अस्पताल की नींव 38 वर्ष पहले जयप्रकाश नारायण ने रखी थी. और इस ट्रस्ट का गठन 15 वर्ष पहले किया गया था जिसमें आधा पैसा जनता के चंदे से और शेष आधा राज्य और केंद्र सरकार से बराबर-बराबर के अनुदान के रूप में मिलना था. अब तक केवल राज्य सरकार की ओर से ही दो किस्तों में 80 लाख रु. मिले हैं.

ट्रस्ट के धन के इस्तेमाल पर तरह-तरह की शंकाएं व्यक्त की जाती रही हैं. अस्पताल के निर्माण की धीमी गति ने संदेहों को और मजबूत ही किया है. कभी चंद्रशेखर के सहयोगी रहे मैनेजर सिंह का, जो पिछले विधानसभा चुनाव के बाद से उनके विरोधी हो गए हैं, दावा है कि ट्रस्ट के आय-व्यय के ब्यौरे को कभी सार्वजनिक नहीं किया गया. वे

यह भी बताते हैं कि ट्रस्ट के खाते से 20 लाख रु. निकालकर दिल्ली ले जाए गए.

चंद्रशेखर और भी कई ट्रस्टों से जुड़े हैं. मसलन-बिहार के सिताबदियारा में जयप्रकाश स्मारक ट्रस्ट, बलिया जिले के सौरा में आचार्य नरेंद्रदेव शिक्षा संस्थान और हरियाणा के भोंडसी में भारत यात्रा केंद्र. भोंडसी में 14 हेक्टेयर में बने आलीशान फार्म हाउस की जमीन इस गांव की पंचायत ने 1984 में चंद्रशेखर के जन्मदिन पर उन्हें भेंट की थी.

चंद्रशेखर के आलोचकों के अनुसार इन टस्टों का पैसा कहां खर्च होता रहा है यह अब तक रहस्य ही बना हुआ है. मसलन, 1984 में बने जयप्रकाश स्मारक ट्रस्ट के सचिव जगदीश भाई के मुताबिक चंद्रशेखर ने ट्रस्ट के लिए 12 लाख रु. चंदे से इकट्टा किए थे. इस पैसे से जेपी का एक स्मारक और एक पुस्तकालय बना. कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री रामकृष्ण हेगड़े ने इस ट्स्ट को 25 लाख रु. का अनुदान दिया. मैनेजर सिंह का कहना है कि यह रकम भी हजम हो गई. पैसे का हिसाब-किताब दिल्ली में ही रखा जाता है. उनका कहना है, "चंद्रशेखर के ये ट्स्ट तो स्याहीसोख की तरह हैं. पैसा ऐसे गायब होता है कि उसका नामो-निशान तक नजर नहीं आता." इस पर चंद्रशेखर के भतीजे जयप्रकाश का जवाब है, "दूसरों की आलोचना करना तो आसान है,

द्रशेखर के ये ट्रस्ट तो स्याहीसोख जैसे हैं. इनका पैसा कहां जाता है, कौन जाने"

मैनेजर सिंह, पूर्व सहयोगी



लेकिन कुछ कर दिखाना मुश्किल होता है. आलोचना भी उन्हीं की होती है, जो कछ कर दिखाते हैं."

चंद्रशेखर के समर्थक कह सकते हैं कि मैनेजर सिंह की आलोचना पूर्वाग्रहों से प्रेरित है क्योंकि पिछले विधानसभा चुनाव के दौरात मैनेजर सिंह हालांकि जनता दल के अधिकृत उम्मीदवार थे, लेकिन चंद्रशेखर ने चुनाव प्रचार धनबाद के माफिया सरगना और अपने प्राने मित्र



जयप्रकाश, भतीजा

ত্তি

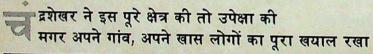
अ लोचना करना तो बहुत आसान है. लेकिन कुछ कर दिखाना बहुत मुश्किल होता है"

सूर्यदेव सिंह के भाई विक्रम सिंह के पक्ष में किया था. दोनों ही यह चुनाव हार गए थे. और मैनेजर सिंह तब से ही बलिया में विक्रम सिंह और उनके साथियों के 'आतंक' के खिलाफ प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री को शिकायती पत्र भेजते रहे हैं. सूर्यदेव सिंह का बार-बार बचाव करने के लिए भी चंद्रशेखर को तीखी आलोचना झेलनी पड रही है.

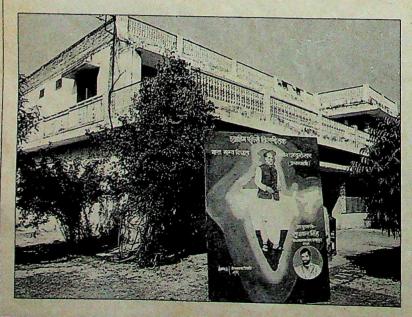
बलिया पिछडेपन का शिकार रहा है मगर इसका इतिहास इतना अंधकारमय नहीं रहा है. स्वतंत्रता सेनानी चित्तू पांडेय और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी मंगल पांडेय पर बलिया गर्व भी करता है.

सामाजिक और सांप्रदायिक शांति के बावजूद यदि लोग बेचैन हैं तो इसकी वजह यहां का पिछडापन ही है. हालांकि बलिया के विधायक राज्य मंत्रिमंडल में मंत्री बनते रहे हैं लेकिन एक भी मंत्री इसकी तकदीर में फेरबदल नहीं कर पाया. प्रधानमंत्री का निर्वाचन क्षेत्र बनने के बाद शायद इसके भाग्य के दरवाजे खुल जाएं. इसी वजह से सरकार ने पिछले महीने एक वरिष्ठ आईएएस अधिकारी आलोक सिन्हा को 100 करोड़ रुपए की विकास योजना की प्रगति देखने के लिए तैनात

बलिया के ज्यादातर मतदाताओं की नजर में चंद्रशेखर उम्मीद की आखिरी किरण हैं. वे अब भी यहां के लिए कुछ कर दिखाते हैं तो वे उनकी पिछली भूल-चूक माफ करने को तैयार हैं. लेकिन वे कुछ नहीं कर पाए तो बलियावालों को भृगु वाले तेवर अपनाने में शायद ही देर लगे.



इब्राहिमपट्टी में चंद्रशेखर का विशाल बंगलाः दरिद्रता में समृद्धि का द्वीप



## राज की रौनक, और रोना

\_हरिंदर बवेजा

राज भोगने वाले के चेहरे पर चमक तो दिखती है लेकिन इसके साथ जुड़ी जिम्मेदारियां अक्सर इसके सुख में खलल भी डालती हैं. चंद्रशेखर मंत्रिमंडल में ऐसे नए लोगों की संख्या 22 है. ऐसे कुछ मंत्रियों के कामकाज और सुविधाओं-परेशानियों पर एक नजर:

क्यी कार्टन अजीत नैनन

पक्ष में

गए थे.

लया में

ायों के

ो और

रहे हैं

करने के

लोचना

रहा है

कारमय

र पांडेय

ाम के

या गर्व

गंति के

इसकी

हालांकि

ंडल में

ति मंत्री

र पाया.

के बाद

न जाएं.

तेने एक

आलोक

विकास

तैनात

ओं की

शाखिरी

नुछ कर

ल-चूक

वे कुछ

नो भा

र लगे.

वर्षीय सिन्हा आज 80 करोड़ जनता की आमदनी-खर्चों को प्रभावित करने की हैसियत रखते हैं.

वे कहते हैं, "यह किसी भी दूसरे काम की तरह है. नौकरशाह के रूप में अपने 13 वर्षों के दौरान कई महत्वपूर्ण फैसले करने पड़े थे. मुझे इसका प्रशिक्षण मिला है और इसका अभ्यास भी है."

और अब जितने समय जमकर काम करना पड़ता है उसका प्रशिक्षण उन्हें नहीं मिला है. बैठकें सुबह आठ बजे शुरू हो जाती हैं और काम खत्म होते-होते देर रात के एक से ऊपर बज जाते हैं. अखबार वे अपने बाथरूम में ही पढ़ पाते हैं.

लुररहमान आजकल बीमारियों और मानव गरीर रचना के बारे में नई-नई जानकारियां हासिल करने में इतने व्यस्त हैं कि जल्दी ही वे चिकित्सा गास्त्र के चलते-फिरते विण्वकोप वन जाएंगे.

स्वास्थ्यमंत्री के रूप में भी वे उसी विद्वतापूर्ण नजिरये से काम कर रहे हैं जिससे वे मिथिला विश्वविद्यालय के कुलपित की जिम्मेवारी निभाते थे. मलेरिया, फाइलेरिया और डिप्थीरिया के बारे में उन्हें पर्याप्त ज्ञान हासिल हो चुका है. एड्स और कैंसर के बारे में वे नई जानकारियां लेने में जुटे हैं.

वे कहते हैं, "मैं खुद को मंत्री नहीं, आध्यात्मिक अभिभावक मानता हूं." उनका तौर-तरीका भी बड़े घर के मुखिया जैसा ही है. उनके साथ काम करने वाले एक कर्मचारी का कहना है, "वे निर्देश भी ऐसे देते हैं मानो शेर पढ़ रहे हों. लेकिन नरमी का मतलब सुस्ती नहीं है."

अपने कर्मचारियों को निरंतर सिक्रिय रखने का उनका एक तरीका है औचक निरीक्षण. कर्मचारियों को भी भनक तभी मिलती है जब वे कुर्सी से उठ खड़े होकर कहते हैं, "आइए, अब चला जाए." अस्पतालों का हाल देखकर वे हैरान हैं. लेकिन कोई भी कदम उठाने से पहले उन्हें दिल्ली के उपराज्यपाल को लिखना पडता



यशवंत सिन्हा, कैविनेट मंत्री

### फाइलों, बैठकों की भागमभाग में खाने, घर जाने की फुरसत कहां

गी सांसद और असंतुष्ट नेता के रूप में ही चिंचत रहे वित्तमंत्री यणवंत सिन्हा अब अक्सर अपना पूरा-पूरा दिन बैठकों और मोटी-मोटी फाइलों को निबटाने में लगाते हैं. हरी घास पर बैठकर धूप का मजा लेने के दिन अब लद गए हैं.

आईएएस अधिकारी की नौकरी छोड़कर सिन्हा ने जब राजनीति में उतरने की इच्छा जाहिर की थी तब जेपी ने यह कहते हुए उन्हें मना किया था कि अपनी व्यक्तिगत आमदनी और खर्चों के कारण वे स्वच्छ राजनीति नहीं कर पाएंगे. बहरहाल, नौकरशाह से राजनेता बने 53

बजे रात तक जगाए रखती है. कुछ घंटे की नींद ही ले पाते हैं कि 5.30 से ही फोन आने शुरू. इसके साथ वही व्यस्तता शुरू.

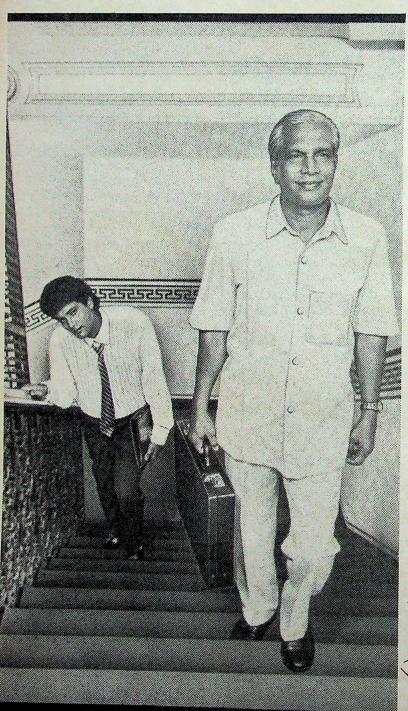
शकीलुर्रहमान, कैबिनेट मंत्री

उर्दू शायरी की कद्रवानी छोड़कर अस्पतालों का औचक निरीक्षण

उनके जेहन में अब गालिब की जगह ले ली है आंत्रशोथ की समस्या ने. उर्दू साहित्य के कद्रदान शकी-



## साठ साल के बूढ़े या साठ साठ साल के जवान?



खा आपने? ६० साल की उम्र में भी कितनी शक्ति, कितनी स्फूर्ति! जबकि आप अभी ३० ही के हैं फिर भी थकान

महसूस करते हैं. क्यों? इसका जवाब है - केसरी जीवन.

हर दिन, दिन में दो बार दो चम्मच. ज़ाफ़रान (केसर) - अनमोल तत्व!

केसरी जीवन की बोतल खोलिए... दुनिया की सबसे महँगी जड़ी-बूटी असली ज़ाफ़रान की खुश्बू आपका खागत करेगी... कश्मीर की वादियों से चना गया ज़ाफ़रान.

केंसरी जीवन में ज़ाफ़रान के आरोग्यकर और सौन्दर्यवर्धक गुणों के साथ ताज़ा आंवला व अन्य अनेक जड़ी-बूटियों भी तो हैं जो शरीरगठन मज़बूत बनाएं, शरीर के टिशूज़ को वृद्धावस्था में भी चुस्त रखें, तेज़ रफ़्तार ज़िंदगीं के तनावों से मुक्त रखने में सहायक हों और बीमारियों से मुकाबला करने की शक्ति दें.

ज़िंदगीभर सेहत का अनमोल रत्न आप भी पाइए. जीभर कर जीने की तरो-ताज़गी महसूस कीजिए.

झंडु केसरी जीवन



रग रग में जान - ज़िन्दगी की शान

ZP/21/254 HIN

में भी

जबिक गे थकान

ने खुश्वू

यों से

भोर

व अन्य

मज़बूत

भी चुस्त

त रखने । करने

ज़गो

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है. मुंबई के वेश्या मुहल्ले में एड्स पर नियंत्रण पाने का उपाय करने से पहले मूख्यमंत्री से संपर्क करना होता है. स्वास्थ्यमंत्री का बस चलता तो खुद ही जा कर वेश्याओं को झिड़क आते.

बहरहाल, वे खुद झिड़की से बचने की कोशिश में जुटे रहते हैं लेकिन उनकी पत्नी अक्सर उनसे शिकायत करती हैं, "आपसे मिलने के लिए मुझे भी लगता है एप्वायंटमेंट लेना पड़ेगा." श्रीमती रहमान की हिदायत है कि मंत्री जी रात 10 बजे से पहले भोजन के लिए घर में हाजिर रहें वरना....

एच.एन. यादव, कैबिनेट मंत्री

### फैशन और पेप्सी की दुनिया में पालथी मारने की कवायद

'पड़ा तथा खाद्य प्रसंस्करणमंत्री क् हुकुमदेव नारायण यादव कहते हैं कि वे खुद को पिजड़े में कैद पक्षी जैसा महसूस करते हैं. उनकी बात तब सच लगती है जब बिहार के गंवई माहौल से आए यादव को आप दिल्ली के फैशन-पेप्सी की दूनिया से तालमेल बिठाते देखें.

सत्ता उन्हें या उनकी शैली को बदलने में नाकाम रही है. वे चैन में तभी दिखते हैं जबं पालथी लगाए बैठे हों. इसलिए कपड़ामंत्री की कुर्सी तो लगभग खाली ही रहती है. उन्हें दफ्तर के सोफे पर बैठने में भी मुश्किल होती है. वे कहते हैं, "हमें तो जमीन पर बैठने की आदत है.

जब वे पद्यासन में बैठते हैं तो बातचीत के बीच में ही आंखें बंद कर लेते हैं. नहीं, तब ऊंघते नहीं हैं. वे ईश्वर से तादात्म्य स्थापित करते हैं. फाइल देखते और बातचीत करते हुए जब भी उन्हें मौका मिलता है, वे भगवान को याद कर लेते हैं. घर पर वे ही बार-बार फोन सुनना कतई पसंद नहीं करते क्योंकि "सारा दिन तो दफ्तर में रहते ही हैं."

हिंदुस्तानी बोलते हैं. और उनके कर्मचारी इसे पूरी तरह समझते हैं. यादव कहते हैं, "यह धारणा निराधार है कि हमारे



यादव को अभी कुछ समय लगेगा. बंगला, गद्दी और सलाम ठोंकेते संतरियों के प्रति अभी वे सहज नहीं हो पाए हैं. उनके मुताबिक, "मेरे मित्र मुझसे कहा करते हैं कि आप तो मंत्री बनाते-बिगाड़ते रहे, कभी मंत्री बने नहीं. इसलिए इस बार मैंने सोचा बन ही जाते हैं."

हरमोहन धवन, राज्यमंत्री

### खुले दरवाजे, तेज काम, घनघनाता फोन और उच्च विचार

प नागर विमानन मंत्री के दफ्तर आ में जाएं और वहां सूट, टाई और ऊंची एडी वाला जुता पहने कोई शख्स मुस्कराते हए आपको सिगरेट पेश करें तो

पीछे मत हटिएं. हां, ये मंत्री जी ही हैं, भले ही वे आम नेता सरीखे न दिखतें हों.

1970 में 'सेल्फ मेड इंडस्ट्रियलिस्ट' (अपने बल-बूर्ते बने उद्योगपति) पुरस्कार जीतने वाले, और अब राजनेता बने हरमोहन धवन को खादी से विशेष लगाव नहीं है. वैसे, आज भी वे खुद को नेता नहीं मानते. यह बात अलग है कि पूरा मंत्रालय वे चलाते हैं. वे कहते हैं, "विमानन भी एक उद्योग ही है.'

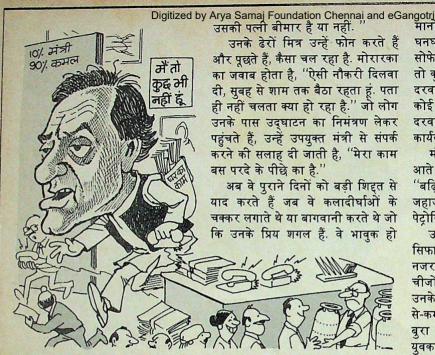
उनकी कार्यशैली कुछ खास ही है. वे खुलेपन के हिमायती हैं. यानी आप उनके दफ्तर या घर में सीधे प्रवेश पा सकते हैं. जब वे कुछ लोगों से बात कर रहे हों, तो मुलाकातियों का दूसरा दल कमरे के कोने में सोफे पर, निजी सहायक के कमरे में तीसरा और एक जत्था निजी संचिव के कमरे में चाय की चुस्कियां लेता होता है.

वे किसी को 'न ' नहीं कहते. न ही वे किसी टेलीफोन को सुननें से इनकार करते हैं. लेकिन यह मेलजोल उनके काम में आड़े नहीं आती. उनके एक अधिकारी कहते हैं. "वे हमेशा जल्दबाजी में होते हैं. कभी-कभी तो हम पिछड़ जाते हैं.'

मंत्री बनने के सात दिन बाद ही धवन ए-320 विमान की उड़ान पर थे. पूर्ववर्ती वी.पी. सिंह सरकार ने इस विमान की उड़ाने बंद करवा दी थी. वे कहते हैं, "यह कुल मिलाकर राजनैतिक फैसंला ही था. नहीं? मैं खोजबीन में भला अपना समय क्यों जाया करूं? मुझे और भी कई काम करने हैं. मेरी प्राथमिकता यह पता करना है कि वे विमान फिर काम के काबिल हैं

हरमोहन धवन कहते हैं कि काम ही उनका शगल है. वे बहुत व्यापक दृष्टिकोण रखते हैं. उनके मुताबिक अगर वे जुट जाएं तो विमानों की उड़ान सही समय पर होने लगे. कोई और होता तो हंपते भर के इतने कठिन काम के बाद शायद बिस्तर पकड़ लेता. लेकिन धवन सुस्त नहीं पड़े, "मैं एअरलाइंस के पूरे ढांचे में तब्दीली करना चाहता हूं." इसके तहत उड़ान के वक्त कैटरिंग सेवा, ग्राहक सेवा वगैरह उपलब्ध कराना सब कुछ है. इंडियन एअरलाइंस 'मेनूं' और चालक दल की वेशभूषा में परिवर्तन कर ही चुकी है. यानी धवन काम के प्रति पूरे गंभीर हैं.





कमल मोरारका, राज्यमंत्री

### फाइलें ही फाइलें और ऑजयां, और सारे शगल धरे रह गए

"मल मोरारका के लिए प्रधान-मंत्री कार्यालय में राज्यमंत्री होना क्छ-क्छ स्कूली दिनों में लौटने जैसा है. वहां पढ़ने को बहुत कुछ है. दिन भले ही बत्म हो जाए पर काम नहीं खत्म होता. वे घर भी जाते हैं तो उनका बस्ता भरा रहता है. अंतर सिर्फ इतना है कि इसे बस्ता कोई और ढोता है.

वे कहते हैं, "मूझे फाइलों से नफरत है. वे मेरे बस की नहीं." लेकिन वे जानते हैं कि इनसे पीछा छुड़ाने का कोई उपाय नहीं है. उनके अनुसार, "प्रधानमंत्री से किसी विषय पर बात करने के लिए मुझे उनसे ज्यादा नहीं, तो उनके बराबर जानकार होना चाहिए.'

जब वे प्रधानमंत्री या उनकी फाइलों में मशगूल नहीं होते तो लोगों से मिलते-जुलते हैं. इनमें हर तरह की सिफारिश लेकर आने वाले भिन्न-भिन्न श्रेणी के राजनीतिक, अधिकारी, व्यवसायी, दोस्त आदि होते हैं. किसी को अपनी साली-सलहज का तबादला करवाना है तो किसी को अपने भाई के लिए फोन चाहिए. इन सबके लिए वे करते क्या हैं ? "अरे भाई, किसी ने फोन के लिए पैसा जमा किया है और मैं उसका काम करवा सकता हूं, तो क्यों नहीं करना चाहिए ? या किसी के घर जाकर मैं देखूंगा तो नहीं ही कि उठते हैं, "हां, मैं बेहद व्यस्त हूं पर हर रोज मैं याद कर लेता हूं कि असल में मैं तो कुछ नहीं हूं. मैं इसे यों कहना चाहुंगा—मैं दस फीसदी मंत्री हूं तो 90 फीसदी कमल मोरारका."

जयप्रकाश, उपमंत्री

### सब्जी बाजार के माहौल में काम कम, स्टाइल ज्यादा

अगर कोई मंत्री अपने विशेषा-धिकारों और सुविधाओं के प्रति बहुत सचेत है तो वे हैं पेट्रोलियम तथा रसायन और संचार उपमंत्री जयप्रकाश. रातोरात ये गंवई, कुर्ता-पायजामाधारी, कुल्यात ग्रीन ब्रिगेड, जो महम उपचुनाव धांधली का मूख्य कारक बना, के पूर्व कमांडर अब 'बंदगला कोट मंत्री' हैं:

वे शायद उन कुछ मंत्रियों में भी हैं जिनके घर के आगे सुरक्षाकर्मी बैठे होते हैं. हालांकि इनका कोई मतलब नहीं है क्योंकि लोग यहां आते-जाते ही रहते हैं. आने वालों में ज्यादातर देवीलाल और ओमप्रकाश चौटाला के समर्थक होते हैं.

जयप्रकाश के निजी सहायक का कमरा

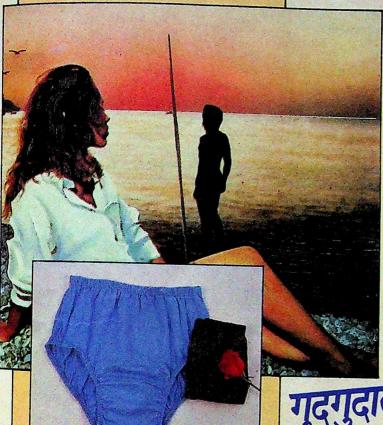
मानो सब्जी बाजार हो. दिन-रात फोन घनघनाता रहता है. यहां लोग कुर्सियों सोफे पर जमे होते हैं. कुछ खड़े मिलते हैं तो कुछ कमरे में घुसने का इंतजार करते दरवाजा खुलता है और ग्रीन ब्रिगेड का कोई कार्यकर्ता अंदर दाखिल होता है. फिर दरवाजा खलता है और ग्रीन ब्रिगेड के कार्यकर्ता जैसा कोई भीतर जाता है.

मंत्री अपनी गद्दी में धंसे खुश नजर आते हैं. मंत्री बनकर कैसा लगता है? "बढिया लगता है. अब बंबई जा रहा हं, जहाज से. वहां बंबई हाई में एक पेट्रोलियम प्लांट है अपना."

उनसे अपने मामले को आगे बढाने की सिफारिश करके लौटते लोग भी प्रसन्त नजर आते हैं. इनकी सिफारिश दो ही चीजों की होती है-रसोई गैस या फोन. उनके एक सहायक कहते हैं, "उन्होंने कम-से-कम 20 विशेष कनेक्शन दिए हैं. क्या बुरा है इसमें ? युवक खुश हैं कि कोई युवक मंत्री बन गया है." (35 साल की उम्र में वे सबसे छोटी उम्र के मंत्री हैं).

उनसे मिलने वाले ही उन्हें व्यस्त रखते हैं. ठीक भी है. कैबिनेट मंत्री ने उनके काम का बंटवारा अभी नहीं किया है. संचार मंत्रालय की कुछ फाइलें ही पेट्रोलियम मंत्रालय पहुंचती हैं. और उनके अधिकारी जानकारी देते हैं कि उनमें क्या है. वे धड़ल्ले से कहते हैं, ''हमारा कौन-सा दिमागी काम है. हम बस इंस्ट्रक्शंस (आदेश) दे देते हैं." शायद सारा काम अधिकारी ही करते हैं. और मंत्री महोदय अपनी स्टाइल में व्यस्त!





त फोन कुसियों. मलते हैं र करते. गेड का है. फिर गोड के है. ग नजर

ता है? रहा हूं, में एक

ढ़ाने की प्रसन्त दो ही

ा फोन. नि कम-

हैं. क्या के कोई

ाल की रे हैं).

त रखते उनके

लें ही र उनके में क्या हौन-सा स्ट्रक्शंस ा काम महोदय

लिरिल अण्डरवियर, बनियान और लेडीज पेण्टीज का जवाब नहीं! लिरिल . . . यानी रेशमी कोमलता का वो ताज़गी भरा अहसास, जो आपको स्फूर्ति दे हर दिन . . . हर पल।

लिरिल . . . आत्तरिक वस्त्रों की अतुलनीय श्रृंखला, जो आधुनिकतम मशीनों पर एक्सपोर्ट क्वालिटी के 100% कोम्ब्ड, गांठरहित धागों से बनाए जाते हैं . . .

कोमल स्पर्श का गुदगुदाता अहसास. . . ८५६ दिस्टि अण्डरवियर • बनियान

- बनियान
- लेडीज पेण्टीज







ATUL PUBLICITY

लिरिल — कोमल अनुभूति , अंतर्राष्ट्रीय क्वालिटी

आईटीडीसी

## अब आएंगे गांववाले

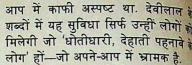
#### देवीलाल के नए फरमान से होटलवाले परेशान

सी शुक्रवार की रात अगर आप शहर के अपने पसंदीदा होटल के डिस्कोथे में जाएं या कैंडल लाइट डिनर के लिए दिल्ली में अशोक होटल के फंटियर रेस्तरां में पधारें तो खाने और नाच-गाने के साथ आपको कई और चीजें भी मिलेंगी. वहां धोती बांधे, पगड़ी सजाए गंवई भीड़ भी मिलेगी. हैरत में मत पडिए.

अब पर्यटन मंत्रालय ने सप्ताह के दो दिन बृहस्पतिवार और शुक्रवार ग्रामीण भारत के लिए आरक्षित कर दिए हैं. इन दिनों आईटीडीसी के होटलों में उप- मानना है कि देश की 70 फीसदी इस देहाती जनता का हीन भावना से ग्रस्त होना ठीक नहीं.

फाइव स्टार 'देहात दिवस' का यह अजब विचार ताऊ के दिमाग में तब कौंधा जब पिछले महीने वे उदयपुर में आंगन शिल्पग्राम मेले का उद्घाटन करने गए थे. मेले में आए पर्यटकों के रंग-ढंग देखकर ही

मल में आए पयटका के रंग उन्हें यह तरकीब सूझी. उन्होंने सोचा कि अमीर-उमरावों की तरह ही दस्तकार, गांव की मिट्टी



लेकिन आईटीडीसी के अफसर अगर 'देहाती पहनावे' के मुद्दे की जटिलता को लेकर हैरान-परेशान थे तो दिल्ली में असाल पुराना रिकॉर्ड तोड़ रही सर्दी में इस योजना का ब्यौरा तैयार कर रहे मंत्रात्य के अधिकारियों के पसीने छूट रहे थे समस्याएं अनेक थीं. जैसे, धोती-कुर्ता सिषं देहाती ही नहीं पहनते, मुंबई और दिल्ली में बहुत-से दूसरे लोग भी इसे पहनकर अफीसदी रियायत पाने का मौका भला को छोड़ेंगे. और फिर, देहाती और शहरी औरतों में फर्क कैसे किया जाएगा. दोनों ही

या तो साई पहनती हैं या सलवार-कुर्ता चिट्ठी व

महिला

बाद के

मंत्री वं

के कार

ह. का

कि वैसे

मुनाफा

इस सा

करोड

बे़बकुप

देवीलाव

योजना

हफ्ते मे

जाए;

तक ही

कहां रि

आई

आ



प्रधानमंत्री देवीलाल की चहेती उस जनता को 50 फीसदी रियायत मिलेगी जिनका पता ग्रामीण डाकखाने का हो.

यानी अब देश भर में फैले आईटीडीसी के 40 होटलों और रेस्तरांओं में हफ्ते में दो दिन 'गंबई सांझ' का आयोजन हुआ करेगा. इस योजना के पीछे ताऊ का तर्क है कि 'कीई ग्रामीण जब ऐसे किसी होटल के पास से गुजरता है तो कुछ सहमा-सा होता है और सोचता है कि अंदर क्या होता होगा. वह यही मानकर चलता है कि सिर्फ सूट-बूट-टाई में सजे लोग ही इसके अंदर जा सकते हैं. रियायत देने से इन देहातियों का हीनता बोध कुछ कम होगा.'' ताऊ का में खेलकर बड़े हुए गरीब लड़के मेले में क्यों नहीं आ सकते? देवीलाल के लिए शहरी और विदेशी पर्यटक सब अमीरों की ही श्रेणी में आते हैं.

अपने अड़ियल स्वभाव के अनुसार देवीलाल ने उसी मौके पर रियायत की यह घोषणा भी कर दी. दिल्ली लौटने के तीन दिन के भीतर ही आईटीडीसी के मुख्यालय को पर्यटन मंत्रालय का प्रशासनिक आदेश पहुंचा कि ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले लोगों को बृहस्पतिवार और शुक्रवार को 50 फीसदी रियायत दी जाए. लेकिन आदेश में इसे लागू करने की कोई तारीख नहीं दी गई थी. और फिर 'ग्रामीण पृष्ठभूमि' शब्द अपने-

शब्दों के इस अमजाल के अला मंत्रालय के अधिकारियों के सामने समत लोगों को पहचानने की भी थी. होटल जो लोग रियायत के लिए आएंगे उन्हें के पहचाना जाएगा कि वे शहर के हैं या कि के? मंत्रालय के अधिकारियों ने देवीला सामने यह सुझाव रखा कि गांव के जी त इन होटलों में रियायत हासिल कर चाहते हैं, उन्हें गांव के सरपंच या परवा की चिट्ठी या परिचय पत्र लाना चाहिए मुद्दे पर नारीवादी खफा न ही जा इसलिए यह व्यवस्था भी कर दी गई अगर गांव की औरतें भी कभी अपने के विना ही वहां आना चाहें तो वे ऐसी

योजना व ही सीमि का कहा चलेगी, पर जहां एक और पेहातियों चीहिए व है कि यह अधिकारि और फाइ है मसल बिट्टी ले आएं. शायद यहं व्यवस्था संसद में महिला सांसदों द्वारा मचाए गए हल्ले के बाद की गई. लेकिन यह प्रस्ताव अभी तक मंत्री की मंजूरी का इंतजार कर रहा है.

देवीलाल

हीं लोगों को

पहनावे के

फसर अग

नटिलता को

दल्ली में 23

सर्दी में इस

रहे मंत्रालय

ब्रुट रहे थे गे-कुर्ता सिपं

र दिल्ली में

पहनकर 50

ा भला क्यों

और शहरी

गा. दोनों ही

र-कुर्ता.

ामने समह

यी. होटल

एंगे उन्हें वै

के हैं या ग

देवीलाल

व के जो त

सिल कर

या परवी

वाहिए.

त हो ज

दी गई

ती अपने मे

तो वे ऐसी

साडी

तो

ो हैं

ामक है.

आईटीडीसी को इसका विरोध करना ही था. अधिकारियों के अनुसार इस योजना के कारण निगम को हर साल तीन करोड़ इ. का घाटा झेलना पड़ेगा. उनका कहना है कि वैसे भी 1990 में 12 करोड़ इ. का मुनाफा कमाने वाली इस संस्था का मुनाफा इस साल की मंदी के कारण कम होकर 7 करोड़ इ. तक पहुंच जाने की आशंका है.

आईटीडीसी के अधिकारी इसे 'ब्रेवकूफाना कदम' मानते हैं. उन्होंने देवीलाल के सामने इसकी तीन वैकल्पिक योजनाएं रखीं. ये हैं: रियायत का प्रस्ताव हफ्ते में एक दिन तक ही सीमित किया जाए; रियायत सिर्फ भारतीय रेस्तरांओं तक ही सीमित रहे क्योंकि देहाती लोग कहां पिज्जा और वर्गर खाएंगे; और

कीमत 35 से 55 रु. के बीच है. मुर्गे के व्यंजन 80 रु. से कम के नहीं. और तो और, सिर्फ एक रोटी ही कम-से-कम 6 रु. की है. रियायत के बाद भी बहुत-से लोगों के लिए इन्हें खा पाना चांद को हासिल करने की तरह होगा. फिर, गांववालों को 33 फीसदी विलासिता कर से तो नहीं ही बख्शा जाएगा. अधिकारियों का सवाल है, "क्या देहाती सिर्फ हीन भावना मिटाने के लिए ही इतना खर्च करेंगे और वह भी उस दुनिया में जो उनके लिए अजनबी है?"

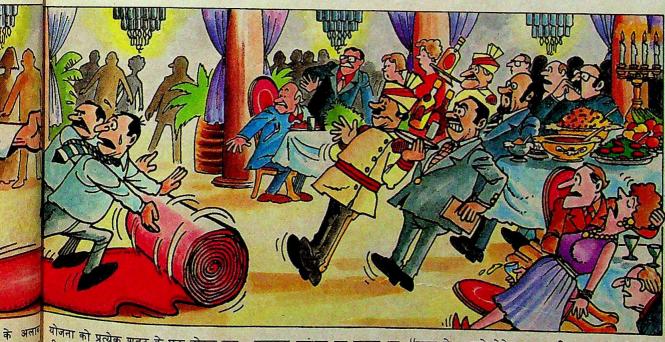
क ने अभी योजना की घोषणा की ही थी कि प्रबंधकों की भौहें देढ़ी होने लग पड़ीं. एक प्रबंधक ने कहा, "लोग यहां सिर्फ खाने नहीं आते बल्कि होटल के माहौल की वजह से भी आते हैं." प्रबंधक समझ नहीं पा रहे कि लोग अगर ट्रैक्टर पर सवार होकर या दारू की बोतल लेकर यहां आए तो वे क्या करेंगे. एक

प्रतिस्पिधियों के मुकाबले दोयम माने जाते हैं. अगर उनका माहौल बिगड़ा तो प्रतिस्पिधियों का ही मुनाफा बढ़ेगा.

लेकिन देवीलाल पर अफसरों की इस 'वेमतलब चिंता' का कोई असर नहीं उनके एक सहायक का कहना है कि गांववाले शहरवालों के मुकाबले ज्यादा अच्छा बरताव करते हैं, ''वे दरबान से लेकर बैरे तक सबको नमस्ते कहते हुए आएंगे. वे भाभी और बहन में फर्क जानते हैं.''

फिर, प्रबंधन कर्मचारी अपनी वर्दियां बदल दिए जाने की चिंता में भी पीले पड़ रहे हैं. संकेत हैं कि प्रबंधक, सहायक प्रबंधक और दूसरे कर्मचारियों को ताऊ धोती-कुर्ता या कुर्ता-पायजामा पहनाना चाहते हैं. इस 'भारत पधारिए' वर्ष में शायद गंवई माहौल बनाना ही लक्ष्य बन जाए. आईटीडीसी के एक अधिकारी दुआ करते हैं, "या खुदा मदद करना. आगे न जाने क्या होगा."

इतना ही नहीं, ताऊ देहाती पृष्ठभूमि



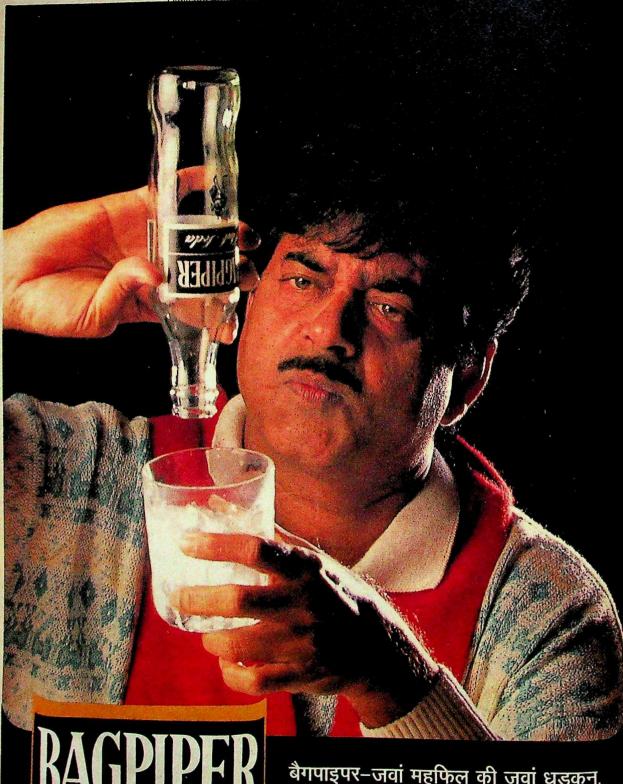
योजना को प्रत्येक शहर के एक होटल तक ही सीमित रखा जाए. एक सहायक प्रबंधक का कहना है, "इससे योजना ठीक से चलेगी, खास तौर पर दिल्ली जैसी जगह पर जहां आईटीडीसी के आठ होटल हैं."

मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने एक और प्रस्ताव रखा कि इन होटलों को वेहातियों के लिए थाली की व्यवस्था करनी है कि यह प्रस्ताव ताऊ को भी भाएगा

हालांकि समस्या इसमें भी है. अधिकारियों का कहना है कि विश्वामगृह और फाइव स्टार होटल में खासा फर्क होता है. मसलन, दिल्ली में एक प्लेट दाल की ही सहायक प्रबंधक का कहना था, "ताऊ के लोगों से तो हम प्रतिष्ठित मेहमानों-सा बरताव करेंगे. पर अगर वे पास बैठे हुए लोगों से दुर्व्यवहार करेंगे तो जो आदमी खाने पर हजारों रुपए खर्च कर रहा है वह तो इस बात का खयाल रखेगा कि उसके साथ कौन बैठा है."

अधिकारियों का मानना है कि अगर यह माहौल बिगड़ा तो वे अपने नियमित ग्राहकों से भी हाथ धो बैठेंगे. कम-से-कम बृहस्पतिवार और शुक्रवार को तो ऐसा होगा ही. पहले ही पैसे की तंगी है और उस पर से यह आफत तो मुश्किल खड़ी कर देगी. बैसे भी आईटीडीसी के होटल अपने वाले ऐसे अफसर की तलाश में भी हैं जिसे वे आईटीडीसी का प्रबंध निदेशक नियुक्त कर सकें. वे शायद कमरों के किराए में भी 50 फीसदी रियायत देने की योजना बना रहे हैं. ताऊ के एक सहायक का कहना है, "कमरे महंगे तो होते हैं पर इस तरह से किसानों को छुट्टियां बिताने का महत्व समझाया जा सकता है. गांववाले उसी तरह शहरों में जाएंगे जैसे शहरी लोग गोवा, कुल्लू और मनाली जाते हैं."

कमरों में रियायत की योजना लागू हो या नहीं, पर रेस्तरांओं को देहातियों के हवाले किया जाने वाला है. यही देवीलाल चाहते भी हैं.



BAGPIPER

Club Soda

बैगपाइपर-जवां महफिल की जवां धड़कन.

everest/88/HL/322-hn

CC-0. In Public Domain. Gurukur Kangri Colle

शत्रुघ्न सिन्हा

सरव उपक

सम

ह. स की: मिल खोले

बिटे बबन यूरो सफत

150 के जि की म सीर्स में डि

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

## नई बोतल में पुरानी शराब

आधानमंत्री चंद्रशेखर कहते हैं कि संसद के बजट सत्र में ही नई उद्योग नीति की घोषणा होगी. अधिकारियों को लगता है कि नई नीति पिछली सरकार की उद्योग नीति से शायद ही अलग होगी क्योंकि इस समय कोई उद्योगमंत्री नहीं है जो यह नीति बनाने पर ध्यान दे. मंत्री न रहने से उद्योग भवन में फाइलों का ढेर जमा हो जाता है जिसे ढोकर मंजूरी के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय ले जाया जाता है. इसी चक्कर में अनेक नई परियोजनाएं और लाइसेंस अटके पड़े हैं. पिछले अक्तूबर में बी.पी. सिंह सरकार के पतन के ठीक पहले तत्कालीन उद्योगमंत्री अजित सिंह ऐसे उद्योगों की सूची बना रहे थे जिसमें बिना किसी रोक-टोक के सीधे विदेशी निवेश की अनुमित होती. सूची मंजूरी के लिए तैयार ही थी कि सरकार गिर गई. अब यह सारी कवायद फिर से करनी होगी.

#### उम्मीद की पौध

निटक के पर्यावरण कार्यकर्ताओं के लिए खुश होने की ही बात है. रामकृष्ण हेगड़े शासन काल में स्थापित राज्य सरकार और विडला समूह के हरिहर पॉलिफाइबर्स के संयुक्त उपक्रम कर्नाटक पल्पवुड लिमिटेड को बंद कराने में वे सफल हो गए हैं. गांव की सामुदायिक जमीन पर यूकेलिप्टस के पेड़ उगाने की कंपनी की योजना का विरोध समाज परिवर्तन समुदाय नामक समूह की अगुआई में हो रहा था. स्थानीय विधायकों के समर्थन से यह आंदोलन हाल में ही तब अपना उद्देश्य पाने में सफल रहा जब कंपनी के निदेशकों ने अपनी पूरी संपत्ति राज्य सरकार के एक और उपक्रम कर्नाटक फारेस्ट डेवलपमेंट कार्पोरंशन को सौंप देने का फैसला किया. यानी उम्मीद अभी है.

#### भारतीय जूता, रूसी बाजार

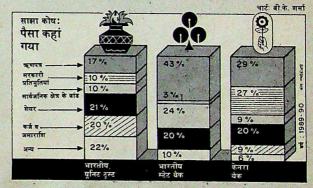
अस्मी करोड़ है. कारोबार वाली लिबर्टी शूज कंपनी ने सोवियत वाजार को ध्यान में रखकर बड़ी योजना बनाई है. इसने सोवियत संघ के विभिन्न संस्थानों के साथ 14 सहमति पत्रों पर करार किया है. इन योजनाओं में सोवियत संघ में ही एलिजा नाम से जूता, जूते का ऊपरी भाग और चमड़े की चीजें तैयार करने का कारखाना लगाना शामिल है. इस पर 40 करोड़ है. खर्च होंगे. 1995 तक यहां से 3 लाख जोड़ी जूते तैयार करने की योजना है. यह समूह भारतीय पर्यटन विकास निगम के साथ मिलकर 3 करोड़ है. लागत से करनाल नामक रेस्तरां भी खोलेगा. गोर्की सिटी में 2 करोड़ है. लागत से चार दुकानें खोलने की भी योजना है जिसमें भारतीय सामान बिकेगा.

#### ब्रिटेन पर धावा

दरसाइकिल बनाने वाली एनफील्ड इंडिया लि. यूरोप के अपने एकमात्र विक्रेता के कामकाज से निहाल है. बिटेन सरकार की नौकरी कर चुके राजा नारायण की कंपनी बवनार प्रोडक्ट्स ने पिछले तीन वर्षों में भारी प्रतिदृद्धिता वाले यूरोपीय बाजार में 1,500 एनफील्ड मोटरसाइकिलें बेचने में सफलता पाई है. इनमें से 800 तो ब्रिटेन में ही बिकीं. नारायण ने 150 डीलरों को अपने यहां से मोटरसाइकिलें रखने और बेचने के लिए राजी किया. पिछले साल उन्होंने एक पुर्तगाली कंपनी को 7,200 इंजन भी बेचे थे. भारतीय मोटरसाइकिल की कम कीमत से नारायण की विपणन प्रतिभा और सान चढ़ी है. 500 मीसी वाली बुलेट मोटरसाइकिल ब्रिटेन में 1,800 पाउंड स्टॉलंग में बिकती है जबिक जापानी मोटरसाइकिल 2,800 पाउंड में.

#### सिर्फ शेयर ही नहीं खरीदते

श भर के पूंजी बाजारों से साझा कोषों ने 1989 में करीब 6,500 करोड़ रु. उठाए थे. उम्मीद है कि पिछले साल यह रकम और अधिक रही होगी. यह एक आम गलतफहमी है कि इस रकम का अधिकांश भाग शेयरों में लगता



है और इसी रकम ने 1990 की तीसरी और चौथी तिमाही में बाजार में जबरदस्त उफान ला दिया था. लेकिन सिक्यूरिटीज ऐंड एक्सचेंज बैंक ऑफ इंडिया के जुटाए आकड़ों से कुछ और ही सचाई सामने आती है. अघ्ययन के अनुसार 1989-90 में तीन सबसे बड़े साझा कोषों ने मात्र 20 फीसदी राशि ही शेयरों में लगाई. यह 1,300 करोड़ रु. की रकम समुद्र में बूंद बराबर ही है क्योंकि देश के शेयर बाजारों के कुल शेयरों की कीमत इससे 50 गुना अधिक है.

#### महिला उद्यमी का सुयश

मि हिला उद्यमी रीटा सिंह की अध्यक्षता वाले मेस्को समूह ने चमड़ा, चमड़े का सामान और दवा के क्षेत्र में 12 इकाइयां लगाकर औद्योगिक क्षेत्र में अपनी उपस्थित जता दी है. 65 करोड़ रु. कारोबार वाले इस समूह की दो टैनरियां जांबिया और सोवियत संघ में भी हैं. उल्लेखनीय है कि इस समूह का 95 फीसदी कारोबार निर्यात का ही है. अब रीटा सिंह ने अपने कामकाज को फैलाने की भारी-भरकम योजना बनाई है. उत्तर प्रदेश के हापुड़ में 18 करोड़ रु. की लागत से दवा और रसायन कारखाना लगाया है. साथ ही होटल और हवाई टैक्सी व्यवसाय के लिए दो नई कंपनियां शुरू की गई हैं. बोत्सवाना में मक्के के तेल की इकाई भी लगने वाली है. बकौल रीटा सिंह पैसा कोई समस्या नहीं है. इस वर्ष समूह का कारोबार 100 करोड़ और मुनाफा 16 करोड़ रु. से अधिक होने की उम्मीद है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri भारतीय उद्योग

## दौड में पीछे

#### विदेशी बाजार में कड़ी और जानलेवा प्रतिस्पर्धा

मृबई गोदरेज सोप्स ने जब निर्यात के विशाल बाजार में घुसपैठ करने का फैसला किया तो निराशाजनक संभावनाएं लगी. इसे अंदाज हो गया कि इसके साबन बाजार में पिट जाएगे. वजह सीधी-सी

की

थी तेल और वसा जैसे मुख्य कच्चे माल इस प्रतिस्पिधियों से तीन गुना कीमत पर मिल रहे थे.

कंपनी

 वाहन उत्पादन के मामले में महिद्रा ऐंड महिंद्रा भारत में ही ध्रंधर मानी जा सकती है. बाहर की दुनिया के लिए वह शिशू समान ही है. यह कंपनी हर साल महज 10,000 हल्के ट्रक बना सकती है

ऐसी जापानी कंपनियों की क्षमता इससे आठ गुना है.

 इस्पात कंपनी मुकंद लिमिटेड को इसके अंतरराष्ट्रीय प्रतिद्वंद्वियों के मुकाबले सस्ते मजदूर उपलब्ध है मगर नियति में इसे इसका फायदा नहीं मिलता. मुकंद में प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष 225 टन इस्पात उत्पादन होता है जबिक विदेशों में इसका चार गुना. यानी लागत मुकंद की ज्यादा है.

तरराष्ट्रीय वाजार सिर्फ गोदरेज, महिंद्रा और मुकंद के लिए ही लोहे का चना साबित नहीं हो

रहा है बल्कि कई और कंपनियों के लिए भी और इसकी वजहें ऊपर बताई गई वजहों से कहीं अधिक हैं. एक समय था जब भारत के गिने-चुने उत्पादक ही अपना माल विदेशों में बेचने की बात सोच पाते थे. आयात और सीमा शूलक की ऊंची दरों

आदि गोदरेज (बाएं); केशब महिंद्रा

वस्त्र निर्यात में

हमारी स्थिति

अच्छी है पर यह

क्षेत्र हमारे लिए

खुला नहीं है"



भारत का औद्योगिक माहौल अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा के लायक नहीं है"

के मूरक्षा कवच की सूविधा भोगती ये सोई-अलसाई कंपनियां अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा से बचती रही हैं. और अब जब स्पर्धा से बचने की गुंजाइश कम होती जा रही है, बहुत कम कंपनियां ही मैदान में आने की स्थिति में

में नियति

विदेशी व

फीसदी ही

वाजार से

सबसे ज्या

जेवरात ः

परंपरागत

कई दृष्टि

फायदे में

कपास, सर

और कच्चे

आपूर्ति. इ

लागत व

आती है.

स्पिनग ।

कंपनी के

प्रबंध ि

मफतलाल

"ज्यादा

वजह से

कल-पुर्जी

में पडने व

फीसदी उ

और का

इस्तेमाल

पॉलिएस्ट -

कीमत अंत

से तीन गुर

हम होड

कर सकते

छोटे

प्रोत्साहित

एकाधिका

व्यापार व

द्वारा वृति चलाने वा तक बड़े है समझ नई लिमिटेड ह पड़से के 3 को कीमत (वरीद कपनियो प्रतिस्पर्धा स्पर्धा : कि लाइसें पहले जो कई नए नि हमेशा ही रतवे का कंपनी वि आरपीजी गोयनका

नाइसंसीक

पर टा

हैं. महिंद्रा ऐंड महिंद्रा के अध्यक्ष केशव महिंद्रा ने स्वीकार किया, "भारत का औद्योगिक माहौल अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा के लायक नहीं है. विश्व बाजार में हम काफी पीछे हैं."

जेनेवा की स्वायत्त अंतरराष्ट्रीय सस्था 'वर्ल्ड इकॉनॉमिक फोरम' की सालाना रिपोर्ट भी इस कथन की पुष्टि करता है.

फोरम 'वर्ल्ड कंपटीटिवनेस रिपोर्ट-1990' में भारत का नाम सबसे नीचे है. स्पर्धा की क्षमता के निर्धारण के जो 10 पैमाने बनाए गए उनमें से दो-मानव संसाधन और अंतरराष्ट्रीय स्वरूप-के मामले में भारतीय उद्योग का स्थान सबसे नीचे है. यह ब्री खबर तो है लेकिन पांच वर्षों से उदारता की नीति, बड़े घरानों को मंत्रालय की धमिकयों और फिर रुपए के लगातार अवमूल्यन कारण भारतीय उद्योग को बाहर की आबोहवा लग रही है. और अब हालत यह है कि सिएट टायर सबसे

			प्रतिस्प	र्धा में भारत की	स्थितिः सबसे	नीचे'		
दर्जा	आर्थिक मजबूती	अधीगिक कार्यकुशलता	बाजार की दिशा	वित्तीय मजबूती	मानव संसाधन	बाहरी दिशा	माबी विशा	राजनैतिक स्थिरता
3	ताइबान	सिगापुर	हांगकांग	सिंगापुर	सिंगापुर	सिंगापुर	ताइवान	सिगापुर
۶.	द कोरिया	थाइलैंड	सिंगापुर	हांगकांग	ताइवान	हांगकांग	सिंगापुर	हांगकांग
3.	सिगापुर	हांगकांग	ताइवान	ताइवान	द. कोरिया	ताइवान	द. कोरिया	मलेशिया
8.	हांगकांग	ताइवान	मलेणिया	द. कोरिया	हांगकांग	थाइलैंड	मारत	ताइवान
4	मलेशिया	मलेशिया	द. कोरिया	याइलैंड	मलेशिया	द. कोरिया	याइलैंड	थाइलैंड
€.	भारत	द. कोरिया	वाजील	इंडोनेशिया	थाइलैंड	मलेशिया	मलेशिया	द. कोरिया
<b>9</b> .	थाइलैंड	इंडोनेशिया	थाइलैंड	मलेशिया	वाजील	मेनिसकौ	मेक्सिको	
<i>C.</i>	इडोनेशिया	मेक्सिकी	भारत	भारत	मेविसको	वाजील	हांगकांग	मेक्सिकी
9	<b>ब्राजील</b>	भारत	इंडोनेशिया	मेक्सिको .	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया	इंडोनेशिया	इंडोनेणिया
0.	मेविसको	ब्राजील	मेक्सिको	वाजील	मारत	भारत	इडानाणया ब्राजील	मारत ब्राजील

इंडिया टुंड 🔸 ३१ जनवरी 1991

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

में नियतिः 24 करोड़ रु. ), हालांकि विदेशी वाजार में लगी पूंजी से उसे एक कीसदी ही लाभ हो रहा है जबकि घरेलू बाजार से 10 फीसदी.

विधा

साई

सर्धा

अब

की

रही

ं ही

ते में

नेशव

का

र्व के

गफी

स्था

नाना

⊺ है.

वर्ल्ड

र्ट—

नाम

की

जो

उनमें

और

<u>—</u>के

द्योग

यह

पांच

ोति,

की

ए के

के

को

लग

यह

नवसे

9-90

पर टायर उद्योग अपवाद है. हाल में सबसे ज्यादा कामयावी कपड़ा, जवाहरात, जेवरात और चमड़ा जैसी निर्यात की परंपरागत चीजों में मिली है. इनमें भारत

कई दृष्टियों से अपेक्षाकृत फायदे में है. जैसे-सस्ता क्पास, सस्ती कुशल मजदूरी और कच्चे माल की पर्याप्त अपूर्ति. इसके वावजूद ऊंची नागत की समस्या आडे आती है. मफतलाल फाइन स्पिनिंग ऐंड मैन्यूफैक्चरिंग कंपनी के उपांध्यक्ष और प्रबंध निदेशक हृषिकेश अनुसार, मुफतलाल के "ज्यादा सीमा शुल्क की वजह से कपड़ा मिलों के कल-पूर्जों की लागत यूरोप में पड़ने वाली लागत से 25 फ़ीसदी ज्यादा बैठती है. और कपड़ा बनाने होने वाली पॉलिएस्टर रेशे की घरेलू कीमत अंतरराष्ट्रीय बाजार में तीन गूना ज्यादा है. फिर हम होड़ की हिम्मत कैसे कर सकते हैं."

छोटे उद्योगों को प्रोत्साहित करने और एकाधिकार व प्रतिबंधित व्यापार व्यवहार अधिनियम द्वारा वृद्धि पर कुल्हाड़ी

बलाने वाली सरकार के दिमाग में अभी तक बड़े पैमाने की अर्थव्यवस्था की कोई समझ नहीं पैदा हुई है. टाटा इंडस्ट्रीज लिमिटेड के आर्थिक सलाहकार डी.आर. पेडसे के अनुसार, "सरकार छोटे उद्योगों को कीमतों में 15 फ़ीसदी की सहूलियत (मरीद पर) देकर दरअसल ऐसी कंपनियों को पनपने दे रही है जो प्रतिस्पर्धा की क्षमता नहीं रखती."

स्पर्धा के मोर्चे पर अच्छी खबर यह है कि लाइसेसीकरण को उदार बना देने से <sup>फिले</sup> जो मैदान आरक्षित था उसमें अब के नए बिलाड़ी भी उतर आए हैं. पर हो इसका मतलव अंतरराष्ट्रीय किने का बढ़ जाना नहीं होता. टायर मिएट की मिल्कियत आरपीजी इंटरप्राइज के अध्यक्ष हर्ष गोयनका के शब्दों वाहमेंमीकरण नीति के कारण आज हमारे यहां 10 प्रमुख टायर कंपनियां हैं. हरेक की क्षमता कम होने के कारण निर्यात बाजार में पर्याप्त स्पर्धा की स्थिति में नहीं दे पातीं. हमारे यहां तीन से ज्यादा टायर कंपनियां नहीं होनी चाहिए."

लेकिन कुछ क्षेत्रों में बाजार इतना सीमित है कि संयंत्र का आकार बढ़ाना अभी भी फायदे का धंधा नहीं है. मुकंद का

भारतीय निर्यातक नाकामयाब क्यो निर्यात के मामले रोजगार उत्पाद गुणवत्ता \*में लचीलापन के उत्पादकता के के पैमाने पर पैमाने पर स्थान पैमाने पर स्थान स्थान सिगापुर THE CO O हांगकांग 6 2 \* ताइवान 2 2 6 थाइलैंड 3 4 4 दक्षिण कोरिया 5 5 5 मलेशिया 3 6 अप्राप्त मेक्सिको 3 8 इंडोनेशिया 9 8 ब्राजील 9 8 भारत 10 10 9

> विर्रं इकॉनॉमिक फोरम की रिपोर्ट में भारत विकासशील प्रतिस्पर्धियों में सबसे नीचे है

3,00,000 टन क्षमता वाला विशिष्ट इस्पात संयंत्र यदि यूरोप में होता तो इसका दूना होता. मुकंद के कार्यकारी निदेशक राजेश शाह कहते हैं, "घरेलू बाजार बहुत बड़ा नहीं है, इसलिए संयंत्र की आकार वृद्धि के लिए निवेश हर तरह से गलत है.

कुल मिलाकर यह एक दुष्चक्र है. अगर लागत ऊंची हो तो बाजार में हिस्सेदारी

सीमित हो जाती है और बाजार सीमित हो तो ज्यादा क्षमता के लिए निवेश नहीं किया जा सकता. इंस उलझन से तभी उबरा जा सकता है जब सरकार हर जगह लागत कम करने की स्थायी नीति बनाए. और फिर उधार पर खांसा सूद वसूला जाता है. वर्ल्ड कंपिटीटिवनेस रिपोर्ट के अनुसार भारत में अल्पकालिक व्याज की चार्टः बी.के. शर्मा

वास्तविक (यानी मुद्रास्फीति के बाद की) दर 9.05 फीसदी है जो कि दुनिया में सबसे ज्यादा है, जबिक जापान में यह 1.93 फीसदी और अमेरिका में 5.65 फीसदी है.

गोदरेज सोप्स के प्रबंध निदेशक आदि गोदरेज का मुझाव है कि बड़े उद्योगों को निर्यात के क्षेत्र में हाथ नहीं डालना चाहिए क्योंकि सरकार का रवैया नकारात्मक रहा है. वे कहते हैं, "बड़े उद्योगों को भुरू में कहा गया कि वे आयात विकल्प उद्योगों में जाएं. इतना ही नहीं, वस्त्र जैसे निर्यात योग्य सामान में हम अच्छी स्थिति में हैं पर यह बाजार हमारे लिए नहीं खुला है (लघु क्षेत्र के लिए आरक्षित है).

सरकार के नीति-नियंता ऐसी आलोचनाओं से मूह नहीं फेरते उद्योग मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी के शब्दों में, "हम सही रास्ते

पर हैं. आजादी के बाद कमजोर लोकतंत्र के पोषण के लिए आत्मनिर्भरता जरूरी थी. अगले कदम के रूप में उदारीकरण की प्रक्रिया आंतरिक स्पर्धा को बढाएगी. फिर हम अगला कदम उठाएंगे और घरेल उद्योग को नष्ट किए बिना अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा में शामिल होंगे,"

इसके लिए उदारीकरण का अगला चरण होगा श्रम कानूनों में सुधार का. भारत में आधुनिकीकरण और उच्च तकनीक अपनाए जाने के नाम पर कर्मचारियों की छंटनी कर पाना लगभग नामुमकिन है. इसलिए जरूरत से ज्यादा लोगों से काम लेने की प्रवृत्ति जारी है और श्रम की उत्पादकतां कम है. मोटे संकेत तो निर्यात स्पर्धा को बढ़ावा देने के ही हैं. निर्यात का स्वर्ग हासिल करने के लिए अभी भारत को मीलों चलना है.

- मुरजीत वासगुप्त

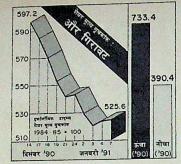
igitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शेयर बाजार

#### वित्तीय संस्थाएं बचाने दौड़ पड़ीं

िदी फिल्मों के नायकों की तरह वे भी 'नायिका' को बचाने के लिए एकदमें आखिरी क्षणों में ही उपस्थित हुए लगते हैं. हफ्तों से देश भर के शेयर बाजार गोता खाते जा रहे थे और बाजार के असली खिलाड़ी-वित्तीय संस्थान और साझा कोष किनारे बैठे सुस्ता रहे थे. मुंबई शेयर बाजार का 30 शेयरों वाला संवेदनशील सूचकांक 1,000 के भी नीचे पहुंच गया. पर आखिर में यह थोड़ा चढ़कर बंद हुआ. इकॉनॉमिक टाइम्स शेयर मूल्य सूचकांक भी 4 जनवरी को 18.4 अंक गिरकर 524.6 पर आया और 7 जनवरी को एक अंक चढकर रुका.

मुंबई में यूनिट ट्रस्ट, बीमा कंपनियों और कैनवैंक सावधि कोष ने नकद और वायदा खरीद में बड़ी मात्रा में शेयर उठाए. बाजार के अनुमानों के अनुसार केवल 3 जनवरी को ही वित्तीय संस्थानों



हफ्तों में इनकी रोज की खरीद से यह रकम पांच गुना है. लेकिन इस बदलाव के बावजूद रिलायंस और टिस्को जैसे प्रमुख शेयर अभी भी धूल ही चाट रहे हैं. रिलायंस 105 रु. पर बंद हुआ जबिक टिस्को 145 रु. पर.

बहरहाल, बाजार की स्थिति स्थायी रूप से मुधरे इसके लिए वित्तीय संस्थाओं को और मजबूती से समर्थन देना होगा. लेकिन मूंबई की एक वित्तीय संस्था के प्रबंधक ने कहा, "खाड़ी के मोर्चे पर स्थिति स्पष्ट हुए बिना हमें बाजार की स्थिति में मजबूती आने की संभावना नहीं लगती." एक प्रमुख दलाल कहते हैं, ''अगर करों में और कोई बढोत्तरी हुई तो बाजार में फिर गिरावट आएगी. फिलहाल तो इसकी स्थिति इस कदर नाजुक है कि यह बूरी खबर का एक और झटका तक नहीं झेल सकता."

शेयर बाजार के जानकार लोगों की भविष्यवाणी है कि अभी और अगले मानसून के बीच शेयर बाजार एक बार चढेगा, भले ही यह उछाल हल्का ही क्यों न हो. इस बीच शेयर बाजार के अधिकारियों को भुगतान की मुश्किलों को निबटाने में जुटना पड़ेगा. अहमदाबाद में अधिकारियों ने वायदा खिलाफी रोकने के लिए कई तरह के प्रतिबंध लगा दिए हैं. मुंबई में भी यही हाल है. शेयर मूल्यों में भारी गिरावट से अनेक दलाल तो अपने वायदे पूरे करने की स्थिति में नहीं थे, सो बाजार एकदम गंभीर हालत में था.

मूंबई शेयर बाजार के अधिकारियों ने बिक्री पर दंडात्मक मार्जिन डालकर और कारोबार का समय मात्र एक घंटे तक सीमित करके मूस्तैदी बनाए रखी. लेकिन अधिकांश विशेषज्ञों का मानना है कि बचाव के उपाय देर से शुरू किए गए और नाकाफी हैं. एक नाराज दलाल कहता है, "जब सूचकांक 1,400 से नीचे आ रहा था तब ये अधिकारी कहां थे ?" स्पष्ट है कि अभी कठिन दौर बीता नहीं है.

न 75 कराड़	ह. का	खराद	का. ह	हाल क
जमा स्टॉक				मीय में
	19	90		पत्नवाडे की स्थि
	***************************************			
	ऊचा	नीवा	बंद	R. A.
			7.1.91	μ.
एसो.सीमेंट		325.00	1450.00	125.00~
अशोक लेलंड		69.50	120.00	=
एशियन पेंट्स		207.50	227.50	2.50+
एटलस कोण्को		32.50	44.00	3.00 -
बजाज ऑटो		355.00	570,00	20.00-
बड़ौदा रेयॉन		435.00	440.00	15.00 -
बाटा इंडिया		62.50	88.00	-
बल्लारपुर		120.00	242.00	2.00+
विरला जूट		50.50	173.00	7.00 -
ब्लो प्लास्ट		34.50	55,00	12.50 -
वांबे डाइंग		155.00	160.00	5.00 ÷
बिटा.इंडिया		97.00	120.00	4.00+
वृक्त बांड		91,00	122.00	3.50+
कैडबरी कैस्ट्रोल इंडिया	192.50	133.75	136.25	6.25-
मेंचुरी टेक्सटाइल्स	320.00	161.25	190.00	
कोलगेट पामी		2420.00	3725.00	
सायनामिड		176.25	257.50	
डीसीएम	205.00	87.50 45.50	85.00	10.00-
डनलप		50,00	155.00	15.00-
ईआई होटल्स		48.25	51.50	1.00 - 2.50 -
एस्कार्ट्स		77.75	50,00 142,00	
फिनो, केबल्स		195.00	185.00	3.00 - 25.00 -
गरवारे नाइलोन		37.00	37.50	0.50 ÷
जी.ई. शिपिंग	54.75	27.00	27.00	1.00 - 4
गुज स्टेट फॉट	275.00	155.00	160.00	42.50-
ग्रासिम इंडिया	277 50	106.00	182.50	7.50+
हिंदु.एल्यू.	417.50	205.00	223.75	1.25 -
हिंदु-सीबा		650.00	750.00	50.00 +
हिंदुस्तान लीवर		101.00	145.00	5.00 +
हिंदुस्तान मोटर्स	58 50	19.80	22.00	0.50 ÷
हेक्ट	3400 00	1295.00	2650.00	100.00 -
आईसीआई	72.00	34.00	36,50	1.50-
इंडियन आर्गेनिक	91.25	35.00	35.00	3.00-
इंडियन रेपॉन	175.00	84.00	122.50	10.00 -
			122.50	10.00

				जी मः
				中京
	19	90		पखवाड़े की स्थि
	अंचा	नीचा	बंद	
			7.1.91	इस स्टॉक
इंगरसॉल-रैंड	305.00	190.00	267.50	15.00 -
आईटीसी		48.75	111.00	11.00 -
जे.के.सियेटिक्स	90.00	35.00	32.50	2.50
काइनेटिक इंजी	255.00	130.00	165.00	2.50+
किलीं. क्यूमिस		65.00	103.75	5.00+
केएसबी पंपस	260.00	160.00	180.00	5.00 +
लार्सन-दुब्रो	180.00	57.00	97.50	6.25 -
तिप्टन	112.00	62.50	65.00	_
लोहिया-मशीन्स	83.75	15.00	31.00	5.00 -
मदुरा कोट्स	285.00	100.50	193.00	20.00-
महिद्रा-महिद्रा	130.00	60.00	67.50	_
मिल्क फुड	280.00	115.00	140.00	_
मोटर इंडस्ट्रीज	1400.00	670.00	700.00	_
मुकुंद लिमि	275.00	127.00	163.75	6.25 -
नेशनल आर्गे		900.00	975.00	25.00+
नेस्ले इंडिया	172.50	101.75	118.75	6.25 -
निरलॉन	42.50	13.00	18.50	1.50 -
ओरके सिल्क मि	61.00	14.50	21.50	0.50 -
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	78.00	24.00	55.00	4.00-
प्रीमियर ऑटो	83.00	37.00	38.00	3.00 -
रेमंड	175.00	70.00	125.00	_
रेकिट-कोलमैन		178.00	230.00	-
रिलायंस इंडस्ट्रीज	245.00	50.00	105.00	18.00-
सीमेंस इंडिया	162.50	96.00	125.00	-
शॉ बैसेस	122.00	85.00	80.50	5.50 -
श्रीराम फाइबसं	74.00	41.00	33.00	8.00 -
एसकेएफ बेय	2775.00	1240.00	1800.00	200.00 -
स्पिक	81.00	41.00	38.00	6.00 -
टाटा स्टील	275.00	103.25	145.00	2.00-
टेल्को	272.50	110.00	178.25	8.75-
टाइटन वाचेस	110.00	31.00	62.50	5.00 -
वाम ऑर्गेनिक	205.00	108.75	107.50	2.50 -
बीडियोकॉन	600.00	105.00	220.00	30.00 -
बोल्टास	145.00	83.00	96.25	8.75-
विमको	52.50	15.75	21.50	1.50 -

भारतीय				
भारताय	रुपए क	मूल्य	H.	五
			He.H.	HO TO
देश	1777		1 E E	म् व
	मुद्रा	54015	4	
आस्ट्रेलिया				14.1337
आस्ट्रिया				170.0008
बहरीन				-
बांग्लावेश				51.8236
कनाडा				15.7613
डेनमार्क				3.1236
मिख	पौंड	1	6.6784	6.4965
फांस	फैंक	1	3.5778	3.4904
जर्मनी	जर्मन मार्क.	1	12.1212	11.8203
हांगकांग	डालर	1	2.3545	2.3318
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9666	0.9524
ईरान	रियाल	100	_	_
इटली	वीरा	100	1.6167	1.5956
जापान	येन	100	13.6799	13.3333
केन्या	शिलिग	1	0.8055	0.7909
कुवैत				-
मलेशिया	डालर		6 7404	6.6735
मारीशस	रुपया	1	1 3118	1,2765
नेपाल	<b>रु</b> पया	1	0.6410	0.6327
हालैड	गिल्डर	1	10 7599	10.6499
पाकिस्तान	रुपद्या	1	0 8483	0.8363
सिगापुर	डालर	1	10 8409	10.5407
स्पेन	पेसो	1	0 1010	0.1890
श्रीलंका	रुपया	1	0.4500	0.4525
स्वीडन	कोना	1	2 2421	3.2104
स्विद्जरलेड	स्त्रिम केंद्र	1	14 1020	14.0464
तंजानिया	शिलिस	1	0.0067	0.0933
पाईलंड	यतम	100	U.U30/	72.1829
बिदेन	njs	100	/4.0343	34.5841
अमेरिका	राजर		34.83/1	18,1901
सं.अ.अमीरात.	Eran		18.3655	[8,130
सोवियत संघ	Edd		=	22.7847
	ead		22.7870	22.104

स्रोत: बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 8.1.91

72 इंडिया टुडे • 31 जनवरी 1991

धर्म

पार्वतीपु

पर मान है. इस है, नं क आठ वर्ष जा रहे लिया ग इनंग

> बसो, जं के कार वाली करना नतीजत 16 लोग पार्वतीप

> > भार का सम

> > स्पर्श से

जाता है लोगों व वडी स देखती फूंक म दमा, पक्षाघा

का इल जब है, लोग रहे होते प्रसन्न अफवाह

तक वे उनके : लगे हैं व्यवसा लोगों :

लगा. तौर से

एक-एट

मारने चेहरों

नहाल

है कि

ा तक

ों की

अगले बार क्यों

र के तों को ाद में

क्ते के एहैं.

यों में

अपने

थे, सो

(यों ने और

: तक

नेकिन

र और

ता है,

हा था

है कि

कार मृत्य (क्पए में)

14.1337

170.0008

51.8236

15.7613 3.1236

6.4965

3.4904

2.3318

0.9524

1.5956

13.3333

0.7909

6.6735

1.2765

0.6327

10.6499

0.8363

10.5407

0.1890

0.4525

3.2104

14.0464

0.0933

72.1829

34.5841

18.1901

22.7847

कि

'दैवी शक्ति' की भक्ति

#### चमत्कारी बच्ची की चर्चा चारों ओर

बीसा के पुरी जिले के पार्वती-पुर की ओर जाने वाले रास्तों पर मानों लोगों का सैलाब ही उमड़ पड़ा है. इस भीड़ की मंजिल न तो कोई मंदिर है, ने कोई पावन नदी बल्कि ये लोग एक आठ वर्ष की बच्ची सबिता स्वाईन के पास जा रहे हैं जिसे दैवी शक्तियों से युक्त मान

इनमें से कुछ लोग तो उसके चमत्कारी समर्भ से पहले ही दुनिया से चलें जाते हैं. बसों, जीपों और ऑटोरिक्शा में भरे लोगों के कारवां की वजह से पार्वतीपुर जाने वाली सड़कों पर यातायात नियंत्रित करना पुलिस के लिए दुष्कर ही गया है. नतीजतन, सड़क दुर्घटनाओं में अब तक 16 लोग मारे जा चुके हैं. 20 लाख लोग पार्वतीपुर की यात्रा कर चुके हैं.

भागवी नदी के तट पर जैसे ही 'दर्शन' का समय होता है, भीड़ पर उन्माद छा जाता है. सिवता भीड़ के सामने आती है. लोगों को ठीक करने की उसकी तकनीक बड़ी सरल है. वह पहले फरियादी की ओर देखती है, फिर तीन बार उसके चेहरे पर फूंक मारती है. और इसी तरकीब से वह दमा, अवसाद, गठिया, दृष्टिहीनता, पक्षाधात और पथरी जैसी बीमारियों

का इलाज कर देती है. जब वह फूंक मारने में लगी होती है, लोग उस पर पैसों की बरसात कर रहे होते हैं. और उसके पिता बनमाली प्रसन्न मन से बैंक की ओर चल देते हैं अफवाह है कि स्थानीय बैंक में अब तक वे 5 लाख रु. जमा करवा चुके हैं. उनके कच्चे घर में इतने श्रद्धालु आने लगे हैं कि सबिता के पिता को अपने व्यवसाय को व्यवस्थित करना पड़ा. लोगों का सामूहिक इलाज किया जाने लगा. सिवता नदी के किनारे खास तौर से बनाई चौकी पर बैठती है और एक एक व्यक्ति के चेहरे पर फूंक मारने की जगह भीड़ के कई लोगों के बेहरों पर एक साथ फूंक मारती है.

सिबता का पोस्टरः वैवी शक्ति या छोंग



सिवता की रोगों को दूर करने की शक्ति की ख्याति कुछ महीने पहले फैलनी शुरू हुई. गांव के लड़के की उंगली कट गई थी. खून बहना बंद ही नहीं हो रहा था. बनमाली का दावा है कि तब पहली बार उनकी बेटी ने लड़के की उंगली पर तीन बार फंका और खून तत्काल बंद हो गया.

इसके थोड़े ही दिन बाद एक दुकानदार आया जिसके पांव पर फोड़ा हो गया था. सबिता ने तीन फूंक मारी और फोड़ा एकदम ठीक. फिर पड़ोस के गांवों में सबिता के चमत्कार की खबरें फैलनी शुरू हई तो फैलती ही गई और दूसरी कक्षा में



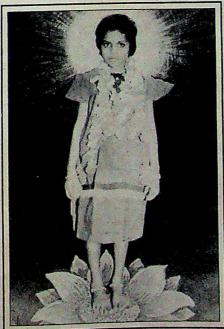
पढ़ने वाली बच्ची को लोगों ने 'देवकन्या' का खिताब दे डाला.

शुरू में तो पड़ोस के गांवों के लोग ही आए लेकिन जल्द ही भुवनेश्वर, कटक, पिश्वम बंगाल, मध्य प्रदेश और राजस्थान से भी लोग इलाज के लिए पहुंचने लगे. चिकित्सा विशेषज्ञ एक मत से सिवता के चमत्कार को ढोंग मानते हैं. पुरी के मुख्य चिकित्सा अधिकारी की अगुआई में एक चिकित्सा दल गांव में आया. जांच के बाद उनका दावा था कि

यह सब ढोंग है.

लेकिन लोगों को संबिता पर इतनी आस्था है कि सरकारी अस्पतालों के बिस्तर खाली रहने लगे हैं क्योंकि मरीज पहली बस पकड़कर पार्वतीपुर जाने को आतुर रहते हैं. सबिता का दावा है कि "मैं हर किसी का इलाज कर सकती हूं. मैं नहीं जानती कि मेरे पास कौन-सी दैवी शक्तियां हैं. लेकिन मैं जानती हूं कि मेरे पास जो भी आएगा. मैं उसे ठीक कर दूंगी."

इस पर एक प्रेस फोटोग्राफर ने अपने अध-कपारी के दर्द के लिए उसकी राय जाननी चाही. सबिता ने उसके भी चेहरे पर फूंक मारी लेकिन दर्द ठीक होने की जगह और बढ़ गया. वह सबिता के घर से बाहर निकल आया जहां हजारों लोग इस उम्मीद में खड़े थे कि कब उनकी बारी आए और वह की चमत्कारी बच्ची फूंक मारकर उन्हें ठीक करे.



CC 0. In Public Domain: Gurukul Kangri Collection, Haridwar



नबाद बैंक डकैती की प्रारंभिक जांच से एक नया पहलू सामने आया है. इस डकैती में पंजाब के उग्रवादियों का हाथ माना जा रहा है. ये उग्रवादी काफी समय से धनबाद को अपना अड्डा बनाने के चक्कर में थे. बाद में उन्होंने धनबाद से लगे पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले में भी

# बैंक डकैतियों की बाढ़

हर तरह के अपराध में कीर्तिमान बनाने वाले बिहार में बैंक अपराधियों का नया निशाना बन गए हैं. और इन्हीं बैंक डकैतियों में से एक ने राज्य के एक बहादुर एसपी रणधीर वर्मा की जान भी ले ली

पर दो घंटे में एक हत्या, हर तीन घंटे में एक उकैती, हर चार घंटे में एक अपहरण और हर चौथे मिनट एक संज्ञेय अपराध के रिकार्ड वाले प्रदेश, बिहार में एक हत्या की क्या बिसात. पर 3 जनवरी '91 को धनवाद के एस.पी. रणधीर प्रसाद वर्मा की मौत कोई आम हत्या नहीं थी. और इसने पूरे प्रदेश को भी हिलाकर रख दिया. पूर्व पुलिस महानिदेशक शिश भूषण सहाय के शब्दों में, ''यह घटना बहुत ही भयावह है. ऐसा लगता है कि राज्य में पूरी अराजकता आ गई है.''

वर्मा ने बैंक डकैती रोकने की कोशिश में शहादत दी. पिछले कुछ समय की घटनाओं से लगता है कि इस राज्य में व्यावसायिक बैंक अपराधियों का निशाना बनते जा रहे हैं. पुलिस अधिकारियों का अनुमान है कि पिछले पांच वर्षों में 158 बैंकों में हुई डकैतियों में लुटेरे 2 करोड़ रु. लूट ले गए होंगे. बैंक अधिकारियों की शिकायत है कि पुलिसवाले न केवल निष्क्रिय हैं बर्ल्क असहयोगी रुख भी अपनाते हैं.

अपराध शाला के एक वरिष्ठ अधिकारी भी स्वीकार करते हैं कि राज्य में बैंक डकैतियां बड़ी तेजी से बढ़ रही हैं. 1980 में सिर्फ पांच डकैतियां पड़ी थीं जबिक 1990 में 32 बैंक लूटे गए. और अब बिहार अपराध के इस क्षेत्र में भी सबसे ऊपर पहुंच गया है. भारतीय स्टेट बैंक के बिहार क्षेत्र के महाप्रबंधक (कामकाज) ए. बी. चक्रवर्ती कहते हैं कि बैंकों की असुरक्षा को राज्य की

बिहार में बढ़ती बैंक डकैतियों की संख्या 32 30 32 28 30 32 28 30 32

सामान्य कानून व्यवस्था की स्थिति है अलग करके नहीं देखा जा सकता.

पुलिस मुख्यालय के आंकड़ों के अनुसा वैंक डकैती के मामलों में 1984 तक तो कर रफ्तार से वृद्धि होती रही, पर 1985 है अचानक इनकी संख्या 20 तक पहुंच गई (देखें चार्ट). यही वह दौर था जि बेरोजगार नौजवानों को जमींदारों हाएँ जाति के आधार पर वनाई जाने वाल निजी 'सेनाओं' में भर्ती और प्रशिक्षि किया जा रहा था. इन सेनाओं ने पूरे प्रदेश में हंगामा मचा रखा था.

और यही दौर था जब ग्रामीणों के उनके दरवाजे पर आकर ऋण उपलब्ध कराने की नीति पर सरकार अमल कर रहें थी. तब राष्ट्रीयकृत बैंक तेजी से अपने शाखाएं खोल रहे थे. जून 1987 ति व्यावसायिक बैंकों की 2,467 और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों की 1,775 शाखाएं खुली थीं वे शाखाएं शहरों के अलावा कस्बों और गांवे में भी खुलीं और उनमें जमा रकम 5,20 करोड़ रु. तक पहुंच गई. तब तो लगा कि चोरी-डकैती से परेशान लोगों के बीच बैंक काफी लोकप्रिय हो गए हैं.

पुलिस वि रखने की व अपराधियों दी. इसी व खिलाफ भा मुख्यमंत्री वि तगा दी. खिलाफ पुलि ग्या था. सो

गया था. सा
रखना व्यर्थ
अपराधी बन्
गए. पुलिस
नौजवानों ने
मं अपनी 'क
रणधीर
गए थे उससे

आर.पी.

बह

अधीक्षक सेवा के को निब जनवरी उन्हें सूच गिरोह इंडिया व

वे तुरंत बैंक इस बात इस क्फा बवले सं होगा. भ ही बैंक

हिंपे एव गोली च मुताबिक घायल ह को वहीं

भी वहीं और उर एके-47 बौछार व वर्मा के

उन्होंने ह वर्मा झकझोर सहज ह पुलिस विभाग के सूत्रों के अनुसार पैसे पूर्वा की लोगों की आदत बदलते ही रखने की लोगों की आदत बदलते ही उपराधियों ने अपनी कार्यशैली भी बदल अपराधियों ने अपनी कार्यशैली भी बदल ही इसी दौरान जब निजी सेनाओं के बिलाफ भारी शोर मचा तो तत्कालीन पूर्व्यात्री विदेश्वरी दुवे ने इन पर रोक कार्या दी. दूसरी तरफ उग्रवादियों के बिलाफ पुलिस अभियान पहले ही तेज हो खा था. सो, जमीदारों को भी ऐसी सेनाए रखना व्यर्थ ही लगने लगा था. अब अपराधी बन चुके नौजवान भी चुस्त हो गए. पुलिस से भी अधिक प्रशिक्षित इन तैजवानों ने बैंक डकैती जैसे नए अपराधों में अपनी 'काबिलियत' दिखानी शुरू की.

रणधीर वर्मा जिस डकैती के समय मारे गए थे उससे जुड़ी प्रारंभिक जांच से विहार में बैंक डकैती का एक नया ही पहलू जाहिर होता है. इस डकैती में पंजाब के उग्रवादियों का हाथ माना जा रहा है. ये लोग काफी समय से धनबाद को अपना अड्डा बनाने के चक्कर में थे. बाद में धनबाद से लगे पं. बंगाल के पुरुलिया जिले में भी इन उग्रवादियों ने उत्पात मचाया.

क ओर तो पुराने गिरोहों के साथ जुड़ गए ये नए लोग बैंकों को अपना लक्ष्य बना रहे थे जबिक दूसरी ओर बैंकों के पास अपनी सुरक्षा व्यवस्था दुरुस्त करने की न फुरसत थी, न संसाधन थे. इलाहाबाद बैंक के सुरक्षा अधिकारी कैंप्टन एस.एम. शर्मा के अनुसार संसाधनों की कमी और स्थानीय प्रशासन की उपेक्षा के कारण अधिकांश वैंकों के पास सुरक्षा संबंधी प्राथमिक चीजें भी नहीं हैं. वे बताते हैं कि सभी बैंकों में सशस्त्र गार्ड होने चाहिए पर हथियार का लाइसेंस प्रशासन से लेना होता है जिसके अभाव में बैंकों के पास ऐसे गार्ड नहीं हैं. उन्होंने कहा, "जब इतनी बुनियादी चीजें नहीं हैं तो कैमरे से जुड़ी एलार्म व्यवस्था और अन्य आधुनिक सुरक्षा प्रबंधों की बात तो सपने में भी नहीं सोची जा सकती."

अनेक लोग बैंकों से जुड़ी दूसरी मुश्किलों का भी जिक्र करते हैं. स्टेट बैंक के बिहार अंचल के मुख्य सुरक्षा अधिकारी ब्रिगेडियर आर.एन. श्रीवास्तव ने बताया कि बैंक की इमारत थाने के पास होनी चाहिए. पर गांवों में स्थित कुछ बैंक तो

आर.पी. वर्मा

मने

ो में

यों

की

ने

के

में

कि मी

गए हैं

ने ली

स्थिति

के अनुसार

कितों के र 1985 है

पहुंच गई

रारों द्वार

नाने वाल

प्रशिक्षित

पूरे प्रदे

मीणों क

ा उपलब

ल कर रह

से अपनी

1987 तर

ौर क्षेत्रीव

ली थीं.

और गांवी

लगा वि

बीच बैं

रहा

## बहादुरी का बाना

हार के माफिया पीड़ित धनबाद जिले के 41 वर्षीय पुलिस अधीक्षक रणधीर प्रसाद वर्मा ने अपनी सेवा के दौरान कई आपराधिक मामलों को निवटाने में सफलता पाई थी 3 जनवरी की सुबह तकरीबन 10.30 बजे उन्हें सूचना मिली कि अपराधियों के एक गिरोह ने हीरापुर स्थित बैंक ऑफ इंडिया की शाखा पर हमला कर दिया है वे तुरंत वहां के लिए चल पड़े.

वैंक की सीढ़ियां चढ़ते हुए वर्मा को इसं बात का तनिक भी अंदाज न था कि इस वका सामना मामूली अपराधियों के वदले सीधा पंजाब के उग्रवादियों से होगा. भरी हुई रिवॉल्वर थामे वर्मा जैसे ही बैंक में दाखिल हुए, दरवाजे के पीछे हिंगे एक उग्रवादी ने उन पर पीछे से गोली चला दी. बाद में हुई शिनास्त के भुताविक यह उग्रवादी निशान सिंह था भायलं वर्मा ने फौरन घूमकर हमलांवर को वहीं ढेर कर दिया. इंस बीच एक और उप्रवादी, बलकारा सिंह ने अपनी एके-47 राइफल से उन पर गोलियों की बौद्धार कर दी. उन्हीं गोलियों में से एक वर्मी के गूले के आरंपार हो गई और उन्होंने वहीं दम तोड़ दिया.

वर्मों की हत्या ने समूचे बिहार को मिक्सीर दिया और स्थानीय लोगों ने सिहा रूप में ही दो दिन का बंद रखा,

वर्मा (इनसेट) की अंतिम यात्रा

वर्मा को जरा भी अंदाज न था कि
इस दफा सामना मामूली अपराधियों से
नहीं, पंजाब के उग्रवादियों से होगा

मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने मारे गए एसपी को मरणीपरांत पुलिस उप-महानिरीक्षक के पद पर पदोन्तत किए जाने और धनबाद में उनकी प्रतिमा लगाने घोषणा की और साथ में यह भी ऐलान किया कि उनके परिवार को उनके (वर्मा के) अवकाशग्रहण के समय तक का पूरा वेतन दिया जाएगा.

साथ ही सरकार ने उप्रवादियों और धनबाद के बीच की कड़ियों का पता लगाने के लिए सीबीआई से जांच कराए जाने का आदेश दिया और डीआईजी रामचंद्र खां के नेतृत्व में राज्य की अपराध शासा ने भी गुरिययों को उधेड़ने का बीड़ा उठाया.

पिछले सप्ताह तक की जांच से इतनां तो पता चलता ही है कि पंजाब के कट्टर उग्रवादी काफी समय से इसे कोंगिंग में थे कि धनबाद को अपना गढ़ बना सकें. और इसी सिलसिले में उन्होंने पिछले पंखवाड़े अपनी पहली कार्रवाई के तौर पर इस बैंक से 13 लाख रु. की मोटी रकम लूटने की योजना पर अमल किया. मगर वर्मा की दिलेरी और उनके बिलदान ने उग्रवादियों की इस मंगा को धूल में मिला दिया. — फरजंब अहमब

थाने से 15 किमी दूर पर स्थित हैं जबिक ग्रामीण क्षेत्र की कुछ शासाओं का कारोबार इतना छोटा है कि वह एक सगस्त्र गार्ड का सर्च भी नहीं उठा सकतीं. इसके बावजूद श्रीवास्तव दावा करते हैं कि डकैतियां रोकने के लिए उनका बैंक सभी संभव उपाय कर रहा है. पर पिछले दो वर्षों में इसकी 15 शासाएं लूटी गई (1989 में 5 और 1990 में 10). दूसरी ओर इलाहाबांद बैंक के क्षेत्रीय प्रबंधक एन.एस. राय शर्मा ने कहा, "सुरक्षा गार्डों को तैनात करने के अलावा हम तमाम दूसरे उपाय कर रहे हैं. कुछ समस्याओं के चलते गार्डों की नियुक्त संभव नहीं है."

बेश में 899 शाखाओं वाले स्टेट बैंक की आधी शाखाएं कस्बों और गांवों में हैं. इसके महाप्रबंधक चक्रवर्ती ने कहा कि अगर हमने सुरक्षा के बंदोबस्त ठीक म किए होते तो डाकों की संख्या और अधिक होती. राज्य में अपराध की दर यही बताती है. पिछले तीन वर्षों में स्टेट बैंक को डकैतियों से आधिक नुकसान तो हुआ ही, तीन गार्ड भी गंवाने पड़े.

चक्रवर्ती के अनुसार स्टेट बैंक ने अपनी 90 फीसदी शाहाओं में एलार्म व्यवस्था ला दी है. 25 शाखाओं में 'पिल बॉक्स' लगे हैं, पांच में 'टाइम लॉक' लगा है और अब यह कुछ महत्वपूर्ण शाखाओं में 'नाइट सेंसरडिवाइस' लगाने जा रहा है. ब्रिगे. श्रीवास्तव बताते हैं कि प्रत्येक पांच सुरक्षा गार्ड पर एक सुरक्षा अधिकारी है और स्टेट बैंक ने पांच सुरक्षा प्रशिक्षण केंद्र भी खोले हैं जहां सुरक्षा की नवीनतम तकनीकों का प्रशिक्षण दिया जाता है.

इन सबके बावजूद डकैतियों की संख्या बढ़ रही है. 1990 के दौरान बैक ऑफ इंडिया की 8 शाखाएं, स्टेट बैंक की 10, युनाइटेड कार्माणयल बैंक की 5, ग्रामीण बैंक की 3, पंजाब नेशनल बैंक की 2, इलाहाबाद बैंक की 4, सेंट्रल बैंक, युनाइटेड बैंक, ओवरसीज बैंक और फेडरल बैंक की एक-एक शाखा लूटी गई.

विहार में वैंकों की डकैती की संख्या वढ़ते जाने पर भारतीय वैंक संगठन और रिजर्व वैंक ने चिंता जताई है और वैंकों तथा विहार सरकार पर दबाव डाला है कि वे सुरक्षा व्यवस्था चौकस करें. वैंक सूत्रों के अनुसार प्रदेश स्तर पर भी वैंकरों की कमेटी और रिजर्व वैंक की देखरेख में सुरक्षा कमेटी बनी है जो नियमित रूप से स्थिति की समीक्षा करती है. इन वैठकों में गृह आयुक्त और डीआईजी (डकैती-विरोधी) नियमित रूप से तथा कभीकभार रिजर्व वैंक के मुख्य सुरक्षा

अधिकारी भी बैठते हैं. ऐसी ही एक बैठक में जब बैंक अधिकारियों ने पुलिस से सहयोग न मिलने की शिकायत की तो डीआईजी रामचंद्र खां ने कहा कि पुलिस प्रशासन भी आम लोगों जितना ही चितित है. उन्होंने बताया पिछले पांच वर्षों में डकैतियों में शामिल कम-से-कम 200 लोग गिरफ्तार किए गए हैं.

लेकिन प्रशिक्षण में खस्ताहाल और राजनैतिक दबाव के आगे हिम्मत खो बैठने वाली पुलिस इन अपराधियों का मुकावला नहीं कर सकती जिन्हें अपराधी अमीरों की बस्ती पाटलिपुत्र कॉलोनी के एक बैंक को लूटने की कोशिश कर रहे गिरोह को पुलिस ने पकड़ लिया. इनमें अधिकांश छात्र थे. इनमें से दो तो पुलिसवालों के रिश्तेदार निकले और इनके द्वारा इस्तेमाल की गई एक मोटरसाइकिल भी पुलिस की थी. इनको पकड़ने वाले पुलिस अधिकारी को पुरस्कार दिया गया जबिक आम तौर पर ऐसे मामलों को ऊपर ही ऊपर रफा-दफा कर दिया जाता है. इलाहाबाद बैंक के क्षेत्रीय प्रवंधक एम.एस. राय शर्मा कहते हैं



क डकैतियों में बड़े घर के बिगड़े लड़कों और स्कूल-कॉलेज के छात्रों का हिस्सा लेना बढ़ रहा है जो नशीले पदार्थों की खरीद के लिए यह सब कर रहे हैं. ऐसे मामलों में थानेदार भी अपनी आंखें मूंद लेता है

से नेता बने लोगों का संरक्षण प्राप्त है. पूर्व पुलिस प्रमुख एन.एन. सिंह कहते हैं, "हालत बहुत ही खराब है. अगर सरकार इस गिरावट को रोकने के प्रति गंभीर है तो उसे तत्काल कदम उठाने पड़ेंगे. पुलिस के कामकाज में बाहरी राजनैतिक हस्तक्षेप एकदम बंद करना होगा."

पुलिस के हाथ एक अन्य कारण से भी वंधे हैं. पिछले कुछ वर्षों में नौजवानों, आम तौर पर बड़े घर के, और स्कूल-कॉलेज के लड़कों का भी प्रवेश अपराध की द्रुनिया में हुआ है. अपराध की प्रवृत्ति का विश्लेषण करने वाले कुछ अधिकारियों ने पाया कि ऐसे 75 फीसदी मामले नशीले पदार्थों की खरीद के लिए पैसे पाने के लिए किए गए. ऐसे मामलों में थानेदार भी आंख ही मूंद लेता है.

नववर्ष के दिन पश्चिमी पटना के सबसे

कि डकैती में शामिल अनेक नौजवान बेरोजगार होते हैं और ऐसा लगता है कि वे हताशा में यह अपराध करते हैं.

फिर भी बैंकवाले राज्य सरकार से इस तरह की लूट बंद कराने की व्यवस्था कराने के लिए जोर देते रहे हैं. ब्रिंगे श्रीवास्तव बताते हैं कि बैंकों और नकदी वाले बक्सों की सुरक्षा के लिए विशेष सणस्त्र बल बनाने के प्रस्ताव पर भी विचार हो रहा है. बैंकों ने इसके खर्च में भागीदारी करना स्वीकार किया है और सरकार भी इस बारे में उत्सुक लगती है.

लेकिन राज्य सरकार की उत्सुकता पर अनेक लोगों को संदेह है. जिस राज्य में कानून-व्यवस्था की यह हालत हो गई हो कि एसपी तक की जान सुरक्षित न ही उसमें इस तरह का संदेह गैर वाजिब भी नहीं है.

— फरजंद अहम्ब

रघुवीर '

**H** 

हिंदी र

चूनी की मृत्यु एक दृष्टि और जीव रहे थे व यदि उष जाए तो भीषण द् सहाय का हृदयाघात को लिख पत्रों द्वार विषैली व

> गंभीर नि समाज अन्यायों और उद्वेश के विरुद्ध यह नया जा सकत लखन

रचनाका

प्रेमी परि सहाय व विश्वविद्द में एम.ए समय र समाजवा प्रवाहित वर्णन के

दर्शन के उनका द संबंध नहीं उन्होंने अ देना शुरू

देना गुरू में वह प्र युग था. या और प्रयोगवाद

प्रयोगवाट प्रवाहित वाल्याय रहे थे जे

१ व ज मिली से उन्होंने वि पत्र का सहाय व गोनी के

कर रहे

. इनमें

दो तो

न और

एक

को

इनको

गौर पर

ना-दफा

वैंक के

कहते हैं

ीजवान

ा है कि

से इस

यवस्था

ब्रिगे.

नकदी

विशेष

र भी

खर्च मे

है और

ाती है.

ता पर

ाज्य में

गई हो

न हो

नव भी

अहमद

रघुबीर सहाय

## नाम खारिज न होगा

### हिंदी साहित्य और पत्रकारिता पर अमिट छाप

र्<sub>षुवीर सहाय का इकसठ वर्ष की आयु में चले जाना एक व्यक्ति</sub> की मृत्यु नहीं, एक सोच, एक चिंता और एक दृष्टि का अवसान है. जिस निष्ठा और जीवट के साथ वे साहित्य मृजन कर रहे थे वह उनके लेखन का मध्याह्न था. यदि उष्माभरी दोपहरी में सूर्यास्त हो जाए तो यह केवल विस्मयजनक ही नही, भीषण दुर्घटना का द्योतक है. रघुवीर सहाय का देहांत 30 दिसंबर की रात को हृदयाघात से हुआ. उस समय जिस रपट को लिखने में वे व्यस्त थे वह समाचार पत्रों द्वारा प्रसारित सांप्रदायिकता की विषैली रपट थी.

सहाय निर्भीक स्वभाव के जुझारू रचनाकार थे. ऊपर से वे शांत और गंभीर दिखते थे किंत् भीतर से वे समाज की विसंगतियों, अनीतियों, अन्यायों और क्चालों के प्रति आक्रोश और उद्देग से भरे रहते थे. 'आत्महत्या के विरुद्ध' कविता संकलन में उनका यह नया प्रतिरोधी तेवर स्पष्ट देखा जा सकता है.

लखनऊ के एक संभ्रांत, साहित्य प्रेमी परिवार में 9 दिसंबर 1929 को महाय का जन्म हुआ था. लखनऊ विश्वविद्यालय से उन्होंने अंग्रेजी विषय में एम.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की. उस समय राजनीति के क्षितिज पर ममाजवाद की लहर पूरे वेग से भवाहित थी. वे लोहिया के सामाजिक र्शन के साथ जुड़ गए थे. यद्यपि जनका दलगत राजनीति से प्रत्यक्ष संबंध नहीं था किंतु वैचारिक स्तर पर उन्होंने अपनी कविताओं में इसे स्थान देना शुरू कर दिया था. हिंदी साहित्य में वह प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का

<sup>कु</sup> था. प्रगतिवाद का ज्वार उतार पर या और 'तार सप्तक' के प्रकाशन के बाद प्रयोगवाद के नाम से कविता की नई धारा <sup>प्रवा</sup>हित हो रही थी. सच्चिदानंद वाल्यायन अज्ञेय ऐसे कवियों को तलाश रहे थे जो नवीन भाव-भंगिमा और कथन भैली में रचना में तत्पर हों. 1951-52 में उन्होंने दिल्ली से 'प्रतीक' नामक द्वैमासिक पत का प्रकाणन प्रारंभ किया. उसमें महोय को संपादकीय विभाग में काम

करने का निमंत्रण देकर दिल्ली बुलाया. 'प्रतीक' का प्रकाशन बंद हो जाने पर सहाय दिल्ली छोड़कर लखनऊ चले गए. वहां आकाशवाणी में उप-संपादक के रूप में काम किया. उनका दिल्ली प्रवास लाभप्रद रहा. अज्ञेय के नैकट्य ने उन्हें दूसरे 'तार सप्तक' का कवि बना दिया.

1963 में 'नवभारत टाइम्स' दैनिक पत्र में विशेष संवाददाता के पद पर उनकी नियुक्ति हुई और यहीं से वे पत्रकार के रूप में स्थापित हो गए. सहाय का प्रच्छन्न पत्रकार एक बार फिर अज्ञेय से जुड़ा. जब परावलंबी नहीं था. उनके सोच में समाज का गोषित और दलित वर्ग अपने शोषण और संत्रास के साथ कराहने लगा था. पत्रकारिता के क्षेत्र में मानवीय संवेदना को अपने सोच में स्थान देकर संपादकीय टिप्पणी लिखने वाले सहाय जैसे गंभीर पत्रकार की हमें तलाश है.

सहाय की कविता तकनीक के स्तर पर किसी परंपरा की कायल नहीं. छंद, प्रतीत, अभिव्यंजना भैली, सब कुछ न बीते कल की है और न कल्पनातीत भविष्य की. उनकी कविता में सबसे अधिक 'आज' की आवाज है. भाषा तो इतनी सहज-सरल कि कबीर की सहजता भी लजा जाए.

उनका निबंध संग्रह 'लिखने का कारण' अपनी शैली की रचना है. इन लेखों में व्यक्तिनिष्ठता के साथ अपने जीवनानुभवों को जिस तरह संवेदनीय बनाया गया है वह उनके सोच को सामाजिक रूप देने में

स हाय निर्भीक स्वभाव के जुझारू रचनाकार थे. वे समाज की विसंगतियों, अनीतियों, अन्यायों और कुचालों के प्रति आक्रोश और उद्देग से मरे रहते थे



चिरनिद्रा में लीन रघुवीर सहायः एक चिता, एक दृष्टि का अवसान

अज्ञेय 'दिनमान' के संपादक के रूप में कार्य कर रहे थे तब उन्होंने सहाय को 'दिनमान' का उप-संपादक बनाकर अपने साथ रखा. अज्ञेय के बाद सहाय 'दिनमान' के कार्यकारी संपादक और बाद में प्रमुख संपादक बने.

उनका सोच अब पर-मुखापेक्षी—

समर्थ है. सहाय कुशल अनुवादक भी थे. कई ग्रंथों का उन्होंने हिंदी में अनुवाद किया. यदि वे दस बरस भी और जीवित रहते तो बीसवीं शताब्दी के भारतीय साहित्यकारों में उनका नाम अमिट अक्षरों में लिखा जाता. फिर भी हिंदी साहित्य और हिंदी भाषा से उनका नाम खारिज नहीं होगा. कविता, निबंध, पत्रकारिता और कहानी के इतिहास में उनका नाम सदैव स्मरणीय रहेगा. - विजयेंद्र बातक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

#### इंडिया टुडे वर्ग पहेली-25

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

10.													
	शंकि	गाव	0	9									
			1	अब	दौरों	<b>→</b> 3		मुझे	→ 3		जीत की		
	1			झांसा नहीं	ंपर भेजा			मौका चाहिए		6 ←	मुद्रा मुद्रा	त्रास	
54.	1						4					की गूंज	<sup>12</sup>
A	हणत	<u>के घर</u> े		भूरी	78			वाले		J	<sup>5</sup> ←	रेखा	
	अटप	त रहे		आखों वाले			नए स	हयोगी	5 _₩			से मिलती	
नीति		5											
पर चोट	<b>→</b> <sup>5</sup>	4			Ŏ		3 ↓	आज					
पैट		होड़ में	असम	र्थ पड़े				मी वही					
से क्या		में क्ट		5	$\bigcirc$		0		0	3 →	$\bigcirc$		$\bigcirc$
6					0			पेट्रोल		शराब	दिन	<b>→</b> <sup>5</sup>	
रंग		4			$\bigcirc$			की बचत	<b>→</b> 3	शवाब नहीं	लद गए		
बदल गए		साड़ी	दातरी	5 <b>↑</b>	0				0	केरल	<b>→</b> 3		
3				नींव	इटर	नी के				की नर्स			
रिहा क	र दिया			रख चुके	4				0				
9 4													52

नाम			
11-11			
पता			
			-
	netti.		
	(Carl	2 194	
पिन			

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-25,इंडिया दुडे एफ-14/15, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम <mark>तिथिः</mark> 5 फरवरी 1991 उत्तर के लिए देखें: 16-28 फरवरी 1991 का अंक

- ▶ यह पहेली शब्दश: इंडिया दुडे के 15 जनवरी 1991 के अंक पर आधारित है.
- ▶ वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- ▶ तीर के चिन्ह बताते हैं कि गब्द कहां से गुरू होकर किधर जाते हैं.
- ▶ तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- ▶ शब्द वैसे ही लिखें जैसे पत्रिका में छपे हैं.
- ► सर्वप्रथम पहुंचने वाले तीन सर्वगुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु. दिए जाएंगे.
- रिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

		Les		गोंड	नायक			4.2	अहमन्य	तावादी	<b>→</b> 6	3 ₽	कोत
5	ISU			6	को	मा	र	म	मी	म	मौ	आ	बत रह
		法		5	गधे की		पब से	<b>4</b> →	4 /*	मु	ला	4	H
Ho	in a			चं	पूजा		त वंचित	₹	अब प	मजोर	ना	शा	
	ने की गिरी			ā	8 ┌→	क	ल्या	F	सि	ह	<b>1</b>	ल	र्घ
हर राम		फिर आ		शे	सती ।	समर्थक	कट्टर विरोधी	जी	2 +	पुस्तक में	ज	प्रचार	No.
से	8 ₹	रहे		ख		7	बंधु	त	अं	बुटी	मी	की ललक	7
4	( <del>ग</del> )	ने.	श्व	3	4 ₹	हम छोटे	3	अं	बा	नी	मुझे	7	₹
7	(Ħ)	त्य	पा	त	(F)	लि	क	7 ▼	तंबी	म के	लाल <b>य</b> दिया	न	7
चुनाब तही	पा	6 ₹	जूम :	रहे हैं	हा	2	पो	ता		वाग	7 6	<b>बु</b>	3
नहीं मर्डेग	ल	गि	मिस न	पूराकं	ज	शरीप	नहीं	रि		नहीं सूटा	श	भा	क
	म	री	6	अ	7	न्या	मु	<b>1</b>	र्जी		र	£	¥
	ट्टी	श	<sup>2</sup> ₹	और दूसरे वे	भांख	केरी	73	अ			द	ч	7
		स	झो	4	8	चि	(4)	न	मा	ई	T	₹	7
विद्रोह	नेता	क्से	₹		पहले	तिकार	18	व	कार्यु	ला है	वा	R	10.

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-23 का हल

-सलीत

पहने वृत् उगी बेर

पड़ा लब

हल्की पु

हुआ, ज

क्रिकेट :

ऐसे कि

पर खड

दूसरी ह

बहा ह

तीसरी

बिलाडी

अफरा-त

भी दिख

मैदा कई उ

शिव

गावस

पुरस्कार विजेता बीरेंद्र गोगिया डी.ई. 136, टैगोर गार्डन नई दिल्ली-110027

लित अवस्थी दौराला गुगर वर्क्स (केमिकल प्लांट) दौराला, जिला मेरठ-250221 (उ.प्र.)

हेमंत विजय हारा-आर. के. गुप्ता 99. बल्लभबाड़ी, गुमानपुरा कोटा-324007 (राजः)

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं-विजेताओं को बधाई-



शिवाजी पार्क

# नए सितारों की पाठशाला

#### भारतीय क्रिकेट को अप्रतिम प्रतिभाएं देने की परंपरा का पालन करता मुंबई का बहुर्चीचत क्रिकेट मैदान

-सलील त्रिपाठी

तिथिः

अंक

का हल

г.я.)

ता

राज.)

-500

πξ.

रहे हैं

र-तार होता, पीला पड़ता तंबू. साकी की बेतरतीब कमीज-पैट पहने वृद्ध माली. लगभग पूरे मैदान में

उगी बेकार की घास. एक ओर पहा लकड़ी का स्कोर बोर्ड और हल्की फुहार. मगर मैदान भरा हुआ, जहां एक साथ ही कई-कई क्रिकेट मैच चल रहे हैं. वह भी ऐसे कि एक टीम का थर्ड स्लिप पर बड़ा बिलाड़ी मुड़ जाए तो क्षिरी टीम के लिए मिड-ऑन पर हुड़ा खिलाड़ी बन जाए या तीसरी टीम का थर्ड मैन का विलाड़ी. पूरी अराजकता और अफरानाफरी लेकिन एक व्यवस्था भी दिखती है यहां.

मैदान पर और तंबू के भीतर कई उत्साही किशोर क्रिकेट

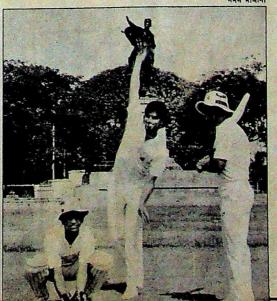
शिवाजी पार्क (ऊपर) में

खिलाडी दिख सकते हैं. अभी तो वे दबले-पतले दिखते हैं मगर बड़े होकर इन्हीं में से वेंगसरकर, अजित वाडेकर या दिलीप बल्लेबाजी में दादर-शिवाजी पार्क के सरदेसाई या रिव शास्त्री या संजय पारंपरिक आधिपत्य को फिर से जोरदार

मांजरेकर या सचिन तेंडुलकर बन सकता है. प्रवीण आमरे और विनोद कांबली तथा कोई सुनील गावसकर या दिलीप मांजरेकर और तेंडुलकर ने भारतीय

> तरीके से बहाल किया है. यहां के क्लबों से निकलकर भारतीय और विश्व क्रिकेट के आसमान पर चमकने वाले सितारे सुविधाओं के अभाव के बावजूद यहां की परंपरा, इतिहास और अपनी लगन व क्षमता के बूते ही उभरे हैं. इन्हीं से भारतीय बल्लेबाजी को मजबूती मिल रही है. मुंबई के पूर्व खिलाडी मिलिंद रेगे कहते हैं, "मुंबई देश को सबसे दमलम वाले खिलाड़ी देता रहा है."

> पैरों पर खड़े होते ही वे क्रिकेट की ही सुनते, सोचते या सपने देखने लगते हैं. शिवाजी पार्क के आसपास रहने वाले हर किसी का यही हाल होता है. हर सुबह सात बजे से ही मध्य मुंबई के इस



omain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

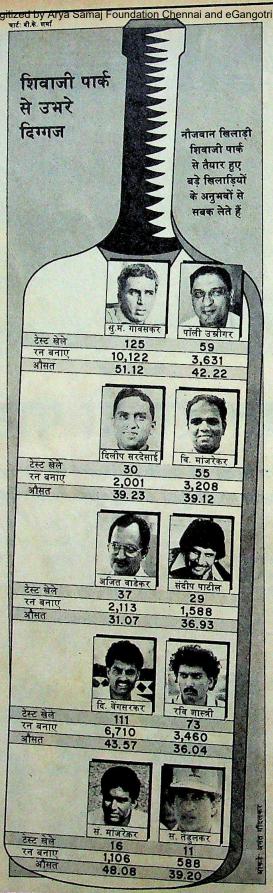
गावसकर, कुलकर्णी

विशाल मैदान में बल्ले और गेंद की आवाज सुनाई देने लगती है. हर कोने में सैकड़ों स्कूली छात्र बल्ला-गेंद के साथ नेटों में पूरे मनोयोग से अभ्यास करते हैं और उन्हें खेल की बारीकियां बताने के लिए वसंत अमलाडी और बिट्टल पाटील जैसे प्रशिक्षक मौजूद होते हैं. वर्षों से शिवाजी पार्क देश में क्रिकेट की प्राथमिक शिक्षा का उम्दा केंद्र है.

'हां प्रशिक्षण लेने वालों को य हा प्राश्वन करना पड़ता कठिन परिश्रम करना पड़ता गेंदबाजों मसलन, लगातार दो घंटे तक गेंदबाजी करनी पड़ती है. आज के कई टेस्ट खिलाडी तो कहते हैं कि गुरुआती दिनों में वे रोज छह घंटे तक अभ्यास किया करते थे. सचिन तेंड्लकर जैसे क्रिकेट के मतवाले तो गर्मी की छुट्टी में स्बह 7 बजे से 9.30 बजे तक अम्यास करते, फिर सारा दिन मैच खेलते और उसके बाद फिर शाम के 7 बजते तक अभ्यास में जुटे रहते.

जैसे-जैसे दिन चढने लगता है शिवाजी पार्क में लगे तंबुओं में गहमागहमी बढ़ने लगती है. किशोर खिलाडी टेस्ट खिलाडियों और पुराने खिलाड़ियों के साथ बतियाते मिलते हैं. किशोर और युवा लडके विजय भोंसले जैसे पूराने दिग्गजों से शिवाजी पार्क से संबंधित पुराने गौरवपूर्ण किस्से मुनते हैं. मसलन, कैसे स्नील गावसकर बीमारी की हालत में भी पूरी पाली में डेटे रहे या कैसे पद्माकर शिवालकर जादूगर की तरह वल्लेबाजों की गिल्लियां बिखेर दिया करते थे. मूंबई के कप्तान रवि शास्त्री बताते हैं, "जब मैंने होश संभाला तब भारतीय टीम में मुंबई के चार से कम खिलाडी कभी नहीं रहे. इससे हमारे भीतर उत्साह जागा और हमारा अंतिम लक्ष्य भारतीय टीम में

शामिल होना बन गया."
मुंबई में क्रिकेट के प्रति यह
समर्पण की भावना हर स्तर पर
कड़ी प्रतिस्पर्धा के कारण भी
बनी है. मुनील गावसकर ने
अपनी आत्मकथा 'सनी डेज' में



लिखा है, "मुंबई में क्रिकेट में हर स्तर पर कठिन प्रतिद्वंद्विता से गुजरना पड़ता है. किसी छूट या सिफारिश की तो गुंजाइश ही नहीं. दोस्ताना मैच भी पूरी गंभीरता से खेला जाता है."

अगर उ

तो वे अं

लगेगा र

की गर्ल

मकान

वंगसरक

वासु पर

और फि

है. जैसा

साल बा

ब्रेलने

चिकलव

का प्रति

भी कह

प्रतिनिधि

रिजर्क्स

स्रिलाडि

क्लबों

तेंड्लक

मिलता

वैसे, मां

पाटील

वेंगसरव

श्रेय वार

को माध

सवक वि

विजय ।

रणजी त

दफा ह

गावसक

'आज त

इस ल

जाओगे.

तो गाव

हल्का वै

लगभग

पिछली

तेडुलक

पर गेंद

अने दो

इस पर

इसे आर

टेस्ट में

महाराष्ट

वाले वि

मिहिर

तेवर

इतना ।

यह एक

कुछ

लगः

हिंदू

संजय मांजरेकर भी गावसकर की बात ही दोहराते हैं, "अगर आप उस टीम में हैं जिसमें दो-दो खिलाड़ी दोहरा शतक मार चुके हैं तो शतक बनाकर आप अपने को तुर्रमखां नहीं समझ सकते. आपको हमेशा रन बटोरते ही रहना होगा."

क्रिकेट की इस पाठशाला में प्रवेश भी जल्दी ही हो जाता है. दादर-शिवाजी पार्क इलाके में मध्यमवर्गीय मराठियों की ही बहुलता है जहां क्रिकेट में महारत पाना गणित की परीक्षा में अव्वल होने के बराबर ही महत्व का होता है. बाप अखबार लेकर अपने बेटों को रिववार की सुबह 'बड़े' मैच दिखाने चल देते हैं, कोई साधारण टेस्ट मैच नहीं बल्क दादर यूनियन और शिवाजी पार्क के बीच होने वाली शान की लडाई.

दादर की हिंदू कॉलोनी या भालचंद्र रोड से, जिसके एक ओर किंग जॉर्ज स्कूल है और दूसरी ओर रुइया कॉलेज, गुजरने से ही जाहिर हो जाता है कि कैसे इस मामूली इलाके से बड़े क्रिकेट खिलाडी जन्म लेते हैं. हिंदू कॉलोनी की गलियां संकरी हैं उनकी चौड़ाई बमुश्किल 30-40 फूट होगी. तिमंजिले मकानों की कतारों के बीच सड़क के दोनों ओर अब कारें खडी रहती हैं. खिलाडी गाडियों के शीशों के प्रति आदर भाव तो नहीं रखते पर किसी एक को तोड़ने का मतलब वह बल्लेबाज आउट करार दिया जाता है और उसे शीशा बदलवाना पडता है इसलिए गेंद को उछाल देना आउट होने का आसान तरीका है. शिवाजी पार्क इलाके में ही पले-बढ़े भारत के पूर्व कप्तान अजित वाडेकर कहते हैं, "इससे आप अपने शॉट पर नियंत्रण रखने को मजबूर होते हैं गावसकर मिड-ऑफ और मिड-ऑन के मास्टर कहे जाते हैं-

इंडिया टुंडे 🔸 अ जनवरी 1991

अगर उन्होंने 'गली क्रिकेट' न खेली होती तो वे और तरह के खिलाड़ी होते."

में हर

ता से

छूट या

श ही

र पूरी

वसकर

''अगर

दो-दो

र चुके

ा अपने

सकते. रते ही

ाला में ाता है.

ाके में की ही

महारत अव्वल

त्व का

ो सुबह

देते हैं

व नहीं

ने वाली

ानी या

के एक

है और

गुजरने

कि कैसे

क्रिकेट

. हिंदू

तरी हैं

30-40

ानों की

ह दोनो

हती हैं

शों के

ों रखते

डने का

आउट

र उसे

ता है.

न देना

तरीका

में ही

कप्तान

"इससे

नियंत्रण

ति हैं

र मिड-

गाते हैं

और

लेकर

हिंदू कॉलोनी से गुजरते हुए आपको लगेगा कि आप देश में क्रिकेट के इतिहास की गली से गुजर रहे हैं. गावसकर के मकान से बमुश्किल दो ब्लॉक दूर ही वंगसरकर का मकान है. और प्रशिक्षक वास परांजपे का मकान सड़क के अंत में. और फिर पास में ही रिव शास्त्री का घर है. जैसा कि गावसकर कहते भी हैं, "कुछ साल बाद जब हम सभी मुंबई की टीम में बेलने लगे तो लगता या मानो विकलवाडी और शिवाजी पार्क ही मुंबई का प्रतिनिधित्व कर रहा हो." वैसे, वे यह भी कह सकते थे कि 'भारत का प्रतिनिधित्व कर रहा हो.'

म लिंद रेगे कहते हैं कि हम लोग दो साल तक दादर यूनियन में 'रिजर्क्स' में सिर्फ इसलिए रहे ताकि बड़े बिलाड़ियों के साथ हिल-मिल सकें क्योंकि क्लबों और तंबुओं में ही किसी युवा तेंडुलकर को किसी मांजरेकर से वह गूर मिलता है जिसे वह हमेशा याद रख सके. वैसे, मांजरेकर को शायद वह गूर संदीप पाटील से मिला हो और पाटील को वेंगसरकर से, जबिक वेंगसरकर इसका र्थय वाडेकर को देना चाहेंगे और वाडेकर को माधव आप्टे और पॉली उमरीगर से सबक मिला हो. इसी तरह यह सिलसिला विजय मर्चेंट तक जा सकता है.

लगभग दो साल पहले जब तेंडुलकर रणजी ट्रॉफी में गुजरात के खिलाफ पहली दफा खेलने उतरे तो वासु परांजपे गावसकर के घर गए और उनसे कहा, <sup>"आज</sup> तुम स्टेडियम में जरूर आओ और इस लड़के का खेल देखो. तुम चौंक गाओंगे." और तेंडुलकर ने शतक जमाया तो गावसकर ने खुश होकर उसे अपना हल्का पैड उपहार में दिया क्योंकि दोनों लगभग एक ही ऊंचाई के हैं. इसके बाद पिछली गर्मियों में इंग्लैंड में गावसकर ने तेंडुलकर को मंत्र दिया, "अच्छा खेलते हो पर गेंद पर मत झपटो, उसे अपने पास अने दो." तेंडुलकर याद करते हैं, "मैंने का पर मनन किया और अगली पारी में हसे आजमाया." इस पारी में तेंडुलकर ने टेस्ट में पहला शतक जमाया.

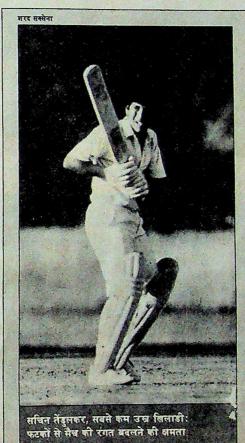
कुछ जानकारों का मानना है कि भहाराष्ट्री तेवर ने ही ऐसे रन बटोरने वाले विलाड़ी पैदा किए. 'ए मैदान व्यू' में मिहिर बीस ने लिखा है, "यह महाराष्ट्री तैवर है क्या? शिवाजी पार्क आखिर क्तना महत्व क्यों रखता है? दरअसल, वह एक तरह की समूहवादी भावना है

जिसके मुताबिक यहां लोगों में यह एहसास है कि मराठी लोगों की प्रतिभा को अभी पूरी तरह समझा नहीं गया है. शिवाजी पार्क इसी भावना का प्रतीक है."

लेकिन यह भावना अब कमजोर पड़ती जा रही है. वे दिन गए जब गावसकर किसी विदेशी दौरे से लौटकर अगली सुबह दादर यूनियन में हाजिर मिलते थे. संदीप पाटील कहते हैं, "सिर्फ सूनील ही

शतक लगाकर दिखा दिया है कि वे अपने स्कूल के साथी तेंड्लकर की बराबरी में आने से बहुत पीछे नहीं रहेंगे. उधर, समीर दिघे, समीर तलपदे और जतीन परांजपे जैसे और भी प्रतिभासंपन्न खिलाड़ी उभर रहे हैं.

शिवाजी पार्क के मैदान से एक के बाद एक हीरो उभरते रहे हैं. गावसकर ने भारतीय खिलाडियों को संघर्ष करने का





प्रदीप मंदानी राजस्थान चले गए प्रवीण आमरे जो एशिया कप के लिए चुने गए थे

सिचिन, कांबली और आमरे ने शिवाजी पार्क के आधिपत्य को जोरदार तरीके से बहाल किया है

बेल के प्रति पूरा समर्पण भाव रखते थे. हम सभी-जिनमें मैं भी शामिल हूं-सिर्फ मजा लूटने में विश्वास रखते." वैसे तेंडुलकर और मांजरेकर ने साबित कर दिया है कि उदासीनता के बावजूद यह प्रशिक्षण केंद्र अभी भी प्रतिभाएं पैदा कर रहा है. भारतीय टीम में शामिल होने के लिए शिवाजी पार्क के किशोरों की जहोजहद बताती है कि अभी भी यह मैदान प्रतिभा पैदा कर रहा है. विनोद कांबली ने इस साल मुंबई के लिए कई

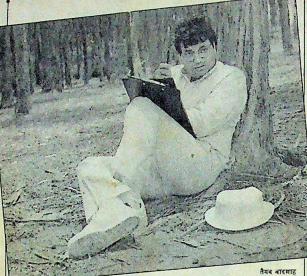
माद्दा बनाने का पाठ पढ़ाया. इसलिए अब शायद ही कोई भारतीय खिलाडी तेज गेंदबाजी से घबराता है. भले ही अब इस मैदान में हर शाम शिवसेना वालों और इंका कार्यकर्ताओं के जमघट से राजनैतिक युद्ध का बिगुल बज रहा है पर क्रिकेट अपनी जगह कायम है.

इस मैदान की घास ठाकरे या पवार जैसों के भाषणों से नहीं बल्कि किसी बल्लेबाज के बल्ले से गेंद के टकराने की आवाज से झ्मती है.

◆ दूरदर्शन का नया
एक-सूत्री कार्यक्रम सांप्रदायिक
सौहार्द पर अधिक से
अधिक कार्यक्रम दिखाना है.
यहां तक कि जानी-मानी
फिल्मी हस्तियां भी इस विषय
पर तीन-तीन मिनट की
फिल्में बनाने जा रही हैं. सुभाष
घई, यश चोपड़ा और बप्पी
लाहिड़ी लोकप्रिय फिल्मी सितारों
के जरिए 'अमर, अकबर,
एथनी' का संदेश फैलाएंगे.

सांप्रदायिक सौहार्द में सचम्च सितारों की भरमार होगी. इन कार्यक्रमों के अलावा अभिनेताओं से बातचीत भी दिखाई जाएगी, जिसमें वे राष्ट्रीय असंडता पर संवाद बोलेंगे. सांप्रदायिक सौहार्द के इस इलेक्ट्रॉनिक रथ का श्रेय भारतीय फिल्म उद्योग शांति समिति को है. पिछले पसवाड़े गठित इस समिति के संयोजक जी.पी. सिप्पी और अध्यक्ष शक्ति सामंत हैं. समिति चाहती है कि छाया गीत और चित्रहार के लिए सिर्फ ऐसे गाने चुने जाएं जो राष्ट्रीय अखंडता को बढावा देते हों.

 इंग्लैंड के चैनल-4 के लिए बनाई गई नसरीन मुन्नी कबीर की 'मूबी महल' शृंखला आखिरकार भारत आ पहुंची. कम-से-कम गुरुदत्त से संबंधित कार्यक्रम यहां आ ही गया है जिसमें उनके प्रतिभासंपन्न लेकिन प्रताड़ित व्यक्तित्व पर रोशनी डालने के साथ-साथ यह भी बताया गया है कि उन्होंने किस तरह फिल्में बनाई. इसमें वहीदा रहमान उस समय के बारे में बताती हैं जब वे उनसे हैदराबाद में पहली बार मिले थे और यह पूछा था कि क्या वे मुसलमान होने के नाते उर्दू बोल सकती हैं. इस कार्यक्रम में न तो आडंबर है और न ही वेमतलब की टीका-टिप्पणी. यहां तक कि निर्देशक भी अदृश्य ही रहते हैं. इसमें गुरुदत्त के परिवारवालों और सहयोगियों ने बताया है कि उनका जीवन कैसा था. राज खोसला ने यह कहते हुए सचाई ही बयान की है कि



🛕 सुमाष घई: सितारों भरी अखंडता



▲ 'कागज के फूल' में गुरुवत्त और वहीदा रहमान



मूतनाथ की भूमिका में बेंजामिन गिलानी: जादुई फंतासी

थी कि वे 'मैं तुम्हें प्यार करता हूं' न कहकर प्यार करते थे. और इस पहेली को उन्होंने परदे पर भी उतारा

◆ दिन-ब-दिन सचाई
अधिक कड़वी होते जाने से
दूरदर्शन फंतासी की तरफ
मुड़ गया दिखता है. अब वह
मायाबी महलों, खूबसूरत
राजकुमारियों और रोबदार
सूरमाओं को दिखाने जा
रहा है. दरअसल, दूरदर्शन पर
मशहूर उपन्यासकार
देवकीनंदन खत्री का भूत मंडरा
रहा है. मंजू असरानी
उनके सर्वाधिक विकने वाले
उपन्यास 'भूतनाय' पर
आधारित सीरियल लगभग

कोई तार

वैसे

विश्वविद्या

चिताजनक

ऐसा भी ि

कॉलेजों व

नहीं दिर

विश्वविद्या

नारायण

है. दरभंग

महलों में

कई मायन

लगभग ह

उपाधि

अञ्छ

राजीव

विश्वविद्य

उपाधि ले

वरना उन

षूट ही प

की बैठक

डॉ. पी.

इंडोनेशिय

मुहातों

आधारित सीरियल लगभग पूरा कर चुकी हैं. उनकी दूसरी महान कृति 'चंद्रकांता' पर भी सीरियल बन रहा है. असरानी की इस जादुई फंतासी में मुख्य भूमिका बेंजामिन गिलानी निभा रहे हैं जबिक नर्तकी सुधा चंद्रन एक कामोद्दीपक भूमिका निभा रही हैं. प्यार और फंतासी में सब जायज जो है.

◆ किरण बेदी बेंत और क्रेन के बिना किरण बेदी लगती ही नहीं हैं. पर अब वे कैमरे से भी लैस हो गई हैं. चाहे पुलिस पर टेलीफिल्म हो या दिल्ली पुलिस के लिए हाल में बना नशीली दवाओं की लत छुड़ाने संबंधी टेलीविजन वृत्तचित्र 'नवज्योति' हो. बेदी पुलिस की सहृदयता की तस्वीर खींचने में लगी हैं. हालांकि 'नवज्योति' कुछ

नीरस है लेकिन इसमें कुछ दिलचस्प चीजें भी हैं. मसलन, नशीली दवाएं बेचने वाली एक महिला और नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले एक रोगी की मां से की गई बातचीत. उस मां का कहना है कि नशेड़ी होने से बेहतर है कि बेटा ही न हो.

जाहिर है, सरकार अपनी छिव मुधारने में लगी है. अब पर्यावरण, पेट्रोलियम और स्वास्थ्य जैसे मंत्रालय भी सामाजिक जागरूकता और अपने

परदे पर उतरने को उत्सुक हैं

—मधु जैन

गुरुदत्त की फिल्मों की

विशेषता इस तथ्य में निहित

भरता हैं और अधिकारोंकेरक्ष उपवास्म से

फ

वह

बदार

र्शन पर

तूत मंडरा

ने वाले

नगभग

दूसरी

र भी

रानी

मुख्य

मुधा

मका

र क्रेन ो ही नहीं

लैस

पुलिस

ली

बंधी

यता हैं.

न्योति'

ं कुछ

ाएं बेचने

भौर

नेवन

गी की

चीत. उस

तर है कि

कार

रने में

लयम

माजिक

( अपने

ा छोटे

ह हैं.

–मधु जैन

से

हंतासी में

र



रस्तोगी को हटने के लिए अनशन; (इनसेट) रस्तोगी

#### अडिग कुलपति

■ मंडल-मंदिर मुद्दों पर विवादास्पद रहे काशी हिंदू विश्व-विद्यालय के कुलपित रघुनाथ प्रसाद रस्तोगी के खिलाफ असंतोष

और विरोध प्रदर्शन लंबे समय से चले आ रहे हैं. दिलचस्प तथ्य है कि उन्हें हटाने का आश्वासन तीन-तीन प्रधानमंत्री दे चुके हैं. उनके खिलाफ आंदोलन की शुरुआत राजीव गांधी के जमाने में हुई और उन्होंने छात्रसंघ के प्रतिनिधियों को फौरन कार्रवाई

करने का आण्वासन दिया था. इसी तरह वी.पी. सिंह और चंद्रशेखर ने भी आण्वासन दिए. वनारस के जद सांसद अनिल शास्त्री भी इस अभियान में शिरकत करते रहे हैं.

लेकिन लगता है अप्रैल में सेवानिवृत्त होने वाले रस्तोगी को वरदहस्त प्राप्त है. वैसे, कहा जाता है कि शिक्षा मंत्रालय के सचिव अनिल बोर्डिया उनके नजदीकी हैं. देखना है, रस्तोगी को हटाने का आंदोलन कितना सफल होता है. —रामशंकर सिंह, बनारस

#### कोई तारणदार नहीं

■ वैसे तो देश के सभी विश्वविद्यालयों की स्थिति जिताजनक है पर विहार में एक ऐसा भी विश्वविद्यालय है जिसके किलेजों को स्कूल का दर्जा भी कार्ट्स जर्मन



नहीं दिया जा सकता. इस विश्वविद्यालय का नाम लित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय है दरभंगा राज के शानदार महलों में बसा यह विश्वविद्यालय कई मायनों में अनोखा है. मसलन, लगमा दो दशक पुराने इस

विश्वविद्यालय को अभी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से मान्यता नहीं मिली है और जन्म से ही यह मिथलांचल की मैथिली राजनीति से ग्रस्त है.

के उच्च शिक्षा बिहार राज्यमंत्री नवल किशोर शाही पिछले पखवाड़े यह सुनकर भौंचक रह गए कि इस विश्वविद्यालय में लगभग 2,000 ऐसे व्याख्याता हैं जिनके पास केवल स्नातक डिग्री ही है. जबकि दूसरे विश्वविद्यालयों में पीएचडी डिग्रीधारी ही व्याख्याता बनने के काबिल होता है. कुलपति जनार्दन प्रसाद सिंह के अनुसार यहां का शिक्षा सत्र समय से केवल पांच साल पीछे चल रहा है और बैंकों से अब तक चार करोड़ रु. ओवर-ड्राफ्ट लेकर रोज-ब-रोज के खर्चों को किसी तरह पूरा किया जा रहा है. और उस पर से राजनीतिकों के लादे ऐसे शिक्षकों का बोझ जो किसी स्कूल के शिक्षक भी बनने लायक नहीं हैं. मिथिलांचल राजनीति के इस गढ़ को शायद ही कोई दुरुस्त कर सके. भले ही कोई कितनी ही शेखी क्यों न बघार ले.

-फरजंद अहमद, पटना

#### पराक्रमी छात्र, शिक्षक

■ साल भर में फौजदारी के 62 मामले—पांच हत्या के, छह हत्या के प्रयास के, एक अपहरण और एक बलात्कार का. 1990 के अपराध के ये आंकड़े लखनऊ फौजदारी मामलों में विवि छात्रसंघ के कुछ पदाधिकारियों समेत कई छात्र नेताओं को अभियुक्त बनाया गया राजनीति में जिस तेजी से अपराधियों को ऊपर चढ़ने की 'सुविधा' मिल गई है णायद उसे देखकर ही छात्र

लखनऊ विविः अपराध में पीछे नहीं

विश्वविद्यालय परिसर के हैं.

विडंबना यह है कि यह सब उस परिसर में हुआ जहां पूरे वर्ष पुलिस जमी थी. पर इससे भी चौंकाने वाली बात यह है कि 30 नेताओं ने विश्वविद्यालय को अध्ययन-अध्यापन संस्थान की जगह अपराध प्रशिक्षण केंद्र बनाना तय कर लिया है.

--विलीप अवस्थी, लखनऊ

#### उपाधि पर विवाद

बिज्छा हुआ कि पूर्व प्रधानमंत्री
तिविव गांधी ने नागपुर
विश्वविद्यालय की डी लिट मानद
उपाधि तेने से इनकार कर दिया।
वर्ता उन्हें आलोचना का कड़वा
पूर ही पीना पड़ता. 21 दिसंबर
को विश्वविद्यालय कार्यकारिणी
डॉ. पी. एल. भांडारकर ने
मुहालों को विश्वविद्यालय की

तरफ से डी लिट देने का सुझाव रखा. सबको सुझाव पसंद आया. इतने में एक वरिष्ठ सदस्य ने मजाक में कह दिया कि "अंतरराष्ट्रीय शांति के लिए महत्वपूर्ण योगदान करने वाले

डी.लिट. विवादः छात्र प्रदर्शन



राजीव गांधी" को भी इसी मौके पर डी लिट दी जाए. थोड़ी बहस के बाद इस प्रस्ताव को भी मंजूरी के लिए राज्यपाल के पास मुंबई भिजवा दिया गया.

विद्यार्थी परिषद और स्टुडेंट्स फेडरेंगन ने इसका जबर्दस्त विरोध किया. शिक्षाविदों ने भी विरोध जताया. राजभवन से 4 जनवरी को बयान जारी हुआ कि "राजीव गांधी सैद्धांतिक तौर पर मानद उपाधि लेने के खिलाफ हैं."

- इंद्रकुमार जैन, नागपुर

नों में बगावत. सड़कों पर उग्र छात्रों की भीड़. अगर 1789 वाले पेरिस को याद किया जाए तो पिछले पखवाड़े ढाका में फांस की क्रांति जैसा ही माहौल था. 1971 में आजादी मिलने के बाद से बांग्लादेश में हुए इस पांचवें संसदीय चुनाव में बेतरह हिंसा और राजनैतिक उथलपुथल से मिलने वाले संकेत अग्रभ ही थे.

जनताँ को कोपभाजन थे—पूर्व राष्ट्रपति एच.एम. एरणाद और उनकी जातीय पार्टी. ऑल पार्टी स्टुडेंट्स यूनिटी (एपीएसयू) और बेगम सालिदा जिया की अगुआई वाली बांग्लादेण नेणनलिस्ट पार्टी इस बात पर अड़ी थी कि एरणाद को चुनाव में भाग लेने से रोका

जाना चाहिए एपीएसयू ने स्पष्ट कर दिया था कि वह एरशाद और उनकी पार्टी के खिलाफ अपना जेहाद बंद नहीं करेगी.

उधर, कामचलाऊ राष्ट्रपति न्यायमूर्ति शहाबुद्दीन अहमद तो जैसे छात्रों के मन की करने को तैयार ही बैठे थे. उन्होंने सरकार के सभी महत्वपूर्ण पदों से एरणाद के लोगों को हटा दिया. दक्षिणपंथी बीएनपी सत्ताच्युत राष्ट्रपति के खिलाफ मोर्चा लगाए हुए हैं क्योंकि उसे डर है कि जातीय पार्टी उसके बोट काटेगी और

सीधा फायदा बालिदा की मुख्य प्रतिद्वंदी शेख हसीन वाजेद की अगुआई वाली अवामी लीग को मिलेगा. खालिदा जिया कहती हैं, "एरशाद किसी आरामदेह जगह में रखे जाने के काबिल नहीं हैं, सो मुकदमे के इंतजार के लिए उन्हें ढाका केंद्रीय जेल में भेज दिया जाना चाहिए." हैरत की बात है कि कम-से-कम इस मामले में तो खालिदा जिया की राजनैतिक प्रतिद्वंद्वी शेख हसीना भी उनसे सहमत हैं. वे कहती हैं, "एरशाद ने देश के खिलाफ अपराध किया है और जब तक मुकदमे खत्म नहीं हो जाते, उन्हें किसी

बांग्लादेश

## अस्थिरता का दौर

#### आगामी चुनाव जनमत संग्रह साबित होंगे



चुनाव में भाग नहीं लेने दिया जाना चाहिए:''

इन दबावों के कारण लगता है चुनाव आयोग कुछ ही दिनों में यह फैसला सुना देगा. पर तब तक कामचलाऊ राष्ट्रपति णहाबुद्दीन अहमद और बीएनपी कोई मौका नहीं छोड़ना चाहती. सरकार ने एरशाद के खिलाफ एक प्राथमिकी दर्ज कराई है जिसमें उन पर हथियार कानून

जनरल एरशाद (ऊपर); खालिदा जिया (नीचे बाएं); और शेख हसीना





लिदा जिया और शेख हसीना दोनों ही इस पर एकमत हैं कि एरशाद को देश के साथ किए गए उनके अपराधों के खिलाफ जेल में रखना चाहिए के उल्लंघन का आरोप लगाया गया है.

ऐसा भी नहीं है कि
एरशाद राष्ट्रीय मंच से
गायव ही हो गए हैं. इस
बात की पुख्ता खबरें हैं कि
उन्हें भारी पुलिस बंदोबस्त
के साथ छावनी की मस्जिद
में जाने की इजाजत है. और
फिर एरशाद के प्रशंसक भी
खत्म नहीं हुए हैं. उनके
समर्थकों ने उनकी रिहाई
की मांग करते हुए प्रदर्शन
भी किए हैं.

गाधी

कंप्यूटर

तंत्र का

की, "दे

भाड़ में

"देव

"हम

''आ

"हम

"उस्

"मृ

"आ

"अ

"हम

तरक्की

की बात

उन्होंने

रोजगार

करना न

आए तो

रास्ता

उसूल :

स्वयं ः

वनना

उपलिक

आततार

की दाद

किस अं

"**म**ह

"आ

पलटेगे? "वा

"हम

जताया. 'पह

लोकतंत्र

"इस

"लो

मुकुट अ "जन

करती, "बत

हम

जाहिर है कि अगले महीने होने वाले चुनाव गांतिपूर्ण नहीं होंगे. पिछली सरकार के खिलाफ संयुक्त आंदोलन चलाने वाले विपक्षी दल विखर गए हैं. अवामी लीग और बीएनपी तो अपना अभियान एक-दूसरे के खिलाफ चला ही

रहे हैं. खालिदा जिया ने कार्यवाहक राष्ट्रपति पर खुलेआम यह आरोप भी लगाया है कि वे अवामी लीग की कठपुतली बने हुए हैं.

चुनाव शांतिपूर्ण हो या न हो पर एक बात साफ है कि यह इस देश में सरकार के भावी स्वरूप पर जनमत संग्रह होगा. अवामी लीग संसदीय प्रणाली की समर्थक है तो बीएनपी राष्ट्रपति प्रणाली की. दोनों में वैचारिक मतभेद भी हैं. बीएनपी अवामी लीग पर भारत समर्थक होने का आरोप लगाती है और शेख हसीना को

भारतीय एजेंट कहती है. वह भारत विरोधी भावनाओं को भड़काने की भी कोणिश करती है. भारतीय उच्चायोग को बार-बार अफवाहों का खंडन करना पड़ता है.

देश जबिक राजनैतिक उथलपुथल के दौर से गुजर रहा है, सेना तटस्थ बनी हुई है. पर हथियार डाल देने की सरकारी अपील और हिंसा करने वालों को चुनाव में शामिल होने से रोक देने की सरकार की धमकी पर कोई घ्यान नहीं देता. जाहिर है अगला वसंत बांग्लादेश के लिए कुछ और ही रंग लेकर आएगा.

-- उत्तम सेनगुप्त

Digitized by Arya Samaj Foundation Chemiai and eGangotr

## अतीत गमन की इच्छा

आरोप

है कि मंच से हैं. इस

हैं कि

दोवस्त

मस्जिद

है. और

सक भी

उनके

रिहाई

प्रदर्शन

अगले

चुनाव

पिछली

संयुक्त

गए हैं

बीएनपी

र एक-

ाला ही

र्यवाहक

ोप भी

गि की

पर एक

कार के

होगा.

समर्थक

ो. दोनों

त्रीएनपी

होने का

ोना को

है. वह

वनाओ

कोशिश

गरतीय

ार-बार

करना

**ज**नैतिक

पे गुजर

बनी हुई

देने की

र हिंसा

नाव में

देने की

र कोई

हिर है

देश के

ग लेकर

सेनगुप्त

वाले

कुछ साल पहले हमें मुगालता था कि समय की सीमा को तोड मुल्क इक्कीसवीं सदी में 'लैंड' करने ही वाला है. मगर बीसवीं सदी के अंतिम

दशक ने घपला कर दिया हैं. आधुनिक गाधी के राज में मंत्र तकनीक और कंप्यूटर का था. आज जोर कमंडल और तंत्र का है हमने आततायी से शंका बयान की, "देश किधर जा रहा है?"

"देश क्यों कहीं जाए? उसके दुश्मन भाड में जाएं."

'हमारा मतलब प्रगति से है.''

"आबादी, कीमतें, अस्थिरता सभी तरक्की पर हैं."

'हम तकनीकी तरक्की की बात कर रहे हैं."

"उससे फायदा?" उन्होंने सवाल दागा.

"मशीनीकरण, उत्पादन, रोजगार बढेगा."

"आप पश्चिम की नकल करना चाहते हैं?"

"अगर उससे खुशहाली आए तो हर्ज क्या है."

"हमने हमेशा दुनिया को रास्ता दिखाया है

हम सोचने लगे. शून्य के उमूल की ईजाद से लेकर स्वयं कोशिश कर शून्य कोई मामूली उपलब्धि तो नहीं है. हमने आततायी के मौलिक चितन की दाद दी, "हम संसार को किस ओर ले जाएंगे?"

'मध्यकाल की ओर."

"आप समय की सुई को कैसे

वात मानसिकता की है.''

"हम समझे नहीं", हमने अज्ञान जताया.

पहले राजा मुकट धारण करते थे. <sup>लोकतंत्र</sup> में टोपी-साफे चल निकले." इससे क्या होता है?"

"लोकतंत्र के नेता इधर फिर सोने के पुक्ट और चांदी की छड़ी में सजते हैं." जनता की मर्जी है. कभी ताजपोशी करती, कभी टोपी उछालती है."

वताइए जब दो नेता मिलते हैं तो

क्या बात करते हैं?"

"मौसम और मुल्क की मुश्किलों की सोचते होंगे."

"जी नहीं! एक अपनी तलवार की धार के गुण गाता है. दूसरा पुश्तैनी हथियार की मरम्मत के इरादे जताता है."

"इससे समय थोड़ा रुक जाता है."

''बैल से रेल और कार से हवाई जहाज के सफर में सैकड़ों साल लगे."

''इसमें क्या नया है. सबको पता है.''

"इसके बावजूद हम धरा और गगन का यंत्र-पथ तज रथ-यात्रा कर रहे हैं."

"मघ्य युग की वापसी से इसका क्या

'हम कलयूग से सतयूग के सत्संग में जा रहे हैं."

माल चुराते हैं."

"पर तीर-कमान के दिन तो नहीं

"राम-रथयात्रा के अनुगामी गदा, बल्लम, भाले से लैस थे."

'हमारे देश में दूरदर्शन है.''

"वह भी तो रामायण महाभारत ही

'हम पैदल या घोड़े पर नहीं नगर-बस में चलते हैं."

"कुछ दिनों में नेता चुनाव-रथ पर होंगे और आप खच्चर पर.

"हमारे सरकारी कल-कारखाने शानदार माल बनाते हैं."

'तभी तो ज्यादातर घाटा उठाते हैं." "लोग आला सूट-सफारी के आदी हैं."

> से अधिक आबादी धोती और लूंगी भी नहीं पाती है."

> 'उपभोक्ता के इस्तेमाल के नए सामान आ रहे हैं."

"बस चंद रईसों को रंगीन विज्ञापन भा रहे हैं."

आततायी हमारे हर तर्क को काटते गए. हमें यकीन हो चला कि मुल्क का बचपन तो बीत गया पर सांप-सीढ़ी का खेल चाल है. हम कहीं समय के सांप के मुंह में तो नहीं निगल गए कि जहां से बढ़े थे वहीं फिसल गए. हमने शंका मिटाई, "हमारे अतीत-गमन के दर्शन से दुनिया को क्या लाभ है?"

"हम संसार के गरीबों के आदर्श और

"यह कैसे मुमकिन है?"

"हमारे नेता भाषण के राशन-पानी से भूख मिटाने का नायाब नुस्खा पेश कर

'यह तो मजबूरी का फलसफा है." ''हम अपनी जमीन से जुड़े हैं.'

"तभी जंगल काट कर धरती उजाड़

'शीत लहर हो या लू का कहर, हजारों बिना साये स्वर्ग सिधारते हैं."

हम आने वाली सदी में रथ, राजशाही, तीर, तलवार, तंत्र, छुआछूत की सुखद संभावनाओं में खो गए.



"फैसले तो सरकार ही लेती है."

"हर सियासती दल के अपने साधु, स्वामी और मौलवी होते हैं." हमने निष्कर्ष निकाला. अगर समाज और सियासत में यही माहौल पनपा तो आततायी का मध्ययुग का सपना साकार होकर रहेगा. फिर भी हमने बहस जारी रखी, "बड़े किसान तो अपनी खेती ट्रैक्टर से करते हैं."

'कुछ दिनों की बात है. न पेट्रोल मिलेगा, न डीजल. बस हल-बैल का सहारा होगा."

''डाकू, आतंकवादी राइफल-मशीनगन

"वे लोग तो सिर्फ पुलिस-फौज का

31 जनवरी 1991 ♦ इंडिया टुडे 85

## गोली के बदले पानी

### दंगों से निबटने में पुलिस को सक्षम बनाने की कोशिश

3 नवंबर 1990—: अधिसैनिक बलों के गोनी चलाने से 16 लोग मारे गए और 72 घायल हो गए.

11 दिसंबर 1990: प्रोवीशियल आर्म्ड कांस्टेबलरी (पीएसी) ने कानपुर में चार लोगों को गोली मार दी जिनमें दो बच्चे भी थे

12 दिसंबर 1990: हैदराबाद में पुलिस की गोली से तीन लोग मारे गए.

12 दिसंबर 1990: अहमदाबाद में जो पांच लोग मारे गए उनमें से तीन पुलिस गोली के शिकार हुए.

अ लग-अलग जगहों पर हुए इन हादसों में एक ही चीज समान है— 'गोली मार दो' का पुलिसिया दर्शन. पर आंकड़े इन खबरों से कहीं अधिक भयंकर हैं. राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार 1988 में पुलिस को

1,111 मौकों में से 544 यानी 48 फीसदी मौकों पर दंगों के कारण गोली चलानी पड़ी. और इन तमाम घटनाओं में 128 लोगों को जानें गई.

व्यवस्था में गड़बड़ी से निबटने की थोड़ी-बहुत कोशिश उस समय दिखी जब पिछले महीने प्रधानमंत्री चंद्रशेखर ने संसद में घोषणा की कि सरकार सांप्रदायिक हिंसा से निबटने के लिए केंद्रीय दंगा नियंत्रण पुलिस बल गठित करने पर विचार कर रही है. इस पर गृह मंत्रालय के लोग हैरत जाहिर कर रहे हैं कि "फिर पुलिस होती किसलिए है?"

पुलिस अधिकारियों का तर्क है कि कभी-कभी उन्हें हिंसक भीड़ पर मजबूरन गोलियां चलानी पड़ती हैं क्योंकि उनके पास जो साज-सामान होते हैं वे बहुत कुछ करने की गुंजाइश नहीं छोड़ते पारदर्शी पुलिसवालों का तर्क सही भी हो सकता है. हिंसक भीड़ से निबटने के लिए पुलिस के पास बस पुराने जमाने की सीएन आंसू गैस, फटकारने के लिए लाठी और खटारा .303 राइफलें ही होती हैं. जब लाठी से काम नहीं बनता तो .303 जैसे घातक हथियार के इस्तेमाल के अलावा कोई चारा नहीं बचता.

पर ये सारी समस्याएं कुछ दिनों में ही बीते कल की बातें हो जाएंगी. पुलिस शोध व विकास ब्यूरो ने अब ऐसे हथियार तैयार किए हैं जिनसे पुलिस के विकल्प बढ़ जाएंगे.

इन नए हथियारों की फेहरिस्त कुछ इस प्रकार है:

► परंपरागत सीएन आंसू गैस की जगह सीआर (डाइनेंजोक्सेजेपाइन) गैस.

▶ प्लास्टिक की गोलियां जो खासकर रखर / पट्नास्टिक दंगों के लिए बनी नई तरह की बंदूक से की गोलियां चलाई जाएंगी.

 1.5 इंच यानी 38 मिमी की 120 ग्राम वाली रवर की गोलियां जो एक खास किस्म की गैस-गन से दागी जाएंगी, हालांकि ये महंगी (तकरीबन 100 रु. प्रति गोली) हैं.

 .303 राइफल से दागी जा सकने वाली प्लास्टिक की गोलियां जिनमें बारूद की जगह प्लास्टिक के कारतूस होंगे.

प्रतिरक्षा अग्निशमन शोध संस्थान से

विकसित जलधार फेंकने वाली तोप जिससे 40,000 गैलन पानी को प्रदाहक के साथ मिलाकर फेंका जा सकता है.

दिल्ली के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त पी.आर.एस. ब्रांड के अनुसार, "इन हल्के तरीकों के कारण पुलिस बाद में ज्यादा ताकत इस्तेमाल करने पर मजबूर होगी." अधिकारियों का यह भी कहना है कि हथियारों के आधुनिकरण से भी ज्यादा जरूरी है पीएसी के ढांचे में बदलाव.

नए हथियारों का चलन शुरू करने में इस बहस के अलावा लालफीताशाही भी आडे आ रही है. ब्यूरो ने सीआर गैस को जुलाई 1989 में ही हरी झंडी दिखा दी थी पर गृह मंत्रालय ने इसे इसी साल स्वीकृत किया. प्लास्टिक और रवर की गोलियां अभी सीमित संख्या में ही उपलब्ध हैं. बहरहाल, जब तक पुलिस को वैकल्पिक साधन नहीं मिल जाते तब तक वह 'कडे अपनाने को ही मजबूर तरीके' रहेगी. —डब्ल्यू.पी.एस. सिद्ध

Ħ

सेवा-नि

का इलाज अ को जमा-पूर्ज

इसलिए ऐसे आप अभी रं

ऐसी ही : भारतीय साध

<sup>‡</sup> भविष्यः

वुनो हुई सेवा

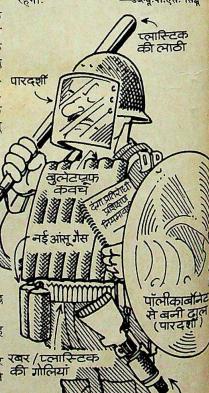
अस्पताल में

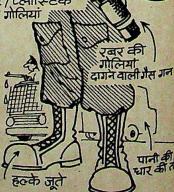
5. 50,000

आरोग्य. म

खर्च की सीम 55 से 60 वर्ष

अपने नी प्रीमियम की र







रेवा-

तोप हक के

आयुक्त

न हल्के ज्यादा होगी.''

ज्यादा

ही भी गैस को

दी थी स्वीकृत गोलियां

व्ध हैं. कल्पिक

मजबूर स. सिद्ध

टकः ।ठी

ौस गन

अस्पताल में इलाज करवाने का खर्च उठाना मुश्किल होता है,

े सेवा-निवृत्त होने के बाद तो और भी मुश्किल. इसलिए मैं तो अभी से इंतज़ाम कर लूंगा!



ऐसी अनोखी बीमा योजना पहले उपलब्ध नहीं थी!



भारतीय साधारण बीमा निगम

प्रस्तुत करते हैं

## भ विष्य आरोग्य

सेवा-निवृत्त होने के बाद अगर किसी बड़ी बीमारी का इलाज अस्पताल में करवाना पड़ जाए तो ज़िंदगीभर की जमा-पूंजी ख़त्म होने की नौबत आ सकती है. स्रालए ऐसे किसी मौके का सामना करने की तैयारी आप अभी से शुरू कर दीजिए.

ऐसी ही ज़रूरत के वक्त पर आपके काम आएगी भारतीय साधारण बीमा निगम की नई, अनोखी योजना भविष्य आरोग्य.

अपने नौकरी-व्यवसाय के कार्यकाल में ही आप भींग्यम की मामूली, आसान किस्तें भरेंगे. फिर आपकी बुगें हुई सेवा-निवृत्ति उम्र से लेकर उम्रभर के लिए क्षमताल में अथवा घर में अस्पताली इलाज के लिए 5.50,000 तक का खर्च आपको देगा **क भविष्य** खर्च को सीमा रू. 20,000 होगी. सेवा-निवृत्ति के लिए 55 से60 वर्ष तक के बीच कोई भी उम्र आप चुन सकते हैं. भ भविष्य आरोग्य के लाभ को ह. 50,000 से अधिक भी बढ़ाया जा सकता है. उचित अनुपात में प्रीमियम भर कर इस लाभ को ह. 10,000 के गुणकों में बढ़ाया जा सकता है.

योजना में शामिल होने के वक्त की आपकी उम्र और आपकी चुनी हुई सेवा-निवृत्ति की आयु के अनुसार प्रीमियम की दर बदलेगी. (कृपया तालिका देखें).

डॉक्टरी जांच की कोई आवश्यकता नहीं. स्वास्थ्य संबंधी घोषणा-पत्र की ज़रूरत भी नहीं.

यदि आप अपनी बीमा पॅलिसी रह करवाना चाहें या दुर्भाय से आपके साथ कुछ भला-बुरा घट जाए तो आपके मेरे हुए प्रीमियमों का अच्छा-खासा भाग आपको अथवा आपके नामांकित व्यक्ति को लौटा दिया जाएगा, बशतें कि तब तक खर्च का कोई दावा न किया गया हो.

वार्षिक प्रीमियम (रु. में) रु. 50,000 का बीमा करवाने के लिए सूचक तालिका

चीमा करवाने के क्कत	सेवा-निवृत्ति की आयु									
अयु	55	56	57	58	59	60				
25	47	44	41	38	35	33				
31	88	81	75	69	64	59				
44	426	378	338	303	273	247				
50	1335	1073	889	753	648	564				
55		-	_	=	_	1517				

एक हो किस्त में संपूर्ण प्रोमियम भरने की सुविधा उपलब्ध.

घारा 80D के अंतर्गत रु. 3000 तक के वार्षिक प्रीमियम पर आयकर में छूट मिलेगी. बड़े प्रतिष्ठाचों के लिए रियायती दर पर समूह योजनाएं भी उपलब्ध है.

आपके लिए घर से संबंधित/व्यक्तिगत बीमे की कुछ अन्य योजनाएं ये हैं :

वार्षिक मेडिक्लेम - आपका और आपके परिवार का अस्पताली इलाज का खर्च चुकाने के लिए. समुद्रपारीय मेडिक्लेम - विदेश यात्रा के दौरान अचानक बीमार पड़ने पर चिकित्सा का खर्च विदेशी मुद्रा में चुकाने के लिए.

गृहस्वामी व्यापक बीमा - आग लगने, बिजली गिरने, बाढ़, दंगे, हड्ताल, चोरी आदि से हुए घरेलू नुकसान की भरपाई करने के लिए.

व्यावसायिक क्षतिपूर्ति - वकीलों, चिकित्सकों, लेखाकारों व अन्य व्यावसायिक व्यक्तियों के लिए, अपने विरुद्ध कानूनी दायित्व की भरपाई के लिए

व्यक्तिगत दुर्घटना बीमा - दुर्घटना के कारण होनेवाली अपगता अथवा मृत्यू का बीमा.

अधिक जानकारी के लिए हमारी कार्यरत कंपनियों के किसी भी कार्यालय से संपर्क करें.



#### भारतीय साधारण बीमा निगम

इंडस्ट्रियल एश्योरेंस बिल्डिंग, चर्चगेट, बम्बई 400 020

कार्यरत कंपनियां



नेशनल इन्स्योरेंस कंपनी लिमिटेड



दी न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड



दी ओरिएण्टल इन्स्योरेंस कंपनी लिमिटेड



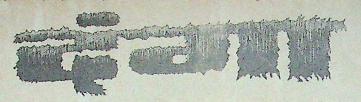
युनाइटेड इंडिया इन्स्योरेंस कंपनी लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

SWAMY/BBDO GIC 526 B HIN



नवीन जोशी



नई पीढ़ी के कथाकार नवीन जोशी की कहानियों का संबंध समाज में घटने वाली घटनाओं से होना स्वाभाविक ही है. प्रस्तुत कहानी शहर-शहर फैल रहे सांप्रदायिक दंगों से प्रभावित होने वाले निर्दोष परिवारों की स्थिति का मार्मिक चित्रण करती है.

'मवार को वह नहीं मिला. अगला सोमवार आया और वह फिर नहीं मिला.

दंगा शांत हो जाने के बाद भी शहर में कई दिन कर्प्यू लगा रहा. यह धीरे-धीरे दो-दो, चार-चार घंटे की छुट के साथ एक हफ्ते बाद हटा जैसे यह वायरल बुखार जाता है, जो कि दंगे के बाद शहर में महामारी की तरह फैला हुआ है.

हो सकता है वह भी बुखार में पड़ा हो. लेकिन इतने दिन तो बच्चे के स्कूल का हर्जा नहीं करना चाहिए. अगर वह ज्यादा ही बीमार है तब भी बच्चे को स्कूल पहुंचाने किसी न किसी को तो

आना चाहिए, बच्चा किसी और के साथ जाता तो नहीं दिखता.

"आज भी नहीं मिला?" पत्नी पूछती है. "नहीं, पता नहीं कहां चला गया, क्यों नहीं आता.'' मैं बताता हूं. पत्नी चिंता में पड़ जाती है. फिर कहती है, जैसे खुद को ही दिलासा दे रही हो-"बेचारा गरीब आदमी है....., बच्चे को स्कूल पहुंचा देने वाला कोई और नहीं होगा....."

मैं उसे नहीं जानता. बिलक्ल नहीं जानता. न नाम, न पता. कुछ भी तो नहीं. वह रोज ही दिखा करता था, इसलिए उसे देखने की आदत पड गई है.

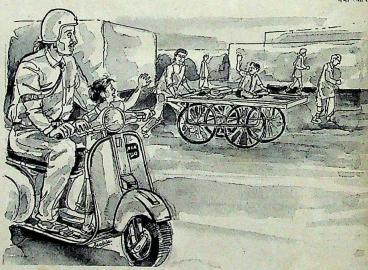
"णायद आज मिल जाए," मेरा बच्चा कहता है. पर वह नहीं मिलता. "पापा, शायद उस मोड़ के बाद मिले," बच्चा फिर उम्मीद जगाता है. पर उस मोड के बाद दो मोड़ और गुजर जाते हैं. वह नहीं दिखाई देता. रोज सुबह बच्चे को लेकर स्कूटर से रवाना होते ही वह दिमाग पर छा जाता है. दिन भर उसकी याद नहीं आती. बस, सुबह उसका दिखाई न देना बहुत खटकता है.

अरे हां, आपको तो पूरा किस्सा बताना पड़ेगा. दरअसल रोज सुबह अपने बच्चे को स्कूल छोड़ने जाता हूं. एक राष्ट्रीयकृत बैंक का बाबू हूं. बैंक से ही ऋण लेकर शहर के नए विकसित हो रहे इलाके में अपना छोटा-सा मकान बनवा लिया है. ऋण की सुविधा से ही एक स्कूटर भी है. शादीशुदा हूं और दो बच्चों का बाप हूं. बड़ा लड़का है-पांच साल का और एक लड़की है-छह महीनें की. आजकल के हिसाब से आदर्श परिवार.

हर बाप की तरह अपने बच्चे को अच्छे

स्कूल में पढ़ाने की इच्छा है. सो, जोड़-जुगाड़ लगवाकर किसी तातते बता रहे एकं अंग्रेजी स्कूल में उसका दाखिला करा दिया है. आपसे कार्ती हुआ है छुपाना, हिंदी स्कूल में पढ़े होने और फर्राटेदार अंग्रेजी न बोल प का फ्रस्टेशन आपकी तरह मुझ में भी है. अपने बच्चे को मैं ह फस्टेशन से बचाना चाहता हूं. मैं अपने लड़के को बड़ा आह बनाना चाहता हूं ताकि वह धांसू अंग्रेजी बोलकर सब पर अप रोब गालिब कर सके. इसीलिए घर से सात किमी दूर होने पर मैंने उसे अच्छे अंग्रेजी स्कूल में डाला है.

सुबह-सुबह सात किमी जाना और आना मुझे बहुत मनोरं



उस ठेले पर बैठे बच्चे का गौरवान्वित चेहरा और उसके पिता का लगभग दौड़ते ठेला धकेलना लयबद्ध-सा था. मेरे बच्चे ने उससे अपने-आप ही दोस्ती कर ली थी

और सुखद लगता है. इस दैंनंदिन यात्रा के ऐसे आकर्षण हैं जो मन को गृदगुदा जात जिन्हें देखने के लोभ का संवरण मैं नहीं पाता. आपको दिखाऊं कुछ दृश्य?

तेजी से विकसित हो रही इस कार्त में गहर जाने विलासपुरी में मजदूरों की बहुतायत है, हैं नेकहीं जरूर की संख्या में वे झुंड के झुंड निर्माण मकानों में रहते हैं. और आप माफ क हुए ठेला धने सड़क किनारे लगे नलों और बन रहे मक की हौदियों पर विलासपूरी मजदूरिनी सामूहिक प्रातः स्नान अत्यंत आकर्षक होता को मे कड़ी शारीरिक मेहनत से सुडौल और पुष् उनकी गोलाइयों और मांसपेशियों में उ मछिलयों पर फिसलता पानी किसी फुब्बी नीचे नहाती खूबरसूत मूर्तियों का आभास पहिना हो।

आधी धोतं ते में भी शलता भवन कम नहीं हे तो, रोजम क मुबह बिल मडक पर तेजी देन अचानक

वह देखो." मैं मडक के बाई था. एक आद वचे को बैठा। वन्वे की खाक

नटकाए वह टे उसे सड़क की और उसकी सं में गौरवान्वित वमक थी जिसे नक्ष्य कर लिए कूल जाने के बहुत प्यारी ल ठेले की यह थी. वह स्कूल "पापा, वह वि

फिर तो य

और उसके पि

अपने-आप ही

विजा गुरू में

आधी धोती पहनकर शेष आधी धोने या त में भी कपड़े बदल लेने की उनकी कारी अवन निर्माण की खूबसूरत कारीगरी

कम नहीं होती. तो, रोजमर्रा के इन दृश्यों में उसका आना क मुबह बिलकुल अचानक ही हुआ था. मुख्य हर पर तेजी से गुजरते हुए मेरा बच्चा उस हत अचानक ही किलका था—"पापा, पापा! ह देही." मैंने उसकी अंगुली की दिशा में मुझक के बाई ओर देखा. दृश्य वाकई जानदार ण एक आदमी ठेले पर पांच-छह साल के क्ले को बैठाए हुए लगभग दौड़ा जा रहा था. बन्ने की खाकी हाफ-पैंट, सफेद शर्ट, टाई और र किसी तानते बता रहे थे कि वह किसी स्कूल में नया आपसे कार्ती हुआ है. छोटा-सा बस्ता पिट्ठू की तरह

र होने पर

हुत मनोरं

न यात्रा के

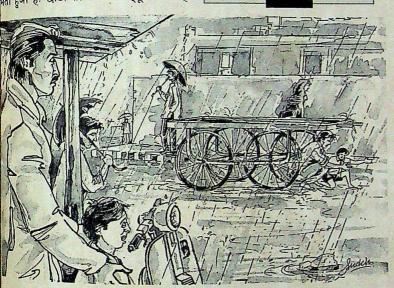
दगुदा जाते

ग मैं नहीं

ायत है. से

ा माफ के

अचानक बेटा सड़क के उस पार देखकर हाथ हिलाने लगा. मैंने देखा तो देखता रह गया. ठेले-वाले पिता-पुत्र सड़क किनारे ठेला रोककर उसी के नीचे दुबके हए थे



तरकाए वह ठेले के बीचोबीच ठाट से बैठा हुआ था. ठेले की सवारी असे सड़क की दूसरी सवारियों से कम रोचक नहीं लग रही थी वीर उसकी सीधी तनी पीठ बता रही थी कि वह अपनी ही नजरों में गौरवान्वित-सा दूसरों को देख रहा था उसकी आंखों में एक विकास की जिसे उसके पास से तेजी से गुजरते हुए भी मेरी आंखों ने विस्त कर लिया था. वह चमक ठेले की नायाब सवारी से भी ज्यादा कि जाने के गौरव की थी. मुझे उस मासूम बच्चे की यह अदा वहुत प्यारी लगी.

हैं की यह नई सवारी मेरे बच्चे के लिए भी कौतुक का विषय थी. वह स्कूल पहुंचने तक उसकी याद करके किलकता रहा— भागा, वह कितने मजे से बैठा था ना, ठेले पर?"

किर तो यह रोज मुबह का अनिवार्य विषय बन गया. कालोनी भेषहर जोने वाली चार किमी लंबी मुख्य सड़क पर वह रोज कहीं-किहीं कर किमी लंबी मुख्य सड़क पर वह रोज कहीं-तिक्हीं जिल्हर दिख जाता. ठेले पर बैठे बच्चे का गौरवान्वित चेहरा की उसके पिता का (वह बच्चे का पिता ही होगा) लगभग दौड़ते हैं। होता का (वह बच्च का पिता हा होता) कि अक्त कि विलकुल लयबद्ध-सा था. मेरे बच्चे ने उससे भारे आप ही दोस्ती कर ली थी. जब हम उसके ठेले के पास से मजूरा किते होता कर ली थी. जब हम उसका उत्ता बह कर्षक होता कर के विद्या उसकी तरफ हाथ उठाकर हिला देता. वह क्षित्र क्षेत्र वेटा उसकी तरफ हाथ उठाकर क्ष्म में दो-तीन दिन तो झेंपा. फिर उसने भी जवाब में हाथ हिंगाना गुरू कर दिया. मेरा बेटा मुझसे उसके बारे में तरह-तरह के भवाल करता, 'उसका नाम क्या होगा, पापा?' 'वह किस स्कूल भवात के भवात होगा नाम क्या होगा, पापा?' 'वह किस स्कूल तसी पु<sup>द्धा</sup> होगा?' उसका नाम क्या होगा, पापा? वह तर होगा ता आभा<sup>म</sup> होगा?' ठेले पर बैठने में बड़ा मजा आता होगा ना, पापा?' 'उसके पापा के पास स्कूटर नहीं है?' वगैरह-वगैरह.

मेरे पास भी इन सवालों का क्या जवाब था? पर किसी जवाब के बिना भी वे बाप-बेटे, हम बाप-बेटे के अंतरंग से हो गए थे और उनका नाम भी हमने रख लिया था-ठेलेवाले. एक भी दिन वे नहीं दिखते, हालांकि ऐसा कम ही होता था, तो हम बेचैनी महसूस करते. अपने ठेलेवाले दोस्त के बारे में बेटे ने अपनी मां को सब कुछ बता रखा है.

"आज भी ठेलेंवाला नहीं मिला ना," रात को पत्नी पूछती.

"दो हफ्ते होने को आ गए, आजकल दिखता ही नहीं.'

"दिन में बेटू कह रहा था कि कहीं उसे बुसार न आ गया हो," पत्नी बताती-'दिन भर उसी की बातें करता रहता है.''

''अरे, वह है भी बहुत प्यारा. ठेले पर पालथी मारे ऐसी अकड़ से बैठा रहता है जैसे किसी बादशाह की सवारी जा रही हो." मेरी स्मृति में पूरा दृश्य घूम गया. उम्मीद बंधी—शायद कल सुबह मिल जाए.

क्या आपके शहर में कभी दंगा हुआ है? ईश्वर करे कभी न हो, लेकिन अब तो हर शहर में फसाद होने लगे हैं. हमारे इसी शहर को लीजिए. दंगा और वह भी सांप्रदायिक, इस शहर ने पहले कभी नहीं जाना था. मुसलमानों की यहां अच्छी खासी संख्या है और तमाम मुहल्लों में मिश्रित आबादी है. यह मकान बनवाने से पहले पूराने शहर की जिस गली में हम किराए का मकान लेकर रहते थे, वहां लाइन से आर.एस.एस. वाले बनियों और कट्टर

नमाजी मुसलमानों की दुकानें है पोढ़ियों से ये परिवार वहीं रहते भी हैं. नीचे दुकानें और उसके रीछे वाले कमरों या दुमंजिले में रिहायश. धार्मिक कट्टरपन के बावजूद हिंदू-मुस्लिम परिवारों में अद्भुत अपनापा है. हर तरह का भेदभाव, किंतु किसी प्रकार की कटुता नहीं.

दोपहर के सन्नाटे में जब दुकानों में ग्राहक नहीं के बराबर आते थे, कपड़े की अपनी दुकान में उबासी लेते हुए पंडित राम नारायण, किरानी अहमद अली से चुहल करते, "क्यों मौलाना, एक और बेगम कब ला रहे हो? तुम्हारे यहां तो चार-चार की इजाजत है."

उंटर पर आगे को झुक आए बूढ़े अहमद अली सड़क की तरफ पान की पीक की पिचकारी मारने के बाद जवाब लौटाते, "क्या करें पंडत, पंडताइन पर लाइन तो बहुत मारी मगर वे तो तुम्हारे जनेऊ से ही बंध के रै गई हैं." ठहाके गली में दूर तक गूंजते और भारी दोपहर पंख लगाकर उड़ जाती. दोनों घरों की लड़िकयां छतें फांदकर इकट्ठा होतीं. मेंहदी रचातीं और दुपट्टे बदलतीं. गरज ये कि हर तरह के सुख-दुख का साझा था. मैं तो इसी माहौल में बड़ा हुआ. यहां रोजमर्रा जीवन के सारे मेल-मिलाप, भेदभाव और तनाव हैं पर दंगे की छाया भी कभी मंडराई नहीं थी.

लेकिन मैं आपसे यही बात अब इतने गर्व से नहीं कह सकंगा. इस बार न केवल सांप्रदायिक तनाव फैला बल्कि दंगा भी भडक गया. वही सब हुआ जो हिंदुस्तान के कई शहरों के इतिहास के

काले पन्नों में दर्ज हो गया है-बार-बार दोहराए जाने के लिए. काफी मार-काट मची. चाकू चले. कट्टे बरसे. बम फटे और पुलिस की राइफलें गरजीं. हफ्ते भर कर्प्यू रहा. कितने आदमी मरे, यह शायद कभी तय नहीं हो पाएगा. किसी अखबार के अनुसार पचास मारे गए, तो किसी ने लिखा सत्तर से ज्यादा. कालोनी का पानवाला फुसफुसाता है, ''बाबू जी, चुन-चुनकर मारे गए, सौ से ज्यादा. पुलिसवालों ने कपर्यू में लाशें गायब कर दीं. कोई ग्राहक आसपास देखकर, और भी फुसफुसाकर पूछता है—"सुनो, कौन ज्यादा मारे गए, हिंदू या मुसलमान?'

और मेरा माथा ठनक जाता है. उस दिन भी मेरा माथा ठनका था

"पापा, वह ठेलेवाला दोस्त हिंदू है या मुसलमान?" एक रोज स्कूल जाते हुए मेरे बेटे ने अचानक पूछा था. यह सवाल बिलकुल अप्रत्याशित था. माथा इसलिए भी ठनका कि हिंदू और मुसलमान की बात बच्चे के दिमाग में आई कैसे?

"हिंदू और मुसलमान क्या होता है

"आपको नहीं मालुम?" उसने मेरी खिल्ली-सी उडाई, "हमारी क्लास में एक लड़का है बाबर. वो ना, मुसलमान है."

"कैसे मालम बाबर मुसलमान है?" "आया जी कहती हैं बाबर मुसलमान है.

और शाहीना भी मुसलमान है. मैं हिंदू हूं, उसने अपना ज्ञान सगर्व उगल दिया.

फिर मैं कुछ नहीं बोल पाया था. रास्ते भर अपने ही भीतर उलझता रहा कि हिंदू और मुसलमान शब्दों से मासूम बच्चे का

यह परिचय कैसा है? क्या टीचर दे आया जी की शिकायत करनी चाहिए कि वह बच्चों से ऐसी बाते क्यों करती हैं? लेकिन खुद मेरे बच्चे की एनवायरनमेंटल स्टडीज की किताब में टेंपूल, मास्क, चर्च और गुरद्वारा पढ़ाए जाते हैं. पुस्तक में उनके खूबरसूत चित्र छपे हैं और नीचे टीचर के लिए अंग्रेजी में ही यह निर्देश भी छपा है कि बच्चों को ऐसे चित्र या पोस्टर दिसाइए जिनमें हिंदू, मुसलमान, सिख और इसाई अलग-अलग पूजास्थलों में जाते दिखाए गए हों. पांच-छह साल के बच्चों के लिए अपने पर्यावरण का यह पाठ क्या उचित है? मैं तत्काल कोई फैसला नहीं कर पाया पर बच्चे की बात से मुझे उस दिन चोट जरूर पहुंची. फिर यह सोचकर मन को सांत्वना दी कि मेरा बेटा ऐरे-गैर स्कूल में नहीं पढ़ता. शहर के नामी अंग्रेजी स्कूल में पाठ्यक्रम निश्चय ही लापरवाही से नहीं बनाया गया होगा.

लेकिन यह तब की बात है जब शहर में दंगा नहीं हुआ था और ठेलेवाले पिता-पुत्र से हम लोगों की रोज ही मुलाकात हुआ करती थी. अब बीस दिन हुए उन्हें देखे. जाने कहां लापता हो गए हैं!

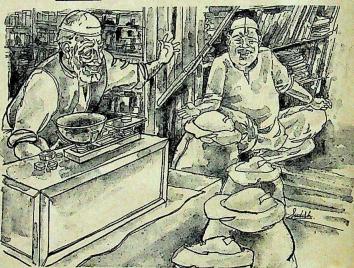
क्या पूछा आपने? कि इतने अमन-चैन और सद्भाव वाले गहर में इंगा क्यों हुआ? अजी, आप ही बताइए दंगे के लिए कहां कोई कारण होता है. बस, उसे तो बहाना चाहिए, बहाना.

और मेरे इस शहर में बहाना भी क्या बना! भाषा. जबान.

बताइए, भाषा भी कहीं दंगे का कारण बन सकती है? छोटी-सी

स्रिदायिक दंगा इस शहर ने पहले कभी नहीं जाना था. आर एस एस वाले बनियों और कट्टर नमाजी मुसलमानों की दुकानें होने के बावजूद यहां कोई कट्ता नहीं थी

बात थी. लोगों को समझ लेनी चाहिए चुनाव का मौका था, सो हमारे प्रदेश मुख्यमंत्री ने उर्दू को दूसरी सरकारी भाषा दर्जा देने की घोषणा कर दी. आप जानते इस बार कांग्रेस के खिलाफ काफी हवा रही थी. उसके नेताओं को लग रहा था। उसका परंपरागत वोट-बैंक-मुसलमान, उ खफा हैं. उनका वोट पटाने के लिए ही ह घोषणा की गई थी. उर्दूभाषियों....अरे न आहे उसे त उर्दभाषी क्या कहिए उनको, उर्दू को भ खाने वालों का एक वर्ग काफी समय से मांग कर भी रहा था. घोषणा होते ही उन्हें शहर में विजय जुलूस निकाला. इस जुलूस बड़ी प्रतिक्रिया हुई और दूसरे ही दिन ॥ बड़ा जुलूस उर्दू के विरोध में निकाल कि



गया. खूब नारेबाजी हुई. एक कॉलेज के सामने पता नहीं किए कहां से जुलूस पर पत्थर फेंका, देखते-देखते मारपीट ग्रुरू हो ग थोड़ी ही देर में शहर दंगे की चपेट में आ गया. यहां-वहां अना शनाप गोलियां चलीं. कोई अपनी छत पर मारा गया, व खोंचेवाला, कोई रिक्शेवाला, कोई फुटपाथी, जहां का तहां ढेरा

गा हुए आज एक महीने से ज्यादा हो गया है. लोगों में कि पि भी दहशत है, दबे स्वरों में यहां-वहां चर्चा हो ही जाती लेकिन आपको क्या लगता है, यह सब क्या बिलकुल अचानक हो गया था? मुझे तो लगता है अचानक कुछ भी नहीं हुआ. श कुछ भी अचानक नहीं होता. गांव-गांव, शहर-शहर जो रामिशि और रथयात्राएं पिछले दिनों निकलीं, वे क्या अपने पीछे कुछ है नहीं गई थीं? अयोध्या की उस सैकड़ों बरस पुरानी इमारत झगड़ा कुछ लोगों ने क्या चला दिया कि पूराने शहर की उसी में, जहां हम पहले रहते थे और जहां छतों पर लडिकयां रंगीन है बदला करती थीं, वहां धीरे-धीरे दुपट्टों की जगह हरे और परचम लहराने लगे, एक दूसरे से ऊपर, और ऊपर उठने की हैं करने लगे.

जब दुपट्टे परचम बन जाएं, तब उन्हें ढकने वाली छातियी दूध फर्क हो जाता होगा. धमनियों में दौड़ने वाले लहू का अलग-अलग हो जाता होगा, नहीं तो लोग क्यों पूछते

ज्यादा मारे लेकिन य क्या था? के हो गया. मे बताइए, आ घर लौट मिला क्या? से ही चीखत मैंने आप किमी के रा बातें क्या, ब होता है औ बच्चे का जि पिता बुद्ध व बच्चों के भ लगता है जि

> की जरूरत इन दिन होने लगे हैं

जाएगा, उस

वाषा?

मैं क्या उसका ध्यान नेकिन वह बाता है " जब पानी ब की छुपे थे?

रा चेह होते ह या जुलाई-के बाद मुवा में बच्चे की बोदलों ने वि Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and

ज्यादा मारे गए, हिंदू या मुसलमान?" विका यह तो कोई नहीं बता रहा कि जो मारे गए उनका दोष बा था? कोई यही बता दे कि वह ठेलेवाला कहा गया, एक महीना हो गया. भेरा बेटा स्कूल जाते हुए अब भी पूछता है, "पापा, बताइए, आज ठेलेवाला दोस्त मिलेगा?"

घर लौटते ही पत्नी चाय का कप थमाते हुए पूछती है—'आज मिला क्या?' अरे, मिलता तो मैं खुद ही न बता देता! बल्कि बाहर के ही चीबता—'सुनती हो, आज वह मिला था रास्ते में!' रोज ही अंबें उसे तलाशती हैं. लगता है कि बस, अब दिख ही जाएंगे.

ं....अरे नह मैंने आपको बताया या नहीं कि घर और स्कूल के बीच सात किमी के रास्ते में हम पिता-पुत्र में तरह-तरह की बातें होती हैं. समय से ह बतें क्या, बस सवाल-जवाब होते हैं, जिसमें मुख्य प्रश्नकर्ता बेटा ही ते ही उन्हें होता है और मैं जवाब देने में अपने को अक्सर असहाय पाता हूं. इस जुलूस बन्ते का जिज्ञासु मन एक-से-एक सवाल करता है और पढ़ा-लिखा पिता बुद्धू सावित होता है. हमें सब कुछ सिखाया जाता है पर नकाल दि बन्दों के भोले सवालों का जवाब देना नहीं सिखाया जाता. मुझे लगता है जिस दिन दुनिया को बच्चों के सवालों का जवाब देना आ जाएगा, उस दिन मुझे या किसी को भी आपका इतना समय लेने की जरूरत नहीं रह जाएगी.

इन दिनों मेरे वेटे के ज्यादातर सवाल ठेलेवाले दोस्त के बारे में होने लगे हैं. ऐसे सवाल पूछता है कि मैं अक्सर झुंझला पडता रोककर हम बरसाती पहन ही रहे थे कि बेटा सड़क के उस पार देखकर हाथ हिलाने लगा.

"पापा, वो देखो जरा...देखो तो!"

मैंने देखा तो देखता रह गया. ठेलेवाले पिता-पुत्र वहीं पास ही सड़क किनारे ठेला रोककर उसी के नीचे दुबके हुए थे. पिता पानी के छीटों से खुद भीगता हुआ लड़के को बचाने की कोशिश में लगा था लेकिन चंचल लड़का बार-बार भीगने की हद में आ जाता. हम आगे बढ़ गए थे और वे पानी थमने के इंतजार में उसी तरह ठेले के नीचे छुपे रहे.

''उनके पास रेनकोट नहीं था?'' बेटे ने पूछा.

''नहीं होगा बेटे.''

"तो खरीदकर रखना चाहिए न, जैसे हमारे पास है."

"उनके पास इतने पैसे नहीं होंगे."

"क्यों नहीं होंगे पापा?"

"ही तो इसकी खराब आदत है. पूछता ही चला जाता है, क्या, क्यों, कैसे? इतना तो रोजाना देखते-देखते मैं समझ गया हूं कि वह बहुत गरीब आदमी है और किसी तरह बच्चे को पढ़ा रहा है. इस साहस के लिए मैं मन ही मन उसका प्रशंसक हूं. एक वजह यह भी है कि वे मेरे मन में छाए रहते हैं.

जिस ठेले पर वह बच्चे को स्कूल पहुंचाता था, वही उसकी

रोजी है. जहां तक मैं समझ पाया हं, वह बच्चे को स्कूल छोड़कर मंडी जाता होगा और वहां से सब्जी या लैया-चना-मूंगफली या ऐसी ही चीजें खरीदकर दिन भर बेचा करता होगा. ठेले पर छपे नगर महापालिका के नंबर की पीली स्याही अक्सर चमक जाती थी. तेज-तेज चलते हुए उसके ढीले पाजामे की गहरी जेब में झूलते सिक्कों का वजन और खनक भी इसी बात की ओर इशारा करती है. बच्चों को स्कूल से वापस लाते समय हमारी-उसकी भेंट कभी नहीं हुई. या तो उसके लड़के का स्कूल आगे-पीछे छूटता होगा या फिर वह स्कूल के बाद बच्चे को अपने ही साथ रखता होगा.

जो आदमी बरसते पानी में भीगने से बचने के लिए ठेले के नीचे छुपकर भी बच्चे को स्कूल पहुंचाया करता था, वही इतना लापरवाह तो हरगिज नहीं लगता. जरूर

कहीं कुछ गड़बड़ हुआ है. कभी-कभी मन में आता है उसकी खोज-खबर लूं. लेकिन न तो उसके बच्चे का स्कूल मुझे मालूम है और न उसका पता-ठिकाना. बच्चे की यूनिफॉर्म जरूर याद है. यदि उससे स्कूल का पता लग भी जाए तो वहां पूछूंगा क्या? नाम वगैरह कुछ भी तो मालूम नहीं. कभी एक शब्द बातचीत तक नहीं हुई. आखिर उसका पता कैसे चले?

मुश्किल ही है.

सच बताऊं आपको, अब मुझे उसके मिलने की उम्मीद भी नहीं है. बेटे के सवालों में भी शंका झलकने लगी है. पत्नी भी जब कभी पूछती है तो ऐसे कि जवाब पहले से ही जानती हो - 'आज भी नहीं मिला होगा ना.'

और मुझे जवाब देने की जरूरत नहीं



नहीं किस शुरू हो ग -वहां अना गया, ा तहां देर

ारे प्रदेश

री भाषा

ाप जानते

फी हवा र

लमान, उ

लिए ही।

उर्दू को भ

लोगों में ही जाती अचानक हुआ. श रामिशि ोछे कुछ ह इमारत की उस

गं रंगीन हैं रे और भ उठने की हैं छातियो

लहू का व पूछते—"व

ित्या है?, 'कहीं उसका ठेला तो नहीं टूट गया, मैं क्या जवाब दूं? बच्चे को टालने की, असका ध्यान बंटाने की कोशिश करता हूं. विका वह ठेलेवाले दोस्त की स्मृतियों में डूब जाता है, "पापा, उस दिन की बात याद है, वि पानी बरस रहा था...वे अपने ठेले के नीचे

रा चेहरा भी उस दिन की स्मृति ताजा होते ही बिल उठा. कैसा जीवंत दृश्य षा जुलाई-अगस्त के दिन थे. रात भर बारिश के बेदि मुबह आकाश कुछ यम गया था और मैं वेष्ये को स्कूल छोड़ने जा रहा था. अचानक बादकों के स्कूल छोड़ने जा रहा था. अचानक शेदलों ने फिर बरसना शुरू कर दिया. स्कूटर

एक रोज स्कूल जातें हुए मेरे बेटे ने अचानक अप्रत्याशित सवाल दाग दिया. तभी मेरा माथा ठनका कि हिंदू और मुसलमान की बात बच्चे के दिमाग में आबिर आई कैसे?

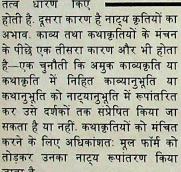
नाटक

#### आत्मालाप

#### रंगमंच के आलोक में अकेलापन

"थाकृतियों का नाट्य रूपांतर न के करके मंचन करने का आम

है. चलन रहा आधनिक भारतीय रंगमंच, खासकर हिंदी रंगमंच के संदर्भ में इसके दो कारण हैं-पहला तो यही कि प्रत्येक कला विधा अपनी अंतर्वस्त् में नाटकीयता का तत्व धारण किए



'तीन एकांत' में निर्मल वर्मा की उन तीन कहानियों -धूप का टुकड़ा, डेढ़ इंच ऊपर, वीकएंड-का नाट्य रूप संकलित है जिनका मंचन 1975 में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के स्ट्डियो थिएटर में किया गया था. इस प्रस्तुति की विशेषता यह थी कि उक्त तीनों कहानियों को पारंपरिक रूप में नाट्यांतरित नहीं किया गया था बल्कि कहानी के अपने मूल फॉर्म में निहित कथ्य, शब्द और दृश्य को ही नाट्यानुकूल बनाया गया था, ताकि कहानी की आत्मांतिक फॉर्म और लय को अक्षुण्ण रखा जा सके.

निर्मल वर्मा का कथाणिल्प अपने ढंग का विशिष्ट है. अत: उनकी कहानियों को परंपरागत ढंग से नाट्यांतरित किया ही नहीं जा सकता, खासकर 'तीन एकांत' में संकलित तीनों कहानियों को क्योंकि ये तीनों कहानियां अपने मूल रूप में 'मोनोलॉग' हैं. अतः इस कृति की विशिष्टता के दो पहलू हमारे सामने उभरकर आते हैं-पहला तो यह कि विवेच्य कहानियों के मूल फॉर्म को न तोड़ते हुए उनकी नाट्य प्रस्तुति की चुनौतों का स्वीकार, दूसरे, तीन कहानियों

को एक ही नाट्यानुभव में पिरोकर तीनों की एक रचनाकृति के रूप में एक साथ प्रस्तुति.

तीन एकांत

निर्मल वर्मा

नई दिल्ली

कीमत: 35 रु.

राजकमल प्रकाशन,

नाटक

तीन एकान्त

स्मृति, अकेलांपन और आत्मालाप निर्मल की कथानुभूति के तीन प्रमुख संघटक तत्व हैं. 'तीन एकांत' की कहानियों में भी इनकी प्रमुखता मिलती है. इन तीनों कहानियों की पृष्ठभूमि की है. संबंधो पश्चिम

> परिणामस्वरूप बच्चो पर पडने वाले दबावों का चित्रण भी निर्मल वर्मा ने बहुत ही सांप्रक्ति के साथ किया है. 'वीकएंड' कहानी में इन दबावों का एहसास हमें होता है. जाहिर है इन सब

तथ्यों के मद्देनजर 'तीन एकांत' के निर्देशकों और अभिनेताओं से निर्देशन और अभिनय की गहरी समझ के अलावा निर्मल की कथानुभूति से भी गंभीर सरोकार की अपेक्षा की जाती है. तभी 'तीन एकांत' का अकेलापन रंगमंच पर आलोकित हो सकता है. -- प्रेम सिंह

आकस्मिकता और

हुएँ इस पुरुषार्थ के क्रम में भाषा के जन्म की एक विवेचना की कोशिश की गई है. भाषा और कवि-भाषा में भेद करते हए अंस्ट फिशर कवि की भाषा को जादुई बताते हैं. आदिम कला भी ऐसा ही एक जादूई उपकरण थी, यह तथ्य वे निरूपित

'कला और पूंजीवाद' अध्याय में पूंजीवाद के भीतरी अंतर्विरोधों पर विशद फिशर करते हुए अस्ट स्वच्छंदतावाद तथा कलावाद की चीर-फाड करते हैं. प्रभाववाद, प्रकृतवाद एवं रहस्यवाद की मीमांसा करते हुए वे इन सवको एक विखंडित कला-मानस की 'सांकल्य' की चाह को इनका प्रेरक बताते हैं. यहीं 'एलियनेशन' की अवधारणा का प्रसंग आ जाता है. जेनौक, काफ्का, मूजील, उलरिश आदि चिंतकों के उद्धरणो द्वारा वे स्पष्ट करते हैं कि पूंजीवादी शासनतंत्र व्यक्ति को अपराधी और शासक को सजा देने वाला अधिकारी मानकर चलता है. इसीलिए उसमें व्यक्ति स्वयं को शक्तिहीन अनुभव करता है. संपूर्ण 'एलियनेशन' नाशवाद को जन्म

अनंत भिन्नताओं वाले यथार्थ से करने-कराने वाली एकाकार कलाभिव्यक्ति में दिविधता और लगातार नयापन अनिवार्य है, यह वे प्रतिपादित करते हैं. 'अंतर्वस्तु और रूप' में वे अति परिचित मार्क्सवादी तर्कों का फैलाव करते हैं. आनुवंशिकता और रूपांतर के भेद को बताते हुए समाजवादी रूपांतर पर बल देते हैं. अंतिम अध्याय 'यथार्थ का लोप और उसकी खोज' में वे औसत कलाकारो की बड़ी संख्या समाज के मनोरंजन के लिए जरूरी मानते हैं, वहीं मौलिक

> नवोन्मेष को साथ-साथ प्रोत्साहित करने की मांग करते हैं. एक आशावादी काव्यात्मक टिप्पणी के साथ पुस्तक का अंत होता है.

मार्क्सवाद के प्रति प्रगाढ़ श्रद्धा रखने वाले अनेक बौद्धिकों

के लिए पुस्तक विशेषतः उपयोगी हैं अनुवाद अच्छा है. लेकिन उद्धृत अंगी तथा प्रतिभाओं के बारे में संक्षिप्त टिप्पणियों वाला परिशिष्ट आवश्यक था. तब वह कुछ और हिंदी पाठकों के काम का हो जाता. यूरोपीय अवधारणाओं की सार्वभौम तथा न मानने वालों के लिए पुस्तक व्यर्थ-सी है.

## यूरोपीय दृष्टि

#### श्रद्धालु मार्क्सवाद का कला-चितन

अस्टाफशर नशहूर ...... थे. प्रस्तुत लेखक एवं कला-चितक थे. प्रस्तुत 'र्स्ट फिशर मशहूर मार्क्सवादी कवि,

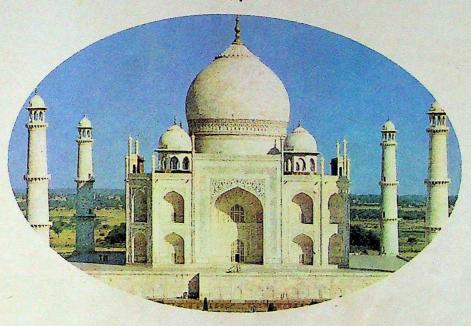
पुस्तक 'कला की जरूरत' उनकी कला-चितन पर पहली किताब "द नेसेसिटी ऑफ आर्ट'' अनुवाद है. किताब मूलतः जर्मन में है. हिंदी अनुवाद अंग्रेजी अनुवाद के आधार पर किया गया है.

यह पुस्तक इतिहास की विशिष्ट यूरोपीय अवधारणा को सार्वभौम तथ्य मानकर लिखी गई है 'कला के उद्गम' शीर्षक दूसरे अध्याय में उपकरणों के प्रारंभिक खोजों वाले दौर के मनुष्य की अंतश्चेतना का एक काल्पनिक विश्लेषण है. अधिकाधिक उपयोगी उपकरणों की खोज मानवीय स्वभाव है यह याद करते



उपाध्याय राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली कीमत: 150 रु.

# एक गौरवपूर्ण परम्परा



१९८५ में निप्पन डेन्रो इस्पात ने देश में प्रथमवार पतली गॅल्वनाइज्ड् स्टील शीट्स के निर्माण की शुरुआत की और प्रारम्भ से ही हर क्षेत्र में उत्कृष्टता ही हमारी परम्परा रही है—हमारे निर्माण कार्य में, अनुसंधान व विकास में, ग्राहक सेवा में एवं निवेणकों के प्रति हमारी निष्ठा में। निरंतर विकास और उन्नति के फलस्वरूप

के जन्म

गई है. रते हुए जादुई ही एक

ाय में विशद फिशर चीर-ाद एवं वे इन

ास की ज्ञानती एणा का काफ्का, उद्धरणों जीवादी ों और धिकारी व्यक्ति रता है,

ार्थ से वाली नगातार

तपादित

वे अति

व करते

भेद को

गर बल

ना लोप

लाकारो

जन के

मौलिक

त्साहित ग करते

शावादी टिप्पणी तक का

के प्रति

रखने बौद्धिकों

ोगी है

त अंशो

संक्षिप्त

पक था.

के काम

ाओं को

के लिए

पी.बी.सी./कलर कोटिंग लाईन की एक झलक

आज हम निजी क्षेत्र में देश के फ्लैट स्टील निर्माताओं में वृहत्तम् माने जाते हैं। हमारी सफलताओं का अवलोकन— भारत की सर्वप्रथम थिन गेज जी पी/जी सी शीट प्लांट—अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के डी डी/ई/डी डी कोल्ड रोल्ड स्टील शीट्स के



भारत की पहली ६ हाई कोल्ड रोलिंग मिल

निर्माण हेतु जापान की हिताची के सहयोग से बनी भारत की प्रथम ६ हाई कोल्ड रोलिंग मिल—भारत में पी.वी.सी./कलर कोटेड स्टील शीट्स के प्रथम निर्माता।

इन सफलताओं से प्रेरित, निप्पन डेन्रो इस्पात अब ६२४ करोड़ रु. लागत से— भारत की सबसे बड़ी १० लाख टन प्रति
वर्ष क्षमता वाली गैस आधारित स्पंज
आयरन् परियोजना, बम्बई के निकट
रायगढ़ जिले में स्थापित करने जा रही
है। एक परियोजना—बहुमुखी
विशेषताएं।

हमारे सफलता के इतिहास में एक नये अध्याय की शुरुआत।



निप्पन डेन्रो इस्पात लिमिटेड 'पार्क प्लाजा', ७१ पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता ७०० ०१६ प्रगति की मजबूत आधारशिला

PRESSMAN

#### दिल दुखा दिया

साबिया की याद है आपको? वहीं जिसने एक बार राजेण लन्ना पर आरोप लगाया था कि उन्होंने उसके साथ ज्यादती करने की कोशिंग की.

अब इस सलोनी, छरहरी साबिया की ठन गई है महामिलनसार और 'महाभारत' से महाप्रसिद्धि पाई द्रौपदी बाई से. साबिया की चर्चा जिन दिनों गरम थी तब एक फिल्म शुरू हुई थी जिसके रोल से साबिया को अपनी किस्मत का पांसा पलट जाने की उम्मीद थी. लेकिन किसी वजह से वह फिल्म बंद हो गई. उस फिल्म के हीरो को भी फिल्म से बड़ी आशाएं थीं. इसलिए वह जा पहुंचा एक दूसरे नामी प्रोड्यूसर के पास और उसे इसी कहानी पर फिल्म बनाने के लिए राजी कर लिया. इस बीच साबिया का नाम ठंडा पड़ चुका था और रूपा गांगुली द्रौपदी बन छा चुकी थीं. अतः उस हीरो ने साबिया को भूल रूपा को साइन करवा दिया और फिल्म फटाफट बन भी गई.

साबिया का कहना है, "एक लड़की भी दूसरी का दिल इस तरह दुखा सकती है यह मैंने सोचा भी न था. अरे, रूपा मुझसे एक बार पूछ तो लेती कि तुम्हारा बाला रोल मैं ले लूं तो क्या मैं मना कर देती?"



साबियाः द्रौपवी से साबका

#### दो से तीन हुआ चाहती हैं

जुहू के उस होटल सेंट्र से, जिसमें अमिताम बच्चन नई वीडियो मैगजीन का उब्घाटन करने आने वाले थे, करहा का घर यानी ससुराल, कितनी दूर है मला? मुक्किल से एक फलाँग. उब्घाटन समारोह के निमंत्रणपत्र में उब्घाटन का समय लिखा था ठीक साढ़े आठ बजे, रात. अब चूंकि अमिताम बच्चन समय के बड़े पाबंद माने जाते हैं, सभी लोग सवा आठ बजते-बजते आ पहुंचे. इन्हीं में थे करहापित विंडू, पहलवान

बारा सिंह के गैर पहलबान पुत्र. मिलते ही उन्होंने कहा, "अमिताम साढ़े आठ बजे आ जाएंगे वरना मैं जाकर अपनी पत्नी फरहा को भी ले आता."

बिना किसी प्रसंग के दिया गया यह बयान कई वहम पैदा कर गया—फरहा विंडू के साथ ही क्यों नहीं आई?

अमिताम साढ़े आठ बजे नहीं आए. सुना, सवा नौ पर आएंगे. विंडू बोस्सों के दूसरे बायरे में खड़े कह रहे थे, "अमिताम बड़े पंक्चुअल हैं, बरना मैं जाकर अपनी पत्नी को ले आता..." अमिताम सवा नौ पर भी नहीं आए. पौने बस बजे बताया गया, अमिताम को आते-आते सवा बस बजेंगे. विंडू अगले मुंड को बताने लगे, 'मैं जाकर....'

अमिताम के आने तक पूरी पार्टी को पता चल गया कि विंदू फरहा को पार्टी में लाना चाहते हैं. लेकिन यह सवाल हर किसी के मन में घर कर गया कि फरहा आई क्यों नहीं?

लोगों ने जो इससे निष्कर्ष निकाला, और वह गलत भी नहीं था, कि जो बात बिंदू सारे जग को जता देना बाहते हैं फरहा वही सबसे छिपाना बाहती हैं. यानी, दो से तीन होने की तैयारी?

फरहा: मेहमान का इंतजार

#### तान और तानेबाजी

मुलक्षणा पंडित भी उस पार्टी में का पहुंची थीं. यहां वे आई थीं गायिक होने के नाते लेकिन अब सुलक्षण सजने-संवरने का मोह तो छोड़ नहें सकतीं. बस, बन गई उनकी खिचा की योजना डबिंग करने वाली एक मंगायिका को प्रेस रिपोर्टर बनाका भेजा गया.

'रिपोर्टर' ने पूछा, ''एक्टिंग के आपकी आदर्श अभिनेत्री कौन है की गायन में कौन?'' मुलक्षणा ने मा कहा, ''सुरैया जी.''

बस यही वह फंदा था जिसमें ज्यू फांसने की योजना थी. "गुणों की बहु तो मैं नहीं जानती", 'रिपोर्टर हे अपनी राय जाहिर की "लेकिन मरीत से जरूर अब आप मुरैया लगने लां हैं" इसके बाद महफिल में जो हंसी क फौवारा छूटा तो मुलक्षणा के सामने कोई चारा नहीं बचा.

कई बाण

हालांकि उ

कि सबसे

हासियत जग

मिलेंगे. पीछे

फिल्म में नर्ड

बात कहते हैं,

उनकी सिफार्ग

मियुन के सार

जोड़ियां टूट प

वावा किया थ को लाइन में

की गवाह जैर उपलक्ष्य में दी बुगी में है भा

सचमुच श

पड़ी उनके स

जिन विन

इस तानेब

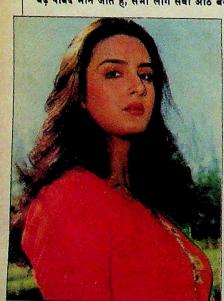
सुलक्षणाः बुरे फंसे



#### जोड़-तोड़ और मोड़

'पत्रकार पार्टी में पेन लेकर कें
कैमरामैन कैमरे के साथ प्रवेश न को
यह चेतावनी दी गई थी उस निर्मं
के साथ जो धर्मेंद्र की तरफ से 'धार्म की सिल्वर जुबली मनाने और हि फिल्म 'अजय' शुरू करने के उपका में जुहू के एक होटल में दी प्रवकारों की जेव में हाथ डालकर कें देखा गया कि उसमें क्या है, ब गनीमत रही, वरना कैमरे के हैं आए कैमरामैन तो बक्शे नहीं गए

लेकिन पार्टी की खासियत इसे कहा जा सकता. खासियत थी पार्टी की खासियत थी पार्टी की खासियत थी पार्टी की बीदेवी का आगमन क्योंकि थि काफी अरसे से श्रीदेवी सनी से बिं खिची चल रही थीं. इस बीव सनी साथ फिल्म करने के दो बड़े पूर्व भी श्री ने ठुकरा दिए थे. श्रीदेवी के रुख में आई तब्दीती



mai Foundation Chennai and eGangotri

लगने लो कई बाण झेल लेंगे

पार्टी में का

रीं गाविक

मुलक्ष

छोड़ न

की खिचा

ली एक न

र बनाक

'एक्टिंग

ीन है औ

णा ने म

जसमें उने

गों की बात रेपोर्टर' है

किन गरी

जो हंसी का

के सामने

ड

लेकर औ वेश न को

उस निमंग

ह से 'घाष

ने और

के उपस

में वी

डालकर व

ररे के ह

नहीं गए

यत इसे

थी पारी

रोंकि पि

नी से वि

बड़े प्रत

तब्दीली

या है।

मिठुन और शिल्पाः नाम से शिकायत नहीं

हालांकि उस पार्टी में सबसे ज्यावा खुश मिठुन चक्रवर्ती ही नजर आ रहे थे लेकिन यह भी सच है कि सबसे ज्यादा कटाक्ष भी उन्हीं को सहने पड़ रहे थे. फिल्मी उद्योग की पार्टियों की यह वासियत जगजाहिर है कि 'मुंह में राम बगल में छुरी.' मतलब यह कि सामने मिले तो सीधे गले ही मिलेंगे. पीछे मुडे तो तानेबाजी शुरू.

इस तानेबाजी की वजह थी वह अभियान जो मिठुन ने पिछले साल से गुरू कर रखा है- "नई फिल्म में नई हीरोइन हो, हमें कोई फर्क नहीं पड़ता...करो साइन." मिठुन सबको मौका देने की

गत कहते हैं, दूसरे कहते हैं "...खुद को इस जमाने का शम्मी कपूर समझता है."

जिन दिनों शिल्पा शिरोडकर को कोई हीरोइन लेने को तैयार नहीं था, मिठून ने हर जगह उनकी सिफारिश की. अब शायव यह जिक्र करना मुनासिब न होगा कि इन विनों फिल्म इंडस्ट्री में मियुन के साथ जोड़ देने वाली बालिकाओं का अकाल-सा हो गया है. या यूं कहिए कि अब पुरानी बोदियां टूट चुकी हैं. कहते हैं कि मिठुन ने शिल्या को छह महीने में 'कहा से कहा' पहुंचा देने का तवा किया था. लेकिन आज शिल्या कहां हैं? 'सेक्स बम बनने की कोशिश करने वाली लड़कियों नी लाइन में लड़ी हैं, तुरंत जवाब मिल जाएगा. इस पार्टी में शिल्पा भी मौजूब थीं और इस बयान की गवाह जैसी ही बनकर आई थीं. सो, यह जानते हुए मी कि पार्टी किसी और ने, किसी और उपलब्य में वी है, सौ लोगों ने सौ तरह से घुमा-फिराकर मिठुन से एक ही सवाल पूछा, "पार्टी किस वृगी में है मई? शिल्पा के साथ फिर कोई नई फिल्म साइन की है क्या?"

<sup>मजमुच</sup> राजाशी के काबिल हैं बंगाली बाबू, शिल्पा के नाम पर शिकायत की कोई शिकन नहीं

प्री उनके सांबले चेहरे पर.



श्रीवेवी और सनीः हठ छोड़ वी

कारण बताई जाती है निर्माता सुधाकर बोकाडे की वह फिल्म, जिसके निर्देशन की जिम्मेदारी दिलीप कुमार स्वीकार कर चुके हैं. उन्होंने इस फिल्म में हीरो लिया है सनी को और अब अनिल कपूर हैरान हैं कि हर मंच से दिलीप क्मार का भरपूर गुणगान करने के बावजूद दिलीपजी ने उन्हीं को कैसे

सनी की प्रतिष्ठा में हुई इस वृद्धि को नजरअंदाज कर जाएं, इतनी नादान नहीं हैं श्रीदेवी. तभी तो पिछले प्रस्तावों की ना को हां में बदलवाने के 'फीलर' भिजवाने की जुगत उन्होंने इसी पार्टी में जोड़, सनी के साथ नई हीरोइन लिए जाने की कोशिशें तोड़, सारी हठधर्मी छोड़, अपने धीमे चल रहे कैरियर को नया मोड़ देने में

सफलता पा ली है.

#### पटाखे के जवाब में 'बम'

जबसे राजेण खन्ना ने कांग्रेस के 'हाय' मजबूत करने के लिए एक्टिंग छोड़ देने का फैसला सूनाया, जनता दल में तभी से हलचल मची हुई थी. लेकिन जिस तरह फिल्म उद्योग में रोज नया धमाका करने के शौकीनों की कमी नहीं है, पार्टी पॉलिटिक्स के पीआरओ भी पटाले का जवाब बम से देने में पीछे नहीं रहते . राजेश खन्ना एक चुके हुए पटासे से ज्यादा कुछ रहे नहीं, यह जानते हुए भी कांग्रेस की इस पैंतरेबाजी के जवाब में जनता दल ने बम चला दिया- सेक्स बम, आशा सचवेब. उद्योगपतियों के साथ आशा के जिस तरह के निकट संबंध हैं उनका फायदा उठा, पार्टी राजनेताओं और उद्योगपतियों के बीच



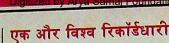
आशाः संबंधों का फायबा

उन्हें पुल बनाना चाहती है. आशा को इसी आशा में पार्टी की सक्रिय सदस्यता में ले लिए जाने की चर्चा इधर जोरों पर है.

"लेकिन जनता दल तो दो हिस्सों में बंट चुका है. किस हिस्से के साथ हैं आप?'' उनकी सदस्यता की खबर सुनने के बाद उनसे पूछा.

'दो हिस्से!' अपनी बड़ी-बड़ी आंखों को थोड़ी और बड़ी करके पूछा उन्होंने, "मुझे तो इस बारे में कुछ बताया नहीं गया." फिर पूरी तरह भोली बन उन्होंने पूछा, "किस हिस्से के साथ रहना बेहतर होगा?" शायद उनका इरादा हमें अपना विश्वासपात्र बनाने का था. ताकि चारों ओर चल रही चर्चाओं में कुछ सकारात्मक पक्ष जुड़ जाए.

अब ऐसी सैक्सी सुंदरी को, जिसके आकर्षक इतिहास भूगोल को देखकर ही पार्टी उस पर ललचाई होगी, क्या यह बताने की जरूरत थी कि उन पर जो ठप्पा लगा है 'एस', वही उसके लिए सबसे उपयुक्त है?



● लगता है, गिनीज बुक ऑफ रिकॉईस बालों को जल्द ही भारतीयों के लिए एक अलग खंड बनाना पड़ेगा. इस प्रतिष्ठित किताब में जुड़ने वाला नया नाम है— विशाखापत्तनम की 22 वर्षीया कोल्लुर लक्ष्मी नारायणम्मा का जिन्होंने लगातार 26 घंटे भगवद् गीता के श्लोक लिखकर इसमें नाम दर्ज करवाया. महत्वपूर्ण बात यह है कि श्लोक उन्होंने ब्रेल लिपि में लिखे. इसकी वजह यह है कि लक्ष्मी दृष्टिहीन हैं. लुई ब्रेल के 192वें जन्मदिन पर उनकी यह उपलब्धि उल्लेखनीय है. बहरहाल, लक्ष्मी यहीं रुकने



कोल्लुर लक्ष्मी नारायणम्माः नया रिकॉर्ड

वाली नहीं हैं. उनकी योजना इस साल मार्च तक पूरी भगवद् गीता बेल में लिखने की भी है. यदि ऐसी कुछ और किताबें हों और ऐसी कोशिशें कुछ और लोग भी करें तो "न देख सकने वालों को कोई अंधा नहीं कह सकेगा" क्योंकि निश्चय ही यह भी तो एक तरह की दृष्टि ही है.

टॉमः यादें बचपन की

#### पूरी हुई तलाश

- (ann

 आखिरकार तलाण पूरी हुई. 53 वर्षीय ब्रिटिश लेखक टॉम स्टोपर्ड ने अपने ही नाटक 'इन द नेटिव स्टेट' पर आधारित फिल्म की मूटिंग की लोकेमन की तलाग में दार्जिलिंग का तूफानी दौरा 'स्टूअन यहीं उन्हें लॉज' मिला, जहां वे बचपन में रहा करते थे. भारत उनके जेहन में तभी बस गया था जब वे 'रिणया हाउस' की पटकथा लिख रहे थे या 'रोसनक्रेट्ज ऐंड गिल्डर्नस्टर्न' पर काम कर रहे थे. मद्रास फिल्म समारोह में शामिल होने आए टॉम कहते हैं, "अगर मुझे निमंत्रण न भी भेजा जाता, तब भी मैं यहां जरूर आता."

#### ठुकराया हुआ उपहार

 इस फव्वारे में लोग सिक्का नहीं उछालेंगे. कलकत्ता निवासियों को शहर के बिजली आपूर्ति निगम का यह नवीनतम् उपहार रंग-बिरंगी रोशनियों के साथ-साथ असंतोष की लहरें भी बिखेर रहा संगीतमय फव्वारे की स्थापना में १ महत्वपूर्ण मूमिका निमाने वाले राम प्रसाव गोयनका कहते हैं कि इसे चलाने के लिए 100 गीजरों जितनी ही ऊर्जा चाहिए. लेकिन लोग हैं कि इस बलील पर यकीन ही नहीं करते. हालांकि राज्य के उपमोक्ता आयोग से मिले स्थगन आदेश के बावजूद निगम का उत्साह मंद नहीं हुआ है. मैसूर के वृंदावन गार्डन की प्रेरणा पर बना यह फव्वारा सिनेमा प्रेमियों को जरूर लुमाएगा.

#### दिग्गजों की श्रेणी में

मधुर कपूर अब अमर चित्रकारों की श्रेणी में आने वाले हैं. उनके बेहद यथार्थवादी चित्र 'तंजाबुर प्रीस्ट' को हांगकांग में पिकासो, गैगाल, हुफी और हैनरी मूर की कृतियों के अलावा 40 दूसरे जीवित दिग्गज चित्रकारों के चित्रों के साथ नीलामी के लिए रखा गया है. राजकुमार फिलिप की अध्यक्षता वाला विश्व वन्य जीवन कोष पर्यावरण की रक्षार्थ चंदा जुटाने के लिए ही इन महान चित्रकारों के चित्रों की नीलामी कर रहा



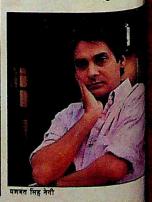
है. इस सम्मान से उल्लिसित कपूर कहते हैं, "पर्यावरण की तबाही के अपराधी तो हम हैं ही." उनकी खुशी बाजिब है क्योंकि उनके 'प्रीस्ट' की कीमत 45,000 डॉलर (8,10,000 रुपए) से लेकर 70,000 डॉलर (12,80,000 रुपए) के बीच आंकी गई है.

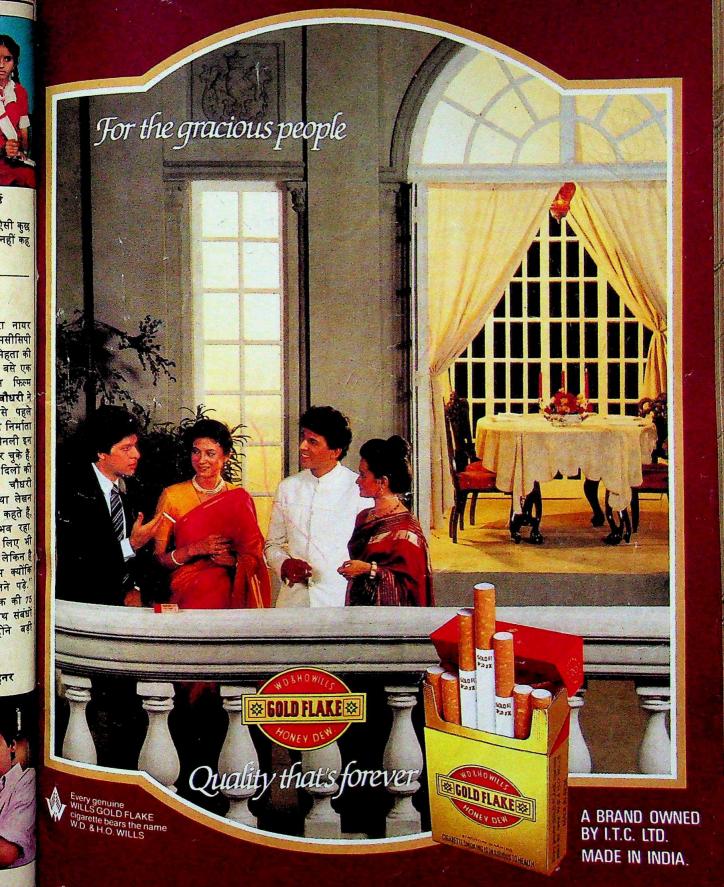
> कपूर (बाएं); और तंजावुर प्रीस्ट'

#### दोहरी महारत

 पहले आया, मीरा नायर का नवीनतम 'सलाम: मिसीसिपी मसाला' और अब दीपा मेहता की 'सैम ऐंड मी'. कनाडा में बसे एक भारतीय पर बनी इस फिल्म में प्रमुख भूमिका रंजीत चौधरी ने निभाई है. चौधरी इससे पहले उत्तरी अमेरिका के फिल्म निर्माता बैरी ब्राउन की फिल्म 'लोनली इन अमेरिका' में भी काम कर चुके हैं बिखरे बालों से लोगों के दिलों की धड़कन बढ़ाने वाले चौधरी अभिनय ही नहीं, पटकथा लेखन में भी दखल रखते हैं. वे कहते हैं "यह बहुत बढ़िया अनुभव रहा मुझे लगा कि मैं अपने लिए भी भूमिका लिख सकता हूं. लेकिन है यह बहुत मुश्किल काम क्योंक मुझे तेजी से रूप बदलने पड़े. 25 वर्षीय भारतीय युवक की 75 वर्षीय यहूदी वृद्ध के साथ संबंधी की भूमिका को उन्होंने बड़ी कुशलता से निभाया है.

चौधरीः अनोखा हुनर

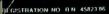




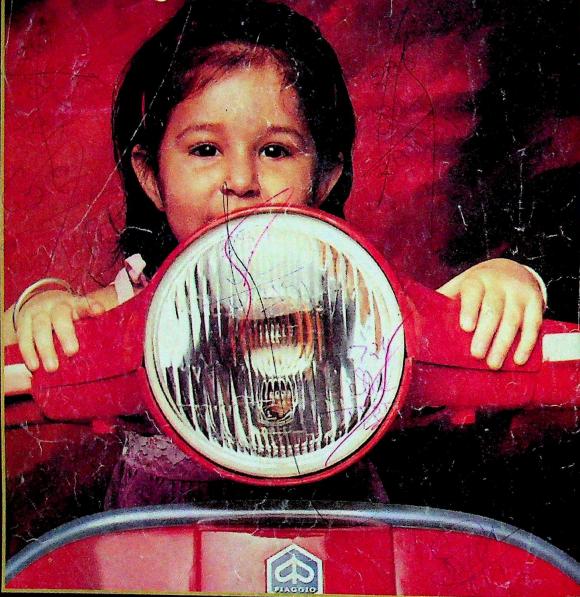
CLARION C-GFK-16R2

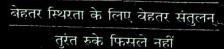
नर

STATUTORY WARNING: CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH









ख़तरनाक स्थितियों से निकाल ले जाने के लिए शक्तिशाली इंजन

आगे तथा पीछे दिशासूचक इंडिकेटर

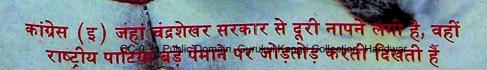
vespa

बेहतर सुरक्षा. बेहतर डिज़ाइन.





# रिश्तां में दरार





ELECTED CLEIN

रिश्तों में

पंडता जा घोषणाओं अपनी दूरी

कर चुनाव

बदलेगा

सामने आ आंखों देखीं

'इंडिया टु

ही इस युद्ध बास रपट

वर्जनाएं नई दि पर हुए प यह विषय गया. इस

विशेषज्ञों

का खुलास

रहन-सहन

# Rothmans



# WORLD LEADER

THE BEST TOBACCO MONEY CAN BUY

Made in India under licence by Godfrey Phillips (India) Ltd. Rs.20/- PER PACK Inclusive of all taxes

Statutory Warning: Cigarette smoking is injurious to health



#### रिश्तों में दरार

चंद्रशेखर सरकार का अस्तित्व खतरे में पडता जा रहा है. जैसा कि हाल की बोपणाओं से जाहिर है, इंका जद (स) से अपनी दूरी बढ़ाती जा रही है. वह खुद सरकार बनाने की तमाम संभावनाएं तलाश कर चुनाव टालने की तैयारी में दिखती है.

आवरण कथा .....14



#### शर्मनाक कार्रवाई

जनता दल शासन के दौर में चंद्रशेखर के फोन टैपिंग के आरोप की सीबीआई ने जांच की. उसकी रिपोर्ट में राजीव गांधी और इंदिरा गांधी की अगुआई वाली इंका सरकारों द्वारा फोन टैप करने के लिए जारी आदेशों का चौंकाने वाला विवरण है.

खास रपट.....30



#### बदलेगा सियाशी नक्शा

बाड़ी युद्ध से तबाही के भयावह रूप सामने आ रहे हैं. इराक में हुए विनाश की आं तो देखी जानकारी हासिल करने के लिए इंडिया टुडे' ने वहां से निकल सकने में कामयाब रहे कुछ भारतीयों से बात की. साथ ही इस युद्ध के दूरगामी प्रभावों का विश्लेषण.

बास रपट......50



#### खून बोलेगा सिर चढ़कर

उत्तर प्रदेश की कुंडा तहसील में कथित पुलिस मुठभेड़ में 13 हरिजनों और पिछड़ों की मौत से सियासी बवंडर उठ खड़ा हुआ है. पुलिसिया कहानी कई संयोगों से भरी पड़ी है. विपक्षी दल इसे मुलायम सिंह यादव सरकार पर हमले के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं.

पड़ताल ......78



## वर्जनाएं तोड़ने की कोशिश

नई दिल्ली में पिछले पखवाड़े चरम सुख पर हुए पहले अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के बाद यह विषय वर्जनाओं के परदे से बाहर आ गया, इस सम्मेलन में दुनिया भर के यौन विभोषज्ञों ने इस विषय से जुड़ी कई भ्रांतियों का खुलासा किया.

रहन-सहन......81

alth



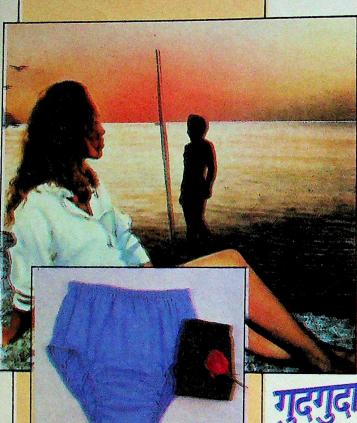
#### मिटा अपने-पराए का भेद

बच्चों को गोद लेने के साथ जुड़े सामाजिक पूर्वाग्रह अब ढीले पड़ते जा रहे हैं. यहां तक कि वे दंपती भी, जिनकी अपनी संतान है, पुराने पूर्वाग्रहों को छोड़कर रंग, लिंग और जाति का खयाल किए बिना बच्चों को गोद ले रहे हैं.

विशेष लेख......85

#### Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Garigour
कसोटी8
तेवर10
राजरंग11
हिंदोस्तां हमारा12
आवरण कथा
राष्ट्रीय राजनीतिः रिश्तों में दरार 14
बास रपट
अदनान साणोगीः
रौब जमाने की तिकड़में22
जद (स)-भाजपा-जदः
बाजी जीतने की जहोजहद 26
टेलीफोन टैपिंगः शर्मनाक कार्रवाई 30
आजकल
बिहारः टूट गर्ड मर्यादाएं 34
लखनकः भीषण धमाके35
उत्तर प्रदेश: भद्दा मजाक
महाराष्ट्रः बैर कायम41
मध्य प्रदेश: नींद से जागे41
पंजाब: फिर झटका 47
सास रपट
बाडी युद्धः
बदल सकता है सियासी नक्शा 50
राज्य-वर्षण 58
व्यापार चक्र
कारोबार
बिहार: ठेकों पर कब्जे की कला 69
तेल आयातः महंगा सौदा 72
शेयर वाजार74
पडताल
कुंडा कांड:
खून बोलेगा सिर चंढ़कर78
रहन सहन
यौन सम्मेलनः
वर्जनाएं तोड़ने की कोणिश81
विशेष लेख
गोद लेना:
मिटा अपने-पराए का भेद
आरपार93
कहानी96
किताबें 100
अंतरंग 101
परदे के उस पार102
र्चाचत चेहरे104



लिरिल अण्डरवियर, बनियान और लेडीज पेण्टीज का जवाब नहीं! लिरिल . . . यानी रेशमी कोमलता का वो ताज़गी भरा अहसास, जो आपको स्फूर्ति दे हर दिन . . . हर पल ।

लिरिल . . . आत्तरिक वस्त्रों की अतुलनीय श्रृंखला, जो आधुनिकतम मशीनों पर एक्सपोर्ट क्वालिटी के 100% कोम्ब्ड, गांठरहित धागों से बनाए जाते हैं . . .

कोमल स्पर्श का गुदगुदाता अहसास. . .

Lyril fester®

. Syustaut

- बनियान
- लेडीज पेण्टीज







ATUL PUBLICITY

लिरिल — कोपल अनुभूति , अंतर्राष्ट्रीय क्वालिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

'खतरना कथा, 15 फ दसरी जानव जी हों, इरा के प्रति निष अलीगड़ (उ

चिह्नियां

'जंग क बलंद इराद निहित स्वा झोंकने का उतना ही 3 भी. ईरान अमेरिका अ म्रादाबाद (

> ■ सहाम अनहोनी न भूमि पर व फिलस्तीन हो गए. 1 सरकार क की स्थापन पर हाथ ध क्यों? मीतामढ़ी (f

■ सहाम चाहे कितने उन्होंने अप में झोंक दि जुझारूपन अधिक होत की प्रासंगि पटना (बिहा

■ विडंड जिद और आग में झें हुछ और : जो इस : दुष्परिणाम मंडी धनौरा

■ आज लिए क्या दोषी नहीं यहदियों वं जन्म दिया 1962 并

अलग राग

### हैरानगी की बात

स्तरनाक अंजाम की ओर' (आवरण क्या, 15 फरवरी) में युद्ध के मोर्चे के अलावा दूसरी जानकारी भी मिली. युद्ध के नतीजे चाहे जो हों, इराकियों का जुझारूपन, देश और नेता के प्रति निष्ठा हैरान करने वाली है.

अलीगड़ (उ.प्र.)

हरिमोहन शर्मा

#### दोष दोनों का

'जंग का जुनून' (31 जनवरी) इराक के वृतंद इरादों से अवगत करा गया. दुनिया को निहित स्वार्थों के लिए युद्ध की विभीषिका में बोंकने का जितना उत्तरादायित्व इराक का है उतना ही अमेरिका और उसके मित्र राष्ट्रों का भी. ईरान से 'मैराथन युद्ध' लड़ चुके इराक को अमेरिका आसानी से नहीं रौंद सकेगा.

म्रादाबाद (उ.प्र)

नवीन रावत

 सहाम ने कुवैत पर कब्जा करके कोई अनहोनी नहीं की है. चीन भारत की कितनी भूमि पर कब्जा जमाए बैठा है. इज्याएल को फिलस्तीन पर कब्जा जमाए 23 से ज्यादा वर्ष हो गए. 1990 में अमेरिका ने पनामा की मरकार का तख्ता पलटकर कठपुतली सरकार की स्थापना की लेकिन तब संयुक्त राष्ट्र हाथ पर हाथ धरे बैठा रहा. अब इतना उतावलापन क्यों?

मीतामढ़ी (विहार)

अरुमेश कुमार

- सहाम हुसैन के व्यक्तित्व की विवेचना के चाहें कितने भी पहलू क्यों न हों, यह तय है कि उन्होंने अपने देशवासियों को एक प्रचंड ज्वाला में झोंक दिया है. युद्ध की तत्परता व्यक्तित्व के गुझारूपन की कम सनकी प्रवृत्ति की परिचायक अधिक होती है. सद्दाम और बुश ने तो राष्ट्रसंघ की प्राप्तिमिकता पर भी प्रक्तिचन्ह लगा दिया. पटना (बिहार) जयंत चक्रवर्ती
- विडंबना है कि सिर्फ दो व्यक्तियों की जिद और युद्धोन्मता ने सारे संसार को ऐसी शाग में झोंक दिया, जहां विनाश के अलावा कुछ और नजर नहीं आता. त्रासदी तो यह कि शो इस युद्ध में शामिल नहीं हैं उन्हें भी दुष्परिणाम भुगतने पड़ेंगे. मंडी धनौरा (उ.प्र.) संदीप सौरम
- आज इराक में जो युद्ध हो रहा है उसके लिए क्या अमेरिका सहित पश्चिमी देश भी दोषी नहीं हैं? इन्हीं देशों ने फिलस्तीन में यहिंदियों को बसा कर इज्जाएल की समस्या को जिस्स दिया तथा अपने स्वार्थ व फायदे के लिए 1962 में हराक से कुवैत को अलग कर उसे भेला राष्ट्र की संज्ञा दी. उन्हीं भूलों का



 इराकी नागरिक जंग के आदी हो चुके हैं. पर सद्दाम हुसैन को समझ लेना चाहिए कि मुकाबला 28 देशों की संयुक्त फौज से है.

पिथौरागढ़ (उ.प्र.) सैयद रईस अहमद

 सद्दाम हुसैन महज राष्ट्रपति बुश को हैसियत जताना चाहें लेकिन खोखले अहं के टकराव के कारण एक प्राचीन सभ्यता को भारी क्षति होगी.

रांची (बिहार)

संजय क्मार झा

वर्ष: 5, अंक 8, 16-28 फरवरी 1991

संपादकीय कार्यालय: लिविग मीडिया इंडिया सि . एफ-14/15, कनाट प्लेम, नई दिल्ली-110001. फोन 3315801-4. टेलस्सः 31-61245 INTO IN, तारः निवसीडिया, नई दिल्सी ● मुख्य सर्कुलेशन कार्यासयः इंडिया टुडे मर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14. कप्टिट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001 फोन 3313076-8. टेलेक्स 31-62634 INTO IN. तार मर्कुलेट. नई दिल्ली. • मुख्य विज्ञापन कार्यालय 26 ए. और बी. जॉली मेकर पैंबर-2. नरीमन पाइट, मुंबई-400021 फोन 2026152, 2029326. 2029435, देलेक्न 11-5373 THOM IN, सार लियमीडिया, मुंबई 🌘 क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालयः के-॥ कनाट सर्कम, नई दिल्ली 110001, फोन 3325378, 3323576, 3321323, 3321273 , देलेक्स: 31 62124 THOM IN. तार. लिवमीडिया, नई दिल्ली फागुन चैवर्स, 26 कमाडर-इन-चीफ रोड, मद्राम-600105 फीन 477188 देसेक्म 041-6177 INTO IN. तार लिवमीडिया, मदास • 74/1 सेंट मार्क्स रोड. बगलूर-560001. फोन 568448, 579037, 579089 टेनेक्स: 0845-2217 INTO IN, नार: निवमीडिया, बगनूर 🍨 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरगी रोड. कलकत्ता-700016 फोन 225398, 221922, देलेक्स 21-7138 INTO IN तार : निवदन-मीडिया कलकता. ● कांपीराइट 1984 निविय मीडिया इंडिया सि विश्व भर में मर्वाधिकार गुरक्षित किमी भी हुए में सामग्री की नवल प्रतिबंधित इंडिया दुंडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिस्मेदारी स्वीकार नहीं करना 🍨 लिविग मीडिया हड़िया लि. एफ-14. कपिटेट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुष पुरी हारा मपादित और प्रकाणित तथा थांमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित

भयंकर परिणाम आज सारे विश्व को भोगना पड रहा है.

पटना (बिहार)

वनिता सिन्हा

 ईरान के साथ आठ वर्ष लंबी जंग के बाद भी इराक का एक महाशक्ति से भिड़ने का जोश देख आश्चर्यचिकत हो जाना पड़ा. मधकर तिवारी जौनपुर (उ.प्र.)

#### तानाशाही का प्रतीक

'गला घोंटने की कोशिश' (31 जनवरी) ने झकझोर कर रख दिया. लोकतंत्र की आड़ में बढ़ती तानाशाही और दमन के घिनौने रवैए ने निष्पक्ष समाचार देने वालों का जीना दूभर कर दिया है. एक ओर नेता संचार माध्यमों की स्वायत्तता की बात करते हैं, दूसरी ओर प्रेस कर्मचारियों पर लाठी चार्ज कर और बिजली काट प्रेस वालों को आतंकित करते हैं. दरभंगा (बिहार)

- चौटाला पर 'खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे' वाली कहावत चरितार्थ होती नजर आ रही है. मूल्यमंत्री पद से वंचित होने के बाद वे प्रेस के खिलाफ गूंडागर्दी पर उतर आए हैं. अखिलेश श्रोत्रिय टंडला (उ.प्र.)
- सरकार की प्रेस के विरुद्ध बदले की भावना अक्षम्य अपराध है. लोकतंत्र में जनता को निष्पक्ष समाचार उपलब्ध कराना पत्र-पत्रिकाओं का मूल कर्तव्य है. सरकार की प्रेस का मुंह बंद करने की कोशिश जनता और लोकतंत्र का अपमान है. मुहम्मद अहसन सिद्दीकी दिल्ली.

#### बात कैसे बनेगी

विहिप और बीएमएसी की 'जबानी लड़ाई' (31 जनवरी) में दोनों संगठनों का अड़ियल रुख अपनाए रहना उन दो समांतर रेखाओं की तरह है, जो कभी भी मिलती प्रतीत नहीं होती. ऐसे में किसी सर्वमान्य फैसले की उम्मीद रखना हास्यास्पद ही है.

हरिद्वार (उ.प्र.)

ताराचंद गाडेगावलिया

#### आतंक की पराकाष्ठा

'अपनी बात' (31 जनवरी) के तहत हरियाणा सरकार के आतंक की पराकाष्ठा के बारे में पढ़ा. छापेखाने की बिजली काटना और लाठीचार्ज प्रेस की आजादी पर करारा प्रहार है. यह प्रकरण सोचने पर विवश करता है कि आतंकवादियों और लोक सेवक कहलाने वालों के बीच कोई अंतर नहीं रह गया है. इंदौर (म.प्र.) डॉ. रेखा गांधी

#### संकीर्ण मनोवृत्ति

'तेवर' (31 जनवरी) में लालू प्रसाद यादव की यह टिप्पणी "मंडल आयोग का विरोध करने वालों को बुलडोजर से चटनी बना देंगे" उनके संकीर्ण सोच और मानसिक दिवालिएपन की निणानी है. अभी मंडल आयोग के विरोध में जान देने वाले सैकडों छात्र-छात्राओं की चिता की आग भी ठंडी नहीं हुई और यादव उसमें घी डाल रहे हैं.

सिवनी (म.प्र.)

मुधीर त्रिपाठी

#### शोभा नहीं देता

'सब्र का टूटता बांध' (31 जनवरी) पढ़ा. पीडितों की सेवा करने वाले बाबा आम्टे का राष्ट्रीय अलंकरण पद्मभूषण, पद्मश्री को वापस लौटाने का निर्णय उनके करोडों चाहने वालों को क्षुब्ध कर देगा. ये अलंकरण उन्हें अन्य विशिष्ट सेवाओं के लिए दिए गए, जिसे सरदार सरोवर परियोजना से जोड़ना उन जैसे व्यक्ति को शोभा नहीं देता. यह समाज के प्रति एक भावनात्मक ब्लैकमेलिंग भी है.

रायपुर (म.प्र.)

डॉ. जयेश कावडिया

#### असलियत जानी

'अंतर्कथा' (31 जनवरी) में व्यक्त विचार बहुत सटीक लगे. लेखक ने जिन गांववालों के विचारों का उल्लेख किया है उससे लगता है कि वे भाजपा की असलियत बहुत जल्द पहचान गए जबिक दूसरी पार्टियां भारतीयों को जातियों में बांटकर बोट बटोरती रही हैं और असली समस्याएं हमेशा ही दरिकनार रही. क्या जनता इन पार्टियों की असलियत पहचानकर इन्हें कोई सबक सिखाएगी?

जोधपूर (राज.) एस. राजपुरोहित अराबा

#### अस्थिर चरित्र

'कसौटी' (31 जनवरी) में 'योजना के योग-दूर्योग' खोजपरक तथा रोचक लगा. भारत जैसे गरीव देण में योजना आयोग की बेहद महत्वपूर्ण भूमिका है. परंतु लगता है कि योजना आयोग के क्रियाकलाप महाभारत का मंचन वन गए हैं. ऐसे विभागों में जहां पद का स्थायित्व बेहद जरूरी है, हमारे कर्णधारों ने एक वर्ष में चार उपाध्यक्ष और सदस्य बदलकर स्थायित्व पर प्रश्निचन्ह लगा दिया.

फारविसगंज (विहार)

महावीर आहुजा

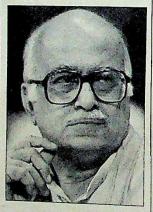
#### कब सुधरेंगे

'जनाब शेखचिल्ली' (31 जनवरी) में आपने ठीक ही लिखा है कि स्वामी जिस थाली | भोपाल (म.प्र.)



 भारतीय जनता पार्टी में हए संगठनात्मक चनावों के बारे में पढा. व्यक्तिपरक भारतीय राजनीति में भाजपा की अनुशासित छवि प्रशंसनीय है. कांग्रेस में तो एक दशक से चुनाव नहीं हए हैं. बाकी दलों का तो लोकतांत्रिक अस्तित्व है ही नहीं.

इलाहाबाद (उ.प्र.) बिदिया तिवारी



• भारतीय जनता पार्टी में अनुशासन चाहे जितना हो, संगठन कितना ही मजबूत क्यों न हो, उसकी नीतियां देश के लिए बहुत घातक हैं. इसके नेता हिंदुत्व की लहर चलाकर पूरे देश को सांप्रदायिक आग में झोंक देना चाहते

eGangotsi में खात है, उसी में छेद कर रहे हैं. लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था के अध्यक्ष को गिरफ्तार करने की धमकी देकर स्वामी ने अपनी पिछड़ी मानसिकता व हेकड़ी का परिचय दिया है मबसे बड़ी विडंबना यह कि यह धमकी उन्होंने कानन और न्यायमंत्री के रूप में दी है.

वुरहानपुर (म. प्र.)

मुनील बरोते

#### सर्वव्यापी समस्या

'काम की कमाई' (31 जनवरी) पढा ओडीसा ही नहीं, आज चारों तरफ अण्लील पत्रिकाओं की भरमार है. कलकत्ता में ही हिंदी, अंग्रेजी, तमिल, तेल्ग्र आदि भाषाओं में ऐसी पत्रिकाएं धडल्ले से बिक रही हैं. प्रकाशक सेक्स के नाम पर पाठकों को खूब ठग रहे हैं. पुलिस जानवूझकर ऐसी सामग्री के विक्रेताओं के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं करती या फिर उसकी इनसे मिलीभगत रहती है.

कलकत्ता. (प. बंगाल)

#### मर्मस्पर्शी टिप्पणी

'स्मृति' (31 जनवरी) के अंतर्गत दिवंगत रघ्वीर सहाय के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विजयेंद्र स्नातक की काव्यात्मक टिप्पणी बहुत मर्मस्पर्शी थी. सहाय ने कॉफी हाउसी माहौल के कवियों के बीच रहते हुए भी अपनी रचना में आम आदमी और गोषित, दलित, सर्वहारा वर्ग से सीधा संवाद बनाए रखा.

उज्जैन (म.प्र.)

हल्हानी (उ.प्र.)

वेद हिमांश्

शैलेंद्र श्रीवास्तव

#### प्रशंसनीय प्रयत्न

'गोली के बदले पानी' में 31 जनवरी के दंगों से निबटने में पुलिस को सक्षम बनाने की कोशिश प्रशंसनीय हैं. ये आध्निक साधन जहां जनता को मृत्यु से बचाएंगे वहीं पुलिस व पीएसी भी दोषारोपण से वचेगी. सरकार की चाहिए कि वह दंगों से निवटने के लिए केंद्रीय दंगा नियंत्रण पुलिस बल गठित करने के बदले मौजूदा पुलिस बल तथा पीएसी की आधुनिकतम साधन प्रदान करे.सिर्फ तुष्टीकरण के लिए कोई कदम उठाना ठीक नहीं.

#### पाठकों से

विश्वविद्यालयीन शिक्षा जगत से जुड़ पाठकों से हमारे नए स्तंभ 'विश्वविद्यालय परिक्रमा' के लिए सहयोग आमंत्रित है. सामग्री का हर तथ्य जांचा-परला तो हो ही, सामग्री ताजा, संक्षिप्त और फोटो के साथ हो. हर् महीने की 5 और 20 तारीख तक सामग्री हमें मिल जाए. प्रकाशित होने पर समुचित पारिश्रमिक दिया जाएगा.

पै॰ अब्दुल कार् वती कादिर भाई, धेरे नान कन्सार कार्षोरेशन, डोलर्च क्यारा दयाराम् : षितन फनीचसं, ( भावनगर: भे० ्रे बेर गृह वस्तु भ ागोदराः सै० ानवसारी: मे ागयण मार्किट, द

37। पटवा स्ट्रीट

के शोषित सेन्टर ह

वेत गेंड द्धिया त

वेहार अहमदाबा

म्योरियम, छोटा निवाला चकला. मन्त्र, 3, 4227, ब 21-A, वान कृष्ण त्रकर वास नगीन बोगल, मैन रोड,

# रसोई में आपका साथी



## अधिकृत विक्रेता

#### राजस्थान

अहमदाबाद: मे ० फैन्सी नावल्टी स्टोर्स, 1811/2, श्री गेट, पै॰ अब्दुन कादिर मो० हुसैन, 1812, थ्री गेट, ● मै० अकबर को कोटर भाई, 1822, थी गेट, 🔲 बड़ौदाः मै० मोती लाल प्रोटेनात कन्मारा, एम०जी० रोड. ● मै० श्रीजी मेटल गर्पोतान, दोलकी मुखने पोल, वजवाड़ा, 🗀 बल्सर: भे० क्षाता त्याराम बलभ राम एण्ड कं०, राम जी स्ट्रीट, ● मै० भाव प्रतीयमं, C/o. ए०एस० मैमन, मोटा ताइवाड, विनगरः में व धर्मेन्द्रा वासन भंडार, एम जी रोड, • में व ए देर गृह वस्तु भंडार, वोरा बाजार, महालक्ष्मी मंदिर के सामने, ोगोदराः से० महाबीर मेटल का०, प्राने बस स्टोप के पास. निवसारी: भै० पृथ्यांजली स्टेनलेस स्टील मार्ट, 12 सत्या ग्यन माहित् द्धिया तालाव, ● मै० दीपक वासन भंडार, 31 परवा स्ट्रीट मोटा बाजार, • भे० नीतिन वासन भंडार, % भौष्या सन्दर द्धिया तालाव, ● मे० शासन वासन भंडार, त तेह बीघ्या तालाव, • म० शायत पास भेक्षात तिलाव, □ नडीआड: मे० चारभुजा वासन पेता, बहमदाबाद बाजार, □ नडीआड: में० चारभुजा कार्वेतिक के विकास के अरीहंत स्टील प्रभारियम्, छोटा बाजार, □ सूरतः भे० अराहत रुवाः विकास के कार्याः मेन रोड, • भै० ठक्कर बर्बर्स, 5/569 किताना नेकना, हरीपुरा, ● में o ठाकुर दास जीवा राम एण्ड के अक्ता हरापुरा, ● से० ठाकर दास जाव। राज 21.4. शक कार्यन्तवाड भागल, ● से० संगीता स्टील सेन्टर, ्रा., वेश्वर, बन्देलवाड भागल, ● मै० संगीता स्टास र त्री, बाल कृष्ण शीपिंग सेन्टर, कालापीठ, ● मै० कनसारा केष्ट्र, बास नगीन वास मोदी, रेशम वाली बिल्डिंग, बरानपुरी

गजरात

विकतंत्र की

तार करने गिषद्यही दिया है की उन्होंने

पुनील बरोहे

री) पढ़ाः अण्लील ही हिंदी, ों में ऐसी एक सेक्स हैं. पुलिस त्वाओं के या फिर

शचंद्र प्रसाद

त दिवंगत तित्व पर गणी बहुत गि माहौल नी रचना , सर्वहारा

वेद हिमांशु

ानवरी के बनाने की

ाधन जहा पुलिस व

रकार को

ए केंद्रीय

के बदले

एसी को पुष्टीकरण

श्रीवास्तव

में जुड़

बद्यालय

सामग्री

सामग्री

हो. हर ग्री हमें

**मुचित** 

संपादक

□ अलवरः मै० जुनेजा बर्दमं, । वीर चौक, होए सर्कम, ● मै० भारत बर्तन भंडार, बाजाजा बाजार, □ अजमेरः मै० गोर्वधन लाईट हाउस, मटर गेट, □ चित्तौड्रगढ़ः मै० आप की दुकान, मीरा मार्किट, कालीकोठरी चोवारा, ● मै० सुरेश स्टील एम्पोरियम, 26 नेहरू बाजार, ● मै० चारभुजा बर्तन भंडार, 6 नेहरू मार्किट, □ जयपुरः मै० महावीर जनरल स्टोमं, 215 तरीपोलिया बाजार, ● मै० जैन स्टील सेन्टर, 141 तरीपोलिया बाजार, ● मै० जनर स्टोमं तरिपोलिया बाजार, □ जोध्यपुरः मै० सुराश स्टीस्त सेन्टर, तरीपोलिया बाजार, □ जोध्यपुरः मै० सुपर स्टील सेंटर, तरीपोलिया रोड, ● मै० एवन ट्रेडर्स, सोजाती गेट के अन्दर, □ कोटाः मै० गोस्वामी बर्द्स, भारतन्द्र भवन, लादपुरा, ● मै० नारायण जनरल स्टोमं, रामपुरा बाजार, □ नाथबाड़ाः मै० कंसारा तारा चन्द शंकर लाल, दिल्ली बाजार, □ उदयपुरः मै० लास चन्द छुग्गन लाल चौधरी, पंटा घर, ● मै० राजेश मैटल्स, गली भंगवाली, सुरज पोल, उदयपुर

#### हरियाणा

□ अम्बाला सिटी: पै० बीबान चन्द मनोहर नान, कोतवाली बाजार, ● पै० सचदेवा बर्तन भंडार, पटेल रोड, ● पै० संजीव ध्यर हाजस, केसरा बाजार, □ बल्लबगढ़: पै० जीवस मेटल

हाउस, मेन बाजार, 🗆 चण्डीगढ़: मै० अग्रवाल डिस्ट्रीबटर्स. शो रूम नं० 30, सेक्टर-26, मध्या मार्ग, • 🗌 फरीदाबाद: मै॰ मोहन स्टोर्स, मेन बाजार, • मै॰ न्यू लाईट हाउस, मार्किट नं । एनआईटी, • मै ॰ कृष्ण लाल संजीव कुमार, द्कान नं ॰ 116, मार्किट नं ।, एनआईटी, 🗌 हाँसी: मै॰ प्रशोत्तम लाल एण्ड सन्स, सदर बाजार, 🗌 जाखल मण्डी: मै० शिव दत्त राय कमल चन्द, अनाज मंडी, 🗌 हिसार: मै० क्रोकरी पैलेस, मोती बाजार, 🗌 जगाधरी: मै० सेठी मेटल स्टोर्स, रेलवे रोड, 🛘 जींदः मै० केदार नाथ पवन कुमार, मेन बाजार, 🗖 कालकाः मै० रस्ता राम द्वारका दास, चादनी चौक, • मै० बेनी प्रसाद परदूमन कुमार, बस स्टैण्ड, गांधी चौक, 🛘 कैथल: मै० सरस्वती बर्तन भण्डार, नरवारिया बिल्डिंग, • मै० राम प्रकाश रामेश कुमार, तलाई बाजार 🗌 कुरुक्षेत्र: मै० सरस्वती बर्तन भण्डार, मोती चौक, थानेसर, • मै० कुमार बर्तन स्टोरज, कृष्णा गेट, 🗌 पानीपतः मै० मोहन सिंह घारी मल, मेन बाज़ार, • मै० जैन बर्तन भण्डार, मेन बाज़ार, • मै० जिया साल जैन दास, हलवाई हाटा, मेन बाज़ार, 🗌 रोहतक: मै० श्याम लाल आवेश कुमार जैन, रेलवे रोड़ 🗌 रिवाड़ी: मै० शमा बर्तन भण्डार, किला रोड, • बलदेव सहाय हेमराज सैनी, गोकल बाजार.

अब हर सप्ताह 12 सीधी उड़ाने भाग्य की ओर



रविवार	शिवा साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
सोमवार	क्चित जंगा	प्रथम पुरस्कार : रु. 2 लाख टिकट : रु. 1/-
सोमवार	तीस्ता सापाहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
मंगलवार	<b>मंग्ना</b> हिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
मंगलवार	सिकिम एक्सप्रेस साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख <sup>टिकट : रु. 1/-</sup>
बुधवार	सुपर साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
बुधवार	स्नो लॉयन साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1.10 लाख टिकट : रु. 1/-
बृहस्पतिवार	स्राप्ति सिक्किम स्टेट लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
बृहस्पतिवार	शिव गंगा साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : <b>रु. 1 लाख</b> टिकट : रु. 1/-
शुक्रवार	सिकिकम लक्ष्मी साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
शनिवार	कुर्वेर साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-
शनिवार	आकाश गंगा साप्ताहिक लॉटरी	प्रथम पुरस्कार : <b>रु. 1 लाख</b> टिकट : रु. 1/-

• पुरस्कारों का तुरन्त और आसान भुगतान।

5,000 रुपये तक के पुरस्कारों का तुरन्त भुगतान।

पुरस्कृत टिकटों को भुगतान के लिये ऑर्गेनाइज़िंग एजेन्ट के पास भी जमा करा सकते हैं।

निदेशक, राज्य लॉटरीज़, सिविकम सरकार, गंगटोक (सिविकम)

ऑर्गेनाइजिंग एजेन्टस :

4, पाम्पोश एनक्लेब, नई दिल्ली-110 048

फोन : 6431869, 6445378, टेलेक्स : 031-71447-लोटो-इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwa

अर्थव्यव बुनियार्द

खाडी सं राजनैति सोचने र नहीं है. कार्रवाइ नहीं चा फिल का विष खड़ी गा सकती जरूरत दीर्घकारि ही है इ पर भी

उस मो पिछले नियंत्रण प्रावधान डीजल

फिर से कि प्रेस है. इस उग्रवादि

कि जो छापेंगे ; पत्रव हैं, इसव यह धम जवाब

अधिका जिल्ला व सामग्री गभीर जेव्त क

पर खब दोनों व

हेताशाः उग्रवार्द

वताते

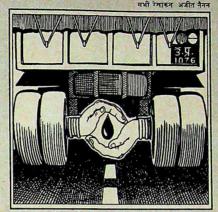
मुखिकाल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

-तमंत्री यशवंत सिन्हा का यह वयान सही है कि भारतीय अर्थव्यवस्था को दुरुस्त करने के कुछ वृतियादी उपायों पर सोच-विचार को बाडी संकट के कारण बल मिलेगा. यह राजनैतिक नफा-नुकसान के बारे में सोचने या आधे-अधूरे उपायों का वक्त नहीं है. इसलिए सरकार को आवश्यक कार्रवाइयां करने से कंतई हिचकना नहीं चाहिए.

फिलहाल हमारी सबसे भारी चिंता का विषय है पेट्रोल. पेट्रोल पंपों के आगे बडी गाडियों की कतारें और लंबी हो

सकती हैं. इसलिए इस समस्या से युद्ध स्तर पर निबंटने की जरूरत है. आयातित ईंधन पर निर्भरता कम करने का दीर्घकालिक समाधान तेल निकासी की नीति में संपूर्ण बदलाव ही है इसके साथ ही इसकी खपत घटाने के व्यावहारिक उपायों पर भी जोर देना होगा. इस संदर्भ में सरकार को सबसे पहले उस मोटर वाहन कानून की पुनर्समीक्षा करनी चाहिए जिसे पिछले साल लागू किया गया. दुर्घटना से सुरक्षा, प्रदूषण नियंत्रण, वाहनों की चुस्ती-दूरुस्ती आदि से संबंधित इसके कुछ प्रावधान तो प्रशंसनीय हैं लेकिन इसके मुख्य प्रावधान के कारण डीजल की खपत बेवजह बढी है.



इस कानून के कारण ट्रक अब 12 टनं की जगह 9 टन माल ही ढो सकते हैं. नतीजा यह कि ट्रक उद्योग की वार्षिक डीजल खपत-1.7 करोड़ टन-में 20 फीसदी की वृद्धि हो गई है. यानी आयात खर्च में 800 करोड़ रु. की बढ़ोतरी. चूंकि 59 फीसदी माल मोटर वाहनों से ही ढोए जाते हैं इसलिए डीजल खपत में वृद्धि से मुद्रास्फीति और बढेगी ही.

इसलिए जरूरी है कि सड़क परिवहन की व्यापक और दीर्घकालिक नीति लागू की जाए. इस नीति के तहत

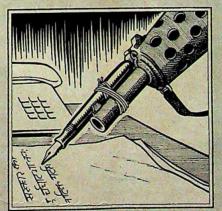
परिवहन उद्योग को ईंधन की कम खपत करने वाले मल्टी-ऐक्सल वाहनों के उपयोग के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए. (भारत में अभी भी दो ऐक्सल वाले ईंधनखोर वाहनों का ही जोर है). कम ईंधन खाने वाली टैक्सियों का चलन बढाने, सडक परिवहन से प्राप्त राजस्व से सड़कों को सुधारने आदि पर भी जोर दिया जाना चाहिए. सड़क परिवहन के कम खर्चीले विकल्प तलाशे भी जाने चाहिए. इन मामलों में भारत को जापान से प्रेरणा लेनी चाहिए. पूरी तरह तेल पर निर्भर इस देश ने सत्तर के दशक में तेल संकट का सामना तेल की अपनी खपत में 40 फीसदी की कटौती करके किया था.

# दो पाटन के बीच में

प्राव में हुई ताजा घटनाओं से हरेक अखबार और पत्रकार को फिर से यह एहसास हो जाना चाहिए कि प्रेस की आजादी कितनी असुरक्षित है इस आजादी को सबसे ताजा चुनौती ज्यवादियों की इस धमकी से मिली है कि जो अखबार उनकी खबरें नहीं छापेंगे उन्हें बंद करा दिया जाएगा.

पत्रकार दो पाटों में किस तरह फंसे हैं, इसकी ताजा मिसाल है यह धमकी. यह धमकी उस सरकारी अधिसूचना के जवाब में जारी की गई है जिसमें अधिकारियों को उन प्रकाशनों को

ग्रें करने के अधिकार दिए गए हैं जिनमें 'आपत्तिजनक सामग्री' छपी हो. सरकार अपने इस आदेश के प्रति सचमुच गंभीर है यह इसी से पता चलता है कि 'द्रिब्यून' की वे प्रतियां जिल्ला कर ली गई जिनमें उग्रवादी गुटों की विज्ञाप्ति के आधार पर खबरें छापी गई थीं. इस तरह प्रेस सरकार और उग्रवादी दोनों का निशाना बना हुआ है. जाहिर है, दोनों ही अपनी हताशाजितित लीझ प्रेस पर उतार रहे हैं. पंजाब के प्रेस को उग्रवादी और सरकारी अधिकारी दोनों ही एक स्वर से पक्षपाती वताते हैं. ऐसा इसलिए है कि इस हिंसा-पीड़ित राज्य की बेहद पुष्किल परिस्थितियों में खबरें देने वाले पत्रकार दुर्भाग्य से कभी



हिंदू हितों के पक्षधर बने तो कभी सिख कट्टरवाद के हिमायती. इस कारण वे दोनों ओर से हमलों के शिकार बने.

प्रेस ने अपनी साख कायम रखी होती तो मामला कुछ और होता. आतंकवाद की खबरें देने के मामले में वह कोई दिशा-निर्देश या आचार संहिता तय नहीं कर पाया. आतंकवादी और उग्रवादी में फर्क करने का काम संवाददाताओं या उपसंपादकों के जिम्मे छोड़ दिया गया. यहां अखबार मूख्यत: अवैतनिक संवाददाताओं पर निर्भर हैं जो अधिकारियों या उग्रवादियों से

मिली खबरें भेजते हैं. वे आतंकवादियों की गतिविधियों के लिए पुलिस विज्ञिप्तियों पर, और पुलिस दमन की खबरों के लिए राजनैतिक दलों पर निर्भर रहे.

इस तरह अपनी विश्वसनीयता स्रोकर पंजाब का प्रेस अधिकारियों और उग्रवादियों के दोहरे हमलों का सामना करने में असमर्थ हो गया. लेकिन उसे इन हमलों का सामना करना ही होगा. इसके लिए सबसे पहले उसे निष्पक्ष और स्वतंत्र रिपोर्टिंग के दिशा-निर्देश और मानदंड तय करने होंगे. इसके साथ ही सत्ता और उग्रवादियों की ओर से दी जाने वाली धमिकयों का सामना करने का संकल्प लेना होगा.

#### विशेष विमान ही चाहिए

• नार्वे के दिवंगत सम्राट के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए ताऊ देवीलाल अपनी पूरी मंडली समेत विशेष विमान से वहां क्या गए कि खबरों में छा



गए. लेकिन इस शोर-शराबे के बीच जो असली खबर दब गई वह थी प्रधानमंत्री चंद्रशेखर और उप-प्रधानमंत्री देवीलाल के बीच बढते तनाव की.

असलियत यह है कि देवीलाल ने गुस्से में नार्वे की अपनी यात्रा रद्द करने का फैसला करीब-करीब कर लिया था. इसकी वजह प्रधानमंत्री की यह सलाह थी कि फिजूलसर्ची रोकने के अभियान के तौर पर वे सामान्य उड़ान से ही नार्वे जाएं.

इससे देवीलाल भड़क उठे. उन्हें याद था कि कुछ महीने पहले विदेश मंत्रालय ने जब शिष्टाचार का मामला उठा दिया था तो उन्हें यूरोप की अपनी निजी यात्रा रह करनी पड़ी थी. लेकिन इस बार नार्वे यात्रा के सवाल पर वे अपने पूरे रंग में आ गए. उन्होंने साफ कह दिया कि जाएंगे तो विशेष विमान से ही, वरना नही जाएंगे. उनके सहयोगियों ने भी आग में घी डाला कि अगर विदेशमंत्री विद्याचरण शुक्ल श्रीलंका और चीन जाने के लिए विशेष विमान ले सकते हैं तो उप-प्रधानमंत्री क्यों नहीं विशेष विमान ले जा सकते? आखिरकार ताऊ विदा हुए और उनकी मंडली में और लोगों के अलावा एक नामी कॉलोनाइजर

Digitized by Arva Samai Foundation Chennal and हिन्सी और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए **लाजवाब करन की** अंदा

दलाली करने वाले 'सज्जन' भी शामिल थे.

#### मार्ग से भटके

 कमल मोरारका को खबरों में रहना कतई पसंद नहीं मगर जब से प्रधानमंत्री कार्यालय के 'असली' मुखिया बने हैं, खुद को खबरों से अलग रखने में मूश्किल महसूस कर रहे हैं.

उनके निवास 12, तीन मूर्ति लेन पर तो 'हस्तियों' की भीड़ बिन बुलाए आती ही है, उनके चलते महाराष्ट्र के उस सांसद की दे नींद भी हराम हो गई है जो 12, तीन मूर्ति मार्ग पर रहते हैं. इस वेचारे सांसद को अपने दरवाजे आई राजनैतिक और व्यावसायिक हलकों की वीआईपी फौज को हाथ जोड़कर बताना पडता है कि मंत्री जी तो तीन मूर्ति लेन में रहते हैं, मार्ग पर नहीं.

इस सांसद ने अब मोरारका से अनुरोध किया है कि उनके निवास पर आने वालों को सही मार्ग सभी कार्टूनः अजीत नैनन



बताने के लिए वे एक पूर्णकालिक गार्ड तैनात करवाएं.

 वर्तमान प्रधानमंत्री का भी जवाब नहीं. इस बार उन्होंने वी.पी. सिंह के 'जानी दृश्मन' अमिताभ बच्चन को गले लगाया और उन्हें 'पाक-साफ' बता दिया.



इतना ही नहीं, अमिताभ की फिल्म 'हम' के प्रीमियर गो काउद्घाटन करने के लिए भी वे तैयार हो गए. प्रधानमंत्री ने कबूल भी किया कि वे यहां आने से इनकार भी नहीं कर सकते थे क्योंकि उनकी अनुपस्थिति का लोग बुरा मानते. वैसे, सच कुछ और ही है. बहरहाल, प्रधानमंत्री ने शिष्टाचार की परवाह भी नहीं की. वे पीछे बैठे रहे और दूसरे लोग पहले मंच पर आकर अमिताभ को बधाई देते रहे. प्रधानमंत्री की स्पष्टवादिता तो और भी हैरान करने वाली थी. अपने गांव इब्राहिम पट्टी में अस्पताल के लिए 11 लाख का उद्योगपति रामप्रसाद गोयनका की ओर से स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा कि गोयनका से भी पैसा निकाल लेना मुझे आता है. इन सबसे वी.पी.

सिंह तो खुश नहीं ही हुए होंगे, पा शो विजनेस से बड़ा और क विजनेस है.

#### खेल जारी रहे

• ऐसा लगता है कि इस सरकार का तकिया कलाम है गया है-खेल जारी रहे. संसद इसकी स्थिति चाहे जितने कमजोर हो, इसकी नीतियों और कामकाज की इसके सहयोगी भी चाहे जितनी खिंचाई करें, इसके प्रधानमंत्री का पुराना रिकॉर्ड कितना भी समाजवादी क्यों न हो, सरकार अपना काम करती जा रही है-खाड़ी युद्ध हो न हो, विरोध हो या न हो.

गैर-व

• कभी

• चौध

• प्रधा

करा दिया

भेजता ?

• भैया

वात तो म

· मैं 3

• मेरे

• मुझे

कोई यह

中

गाम आते

करती.

पकडकर

हैं तो कर्भ

उम्मीद है

तो आपक

पडेगा.

विदेशी निवेशकों उद्योगपतियों के नाम से चंद्रशेखर पहले भले ही नाक-भौं सिकोइते रहे हों, उनकी सरकार से झ लोगों को सम्मान ही मिला है सरकार भारतीय इंजीनियरिंग व्यापार मेले की सफलता के लिए कोई कसर नहीं छोड़ रही है इसका. उद्घाटन करने के लिए



ब्रिटेन के राजकुमार चार्ल्स और उनकी पत्नी डायना आ रही धी पर खाडी युद्ध के चलते उनका कार्यक्रम स्थगित हो गया.

लेकिन इन सबसे सरकार का उत्साह ठंडा नहीं पड़ी है. 500 विदेशी कंपनियों की भागीदारी वाले इस आयोजन मे वह पूरे जोर-शोर से लगी है. और अब उद्घाटन के लिए राष्ट्रपति रामास्वामी वेंकटरामन को राजी कर लिया गया है.



...और एक चुटकी

मन भावुक हो उठे तो जबान कुछ ऐसे फिसलती है जैसे कपड़ामंत्री हुकुमदेव नारायण यादव की फिसली. चंद्रशेखर से अपने रिश्ते का इजहार उन्होंने इस तरह कियाः "सौ साल पहले मुझे तुमसे प्यार था आज भी है और कल भी रहेगा."

10 इंडिया टुंडे ♦ 28 फरवरी 1991

हुए होगे, गर और क्य

रहे

है कि

कलाम हो हि. संसद में हे जितनी गितियों और महयोगी भी कर्रे, इसके

ना रिकॉर्ड क्यों न हो

करती जा

हो न हो,

से चंद्रशेखर ौं सिकोडते

ार से उन

मिला है

जीनियरिंग ता के लिए इ रही हैं ने के लिए

<sub>जीनमरिंग</sub> रिमेली

र्ल्स और

रही थी

ते उनका

भारत नहीं पड़ा

नयों की

योजन में

है. और

राष्ट्रपति

को राजी

नों

Digitized by Arya Salma Foundation Chennal and अधिवेशन, बिलिया

 गैर-कांग्रेसवाद के दिन लद गए हैं.आज यदि गैर-कांग्रेसवाद पर अमल करना हो तो आपको भाजपा के पास जाना होगा और मस्जिद तोड़कर राम मंदिर बनाना पड़ेगा.
 मुलायम सिंह यादव, देवस्थली में जद (स) अधिवेशन में

 कभी कोई गलती होती है तो हाशिये पर ही उसे सही करना पड़ता है. मुझे उम्मीद है कि पार्टी ऐसे समय में मुझे याद करेगी.

अटल बिहारी वाजपेयी, हिंदुस्तान

• चौधरी देवीलाल सत्ता में बने रहने के लिए स्वयं को कभी पुराना कांग्रेसी कहते हैंतो कभी श्री राजीव गांधी को खुश करने के लिए गांव से गोंद के लड्डू ले जाते हैं.

भजनलाल, दैनिक द्रिब्यून

• प्रधानमंत्री को ही सीधे मैंने प्रदेश की सारी समस्या के बारे में लिखकर अवगत करा दिया था. फिर यशवंत (सिन्हा) जी को क्या तोता-मैना की कहानी लिख कर भेजता?

भैया मुझे पटवा जी की सरकार में बने रहना है. उनकी (मुख्यमंत्री के भाई)
 यात तो माननी ही पड़ेगी.
 कैलाश चावला (मध्य प्रदेश के गृहमंत्री), नई दुनिया

 मैं अन्य लोगों की तरह प्रधानमंत्री से चिपका नहीं रहता. कुछ समर्थक तो कुर्ता पकड़कर खींचते हैं और धोती तक उतार लेते हैं.

■ हुकुमदेव नारायण यादव, नवभारत टाइम्स

मेरे पित को एक ऐसी पत्नी मिली है जो सचमुच उनकी धुन पर नृत्य करती है.
 कोमला वर्द्धन (नृत्यांगना), दैनिक जागरण

• मुझे नहीं लगता कि मैं अब टेस्ट क्रिकेट खेल पाऊंगा

संदीप पाटील, नई दुनिया

मैं तो सिर्फ यही कहना चाहता हूं कि मैं शुरू से स्वाभिमानी खिलाड़ी रहा हूं.
 कोई यह न समझे कि मैं कीर्तिमानों की खातिर खेल रहा हूं.
 किपलदेव, धर्मयुग

• मैं तो वॉक्स ऑफिस के प्रति पूरी तरह समर्पित हूं. 

• महेश भट्ट, सिने ब्लिट्ज

• वस मुझमें खास बात यही है कि मैं देव साहब की खोज हूं.

एकता, दैनिक दिब्यून

मैं धीमी मगर निरंतर प्रगति करती रही हूं. लोग मुझे अच्छी समझकर ही मेरे
 काते रहे हैं. मेरी सेक्नेटरी कोई मेरे लिए सुपर रोल की तलाश में दौड़-भाग नहीं
 ब्राही बावला, स्टारङस्ट

आपकी चहेती पत्रिका आपके दरवाज़े पर न खरीदने का झंझट... न खत्म होने का डर

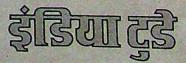


इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे — नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जसरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!
बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

-	-						
7114					PAGE T		200
			100				
KIGE OF	at:						

मूल्य वार्षिक ह. 132/-

भुगतान का माध्यम-चेक/डिमांड ड्राफ्ट दिल्ली, वम्बई, कलकता और मदास के चेक/डिमान्ड ड्राफ्ट एमआईसीआर वाले ही होना चाहिये। (विल्ली से बाहर के चेकों के लिए1०/- छ. प्रति चेक की अतिरिक्त राशि देय हैं)) दर व फेराक्श केंवल भारत में लागू। कृषया चेक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर मेजें। लिविंग मीडिमा इंडिया लि., पो. बॉ. नं. 706, फरीदाबाद-121 007 (हरियाणा)



MILESTONES/IT/120

#### भूख हड़ताली दूल्हा

■ किस्सा एक समर्पित युवा मजदूर नेता का है. भुवनेण्वर में पारादीप फास्फेट्स लि. में काम करने वाले इस युवक की णादी पिछले पखवाड़े होनी तय हुई. उसके घरवाले और समुरालवाले णादी की तैयारियों में जुटे हुए थे कि कर्मचारी संघ ने अपनी मांगों को लेकर भूख हड़ताल की घोषणा कर दी.

कर्मठ मजदूर नेता होने के नाते दूल्हा भी आमरण अनशन पर बैठ गया. समझौता नहीं हो पाया और शादी का दिन और मुहर्त भी आ पहुंचा. भूख हड़ताली दूल्हे ने प्रबंधकों और परिवारवालों के सामने घुटने नभी राहेन अनित गर्मा



टेकने से इनकार कर दिया. लिहाजा, मुहूर्त टल गया. मंडप की अग्नि भी ठंडी पड़ गई. लेकिन अंतिम समाचार मिलने तक दूल्हे का हडताली जोण कायम था. Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri-



#### पुलिसिया उत्साह

■ हिंदुस्तान की पुलिस में लाख बुराइयां हों मगर उसकी कुछ अच्छाइयों से इनकार मी नहीं किया जा सकता. उसकी एक खासियत तो यही है कि वह जनता के साथ बहुत नजदीकी और गहरे रिश्ते बनाने में यकीन रखती है. हां, अगर रिश्तों की यह नजदीकी कमी-कमार जनता को महंगी पड़ जाए तो इसमें बेचारे पुलिसवालों का मला क्या दोष हो सकता है?

पिछले दिनों जयपुर के एक इलाके में तीन सिपाहियों ने रिश्तों की इस गर्मजोशी की परंपरा को बनाए रखने की कोशिश की लेकिन उनके थानेदार ने रंग में मंग डालकर उनका मजा किरिकरा कर दिया. अब जब सिपाहियों के रंग में मंग पड़ जाए तो वे इसके लिए जिम्मेदार शख्स को मला क्यों बख्शते. सो, स्वामाविक ही था कि बेचारे थानेदार को अपने किए की सजा मुगतनी पड़ी. खबरों के अनुसार ये सिपाही नर्टाणयों के एक डेरे में जा पहुंचे और मौज-मस्ती के बाद पैसे चुकाने से इनकार कर दिया. कहा-मुनी होने पर उन्होंने डेरेंवांलों की ठुकाई कर दी. खबर मिलते ही थाना प्रभारी वहां पहुंचे और सिपाहियों को खूब उपेदश मुनाए और उन्हें शराफत से पेश आने के लिए कहा. बस फिर क्या था. सिपाहियों ने अपना गुस्सा थानेदार पर ही उतार डाला और उसके कपड़े फाड़ दिए. बाद में इन सिपाहियों को गिरफ्तार कर लिया गया. जनता पर हाथ साफ करने वाले कभी अपनों पर हाथ चला बैठें तो हैरत कैसा!

#### फिस्स हथगोला

■ भारतीय विमान यात्रियों की जेव पर सरकारी विमान सेवाओं का राज है. यह और बात है कि मुंहमांगा किराया चुकाने के बाद भी किसी हवाई जहाज का दरवाजा बीच आसमान में खुन जाता है तो कभी कुछ और

पिछले पखवाड़ें कलकत्ता से अगरतला जाने वाले यात्रियों के साथ कुछ ऐसा ही भद्दा मजाक हो गया होता. विमान के उड़ान भरते ही एक युवक कूदकर कॉकपिट में आ घुसा और दोनो हाथों में रुमाल में लिपटे गोलों को दिखाकर पायलट को धमकाने लगा. लेकिन पायलट ने खतरे की घंटी बजाकर दूसरे कर्मनारियों



को सचेत कर दिया और उन्होंने युवक को धर दबोचा. बाद में रुमाल खोलने पर पता चला कि अंदर बम नहीं बल्कि एक अनार और एक संतरा बंधे हुए थे.

#### दवा और दुआ

पिछले दिनों चंडीगढ़ के निकट छतबीर चिडियाघर के चिपैंजी गोगा के घर में अस्पताल जैसा नजारा था. पूरे बाड़े को लृधियाना मेडिकल कॉलेज से आए डॉक्टरों ने सघन चिकित्सा



कक्ष में बदल डाला था.

चिडियाघर अधिकारियों और की ये अभूतपूर्व गतिविधियां स्वाभाविक ही थीं क्योंकि यह विशालकाय चिपैजी एक गंभीर बीमारी से पीड़ित था और विल्प्त होती प्रजाति के इस महत्वपूर्ण सदस्य को बचाया जाना बहुत जरूरी थी. गोगा के इलाज के लिए डॉक्टर भी सक्रिय थे और उसे सर्दी से बचाने के लिए चिडियाघर कर्मचारी भी बड़े-बड़े हीटरों और गरम पानी वाली बोतलों के साथ चौबीसों घटे मौजूद थे. उधर गोगा की साथिन रीटा अपने प्रियतम की पीड़ा से इतनी दुखी थी कि इस दौरान उसने साना-पीना छोड़ दिया. डॉक्टरों की दवा और रीटा की दुआएं रंग लाई. अब गोगा स्वास्थ्य लाभ कर रहा है.

#### खिड़िकयां नहीं दरवाजे

■ मंडल आयोग विरोधी आंदोलन थम चुका परंतु गुस्से और तोड़-फोड़ के उस दौर की याद दिलाने का काम अब सिर्फ दिल्ली परिवहन निगम की बसें कर रही हैं जिनके टूटे हुए शीश कड़ाके की सदीं में बस यात्रियों की कुल्फी जमा रहे हैं.

इन शीशों को न बदलने के
फैसले के पीछे दिल्ली परिवहन
अधिकारियों का इरादा शायद
लोगों को तोड़-फोड़ के प्रति
अपना उदासीन रवैया सुधारने
का संदेश देना रहा है. लेकिन
गणतंत्र दिवस की परेड की वजह
से यातायात ठप होने के दौर में
इन टूटी खिड़कियों ने हजारों
यात्रियों को राहत पहुंचाने का
काम भी किया. जगह-जगह भीड़

में फंसी बसों के यात्रियों ने पिछले दिनों इन टूटी खिड़िक्यों से वह काम लिया जो ठमाठम भरे दरवाजों से लेना संभव नहीं था. खिड़िक्यों से चढ़ते-उतरते यात्रियों का यह दृश्य ऊबी भीड़ के लिए काफी मनोरंजक रहा है न सही उपयोग!



त्रियों की न सेवाओं ात है कि ने के बाद हाज का में मुल और. कता से ात्रियों के ा मजाक के उड़ान क्दकर ौर दोनों रटे गोलों धमकाने खतरे की र्मचारियों

ं उन्होंने बाद में बला कि क अनार

त्रयों ने

इकियों

ठसाठस

ाव नहीं -उतरते

बी भीड़

रहा. है

#### अंक ३ दृश्य ६

अचानक मुझे अपने चारों तरफ सन्नाटा सा महसूस हुआ, मैंने नज़र दौड़ाई तो देखा कि सभी जा चुके हैं, और मैं उनके साथ बिल्कुल अकेली रह गई हूँ, कई तरह के ख्याल मेरे मन में आये. जी घवराया और दिल की धड़कनें तेज़ हो गई.

अनजाने ही मैंने उनकी तरफ देखा, वे मुस्कुराते हुए अपलक मुझे ही निहार रहे थे. मैंने नज़रें झुका लीं. मन ने कहा यहाँ से चल,पर दिल ने कहा कि सदा के लिए उनकी होकर रह जाऊँ!

मेरा ध्यान तोड़ते हुए उन्होंने पूछा, ''कुछ हो जाये?''

में हड़बड़ाई. पर मैंने झट से अपने को संभाला और कहा, "सिर्फ रिच कॅफे!"

पर्दा

सुनहरेज्यानों का सुहाना स्वाद

# राष्ट्रीय रिश्तों में

प्रतथ्य यही संकेत कर रहे हैं कि इंका ने केंद्र में सरकार बनाने की गंभीर कोशिशें शुरू कर दी है. इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वह मध्यावधि चनाव का रास्ता अपनाएगी या जनता दल (स) तथा वी.पी. सिंह के जनता दल में तोड़-फोड़ करके जरूरी समर्थन जुटाएगी यह अभी स्पष्ट नहीं है.

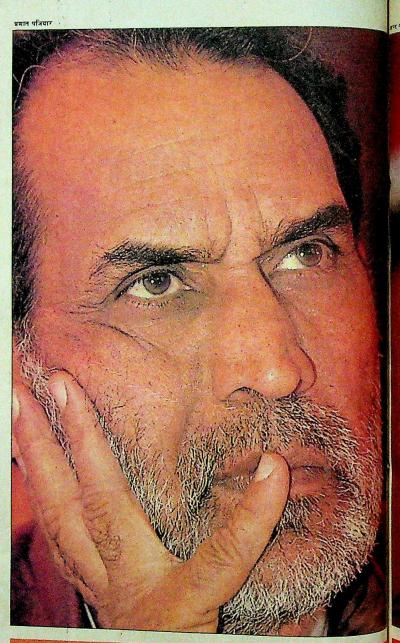
लेकिन इतना जरूर स्पष्ट है कि इंका जिस कार्ययोजना पर अमल कर रही है, उसका पहला शिकार चंद्रशेखर सरकार ही हो सकती है. इंका और उसके सहयोगी दलों के 211 सांसदों और जनता दल से निकले 54 सांसदों का यह अवसरवादी गठबंधन आज राजनैतिक संकट में फंसा लगता है, इससे नए चुनाव होने का मसला अनिश्चितता से घिरा लगता है.

राजीव गांधी और उनके राजनैतिक सलाहकार जिस रणनीति पर बहुत संभल कर अमल कर रहे हैं वह है चंद्रशेखर सरकार और सबसे बड़ी संसदीय पार्टी इंका के बीच दूरी को बढ़ाने की. उनका मानना है कि अभी माहौल बढ़िया है क्योंकि चंद्रशेखर खेमे में भी भारी नाराजगी है. साथ ही राजनैतिक परिदृश्य पर भी नाटकीय बदलाव हो रहे हैं. चंद्रशेखर को यह बात मालुम है. देवीलाल को भी मालुम है. वी.पी. सिंह के जनमोर्चा घटक के लोगों को भी यह मालूम है. जैसे-जैसे यह खेल आगे बढ़ रहा है, चुनाव के डर से सहमे राजनेता नए दोस्तों, नए शरण स्थलों, नए गठबंधनों की तलाश में लग गए हैं.

#### फासला बढ़ाने का खेल

हमले के लिए तैयार होना

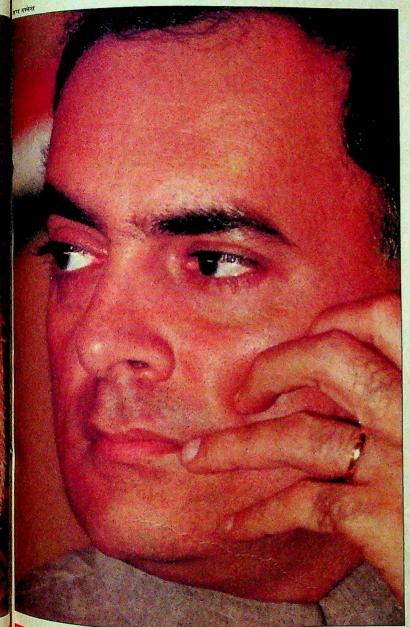
ट का बड़ी सावधानी से तैयार की २ गई योजना के अनुरूप अपनी चाल चल रही है. 31 जनवरी को राजीव गांधी की अध्यक्षता में हुई इंका कार्यसमिति की बैठक में चंद्रशेखर सरकार से दूरी बनाने का ही नहीं, उस पर सार्वजनिक हमले करने का भी फैसला किया गया. इस हमले के हरावल दस्ते की अगुआई सीताराम केसरी, पी.वी. नरसिंहराव, माखनलाल हरिकशनलाल भगत और वी.एन. गाडगिल



पने मुख्य आधार इंका की उपेक्षा करके अपने मन से काम करने की चंद्रशेखर की शैली से राजीव और उनकी पार्टी के लोग नाखुश हैं

# RR

#### इंद्रजीत बधवार और प्रभु चावला



जीव गांधी की कांग्रेस पार्टी ने चंद्रशेखर से दूरी बढ़ाना शुरू कर दिया है और अपनी सरकार बनाने की गंभीर कोशिश में लग गई है

पारी

कर रहे हैं. पिछले पखवाडे सरकार की आलोचना का अभियान गुरू करके इंका ने यह संकेत देना शुरू कर दिया कि इस सरकार को टिकाए रखने वाली यह पार्टी घरेल बांदी की तरह सिर्फ चल्हा-चौकी नहीं संभालेगी. उसके इस तरह के बिलकुल प्रत्यक्ष संकेत कभी-कभी तो बहुत अपमानजनक भी रहे हैं और प्रायः राजीव गांधी की ओर से मिले हैं.

- चंद्रशेखर और राजीव को कर्नाटक के एक वहप्रचारित आयोजन में साथ-साथ जाना था. पर राजीव वहां नहीं गए.
- पहले वे एक और वादा तोड़ चुके थे, लाला लाजपत राय की जन्म शताब्दी पर साथ-साथ पंजाब जाने का. उनकी जगह पार्टी महासचिव बलराम जाखड को भेजा
- ▶ सिमरनजीत सिंह मान के साथ बातचीत करने के लिए राजीव ने चंद्रशेखर की तीखी आलोचना की, लोकसभा अध्यक्ष दारा सदन की सदस्यता से अयोग्य घोषित किए गए पांच मंत्रियों को न निकालने के फैसले की भी उन्होंने आलोचना की.
- पार्टी प्रवक्ता गाडगिल ने महंगाई पर काबू न पा सकने के लिए सरकार की खिंचाई एक पत्रकार सम्मेलन में की.
- इंका के दस सांसदों ने, जिन्हें पार्टी का 'शोरमचाऊ दस्ता' माना जाता है, चंद्रशेखर की खाडी नीति के खिलाफ उनके निवास पर प्रदर्शन किया.
- ▶ सबसे नाटकीय घटना 6 फरवरी को घटी. राजीव ने राष्ट्रपति भवन जाकर राष्ट्रपति वेंकटरामन से 80 मिनट तक बात की. फोतेदार इस बातचीत में आधे समय मौजूद थे. राजीव के निकट के लोगों से मिली खबरों के अनुसार उन्होंने खाडी के मामले पर गृट निरपेक्षता की पूरानी नीति छोडने और पांच मंत्रियों को न निकालने के चंद्रशेखर सरकार के फैसले पर अपनी तीखी नाराजगी प्रकट की. राजीव ने कहा कि नवंबर में इस सरकार को समर्थन देते समय इंका ने राष्ट्रपति को कम-से-कम एक साल सरकार चलने देने का वचन दिया था. पर साथ ही उसने इंका की परंपरागत नीति से अलग न हटने का वादा भी चंद्रशेखर से करा लिया था. अब गुट निरपेक्षता जैसे मुद्दे पर अलग नीति अपनाने से वे इंका के समर्थन को पक्का न मान लें. राष्ट्रपति ने

की तैयारी कर रही है

गणतंत्र दिवस के अवसर पर दिए अपने

संदेश में मिली-जूली और मजबूत सरकार की जरूरत की ओर इणारा किया था. सो.

इस भेंट ने यह चर्चा भी उड़ा दी कि इंका

इस सरकार से हाथ झाडकर जनता दल

(स) के असंतुष्टों को लेकर सरकार बनाने

पिछले हफ्ते राष्ट्रपति ने चंद्रशेखर और

राजीव गांधी को एक साथ बुलाकर उनकी

शिकायतें सूनने की पहल करके फिर से यह संकेत दिया कि वे केंद्र में नए समीकरण

बनाने में सक्रिय है, करीब-करीब

'किंगमेकर' वाले अंदाज में. और इस

बातचीत के बारे में जो भी संकेत मिलते हैं

उनसे लगता है कि उन्होंने इंका नेता की

णिकायतों को अधिक वजन दिया फिर 11

फरवरी को इंका की राजनैतिक मामलों की

कमेटी में गरमागरम बातचीत के त्रंत बाद

राजीव ने राष्ट्रपति से 90 मिनट तक बात

की उन्होंने राष्ट्रपति को बताया कि वे सरकार का नेतृत्व करने को तैयार हैं

लेकिन ऐसा लगा कि राष्ट्रपति राष्ट्रीय

मरकार के पक्षधर है. पर उनके इस सुझाव

को भाजपा और वी.पी. सिंह, दोनों ही

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमेरिकी विमानों को ईधन देने का विरोधः प्रधानमंत्री निवास के बाहर इंकाई

ठकरा चुके हैं. मजेदार बात यह है कि राष्ट्रपति और राजीव दोनों ही अलग-अलग कारणों से चुनाव टालना चाहते हैं.

#### इंका की बाध्यताएं

करे कोई, भरे कोई

किन लाख टके का सवाल यह है कि अभी ही क्यों ? इसके तीन कारण हैं पहला तो यह कि अपने मुख्य आधार इंका की उपेक्षा करके अपने स्वतंत्र विवेक से काम करने की चंद्रशेखर की शैली राजीव और उनके पार्टीवालों को अखर रही है. चंद्रशेखर ने मंत्रिमंडल के गठन में भी राजीव से राय नहीं ली दूसरे, इंकाइयों को चंद्रशेखर की खाडी नीति मुसलमान विरोधी लगती है जबकि अधिकाण मुसलमान सहाम हसैन के समर्थक हैं सो, यह नीति मुसलमानों को वी.पी. सिंह की ओर ठेलती जा रही है. तीसरे,



चंद्रशेखर

### काम कम, भाषण ज्यादा

भ दिर-मंडल हंगामे को ठंडा करके करके चंद्रशेखर की सरकार ने लोगों की वाहवाही लुटी है. लेकिन महत्वपूर्ण घरेलु और विदेशी मसलों पर सरकार ने जो कुछ किया है उससे हालात अधिक खराब ही हए हैं.

पंजाब मसले पर इस सरकार ने उग्रवादियों से 'खालिस्तान सहित' किसी भी मुद्दे पर बातचीत की सहमति देकर नीतिगत बदलाव किया है. लेकिन उसने यह नहीं साफ किया है कि यह वातचीत संविधान के दायरे में किस तरह होगी.

विपक्षी पार्टियों को लग रहा है कि 🌯 उग्रवादियों का मनोबल ही उलटे मजबूत हुआ है क्योंकि अकाली नेता सिमरनजीत सिंह मान से बातचीत के दौरान प्रधानमंत्री ने उनका वह ज्ञापन स्वीकार किया जिसमें भारत और पाकिस्तान के बीच में एक मध्यवर्ती स्वतंत्र सिख राज्य बनाने और विस्टन चर्चिल के उद्धरणों का हवाला देकर राष्ट्रीय आंदोलन की अवमानना की गई है.

और कण्मीर मसले पर प्रधानमंत्री ने

दावा किया है कि वे वहां राजनैतिक प्रक्रिया वहाल करने के लिए प्रतिबद्ध हैं. वे कण्मीर के तरह-तरह के नेताओं से मिल रहे हैं लेकिन कोई नतीजा निकलता नहीं दिख रहा. उग्रवादियों से संबंध रखने के आरोप में गिरफ्तार राज्य सरकार के पांच कर्मचारियों को रिहा करने की मांग मानकर उग्रवादियों को दम लेने की फरसत दे दी गई. यह फैसला ऐसे वक्त हुआ है जब भारत से नाराजगी के बावजूद घाटी के प्रमुख मुसलमानों को लगने लगा है कि 'आजादी' आसानी से नहीं मिलेगी, जब पाकिस्तानी 'मदद' से निराशा भी फैलने लगी है और जब लोग सेना की 'ज्यादितयों' से परेणान होने लगे हैं.



उधर, असम में 'उल्फा' के खिल सैनिक अभियान तो असफल हो । लेकिन इससे राज्य प्रशासन का मनोव वापस हो गया है. उल्फा से कथित रि रखने वाले अगप नेतृत्व के विभिन्त ध द्वारा परस्पर विरोधी निर्देशों के च प्रशासन परेशान हो गया था. लेडि प्रभावी राजनैतिक वातचीत न गुरु की केंद्र ने राज्य की अनेक समस्याओं म्लझाने में राजनैतिक इच्छाशक्ति अभाव दिखाया है.

सांप्रदायिकताः मंदिर के लिए रक्तरंजित आंदोलन के दौरान सरकार इसकी समर्थक इंका की निष्क्रियता मुसलमानों को लग गया है कि उन वढ़ती अमुरक्षा का निदान इन लाग पास नहीं है. यह समुदाय आत्मरक्षी लिए हथियार भी जमा कर रहा है

विहिप का कहना है कि प्रधान चुनाव तक समय निकालना चाहते है वाबरी मस्जिद ऐक्शन कमेटी क निजी तौर पर कवूल करते हैं कि कै नेताओं से मुसलमान बेजार हो रहे

अर्थव्यवस्थाः विदेशी मुद्रा की न और वित्तीय संकट को देखते हुए स<sup>ख</sup>

चंद्रशेखर के साथ मान

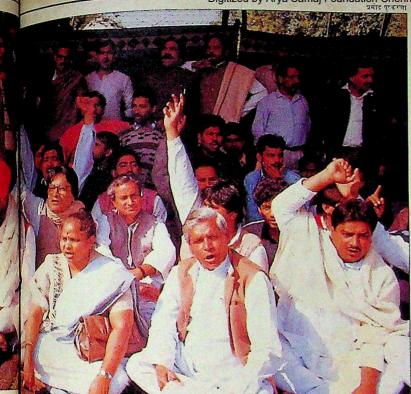
और 78 करो म मफलता ह के अनुसार गुलक तथा उ आय कर पर हुआ कि व प्रतिशत से वि 1991-92 中 हो सकत बाद पर ह कटौती भी व म किमी भी ने बाड़ी युद्ध लिए एक अ जिसमें हवा क्ट्रीती तथा कर बहाना यह अंदाज जिल्ली चीजो ही 20 में 30 प्रेस औ मस्याओं व यधानमंत्री :

न अंतरराष्ट्र

गामा मस्जि

अनिच्छा दि

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri



बोफोर्स का मामला रफादफा नहीं किया गया जिसकी इंका को उम्मीद थी. उलटे सरकार ने इस मामले पर मुस्त पड़ी सीबीआई को फिर से सक्रिय किया है और मामले को तेजी से निवटाने के लिए स्विस सरकार को नई चिट्टी भेजी है.

इंका के नेता और कार्यकर्ता मानते हैं कि पार्टी को मूंह ताकने की जगह राजनैतिक रूप में मक्रिय होकर देश की राजनीति को अपनी ओर मोडने की कोणिण करनी चाहिए. इसीलिए कार्यसमिति की बैठक में मबसे अधिक नाराजगी इसी बात को लेकर थी कि सत्ता और फैसलों में भागीदारी करने (और लाभ लेने) की जगह-जगह इंका को सरकार के सभी सही-गलत कामों का खामियाजा भगतना पड रहा है.

#### रणनीति

#### बागियों को फूसलाने की

रकार वनाने का इंका स्कार विभाग ... गणित बहुत जटिल नहीं है (देखें वॉक्स). लोकसभा में इसके और मित्र दलों के 211 सांसद हैं. बहमत के लिए करीब

ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोप से 1.02 अरब भीर 78 करोड़ डॉलर के दो बड़े कर्ज पाने म मफलता हासिल की. कोष के अनुशासन 🖥 अनुसार ही यणवंत सिन्हा ने सीमा गुल्क तथा उत्पादकर में बढोतरी की और आय कर पर अधिभार बढाया. परिणाम हुआ कि बजट घाटा 1989-90 के 8.9 प्रतिगत से गिरकर 1990-91 में 8.3 और 1991-92 में 6.5 हो जाएगा.

के विल

लहोग

का मनोव

कथित रि

विभिन्न ध

ों के चन

था. लेकि

न गुरु का

मस्याओं

द्राशक्ति

लिए

सरका

<u>जिक्रयता</u>

कि अ

न लोगा

गत्मरक्षा

हा है.

प्रधान

गहते हैं

टी के

雨前

ते रहे है

ा की ं

हुए सर्व

ान

हो सकता है कि वजट में रासायनिक <sup>बाद पर</sup> दी जाने वाली सब्सिडी में रोती भी की जाए. ऐसी हिम्मत दशकों में किमी भी राजनेता ने नहीं की. सरकार <sup>ने बाड़ी</sup> युद्ध के परिणामों से निबटने के लिए एक आपात योजना भी बनाई है, जिसमें हवाई और रेल यातायात में क्ट्रौती तथा कुछ औद्योगिक उत्पादनों पर का वहाना शामिल है. लेकिन सरकार ने <sup>यह अंदाज</sup> नहीं लगाया कि इन सबसे <sup>करी</sup> त्रीजों की कीमतें दो हफ्ते के अंदर हों 20 में 30 फीसदी तक बढ़ गई.

प्रेम और न्यायपालिकाः इन दोनो भियाओं की अवमानना की गई है विभागमंत्री ने बोफोर्स की जांच में जो <sup>श्</sup>निष्ट्या दिखाई उसके बाद ही दिल्ली

<sup>नामा</sup> मस्जिद पर हिंदुओं का प्रदर्शन

हाईकोर्ट के जज एम.के. चावला ने सीवीआई को यह जवाब देने का निर्देश जारी किया कि बोफोर्स जांच को ही क्यों न खारिज कर दिया जाए. नवनियुक्त अतिरिक्त महाधिवक्ता के.टी.एस. तूलसी ने भी मामले को आगे बढाने की जगह समाप्त करने की तत्परता ही दिखाई पर उनके सहयोगी वकीलों ने विरोध णुरू कर

वाद में, खुद महाधिवक्ता को दिल्ली हाईकोर्ट में यह तर्क देने के लिए भेजा गया कि जनता दल के विभाजन की वैधता पर फैसला करने के लिए लोकसभा अध्यक्ष सक्षम नहीं हैं. अपने मंत्रियों की नियुक्ति को अवैध ठहराए जाने से रोकने के लिए चंद्रणेखर ने यह काम किया. संसद के किसी भी सदन का सदस्य हुए विना छह महीने तक मंत्री बनाने का प्रावधान प्रतिभाणाली लोगों को लेने के लिए है, पर

इसका उपयोग वे दलबदल को मही साबित कराने के लिए कर रहे हैं.

प्रेम को भी नहीं बरुणा गया है. हरियाणा के मूख्यमंत्री हक्म सिंह ने अपने राज्य में पत्रकारों पर हमले कराए. थॉमसन प्रेस बंद कराने की उनकी कोणिणों ने डमरजेंसी की याद दिला दी. प्रधानमंत्री ने इन सब घटनाओं पर चुप्पी ही साधे रखी.

विदेशी मामले: इस मोर्चे पर सरकार का काम मिली-जुली सफलता वाला ही रहा है. शुरू में क्वैत पर इराकी कब्जे की निंदा करने, इस मसले को फिलस्तीनी मसले से न जोड़ने की बात करके और फिर इराक पर अमेरिकी हमले की निदा करके सरकार ने दोनों ही पक्षों की 'खण'

लेकिन अपने मंत्रिमंडल के लोगों या अन्य राजनैतिक पार्टियों से राय-मणविरा किए विना ही अमेरिकी वायू मेना के विमानों को देश में ईधन भरने की अनुमति देकर प्रधानमंत्री ने लोगों की नाराजगी मोल ले ली. आम लोग यही मानते हैं कि इस क्षेत्र में शांति की नई पहल किए विना ही भारत ने अपनी गुटनिरपेक्ष छवि धूमिल कर ली है.

- शाहनाज अंकलेसरिया अय्यर



# नता दल (स) में फूट डलवाने के लिए इंका मुलायम सिंह यादव, चिमनभाई पटेल और देवीलाल पर डोरे डालने की कोशिश कर रही है

260 सांसदों का समर्थन चाहिए. इसके लिए वह जनता दल (स) के तीन धड़ों पर नजर रखे हुए है जिनसे 40 सांसदों को तोडकर इंका में लाया जा सकता है. ये तीन धडे देवीलाल, चिमनभाई पटेल और

मुलायम सिंह यादव के नेतृत्व वाले हैं. चंद्रशेखर का समर्थन कर रहे 14 निर्दलीय सांसदों में से 10 का समर्थन इंका को मिल जाने की उम्मीद हैं. शेष दो चंद्रशेखर के साथ रहेंगे ही जबकि दो मौका देखकर फैसला करेंगे.

कांग्रेस के रणनीतिज्ञों का मानना है कि

उनकी सरकार इंका के 32 विधायकों के बल पर टिकी है. इस मुद्दे पर राजीव से उनकी भेंट हो चुकी है. इंका के समर्थन का लाभ लेने वाले मुलायम सिंह ने भी पार्टी के बलिया सम्मेलन में इंका से संबंध बनाए रखने की अपील की.

अब बचे ताऊ. पांच मंत्रियों के इस्तीफें

पटेल तो कहीं नहीं जा सकते क्योंकि की मांग से पार्टी को देवीलाल के संदर्भ में जो लाभ मिलेगा उस पर भी इंकाइयों की चंद्रशेखर सरकार को गिराने और अपना बहुमत कायम करने के लिए इंका को शासक गुट से 40 सांसदों और 10 निर्दलीय सांसदों की जरूरत होगी कांग्रेस (इ) और सहयोगी बल देवीलाल मुलायम सिंह जिमनमाई निर्वलीय कुल सांसद 211 काली दल (राजदेव) 60 बहुमत बिद् CC-0. In Hall Gardomain

(31 रिक्त स्थान शामिल नहीं)

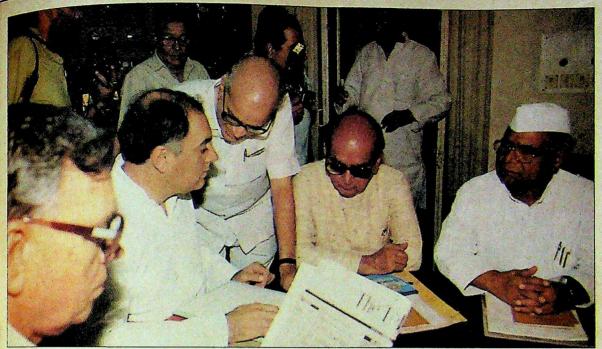
ताऊ के ख ये मंत्री बन प्रमुख ममूह—जि

और दिनेश (म) को 1 का पक्षधर लोग भी रणजीत चांदराम : जैसे नेताओं जिसमे आ

सके. दरअ विभिन्न धर होने का अ हैं. लेकिना ओर पीगें

बड़े पुत्र चंद्रशेखरः सकता है नि के लिए ए

देवीलाल मस्कार मे हैं. ओस्त्रो



## इ का कार्यसमिति ने हाल ही में फैसला किया कि चंद्रशेखर सरकार से दूरी बढ़ाई जाए और उस पर खुलेआम हमला किया जाए

नजर है. ये मंत्री देवीलाल विरोधी हैं और वाऊ के खास लोगों को बाहर रखकर ही ये मंत्री बनाए गए हैं.

यकों के

जीव से

ार्थन का

भी पार्टी

ा संबंध

इस्तीफे

संदर्भ में

इयों की

अजीत नैतर बी.के मर्मा

211

\*16

+14

\*10

\*10

261

प्रमुख इंकाइयों का एक महत्वपूर्ण ममूह-जिसमें वसंत साठे, शिव शंकर और दिनेश सिंह शामिल हैं-जनता दल (म) को विभाजित कराके सरकार बनाने का पक्षधर है. चंद्रशेखर धड़े के महत्वपूर्ण लोग भी-जिनमें देवीलाल के पुत्र रणजीत सिंह, जगदीप धनखड़ और नादराम शामिल हैं इंका के फोतेदार जैसे नेताओं से करीबी संपर्क रखे हुए हैं जिसमे आगे के गठबंधन पर विचार हो भके. दरअसल, जनता दल (स) के विभिन्न धड़ों के 25 सांसद इंका में दाखिल होने का औपचारिक आग्रह भी कर चुके हैं लेकिन एक ओर रणजीत जहां इका की और पीमें वढ़ा रहे हैं, वहीं देवीलाल के वहे पुत्र ओमप्रकाश चौटाला घनघोर विक्राबर समर्थक बने हुए हैं और हो मकता है कि वे ताऊ की दलबदल योजना के लिए पूर्णविराम साबित हों. लेकिन रेनीलाल और उनके लोगों के पास भरकार में बाहर होने के अपने ही कारण हैं ओस्त्रों में लौटते ही उन्होंने चंद्रशेखर

को एक चिट्ठी लिखकर अनेक मुद्दों पर अपनी नाराजगी जताई, उसी तरह जिस तरह वी.पी. सिंह को चिट्ठी लिखी थी.

#### ताऊ की बाध्यताएं

नए चरागाह की तलाश

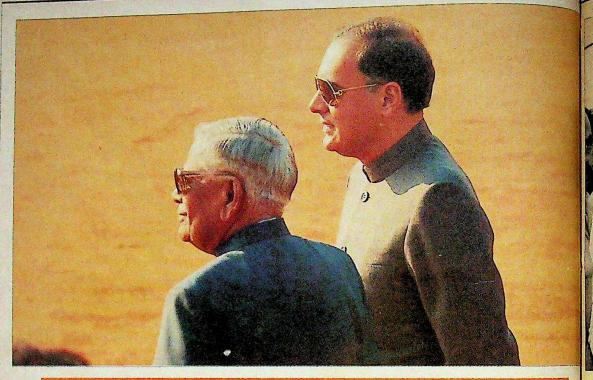
चेवीलाल खेमा असल में उन पिकायतों के कारण यह काम नहीं कर रहा है जिनका देवीलाल ने अपनी चिट्ठी में जिक्र किया है. चिट्ठी में उन्होंने शिकायत की है कि उनके समर्थकों को सरकार और पार्टी के महत्वपूर्ण पद नहीं दिए गए. असल में बाध्यताएं दूसरी हैं. गैर-कांग्रेसवाद का जो नया अभियान इन लोगों ने चलाया था, वह वी.पी. सिंह सरकार के पतन के साथ ही समाप्त हो गया. जनता दल (स) चुनाव नहीं जीत सकती इसलिए जनता दल अब उसे वापस साथ नहीं लेगा.

और अब जबिक इंका समर्थन वापस लेने को तैयार दिखती है, इन लोगों को एक नया ठौर चाहिए. इंका के अलावा उन्हें कोई और ठौर नहीं दिख रहा.

लेकिन खुद देवीलाल के आगे ही सवालिया निशान लगा हुआ है. हो सकता है कि उनकी चौकड़ी को देखकर इंका उन्हें लेने से ही इनकार कर दे. हरियाणा इंका ने उन्हें पार्टी में लेने का विरोध कर ही दिया है. इसलिए इंका देवीलाल को छोड़ उनके बाकी सांसदों को फोडना चाहेगी. हो सकता है कि ताऊ खुद भी इंका के महासागर में विलीन हो जाने की जगह अपनी पहचान बनाए रखने का आग्रह करें.

राजीव स्थायी सरकार ही बनाना चाहेंगे जिसमें कम-से-कम 20 सांसदों का बहुमत तो रहे ही. इसके लिए इंका वी.पी. सिंह खेमे के नाराज लोगों से भी संपर्क रखे हुए है. जनमोर्चा धडे वाले नेताओं अरुण नेहरू, आरिफ मुहम्मद खां के साथ इस खेमे से उसे 10 सांसदों के आने की उम्मीद है. 54 सदस्यों वाले जनता दल (स) से सिर्फ 18 सांसदों को तोड़कर दलबदल कानून से बचा जा सकता है, तो 78 सदस्यीय जनता दल से 25 सांसदों को मिलना पड़ेगा. अभी इतनी सफलता नहीं मिली है.

दूसरा रास्ता 52 वामपंथी सांसदों का



### प्टूपित रामास्वामी वेंकटरामन की हाल की गतिविधियों से लगता है कि वे किसी नए गठजोड़ को बागडोर थमाने की कोशिश में हैं

समर्थन लेने की कोणिण करना था. इसकी कोणिण भी की गई. लेकिन वामपंथी दल अब इधर-उधर भटकने के मूड में नहीं हैं.

#### चंद्रशेखर की चाल

फूटो या साथ रहो

मा नहीं है कि चंद्रशेखर भोंडमी के आश्रम में चुपचाप बैठ गए हों और अब तक जो मिल गया है, उसी पर संतोष कर रहे हों वे इस नीति पर अड़े हैं कि भले ही वे इंका से समझौता कर लें, साझा सरकार बना लें लेकिन इंका में दाखिल नहीं होंगे. अपने लोगों को लाभदायक पदों का लोभ देकर ललचाने और इंका के प्रति नरम रुख रखकर वे भी अपनी सरकार पर आए खतरे को टालने में जुटे हैं.

7 फरवरी को उन्होंने अपने घर पर रात्रि भोज दिया जिसमें देवीलाल, मुलायम सिंह, चिमनभाई और चौटाला शामिल हुए, चंद्रशेखर ने ताऊ की शिकायतें मुनी, उनके कहने पर अयोग्य घोषित पांच सांसदों को मंत्री पद से हटाने और बजट सत्र के पहले मंत्रिमंडल के विस्तार में ताऊ के लोगों को खपाने का बादा किया. उन्होंने इंका से भी राय-मणविरा जारी रखने का सुझाव दिया और चिमनभाई पटेल, पी.वी. नरसिंहराव और सत्यप्रकाण मालवीय वाली तीन सदस्यीय इंका-जनता दल (स) समन्वय समिति को अधिक सिक्वय बनाने की जरूरत बताई. अगले दिन चिमनभाई माफी मांगने वाली मुद्रा में राजीव के घर पहंचे.

इसके बाद प्रधानमंत्री निवास में राजीव गांधी और चंद्रशेखर की भेंट हुई. चंद्रशेखर बातचीत में उग्र ही रहे. उनके एक 'दरवारी' ने बताया कि बातचीत कुछ इस अंदाज में हुई: "आपने ही हमसे शादी का फैसला किया. लेकिन शादी बेमेल है. हम घर में तो झगड़ सकते हैं, सड़क पर नहीं. अगर निभा नहीं सकते तो हमें तलाक ले लेना चाहिए."

चंद्रशेखर ने राजीव को बताया कि इंका के मौजूदा रंग-ढंग के नतीजे गंभीर होंगे. उन्होंने कहा कि पंजाब, असम, विदेश नीति, नौकरशाही किसी भी मामले पर सरकार की पहल का जिस तरह में विरोध कर रही है उससे सरकार कामकाज ठप पड़ गया है. राज़ीव ने विनम्रता से उनकी बाते सुनी लेकिन वादा नहीं किया. आलोचना का स्वा तीखा करने का वादा भर किया.

इस वातचीत के बाद न तो किं हुआ न झगड़ा बंद करने पर सहर चंद्रशेखर सरकार की खाड़ी नीति आलोचना जारी रही. युवक इंको मामले पर सरकार विरोधी बड़े प्रदर्शन तैयारी में लग गई.

#### फायदे में इंका

शत्रु के हौसले ढीले

का चुनावी संभावनाओं के में इतनी अनिश्चित है तो वह बेचैनी से अभियान क्यों चला रही असल में पिछले चार महीनों में कि स्थितियां बदल गई हैं. इंका को बेचैं वाले मंदिर और मंडल के मुद्दे दब वि

बी.पी. सिंह र मावित कर गराने और साथ ही अपनी चला तमिलनाड औ हटाया जा स विरोधी रहे की लय में चलाने के ि ममर्थन पर 3 नाम' मुख्यमं कर्नाटक के त ही लेने बार मुख्यमंत्री का हा है. पंजा का की ही पर भी उसक हेका के नेगाव का स् की आदर्भ कि की छवि न न

ही उन्होंने की



जीव तिमलनाडु के चुनाव का इंतजार, और इंका-जयलिता गठबंधन की जीत की उम्मीद कर सकते हैं

<sup>बी.पी.</sup> सिंह सरकार को गिराकर राजीव ने <sup>माबित</sup> कर दिया है कि उनमें सरकार षिताने और पार्टी तोड़ सकने की क्षमता है. साथ ही आज वे प्रदेशों के मामलों में अपनी चला सकने की बेहतर स्थिति में हैं. <sup>तमिलनाडु</sup> और असम की उग्र सरकारों को हाया जो सकता है. कभी इंका के कट्टर विरोधी रहे मुलायम सिंह यादव अब उसी की लय में गाने लगे हैं. अपनी सरकार ज्ञान के लिए 32 इंका विधायकों के भमर्थन पर आश्रित चिमनभाई तो इंका के भाम मुख्यमंत्री सरीखे लगते हैं. आंध्र और केतिक के ताकतवर मुख्यमंत्रियों से मुक्त हैं तेने बाद राजीव को अपने किसी क्ष्यमंत्री का विरोध भी नहीं झेलना पड के पंजाब और उल्फा के मसलों पर की की ही चल रही है तथा विदेश नीति गर भी उसका असर बढ़ रहा है.

तरह मे

ाजीव ने

ते लिकिन

का स्वा

तो 'तन

पर सहस

डी नीति

क इंका बड़े प्रदर्शन

हीले

ओं के

तो वह

ला रही

तें में वर

को वेजैन

हे दव ग

या.

के के दिगाओं का मानना है कि निव का सामना किए विना सत्ता पा लेने को आदर्श स्थिति यही है. लेकिन चंद्रशेखर को श्रिव न तो इतनी खराब हुई है और न ही जिल्ला हतना खराब हुइ ए जिल्ला कोई ऐसा फैसला किया है जिससे उनकी सरकार की बरखास्तगी को उचित ठहराया जा सके.

#### इंका के लिए पहला विकल्प

तमिलनाडु चुनाव की प्रतीक्षा

- मिलनाड् सरकार को गिराने का फैसला चंद्रशेखर और उनकी सरकार के प्रति उतनी नाराजगी नहीं पैदा कर पाया जितनी इंका के प्रति. इंका की छवि को इससे ज्यादा नुकसान हुआ.

इसलिए सरकार गिराने तथा दलबदल के जरिए सरकार बनाने की क्षमता होते हुए भी राजीव एक विकल्प पर विचार कर रहे हैं: तमिलनाडु विधानसभा के चुनाव नतीजों का इंतजार किया जाए. इंका-अन्ना द्रमुक गठवंधन जीता तो साबित हो जाएगा कि बहुमत वाली सरकार को गिराकर भी इंका चुनाव जीत सकती है. इससे इंका के पक्ष में हवा भी बन सकती है और सांसद भी बड़ी संख्या में उसकी ओर आ सकते हैं. ऐसी स्थिति में इंका केंद्र सरकार को गिराकर

तमिलनाड् लहर के सहारे नया आम चुनाव जीत सकती है.

#### दूसरा विकल्प

सांप मरे, लाठी न टूटे

राजीव सहयोगियों का कहना है कि वे अपने ऊपर सरकार तोडक का ठप्पा नहीं लगने देंगे. उनका मानना है कि वे फरवरी में हो रहे बजट सत्र के लिए एक अलग रणनीति पर विचार कर रहे हैं. इस सत्र में अनेक वित्त विधेयक ही. इंका रणनीतिज्ञों का मानना है कि जनता दल (स) अपने सारे सांसदों को एकजूट रखने में सफल नहीं होगा. इंका अपने महयोगी दलों पर वित्त विधेयक पर मतदान से

दूर रहने का दवाब डालेगी. इंका समर्थन देती रहे तब भी मात्र 11 सांसदों का समर्थन न मिलने से चंद्रशेखर सरकार का वित्त विधेयक गिर जाएगा और साथ ही सरकार भी. इस तरह इंका तख्ता भी पलट देगी और इसकी बदनामी से भी बच

जाएगी. वह कहेगी कि सरकार हमारे समर्थन के अभाव में नहीं, अपने लोगों को ही संभालकर नहीं रख पाने के चलते गिरी. तब इंका का मुख्य चुनावी नारा होगा-स्थायी सरकार इंका ही दे सकती है.

अगर सरकार अपने आप गिर जाती है तो कायदे से राष्ट्रपति विपक्ष के नेता को सरकार बनाने का न्यौता देंगे. इस पद पर मौजूद लालकृष्ण आडवाणी इसे स्वीकार नहीं कर सकते क्योंकि भाजपा चाहती है कि मध्यावधि चुनाव हों. फिर सबसे बड़ी पार्टी के नेता राजीव गांधी को सरकार बनाने का मौका मिलेगा.

संभावना यही है कि तब वे सरकार बनाएंगे, और कुछ नहीं तो चुनाव के पहले लाभ की स्थिति में रहने के लिए ही सही. चुनाव अपरिहार्य है क्योंकि अल्प बहमत और संकट पैदा करने वाले जनता दल नेताओं के समर्थन से वे अधिक समय तक काम नहीं कर पाएंगे. इसलिए प्रभावी बहुमत के लिए और पार्टी में संकट पैदा करने वालों से मुक्ति पाने के लिए राजीव को फिर से जनता के पास जाना ही होगा.

अदनान खाशोगी

# रौब जमाने की तिकड़में

हथियारों के बदनामशुदा दलाल के लिए बड़े-बड़ों ने पलक पांवड़े बिछाए



दिल्ली में डॉ. जे.के. जैन और उनकी पत्नी ने खाशोगी का पारंपरिक शैली में स्वागत किया

#### -हरिंदर बवेजा

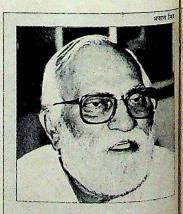
उनका दावा है कि वे फोन उठाकर सऊदी अरव के शाह फहद या मिस्र के होस्री मुवारक से सीधे बात कर सकते हैं, यहां तक कि सद्दाम हसैन और जॉर्ज बूश से भी. पिछले दिनों यहाँ शख्स जब नई दिल्ली आया तो उसके स्वागत में पूर्व और वर्तमान प्रधानमंत्री के भी दरवाजे खुल गए. लेकिन भारत में किसी व्यक्ति के बारे में उसके साथ रहने वालों से राय बनती है. हथियारों के अंतरराष्ट्रीय दलाल अदनान खाशोगी कोई ऐसे गब्स नहीं हैं जिनके साथ महफिल जमाई जाए

खाशोगी ने भारत में जिनके यहां दावतें उड़ाई उनके दरवाजे खुलवाए विवादास्पद चंद्रास्वामी ने जिन्हें खाँशोगी अपना 'गूरु' और दोस्त कहते हैं. अपने दोनों बेटों मुहम्मद और ओमर, निजी सचिव, सहायक हेयर ड्रेसर और सुरक्षा गाडों के साथ जब वे आलीणान डीसी-10 जहाज से नीचे उतरे तो उनका जोरदार स्वागत हुआ. स्वागत करने वाले कोई ऐसे-वैसे लोग नहीं थे.

चंद्रास्वामी के साथी कैलाशनाथ अग्रवाल उर्फ मामा जी, प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के निजी सचिव सी बी. गौतम और भाजपा सांसद डॉ. जे.के जैन ने मालाएं पहनाकर उनका स्वागत किया.

कारवां भोंडसी के आश्रम की ओर चल पडा. प्रधानमंत्री के इस निजी फार्म हाउस पर वे चंद्रशेखर और अपने गुरु चंद्रास्वामी से मिले वहां मौजूद एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के अनुसार, "सव काफी खुण नजर आ रहे थे. खाशोगी इस बात से कि चंद्रास्वामी की प्रधानमंत्री तक सीधी पहुंच हैं, चंद्रशेखर इस बात से कि खाशोगी चंद्रास्वामी के कितने करीव है, और चंद्रास्वामी इस बात से कि उन्होंने सही ज्गाड़ आखिर विठा ही लिया." पर अपने वचाव में चंद्रास्वामी का कहना है कि "मैं चाहता था कि वे भोंडसी आएं और देखें कि प्रधानमंत्री कितने सरल ढंग से रहते हैं."

बागोगी के लिए आयोजन जे.के. जैन के रात्रिभोज में न जाने वाले एक वरिष्ठ मंत्री का कहना था, "अगर आप सिर्फ अपने स्वामी के दर्शन को आए हैं तो फिर



चंद्रशेखर और

म्या मतलब? र्ज्ञ जिम्मेदारी प्राधार बनाना माय भोजन क पर जाहिर मोबते. उन्हें त

बताया गया थ

वीडिय

आदर

उन्होंने बताया कि वे मुझे ग्रामीण विकास के लिए पैसा देना चाहते हैं मैंने बडी विनम्रता से इनकार कर दिया"

नानाजी देशमूख

Curukul Kangri Collection, Haridwar

बंद्रभेवर और राजीव गांधी से मिलने का विश्वापतलब? जब आप पर सरकार चलाने की जिम्मेदारी हो, तो आपको कोई नैतिक <sub>जाधार</sub> बनाना ही होगा कि आप किसके भाय भोजन करेंगे और किसके साथ नहीं.'' पर जाहिर है कि प्रधानमंत्री ऐसा नहीं मोबते. उन्हें तो उस भोज का एक आकर्षण वनाया गया था. निमंत्रण पत्र में सिर्फ यही

नहीं लिखा गया कि भोज खाशोगी के सम्मान में हो रहा है, वरन यह भी लिखा गया कि प्रधानमंत्री ने "दयापूर्वक इसमें शामिल होने की सहमित'' दी है. चंद्रशेखर वहां एक घंटे तक रहे. जैन के अपने स्टुडियो के ही दल द्वारा खींची गई इस भोज की वीडियो फिल्म में दिखाया गया है कि खाशोगी जैन की मां के साथ टहल रहे हैं,

जाए. वे इसे वेचने को भी तैयार हैं. 20 मिनट की फिल्म की कीमत 60,000 ह. प्रति मिनट है.

न्यौता लालकृष्ण आडवाणी को भी मिला था पर उन्होंने जाने से इनकार कर दिया. उन्होंने कहा, "मुझे दावत से कुछ देर पहले ही निमंत्रण मिला. मैं खाशोगी को विलकल भी नहीं जानता. पर मैं ऐसी छवि

> वाले आदमी से मिलना भी नहीं चाहंगा." पर ऐसे बहुत से लोग थे जिनके लिए खाशोगी से मिलना ही अहोभाग्य था. मेहमानों में प्रमुख थे फारूक अब्दुल्ला, डॉ. सूब्रह्मण्यम स्वामी, ओम प्रकाण चौटाला, आरएसएस पराने अलंबरदार नानाजी देशमूख, उद्योगपति जयंत मल्होत्रा और विष्णु डालिमया. चंद्रास्वामी छह साधुओं समेत वहां पधारे थे.

कथित गृह और शिष्य असरदार और समर्थ लोगों पर रंग जमाने में लगे हए थे. और यह भी शायद सिर्फ संयोग ही नहीं था कि दावत के दौरान उनके खाशोगी के लिए एक फोन आया. फोन पर बात करने के बाद उन्होंने जैन से पूछा कि क्या उनके पास एसटीडी वाला

फोन होगा क्योंकि उन्हें त्रंत ही शाह फहद से बात करनी है. दावत के एक मेहमान ने 'टेलीफोन नाटक' का जिक्र करते हुए कहा कि "यह खुद के प्रचार की यात्रा थी."

लेकिन 'गूर' का दावा है कि "अगर प्रधानमंत्री चाहें तो खाशोगी 30 अरब डॉलर के कर्ज का इंतजाम कर सकते हैं. इससे क्या होगा? पैसे चंद्रशेखर की जेब में तो नहीं जाएंगे. यह तो भारत की बेहतरी के लिए इस्तेमाल होंगे." खबर है कि भोंडसी फार्म हाउस में खाशोगी ने यही प्रस्ताव रखा कि वे सऊदी अरब के शाह से भारत के लिए 3 अरब डॉलर का कर्ज ले सकते हैं. कहा जाता है कि खाशोगी ने प्रधानमंत्री से यह भी कहा कि वे इस बात के सबूत भी जुटा सकते हैं कि जॉर्डन के जिरए राजीव गांधी को बोफोर्स का पैसा कैसे मिला. खाशोगी जानते हैं कि इंका के समर्थन पर निर्भर चंद्रशेखर के लिए यह जानकारी फायदे की हो सकती है.

दोनों पक्षों से बात बनाए रखने की अपनी शैली के अनुरूप (ताकि वे एक का इस्तेमाल दूसरे के खिलाफ कर सकें)



वीडियो फिल्म में चंद्रशेखर और एक साधु के साथ खाशोगीः विवादास्पद साथ

भयान सिह

भवान वि

के वे

स के

इते हैं

र से

**खा**शोगी को मैं नहीं जानता. पर मैं ऐसी छवि वाले आदमी से मिलना भी नहीं चाहूंगा" लालकृष्ण आडवाणी

खाशोगी प्रधानमंत्री के साथ बैठे हैं और जैन की पत्नी रागिनी स्वागत में उनकी आरती उतार रही हैं.

खाशोगी का सत्कार करके डॉ. जैन खुद को 'धन्तभाग' मानते हैं. उनका कहना है कि, "यह एक सादा सामाजिक भोज था. जब मैं न्यूयॉर्क में उनके यहां ठहरा था तो उन्होंने भी मेरी खातिरदारी की थी. अब यहां मेरी बारी थी. क्या मैं बिना शराब-कबाव की एक साधारण सी दावत भी नहीं दे सकता? क्या हुआ कि वे हथियार बेचते हैं. हमारी पार्टी की भी नीति है कि हम सामाजिक और राजनैतिक छुआछुत में विश्वास नहीं करते." पर भाजपा इससे काफी परेशानी में पड गई. पार्टी को लगा कि उसने चंद्रशेखर और राजीव दोनों पर एक साथ हमला करने का एक अच्छा मौका खो दिया. प्रतिष्ठित राष्ट्रीय कार्यकारिणी से जैन को निकालकर पार्टी ने अपने गुस्से का इजहार भी कर दियाः

अब जैन दूरदर्शन को यह प्रस्ताव भेजने की योजना बना रहे हैं कि दावत की वीडियो फिल्म दूरदर्शन पर प्रसारित की



उनसे मैंने पश्चिम एशिया पर बात की. मुझे उनसे मुलाकात करने में कोई खराबी नहीं दिखाई

रोमेश भंडारी

# सैया भए कोतवाल...

प पर जालसाजी का आरोप आ लगा हो, तो परेणानी की कोई बात नहीं. यहां तक कि अगर आप पर 'फेरा' के तहत मुकदमे चल रहे हों या सीबीआई आपकी जांच-पडताल कर रही हो, तब भी चिता का कोई कारण नहीं क्योंकि आप प्रधानमंत्री के दोस्त हैं. और इसके साथ-साथ अगर आपमें वह 'आध्यात्मिक' गुण है जो हथियारों के बदनाम सौदागर अदनान खाशोगी को इसलिए सरपट दिल्ली खींच लाता है तो आपकी चहंमुखी सुरक्षा में कतई संदेह नहीं. चंद्रास्वामी अपने प्रिय शिष्य खाशोगी सरीखी ही बेलौस और शानदार जिंदगी जीते हैं.

स्वामी के खिलाफ चल रही जांच-पड़तील में सीबीआई और प्रवर्तन निदेणालय दोनों ही सक्रिय हैं. और जबसे उनके दोस्त चंद्रशेखर सत्तासीन हुए हैं, इस स्वयंभू तांत्रिक को खासी सियासी अहमियत हासिल हो गई है. स्वामी देशभर में हवाई दौरों में व्यस्त हैं. कभी वे अयोध्या में विश्व हिंदू परिषद के लोगों के साथ मंत्रणा कर रहे होते हैं तो किसी और दिन हैदराबाद में मूसलमान नेताओं के साथ मिल-वैठ रहे

चंद्रशेखर की ताजपोशी के दो सप्ताह के भीतर ही वे विदेश से वापस आ गए. और उनकी वापसी के बाद से किसी भी जांच टीम ने उनसे पूछताछ नहीं की है. उनसे जुड़ा एक लंबित मामला वह है जिसमें एक आप्रवासी भारतीय लख्भाई नाटंक ने उन पर आरोप लगाया था कि उन्होंने छह वर्ष

पहले छल से उनके 100,000 डॉलर हथिया लिए. 25 नवंबर को उनकी वापसी के बाद प्रवर्तन निदेशालय ने स्वामी के खिलाफ पांच वारंट जारी किए हैं पर ऊंची पहंच से लैस यह

स्वामी एक बार भी निदेशालय के अफसरों के सामने हाजिर नहीं हुआ. उनकी वापसी के एक दिन बाद 26 नवंबर को दिल्ली हाईकोर्ट में उनकी जमानत की अर्जी पर सुनवाई थी. अदालत ने फैसला मुनाया कि वे 30 नवंबर के दिन या उससे पहले जांचकर्ता अधिकारियों के सामने हाजिर हों. स्वामी ने मेडिकल सर्टिफिकेट भेज दिया कि उन्हें फिलहाल एक सप्ताह के आराम की सख्त जरूरत है.

ल्काछिपी का यह खेल सेंट किट्स मामले में भी चल रहा है. इसमें उनके साथी कैलाशनाथ अग्रवाल सिर्फ मामा जी, खाशोगी के दामाद तथा कुछ और सरकारी अधिकारियों पर जालसाजी के जरिए वी.पी. सिंह और उनके बेटे अजेय सिंह की प्रतिष्ठा का हनन करने के लिए फर्जी दस्तावेज तैयार कराने का आरोप है. अप्रैल 1989 में सीबीआई की दर्ज की गई प्राथमिकी के अनुसार स्वामी ने दस्तवतों की नकल उतारकर यह साबित करने की कोशिश की थी कि अजेय सिंह के नाम से विदेशी खाता चल रहा है. इस मामले में भी स्वामी ने सीवीआई के जांच दल के सामने आने से

खाणोगी राजीव से भी मिले और क कहा कि अरव जगत में अपने संपक्ष इस्तेमाल करके वे खाड़ी युद्ध से पैक संकट में उन्हें महत्वपूर्ण भूमिका निभान मौका दे सकते हैं.

बुवारी के बेटे

व्यारी ने इस

बाजोगी ने मु

को (वावरी)

करने की भी

बताया. 'खाण

ग्रद में वहां रे

धा कि वे वह

धसपैठ करने

बाशोगी मुस्ति

जाने के लिए

वाजोगी ने य

मऊदी अरब

पतवा हासिल

गा, नायव

अनुसार, "अन

मरपरस्ती मा

पर खाश

मऊदी अरब

इसके राजदूत

कहा कि खाश

पर ऐसे स

इसके अलावा खाणोगी इंका के कि प्रकोष्ठ के संयोजक रोमेश भंडारी में मिले. भंडारी का तर्क था, "मैंने क पश्चिम एशिया की स्थिति पर बात की शब्स ने अपने बूते नाम कमाया है उनसे मुलाकात करने में कोई खराबी: दिखाई देती."

हथियारों के सौदों और भू-संपत्ति व वैंकिंग व्यवसाय में निवेश से करोड़ों इन कमाने वाले खाशोगी भारत में निवेश भी अपनी नजरे गड़ाए हुए हैं। वरिष्ठतम राजनीतिक के शब्दों में "मार्के है तो भी ह के मामले में पिछले साल अमेरिकी अदाल से बरी होने के बाद खाणोगी के अंदर दलाल फिर मे नए सौदों की तलाग निकल पडा है. और इसके लिए अपने की मातुभूमि से वेहतर जगह क्या होगी खाशोगी अपनी अमीरी का जल

चंद्रास्वामी, खाशोगी और एलीजाबेथ है

दिखाना जानते हैं. भोज में शामिल लोगों के सामने अपनी दौलत का प्र भी उन्होंने किया. नानाजी देणमु बताया, "उन्होंने बताया कि वे मुझे ग्रा विकास के लिए पैसा देना चाहते हैं वड़ी विनम्रता में यह कहते हुए इनकी दिया कि हम विदेशी पैसा नहीं लेते पता नहीं था कि खाणोगी वहां होंगे व में वहां न जाता."

मामा जी के घर पर दोपहर की दावत में जामा मस्जिद के इमाम अर्थ

को मुण क वदाम्बामी व वाणोगी

मवाल खड़े ह दर्ज का बद रेमभूमि-बा मुहा में दग्वल और इंका नेत मनाव पर

पुराना चित्र

मक्ती अरब

वेयान से यह

ublic Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ख्द को बचाए रखा है.

विवारी भी मौजूद थे. Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

वसारी ने इस बात का खंडन किया कि वार्गा ने मुसलमानों के धार्मिक नेताओं को (बाबरी) मस्जिद हटाने के लिए तैयार करतं की भी कोणिण की अहमद बुखारी ने क्ताया. 'खाशोगी से परिचय होने के तुरत बार में वहां से चला आया. मुझे नहीं पता श कि वे वहां आएंगे." अयोध्या विवाद में इसपैठ करने वाले चंद्रास्वामी चाहते थे कि बागोगी मुस्लिम नेताओं को मस्जिद हटाए गत के लिए मनाएं कहा जाता है कि बाजोगी ने यह प्रस्ताव भी किया कि वे मुद्भी अरब से मस्जिद हटाए जाने के लिए फ़्तवा हासिल कर सकते हैं.

नं संपक्तें

से पैदा

निभाने

का के बि

डारी मे

"मैंने उ

वात की

ाया है.

खरावी न

-संपत्ति व

तरोडों डॉन

ए हैं ए

के अंदर

ति तलाग

ए अपने भ

क्या होगी

पर ऐसे मुझाव भी टांय-टांय फिस्स हो में निवेश न<sub>गए नायब</sub> इमाम अहमद बुखारी के अनुसार, "अगर फतवा जारी भी हो जाता में मार्क है तो भी हम सऊदी अरब की मजहबी रकी अदाल मरपरस्ती मानने को वाध्य नहीं."

पर खाणोगी को सबसे बडा झटका मऊदी अरब से ही लगा. नई दिल्ली में इसके राजदूत फउद मुफ्ती ने एक वयान में कहा कि खाशोगी के प्रस्ताव उनके अपने हैं,

खा शोगी से परिचय होने के तुरंत बाद ही मैं वहां से चला आया. मुझे नहीं पता था कि वे वहां आएंगे" अहमद बुखारी



# ों के उस्ताद

अगर सौदा अरबों डॉलर का हो तो उन्हें आसपास ही मंडराते देखा जा सकता है. और सौदे की रकम का एक हिस्सा उनकी जेव में जाता है. वे विचौलिया, दूरंगी चाल चलने वाले

और ऊंची पहुंच वाले शस्स हैं. उनके संपर्क सत्ताधारियों तक से हैं. जब वे पिछले साल न्यूयॉर्क में 9 अरब डॉलर की जमानत पर छुटे थे तो उन्हें इलेक्ट्रॉनिक संकेतक कंगन पहना दिया गया था ताकि वे पुलिस की आंखों में धूल न झोंकें.

1989 में अमेरिकी अधिकारियों के अनुरोध पर स्विट्जरलैंड में गिरफ्तार किए जाने तक खाशोगी को रोकने वाली कोई ताकत नहीं थी. (खाशोगी को इस आरोप में गिरफ्तार किया गया था कि उन्होंने मार्कोस के साथ मिलकर एक फर्जी दस्तावेज तैयार किया और उसमें यह दिखाया कि मार्कोस ने उन्हें अपनी कुछ संपत्ति वेच दी है). खाशोगी के पास 12 इमारतें, 100 मर्सीडीज बंद कारें

और 7.6 करोड डॉलर मूल्य का एक बजरा था. बाद में उन्होंने इस बजरे को 2.7 करोड डॉलर में डोनाल्ड ट्रंप को वेच दिया. खाशोगी को विभिन्न सौदों, खासकर हथियारों के सौदों से सालाना लगभग 10 करोड़ डॉलर कमीशन मिलते थे. सऊदी अरब का लगभग 80 फीसदी हथियार वे ही बेचते थे.

3 जुलाई 1990 को रिहा होने तक खाशोगी के पास संपत्ति के नाम पर फांस, स्पेन और न्यूयॉर्क में 5 करोड़ डॉलर मूल्य के मकान और एक जेट बच गए थे. अदालत में वे कलाकृतियों और जायदाद में लाखों डॉलर का दावा छोडने पर सहमत हो गए और बदले में अमेरिका ने उनके खिलाफ कई मामले वापस ले लिए.

खाशोगी बड़े गर्व से अपने धंधे का बचाव करते हैं. अमेरिका में जमानत पर छुटने के बाद उन्होंने एक पत्रकार से कहा, "मैं एक व्यापारिक दलाल हूं और मैंने हथियारों की विक्री बढाकर काफी रकम कमाई है" ईरान में जो कुछ वे कर रहे थे वह हथियार बेचने से ही संबंधित रहा होगा क्योंकि जब ईरान-कोंट्रा सौदे का भंडाफोड़ हुआ और अमेरिकी राष्ट्रपति निवास हिल उठा तो उससे खाशोगी का नाम जोड़ा गया. उन्होंने कहा, "मैंने खुद बम नहीं गिराए, बल्क अपने तेल क्षेत्रों की रक्षा के लिए हथियार वेचे. इसमें बूरा क्या है?"

उन्हें अपनी दलाली से, जिसे वे हथियारों की बिक्री बढाने का काम कहते हैं, कोई गिला नहीं है. 'न्यूयॉर्क पोस्ट' को दिए एक इंटरव्यू में तो उन्होंने यह तक कहा कि वे लॉकहीड और नार्थरप जैसी कंपनियों के लिए बाजार की तलाश में मदद कर अमेरिका में रोजगार का सुजन कर रहे हैं. उन्होंने पूछा, "क्या आप अमेरिकी शेयरधारकों पर गंदा होने का आरोप लगा रहे हैं क्योंकि वे विमान बनाते हैं? जब मैं तस्वीर में आया तो लॉकहीड लगभग दिवालिया हो चुकी थी. मैंने उसे उबारा."

-रेखा बस्, न्युयॉर्क में



ोजाबेथ हैं

शामिल

का प्रद

देशम्ब

मुझे ग्रा

गहते हैं

इनकार

हीं लेते

ं होंगे क

गहर की ाम अब्द मुद्री अरव का उनसे कोई लेना-देना नहीं वेगान से यह जाहिर हो गया कि सरकार को मुण करने के लिए खाशोगी तथा वेद्रास्वामी कहां तक जा सकते हैं.

षाणोगी की चार दिन की यात्रा ने कई भवान बड़े कर दिए खाशोगी जैसा परले के का वदनाम आदमी भी क्या राम भूमिन्वावरी मस्जिद विवाद जैसे घरेलू के देवल दे सकता है? क्या प्रधानमंत्री की इका नेताओं को वित्तीय मदद के उनके क्षताव पर कान देने चाहिए थे?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri जद (स)-भाजपा-जद

# बाजी जीतने की जहांजहद

चुनाव की अटकलों के मद्देनजर तीन गैर-इंकाई पार्टियां धूल झाड़ने और चेहरा चमकाने की कोशिश में ताकि अपने-अपने वोट बैंक को अच्छी तरह भुना सकें

-इंद्रजीत बधवार

साकिरणों को उलट-पलट देने वाली राजनैतिक उठापटक में फंसी पार्टियों ने पिछले पखवाड़े अपनी धूल झाड़ने और चेहरा चमकाने का काम किया. जयपुर में भाजपा, बलिया में जनता दल

(स) और पुरी में जनता दल के विशाल सम्मेलनों में इनके नेताओं को वी.पी. सिंह के शासनकाल में अपनी भूमिकाओं का लेखा-जोखा अपने कार्यकर्ताओं के सामने देना पड़ा. और साथ ही उन्होंने केंद्र में अपनी सत्ता बचाने या हथियाने की भावी रणनीति पर भी विचार-विमर्श किया.

साल भर पहले ये तीनों पार्टियां शासक गठबंधन का अंग थीं. आज जबिक चुनाव की अटकलें गरम हैं, ये पार्टियां बहुकोणीय मुकाबलों की संभावना पर विचार कर रही हैं. उन्हें यह भी मालूम है कि जब भी चुनाव हुए, उन्हें मतदाताओं को राष्ट्रीय राजनीति में उठापटक कराने और सांप्रदायिक उपाद के साथ ही अस्थिरता का नया दौर

लाने में अपनी भूमिका की सफाई देनी होगी. इन तीन सम्मेलनों में तीनों में से किसी भी पार्टी ने अपनी कोई भूल स्वीकार नहीं की. नेताओं ने पिछले कुछ हंगामा भरे महीनों की अपनी भूमिकाओं को 'राष्ट्रीय हित' की पोषक बताने का ही नाटक किया.

जनता दल (स) के लिए बिलया का जमावड़ा उसके अपने अंदर की वैचारिक उलझनों का ही परिचायक रहा. लोहियावादी गैर-कांग्रेसवाद अब कांग्रेस के भरोसे ही कैसे चल रहा है? इस सवाल का कोई जवाब नहीं दिया गया सिवाय इस औपचारिक बयान के कि इंका समाजवादी और गैर-सांप्रदायिक है. दरअसल सम्मेलन में जिस शख्स ने सबसे खुले तौर पर कांग्रेसी एहसान को कबूला, वे और कोई नहीं अब तक कांग्रेस के जानी दुश्मन रहे मुलायम सिंह यादव ही थे.

पार्टी के नेताओं ने बार-बार कहा कि मंडल विवाद पर देश को विभाजित कर देने

वार्त अनीत नैत

वाली वी.पी. सिंह सरकार को गिराना राष्ट्रीय हित में था. पर साथ ही उन्होंने बिना किसी बदलाव के आरक्षण लागू करने का वादा भी दोहरा दिया. पार्टी संगठन बनाने की जगह केंद्र में सरकार बचाए रखने की रणनीति पर चर्चा ने ही अधिक समय ने लिया. सम्मेलन हुआ, खत्म हुआ नेकिन यह फैसला नहीं हो पाया कि जनता दल (स) राजनैतिक पार्टी हो गई है या सरकारी पार्टी ही है.

भाजपा के लिए यह नेता बदलने— लालकृष्ण आडवाणी की जगह मुरली मनोहर जोशी को लाने —का समय था. इसने वी.पी. सिंह सरकार के गिरने कारों अपना समर्थन वापस लेने के फैसले को देकर वी.पी. सिंह की सत्ता की भूष के दिया. लेकिन अपनी चुनावी रणनीति बारे में यह पार्टी बिलकुल स्पष्ट है—अके चुनाव में उतरना, मंदिर आंदोलन से क हिंदू आधार को बचाए रखते हुए हि

राष्ट्रवाद' पर जोर देकर हैं उदार लोगों को भी अपनी हैं आकर्षित करना.

जनता दल वी.पी. सिंह के ए रटाए राग ही अलापता रहा बाबरी मस्जिद मुद्दे पर कि कट्टरपंथियों और मंडल मुद्दे पड़ी जातियों से समझौता न कर पार्टी ने सरकार की बिल दे ई इसका चुनावी नारा भी साफ देश में रैलियां आयोजित करके ह नारे का परीक्षण भी जारी दिस्असल यह पार्टी का सम्में नहीं बल्कि ऐसी ही रैली की तर का आयोजन लग रहा था.

बहरहाल, इस पखवाड़े यह एकदम साफ हो गया कि बहुत स्पष्ट कार्यक्रम और रणनीति बा दोनों पार्टियां—भाजपा और जर-

को पता है कि चुनाव हुए बिना वे केंद्र सत्तासीन होने की सोच भी नहीं सकत उनके सम्मेलनों में चुनावी रणनीति पर्रा ज्यादा जोर रहा.

चंद्रशेखर के जनता दल (स) की हुँ कोशिश मतदाताओं के पास गए बिना की में बने रहने की है. इस हिसाब से इस ह का बिलया में हुआ सम्मेलन कुल मिलाई 'मित्र मंडली' का जमावड़ा ही लगा लेकि यह बात भी महत्वपूर्ण है कि ठीक ऐसी मंशा (चुनाव में उतरे बगैर क हथियाने) रखने वाली इंका ने तो सम्मेर्व कराना भी जरूरी नहीं माना जनता दल

अल

बुद अपनी

पाने में अर

शा सक बने रहने देने का भाव राजनैतिक । का एहसास. विलया रे इस सम्मेल मिश्र ने त प्रतिनिधियों कर लेनी = महारे चल फैसले नही मचवयानी वयान वहां उत्साह का र जनेश्वर वयान और

राजनैतिक व बर्जा के व सम्मेलन पर सम्मेलन का उवाऊ-स् कुल मिलाव स्थिति पर

में ही रहे

मंगठन के

विडंबना य



जनता दल (स)

गरने का हो

फैसले को

की भूष

रणनीति

न्ट है—अवे

रोलन से व

ते हुए 'ि

देकर

अपनी अ

सिंह के व

ता रहा

ल मुद्दे

ता न कर

वलि दे द

भी साफ

त करके

जारी

ना सम्मेल

नी की ता

वाडे यह

कि बहुत

ानीति वा

और जद

ा वे केंद्र

नहीं सकत

नीति परां

) 前班

- बिना मा

से इस

ल मिला

नगा. लेकि

क ऐसी

वगैर सर्व

तो सम्मेत

था.

पर

# का सकट

खुद अपनी दिशा तय कर पाने में असफलता का एहसास

वातें नजर आई—एक तो सत्ता में सक दल के सम्मेलन में दो खास बने रहने देने के लिए इंका के प्रति कृतज्ञता का भाव और दूसरे, अपनी अलग राजनैतिक पहचान बना पाने में नाकामी

विलया से 30 किमी दूर देवस्थली में हुए अ सम्मेलन के तेवर रेलमंत्री जनेश्वर मिथ ने तय कर दिए जब उन्होंने र्यतिनिधियों से कहा, "हमें यह सचाई कबूल कर लेनी चाहिए कि हम बैसाखियों के महारे चल रहे हैं, इसलिए बड़े राजनैतिक मिले नहीं कर सकते." उनकी यह भववयानी काविलेगौर तो थी मगर ऐसे वयान वहां आए 10,000 प्रतिनिधियों में उत्साह का संचार नहीं कर सकते थे.

जनेश्वर मिश्र ने ईमानदारी भरा एक ग्यान और दिया कि "अब तक हम सरकार में ही रहे हैं. अब हमें एक राजनैतिक भाका के रूप में उभरना है." लेकिन विद्वना यह रही कि दल की अलग राजनैतिक पहचान बनाने जैसी बातों पर विक्रों के बदले इंका का स्तुतिगान ही सम्मेलन पर हाबी रहा.

मम्मेलन की एकमात्र उपलब्धि दो पन्नों के कि कि केल मिलाकर देण की मौजूदा राजनैतिक ियति पर घिसा-पिटा बयान भर लगता है.

देवस्थली में चंद्रशेखर

इसलिए लगा कि जब यह दल अपनी दिशा ही तय नहीं कर पा रहा है, तो देश को नई दिशा क्या दे पाएगा. प्रस्ताव में अनमने ढंग से कहा गया है कि मंडल रिपोर्ट को लागू किया जाएगा. तूरंत बाद इसमें जोडा गया है कि अगड़ी जातियों के आर्थिक दृष्टि से पिछड़े लोगों की भी मदद की जाएगी.

पार्टी कार्यकर्ताओं से एकजूट होकर उन नीतियों के पक्ष में जनमत तैयार करने का आह्वान किया गया है जिनके पालन से भारत तमाम दूसरे देशों के मुकाबले बीस वने. लेकिन इन नीतियों की खास बातें क्या होंगी यह प्रतिनिधियों की कल्पना शक्ति के भरोसे छोड़ दिया गया. महासचिव दया शरण सिंह, जो कि विधायक हैं, अधिक स्पष्ट थे, "दो विचारधाराएं हैं-जनता दल को मजबूत किया जाए और धर्मनिरपेक्ष तथा लोकतांत्रिक ताकतों के साथ मिलकर सांप्रदायिकता से लड़ा जाए या वामपंथी दलों, इंका तथा समान सोच वाली पार्टियों के साथ साझा मोर्चा बनाया

सम्मेलन में नाराजगी का ही माहौल हावी दिखा. पार्टी के बड़े नेतागण चंद्रशेखर की कार्यशैली से नाराज थे, तो देवीलाल की अगुआई में असंतुष्टों का खेमा अपनी उपेक्षा के कारण नाराज था जबकि कार्यकर्तागण इसलिए नाराज थे कि उन्हें अपने विचार व्यक्त करने का पर्याप्त अवसर नहीं मिला.

बहरहाल, इस तीन दिवसीय कवायद की मुख्य उपलब्धि 'त्रिमूर्ति'—चंद्रशेखर, देवीलाल और मुलायम-को सर्वशक्ति-मान के रूप में प्रतिष्ठित करना रही. फिर भी जमावड़ा उखड़ने के बाद यही विरोधाभास उभरा कि जद (स) सरकारी दल ही है, कोई राजनैतिक संगठन नहीं.

-फरजंद अहमद देवस्थली में

# मंडल-मंदिर का दामन

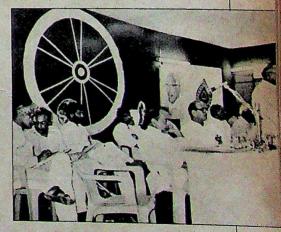
सारी रणनीति वोट बैक के गणित पर आधारित

गामी चुनाव में जनता दल आ सामाजिक न्याय के मुद्दे को जनता के सामने इस तरह पेश करेगा मानो यह उसी की खोज हो. पिछले पखवाड़े ओडीसा के पूरी शहर में हुए इसके सम्मेलन में उम्मीद का माहौल दिखा. पार्टी को उम्मीद है कि मंडल-मंदिर के मुद्दे उसकी झोली में इतने वोट तो डाल ही देंगे कि वह वामपंथी दलों के साथ मिलकर सरकार बना सके.

इसके नेताओं ने दल की रणनीति इन्हीं दो मुद्दों और मतदाताओं के दो समुद्दों-अल्पसंख्यकों और पिछड़ों-को लक्ष्य करके ही तैयार की है. वी.पी. सिंह सरकार में राज्यमंत्री रहे श्रीकांत जेना ने बताया, "संभ्रांत और शहरी लोगों के वोट इंका और भाजपा के बीच बंट जाएंगे. इससे जद पिछड़ों और अल्पसंख्यकों के वोटों के बल पर आगे ही रहेगा." वामपंथी दलों के साथ जद के रिश्ते की अहमियत को बार-बार जताया गया. वरिष्ठ नेताओं का विचार है कि यह गठजोड़ लोकसभा की 250 सीटें जीत सकता है.

अपनी नीतियां तय कर लेने के बाद जद ने इस सम्मेलन को अपनी धर्मनिरपेक्ष छवि को प्रचारित करने का माध्यम बनाया. सम्मेलन का नाम भगवान जगन्नाथ के एक मुसलमान भक्त के नाम पर 'सलाबेग नगर' रखा गया और पार्टी प्रवक्ता जयपाल रेड़ी

पुरी में जनता दल का सम्मेलन



उस चिरपरिचित टेक को दोहराते रहे कि उनके दल ने धर्मनिरपेक्षता के आदर्श के लिए अपनी सरकार क्रबान कर दी

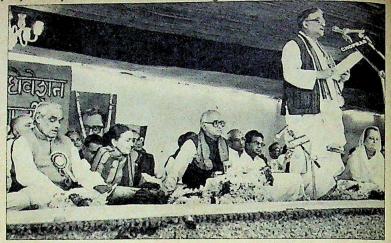
दूसरी तरफ वी.पी. सिंह आरक्षण के मसले पर अपने तर्कों को निरंतर विस्तार दे रहे हैं. अब उनकी इच्छा है कि अगले चनावों में पार्टी के 60 फीसदी उम्मीदवार समाज के 'पिछड़े वर्गों' से खड़े किए जाएं. लेकिन पार्टी के बहत से कार्यकर्ता इस बात सं चितित है कि सारा दांव एक ही मुद्दे पर लगाना कितना फायदेमंद होगा. डर इस बात को लेकर है कि वी.पी. सिंह पिछडी जातियों की ओर जितना झकेंगे, समाज के दूसरे तबकों से उनकी दूरी उतनी ही बढ़नी जाएगी. अगर पार्टी यह सोचकर भी चले कि दूसरे तबकों के अधिकांश वोटों से हाथ धो लिया जा सकता है, तब भी इस बात का खतरा बना हुआ है कि उसे पिछड़ी जातियों के वोट अपेक्षित संख्या में नहीं मिले तो सारी जोड-तोड धरी की धरी रह जाएगी.

इस सम्मेलन से एक बात तो साफ हो गया कि इका और भाजपा को ही जनता दल अपना प्रमुख चुनावी प्रतिद्वंद्वी मानता है. और वह अलग हुए घटक जनता दल (स) को कतई महत्व नहीं देता.

जद की एक बहुत बड़ी कमजोरी यह है की वह अभी भी कुछ गिनी-चुनी हस्तियों पर ही निर्भर है और उसका अपना कोई मजबूत स्वरूप नहीं उभर पाया है. सदस्यों की संख्या बढ़ाने का जो राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम पिछले दिसंबर में ही पूरा हो जाना चाहिए था, वह अभी गंभीरता से गुरू भी नहीं किया जा सका है. और कुछ राज्यों की इसकी णाखाएं तो चंद लोगों की निजी जागीर बनकर रह गई हैं.

यहां तक कि पार्टी सम्मेलन भी पूरी तरह ओडीसा के मुख्यमंत्री बीजू पटनायक की देखरेख में ही हुआ. मतलब यह कि दूसरे सांसद महज दर्णक बने रह गए. अरुण नेहरू, आरिफ मुहम्मद खां और सतपाल मिलक की गैर-मौजूदगी ने भी इस अटकल को हवा दी कि तत्कालीन जनमोर्चा गुट पार्टी की मुख्य धारा से अलग हो रहा है और संगठन में एक विद्रोही गुट के उभरने की संभावना भी बलवती होती जा रही है.

वैसे तो इस बात में कोई संशय नहीं है कि जनता दल की रणनीति स्पष्ट है. पर किसी भी सेना के लिए यह भी निहायत जरूरी है कि हमला करते समय उसकी सुरक्षा पंक्ति भी कमजोर न पड़े. केवल पिछड़ी जातियों पर निर्भरता ने जद को एक खतरनाक मोड़ पर ला खड़ा किया है.



भाजपा

# विस्तार की आकांक्षाएं

अब हिंदू राष्ट्रवाद के मुद्दों पर भी जोर

नता दल अपने एक सूत्रीय फार्मूले पर आधारित राजनीति से तुष्ट है, तो भाजपा को भी अपनी संभावित दिशा समझ में आ रही है. भाजपा को अब बखूबी एहसास हो चला है कि उसे राम मंदिर मसले के अलावा भी जनसमर्थन चाहिए अन्यथा उसकी विजय के रास्ते में कई बड़ी क्कावटें खड़ी हो सकती हैं कई हफ्तों तक चली मंत्रणा के बाद जयपुर में हुए अधिवेशन में पार्टी ने फैसला किया कि उग्र हिंदुत्व में हिंदू राष्ट्रवाद के मनोभाव का मिश्रण जरूरी है.

हिंदू राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के लिए फैसला किया गया है कि कश्मीर समस्या को सामने रखकर जनसंघ के संस्थापक श्यामाप्रसाद मुकर्जी की पुण्यतिथि 23 जून को श्रीनगर जाकर भारतीय तिरंगा फहराया जाए. उम्मीद है कि अयोध्या आंदोलन के तरीके को नापसंद करने वाले हिंदू भी कश्मीर आंदोलन में कूद पड़ेंगे क्योंकि मुसलमान उग्रवादियों के खिलाफ की गई किसी भी कार्रवाई को वे सांप्रदायिक नहीं बल्कि राष्ट्रवादी मानेंगे.

इसके साथ ही पार्टी बाबरी मस्जिद विवाद पर भी नरमी से काम लेगी क्योंकि भाजपा के पारंपरिक समर्थक, जिनमें प्रमुख रूप से शहरी क्षेत्रों के व्यापारी शामिल हैं, उत्तर प्रदेश में लगातार बंद

सम्मेलन को संबोधित करते जोशी

और दंगों के दौरान व्यापार के ठप्प हो जाने से खासे परेशान थे. फिर, भाजपा-शासित राजस्थान में हुए दंगों के कारण पार्टी की छिव को भी धक्का लगा. इसके अलावा बिहार के पार्टी नेता राज्य के उन 'उदारवादी लोगों' की ओर से भी सशंकित हैं जिनका मानना है कि धर्म और राजनीति का बेमेल मिश्रण बिहार में किस कदर तबाही मचा सकता है.

इसके अलावा दक्षिण में राम मंत्र का वह असर नहीं है जो उत्तर भारत में सहज दिखाई देता है. दक्षिण भारत में पार्टी गतिविधियों की देखरेख करने वाले भाजपा महासचिव ओ. राजगोपाल का दावा है कि पार्टी उन राज्यों में अपनी पकड मजबूत करने लगी है.

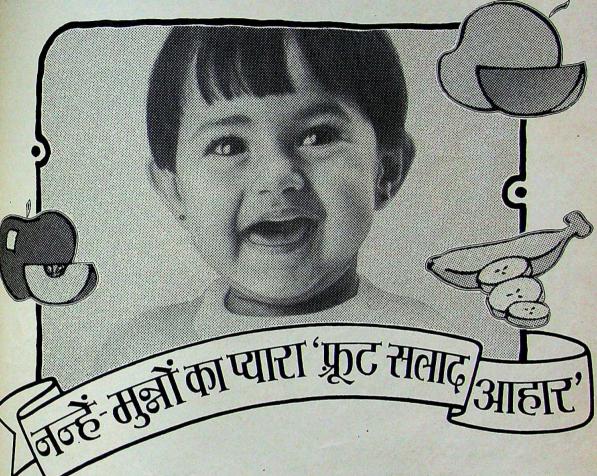
अगले कुछ महीनों में पार्टी के वरिष्ठ नेता चुनाव की तैयारियों में लग जाएंगे उत्तर भारत, केरल के कुछ क्षेत्र और आध्र प्रदेश में विशाल रैलियां आयोजित की जाएंगी. उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव सरकार की खबर ली जाएगी और पंजाब में अलगाववाद के खिलाफ प्रदर्शन के रूप में 23 से 30 मार्च तक भगत सिंह सप्ताह आयोजित किया जाएगा.

मतदाताओं को रिझाने का लक्ष्य साध लिया जाता है तो यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी. लेकिन एक मसले के भरोसे इतने अधिक समय तक बैठे रहने के कारण दूसरे मुद्दों पर तत्काल अमल गुरू करना पार्टी के लिए उतना सहज भी नहीं होगा. और इस तरह की किसी भी कोणिण के दौरान इस बात की गुंजाइण बनी रहेगी कि जिन लोगों ने अयोध्या प्रकरण में जी-जान लगाकर काम किया. उनकी सदीच्छाओं को कहीं ठेस न लग जाए —शाहनाज अंकलेसरिया अय्यर, जयपुर में

है दुकीन में ए

- रबेन बनर्जी, पूरी मे.

स्वादिष्ट फलों का आहार, बच्चों के विकास का आधार.



केवल फ़ॅरेक्स-फ्रूट्स में है सेब, आम और केलों के गुणों की उत्तमता के साथ गेहूँ और दूध का पौष्टिक भंडार-ऐसा मज़ेदार पका-पकाया आहार... नन्हें-मुन्नों को है जिससे बेहद प्यार!

शी

प्प हो गाजपा-कारण इसके के उन में भी में और

ांत्र का सहज पार्टी वाले ल का अपनी

वरिष्ठ जाएंगे. और योजित

म सिंह ते और प्रदर्शन त सिंह

य साध स्वपूर्ण

लि के हने के

त गुरू

ति भी जाइश योध्या

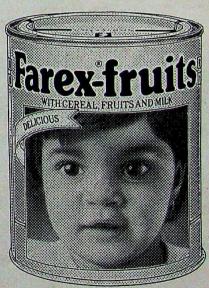
किया. त लग

यपुर में

रेग्युलर पैक से १०० ग्रा. अधिक.

फॅरेक्स-फ्रूट्स

स्वाद् के संग्र,विकास की तरंग.



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri टेलीफोन टैपिंग

# बेपर्दा हुई शर्मनाक कार्रवाई

टेलीफोन टैप करने के चंद्रशेखर के आरोपों के बाद की गई सीबीआई जांच से पता चलता है कि केवल इंका की सरकार ही नहीं, क्षेत्रीय दलों की सरकारें भी अपनों और दूसरों के फोन टैप करवाती रही हैं.

-प्रम् चावला

इं साल चंद्रशेखर ने अपने ही दल 1 की सरकार के खिलाफ यह आरोप लगाकर तहलका मचा दिया था कि उनके समेत 27 दूसरे नेताओं के टेलीफोन गैर-कानूनी तरीके से सुने जा रहे हैं. आरोप लगाते समय उन्होंने यह कल्पना भी नहीं की होगी कि उनका यह पटाखा एक दिन

स्कड मिसाइल की तरह उनकी अपनी ही झोली में आ गिरेगा और उनके लिए अपना दामन बचा पाना भी मुश्किल हो

उनके आरोपों की जांच के बाद सीबीआई ने जो रपट तैयार की है वह फिलहाल गोपनीयता की तिजोरी में बंद है. लेकिन इसकी विस्फोटक शक्ति उस राजनैतिक बम से कम नहीं है जिसने

राजीव गांधी की सरकार ने अपने उन मंत्रियों के खिलाफ भी जासूसी की जिनसे उसे राजनैतिक खतरा नहीं था

1988 में 1981 में डाक की सेंसरशिप और उस वह से कर्नी छेड़छाड़ के मुद्दे पर तत्कालीन इंदिरा गांशीमकण हेगड़े सरकार की साख हिला दी थी और संसद महुद्र कर दि अभूतपूर्व हंगामा खडा कर दिया था. व जानने के

एकारों ने खुर्ग ग्रमितिक वि अससी करने स मुची में त समद सां औ और करा ग्रल रहमान हं नेता और नके बेटे अह हाराष्ट्र तथा

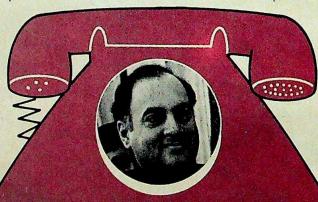
न्त्री भी शामि

गे 1988 में रा होंने तक खु

सीबीआई की यह रिपोर्ट न केवल व अवसरकार प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के लिए मुसीबत हैं ती चाहिए. ज पिटारा सिद्ध होने जा रही है बल्कि उस द्वाया करते है सहयोगी दल इंका के लिए भी यह संस्थापत करने खड़ा कर सकती है. इस रपट का मु

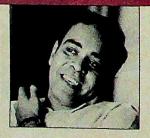
अप्रैल 199 निष्कर्ष यह है कि वीड नार्टेंड वीव सिंह सरकार पर लगा खार्ता में गया चंद्रशेखर का आएं ग्राने का एकदम निराधार है. रपट व इस आ उलटे यह पाया गया है निकर इंका इंका के जमाने में सरकार हैंगी. सिंह र व्यापक पैमाने पर न के श्ये इंका गूपच्प बल्कि गैर-कार् लोफा देने ह तरीक से टेलीफोनों की थी. औ गैबीआई को जासूसी करवाई.

1984 और 1987 में बादेश दे दौरान इंका और अ विविवाई ने च





तत्कालीन इस्पात और खानमंत्री कृष्णचंद्र पंत के फोन की भी जासूसी की गई जबकि तब उनसे राजीव गांधी को चुनौती मिलने के दूर-दूर तक कोई संकेत नहीं थे



इंका मजदूर नेता रंगराजन कुमारमंगलम का मानना है कि केंद्र सरकार में बैठे उनके एक विरोधी के कहने पर उनका फोन टैप किया गया



आरिफ मुहम्मद खां का टेलीफोन इस बहाने टैप किया गया कि उन्हें धमकी भरे फोन आ रहे हैं. हालांकि आरिफ ऐसी धमिकयों की जानकारी से इनकार करते हैं



जामा मस्जिद के इमाम सैयद अब्दुल्ला बुखारी औ उनके बेटे अहमद बुबारी का फोन सांप्रदायिक तनाव की स्थिति पर नजर रखने के लिए टैप किया गया

क्षामंत्री अब्द

जुने का मुंब

वि बार सार

जातार देप

वे भी जब वे

मा करते थे

क वैसी उसकी सहयोगी पार्टियों की म्बारों ने बुफिया ब्यूरों को न केवल अपने विरोधियों के टेलीफोनों की <sub>बसुती करने</sub> के निर्देश जारी किए बल्कि भाषा में तत्कालीन इंका मंत्री आरिफ क्षार हा और कृष्णचंद्र पंत जैसे नाम भी और करणानिधि, चिमनभाई पटेल, ह्यून रहमान अंतुले और जयललिता जैसे हे तेता और मौलाना अब्दुल्ला बुखारी, क बेटे अहमद बुखारी और गुजरात, ब्राए तथा कर्नाटक के दर्जन से अधिक हों भी शामिल थे. जयललिता का फोन ग्रो1988 में राष्ट्रपति शासन के दौरान छह क्षीतक बुफिया विभाग की निगरानी में

1988 में इसी प्रकार के आरोपों की । और उस वह से कर्नाटक के तत्कालीन मुख्यमंत्री इंदिरा गांधे पाकृष्ण हेगड़े को इस्तीफा देने के लिए और संसद मन्दर कर दिया गया था. इस रपट के बारे या था. जानने के बाद उनकी प्रतिक्रिया थी, न केवल मुखसरकार को यह रपट सार्वजनिक कर मुसीबत बिंबाहिए. जो लोग हमें नैतिकता के पाठ बल्कि उस द्वारा करते थे अब उन्हें भी कुछ मानदंड भी यह संग्वापित करने चाहिए.''

पट का मुख्य अप्रैल 1990 में जब चंद्रशेखर ने

कि वीर सर्टेंड वीकली को दी गई पर लगा खार्ता में अपना फोन टैप का आपे हए जाने का आरोप लगाया ार है. रपट व इस आरोप को अस्त्र ा गया है सिकर इंका ने प्रधानमंत्री में सरकार गेंगे. सिंह पर जमकर वार पर न केंग भिये इका ने वी.पी. सिंह से गैर-कार् ओफा देने की भी मांग कर लीफोनों भी और वी.पी. सिंह ने विवाई को मामले की जांच तीर 1<sup>987</sup> में बादेश दे दिया था. ा और अश्वींबाई ने चार महीने में

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri इस मामले की जांच और रपट तैयार करने की कार्यशैली का काम पूरा किया.

विशेषज्ञों की सहायता से चंद्रशेखर के निवास पर लगे तीनों फोनों की जांच करने के बाद सीबीआई अधिकारियों ने इस रपट में कहा है, "विशेषज्ञ इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि इन तीनों टेलीफोनों की खुफियागीरी नहीं की गई." हरियाणा पुलिस के महानिदेशक ने भी कहा है कि भोंडसी स्थित चंद्रशेखर के फार्महाउस में लगे फोन की कभी खुफियागीरी नहीं की गई.

इस रपट के सार्वजनिक होने पर राजनैतिक भूचाल आना तय लगता है. रपट में जो निष्कर्ष निकाले गए हैं, उनसे इस धंधे से जुडी विभिन्न सरकारी एजेंसियों

अन्ना द्रमुक ने, और इंका की कुछ राज्य सरकारों ने विरोधी दलों और उनके नेताओं के टेलीफोनों की खिफयागीरी की

की कार्यशैली पर उंगलियां उठना भी स्वाभाविक है. इनमें से क्छ महत्वपूर्ण खामियां इस प्रकार हैं:

▶ बिना आवश्यक अधिकारों के कई राजनेताओं पर खुफियागीरी की गई.

 सक्षम अधिकारी की आज्ञा के विना ही टेलीफोनों के समानांतर तार पुलिस मुख्यालय तक पहुंचा दिए गए.

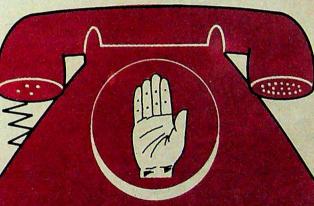
 फोन की खुफियागीरी के आदेश देने के लिए काल्पनिक कारण पेश किए गए.

नई दिल्ली में ऐसे अधिकांश मामलों में यही कारण बताया गया कि फोन के मालिक ने धमकी भरे टेलीफोन आने की सूचना दी थी. ऐसे नेताओं में आरिफ मुहम्मद खां और कृष्णचंद्र पंत तथा तमिलनाडु से इंका सांसद रंगराजन कुमार-मंगलम के नाम भी शामिल हैं.

इस मामले में सबसे चिताजनक तथ्य यह है कि कैबिनेट मंत्रियों के फोन टैप करने का काम पुलिस अधिकारियों के आदेश पर किया गया. वरिष्ठ सुफिया अधिकारियों के अनुसार ऐसे आदेश केवल ऊपर से ही दिए जा सकते हैं. पुलिस अधिकारियों का यह आदेश भारतीय डाक अधिनियम के उस नियम का सीधा उल्लंघन है जिसके

मुताबिक किसी ऐसे व्यक्ति का ही फोन टैप किया जा सकता है जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा हो या तस्करी में शामिल हो.

उन दिनों दिल्ली के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त एस. रामकृष्णन ने स्थानीय टेलीफोन अधिकारियों को लिखा था कि पंत, आरिफ और कुमारमंगलम को धमिकयों भरे फोन आ





हाराष्ट्र के पूर्व अब्दुल रहमान अते का मुंबई वाला विचार साल तक नितार टैप किया गया. विभी जब वे इंका में नहीं

ने इमाम बुखारी औ

द बुखारी

यिक

के लिए

त



गुजरात में चिमनभाई पटेल के फोन पर नजर रखने का अर्थ यही है कि राज्यों की इंका सरकारें भी प्रमुख विपक्षी नेताओं के फोन की जासूसी करती रही है



हैरानी की बात है कि एमजीआर सरकार ने ही जयललिता के फोन को टैप करने के निर्देश दिए. राष्ट्रपति शासन के दौर में भी उनका फोन टैप किया जाता रहा



अन्ना द्रमुक सरकार की खुफियागीरी के शिकार एक द्रमुक नेता और पूर्व मुख्य-मंत्री करुणानिधि और उनके बेटे एम.के. स्तालिन थे

#### खिफयागीरी के शिकारों का ब्यौरा

नाम और फोन नं	खुफियागीरी का काल	नाम और फोन नं.	खुफियागीरी का काल	नाम और फोन नं.	खुफियागीरी का काल
ए.आर. अंतुले		एम करुणानिधि		मुरासोली मारन	
<b>292050</b>	31-3-84 to 30-9-88	<b>2</b> 76080	14-3-85 to 6-1-87	<b>2</b> 420140	12-9-86 to 7-11-86
<b>2</b> 296163	20-12-82 to 31-7-88	<b>☎</b> 475225	22-2-85 to 31-12-85	आर.एम. वीरप्पन	
<b>3</b> 319330	5-8-82 to 31-7-88		1-1-88 to 18-5-88	S 442141	
रामराव आदिक		के. राममूर्ति		442141	8-11-86 to 31-12-8 1-1-88 to 18-5-88
S 892211	31-3-86 to 30-4-90	<b>8</b> 843536	14-3-85 to 12-5-86		1-1-00 to 10-5-88
				चिमनभाई पटेल	
मनोहर जी. जो		एन.वीरास्वामी		<b>2</b> 412345	20-4-85 to 17-6-85
<b>2</b> 456030	5-8-82 to 31-12-89	<b>©</b> 612279	14-3-85 to 31-12-85		
<b>2</b> 454986	10-5-89 to 30-4-90	तमिलनाडु वि.स.	मनिवालग	भाजपा कार्यालय,	
जी.एम. बनातव	ाला			☎ 342800	4-12-85 to 20-1-87
	28-2-85 to 31-7-88	<b>E</b> 561502	12-5-86 to 31-12-86	के.एच. पाटील	
		एम.के. स्टालिन		S 54975	1-4-80 to 30-6-80
नाकपा कार्यालय	, मद्रास	<b>☎</b> 473264	25-7-86 to 28-10-86		1 1 00 10 30-0-00
<b>2</b> 848561	10-8-84 to 31-12-85		31-12-86 to 14-6-87	देवराज अर्स	
सुक कार्यालय,	Traver			<b>☎</b> 72664	15-1-81 to 30-6-81
The state of the s	14-3-85 to 3-7-85	पी.यू. शन्मुगम			28-2-81 to 30-6-81
<b>₹</b> 444754	1-1-88 to 18-5-88	<b>3</b> 479977	25-8-87 to 31-12-87	<b>©</b> 366955	28-2-81 to 30-6-81
4 111751	1-1-00 to 10-3-00	<b>2</b> 471218	1-1-88 to 18-5-88 25-8-87 to 31-12-87	एस. बंगरप्पा	
नयललिता		Va 4/1210	1-1-88 to 18-5-88	<b>8</b> 77375	28-2-81 to 30-6-81
<b>☎</b> 452121	12-11-84 to 7-11-86			4 11313	20-2-01 (0 )0-0-01
	7-11-87 to 31-12-87	अरकट वीरास्वाम	<b>गी</b>	माकपा कार्यालय,	बंगलूर
	1-1-88 to 11-2-88	<b>©</b> 616643	25-7-86 to 7-11-86	<b>☎</b> 24154	15-1-81 to 30-6-81
<b>3</b> 454479	1-1-88 to 18-5-88				4-1-83 to 10-1-83

रहे हैं, इसलिए कुछ समय के लिए उनके फोन पर नजर रखी जाए. लेकिन उपरोक्त अधिनियम के अनुसार फोन उपभोक्ता की मर्जी के बिना ऐसा नहीं किया जा सकता. इन तीनों मामलों में न तो किसी राजनेता ने अपनी शिकायत पुलिस में दर्ज कराई और न उन्हें यह जानकारी दी गई कि उनका फोन सुना जा रहा है.

कुमारमंगलम कहते हैं, "हो सकता है कि सरकार का कोई व्यक्ति राजनैतिक दुण्मनी की वजह से मुझे परेशान करना चाहता हो. यह एकदम गैर-कानूनी काम था और मुझे इसकी जानकारी नहीं दी गई." आरिफ कहते हैं, "मुझे राजगद्दी के लिए खतरनाक माना जा रहा था. शायद इसी वजह से मुझे महत्वपूर्ण बना दिया गया. मैंने कभी भी किसी से शिकायत नहीं की कि मुझे धमकी भरे फोन आ रहे हैं." लेकिन असलियत यह है कि इन दोनों नेताओं के फोन की अतिरिक्त तारें पुलिस मुख्यालय तक पहुंचा दी गईं. इस बारे में आरिफ का कहना है, "कभी भी मुझे यह नहीं बताया गया कि मेरे फोन पर निगरानी रखी जा रही है. अब तो यह मामला बहुत अजीब लगने लगा है. यह तो मंत्रिमंडलीय व्यवस्था की साझा जिम्मेदारी के नियम की जड पर

आघात करने जैसा है."

इस कांड में पंत को भी निशाना बनाए जाने की बात हैरानी भरी है क्योंकि उन्हें कभी भी राजीव गांधी के लिए खतरनाक नहीं माना गया. उनके फोन की गुण्यु में बुफियागी निगरानी के आदेश खुफिया ब्यूरो ने जा ग ही है.

अगर इंका सरकार ने अपने ही केंग्री गें भी नहीं

खुफिया ब्यूरो

**ा**क के बाद एक केंद्र सरकारों ने खुफिया ब्यूरो (आईबी) का राजनैतिक खुफियागीरी के लिए जमकर इस्तेमाल किया है. कहने को यह गृह मंत्रालय के अधीन है लेकिन यह सीधे प्रधानमंत्री और कैबिनेट सचिव के प्रति ही जवाबदेह है. यही एक ऐसा संगठन है जिसके खातों का ऑडिट नहीं किया जाता. आईबी के नियमों के अनुसार जिम्मेदारी मंत्रिमंडल सांप्रदायिक संगठनों, ट्रेड यूनियनों और छात्र नेताओं संबंधी जानकारी उपलब्ध कराना होती है.

लेकिन असल में इस संगठन का मुख्य काम राजनैतिक खुफियागीरी ही है. इसका एक मुख्य उदाहरण पिछले म तब देखने में आया जब द्रम्क और ती मुक्ति चीतों के संबंधों के प्रमाण पेश की आईबी निदेशक लिए नारायणन और उनके एक सहयोगी तमिलनाडु के राज्यपाल सुरजीत बरनाला के साथ लंबी बातचीत की

आईबी की राजनैतिक भूमिकी 1984-89 के दौरान तब खासी वृद्धि जब उसके अधिकारों में असाम बढ़ोतरी की गई और सरकार से मि वाली आर्थिक और तकनीकी सहायती बढ़ा दी गई. खुफिया सूत्रों के अनु आईबी की रिपोर्टों के बाद मुख्यमंत्रियों और राज्यमंत्रियों पर <sup>सुष</sup> नजर रखी गई.

सभी एजेंसियों के लिए यह जहरी कि वे टैप किए गए टेलीफोनों के ती की सूची छह साल तक संभालकर

च्यों को न

य सरका

फा देना जमले में विध

हा बाईबी को

बाई नेष्ट्र कर

भेड़ियी आ

गेवित्र स्थान

क्षेड्ते इ

के गलियो

भी चंद्रशेखाः

हेंगा. उन

इंडिया दुंडे 🔸 28 फरवरी 1991

तीवों को नहीं बख्णा तो व सरकारों में उनके कर माधियों को भला क्यों वा जाता. हैरानी की बात क जिनके मुख्यमंत्रित्व त में कई राजनेताओं के ० 7-11-86 मि हम किए जाते रहे, हीं अंतुले के मुंबई निवास o 31-12-<sub>अ तत्त्रे</sub> फोन को मार्च 1984 सतंबर 1988 गातार चार साल लरानी में रखा गया.

18-5-88

30-6-80

0 30-6-81

10-1-83

पिछले म

क और ती

गण पेश क

सहयोगी

सुरजीत बीत की

भूमिका

ासीं वृद्धि

नं असाम गर से मि

सहायता

i के अगु

बाद ों पर मुर्जि

यह जहरी

नों के तंब

भालकर

शक

0 17-6-85 म्ताबिक के गुराव आदिक के, जो इन लों महाराष्ट्र के सबसे 0 20-1-87 भव असंतुष्ट नेता हैं, फोन 92211 की भी मार्च 1986 अप्रैल 1990 तक र्वास्यागीरी की गई. 0 30-6-81 जिला लीग के लोकसभा o 30-6-81 मार जी. एम. बनातवाला 0 30-6-81 वे मुंबई टेलीफोन पर भी हागप्ट् सरकार के आदेश o 30-6-81 निमई 1979 से अप्रैल 1990 क मुफियागीरी की गई.

> र्काटक में, जहां 1988 उद्ये टैप कांड की वजह मुख्यमंत्री हेगड़े को लोका देना पड़ा था, फोन

ा की गुण्व हो बुक्तियागीरी पिछले दस साल से चली यूरो ने आ गही है. गुडूराव सरकार ने तो इस मले में विधानसभा सचिवालय के फोन ाने ही कें<sup>डी भी</sup> नहीं छोड़ा. उनके शिकारों में

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीबीआई की रपट ने विश्वनाथ प्रताप सिंह के इस दावे को सही पाया है कि चंद्रशेखर के फोन की खुफियागीरी

सीबीआई के अनुसार उसे चंद्रशेखर की इस शिकायत का कोई प्रमाण नहीं मिला कि उनके फोन की खुफियागीरी

के.एच. पाटिल जैसे मंत्री, एस. बंगरप्पा जैसे दिग्गज इंका नेता और पूर्व मूख्यमंत्री देवराज अर्स जैसे नेता भी शामिल रहे हैं.

दिल्ली में 1981 से 1983 तक 50 से भी

अधिक राजनेताओं, मजदूर और भाजपा. माकपा तथा भाकपा पार्टियों के दफ्तरों पर भी ऐसी ही खुफियागीरी चलती रही. इंका की ही तर्ज पर उसके दूसरे सहयोगी दलों ने भी फोन टैप करवाने की परंपरा निभाई है. उदाहरण के लिए रामचंद्रन सरकार ने भी अपने छह से मंत्रिमंडल सहयोगियों तथा करुणानिधि और उनके बेटे एम.के. स्तालिन, तमिलनाडु इंका अध्यक्ष के. राममूर्ति, पूर्व केंद्रीय मंत्री मूरासोली मारन तथा जयललिता के फोन टैप कराने के निर्देश दिए.

केंद्र सरकार के नियमों के अनुसार केंद्र और राज्य स्तर पर जिन एजेंसियों और अधिकारियों को किसी की या फोन खुफियागी री करने अधिकार मिला हुआ है, वे राजस्व निदेशालय के महानिदेशक, राष्ट्रीय मादक द्रव्य नियंत्रण

ब्यूरो, आर्थिक अन्वेषण महानिदेशक, स्थानीय पूलिस और खुफिया ब्यूरो. दिल्ली में 400 फोन खुफिया निगरानी में थे जिनमें से 80 फीसदी से अधिक के पीछे आर्थिक खुफियागीरी वाले कारण थे और इनमें कुछ सांसदों के नाम भी शामिल हैं.

इस पूरे मामले में चिंता का सबसे बड़ा मृहा यह है कि 'बिग ब्रदर' की शैली में की यह परंपरा एक खिफयागीरी लोकतांत्रिक देश में पनप रही है. यह न केवल देश के खुफिया तंत्र के शिकंजे की कसावट का प्रमाण है बल्कि यह दिखाने के लिए भी काफी है कि इस देश के सबसे शक्तिमान और करिश्माई शासक भी खुद को कितना निरीह और असुरक्षित महसूस करते हैं. दूसरे देशों में राजनैतिक टेलीफोन खुफियागीरी के वाटरगेट जैसे कांड ऐसी परंपराओं के प्रतीक बन चुके हैं. इस तरह के कांड की वजह से एक राष्ट्रपति अपनी गही से भी हाथ धो चुका है. इसलिए भारत में इस तरह के कांडों की पूनरावृत्ति को गंभीरता से लिया जाना चाहिए.

यह केवल टेलीफोन के साथ छेड़छाड़ का मामला नहीं है बल्कि एक लोकतांत्रिक व्यवस्था की मूल भावनाओं के साथ खिलवाड का मामला भी है.



आईबी निदेशक एम.के. नारायणन ने द्रमुक-मुक्ति चीतों के बीच गठजोड के प्रमाण सुरजीत सिंह बरनाला को दिए

नहीं की गई

भा को तीन महीने बाद ही ऐसे भें नष्ट करने की छूट है.

शहिती अधिकारी अपने कोई भी वित्र स्थानीय अधिकारियों के पास होहते इसलिए यह संगठन अपनी के वावजूद पकड़ में नहीं भी विशेषर वाले मामले में भी ठीक भी <sup>किशक्षर</sup> वाल मामल म गा हैंगा. उनके आरोपों के बाद जब वी.पी. सिंह ने आईबी से रेकार्ड मंगवा भेजे तो उन्हें जवाब मिला कि निदेशक नारायणन ने कोई भी रेकार्ड पीछे नहीं छोड़ा है.

सीबीआई ने अपनी इस रपट में यह सिफारिश की है कि सरकार आईबी को टेलीफोन टैपिंग करने का फैसला करने की सीधी छुट न दे. उसे अपने रेकार्ड छह

साल तक संभालकर रखने का आदेश भी दिया जाए. ऐसी सिफारिशें पहले भी कई बार की जा चुकी हैं लेकिन किसी भी संबंधित राजनेता ने इस संस्था पर अंक्ष लगाने की तकलीफ गवारा नहीं की. शायद इस वजह से कि उन्हें सत्ता में बनाए रखने में यह संगठन बहुत उपयोगी -प्रमु चांवला सिद्ध हुआ है.

बिहार

# टूट गईं मर्यादाएं

#### राष्ट्रपति की आलोचना के बाद राज्यपाल बरखास्त



यह राज्य राजनैतिक अराजकता का नया इतिहास रच रहा है. इसकी पहली कड़ी थी विधानमंडल का पिछले सप्ताह शुरू होने वाला

सत्त, जिसे अद्भुत घबराहट में तमाम संसदीय मर्यादाओं को ताक पर रख कर आनन-फानन बुलाया गया. और उसके बाद एक से बढ़कर एक घटनाएं हुई जिन्होंने संवैधानिक परंपराओं को हिलाकर रख दिया.

इंका, भाजपा और जनता दल (स) ने राज्यपाल यूनुस सलीम को संयुक्त अधिवेशन को संबोधित करने से इस तरह रोका कि उनकी टोपी तक उछल पड़ी. उधर, खुद राज्यपाल ने अभिभाषण में संविधान का उल्लंघन करते हुए केंद्र सरकार की ही नहीं बिल्क तिमलनाडु में राष्ट्रपति शासन लागू करने की कड़ी आलोचना कर दी. यह पहला मौका था जब अभिभाषण कैविनेट से अनुमोदित

नहीं था. राज्यपाल ने तिमलनाडु में राष्ट्रपति शासन लागू करने का जिक्र करते हुए कहा, "यह काम प्रजातांत्रिक सिद्धांतों पर चोट पहुंचाता है. इसमे राज्यों की संवैधानिक स्वायत्तता पर भी आघात पहुंचता है. अतः हमारी सरकार इस कार्रवाई पर क्षोभ व्यक्त करती है."

राज्यपाल के अभिभाषण में राष्ट्रपति की खुली आलोचना ने राजनैतिक तूफान खड़ा कर

दिया. ऐसी आलोचना किसी राज्यपाल ने कभी नहीं की थी. केंद्र सरकार ने गुस्से में तुरंत निर्णय लिया कि तिमलनाडु सरकार की बरखास्त्रगी पर राष्ट्रपति की आलोचना करने वाले राज्यपाल को ही बरखास्त कर दिया जाए क्योंकि 'इससे संविधान का उल्लंघन हुआ है.' उधर, उत्तर प्रदेश के राज्यपाल को बिहार के राज्यपाल पद की भी जिम्मेवारी सौंपी गई है.

मतलब साफ है—अब केंद्र की तलवार लालू प्रसाद यादव सरकार पर गिरनी बाकी है. मगर जो तमाशा विधानसभा परिसर में राज्यपाल के अभिभाषण के पहले हुआ, उसे सबने हैरतजदा होकर देखा.

जब राज्यपाल शान-बान के साथ विधान मंडल अहाते में 'गार्ड ऑफ ऑनर' लेने के लिए पहुंचे तो कांग्रेस (इ), सदस्य अपनी सदस्यता खो बैठेंगे. ये छह माह पूरे होते 10 फरवरी को. यादव यह भी भूल गए थे कि वह विधान परिषद के सदस्य हैं और 11 फरवरी को वे भी सदस्यता खो बैठते.

लेकिन हुआ यह कि एक दिन विधान परिषद के 'धूम्रपान कक्ष' में बैठे पूर्व मुख्यमंत्री भागवत झा आजाद और इंका सदस्य अरुण कुमार में चर्चा हुई कि निश्चित अवधि समाप्त होते ही उनकी पार्टी सरकार की बरखास्तगी की मांग करेगी. यह बात लालू यादव तक पहुंच गई. जल्दी में कैबिनेट की बैठक में राज्यपाल से विधान मंडल सत्र 10 फरवरी को, जो रविवार का दिन था,

मारि स्ति अपिट हो। जिल्ला सुकार्य काम पर नमीत से समाज का वंदिवारा क्षत्व करो

विपक्ष के अराजक तेवर, और सुरक्षा घेरे में राज्यपाल

भाजपा सदस्य पूरी तादाद में सरकार विरोधी नारे लगाते हुए मुख्य द्वार पर बैठे हुए थे 'राज्यपाल वापस जाओ' के नारे बुलंद होने लगे. इंका और भाजपा सदस्यों ने अंदर और बाहर चारों ओर नाकावंदी कर दी. राज्यपाल वगल के रास्ते से किसी तरह सदन में पहुंचे.

दरअसल, लालू अपनी धुन में यह भूल गए थे कि विधान मंडल के नियमों के अनुसार दोनों सदनों को छह महीने में एक बार तो जरूर बुलाया जाना है बरना विधान मंडल ढांचा टूट जाएगा और बुलाने की सिफारिश की गई.

विधानसभा अध्यक्ष गुलाम सरवर ने बाद में 'इंडिया टुडें' से बात करते हुए स्वीकार किया कि ''कही-न-कहीं किसी से चूक तो जरूर हुई है.'' मगर सबसे भयानक बात यह हुई कि विधान परिषद के अध्यक्ष

उमेण्वर प्रसाद वर्मा ने विधान मंडल स्व इस तरह बुलाए जाने पर सरकार की 'सेंसर' किया और अपने स्वागत भाषण में कहा कि ''सदन सदन है, कोई सरकारी विभाग नहीं है.'' उन्होंने आपत्ति जाहिर कि की ''सरकार ने मुझसे विचार-विमर्श किए बगैर कार्यसूची भेज दी है... सभापति के अधिकारों का अतिक्रमण किया गया है.''

लोग अब पूछ रहे हैं कि अराजकती और मर्यादा उल्लंघन का यह सिलसिली कहां जाकर खत्म होगा. — फरजंद अह्मद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भीष

बार विस्प

एक साथ व वम विस्फो

तों और

धायल कर ऐसी हल्द्वानी (नैनीताल जिनमें उग्र के बम वि की जाने लं ही तराई पतिविधिय पिछले सा गमले पुलि लेकिन

नौका दि किसका हा कोई सुराग एक चश्मदी स्टेशन पर फटने से कु

में उनकी

मिस्र को च चार टा मरेजन के अ पुलिस की टाइमर सा जाकाम किर स्वा था

करा था. जिलाघि कहा, "सिप काती हैं उ कि स्मे विस्प कालिए या

भाजए यह उपवादियों जा विस्फो नहीं जोड़ते

श्रीर मुसल श्रीर मुसल श्रिने की ज बीनायां नः . ये छह ादव यह रिषद के विभी

विधान वैठे पूर्व **ौर** इंका हुई कि ो उनकी की मांग क पहुंच वैठक में सत्र 10

देन था,

मुरागी कृष्य

तेवर, ाज्यपाल

गई. र किया से चुक र सबसे हुई कि अध्यक्ष

डल सत्र नार को ाषण में परकारी जाहिर

्-विमर्ग **माप**ति या गया

ाजकता लसिला द अहमद

# भीषण धमाके

## बार विस्फोटों से प्रशासन हतप्रभ



सिख उग्रवादी अब उत्तर प्रदेश के तराई इलाके भर में सीमित नहीं हैं. 8 फरवरी को उन्होंने लखनऊ के रेलवे स्टेशन सहित चार स्थानों पर

क साथ बम विस्फोट कराया. इन भीषण या विस्फोटों ने चार लोगों की जानें ले तीं और 44 लोगों को गंभीर रूप से ग्रायल कर दिया.

ऐसी दो घटनाएं पहले काशीपूर और (नैनीताल) में घट चुकी हैं, जिनमें उग्रवादियों ने इसी तरह हे बम विस्फोटों से 14 लोगों नी जानें ली थीं. उसके बाद से ही तराई क्षेत्र में हिंसक गतिविधियां जारी हैं और पिछले साल इनसे जुड़े 31 गामले पुलिस ने दर्ज किए.

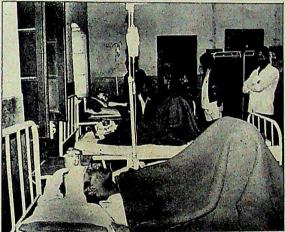
लेकिन लखनऊ जैसी जगह में उनकी कार्रवाई ने सबको गैंका दिया. विस्फोट में क्सिका हाथ है, इस बारे में कोई मुराग नहीं मिला है. पर क चश्मदीद के अनुसार रेलवे

रेशन पर विस्फोट वाली जगह पर बम भटने से कुछ मिनट पूर्व तक उसने एक <sub>सिंव</sub> को चक्कर लगाते देखा था.

चार टाइम बमों में से एक तो रेलवे रे<sup>ज़न</sup> के आरक्षण कार्यालय में मिला. जब जिस की नजर इस पर पड़ी तो इसका यहमर सक्रिय था. पुलिस ने बम को <sup>ोकाम</sup> किया. बम वीसीआर जैसे डिब्बे में षा था और इसमें दो किलो विस्फोटक

जिलाधिकारी अशोक प्रियदर्शी ने हा, "सिर्फ आतंक पैदा करना ही मंशा की है और फिर बम का स्वरूप और जिके एवं जाने की जगहें दिल्ली में हुए म विस्फोटों से मिलती-जुलती हैं. भिलाए यही संकेत मिलता है कि यह अवादियों की कार्रवाई है." अधिकारी ने विस्फोटों को सांप्रदायिक विद्वेष से हो जोड़ते क्योंकि इसके शिकार हिंदू श्रीत मुसलमान दोनों बने हैं और बम भिने की जगह किसी एक समुदाय वाली कितायां नहीं थीं. पहला विस्फोट मुख्य





विस्फोट के बाद चारबाग स्टेशन; अस्पताल में घायल

मार दिए जाने के बाद से ही

उनके फिर से गिरोहबंद होने

की खबरें आने लगी थीं. 15 सितंबर को देहरादून में एक

बैंक लूटने की कोशिश कर रहे चार, और 14 दिसंबर को लखीमपूर खीरी में तीन उग्रवादी मारे गए थे. इसी गिरोह के दो अन्य लोग अगली स्बह पुलिस से हुई 12 घंटे की भिडंत के बाद मारे गए थे. इनमें से दो की पहचान मेजर सिंह और रेशम सिंह के रूप में की गई जो रेलवे स्टेशन से 500 मीटर दूर चौराहे पर ए-श्रेणी के उग्रवादी थे और इन पर पंजाब में ईनाम घोषित था.

इन घटनाओं के, जिनमें पांच वर्षों में पहली बार पुलिस को सफलता हाथ लगी थी, बाद ही ये खुफिया खबरें आने लगीं कि आतंकवादी फिर से गिरोहबंदी करने लगे हैं और वे बदला लेंगे. पूलिस भी तराई में इनके संभावित हमलों से निबटने के लिए चौकस थी. इस क्षेत्र के अधिकांश प्रमुख चौराहों पर चेकपोस्ट बने थे. लखनऊ में जो कुछ हुआ, उसकी कल्पना पहले नहीं की जा सकती थी पर अब अधिकारी मानते हैं कि उग्रवादियों ने राज्य प्रशासन को उसकी मांद में आकर चनौती दी है.

कई अधिकारी इसे बदले की कार्रवाई न मानकर दिल्ली और पंजाब की घटनाओं का विस्तार भर मानते हैं. एक वरिष्ठ आईजी कहते हैं, "वे जताना चाहते हैं कि वे देश में जहां, जब और जो चाहें कर सकते हैं." - दिलीप अवस्थी

रात 8 बजे हुआ. कुछ मिनट बाद ही दूसरा विस्फोट चारबाग रेलवे स्टेशन के प्रथम श्रेणी के आरक्षण कक्ष में हुआ. तीसरा विस्फोट आधा किलोमीटर दूर उदयगंज चौराहे पर हुआ. चौथा बम, जिसे नाकाम कर दिया गया, अधिक लोगों की जान ले सकता था क्योंकि इसे आरक्षण दफ्तर के अंदर ही रखा गया था.

रेलवे स्टेशन वाला विस्फोट इतना जबरदस्त था कि इसने करीब 200 वर्ग फूट क्षेत्र में नुकसान पहुंचाया. इस विस्फोट से 50 फूट ऊंचाई वाले हॉल की छत का एक हिस्सा भी उड़ गया. आरक्षण कक्ष का दृश्य बहुत ही डरावना दिख रहा था जहां मानव अंग छितराए हुए थे. यहां चार लोग मरे थे और 30 घायल हुए जिनमें से 15 की हालत गंभीर है. उदयगंज और नाथा तिराहे वाले विस्फोटों में छह लोग मरे.

पिछले साल दिसंबर में राज्य पूलिस तराई में सिख उग्रवादियों को मुठभेड़ों में



उत्तर प्रदेश

## भद्दा मजाक

#### अधिकारियों के बचाव की कोशिश

ब मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव सहारा देने वाले किसी हाथ को मरोड़ते हैं तो पूरी निर्ममता बरतते हैं. आखिर उन्होंने वह कर दिखाया जिसके लिए उन्हें अपने समर्थन पर टिकाए रखने वाली इंका अयोध्या में हुई हिंसा के बाद मजबूर कर रही थी. 19 जनवरी को उन्होंने जांच आयोग नियुक्त करने की घोषणा कर दी. लेकिन इसका श्रेय अपने हिस्से लेने की कोशिश इंका कर ही रही थी कि उन्होंने राज्य के 92 प्रशासकीय अधिकारियों को पुरस्कार देने की घोषणा कर डाली. पुरस्कार मिला किन्हें? प्रायः उन्हों लोगों को जिनसे उक्त जांच आयोग पूछताछ करने वाला है.

यह गजब का दुस्साहस था क्योंकि 20 नवंबर से इंका इस बात पर जोर देती रही है कि जांच आयोग नियुक्त करने की शर्त पर ही यादव को उसका समर्थन मिला है. यादव हमेशा यही कहते रहे कि वे कदम उठाएंगे. और आखिरकार उन्होंने कदम उठाया भी तो यह ध्यान में रखकर कि विरोधियों को पूरी तसल्ली न हो. इंका ने दो अलग-अलग जांच आयोग नियुक्त करने की मांग की थी. एक, अयोध्या की वारदात के लिए और दूसरा, पूरे राज्य मे सांप्रदायिक दंगों की जांच के लिए. लेकिन यादव ने सिर्फ एक ही आयोग गठित किया. इंका मांग करती रही थी कि हाईकोर्ट के पदेन न्यायाधीशों से ही जांच कराई जाए. यादव ने तीन पूर्व न्यायाधीशों के जिम्मे यह काम सौंपा.

यही शैली उन्होंने जांच आयोग की

गर्ते तय करने के मामले में भी अपनाई. हिंसा के लिए किसी को जवाबदेह ठहराने की कोई बात इन गर्तों में नहीं रखी गई. जांच का मकसद सिर्फ 'बल प्रयोग की पर्याप्तता और औचित्य का आकलन' करना तय किया गया. विधानसभा में विपक्ष के नेता नारायणदत्त तिवारी ने शिकायत की, ''ऐसे जांच आयोगों का एक बड़ा मकसद जवाबदेही तय करना होता है ताकि दोषी सजा पाएं. लेकिन ऐसा नहीं किया गया है.''

सरकार ने आयोग से विश्व हिंदू परिषद, शिवसेना, आरएसएस और भाजपा तथा उनके द्वारा आयोजित राम यात्राओं की जांच करने को तो कहा है पर उग्र मुस्लिम संगठनों और पुलिस और पीएसी की भूमिका का कोई जिक्र नहीं है.

लेकिन राज्य के अधिकारियों को पुरस्कार की घोषणा के मुकाबले तो यह सब मामूली चूक ही है. मकसद एकदम स्पष्ट है—अधिकारियों का बचाव.

पुरस्कार की सूची में केंद्रीय गृह सचिव राजकुमार भार्गव (जो उस समय राज्य के मुख्य सचिव थे) और राज्य के गृह सचिव आदित्य कुमार रस्तोगी का नाम प्रमुख है. ये दोनों ही उस समय राज्य में पुलिस गतिविधियों के संचालन में प्रमुख भूमिका निभा रहे थे. सूची के दूसरे नामों में फैजाबाद के आयुक्त मधुकर गुप्ता, डीआईजी जी.एल. शर्मा (जो अब मेरठ के डीआईजी हैं), एसएसपी सुभाष जोशी और सीमा मुरक्षा बल के डीआईजी आर.के. पंडित हैं. इन सबका नाम अयोध्या की हिंसा के बाद जारी की गई विहिप की हिटलिस्ट में है.

इनके अलावा उस समय झांसी के जिलाधीश रहे कपाल देव को कार सेवकों को राज्य में घुसने से रोकने में 'प्रभावी भूमिका' के लिए पुरस्कार दिया गया है. उल्लेखनीय है कि कपाल कुमार जब

कानपुर के जिलाधीश थे उसी दौरान वहा दंगा हुआ जिसमें 32 लोग मारे गए थे मुख्यमंत्री के जिले इटावा के जिलाधीश को भी इन्हीं गुणों के चलते पुरस्कृत किया गया है. कार सेवकों के प्रवेश को अवस्त्व करने के लिए बांदा के जिलाधीश राकेश गर्म को भी पुरस्कृत किया गया है. दंगे की चपेट में आए जिलों अलीगढ़, आगरा के जिलाधीशों को इसी वजह से मान दिया

इंका नेता अरुण कुमार सिंह हताशा भें कहते हैं, "जिन लोगों के खिलाफ आयोग जांच करेगा, उन्हीं सब को सम्मानित किया गया है तो फिर जांच आयोग बैठाने की जरूरत ही क्या है?"

वैसे, यह सवाल बचकाना है. जब आपका प्रमुख विरोधी आपकी मांगों का मखौल उड़ा रहा है और आप उसे समर्थन देकर उसकी सरकार को टिकाए हुए हैं तो ऐसे सवाल बेमानी हो जाते हैं. अब समय फैसला करना का है.

— बिलीप अवस्थी

गोदरेज कोल

गानी आपके

नास हों कई

क्रिजोटर, एव

क्रात मुताबि

ज्य(-नीचे क

मनपसंद हिज़ा

फिजोटर तैय

अनोखा, संपूर

ववालित डिप्र

वस, बटन द

भी फ़ीजर अ

क्रिॉस्ट हो ज

भी बहकर उ

पाप बनकर उ

निं से मेल ख

मीतरी भाग

गोदोज कोल

मेत खाती भी

ग-मज्जा के व

5 आकर्षक रंग

कतरीन, टिक

एवोक्सी पाउड

और साथ में

वे गक्ति तो

तिके जैसा दूर

क्रिका

गता है.

महाराष्ट्र

## बैर कायम

#### पवार विरोधी खेमा एकजूट



महाराष्ट्र के देशमुखें और पाटीलों में पुरानी दुश्मनी चली आई है इंका के नए प्रदेश अध्यक्ष शिवाजीराव पाटील निलंगेकर और

उद्योगमंत्री विलासराव देशमुख इसी पारंपरिक वैर भाव से ग्रस्त लगते हैं क्योंकि दोनों ही मराठवाड़ा क्षेत्र में अपने गृह तालुके लातूर पर अपनी पकड़ बताने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं.

इसलिए यह अविश्वसनीय लगा कि शरद पवार को हटाने के अभियान में प्रमुख भूमिका निभाने वाले देशमुख ने नए पार्टी अध्यक्ष को गुलदस्ते भेंट करके बधाई दी और घोषणा की, "मैं राज्य में पार्टी को मजबूत बनाने में उनका समर्थन करूंगा." ऐसे बयान से अप्रभावित निलंगेकर ने किसी पार्टी नेता के प्रति गुरेज रखने से इनकार किया, और देशमुख लातूर में उनका स्वागत करने चले गए

निलंगेकर-देशमुख मिलाप निश्चित रूप से भावी राजनीति का संकेत हैं आलाकमान की शह पर पवार की अपदस्थ करने की कोशिश कर रहें महाराष्ट्र के असंतुष्ट इंकाई जान गए हैं

इंडिया ट्डें • 28 फरवरी 1991

दौरान वहां रिगए थे. जिलाधीश स्कृत किया को अवस्त्र

ीश राकेश है. दंगे की आगरा के मान दिया

हताशा में फ आयोग सम्मानित योग बैठाने

है. जब मांगों का उसे समर्थन हुए हैं तो

अब समय

नीप अवस्थी

देशमूखों

में पुरानी

आई है.

ए प्रदेश

वाजीराव

कर और

ख इसी

लगते हैं

में अपने

नड बनाने

लगा कि

भयान में

ख ने नए

के बधाई

में पाटी

समर्थन

प्रभावित

के प्रति
र देशमुख

ले गए

निश्चित

तंकेत हैं। बार को

कर रहे

न गए हैं

हे हैं.

# पफ़ की शक्ति की कोई सीमा नहीं!

mes illes

एक में अनेक रेफ़्रिजरेटर

गोदरेज कोल्ड गोल्ड. गानी आपके गान हों कई क्रिजेटर. एक में ही. उत्तत मुताबिक शेल्फ़ उप-नीचे करें, और मगमंद हिज़ाइन का क्रिजेटर तैयार.

<sup>अनोखा</sup>, संपूर्ण <sup>तवालित</sup> डिफ़ॉस्ट

सा, बटन दबाइये जी क्रीजर अपने-आप क्रिजेंट हो जाता है. जी बहकर अपने-आप प्राप बनकर उड़ भी जा है.

में से मेल खाते मेतो भाग मेदेंक कोल्ड गोल्ड. में खाती भी-

भी काल्ड गोल्ड. भी बाती भीतरी पिनाजा के साथ उआकर्षक रंगों में. बेहतीन, टिकाऊ पॉक्सी पाउडर कोटेड

और साथ में पफ शैशक्ति तो है ही.

कि जैसा दूसरा रेफ़िजरेटर है ही नहीं

जगह बनानेवाले कममेक्र शेल्फ

ज़्यादा चौड़े व गहरे शेल्फ़- तीन पूरे और एक आधाः

इंज़ीस्टोर सब्ज़ी ट्रे सबसे बड़ी सब्ज़ी ट्रे साथ ही एक अनोखी सेपरेटर ट्रे भी.

सुविधाजनक ओवरफ़्लो ट्रे

PROTECT.

165 lt.

ज़रूरत जैसी, डिज़ाइन यैसी

पुरुषों मक्खनदानी मक्खन व चीज़ रिखए, या एक खाना हटा कर बड़ी चीज़ों के लिए जगह बनाइए.

अंडों के लिए जुड़वाँ रेक, जिसे हटा भी सकते हैं.

14 अंडे रिखए, चाहें तो इसे हटाकर दूसरी छोटी चीज़ें रख सकते हैं.

क्तंद आपकी — बाहे बायीं तरफ़ जुलनेवाला दरवाज़ा लें या दायीं तरफ़ जुलनेवाला.

ज्यादा बड़ी बोतलों के लिए कि

10 बड़ी बोतलें रिखए या 14 कोल्ड ड्रिंक की बोतलें.

Godrej

**COLD GOLD** 

पफ़ सहित

सोना... असली सोना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

HTA 1068



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

### जीवन के रंग अजीब...



## शुऋ है बोरोलीन करीब बोरोलीन

खुशबूदार ऐन्टिसेप्टिक कीम सूखी त्वचा और साधारण कटने-छिलने पर अनोखा असर



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Response 1078

कि भवि तो राज्य देशमुख प्रतिद्वंद्वी असंतुष्ट पर रा शिक्षामं

प्रोन्नति हमला व अव करेगा प्रभावी तो निल वनने वे करने हि

के लिए निलंगेक शक्तिश हैं लेबि

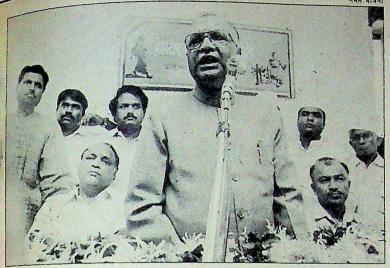
वसंतदार पवार ने हुआ है, के पुराने

रही है. वनाए ज निलंगेक मुख्यमंत्रं

मंतुलन लेकि वलं तो जाने पर

समर्थन भेग फु मार्च में

किर आ



पवार, निलंगेकर और शिदेः मात देने की मुहिम

कि भविष्य में किसी मुठभेड़ में फंसना है तो राज्य में अपना जनाधार ही काम देगा. देशमुख को पवार का सबसे उपयुक्त प्रतिद्वंदी माना जाता है. हालांकि पवार असंतुष्टों को मंत्रिमंडल में बनाए रखने पर राजी हो गए हैं (देशमुख को तो शिक्षामंत्री से उद्योगमंत्री के रूप में प्रोन्ति भी मिलं गई) लेकिन वे कभी भी हमला कर सकते हैं.

अब बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि निलंगेकर नए पद पर कितने प्रभावी सावित होते हैं. पवार निश्चित हैं, तो निलंगेकर भी शांत हैं. प्रदेश अध्यक्ष बनने के बाद वे राजीव गांधी से सलाह करने दिल्ली उड़ गए पर उन्हें मुलाकात के लिए समय नहीं मिल पाया. वैसे, निलंगेकर पश्चिमी महाराष्ट शक्तिशाली चीनी लॉबी से संबंधित नहीं हैं लेकिन वे दिवंगत मराठा नेता वसंतदादा पाटील के अनुयायी हैं. उधर, पवार ने चीनी लॉबी का समर्थन जुटाया हुआ है, इसलिए निलंगेकर को वसंतदादा के पुराने समर्थकों की वफादारी नहीं मिल रही है. इसीलिए पवार ने उन्हें अध्यक्ष वनाए जाने पर आपत्ति नहीं की. लेकिन निलंगेकर को अपने पूर्व गुरु की तरह मुल्यमंत्री और दिल्ली के आकाओं के बीच मंतुलन साधने का कौशल दिखाना होगा

लेकिन अगर निलंगेकर फूंक-फूंककर कों तो 'ऑपरेशन डेजर्ट पवार' चलाए गोने पर उन्हें वसंतदादा के समर्थकों का भार्थन होसिल हो सकता है. असंतुष्ट भीग फुसफुसाते हैं कि कयामत का दिन भाई में पवार की बेटी की शादी के बाद कि आएगा बताया जाता है कि पूर्व

nse 1078

मुख्यमंत्री शंकरराव चव्हाण ने कहा है कि बदलाव के लिए 'वफादारी' का सवाल फिर उठाया जा सकता है.

निलंगेकर पार्टी को मजबूत करना भी चाहें तो यह उपयुक्त समय नहीं है. हां आलाकमान फिर सरकार को अस्थिर करना चाहे तो निलंगेकर फायदे वाली -एम. रहमान

मध्य प्रदेश

### नींद से जागे

#### प्रदेश इंका अध्यक्ष पद के लिए होड



राज्य में कांग्रेस (इ) जैसे गहरी नींद से अचानक जाग गई है. इसकी वजह यह नहीं है कि कोई चुनाव सिर पर बल्कि यह कि भाजपा से मात खांने के बाद लगभग निष्क्रिय पड़े पार्टी संगठन में फिर से जान आने की उम्मीद है. प्रदेश इंका अध्यक्ष पद के दो दावेदार कमलनाथ और माधवराव सिधिया आलाकमान को अपनी ताकत दिखाने के लिए मैदान में उतर गए हैं: संयोग से ये दो इंका नेता ही असूरिक्षत क्षेत्रों से चनकर संसद में पहुंच पाए हैं. दूसरे इंका सांसद हैं अफसरी से राजनीति में आए अजित जोगी. वे बस्तर से विलासपूर तंक के वंनवासी क्षेत्र की पदयात्रा पद चल पडे हैं.

प्रत्यक्ष तौर पर तो इन तीनों नेताओं की सक्रियता का मकसद एक ही है-पार्टी को मजबूतं करना और निचले स्तर के कार्यकर्ताओं से संपर्क बनाना. लेकिन असली मकसद कुछ और ही है. चुंकि प्रदेश इंका अध्यक्ष अर्जून सिंह स्वस्थ नहीं हैं और विपक्ष के नेता श्यामाचरण शुक्ल पार्टी में जान फुंकने में सक्षम नहीं रह गए हैं. सो, अब बागडोरं नए नेताओं के हाथ थमाने की कोशिशें चल रही हैं. सिंधियां और कमलनाथ दोनों ही प्रदेश इंका का सर्वोच्च पद पाने की आस लगाए हैं.

मगर कमलनाथ की एक कमजोरी यह है कि उन्हें अर्जुन सिंह के खेमे का माना जाता है. सिंधिया इस कमजोरी को निश्चित ही भूनाएंगे. लेकिन कमलनाथ के दौरे की सफलता यह भी बताती है कि सिधिया से उनकी पूरानी दूश्मनी अब घटने लगी है. कमलनाथ ने खुद को सभी खेमे को स्वीकार्य नेता के रूप में पेश करने की कोशिश की है और संकेत दिया है कि वे सिंधिया को गंभीर चुनौती दे सकते हैं. कई स्थानों पर उन्होंने स्थानीय नेताओं के आपसी मंतभेद मिटाने और उन्हें एकजूट करने का प्रयास किया. कमलनाथ का दावा है, "मैं एंकमात्र ऐसा पार्टी नेता हूं जो गृटीय राजनीति से ऊपरं है."



हालांकि कमलनाथ के मुकाबले सिंधिया का राज्य में कुछ हद तक ज्यादा मजबूत आधार है. इसके अलावा आलाकमान भी उन पर ज्यादा ही मेहरवान है. साथ ही कमलनाथ के खिलाफ मोतीलाल वोरा और शुक्ल गुट भी अपना जोर दिखाएंगे ही. लेकिन राज्य के वर्तमान नेतृत्व की लकवाग्रस्त हालत के मद्देनजर कमलनाथ और सिंधिया दोनों को ही तरजीह मिल सकती है.

कमलनाथ की चार दिवसीय यात्रा की सफलता सिर्फ उनकी मिलनसारिता और चुस्ती का ही नतीजा नहीं थी बिल्क इसमें उन्हें आपराधिक रेकार्ड वाले निर्देलीय विधायक अशोक बीर विक्रम सिंह उर्फ भैया राजा से मिली मदद का भी उतना

> प्रदेश इंका अध्यक्ष पद के दावेदारों कमलनाथ और सिंधिया के दौरों से यह तो हुआ ही कि मृतप्राय पार्टी संगठन में फिर जान लौट आई

ही योगदान था. दौरे के दौरान कमलनाथ पन्ना जिले में भी गए जहां भैयां राजा के संचालन में कार्यक्रम हुआ और भारी भीड़ जुटी. सभाओं में जुटी भीड़ पर कमलनाथ की टिप्पणी थी, "इंका संगठन कहीं नजर नहीं आया. लेकिन भैया राजा ने इसे बहुत सफल बना दिया."

अभी हाल तक भैया राजा का नाम पुलिस के रिकार्ड में प्रमुख हुआ करता था. पिछले विधानसभा चुनाव के वक्त भी वे नैनीताल जेल में ही थे. तब वे अकबर अहमद 'डंपी' के फार्म हाउस पर एक संगीन हत्या के आरोप में कैद किए गए थे. इस विवादास्पद विधायक को सम्मान दिलाने और अपने लिए समर्थन जुटाने के लिए उसका उपयोग कमलनाथ ने ही नहीं किया बल्कि सिंधिया भी इस 6 फुट 2 इंच ऊंचे अबूझ विधायक से प्रभावित लगते हैं. प्रभा में उनके पिछले दौरे का संयोजन भी भैया राजा ने ही किया.

बहरहाल, सिंधिया-कमलनाय के इन सफल दौरों ने, जो राजीव गांधी के दौरों की नकल ही थे, गुटबाजी से त्रस्त ईका को एहसास करा दिया है कि वह चाहे तो भाजपा को अभी भी अच्छी टक्कर दे सकती है. <sub>अंतर्कथा</sub> इंद्रजीत बधवार

### आरक्षण के अंतर्विरोध

प्रवनाथ प्रताप सिंह एक बार फिर सामाजिक न्याय के स्वयंभू मसीहा के रूप में केंद्रीय मंच पर कूद पड़े. हैं. पिछले पखवाड़े उन्होंने मांग की कि चुनावों में पार्टियों की ओर से बांटे जाने वाले 60 फीसदी टिकट पिछड़ी जातियों के उम्मीदवारों के लिए आरक्षित किए जाए. दरअसल, वे इस तरह की मांग करके आरक्षण विवाद को फिर से हवा देने की कोशिश रहे थे जबिक सुप्रीम कोर्ट में अभी मंडल आयोग की रिपोर्ट लागू करने के फैसले की कानूनी वैधता पर सुनवाई चल ही रही है.

इस सुनवाई के दौरान मणहूर न्यायिवद् ननी पालखीवाला ने रिपोर्ट की धिज्जियां उड़ा दीं और इतने पैने, सटीक और सहज तर्क दिए कि रिपोर्ट के कट्टर समर्थक भी उनकी बातें सुनने पर मजबूर हो गए. उन्होंने कहा कि इस फैसले से संविधान की भावनाओं का जितना उल्लंघन हुआ है, उतना दूसरे किसी भी सरकारी फैसले से नहीं हआ.

ऐसा इसलिए है कि सँविधान की पवित्रता का दावा करने वाली मंडल रिपोर्ट ने आधे से अधिक राष्ट्र को पिछड़ा घोषित कर दिया है और उसे लोकसेवा, सेना, सार्वजनिक क्षेत्र, सरकारी सहायता पाने वाले सभी निजी उद्योगों, महाविद्यालयों में प्रवेश और प्रोन्नतियों में वरीयता पाने का हकदार बना दिया है.

पालखीवाला का तर्क है कि मंडल रिपोर्ट खामियों से भरपूर, और घातक है. मंडल आयोग ने अपनी कार्यशर्तों की ही अनदेखी की. उसे पहले तो यही तय

करना था कि आरक्षण जरूरी है भी या नहीं. उसने यह अनदेखी न की होती तो यह बात सामने आ जाती कि राज्यों में मौजूदा आरक्षण के कारण पुलिस जैसे अहम महकमें का मनोवल गिरा है या नहीं, और कि सत्ता योग्य लोगों के हाथों से अदने लोगों के हाथों में जा रही है या नहीं. यह तर्क अभिजात्यवादी नहीं है. बल्कि यह संविधान का ही रचनात्मक विचार है जिसमें समरस, एकजुट तथा जातिवहीन समाज का प्रावधान है.

पालखीवाला का कहना है कि भारत जातिवाद से समतावाद, सामंतवाद से स्वतंत्रता की तरफ बढा

है समता ही 'स्वतंत्र गणराज्य का प्राण है.' समता को नकारकर मंडल ने संविधान की मूल भावनाओं का उल्लंघन किया है. पालखीवाला ने साबित कर दिया कि मंडल आयोग को अन्य पिछड़ी जातियों में साक्षरता और णिक्षा के स्तर आदि के सही आंकड़े उपलब्ध कराने में प्राय: सभी राज्य विफल रहे. इसलिए रिपोर्ट सही आंकड़ों पर आधारित ही नहीं है. यही नहीं, आयोग ने अगड़ी जातियों के करोड़ों पिछड़े लोगों और पिछड़ी जातियों के करोड़ों अगड़े लोगों को नजरअंदाज भी कर दिया है. पालखीवाला के मुताबिक इस रिपोर्ट का बुनियादी विरोधाभास यह है कि आयोग ने जहां जातिवाद की बुराइयों पर चिंता जताई है, वहीं वह आरक्षण के लिए जाति को एकमात्र आधार बनाना चाहता है. इससे जातिवाद को बढ़ावा मिलता है और 'पिछड़ापन' निहित स्वार्थ बन जाता है.

मंडल विरोधियों ने तर्क देने की जगह भावुकता ही ज्यादा दिखाई कई किणोर-किणोरियों ने भावावेण में आकर आत्मदाह कर लिया. पालखीवाला अब उन मृतकों की आवाज बन गए हैं.



नतीजा

कोशिश

वार पि

राज्य

घायल

घायल

आर.ए

मगत

उग्रवारि

इसके

जालंध अति

मुनियो

वच गा

राज्य

गरा

उजाग

का तंत्र

कार्रवा

विस्फो

वाद हु

रात्रि

पुलिस

फरीदव

29 हिंद

वाद में

दिया ह

ऐसे सं

लगे वि

दी गई

मोजबी

मंगत

चंडीगत

नुधिय

विस्फो

नोगों

लिए र

इस

मंग

42 इंडिया दुंडे • 28 फरवरी 1991

फिर झंटका

पुलिस प्रमुख पर घातक हमला



यंभू

मांग

छड़ी

की

प्रीम

पर

की

ने से

भी

पोर्ट

वा.

गों,

ा है

है.

तय

कर

त्तर लए

ाडी

को

ादी

है.

ससे

कई

अव

सीमावर्ती पंजाब दूरदराज जिलों स इलाकों तक फैलने वाली हिंसा ने पिछले पखवाडे विकराल रूप फिर लिया. धारण कर

ततीजा यह कि नरमी का रुख अपनाने की कोंगिण कर रहे राज्य प्रशासन को एक वार फिर झटका लगा है.

लुधियाना में एक बम विस्फोट में राज्य के पुलिस प्रमुख डी. एस. मंगत घायल हो गए उनके तीन सूरक्षा गार्ड भी घायल हए और उनके सूरक्षा अधिकारी आर.एस. सेठी को एक पांव गंवाना पड़ा. गंगत दूसरे पुलिस महानिदेशक हैं जो उप्रवादियों के हमले के निशाना बने. इसके पहले 1986 में जे.एफ. रिवेरो

जालंधर के पंजाब सशस्त्र वल के अति स्रक्षित परिसर में एक मुनियोजित हमले में बाल-बाल वच गए थे.

मंगत के साथ हए हादसे ने राज्य में पुलिस का मनोबल और गिरा दिया है. इससे यह तथ्य उजागर हुआ है कि उग्रवादियों का तंत्र कितना विकसित है. पूरी कार्रवाई बड़ी चतुराई से की गई. विस्फोट एक मामूली घटना के वाद हुआ. 31 जनवरी की मध्य गित्र में उग्रवादी केंद्रीय रिजर्व पुलिस के वेश में लुधियाना और फरीदकोट जिले के दो गांवों से 29 हिंदुओं को अगवा कर ले गए. वाद में उन्होंने नौ लोगों को छोड़ दिया और एक नहर के पुल पर ऐसे संकेत छोड़ गए जिससे यह लों कि बाकी 20 की हत्या कर

इस घटना से प्रशासन हरकत में आया. भोजवीन की कार्रवाई की देखरेख के लिए <sup>भंगत</sup> सुद लुधियाना पहुंच गए. बाद में वेडीगढ़ लौटते हुए जब उनकी कार विध्याना में एक पुल के पास पहुंची तो किस्फोट हुआ. इसके तुरंत बाद अपहृत भोगों को छोड़ दिया गया. जाहिर है कि अपहरण का नाटक मंगत और दूसरे भहत्वपूर्ण लोगों को उस स्थान पर लाने के लिए रचा गया था.

Digitized by Arva Samai Foundation Chennai and eGangotri धटना से उग्रवादियों की आक्रमण में कम-से-व्

क्षमता के अलावा यह भी पता चलता है कि पंजाब पुलिस अपने महकमे में उग्रवादियों की पैठ और धमिकयों तथा हमलों से किस कदर उदासीन होती जा रही है. पुलिसवालों पर हमले की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं. मसलन, 5 फरवरी को 15 सुरक्षाकर्मी मारे गए. स्वाभाविक ही है कि मंगत पर हमले के बाद पुलिस बल की बारीक जांच की मांग फिर उठने

ल्धियाना की घटना ने राज्यपाल के इस दावे को झठा ठहराया है कि कानून व व्यवस्था कायम करने वाली संस्थाएं मजबूत हुई हैं. साथ ही यह भी उजागर हुआ कि विभिन्न उग्रवादी गृटों में वैचारिक मंतभेद और होड भयंकर रूप से बढ़ गई है क्योंकि इसके तीन . दिन पहले ही होशियारपुर जिले में 11 हिंदुओं को मौत के घाट उतार दिया गया था. सो, होशियारपूर में



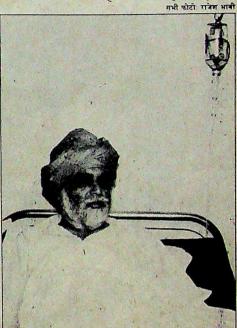


सक्रिय गृट अगर हिंदुओं की हत्या पर उतारू है तो लुधियाना में दूसरा गुट अपहृत लोगों को सुरक्षित रिहा कर देता

होड़ बढ़ने की एक वंजह यह बताई जा रही है कि बातचीतं की सरकारी पेशकश के मद्देनजर उग्रवादी गुट अपनी-अपनी अहमियत जताना चाह रहे हैं. दरअसल, पिछले पखवाड़े प्रधानमंत्री चंद्रशेखर और गृह राज्यमंत्री सुबोधकांत सहाय से दिल्ली

में कम-से-कम तीन लोग मिले जिन्होंने खुद को उग्रवादियों का करीबी बताया. सहाय ने संकेत दिया है कि संविधान के दायरे में होने वाली यह बातचीत मार्च में हो सकती है.

हालांकि अभी तक सिर्फ अखिल भारतीय सिख छात्र संघ के मंजीत गुट ने ही सकारात्मक जवाब दिया है और उसने अमृतसर को 'शांतिं क्षेत्र' घोषित किए जाने के बाद अकाल तखत में बैठक रखने की मांग की है. लेकिन सोहन सिंह और



मंगत (अपर); सुरक्षा अधिकारी सेठी; और तहस-नहस कार

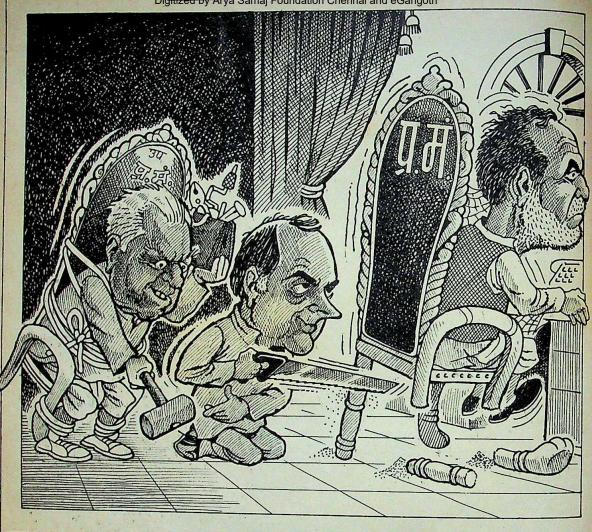
वासन सिंह जफरवाल वाली पंथक कमेटियों समेत अधिकांश उग्रवादियों ने बातचीत में हिस्सा लेने पर रजामंदी नहीं दिखाई है.

यानी पंजाब में फिलहाल यथास्थिति बनी रहेगी, खासकर इन बातों के मद्देनजर कि केंद्र में चंद्रशेखर सरकार की हालत कमजीर हुई है और राजीव गांधी ने सिमरनजीत सिंह मान के साथ

बिना किसी पूर्व शर्त के बातचीत की तीसी आलोचना की है. उधर, भाजपा और वामपंथी पार्टियां तो उग्रवादियों से बातचीत के ही खिलाफ हैं.

इसलिएं आश्चर्य नहीं कि पिछले हफ्ते चंद्रशेखर को भी फरीदकोट में घोषणा करनी पड़ी कि पंजाब में शांति स्थापित होने के बाद ही लोकतांत्रिक प्रक्रिया बहाल ही पाएगी. इससे उम्मीद के बादल छंटने लगे हैं. - कंवर संघ कटाक्षः अजित नैनन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri



#### सनद रहे

तबादलाः प्रधानमंत्री कार्यालय में बोफोर्स और ऐसे ही बेहद महत्वपूर्ण मामले देखने



वाले संयुक्त सचिव भूरेलाल का तबादला कर दिया गया है. 1989 में विश्वनाथ प्रताप सिंह ने प्रधानमंत्री वनने के बाद उन्हें अपने कार्यालय में नियुक्त किया

भूरेलाल अवं अपनी नई नियुक्ति के तहत वित्त मंत्रालय के व्यय विभाग में सलाहकार का पद संभालेंगे.

नियुक्तः पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. कर्ण सिंह चार वर्ष के लिए पांडिचेरी के एरोविले के अधिशासी बोर्ड के अध्यक्ष नियुक्त किए गए. 1968 में स्थापित यह अंतरराष्ट्रीय शहर सद्भाव और समर्पित सेवा जैसे मानवीय मुल्यों का प्रतीक है और इसकी स्थापना अरविंद आश्रम ने की है.

इस्तीफाः अयोध्या मसले पर दखलंदाजियों के कारण जावेद हबीब ने वावरी मस्जिद ऐक्शन कमेटी की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है इसके लिए उन्होंने तीन सांसदों-अरुण नेहरू, आरिफ मुहम्मद खां और मुहम्मद अफजल— को जिम्मेदार ठहराया और वार्ता को 'निरर्थक कवायद' बताया.

पेशकशः अकाली दल अध्यक्ष सिमरनजीत सिंह मान ने लाड़ी में अमेरिका की अगुआई

वाली बहराष्ट्रीय सेना में 'एक लाख' सिखों को भेजने की पेशकश की है. अमेरिकी राजदूत विलियम क्लार्क उन्होंने लिखा है, "कुवैत से हमलावरों को खदेड़ने

के लिए सिख यह महान त्याग करने को तैयार हैं." उधर, एसजीपीसी ने इराक से वहां बने गुरद्वारों की रक्षा की अपील की है.

उपलब्धिः णतरंज का ग्रैंड मास्टर खिताव दिव्येंदु बरुआ ने जीता है. यह ख़िताब जीतन

वाले वे दूसरे भारतीय बन 1988 में विश्वनाथन आनंद पहले यह गौरव हासिल कर चुके हैं. बरुआ ने डंकॅस सूपर ग्रैंड मास्टर शतरंज टूर्नामेंट के आखिरी दौर में

चीन के ग्रैंड मास्टर ये रोंग्गुआंग को रोमांचक तरीके से हराकर इस खिताब के लिए अपनी जीत दर्ज की.

प्रतिबंधितः भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड न दिल्ली की क्रिकेट टीम के रणजी ट्रॉफी मैन खेलने पर प्रतिबंध लगा दिया है; इस टीम ने लीग मैच में प्रतिद्वंद्वी टीम पंजाब की सहमित के विना अपायर बदल दिए थे. इस प्रतिबंध के खिलाफ दिल्ली की टीम ने अपनी दलीलें <sup>प्रश</sup> की हैं और इसे खारिज करने की मांग की हैं

48 इंडिया दुंडे • 28 फरवरी 1991

#### भार से अधरात्रि तक के राग

हा है का तक के रंगों की अनूठी संगीत यात्रा. एक-एक होंट्रे हो 16 व्योडियो ने से हों प्राप्तिक के स्वीक और आपके घर डाक अथवा कृरियर से पाने की सुविधा.



#### भोर के राग

भाग-1 (कोड ए 90001) ललित

राजन और साजन मिश्र (गायन) भैरव

शाहिद परवेज़ (सितार) अहीर भैरव

श्रुति सदोलिकर (गायन)

भाग-2 (कोड ए 90002) मियां की तोडी

अमजद अली खां (सरोद) भटियार

पंडित जसगज (गायन) विभास

श्रुति सदोलिकर (गायन)

भाग-3 (कोड ए 90003) जौनप्री

पद्मा तलवलकर (गायन) विलासखानी तोडी

अमजद अली खां (सरोद) देसी तोडी

खितावं

जीतने

अपनी

बोर्ड ने फी मैच टीम ने सहमति वंध के लि पेश

की है.

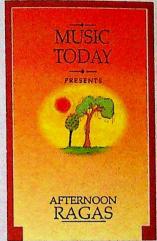
हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)

माग-4 (कोड ए 90004) कुकुम बिलावल

मिलकार्जन मंसूर (गायन) देशकार

रणहिद परवेज (सितार) मैखी

पद्मा तलवलकर (गायन)



#### दोपहर के राग

भाग-1 (कोड ए 90005)

शुद्ध सारंग अमजद अली खां (सरोद)

सुघर मल्लिकार्जुन मंसुर (गायन)

गौड़ सारंग पदमा तलवलकर (गायन)

भाग-2 (कोड ए 90006)

वृंदावनी सारंग हरिप्रसाद चौरसिया (बांस्री) मधमद सारंग

पंडित जसराज (गायन) धनी

शाहिद परवेज़ (सितार)

भाग-3 (कोड ए 90007)

भीमपलासी मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन)

पटदीप श्रुति सदोलिकर (गायन)

मांड

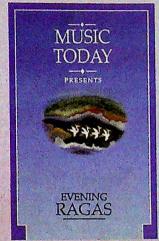
े शाहिद परवेज (सितार)

भाग-4 (कोड ए 90008) मुल्तानी

राजन और साजन मिश्र (गायन) मध्वती 🗻

हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)

पीलू . अमजद अली खां (संगेद)



#### सांध्य के राग

भाग-1 (कोड ए 90009) मारवा

पंडित जसराज (गायन)

श्रो श्रुति सदोलिकर (गायन)

हंसध्वनि शाहिद परवेज (सितार)

भाग-2 (कोड ए 90010)

पूरिया राजन और साजन मिश्र (गायन)

ज्याम कल्याण अमजद अली खां (सरोद)

नंद मिल्लकार्जुन मंसूर (गायन)

भाग-3 (कोड ए 90011)

शुद्ध कल्याण पद्मा तलवलकर (गायन)

मांझ खमाज हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)

दुर्गा राजन और साजन मिश्र (गायन)

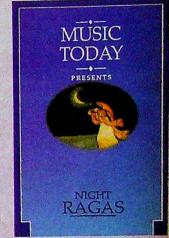
भाग-4 (कोड ए 90012)

यमन शाहिद परवेज़ (सितार)

शंकरा पंडित जसराज (गायन)

मिश्र घारा

श्रुति सदोलिकर (गायन)



#### रात्रि के सग

भाग-1 (कोड ए 90013)

शुद्ध नट मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन) केदार

पद्मा तलवलकर (गायन)

हरिप्रसाद चौरसिया (बांस्री)

भाग-2 (कोड ए 90014) वागेश्वरी

पंडित जसराज (गायन) हमीर

पद्मा तलवलकर (गायन) तिलक कामोद

शाहिद परवेज़ (सितार)

**भाग-3 (कोड ए 90015)** मालकौस हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)

मारु विहाग श्रुति सदोलिकर (गायन) जैजैवंती-

राजन और साजन मिश्र (गायन)

भाग-4 (कोड ए 90016) नायकी कान्हड़ा

श्रृति सदोलिकर (गायन) देश

पंडित जसराज (गायन) दरबारो

अमजद अली खां (सरोद)

कि वैका और भेजना शामिल) १ वेड हे, प्रति केंद्रा	कृपया ध्यान दे	4351	कैसेट संख्या	में 'म्युजिक दुंडे' कैसेटों के लिए नीचे लिखे विक
(र रे र प्रति केसर	<ul> <li>दिल्ली से बाहर के स्थानों के चेक्बें के साथ 10 ह. की ऑतरिक पशि</li> </ul>	E 90001		(टेक्स, पैकिंग और भेजना शामिल) आर्डर देना र
		2 90002	-	मेरे लिए 📗 उपहार 🔲
कि हो की एक रेपाल 'एड्रेमबुक' मुफ्त, प्याजक दुडे के किये है एक सब आईर पर आप पाएंगे 85 रू. मूट्य व के पहुंचे सुदेव मुक्त सफत	भावरंकः भूवरं, कलकता, महास और हिल्ली के केक/इमांड इम्परों का	£90003		प्यंजिक रहे के देव ह स
किया कि राजा प्रतिकार	एमआईसीआर होना आवश्यक.	<b>Q 90004</b>		के लिए 10 म और जोडे)/डिमोड द्वापट संलग्न व
क्र एक साथ आहे। प्राप्त पुपत प्राप्त देहें के	केसर आपके घर रजिस्ट डाक या कृतियर से पहुंचाए आएंगे.	0,90005		ऑर्डर किए कैसेटों की संख्या
के एक साथ आईर पर आप पाएंगे 85 ह. मूल्य व	े हिलीवरी के लिए कृपया कम में कम 3-4 सप्ताह के समय र	, g 90006		कल देय राशि
जिसे पहले	* उपहार देने के लिए कृपया उपहार पाने वाले का नम और पना संलग्न	1. 0 90007		Me Name
का हुं भी बुक पुप्त कि हुई के के 15 कैसरों का आई। एक साथ हेते	अर्दिर पार्ने पर लिखका भेजें. 4. 8. 16 वा साम्प्रक्रण केसेटी के उपसा	g 90008		Address
के का कि के में 15 के में न	आहर पान पर लिखका नवा ने हैं के करने भने वायोग मुन्त पहेंस	E 90009		Autor Comments
केंद्र भारत है। जाता है।	वक अन्यथा विवरण ने होने पर दाता का धेजी जायेगी.	01000 7	TO SECURE	

कारण देवें कोन्नर एड्स कंपैक्ट

देव पति म्यूजिक दुई के जम को और म्यूजिक दुई' पार बॉक्स ने 2 नई दिल्ली-110001 के पते पर मंत्रे

कृपया आईर फोर्म कम्प्यूटर प्रोतेसिंग सुंबध हेतु आँखी में ही परे अगर सल्लब आईर फार्म न मिले तो अपना आईर अपने नाम, पता

कारा सराज आहर प्राप्त न मारा हा अपना आहर अपने पास आर और देव राष्ट्रिय के साथ 'सूजिक दुई', पोस क्लेक्ट-भू, जा क्लिनी 110001 को पेय हैं यह क्लिक्ट-भू, जा क्लिनी 110001 को पेय हैं इर व प्राप्तरा साथ पास में के सन् है Omain. Guruku

बोड न	कैसंट संख्या	में 'मुजिक दुंडे' कैसेटों के लिए गींचे लिखे विवरण के अनुसार 45 र प्रति कैसेट की दर से
Q 90001	-	(टेब्स, पैकिंग और भेजना शामिल) आर्डर देना चाहता/बाहती हूँ।
Q 90002		前院 🗋 班班 🗎
Q 90003		व्यक्तिक दुढे को देव ह का नेवांकित चेक (दिल्ली से वाहर के ऑडरेंगे
₹ 93004		के लिए 10 के और जोड़े)/डिमांड द्वापट संलग्न कर रहा/रही हैं।
Q 90005		ऑर्डर किए कैसेटों की संख्या
90006 B	-	
0 90007		कुल देव गरित
# 90008	-	My Name
¥ 90009		Address
01000 p		
¥ 90011		Pin Phone No -
Q 90012		
E 90013		Gift for
Control of the Contro		Address
Q 90014		
<b>Q 90015</b>		Phn
Kangri C	ollection,	Haridwar

# बदल सकता है सियासी नक्शा



नक्शाः वी के. शर्मा जुकी

प्रमान स्वीतिया

हरावः

प्रमान के क्षान

प्रम के क्षान

प्रमान के के क्षान

प्रमान के क्षान

प्रमान के क्षान

प्रमान के क्षान

प्रम

- शेखर गुप्ता, पश्चिम एशिया में

्वि इंड युद्ध में जहां फौजी जनरल बारीक चालों का निर्देशन कर रहे हैं, वहीं इस अशांत क्षेत्र को युद्ध के बाद नया रूप देने की खातिर नई राजनैतिक गोटियां भी बिछाई जाने लगी हैं. अगर पश्चिमी देश पश्चिम एशिया में स्थायित्व प्रदान करने में नाकाम रहे तो युद्ध में उनकी जीत भी हार ही मानी जाएगी. उनके साथ जुड़े

अरब देशों के लिए तो यह विनाशकारी होगा ही, बुरी तरह विभाजित इस्लामी दुनिया में नेतृत्व की नई रस्साकशी भी शुरू हो सकती है. और पश्चिम एशिया की राजनीति की धुरी बने इच्चाएल के लिए यह युढ दीर्घकालिक परिवर्तन ला सकता है जिससे इसे पश्चिम एशिया में सम्मानजनक मान्यता भी मिल सकती है या वह अलग-थलग भी पड़ सकता है. बहरहाल, इस अति अशांत क्षेत्र के भविष्य पर कई प्रश्निचन्ह लगे हैं.

#### युद्ध के बाद का इराकः पस्तहौसला या अधिक जुझारू

युद्ध के वाद सद्दाम रहें न रहें, इराक का स्वरूप, चरित्र और इसकी भूमिका इस क्षेत्र के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण होगी. लेकिन क्या इससे स्थायित्व आएगा?

द्भ से अंतर में भित्रिष्य में इराक की क्या भूमिका होगी, यह इस पर निर्भर करेगा कि चालू युद्ध में उसे कैसी पराजय

मिलती है. मित्र देश शायद ही यह चाहें कि युद्ध के बाद उन्हें बेहद अपमानित इराक, बमबारी से तहस-नहस उसका ऊपरी ढांचा और भूख तथा कप्टों से जूझते उसके लोग मिलें. पर वे यही सब कुछ करने पर उतारू दिखते हैं. पश्चिमी देशों का मानना है कि तबाहहाल इराक में उन्हें पुनर्निर्माण और राजनैतिक पांव जमाने का मौका मिलेगा. पश्चिमी देश उस स्थित को बेहतरीन मानेंगे जब दूसरे विश्वयुद्ध से पहले जर्मनी की

तरह युद्ध से दंडित इराक को आर्थिक मदद की बेतहाणा जरूरत होगी और वह बाथ सैन्यवाद के बिना समृद्ध भविष्य के बदले

बमबारी से तबाह बगदाद में राहत कार्य



कोई समझौता करने को तैयार होगा. पर यह पश्चिम एशिया है, यूरोप नहीं इस तरह के अनुमान यहां काम नहीं देंगे और

इराक अरव सभ्यता की जन्मस्थली होने के कारण अखिल अरब आंदोलन का केंद्र तो बना ही रहेगा ■ अपने

कुवैत से बनकर

संजोने में

जाने का

लगाए ग सहाम भ

और पिं

के लिए।

में इराक

तेल के

इस सु

तेल असु

मारी भू

प्रति बेह

इतनी ते महाम पर

पहुँच जा

और संयु

लगती. त

होती थी

पश्चिमी

मावित ह

मंकल्पवा

हैं कुवैर्त

पाई. खा

विकल्प र

विर्घव

यह कम

दो महाद्वीपों में फैले इस क्षेत्र कें लोग सद्दाम से प्यार भले ही त करें, उनकी तारीफ तो करते ही हैं. अगर वे युद्ध झेल गए तो इराक दुनिया से शायद और अलग-थलग, अधिक सैन्यवादी, कदाचित राजनैतिक द्वीप बन कर रह जाए. एक वर्ष्ण पश्चिमी राजनियक के शब्दों में. "सबसे बुरी स्थिति तो यह होंगी कि सद्दाम को भारी लड़ाई के बिंद

50 इडिया दुडे • 28 फरवरी 1991



अपने सहायकों के साथ सद्दामः निरंकुश सत्ता

क्वैत से खदेड दिया जाए और वे नायक बनकर उभरें और अपनी सेना फिर से मंजोने में जूट जाएं." कुवैत से खदेड़ दिए गाने का मतलब होगा संयुक्त राष्ट्र के नगाए गए प्रतिबंध खत्म हो जाएंगे. फिर महाम भारी मात्रा में तेल निकालने लगेंगे और पश्चिमी कंपनियां उन्हें सैन्य पूनर्चना के लिए मदद देने लग जाएंगी. ऐसी स्थिति में इराक इस क्षेत्र में पश्चिमों देशों के हितों

ही, बूरी

की नई

शिया की

यह युद्ध

पश्चिम

ती है या

इस अति

के लिए

होगा. पर

नहीं. इस

देंगे और

जन्मस्थली

ल अख

ही रहेगा स क्षेत्र के

ही न कर,

हैं. अगर दुनिया स

अधिक

तिक द्वीप

न वरिष्ठ

शब्दों में, यह होगी

ई के बाद

को हडप जाएगा. इराक के उप-प्रधानमंत्री सदाऊं हम्मादी ने कहा भी, "आपको अच्छा लगे या नहीं, लडाई के बाद इराक पश्चिम के लिए ज्यादा बड़ा खतरा बनकर उभरेगा."

इसलिए हैरत नहीं कि कुवैत पर जमीनी हमला करने में मित्र देश लगातार देरी कर रहे हैं. इसकी एक वजह तो यह है कि वे जमीनी हमले में कम से कम गंवाना चाहते

इतना दरिद्र हो जाए कि उससे कोई खतरा ही न रहे. हताश और दरिद्र जनता इस स्थिति में बदलाव चाहेगी ही.

पश्चिमी देशों के सामने तीन संभावनाएं हो सकती हैं:

 सद्दाम हटा दिए जाएं मगर उनका कोई वारिस नहीं है. देश के भीतर या निर्वासित उनका कोई प्रतिस्पर्धी नहीं है. सद्दाम को हटाने से एक खतरनाक सत्ता-शून्य उभर सकता है. यह सोचना भी बेवकूफी होगी कि मध्य युग में जी रहे दूसरे अरब देश इराक में किसी बदलाव को प्रेरित कर पाएंगे. मगर अमेरिकियों के लिए ऐसा करना आत्मघाती ही होगा.

 चाहे कुछ भी हो, इराक और बाथ पार्टी के लोग प्रातनवादी और कट्टरपंथी दुनिया में आधनिकता के एक छोटे से हिस्से का ही सही, प्रतिनिधित्व तो करते ही हैं. लेकिन अगर ये भी नष्ट हो गए और उनकी जगह कट्टरपंथी बैठ गए, भले ही वे सऊदी अरब के कठपुतली हों, तो यह पश्चिमी देशों की बडी राजैनतिक हार होगी.

 पश्चिमी देशों की फौजें हटते ही इराक के भी हाथ से जाने का खतरा खड़ा हो जाएगा क्योंकि इसके तीनों पड़ोसी-सीरिया, तुर्की और ईरान-उस पर नजरें गड़ाए हुए हैं. यानी पश्चिम एशिया का शक्ति संतुलन गड़बड़ाएगा ही.

#### तेल के धनी छोटे अरब देशों की सुरक्षा का सवाल

इस सुरक्षा के लिए मूल्य तो वे खुशी से चुकाएंगे पर क्या दुनिया उनके विशाल क्षेत्रों और थोड़ी आबादी की हमेशा के लिए हिफाजत कर सकेगी?

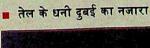
ल के धनी अरव देश अजीव-सी असुरक्षा में हैं. ढेर सारा पैसा, ढेर मारी भूमि पर कम आबादी और मुरक्षा के र्यत वेहद कम दूरदृष्टि. अगर अमेरिका जनी तेजी से सिक्रिय न हुआ होता तो महाम पहले सऊदी अरब और बहरीन तक वित्र जाते और फिर उनकी तूती कतर और संयुक्त अरव अमीरात तक बोलने भगती. पहले खाड़ी में छोटी-छोटी सेनाएं होती थीं जिनके पास अरवों डॉलर के भित्रमी हथियार थे, पर अब कुवैत ने भवित कर दिया है कि बढ़िया हथियार के अगे कितने टिक सकते क्षेती सेना तो छह घटे भी नहीं लड़ पहिं बाड़ी देशों को इन तीन में से एक विकल्प चुनना होगा:

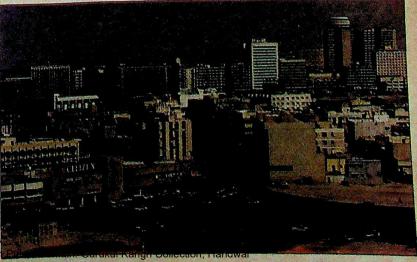
वीर्यकालिक पश्चिमी सुरक्षा का नकद क विषय मुकाना. पश्चिम के मित्र देशों के लिए वह केम खतरनाक नहीं होगा. वे पास के ही किसी क्षेत्र में भी जमे रह सकते हैं. या कम-से-कम अपना जलीरा वहां जमा सकते हैं लेकिन इसे राजनैतिक समझदारी नहीं

माना जा सकता है.

 सुरक्षा के लिए भाडे पर फौज रखना. पाकिस्तान ने इस आधार पर अपनी कुछ

नमम भोजानी





CC-0.

## Digitizant Foundation Primal Fid eGal IQDE I ESIG



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आपके कौन उ

और म के दौरा

आपकी

हेम्तहार रुक्ट

हसीला

बेहद भ

## SIGN OF OCCUPANT STATE AND STATE OF THE PROPERTY OF THE PROPER



### भरोसा है, मोदी टायर अपने साथ

आपको कुछ और सावधानी से काम लेना होगा। कौन जाने होनी कब किस मोड़ पर किस रूप में मिल जाए।

और माल यहाँ से वहाँ पहुंचाने

के दौरान कब-कहाँ

आपकी ड्राइवरी का

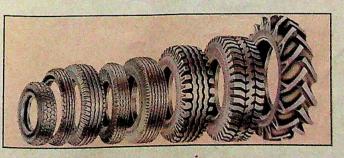
इन्तहान हो जाए ।

इसीलिए आपको चाहिए

बेहद भरोसेमंद टायर ।

ख़ास डिज़ाइन वाले ऐसे टायर जो हर मुश्किल से टकराएं और आपको मंज़िल तक पहुंचाएं। सुरक्षित !

आप भी भारत में सबसे ज़्यादा बिकने वाले मोदी कॉन्टीनेन्टल ट्रक



टायर का भरोसा आज़माइए । क्योंकि आपकी प्यारी बहना को है आपका इतजार ।

CC-0. In Public Domain.

फौज सऊदी अरब को दी भी थी. भारी-भरकम फौज और चौपट अर्थव्यवस्था वाला देश मिस्र अब ऐसा ही प्रस्ताव रख रहा है. उधर, बांग्लादेश भी खाड़ी के निर्यात बाजार पर नजरें जमाए हुए अपनी सेना की

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri थी. भारी- छठी डिबीजन तैयार कर रहा है. खाड़ी के समेत अमीर देश इस्लामी देशों से ऐसी सेनाएं तो ले सकते हैं पर ये सूरक्षा की गारंटी नहीं हैं.

 बेहतरीन समाधान जॉर्डन के शहजादे हसन ने सुझाया है. वह यह कि इज्राएल

oti। समेत पश्चिम एशिया के सभी देश एक न स्रक्षा रचना तैयार करें जिसमें पूरी तत निरस्त्रीकरण हो जाए. लेकिन इजाएक जब इसमें शामिल होगा तभी यह योजना सफल हो सकती है.

#### किसी दूसरे के युद्ध में तपा एक नया इज्राएल

इराक की आसन्न हार इज्राएल की अप्रत्यक्ष जीत है पर क्या इसके बाद तेल अवीव फिलस्तीनियों प्रति अधिक यथार्थवादी रुख अपनाएगा?

स हाम की आसन्त हार पर बदले की कार्रवाई और जश्न के शोर-शराबे में अरब जगत में छिड़े युद्ध के फायदे बटोर रहा इज्ञाएल भी महसूस कर रहा है कि युद्ध के बाद उस पर बदलाव के नए दबाव

पडेंगे. इजाएल के दक्षिणपंथी उपविदेशमंत्री बेंजामिन नेतानयाह भी मानते हैं, "सद्दाम की हार से इजाएल और फिलस्तीनियों में बातचीत की गुजाइश बनेगी."

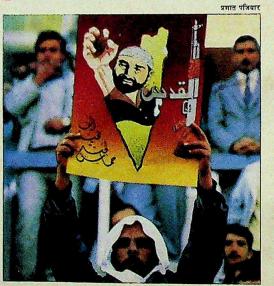
स्कड मिसाइलों के हमले चपचाप झेल जाने के बदले में इज्राएल चाहता है कि पश्चिमी देश फिलस्तीनियों को कोई रियायत न देने का उसका रवैया मान लें. पर अमेरिका ने स्पष्ट कर दिया है कि युद्ध का गुबार बैठते ही इस समस्या का समाधान भी खोजा जाना होगा. समाधान खोजे बगैर इस क्षेत्र में स्थायी शांति संभव नहीं. इस बात से तो दक्षिणपंथी भी सहमत हैं. मुंबई में पैदा हए यहदी और फिलस्तीनियों के हमदर्द एबी नाथन के अनुसार, "इस लडाई से एक ऐतिहासिक अवसर नसीब हुआ है. फिलस्तीन को छोड़ अरबों के

मन में हमारे खिलाफ किसी तरह का पूर्वाग्रह नहीं है."

कहने को तो प्रधानमंत्री यित्जक शमीर ने पश्चिम एशिया शांति सम्मेलन में शामिल होने से इनकार कर दिया है. लेकिन युद्ध बाद की वास्तविकता में इज्राएल के पास ये विकल्प ही बचेंगे:

 वह अधिक सैन्यवादी, दक्षिणपंथी रास्ता अपनाए और फिलस्तीनियों को सीमित

अम्मान में फिलस्तीनी प्रदर्शनकारी



स्वायत्तता के अलावा कुछ नहीं दे. इसका नतीजा यह होगा कि वह अंतरराष्ट्रीय तौर पर अलग-थलग पड़ जाएगा.

■ फिलस्तीनियों को कुछ रियायत दे दे

और, जैसा कि कई अमेरिकी नेता सुझाइ देते रहे हैं, अपनी सुरक्षा का भार संभवत उसमें हिस्सेदा नाटो में शामिल होकर पश्चिम पर छोडरे मगर इज्राएली इसे मंजूर नहीं करेंगे.

 फिलस्तीनियों और अरब पड़ोसियों से क्वम एशिय शांति समझौता कर ले और पश्चिम एशिया क्षेत्र में एकसार हो जाए.

> विकल्प इज्राएली बाडी के स उदारवादियों का पसंदीदा है. पूर्व प्रधानमंत्री और लेबर पार्टी के नेता शिमॉन पेरेज इस बारे में सप आके लिए "इज्राएल फिलस्तीनियो और अरबा ही हो होगी ब फिलस्तीनियों और अरबों मौजूदा सैन्य श्रेष्ठता को बनाए हि तौन जोक रखने का खर्च वहन नहीं का कि किंगमेकर सकता. इससे हम बरबाद है किर दूसरों पेरेज और दूसा गहता है. लेरि जाएंगे.'' उदारवादी नेताओं का सुझाव है जि तेजी से इज्याएल को पश्चिम एशिया में ए रख देश तो साझा बाजार बनाने की अगुआ करा गया. करनी चाहिए और अरबों के पार बात समने ह जिस कौशल और प्रौद्योगिकी की परिएक्व इ अभाव है, मूहैया करानी चाहिए कहने को तो अनुदारवादी हैं कि के लिए

तरह के शांति प्रयासों का विरोध पिचम को करेंगे. लेकिन बेहद कट्टरपंथियों को छोड़क लिने के लि ज्यादातर इज्राएली मौजूदा लड़ाई से हिंगा को उ उठे हैं. इंज्राएल को फिलस्तीनियाँ शांतिपूर्ण संबंध बनाने ही होंगे.

बिना तेल वाले, कमजोर अरब देशों का भविष्य

उन्हें पश्चिमी देशों या तेल के धनी देशों में से किसी एक का प्रभुत्व स्वीकार करना है. सवाल यह है। वे दो में से किस शैतान का चुनाव करें

स्म हाम ने गरीब, बिना तेल वाले अरब देशों की एक नब्ज असरदार तरीके से पकड़ ली है. और वह है तेल के धनी अरब देशों के प्रति उनका तिरस्कार. जहां अधिसंख्य अरब आबादी और गरीब देशों-सीरिया, मिस्र, लेबनान और जॉर्डन

- को अरब जगत और इज्राएल की दुश्मनी की मार सहनी पड़ी है, वहीं संपन्न और कम आबादी वाले देशों की इससे लाभ पहुंचा है. मिस्र के सरकारी दैनिक 'अल असबार' के मुख्य संपादक सादिसोनबोल कहते हैं, "हमने इज्राएल के खिलाफ तीन जंगें लड़ीं और अपने को कंगाल बना तिया लेकिन तेल के धनी देश सिर्फ तेल कीमतें बढ़ाते रहे, और मुंहजबानी हैं समर्थन देते रहे."

सत्ता के खिलाड़ी इस क्षेत्र राजैनतिक नक्शा फिर से खींच रहे हैं

वे जिलेगा.

किल्पों पर तेल संपत्ति

(बाएं से

। गरीब देश और अमीर दे

नमाओ और नियम देशों क युद्धोत्तर त मिति का पू रेष फायदा त

हा सहाम ह भादा शिया अ के फायदा म रेख का नियं निम के रक्ष महो परिवार

रेगिनयों व व इराकी उ देश एक ना में पूरी तख न इजाएत यह योजना

ीनियों वे

गर संभवत अमें हिस्सेदारी. पर छोड है। करेंगे. और पश्चिम

ोदा है. पूर्व ाएल

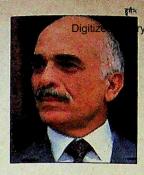
हो जाए.

ो चाहिए

वना तिण र्फ तेल जवानी हैं व स्ताकी उप-राष्ट्रपति उज्जत

मिहिम ने ठीक 15 जनवरी के क्षेत्र (信意







(बएं से दाएं) होस्री मुबारक, शाह हुसैन और असद

क़िसों पर चर्चा भी हो रही है: नेता सुझार तेत संपत्ति का न्यायोचित वितरण या

गरीब देशों के लोगों को रोजगार देने और अमीर देशों से रकम खींचने के लिए पड़ोसियों हे <sub>पविम</sub> एशिया में साझा बाजार का गठन

यहां गरीब लेकिन राजनैतिक रूप से अधिक व्यावहारिक और अमीर लेकिन धार्मिक रूप से रूढिवादी देशों के बीच के वैचारिक मतभेदों की समस्या पैदा होगी.

 ऐसी व्यवस्था बनाना जिसके तहत गरीब देशों की भारी-भरकम सेनाएं अमीर

ai अखोसिGबोम्मों) की रक्षा करें. लेकिन पड़ोसी देशों में आपसी अविश्वास है और कई शासनों को तख्ता पलट का खतरा है.

दरअसल, पश्चिम की सबसे बडी चिता इन देशों की सरकारों को बनाए रखने की है. मिस्र के होस्री मुबारक पहले से ही कट्टरपंथी उभार का सामना कर रहे हैं. जॉर्डन के शाह हुसैन इराक समर्थक हाव-भाव दिखा रहे हैं लेकिन उनके बहसंख्य फिलस्तीनियों को अभी भी उन पर भरोसा नहीं है और यदि शाह हसैन इज्राएल के साथ शांति कायम करेंगे तो वे विद्रोह में उठ खड़े होंगे. मोरक्को के पश्चिम समर्थक शाह हसन ने मित्र देशों के समर्थन में लड़ने के लिए एक सैन्य दल भेजा है जबकि उनकी बहन और बेटी इराकियों के लिए खलेआम धन जुटा रही हैं. पश्चिमी विजेताओं को ये उलझनें झेलनी पडेंगी.

#### इजाएनं हाड़ी के स्थायित्व के लिए अहमियत अख्तियार करता ईरान

ादा है पूर्व हिं ताकतवर शिया राष्ट्र इस्लामी जगत का नेतृत्व हथियाने के लिए भरपूर कोशिश कर रहा है पर रे में सार अपने लिए जरूरी विश्वसनीयता कैसे हासिल करेगा?

अरवों हैं विज्ञा ही युद्ध में शामिल देशों के ही होगी. वह स्पष्ट कर दिया है को बनाए हं औन जोकर है, कौन शांति का पक्षधर, नहीं का कि किममेकर और कौन स्वार्थ के वशीभूत बरबाद है कि दूसरों के संकट से लाभ उठाना गैर दू<sup>मां</sup> <sup>ग्ला है</sup> लेकिन पिछले पखवाड़े ईरान ने सुझाव है कि जा तेजों से कूटनैतिक रंग दिखाए उससे ज़िया में ए एवं देश तो क्या, पश्चिमी जगत भी की अगुआ करा गया. बैर, अब ईरानी खेल का रबों के पार कि सामने आने लगा है.

द्योगिकी म । परिपक्व शांतिदूत की भूमिका मित्राओं और इस्लामी जगत के ारवादी <sup>झ</sup>ेंग्ल के लिए कोशिश करो.

का विरोध । पिचम को ईरान के साथ संबंध को छोड़क माने के लिए मजबूर कर दो. ड़ाई से हिंगा को उद्योगीकरण के लिए स्तीनियों किम देशों की बहुत जरूरत है. गुडोत्तर पश्चिम एशिया की वित का पूरा फायदा उठाओ. व भायदा तो इराक से मिलेगा हा महाम के बाद का शासन श्रीत शिया अभिमुख हो सकता है. भागवा मिस्जिदों पर सऊदी का नियंत्रण खत्म होने और निम के एसक के रूप में सऊदी भी परिवार की साख मिट जाने रिगिनियों का खेल तर्कसंगत है

पहले ईरान की यात्रा कर उनसे समर्थन देने

तथा विमानों की रक्षा करने का अनुरोध किया तो ईरानियों ने उसे मान लिया. लेकिन लड़ाई शुरू होते ही तेहरान बड़ी चालाकी से दोहरी चाल चलने लगा. जहां उसने पश्चिम देशों की निंदा की, वहीं यद्भविराम के लिए मध्यस्थता की पेशकश भी की. यदि इराक ने युद्धविराम मंजूर कर लिया और पश्चिम देशों ने इराकी युद्धविराम का जवाब नहीं दिया तो

राष्ट्रपति रफसंजानीः दोहरा खेल



इस्लामी देश एक शीर्ष सम्मेलन करेंगे और शायद उनके विरुद्ध संयुक्त रूप से मोर्चा खोलेंगे. अभी तक ईरान ने अपने पत्ते इतनी बृद्धिमानी से फेंके हैं कि बुश तक को दाद देनी पड़ेगी. पर कुछ रुकावटें भी हैं. मास्को हालांकि ईरानी चालों से जुड़ा हुआ है लेकिन वह कभी नहीं चाहेगा कि ईरान इस्लामी जगत के नेता के रूप में उभरे क्योंकि कुछ सोवियत इस्लामी गणराज्यों में झगडे शुरू हो गए हैं. इन गणराज्यों के

> ईरान से जातीय और कबीलाई संबंध हैं. उधर, बगदाद का भी ईरान पर विश्वास नहीं है. यह विरोधाभास ही है कि ईरान की तरफ झकते समय इराक मित्र देशों के हथियारों से ज्यादा शिया वैचारिक क्रांति से चितित होगा.

इस तरह, युद्ध के बाद नई अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की बात तो बड़ी आसानी से की जा सकती है राजनैतिक समीकरण बैठाना और सीमाएं तय करना युद्ध संचालन से कहीं ज्यादा जटिल साबित होगा. यह युद्ध सद्दाम को भले ही हटा दे लेकिन वे तो इस क्षेत्र की हिसक अस्थिरता के प्रतीक भर हैं. और यदि इस अस्थिरता को दूर न किया गया तो तेल के धनी, खुन से सराबोर रेगिस्तान में और भी खतरनाक आंधी बह सकती है.

भारतीय कामगार

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

### जीने-मरने का सवाल

का सामना करना पड़ा, जबकि कुछ हजार अभी इराक, क्वैत में फंसे हैं.

राक पर अमेरिकी बमवर्षक विमानों के हमले की शुरुआत के ठीक पर अमेरिकी बमवर्षक दो दिन पहले, बसरा शहर के पास नालियां बनाने की परियोजना पर काम कर रहे भारतीयों के एक दल ने फैसला किया कि लड़ाई ग्रूरू होने की स्थिति में अपने बचाव के लिए उन्हें कुछ करना चाहिए. वक्त कम था, इसलिए उन्होंने जमीन पाटने वाले भारी वाहनों और क्रेनों की मदद से बड़े गड्ढे खोदे और उनमें स्टील की विशाल पाइपें डाल दीं उसके बाद उन पाइपों पर एक मीटर रेत पाट दी गई. ये सूरक्षात्मक उपाय अभी खत्म भी नहीं हुए थे कि आकाश गर्जना से भर उठा. जयप्रकाश एसोसिएट्स के लिए काम करने वाले 400 से अधिक भारतीय मजदूरों ने फिर उन्हीं पाइपों में दो दिन और रातें काटीं.

उनका संकट तब समाप्त हुआ जब वे बसों के काफिले में शामिल हो इराक-जॉर्डन की सीमा पर पहुंच गए. इसके बाद 10 दिन तीन शरणार्थी शिविरों में रहने के बाद उन्हें दो सोवियत चार्टर विमानों के जरिए मुंबई लाया गया. परियोजना के मुख्य अधिकारी ओ.पी. मेहता के अनुसार, "इराक छोडते हुए मुझे एक अजीव उदासी ने आ घेरा. पिछले कई महीनों से वह रेगिस्तान ही हमारा घर था.'

लेकिन मेहता और उनका दल भाग्यशाली था. उन्हें कम-से-कम निकलने के लिए गाडियां तो मिल गई. मगर उन भारतीय नर्सों की दशा दयनीय थी जिनके निकासी वीसा की समय सीमा समाप्त हो गई थी. इसी तरह इराक में ओवेरॉय समूह के तीन होटलों के वे 80 भारतीय कर्मचारी भी थे जिनका वीसा समाप्त हो

नवंबर से ही इराक स्थित भारतीय राजदूत के.एन. बक्शी इराक में कार्यरत तमाम भारतीय कंपनियों को चेतावनी देते आए थे कि वे इराकी एजेंसियों के साथ अपने वर्तमान ठेकों को या तो समाप्त कर दें या फिलहाल रोक दें. उसके बाद ही वे निकासी वीसा के लिए आवेदन दे सकेंगे.

लेकिन ओबेरॉय के प्रबंधकों ने मामले

कई भारतीयों को पलायन में मुश्किलों की गंभीरता को नहीं समझा. और वह भी इस बात के बावजूद कि समूह प्रमुख एम.एस. ओबेरॉय के पोते अजय कपूर पत्नी के साथ इराक में ही फंसे पडे थे.

> फिर 13 जनवरी को ओबेरॉय समूह के बगदाद स्थित बेबिलॉन होटल के करीब 40 कर्मचारियों ने मोसूल स्थित ओवेरॉय समूह के होटल द निनेवे में शरण ली. यह स्थान तुर्की की सीमा से करीब 160 किमी

दूर है. यहां वे लोग द निनेवे के 40 कर्मचारियों के साथ मिल गए. और यह समूह होटल के तलघर में बने बम से सूरक्षित स्थान में तीन हफ्तों से भी अधिक समय तक जैसे-तैसे शरण लिए रहा. फिर किसी तरह एक संदेशवाहक बगदाद तक जा पहुंचा और उसने संपर्क के एकमात्र माध्यम, भारतीय दूतावास के वायरलेस सेट के जरिए नई दिल्ली तक अपना संदेश भेजा.

वैसे, ये समस्याएं तो स्थित भारतीय कंपनियों की तकलीफों की शुरुआत ही हैं. उपकरणों को वापस लाना और बकाया रकम वसुलना बेहद कठिन काम सीबित होगा. इराक में निर्माण परियोजनाओं से संबद्ध करीब 20 भारतीय निर्माण कंपनियों का अभी करीब 1,800 करोड़ रु. फंसा पड़ा है.

कांटिनेंटल कंस्ट्रक्शन के अघ्यक्ष सी.एल. वर्मा का दावा है कि सभी भारतीय

निर्माण कंपनियों को देय क्ल रकम में से तकरीबन एक-तिहाई रकम तो उन्हीं की कंपनी की है. उनका कहना है कि सरकार को भारतीय आयात-निर्यात वैंक और द एक्सपोर्ट क्रेडिट गारंटी कार्पोरेशन से कहना चाहिए कि वह उन निजी फर्मों के कुछ घाटे को पूरा करे जो इराक में काम कर रही थीं. वे कहते हैं, "हमारे पास नई परियोजनाओं के लिए निविदाएं भरने लायक भी पूंजी नहीं है."

वैसे इस मसले को लेकर काफी मतभेद

हैं कि भारतीय कामगार युद्ध के बाद पूर्नानमाण के लिए इराक और कवैत लौटेंगे या नहीं. एक पक्ष का विचार है कि इन देशों के साथ भारत के अच्छे संबंधों के कारण बहुत फर्क नहीं आएगा. दूसरों का मानना कि नई परियोजनाएं हासिल करने के लिए भारतीय फर्मों को अब कडी प्रतिद्वंद्विता का सामना करना पडेगा.

तो बद

और

समय

हाँकिन

पेट्रो

परीक्षप

कुकर

ईंधन

किए य

प्रयोगों

हॅंकिन

का तेत

कैसे

और त

प्रमाण

भारतीर

यूरोप ः

अच्छे

बिक र

किप

आपके

श्रेणी ह

इस्तेमात

पकाने

इसिला

के हाँवि

बचत र

साइर

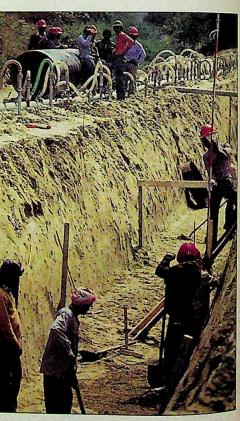
१लि

३लि

४लि ५लि

इराक में 9,000 भारतीय कामगारों में

#### खाड़ी में भारतीय मजदूर



से केवल कुछ सौ ही फरवरी के दूसरे हफ्ते तक वहां बच रहे थे. कुवैत के 1.7 लाब भारतीयों में से 1.5 लाख को पहले निकाल लाया गया था. अनुमान है कि करीव 8,000 भारतीय अभी भी कुवैत में हैं और भारतीय राजनियक उनके बारे में निश्चित तौर पर कुछ नहीं जानते. जी लोग अभी वहीं हैं, उनके लिए सवाल जीने-मरने का है. और जो वहां से निकल आए, उन्हें चिंता आजीविका ढूंढ़ने की है

-परंजय गुहा ठाकुरता और ब्यूरो रिपोर्ट

56 इंडिया टुंड ◆ 28 फरवरी 1991

## ग्राकल्स लाइए. ४०% ईंधन खर्च बचाइए.

आजकल ईंधन की कीमतें तो बढती ही जा रही हैं. ईंधन और पैसे बचाने का काफ़ी समय से परखा हुआ साधन है हॅंकिन्स प्रेशर कुकर.

के बाद

र क्वैत ार है कि संबंधों के सरों का नल करने

ख कडी

सरे हफ्ते

.7 लाख

निकाल

बारे में

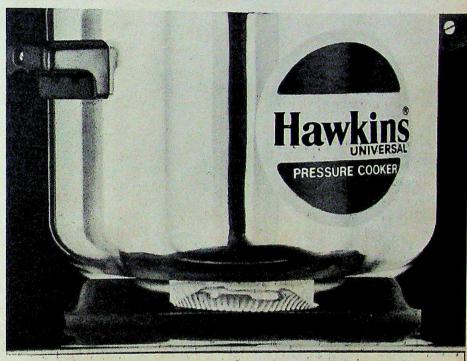
नते. जो सवाल निकल

न की है रो रिपोर्ट

गा. मगारों में

> पेट्रोलियम मंत्रालय के परीक्षण दरसाते हैं कि प्रेशर ककर ४०% से भी अधिक ईंधन बचाते हैं. हॉकिन्स में किए गए पकाने के वैज्ञानिक प्रयोगों ने सिद्ध किया है कि हॅंकिन्स औसतन ५३% मिट्टी का तेल बचाता है

> कैसे? हॉकिन्स की डिज़ाइन और क्वॉलिटी सर्वोत्तम हैं. प्रमाण? हॉकिन्स ही सिर्फ़ ऐसा भारतीय प्रेशर कुकर है जो यूरोप और अमेरिका के सबसे अच्छे डिपार्टमेंट स्टोरों में भी बिक रहा है.



हांकिन्स बचाता है रु. ५०० प्रतिवर्ष

किफ़ायत और सहूलियत के सबसे अच्छे मिलाप के लिए आपके पास छोटे, मध्यम और बड़े हॉकिन्स प्रेशर कुकरों की श्रेणी होनी चाहिए. थोड़ा-सा खाना पकाने के लिए बड़ा कुकर इस्तेमाल करने से ईंधन की बरबादी होती है. ज्यादा खाना पकाने के लिए छोटा कुकर उपयोग करना अव्यावहारिक है. इसिलए अपनी रसोई की हर ज़रूरत के मुताबिक सही साइज़ के हाँकिन्स खरीदिए. और समय तथा पैसे की और भी अधिक बचत कीजिए.

साइज़	मूल्य*	साइज़	मूल्य*
२ लिटर ३ लिटर	ह. २९०	६.५ लिटर	ह. ५१५
४ लिटर	₹. ३५०	८ लिटर	रु. ५६५
५ लिटर	ह. ४२५	१० लिटर	रु. ६६५
'Dri	रु. ४६५	१२ लिटर	रु. ७६५

किफ़ायत करने का समय बिलकल न खोयें. जल्दी से नजदीक के हॉकिन्स नियमित विक्रेता के पास जाएं और अपनी ज़रूरत के मुताबिक हॉकिन्स के मॉडल अपने लिए चून लें.

300 से भी अधिक सेवा केंद्रों में हॉकिन्स मुफ़्त सेवा प्रदान करते हैं, हर केंद्र में फ़ैक्टरी में प्रशिक्षित कारीगर तैनात हैं. और हरेक में असली अतिरिक्त पुर्ज़ों का स्टॉक है. कोई मदद चाहिए तो यहां लिखें : हॅाकिन्स, विभाग क्र. ६२, पी.ओ. बाक्स ६४८१. बम्बई ४०० ०१६.

उत्तमता ऐसी कि भारतभर को है भरोसा



करोड से ज़्यादा प्रेशर कुकर बिके हैं



कों सहित अधिकतम मृत्य सेपरेटरों के बिना स्टैंडर्ड बेस के लिए. CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

#### उत्तर प्रदेश दूरी और दांव

 मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव इन दिनों प्रधानमंत्री चंद्रशेखर से इस तरह बचते फिर रहे हैं जिस तरह कोई किसी छूत की बीमारी से बचने की कोशिश करता हो.

राज्य में प्रधानमंत्री के समारोहों से गैर-हाजिर रहने की उनकी प्रवृत्ति से खासी परेशानियां खड़ी हो रही हैं. 13 जनवरी को चंद्रशेखर बलिया आए और वाराणसी में ठहरे तो मुलायम ने उनकी अगवानी करने की भी जरूरत नहीं समझी. उन्हें फर्हसाबाद में एक छोटी-सी परियोजना का उद्घाटन करना ज्यादा जरूरी लगा. फिर 5 फरवरी को मुलायम इलाहाबाद हवाई अड्डे तक गए तो जरूर, लेकिन चंद्रशेखर के रवाना होते-होते ही चित्रक्ट में आयोजित एक सार्वजनिक समारोह में शामिल



चंद्रशेखरं के साथ मुलायम

होने के लिए वहां से चल पड़े.

दोनों नेता सिर्फ एक बार साथ देखे गए—इस महीने के शुरू में बिलया में हुए जनता दल (स) के अधिवेशन में. लेकिन यहां भी मुलायम ने चंद्रशेखर की तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया.

प्रधानमंत्री के प्रति इस ठंडे व्यवहार की वजह साफ है. उन्हें एहसास है कि चंद्रशेखर और राजीव के रिश्ते अब ठंडे पड़ते जा रहे हैं और दोनों में दूरी बढ़ रही है. इसलिए सबसे दूरी बनाए रखकर मुलायम सही घोड़े पर दांव लगाने का फैसला अपने हाथ रखना चाह रहे हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri बिहार

#### फूंक के आगे खड़ा पहाड़

• लालू प्रसाद यादव की सरकार का तस्ता पलटने की जनता दल (स) की कोशिशों फूंक से पहाड़ उड़ाने जैसी हास्यास्पद ही लग रही हैं: बलिया में जद (स) के राष्ट्रीय सम्मेलन में बिहार से आए पार्टी के सदस्यों ने

दल के 'असंतुष्ट' अध्यक्ष राम मुंदर दास को फुसलाने के काम में लगा दिया गया.

दास और लालू यादव के संबंध अब तक अच्छे ही रहे हैं. लेकिन निगमों और बोर्डो के अध्यक्षों की नियुक्ति के समय लालू यादव ने

र कृष्ण मुरारी कृष्ण





रामसुंदर दास (बाएं) और लालू यादव

तिमलनाडु की तरह बिहार में भी राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग की. लेकिन आलाकमान ने इस मांग पर ध्यान नहीं दिया. हां, उसने केंद्रीय स्वास्थ्य उपमंत्री दसई चौधरी को बिहार जनता अपने ही समर्थकों को तरजीह दी. लालू यादव विरोधी गुट के भरोसे दास मुख्यमंत्री पद के लिए अपना दावा रख सकते हैं लेकिन लालू यादव को हिलाना सहज नहीं होगा.

#### मध्य प्रदेश अनूठी उदारता

मध्य प्रदेश इंका अध्यक्ष और पंजाब के पूर्व राज्यपाल अर्जुन सिंह के दो मकान भोपाल में और एक दिल्ली में है. इन तीनों जगहों पर उनकी सुरक्षा के लिए 120 सुरक्षाकर्मी तैनात हैं. हर महीने इस पर 2.5 लाख रु. खर्च होते हैं.

लिहाजा, पुलिस मुख्यालय ने इसमें कटौती करने का प्रस्ताव भेजा. लेकिन मुख्यमंत्री मुंदरलाल पटवा ने कटौती प्रस्ताव को 'मानवीय आधार' पर नामंजूर कर दिया क्योंकि अर्जुन सिंह इन दिनों स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं.

#### मुरक्षाकामयों से घिरे अर्जुन सिंह



#### पंजाब भाषा का सच

• पंजाब में भाषा को लेकर हमेशा ही विवाद छिड़ता रहा है, जनगणना शुरू हुई तो सबकी निगाहें इस ओर ही ट्रिक गई कि राज्य के हिंदू किसे अपनी मानुभाषा लिखवाते हैं. उग्रवादियों ने कह रखा है कि वे पंजाबी को अपनी मानुभाषा लिखवाएं.

1961 की जनगणना के दौरान धर्म लोगों पर हावी रहा. तब 65 फीसदी लोगों ने पंजाबी को और 35 फीसदी ने हिंदी को अपनी मातृभाषा बताया था. लेकिन 1981 में 85 फीसदी लोगों ने पंजाबी को अपनी भाषा लिखवाया.

उम्मीद है, इस बार हिंदू सच ही कहेंगे.

#### गुजरात निषेध जारी

 महातमा गांधी के प्रदेश की सरकार को ऐसी सलाह की कतई जरूरत नहीं थी. हाईकोर्ट के सेवा-निवृत्त जज अनिरुद्ध दवे ने सुझाव



अव

यूरोप व

डिज़ाइ

खूबस्

मोती हं

अवैध शराब की मार

दिया है कि राज्य सरकार को मध निषेध नीति को खत्म कर देता चाहिए क्योंकि इससे सबसे ज्यादा फायदा पुलिस और अवैध शराब खींचने वालों को ही हुआ है. अवैध शराब पीने से हर वर्ष सैकड़ों लोग मरते हैं.

इसलिए, दवे का सुझाब था कि सरकारी डिस्टिलरियां लोगों की सस्ती शराब उपलब्ध कराएं. जैसी कि उम्मीद थी, चिमनभाई पटेल ने उनका सुझाब नहीं माता. गुजरात में मद्य निषेध जारी रहेगा और इसका अधिक सख्ती से पालन किया जाएगा. Digitized by Arya Samai Foundation Chennal and Gangotri

खास मौकों के लिए बनी खास ड्रेस बॉच, केवल चुने हुए शहरों में उपलब्ध, जेन्द्स: R1.5411\* लेडीन: R1.5048\*

#### अब टाइटन की नई रॉयाल. शाही शान की सही पहचा

टीटा पेश करते हैं टाइटन घड़ियों का एक शाही घराना - नई रॉयाल घड़ियाँ. यूपेप की घड़ियों से मेल खाते खूबसूरत डिज़ाइनों में ढलीं. १८ और २३ कैरेट गोल्ड प्लेटिंग की, १० माइक्रॉन की दोहरी परत से सजी घड़ियाँ, जिनके रूप से घड़कनें थम जाएँ, नज़रें ठहर जाएँ.



रु. ३,५०० से रु. ५,८०० तक में मित इन घड़ियों को आपकी कलाई पर सजाए रखते हैं वो ब्रेसलेट जिनकी सैकडों कड़ियों में झलकता है कारीगरी का कमाल. टाइटन की रॉयाल - एक शाही पसन्द है, ४०० से ज्यादा, अन्तर्राष्ट्रीय क्वॉर्ट्ज़ घडियों के खज़ाने से. हर घडी के साथ

खूबसूरती की एक नई मिसाल, घड़ियाँ जिनके डायल सजे हैं असली <sup>मोती</sup> से और इनमें चार चाँद लगे हैं सोने और ज़िरकोनियम से.

आपको मिलेगा टाटा के नाम का भरोसा और २ साल की गारण्टी. टाइटन की रॉयाल - सही पहचान - शाही शान की.

दिल्ली में लागू सभी कर इस क्रोमत में शामिल हैं.

The Changing Face Of Time

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Ogilvy&Mather 3181

व था कि तेगों को एं. जैसी ई पटेल माना.

को मद्य

कर देना

से ज्यादा

य शराव

है. अवैध

ड़ों लोग

च

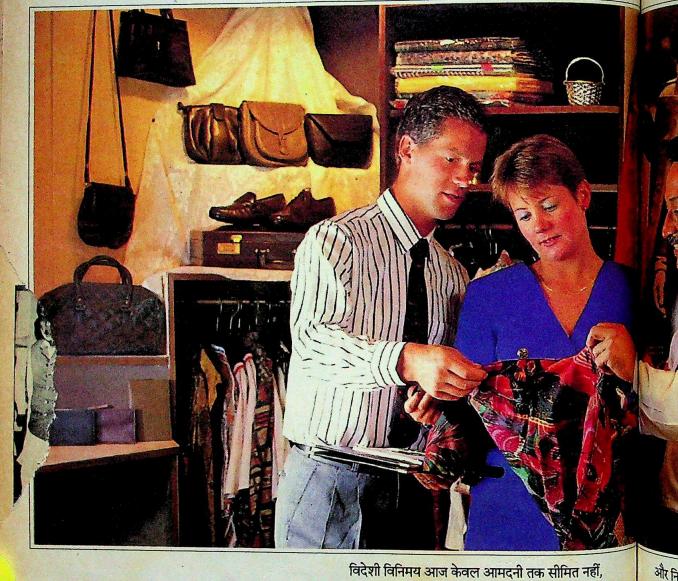
को लेकर ा रहा है. तो सबकी क गई कि ने अपनी उग्रवादियों ांजाबी को ाएं. के दौरान T. तव 65 को और पनी मातु-1981 में जावी को

हिंदू सच

प्रदेश की की कतई के सेवा-ने सुझाव वल्लभ गाह

री रहेगा स्ती से

## TOTAL AND SIGNATED AND STATE OF STATE O



आई टी सी भारतीय उत्पादनकर्ताओं और विदेशी क्रेताओं के बीच संपर्क-सूत्र।

विदेशी विनिमय आज केवल आमदनी तक सीमित नहीं, बल्कि यह विचारों व संबंधों के आदान-प्रदान का साधन बन गया है।

> जैसे कि आई टी सी के सौजन्य से भारत व विश्व के अन्य देशों के बीच।

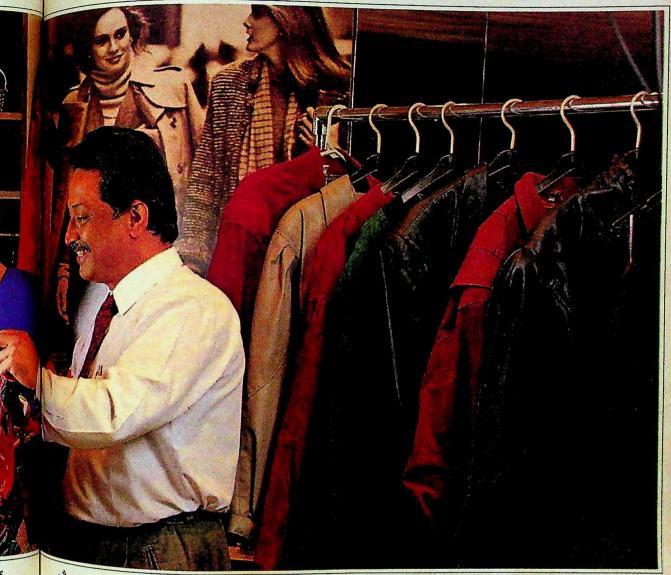
इसकी

आई टी

146क

अपने देश में आई टी सी उत्पादनकर्ताओं को बढ़ावा देता है, उनके कौशल को आगे बढ़ाने में सहायता करता है। विदेश में आई टी सी का बढ़ता क्रिया-कलाप नए तरीकों व तकनीकों से पहचान बनाता है

इन्टर्नैशनल बिज़नेसेज़ डिविज़न ● इंडिया टोबैको डिविज़न ● इंडियन लीफ़ टोबैको डेवेलप्पेन्ट डिविज़न ऐप्री-बिज़नेसेज़ डिविज़न ● इन्फ़र्मेशन सिस्टम्ज़ डिविज़न ● पैकिजिंग एण्ड प्रिन्टिंग डिविज़न ● वेल्कमग्रुप—होटलज़ डिविज़न CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



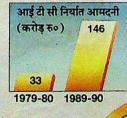
और निर्यात के लिए महत्वपूर्ण जानकारी अर्जित करता है। इसकी पूर्ण-परिपक्व व्यापार-सेवा व्यवस्था विभिन्न



हि

व्यापार-वस्तुओं को जमा करके उन्हें एकीकृत रूप से विक्रय करने का अवसर देती है।

इन्हीं क्षमताओं के कारण १४६ सी ने 1989-90 में सभी पूर्व रिकॉर्ड तोड़कर १४६ करोड़ रु॰ का विदेशी विनिमय अर्जित किया है और



इससे भी बढ़कर, 'मेड इन इंडिया' के लेबिल को नया गौरव प्रदान किया है।



Contract ITC 151.90 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar ए, नई आशाएँ।

## कु ही मिनटों में, आप इस पेपर पर संगमरमर का फर्श बना सकते हैं



Armstrong ब्लैंडेड मार्बल टाइल तुरंत शानदार फर्श तैयार ong World Industries permit INARCO Ltd, the use of the trademark Armstrong, under licence,

INARCO Offices: Bombay: 12-A, Advent., Gen. Bhosale Marg, Bombay 400 021. Ph. 2022621, 2022213 ★ Delhi: Ph. 3712049. 3712253, 3324418 \* Calcutta: Ph. 444990, 432768 \*Madras: Ph. 475191, 476596, 479186

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

HTA 1165

• हाल पुलिस मह अब तक न

है. इसकी

उन्होंने क

कर दिया राजनैतिव

वर्वा में हैं

दिन पहले

वदलकर

और अपने

मामने परे

राज्य

डी.ए विरोधी अ हिमा की न मुनवाई में के हर आ उनका कह

पास इस व

बल्लभ पट हिसा के लि सिह भा गव चरम नारा दोष भवाददाताः हैंका के गुंडे भी कि ज़े.

कटक स्थि माह दे रा वव पुर का तमगा

बुलंद हैं. मरकार इ

केरार दे र कि मुख्यमंड वहाने का किया, इस वेदला है. हमारे पीज पर ही तो

सेवानि

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

#### आंध्र प्रदेश भुनाने का मौका



हरिजन लड़िकयों के यौन शोषण के खिलाफ प्रदर्शन

 तेल्ग् देशम सुखियों में आने का कोई मौका हाथ से गंवाने नही देना चाहती. मेदक जिले के नारायणखेड में हरिजन लड़कियों के छात्रावास में यौन शोषण के खिलाफ आवाज उठाकर उसे इसका एक मौका मिल गया.

अनुसूचित जाति के नेता दुर्गैया ने आरोप लगाया कि स्थानीय विधायकों सहित कुछ नेताओं ने छात्रावास की कुछ लड़कियों के साथ बलात्कार किया. नतीजतन, एक लड़की की मृत्यु हो गई और

1986 में 14 लड़कियों को गर्भपात कराना पडा.

जिलाधिकारी ने जांच के बाद यौन शोषण के इन आरोपों को निराधार पाया है. मगर अब तेलुगु देशम के चार हरिजन विधायक भूख हड़ताल पर बैठ गए हैं. ये लोग घटना की न्यायिक जांच और जिलाधिकारी के तबादले की मांग कर रहे हैं. मगर मुख्यमंत्री का कहना है कि तेलुगु देशम संवेदनशील मुद्दे को भुनाने की कोशिश रही है

### महाराष्ट्र अखाड़े में

उत्तर प्रदेश

अब खच्चर कांड

• श्रीलंका में भारतीय शांति

सेना का राशन घोटाला अभी ठंडा

भी नहीं पड़ा था कि सेना अब

'सच्चर कांड' में उलझ गई है.

बरेली की रीमाउंट वेटेरिनरी

सर्विसेज के कर्नल और ले. कर्नल

पद के छह अधिकारियों पर सच्चरों के सौदे में धोसाधड़ी

करने का मुकदमा सैनिक अदालत

में चल रहा है. अमृतसर की एक

फर्म से 1.3 करोड़ रु. में खरीदे गए

1,174 सच्चरों में से कछ तो उम्र

में बड़े हैं तो कुछ कद में छोटे. एक

अधिकारी की टिप्पणी थी,

"बौफोर्स हो या खच्चर, आखिर

सौदों में हमसे धोखाधड़ी होती ही

क्यों है?"

• भारत में दुग्ध उत्पादन में क्रांति लाने वाले वी. कुरियन दूसरे मोर्चों पर भी क्रांति करने के तेवर रखते हैं. मुख्यमंत्री शरद पवार ने





कुरियनः कड़ा रुख

करियन की अध्यक्षता वाले राष्ट्रीय डेयरी विकास (एनडीडीबी) पर जब साद्य तेलों की जमास्रोरी कर के मुनाफा कमाने का आरोप लगाया तो कुरियन भी जैसे ताल ठोक कर अखाड़े में कूद पड़े.

क्रियन का जवाब था कि मुख्यमंत्री को गलत सूचना देने वाले माफी मांगें. उनका दावा है कि एनडीडीबी बाजार में कुल 5 फीसदी खाद्य तेल ही बेचता है इसलिए वह बाजार को प्रभावित नहीं कर सकता और फिर इसका मूंगफली का तेल 'धारा' दूसरे तेलों के मुकाबले 10 रु. सस्ता है.

#### डी.एन. सिंहः चर्चा में

ओडीसा

बदले के पैंतरे

• हाल ही में सेवानिवृत्त हुए

पुर्तिस महानिदेशक डी.एन. सिंह

अब तक चर्चा का विषय बने हुए

है इसकी वजह यह नहीं है कि

इन्होंने कोई साहसिक कारनामा

कर दिया है. बल्कि वे अपनी

राजनैतिक पैतरेवाजी के कारण

सेवानिवृत्त होने से कुछ ही

हिन पहले सिंह ने अपने पैंतरे

बदलकर सत्ताधारी जनता दल

और अपने गुरु बीजू पटनायक के

राज्य में पिछले वर्ष मंडल

ईस्टर्न प्रेस एजेंसी

मामने परेशानी खड़ी कर दी.

कि

वल

ह के

बडी

नी

खिर

ोग

पों

त्रीय

एक

विरोधी आंदोलन के दौरान हुई हिंसा की न्यायिक जांच के दौरान मुनवाई में उन्होंने इंका को हिंसा केहर आरोप से बरी कर दिया. उनका कहना था कि पुलिस के पास इस बात का कोई सबूत नहीं है कि पूर्व मुख्यमंत्री जानकी बल्लम पटनायक या इंका इस हिंसा के लिए जिम्मेदार थी.

मिह गायद भूल गए कि हिंसा व चरम पर थी तो खुद उन्होंने गरा दोष इंका पर मढ़ते हुए भवाददाताओं को बताया था कि की के गुंडे दंगे भड़का रहे हैं, यह भी कि जे बी. पटनायक ने अपने केटक स्थित निवास में गुंडों को गनाह दे रखी है.

अव पुलिस प्रमुख से वेगुनाही हो तमगा पाकर इंका के हीसले कुतंद हैं. लेकिन वौखलाई जद भारकार इसे वदले की कार्रवाई किए दे रही है. उसका कहना है कि मुख्यमंत्री ने सिंह का सेवाकाल वेहाने की आवेदन मंजूर नहीं क्या इसीलिए उन्होंने पैतरा वेदेला है. सिंह जैसे लोग आखिर भारे पीजदा नेताओं के पदचिन्हों प ही तो चल रहे हैं.

#### केरल जबरदस्त जोडा

• देश का सबसे 'शक्तिशाली' दंपती होना कोई आसान काम नहीं. एक साथ दो घर संभालने पड़ते हैं. इधर पद्मा रामचंद्रन ने केरल की मुख्य सचिव का पद संभाला, तो उधर उनके पति को तमिलनाड् के राज्यपाल का सलाहकार नियुक्त किया गया.

सूत्रों का कहना है कि रामचंद्रन का चयन प्रशासन को स्वच्छ छवि देने के लिए किया गया है. केरल सरकार के मूख्य सचिव पद से सेवानिवृत्त होने के बाद भी राज्य सरकार महत्वपूर्ण पदों के लिए उनकी सेवाएं लेती रही है.

वी. रामचंद्रन और पद्मा रामचंद्रन





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

#### पटती जा रही खाड़ी

जट-पूर्व विभिन्न समूहों का अपने पक्ष में फैसले कराने के लिए भागवौड़ करना पुरानी बात है. पर इस बार मामला अलग लग रहा है. स्मरणपत्रों की बात छोड़ दें तो कोई भी व्यावसायिक समूह पहले की तरह दिन-रात टैक्स कम कराने के प्रयास नहीं कर रहा है. उलटे उद्योगपित बता रहे हैं कि सरकार अपनी आय किस तरह से बढ़ा सकती है. बजट-पूर्व वित्तमंत्री यशवंत सिन्हा से अपनी भेंट के दौरान इंजीनियिरिंग उद्योग संघ के प्रतिनिधियों ने स्पष्ट कहा कि वे राष्ट्रीय हित में अधिक और तेज योगदान करना चाहते हैं. दूसरा उदाहरण सिगरेट उद्योग का है जो टैक्स बढ़ने के डर से अभी से अपने नुकसान को सीमित करने की कोशिश कर रहा है. इसके एक धड़े, जिसकी अगुआई आईटीसी कर रही है, का कहना है कि अगर सिगरेट की लंबाई के अनुसार ही टैक्स जारी रहे तो वह अधिक टैक्स देने से नहीं हिचकेगा. प्रतिद्वंद्वी संजय डालिमया की कंपनी जीटीसी चाहती है कि पुराने ढरें के अनुसार कीमत के आधार पर टैक्स लगें. इस देखकर लगता है कि खाड़ी संकट ने सरकार और उद्योग जगत के बीच की 'खाड़ी' को पाट दिया है.

#### पलट गई बाजी

अस्मी के दणक के मध्य में बांबे हाई क्षेत्र के करीब 90 तेल कुओं से अधिक मात्रा में तेल निकालने के तेल और प्राकृतिक गैस आयोग के विवादास्पद फैसले की जांच संसद की प्राक्कलन समिति कर रही है. पिछले पखवाड़े भाजपा सांसद जमवंत सिंह की अध्यक्षता वाली प्राक्कलन समिति ने आयोग से पांच साल पहले एस. सी. रायचौधरी की तैयार की हुई रिपोर्ट पेश करने को कहा है. रायचौधरी ने ये सुझाव चाहे जिस अच्छी नीयत से दिए हों पर इसके चलते ही उनका पत्ता यहां से काट दिया गया. अब बाजी पलटती देखकर आयोग के मौजूदा कर्ताधर्ता अपनी गलती सुधारने की कोशिश कर रहे हैं और उन्होंने रायचौधरी को तेल के खोज संबंधी अधिकारी समूह का प्रमुख नियुक्त किया है.

#### रोशनी के रखवाले

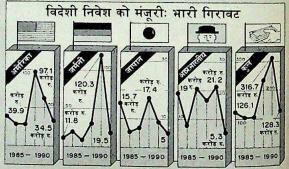
अब क्लोराइड इंडिया एकदम नए क्षेत्र में उतर रही है. वह देश के ऐसे इलाकों में गैर-परंपरागत समन्वित कर्जा प्रणाली लगाने जा रही है जहां आज तक विजली नहीं पहुंची. कंपनी सूरज की रोशनी से विशेष वैटरियों के जिरए प्रामीण विद्युतीकरण की परियोजनाएं ले रही है. पश्चिम बंगाल में एक करोड़ रु. की परियोजना उसने पा ली है. कंपनी को उम्मीद है कि इन परियोजनाओं से अगले दो-तीन वर्षों में उसका कारोबार 30 करोड़ रु. से अधिक बढ़ जाएगा.

#### किश्ती बिन मांझी की

दि है सालं में ही आवास ऋण के मामले में अगुआई लेने वाले राष्ट्रीय आवास बैंक को सार्वजनिक क्षेत्र का अजूबा ही माना जा सकता है. 300 करोड़ ह. से अधिक के ऋण वाटने वाली यह संस्था औपचारिक प्रवंध मंडल के बिना भी चलती रही है. इस प्रवंध मंडल में बैंक के अध्यक्ष के अलावा, रिजर्व बैंक के दो प्रतिनिधि, आवास और नगर विकास निगम के अध्यक्ष, ग्रामीण एवं शहरी विकास मंत्रालयों के सचिव, अतिरिक्त सचिव (बैंकिंग) वगैरह भी शामिल होने हैं. लेकिन ऐसे मंडल की गैर-मौजूदगी में भी बैंक ने अच्छी शुरुआत की. पर मामला यही नहीं है, इसके अध्यक्ष के.एस. शास्त्री को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कीष के काम से अफीका भेज दिया गया है.

#### विदेशी निवेश की घटती मात्रा

रतीय व्यवसायियों, अधिकारियों और राजनेताओं के 'विदेशी खौफ' का ही नतीजा है कि देश में विदेशी निवेश 1986 के 316.7 करोड़ रु. से गिरकर पिछले साल मात्र 128.3 करोड़ रु. ही रह गया. लेकिन असल मात्रा इससे भी कम है. रिजर्व वैंक, जो पता नहीं इन आंकड़ों को इतना गोपनीय क्यों गर्द के का



बनाए रखता है, ने जितने निवेश की अनुमित दी थी, उतना पैसा लग ही गया हो यह जरूरी नहीं है. 1989 में जर्मनी ने भारत में विदेशी निवेश के मामले में अमेरिका को पीछे छोड़ते हुए पहला स्थान हासिल कर लिया. यह स्थान उसे मद्रास में लगने वाली निर्यातोन्मुख पेट्रोरसायन परियोजना में पूंजी लगाने की मंजूरी के आधार पर मिला है. इसे जर्मनी की लिंडे कंपनी और आरपीजी समूह संयुक्त रूप से लगाने वाले हैं. पर आज तक इस परियोजना का काम ही नहीं शुरू हुआ और न ही लिंडे ने एक भी पैसा लगाया है.

#### सिटी का काई खेल

दी बैंक भारत में अपने डाइनर्स कार्ड को सुपर प्रीमियम (2500 रु. प्रवेश शुल्क) पर फिर से जारी करने के साथ ही अब बाजार के बाकी हिस्सों पर पकड़ बनाने के लिए चार नए कार्ड जारी करेगा. दो प्रमुख अंतरराष्ट्रीय कार्ड संगठनों मास्टर कार्ड और बीसा के साथ मिलकर यह दो कार्ड बाजार के डाइनर्स कार्ड वाले वर्ग के ठीक नीचे बाले वर्ग को पकड़ने के लिए जारी करेगा तथा दो अन्य कार्ड कारोबार करते के डच्छुक एकदम साधारण आय वालों के लिए होंगे.

H

है। साल फ़ मदा आग के मुआवज़ों ग्रीकड़े कहते

इ. २००० व पर अब वे बेफिक, अ इ. हुवे हू

शायद ये शायद ये शाग जैसे छ

इनें फुर्मत हैं या शायद आने बढ़ने के

ज्यादन बढाने

Great Marketin

## क्या अब भी आप अपनी प्रतिदुढद्वी कंपनी को ही अपनी कंपनी के लिए सबसे बड़ा खतरा मानते हैं?

रा तात फायर बिगेड को ४०,००० से भी
स्ता आग की घटनाओं के लिये बुलाया जाता है.
पुआवज़ों के आधार पर, बीमा कंपनियों के
शैंबड़े कहते हैं, कि पिछले दस सालों में
र २००० करोड़ आग की भेंट चढ़े हैं.

प अब भी ज्यादातर कंपनियाँ इन खतरों वे विफक्त, आग से बचाव के मामले में आँखें हैं हुंगे हैं.

भावद ये कंपनियाँ इतनी व्यस्त हैं, कि शा प्रेसे छोटे-से मसले पर ध्यान देने की हर्ने फुर्सत ही नहीं.

या शायद वे अंपनी प्रतिक्वन्की कंपनियों से वाने वड़ने के दाँव-पेचों में लगी हैं. या फिर व्यादन बड़ाने की लंबी-चौड़ी योजनाएँ बना रही हैं. जबिक आग चन्द घंटों में ही पूरी की पूरी कंपनी को ही खाक में मिला सकती हैं.

जो कंपनियाँ इस ख़तरे के बारे में चिंतित

हैं, उनके लिये पेश है, एक छोटा-सा मगर शक्तिशाली आग बुझाने का यंत्र — सीज़फ़ायर.

यह छोटा इतना है, कि आपकी हमेली में समा जाये, पर शक्ति में बड़े आग बुझाने के यंत्र के बराबर है.

सीज़फ़ायर की जबरदस्त शंक्ति का राज़ है हेलॉन 1211 — संसार का सबसे असरदार आग बुझाने का साधन.

यह हर तरह की आग का मुकाबला कर सकता है — आग चाहे लकड़ी, मिट्टी के तेल, गैस या बिजली से लगी हो. इस्तेमाल में यह बिल्कुल आसान है — बस नॉज़ल का मुँह आग की ओर करके दबाइये!

और इसे न तो दोबारा भरने की ज़रूरत है, न रीफ़िलिंग की — यह हर वक्त तैयार है.

सीज्फ़ायर किसी दूकान में नहीं मिलता, इसलिये आप नीचे दिये हुए नंबरों पर फ़ोन करके ही इसे मैंगवा सकते हैं.

और फिर बेफ़िक हो कर अपनी प्रतिबन्धी कंपनी को पछाड़ने में जुट सकरों हैं.

इसे पास न रखना, आग से



Lid. 801/2 Tulsiani Chambers, Nariman Point, Bombay 21. Tel: 241939/232898. Agra 74438. Ahmedabad 78881. Allahabad 601726. Asansol 3454 [Sci. 42771] Asangalore 283875. Baroda 329473. Belgaum 31809. Bhagalore 2752. Bhatinda 2185. Bhopal 554774. Bhubaneshwar 408166. Bombay 4921529. Calcutte 31829. Common and the common of th

निताओं विदेशी ल मात्र भी कम रोय क्यों

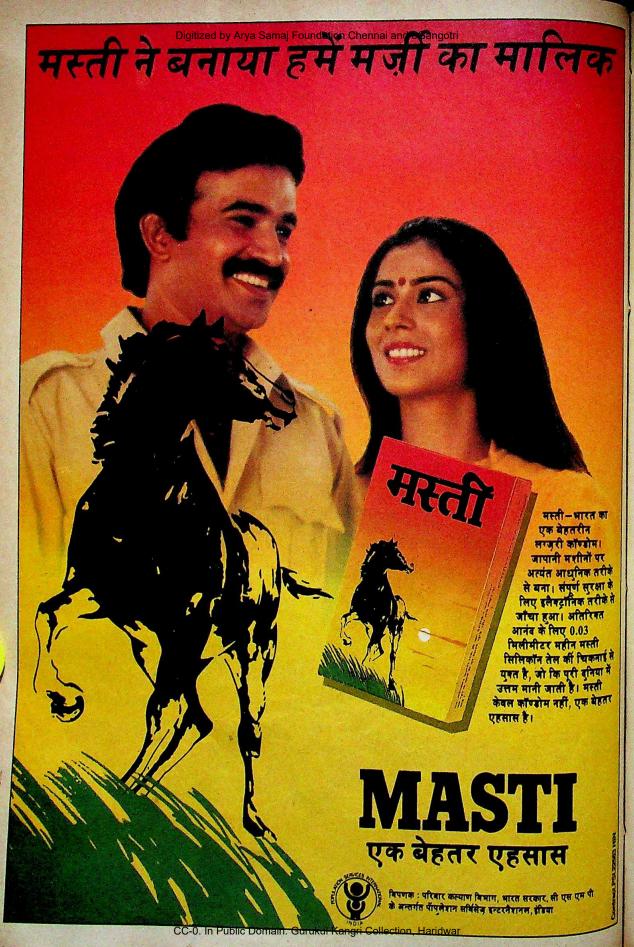
128.3 with r.

ता पैसा गरत में पहला वाली मंजूरी ते और

ने एक

सुपर जारी नाने के

ते काडे वर्ग को करते



を 一個

स्वर मत व संभाल के बी

"मेहर नाश्ता लीजिए नव-नि जनसंप

प्रसाद कि "र 表?" कर्मचा

उन्हें व निविद प्रकाषा

ठेकेदार रहे हैं. इस

केंद्र : गया. प्रकाष्ट्रि भूवनाः

उन्होंने कि नि

फेरवद

### हैकों पर कब्जे की कला

#### विभिन्न विभागों की परियोजनाएं हथियाने का फैला जाल

मरे के बाहर हो रहे शोर से गजेंद्र प्रसाद सिंह चौंक पड़े. अनुनय की एक ध्विन सुनाई पड़ी, 'कृपया इसे और एक दिन तक रोक लीजिए.'' एक दूसरे करोड़ों के ठेके आसानी से हासिल किए जा सकते हैं, क्योंकि अगर प्रतिद्वंद्वी ठेकेदारों को अपना दावा भेजने के लिए महज एक या दो दिन का ही वक्त मिले तो बहुत संभव है कि वे सामने आएं ही नहीं. और निविदा की सारी जानकारी हाथ में रखकर अगर दावे के कागजात तैयार रखे जाएं तो बाजी जीतने में संदेह कहां रहता है. गजेंद्र प्रसाद सिंह के अनुसार उन्होंने महज 30 'निविदा सूचनाओं' की जांच के बाद ही यह देखा कि कुछ को तो प्रकाशन के दिन ही जमा कराना अनिवार्य था, और कुछ दूसरी निविदाओं में महज 2-4 दिन का समय दिया गया था तथा कुछ में तो जमा कराने की कोई तारीख ही नहीं दी गई थी. इससे



स्वर ने जवाब दिया, "फिक्र मत कीजिए, हमारे आदमी संभाल लेंगे." इसी हो-हल्ले कें बीच एक और अनजान स्वर कानों में पड़ा, "मेहरवानी करके इसे नाश्ता-पानी के लिए रख लीजिए.'' इस पर बिहार के नव-नियुक्त सूचना जनसंपर्क राज्यमंत्री गजेंद्र प्रसाद सिंह ने जानना चाहा कि "यह सब क्या हो रहा है?" तब उनके निजी कर्मचारियों में से एक ने उन्हें बताया कि अखवारों में निविदा संबंधी सूचनाओं के प्रकाणन को लेकर कुछ ठेकेदार सब कुछ तय करा

रत का

डोम।

नों पर

क तरीके

सुरक्षा के

तरीके ते

गरियत

3

मस्ती

यकनाई से

वनिया में

क बेहतर

मस्ती

इसके एक दिन बाद ही
उन्हें सचाई का पता चल
गया. स्थानीय अखबारों में
प्रकाशित निविदा संबंधी
भूवनाओं को पलटते हुए
कि निविदा की तारीखों में
केरवदल करने भर से

#### ऑपरेशन टेंडर लूट

कदम दर कदम कार्रवाई का ब्यौरा

पहला जारी होने वाली निविदाओं के बारे में अग्रिम कदम जानकारी हासिल करने के लिए उन विभागों के बड़े अधिकारियों को अपनी तरफ मिलाइए जिन विभागों की परियोजनाओं के ठेके मिलने वाले हैं.

दूसरा जब निविदाएं जारी होने के लिए राज्य के सूचना और जनसंपर्क विमाग के पास पहुंच जाएं तो इस विमाग के अधिकारियों से उनका प्रकाशन अंतिम संभव तारीख तक रुकवाने की कोशिश कीजिए.

तीसरा निविदाओं को केवल उन्हीं अखबारों में प्रकाशित करवाइए जिनकी प्रसार संख्या सबसे कम हो या जिन अखबारों के नगर संस्करण सिर्फ राजधानी के पाठकों तक पहुंचते हों.

चौथा जिस तारील के अखबारों में निविदाएं प्रकाशित हों, उस तारील के अखबार ज्यादा लोगों तक न पहुंचने पाएं. यह मुनिश्चित करने के लिए उन अखबारों की अधिक से अधिक प्रतियां खरीद लें.

पांचवां जब निविदाओं के सरकारी दस्तावेज (जिन्हें बिल ऑफ क्वालिटी कहा जाता है) प्रकाशित हों तो उन्हें भी खरीद लीजिए. दूसरे लोगों को ऐसा करने से रोकने के लिए स्थानीय गुंडों का इस्तेमाल करिए.

छुठा अपनी दरें स्वीकृत स्तर से 10-15 फीसदी अधिक रखकर ही निविवाएं मरिए ताकि जब निविदाएं खुलें और आपके प्रतियोगी गिने-चुने ही रह जाएं तो आपकी चांबी हो जाए. भी बड़ी बात यह थी कि सभी निविदा सूचनाएं अखबारों के केवल स्थानीय संस्करणों में प्रकाशित हुई थीं, जो राज्य की राजधानी पटना में ही वितरित होते हैं.

गजेंद्र प्रसाद सिंह के अपने अनुमान के मुताबिक पिछले पांच वर्षों में करीब 300 करोड रु. की धनराशि ऐसे ठेकेंदारों के आपसी बंटवारे में ही चली गई होगी जो सड़क, पूल और भवन निर्माण से लेकर नहर और जैसी परियोजनाओं पर अपनी पकड़ बनाए हुए थे. उन्होंने 'इंडिया ट्डें' को बताया, "यह घोटाला तो बोफोर्स से भी कहीं अधिक बडा है.''सूचना व जनसंपर्क विभाग निविदा सूचनाओं के प्रकाशन में देरी करके दूसरे सक्षम ठेकेदारों को आगे आने से रोकता रहा है. और लापरवाह किस्म के ठेकेंदारों को ठेके की लागत में 20 से Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

30 फीसदी की बढोतरी करने तथा संबंधित विभागों के इंजीनियरों को अपने प्रिय ठेकेदारों को अनुगृहीत करने के मौके देता रहा है."

जाहिर है कि व्यवस्था लचर है. 1981 में जारी एक सरकारी आदेश के तहत सभी निविदाओं को सूचना तथा जनसंपर्क विभाग के माध्यम से ही प्रकाशित कराने की व्यवस्था की गई. इसका उद्देश्य था प्रतिस्पर्धा और निष्पक्षता को बढ़ावा देना और सरकारी धन के अपव्यय पर अंकृश लगाना. लेकिन इस केंद्रीकरण के उलटे परिणाम ही सामने आए हैं. राज्य की

सर्वसमर्थ ठेकेदार लॉबी ने प्रमुख अधिकारियों को अपने साथ मिलाकर इस नई व्यवस्था की ऐसी की तैसी कर दी. और इस तरह निविदा जमा करने की तारीखों के साथ मनमाना खेल शुरू हो गया. प्रतिष्ठित ठेकेंदार देव नारायण प्रसाद कहते हैं, "मैं इस पेशे से अलग हो गया क्योंकि गोली-बंदुक की ताकत वाले कई अवांछित तत्व इस धंधे में आ गए हैं. परियोजनाओं के ठेकों पर वे

यही कारण है कि बिहार तो जनहित परियोजनाओं पर पानी की तरह पैसा वहा रही है, पर इसका कोई ठोस नतीजा सामने नहीं आ रहा है मिसाल के तौर पर, उत्तरी कोयल सिंचाई परियोजना ही पिछले एक दशक में 450 करोड़ रु. के करीब हड़प कर चुकी है परंत् दक्षिण और मध्य बिहार के सूखा-पीड़ित क्षेत्रों में पानी की एक बूंद भी नहीं पहुंच सकी है. जाहिर है, वर्च हुई धनराणि ठेकेदारों की जेवों में पहुंच गई.

कब्जा जमा लेते हैं."

इस तरह सरकारी पैसा बनाने का एक मुगम मार्ग यह है कि ऐसी परियोजनाओं में हाथ डाला जाए जिन पर बेतहाशा खर्च दिखाया जा सके. जल संसाधन विकास-मंत्री जगदानंद सिंह के अनुसार, दक्षिण-मध्य बिहार में दुर्गावती जलाशय के साथ जल निकासी की ऐसी व्यवस्था तैयार की जानी थी जिससे 50,000 क्यूसेक (क्यूबिक मीटर प्रति सेकंड) पानी प्रवाहित किया जा सके. पर इस परियोजना की रूपरेखा इससे पांच गुना अधिक क्षमता के लिहाज से बनाई गई. और इसी के महेनजर सिंचाई विभाग द्वारा निविदा विज्ञापित की गई. यह ठेका रांची के एक ताकतवर ठेकेदार पंचम सिंह के हाथ लगा.

जगदानंद सिंह ने रूपरेखा में सुधार का आदेश दिया और साथ ही पंचम सिंह को दिए गए 34 करोड़ रु. के इस ठेके को भी समाप्त करके इसकी अनुमानित लागत महज 19 करोड़ रु. तय कर दी. अब पंचम सिंह ने हाईकोर्ट में मामला दायर करके इस परियोजना को लटका दिया है.

बिहार इंजीनियरिंग सेवा संघ के पूर्व महासचिव जानकी शरण प्रसाद के अनुसार, ठेकों का आबंटन स्थानीय दादाओं की इच्छा पर होता है. कई बदमाश राज्य भर में इन्हीं निविदाओं की लूट के इतजाम में लगे रहते हैं. इनकी



🗖 माम परियोजनाओं पर अपनी पकड़ बनाए हुए ठेकेदारों ने पांच वर्षों में राज्य के 300 करोड़ रु. लट लिए"

गर्जेद्रे प्रसाद सिन्हा सूचना तथा जनसंपर्क राज्यमंत्री

भरसक कोशिश होती है कि किसी भी प्रतिद्वंद्वी ठेकेदार को मौका न मिलने पाए.

हिंसा सिर्फ ठेके हासिल करने तक सीमित नहीं है. ठेकेदारों की अगली कोशिश यह होती है कि राज्य सरकार से उन कामों के नाम पर भी पैसा वसूला जाए जो किए ही नहीं गए हैं. इसके लिए इंजीनियरों और लेखाकारों को भी अपना निशाना बनाया जाता है.

बिहार इंजीनियरिंग सेवा संघ के महासचिव रवींद्र कुमार सिन्हा के अनुसार पिछले पांच वर्षों में 26 सहायक या एक्जक्युटिव इंजीनियरों को अपराधियों द्वारा या तो सीधे ही मरवा दिया गया या फिर 'सड़क दुर्घटनाओं' में मार डाला गया क्योंकि उन्होंने फर्जी बिलों को पास करने

से मना कर दिया था या फिर नियमों को ताक पर रखकर उन लोगों को ठेका देने म इनकार कर दिया था.

सिन्हा बताते हैं कि पश्चिमी चंपारण जिले में पिछले छह महीने में नौ इंजीनियरों के साथ मारपीट की गई और एक का अपहरण कर लिया गया. एक मामले में मधेपुरा में एक विधायक के वेटे ने एक एक्जक्युटिव इंजीनियर की जान तक लेने की कोशिश की. सिन्हा कहते हैं. "यदि ठेकेदारों का विरोध करते हैं तो आपकी जान की खैर नहीं."

ठेकेदारी प्रथा को भ्रष्ट लोगों के चंगुल से निकालने के लिए कुछ ठोस उपायों

पर विचार किया जा रहा है. मसलन, निविदा में शामिल होने वाले ठेकेदारों को अपने पिछले अनुभवों को पूलिस से प्रमाणित कराना होगा. इसके अलावा सरकार ने आदेश जारी किया है कि निविदा के लिए अब आवेदन की तीन प्रतियां भेजी जाएंगी. एक प्रति सचिवालय में आएगी, एक प्रति स्परिटेंडिंग इंजीनियर के पास और एक एकजक्युटिव इंजीनियर के पास ताकि उनकी प्रामाणिकता की जांच हो सके. जल संसाधन राज्यमंत्री जयप्रकाश नारायण यादव कहते हैं, "हम व्यवस्था में बदलाव लाना चाहते हैं और अपराधी-ठेकेंदार-नेता के गठजोड़ को खत्म कर देना चाहते हैं." सड़क निर्माणमंत्री मुहम्मद इलियास हसैन बताते हैं कि निविदा की लूट के लिए कुख्यात जिलों को इस चंगूल से निकालने के लिए प्रयास शुरू किए जा चुके हैं ठेकेदारी में अपराधी तत्वों की पहचान के लिए सूची भी बनाई

ठेकेदारी से राजनीति में आए पूर्व इंका विधायक भरत प्रसाद सिंह कहते हैं, "निविदा सूचनाओं को जब ठीक से प्रकाशित ही नहीं किया जाएगा, और लोगों को निविदा भरने के फॉर्म ही नहीं मिलेंगे तो इस लूट को किस तरह रोका जाएगा?" कभी ठेकेदार रहे पूर्व युवक इंका अध्यक्ष श्याम सुंदर सिंह धीरज का अनुमान है कि कुल निविदाओं का 90 फीसदी अपराधी गिरोह ही झपट ले जात हैं. उनका कहना है, "ठेकेदारी का काम तो अब ये अपराधी ही कर रहे हैं." और लगता तो यही है कि आगे भी उन्हीं की वर्चस्व रहेगा.

—फरजंद अहमद

ग्राहको

विश्वास

अधिकांश

वात्पर्य होत

मापदंड से ते

कीदर कम

कार्यवार में

बाएगी न । इ

सर्वाधिक व

किर भी हम

तो हमारे पॉरि

में संतृष्ट पी

मिलती है हा बी वर्ष हमने

वीर तेकरी

Digits ed by ya Sariaj Foundation Chennai and eGangotri

## ऑरएण्टल

एक पहचान।



### हमारा बहु-आयामी विकास

### <sup>प्राहकों</sup> का निरन्तर बढ़ता

यमों को हा देने स

चंपारण में नौ गई और

या. एक क के बेटे की जान कहते हैं, तो हैं तो

के चंगुल उपायों रहा है. रहा है. रहा होने पिछले अलावा किया है आवेदन गी. एक यर के क्युटिव उनकी

''हम गहते हैं

चाहते गुहम्मद हैं कि कुख्यात कालने

ा चुके वों की वनाई

ई इंका

ते हैं, क से

और

नहीं

रोका

युवक

ज का

ग 90 जाते

काम

और

तें का

अहमद

अधिकांश कम्पनियों के लिए विकास का बात्यं होता है-बढ़ता हुआ कारोबार। इस भिपदंड से देखा जाए तो हमारे विकास-वृद्धि क्षेदरकम प्रभावशाली नहीं। 23.7 प्रतिशत क्षोबार में वृद्धि प्रभावशाली ही तो कही बालीन।और यह है हमारी अब तक की

कि भी हम कहना चाहेंगे, हमारी आधारशिला वे हमोर पॉलिसी धारक ही हैं। हमारी सेवा मिलती हैं हमसे सर्वोच्च प्राथमिकता। पिछले की कि को लाख से अधिक दावें निपटाये, CC-0. किया। हमारे संतुष्ट पॉलिसी धारक तो आप सब हैं ही, चाहे गृहस्वामी हो, या व्यापारी, अपना निजी व्यवसाय करने वाले हों, डाक्टर हों या इंजीनियर या कम्प्यूटर विशेषज्ञ, दुकानदार हों, किसान हों, मवेशीपालन व्यवसाय या किसी भी अन्य कारोबार से जुड़े हों। हमारे संतुष्ट पॉलिसी धारकों की संख्या तो वर्ष-प्रतिवर्ष बढ़ ही रही है।

#### प्रिय प्राहकगण

आपके लिए कार्यरत हैं हमारे शिकायत निवारण, ग्राहक परामर्श और सुरक्षा व्यवस्था संबंधित हमारी विशेष सेवाएं। और आपकी सेवा में तत्पर है हमारा समस्त कर्मचारी वर्ग-18000 का विशाल समुदाय। और (अ । उपसम्बंध है हमारी समस्त परेवाएं विशालकार्येक, Haridwar हमारे करीब 1000 कार्यालयों द्वारा।

आप सहमत होंगे,हमारा विकास बहु-आयामी रहा है!और यह है हमारी सेवाओं के प्रति आप के निरत्तर बढ़ते विश्वास का प्रतीक।



दि ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड

(जनात इंक्योरेस कॅप्रपोरेशन ऑफ इंडिया को सहायक कम्पनी)

dwar प्राहकों से सौजन्य -ओरिएण्डल की विशिष्ट परम्परा Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेल आयात

#### खाड़ी युद्ध के कारण कई मुश्किलें

ल्ली में इंडियन ऑयल कार्पोरेशन (आईओसी) के अंतरराष्ट्रीय व्यापार विभाग का सभाकक्ष आईओसी और पेट्रोलियम, वाणिज्य तथा वित्त मंत्रालयों के अधिकारी दो घंटे पहले मिली कार्यसूची उलट-पुलट रहे हैं. कार्यवाही शुरू करने का समय हो जाता है. तभी तेल की खरीद के लिए दो दिन पहले जारी की गई आईओसी की निविदा के जवाब टेलेक्स से आते हैं. उपस्थित अधिकारी प्रस्तावों के आंकडों पर विचार-विमर्श शुरू कर देते हैं.

भारत के कच्चे तेल के आयात की औसत कीमत जुलाई में 16.30 डॉलर प्रति बैरल से उछलकर अगले ही महीने 24:72 डॉलर हो गई इसके बाद सितंबर और अक्तूबर में कीमत क्रमश: 33.17 डॉलर और 34.58 डॉलर तक जा पहंची. इन दो महीनों में पश्चिम एशिया के अरब लाइट के कच्चे तेल की बाजार दर भारत की ओर दिए गए मूल्य से 1.5 डॉलर प्रति बैरल कम थी (देखें चार्ट).

साधारण गुणा-भाग से ही जाना जा सकता है कि अगर अरब लाइट की तब की दर के हिसाब से कच्चे तेल का आयात किया गया होता तो सितंबर-अक्तूबर में 70 करोड़ रु. बचाए जा सकते थे.

क्या यह फैसला करने की सामूहिक गलती थी? शायद, क्योंकि सरकार ने सावधानीपूर्वक एक नया तरीका अपनाया जिसके तहत आईओसी के अध्यक्ष की अगुआई में बनी स्थायी समिति को कच्चे तेल और पेट्रोलियम उत्पादों के आयात

की देखरेख करनी है. सैद्धांतिक रूप से इस समिति की जवाबदेही सिर्फ सरकारी अंकेक्षणकर्ताओं तक ही है. वैसे, दबाव भी काम करते ही हैं जैसा कि 1981 में क्ओ तेल सौदे में हो चुका है.

1990 के तेल आयात सौदों में हेराफेरी की बू सूंघना तो अभी जल्दबाजी होगी पर स्थिति इससे बदतर होती जा रही है कि खाडी युद्ध छिड़ने के बाद कच्चे तेल की कीमतें तो गिर गई हैं पर पेट्रोलियम उत्पादों की कीमतों में कोई गिरावट नहीं आई. और मूख्यतः ये डीजल, मिट्टी का तेल और विमानन ईंधन ही है. देश जरूरत का करीब एक तिहाई मिट्टी तेल और डीजल, तथा विमानन ईंधन का छठा हिस्सा आयात करता है.

भारत को क्वैती तेलशोधक कारखाने

वि णिज्य मंत्रालय का सुझाव है कि तेल आयात को इसके सप्लाई विभाग के जिम्मे कर दिया जाए

से इन उत्पादों के 15 लाख टन की खेप उपलब्ध न होने से भी मार पड़ी है. इन उत्पादों को अब दूसरे स्रोतों से खरीदकर ढ्लाई के लिए लाल सागर में सऊदी अरब के बंदरगाहो पर पहुंचाना पड़ता है जिससे देश में उनकी कीमत प्रति बैरल 30-40 सेंट ज्यादा पड़ती है. यूद्ध क्षेत्र से ढ्लाई की व्यवस्था की भी समस्याएं हैं.

लोगों को लगता है कि पेट्रोलियम

उत्पादों की सप्लाई में काफी अव्यवस्था है. मगर तेल उद्योग के अधिकारी इससे इनकार करते हैं. उधर, अमेरिकी वायूसेना के विमानों को ईधन उपलब्ध कराने से एक और तरह का विवाद उठ खडा हआ है. इन विमानों पर भारतीय हवाई अड्डों का उपयोग करने वाली एअर लाइनों पर 25 फीसदी की आवश्यक कटौती लागू नहीं होती. यह कटौती इंडियन एअरलाइंस तथा एअर इंडिया पर भी लागू है. अमेरिकी विमानों को दिए गए ईंधन की कुल कीमत एक करोड़ है, से अधिक बैठती है. हालांकि यह रकम कल तेल आयात खर्च के मुकाबले मामूली ही है, कुल तेल आयात खर्च 10,000 करोड़ हू. तक जाने की उम्मीद है जो इस वित्तीय वर्ष के लिए आबंटित रकम 6,400 करोड के डेढ़ गूने से अधिक है.

यह भी स्पष्ट है कि तेल की खपत में कटौती के मामले में मामूली उपलब्धि ही हुई है. इस तरह कच्चे तेल का आयात 1989-90 के 1.95 करोड़ टन से 5 लाख टन ज्यादा होने की संभावना है. और पेट्रोलियम उत्पादों का आयात पिछले साल के 65 लाख टन से 15 लाख टन ज्यादा होनी की उम्मीद है

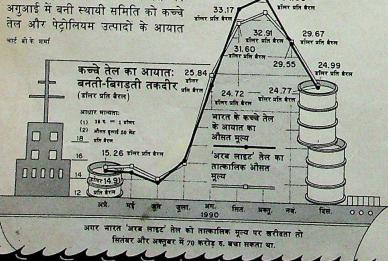
देसी तेल उत्पादन भी अपेक्षा के अनुरूप नहीं हो रहा है. आशंका है कि 1990 के लक्ष्य 3.59 करोड़ टन में 10 फीसदी कमी आएगी.

परियोजनाओं के अटके पड़े रहने पर आयोग के एक अधिकारी कहते हैं. 'हमारी अटकी पडी परियोजनाएं मंजूर हो जाएं तो हम चुटकी बजाते ही अपन मौजूदा 3.1 करोड टन सालाना उत्पादन को बढ़ाकर 4.6 करोड टन कर सकते हैं.

ये समस्याएं तो समय के साथ खत्म हो सकती हैं लेकिन तेल का भारी आयात तात्कालिक जरूरत है. इस बीच आईओसी पर भी एक प्रहार होने वाला है. वाणिज्य मंत्रालय का सुझाव है कि तेल आयात की आईओसी के बदले वाणिज्य मंत्रालय के सप्लाई विभाग के जिम्मे कर दिया जाए उसका यह भी दावा है कि उनके सप्लाई विभाग के पास जरूरी काबिलियत है जबिक आईओसी के सूत्र इसका खडन

वाणिज्य मंत्रालय की सिफारिश क मुताबिक अगर आयात की स्थायी समिति की अगुआई आईओसी के अध्यक्ष के हाथ से सप्लाई विभाग के सचिव के हाथ चली जाती है. तो तेल आयात का मामला और अधिक गंदला सकता है.

परंजयगुहा ठाकुरता और डब्ल्यू.पी.एस. सिद्



Digitized by Arya Sa, at Foundation Channai and eGangotri वचाने के लिए हमार्ग जी-तोड grand लगाई हैं.

## अब हम नमतापूर्वक यह प्रशंसा स्वीकार करते हैं

革 रेमण्ड सीमेंट में हमने ऊर्जा संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाए हैं 🎴 और गुणवत्ता नियंत्रण के साथ हमने कोई समझौता नहीं किया 🚡 उत्कृष्टता की इसी प्रवृत्ति के कारण हमें वर्षों से कई पुरस्कार मिलते रहे हैं 🚄 किन्तु हमारा वास्तविक पुरस्कार तो वह विश्वास है जो हमें हमारे ग्राहकों, वितरकों और विक्रेताओं से प्राप्त हुआ है 🚘 हम आपके और अपने सभी कर्मचारियों के हृदय से आभारी हैं 🛎





द नेशनल ऍवार्ड फॉर बेस्ट इनर्जी कन्जर्वेशन, १९८८-८९



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भव्यवस्था री इसमे अमेरिकी वाद उठ ली एअर आवश्यक

डिया पर को दिए ोड़ रु. से कम कुल ।मूली ही

करोड़ ह वित्तीय 0 करोड

खपत में लब्धि ही आयात 5 लाख है. और पिछले

नाख टन पेक्षा के ा है कि में 10

एं मंजूर उत्पादन कते हैं. खत्म हो आयात ाईओसी

वाणिज्य यात को ालय के ा जाए सप्लाई

नयत है रेश के

समिति के हाथ थ चली मामला

ता औ

स. सिक्

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and Gangotri

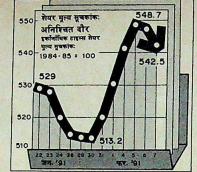
शेयर बाजार

#### अस्तव्यस्तता

#### अचानक तेजी के बाद फिर सुस्ती

यर बाजार में अचानक आई जान के बाद फिर मुस्ती के लक्षण दिखने लगे हैं. इसी तेजी के समय मुंबई शेयर बाजार का 30 शेयरों वाला संवेदनशील सूचकांक 1000 अंक के ऊपर पहुंच गया था. इकांनाॅमिक टाइम्स का सूचकांक बाद की गिराबट को दिखाते हुए 7 फरवरी की 542.5 पर आ पहुंचा. बहरहाल, बाजार का असली मूड अस्थिरता वाला ही है. बाजार के जानकार लोग कहते हैं कि तेजी वाले क्षणिक दौर में सक्रिय हुए तेजड़िए भी एक बड़े साझा कोष द्वारा बड़े पैमाने पर शेयर निकालने की अफवाह से ही परेशान हो गए और दनादन अपने स्टॉक निकालने लगे.

माना जाता है कि कोष वाली इस चर्चा ने ही अनेक नामी शेयरों की जमीन भी खिसकाई जिनमें रिलायंस, एसीसी और टिस्को भी शामिल हैं. अन्य साझा कोषों और वित्तीय संस्थाओं ने कुछ शेयरों



में मुनाफे कमाए. नकद खरीद वाले अधिकांश शेयरों के भाव में स्थिरता का संबंध भी कुछ संस्थाओं द्वारा दिखाई गई चौकसी है जो लगातार 'अच्छे' शेयरों को टटोलते रहे. शेयर बाजार के एक प्रमुख विशेषज्ञ कहते हैं, ''अभी के समय में नकदी खरीद वाले अनेक ऐसे शेयर हैं जिन्हें माटी के भाव उठाया जा सकता है.'' आपको सिर्फ जानकारी होनी चाहिए.

संकट वाले लंबे दौर के बाद पिछले पखवाड़े मुंबई शेयर बाजार खुला जरूर पर इतना स्पष्ट है कि आने वाले हफ्तों में बाजार और भी अस्तव्यस्तता के दौर में रहेगा. पांच दलालों को 'अपराधी' घोषित किया गया और दूसरे नौ पर भी नजर रखीं जा रही है. और यह चर्चा भी है कि और कितने 'अपराधी' घोषित होंगे. बाजार के मूड को मुंबई शेयर मूल्य सूचकांक भी बताता है. एक प्रमुख दलाल के अनुसार सूचकांक की गिरावट और दलालों को 'अपराधी' घोषित करने का मामला सीधे जुड़ा है उसका कहना है, ''सूचकांक में जब भी 100 अंक की गिरावट आए, समझ लीजिए कुछ दलाल संकट में फंसने वाले हैं.''

बाजार में एक और प्रमुख चर्चा कैनबैंक साझा कोष और स्टेट बैंक साझा कोष की नई शेयर सह बचत योजना की है जिसके तहत 10,000 रु. तक के निवेश पर 100 फीसदी आयकर माफी का प्रावधान होगा. यूनिट ट्रस्ट की ऐसी ही योजना के तुरंत बाद यह खबर आई है. मास्टर प्लान नामक इस योजना के तहत यूनिट ट्रस्ट 15 फरवरी से मार्च के अंत तक ऐसे शेयरों में निवेश के लिए पैसा ज्टाएगा जिनमें तेजी की संभावना है. अन्य दो योजनाओं के लिए भी बुकिंग त्रंत शुरू होगी. इन योजनाओं में कितना पैसा आएगा और कैसे निवेश होगा यह शेयर बाजार के लिए भारी दिलचस्पी वाली बात है. अगले कुछ हफ्तों में इन सवालों का जवाब भी आ जाएगा.

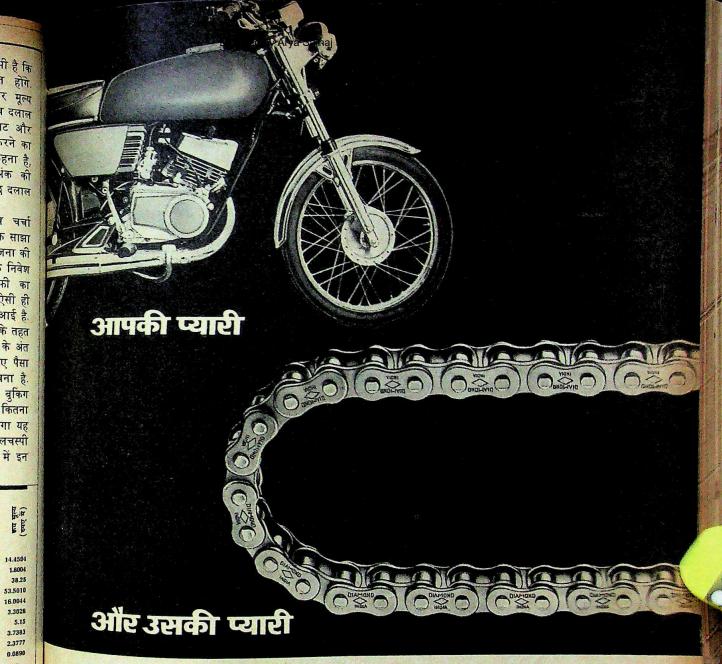
जमा स्टॉक		1991		खबाड़े में ही स्विति
	अंच		बंद 7.2.91	声声
अशोक लेलेड	136.00	109.00	123.00	13.00 -
एसो.सीमेंट	1650.00	1300.00	1530.00	45.00÷
एशियन पेंद्स	250.00	215.00	245.00	17.50+
एटलस कोप्को	46.00	42.00	44.50	0.50+
बजाज ऑटो	600.00	500.00	560.00	20.00
बड़ौवा रेयॉन	490.00	400.00	467.50	17.50+
बल्लारपुर	257.00	228.00	257.00	10.00+
विरला जूट	185.00	168.00	183.00	4.00+
ब्लो प्लास्ट	75.00	40.00	62.50	2.50+
वांचे डाइंग	185.00	150.00	180.00	20,00+
बिटा इंडिया	121.00	112.00	120.00	3.00+
वृक्त बांड	132.00	116.00	131.00	5.00+
फेडबरी	152.00	132.50	150.00	8.75+
सेंबुरी टेक्सटाइल्स	3925.00	3625.00	3825.00	50.00+
कोलगेट पामी	292,50	250.00	281.25	16.25+
सायनामिड	98.75	76.25	97.50	12.50+
डीसीएम	170.00	123.00	158.50	3.50+
इनलप	53.00	49.50	52.00	
ईआई होटल्स	50.00	42.50	50.00	-
एस्कार्ट्स	148.00	127.00	140.00	5.00 -
फिनो, केबल्स	210.00	140.00	192.50	7.50 ÷
गरबारे नाइलोन	40.00	32.00	34.00	4.00 -
जी.ई. शिपिंग	30.00	25.00	27.50	0.50 -
गुजास्टेट फटि	210.00	150.00	183.75	1.25 -
पासिम इंडिया	193.75	170.00	188.00	
गुज. अंबुजा सीमेंट	116.25	90.00	107.50	0.25+
हिंदु एल्पू		200.00	250.00	21.25+
हिंदु-सीबा		650.00	730.00	30.00 -
हिंदुस्तान लीवर	. 148.75	140.00	147.00	2.00 +
हिंदुस्तान मोटर्स	23.50	19.00	20.75	1.25 -
हेक्स्ट	2950.00 25	500.00 2	2850.00	150.00 +
इंडियन आर्गेनिक	38.00	30.00	36.50	1.25-
इंडियन रेयॉन	130.00 1		122.50	
इंगरसॉल-रेड	305.00 2	A CONTRACTOR	300.00	25.00 +
आईटीसी	116.00		107.00	2.00 -
	2000	THE RESERVE OF THE PERSON NAMED IN	The State of the S	THE RESERVE

	1	991		पत्तवाहे में की स्थिति
	ऊंचा	नीचा	1000	H . H
			7.2.91	IL.
जे.के.सियेटिक्स	37.50	27.00	33.50	2.00 -
काइनेटिक इंजी	170.00	150.00	162.50	5.00~
किलों. क्युमिस	112.50	95.00	110.00	2.50 +
केएसबी पंपा	190.00	160.00	185.00	15.00 ÷
लार्सन-दुबो	113.75	90.00	105.00	5.00 ÷
सिप्टन	72.50	57.50	72.50	3.50+
लोहिया-मशीन्स	37.00	29.50	31.00	4.00 -
एलएमडब्ल्यू	3075.00	2380.00	3050.00	325.00+
मबुरा कोट्स	210.00	193.00	206.00	1.00+
महिंद्रा-महिंद्रा	75.00	60.00	67.50	
मास्टरशेयर्स	26.50	20.00	24.25	1.75+
मोटर इंडस्ट्रीज	780.00	675.00	750.00	30.00+
मुकुंव लिमि	177.50	155.00	171.25	3.75+
नेशनल आर्गे	1075.00	925.00	1015.00	40.00 +
नेस्ले इंडिया	130.00	111.25	127.50	4.50 +
निरलॉन	20.00	16.25	19.00	0.50 -
ओरके सिल्क मि	25.00	17.50	23.50	2.00 +
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	60.00	53.00	57.25	1.25+
प्रीमियर ऑटो		30.00	37.00	2.00-
रेमंड	131.25	110.00	121.25	5.00 -
रेकिट-कोलमैन	220.00	205.00	217.00	1.00+
रिलायंस इंडस्ट्रीज	125.00	91.25	113.75	5.75+
सीमेंस इंडिया	125.00	112.50	117.50	5.00 -
शाँ वैलेस	93.00	77.00	91.00	3.00+
भीराम फाइबर्स	38.50	33.00	37.50	2.50 +
एसकेएफ बेय	.2000.00 1	650.00	2000.00	100.00+
1644	42 00	33.00	41.00	
टाटा स्टील	160.00	130.00	150.00	3.75+
टेल्को	182.50	158.75	162.50	7.50 -
टाइटन बाचेस	82.00	58.00	75.00	10.00 +
बाम ऑर्गेनिक	120.00	102.50	120,00	8.75+
वीडियोकॉन	_ 260.00	180.00	250.00	15.00+
बोल्टास	106.25	92.50	102.50	2.50+
विमको	21.25	16.00	20.00	

भारतीय	रुपए	का मूल्य		# (F)
देश	मुद्रा	इका	विकाती म ( रुपस्	करत है
आस्ट्रेलिया	डालर		14.5764	14.4504
आस्ट्रिया	णिलिंग		1.8255	1.8004
बहरीन	दीनार.		38.75	38.25
बांग्लादेश	टका	100	53.6326	53.5010
कनाडा	डालर		16.1611	16.0044
डेनमार्क	क्रोना		3.3365	3.3026
मिस्र	पाँड		5.20	5.15
फास	फैक		3.8314	3.7383
हांगकांग	डालर	1	2.4003	2.3777
इंडोनीशया	रुपिया	100	0.982	0.0890
इरान	रियाल	100	_	THE REAL PROPERTY.
इटली	लीरा	100	1.7093	1.6904
जापान	येन	100	14.7059	14.3472
केन्या	णिलिग	1	0.40	0.35
कुवैत	दीनार	1		-
मलोशया	डालर	1	6.9577	8.8652
मारीशस	रुपया		1.10	1.00
नेपाल	रुपया	1	0.6220	0.5890
हालेड	गिल्डर	1 1	11.3924	11.2799
पाकिस्तान	रुपया		0.78	0.75
सिगापुर	डालर		0.9556	10.8509
स्पेन	पेसो	1	0.1900	0.1800
श्रीलंका	रुपया		0.4656	0.4228
स्वीडन	क्रोना		3.4244	3.3895
स्विट्जरलेड	स्विस फ्री	可 1 1	5.0464	14.8950
तंजानिया	शिलिग.	1	0.1039	0.0990
याइलंड	बहत्त	100 7	4.6608	74.4228
बिदेन	पाँड	1 3	7.2509	36.9754
अमेरिका	.डालर	1 1	8.7178	18.5443
सं.अ.अमंतरात	दिरहम	1	4.2528	4.1518
सोवियत स्टर्	.स्बल	1 2	5.6068	25.4580
				THE RESERVE OF THE PARTY OF THE

आपके अपकी प्यारं विसे आप होता टिपट एको है. पर आपको भे आपको भे आपको भे अपको भे क्षापको पर्याहर स्पर्ध पर्याहर स्पर्ध प्रकार है वो प्रकार है वो प्रकार है वे

स्रोत: बैक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 7.2.91



आपको मोटरवाइक.

1.6904

14.3472

6.8652

0.5890

11.2799

10.8509

0.1800

0.4228

14.8950

0.0990

74.4228

36.9754

18.5443

4.1518

25.4580

0.75

1.00

0.35

भारती पारी लाडली. हमेशा.

विषे आप दिल से चाहते हैं. आपको ये इमसफ़र हमेशा टिपटॉप रहे इसका आप पूरा-पूरा ध्यान

प आपको इस मोटरबाइक के दिल में कीन है - ये प आपको पता है क्या ? इसको प्यारा कीन है -के अपको ?

ये है इसकी चेन.

व्यमंड सुपर चेन.

रही है वो चेन जिसे हर मोटरबाइक निर्माता अपनी कि में लगाने के लिए चुनता है. अगर वह कि या हींगे हीण्डा या यामाहा या टी वी एस कि काजासाकी बजाज या बुलेट या

निक डायमंड सुपर ही क्यों ?

इसे डायमंड चेन कंपनी, अमेरिका के तकनीकी सहयोग से भारत में बनाते हैं टी आई डायमंड चेन लिमिटेड. ये दोनों मिलकर ऐसी चेन बनाते हैं जो बहुत कम खिंचती है इसे बाहर से कठोर बनाने के लिए खास प्रक्रिया से गुज़ारा जाता है. इसीलिए ये ज्यादा चलती हैं. अधिक मोटी प्लेटें इसे देती हैं ज्यादा मज़बूती. और बढ़िया लुबिकेशन होने से यह काम करती है -बेआवाज़ बेरोकटोक.

इन खूबियों के होते हुए, वैसे तो आपको शुरु से मोटरबाइक में लगी डायमंड सुपर बदलनी ही नहीं पड़ती... काफ़ी लंबे समय तक.

लेकिन जब बदलनी पड़े तो सिफ्री **डायमंड** सुपर चेन ही लीजिए.

इसके लिए आपकी मोटरबाइक भी आपको प्यार करेगी.



DIAMOND SUPER

कि कि उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Guruku असामुन्यि लांक्टनाइक में शुरू में यही, इसलिए हमेशा यह

## अल्फ्रा 🖨 नेशनल द्वारा

नैशनल की अल्फ़ा गोल्ड सीरीज़ ने सारे दक्षिण-पूर्वी एशिया में हलचल मचा रखी है. जापानी हों या कोरियावासी, फिलिपीन्स के लोग हों या थायलेंड के, सभी को टीवी चाहिए तो बस अल्फ़ा ही. इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं क्योंकि इनका निर्माण होता है अनेशनल की जग प्रसिद्ध टेक्नोलॉजी द्वारा.

## अल्फा स्नलारा द्वार

वही 🔀 नैशनल टेक्नोलॉजी अब भारत में आपके लिए लाए हैं सलोरा ई सी पी. दो कलर टीवी- 51 सें.मी. (20") और पोरटेबल 36 सें.मी. (14"). आप तक पहुंचने से पहले ये टीवी हमारी प्रयोगशालाओं में संपूर्ण रूप से जांचे-परखे जाते हैं, ताकि ये बरसों तक चलें ऐसे जैसे बिल्कुल नए.

तो आज ही पधारिये अपने नज़दीकी सलोरा डीलर के यहां और चुन लीजिए अपना मनपसंद अल्का



 मह पहें इंडिया टुड़े के अक पर
 क्यों के मध्य ही संवे

किशव कर किशर जाते • तीर के की संख्या द • वृत्त का अने वाल श्र मिल होगा. • महमेले

निका ही रहें भवंत्रयम् तेन सर्वगुढ एकारस्व हे दिए जार के किंदिन प्राप्तार के प्राप

THE EDGE BARDS





of when

CC-0. In Public Domain: Gurukur Kangri Concen-

#### इंडिया टुडे वर्ग पहेली-27

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri पत्नी केवल धीरज नेता युद्ध से मित्र को सामने 10 मना लड़ाई पीड़ित 6 आए साथ लिया का माहा व्यस्त मंत्री मद्रास में प्लॉट L हमला 7 क्यों नहीं पद ग्वालियर के एक कदम आगे किया त्याग दिया जांच 7 की मांग आगे बस्ताहाली दी नीति आ गहरी सही दृष्टि गए सावित 3 चस्का लग साथ ये थीं ताजगी नहीं गया सियासी स्वार्थ शिद्दत नहीं 6 से अपील 8 L

नाम	
पता	
पिन	
Ę	ल इस पत्ते पर भेजें:

वर्ग पंहेली-27 इंडिया टुडे, एफ-14/15, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि: 5 मार्च 1991 उत्तर के लिए देखें: 16-31 मार्च 1991 का अंक

<ul><li>¥ यह</li></ul>	पहेली	णब	दश:		
इंडिया	रहे के	10		री 19	991
रे अक	पर अ	धा	फरव रेत है		

 वर्गों के भीतर दिए गए गब्द ही संकेत है.

र्वी एशिया

रेयावासी

को टीवी

बात नहीं

ग प्रसिद्ध

ंजी द्वारा.

ए लाए हैं

(20") पहुंचने से

र्ण रूप से

ऐसे जैसे कुल नए.

र के यहां

द अल्फा.

र टीवी

- रे तीर के चिन्ह बताते हैं कि गब्द कहां से गुरू होकर किथर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ हिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गी रों मंख्या दशति हैं.
- 🎤 वृत्त का अर्थ है कि उसमें शने वाले शब्दांश का प्रयोग
- भटमैले रंग वाले वर्ग क्ति ही रहेंगे.
- भवंप्रथम पहुंचने वाले <sup>तीन</sup> सर्वगुद्ध हलों को गुस्कारस्वरूप 500-500 ह दिए जाएंगे.
- निविग मीडिया इंडिया ति के कर्मचारी और उनके कियार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

MANUS.				117/500						NI PO			
ē	दिर	या त	S TI	9	मु	₹	ली	Ħ	नो	ह	₹	जो	र्श
	2.72 (a)			अब मांसा	बौरों पर	<b>→</b> 3		मुझे मौका	<b>→</b> 3	6	जीत की		である
		H		नहीं	भेजा	अ	4	चाहिए	स	F	मुद्रा	त्रास की	1
3		动	-			लि	حر	J	<u>ल</u>	श	न	गूंज	7
	स्थान हिं	置		मूरी	7 8	शा	रस	वाले	प	τ	5 ₹	रेखा से	΄τ
	अटब	ह रहे		आखों वाले	अ	diameter of the second	नए स	हयोगी	<b>→</b> 5	द	शि	मिलती	3
नीति		5	श	म्मी	<b>(4)</b>	4	₹		पा	या	खा	表	•
पर चोट	<b>→</b> 5	4	瀬	तं	(I)	रा	3 ↓	आज भी	<b>म</b>	द	स्व		ŧ
đe	व	होड़	असम	र्थ पड़े	₹		सो	मा वही	Æ	व	रू		31
से क्या	н̈́	<b>में</b>	7.5	5	अ	ৰ্দ্য	(Ŧ)	सि	<b>(8)</b>	3	<b>(</b>	z	a
6	त	नु	जा	मे	<b>(E)</b>	.ता	ल	पेट्रोल की	रा	शराब शवाब	विन सब	<b>→</b> <sup>5</sup>	14
रंग	सा	4	मी	τ	F	17.6		का बचत	<b>→</b> 3	नहीं	गए	मा	*
बवलं गए	के	साड़ी	बातरी	5	व	ला	पुंच	ला	FT	केरल की	<b>→</b> 3	ध	f
3 4	मों	ड	सी	नीव	\$Z	नी के			रि	नर्स	अ	व	Ŧ
रहा क	र दिया			रस चुके	4	पि	या	জি	पो		ले	रा	न
9 4	अ	स्त	7	ह	सै	न	अ	ख्त	₹		म्मा	व	

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-25 का हल पुरस्कार विजेता मुशीला देवड़ा द्वारा रूपचंद देवडा तेलीवाडा रोड, सर्राफा बाजार बीकानेर 334001 (राज.) सुधीर सक्सेना 1/17, हनुमानपुरी निकट बाल ज्योति स्कुल मेरठ-250002 (उ.प्र.) डॉ. श्रीमती अंशु जैन 2 जे, 15, जवाहर नगर,

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

जयपुर (राज.)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri করা কার

## खुन बोलेगा सिर चढ़कर

#### हरिजनों और पिछड़ों की पुलिस मुठभेड़ में मौत वाली कहानी में कई विसंगतियां

तर प्रदेश में फर्जी मुठभेड़ में पुलिस हारा 13 लोगों को मार दिए जाने से विपक्षी पार्टियों को डगमगाते मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव पर प्रहार करने का भरपूर मौका मिल गया है. पिछले महीने जब कुंडा की 'फर्जी' मुठभेड़ का रहस्योद्घाटन हुआ तो वी.पी. सिंह, जिन्हें यादव उत्तर प्रदेश का 'हत्यारा मुख्यमंत्री' बता रहे थे, 30 जनवरी को वहां सबसे पहले पहंचने वाले लोगों में से थे.

प्रतापगढ़ जिले की कुंडा तहसील (आबादी: 30,000) में पड़ने वाले अनाम से गांव चौरा और बेढ़न गोपालपुर पिछले हफ्ते तक नेताओं के मुकाम बन गए कांग्रेसी नेता नारायणदत्त तिबारी और राजंद्र कुमारी वाजपेयी और बसपा नेता कांणीराम सहित राज्य की विभिन्न पार्टियों के लगभग सभी नेता कुंडा का दौरा कर आए हैं. इसकी एक बजह फर्जी मुठभेड़ तो थी ही, दूसरी वजह यह थी कि मारे गए लोगों में 10 हरिजन और तीन कुर्मी (पिछडी जाति) थे.

एक स्थानीय दैनिक में इस घटना के छपने और 24 जनवरी को इसे विधानसभा में चर्चा के लिए उठाए जाने से यादव समझ गए कि दूसरे लोग इसका भरपूर राजनैतिक फायदा उठाने की कोशिश करेंगे. इनके मंत्री रामणंकर कौणिक जब पुलिस का बचाव करने में विफल रहे तो यादव ने मामले की सीआईडी जांच की घोषणा कर दी. सीआईडी ने अपनी प्रारंभिक रिपोर्ट में 'घटनाओं के क्रम' में कई 'खामियों' की ओर संकेत किया और गृह विभाग ने 29 जनवरी को मुठभेड़ में शामिल 13 पुलिसकर्मियों को निलंबित करने के आदेश दें दिए. इनमें कुंडा थाने के थानेदार, वरिष्ठ उप-निरीक्षक और कुंडा के सर्किल अफसर (पुलिस उपाधीक्षक) शामिल हैं.

प्रशासनिक कार्रवाई के अलावा यह मामला अब यादव सरकार के लिए एक बड़ा राजनैतिक विवाद वन गया है. उत्तर प्रदेश में फर्जी मुठभेड़ की किसी भी घटना या यहां तक कि किसी सही मुठभेड़ में भी इतने लोग कभी नहीं मारे गए. बस्ती से विधान परिषद के इंका सदस्य और पूर्व मंत्री जगदंबिका पाल कहते हैं, "इस घटना ने कढ़ना की घटना को भी पीछे छोड़ दिया है. यादव को इसकी जिम्मेदारी लेते हुए इस्तीफा दे देना चाहिए.'' जनता दल नेता वी पी. सिंह ने यादव के इस्तीफे के अलावा इस मामले के लिए विशेष अदालत के गठन की भी मांग की है. जनता दल ने, जो क मोर्चा के साथ प्रायः रोज ही कुंडा में प्रकं कर रहा है, इस मुद्दे पर राज्यका आंदोलन छेड़ने की धमकी दी है.

पूलिस की कहानी बहुत आसान क

ज्योगों से भर

शने में 8.30

हं कि भट्टा

ने जीप (एम

रवे भाद्री गा

ति की पुरि

जाविक, यह

रो 'डकैतों' ने

रोप भी आ

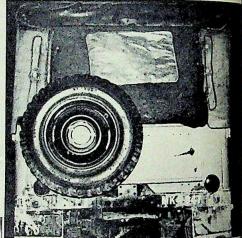
पन सिंह अं

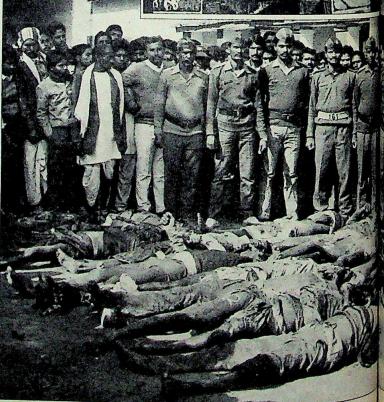
किथे. रात 1

राव चौकी प

सी आईडी के मुताबिक पुलिस की कहानी संयोगों से भरी है

चुराई गई जीप (दाएं); और पुलिस की गोलियों से मरे लोग







अलिसवालों के निलंबन के बावजूद मुख्यमंत्री के इस्तीफे की मांग जोर पकड़ रही है

> कुंडा में वी.पी सिंह (दाएं से दूसरे)

होगों से भरी हुई है. 14 जनवरी को कुंडा ाते में 8.30 बजे रात रिपोर्ट दर्ज कराई हं कि भट्टा मालिक विजय कुमार गुप्ता हो जीप (एमकेए 847) शाम के लगभग 7 ते भाद्री गांव के पास लूट ली गई. उस ति की पुलिस डायरी में दर्ज ब्यौरे के ज़बिक, यह संयोग ही था कि जिस जीप गे 'इनैतों' ने लूटा उसके पीछे एक पूलिस गें भी आ रही थी जिसमें थानेदार नरेंद्र ल सिंह और एसएसआई राजेंद्र पांडेय हैं गे. रात 10 वजे चूरा गांव स्थित पुलिस गव चौकी पर जब लूटी हुई जीप लेकर

तियां

भाग रहे लोगों को रुकने का संकेत किया गया तो उन्होंने पुलिस चौकी पर गोली चलानी शुरू कर दी. लेकिन उन्हें यह पता नहीं था कि उनके पीछे एक पुलिस जीप भी आ रही है. पुलिस ने भी गोली चलाई और थानेदार ने पोजीशन लेने के बाद 'डकैतों' से आत्मसमर्पण करने को कहा. लेकिन वे गोली चलाते रहे. लगभग एक घंटे तक दोनों तरफ से गोली चलती रही जिसमें जीप में बैठे 13 लोग मारे गए. जीप से तीन बंदुकें, तीन पिस्तौलें, एक क्ल्हाडी और एक फ्लैश लाइट बरामद हुई. दो कांस्टेबल— माणुक अली और अखिलेश कुमार गोली से घायल हो गए.

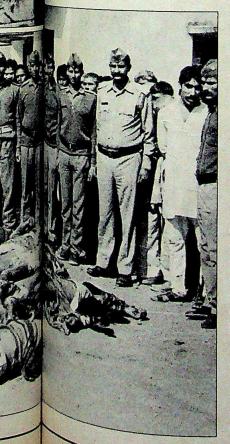
अपनी शुरुआती जांच में सीआईडी के जासूसों ने पाया कि पुलिस की कहानी में कई खामियां हैं. पहली तो यही कि जिस जीप पर 'डकैत' भाग रहे थे उसे कोई खास नुकसान नहीं पहुंचा. आगे का शीशा, टायर और पीछे का कैन्वास कवर सब कुछ दुरुस्त था. जीप के ढांचे पर गोली के निशान जरूर थे. एक सीआईडी जांचकर्ता कहते हैं, "इस जीप को देखने से तो नहीं लगता कि उसमें 13 आदमी फंस गए और मारे गए. जीप को तो चारों तरफ से गोलियों से छलनी हो जाना चाहिए था." जांचकर्ताओं का मानना है कि कांस्टेबलों को गोली नहीं, खरोंचें लगी हैं और खरोंच खुद भी लगाई जा सकती है. मामले की जांच करने वाले एक दूसरे सीआईडी अधिकारी कहते हैं, ''जिस मुठभेड़ में सभी 13 डकैत मारे जाएं, उसमें पूलिसकर्मियों का गंभीर रूप से घायल न होना अकल्पनीय बात है. यह भी अकल्पनीय ही है कि जीप के धातु वाले ढांचे की आड़ के बावजूद पुलिस फायरिंग इतनी सटीक थी कि जीप में बैठे सभी लोग मारे गए, हालांकि उनमें से कोई बाहर भी नहीं आया." सीआईडी के खुफिया अभी कोई स्पष्ट विचार नहीं व्यक्त कर रहे हैं क्योंकि मेडिकल, गोलियों और उंगलियों की छाप की रिपोर्ट अभी आनी वाकी हैं लेकिन वे इस बात पर यकीन करते दिखते कि मुठभेड़ फर्जी थी. परिस्थितियों में ताज्जुब की बात यह है कि इलाहाबाद के आईजी और डीआईजी दोनों ने ही गृह विभाग को भेजी अपनी रिपोर्टों में पुलिस के मुठभेड़ सिद्धांत का समर्थन किया

इस संवाददाता ने मुठभेड़ वाली जगह, चौरा गांव और उसके आसपास जांच करने पर पाया कि पूलिस के बताए समय और गांववालों के बताए समय में काफी अंतर है चौरा में छोटी-छोटी कुछ दुकानें हैं जो आम तौर पर शाम 7 बजे बंद हो जाती हैं. 47 वर्षीय सियाराम पटेल के अनुसार पता नहीं कहां से दो जीपें वहां पहुंचीं और अचानक गोली की आवाज गूंजने लगी. वे कहते हैं, "मैं और मेरा साथी सिर पर पांव रखकर भागे. उस समय रात के 8.15 बज रहे होंगे." लगभग 45 मिनट तक गोली चलती रही लेकिन उनमें से किसी ने यह नहीं देखा कि गोली दोनों तरफ से चल रही थी या सिर्फ एक तरफ से.

इस मुद्दे का जोर पकड़ना यादव के लिए काफी घातक साबित हो सकता है क्योंकि मारे गए लोग हरिजन और पिछड़ी जाति के हैं. और वाम मोर्चा तथा बसपा के अलावा यादव का विरोधी जनता दल भी इन्हीं जातियों को पटा रहा है. उधर, कांग्रेस भी हरिजनों का समर्थन हासिल करने के लिए इस मुद्दे को तूल देने की इच्छुक है जिससे यादव गंभीर संकट में पड गए हैं.

इस मामले में शामिल पुलिस दल को निलंबित करने की कार्रवाई एक तरफ ऐसे मामलों में कार्रवाई करने में यादव की फूर्ती दर्शाती है तो दूसरी तरफ इस बेहद गंभीर फर्जी मुठभेड़ की पुष्टि भी कर सकती है.

-- विलीप अवस्थी, कुंडा में



ज़मीन, मकान,

शेयर, सेंक्योरिटी,

आभूषण, आदि से

दीर्घकालीन

कैपिटल गेन?

खरीदिए एन एच बी 9% कैपिटल बॉण्ड्स और पाइए 100% कर मूक्ति अपने कैपिटलगेन पर. एन एच बी 9% कैपिटल गेन बॉण्ड्स के तहत कई लाभ आपके लिए – आपकी पूँजी के लिए. करमुक्ति तथा वृद्धि. एन एच बी 9% कैपिटल बॉण्ड्स के तहत कई लाभ आपके लिए – आपकी पूंजी के लिए.

• लगायी गयी पूंजी पर आपको सालाना 9%ब्याज मिलता है, जिसे आप अर्धवार्षिक आधार पर प्राप्त कर सकते हैं.

• या, अगर आप चाहें तो बॉण्ड्स खरीदने की तारीख़ से तीन महीने बाद 9%सालाना की दर से पूरे तीन साल का अग्रिम ब्याज कमीशन

HOUS

YOU

GAIN

THE

NATION

**GAINS** 

काटकर प्रति 1000रु. की पूंजी पर 240रु के हिसाब से प्राप्त कर सकते हैं. इसमें बीच के तीन महीने का भी ब्याज शामिल हैं – इस

> प्रकार आपको एक दिन के भी ब्याज का नुकसान नहीं होता.

ब्याज उपार्जन के
 श्रोतों पर कोई कर
 कटौती नहीं धारा
 (1)(xvie)के तहत 5लाख
 तक की छूट जिसमें संपत्ति

कर 5(1A)के तहत अन्य 'इलिजिबल एसेट्स भी शामिल है.

- आयकर अधिनियम 80Lके तहत ब्याज कर मुक्त.
- पैसा भेजने का खर्चा एन एच बी उठाएगा.

• 150से भी अधिक केंद्रों पर सालो भर सममूल्य पर उपलब्ध.

 प्रमुख आवास वित्तिय संस्थान होने के नाते हमारा फूर्ज है मकान उपलब्ध कराना. तथा इसके लिए धन जुटाना. इसलिए यह बहुत ही संतोष की बात है कि इस बॉण्ड के माध्यम से लगी हुई आपकी पूंजी का इस्तेमाल अधिक-से-अधिक लोगों के लिए मकान उपलब्ध कराने में होगा.

नीचे लिखे पते पर आवेदन पत्र उपलब्ध हैं और यहीं पर स्वीकार भी किए जाते हैं. राष्ट्रीय आवास बैंक (बंबई तथा दिल्ती)

 कैनिफिना कार्यालय
 इस्यू संबंधी इन 9 बैंकों की 142 शाखाएं 51 केन्द्रों पर — इलाहाबाद बैंक, आंग्र बैंक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, कनारा बैंक, सिटी बैंक (साखर भवन बंबई), फेयरग्रोथ फाइनांशियल सर्विसेज, इंडियन बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक ऑफ़ मैसूर, दि वैश्य बैंक लिमिटेड.

इश्यू प्रबंधकः कैनवैंक फाइनांशियल सर्विसेज लिमिटेड.



तीसरा माला, बंबई लाइफ़ बिल्डिंग, अकबर अलीज के ऊपर, 45 वीर निरमन रोड, बंबई 400 023 फोन: 222702, 224347. छठा माला, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, 18-20. कस्तुर्वा गांधी मार्ग, नई दिल्ली 110 001. फोन: 3712016, 3712036.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwan

क्रंत सम्मेलन

ग्रम यौन

गत भी यह

मिमीत और मृद्य अतिर्गि क्रिमें उन्होंने जिला दिया क्रिमें स्म सु

गमा वहाई र

नाम में कर म्यास्थ्य म्या तक इस म्यान की की वे तो नह

ने कहात पर नेकिन सम नेतिन को इ नेति के इन्होंने ह



### FIRST INTERNATIONAL CONFERENCE ON ORGASM

February 3-6, 1991 New Delhi

Organised by

Indian Association of Sex Educators, Counsellors & Therapists



## र्गनाएं तोड़ने की कोशिश

#### गम गौन मुख जैसे गोपनीय विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन



चरम यौन सूख का रहस्य अंततः खुल ही गया. पिछले पखवाड़े नई दिल्ली में इस विषय पर आयोजित सम्मेलन की चर्चा तो पूरी राजधानी में रही

ही, दुनिया का समाचार मा भी यहां उमड़ पड़ा. इस मौके की गेमा वहाई रविशंकर ने. उनका कहना था किम्मीत और प्रेम एक साथ प्रवाहित होते मुख्य अतिथि, इंका सांसद वसंत साठे ने उत्साह में उद्घाटन भाषण दिया विषे उन्होंने मूक्ष्म-से-सूक्ष्म वातों का भी क्षा दिया. तिकित दूरदर्शन ने णरमाते चरम मुख के बदले 'यौन शिक्षा' विवली का इस्तेमाल किया.

भेष में क्या रखा है? जाहिर है, बहुत वास्त्रमंत्री शकीलुर्रहमान अंतिम भित्र हम द्विधा में पड़े रहे कि उन्हें भावन को संबोधित करना चाहिए या की वे तो नहीं आए लेकिन उन्होंने अपना भा पहा आए लाकन उन्हान भजवाया जिसमें यौन शिक्षा हे विकास का किया का कि

किन सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. प्रकाश कि सम्मलन के अध्यक्ष का निक्रित की इन सब बातों से कोई परहेज हो हिन सब बाता स कार उत्तिम घोषणा की, ''चरम सुख कानों के बीच और स्वलन टांगों के बीच होता है." और यहीं वह अंतर दिखता है. ऐसा अंतर जो साठे की बातों में झलकता है. उनका कहना था, "प्यार चरम सूख का अंग होना चाहिए. महत्वपूर्ण बात यह है कि आप रतिक्रिया के दौरान नहीं बल्कि उसके बाद कैसा महसूस करते हैं."

सम्मेलन प्यार का जश्न भर नहीं रहा बल्कि इसमें इस विषय को ऊंचा दर्जा दिया गया. बाल्तिमोर के जॉन हॉपिंकस अस्पताल के डॉ. जॉन मनी ने सुझाव दिया कि चरम मुख अध्ययन का एक अलग विषय ही होना चाहिए जिसे चरम सुख विज्ञान कहा जाए. अमेरिका के किसे इंस्टीट्यूट की प्रमुख डॉ. जून रीनिक का मानना है कि यह नाम "ज्यादा शिष्ट और धड़ल्ले से इस्तेमाल करने लायक दिखता है."

कोठारी के अनुसार, इंका के तत्कालीन नरहरि. गाडगिल, विद्रल हरिकशनलाल भगत, जगदीश टाइटलर और साठे 1985 में नई दिल्ली में आयोजित सातवें विण्व यौन विज्ञान कांग्रेस से जुड़े हुए थे. लेकिन सेक्स को अभी भी गंदा और नाकाविले जिक्र माना जाता है.

इसके अलावा, काम्कता के बारे में मिथक भी अभी बरकरार हैं. कोठारी कहते हैं, "लोग अभी भी इस मिथक का प्रचार कर रहे हैं कि स्वलन और चरम सूख समानार्थक है." त्रंत मदीनगी भर देने का दावा करने वाली 'सेक्स टॉनिकों की दिन-ब-दिन बढ़ती विक्री और फुटपाथी सेक्स क्लीनिकों का फलता-फुलता व्यवसाय इस बात का संकेत है कि भारतीय मर्द काम सुख की खोज में पागल हैं. मद्रास के विजया अस्पताल से जुडे यौन विशेषज्ञ डॉ. डी. नारायण रेड़ी कहते हैं कि उनके पास जहां ऐसा एक रोगी आता है, वहीं नीम हकीमों के पास ऐसे दस रोगी जाते हैं.

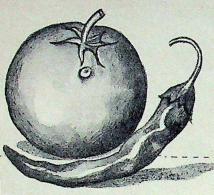
अब भारतीय महिलाएं भी, जो पहले अपने काम संबंधी जीवन के बारे में चुप रहती थी-या बहुत सावधानी बरतती थीं-खलने लगी हैं. वे अब चिकित्सकों से अपनी काम संबंधी जरूरतों के बारे में चर्चा करती हैं और उनसे सलाह मांगती हैं, डॉ. रेड्डी कहते हैं, "मेरे कई पुरुष

रोगियों के साथ अब उनकी पत्नियां भी आने लगी हैं और वे अपनी काम वासना के बारे में बिना किसी संकोच के बात करती हैं." डॉ. रेड्डी के पास ऐसे 18 मामले हैं जिन्हें वे 'उन्मुक्त विवाह' कहते हैं. इसका मतलब है, पत्नियों का अपने पतियों की जानकारी में प्रेमी रखना क्योंकि वे दोनों या तो प्रजनन में अक्षम होते हैं या फिर एक-दूसरे को काम मुख नहीं दे पाते.

हालांकि भारत में महिलाओं और चरम मुख के बारे में आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं लेकिन अंजना संधीर ने भेरे हाइट की रिपोर्ट को आधार बनाकर अहमदाबाद में 25 और 40 साल की उम्र के बीच की 110 विवाहित महिलाओं से उनके यौन जीवन के बारे में पूछताछ की. उनमें से 99 फीसदी महिलाओं ने बताया कि उन्होंने चरम सूख का अनुभव किया है.

एक मिथक-जिसे फायड से मिली विरासत भी कहते हैं-तो यह है कि परिपक्व महिलाओं को सिर्फ काम-क्रीडा से ही चरम सुख मिलता है. डॉ. जून रीनिक कहती हैं, "50 से 70 फीसदी महिलाओं को सिर्फ मैथुन से चरम सूख नहीं मिलता. उन्हें संभोग से पहले या उसके दौरान भग-शिशन उत्तेजना की जरूरत होती है.'

पश्चिम समेत अनेक संस्कृतियों में



डॉ. स्मेधा साहनी एम.बी.बी.एस., एम.डी.

डॉ. समेधा साहनी बम्बई के एक प्रमुख मेडिकल कॉलेज में लेक्चरार हैं। उनका कहना है : ''सब्ज़ियों, दालों और खाद्यान्नों को बिल्कुल सही तरीके से ही पकाना चाहिए जितना कम हो सके उतने तेल से। बहुत ज्यादा तेल स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

वह कहती हैं – ''खाने की इन चीज़ों में ऐसे प्राकृतिक तेल खुद ही मौजूद हैं जो हमें स्वास्थ्य के लिए जरूरी चर्बी प्रदान करते हैं। "हमारे शरीर को इस अदृश्य तेल के अलावा और तेल बहुत कम चाहिए।

इसीलिए परिवार के भोजन में पकाने का तेल रोज दो टेबलस्पून-या महीने में आधा किलो से अधिक नहीं होना चाहिए।

नेशनल इंस्टीट्यूट आफ़ न्यूट्रीशन, हैदराबाद के वैज्ञानिकों का कहना है कि हमें भोजन में जितनी चर्बी चाहिए उसकी तुलना में भारत में हम दोग्नी या तीन-गुनी आधक चर्बी लेते हैं। इंस्टीट्यूट की चेतावनी है कि यह बात स्वास्थ्य के लिए और विशेषकर हृदय के लिए बहुत खतरनाक है।

कम तेल वाले यह व्यंजन बनाइए। आपको खद ही लगेगा कि कम तेल से पका खाना स्वास्थ्यवर्द्धक होता है, और स्वादिष्ट भी!

66 इन्हें रसोई में

स्वास्थ्य के लिए बनाइए"



1/2 कि.ग्रा. ओकरा (भिडी) : 2 बड़े पके स्लाइस किए टमाटर, 2 मझोले स्लाइस किए प्याज, 2-4 कटे हुए हरे मिर्च, । चम्मच भरके धनियां की कटी पत्तियां, 2 चम्मच सिरका, नमक स्वाद के अनुसार, इतना पानी जो ओकरा (भिडियों) और इस सारी सामग्री को ढंक ले।

हिनाओं पर वने के लिए

त अधिकार न

ल समाजों में

छं है, जो म

नुभव करती

हमाम कराय

बन्धी पत्नी न

वि प्रोफे

र्गिनिधियों के

गैवे भाइ फे

ने पृद्धते वि

मी पुरुष के

हों हो सक

गहर और

माम सरीखे

हे बहुना था वि

देलाओं की

विषमताएं

गनताएं अधि

ले हैं, "भग-

शियामी होत

भूष का वि

व्यादातर र

लिकि चरा

ओकी पहलु

ते हैं पर

क्षेत्रज्ञों का म

ेवोय पहलुउ

<sup>हा.</sup> अपना

त्त्रे हुए एक जिल्हें "आप

भेलग नहीं अन उपरांत

थार की ज भी साठे हैं. हें

हे भारत के ने। नोग वड़ी

केंद्र आज ऐ

असरद

विधि: ओकरा धो डालें और उनके सिर की घुडियां काट दें। इस सारी सामग्री को स्टेनलेस स्टील या अल्यूमिनिअम के पैन में रखकर आधे घंटे तक रहने दें। फिर तेज आँच पर इन्हें उबालें और तब तक ही पकाएं जब तक ओकरा तैयार न हो जाएं लेकिन कुरकुरे बने रहें। इन्हें जूस के साथ गरम गरम परोसिए। (सर्व 3-4)

#### स्टीम्ड प्रॉन

। कि.ग्रा. प्रॉन, नमक, काली मिर्च, । नींबू का रस, । बीज निकला बारीक कटा हरी मिर्च, 4 चम्मच बारीक कटे हरे प्यॉज पत्तियों सहित, दो चम्मच छिली और बारीक कटी अदरक, 1/2 कप चिकन स्टॉक या पानी, । चम्मच नमक, 2 चम्मच सीसेम तेल (तिल), दो बड़ी चम्मच कॉर्न प्लावर, । चम्मच सोया सॉस।

विधि: प्रॉन छील लीजिए, काली नसें निकाल दीजिए और धो डालिए। इन पर नमक, काली मिर्च और नींबू का रस मिलए और आधे घंटे तक रखा रहने दीजिए। फिर इन्हें 6 से. 8 मिनट तक स्टीम कीजिए। गर्म बनाए रिखए। चिकन स्टॉक या पानी एक पैन में डालिए, उसमें नमक और सीसेम तेल मिलाइए। कॉर्न फ्लावर में थोड़ा पानी डालकर मिला लीजिए और अलग रिखए। अब स्टॉक की उबालिए, उसमें कॉर्नफ्लावर मिलाइए और इसे दुबारा उबलने तक आँच पर रक्षिए।

इसमें सोया सॉस और ज़रूरत हो तो नमक मिलाइए। अब प्रॉन को एक चौड़ी प्लेट में रिखए, इन पर मिर्च, हरा प्याज और अदरक डालिए। जपर गरम सॉस छिड़किए और परोसिए। (सर्व 4)

स्वादिष्ट तथा कम तेल युवत पकवान तैयार करने की विधियां मंगवाने के लिए लिखें, पों. वॉ. नं. 55 नई दिल्ली-110 001.

> 66 कम तेल से बेहतर स्वास्थ्य केवल 1/2 किलो प्रति व्यक्ति प्रति माह "

तिलहनों के बारे में टैक्नालॉजी मिशन द्वारा जन हित में प्रकाशित

ASP-D/TMO/2/HIN 90-\$1



"चरम मुख विज्ञान ज्यादा शिष्ट और धड़ल्ले से इस्तेमाल करने लायक शब्द दिखता है" डॉ. जून रीनिक किसे इस्टीट्यूट, अमेरिका की प्रमुख

"चरम सुख कानों के बीच और स्खलन टांगों के बीच होता है"

डॉ. प्रकाश कोठारी सम्मेलन के अध्यक्ष



र्वताओं पर अधिकार बनाए तो के लिए उन्हें चरम सुख क्षेत्रीकार नहीं दिया गया है. त नमाजों में, जैसा कि मनी छोहै, जो महिलाएं चरम सुख सुख करती हैं उन्हें यह लाम कराया जाता है कि वे ब्ली पती नहीं विलक कुलटा

र्बंद प्रोफेसर हिंगिग्स ने क्रीनिध्यों के विचार सुने होते वें माइ फेयर लेडी में यह वें पूछते कि कोई महिला

में पुरुष के समान क्यों हो सकती. रेवेक्का हर और एलिस के जान सरीबे कई वक्ताओं कहा था कि पुरुषों और जिलाओं की यौन संरचना विषमताएं कम और जानाएं अधिक हैं. चाकर के असरदार और जिलामी होता है जितना है जितना

कानों का मानना है कि यौन संबंधों के जीय पहलुओं पर ज्यादा कुछ नहीं कहा कि अपना नाम न छापने का अनुरोध के हैं। एक भारतीय यौन चिकत्सक अपने कहीं कर मुख्य को बाकी क्रिया कि उपरांत मिष्ठान ही होगा."

शार की जिल्हान हा हागा.
के कि के कि वारे में सबसे मुखर के कि वह से बात पर दुख जताते हैं
के कि के स्वर्ण युग में (काम सूत्र में
के अत्र हैं) ते सकती से संभोग करते थे

/2/HIN 190-51



सेक्स समारोहः एक उत्तेजक कार्ड और भारतीय कप





"कई समाजों में जो महिलाएं चरम सुख अनुभव करती हैं उन्हें एहसास कराया जाता है कि वे कुलटा हैं" डॉ. जॉन मनी जॉन हॉपॉकंस हॉस्पिटल बाल्तिमोर, अमेरिका

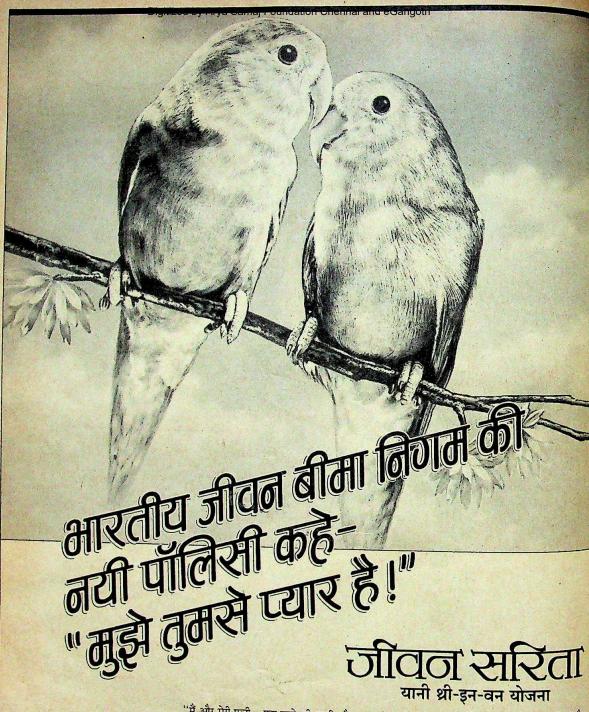
कि चरम सुख को अंतिम बिंदु मान लिया गया है: 'बस हो गया'.

भारत में चरम सुख की कहानी इतनी आसानी से बयान नहीं की जाती यदि हाल के शोध, जिसने चरम सुख को स्वलन से, प्रजनन को आनंद और यौन चरम सुख की घटती महत्ता से अलग कर दिया है, की प्रासंगिकता परिवार नियोजन के लिए इतनी महत्वपूर्ण न होती. एड्स की बात ही छोड़ दीजिए, मुंबई के चिकित्सक और भारतीय परिवार नियोजन संघ के सलाहकार डॉ. महिंदर सी. वत्स कहते हैं कि भारत की सिमिष्ट जनसांख्यिकी के मद्देनजर यौन विज्ञान को आयुर्विज्ञान का एक प्रमुख अंग बना देना ठीक रहेगा.'' भारत में 15 से 25 वर्ष के आयु वर्ग में 15 करोड़ लोग हैं. इस वर्ग में एड्स सहित सभी यौन रोग पाए जा सकते हैं.''

सम्मेलन समाप्ति की पूर्व संध्या पर जब पुरस्कार दिए जा रहे थे तो लग रहा था कि ऑस्कर समारोह चल रहा है. रविशंकर ने मनी, रीनिक और लाइटफूटक्लीन को पीतल की जो मूर्तियां दीं, वे पहली नजर में ऑस्कर जैसी ही लगीं. कोठारी ने प्रतीक चिन्ह के लिए बुजराहो से प्रेरणा ली थी. यह चिन्ह प्रेम की सर्वोच्चता दर्शाता है. फिर हर पुरस्कार विजेता को मंच पर पहंचाया गया. वाद्य यंत्र बिलकुल तैयार उद्घोषक ने हर किसी से नृत्य के लिए तैयार हो जाने को कहा. और यौन विशेषज्ञ, चिकित्सक और डॉक्टर फर्श पर थिरकने लगे. उनकी अगुआई चुस्त मिनी स्कर्ट पहने वेनेजुएला चिकित्सक कर रही थी.

प्रोतिमा गौरी बेदी ने "भारत के शृंगारिक दृश्यों और श्रव्यों का ऐसा नजारा पेश किया कि लोग हैरान रह गए. यह शृंगारिकता—कृष्ण और राधा का प्रेम—कई लोगों की समझ में ही नहीं आई.

और इस सबके बाद सभी 400 प्रतिनिधियों ने चरम मुख के अध्ययन के लिए एक अंतरराष्ट्रीय संस्था बनाने का फैसला किया. चरम मुख विज्ञान का जन्म हो गया दिखा. डाँ. मनी ने बिलकुल सही कहा, "चरम मुख विशेषज्ञों, जन्म दिन मुबारक हो."



प्रवेश इस वा

परिस्थि विवाहि की वा

"मैं और मेरी पत्नी... एक दूसरे की खुशी और सुरक्षा के लिए क्या कुछ नहीं करते? और तभी तो हमने ली है विशेष रूप से तैयार की गई भारतीय जीवन बीमा निगम की जीवन सरिता पॉलिसी. जो हम जैसे हर पित-पती के लिए खास तौर से एक आदर्श पॉलिसी है. इसमें संयुक्त जीवन बीमा सुरक्षा के साथ ही हम दोनों को मिलेगा आजीवन पेंशन का लाभ भी! इतना ही नहीं, इस पॉलिसी के ज़रिए हम अपने बच्चों के लिए एक अच्छी खारी रकम का भी इंतजाम कर सकते हैं!

भारतीय जीवन बीमा निगम की जीवन सरिता एक ऐसी जीवन बीमा पॉलिसी जो कहे - ''मुझे तुमसे प्यार है!' जीवन सरिता संबंधी अधिक जानकारी के लिए अपने नज़दीकी भारतीय जीवन बीमा निगम कार्यालय, विकास अधिकारी या एजेंट से मिलिए.



भार्तीय जीवन बीमा निगम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गोद लेना

# मिटा अपने-पराए का भेद

भारत में पहले गोद लेने के इच्छुक दंपितयों की संख्या गिनी-चुनी ही थी लेकिन अब निस्संतान जोड़े बड़ी मात्रा में बच्चों को गोद लेने लगे हैं

\_रमेश मेनन

रने ली है रित-पत्नी मिलेगा छी खासी

विकास

उन्बं में कुछ साल पहले तक निस्संतान का नाटक किया करते थे. और फिर ऐन क्सा पर गोद में एक शिशु के साथ उनका प्रवेण हुआ करता. गर्वोन्नत माता-पिता इस बात का ऐलान किया करते कि अंततः उन्हें सतान नमीव हो ही गई. लेकिन आज परिस्थितियां बहुत बदल चुकी हैं और विबाहित जोड़े बेहिचक बच्चा गोद लेने की बात स्वीकारने लगे हैं.

और तो और, अब अपने बच्चों के अलावा भी लोग बच्चे गोद लेने लगे हैं. इससे गोद लेने की प्रथा वेहतर और संभ्रांत तरीके से स्थापित होने लगी है. पहले गोद लेने के इच्छुक मां-वाप वच्चे के जन्म, उसके असली माता-पिता और उनके धर्म को लेकर खासे सणंकित रहा करते थे. कुछ तो वच्चे के सामान्य ज्ञान की जांच की कोणिण करने से भी नहीं चूकते थे. और हो सका तो वच्चे की जन्म कुंडली भी जांच-परख ली जाती थी. लेकिन आज लोगों की समझ में आ चुका है कि वंण से ज्यादा महत्वपूर्ण है माहौल.

मिसाल के लिए, तिमलनाडु में कीरिपाड़ा में रवड़ वागान के मालिक गणि कुमार और उनकी पत्नी राजी को ही लें. उन्होंने छह महीने की अवर्ण्यर्वा को गोद लिया तो मारी आणंकाएं काफूर हो गई. उनकी विटिया अब माहे तीन बरम की है और अपने स्कूल की सबसे मेधाबी छात्रा है. वैसे, णणि कुमार और राजी अकेले नही हैं. गोद लिए गए बच्चों की संख्या 1988 में 398 से बढ़कर 1989 में 757 तक पहुंच गई और पिछले वर्ष कुल 2.300 बच्चे गोद लिए गए. इस मामले में बंगलूर स्थित विणेपज दीनाज दमनिया कहते हैं, ''गोद लेना अब वयस्क-केंद्रित न होकर णिणु-केंद्रित हो गया है.''

पहले के समय में लोग-बाग संपत्ति की बात सोचा करते थे. लेकिन अब, बकौल



लोबो परिवार अपने पांच बच्चों (दो गोद ली बेटियों समेत) के साथ

भाजिक परिवेश और नजरिया बदलने के कारण अब तो बच्चे वाले माता-पिता ही नहीं बल्कि अकेली महिलाएं भी बच्चे गोद लेने लगी हैं Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



बच्चे गोद दिलाने वाली केरल की एक एजेंसी: जरूरतमंदों की सेवा

दमनिया, "इसका उद्देश्य बच्चे की एक घर की आवण्यकता पूरा करना होता है." उदाहरण के तौर पर एम. चित्तरंजन और उनकी पत्नी रोहिणी को ही लें. शुभा को गोद लेते ही उनकी जिंदगी में नाटकीय परिवर्तन आ गया. चित्तरंजन के शब्दों में. "अब जाकर हमें शांति मिली है."

वैसे महत्वपूर्ण बात यह है कि गलत धारणाओं के खत्म होने के साथ ही गोद

लेने वाले माता-पिता भी अब पूर्वाग्रह रहित हो सामने आने लगे हैं. अबै तो सावले लोग मानने लगे हैं कि सावला शिशू ही उनका अपना लग सकता है. आंकड़े बताते हैं कि अब लड़कों के बराबर ही लड़कियां भी गोद ली जाती हैं. मिसाल के तौर पर, केरल में कन्या शिश् को ही पसंद किया जाता है. त्रिवेंद्रम स्थित गोद दिलाने वाली एजेंसी केरल राज्य बाल कल्याण परिषद के

महासचिव नागप्पन नायर कहते हैं. तो यह भावना बन रही है कि लड़ अधिक निष्ठावान और आदर रखने का होगी और बुढ़ापे का सहारा बनेगी."

गोद

**एजेंस** 

पारिवारि

एक

, संतुष्ट

» तकरं

एजेंस में कोर्ट

• फिर

पृद्धताद्ध

ाया. तीन

और अव

आजकल अभावग्रस्त बच्चे भी अहुः नहीं समझे जाते. मुंबई के 17 वर्षीय रंजी रॉड्रिग्स, जिन्हें अनीता और गॉर्डन रॉड्रिंग ने आठ हफ्ते की उम्र में ही गोद ने लिय था, कहते हैं, "स्कूल में कभी किसी ने चुमन वाली बात नहीं कही, हालांकि सभी है। मालुम है कि मैं गोद लिया लड़का ह सामाजिक तौर पर ऐसे बच्चों की स्वीकृति के पीछे एक बहुत बड़ा कारण है प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ताओं का इस ओर बहा रुझान. उनकी राय तो यह होती है कि गोर लिए जाने की वात बच्चे से छुपाई नहीं जानी चाहिए. गोवा के मारिया और रोजर फर्नांडीस की चार वर्ष और एक वर्ष की ते और बहन वेटियां हैं. वे लोग अपनी बच्चियों के वह त्यती ने एव होने की प्रतीक्षा में हैं ताकि उन्हें बताया ज बनोमा कह सके कि गोद लिए जाने के बाद भी वे किस रमीव हुई. कदर अपनी हैं

नोग भी गो दिलचस्प बात वैसे यह है कि अब गांग दर्जन औलाद वाले माता-पिता भी गोद लेने हे गोद लिए व मामले में पीछे नहीं हैं. बंगलूर के अलोग और डेविड लोबों को पहले ही तीन बेटे हैं। भर में मिल पर तब भी उन्होंने एक लड़की को गोर और ममस्य



#### कठिन प्रक्रिया

- ्रोद तेने में मदद देने वाली एजेंसी में पंजीकृत दंपती को अपनी आय, संपत्ति और स्त्रीरोग विशेषज्ञ की रिपोर्ट का ब्यौरा देना
- एबेसी बातचीत से पता करती है कि दंपती गोद लेने के लिए मानसिक रूप से कितने तैयार हैं. साथ ही उनके वैवाहिक संबंध, णिरवारिक संबंध, पारिवारिक स्थिति और बच्चे के लालन-पालन के बारे में उनकी योजना पर भी ध्यान दिया जाता है.
- ्र सामाजिक कार्यकर्ता दंपती के घर जाकर इस बारे में आश्वस्त हो लेता है कि बच्चे की अच्छी देखरेख हो.
- , संतुष्ट होने पर एजेंसी दंपती और उनके परिवार के अन्य सदस्यों को अपनी राय देकर उनकी सभी शंकाओं का समाधान करती है.
- , तकरीबन एक साल की प्रतीक्षा के बाद दंपती को एक बच्चा दिखाया जाता है.
- एजेंसी उसके बाद हिंदू दंपती के लिए स्थानीय सिविल कोर्ट में याचिका दायर करती है और गैर-हिंदू दंपती के लिए जिला या हाईकोर्ट हैं कोर्ट की औपचारिकताओं में तीन महीने तक का वक्त लग सकता है. कोर्ट तथा एजेंसी की फीस करीब 5,000 रु. बैठती है.
- किर बच्चे को गोद लेने वाले माता-पिता को सौंप दिया जाता है. लेकिन उसके बाद भी एजेंसी उस परिवार से कम-से-कम 5 वर्षों तक पछताछ कर अदालत को सूचित करती रहती है.

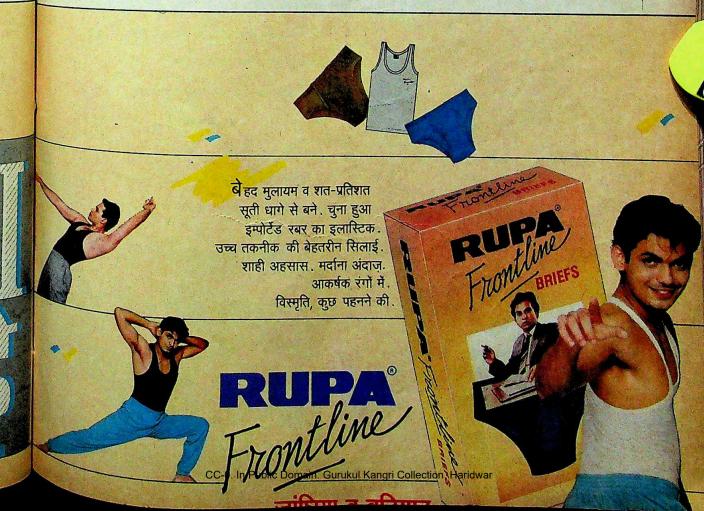
न्या तीन वर्ष बाद चारों बच्चों ने एक और बहुन की फरमाइण की और लोबो ला ने एक और बच्ची को गोद ले लिया. बनोमा कहती हैं, "हमें तो वेहिसाव खुशी सीव हई." अब कुछ कुंआरे या अकेले गेंग भी गोद लेने लगे हैं. बंगलूर में करीब है कि अब अब रर्जन ऐसी अकेली महिलाएं हैं जो गेंद्र लिए बच्चों के साथ मजे में हैं.

और अब तो गोद लिए माता-पिता देश तीन बेटे<sup>वे</sup> स में मिल-बैठकर इससे जुड़ी भ्रांतियों की को गोर और समस्याओं पर बहस आयोजित कर रहे हैं. बंगलूर स्थित 'एडॉप्टिव पेरेंट्स एसोसिएशन' में ही करीव 65 सदस्य हैं, जिन्होंने गोद लेने के इच्छुक दंपतियों को काफी प्रेरणा दी है.

'किन अनेक लोग इसके खिलाफ हैं. 🖊 ऐसे लोग परखनली शिशु जैसे महंगे साधनों की ओर मुखातिब होते हैं. मुंबई के जसलोक अस्पताल में कृत्रिम गर्भाधान विभाग की अध्यक्ष डॉ. फेरुजा पारिख कहती हैं कि वे प्रत्येक दंपती को परखनली

शिशु के मामले में होने वाली अत्यल्प सफलता के बारे में चेतावनी दे दिया करती हैं. लेकिन कई जोड़े अपने विचार पर अडिग रहते हैं. ममलन, मुंबई की एक नर्स स्मिता गोरे के विवाह को 17 वर्ष बीत चुके हैं और उन्होंने 11 बार ऑपरेशन भी कराया है पर कोई सफलता हाथ नहीं लगी. वावजद इसके उनके खयाल में अभी गोद लेने की वात नहीं घर कर सकी है.

मुंबई स्थित अंतरराष्ट्रीय जनसंख्या अध्ययन संस्थान के अनुसार 14 वर्ष से कम



कहते हैं. 📆 है कि लड़के

र रखने वाने वनेगी." चे भी अहुः वर्षीय रंजीन गाँडीन राहिन गोद ले लिय किसी ने चुभन कि सभी के लड़का ह ां की स्वीकृति ग है प्रशिक्षित

स ओर वहा ती है कि गोर छुपाई नही ।। और रोजर क वर्ष की दो च्चयों के वह हें वताया ज द भी वे किस

गोद लेने के र के अलोगा दूसरे सारे डाई एक तरफ,

गोद्रेज शैम्प्-आधारित

हेयर डाई दूसरी तरफ.

फिर भी,

गोदरेज हेयर डाई

इस्तेमाल

करते वाले

ज्यादा ही होंगे!



#### इन ३ ख़ास कारणों से:

श गोदरेज शैम्पू आधारित हेयर डाई बालों को क़ुदरती रंग और छवि देता है. इसमें कडीशनर भी है जो बालों को नर्म-मुलायम बनाए रखता है. बाल इतने स्वाभाविक काले हो जाते हैं कि कोई जान ही न सके, जब तक आप खुद न बताएँ.

शि गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई इस्तेमाल में आसान और सुविधाजनक है जबिक अन्य हेयर डाई में यह विशेषता नहीं. जी हां, आसान इतना बालों में शैम्पू करने जितना.

आप गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई की क्वालिटी पर भरोसा कर सकते हैं. क्योंकि यह खास तौर से आपके वालों के लिए बनाया गया है. क्वॉलिटी जिसपर आप भरोसा करें. यही गोदरेज का वादा है.





बच्चे अन

हजारों वे

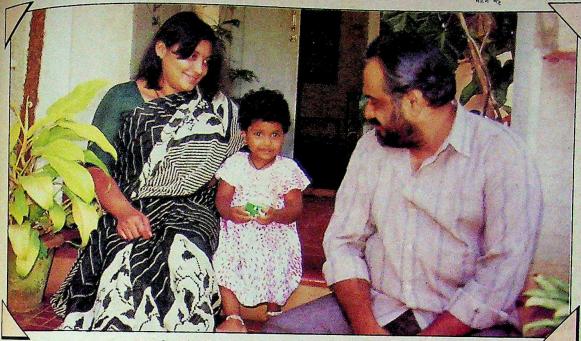
प्रतीक्षा सृ

भागीत लोगों

300

CC-0. In Public Domain. G

*पुरिकेश* शैम्पू-आधारित हेयर डाई



गोद ली गई बेटी शुभा के साथ रोहिणी और चित्तरंजन

# माजिक रूढ़ियों के टूटने और गलत धारणाओं के खत्म होने के साथ ही गोद लेने के मामले में रंग, नस्ल, लिंग के आग्रह भी तेजी से मिट रहे हैं

<sup>आयु के करीब 3 करोड़ 80 लाख से ज्यादा</sup> वने अनाथ हैं और इनमें से 1 करोड़ 20 नास अभावग्रस्त और वेसहारा हैं. जहां लारों वेसहारा बच्चे गोद लिए जाने के जार में हैं, वहीं गोद लेने के काम से मंबंधित तकरीबन 50 एजेंसियों की भीक्षा सूची काफी लंबी है. इस कमी के

कारण इस क्षेत्र में भी काफी गोलमाल होने लगा है. खास तौर से विदेशी नागरिकों द्वारा भारतीय बच्चों को गोद लिए जाने के मामले में.

लेकिन 1984 में सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले ने तस्वीर का रुख ही वदल डाला. न्यायमूर्ति भगवती ने अपने फैसले में कहा कि किसी भी एजेंसी को बच्चा गोद देते समय स्वदेशी इच्छक माता-पिता को ही प्राथमिकता देनी चाहिए उसके बाद विदेशों में बसे भारतीय दंपती और फिर अंत में विदेशी नागरिकों को मौका दिया जाना चाहिए. किसी भी एजेंसी को सरकारी मान्यता प्राप्त करने के लिए यह गर्त माननी होगी कि उसके माध्यम से गोद लिए गए 50 फीसदी बच्चे देश में ही रहें.

लेकिन विकलांग बच्चों को गोद लेने के मामले में अभी केवल विदेशी दंपती ही आगे हैं. कलकत्ता की एक बौनी अनाथ बच्ची दीपा को मिशिगन के एक बौने दंपती ने गोद लिया, जिनके पास एक खास तौर से बनाया गया घर है जिसका फर्नीचर छोटा है, साथ ही तरणताल भी कम गहराई वाला है. बंगलूर की पद्मा सुबैया के अनुसार, "विदेशी इस बात को खास तौर से जाहिर कर देते हैं कि बच्चे के लिए अगर कोई इलाज जरूरी हुआ तो वे उसे विदेश में ही करवाना पसंद करेंगे."

हालांकि भारत में 'खास जरूरत' वाले बच्चों को गोद लेने का प्रचलन नहीं है पर दमनिया के शब्दों में, "कुछ समय बाद भारतीय भी इस ओर अग्रसर होंगे." वह दिन बहुत दूर भी नहीं लगता.

गोद लेने के कानून

ता है. इसमें

ानक है

# अस्पष्ट नजरिया

द लेने के बारे में भारत में स्पष्ट नियम अब तक नहीं बने हैं हिंदू तो 1956 के हिंदू एडॉप्शन ऐंड मेंटेनेस एक्ट के तहत वास्तविक माता-पिता वन जाते हैं और उनका गोद लिया बच्चा उनकी संपत्ति में पूर्णतः भागीदार बन जाता है. पर गैर-हिंदू क्षेणों को यह सुविधा उपलब्ध नहीं उन्हें <sub>1890</sub> के पालकत्व और संरक्षण कीनून का पालन करना पड़ता है

जब कोई गैर-हिंदू किसी बच्चे को भीद लेता है तो कानूनन वह बच्चे की विभाल करने वाला भर रहता है. ऐसे केने को संपत्ति में भी अधिकार नहीं

स्थित मुंबई एसोसिएशन फॉर प्रोमोशन ऑफ एडॉप्शन' की कार्यकारी सचिव मीरा देसाई कहती हैं, "इस पक्षपातपूर्ण कानून को बदलना ही होगा."

अदालतें अब इस—बात पर जोर देती हैं कि जो गैर-हिंदू किसी बच्चे को गोद लेते हैं, उन्हें गोद लिए बच्चे के नाम से कुछ धन अलग रख देना चाहिए या बैंक में आवर्ती खाता खोल देना चाहिए. मुंबई स्थित टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान की निदेशक डॉ. अरमैती देसाई के अनुसार, "सरकार को बच्चे की खातिर कुछ ठोस कदम उठाने चाहिए, भले ही कुछ कट्टरपंथियों को गोद लेने की बात को धर्म से अलग किया जाना नागवार -रमेश मेनन लगे."

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्र स्त्रांव्स्ट्रेंच्य b स्त्रिंग्य Samaj Foundation Chennal and e Gangotti

# ZAFIRO

## PREMIUM

8x10



ज़फ़ीरों ब्लैक (काला)

ज़फ़ीरों ये (धूसर)

ज़फ़ीरो कॉफ़ी

ज़फ़ीरो पिंक (गुलाबी)

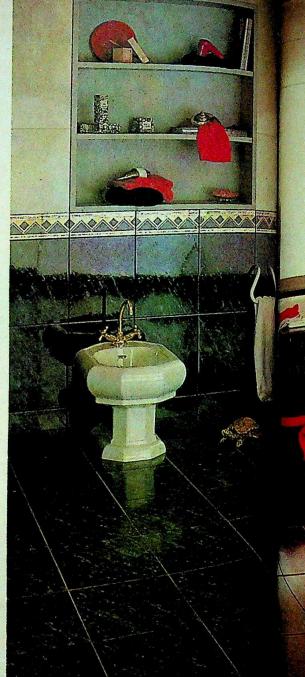
#### ज़फ़ीरो प्रीमियम संग्रह

अनुपम तथा असली ज़फ़ीरो प्रीमियम संग्रह अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। टाइलें, आपके घर की दीवारों और फशों पर बिल्कुल सही फ़िट हो जाती हैं। मानो वह विशेष रूप से इसीलिए निर्मित की गई थीं। ज़फ़ीरो प्रीमियम संग्रह के छोटे से छोटे विशेषण पर पूरा ध्यान दिया गया है ताकि उत्पाद उच्च-स्तरीय तथा अनुपम बन जाए। एक उत्कृष्ट डिज़ाइन तथा चार रंगों में उपलब्ध, ज़फ़ीरो प्रीमियम संग्रह, हर संदर्भ में मनमोहक कलात्मक छवि उत्पन्न करता है।



हमारी टाइलों के लिए, हमारे किसी भी कार्यालय या अपने निकटतम कार्जारया डीलर से सम्पर्क कीजिए। कार्पोरेट ऑफिस: CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सी-7, ईस्ट ऑफ़ कैलाश, नई दिल्ली-110065, फोनः 6837833, 6830533, 6836433, फैक्सः 011-6841772, टेलैक्सः 031-61053 KAST IN



विष्यई: 11,





**70DAGRES** स्पेन के सहयोग से

कार्यः 11, होमी मोदी स्ट्रीट, दूसरी मंज़िल, कम्स्यू- तं 24 फोर्ट बम्बई-400023, फोनः 277119, फैक्सः 022-274428, टेलैक्सः 011-82577 KAST IN 2/6 सरत बोस रोड़, सेंट्रल प्लाज़ा, कमरा नं. 203, कलकत्ता-700020, फोनः 754820, 748012, टेलैक्सः 021-4842 KAST IN



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

# पर्यटकों को मूंड़ने का मौसम



'भारत-1991 पधारों पर्व है. यों भी विदेशी मेहमानों की सेवा करना शहरियों का पसंदीदा शौक है. उनके जहाज या ट्रेन से उतरने

के साथ ही उन्हें मूंड़ने का महोत्सव शुरू हो जाता है हम उनके गले में मरियल गेंदे का हार इस निश्चय से डालते हैं कि अब बिना जिबह किए वरूगेंगे नहीं.

डॉलर वसूलने के दावेदार पहले आरती उतारकर उनके अहं में मलाई मतते हैं. इसके बाद उनकी हजामत बनाने का वर्त निभाते हैं. हमें ज्यादा से ज्यादा

पर्यटकों का इंतजार रहता है माला पहनाने और भारती उतारने का कमाऊ ध्या भी तो चलाना है.

फिर भी अपनी तो शंका ग की तस बनी ही रही. हमने आततायी से सलाह नी, "इस साल क्या अधिक र्रिस्ट आएंगे ?"

'गुरुआत ऐसी शुभ हुई कि हमें तो इसकी पूरी

"ऐसी कौन-सी हस्ती ग्धारी जो आप खुश हैं."

R.

हो खुक

रोश जगए

ते के घले

ले पदार्थी स

Cu Spin

राइज़र.

नहीं. अदने गणोशी जी आए थे."

अच्छा तो क्या आप ब्दनान खणोगी का जिक्र सरहे हैं ?"

हमारे सांसदों, मंत्रियों और उनके भान ने गर्मजोशी से उनका स्वागत के साबित कर दिया कि हमारी भेहमाननवाजी की परंपरा जिंदा है."

वह तो हिथयारों के सौदागर हैं." तो क्या हुआ. आजकल अमन-चैन का के गोली बरसाकर ही देने का चलन

हमें यकीन है. हमारे नेता हर स्तर पर िम प्रमोशन में लगे हैं. 'भारत पधारों' भीत में सबका स्वागत है. अमेरिका के भी जहाज का भी और उनके जेल से छूटे महिलार का भी पर्यटन की तरक्की में हिनियोक्षता जैसे फिजूल के उसूल वर्षों से शहे आ रहे हैं. अगर आपका सभी से भीम का आंकड़ा है तो कोई रणबांकुरा हो आफड़ा हता काच अभके देखाजे पर दस्तक देगा. हमारा

नजरिया विशुद्ध व्यावसायिक होना चाहिए. हमने आततायी से अपनी जिज्ञासा जाहिर की, "हम टूरिस्ट को क्या-क्या बेच सकते हैं?"

सवाल किया

"जब बेचेंगे नहीं तो ठगेंगे कैसे."

''क्यों न हम अपनी संस्कृति और इतिहास बेच दें."

है. मार्केट कैसे होगा?"

"हम लोकगीत, कठपुतली, ढोल-मजीरे, सितार-सरोद, सांप-बंदर, साधु-जादू की नुमाइश करेंगे."

"कुछ वेचना जरूरी है क्या?" उन्होंने

''कल्चर तो फूल की खुंशबू-सा एहसास

सर, वा वेटर नहीं है। वोता की आई पी गस्ट है नई स्क्रीमवाला। पांच सितारा होट्रा ताउ कॉफी शॉप

"यह सब तो पता नहीं कितने वर्षों से करते आ रहे हैं. पर पर्यटक हैं कि आते ही

'तो फिर देश को ही बेच दें." "हम कोई नेता हैं?"

"हमारा मतलब विदेशियों से असली मुल्क की मुलाकात का है."

"उन्हें जयपूर-आगरा ले तो जाते हैं." "आगरा में तो पागलखाना है."

"प्रतिभा के कुछ पागल ताज बनवाते हैं. कुछ उम्र गंवाते हैं."

हमें टूरिस्ट के लिए नए आकर्षण तलाशने हैं.

"हम उन्हें अपने गांव दिखाएं." ''वहां न रेल है न सड़क. कैसे जाएं.'' "हम उन्हें हेलिकॉप्टर से घुमाएं."

''पेट्रोल की किल्लत बढ़ी तो..... "तब उन्हें बैलगाड़ी में बिठाएं." "वे होटल में देश से दूर रहेंगे."

"सरकार होटलों को सुधारेगी."

"वह क्या करेगी," हम ने रुचि दिखाई. "वह हर होटल में गांव बनाएगी."

''वातानुकूलित क्षेत्र में लू कैसे लाएंगे.'' ''बिना पावर सबका दम घुटेगा.''

''तब वहां जनरेटर चलेगा.'

'देश भाषण से भले चले, मशीन का चक्का बिना तेल न हिले."

''पर वहां लोग तो सूट-बूट में होंगे.''

"रियायती दर के चक्कर में सब देसी धोती धारेंगे."

रेमानित्र जयंती

"पर वेटर-मैनेजर तो अंग्रेजी झाड़ेंगे." "हम बाहर के मेहमानों को विशुद्ध

भारतीय संस्कृति का मजा चखाएंगे."

"यह कैसे मुमकिन है."

"हमारा निश्चय हर बड़े होटल को खालिस ढाबा बनाना है. उसमें गाय-भैंस के रंभाने और बकरी मिमियाने का संगीत, मक्खी, मच्छर, काकरोच शृंगार, गोबर से लिपा-पुता सेहतमंद फर्श और जय बजरंगवली, या अली की हुंकार भरता वेटर होगा."

"अपने प्लान को जरा कम ही दिलचस्प बनाइए."

''पर्यटन में क्रांति हमारा वादा है."

'हमें एक खतरा है.''

"वह क्या, " आततायी ने पूछा. "जो ट्रस्टि यहां आया, इस देश की मिट्टी में मिल जाएगा. हमारी आवादी बढ़ाएगा," हमें सचमुच यह खतरा चितनीय लगा.

''तो क्या हुआ. अभी हमारा 'ब्रेन' उनकी 'ड्रेन' में है, फिर इसका उलटा होगा," आततायी के जवाब ने मुझे मात कर दिया.

"हम इन मुविधाओं की खुशखबरी दुनिया को कैसे बताएंगे?''

"हमारे स्वामी और अफसर जहाज चार्टर कर जग में घूमेंगे और मेहमानों को सीधे स्वर्ग ले आएंगे."

हम पर्यटन उद्योग की सुनहरी संभावनाओं को सोचते हुए पर्यटकों की पदचाप और डॉलर की खन-खन में जैसे खो गए.



डिज़ाइनर कलेका

पुर षों औ

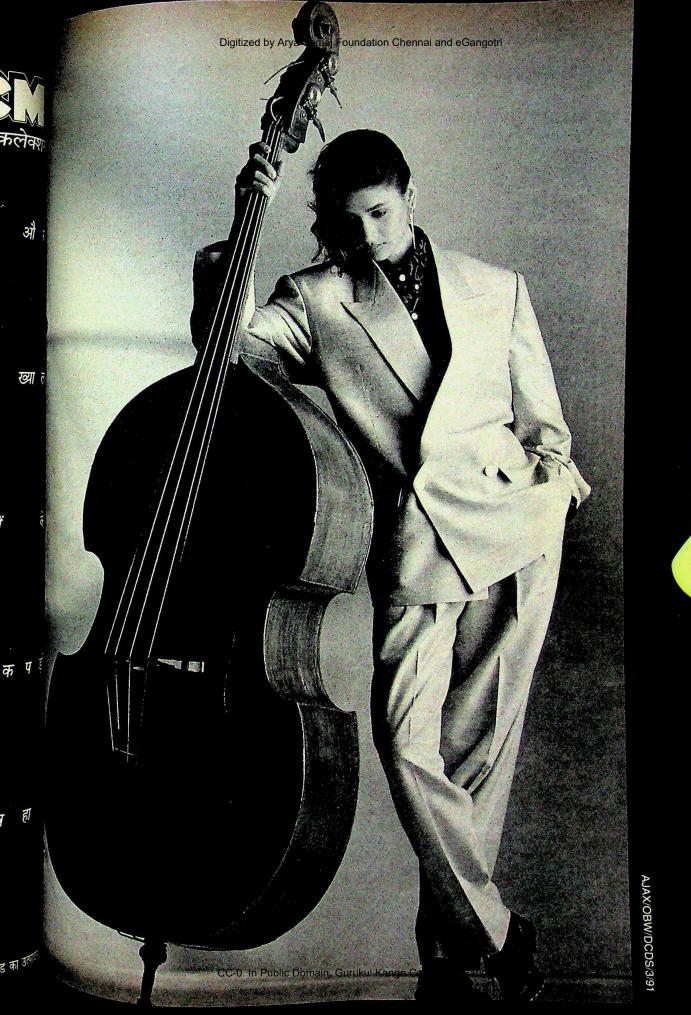
आ ज़ाद खार

ना रियो

लिये क प

की ब ही

VXI इंडिया लिमिटेड का उ<sup>र्गा</sup>





# ALIGUIE

कहानी, कविता, उपन्यास, आलोचना और अनुवाद जैसे कई क्षेत्रों में सक्रिय तमिल लेखिका डॉ. लक्ष्मी कण्णन तमिल पाठकों में अपने उपनाम 'कावेरी' से लोकप्रिय हैं. अंग्रेजी और तमिल में आठ पुस्तकों और संग्रहों की लेखिका की प्रस्तुत रचना रिश्तों की बेबाक बयानी है.

"से और तांबे के पूजा के उपकरण इमली से रगड-रगड़कर मांजे गए थे और उनकी चमक से पूजा वाला साफ-सूथरा कमरा भी जगरमगर कर रहा था. प्रतिदिन धूल झाड़-पोंछकर, ताजे पूष्पों से मूर्तियों व चित्रों को सजाकर, दिया बाल-कर, एक दिन भी बिना छोड़े चंदन घिसकर, अगरबत्ती जला, कपूर की आरती से पूजा करने के कारण वह छोटा-सा कमरा सदा अपने में एक अनोखी सुगंध समेटे रहता था. उस छोटे से कमरे में प्रवेश करते ही के वातावरण में तैरती गंध मन को सराबोर कर देती.

जिस श्रद्धा से रेवती प्रतिदिन यह सब कुछ करती उसे देख

एक सुंदर माला गूंथकर राम और देवी की मूर्तियों पर चहाउन हो उस सौंद लगता है आज केवल थोड़े से पुष्प चढ़ाकर ही संतोष कर के

का माला

सकर उसने गंडे ही प्रस क्रिण की प

तिका दूसरे

हा छोटी

समोहक है. व की डंडिय लेहिए गए

सितंबर म

भे अ जाती

णों ओर घन

भे दिसाई ह

ी हुई थी.

कों के बाह

विती के व

भना होगा.

ेंकी-सी ठं

बारों तरण

भिष्मी चार्द

भन वह अवेत

के बीच

कही ?

विनने आरे

महो मही

कि मिर हव

कुछ दिख

हिरा! क्षिति "आज तडके जब मैंने खिड़की से देखा था तो ओस की बूंबें लाश और गीले हए हरसिंगार कैसे खिले पड़े थे. लगता था मानो एक महा गोमती नर्द सफेद चादर विछी हो."

"रघ के घर के बगीचे को देखने से लगता है मानो ईश्वर केंद्रग विना कृपाद्षिट बरस पड़ी हो. कई तबादलों के बाद उस वेचारे का एक विस लखनऊ तबादला हुआ था. घर भी अच्छा मिला है. चारों के स्ती वड़ी मूट

हरियाली...और एक सुंदर वगीचा निकं पत्ते व न जाने क्यों इस तरह फूलों की चोरी हु हर्रासगार जाती है. सुबह उठने से पहले ही बोगे हो गई. यह सब काम 'उसी' का है. आकर हा जो चोरी प हरसिगार के फूल चुरा ले जाती है ए गेल होटी-दिन भी ऐसा नहीं होता जब वह निमाला गूंथ आती हो! पक्की चोर है. सुबह उठते जो का कम 'उस' मनहूस का मुंह नहीं देखा है घर मे चाहती. रेवती ठहरी कम उम्र नित्र है कित स्हागन! रेवती से कहना ठीक निनहीं मिल लगता कि सुबह उठकर उस चोर के उसव लगे. लेकिन क्या किया जाए? अमि नो की टोक रेवती ही तो उससे हिंदी में बात मान, दोनों ह उसे बगीचे से निकाल बाहर कर सक का मां को है. निगोड़े लखनऊ शहर में हिंदी हैं भिर हुए उ और किसी भाषा में काम भी ती व चलाया जा सकता. यदि 'वह' तीं जानती तो उसे ऐसा झाड़ती हां मनहूस, चोर फूल चुराते गर्म आती?"

"रेवती, रेवती."

"gi मां" "देखती हो हरसिंगार फिर कम पड़ारें। कल सुबह तू 'उससे' कह देना. कह कि फिर अगर यहां आने का साहस किया ती उसके हाथ-पैर काटकर रख दोगी."

"ठीक है मां! पिता जी उठ गए <sup>क</sup> उनके साथ आपके लिए भी काफी बना है रेवती ने पूछा.

'हां, जल्दी नहाकर सहस्त्रनाम का <sup>ब</sup> करना है आज."

राजम ने पूजा प्रारंभ कर दी थीं मह लिए पर्याप्त पुष्प नहीं जुटा पाई, यह रेवती को दुख हुआ. मां चाहती है कि



राजम का हृदय भर आता. "बड़े भाग्य से मूझे रेवती जैसी मुंदर, सुशील बहू मिली है. एक ऊंचे पद के आइएएस अधिकारी मेरे बेटे के योग्य. ईण्वर रघु रेवती की इस मुंदर जोड़ी को सदा ख्ण रखे.'

राजम अपने पति के उठने से पहले ही पूजा का सामान व फूल ठीक करने में लग गई. "अरे! फिर हरसिंगार के फूल कम पड़ रहे हैं. आज शनिवार है! श्री राम और श्री वेंकटाचल पति की पूजा का विशेष दिन, और हरसिंगार के पूष्प तो उन्हें विशेष प्रिय हैं. यह तो उधार देकर फाका पड़ने जैसी स्थिति है. बगीचे में हरसिंगार का पेड़ फूलों से लदा रहता है फिर भी पूजा के लिए पूष्प कम पड़ते हैं. सोचा था

**े**न मालाओं की सुदरता क्या मनमोहक है. माला के बीच-बीच में गहरे लाल रंग की डंडियों को देखकर लगता है मानो मूंगे पिरोए गए हों

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

ार्र अए- ठीक है जितने फूल हैं उन्हीं को कार माला बना ली जाए, यह सोचकर रेवती मा के एक कोने में बैठ गई सुई-धागा कर कृत की टोकरी से दो छोटी मालाएं कार उमने सास के हाथ में थमा दीं. राजम कि ही प्रसन्न भाव से उन्हें लेकर एक माला क्षिण की पंचलीक धातु की बनी मूर्ति पर क्षिर दूसरी देवी की मूर्ति को पहना दी. ह बोटी होने पर भी इनकी सुंदरता क्या वगहक है. माला के बीच-बीच में गहरे लाल वर्ती इंडियों को देखकर लगता है मानो मूंगे तिहिए गए हों. रेवती और राजम दोनों वहां पर चढ़ाऊंग हो उस सौंदर्य को आंखों में भरती रहीं.

मल

द 'वह' तरि

इती हां! - ब

ति शर्म व

कम पड़ रह

कह कि उ

किया ता

उठ गए म

फी बना है

तोष कर के नितंबर महीने के अंत से ही तड़के हल्का

हिता! क्षितिज भी कोहरे से ढका लग ोस की बूंदों हा या और शायद छल-छलकर बहती गानो एक मुंत्र हु गोमती नदी के किनारे बसे हुए होने कारण इस गोमती सदन कॉलोनी में गानो ईश्वर <mark>बं</mark>ह्या, बिना किसी बाधा के फैल रहा उस वेचारे हैं एक विस्तृत जगह जो थी यह! है. चारों के स्ती बड़ी मुबह बाहर बगीचे में आई. र बगीचा गित है पते व गुलाब के फूल तोड़कर नों की चोरी इहर्गसगार के वृक्ष के पास आकर हिले ही बोरी ही हो गई. "आज किसी भी तरह है. आकर मा चोरी पकड़नी होगी. मा बेचारी त जाती है <sup>च्</sup>षेक द्योटी- सी साध है कि हरसिंगार ा जब वह निमाला गूंथकर पहनाई जाए. रोज सुबह उली को कम पड़ना देखकर वे दुखी नहीं देव निहै घर में हरसिगार का वृक्ष फूलों कम उम्र कितु क्या लाभ? मां को तो इता ठीक वितिनहीं मिल रही. आज उस चोर को उस चोर<sup>के कि</sup> उसका कचूमर निकाल और जाए? आ की टोकरी को फूलों से लवालव ति में बात<sup>ा कि</sup>, रोनों हाथों में हरसिंगार के फूल

हर कर मही मां को ले जाकर देना ही होगा" सोचती हुई रेवती धरती में हिंदी के किर हुए उन पुष्पों को एक-एककर चुनने लगी.

कि तु आज 'वह' है कहां? रोज तो इस समय के जाती थी. रेवती ने चारों ओर घूमकर देखा. उनके घर के भा था. रवता न चारा आर वूनकर राज्य भी स्पष्ट के किन्तर कोहरा छाया हुआ था. आंखों को कुछ भी स्पष्ट वित्विह न दे रहा था. उस औरत की आकृति रेवती के मन में हैं थी, सुबह की व्यस्तता के बीच अकस्मात यदि दृष्टि के के बाहर पड़ जाती तो वह उसे फूल चुराती दिखाई पड़ती िर पड़ जाता ता वह उस फूल भुराता के मन में सफेद साड़ी पहनी आकृति मात्र थी. दूर से के के मन में सफेद साड़ी पहनी आकृति नात ... ते ससे के दिखाई भी नहीं पड़ता था. आज पहली बार 'उससे'

की मी ठंड थी. साड़ी के आंचल से अपने को ढककर रेवती ने पर पामता प्रमुकर देखा. कुछ दूर पर गामता प्रवा भिक्ष क्षेत्र की धार-सी वह रही थी. मंद पवन के झोंके के भ तह भेरेत आकृति उसे सड़क पर आती दिखाई दी. छंटते हुए के के की नाम को के बीच धुएं के समान वह सफेद आकृति. क्या वहीं के समान वह सफेद आकृति. क्या वहीं हों वहीं है. धीरे से उसने घर की ओर देखा, फिर हों 'वहीं' है. धीरे से उसने घर का आर कि अमे बढ़ी. रेवती को पेड़ के नीचे खड़ी पाकर 'वह' को की है! दूर से 

ज मुबह ही फूलों की चोरी! यह काम उसी का है. पक्की चोर है. अगर वह तिमल जानती होती तो उसे ऐसा झाड़ती कि हां...

थी. निकट आने पर रेवती ने उसे देखा, साफ चमकता माथा, गोल चेहरा, कृश-काया और नंगे पैर. सफेद साड़ी में लिपटी उस म्लान आकृति को उसने निहारा. तिस पर भी कैसे साहस से वह फूल चुराने आ जाती है. मन में आया डपटकर पूछे, "ए! हमारे घर आकर फूल चुराने की तुझे हिम्मत कैसे होती है? अब भूल से भी यहां पैर न रखना समझी?" लेकिन कुछ न कहकर रेवती बस उसे देखती रही. लड़की के मुख पर छाए शोक के भाव ने रेवती को कहीं छू लिया. "तू कौन है जो रोज यहां आकर फूल चुरा ले जाती है?" रेवती ने हिंदी

"मां जी मैं फूल चुराती नहीं. बस पूजा के



लिए चुनकर ले जाती हूं," बड़े ही गांत स्वर में वह किगोरी बोली. उसके उत्तर ने रेवती को आश्चर्य से भर दिया. साथ ही उसके हिंदी बोलने के ढंग में रेवती को एक अटपटेपन का अनुभव हुआ.

'तू क्या यहां की है?'' रेवती ने पूछा.

"नहीं मां जी मैं मिदनापुर की हूं, कलकत्ते के पास एक छोटा गांव है. मेरा आदमी यहां काम करता था."

''करता था? क्या मतलब?''

उसने सिर झुकाकर कहा, "अब नहीं है."

"यहां अकेली रहती हो? लौटकर अपने सगे-संबंधियों के पास नहीं गई?"

''नहीं मां, यहीं एक घर में नौकरानी हूं. बड़े अच्छे लोग हैं. मेरे लड़के को भी स्कूल में भरती करा दिया है.'

''लड़का कितने साल का है?''

''पांच''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रेवती ने अचानक घर की ओर देखा. नित्या उठ तो नहीं गई? उसे दूध गरम करके देना है. ससुर जी के नहाने का पानी रखना है. बाद में रघु.....अंदर ढेरों काम पड़े हैं और यहां वह खड़ी.... "अच्छा ठीक है. मेरी बात ध्यान से सुन, अब आई है तो थोड़े से हरसिंगार ले जा. लेकिन आज से फूल ले जाना बंद कर दे. कल से मत आना समझी?"

"मां जी," रेवती के मुंह की तरफ देखती हुई वह बोली,

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri "मां जी! ...

"कार्तिक अग्रहायन में तो हरसिंगार का वृक्ष फुलों से लद जाता है. इसमें से मैं भी कुछ चुनकर भगवान कृष्ण की पूजा करती हूं. श्री कृष्ण को छोड मेरा इस संसार में और कौन है

शोकसंतप्त मूख में भी एक अपूर्व धैर्य और शांति झलक रही थी. कम उम्र की यह दबली-पतली काया धागे जैसी प्रतीत हो रही थी. "हे, ईश्वर! विधवा का रूप लडकी को कैसा अबला बना देता है." ठंड में थकी-सी उस लड़की को रेवती ने देखा. न जाने क्यों मना करने में कुछ संकोच सा हुआ. वह मौन भाव से खड़ी रही. वह लड़की ही फिर बोल उठी, "मां जी आपके यहां आने से पहले भी मैं यहीं हरसिंगार लेने

🄰 ससे कड़े स्वर में कह देना कि अगर वह फिर कभी इस पेड़ के पास दिखाई दी तो बिना दया-माया के उसके पैर काट दिए जाएंगे."



आती थी. जानती नहीं क्यों मेरे पैर मुझे यहीं खींच लाते है. कुछ वर्षों से यहीं आ रही हूं. भगवान कृष्ण को हरसिंगार विशेष प्रिय है न. इसीलिए. लेकिन अब आप..."

"ठीक है किंतु अकेली तुम ही सारे फूल न ले जाया करो. मेरी सास की पूजा के लिए भी फूल चाहिए," रेवती बोली.

"माफ कर दो मां, अब थोड़े से ले जाऊंगी. भगवान कृष्ण आपको सूखी रखें."

अगली सुबह फिर वही बात.

"रेवती उसका दुस्साहस तो देख! तेरे इतने कहने पर भी आ रही है! छी:...."राजम ने कहा.

''जाने दो मां, गरीब लड़की है. वह बेचारी कृष्ण की पूजा कर दिन काट रही है. श्रीकृष्ण को हर्रासगार के फूल विशेष प्रिय है ना? इस कार्तिक अग्रहायन के महीने में थोड़े से फूल लेती है. अब तो जल्द ही ठंड पड़ने लगेगी. सब कुछ बंद हो जाएगा. आप इन सब वातों से क्यों अपना जी खराब करती हैं?"

"हां, हां, यह साक्षात रुक्मिणी है न जो सत्यभामा के आंगन में लगे हरसिंगार के फूलों से कृष्ण की पूजा करेगी," राजम के स्वर में व्यंग्य था.

''मां जी....

''सून लो रेवती, उससे साफ-साफ कड़े स्वर में कह दो कि अगर फिर दिखाई दी तो बिना दया-माया के पैर काट दिए जाएंगे.''

रेवती स्तब्ध मूर्ति वन खड़ी रही.

रेवती ने बेल के पत्तों को तोड़कर टोका रखा. गुलाब के फूलों को तोड़कर रहा कि त्वाय भी अ वह हरसिंगार के पेड़ तले जाकर खड़ी हो वर्जी वे बड़ी हरी घास पर दूध की बूंदों के समान पिक का व पूर्णी क्वेत रग के निर्मल फूल विखरे पड़े थे. क्वेत कहनीं सी के बीच डंडियों से लगता था मानो क्षिते हता वे सजाउ पृष्पों में बिंदी लगी हो.

त उसके

न कोहरे में

ग के झोंके वे वही है, वि

ल में केवल उ

वस वही ए लाका अनुभ

रमे आवाज

जो, मां ज

चेपा सब :

न्या? क्या

पह देख!

मिगार की

भेकर देखा ह

भी तड़प उ

का मुंह सा

वासी जड़

ना ग्या, वि

ेको न वचा

भा मूर्ति व

व होया को

अधिकार में

व्यके वाद

वे आई. रेवर्त

आह चंपा

चेपा."

प्रतीक्षारत रेवती ने घने कोहरे में से का वर्गी वर्गीचे उस लड़की को देखा. रेवती मुस्कराई. को त लड़की के चेहरे पर भी मुस्कान तैर गई का कावतः पृष्टि क्षण के लिए वह बदला हुआ चेहरा अप इसीनी मिट्ट शोभा से भर गया. लड़की ने सिर झुका लिए ह कदम रख

आह! हरसिगार की डंडी के समाहं एक भी फू लाल हुआ यह मुख कितना मुंदर का उठाकर पे "तुम्हारी ही राह देख रही थी," रेता किस तरह

"मां ....." खिले हुए मूखमंडल और वह अपनी आश्चर्य भरे स्वर में उसने कहा. दृर्दणा हो

''हां, यह देखो इस आधे घेरे के अताकर अनाय बिखरे फूल तुम्हारे हैं, उस तरफ के खती किक चुन लिए. बराबर हिसाब हो गया रहिन्दी की अ कहती हुई रेवती हंस पड़ी. गरें ओर घ

सहसा उस लड़की की आंखें छलका रेट में कोहरे आईं. रुधे गले से वह बोली....

"ईश्वर आपके परिवार को संदेशकृति सूखी रखे. कभी किसी चीज की कमी नकर एक

रेवती ने दयाई कठ से कहा, भला ही होगा, हां तेरा नाम क्या है

"अच्छा चंपा, अब मैं जाती हूं 🍕 काम पड़े हैं."

घर में पैर रखते ही राजम ने पूछा, "उससे कह दिया ना! "हां मां कह दिया है."

"हूं, देखती हूं फिर से उसे यहां आने की हिम्मत कैसे होती हैं "इसके बाद भी उसने तंग किया तो रघु से कह दूंगी तुम चिता मत करो," दिलासा भरे स्वर में राजम ने कहा.

्र घुनाथ को इस विषय में कोई तकलीफ न उ पड़ी. अचानक आने वाले घटना-क्रम ने उनके जीवन में तूफान ला दिया. शांत बहती हुई गोमती नदी का पानी मानी अ सीमा भूल बैठा. लखनऊवासियों का कहना था कि ल<sup>खन</sup> इतिहास में ऐसी बाढ़ पहले नहीं आई.

गोमती नदी का वह आकर्षक रूप आज मानो विनाश की चुका था. आकाश के काले बादल और सागर सी उफनती मानो प्रकृति की किसी मंत्रणा का आभास दे रहे थे. काल म सब कुछ समेटना चाहता था. रघुनाथ का परिवार भी भी सिमट सा गया था. घर में जो कुछ भी था उसी को पकाकर का पुकार दिन कट रहे थे.

पानी का वेग कमरे के अंदर पहुंचता दिखाई दिया. पहुंगी कुर्मियां तैरने लगीं. दीवारों पर धब्बे पड़ गए. न जाने क्या होती है. सोचकर सभी सहमे हुए थे. नन्ही नित्या को कहानी हुन हो। कहुं! क्यों? ह मानो घर के सभी प्राणी अपने आपको ही भुलावा दे रहे थे ग

इंडिया टुडे 🔸 28 फरवरी 1991

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri गुरुमके पति उस श्रीविहीन पूजाघर में होठ बुदबुदाकर इसलिए? तो क्या कर

इकर टोको जुलते पानी के साथ क्रमणः जन-जीवन भी सामान्य होने लगा. कर रहा किया भी अपने परिवार की आवश्यकता की वस्तुएं ले आया. र खड़ी हो रे बंदी सावधानी से पूजाघर की सफाई की. बिना कपूर, समान प्राप्त व पूर्णों के यह कमरा कांतिहीन लग रहा था पर फिर भी ाड़े थे. प्रेनिक हुनी सी भीनी गंध विखरी हुई थी. ''कल सभी मूर्तियों को मानो क्षिते विवे मजाऊंगी. फूलों का अंबार लगा दूंगी. कल...."

ति परवाह न करते हुए वित्री मिट्टी में पैर जमाती, कीचड़ की परवाह न करते हुए हरे में से को क्षीचे में घुसी. छी: कितनी कीचड़ हो गई है. बेल की मुस्कराई को तो पेड़ की टहनियों से तोड़ा जा सकता है किंतु त तैर गई क्षामान पुष्पित होते ही जमीन पर विखरने वाले हरसिंगार को? चेहरा का विश्वीती मिट्टी में दब नहीं गए होंगे? बड़ी ही सावधानी से एक-ार झुका <sub>किर ह</sub> इसम रखती हुई रेवती हरसिगार के पेड़ के पास जाकर रुक डंडी के समाह एक भी फूल न दीखा. सारी जमीन सूनी सी पड़ी थी. रेवती ने न्तना मुरर न उठाकर पेड़ की ओर देखा "हे, भगवान यह क्या? हे, ईश्वर ही थी," स्वाक्तितरह गला हुआ विखरा हुआ खाली खड़ा है."

क्ष के नीचे का भाग गला पड़ा था. झुकी हुई डालियां गल गई मुखमंडल और कि अपनी पहचान भी मानो खो चुका था "इतने बड़े पेड़ की हर्रणा हो सकती है. सुंदर फूलों से लदा यह पेड़ आज ठूंठ ाधे घेरे के अंत सकर अनाय सा खड़ा है.'

स तरफ के वें विती किकर्तव्यविमूद हो गई. बहती व हो गया र हिन्दी की ओर उसने क्रोध से देखा. ग्रं ओर घना कोहरा. रेवती शून्य आंखें छलक रिमे कोहरे की ओर देख रही थी. ने बोहरे में हल्की-सी हलचल हुई. है अकृति पहले तो कोहरे के साथ ोज की कमी कर एक हो गई. फिर हल्की-सी क के झोंके के साथ वह सामने आई. वही है, निस्संदेह यह चंपा है. यह

नाम क्या है विमें केवल उसी के साथ बाट सकती म वही एक है जो इस क्षति की लाका अनुभव कर सकती है'', रेवती

जाती हैं. व से आवाज दी.

दिया ना!

ी.

ली....

वार को स

से कहा, 'ते

कैसे होती है दूंगी. तुम

फ न उठ

वनाश की है

उफनती व

थे. काल म

र भी भी

ने क्या होते

हानी मुना

रहेथे. ग

हा.

जी, मां जी." वंगा सब कुछ नष्ट हो गया." भा? क्या हुआ मां जी?"

कहती हुई रेवती मार की ओर मुड़ी. चंपा ने सिर कर देखा और देखते ही चोट खाए

भी तड़प उठी. पतली काया कांप उठी और नीवन में अध का मेंह सफेद हो गया. फिर मानो वह नी मानो अप गेमी जड़ ही गई. कि लखन उ

<sup>बाह</sup> चेपा, क्षमा कर दो. तुम्हारा पेड़ तो भागा, विष्र गया, गल गया. मैं तुम्हारे को न बचा सकी."

भा पूर्ति वनी लौटी जा रही है. लौटती हुई भिया को देखकर रेवती "चंपा ओ चंपा" का पुकार उठी किंतु वह सफेद काया कोहरे पकाकर सार भक्ति में न जाने कहां समा गई. गा. पलंग, हैं।

भिक्ते वाद बहुत दिनों तक चंपा उस ओर कार बहुत दिना तक चपा अकुला किया प्रतिमी का मन अंदर ही अंदर अकुला भे अपने स्था नहीं आई? एक बार भी न भा भा नहीं आई? एक बार विशेष हर्रासगार का पेड़ नष्ट हो गया इसलिए? तो क्या हुआ? क्या एक बार मुझे देखने के लिए नहीं आ सकती थी? केवल एक बार! यहां आना क्यों छोड़ दिया?" प्रश्नों ने रेवती के मन को छलनी कर दिया. सोचने लगी, "न जाने क्या हो गया? मैंने उससे कितने स्नेह से कहा था कि रोज आकर फूल चुनकर ले जाया करो. और फिर यह वृक्ष भी तो हमारा है. इसके नष्ट होने पर हमसे अधिक क्षति और किसे हो सकती है? हमीं ने तो लहलहाते वृक्ष को सो दिया है. ठूंठ हुआ सड़ा यह वृक्ष अब कभी नहीं फूलेगा. इस बात का धैर्य बंधाने भी नहीं आई चंपा. इस लड़की में इतना स्वार्थ?"

वती ने अपने मन को समझाने बहुत प्रयास किया लेकिन र चंपा को देखे बिना उसका मन नहीं मान रहा था. चंपा के बारे में किससे पूछे? जिस घर में वह काम करती है उसका पता भी तो मैं नहीं जानती. रघु से तो इस विषय में चर्चा नहीं की जा सकती. वह हंसी में बात उड़ा देगा और ऊपर से मेरा मजाक उड़ाएगा. सास से...हे भगवान, वह तो हमेशा चंपा को "मनहूस, मनहूस" कहकर कोसती रहती हैं. बेचारी चंपा! न जाने कहां है? उस दिन अंतिम बार उसे देखा था. नष्ट हुए वृक्ष को देखकर कैसा आघात लगा था उसे. कौन जानता होगा उसके बारे में? शायद माली

रेवती वगीचे की तरफ चल पड़ी. धुंधलके में क्यारियों के बीच



🔫 पा, सब कुछ नष्ट हो गया" कहती हुई रेवती हर्रासगार की ओर मुड़ी. चंपा ने सिर घुमाकर देखा और चोट खाए सर्प-सी तड्प उठी

बैठे हुए माली को उसने देखा.

"माली! तुम जानते हो कि वह कहां रहती है? अरे वही चंपा! चंपा को नहीं जानते? वही जो यहां रोज सुबह हर्रासगार चुनने आती थी. चंपा आजकल दिखाई नहीं देती. इस तरफ ही नहीं आती वह?"

''किसकी बात कर रही है मां जी? उस जवान विधवा की?"

''हां, हां, वही?..''

"अरे मां जी वह तो मर गई. बस केवल एक दिन बुखार में पड़ी रही. फिर उस नन्ही-सी जान को बिलखता छोड़ गई. बेचारा बच्चा अकेला हो गया है....

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संस्मरण

## अतरग सबध

अच्छाइयां ढूंढ़ने का प्रयास

वारा मसीहा' जैसी शरतचंद्र आ बारा मसाहा राजा की जीवनी और 'धरती अब भी

घुमती है' तथा 'एक और सावित्री' जैसी कहानियां लिखकर साहित्य अमर हो जाने वाले प्रख्यात साहित्यकार विष्ण प्रभाकर की ताजा कृति 'मुजन के सेतु' में भारत के 15 जाने-माने साहित्य-



कारों के बारे में संस्मरण हैं. इनमें से 14-अमृतलाल नागर, इंद्र विद्यावाचस्पति, कन्हैयालाल मिश्र रामवृक्ष बेनीपूरी, रावी, प्रभाकर, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, सूदर्शन, सोमदत्त, णांतिप्रिय द्विवेदी, ऋषभचरण वियोगी हरि, वृंदावनलाल वर्मा और रामनारायण उपाध्याय हिंदी के हैं और एक - उमाणंकर जोशी गुजराती के हैं.

लेखक ने इन साहित्यकारों का थोड़ा-बहुत परिचय अपने 'दो शब्द' में ही दे दिया है और यह भी बता दिया है कि किन-किन से उन्हें 'सबसे अधिक सान्निध्यं मिला और किन-किन से 'संबंधों में वांछित सघनता' नहीं आ सकी. खुद लेखक के शब्दों में, "व्यक्तिगत रूप से सबसे अधिक सान्निध्य मिला मुझे रावी, रामनारायण उपाघ्याय और अमृतलाल नागर का. एक सीमा तक शांतिप्रिय द्विवेदी, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर भी इसी वर्ग में आते हैं. वात्स्यायन का स्नेह प्रचुर मात्रा में पाया, पर मैं उनके प्रज्ञा मंडल से दूर ही रहा. इसलिए हमारे संबंधों में वांछित सघनता नहीं आ सकी. इसके विपरीत श्री वृंदावनलाल वर्मा ने कभी यह अनुभव नहीं होने दिया कि वे मेरे आदरणीय गुरुजन हैं. वियोगी हरि, ऋषभचरण जैन, कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर और सर्वेण्वर दयाल सक्सेना को जानने का सूयोग कम नहीं मिला पर उसे सान्निध्य की संज्ञा नहीं दी जा सकती."

मुदर्शन, इंद्र विद्यावाचस्पति और रामवृक्ष बेनीपुरी से प्रभाकर जी का व्यक्तिगत रूप से उतना परिचय नहीं रहा जितना कि उनके लेखन से. फिर भी

उन्होंने इन लोगों के बारे में इस तरह से लिखा है गोया वे सब उनके बहुत अंतरंग

अगर कोई लेखक संस्मरण के बहाने दूसरों का दोष ढुंढ़ने लगता है और परोक्ष रूप से अपने को महान बताने की कोशिश करता है तो उसे एक तरह से घटिया ही कहा जाएगा. प्रभाकर जी इससे परे हैं: उनके संस्मरणों को पढ़ने से स्पष्ट हो

> जाता है कि किसी व्यक्ति के वारे में लिखते समय श्रद्धा और की संवेदन कितनी जरूरत होती है. वे लोगों में दोष की जगह अच्छाइयां ढुंढते हैं और उनकी भी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं. यह उनकी

संवेदनशीलता का परिचायक है.

'सजन के सेत्' में चनिंदा साहित्यकारों के बारे में सिर्फ संस्मरण ही नहीं, बल्कि उनकी रचनार्धामता पर भी प्रचुर प्रकाश डाला गया है. और यही पुस्तक की विशेषता है. भाषा सहज और प्रवाहमय —अ.ला. प्रजापति

## सामयिक सच

आलोचना की बहस को नई दिशा

"थाकार श्रवण कुमार द्वारा संपा-कि दित 'मैं, मेरी कहानी' आठवें एवं

नवें दशक के चर्चित कथाकारों द्वारा लिखे आत्मकथात्मक लेखों का संकलन है.

मूलतः ये लेख कहानीकारों के अपने संघर्ष, रचना प्रक्रिया. एवं प्रतिबद्धता के दायरे को स्पष्ट करते हुए रचनाकार बनने

इतिहास को सामने रखते क कमलेण्वर, भीष्म साहनी, जैनेंद्र कुमार, विष्णु प्रभाकर, शिवप्रसाद सिंह को छोड़कर वाकी सभी आठवें एवं नवें दशक के कहानी लेखक हैं. अपने समकालीन सच को लेखक क्या दिशा देना चाहता है एवं इन सबको समेटते हुए एक रचना, कहानी या कविता कितनी जीवन सापेक्ष बन पडी



मैं, मेरी कहानी संकलन श्रवण कुमार किताबघर, अंसारी रोड, दिल्ली कीमत: 125 रु. कुल पृष्ठ: 391

है इत्यादि विभिन्न कोणों को रचना प्रक्रिया में गहरे घुसकर ही जाना जा सकता है. प्रस्तुत संकलन के विभिन्न लेको में जीवन के इन पक्षों को उद्घाटित करने की कोणिण की गई है.

इपनी-अपनी

ए को शेर

रंतानं बच्चन

वर्ता को मिल

ं प्रोर्पूसरों, उ

का बजता

तेनों जैसे मं

स विस रहे

वे तीन के व

क्षिक और

तं हुए ठाणे तन

समय पर.

बानते हैं कि

त ठाकरे का

उनका 64व

हमाओं ने इनवे

गर से बैर

म् नहीं बता

त हो निहत्या

ातार लाने वा

वितान इस सम

अमित

इन लेखों में अपने बारे में प्रामाणिक ढंग से सफाई पेश करने की कोशिश की गई है. व्यक्तिगत अनुभव को लेकर युवा कहानीकारों (सत्येन कुमार, लिला शुक्ल, रंजन जैदी, डॉ. माहेश्वर णिवमूर्ति, राजी सेठ, श्रवण कुमार) के लेखों में अपनी सूक्ष्म अंतर्दृष्टि, अनुभव को नए आयामों में रूपांतरित करने की क्षमता को उकेरा गया है. इन लेखों में आत्मप्रशंसा, आत्ममुग्धता, ईमानदारी, नव मूल्यों के प्रवि अपनी दृष्टि की आग्रहशीलता भरपूर है. इन लेखों में अनेक स्थानों पर अपने रचनाकार होने के मिथ्या गर्व को भी भनाने की कोणिश से जान-बूझकर नहीं बचा गया है. अभावों, दैन्य एवं उससे उत्पन्न पीडा को गौरवान्वित करने का प्रयत्न प्रचुर मात्रा किंदे रहे थे? में है. रमेश उपाध्याय का लेखें इसी प्रकार का है. रंजन जैदी ने अपना लेख गहरी शिद्दत के साथ लिखा है. गिरिराज किशोर, भीष्म साहनी, गोविंद मिथ, मध्कर सिंह के लेख कहानी के रचना विधान से संबंधित प्रश्नों पर आज के सोच को आगे बढ़ाने में मददगार साबित हो सकते हैं. सविता चड्डा की कहानियों की देखते हुए उनका यह लेख बनावटी मालूम पड़ता है. इतनी सफाई एवं आत्मप्रशसा की आवश्यकता क्यों? इन लेखों में कहानी पत्रिकाओं की समकालीन राजनीति पर भी काफी कुछ कहने का प्रयास किया गया है. पर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहूंगा. मसलन, ''मैं नहीं

जानता, क्या होता है आंदोलन, क्या हाता है वाद, मैं जानता कि समांतर के जीए कमलेश्वर ने हम लेखकों को एक पुस्ती दी, जमीन उसक आदमी से, मुख-दुख से जुड़ने की और उसकी छोटी

छोटी अनुभूतियों से सीधे साक्षात्कार करते की एक ईमानदार दृष्टि दी." (<sup>बुँख</sup> अरोडा)

कुल मिलाकर यह संकलन सराह्नीय प्रयास कहा जा सकता है. इन लेखों के माध्यम से कहानी आलोचना को बहस की नई दिशा मिलेगी—ऐसी आशा करना —ओम नाराय अपेक्षित ही है.

बार शेर विनयवत

को रचना

जाना जा

भिन्न लेमो

ाटित करने

प्रामाणिक

कोणिश की

लेकर युवा

र, ललित

माहक्वर

कुमार) के

अनुभव को

करने की

न लेखों में

वि अपनी

र है. इन

रचनाकार

भुनाने की

चा गया है.

न पीडा को

प्रचुर मात्रा

इसी प्रकार

लेख गहरी

गिरिराव वद मिथ,

के रचना

ाज के सोच

साबित हो

हानियों को

वटी माल्म

भात्मप्रशंसा

लेखों मे

गओं की

कहने का

ई टिप्पणी "मैं नहीं

या होता है

क्या होता

जानता है

र के जरिए

एक पुस्ता

री, आम

भी छोटी

त्कार करने

दी."(सुरेंद्र

सराहनीय

लेखों के

वहस की

शा करना

ोम नाराय

से, जुड़ने की

उसक

ने हम

अपनी

इती अपनी जगह पर तीनों शेर हैं. इनमें ह हो शेर नहीं, बब्बर शेर समझिए— नाम बन्चन. अनिल कपूर और मिठुन वर्त को मिलाकर 70 फीसदी इंडस्ट्री तो हो विष्युतरों, डायरेक्टरों, हीरोइनों, सभी के क्षा बजता है इनके नाम का मगर उस वीतों जैसे मीगी बिल्ली बने, जी हुजूरी में हित रहे थे. आप सोच रहे होंगे कौन है तीन के तीन मुंबई से 50 किलोमीटर कि और टूटी-फूटी सड़कों का सामना तह भी बिलकुल

बातते हैं किसलिए? शिवसेना के प्रमुख, त हाकरे का अभिनंदन करने, क्योंकि उस त उनका 64वां जन्मदिन जो था. इनके क्ताओं ने इनके इस कदम को 'पानी में रह-हबार से बेर' न करने की नीति बताया पर व नहीं बता सका कि विशाल आदमखोर त हो निहत्या पकड़, खिलौने की तरह कंधे तार ताने वाले 'गंगा जमना सरस्वती' के जाग इस समारोह में खुद खिलौने जैसे क्यों नां दे रहे थे?

अमिताभः भीगी बिल्ली





डिंपलः तुर्की-ब-तुर्की

'पहली बार भरपूर खाने को मिले तो इतना खा जाना स्वाभाविक ही है कि अपच हो जाए', इतना कहकर शवाना आजमी तो मुस्कान बिखेरती, मेहरून दुपट्टा संभालती चलती बनीं और आयोजक घवराहट से पसीना-पसीना हो गए कि डिपल के गुस्से का बम अब फूटा, तब फूटा.

अवसर था एक फिल्म पुरस्कार वितरण समारोह का. डिपल पर अब तक उन तारीफों का नणा तारी था. सो, डिंपल ने इस समारोह में अपनी उपलब्धियों को असाधारण बताते हुए बाकी सब कलाकारों को कोसना शुरू किया तब सभी को लगा कहीं कुछ

गलत जरूर हो रहा है.

शवाना को लौटता देख आयोजक लगे उनसे अनुरोध करने कि वे कुछ देर और ठहर जाएं. तब एक बयान और दे गई मैडम, "निमंत्रित लोगों को पहले इतना तो समझा दिया होता आप लोगों ने कि उन्हें स्वागत समारोह में बुलाया गया है परनिदा प्रस्ताव पेश करने नहीं

सोनम बनकर खुश

कमालिस्तान स्टूडियो के बड़े से मैदान में उस फिल्म आउटडोर शूटिंग के समय सोनिका गिल जिस नाजो अदा के साथ हर छोटे-बड़े को अपनी मौजूदगी का एहसास करा रही थीं उससे जाहिर था कि फिल्म की हीरोइन वही है. अब फिल्म उद्योग के जानकारों के लिए हैरत की बात थी यह क्योंकि अभी कुछ ही महीने पहले इसी फिल्म इसी प्रोड्यूसर हीरोइन के इसी रोल के लिए सोनिका को मनाने की कोशिश में कोई कसर बाकी रहने नहीं दी थी और जब सोनिका किसी भी तरह हो करने को राजी नहीं हुई तो उसने अंततः सोनम को इस फिल्म के लिए लिया था.

"अपने फैसले में इतना बड़ा फेरबदल कैसे कर लिया आपने?" सोनिका से पूछा. थोड़ी ना-नुकुर के

सोनिकाः अपनी-अपनी खुशी

बाद सोनिका ने दी, 'जीते याव है आ जैकॉल' नाम से 🏗 गुलजार जी के पास बले 🚃 और उनके कहने पर कृत पाजामा पहन, मोटा काला चश्मा लगाकर सीरियस रोल करने लगे थे? ऐसी फिल्मों से उन्हें नाम तो मिला, काम मिलना बंद हो गया. ठीक इसी तरह मैंने भी 'कच्ची कली नाम से चिडकर सेक्सी रोल बंद कर दिए थे और सीधी-सादी हिंदुस्तानी लड़की की तरह साड़ी-ब्लाउज, चोटी-बिदी, शरम-हया के फेर में पड़ गई थी. वैसे रोल मिले तो सही और फिल्में बनीं भी मगर वे भी आज तक रिलीज नहीं हो सकीं. मगर देखिए कि मेरी ही उस 'निफ गर्ल' इमेज को लेकर सोनम कहीं से कहीं जा पहुंची. फिल्म मैंने तब छोड़ी थी जब मैं जयप्रदा बनने की कोशिश में थी." "और अब?"

"अब मैं सोनम जैसी बनकर ही बहुत खुश हूं."



सूनीताः सफलता की ओर

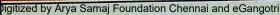
#### नशे के खिलाफ

 'बार्बी' गृडिया और 'थम्स अप' में क्या समानता है? दोनों ही की विज्ञापन फिल्मों में गुंजती आवाज सुनीता राव की है. अव सुनीता ने एचएमवी के लिए 'धुआं' नोम से अपनी आवाज दी है. इसमें भारतीय और पाण्चात्य ध्वनियों के सम्मिश्रण से नशाखोरी के खिलाफ आवाज उठाई गई है मुनीता के शब्दों में, ''आज 🦼 की पीढ़ी पूरब और पश्चिम 🐬 को एक साथ सुनना चाहती हैं तो जरूर मुनाइए सुनीता जी!

#### रिश्ता तो रिश्ता है

 बेटे के जन्म की बधाइयां अभी मिल ही रही थीं कि कमल हासन और सारिका

कमल हासन और सारिका



आखिरकार णादी का फैसला कर लिया. प्यार, शादी और फिर बच्चों का चलन तो आम है. पर कमल हासन ने अपनी हर नई भूमिका की तरह इस बार अपने जीवन में भी मौलिकता बनाए रखी. कमल और सारिका ने अपने दूसरे पुत्र अक्षय के जन्म के कुछ ही महीने बाद पिछले पखवाड़े मद्रास में शिवाजी गणेशन जैसी हस्तियों की मौजूदगी में शादी रचा ली उनकी पहली बेटी श्रुति अब पांच वर्ष की हो चली है कमल के अनुसार, ''मैंने तो पहले से मौजूद रिश्ते की सिर्फ औपचारिकता पूरी की है."

#### हकीकत का फसाना

 अगली दफा रिक्शा चढ़ते समय जरा देख लें कि उसे चला कौन रहा है? अगर बात कलकत्ता की हो तो बहुत मुमकिन है कि



सवारी कर रहे हों. 'किलिंग फील्ड्स' जैसी प्रसिद्ध फिल्म के प्रणेता रोलां जाफे द्वारा निर्देशित फिल्म 'सिटी ऑफ ज्वाय' में अपने पात्र के साथ न्याय करने के लिए ओम पूरी आजकल प्रतिदिन कलकत्ता में रिक्शा खींच रहे हैं. उनके शब्दों में, "हर दिन, आम लोगों के साथ गहरा रहे मेरे

#### बाबा की सदीच्छा

 खाड़ी युद्ध ने साई बाबा के प्रचारतंत्र को खूब मसाला दिया है. शांति का संदेश उनके उन पत्रों में भरा हुआ है, जो उनके चेले चारों दिशाओं में भेज रहे हैं. साई बाबा के चित्र के पीछे सत्य, धर्म, शांति, प्रेम और आहंसा जैसे शब्द चार विभिन्न भाषाओं में छापकर बांटे जा रहे हैं. पत्र के शब्द हैं, "हमारे स्वलेख उन सभी सैनिकों की स्मृति में हैं, जिन्होंने हमारे कल के लिए अपने आज का बलिदान कर दिया है."



ओम पुरी: नया अनुमव

संबंधों की दास्तान बनता जा खा है." तो खूब खींचिए सिना जनाव!

#### बाज नहीं आएंगी

 शोख अभिनेत्री सोनम विवाह के बाद कैमरे से भने हैं किनारा कर लेने की इच्छा जाहि की होगी पर फिलहाल तो उन्होंने दक्षिण के सूपरस्टार चिरंजीवी साथ तेलुगु फिल्म 'कोठम सिंगम' में जमकर उछलकूद की सोनम के अनुसार, "इसमें का करना हिंदी फिल्मों में काम कर जैसा ही है. मैं अपने डायला हिंदी में ही बोलती हूं." दक्षिण हैं अभिनेत्रियां इससे खुश न लगती. तमिल अभिनेत्री राधा णब्दों में, "काम भी अच्छा आ चाहिए, श्रीदेवी की तरह." अंगूर खट्टे नहीं हैं?

सोनम और चिरंजीवी





For the gracious people

Quality that's forever

**SECOLD FLAKE** 

A BRAND OWNED BY I.T.C. LTD. MADE IN INDIA.

CLARION C-GFK-16R2

Every genuine
WILL'S GOLD FLAKE
Cigarette bears the name
W.D. & H.O. WILLS

नताजास्त

सोनम है से भने हैं च्छा जाहि न तो उन्होंने चरंजीवी है 'कोठम

'इसमें कार काम करने

खुश गर् त्री राधा

अच्छा आग तरह." क

ंजीवी

STATUTORY WARNING: CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH





बेहतर स्थिरता के लिए बेहतर संतुलन

तुरंत रुके फिसले नहीं

खतरनाक स्थितियों से निकाल ले जाने के लिए शक्तिशाली इंजन

आगे तथा पीछे दिशासूचक इंडिकेटर

vespa

बेहतर सुरक्षा. बेहतर डिज़ाइन.

515777 CS

# GALLER COLLEGE

इराक

er Barer

Public Do



वगदाद में वर्बादी की गवाह



आप ऑल्विन को पहचान लेगे सुविधाजनक लंबा हैडल सामने. पीछे हिटाची तकनालॉजी से बना कम्प्रेसर 'डबल चेक्ड' डिटेचेबल सील्ड सिस्टम' यानी बरसो तका मजबूती. ्र आप देखेंगे 'पुश बटन डिफ्रॉस्ट' और 'सेल्फ ड्रेनिंग सिस्टम' और तुरंत रीस्टार्ट. ज्यादा जल्दी ठंडक के लिए 'रोल बॉन्ड 🍂 फ्रीजर और टिल्टिंग बॉटल रैंक्स' अंब आइए सात साल की वारटी पर. और हाँ, इत्मीनान कर लीजिए ऑिल्वन में PUF इन्स्युलेशन है.

सिंगल वे डबल डोर मॉडलों की रेंज हाजिर है कई रंगों में बेहतर पर नज़र रिखएं. ऑल्विन पर नज़र रखिए.

क्योंकि आप जुदा है.

तो चलिए, चुन लीजिए

QUIET STURDY FAITHFUL

CC-0. In Rublic Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar चाहिए सब इसमें है

भारत का पहला PUF वाला रेफ़िजेरेटर

सहाम का क्वैत से व

सवारी ने इ हा मनोबल भी आवरण कथा.

रेर से ही स पंजाब में अ मेना लोगों में

प्रमासनिक व्यव के महती कार मीजूदगी से अवादी हिंसा

डास रपट....

वे कौन-सा ग मुजरा अब महिफिलों से केक्षानी तक गृहकोला और

हिसा लेने वा पारपरिक तौर-र बैदन-मेली.....



## सहाम का समर्पण

लेगे

रटी

T

है

क्वत से वापसी की सद्दाम की घोषणा से बाडी युद्ध पर विराम तो लगेगा पर भीषण गुगरी ने इराक को वर्षी पीछे धकेल दिया है अर्वव्यवस्था और वुनियादी व्यवस्थाओं के ह्याने के साथ-साथ लोगों के संघर्ष करने हा मनोबल भी टूट-सा गया है.

अवरण कथा	44



#### रेर से ही सही चेते तो

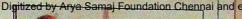
पंजाब में ऑपरेशन रक्षक के दूसरे दौर में मा लोगों में आत्मविश्वास लौटाने और गामिनिक व्यवस्था को फिर से बहाल करने महती कार्य में जुटी हुई है. सेना की भैनूरगी से लोग परेशान नहीं हैं और अवादी हिंसा में भी कमी आई है.

	अस रपट23
ı	0.0
į	23



# वे कौत-सा मुकाम है

भुजरा अब रंगीन तबीयत वाली नवाबी हिम्मित्रों से निकलकर मध्यम वर्ग के अक्षानों तक पहुंच गया है. लेकिन पहनावा हिंसा और फिल्मी ही चला है. इसमें हिस्सा लेने वाली नर्तिकयां भी मुजरे के भाषांक तौर तरीके से कोसों दूर हैं. 

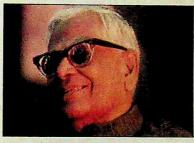




#### फिर जुझने की तैयारी

पिछड़े वर्गों के लिए पार्टी के 60 फीमदी पद आरक्षित करने की बात उठाकर वी.पी. सिंह ने विवाद खड़ा कर दिया है. कुछ लोग इसे नपा-तूला राजनैतिक कदम बता रहे हैं, जबिक वी.पी. सिंह मानते हैं कि वे सत्ता के ढांचे में क्रांतिकारी परिवर्तन ला रहे हैं.

खास रपट	19
---------	----



#### विवादास्पद भूमिका

विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं ने राष्ट्रपति रामस्वामी वेंकटरामन पर आरोप लगाया है कि वे इंका की मर्जी के मुताबिक चल रहे हैं. तिमलनाडु और बिहार के राज्यपालों को हटाने की राजनैतिक चाल के लिए उन्हें कोसा जा रहा है.

लास	रपट	••••••	•••••	******	•••••	•••••	28
			200				



#### वादे हैं वादों का क्या

बिहार और उत्तर प्रदेश के हर नए मुख्यमंत्री ने कुर्सी बचाने के चक्कर में बेहिसाब वादों की लड़ी पेश करने में कोई कोताही नहीं दिखाई. मगर इन वादों-कसमों से क्या हासिल हो पाया है, यह दोनों राज्यों के विकास की मद्धिम रफ्तार से ही जाहिर है.

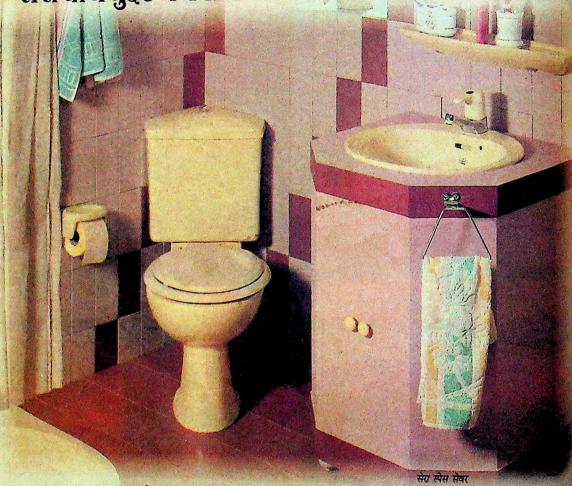
#### बास रपट......74

Gangotri 8	
तेवर10	
राजरंग12	
हिंदोस्तां हमारा 17	
बास रपट	
बी.पी. सिंह:	
फिर जूझने की तैयारी19	
पंजाबः देर से ही सही चेते तो 23	
राष्ट्रपति वेंकटरामनः	
विवादास्पद भूमिका28	
आजकल	
बिहारः भितरघात का भय34	
पंजाबः अलग-थलग 35	
मध्य प्रदेश:	
कानून व्यवस्था अपने हाथ में 36	
बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी:	
मतभेद उजागर 38	
राज़स्थानः वेदसल होने का खतरा 39	
आवरण कथा	
वाड़ी युद्धः सद्दाम का समर्पण 44	
राज्य-वर्षण 57	
व्यापार चक्र59	
कारोबार	
छोटी थैलियों में विक्री:	
छोटा मो सरा	
शेयर बाजार	
स्मृति	
नूतनः मौन संयम, मुखर मौम्यता 65	
जीवन-शैली	
मुजरे:	
ये कौन-सा मुकाम है68	
सास रपट	
बिहार और उत्तर प्रदेश:	
वादे हैं वादों का क्या74	
सुर-ताल	
एस.पी. बालासुबमण्यमः	
सुर की सफल साधना78	
विश्वविद्यालय परिक्रमा	
अंतरंग80	
आरपार 85	
समाचार जगत	
महानगरः	
चल निकलने का चमत्कार 86	SE LE
कहानी 88	
किताबें	
> > 92	
परव के जम पार	100
परवे के उस पार	
परव के उस पार	

आवरणः एएफपी और गेरहाई कॉमश्रोडर/'स्टर्न'



उयादा जगह नहीं तो क्या सेरा वाथसुइट वनवायें...



# और मनचाही जगह पायें!

बड़ा स्नानघर ही सुन्दर दिखेगा.... ज़रूरी नहीं! सेरा अपने नहाने के भव्य सजावटी सामानों से छोटे से छोटे स्नानघर को भी ऐसा संवारे, ऐसा सजाए कि आपका मन ललचाए

पेश है सेरा स्पेस सेवर की रेंज। समझदारी से डिज़ाइन किए हुए सॅनिटरीवेयर जो छोटे से छोटे बजट में छोटी से छोटी जगह में भी पूरी तरह से समा जाएं.

सेरा डिज़ाइनर कलॅक्शन — क्राउनी, कोंका, कॉर्नेट, कॅग्री और बहुत सारे डिज़ाइन. रंग और डिज़ाइन को ध्यान में रखते हुए आपके खास पसंदीदा सेट्स.

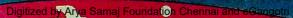
अनगिनत रंग! सेरा टाइल्स से एक इस मैल खाते हुए फीके न पड़ने वाले शेड्स. अब एक बड़ी रेंज में उपलब्ध.

तो फिर फ़ौरन जाइए अपने सबसे नज़दीको सेग शोरू ले आइए अपनी कल्पना को साकार करने के लिए आयुनिक डिजाइन.

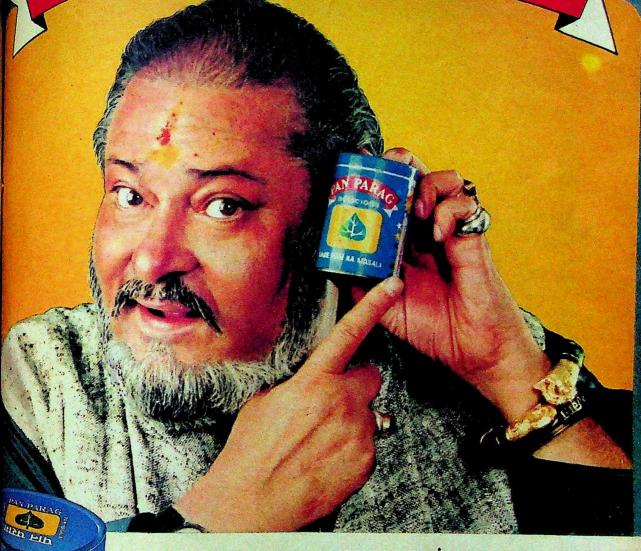


CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Ogilvy&Mather 353/3/Hin



# Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and Scangotti EST STORY EST STOR



#### आपका मनपसंद पान पराग, डिब्बे और सुविधाजनक पाउच में.

अब खादिष्ट पान पराग जैसे चाहें वैसे लीजिए. डिब्बे या पॉकेट पाउच में... जहाँ जी चाहे ले जाइए — लुत्फ उठाइए. और पसंदीदा पान पराग के साथ ज़िंदगी की मौज-मस्ती का मज़ा लीजिए.

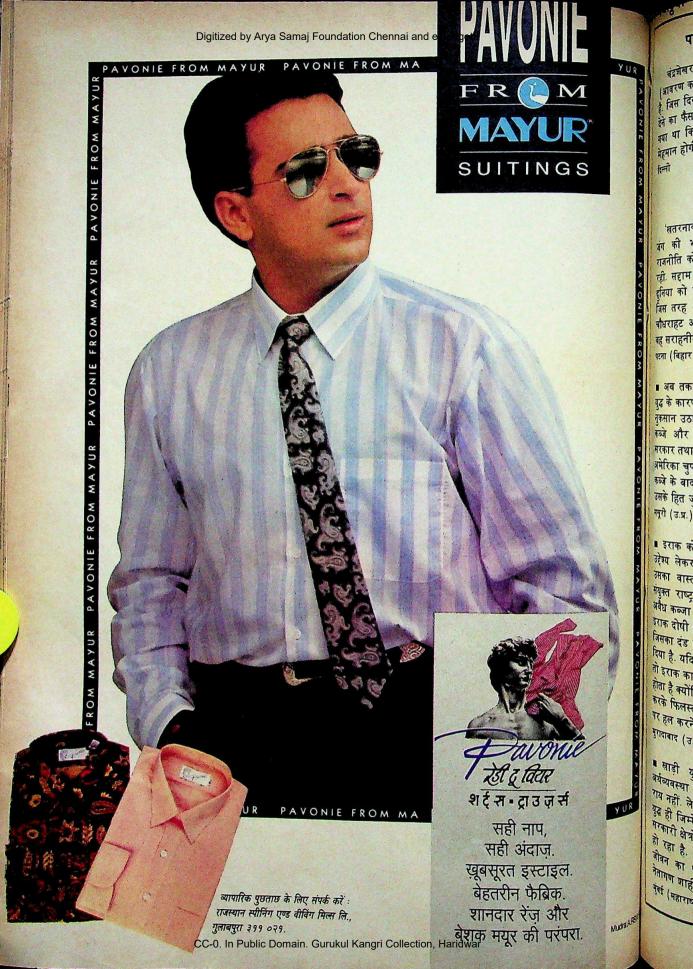
everest/d90/KP/387 hin



भारत का सब से अधिक बिकने वाला पान मसाला

शोरुमभे **गध्**निक पु

कोठारी उत्पादन



(आवरण क जिस दि लं का फैस ग्या था वि मेहमान होगं

वंग की न राजनीति क ही. सहाम इनिया को जिस तरह नीधराहट 3 वह सराहनी परना (बिहार

■ अव तक युद्ध के कार नुकसान उठ क्ये और मरकार तथा अमेरिका चुप कब्बे के बाद उसके हित उ

 इराक क् उद्देश्य लेकर उसका वास्त मंयुक्त राष्ट्र अवैध कञ्जा इसक दोषी जिसका दंड दिया है. यदि तो इराक का होता है क्यों करके फिलस

भुगदाबाद (उ ■ साड़ी यू वर्यवस्था गय नहीं. ले युद्ध ही जिस्से संस्कारी क्षेत्र हों रहा है.

जीवन का नेतागण गार्ह मुंबई (महाराष्ट

## पहले से जाहिर था

बंद्रजेबर और राजीव के 'रिश्तों में दरार' अप्रत्याशित नहीं अवर । इति दिन राजीव ने चंद्रशेखर को समर्थन हें का फैसला किया, उसी दिन यह तय हो वा था कि यह सरकार कुछ ही दिनों की मेहमान होगी.

दीपक बेरी

अर्रविद मोहन

#### स्तरनाक जिद

हिली

परना (बिहार)

'बतरनाक अंजाम की ओर' (15 फरवरी) को भयावहता और इसमें हो रही गुजनीति को शब्दों में व्यक्त करने में सफल ही. महाम हसैन की जिद की कीमत सारी रितया को चुकानी तो पड़ेगी परंत् इराक ने विस तरह अमेरिका और पश्चिमी देशों की नीधराहट और दादागीरी को चुनौती दी है, वह सराहनीय है.

। अब तक के सबसे खतरनाक और खर्चीले गृद्ध के कारण कई देशों को प्रत्यक्ष और परोक्ष कुमान उठाने पड़ रहे. हैं. तिब्बत पर चीन के क्षे और दक्षिण अफीका की गैरकानुनी मरकार तथा फिलस्तीन की समस्या के संदर्भ में अमेरिका चुप रहता है जबिक क्वैत पर इर्राकी क्यों के बाद वह भड़क उठता है क्योंकि यहां उसके हित जुड़े हैं.

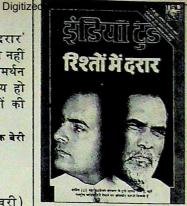
म्मूरी (उ.प्र.) राजेश अरोडा

। इराक को कब्रिस्तान में तब्दील करने का उद्देश्य लेकर अमेरिका ने जो जंग छेड़ी है, असका वास्तविक मकसद क्या वही है जो मंपुकत राष्ट्र संघ ने बताया था? कुवैत पर अवैध कब्जा करने के बाद दुनिया की नजर में हाक दोषी ही नहीं, जघन्य अपराधी बन गया निसका दंड संयुक्त राष्ट्र संघ ने देना शुरू कर रिया है यदि तस्वीर का दूसरा रुख देखा जाए ने इराक का कुवैत पर कब्जा उचित ही प्रतीत होता है क्योंकि सहाम हुसैन ने कुवैत पर कब्जा किले फिलस्तीन समस्या को अंतरराष्ट्रीय मंच भर हल करने का न्यौता दिया है. मुगदाबाद (उ.प्र.)

भारत की अपन से भारत की क्षेत्र्यवस्था पर भारी प्रभाव पड़ेगा, इसमें दो ग्व नहीं लेकिन इसके लिए क्या सिर्फ खाड़ी विही जिम्मेदार है? हमारे देश में आज भी भाकारी क्षेत्रों में वाहनों का दुरुपयोग खुलेआम हो रहा है. आम जनता को तो सादगी भरे कीवन का पाठ पढ़ाया जा रहा है लेकिन निताण भाही ठाठ से रह रहे हैं. मुंबई (महाराष्ट्र)

आलोक बोहरा

योगेंद्र कुमार वर्मा



रिश्तों में दरार की वजह यह है कि चंद्रशेखर राजीव पर निर्भर होते हए भी उनकी उंगलियों पर नहीं नाचते.

गोरखपूर (उ.प्र.)

प्रमोद ओझा

अंततः वही होने जा रहा है जिसकी आशंका थी. इसी वजह से जनता गैर-इंका पार्टियों को वोट देते कतराती रही है.

देवरिया (उ.प्र.) शिवेश्वर त्रिपाठी

वर्ष: 5, अंक 9, 1-15 मार्च 1991

संपादकीय कार्यालयः लिविय मीडिया इंडिया नि , ।एफ-14/15, कनाट प्लेम, नई दिल्ली-110001, फोन 3315801-4, टेनेक्स: 31-61245 INTO IN. तार निवमीडिया. नई दिल्ली. ● मुख्य सर्कुतेशन कार्यासय इडिया टुडे मर्कुतेशन मैनेजर, एफ-14, कपिटेट हाउम, कनाट प्लेम, मिडल मर्कल, नई दिल्ली-110001 फोन: 3113076-8. टेनेक्स: 31-62634 INTO IN. तार: मर्कुलेट, नई दिल्ली. ● मुख्य विज्ञापन कार्यासय. 28 ए और बी. जॉनी मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइट, मुंबई-400021, फोन: 2026152, 2020326 2029435, टेलेक्स : 11-5373 THOM IN, तार लियमीडिया, मुंबई. ● क्षेत्रीय विकापन कार्यासयः के-9. कनाट मर्कम, नई दिस्सी 110001. फोन: 3125378, 3323576, 3321323, 3321273 , देलेक्स 31-62124 THOM IN. तार निवमीडिया, नई दिल्ली फागून चैबर्म, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्राय-600105, फोन. 477188. टेनेक्म : 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, महास • 74/1 मेंट मार्क्स रोड. त्रगलूर-580001, फोन: 568448, 579037, 579089, टेमेक्स. 0845-2217 INTO IN, तार: निवसीडिया, बंगलूर • 12-गी, एवरेस्ट 46-मी, चौरंगी रोड. कलकता-700016, फीन : 225398, 221922, देलेक्स : 21-कत्तकता-700018- १०११ - २२२०अस-२२१४२८ १७३८ INTO IN. तार: निवडन-मीडिया कतकता. — कारीराष्ट्र 1884 निवित्य मीडिया इंडिया नि विज्ञ भर में सर्वाधिकार मुरक्षित किसी भी रूप में मामग्री की नकत प्रतिवृधित. इंडिया दुडे अनिमंत्रिन प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता . सिविंग मीविया इंडिया मि.. एफ-14. कॅपिटेंट हाउम, कनाट प्लेम, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाणिन तथा धीममन प्रेम इंडिया लि

फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित

ennai and eGengotii सिर्फ अपना

'ताकत की तार्किकता' (कसौटी, 15 फरवरी) यहीं संकेत करती है कि अमेरिकी राष्ट्रपति वृण और इराकी राष्ट्रपति सहाम विकासभील राष्ट्रों की भलाई के लिए कितना ही ढिंढोरा पीटें, अंतत: फायदा उनका ही होगा. जंग की समाप्ति के बाद अमेरिका तीसरी द्निया से कितनी नरमी बरतेगा, यह तो सुपर-301 और अन्य मुद्दों से फैली अंतरराष्ट्रीय कड़वाहट से ही स्पष्ट हो चुका था. जंग के बाद गरीब राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था व एकजुटता का क्या हथ होगा, इसके लिए प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद की स्थिति का अवलोकन ही पर्याप्त है.

इंदौर (म.प्र.)

लीलाधर देशमुख

■ आपने भीषण युद्ध और उसके परिणामों के प्रति आम लोगों में फैले डर को रेखांकित किया है. यह दूखद बात है कि दो-दो महायुद्धों में जान-माल के इतने नुकसान के बाद भी सद्दाम हुसैन और जॉर्ज बुश जैसे नेता अपना हित साधने के लिए निर्दोष जनता को युद्ध की आग में झोंक रहे हैं.

सिवान (बिहार)

बजेंद्र नारायण

■ आपने लिखा है कि किसी ताकतवर देश को कमजोर देश पर दादागीरी करने की इजाजत नहीं दी जा सकती. यह मान लिया जाए तो तिब्बत पर चीन की दादागीरी क्यों चलने दी जा रही है? कश्मीर के एक हिस्से पर पाकिस्तान की दादागीरी क्यों चल रही है? आखिर क्या वजह है कि इन दोनों देशों के खिलाफ अमेरिका ने कोई कार्रवाई नहीं की? छपरा (बिहार) माधवेंद्र तिवारी

#### कानुन ताक पर

'कटघरे में अदालत' (15 फरवरी) को लाने का श्रेय तो भारतीय पुलिस को ही है और 'लिम्का बुक' तथा 'गिनीज बुक' में भी उन पुलिसवालों को स्थान मिलना चाहिए जिन्होंने पालने से निकले दो वर्षीय गीतांश चोपडा को कानून ताक पर रखकर गिरफ्तार किया और दोनों बच्चों के अदालती चालान भी बना दिए. इन पुलिसवालों को तो ऐसी सजा मिलनी चाहिए कि भविष्य में इस तरह की भूल न हो. कैथल (हरियाणा) अंक्र मेहता

 उत्तर प्रदेश सरकार दिमागी रूप से किस हद तक दिवालिया हो गई है, इसका प्रमाण यह है कि प्रशासन ने शांति भंग होने की आशंका में सवा दो साल व चार साल के मासूम बच्चों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया.

वैशाली (बिहार)

रिशम सिन्हा

#### आंख का कार्टीं zed by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

'टकराव लीला' (15 फरवरी) में दोनों पक्षों के विचारों को रखा गया. चंद्रशेखर सरकार को न तो बिहार के विकास से लेना-देना है और न ही यहां की प्रशासनिक स्थिति से. वास्तव में जनता दल तथा लालू सरकार की बिहार पर मजबूत पकड़ चंद्रशेखर की आंख का कांटा बनी हुई है.

वैणाली (बिहार)

अरविद

#### अपनों से टक्कर

'दो-दो हाथ अपनों से' (15 फरवरी) पढ़कर ऐसा लगा, मानो इंका ब्रिगेड के सेनानायक, दृश्मनों से टकराने से पहले स्वयं ही अपने उन सिपहसालारों को दूरुस्त कर देना चाहते हैं जिन्हें उन्होंने खुद ही ट्कड़ियों का नेतृत्व सौंपा था.

देहरादून (उ.प्र.)

नरेंद्र गुप्ता

#### घटिया तरीका

'राज्य-दर्पण' के अंतर्गत 'बरखास्तगी की चाहत' (15 फरवरी) पढा. इससे राजीव गांधी की न केवल संकीर्ण मानसिकता का बोध होता है बल्कि उनकी घटती लोकप्रियता का भी एहसास होता है. इतने घटिया तरीके से उन्होंने अन्ना द्रमुक की सर्वेसर्वा से मिलकर जो षड्यंत्र रचा, वह यही बताता है कि चंद्रशेखर कठप्तली प्रधानमंत्री से अधिक कुछ नहीं. बीकानेर (राज.)

विनीश जैन

#### अधूरी तलाश

'तेजी की तत्पर तलाण' (15 फरवरी) भारत में तेज गेंदवाजों की कमी की सत्यता को उजागर करती है. परंत् क्या इस फार्मूले की मदद से हमें तेज गेंदबाज तलाश हो जाएंगे? जब तक भारतीय क्रिकेट बोर्ड की उपेक्षापूर्ण नीति जड़ से खत्म नहीं हो जाती, तलाश तलाश ही रहेगी.

गंजपररहई (बिहार)

असीम कुमार सिन्हा

#### विरोध क्यों!

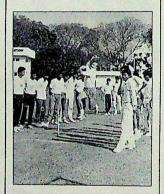
'चली मनमानी' (15 फरवरी) पढ़ा. गुडगांव में देसी डिज्नीलैंड की योजना को कतई गलत नहीं ठहराया जा सकता बल्कि यह तो समयोचित मांग भी है. विरोध डिज्नीलैंड का नहीं बल्कि उस शर्मनाक पहलू का होना चाहिए जिसके अंतर्गत चौटाला साहब ने हजारों एकड जमीन का रजिस्ट्रेशन अपने रिश्तेदारों और मित्रों के नाम करवा दिया है.

दिनया (म.प्र.)

अनूप कुमार तिवारी

कि भारतीय क्रिकेट की तेज गेंदबाजों की वर्षों पुरानी खोज पूरी हो सकेगी. एमआरएफ इसके लिए बधाई का पात्र है. लेकिन घरेलू प्रतिस्पर्धाओं में जिस तरह बेजान पिचों पर हमारे औसत स्तर के बल्लेबाजों ने जो रनों का पहाड़ खड़ा किया है उससे यह आशा निराशा में बदल जाती है.

विलासपुर (म.प्र.) मीनाक्षी टुटेजा



तेज गेंदबाजों को तलाशने और प्रशिक्षित करने का जो काम एमआरएफ फाउंडेशन ने शुरू किया है वह सही दिशा में की गई पहल है. महान गेंदबाज लिली द्वारा प्रशिक्षित किए जा रहे प्रतिभाशाली लडके भविष्य में भारतीय गेंदबाजी को एक नया आयाम देंगे, ऐसी आशा सभी भारतीयों को है.

रांची (बिहार)

तनवीर आलम

#### अप्रांसगिक कथा

कहानी 'फिर वही फजीहत' (15 फरवरी) वर्तमान प्रसंगों में अप्रासंगिक रही. यह तो तप है कि 'राजीव कांग्रेस' और आजादी पूर्व की आंदोलन 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' में कोई साम्य नहीं है. राजीव कांग्रेस केवल देशभक्तो की कुर्वानियों को भुनाने का प्रयास कर रही है द्रगल जी इस कथा के माध्यम से क्या सदेश देना चाहते हैं, यह समझ से परे है. पलामु (बिहार) रामक्मार

#### श्रेष्ठता की कसौटी

'जो बिके वो वेहतर' (15 फरवरी) से यही निष्कर्ष निकलता है कि जब जीवन के हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा ही नियति बन चुकी है तब पत्रिकाएं भला कैसे अछुती रह सकती है. लिहाजा, इतना तो तय है ही कि आज भी ज्यादातर अखबार अपनी प्रतिष्ठा और सणका संपादकीय के दम पर ही विकते हैं.

रायपुर (म.प्र.)

हेमंत कुमार मार्डीकर

#### सबक तो लें

भारतीय पुरुषों की 'बदलती भूमिका' (15 फरवरी) बदलते सामाजिक परिवेश का आईना है. यदि महिलाएं घर से बाहर निकल हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं तो पतियों को भी घर पर बच्चों की देखभाल में हाथ बटाने मे हिचिकचाना नहीं चाहिए. इस लेख से कितने पुरुष सबक लेते हैं, देखना यह है. मगराज गौड़ जोधपुर (राज.)

#### अडियल रवैया

'सब्र का टूटता बांध' (31 जनवरी) <sup>पहा</sup>. गुजरात सरकार के अड़ियल रवैए एवं मध्य प्रदेश सरकार के मौन समर्थन से ही यह स्थित बनी है. इस परियोजना से आर्थिक व पर्यावरणीय क्षति से भी भयंकर स्थिति विस्थापितों की होगी. गणेश कुमार निगम गंगधार (राज.)

#### भावनाओं से खिलवाड़

'दूसरी पीढ़ी की अगुआई' (31 जनवरी) में काफी तथ्य उजागर किए गए हैं. वैसे इस देश को पिछले 43 साल से एक ऐसी ही हिंदू पार्टी की तलाश थी. इंका, और भाजपा के तर राष्ट्रीय अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी है उम्मीद है कि वे भी आडवाणी की तरह हिंदुओं का सफल नेतृत्व करेंगे. सौरम ए. मोडिया अमरावती (महाराष्ट्र)

Digitize by Any Sar J Found North Chemiai and eGangotri

वचाने के लिए हमार्ग जी-लॉड gilan लगाई है.

# अब हम नमतापूर्वक यह प्रशंसा स्वीकार करते हैं

🖴 रेमण्ड सीमेंट में हमने ऊर्जा संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाए हैं 🆴 और गुणवत्ता नियंत्रण के साथ हमने कोई समझौता नहीं किया 🚄 उत्कृष्टता की इसी प्रवृत्ति के कारण हमें वर्षों से कई पुरस्कार मिलते रहे हैं 🖀 किन्तु हमारा वास्तविक पुरस्कार तो वह विश्वास है जो हमें हमारे ग्राहकों, वितरकों और विक्रेताओं से प्राप्त हुआ है 🚘 हम आपके और अपने सभी कर्मचारियों के हृदय से आभारी है



द नेशनल ऍवार्ड फॉर बेस्ट इनर्जी कन्जर्वेशन, १९८८-८९



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

फरवरी) ाह तो तय र रही है

रामकुमार

क्या संदेश

ने हर क्षेत्र ते है तब पकती हैं आज भी

ार मार्डीकर

का' (15 (वेश का इर निकल से कंघा री घर पर बटाने में से कितने

गराज गौड़

री) पढ़ा एवं मध्य **गह स्थिति** र्धिक व र स्थिति

मार निगम

नवरी) में इस देश हिंदू पार्टी के गए नोशी में ह हिंदुओं

ए. मोडिया

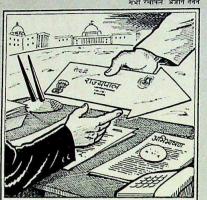
# पद का मयादा का प्रश्नित

हार के राज्यपाल यूनुस सलीम को बरखास्त किए जाने का मामला देण के सर्वोच्च पद के राजनीतिकरण का दुखद उदाहरण है. राष्ट्रपति वेंकटरामन के इस फैसले का कारण बना, सलीम का राज्य विधानसभा में पढ़ा गया अभिभाषण. राज्य मंत्रिमंडल के तैयार किए गए इस भाषण में तमिलनाडु की द्रमुक सरकार को बरखास्त करने की निदा की गई थी. केंद्र सरकार ने सलीम के इस तर्क को नहीं माना कि उन्होंने इस भाषण को पढ़ भर दिया था और यह उनकी

संवैधानिक बाध्यता थी. उनके विरोधियों का कहना है कि राज्यपाल को अपने विवेक का भी इस्तेमाल करना चाहिए.

लेकिन, क्या राष्ट्रपित पर भी यही मानदंड लागू नहीं होते? तिमलनाडु संबंधी राष्ट्रपित के फैसले के पक्षधर तो यही कहते हैं कि वे मंत्रिमंडल की सलाह मानने को बाध्य थे. तकनीकी रूप से यह बात भले ही सही हो पर यह संविधान की भावना के विपरीत जाती है. राष्ट्रपित संविधान की रक्षा की शपथ लेते हैं, किसी पार्टी के हितों की नहीं. और इस मामले में कुछ बातें अपरिभाषित हैं जो राष्ट्रपित को कुछ आजादी देती हैं.

लेकिन तमिलनाडु के मामले में, जिसमें इंका की चाबुक पर



एक लड़खड़ाते प्रधानमंत्री ने द्रमुक के खिलाफ फैसला लिया, राष्ट्रपति ने जरा भी सोच-विचार की जरूरत नहीं समझी. उन्होंने तिमलनाडु में तिमल चीतों की गतिविधियों संबंधी गुप्तचर ब्यूरो की रिपोर्ट को आधार बनाकर फैसला लिया और राज्यपाल मुरजीत सिंह बरनाला से भी सलाह लेने की जरूरत नहीं महसूस की और फिर उनकी भी छुट्टी कर दी गई.

फिलहाल यह बात खास महत्व की है कि यह सब करते हुए राष्ट्रपति इंका के नेता राजीव गांधी के साथ भी

निरंतर (गुपचुप या खुलेआम) मिलते-जुलते रहे.

राष्ट्रपति की मर्यादा में निरंतर कमी आती जा रही है. आम जनता यह मानती है कि राष्ट्रपति पर एक पार्टी के हित में काम करने के लिए दबाव डाला गया है. इसी तरह, राज्य सरकारें केंद्र के इशारे पर चलें या भंग हो जाएं, इसके लिए अनुच्छेद 356 (राज्य सरकार को बरखास्त करने का राष्ट्रपति का अधिकार) का दुरुपयोग भी बढ़ा है. यह इंका की अति केंद्रीकरण की नीति की विरासंत ही है, जो न सिर्फ लोकतंत्र के खिलाफ है बल्कि कश्मीर, पंजाब तथा असम में अलगाववाद का मूल कारण भी है.

## नजर नजर के फेर

रत ने भले ही इराक के बिलाफ आधिक प्रतिबंध लगाने और कुवैत को मुक्त कराने के लिए मित्र राष्ट्रों की सैनिक कार्रवाई करने के राष्ट्र संघ के प्रस्ताव के पक्ष में बोट दिया लेकिन युद्ध शुरू होने के बाद से हर राजनैतिक पार्टी इसका क्षुद्र धार्मिक एवं वैचारिक फायदों के लिए इस्तेमाल करने लगी है. और इस सबसे अधिक नुकसान पहले से चल रही उस गंभीर बहम को हुआ है कि तेजी से बदलती भौगोलिक-राजनैतिक उलझनों वाली दुनिया में वृहत्तर अंतरराष्ट्रीय हितों के लिए भारत की विदेश नीति किस तरह की हो.

अमेरिकी विमानों को तेल देने से पैदा विवाद ने इस भारतीय 'वीमारी' को सबसे अच्छी तरह उजागर किया है. और इस पूरे विवाद में इस बात को भुला दिया गया कि तेल भरने का समझौता—जिसे जिस किसी सरकार ने किया हो—सिर्फ खाड़ी युद्ध के लिए सामने आई घटना न होकर, पिछले कई वर्षों में भारत-अमेरिकी संबंधों के सुधार का नतीजा है. और इस मुद्दे को सबसे अधिक जोर-णोर से उठाने वाले राजीव गांधी को पता होना चाहिए कि वर्षों के अविश्वास वाले रिश्तों के बाद अमेरिका से वेहतर रिश्तों की शुक्आत की नीति उनकी मां



इंदिरा गांधी ने कानकुन में तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रेगन में बातचीत के बाद शुरू की थी. और खुद वे भी इसके भारी हिमायती रहे हैं

स्थायी स्वार्थ वाले अंतरराष्ट्रीय संबंधों वाली दुनिया में अमेरिका को इतनी मदद पहुंचाने में भारत के स्वार्थ बहुत स्पष्ट थे—अमेरिका के जिए पाकिस्तान की उग्रता पर अंकुंग लगवाना, सुविधाओं सहित अमेरिकी बाजार में पहुंचना और अमेरिकी तकनीक पाना. इस नीति के फायदे भी हो रहे थे. गोर्बाचेव युग में, खासकर

प्राकारों :

5,000 E

प्राकृत है

अफगानिस्तान से सोवियत वापसी के बाद से पाक-अमेरिकी रिश्तों में ठंडापन आ रहा था, अमेरिका पाकिस्तान की एटमी योजना के प्रति सस्त रुख अपना रहा था, भारत पर भरोसा जता रहा था (भारत को सबसे पहले सुपर कंप्यूटर देना इसका प्रमाण है). और भारत के खिलाफ धारा 301 में प्रतिबंध लगाने की बात को पृष्ठभूमि में डालना यही उजागर करता है

अंतरराष्ट्रीय संबंध बनाना लंबी और मुश्किल प्रक्रिया है धुर्द राजनैतिक स्वार्थों के लिए बाजी मारने की प्रवृत्ति की जगह भारतीय राजनेताओं को राष्ट्र के दीर्घकालिक फायदों वाली बातों पर बारीकी से गौर करना चाहिए.

इंडिया टुडे 🔸 15 मार्च 1991

18 CO.

द्रमुक के पति ने रत नहीं तिमिल

गुप्तचर

वनाकर

सुरजीत

लेने की

र फिर

हत्व की

ति इंका नाथ भी

है. आम

में काम सरकारें

अनुच्छेद

पति का नी अति कतंत्र के

वाद का

त्कालीन

रेगन से

भौर खुद

राष्ट्रीय

का को के स्वायं

जिरए

अंकुश

मिरिकी मिरिकी

यदे भी

वासकर मेरिकी एटमा

भरोसा

- इसका लगान

है. सुद्र

जगह वाली

हे हैं.

अब हर सप्ताह 12 सीधी उड़ाने भाग्य की ओर



- – काट कर रखें -

सोमवार

कंचन जंगा

साप्ताहिक लॉटरी

प्रथम पुरस्कार : रु. 2 लाख

टिकट: रु. 1/-

सोमवार

तास्ता साप्ताहिक लॉटरी

प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख

टिकट: रु. 1/-

मंगलवार

मगल साप्ताहिक लॉटरी

प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख

टिकट : रे. 1/-

मंगलवार

सिक्किम एक्सप्रैस साप्ताहिक लॉटरी

प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख

टिकट: रु. 1/-

बुधवार

प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख

टिकट: रु. 1/-

बुधवार

प्रथम पुरस्कार : रु. 1.10 लाख

टिकट: रु. 1/-

बृहस्पतिवार

स्टेट लॉटरी

प्रथम प्रस्कार : रु. 1 लाख

टिकट: रु. 1/-

बृहेस्पतिवार

गग। साप्ताहिक लॉटरी

प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-

शुक्रवार

सिकिकम लहमी साप्ताहिक लॉटरी

प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख

टिकट: रु. 1/-

शनिवार

माप्ताहिक

प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट: रु. 1/-

शनिवार

आकाश गगा साप्ताहिक लॉटरी

साप्ताहिक लॉटरी

प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख टिकट : रु. 1/-

रविवार

प्रथम पुरस्कार : रु. 1 लाख

टिकट: रु. 1/-

प्राकारों का तुरन्त और आसान भुगतान।

5,000 रुपये तक के पुरस्कारों का तुरन्त भुगतान।

भाषित दिकटों को भुगतान के लिये ऑर्गेनाइज़िंग एजेन्ट के पास भीजमा करा सकते हैं।

ऑर्गेनाइजिंग एजेन्टस :

K& CO

4, पाम्पोश एनक्लेव, नई दिल्ली-110 048 फोन : 6431869, 6445378, 6447610, 6465935 टेलेक्स : 031-71447-लोटो-इन

निदेशक, राज्य लॉटरीज़, सिक्किम संस्कार, गंगटोक (सिक्किम)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

-काट कर रखें

## आपकी चहेती पत्रिका आपके दरवाज़े पर न खरीदने का झंझट. न खत्म होने का डर



इस सुविधा का लाभ उठाइए. अपनी चहेती इंडिया टुडे घर बैठे - नियमित पाइए. न खरीदने जाने की जरूरत... न अंक खत्म होने का डर, इंडिया दुडे समय से पहुंच जाए आपके घर ! बस कूपन भर कर भेज दीजिए, देर मत कीजिए!

डाक पताः
मूल्य वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चेक/डिमांड ड्राफ्ट
दिल्ली, बम्बई, कलकता और मदास के चेक/डिमान्ड ड्राफ्ट एमआईसीआर वाने ही होता चाहिया
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए1०/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
दर व फेराकश केवल भारत में लागू।
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर
निर्विग मीडिया इंडिया लि.,
पो. वॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007 (हरियाणा)
20-3

EIRANI G

MILESTONES/IT/120

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



 बीजू पटनायक मानें या न मानें, मैं देश का प्रधानमंत्री हूं. लेकिन यदि मैं उन्हें ओडीसा का मुख्यमंत्री मानने से इनकार कर दूं तो क्या होगा?

चंद्रशेखर, नवभारत टाइम्म

 राज के सींग नहीं होते. रात में टीवी खोलो तो उसमें ताऊ नजर आएगा यह है राज का कमाल. किसानो ! इस राज को अच्छी तरह संभाले रखो.

देवीलाल, हिंदुस्तान

निहाबाद: मै० वबस्टी हाउस

एक्सीसस, 30 एम

1,1143, कटरा की भ बीह 🗌 आग

कर्मनी, कसेरय

क्ष् 🗆 अनुपारा व रायक वर्तन पंड

व बाबार, रेलवे

, बीक बाजार, [ . विलयाः व

बोब स्टोर्स, समी

इत्य प्रकाश एक

6.17 राउन हाल म

 देवीलाल अपने को किसानों का मसीहा कहते हैं परंतु उन्होंने किसानों के लिए किया क्या है? और ओमप्रकाश चौटाला का काम तो मात्र इतना है कि जहां जगह बाली मिले वहां कब्जा कर लो. अजित सिंह, दैनिक दि्ब्युन

 तुम्हारे इलाके में पिछले इन दिनान में विकास को कोई काम जा मारै नाय भयों के पिछले चुनाव में तुमन कांग्रेस कूं हरायबै को फैसले करो. जाकी नतीजा तुमने देख लयो कै अब तुम्हारो जा क्षेत्र में कोऊ एमपीऊ नाय.

नटवर सिंह (भरतपुर की एक जनसभा में), राजस्थान पित्रका

• यदि उनकी (बंसीलाल की) गतिविधियां कांग्रेस के खिलाफ चलती रहीं तो उन्हें कान पकड़कर कांग्रेस से निकाल दिया जाएगा.

चौ. बीरेंद्र सिंह (हरियाणा इंका अध्यक्ष), पंजाब केसरी

 (म.प्र.) भाजपा सरकार न सिर्फ प्रशासन के राजनीतिकरण पर उतार है बिल्क उसने इसका व्यापारीकरण कर दिया है. अर्जुन सिंह, नई दुनिया

दिल को शांति देने वाली खबरें अब अखबारों में नहीं मिलतीं.

मीमसेन जोशी (णास्त्रीय गायक), दैनिक जागरण

• हम सिनेमावाले कोई शिक्षक नहीं हैं. मैं अपने पोते-पोतियों को शिक्षा देने के लिए स्कूल भेजता हूं, सिनेमा हॉल नहीं. क्या सिनेमा देखकर भी कोई साधु बना है? मनमोहन देसाई, मंडे ऑबजर्वर

 नहीं, नहीं, नहीं, चुंबन के अब कोई दृश्य नहीं दूंगी. माधुरी दीकित, स्क्रीन

 अब मैंने अपने लायक गुजारा करने का बंदोबस्त कर लिया है. यही जिंदगी ती मैं चाहती थी. जब मैं दूधवाले और धोबी का बिल चुकाती हूं तो मुझे उस वक्त अपनी आत्मनिर्भरता का एहसास कर इतनी खुशी होती है कि मैं आपको क्या

अनु अग्रवाल, नई दुनिया

रसोई में आपका साथी



प्रीहिंडिंडिं
प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

#### अधिकृत विक्रेता

उत्तर प्रदेश

मैं उन्हें

टाइम्म

यह है

दुस्तान

र लिए

जगह द्रिब्युन

नाय तीजा

पत्रिका

हीं तो

केसरी

रू है

निया

गरण

ने के

意?

क्रीन

तो

क्त

या

नया

निहाबादः दे० गुर प्रसाद हीरा साल जैन, जैन भवन चौक, ● गारी हाउस, 6-C, कमला नेहरू रोड, ● मैo अल्का हिताप्रसम्, 10 एम०जी० रोड, सिविल लाईन, ● मै० जैन ट्रेडिंग ीं [[4],कटरा क्रीसिंग, ● मैं o एस० नसीम अहमद एण्ड कं०, भी बीड 🗆 आगरा: बैठ आगरा बर्तन भंडार, 30/113, करानी, क्सेरय वाजार, ● मे० आहुजा बर्तन भंडार, कसेरय कित् । है । ओसवास वर्जार, ७ म० आहुआ बतान नामा ।, कि । ओसवास वर्जन भंडार, दौलत मार्किट, जौहरी क । अनुपाताः वै० मोती रेडियो सेन्टर, 🗆 अलीशकः वै० प्रकेष करित मंडार, महावीर गंज, ● मै० वीपक सर्तन भंडार, ा बार, महावार गज, • भ० वापक नाल एक्ड के केंद्र केंद्र विहास केंद्र केंद के के बाजार, प्रचारनाः में विकास को करी हाउस, गुसी र विनिया: मै० विनय पन हाउस, स्टेशन रोड, □ बस्ती: णित हमार वर्तन मरचेन्ट, मंगल बाजार, 🔲 देवरियाः भार वतन मरचेन्ट, मंगल बाजार, 🗆 वनस्य विकास के किया है। स्वीप कोतवाली, मोती लाल रोड, 🗖 देहराद्नः <sup>१ दे प्रकास</sup> एक्ट कं ०, 70/5, पलटन बाजार, **० के ० कैपिटल** १, ९९ प्रकास श्रृष्ट किसाएक कं०, 70/5, पलटन बाजार, ● भण्या प्राप्त के के के किसार, ● भण्या प्राप्त के के किसार, के के किसार के के किसार, के किसार किसार के किस के जिल्लाबाद: के राज स्तास एक क्रोकरी स्टोर्स, के के सिनिय राम भीना नाथ बर्तन स्टोर्स, चौक ो भोरखपुर: भै० असर कोकरी सेंटर, माया बाजार ्रातिक के कि अमर क्रोकरी सेंटर, माथा के कि के कि अमर क्रोकरी सेंटर, माथा के कि के कि अमर क्रोकरी नाल राम निवास अजेसिंस, गोल ्रं भारत कोकरी सुजियम, 18 वाटर वनसं विल्डिश, भारत होते केसी बर्तन स्टार्स, रेती चौक, ● मै० विजय अजेसिंस, भारत बार्किट, ● मै० गणेशी लाल एण्ड सन्स, सिनेमा रोड़, • मै॰ श्री गणेश इंटरप्राइसिस, 16 वाटर वर्क्स बिल्डिंग, 🗆 हरदोई: मै० स्थाम लाल एण्ड सन्स, रेलवे गंज, • मै० काशी राम बनवारी लाल, रेलवे गंज, 🗆 हलद्वानी: मै० सरवार क्रोकरी हाउस, नैनीताल रोड़, 🗆 हापुड़: मै॰ क्लोकरी सेन्टर, रेलवे रोड़, □ झांसी: मै० काशी प्रसाव मिथेले शरण, शराफा बाजार, ● मै० बम्बई स्टील एम्पोरियम, 175 जवाहर चौक, 🔲 जीनपुर: मै० ग्लास स्टोर्स, हर लालका रोड़, 🗆 कानपुर: मै० एशिया नाईट हाउस, मैस्टन रोड, • मै॰ एस॰एम॰ रशीव एण्ड सन्स, 43/205, मैस्टन रोड, ● मै॰ गोपी सास गुप्ता एण्ड कं०, 46/63, हटीया, ● मै॰ तक्ष्मी बर्तन स्टोर्स, 108/130 सीसामऊ बाजार, • मै॰ नफीस क्रोकरी हाउस, मूलगंज, ● मै० कुमार फैंसी स्टोर्स, 114 नदीन मार्किट, ● मै० मौ० हनीफ मो० अनीस, मैस्टन रोड, ● मै० कृष्णा कमार, उमेश चन्त्र, 68/10 भूसा टोली, • मै॰ रस्तोगी स्टील सेंटर, 67/5 हुला गंज, 🗌 सखनकः मै० कन्हैया सात, पराग बास, पीली कोठी, याहिया गंज, ● मै० इंबर चन्व जैन एण्ड सन्स, अमिनाबाद, 🖲 मै० राम सरन एण्ड कं०, अमीनाबाद, 🖲 मै० संसार एजेंसिस, मुमताज मार्किट, • मै० चमन लाल अग्रवाल एण्ड सन्स, नजीराबाद, 🗆 लखीम पुर खेरी: मै० अम्बर लाल, राधे श्याम, चपा भवन मैन बाजार, 🔲 मेरठः मै० शक्न बर्तन भंडार, बेगम पुल, • मै॰ बाता राम गुप्ता एण्ड सन्स, वेली बाजार, • मै॰ कृष्णा क्रोकरी एण्ड डिपार्टमेंटल स्टोर्स, सदर बाजार, • मै॰ सोना इतेक्ट्रीक एजेंसी, 184 सदर बाजार, 🗆 नजीबाबाद: मै० श्याम ताल एण्ड सत्स, चौक, ☐ मुजप्फर नगर: मै० मितल इंटरप्राइसिस, 101 भगत सिंह रोड, ☐ रामपुर: मै० अग्रवास क्रोकरी हाउस, मिस्टन गंज, • मै० सैलक्शन एम्पोरियम, 22 साफदर गंज, 🗆 रायबरेली: मै॰ गुप्ता ट्रेडर्स, कापर गंज, • मै॰ राधे श्याम धनश्याम दास गुप्ता, मलखाना, • मै० राज बन्ध् मिलन सिनेमा रोड, 🗆 रूपायधियाः मै० राम बृत स्टोर, पो०ओ० रुपायधिया, • मै॰ श्री राम स्टोर्स, पो०ओ० रुपायधिया, 🗆 सहारनप्रः मै० निहात चन्द हरबंस ताल, 15 नेहरू मार्किट, मै॰ जसवंत राय नरेन्द्र कुमार, लक्ष्मी मार्किट. 🔲 शाहजहांपुर: मै॰ सहगस गिपट सेन्टर, गोविन्द गंज, • मै॰ सहगत क्रोकरीज, सदर बाजार, 🗆 शामली: मै० सुगन चन्व सोहन सास बड़ा बाजार, 🛘 सुल्तान पुरः मै० कमाली चलनी हाउस, शाह गंज, • मै॰ दशरय सास एण्ड सन्स, चौक घटेरी, 🛘 वाराणसीः मै० भारत ग्लास स्टोर्स, दाल मंडी, • मै० आइडियन ग्लास हाउस, दाल मंडी, • मै० मिलल ट्रेडर्स, D-11/8 कोतवाल पुरा, बांस फाटक, • मै॰ गिरधर दास एण्ड सन्स, बांस फाटक, ● मै॰ मोहन सास कृष्ण चन्द्र, D-10/15 विश्नाथ गली, • मै० स्टेननेस स्टील सेन्टर, बांस फाटक, • मै० ग्लास एण्ड प्लाईबुड सेन्टर, CK/39/9, दाल मंडी, 🗆 मुरावाबाद: मै॰ नवीन ग्लास एजेंसी, कटरा पूरन जाट, गंज वाजार, 🗆 गोंडाः यै० पारस स्टील एम्पोरियम, उतरोली रोड,

कलकत्ता

🗆 कलकत्ताः भै० कृष्णा ट्रेडिंग कं०, P-11, चितपुर स्पुर,

भ्वनेश्वर (उड़ीसा)

🛘 भुवनेश्वर : मै० जी० पी० सर्विसेज, 28 बापु जी नगर

#### ठहाकों के संदेश

 देश भले ही राजनैतिक उथल-पुथल की आशंकाओं से परेशान हो पर राजीव गांधी इन दिनों पूरी तरह बेफिक्री के मूड दिखते में हैं. यहां तक कि उनके



पास दोस्तों से मिलने-जुलने और हसी-ठट्टा करने तथा पत्नी सोनिया के साथ रात्रि भोजों का आनंद उठाने का भरपूर समय है.

प्रधानमंत्री पद के इस सबसे जबरदस्त (अगले) उम्मीदवार को पूर्व सांसद सलीम छेरवानी ने दिल्ली के ओबेरॉय कांटिनेंटल होटल में रात्रि भोज दिया. पार्टी में राजीव वमुश्किल आधा घंटे देर से ही पहुंचे (जिसे एक रिकार्ड ही माना जा सकता है) और चुनींदा उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों और राजनींतिकों की टोली-इर-टोली में खुलकर हंसते-हंसाते मंडराते रहे.

ताजा नारंगी के रस, के साथ सोडा और लाइम के दौर पर दौर चलते लगभग दो घंटे बीत गए. इस बीच उन्होंने दरबारी सेठ से वतकही की, राजन नंदा की गुफ्तगू पर गौर किया, अंजू महेंद्र की ओर मुस्कान विवेरी. अभिनेता संजय खां अल्पसंख्यकों के ताजा राजनैतिक रुझान के बारे में पूछताछ की और माधवराव सिंधिया से किसी गंभीर चर्चा में मणगूल रहे. वे राजनैतिक चुटकलों का मजा चखने में भी नहीं चूके. लेकिन उनकी जोरदार हंसी तो जैसे पार्टी में देवीलाल पर चल रहे चुटकुलों

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए ही आरक्षित थी. ताऊ ' गायद इन ठहाकों से कोई संदेश ग्रहण कर सकें!

#### गुरु के गुर

• तेजतर्रार संघी नेता नानाजी देशमुख चंद्रशेखर के पुराने दोस्त हैं और दोनों अक्सर मिलते रहते हैं. इन सबंधों को आगे बढ़ाते हुए नानाजी ने चंद्रशेखर को नागपुर में युवा कल्याण योजना के तहत कार्यक्रम का उद्घाटन करने के लिए बुला लिया. सरसंघचालक बाला साहब देवरस भी बीमारी के बावजूद इसमें शरीक होने वाले थे.

लेकिन प्रचारक को चुपचाप काम करने की सीख दी जाती है. इसलिए देवरस ने सोचा कि नानाजी को इसकी याद दिलाई जाए. कार्यक्रम में जाने के बजाए उन्होंने नानाजी को बातचीत के लिए बुलाया और उन्हें यह भुला देने के लिए डांट पिलाई कि भाजपा चंद्रशेखर सरकार की विरोधी है और उन्हें अपनें उत्साह पर काबू रखना चाहिए. प्रचारक

ने पूरी विनम्नता से यह गुरु वाक्य ग्रहण किया.

#### रंग बदलने में माहिर

 कांग्रेसियों में वक्त के मुताबिक रंग बदलने की अद्भुत क्षमता है. इंदिरा काल में 'गरीबी हटाओं' के दिनों में उनकी जुबान पर समाजवाद का नारा था



राजीव गांधी सत्ता में आए तो उदारीकरण गुरुमंत्र हो गया

लेकिन अब जबकि उनकी पार्टी सत्ता से बाहर है, भाजपा हिंदुत्व के बल पर ताकत आजमा रही है और वीपी. सिंह ने 'सामाजिक न्याय' का जिम्मा ले लिया है, इकाई दिग्गजों को फिर समाजवाद के गुण याद आने लगे हैं खाड़ी में युद्ध के बादलों के गरजते ही राजीव और उनके पार्टीवालों ने अमेरिका विरोधी अभियान छेड़ दिया. छुटभैए भी तुरंत अपने आका के सुर में सुर मिलाने लगे. पार्टी नेताओं की एक तांजा बैठक में पार्टी के (अनादि काल से) खजांची, खद्रधारी सीताराम केसरी ने वाक्पटुता में सबको मात दे दी. उनका कहना था कि जयप्रकाश नारायण ने एक बार उनसे अपने स्तालिन प्रेम को स्वीकार किया था क्योंकि तमाम

ज्यादितयों के वावजूद एशियां नेता' ने पश्चिम को उसकी औकात बता दी थी.

### पैसा और परेशानी

● भारत में डराकी दूतावाम में तृतीय सचिव मुहम्मद जमीम आजकल परेणान हैं. परेणानी का सवव यह है कि इस देण में उन्हें वह जमा रकम निकालने की इजाजत नहीं मिल रही है जिसे वे अपनी निजी वताते हैं. कई माल पहले जब जसीम इस देण में आए थे तब उन्होंने एक कार अपने वैमों से खरीदी थी. अब उन्हें कहीं और स्थानांतरित किया जाने वाला था. सो, इसी उम्मीद में उन्होंने कार

इसके बाद ही उन्हें परेजानी का एहसास हुआ. इराक पर राष्ट्र- सघ की आर्थिक पार्वियों के महेनजर भारतीय रिजर्व बैंक ने उन्हें 2 लाख क. के समतुत्य अमेरिकी डॉलर की रकम निकालने से रोक दिया. जिर्व बैंक का कहना है कि इराक के



साथ लेन-देन पर प्रतिबंध हैं जसीम की दलील है कि यह निजी रकम है, इसका इराकी सरकार से कोई संबंध नहीं है.

मुंबई में रिजर्व बैंक के मुंबई में रिजर्व बैंक के मुख्यालय से भी जब मामला मुतर नहीं पाया तो इसे केंद्र सरकार के सुपुर्द कर दिया गया. अभी तर्क कोई फैसला नहीं हो पाया है जसीम कहते हैं, "इस पूरे वाकर से मेरा दूतावास खासा नाराज हुआ है."

### ...और एक चुंटकी

मारत में अमेरिकी विमानों को ईंधन देने पर इंका की आपत्ति पाकिस्तान को अस्थिर करने की उसकी रणनीति का अंग है. वजहः यहां ईंधन न मिलने पर विमानों को पाकिस्तान का रुख करना पड़ेगा. इससे जो विरोध उठेगा, वह नवाज शरीफ सरकार को ले डूबेगा.

Obstized by Arya Samaj Foundation Chennel and a Capping The Company of the Compan हें कहीं और ने वाला था. इराक के लीजिए उत्तम क्वालिटी के पान मसाले के साथ प्रीमियम तुलसी ज़र्दे का अनूठा दमदार अहसास. हम्..म्...म्... क्या खूब मिक्स! नया तुलसी मिक्स. अब आयेगा असली मज़ा! Whater MorHin In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar वेकान वेकनोः तम्बाक् चवाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है

द 'एशियाः को उसकी

शानी

दूतावास मे मद जमीम परेणानी का देश में उन्हें कालने की है जिसे वे . कई मान देण में आए अपने पैसों

उन्होंने कार हें परेणानी इराक पर न पाबंदियों जर्व वैंक ने न समतुल्य नी रकम या. रिजर्व

तबंध है यह निजी

रकार मे वैंक के ला मुलट रकार के सभी तक पाया है रे वाकए नाराज

## भावी बाज्यस्य ya Samaj Foundation Chennai and eGangotri आई टा सा के अनुसार ।

आज जबकि विश्व में पुराने अवरोध टूट रहे हैं, अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार दिन-प्रतिदिन विस्तृत होकर नए-नए अवसर पैदा कर रहे हैं।

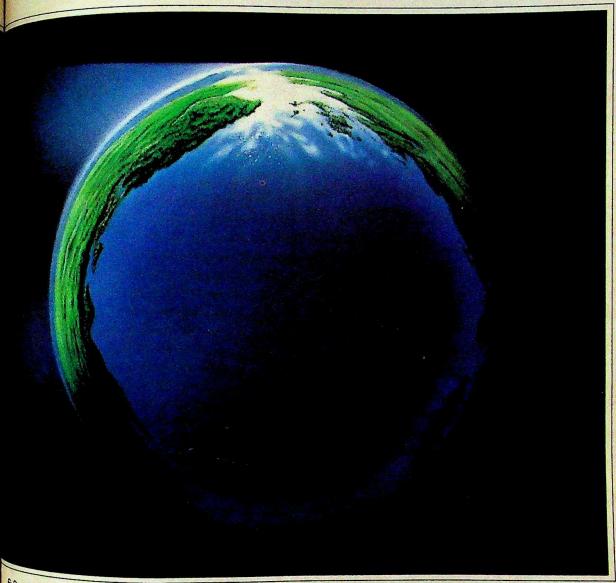
आई टी सी विश्व के कोने-कोने में भारत को पहुंचाने के लिए तत्पर।

और आई टी सी इन मौकों का पूरा लाभ भारत को पहुंचाने के लिए तत्पर है।

संसार में महत्वपूर्ण स्थानों पर आई टी सी के कार्यालय भारतीय उत्पादनों व सेवाओं को विश्व के ला<sup>भप्रद</sup> बाज़ारों तक ले जाने में कार्यरत हैं। स्थायी रूप से वहाँ नियुक्त आई टी सी के कर्मी देश की कुशल प्रतिभाओं द्वारा

इन्टर्नेशनल बिज़नेसेज़ डिविज़न ● इंडिया टोबैको डिविज़न ● इंडियन लीफ़ टोबैको डेवेलप्पेन्ट डिविज़न ऐप्री-बिज़नेसेज़ डिविज़न ● इन्फ़र्मेशन सिस्टम्ज़ डिविज़न ● पैकिजिंग एण्ड प्रिन्टिंग डिविज़न ● वेल्कमग्रुप — होटल्ज़ डिविज़न CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar विभिन्न ऑड माल को पह

के कोने-को संकल्प सप



विभन्न ऑडरों के लिए विशेष रूप से तैयार किए गए भल को पहुंचाने में जुटे हैं। आई टी सी की निर्यात सूची

ष्ट्रीय पैदा

भारत

ते के

लाभप्रद हाँ ों द्वारा

उतनी ही तेज़ी से बढ़ रही है जितनी उसके ग्राहकों की संख्या।

जिससे इस बात पर संतोष

के कोने-कोने में भारत को पहुंचाने के लिए आई टी सी का फेल्प सफल हो रहा है और साथ ही 'मेड इन इंडिया'



के लेबिल को नया गौरव प्रदान कर रहा है।



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Contract, ITC 152.90 HIN

### क्या पुरानी रेडियल तकनीक आपको गुमराह कर रही है ?

सब रेडियल टायर एक जैसें नहीं होते।

यदि आपको अपनी मोटर के लिये सर्वोत्तम रेडियल चाहिये, तो देखिये, ट्रेड के नीचे क्या है। स्टील? साधारण कपड़ा या फाइबर ग्लास?

कपड़ा या फाइबर ग्लास स्टील का मुकाबला कभी नहीं कर सकते। केवल स्टील बेल्टेड रेडियल आपकी मोटर की क्षमता बढ़ाते हैं। यह ईंधन अधिक बचाते हैं, ज्यादा माइलेज देते हैं एवं हर प्रकार की सड़कों पर बेहतर पकड़ रखते हैं।

तभी तो संसार की 97% मोटरें स्टील बेल्टेड रेडियल टायरों पर चलती हैं।

फिर आपकी मोटर क्यों न उठाए स्टील का फ्रायदा । ब्रेक लगाते समय, मोड़ते समय या गीली सड़कों पर मोटर चलाते समय, स्टील रेडियल टायरों की मज़बूती और सुरक्षा का मुकाबला नहीं।

लीजिए, अर्त्तराष्ट्रीय-स्तर के स्टील रेडियल टायर।

केवल जे के द्वारा निर्मित। यही है असली रेडियल। असली रेडियल के बारे में अधिक जानकारी के लिए, इस पते पर लिखें: श्री एस. वी. श्रीनिवासन्, रेडियल क्लब, जे.के.इन्डस्ट्रीज़ लिमिटेड 3, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002 ा पदले पर घटना गर्थ घटी

माहौल की

शे विरादरं

हिन्य इला

शर ने सड

एक वकरी

करी की

ज्ञी-माथिय

निया. नेता

स्तवा दिख

होशिश की

नेतात एक

और इंडा

वानी महिल गवा. अव





में अधिक

स पते पा

ोनिवासन्,

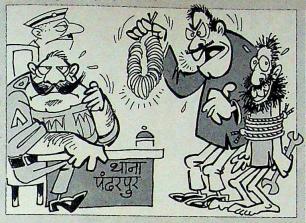
मार्ग.

### वकरी की दुलत्ती

विद्वले पसवाडे राजधानी में ह घटना एक ऐसे नेता जी के वार घटी जो बदले राजनैतिक महौल की वजह से पूर्व मंत्रियों ही बिरादरी में आ चुके थे. नॉर्थ लंत्य इलाके में इन महोदय की कर ने सड़क पर आवारा घूमती क बकरी को लपेटे में ले लिया. करी की मालिकन और उसके म्गी-माथियों ने कार को घेर तिया. नेता जी ने अपना पुराना लवा दिखाकर छुट्टी पाने की र्गोतिंग की. इसी बीच ड्युटी पर नित एक सिपाही भी आ पहुंचा और इंडा फटकारते हुए बकरी वानी महिला के पक्ष में खड़ा हो ग्गा अब बात कुछ ले-देकर



भमले को रफा-दफा करने पर अ पहुंची. महिला 500 ह. मांग हो थी. आखिर मामला 300 में भि हुआ और बेचारे मंत्री जी को निजात मिली Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



### पुलिस को भेंट

■ पुलिस और जनता का रिश्ता कुछ-कुछ पींग जैसा ही है जिसमें ऊंच-नीच लगातार चलती ही रहती है. अगर पुलिस विभाग गलती से कुछ अच्छा कर दे तो उसे जनता से मरपूर इज्जत और प्यार मिलता है, वरना आलोचना और नाराजगी का प्याला तो आम तौर पर लबालब रहता ही है. लेकिन यह किस्सा कुछ ऐसा है जिसमें जनता की शिकायत और नाराजगी के बावजूद महाराष्ट्र पुलिस को जनता की ओर से एक रंग-बिरंगा उपहार मिला.

चोरों की आए दिन करतूतों से परेशान पंढरपुर शहर के लोग पुलिस की उदासीनता से इस कदर तंग आ गए कि आखिरकार उन्होंने खुद ही अपने हितों की रक्षा करने का फैसला कर लिया. आनन-फानन में नागरिकों की एक सतर्कता कमेटी बनी, जिसने घात लगाकर एक रात चोर को पकड़ लिया. पुलिस को इत्तला भेजी गई पर उसके कानों पर जूं तक नहीं रेंगी. बार-बार खबर करने के बाद भी जब थाने से पुलिसवाले नहीं आए तो नागरिकों ने अनूठे ढंग से अपनी नाराजगी दिखाने का रास्ता ढूंढ़ निकाला. सतर्कता कमेटी के लोग चोर को बांधकर थाने ले गए और चोर के साथ-साथ रंग-बिरंगी चूड़ियों का एक पैकेट भी थानेदार को भेंट कर दिया. इस अप्रत्याशित भेंट से थानेदार साहब पता नहीं, खुश हुए या नहीं लेकिन कुछ महिला संगठन इस बात से जरूर नाराज हो गए कि महिलाओं की बराबरी पुलिस के साथ की गई.

#### बेचारा गधा

■ मृहावरा है कि अगर कुत्ता आदमी को काटे तो खबर नहीं बनती पर आदमी कुत्ते को काट खाए तो यह खबर है. इस बिरादरी में अब गधे का शुमार भी जरूरी हो गया लगता है.

पिछले दिनों म.प्र. के दितया इलाके में उनाव वालाजी मंदिर में एक गधे ने एक व्यक्ति को काट खाया. स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य मेवा केंद्र में कार्यरत इस व्यक्ति की तुरंत मरहम-पट्टी की गई. डॉक्टर अपने इस साथी के स्वास्थ्य के बारे में चिता ही कर रहे थे कि खबर मिली कि वेचारा गधा चल वसा है. मृत गधे की चीर-फाड़ की गई और खून तथा



मज्जा के नमूने प्रयोगणाला को भेज दिए गए. डॉक्टर अपने सहयोगी के खून की भी जांच कर रहे हैं जिससे पता चल सके कि गड़बड़ कहां हैं?

### लटकने की बारी

णहरों में यातायात को भानने का काम संभानने वाली प्रित्त का मबसे ज्यादा दबदबा क गुडियरों की विरादरी में ही भिता है. सिपाही की एक सीटी भी किमी लदे-फदे ट्रक के पहिए



जाम कर देने के लिए काफी है.

मुंबई के ईस्टर्न एक्सप्रेस हाइवे की एक लाल बत्ती पर तैनात सिपाही ने जब यह पाया कि उसकी सीटी के बावजूद एक ट्क ड्राइवर लाल बत्ती पार कर गया तो वह फिल्मी हीरो के अंदाज में ट्रक के पीछे लटक गया. पर ड्राइवर भी शायद सस्त मिट्टी का बना था. उसने ट्रक रोकने के बदले और तेज कर दिया. अब बेचारे लटके हुए सिपाही की सिट्टी-पिट्टी गुम लेकिन उसकी खुशकिस्मती देखिए कि तभी वहां पुलिस की एक जीप आ पहुंची. अपने साथी को इस तरह लटके देख जीप ड़ाइवर ने ट्रक का पीछा कर उसे रोक लिया. अब लटकने की बारी ट्रक ड्राइवर की थी जिसे जेल के सींखचों के पीछे पाकिंग को मजबूर होना पड़ा.

#### अनोखा बैंक

■ दुलहन पाने के इच्छुक युवकों और सपनों का दूलहा पाने की इच्छुक युवितयों की हिंदुस्तान में कभी कभी नहीं रही. इसी विरादरी की बदौलत पंडितों का वर्ग फल-फूल रहा है और अखबारी विज्ञापनों की संस्कृति पनप रही है. नक्षत्रों के इस खेल को चलाते रहने की जिम्मेदारी कोई बैंक भी अपने कंधों पर ले ले तो कैसा रहे?

विशासापत्तनम में केनरा बैंक की एक शासा ने शादी के इच्छुक अपने ग्राहकों की सेवा के लिए अपने यहां एक विशेष मैरिज-ब्यूरो शुरू किया है. ग्राहकों के नकद साते के साथ-साथ यह बैंक इच्छुक ग्राहकों के बारे में शादी संबंधी जानकारी भी इकट्टी

करता है. बाद में यह जानकारी दूसरे ग्राहकों तक पहुंचाई जाती है ताकि वे अपने स्वाद और जरूरत के मुताबिक जीवन साथी ढूंढ़ सकें. मजे की बात यह है कि अब तक बैंक में एक हजार युवक-युवितयों के शादी संबंधी खाते खुल चुके हैं.



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

# Take home 100% tax exemption up to Rs. 10,000 on like investment

The Growth Oriented Tax Saving Scheme

## CANFEP

हेपियों औ

यह मुझाव अनुरूप ह

प्रतिद्वंद्वियों

दल के एक

पर मंडल

उन्होंने पूर

10.000 प्रति

कि अब से

वर्गों और : होंगे. नतीज

नाराज हो

ठीक उर

Personal Equity Plan.

#### HIGHLIGHTS

- Promoted by Canbank Mutual Fund, the Mutual Fund with an unsurpassed track record.
- Earlier Growth Schemes, Canshare and Cangrowth, have rewarded the investors substantially with bonus and liberal income distribution.
- Total exemption up to Rs. 10,000/- in taxable income under Section 80CCB of Income Tax.
- Income Distribution will be exempt up to Rs. 10,000/-under Section 80L.
- Wealth Tax exemption within overall limit.
- Tax deductible at source under Section 194(F) of Income Tax Act 1961 @ 20% after initial lock-in period of 3 years.
- CANPEP holders will also be eligible for preferential offer in proposed issue of Canbonus.
- Full and firm allotment before 31st March, 1991.

Note: The past performance is not an indication as to the performance of CANPEP Fund.





CANBANK MUTUAL FUND
Orient House, Adi Marzban Path (Mangalore Street), Bombay 400 038

Principal Trustee: CANARA BANK
Always a step ahead

Eligibility also to preferential offer of Canbonus

### फिर जूझने की तैयारी

अल्पसंख्यकों, हरिजनों और पिछड़ी जातियों के लिए 60 फीसदी पार्टी पद देने की बात उठाकर पूर्व प्रधानमंत्री जनता दल के एकछत्र नेता बन गए

्शाहनाज अंकलेसरिया अय्यर

to

nd

कर प्रकाश

विश्वनाथ प्रताप सिंह आजकल परम आनंदित हैं. भरपूर आत्मविश्वास और वेफिक्री के साथ पूर्व प्रधानमंत्री अपने र्गियों और विरोधियों को धूल चटाने में बात हैं. पिछले पखवाड़े वी.पी. सिंह ने गृह सुझाव देकर कि पार्टी के जनाधार के अनुरूप ही पिछड़ों, हरिजनों और अल्पसंख्यकों को पार्टी पदों में प्रतिनिधित्व विया जाए, पार्टी के भीतर अपने प्रतिद्वंद्वियों को कारगर तरीके से अलग-थलग कर दिया और इस तरह वे जनता ल के एकमात्र नेता होकर उभरे.

ठीक उसी प्रकार जैसे विश्वनाथ ने देश गर मंडल आयोग को थोप दिया था. उद्दोंने पूरी पार्टी सम्मेलन में करीब 10,000 प्रतिनिधियों के सामने घोषणा की कि अब से 60 फीसदी पार्टी पद पिछड़े गों और अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित होंगे. नतीजा यह हुआ कि पार्टी के नेता वाराज हो गए, पार्टी के पुनर्गठन का काम ज्यों का त्यों रहा, वी.पी. सिंह सामाजिक न्याय के योद्धा के रूप में और भी प्रखर हो कर उभरे.

राजमोहन गांधी के मुताबिक, "वी.पी. सिंह को जानने वाले हर शस्स को एहसास होना चाहिए था कि ऐसा कुछ होने वाला है" क्योंकि वे खुद को देश के सत्ता के ढांचे में मूलभूत परिवर्तनों से सचमुच जुड़ा पाते हैं. लेकिन जनता दल के मंडलीकरण और बाद में पार्टी पदों के लिए जोर-आजमाइश ने पार्टी का और भी ध्रवीकरण कर दिया और पार्टी की नीतियों पर बुनियादी मतभेद खुलकर सामने आ गए. सिंह के प्रस्तावों ने उनके पूराने जनमोर्चा सहयोगियों-आरिफ मुहम्मद लां और अरुण नेहरू-को पार्टी के प्रमुख पदों से औपचारिक रूप से दूर कर दिया है.

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जनाधार वाले एकमात्र दूसरे नेता अजित सिंह को भी पार्टी के भीतर किसी शक्तिशाली हैसियत पाने से दरिकनार कर दिया गया है (एक गैर-पिछडे पद पर पहले ही पार्टी अध्यक्ष एस. आर. बोम्मई हैं). अजित सिंह इस उम्मीद में पूरी पहुंचे थे कि उन्हें पार्टी के संसदीय बोर्ड का अध्यक्ष बना दिया जाएगा. अब उन्हें जनता दल में बिना किसी वजनदार पद के मात्र नेता कहलाने के लिए मृहिम चलानी पड रही है. यह बात उनके समर्थकों के लिए मुश्किल कर सकती है. क्योंकि अपने जाति आधार के बूते शरद यादव जैसे उनके प्रतिद्वंद्वी अब पार्टी में राज करेंगे.

हरिजन नेता रामविलास पासवान और एक मुसलमान प्रतिनिधि, संभवतः मुफ्ती मुहम्मद सईद, के साथ यह तिकडी अब वी.पी सिंह के नेतृत्व की दूसरी पंक्ति के रूप में काम करेगी.

अभी तक असंतृष्टों की योजना अपनी आपत्तियों को जताना है क्योंकि उन्हें अभी भी उम्मीद है कि वे पार्टी पदों के बंटवारे के लिए बोम्मई द्वारा गठित सात सदस्यीय समिति को थोड़ा-बहेत प्रभावित कर लेंगे. जनता दल नेता जॉर्ज फर्नांडीस बताते हैं. "हम सभी पूर्व समाजवादियों और



वी.पी. सिंह सामाजिक न्याय के प्रखर योद्धा बनकर भले ही उभरे हों, उनकी पार्टी का कोई ढांचा नहीं है और पुनर्गठन के मामले पर दल में जोर-आजमाइश चल रही है

अपने चुनाव क्षेत्र फतेहपुर में वी.पी. सिंहः स्वागत भी, विरोध भी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri पमता आस्था चाहने वालों को दो माल तक मंत्रिपद में सोमाजिक न्याय में कोई लेना-देना नहीं है

लोकदल के लोगों के लिए समता आस्था की वस्तु है. लेकिन अतीत की गलतियों अलग रह को सुधारने के बजाए एक तत्र के बदले कहते हैं. ' दूमरा तंत्र लाकर उसे दोहराया नहीं जाए.'' बी.पी. सिंह के आलोचक चेतावनी देते हैं कि हाल के प्रस्तावों के जिए पार्टी के पुनर्गठन से टिकट के वितरण के समय बड़ी कठिनाई पैदा हो जाएगी. क्या तब जाति को उपजातियों में विभाजित किया जाएगा और यदि किया जाएगा तो कैसे?

नेकिन बी.पी. सिंह के समर्थक इस चेतावनी को खारिज कर देते हैं. पासवान कहते हैं कि असंतुष्ट बी.पी.

उसमे पैदा तनावों को पार्टी कैसे रोकेगी?

कहन है कि जनगुष्ट पाना सिंह के उस प्रस्ताव से चितित हैं जिसके मुताबिक पार्टी पद चाहन वाला का दो सील तक मात्रपद स अलग रहना चाहिए. वी.पी. सिंह खुद कहते हैं, "मैं सिर्फ दो साल की बात कर रहा हूं, उनके पूरे जीवन की नहीं. क्या यह बहुत बड़ा बिलदान है?"

वी.पी. सिंह ने अभी तक यह नहीं वताया है कि पार्टी संगठन के बिना वे सामाजिक-आर्थिक मुधारों पर कैसे अमल करा मकते हैं. उनके आलोचकों के मुताबिक उनका यह मौन इस बात का

मुताबिक उनका यह मौन इस बात का द्यातक है कि वे मात्र चतुर राजनेता हैं या कहिए कि ऐसा मसीहा जिसकी नजर वोट के लिए खास जनाधार पर है और उसे वी.पी. सिंह के अपने चुनाव क्षेत्र फतेहपुर में पार्टी सगठन खड़ा करने के मुखर मांग करने वाले उनके भरोमेमर जनता दल कार्यकर्ता ही हैं. एक नाराज कार्यकर्ता ने कहा, ''लोग जानना चाहते हैं कि वे किसके पास जाए और कौन उनकी मदद करेगा?'' अन्यथा पार्टी कार्यकर्ताओं को लगता है कि उन्हें 'चोटीवालों में मुकाबला करना कठिन होगा. इसके अलावा, ऊंची जाति के लोगों को इंका का पूरा समर्थन हासिल है जिसका जिले भर में जाल फैला हुआ है.

इसी जिले में तिंदवारी, जहां में उन्होंने मुख्यमंत्री बनने के बाद उपचुनाव लड़ा था, के

वे कहते हैं कि 'आज मैं बहुत खुण हूं' और इमें साबित करने के लिए अपनी नई किवता की पंक्तियां मुनाते हैं, ''तुम मुझे क्या जलाओगे? अरे! क्या कभी राख को भी आग लगी है?'' पूर्व प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने 'इंडिया टुडे' में बातचीत की कुछ अंणः

• आपका नारा गरीबी हटाओ जैसे नारों से कैसे अलग है?

हम कहते हैं, गरीब को मत्ता में लाओ —गरीब को गरीबी हटाने दों.

•लेकिन क्या आप सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को आसान बताकर लोगों को लुभा नहीं रहे?

मेरा उनमें कहना है कि मरकार बदलने में ही काम नहीं बनेगा. अगर हम इस

व्यवस्था में राजनैतिक इच्छा-शक्ति फूंकना चाहते हैं तो बंचितों, गरीबों को इसमें लाना होगा.

• आप उन्हें हिंसा या जवाबी हमले की चेतावनी देते हैं?

याद रखें, ऐसी ही सामाजिक णिक्तयों की एकता से सांप्रदायिक हिंसा पर काबू पाया जा सकता है. जहां भी पिछड़े वर्ग और अल्पसंख्यक एकजुट हुए, वहां हिंसा नहीं हुई. विहार में, मुख्यमंत्री ने लोगों से कहा कि मंडल



गरीब को गरीबी हटाने दो'

आयोग उन्हें एकजुट करने का माध्यम है. सो, रामरथ और आडवाणी की मौजूदगी के बावजूद हिसा नहीं हुई...उलटे भाजपा ही टूट गई...

•जनता दल के वरिष्ठ नेताओं ने आलोचना की है कि आपने उनसे सलाह किए बगैर 60 फीसदी पार्टी पदों पर आरक्षण का प्रस्ताव उछाल दिया.

यह फिजूल की बात है. मैं 60 फीसदी आरक्षण की बात तबसे कर रहा हूं जब मैं जनता दल का अध्यक्ष था, फिर यह प्रस्ताव चौंकाने वाला कैसे हो गया? हमारे अधिकांण समर्थक दिलतों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों और मजदूर वर्गों में से हैं. अगर वे हम पर भरोसा जताते हैं तो मैं उन्हें यह नहीं कह सकता कि मैं उन्हें दुनिया का राज दिला दूंगा पर अपनी पार्टी का नहीं.

• लेकिन पुरी सम्मेलन के पहले आपने अपनी योजनाओं पर विचार-विमर्श क्यों नहीं किया?

इसका जिक्र पहले राष्ट्रीय कार्यकारिणी में हुआ था...

• उनके मुताबिक यह जिक्र चलते-चलाते हुआ था...

उन्होंने समझा होगा कि इसकी चर्चा यूं ही कर दी गई पर मेरा मकसद यह नहीं था. देखिए, मैंने इसे राजनैतिक कार्यसमिति के

समक्ष रखा था. मैंने (पार्टी अध्यक्ष) बोम्मई से कहा था कि मैं निजी हैसियत से यह प्रस्ताव प्रतिनिधियों के सामने लाऊंगा. यह विचित्र वात है कि जब तक राष्ट्रीय कार्यकारिणी मंजूर न करें, कोई साधारण सदस्य अपने विचार प्रकट नहीं कर सकता. अगर ऐसा हुआ तो पार्टी कार्यकर्ताओं पर एक टोनी हावी हो जाएगी. इस तरह की तकनीकी वातें नहीं चलतीं. वे पुरी में व्यक्त भावना को विगाई नहीं.



देना नहीं है बुनाव क्षेत्र करने की भरोसमद मुक्त नाराज ता चाहते है कौन उनकी

कार्यकर्ताओ

ीवालों से गा. इसके को इंका का । जिले भर

वारी, जहा वनने के

ा था, के

चौंकाने

हमारे

दलितों,

ों और

. अगर

ाताते हैं

ही कह

दुनिया

गा पर

लन के

अपनी

-विमर्श

पहले

गी में

ह जिक्र

गा कि

कर दी

द यह

ने इमे

ति के

ध्यक्ष)

नियत

सामन

क जब

न करे,

विचार

ा हुआ रोनी

ह की पूरी में

डॉक्टर सुमेधा साहनी एम.वी.वी.एस., एम.डी.

क्या गेहूँ, चावल और सब्जियों में चिकनाई है?

वित्कुल, कुदरती तौर पर। यह चिकनाई दिखाई तो नहीं देती, लेकिन यह प्रोटीन तथा विद्यामनों की तरह ही स्वास्थ्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। समस्या तो तब शुरू होती है जब हम खाना पकाते समय तेल तथा चिकनाई का इस्तेमाल अधिक करते हैं।

#### चिक्नाई तथा सेहत

राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद के अनुसार भारतीय खाने में हमारे शरीर की असली ज़रूरत के मुकाबले दुगनी या तिगुनी चिकनाई होती है। कारण यही है कि हम खाना पकाने में बहुत ज्यादा तेल इस्तेमाल करते हैं। संस्थान चेतावनी देता है कि ज़्यादा तेल शरीर के लिए खामतीर से हृदय के लिए गुन्मानदायक है।

### इस समस्या से कैसे बचें

जो चिकनाई आपको अनाज, दालों और मिक्रियों से अदृश्य रूप में प्राप्त हो रही है, वही पर्याप्त है। केवल इतना करें कि जिस तेल या वनस्पित से आप अपना भोजन पकाते हैं उसकी मात्रा माप कर इस्तेमाल करें अर्यात परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए प्रतिदिन केवल दो चम्मच। अधिक तेल या पी का अर्थ है शरीर के लिए कोई न कोई समस्या. भला इस की आवश्यकता ही क्या है। कम तेल से भी बेहद स्वादिष्ट खाना पकाया जा सकता है। इन स्वादिष्ट व्यंजनों को आजमाइए और स्वयं ही देख लीजिए।

### कम तेल

यानि

अधिक

तंदरुस्ती

कंडा बटाटा नी सूकी भाजी

भारतीय व्यंबनों के साथ परोसा जा सकने बाला हल्का गुजराती व्यंजन ½ किलो आल् (छिलके सहित तीन चौथाई उबालें, छील लें और काट लें); ½ किलो कटे हुए प्याजः; । छोटा चम्मच जीरा; चृटकी भर हींगः; एक बड़ा चम्मच तेलः; नमकः; ½ छोटा चम्मच हत्दी; ½ छोटा चम्मच मिर्च पावडरः; । छोटा चम्मच धीनया पावडरः; ½ छोटा चम्मच जीरा पावडरः; डेढ़ नींबू का रस

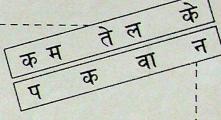
विधि: तेल गर्म करें। जीरा और हींग डाल दें। जीरा चटखना बंद हो जाए तो प्याज़ डाल दें। आंच धीमी कर दें और प्याज़ हल्के लाल होने तक भूनें। आलू डाल दें। बाकी मसाला भी डाल दें। धीमी औंच पर आलू पूरी तरह तैयार हो जाने तक पकाएं (तीन-चार व्यक्तियों के लिए पर्याप्त)

#### चना दाल

स्वादिष्ट और आसानी से पकाया जा सकने वाला दक्षिण भारतीय व्यंजन।

% किलो चने की दाल रात भर भिगो कर रखें। 1 छोटा चम्मच हत्दी; 1 बड़ा चम्मच कटी हुई अदरक; 1 बड़ा चम्मच कटा हुआ लहसुन; % कप इमली का पानी, नमक तुड़का: 3 छोटे चम्मच तेल; 3 तोड़ी हुई लाल मिचें, 1 बड़ा चम्मच कटी हुई अदरक; 1 बड़ा चम्मच करा हुआ लहसुन; 1 छोटा चम्मच जीरा।

विधि: दाल और सारी सामग्री को उपयुक्त पानी डाल कर उबाल लें. पानी उतना ही डालें कि दाल और अन्य सामग्री डूब जाएं। दाल पक जाए लेकिन साबुत रहे. अगर दाल पकने के बाद पानी बच जाए तो गिरा दें। तेल गर्म करें, ज़ीरा डाल दें, जीरा चटलना बंद कर दे तो तुड़के की बाकी सामग्री डाल दें। आधा मिनट हिलाएं और दाल में मिला दें (4-6 व्यक्तित्यों के लिए पर्याप्त)



Huc t

स्वादिष्ट तथा कम तेल युक्त पकवान तैयार करने की विधियां मंगवाने के लिए लिखें, पो.बॉ. नं. 55 नई दिल्ली-110001.

> 66 कम तेल सेहत का साथी सिर्फ़ दो चम्मच हैं काफ़ी ??

<sup>तिनह</sup>नों के बारे में टैक्नालॉजी मिशन द्वारा जन हित में प्रकाशित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ASP-DITMOLITHIN 190-91

नजदीक वी.पी. सिंह जब एक सभा को संबोधित कर रहे थे तब किनारे खड़े कुछ लोग फुसफुसा रहे थे, "वे जो करते हैं उसमे झगड़ा फूटता है. पीछे के वर्षों में हमे क्या मिला?" संयोगवण, फतेहपूर राज्य के सबसे पिछड़े इलाकों में से है. यहां न अच्छी सडकें हैं, न शिक्षा संस्थान और न ही कोई उद्योग.

अगर पार्टी देश में कुछ समस्याग्रस्त राज्यों में जनाधार बढाना चाहती है तो इसके लिए भी संगठन जरूरी है. जनता दल के जानकारों के मृताबिक पार्टी को लोकसभा चुनाव में जिन दो राज्यों से ज्यादातर सीटें मिलेंगी, वे हैं उत्तर प्रदेश और बिहार, बशर्ते अजित सिंह पार्टी में बने रहे तो. महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में वी पी. सिंह के दौरों में लाखों की भीड जुटी. लेकिन इस समर्थन को ठोस आकार देने के लिए पार्टी का कोई ढांचा नहीं है. हरियाणा में, पासवान के मुताबिक, "13 जिलों में से सात तो हमारे कब्जे में हैं" क्योंकि इनमें मुसलमानों और यादव किसानों, अनुसूचित जातियों, गुजर और

अन्य पिछडी जातियों की बहलता है लेकिन इन सभी जिलों के शहरों-कस्बों में इका समर्थक या देवीलाल समर्थक जाटों का प्रभृत्व है. राजस्थान में, जहां पिछली बार भाजपा के साथ गठजोड़ में जनता दल को 11 सीटें मिली थीं, राजपूतों में अभी भी बरकरार समर्थन को और मजबत करने की जरूरत है.

🖈 श के स्तर पर, जनता दल में कट्टर समर्थक भी मानते हैं कि अगले चनाव में पिछड़ों और हरिजनों के वोट पर इंका तथा जनता दल के बीच कांटे की टक्कर होगी. कुछ हरिजन तबकों पर पहले ही कांशीराम जैसे नेताओं का कब्जा हो चुका है और जिन्हें आरक्षण से लाभ मिला है, वे इंका के साथ रहना ही बेहतर मानते हैं गूजरात में उन्होंने राम जन्मभूमि मृहिम का समर्थन किया और भाजपा उन्हें फुसला भी रही है. वी.पी. सिंह केरल, तिमलनाडु, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में अपने सहयोगियों से जनाधार

बढाने की उम्मीद कर सकते हैं

सारे सबूत यही हैं कि भाजपा म्सलमानों को वी.पी. सिंह की झोली मे ठेल देगी. केरल की घटनाओं पर गौर कीजिए. वहां मुस्लिम लीग अभी हाल तक मुसलमान वोटों को इंका की अगुआई वाले संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे की झोली में ले जाने में कामयाव रही थी पर अव जिला परिषद चुनावों में मुसलमानों के बडे हिस्से के वोटों की मदद से वाम मोर्ने की विजय के बाद वह इंकाई मोर्चे से हर गई है. पूर्व केंद्रीय गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मह सईद कहते भी हैं कि वी.पी. सिंह ने मुसलमानों को ऐसे एकजुट कर दिखाया जैसे आज तक कोई मौलवी भी नहीं कर पाया था.

परी सम्मेलन में अपने भाषण के बाट विश्वनाथ प्रताप सिंह फिर राष्ट्रीय मंच पर विराजमान होने की तैयारी में है उनकी अपनी पार्टी में ही इससे जो गुस्सा और क्षोभ उभरा है, उसके महेनजर वी.पी. सिंह ने एक और चुनावी युद्ध का

विगूल बजा दिया लगता है.

वामपंथी दल

### सहारा मिला

अरसे बाद वह सब कुछ हो रहा है, जिसका वामपंथी दलों को हमेशा से इंतजार था. मार्क्सवादियों के पास राष्ट्रीय स्तर का कोई चमत्कारी नेता नहीं था. लिहाजा इस कमी को उन्होंने अपनी मार्क्सवादी बिरादरी से बाहर के नेता-विश्वनाथ प्रताप सिंह-को अपनाकर पूरा कर लिया. जनता दल और वामपंथी मोर्चे की राष्ट्रीय समन्वय समिति का गठन महत्वपूर्ण राजनैतिक घटना है. भाकपा के एम. फारूकी कहते हैं, "राष्ट्रीय स्तर पर ऐसा गठबंधन पहली बार उभरा है."

किसी मध्यमार्गी पार्टी पर सवारी गांठना वामपंथियों की पुरानी रणनीति रही है. 1969 में कांग्रेस के प्रथम विभाजन के बाद वामपंथियों ने इंदिरा सरकार को समर्थन दिया था. असल में वामपंथी दलों को अपनी सीमाओं का एहसास है. लोकसभा में माकपा के नेता सोमनाथ चटर्जी का कहना है, "हममें सांप्रदायिक ताकतों से पूरे देश में लड़ने की ताकत नहीं है. लोकतांत्रिक ताकतों के साथ गठबंधन ही इस कमी का

बेहतर विकल्प हो सकता है." हिंदीभाषी क्षेत्रों तक आधार फैलाने की माकपा की कोशिशें कामयाब नहीं हो पाई. पिछले आम चुनाव से पहले पार्टी महासचिव ईएमएस नंबूदिरिपाद ने जद और भाजपा के चुनावी तालमेल के विरोध में चुनाव अभियान किया था. अब यह भाजपा विरोधी और इंका

वी.पी. सिंह के साथ ज्योति बसु, नंबूदिरिपादः प्रबल गठबंधन

जनता दल और वामपंथी मोर्चे की राष्ट्रीय समन्वय समिति का गठन अगले चुनाव की तैयारी के लिए गठबंधन है

ऑप

गांवों के त

त्सा करने

काविलियत

होता लगता

गता है. सा

हो तो और

वह राज्य ह

उन समाधान

गो अक्सर

भाधारित है

नगभग सार

हुआ था. म

भीमा को

गोवों से उग्र शोपरेणान वु

जून 198

विरोधी गठबंधन उसका एक सपना पूरा होने जैसा ही है.

पिछले आम चुनाव में हार के बाद केरल के जिला परिषद चुनावों में सत्ताधारी वाम लोकतांत्रिक मोर्चे की भारी जीत यही संकेत करती है कि इस नए गठबंधन में प्रबल राजनैतिक संभावनाएं हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harida

भाजपा झोली मे पर गौर हाल तक अगुआई नी झोली पर अब मानों के ाम मोर्चे र्चे से हट मुहम्मद सिंह ने दिखाया नहीं कर

ा के बाद ट्रीय मंच री में हैं. जो गुस्सा मद्देनजर युद्ध का ता है.

ा पूरा

वाद

ते में

की

ह इस

र्विक

र रांप

### देर से ही सही चेते तो



पंजाब के सीमावर्ती इलाकों में सेना पुल, बांध और सड़कों के निर्माण में स्थानीय लोगों की मरपूर सहायता कर रही है

ऑपरेशन रक्षक से सेना के प्रति सीमावर्ती गंवों के लोगों का रवैया सहयोगपूर्ण बना, सेना की ला करने की क्षमता में उनका भरोसा लौट आया

-कंवर संध्

मों को यह जानकर राहण हैं। होती है कि राजनीतिक अपनी गलतियों से सीखने की किंविलियत रखते हैं. यह बात इतनी असामान्य है कि जब ऐसा

होता लगता है तो वह काबिलेगौर हो गता है सासकर ऐसा पंजाब के मामले में हों तो और भी अहमियत रखता है क्योंकि केंद्र की कई रणनीतियों और के समाधानों की कब्रगाह साबित हुआ है अन्तर पिटे-पिटाए फार्मूले पर अधारित होते हैं.

कृत 1984 में ऑपरेशन ब्लू स्टार के भाभा साथ ही ऑपरेशन वुडरोज शुरू श्रि था पाकिस्तान से लगी भीमा को सील करना और सीमावर्ती भेवो में उप्रवादियों को ढूंढ़ निकालना. पर भेगित वुडरोज एक तरह से उग्रवादियों

की जननी साबित हुआ. स्थानीय लोगों पर इसका जो नकारात्मक असर पडा, पंजाब के गांवों में आज भी दिख रहा है.

1984 के असर को मिटाने के लिए तीन महीने पहले ऑपरेशन रक्षक का दूसरा चरण (पहला चरण पिछले साल जून से सितंबर तक चला था) शुरू हुआ ताकि सीमावर्ती इलाकों में हिंसक गतिविधियों पर काबू पाया जा सके. 550 किमी लंबी पंजाब सीमा के अधिकांश इलाके में पांच पैदल डिवीजनों के सैनिक तैनात कर दिए गए. लेकिन इस बार प्रधानमंत्री चंद्रशेखर ने इस बात का पक्का इंतजाम कर लिया कि ऑपरेशन वृडरोज जैसी घातक भूल फिर न दोहराई जाए. उन्होंने निर्देश दिया कि

> स्थानीय लोगों का भय दूर करने के लिए उचित कदम उठाए जाएं और संभव हो तो उनका भरोसा हासिल किया जाए.

इसका असर भी अच्छा पड़ा. एक मेजर जनरल कहते हैं, "हम वुडरोज के बुरे असर को भले ही दूर न कर पाएं पर हम इस बार लोगों में नकारात्मक प्रतिक्रिया न हो, इसके लिए दृढ़संकल्प हैं."

हालांकि सीमा को सील करने और उस पार से हथियार तथा लोगों की आमद को रोकने के लिए ही सेना तैनात की गई है पर इसके दो अघोषित मकसद भी हैं:

स्थानीय लोगों में भरोसा कायम

सेना लोगों का आत्मविश्वास लौटाकर ऐसा माहौल बनाना चाहती है जिससे पंजाब भर में नागरिक प्रशासन फिर से काम करने में सक्षम हो सके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके ऐसा माहौल बनाना जिसमें फिलहाल बेमानी हुआ नागरिक प्रणासन फिर से काम कर सके

संबंधित इलाकों में सेना के कामकाज को चुस्त बनाना और भविष्य में किसी बाहरी या भीतरी सुरक्षा जरूरत के दौरान कार्रवाई शुरू करने के लिए वास्तविक स्थिति का बारीक आकलन करना.

सामान्य स्थितियों के विपरीत सीमा मुरक्षा बल सिर्फ सीमा पर नजर ही नहीं रख रहा है बल्कि सेना से निर्देश लेने के बदले खुद ही अपना कामकाज कर रहा है. सीमा के करीब बनाए गए खाइयों-बांधों के

किनारे सेना पूरी क्षमता में तैनात है. ये खाई-बांध अलग-अलग जगहों पर सीमा से 3.00 से 5.000 मीटर तक की दूरी पर हैं. कंपनी और बटालियन मुख्यालय सीमावर्ती गांवों के नजदीक हैं.

सेना की मौजूदगी का विस्मयकारी असर हुआ है. उग्रवादी हिंसा में कमी आई है. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह उपलब्धि गांववालों को नाराज किए बगैर पा ली गई है. दरअसल, नवंबर के अंत में जब सेना ने इन इलाकों में पैर रखा तभी उग्रवादियों ने इन्हें खाली कर दिया.

सीमा सुरक्षा बल और सेना की दोहरी रक्षापिक्त के साथ सीमा पट्टी से लगे गांवों में कर्प्यू के कारण उग्रवादियों का आना लगभग बंद हो गया लगता है.

सीमा पार करने की कोशिश करने वाले पहली या दूसरी

प्रमुख उपलब्धि यह है कि सेना ने गांववालों को नाराज नहीं किया है और उग्रवादी हिंसा में कमी आई है. सेना के आते ही वहां से उग्रवादी भाग खड़े हुए angoun
रक्षापंक्ति के हाथ आ ही जाते है. अब
उग्रवादियों की कठिनाइयों का स्पष्ट सबूत
सेना द्वारा जब्त उग्रवादी नेता वासन सिह
जफरवाल की चिट्ठी है. सीमा पार कैठे
जफरवाल ने पंजाब के भीतर के अपने
सूत्रों को लिखा था कि उसे नए रंगरूटों की
भर्ती और उन्हें सीमा पार कराने में सासी
कठिनाई हो रही है.

सेना के एक ब्रिगेडियर बताते हैं, "उन्हें मालूम है कि इस बार उनका पाला किन्ही और लोगों से पड़ा है वे यह भी जानते हैं कि हम अपने काम के प्रति कितने मुस्तैद हैं." पिछले पखवाड़े जाट रेजीमेंट के एक

防

गी

जेसीओ ने एक उग्रवादी को गोलियों की बौछार के बीच कई फर्लाग तक खदेड़ा. उग्रवादी तो पकड़ा गया पर अफसर को अपनी जान गंवानी पड़ी.

एक दूसरी घटना में तीन उग्रवादियों ने पुलिस घेरे को क्षेप्र डालने की खुशी में हवा में गोलियां चलानी शुरू की तो उन्हें एहसास हुआ कि वे सेना के घेरे में फंस चुके हैं. दो ने साइनाइड (जहर) की गोलियां खाकर जान दे दी और तीसरा पकड़ा गया.

अॉपरेशन रक्षक की कामयाबी संयोग मात्र नहीं है. इसकी सफलता के लिए हर स्तर पर विशेष सावधानी के साथ सुविचारित कदम उठाए गए:

 राज्य स्तर पर मुख्य सचिव तेजिंदर खन्ना की अगुआई में नागरिक और सैनिक अधिकारियों से बातचीत के लिए समीक्षा



सेना की मौजूदगी से मुरक्षा के एहसास के चलते गांवों के स्कूल फिर से खुल गए हैं

RR HR 516 VO CRVS,

### गोद्रेन शैमप्-आधारित

हेयर डाई दूसरी तरफ..

फिर भी,

सन सिह पार बैठे के अपने किटों की

ा किन्ही जानते हैं ने मुस्तैद

के एक

क्सर को

को वेध तो उन्हें राडनाइड

ड़ा गया.

र. इसकी

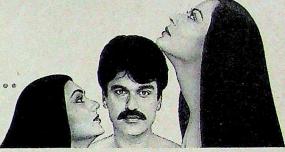
गुआई में समीक्षा

गोदरेज हेयर डाई

इस्तेमाल

करने वाले

ण्यादा ही होंगे!

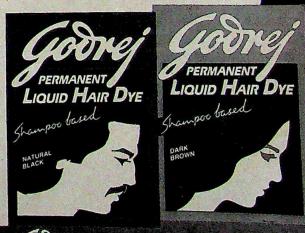


### इन ३ ख़ास कारणों सेः

भा गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई बालों को क़ुदरती रंग और छिव देता है. इसमें कन्डीशनर भी है जो बालों को नर्म-मुलायम बनाए स्वता है. बाल इतने स्वाभाविक काले हो जाते हैं कि कोई जान ही न सके, जब तक आप खुद न बताएँ.

शि गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई इस्तेमाल में आसान और सुविधाजनक है जबकि अन्य हेयर डाई में यह विशेषता नहीं. जी हां, आसान इतना बालों में शैम्पू करने जितना.

अाप गोदरेज शैम्पू-आधारित हेयर डाई की क्वालिटी पर भरोसा कर सकते हैं. क्योंकि यह खास तौर से आपके बालों के लिए बनाया गया है. क्वॉलिटी जिसपर आप भरोसा करें. यही गोदरेज का वादा है.



CC-0. In Public Don

*पुर्णाम्* शैम्पू-आधारित हेयर डाई

दो रंगों में उपलब्धः कुदरती काला और गहरा भूरा.

समिति गठित की गई है.

► जिला स्तर पर ऑपरेशन के समन्वय के लिए उपायुक्तों और सेना तथा बुफिया ब्यूरो के प्रतिनिधियों की दो समितियां बनाई गई हैं.

► राज्यं के सामाजिक-धार्मिक पहलुओं से अपरिचित सैनिकों की तैनाती नहीं की गई है.

▶ कुछ 'निषेध' भी बताए गए हैं: लोगों के घरों में प्रवेश न करें, धार्मिक स्थलों पर धूम्रपान न करें, खड़ी फसल को नुकसान न पहुंचाएं और खाली स्थानों पर ही शिविर लगाएं.

ऑपरेशन रक्षक की विशेष बात यह है कि सेना की इकाइयों ने संबंधित इलाकों में लोगों की मदद के लिए व्यापक अभियान गुरू किया है. इससे उन्हें गांववालों से भरपूर आदर मिला है. महिला विशेषज्ञों तथा दूसरे विशेषज्ञों के चिकित्सा शिविर लगाने का कार्यक्रम बहत सफल रहा है.

गांववासी अब सेना के रवैए को देख बेहद खुण हैं. अक्सर अधिकारियों से पूछा जाता है, "हमारे लिए आप लोग इतना क्यों कर रहे

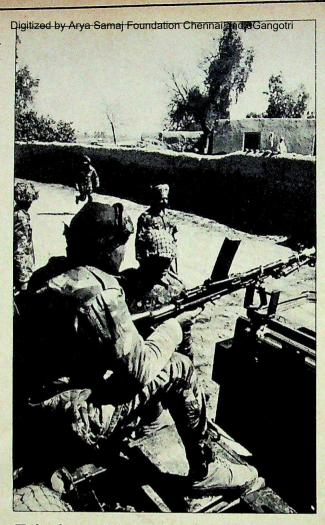
हैं?" लोगों के लिए सेना का यह दूसरा ही रूप है.

इलाके में सर्वव्यापी भय के माहौल में कई गांवों के स्कूल महीनों से नहीं खुले हैं. फिरोजपुर जिले में मुठियांवाली गांव में स्थानीय इकाई ने अपने जवानों से बच्चों को पढ़ाने को कहा. महीने भर बाद सेना की मौजूदगी से सुरक्षित महसूस कर रहे एक स्थानीय अध्यापक स्कूल में पढ़ाने आ गए.

रानियां (अमृतसर) और ममदोट (फिरोजपुर) में लगाए गए सेना भर्ती शिविरों में सैकड़ों युवक आए. प्रारंभिक जांच-

पड़ताल के बाद उन्हें क्षेत्रीय भर्ती कार्यालयीं में भेज दिया गया.

सैनिक दस्ते सड़क और बांध बनाने का काम भी कर रहे हैं. कुछ बटालियनों ने नागरिक मुविधाएं मुहैया कराने के लिए कुछ गांवों को 'अपनाया' है. मसलन, फिरोजपुर में सिख लाइट इन्मेंट्री रेजीमेंट की टुकड़ियां वाखे में अस्थायी पुल बनाने का काम कर रही हैं, जहां सतलुज नदी पर बना पुल बाढ़ में बह गया था. इससे 48 गांवों के लोगों को फायदा पहुंचेगा. इस पुल से वे गेहूं आरपार ला सकेंगे. मस्तके ठाठ गांव के निरंजन सिंह ने कहा, 'सना



सेना के जवान सिर्फ सीमावर्ती इलाकों में तैनात हैं

सैनिक दस्ते सड़कें और पुल बना रहे हैं. कुछ दस्तों ने तो नागरिक मुविधाएं मुहैया कराने के लिए कुछ गांव भी 'अपनाए' हैं और कई जगह कक्षाएं लगाई हैं को मानो भंगवान ने भेज़ है. पुल के बिना हमें इस नते को पार करने में पचास गुजा मेहनत करनी पंड़ती थी."

सेना की तैनाती के सीमावर्ती इलाके में गांति वहाल करने में मदद मिली है. अमृतसर के रसूलपुर गांव के सुखजीत सिंह कहते हैं, "अब हम चैन से सो सकते हैं और इस इलाके में 'लड़कों' की आहट नहीं सनाई पड़ती."

इन रिपोर्टी से उत्साहित केंद्रीय गृह मंत्रालय ने पंजाब राज्यपाल, रिटायई जनरल ओमप्रकाश मल्होत्रा को सुझाव दिया है कि राजमार्गी पर रात की गन जैसे सूरक्षा उपायों के लिए सेना तैनात की जाए. ज्यादा आतंकपीडित लुधियाना, पटियाला और रोपड ने भी सेना को तैनात करने की मांग की है. लेकिन राज्य प्रशांसन ने सीमावर्ती इलाके के अलावा दूसरी जगहों पर सेना तैनात न करने का फैसला किया.

विडंबना यह है कि
प्रशासन तो और अधिक
इलाकों में सेना तैनात करते
पर गौर कर रहा है जबकि
सेना खुद अपनी बैरकों में

लौटने को आतुर है. उसकी दलील है कि सँना की कई टुकिंडियों को सियाचीन, उत्तर-पूर्व और श्रीलंका जैसे मोर्चों से हटाकर पंजाब में शांति स्थापना के काम में लगाया गया है. एक विष्ठ अधिकारी ने कहा, ''अगर सैनिक टुकड़ियों पर हमले बढ़े तो सेना को इस काम में बेमन से लगा रहना होगा.'' यह भी देखा गया है कि यदि सेना बार-बार बुलाई जाती है तो उसका 'सकारात्मकं असर घटता जाता है.

निस्संदेह सेना सीमावर्ती इलाकों में अपने ऑपरेशन की

सफलता पर गर्व करने की हकदार है लेकिन नागरिक प्रशासन को नींद के जगाकर उसमें जान फूंकने का दूसरी मकसद अभी दूर है ताकि वह उग्रवाचि पर अपना दवाव कायम कर सके

प्रशासन को सेना की वापसी के बार गांववालों के खिलाफ बदले की कार्रवाइयों का सामना करने को भी तैयार होंगा. अगर वह ऐसी सुरक्षा मुहैया कर्रा होगा. अगर वह ऐसी सुरक्षा मुहैया कर्रा में नाकाम रहता है तब सीमावर्ती इंतर्क के हर गांववासी के लिए सेना की उपस्थित की सुखद अनुभूति अस्थायी साबित होगी. ने भेजा इस नदी चास गुना ो थी." नाती है में शांति दद मिली रसूलपुर सह कहते त से सो इलाके में हट नहीं उत्साहित ने पंजाव रिटायई मल्होत्रा है कि की गन्त के लिए ए. ज्यादा शहरों-ला और को तैनात है. लेकिन सीमावर्ती गादूसरी तैनात न कया. है कि र अधिक नात करने है जबकि वैरकों में टुकड़ियों ते हटाकर क विष्ठ हे तो सेना वा गया है का रात्मक रेशन की कदार है नींद में ता दूसरा ग्रायवादियो ने के बाद नार्रवाइयों तरिवाहण करिया है। से ता अस्थानी CRAVI Collection Heridwar (A Unit of Grasim Industries Ltd.) Digitized by Arya Samaj Foundation Thennai and eGangotri

### विवादास्पद भूमिका का काला अध्याय

### बिहार, तिमलनाडु के फैसलों और लेखानुदान पेश करने की हामी भरने से विपक्ष खप

-इंद्रजीत बधवार और प्रभु चावला

खरुद्दीन अली अहमद से ज्यादा किसी भ बुसरे राष्ट्रपति को तमाम राजनैतिक दलों की आलोचना नहीं झेलनी पड़ी थी. ये अहमद ही थे जिन्होंने जून 1975 में पूरे देश

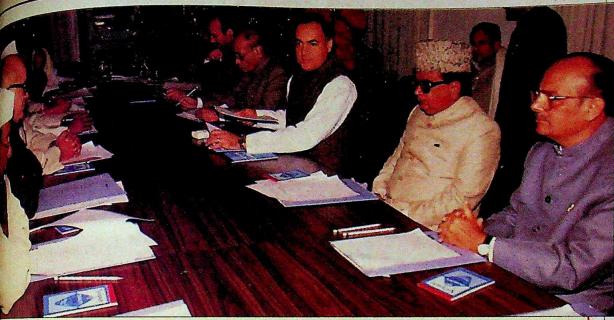
में इमरजेंसी लगाने के इंदिरा गांधी सरकार के अध्यादेश पर आनन-फानन में दस्तखत किए थे. लेकिन वर्तमान राष्ट्रपति रामस्वामी वेंकटरामन को भी आज लगभग वैसी ही आलोचना झेलनी पड रही है. राष्ट्रीय नेताओं ने उन पर इंका की राजनैतिक शतरंज का मोहरा वनने निष्पक्षता तथा विवेक से काम न करके के सर्वोच्च पद की गरिमा को धूमिल का के आरोप लगाए हैं.

इससे पहले भी दूसरे राष्ट्रपतियों। पक्षपात करने और अपने हित साधने आरोप लगे हैं लेकिन दबे स्वरों में, पर्द के गणतांत्रिक इतिहास में ऐसी व राजनैतिक घटना पहली बार ही घटी हैं। लगभग आधी संसद ने राष्ट्रपति अभिभाषण का बहिष्कार किया और व नहीं, राष्ट्रपति के इस्तीफे की भी मांग इंका और चंद्रशेखर के जद (स) को है सभी पार्टियों-भाजपा, वामपंथी दल, ब और जनता दल-के सांसदों ने अभिभा के बहिष्कार में एकजुटता का प्रदर्शन वि

> कार्यालय को भी इसमें शामिल लिया गया. राष्ट्रपति की भून को ही नकारने के फैसन तहत उनसे कोई औपवार मुलाकात न करने, व अतिथियों को दिए जाते व



राजी



राजीव ने सरकार गिराने का अपना खेल तब छोड़ा जब अजित सिंह और वामपंथी दलों ने उनकी पेशकश ठुकरा दी

### जोड़-तोड़ में मुंह की खाई

विश्वेषर की नाजुक सरकार को जिस राजनैतिक वम से उड़ाने की गेमा इंका ने बनाई थी वह आखिरी म बड़े नाटकीय तरीके से निष्क्रिय हो वा स्योंकि जनता दल और जनता ल(म) से सांसद तोड़, सत्ता हथियाने गमकसद फिलहाल पूरा नहीं हो पाया. पिछले कई हफ्तों से राजीव के विनीतिक सलाहकार माखनलाल नितार जद और जद (स) के कई प्रमुख जाओं से संपर्क बनाए हुए थे. इनमें वीनाल के वेटे रणजीत सिंह और पूर्व भी जगदीज धनकड़ के नाम खास तौर में लिए जा सकते हैं. असल में इनकी भेजा जद (स) के एक बड़े गुट यानी जीताल सेमें के सांसदों को इंका में गमित करने की थी. इन लोगों ने जियात के मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल भा मुलायम सिंह यादव को भी टटोला. की मुख्यमंत्रियों के लगभग 20 समर्थक भागद बताए जाते हैं.

क्ष खपा

रा बनने हैं म न करके हैं गे धूमिल क

ाष्ट्रपतियों ह हित साधने हों में पर है में ऐसी दु

राष्ट्रपति । केया और व

ते भी मांग

(स) को इ

पंथी दल, अ

ने अभिभा

प्रदर्शन सि

के अभिभा

त, राष्ट्रपा

में शामिल

ति की भूग

क फैसने

ोई औपचा

करने, उ

दिए जाने व

राजा

वितय की योजना में महत्वपूर्ण कि की योजना में महत्वपूर्ण कि की योजना में महत्वपूर्ण कि केम के 37 महत्वपूर्ण सांसदों की की बीनाई जो पाला वदलने को तैयार के भीत मिह समर्थक और उत्तर प्रदेश की सिह ने वैकल्पिक सरकार को

समर्थन देने की संभावना के बारे में मुझसे बात की थी लेकिन मैंने उन्हें साफ इनकार कर दिया."

फोतेदार ने अजित सिंह को खींच लाने की संभावनाएं भी तलाशीं क्योंकि पार्टी अध्यक्ष न बनाए जाने की वजह से अजित वी.पी. सिंह से नाराज चल रहे हैं. अजित के विश्वासपात्र के.सी. त्यागी भी पश्चिमी उ. प्र. के सांसदों में इंका के साथ विलय की संभावनाएं ढूंढ़ रहे थे.

तात्कालिक हिसाब लगाकर अजित इस नतीजे पर पहुंचे कि अभी यह कदम उठाना फायदे का सौदा नहीं रहेगा. इसके अलावा 77 में से सिर्फ 15 सांसद ही उनके साथ हैं जबिक दलबदल विरोधी कानून से बचने के लिए कम-से-कम एक-तिहाई सांसद चाहिए.

इसके अलावा कुछ अड़चनें और थीं. वलराम जासड़ देवीलाल को इंका में लाने का कड़ा विरोध कर रहे थे हालांकि कई वरिष्ठ इंका नेता इसके पक्ष में थे. हरियाणा में बहादुरगढ़ की जनसभा में जासड़ ने देवीलाल की सुलेआम भर्त्सना की. देवीलाल ने भी इस विचार को मजाक में उड़ाते हुए कहा कि इंका के साथ विलय कर वे अपना राजनैतिक अस्तित्व नहीं सोना चाहते. इंका के भीतर भी धवन की अगुआई में एक बड़ा गुट देवीलाल को शामिल करने का विरोध कर रहा था.

अजित सिंह के पीछे हटने के बाद राजीव सरकार बनाने के लिए जरूरी 270 सांसद नहीं बटोर पाए. वामपंथी दलों के साथ नया गठबंधन करने की कोणिशों का भी तगड़ा विरोध हुआ क्योंकि वामपंथी दल केरल के जिला परिषद चुनावों में मिली अभूतपूर्व सफलता के नशे में चूर थे. हर तरफ से निराश होकर इंका ने नाक बचाने के लिए चंद्रशेखर के सामने अपनी तीन मांगें रखीं-अध्यक्ष द्वारा दलबदल विरोधी कानून के तहत अयोग्य घोषित किए पांचों मंत्रियों से इस्तीफे लिए जाएं, अमेरिकी वायूसेना के विमानों को ईधन भरने की स्विधा खत्म की जाए और वजट अभी पेश न किया जाए.

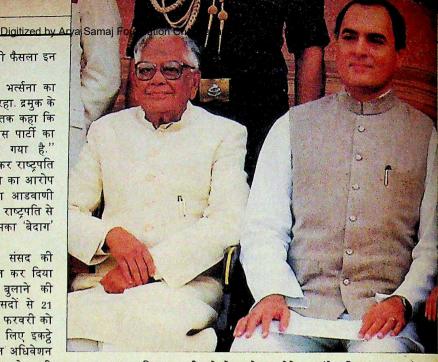
इंका रणनीतिकों का मानना है कि
मध्यावधि चुनाव देर-सबेर होकर ही
रहेंगे और चुनाव अभियान की तैयारी में
ही राजीव संसद अधिवेशन के तुरंत बाद
12 राज्यों का दौरा कर जनसंपर्क
अभियान फिर शुरू करेंगे. उनका
नवीनतम नारा है—'राष्ट्र के गौरव की
बहाली.' वे मानते हैं, "भारत महत्वपूर्ण
अंतरराष्ट्रीय मंचों से गायब होता जा
रहा है." 1980 के चुनाव में अपनी मां के
चुनावी नारों को याद कर वे कहते हैं कि
इस बार भी मतदाताओं को अराजकता
और व्यवस्था में से एक को चुनना होगा.

भास्कर रॉय

भोजों में शरीक न होने का भी फैसला इन सांसदों ने किया.

राष्ट्रपति की उपेक्षा और भर्त्सना का यह अपूर्व अभियान बहुत उग्र रहा. द्रमुक के वी. गोपालस्वामी ने तो यहां तक कहा कि "राष्ट्रपति कार्यालय को कांग्रेस पार्टी का शाखा कार्यालय बना दिया गया है." राष्ट्रीय मोर्चा ने बयान जारी कर राष्ट्रपति पर 'संविधान को तबाह' करने का आरोप लगाया. भाजपा के लालकृष्ण आडवाणी और अटल बिहारी वाजपेयी ने राष्ट्रपति से कहा कि उनकी हाल की भूमिका 'बेदाग' नहीं रही.

आक्रोश तब भड़का जब संसद की कार्यसूची में अचानक फेरबदल कर दिया गया. संसद का अधिवेशन बूलाने की राष्ट्रपति की विज्ञप्ति में सांसदों से 21 फरवरी को रेल बजट और 28 फरवरी को आम बजट को मंजूरी देने के लिए इकट्टे होने को कहा गया था. लेकिन अधिवेशन शुरू होने से एक दिन पहले इंका के भारी दबाव के चलते चंद्रशेखर ने घोषणा की कि



राष्ट्रपति पर राजीव के खेल को शह देने का संदेह किया जा रहा है

राष्ट्रपति के अधिकार

### सिफे बधक नह

विधान के अनुच्छेद 53 (1) के तहत राष्ट्रपति ही संघ कार्यपालिका का मुखिया है. कार्यपालिका के अपने अधिकार सीधे या अधीनस्थ अधिकारियों के इस्तेमाल कर सकता है. अनुच्छेद 74 (1) के अनुसार एक मंत्रिपरिषद होगी जो राष्ट्रपति को अपने कार्यों को करने में सलाह और मदद देगी और उसे इसकी सलाह पर ही काम करना होगा.

इसका अर्थ यह निकलता है कि राष्ट्रपति मंत्रिपरिषद की सलाह मानने को बाध्य है पर उसे संविधान के तहत कुछ आजादी भी हासिल है. अगर राष्ट्रपति असहमत हो तो "वह मंत्रिपरिषद को अपनी सलाह पर पूर्निवचार करने के लिए कह सकता है."

राष्ट्रपति के पास बहुत से विकल्प हैं-अपनी सहमित देने से पहले वह विधेयक की खामियों और खुबियों को परख सकता है; विधेयक के बारे में अपना नजरिया संसद को बता सकता है; पूरे विधेयक या उसके किसी खास पहल पर पुनर्विचार के लिए उसे संसद को लौटा सकता है; या उसकी न्यायिक समीक्षा करवा सकता है.









त्त पेश

ने ने वर्ष

तेबानुदान पे

को तीन व

त्यों को फोड़

वं और जनता

व गई कि र

ने (रेवें बाँव

सती यी कि वि

संबंद सरका

स होने का

प्राविध चुनाव

त में होने वा

साव के नती जे

त यह नहीं

न्तार बजट है

ल ने और इंक

विपक्षी दलों

नेवानुदान पेष

हमें मंकट ला कार्यक्रमों ने कर नहीं जुट

स्ताल. इर

गोने इस विव विमंहल की स हो हो तो

ले के लिए व नेद्वने पत्तवा

भेर आपत्तियां

लित और

नीय वैठकें.

जीयता वरत

ननमंत्री या इ

र्पति को वर

व उनकी ये बैर

ने चंद्रशेख

यान छेड रह

वह उससे सम

अंटकलों को

के नेतृत्व हे

ना तैयार क

लेने राजनैति

व यहीं कहा

गण्ड्यति

नोय बैठकें हुई

नी आहवाण

भेम में लि

रेगीत को इस

वा" वि

1979 में जन

नि वेव पार्टी

वें बॉक्स).

ला पहे.

प्रसाद, कृष्णन, रेड्डी और सिंह सभी ने सरकारी फैसले की आलोचना की

राष्ट्रपति किसी सरकारी फैसले को अपनी मंज्री देना टाल भर सकता है. इस तरह वह प्रधानमंत्री की मनमानी पर रोक लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है. राष्ट्रपति की अस्वीकृति सरकारी फैसले को बदल भी सकती है. इसके कुछ उदाहरण ये हैं:

 ▶ 1951 में राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद और प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के बीच हिंदू कोड बिल के बारे में मतभेद थे. इसके खिलाफ भारी जनमत भी था. जब नेहरू ने सरकारी फैसले को चुनौती देने के राष्ट्रपति के अधिकार पर सवाल उठाया तो राजेंद्र बाबू का जवाब था कि राष्ट्रपति इतना असहाय नहीं है और कि सरकार व संसद पर भी कुछ अंकुश है.

▶ 1962 में राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन ने रक्षामंत्री कृष्ण मेनन को चीन युद्ध में पराजय के बाद बर्खास्त कर दिया. नेहरू यह नहीं चाहते थे. राष्ट्रपति ने हार के लिए सरकार को जिम्मेदार माना और उस पर लापरवाही बरतने क आरोप लगाया.

 विदेश दौरे के सवाल पर तीलम संजीव रेड्डी और इंदिरा गांधी में की थी. राष्ट्रपति ने प्रिस चार्ल्स की गादी का निमंत्रण स्वीकार कर लिया था गर इंदिरा गांधी भी वहां जाना चाहती थीं रेड्डी ने धमकी दे दी थी कि अगर सरकार प्रबंध नहीं करती तो वे निजी तौर पर चले जाएंगे. आखिर इंदिरा गांधी को ही अपनी जिद छोडनी पड़ी.

► जैल सिंह ने भारतीय डाक तार (संशोधन) विधेयक पर दस्तखत कर्ल से मना कर दिया था हालांकि संसद उने पहले ही पास कर चुकी थी. उन्होंने आंध्र की राज्यपाल कुमुदवेन जोशी की डार्टी हुए पत्र लिखा था कि वे राज्य ही राजनीति में शामिल न हों. - देविका सि

30 इंडिया टुडे • 15 मार्च 1991

विने के बदल दिया गया है और सिर्फ विने के किया जाएगा इस पर करण के निर्फ में कोई आपति पूर्व मन की तरफ में कोई आपति

वात्रान पेज करने के इंका के दबाव से तीन वजहें थीं. एक तो यह कि तों को फोड़ने में जुटी इंका चंद्रशेखर क्षेत्रीर जनता दल में इतने सांसद नहीं ह गई कि राजीव गांधी सरकार बना (हेर्त बांक्स), इमलिए वह नहीं ली वी कि वित विधेयक के गिरने पर प्रोबर सरकार के पतन और संसद के त होने का बतरा मोल ले. दूसरे. प्राविध चुनाव में उत्तरने से पहले वह ति में होने वाले तमिलनाड् विधानसभा सा हे नतीं वे देवना चाहती है. तीसरे, यह नहीं चाहती यी कि चंद्रशेखर नार बजट में कोई अलोकप्रिय कदम वने और इंका को अपयण का भागीदार ला पहे.

किसी दनों का आरोप है कि राष्ट्रपति कितुरान पेत्र करने पर सहमति देकर हमें मेकट ला दिया है क्योंकि सरकार कार्यक्रमों के लिए पैसा प्रत्यक्ष कर कार नहीं जुटा सकती (देसें बॉक्स).

ह्महाल, इस घटना से जुड़ी दूसरी जोने इस विवाद को जन्म दे दिया है कि फेंग्डल की सलाह अगर अनुचित नजर हों हो तो भी क्या राष्ट्रपति उसे फेंगे के लिए बाघ्य है (देसें बॉक्स).

ाकी

जिम्मेदार

बरतने का

र नीलम

ते में उनी

गादी का

था. पर

गहती थीं

र सरकार

तौरपर

घी को ही

डाक तार

खत करने

संसद उमे

होंने आंध्र

को डांटते

राज्य की

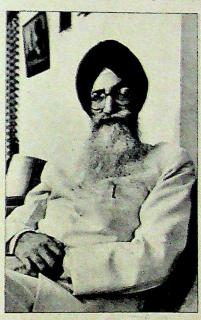
देविका सि

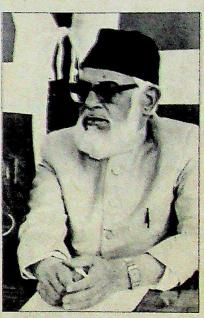
कुले पसवाड़े जिस घटना पर सबसे के अपनियां उठाई गई बह थी—
पूर्ति और राजीव गांधी के बीच के वैठकें इन बैठकों में इतनी किया बरती गई जितनी सिर्फ अपने को बरतनी चाहिए. राजीव के जाने ये बैठकें भी ऐसे वक्त हुई जब के अपने के अपने के स्वाप अर्थ ते के इससे अर्थ समर्थन वापस ले लेगी. इससे अर्थ ने नुद्ध में नई मोर्चा सरकार की कि राष्ट्रपति के नेतृत्व में नई मोर्चा सरकार की कि राष्ट्रपति के नेतृत्व में नई मोर्चा सरकार की कि राष्ट्रपति के नेतृत्व में नई मोर्चा सरकार की कि राष्ट्रपति के नेतृत्व में नई मोर्चा सरकार की कि राष्ट्रपति के नेतृत्व में नई मोर्चा सरकार की कि राष्ट्रपति के नेतृत्व में नई मोर्चा सरकार की कि राष्ट्रपति के नितृत्व में नई मोर्चा सरकार की कि राष्ट्रपति के नेतृत्व में नई मोर्चा सरकार की कि राष्ट्रपति के नितृत्व में नई मोर्चा सरकार की कि राष्ट्रपति के नितृत्व के नितृत्व के नितृत्व के नित्त अस्थिरता और बढ़ गई कि नितृत्व के नि

से पहीं कहा जा सकता है कि राजीव प्राप्ट्रपति के बीच जिस तरह की कि बैठकें हुँई उनकी कोई मिसाल नहीं के आडवाणी कहते हैं, "राष्ट्र को कि में लिया जाना चाहिए, था कि को इस बात के लिए जोर देना कि के जनता पार्टी के विभाजन के कि के पार्टी नेता और विभिन्न गुट बार-बार राष्ट्रपति से मिल रहे थे तब सारे नेता राष्ट्रपति से हुई बातचीत का ब्यौरा प्रेम को जारी करते थे पिछले नवंबर में जब बी.पी. सरकार का पतन हो रहा था, तब चंद्रशेखर और राजीव गांधी ने राष्ट्रपति के साथ हुई बातचीत का ब्यौरा जनता को दिया था.

राजीव-वेंकटरामन की ताजा गोपनीय बैठकों ने राष्ट्रपति की खिंब को और संदेहास्पद बना दिया है वैसे भी यह धारणा प्रवत होती जा रही है कि राष्ट्रपति भी मामने में लाजीव नाखी पर मुकदमा चनाने की लिकारिया करने पर विचार कर रहे थे तब कीई कैंसला करने से पहले उन्होंने सर्विधान और कान्तुन के किंगणबों से राप्य मानी थी

द्रमुक सल्कार की कर्जालाणी की आनोजना करने के कारण विहार के राज्यसन युनुम सलीम को क्योंन्त करके राज्यसीत एक और मनत फैसला कर बैठे अपने बचाव में सलीम का कहना था कि उन्होंने तो मंत्रिमंडन द्वारा तैयार





वेंकटरामन पर तिमलनाडु के राज्यपाल मुरजीत सिंह बरनाला और बिहार के युनूस सलीम को हटाकर राज्यपाल पद की गरिमा घटाने का आरोप है

राजनीति का खेल खेलने लगे हैं.

उनके जिस काम पर सबसे ज्यादा सवाल उठाए जा रहे हैं. वह है तिमिलनाडु में निर्वाचित द्रमुक सरकार को गिराना और विधानसभा को भंग करना. राज्यपाल मुरजीत सिंह बरनाला ने आपित्त की तो सजा के तौर पर उनका तवादला कर दिया गया. इस पर भी उंगलियां उठी क्योंकि तिमल मुक्ति चीतों को कथित समर्थन देने के लिए द्रमुक सरकार की बर्खास्तगी की मांग इंका कई बार कर चुकी थी.

वेंकटरामन का यह कदम ऐसी परिस्थितियों में पूर्ववर्ती राष्ट्रपितयों के फैसलों के एकदम विपरीत रहा. जब मोरारजी देसाई ने कार्यवाहक राष्ट्रपित बी.डी. जत्ती से सभी गैर-जनता राज्य सरकारों को बर्खास्त करने को कहा था तो जत्ती ने मामले को मुख्य न्यायाधीण के पास ले जाकर टालने की कोणिण करने की समझदारी दिखाई थी. यहां तक कि विवादास्पद जाती जैल सिंह भी जब बोफोर्स

अभिभाषण ही पढ़ा था. लेकिन राष्ट्रपति की कार्रवाई का समर्थन करने वालों की दलील थी कि बेहतर होता राज्यपाल विवेक का इस्तेमाल करते और भाषण के उस विवादास्पद अंश को न ही पढते. इसी तर्ज पर राष्ट्रपति के आलोचक दलील देते हैं कि तमिलनाडु पर कोई फैसला करने से पहले राष्ट्रपति को भी ऐसे ही विवेक से काम लेना चाहिए था. बिहार के राज्यपाल की बर्खास्तगी को अब लालू यादव सरकार की बर्खास्तगी की पूर्व भूमिका के रूप में देखा जा रहा है.

इंका की उंगलियों पर नाचने का यह खेल जिसमें चंद्रशेखर सलाह देते और राष्ट्रपति उसे लागू कर देते पांडिचेरी में भी खेला गया वहां जनता दल के समर्थन से बनी द्रमुक सरकार जद में विभाजन के बाद गिर गई. लेकिन इस मामले में विधानसभा को निलंबित रखा गया इसका फायदा भी अंततः इंका को ही मिला क्योंकि विधानसभा अब तक निलंबित है और इंका लेखानुदान

### जवाब दे गई हिम्मत

त्तमंत्री के हाथ से वजट (भाषण) ले लेना किसी बच्चे के हाथ से चॉकलेट छीनने से कम नहीं है पिछले पखवाडे इंका के कहने पर सामान्य बजट की जगह लेखानुदान पेश करने का फैसला करके चंद्रशेखर ने वित्तमंत्री यशवंत सिन्हा के साथ यही किया. रेल बजट और वार्षिक आर्थिक सर्वेक्षण पेश करना भी टाल दिया गया. .

न्और ये बातें यदि कोई संकेत देती हैं तो यही कि मौजदा सरकार बजट सत्र के दौरान, जो सामान्यतः 75 दिन चलता, बहमत को अपने पक्ष में रख पाने की अपनी क्षमता पर भरोसा नहीं कर पा रही है. साथ ही बजट न पेश करके सरकार ने हाल के वर्षों में सबसे अधिक कठिनाई में फंसी अर्थव्यवस्था का संकट दूर करने के कदम उठाने का मौका भी छोड़ दिया है.

लेखानदान या अंतरिम बजट सरकार को संसद में नियमित बजट पारित होने

तक अपने कामकाज का खर्च चलाने की क्षमता प्रदान करता है. इस प्रकार तीन या चार महीनों के लिए प्रशासन चलाने का खर्च समेकित कोप से लिया जा सकता है. दरअसल, हर साल मार्च के आखिर में लेखानुदान पास कराया जाता है क्योंकि धन विधेयक (बजट) को संसद की मंजूरी मिलते-मिलते आधा मई निकल जाता है. लेकिन मौजूदा राजनैतिक हालात में 1991-92 का पूरा बजट न पेश करने का फैसला इस बात का प्रमाण है कि सरकार की आर्थिक योजना के पीछे पर्याप्त राजनैतिक ताकत नहीं है.

बजट टालने का बहाना तो तमिलनाड् के विधानसभा चनाव को बनाया गया और कहा गया कि उसमें अनेक सांसद फंसे रहेंगे. तर्क यह दिया गया कि तमिलनाड से लोकसभा के 39 सांसद अगर नहीं रहे तो बजट पर 20 बार से अधिक होने वाले मतदानों में सरकार को बचाना मुश्किल होगा और वह सकती है

पूर्व वित्तमंत्री और इंका के आकि प्रकोष्ठ के प्रमुख प्रणब मुकर्जी कहते है "सदन में मतों का हिसाब ठीक खते नजरिए से मौजूदा हालात में वजट करना किसी भी वित्तमंत्री के लिए दिके का काम होता." वैसे, मुकर्जी इस बात ? खंडन करते हैं कि इंका ने बजट स्थीप कराने के लिए सरकार पर दबाव डाना

लेकिन विपक्ष सरकार के तकों संतष्ट नहीं दिखता. भाजपा ने तो कहा। सरकार ने संसद की गरिमा घटा है। जनता दल और वामपंथी दलों ने कहा है सरकार के फैसले से बदहाल अर्थव्यवस की अनिश्चितता और बढेगी, और ब विपक्ष ने इस फैसले का विरोध कर राजनैतिक लाभ लेना शुरू किया तो हैं। अध्यक्ष राजीव गांधी इस फैसले किनाराकशी करते दिखे. वैसे,वाणिज्या सुब्रह्मण्यम स्वामी को लेखानुदान सलाह उन्होंने ही दी थी.

नियमित बजट न लाने पर भी सरस ने टैक्स या कीमतें बढाने में कोताही न की. दिसंबर और जनवरी में अधि

मिन्हा को ब

नेकिन उद्य

कई कंपनियं क प्रमुख

वाजार से

शरद मक्तना इसे करों ना जा सक मत भी अपनी न मिलाकर है बट सिर्फ पूरे प्रतिविवित वों में धन ग्ता है और भाग मिल ज गा. इंजीनिय विस्ता का व भिनों और न े निश्चित अ हों है अहम भीक राणि ह भिनी देर से विवर बाजार के ली है. बा विगकों का नि

राष्ट्रपति संसद में अभिभाषण देने पहुंचे तो करीब आधे सांसदों ने बहिष्कार कर दिया

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षाव बुटाने के अभियान के तहत कार ने सीमा गुल्क, उत्पादकर और करमें वृद्धि की थी. अनेक व्यापारियों ग्रमतर्गा है कि भले ही बजट टल गया

के आषि

जी कहते है

ठीक रखने है

में बजट के

लिए दिले

इस वात क

वजट स्थाप

वाव डाना

के तकों

ने तो कहा ह

घटा दी

ों ने कहा वि

अर्थव्यवस

ी. और इ

विरोध कर

कया तो इ

त फैसले

,वाणिज्यम

खानुदान

र भी सरक

कोताही न

ो में अवि

मिला को बजट पेश करने का मौका नहीं मिला

से करों की वृद्धि का टलना नहीं जा जा सकता. यही सोचकर उद्योग मत्भी अपनी तैयारी कर रहा है.

विका उद्योग जगत की यह तैयारी मिलाकर वेमानी हो सकती है क्योंकि गर मिर्फ पूरे साल के वित्तीय लक्ष्यों को र्शतिविवित नहीं करता बल्कि विभिन्त में धन आवंटन की भी व्यवस्था जा है और इससे उद्योग जगत को यह भाग मिल जाता है कि कहां धन लगाया का हंजीनियरिंग उद्योग संघ के एक क्ता का कहना है, "निवेश संबंधी भी और उत्पादन संबंधी योजनाओं िनिष्ट्रित असर पड़ेगा.''

कई कंपनियों की नाराजगी इतनी नहीं मुख सिगरेट कंपनी के अधिकारी के हैं हम जानते हैं कि हर बार कि हमें ही देनी है. सो, यह बोझ भि देर में आए उतना ही बढ़िया." कि वाजार की प्रतिक्रिया भी अनुकूल ही भी है साड़ी युद्ध के खात्मे से भी किता विश्वास मजबूत हुआ है. वीबार से वड़ी मात्रा में पैसा उठाने वाले कदम भी सामने आ ही गए हैं. पेट्रोलियम की कीमतों में हुई 25 फीसदी की वृद्धि और दिसंबर-जनवरी में लगाए गए नए करों से 1991-92 के दौरान

सरकार की आय में 6,600 करोड़ रु. की बढोतरी की उम्मीद है. लेकिन भारी-भरकम राजस्व घाटे को पाटने के लिए इतनी ही राशि पर्याप्त नहीं वित्तमंत्री ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से इस घाटे को मौजूदा 8.3 फीसदी (सकल घरेलू उत्पादन का) से कम करके मार्च 1992 में 6.5 फीसदी करने का जो वादा किया है उसके मद्देनजर यह राशि और कम लगती है.

लेकिन इससे भी अधिक चिंता की बात यह है कि बजट न पेश करके सरकार ने अपनी विश्वसनीयता में जो कमी कर ली है उससे कोष और कड़ी शर्तें लाद देगा. जापानी बैंकों के समूह ने भारत के लिए 5,000 करोड रु. जुटाने का जो वादा किया था, उस पर उन्होंने अभी से पूर्निवचार शुरू कर दिया है. सरकार के

एक वरिष्ठ अधिकारी कहते हैं, ''हम तेजी से अपनी अंतरराष्ट्रीय विश्वसनीयता खोते जा रहे हैं."

जनवरी के मध्य में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से 3,275 करोड़ रु. का कर्ज हासिल करने के बावजूद सरकार के सामने विदेशी मुद्रा का भारी संकट है. नया कर्ज लेने के विकल्प भी सीमित ही हैं. प्रत्यक्ष करों में वृद्धि करना इसके लिए एक अच्छा संकेत हो सकता है लेकिन इससे सरकारी खजाने में कुछ खास आता नहीं. सीमा शुल्क बढ़ाने का मतलब 'गैट' समझौते में किए अपने वादों से मुकरना होगा. ऐसे में उत्पाद शुल्क बढ़ाना और अपने नियंत्रण वाली वस्तुओं की कीमत बढ़ाने का विकल्प ही सरकार के पास रह गया है. रसोई गैस, कोयला और इस्पात की कीमतों में वृद्धि की उम्मीद दिखती है.

स्वतंत्रता के बाद से सात बार लेखानुदान आ चुके हैं. हर बार लेखानुदान के पहले या बाद में चुनाव हुए. ताजा लेखानुदान से भविष्य का संकेत तो - परंजय गृहा ठाक्रता मिलता ही है.

की सहयोगी अन्ना द्रमुक नई सरकार के गठन के लिए विधायकों को फुसलाने की कोशिशें कर रही है.

गोवा में पिछले महीने पार्टियों में फूट और नए गठबंधनों के चलते महाराष्ट्रवादी गोमांतक पार्टी (मगोपा) की सरकार गिर गई. वहां भी विधानसभा को निलंबित रखा गया और निलंबन के दौरान ही मगोपा से अलग हुए गृट को इंका के समर्थन से सरकार बनाने का मौका दे दिया गया.

इन तथ्यों से यही निष्कर्ष निकलता है कि जिन राज्यों में विधानसभा को जिलाए रखने से चंद्रशेखर और इंका को सरकार बनाने का मौका मिलता है वहां उन्हें बख्श दिया जाता है. लेकिन आक्रामक रवैया अपनाने वाली सरकारों, विधानसभाओं को मृत्युदंड दे दिया जाता है. विशेषज्ञों का कहना है कि कानून और व्यवस्था की स्थिति बिगडने या अस्थिरता के आधार पर राज्य सरकारों को बर्खास्त करना वैध माना जाता है. लेकिन इसमें नरम रवैया तो अपनाया ही जा सकता है. मसलन, जब वी.पी. सिंह ने कर्नाटक की सरकार को वर्खास्त किया था तब राष्ट्रपति ने विधानसभा भंग नहीं की थी. और एक महीने के भीतर ही बंगरप्पा के नेतृत्व में अधिक मजबूत इंका सरकार वहां अस्तित्व में आ गई.

इसी तरह कानून और व्यवस्था विगडने पर चुने गए प्रतिनिधियों को बर्खास्त किए बिना ही राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू किया जा सकता है. बाद में यदि राज्यपाल कानन और व्यवस्था की स्थिति में सुधार से संतुष्ट हों और इस तथ्य से आवश्स्त हों कि नई स्थायी सरकार सत्ता में आ सकती है तो उस राज्य की विधानसभा को पूनर्जीवित किया जा सकता है.

इस पूरे प्रकरण की सबसे बडी विडंबना यह रही कि राष्ट्रपति चंद्रशेखर के छोटे से गुट को सरकार बनाने का मौका देने के लिए राजी हो गए. तब उनका कहना था कि मध्यावधि चुनाव के मुकाबले यह ज्यादा बेहतर विकल्प है क्योंकि मध्यावधि चुनाव में व्यापक हिंसा हो सकती है और चुनाव के बाद फिर ऐसी स्थिति आ सकती है कि किसी भी दल को स्पष्ट बहमत न मिल पाए. बहरहाल, आज देश एक ऐसी अल्पमत सरकार को झेल रहा है जिसे जनादेश प्राप्त नहीं, जो इंका के हाथ की कठपुतली बनी हुई है और हमलों तथा जिदों के आगे घुटने टेकती रहती है. न उसमें विदेश नीति तैयार करने की योग्यता है और न देश का बजट बनाने की और जो अस्थिरता के बढ़ते खतरों के बावजूद घरेल समस्याएं सुलझाने की क्षमता नहीं रखती.

बिहार

### भितरघात का भय

### मुल्यमंत्री लालू यादव के विरुद्ध असंतुष्टों के हमले तेज



इस राज्य में मुख्यमंत्री इतनी जल्दी-जल्दी आते-जाते रहे हैं कि लालू प्रसाद यादव के इतने अर्से तक इस कुर्सी पर टिके रहने पर

अचरज व्यक्त किया जा रहा है. वर्षास्तगी के सतरे से जूझ रही जनता दल सरकार को 19 फरवरी को तब एक और

झटका लगा जब इंडियन पीपूल्स फंट की लाल सेना के 11 लोगों को जमीदारों की किसान सेना ने किसखोरा गांव में मार डाला, और केंद्र द्वारा वर्खास्तगी के आसन्त खतरे से आणंकित यादव के खिलाफ असंतुष्टों ने भी अपनी गतिविधियां तेज कर दीं. लेकिन पिछले पखवाडे दिल्ली से लौटकर यादव ने आत्मविश्वास दिखाया, "मेरी सरकार को कोई खतरा नहीं है, न अंदर से, न बाहर से." लेकिन अपने 72 मंत्रियों में से आधों के इस्तीफा देने की धमकी के बाद यादव को भी अब चिंता हो गई है. केंद्रीय

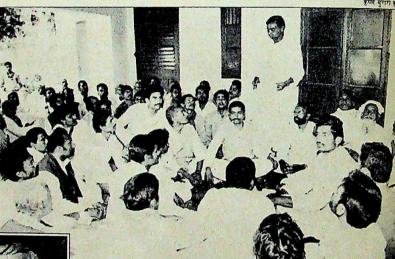
कपड़ामंत्री हुकुमदेव नारायण यादव भविष्यवाणी करते हैं, "यह सरकार किसी भी क्षण गिर सकती है."

जनता दल सूत्रों के अनुसार असंतुष्ट पहले दौर की लड़ाई जीत गए हैं. उन्होंने प्रदेश जनता दल अध्यक्ष रामसुंदर दास को यह समझा दिया है कि अगर वे प्रदेश की कमान

नहीं संभालेंगे तो केंद्र राज्य की सरकार को वर्खास्त कर ही देगा. उनके करीवी उपेंद्र चौहान के अनुसार दास ने यह बात जान लेने के बाद ही मंत्रियों के इस्तीफे लेने और पार्टी अध्यक्ष एस.आर. बोम्मई के पास भेजना शुरू कर दिया है.

करीब 12 दौर की बातचीत के बाद असंतुष्टों के प्रवक्ता राघवेंद्र प्रताप सिंह ने दावा किया कि पिछले हफ्ते तक 30 मंत्रियों के इस्तीफे दास के पास आ गए थे और अनेक दूसरे भी जल्दी ही इस्तीफा देंगे. दूसरी ओर चौहान ने कहा कि जनता दल के 127 में से 60 विधायक, जिनमें अनेक मंत्री भी हैं, नेतृत्व में बदलाव चाहते हैं. हरिजन मजदूरों की हत्या के बाद केंद्रीय गृह राज्यमंत्री सुबोधकांत सहाय ने जब राज्य का दौरा किया और

> जद के असंतुष्ट नेता; लालू (नीचे) बढ़ता दबाव



बर्खास्तगी के आसन्न खतरे पर असंतुष्टों ने लालू के खिलाफ गतिविधियां तेज कर दीं

यह घोषणा की कि ''केंद्र मूक दर्शक नहीं रहेगा'' तो इससे असंतुष्टों की गतिविधियों को बढावा मिला.

सहाय ने इतना ही नहीं कहा. उन्होंने यह भी कहा कि "राज्य सरकार का अपराधीकरण हो चुका है." पर यादव भी सोए हुए नहीं हैं. वे अच्छी तरह जानते हैं कि उनके कुछ भरोसेमंद साथी ही उन पर निशाना साधे बैठे हैं क्योंकि मंत्रिमंडल के विस्तार के बाद उनके विभाग कम हो गए

अपने खिलाफ वह रही धारा दवाने के लिए लालू प्रसाद ने 14 संभावित असंतुष्टों को विभिन्न निकायों का अध्यक्ष बना दिया. इनमें छह तो उन्हों की जाति के थे. और यह करते समय उन्होंने दूसरी पिछड़ी जातियों का खयाल नहीं रखा. लेकिन इतने से काम नहीं चलने वाला था. पार्टी सूत्रों का कहना है कि 11 कैविनेट मंत्री, स्वतंत्र प्रभार वाले चार लोगों समेत कुल 11 राज्यमंत्री और तीन उपमंत्री भी असंतुष्टों के खेमे में हैं. जपा के तीनों विधायक, जिन्होंने पहले जद में आने का फैसला किया था, नाराज हैं. आईपीएफ के लोगों की हत्या के

आईपीएफ के लोगों की हत्या के मामले पर सरकार का जो रुख रहा है, उससे सरकार के वामपंथी सहयोगी भी

संतुष्ट नहीं हैं. माकपा और भाकपा भी यादव सरकार के खिलाफ हमला बोलने का मौका तलाग रही हैं क्योंकि इस सरकार ने भूमि सुधार जैसे साझा

कार्यक्रमों पर कोई पहल नहीं की है।
यादव उपर से तो बहादुर बनने की
दिखावा कर रहे हैं. उनका दावा है कि
उनका कोई भी समर्थक उनसे कर्रद नहीं है और अगर इंका ने उन्हें गदी से
हटाने की कोशिश की तो वह खुद बर

हटाने की कोशिश की तो वह थुँ पंजाएगी. उन्होंने कहा, ''इंका मेरे साथ उसी तरह ब्लैकमेल करना चाहती हैं जैवा वह दिल्ली में चंद्रशेखर को कर रही हैं.' इंका के नेता जगन्नाथ मिश्र ने विधानसभी में यादव से कहा कि वे गद्दी छोड़ें जिसने राज्य में व्यवस्था कायम करने का मौका दूसरे को मिले. लेकिन इस बात की संभावना नगण्य ही है कि यादव खुँ ही मुख्यमंत्री की गद्दी छोड़ देंगे.

-फरजंद अह"

(जाव २) दि

राजनीति

ताने का व पड़ गए ल धतग पड़ पहवाडे उ

मिली जब प्रधानमंत्री बातचीत क की उनकी सोहन सिंह जुड़े पांच तीव प्रतिब्रि इस चुन

पस्त पड ग

उन्होंने अ

की कि जल की ओर दमन' पर प्रधानमंत्री बातचीत न के साथ 3 बानी-मार्न उन्हें हाजा

ज्यवादियों का विरोध है कि केंद्र अपनाने अ निरंतर

वावजूद उर उग्रवाद मनोबाहल मिस्र स्टुडेंट

मिक्रय सम का अनुकृत मतं यह बातचीत

मन्दी लें. प्रक्रिया की

तीन प्रमुख् और लोंग एकीकरण

दवाने के

असंतुष्टो

ाक्ष बना

ति के वे

ो पिछडी

लेकिन

या. पार्टी

ट मंत्री,

मेत कुल

नि भी

के तीनों

आने का

हत्या के

रहा है,

गोगी भी

मृगगे इव

भाकपा

हमला

क्योंकि

से साझा

की है.

वनने का

गहैकि

से रुप्ट

गद्दी मे

खुद बंट रे साथ

हे जैसा

ही है

गनसभा

जिसम

T मौका

ात की

खुद ही

व अहमव

### अलग-थलग

राजनीति में मान की घटती साख



करीब एक साल पहले नेता अकाली दल सिमरनजीत सिंह मान ने जेल से छुटने के बाद की वहाली खातिर जो फल तोड़

ताने का वादा किया था, अब उनमें कीड़े गृह गए लगते हैं. वे किस कदर अलग-ग्तग पड़ गए हैं, इसकी मिसाल पिछले

पतवाड़े उस समय देखने को मिली जब उग्रवादियों को प्रधानमंत्री चंद्रशेखर वातचीत की पेशकश मानने की उनकी अपील पर डॉ. मोहन सिंह की पंथक कमेटी से बुढ़े पांच उग्रवादी संगठनों ने तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की.

इस चुनौती के सामने मान गत पड़ गए और पिछले हफ्ते उन्होंने अमृतसर में घोषणा नी कि जब तक सुरक्षा बलों की ओर से किए जा रहे रमन पर रोक नहीं लगती, प्रधानमंत्री के साथ आगे बातचीत नहीं की जाएगी. केंद्र के साथ अकाली नेताओं की जानी-मानी निकटता के चलते उन्हें हाशिए पर धकेल दिया जाना सामान्य बात है. पर ज्यवादियों की ओर से मान का विरोध इस मायने में अहम है कि केंद्र के प्रति सख्त रुख अपनाने और उग्रवादियों के निरंतर मान-मनौवल

गवजूद उनका यह हश्र हुआ है. उग्रवादी नेता गुरबचन भोजाहल की अगुआई वाले एक गुट ने सिह मित स्टुडेंट्स फेडरेशन (मंजीत गुट) के मिक्रिय समर्थन से प्रधानमंत्री की पेशकश को अनुकूल जवाब दिया भी पर उसकी कि यह थी कि चंद्रशेखर सिखों से वित्वीत शुरू करने के लिए संसद की भेगूरी लें. यह मान की गुरू की गई विक्या को नकारने के लिए था.

हेंसरी तरफ खुद मान की अगुआई में तीन प्रमुख अकाली धड़ों—मान, बादल कीर विभागावाल के बीच बहुप्रतीक्षित किकरण की चालों ने उनकी पार्टी के

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri भीतर हो दरारे पैदा कर दी. इस बीच, सांसद उनके प्र

अकाली दल में पुराने खिलाड़ी, जो पिछले ही महीने मान की अगुआई में विलय के लिए रजामंद हो गए थे, अब पांव पीछे सींचने लगे हैं. अकाली दल (बादल) के एक नेता ने कहा भी, "मान की अपनी स्थिति चूंकि अनिश्चित है इसलिए विलय के आसार नहीं दिखते."

और फिर, तिमलनाडु के पूर्व राज्यपाल सुरजीत सिंह बरनाला के लौट आने से अकाली दल (लोंगोवाल) में फिर से जान पड़ने की संभावना है. तोता सिंह के कमजोर संरक्षण में उसने मान के आगे घुटने टेक दिए थे. बरनाला के निकट सहयोगी कैप्टन कंवलजीत सिंह ने कहा, "पार्टी आगे क्या करेगी, इस पर सांसद उनके प्रभाव से निकल गए हैं. मुखिदर सिंह और गुरतेज सिंह जैसे कभी के संगी-साथी भी अरसे से उनसे किनाराकशी कर चुके हैं. गैर-राजनैतिक गुट भी उनसे दूरी बनाए रखते हैं. पंजाब मानवाधिकार संगठन के अध्यक्ष हरिंदर सिंह खालसा का कहना है, "जिस तरह मान पूर्व शर्ते रखे बगैर प्रधानमंत्री से बातचीत में कूद पड़े, उससे लगता है कि वे जल्दबाजी में हैं." प्रेक्षकों का मानना है कि वे राजनीति में भी नौसिखुए हैं और परस्पर विरोधी रुख अपनाते हैं मुश्किल में उग्रवादियों का दामन थाम लेते हैं, नहीं तो अलग रहते हैं.

मजे की बात यह है कि पत्रकारों के साथ गुफ्तगू में वे अपनी भूमिका की

शरद सक्सेना



पुनर्विचार चल रहा है."

शिरोमणि गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व अध्यक्ष गुरचरण सिंह तोहड़ा की भूमिका रहस्यमय बनी हुई है. पिछले पखवाड़े खुद तोहड़ा की अध्यक्षता में हुए एक राजनैतिक सम्मेलन में उग्रवादियों को बातचीत का अधिकार दिया गया. सम्मेलन में पारित प्रस्ताव में किसी दूसरे को यह अधिकार देने से रोकने का साफ मतलब मान के पर कतरना है.

इन सभी घटनाओं ने मान के लिए मूक्ष्रिकलें खड़ी कर दी हैं. राजदेव सिंह, अतिंदरपाल सिंह, बिमल कौर खालसा और राजिंदर कौर बुलारा सरीखे पार्टी

मान अलग-थलग पड गए लगते हैं उग्रवादियों से चंद्रशेखर के साथ बातचीत की अपील पर तीखी प्रतिक्रिया हुई

तुलना अक्सर हेनरी किसिंजर (प्रधानमंत्री के साथ बातचीत के मामले में) और महाराजा रणजीत सिंह (अकाली एकता कायम करने के मामले में) के साथ करते हैं. यह बात दीगर कि ऐसी अहंकेंद्रिता आखिरकार उस थोड़ी-बहुत लोकतांत्रिक कार्यशैली पर

कुठाराघात करेगी जो उन्होंने जेल यात्रा के दौरान विकसित की थी.

बहरहाल, मान को चुका हुआ तीर मान लेना समय पूर्व अनुमान होगा. अपनी सभी खामियों के बावजूद वे राजनैतिक तौर पर एकमात्र सक्रिय सिख नेता हैं. इसके अलावा, उन्हें 'पंजाब बचाओ मोर्चा' का समर्थन भी हासिल है जो गैर-सिखों के काफी बड़े वर्ग की हिमायत का दावा करता है. पर इसमें संदेह नहीं कि उन्हें हाशिए पर धकेलने की प्रक्रिया तेज होती जा रही है और पंजाब पर एक बार फिर राजनैतिक शून्यता का खतरा मंडरा रहा मध्य प्रदेश

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri घटना के पहले ही विचार किया महोला लेकिन मुख्यमंत्री पटना इस आरीप की

कायदा-कानून अपने हाथ में

भाजपा कार्यकर्ता मारधाड पर उतरे



मध्य प्रदेश में कानून और व्यवस्था के अंधाधंध उल्लंघन के मामले इसी वात की ओर संकेत करते हैं कि स्ंदरलाल पटवा सरकार पर धीरे-धीरे

भाजपा कार्यकर्ताओं का, जो अनुशासन के लिए जाने जाते हैं, नियंत्रण बढता जा रहा है. भाजपा के सत्ता में आते ही पार्टी कार्यकर्ताओं ने कानून अपने हाथ में लेना शुरू कर दिया. और वे वरिष्ठ अधिकारियों पर प्राय: हमले करने लगे. यहां तक कि थानों पर भी धावा बोलने लगे कम-से-कम दो मामलों में तो उन पुलिस अधिकारियों का ही तबादला कर दिया गया जिन्होंने अपराधियों को पकड़ने की कोशिश की.

खंडन करते हैं कि प्रशासन भाजपा कार्यकर्ताओं की हिसा का मुक दर्णक बना हुआ है. उन्होंने कहा, ''इस तरह के मामलों में कानून किसी को नहीं बख्शेगा.'' लेकिन भिड की घटना ने मुख्यमंत्री के दावे को खोखला साबित कर दिया है. वहां के पूलिस अधीक्षक विवेक जौहरी ने एक थाने पर

हमला करने और हिरासत से एक व्यक्ति को छुडा लेने के लिए जब विधायक मुन्ना सिंह भदौरिया, भिड विकास न्यास के अध्यक्ष अवधेश सिंह कशवाहा और जिला पार्टी इकाई के अध्यक्ष केशव सिंह समेत 13 भाजपा कार्यकर्ताओं के खिलाफ मामले दर्ज किए उनका तवादला बटालियन कमांडेंट के रूप में असम कर दिया गया.

जौहरी ने जब मामले दर्ज किए तो उन्हें हटाने के लिए वरिष्ठ पार्टी नेता तूरंत भोपाल पहुंच गए. जौहरी के तबादले के बारे में मुख्य सचिव आर.पी कपूर कहते हैं, "उनके तबादले के बारे में

चका था" लेकिन अभियुक्तों में में कि को गिरफ्तार नहीं किया गया है. को घटनाएं भी यह दर्शाती हैं कि भाक कार्यकर्ताओं की कितनी चलती है:

► पिछले महीने रायपुर जिले में नाल विव में मंड के बीडीओ ए.कुरेशी ने जब पंचायत चुनार होते हैं के लिए एक भाजपा नेता का नामांकन का विवासियों ने

रद्द कर दिया तो भाजा , पिछले स कार्यकर्ताओं के एक दलः अप विधाय उनके दफ्तर में उन ए ज़ं में सिम हमला कर दिया. क्रेजींश क्रांगी आर विरोध में इस्तीफा गमने झापड हे चि कराए प मुख्यमंत्री अनुसार इस मामले दे स्वपर नहीं समझौता हो गया है.

वर्षकर्ताओं ने

बता कर दि

त्रम हो गा

जीवना को वि

, 30 जनव

विपक्ष क

प्यक्तिओं वे स्ता है तो उ

में बल्कि तवा

बनता दल

गाते हैं, "भ

खंडिवीजनल

वेकिन पुरि

बले की हिम

मांकि उन्हें स्ट

ग मंरक्षण प्राप

गहिर है विकर्ताओं क

और अधि

छिले माल पत

गर भाजपा क

हिस्ट्रीज डेवल

नेतेनक विनो

षा और उन्हें

शहाएम अ

कायत की

वेमा की. इ

व्यमंत्री ने

जीमाणन

<sup>होयंक</sup>तांओं

किया जाने

मा" जाहिर

गरीं कार्यकर्ता

भीय कर रहे

वेना हुआ है.

 पिछले महीने ही व्यक्तेवक संघ विक्री कर अधिकारियों ने किं में लहर नीमच थाने में रिपोर्ट छं हंगी सिंघल कराई कि जब वे एक फ्रं है कि सिंघल के खातों की जांच कर है एमिट देने से थे तो भाजपा कार्यकर्ताओं हे विरोध में सि

सारंगः बचाव पर उतरे

ने उन पर हमला कर दिया. एफआईआर में संबारी हडत पार्टी की प्रखंड इकाई के अध्यक्ष गटरला गेनिएस्तार न शर्मा का भी नाम था.

पिछले पखवाडे इंदौर में स्थानीय ने गर कोई स

आंध्र प्रदेश

### सपना साकार

व के गरीबों का एक ही सपना होता है जमीन का एक टुकड़ा अपना हो. आंध्र प्रदेश में भूमि वितरण की सक्रिय मृहिम से यह सपना कुछ हद तक पिछले पखवाड़े पूरा होता दिखा. राज्यपाल कृष्णकांत की अध्यक्षता में हए समारोह में करीब 140 परिवारों के बीच 81 एकड़ जमीन बांटी गई.

'इब्राहिमपत्तनम तालुका व्यवसाय क्ली संघम' के लिए यह अवसर पांच साल पुरानी मुहिम की सफलता का था. इससे पता चलता है कि लोग प्रशासन को जमीन वितरण के लिए शांतिपूर्ण तरीकों से कैसे मजबूर कर सकते हैं. संघम की गीता रामस्वामी इत्राहिमपत्तनम इलाके के बंधुआ मजदूरों के बीच 80 के दशक में काम शुरू किया था. वे और उनके वकील पति सीरील रेड्डी 20,000 बंधुआ मजदूरों को मुक्त कराने में सफल रहे हैं. उन्होंने अदालतों और जिला तथा राज्य प्रशासन के सामने मामले उठाने का रास्ता चुना.

यह आंदोलन सिर्फ रंगारेड्डी जिले तक

ही सीमित है. रामस्वामी बताती हैं, "लोग संघम का काम फैलाने की मांग रहे हैं. लेकिन कार्यकर्ताओं में उत्साह के अभाव में आंदोलन पड़ोसी जिलों में नहीं फैल सका."

संघम ने सिर्फ मंत्रियों नेताओं वादाखिलाफी उजागर करने तक ही अपने कार्यकलाप को सीमित नहीं रखा. उसने साथ ही

हरिजन महिलाओं को रोजगार देने के लिए नौ करघा केंद्र लगाने और दूसरी 58 महिलाओं को काम देने के लिए सामाजिक वानिकी परियोजना लगाने की मांग पेश की. रामस्वामी कहती हैं, "यह सब उपयोगी तो रहा पर इससे खेतिहर मजदूर आण्वस्त हो गए कि वे अपनी जमीन के विना स्थिति वेहतर नहीं कर सकते." इस तालुके में जमीन की मिल्कियत की जांच से संघम ने पाया कि क्छ जमींदारों ने कानूनी सीमा के ऊपर 12,000 एकड़ तक जमीन पर कब्जा कर

आंदोलन के प्रयास सफल साबित हए.



जमीन के पट्टे बांटते कृष्णकांत

पट्टा वितरण के एक दिन पहले मुख्यमंत्री एन. जनार्दन रेड्डी ने घोषणा की कि रंगी-रेड्डी जिले में साल भर में 35,000 एकड़ तक जमीन का वितरण किया जाएगा.

राज्य में कुछ लोगों का विश्वास है कि अब स्वयंसेवी संगठन इस तरह के और अभियान छेड़ेंगे. हिंसा में यकीन रहाने वाले नक्सलवादियों के विपरीत उन्होंने यह समझ लिया है कि सरकारी सूचनाओं और संस्थाओं के सहारे भी भूमिहीनों के कल्याण के काम किए जा सकते हैं

-अमरनाय के. मेतन

36 इंडिया टुडे • 15 मार्च 1991

र किया के बहोला की अगुआई में पार्टी में के के दण्यर परिषद के दण्यर एक में में कि विवर्ध के दफ्तर पर ग है. कि क्व कर दिया जिससे चार कर्मचारी कि भाका हुत हो गए अभी तक किसी भी त्रीवृक्त को गिरफ्तार नहीं किया गया है ले में नको विषे में मंडोला कहते हैं, 'जब मैने वायत चुना हेवत देते से इनकार कर दिया तो नामांकन के विया ने मुझ पर हमला कर दिया." तो भाज , पद्धले साल स्वतंत्रता दिवस पर एक दल: <sub>श्रवण</sub> विधायक नरेंद्र णर्मा ने रायपुर में उन म द्वि में सिमगा के मुख्य नगरपालिका या. कुरेंगीर क्रांकारी आर एस. लालवानी को सबके इस्तींका है अपने आपड़ मारा क्योंकि समारोह के क्ष किराए पर लिया गया लाउडस्पीकर मामले दे स्व पर नहीं पहुंचा.

, 30 जनवरी को भाजपा और राष्ट्रीय महीने हैं अपनेवक संघ के कार्यकर्ताताओं के भिड धेकारियो है कि में लहर के सवडिवीजनल अफसर ां रिपोर्ट हां तेनी सिंघल से हाथापाई की. वजह यह वे एक फ्रां है कि सिंघल ने 400 लिटर डीजल का नांच कर ऐ लीम्ट देने से इनकार कर दिया था. घटना कार्यकर्ताओं हेविगेध में सिंघल छुट्टी पर चले गए और कआईआरमे संज्ञारी हड़ताल पर. किसी दोषी व्यक्ति क्ष गट्ट्ला गंगिरफ्तार नहीं किया गया है

यमत्री है

गकांत

मख्यमंत्रा

कि गा

00 एकड

ास है कि

के और

न रहते

उन्होन

मूचनाओं

हीनों के

ाएगा.

 विपक्ष का आरोप है भिंड क्षेत्र में प्थानीय ने अर कोई सरकारी अधिकारी भाजपा र्ष्यकर्ताओं के कहे अनुसार काम नहीं ला है तो उसे न सिर्फ शारीरिक हमले विक्त तवादले की भी धमकी दी जाती ज्ञा दल विधायक गोविंद सिंह आरोप णतें हैं, "भाजपा के गुंडे पहले ही दो विज्ञीजनल अफसरों पर हमले कर चुके विका पुलिस उनके खिलाफ कार्रवाई को हिम्मत नहीं जुटा पा रही है किं उन्हें स्वास्थ्य राज्यमंत्री राजेंद्र सिंह ग मंखण प्राप्त है."

<sup>शहिर</sup> है, तथाकथित अनुशासित <sup>मुक्</sup>तांओं को नेताओं के आंख मूंदे रहने और अधिक प्रोत्साहन मिल रहा है कि माल पटवा के सत्ता में आने के तुरंत विभाजपा कार्यकर्ताओं का एक दल एग्रो स्तिन डेवलपमेंट कार्पोरेशन के प्रबंध तित्रक विनोद चौधरी के चेंबर में घुस ण और उन्हें अपमानित किया. चौधरी ने गाफिसर्स एसोसिएशन कायत की जिसने इस घटना पर चिंता भी की इस बारे में पूछे जाने पर भिमित्री ने कहा, "वे बेमतलब ही भौतिगाणन के पास गए. मैं अपने किताओं की सराहना करूंगा कि का पर भी उन्होंने संयम बनाए भा, जाहिर है, इस तरह के प्रोत्साहन से को कार्यकर्ता पूरे राज्य में अपने तरह स भीर कर रहे हैं और प्रशासन मूक दर्शक

### आखिर दयनीय हुए

भारतीय राजनैतिक परंपरा की पवन चक्की को गैतान समझकर जब प्रधानमंत्री चंद्रशेखर तलवार भांज रहे थे तो अचानक ही हम बुदबुदाने

लगे, "बहुत खूब चंद्रशेखर! और तेजी से तलवार भांजी." लेकिन इसके लिए हमें अपने पूराने नजिरए को बदलना पड़ा. हमें यही कहकर इस शस्स से घुणा करना सिखाया गया था कि वह अक्खड़, महत्वाकांक्षी, पड्यंत्रकारी, पीठ में छुरा घोंपने वाला और धोखेबाज है. वही शख्स जब गद्दी पर बैठा तो भारत को स्वर्णयुग में ले जाने की बातें करने लगा. लेकिन एक माह में हमने चंद्रशेखर को जो देखा, सूना, उससे वे हमें शेखचिल्ली ही लगे. उन्होंने कदम उठाए. मसलन, उन्होंने पंजाब और कश्मीर की समस्याएं मूलझाने के लिए नए रास्ते

सूझाए. अमेरिकी विमानों को ईधन दिया. राजीव गांधी के उलट, जिनके प्रधानमंत्रित्वकाल में आप आत्मसंदिग्ध हो गए थे, और विश्वनाथ प्रताप सिंह के उलट, जो मौन का पाखंड करने लगे थे, चंद्रशेखर की उद्विग्नता और पीठ पर धौल जमाने वाली कामरेडी ने आपको प्रभावित किया. आखिरकार सभी भारतीयों को छुपे रुस्तम जो पसंद हैं. और जब पूरा देश जातीय

और धार्मिक नफरत की चपेट में आने वाला था, तभी इस शख्स ने प्रधानमंत्री पद के लिए दावा किया और सभी की नजरों में इसका कद बढ़ गया.

चंद्रशेखर के शब्द ही उनकी भूमिका की पटकथा हैं. उन्होंने अखबारों को भाषण पिलाया, "आज की दुनिया में हम धारा के साथ बह जाते हैं. जब तक कोई सत्ता में नहीं आता, उसकी बात नहीं मुनी जाती. उलटे उसका उपहास किया जाता है. लेकिन समाज जब उसे मान्यता देने लगता है तो समाचार जगत भी मान्यता देना शुरू कर देता है."

एक दूसरे अवसर पर उन्होंने कहा, "मानव प्रगति का इतिहास विरोध और

दुश्मनी का इतिहास रहा है.'' वे अपनी राजनैतिक और भावनात्मक यात्रा के चारण सरीखे थे जो हमें उनके दूसरे पक्ष की याद दिलाता है. मसलन, 60 के दशक में इंदिरा गांधी और उनके सिंडीकेट आकाओं के खिलाफ उनकी भयानक लड़ाई. इमरजेंसी का विरोध करने के लिए 19 माह का कारावास. जनता पार्टी के अध्यक्ष के रूप में उनका मोरारजी देसाई की निरंकुशता को मानने से इनकार कर देना.

लेकिन अचानक ही यह सब गुजरे जमाने की बात हो गई. कुछ ही हफ्तों में चंद्रशेखर की प्रगति का इतिहास विनम्रता और परवशता का इतिहास बन गया. सत्ता ने विरोध के माद्दे को कुंद कर दिया है. चंद्रशेखर आज अपनी कुर्सी से चिपके हए दयनीय व्यक्ति हैं क्योंकि उन्होंने शासन करने की अपनी ताकत खो दी है. राजीव गांधी और उनकी पार्टी उनका अपमान पर अपमान किए जा रही है. भला-

राजीव और उनकी पार्टी के सामने घुटने टेककर चंद्रशेखर दयनीय शस्स लगते हैं और हमारी समझ से इस दुर्भाग्यपूर्ण समझौते ने खतरनाक रूप ले लिया है क्योंकि अंततोगत्वा सत्ता का स्वाद चखने वाले सभी बागियों की यही त्रासदी होती है. ऊपर से वे भले ही हमें लेकिन भीतर से वे दुखी रहते हैं क्योंकि सत्ता से चिपके रहने के कारण उनकी प्रतिष्ठा, मानसिक शांति खत्म होती जाती है.

- नरेंद्र कुमार सिंह

बाबरी मस्जिद एक्शन कमेटी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eक्किक्किपाविवाद छिड़ा हुआ है. मुलायम

### मतभद उजागर

### प्रमुख सदस्य जावेद हबीब के इस्तीफे से करारा झटका

-सी ज्वलंत राष्ट्रीय समस्या के सा जवलत राज्यान अगर समाधान की कोई कोशिश अगर राजनीतिकों के निहित स्वार्थों की पूर्ति नहीं करती तो उसका बेकार जाना निश्चित है. अखिल भारतीय बाबरी

मस्जिद एक्शन कमेटी और विश्व हिंदु परिषद (विहिप) में जब अयोध्या मंदिर-मस्जिद विवाद को हल करने के लिए बातचीत शुरू हुई तो लोगों में उम्मीदें जाग उठी. इससे सांप्रदायिक तनाव में भी कमी आई

पर राजनीतिकों के प्रभूत्व को खतरा पैदा हो गया. सो, उन्होंने तत्काल कदम उठाए. विहिप की चमक फीकी करने के लिए चंद्रास्वामी तैनात किए गए. वे कुछ नहीं कर पाए. और अब बाबरी एक्शन कमेटी में गंभीर मतभेद पैदा कर दिए गए हैं. इसके एक प्रमुख सदस्य जावेद हबीब ने 'राजनैतिक दखलंदाजी' के विरोध में इस्तीफा दे दिया है. उन्होंने जनता दल सांसद और जामा

मस्जिद के णाही इमाम के करीबी मूहम्मद अफजल पर 'बातचीत तुड़वाने के लिए अरुण नेहरू और आरिफ मुहम्मद खां की ओर से काम करने' का आरोप लगाया है.

दरअसल, बाबरी एक्शन कमेटी में मतभेद जनता दल के विभाजन का ही प्रतिबिंब है. इसके ज्यादातर सदस्य वी.पी. सिंह और उत्तर प्रदेश के

मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव के कट्टर समर्थक थे. पर दोनों नेता परस्पर विरोधी लेमों में चले गए, जिससे बाबरी एक्शन कमेटी में भी फूट पड गई. इसके कुछ सदस्यों ने मुलायम सिंह के कैबिनेट महयोगी आजम लां को निकालने के लिए जब मुहिम छेड़ी तो हबीब ने इसका विरोध किया. वे कहते हैं, 'मूझ पर मुलायम सिंह और आजम खां को बदनाम करने के लिए दबाव डाला गया."

लेकिन हबीब के इरादों पर उनके कुछ साथी उस समय शक करने लगे जब उन्होंने विहिप से बातचीत जारी रखने पर जोर दिया. उनके विरोधियों ने तो उन्हें 'गहार' तक करार दे दिया. अफजल के संपादकत्व में उर्दू दैनिक अखबार-ए-नौ इस मृहिम का अगुआ बना. अफजल कहते

अयोध्या विवाद पर बातचीतः मतभेद रहे

हबीब और अफजल के बीच की प्रतिद्वंद्विता ने बाबरी कमेटी को बांट दिया है जिससे उसकी मोल-तोल की क्षमता घटी है



हैं, "हबीब तो बिकाऊ माल हैं. उनके विहिप और भाजपा नेताओं से संपर्क है."

अफजल और हबीब की प्रतिद्वंद्विता ने समूची बाबरी एक्शन कमेटी को लपेट में ले लिया. ये दोनों वी.पी. सिंह के करीबी थे और उनमें राज्यसभा का टिकट पाने की होड़ थी. पर बुखारी की सिफारिश पर अफजल बाजी मार गए. हबीब ने चंद्रशेखर की ओर रुख मोड़ा.

अब बाबरी एक्शन कमेटी में वी.पी. सिंह और मुलायम सिंह के वफादार धड़ों का काम किया था.

विहिप के खिलाफ लडाई में बाबरा एक्शन कमेटी ने अपने भीतरी मतभेद उजागर करके मोल-तोल की अपनी क्षमता को निश्चित ही कमजोर किया है. इसके साथ ही बातचीत के जरिए मंदिर मस्जिद विवाद सुलझने के आसार भी घट गए हैं. बहरहाल, आइंदा ऐसी किसी बातचीत में शामिल होने वालों को इस चेतावनी पर ध्यान देना राजनीतिकों से सावधान.

समर्थक गृट का आरोप है कि विहिप स बातचीत में अड़ंगा लगाया गया ताकि कामयाबी का श्रेय चंद्रशेखर को न मिले इमाम के करीबी सूत्रों का कहना है कि मौजदा सरकार बाबरी कमेटी को भटकाने की कोशिश कर रही है.

हबीब के अलग-थलग पड़ जाने से मुसलमान वी.पी. सिंह को तरजीह देंगे. पर हबीब के इस्तीफे ने बाबरी एक्शन कमेटी को झटका जरूर दिया है. नजिए से मध्यमार्गी हबीब ने मुसलमान नेतृत्व और उदार हिंदू बुद्धिजीवियों के बीच पुल

कानून की बावजूद मुर सरकार संव लोकसभ

जद (दि

के बाद से एक नया मे इल और व

मामडा अं

विधानसभाद मम्मुब प्रस्तुत हतीन पूर्व मह मंडेला वनता दल दलबदल का कांग्रेस के सु गेविका में उ वेलावा जनत भी मामिल <sup>बद</sup> विद्रोहिय

जनता दर

कि 5 नेवंब भ

निष्कासित व

भव्या ५५ से

विधानसभाष्यक्ष के सामने याचिकाओं

पर सुनवाई शुरू हो गई है. कुछ लोग

आरोप लगाते हैं कि विधानसभाष्यक्ष

पक्षपात करेंगे पर भाभड़ा कहते हैं, "मैं

इस मेथमेटिक्स में अपनी साख को दांव

मंत्रिमंडल में जनता दल (दि) के 26 में

से 16 विधायकों को शामिल करने की भी

तीखी आलोचना करते हैं. भाजपा के

विधायक भी जद (दि) की लंबी सूची से

नाराज हैं. नाराजगी भाजपा के जयपूर

राष्ट्रीय अधिवेशन में भी जताई गई. इस

पर पार्टी के पूर्व अध्यक्ष लालकृष्ण

आडवाणी ने भी नाखुशी जाहिर की थी.

हां में हो या ना में, शेखावत की कुर्सी

हिलती नहीं लगती. उनके लिए 'चित भी

मेरा, पट भी मेरा' वाली उक्ति चरितार्थ

बहरहाल, विधानसभाध्यक्ष का फैसला

इंका और जनता दल के सदस्य राज्य

पर नहीं लगा सकता."

नायम

हम स

ताकि

मिले.

है कि

ने से

देंगे.

वशन

जरिए

नेतृत्व

न पुल

फजल

विरी

तभेद

मपनी

ा है.

दिर-

घट

कसी

इस

हिए:

र रांच

को

### बेदखल होने का खतरा

### बद (दिग्वजय) विधायकों के दलबदल के मामले ने तूल पकड़ा



उनकी जान सांसत में है. राजस्थान में भाजपा सरकार को सहारा देने जनता (दिग्वजय) के विधायकों पर दलबदल

जन्त की तलवार लटक रही है. इसके वावजद मुख्यमंत्री भैरों सिंह शेखावत की मरकार संकट से कमोवेश उवर गई है.

लोकसभा अध्यक्ष रिव राय के फैसले के बाद से राज्य में दलवदल प्रकरण ने क नया मोड़ ले लिया है. राज्य में जनता ल और कांग्रेस की ओर से दलबदल के याचिकाएं मामल चार

निष्कासित पांच सदस्यों के अलावा शेष 15 संदस्य दलबदल कानून के तहत अयोग्य हो गए थे. अन्य छह विधायकों की भी स्थिति यही रही है.

व्यास ने अपनी दलबदल याचिका के अलावा यह आरोप भी लगाया है, "जनता दल (दि) की ओर से विधानसभा सचिवालय के संबंधित रिकॉर्ड में एक पत्र पुरानी तारीख में शामिल करवा दिया गया है." दिग्वजय सिंह के दस्तखत वाले 6 नवंबर 1990 के पत्र में 6 अन्य विधायकों के नए गूट में शामिल होने की जानकारी दी गई है. इस पत्र को व्यास फर्जी बताते हैं.

> बजट सत्र शुरू होने से तीन दिन पहले 19 फरवरी को राज्यपाल देवीप्रसाद चट्टोपाघ्याय को एक ज्ञापन दिया गया. इसमें गृहमंत्री दिग्विजय सिंह, ऊर्जामंत्री रामनारायण विश्नोई, पश्रपालन राज्यमंत्री देवी सिंह भाटी और निर्वाचन राज्यमंत्री नफीस अहमद पर विधानसभा सचिवालय रिकॉर्ड में हेराफेरी करने का आरोप लगाते हए उन्हें मंत्रिपरिषद बरखास्त करने की मांग की गई है.

इसी के चलते विधानसभा में राज्यपाल को अभिभाषण नहीं पढने दिया गया. व्यास ने कहा, "राज्यपाल ऐसे अभिभाषण को नहीं पढ सकते जिसे तैयार करने में गृहमंत्री के रूप में एक ऐसे व्यक्ति का योगदान रहा है, जिसने एक आदतन अपराधी की तरह गंभीर आपराधिक कृत्य किया है." 22 फरवरी को जब चट्टोपाध्याय सदन में अभिभाषण पढने के लिए खडे .हए तो उनके आगे से माइक हटा दिया गया टेबिल लैंप गिराया गया और अभिभाषण की मूल प्रति को छीनकर फाड दिया गया.

शेखावत कहते हैं, "रिकॉर्ड में कोई हेराफेरी या धोखाधडी नहीं की गई.'' जनता दल (दि) नेता दिग्वजय सिंह कहते हैं, "विधानसभाष्यक्ष के सामने



भाभड़ा और दिग्विजय सिंहः आरोप

<sup>विधानस</sup>भाष्यक्ष हरिशंकर भाभड़ा के भूत प्रस्तुत की गई हैं. इनमें जनता दल है तीन पूर्व मंत्रियों डॉ. चंद्रभान, गोपाल भिह मंडेला और रामेण्वर दयाल यादव ने जिता दल (दि) के 21 विधायकों पर <sup>सिवदल</sup> का आरोप लगाया है जबकि भोम के मुरंद्र व्यास की ओर से दायर क्षिका में जद (दि) के 26 विधायकों के भीवा जनता दल विधायक फतेह सिंह भी मामिल किए गए हैं जो 5 नवंबर को कर विद्रोहियों की बैठक में थे.

वनता दल की याचिका में कहा गया है कि 5 नवंबर को पांच विद्यायकों को किम्मित करने के बाद दल की सदस्य के भा करन के बाद दल ना अतः 55 में घटकर 50 रह गई थी. अतः

### फार्म IV (नियम 8 देखें)

होती है.

- प्रकाशन की आवर्तिता मुद्रक का नाम त्या नारतीय नागरिक हैं?
- (अगर विदेशी हों, तो मूल वेश का नाम)
- प्रकाशक का नाम क्या पारतीय नागरिक हैं? (अगर विवेशी हों, तो मूल
- संपादक का नाम क्या भारतीय नागरिक है? (अगर विदेशी हों, तो मूल वेस का नाम)
- a. उन लोगों के नाम और पते जो समाचार पत्र के मालिक हों, या जिनके पास कुल पूंजी का एक फीलवी से अधिक हो.
- समीतः वर्षे विल्ली-१४३३००

तान् नहीं के-क्योंक, क्यास

: नई दिल्ली

ः अवन पुरी

सामू नहीं

सापू क्षेट निवित्र मीडिया

इंडिया लिखिले

बनाट सर्वेस, नहीं दिल्ली-191001

à mis.

ः अवन पुरो

: अस्य पुरी

: पालिक

: gi

- कुल पूंजी में एक फीसदी से अधिक की दिस्सेदारी रखने वाले सेपरहोत्वरों के नाम और वते:
- बी अरब पुरी, ए-८ वालम बार्च, बसंत विहार,
- 2. बीमती रेसा पुरी, ए-६ वासब बार्व, बसंत विकृत
- भारत अंकुर पुरी. (गवासिय), ए-८ पानव मार्थ, वर्तत विद्वार, गई दिल्दी. गीमती वदिरा पुरी, कावतेट, ८ कालों एकेन्द्र, वेदियन, ऑसारियों के-2 जी.मी.मी.की.कवाडा.
- भीमती मधु बेहन, ती-19 माल्या मार्च,
- नई विरुप्ती

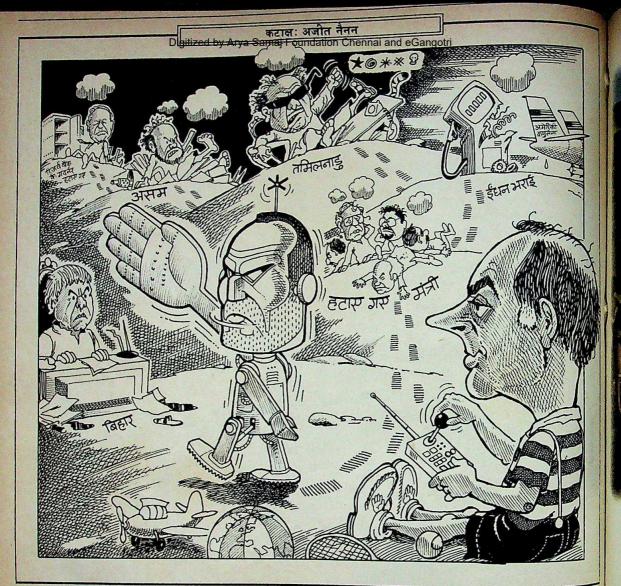
मा विस्ताः

द असि इंडिया इंबेस्टमेंट कार्योरेशन प्राइवेट लिक्सिटेंड,
के-स्वांक, कहार सर्वेतः गई दिल्लीः

एल. एम. डिस्टिस्यूटर लिमिटेंड, के-स्वांक, कहार सर्वेत, गई दिल्लीः

भै, अरम पुरी बोसित करता हूं कि क्रयर दिए एए स्वीरे भेरी जानकारी और मान्यता के अनुसार सही हैं.

विमान: 1 मार्च, 1991



#### सनद रहे

तलाक हुआः इंका सांसद उमा गजपति राजू और तेलुगु देशम के पूर्व सांसद आनंद गजपति



राजू वैवाहिक बंधन से मुक्त हो गए हैं. तलाक की मंज्री विशाखापत्तनम के प्रधान अवर न्यायाधीण की अदालत ने दी. दोनों ने पिछले साल अदालत में आपसी रजामंदी से तलाक

के लिए अर्जी दी थी. उमा के कहने पर आनंद इंका में शामिल हए थे.

प्रतिबंधः अदालत ने टेल्को, इंदौर के एक डीलर और कलकत्ता के एक मुद्रक पर 1991 का एक कैलेंडर छापने और वितरित करने पर रोक लगा दी है. म.प्र. युवक इंका के सचिव की याचिका के मुताबिक इसके पन्ने पर राजीव गांधी का मजाक उड़ाया गया था.

शुरुआतः केंद्र सरकार ने 'इकोमार्क' चिन्ह जारी करने का फैसला किया है. उन घरेल और उपभोक्ता वस्तुओं को प्रमाण पत्र और चिन्ह प्रदान किए जाएंगे जो पर्यावरण संबंधी क्छ कसौटियों के साथ-साथ भारतीय जरूरतों पर भी खरी उतरती हों

इजाजत मिलीः पाकिस्तान सरकार ने पेशावर के निकट मरी की पहाड़ियों में फिल्म 'हिना'

की शूटिंग की मंजूरी दे दी है. प्रस्यात फिल्मकार राज कपूर का आखिरी सपना मानी जाने वाली इस फिल्म का निर्देशन उनके वेटे रणधीर कपूर कर रहे हैं जिनके लिए यह चुनौती

समान है. इस फिल्म की नायिका पाकिस्तानी अदाकारा जेवा विस्तियार हैं:

सम्मानितः एडिनबर्ग (स्कॉटलैंड) के रॉयल कॉलेज ऑफ सर्जन्स ने मदर टेरेसा को मानद

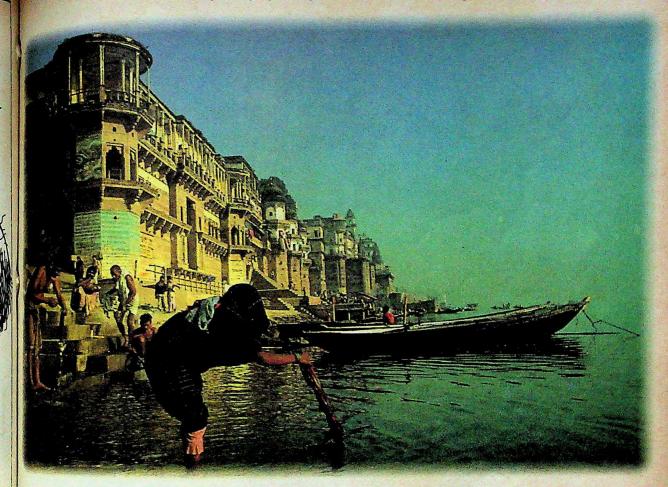
फेलोशिप प्रदान की यह सम्मान मानवता के प्रति मदर टेरेसा की सेवाओं के लिए दिया गया. नोवेल पुरस्कार विजेता मदर टेरेसा ने फेलोशिप की यह उपाधि रॉयल कॉलेज की



छठी विदेशी बैठक के उद्घाटन समारोह के अवसर पर ग्रहण की. यह बैठक भारत में पहली बार हई.

मंजूरी मिली: सेंसर बोर्ड ने निर्माता रमेश शर्मा की विवादास्पद वीडियो व्यंग्य फिल्म तड़क धम धम को पास कर दिया है आपित थी कि फिल्म प्रधानमंत्री और उप-प्रधानमंत्री की अवमानना करती है.

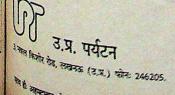
40 इंडिया टुडे • 15 मार्च 1991



### अतीत की तलाश उन्हें यहाँ लाती है.... जीवन को नए अर्थ दे जाती है।

31 वर्षीय जर्मन परमाणु वैज्ञानिक रॉल्फ़ स्मिट तीन माह के लिए भ्रमण पर आये थे — पर अब तीन वर्ष बीत चुके हैं। वे बताते हैं, भारता भ्रमण अपने आप में अनूटा अनुभव है ही, लेकिन उत्तर प्रदेश तो बेजोड़ है, इस प्रदेश की पौराणिक, ऐतिहासिक और पारंपरिक पृष्ठभूमि जितनी अनूटी है उतनी ही मनभावन भी। वाराणसी के घाटों के भजन कीर्तन, झाँसी की रानी की वीर गाथाएं व बुन्देलखण्ड के काल्पिकर में तलवारों की झंकार....क्या कुछ नहीं है यहाँ! इलाहाबाद में संगम की पावनता, लखनऊ के नावाबों की अनोखी जीवन शैली व वास्पुकरमा, आगरा का सुन्दर ताजमहल और फ़तेहपुर सीकरी में शानो-शीकत से भरे मुगलकाल की भव्यता, सारनाथ में निर्वाण का पथ....कोने-कोने भे आकर्षण बसा है यहाँ। वैज्ञानिक होने के कारण मैं हमेशा ही जीवन में कुछ नया तलाशता आया है, मेरी तलाश का अन्त मिला है

भे भेरत में मुझे। सायद इसे ही मन की शान्ति कहते हैं, हमेशा-हमेशा के लिए।



मानद

रमेश फिल्म आपति नमंत्री



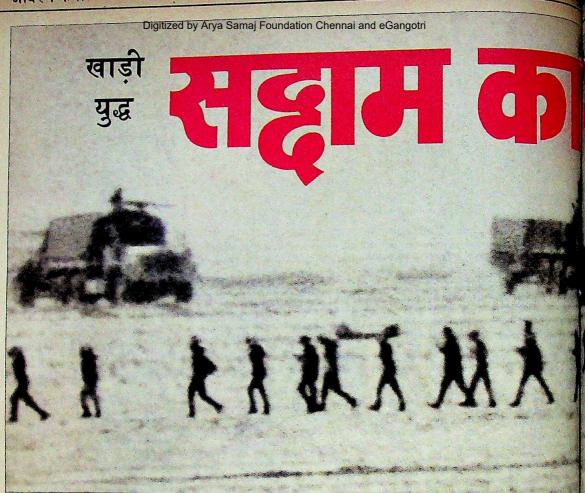


भितं अम्बर्क को: 44318, कर्ब की: 215458. करवाद दोन. अगर्मधानिकिताती! स्थानसम्बाधिक तेतुन स्वाबिक स्थानसम्बाधिक





CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



रिचम की संयुक्त सैन्य शक्ति को भी राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन को झुकाने में 40 दिन लग गए. कुवैत सर्वदा इराक का 19वां प्रांत बना ऐ और सद्दाम हुसैन के लिए बहुत महंगी पड़ी. इराक की फौजें कुवैत छोड़कर भाग रही हैं, इस दशा में सद्दाम की एकमात्र उम्मीर्ट कि

 ग यह रूप ले लेगी इसकी कल्पना सद्दाम हसैन ने नहीं की थी. जमीनी जंग शुरू होने के चंद दिनों के अंदर ही उनके किले वह गए, बहराष्ट्रीय सेनाओं ने उनके हमलावर हेलिकॉप्टरों, टैंकों और बमवर्षकों को

कमजोर साबित कर दिया. और हजारों इराकी सैनिकों को युद्धवंदी बना लिया. जंग में जुझते रहने का महाम हुसैन का आह्वान बगदाद रेडियो पर प्रसारित किया गया. लेकिन उनकी आवाज में निराशा भी झलक रही थी. तमाम वूलंदियों के बावजद क्वैत के लिए अंतिम लडाई सद्दाम की योजना के अनुरूप नहीं चल रही थी. और उम्मीद से पहले हथियार डाल दिए गए.

सद्दाम ने जीत की उम्मीद तो नहीं ही की थी लेकिन इतना जरूर सोचा था कि उनकी सेना बहराष्ट्रीय सेना को इस कदर तबाह कर देगी कि वे हमला बंद कर देंग सद्दाम ने दावा किया था कि "हम पांच हजार अमेरिकियों की मार लेंगे तो वे अमन की भीख मांगने लगेंगे."

लेकिन जब जमीनी जंग शुरू हुई तब यह जाहिर हो गय

कि अमेरिकियों को पछाड़ना इतन आसान नहीं है. अमेरिकी जनरलों व दृढ़ संकल्प का परिचय दिया नागरिकों की मौतों पर की अफसोस जाहिर नहीं किया गर् और इराक की आर्थिक तबाही व लिए कोई क्षमा याचना नहीं की गई जमीनी जंग की खबरें जारी करन पर जब अमेरिका ने प्रतिबंध लग दिया तब यह जाहिर हो गया ज्यादा लोग मारे भी गए अमेरिकी जनता इसे टीवी पर वर्ष देख सकेगी और युद्ध के खिलाई प्रदर्शन करने नहीं उतर पाएगी.

नेनगतार सिह हो 'नैतिक' ज

हाम सोच में कूदने व

मितिका की ओ

वा या कि ज

गमने मामने की

महाम मान

वैद्योंगत क

विक्ति हार वे

अमेरिकी है

े गोने से वर

गोका में वहुं

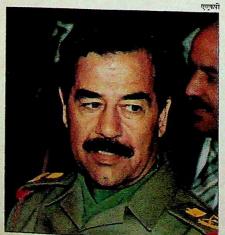
क्षितार कई अन

क्षिर मना ।

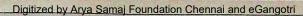
भीका की से

श्रीम की फीज

वेष्मान के इ भार महाम



44 इंडिया ट्रे • 15 मार्च 1991



# HUUI



उम्मीद हि कातार सिंह गर्जनाओं के बावजूद महज दो दिन की जमीनी जंग ही यह साबित करने के लिए काफी रही कि यह घातक बाजी इराक हो जीत हासिल कर लेने पर ही टिकी हुई है

### अमेरिकी संकल्प को समझने में सद्दाम की भूल

नरम दिखने वाले देश ने अपनी क्रूरता से सद्दाम को किस तरह सदमा पहुंचाया

्राम भोचते थे कि 'असली जंग' (सद्दाम के मुताबिक) भे में कूदने की अमेरिका में कुब्बत ही नहीं है, तभी शुरू में वे जिल्हा की ओर मे जमीनी हमले का इंतजार कर रहे थे. उन्होंने कि बहाजों, मिसाइलों की आसमानी लड़ाई एक बात है, कि मान के लड़ाई विलकुल दूसरी बात.

ांत बना ए

र कर देग रिकयों को

र हो गया

ना इतना

जनरलों व

य दिया

पर कोई

मया गया

तबाही के

तें की गई

ारी करते

वंध लग

गया कि

गए त

पर नहीं

खिलाप

एगी.

अभान के शाही महल में स्थित सहाम के नजदीकी सूत्रों के शही महल में स्थित सहाम के नजदीकी सूत्रों के यह समझने में बड़ी गलती की कि दोनों फौजों

की स्थिति में जो तकनीकी फर्क है उससे उनकी फौज के सामने क्या दिक्कतें आ सकती हैं. एक आला सूत्र ने बताया, "सद्दाम ने अमेरिका की उच्च तकनीक वाली फौज को यह कहकर खारिज कर दिया था कि अगर साइकिल चलाने वाले विएतनामी अमेरिका को हरा सकते हैं तो इराकी क्यों नहीं हरा सकते. उन्होंने दोनों स्थितियों के मूलभूत फर्क को नजरअंदाज कर दिया." विएतनामी लोग तो अपनी जमीन के लिए लड़ रहे थे जबिक इराकी कब्जे वाली जमीन के लिए.

विएतनामियों के पास छापामार लड़ाई लड़ने के लिए जंगल और दलदल थे, जबिक रेगिस्तान तो टैंकों के लिए आदर्श क्षेत्र है जहां दुश्मन के जंगी जहाज की नजर से कुछ भी छिपाया नहीं जा सकता. फिर, विएतनामियों के पास तमाम विपरीत परिस्थितियों के बीच भी लड़ाई लड़ने का इतिहास है, जबिक तीसरी दुनिया के जीवन स्तर के हिसाब से इराकी आरामदेह जिंदगी जी रहे थे.

मित्र देशों की बेरहम सेना, नौसेना और अत्याधुनिक हवाई ताकत के सामने सद्दाम हुसैन की फौजों को आखिरकार इन्हीं गलत धारणाओं का नतीजा भुगतना पड़ा.

#### Digitized by Arya Samaj Foundation Chematand eGangotri इज्राएल को सङ्कान में विफलता

इस यहूदी देश ने लड़ाई में न कूदकर सद्दाम के इरादे गड़बड़ा दिए

हाम ने सोचा था कि जैसे ही वे तेल अवीव पर अपनी पहली स्कड मिसाइल छोड़ेंगे, इज्जाएल जंग में कूद पड़ेगा और मित्र देशों की एकता टूट जाएगी. सहाम को यह भी उम्मीद थी कि अगर स्कड मिसाइले कामयाब न हुई तो वे इज्जाएल पर बमों से धावा बोलेंगे और इज्जाएल अपने लडाकू विमानों को

जॉर्डन की सरहद के पास भेजने पर मजबूर हो जाएगा. पा बहुराष्ट्रीय फौजों को आकाश पर नियंत्रण हासिल था. अब सहार के पास एक ही रास्ता बचा था—गैर-परंपरागत हथियारों के इस्तेमाल. पर मित्र देशों के बेरहम तेवर को देखते हुए यह आहित खेल का आखिरी दांव ही होता.

#### अरब एकता का भ्रामक एहसास

सद्दाम लोकप्रिय तो रहे मगर कामयाबी लायक समर्थन न जुटा सके

हाम की राजनैतिक रणनीति के पीछे का बुनियादी तर्क बहुत समझदारी भरा था. वे कई जोरदार-जानदार मुद्दों पर लड़ रहे थे. ये मुद्दे थे—फिलस्तीनी समस्या, अमीर अरब बनाम गरीब अरब और तीसरी दुनिया बनाम पश्चिम. और जैसे ही पश्चिमी सेनाएं अरब भूमि पर उतरीं, सद्दाम के प्रति अरब जनता का समर्थन भी बढ़ गया. लेकिन यह मुख्यतः जॉर्डन जैसे अरब देशों में हुआ जहां सद्दाम पहले से ही लोकप्रिय हैं. हालांकि सीरिया और मिस्र में प्रदर्शन हुए पर वे ऐसे नहीं थे कि उन्हें जन उभार माना जा सके. और खाड़ी में सद्दाम को इतनी कामयाबी नहीं मिली कि उसकी बात की जा सके.

अरब जगत के माहौल से अमेरिकी अब काफी खुण हैं. बुण के राष्ट्रीय सुरक्षा उप-सलाहकार रॉबर्ट गेट्स के अनुसार, ''एक बार जब सकट खत्म होगा तो कई-कई माहिरों (जिन्होंने अरब अर उभार की भविष्यवाणी की थी) को अपना थूका हुआ चाटन पड़ेगा." यह अतिशयोक्ति हो सकती है पर फिलस्तीनियों के अलावा कोई भी सद्दाम के समर्थन में खुलकर सामने नहीं आया और फिलस्तीनियों ने भी पश्चिमी ठिकानों के खिलाफ कोई बहुत बड़ा आतंकवादी हमला नहीं बोला. और फिर तीसरी दुनिया के देशों से भी सद्दाम को सिर्फ जवानी समर्थन ही मिला.

एक समय तो लग रहा था कि सद्दाम का हथियार जातत नामुमिकन ही है. जॉर्डन के सूचनामंत्री इब्राहिम इज्जेदाइन ने ते यहां तक कहा था, ''सद्दाम खुद्दार हैं. खुद्दार आखिरी दम तह लड़ता है.'' पर बहुराष्ट्रीय फौजों के जमीनी हमलों ने सारं समीकरण गड़बड़ा दिए और उन्हें वापसी पर मजबूर होना पड़ा.

#### जंग का रंग

प्र. एक स्कड मिसाइल छोड़ने के लिए कितने इराकी दरकार हैं?

उ. चार. तीन इसे छोड़ने के लिए एक सीएनएन को बुलाने के लिए.

प्र. एक स्कड दूसरी से क्या बोली?

उ. यदि तुमने इबादत के लिए ठीक से बजू कर लिया हो तो तुम रियाद

क्यों नहीं चली जाती? मैं तेल अवीव चली जाऊंगी. प्र इस्त्राएली एक-दूसरे को गुड

प्र. इच्चाएली एक-दूसरे की गुड मानिंग कैसे कहते हैं? उ. स्कड मानिंग.

और तो और, किशोरों ने स्कड शब्द के रंगबिरंगे इस्तेमाल भी शुरू कर दिए हैं.

सऊदी अरब, सीरिया और मिल्ल के नेताओं पर भी कई चुटकले चल पड़े हैं. एक नमूनाः एक सऊदी नेता को जब बताया गया कि अमेरिकी विमान में सुअर भर कर लाए गए हैं तो उसने नाराज होते हुए बुश से पूछा, "तुम हमें इस तरह भी जलील कर सकते हो?" बुश ने जवाब दिया, "मेरे दोस्त, वे सुअर नहीं बल्कि गैसमास्क लगाए भेडें हैं." सद्दाम हुसैन

### इस्लामी उन्माद की जंग

इाम के विरोधी चाहे जो कहें स्मिन कम-से-कम् 20वीं शताब्दी मे अरव ने उनके जैसा करिश्माई नेता नहीं देखा जो इस क्षेत्र के कोई 10 देशों में हीरो वन गया हो. मित्र देशों की ताकत के सामने सद्दाम ने भले ही हथियार डाल दिए हों लेकिन इस्लामी जगत उनके आभामंडल से इतना चकाचौंध है कि उन्हें कई वर्षों तक याद रखेगा. उनकी यह विरासत मुसलमानों में पश्चिमी देशों के प्रति स्थायी घृणा भर सकती है, व्यापक आतंकवाद पैदा कर सकती है या कट्टरपंथी धारा में मिल सकती है. इस्लामी जगत में अयातुल्ला खुमैनी को 'महान शैतान' से लड़ने वाले इस्लामी योद्धा की जो प्रतिष्ठा हासिल थी, वही प्रतिष्ठा अब सहाम को भी मिल गई है.

सहाम के ज्यादातर समर्थकों के लिए उनकी जीत या हार कोई मायने नहीं रखती. 50 वर्षीय दुकानदार जलाल अयूब ने कहा, "सहाम भले ही मर जाएं लेकिन उन्होंने जिस चीज की शुरुआत की है वह जारी रहेगी और अरब का हर निवासी सद्दाम बन जाएगा." जॉर्डन के क निवासी बेहिचक उन्हें अब तक का सबने महान अरब नेता कहते हैं. लहने विश्वविद्यालय से एमबीए करने बार् मृदुभाषी बैंक प्रबंधक उमर अब्बास के कहा, "सद्दाम ने दुनिया के सबने ताकतवर देशों के खिलाफ अरब के चुनौती का नेतृत्व किया है." अम्मान रहने वाले प्रमुख फिलस्तीनी कट्टर्पा नेता और यफशलम मुक्ति आंदोलन के मुख्या 66 वर्षीय शेख तमीमी ने कहा "सद्दाम मौजूदा दौर के सबसे बड़े नेता उनकी तुलना में नासिर धोलेबाज के प्रोपेगैंडा की पैदाइश थे."

वामपंथी लोग इस इराकी तेता के प्रशंसा तीसरी दुनिया के ऐसे नेता के में करते हैं जिसने पश्चिम से लोहा के की हिम्मत दिखाई. कहरपंथी लोग उन धर्म की रक्षा करने वाले योद्धा के क्या देखते हैं. और फिलस्तीनी इज्जाएल दुण्मन के रूप में उनकी सराहना करते के लेकन महाम इनमें से किसी भी प्रशंसा लायक नहीं हैं क्योंकि वे तीसरी दुनिया क

पित्रमी रे कार्ययोजन तं वाली है जे पनकर चला क्षित्र रेशों के पनका के महे

अनुष्ट गुटों में

• पिचम वें

ग्राक' गठवंधन
वें नेता कर र

• सीरिया वे

ग्राव नगाया है.

ग्रार यासर अर

• ईरान को

ज्ञा अवादी

ना अयातुल्ला

ग्रात में वर्षों

मऊदी अव इमान अबू दा विनर्वासित का

महाम समा भी गरीव रा

क वर्गा देश व लो गाड़ीय लोको पर का लोको पर का ला की कहुरप के नहीं बैठने जिल्लामा र जिल्लामा र जिल्लामा के जिल्लामा के

के हितों की

### Digitized by Arya Samai Foundation Chennal and eGangotri सहाम के बाद के समीकरण

'इलाज' वास्तव में 'रोग' से भी ज्यादा बदतर सिद्ध हो सकता है

निमी रणनीतिज्ञों ने 'सद्दाम के बाद के इराक' के लिए कार्ययोजना जिस भरोसे के साथ तैयार की है वह चिकत कर हैं बती हैं, जंग में जीत और सद्दाम की विदाई होगी ही, यह तय क्रवर बला गया. लेकिन सद्दाम का स्थायी विकल्प तलाशना कि रेशों के लिए मुश्किल होगा. बगदाद में सत्ता-शून्यता की क्रिका के महेनजर दिमाशक, लंदन, तेहरान और रियाद में स्थित जार गुटों में गतिविधियां तेज हो गईं. मुख्य दावेदार हैं:

नाएगा. पर

अब सहाद

थियारों का

पह आबित

अरव जन

आ चाटना

कोई वहत

दुनिया है

ार डालन

राइन ने ते

री दम तक नों ने सारे

होना पड़ा

न के क

लखन

करने वान

अञ्बाम

के सबस

अरव व

अम्मान

कट्टरपं

ांदोलन ।

ने न

ाडे नेता वेवाज व

नेता क

ता के हा

लोहा ते

लोग उन

市啊

जाएल

करते ।

प्रशंसा

दुनिया

, पश्चिम के सबसे करीब माना जाने वाला लंदन स्थित 'फी हाई गठबंधन उसका नेतृत्व '50 के दशक में तख्तापलट के बाद होता कर रहे हैं. इनमें प्रमुख हैं सागिर अबू हयातम.

, सीरिया के वाथवादियों ने पूर्व जनरल हसन नकीब पर अपना व तगाया है. नकीब 1970 में उप-सेनाध्यक्ष थे जो हटाए जाने के ह्य गासर अराफात के सैनिक सलाहकार बन गए. तीनियों के

, ईरान को उम्मीद है कि इराक में अब सत्ता उसकी 55 फीसदी नहीं आया बा आवादी के हाथ जाएगी. इसलिए वह इराकी शिया मजहबी न अयातुल्ला मुहम्मद बकर हकीम को आगे बढ़ा रहा है जो एक में वर्षों से निर्वासित सरकार चला रहे हैं.

 मऊदी अरव ने इराक के पूर्व मेजर जनरल इब्राहीम अब्दुल लान अबू दाऊद को अपना उम्मीदवार बनाया है. दाऊद 1968 निर्वासित कर दिए गए थे.

दूसरे दावेदारों में कुर्द गूट शामिल है जो उत्तरी क्षेत्र के लिए स्वायत्तता की मांग करता रहा है. यह गुट इराक का सबसे बड़ा हथियारबंद असंतुष्ट गुट है.

लेकिन पश्चिम के लिए सबसे बड़ी समस्या यह है कि इनमें से किसी भी गुट का इराक में व्यापक आधार नहीं है. जैसे ही किसी एक गुट को सत्ता सौंपी जाएगी, उसे पश्चिम का दलाल कहकर खारिज कर दिया जाएगा. गुटों के बीच संघर्ष की भी पूरी संभावना है. एक पश्चिमी राजनियक का कहना है, "सद्दाम के जाने के बाद लंबे समय तक अराजकता की स्थिति रहेगी." निर्वासित सद्दाम भी हीरो ही माने जाएंगे. पश्चिमी राजनयिकों को उम्मीद है कि सद्दाम की जगह उनकी पार्टी के किसी नेता या किसी जनरल को लाया जा सकता है जिसे सद्दाम के अनुयायियों का समर्थन हासिल हो.

लेकिन सद्दाम अगर कोई करिश्मा कर बैठते हैं तो ये सारी उम्मीदें धरी की धरी रह सकती हैं. अगर वे कुवैत से वापसी के बाद भी बने रहते हैं तो इराकी क्षेत्र में उनकी सेना का पीछा करना अमेरिकियों के लिए मुश्किल हो जाएगा क्योंकि यह संयुक्त राष्ट्र के निर्देशों का उल्लंघन माना जाएगा. गठबंधन के दूसरे देश विरोध भी कर सकते हैं. तब सद्दाम किसी घायल शेर की तरह बन सकते हैं और इराक को एकाकी और प्रखर पश्चिम विरोधी बना सकते हैं. लेकिन अब तक वे जितनी गलतियां कर चुके हैं उन्हें देखते हुए

लगता यही है कि स्थितियां उनके लिए एकदम प्रतिकुल हैं.

ऐसे समुदाय में आत्मसम्मान का भाव पैदा कर देना है जो चार दशकों से अपमान झेलता रहा है. अरब लोगों के लिए सहाम समझदार, दृढ़प्रतिज्ञ और खुद्दार हैं. अरबवासियों का मानना है कि सद्दाम को कुवैत छोड़ देना चाहिए था, यह कोई नहीं चाहता कि वे पश्चिमी देशों के सामने घटने टेक दें.

दूसरे लोग भी खौरी जैसे ही विचार व्यक्त करते हैं. एक फिलस्तीनी विद्वान कहते हैं, "मेरे पिता को 1948 में अपमान का अर्थ मालूम हुआ. उस समय वे 30 वर्ष के थे. मुझे 1967 में मालूम हुआ. उस समय मैं 18 वर्ष का था. और अब मेरा बेटा उसका अर्थ सीख रहा है. वह 10 वर्ष का है. अपमान के इस बोझ के कारण ही हम सद्दाम का समर्थन कर रहे हैं. उन्होंने इज्राएलियों को वैसा आतंक महसूस करा ही दिया जैसा कि हम तीन पीढियों से महसूस करते आ रहे हैं."

यह सच है कि मिस्र व सीरिया और काफी हद तक खाड़ी के शेखों में भी सहाम के विरोधी मौजूद हैं. लेकिन यह शख्स ऐसी पहेली है कि हारकर भी विजेता ही बना रहेगा क्योंकि पश्चिम एशिया और अफ़ीकी अरब देशों के लाखों निवासियों ने उसकी विरासत को अपना लिया है

- शेखर गुप्ता, अम्मान में



<sup>क्</sup>राम समर्थक प्रदर्शनकारीः पराजय के बावजूद लोकप्रियता बरकरार

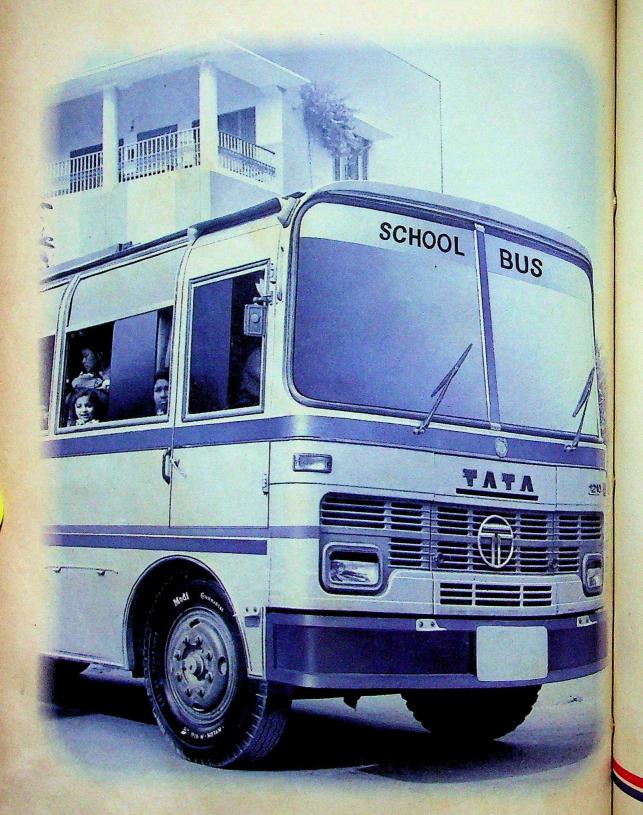
भी गरीव राष्ट्र का नहीं बल्कि तेल के की देश का नेतृत्व कर रहे थे, जी भी गार्टीय आय का बड़ा हिस्सा सैन्य किया सर्व करता रहा है. इस्लामी के के किए पार्टी विचारधारा में भी वे वें वैठते क्योंकि उनकी सरकार कि स्वाल है, सद्दाम ने ठीक भाग उनके 'इतिफादा' को रोककर के हिता की नुकसान पहुंचाया जब वे

अंतरराष्ट्रीय सहानुभूति पा रहे थे.

राजनैतिक रूप से सहाम का प्रभाव जबरदस्त है. जॉर्डन के शहजादे हसन कहते हैं, 'पूरव में किसी शख्स का जीतना या हारना कोई मायने नहीं रखता. किसी ताकतवर गठबंधन के सामने उसका खडा होना ही उसकी जीत है."

फिलस्तीनी राजनैतिक पंडित और 'जॉर्डन टाइम्स' के पूर्व संपादक रमी खौरी कहते हैं कि सद्दाम का मुख्य योगदान एक

# Digitized by Digit



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

# SM Plant and Cangotri



# मरोसा है, मोदी दायर अपने साथ

आपको कुछ और सूफ्तबूफ्त से काम लेना होगा।

कौन जाने भविष्य की ये नाज़ुक आशाएं कब किस

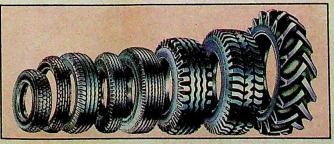
सड़क पर ज़रा से फटके से

चूर-चूर हो जाएं। इसीलिये आपको चाहिये बेहद भरोसेमंद

टायर।

ख़ास डिज़ाइन वाले ऐसे टायर जो हर मुश्किल से टकरायें और आपको मंज़िल तक पहुँचाएं। सुरक्षित । आप भी भारत में सबसे ज़्यादा बिकने वाले मोदी कॉन्टीनेन्टल

> बस टायर का भरोसा आज़माएं। क्योंकि किसी मां को अपनी आँख के तारे का इन्तज़ार है।





क्रमी न थकने पाला वस्त



BMAMRLIC

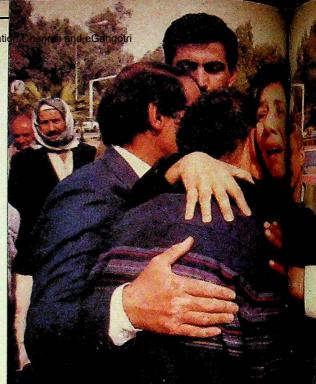
Digitized by Arya Samaj Foundation

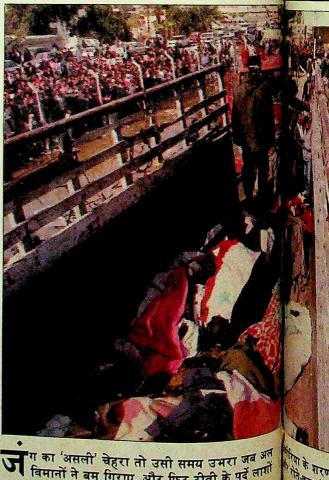
# बेहिसाब बर्बादो



लेखः शेखर गुप्ता, वगदाद में फोटोः गेरहार्ड कॉमश्रोडर/'स्टर्न'

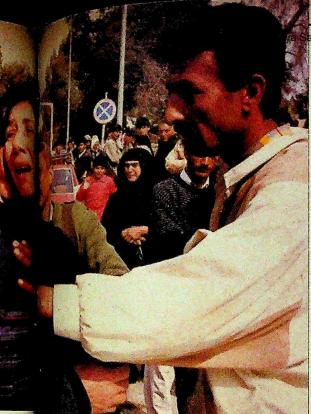
राक और जॉर्डन की सीमा पर त्रेवील चुंगी चौकी पर सैकड़ों लोग एक रेडियो को घेरे हुए नजर आते हैं. इनमें गाड़ियों के चालक, यात्री और सैनिक सभी णामिल हैं. ये लोग रेडियो पर सहाम हुसैन का भाषण मुंह लटकाए, अपनी उंगलियां चटकाते और कभी-कभी सिर हिलाते हुए सुन रहे हैं. इनमें से एक कहता है, "सब कुछ खत्म हो गया, जंग खत्म हो गई." लेकिन अगले ही क्षण यह उम्मीद तब झूठी साबित होती है जब वायस ऑफ अमेरिका घोषणा करता है कि जंग अभी जारी है. उस भीड़ में खड़ा एक ड्राइवर रहमत पूछ बैठता है, "बुश आखिर चाहता क्या है? क्या वह हमारे पूरे मुल्क को बर्बाद कर देना चाहता है?"





ग का 'असली' चेहरा तो उसी समय उमरा जब अर्त विमानों ने बम गिराए. और फिर टीवी के पर्दे लाशों

तेते-कलपते





amaj Foundation Chennal and eGangotri ऐसा 28 फरवरी को तब तक लग भी रहा था जब तक

जॉर्ज बुश ने टेलीविजन पर युद्धविराम की घोषणा नहीं कर दी. लेकिन इस युद्ध की अकल्पनीय कीमत इराक को चुकानी

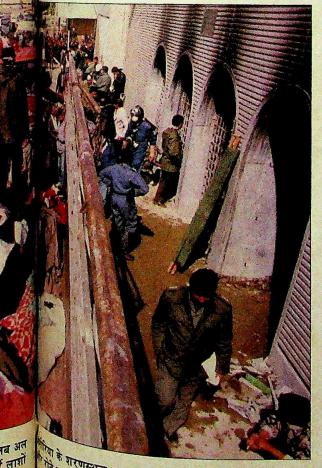
हज छह महीने पहले तक यह ताकतवर, उत्साह से भरपुर और रौबीला देश था जो आठ वर्षों तक पड़ोसीं देश ईरान से लड़ने के बाद आई शांति में चैन की नींद लेने लगा था. और आज यही इराक अपनी पूरानी समृद्धि की मुरझाई और बर्बाद हुई छाया भर रह गया है. इसँकी आर्थिक समृद्धि को लाख की संख्या तक पहुंच चुके हवाई हमलों ने मर्टियामेट कर दिया है. लगता है कि इसकी जनता को जबरन मध्यकाल में भेज दिया गया है. युद्धों के इतिहास की सबसे भयंकर बमबारी ने इसकी ताकतवर सेना का दिवाला निकाल दिया है.

यहां के वही नागरिक, जो दुनिया के तेल उत्पादन में करीब 10 फीसदी हिस्सेदारी और आयात से हर साल 45 अरव डॉलर कमाने पर नाज करते थे, आज ईंधन के लिए लकड़ी और कचरे में से जलने लायक चीजें चुनते दिखते हैं. खुद बगदाद भी, जो कभी सफाई के लिए विख्यात था, धए से भरा है. कई बार तो यह धुआं बमवर्षक विमानों का निशाना बने ठिकानों पर लगी आग से आ रहा होता है.



बगदाद पहंचकर ही एहसास होता है कि 'मूकम्मल जंग' क्या चीज होती है. यह मुकम्मल जंग ऐसी थी जिसमें सैनिक और नागरिक ठिकानों में भेद करने की मर्यादा को भला दिया गया. यह लडाई बीसवीं सदी के सैनिक तर्कों पर लडी गई जिसमें सैकड़ों बच्चों और औरतों की मौतों को 'संबद्ध नुकसान' करार दिया जाता है. और राष्ट्र की अर्थव्यवस्था, उसकी परिवहन प्रणाली, संचार तंत्र, बिजलीघरों, तेलशोधक कारखानों, उर्वरक कारखानों और सीमेंट कारखानों को नष्ट करना 'जायज' ठहराया जाता है.

अगर मित्र देशों की सेना के हवाई हमलों का लक्ष्य इराकी समाज को तहस-नहस कर देना था तब तो वे सफलता का दावा कर सकते हैं. इराक के उप-प्रधानमंत्री सदौन हम्मादी पूछते हैं, "अब यह देखिए कि अमेरिकी बमवर्षकों ने बार-बार हमारे दूरसंचार केंद्र पर हमले किए

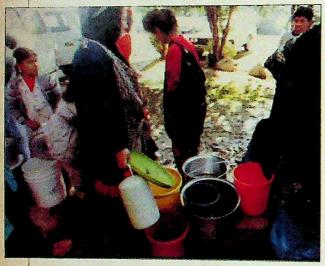


Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri हैं,जो शेष दुनिया से इराक के संपर्क का केंद्र था. इस पर एक बार बमबारी करने से ही उनका मन नहीं भरा. सो, वे इसे पुरा बबदि करने के लिए पांच बार आए.''

बगदाद की सड़कें टूटी नालियों के गंदे पानी से भरी हैं. तड़के औरतें और बच्चे बर्तन लेकर टिग्निस नदी से पानी लाने चल देते हैं मिट्टी का तेल उपलब्ध होता भी है तो पांच दिनार (325 ह) प्रति गैलन पर. ऑपरेशन थिएटरों में बिजली नहीं है. सही दवा न होने के कारण घायल लोग भी

धीरे-धीरे मौत के मुंह में जा रहे हैं. हैजा, दस्त और टायफायड जैसी बीमारियों ने इराक में अड्डा जमा लिया है.

इराकी विदेशमंत्री तारिक अजीज ने युद्ध के पहले पांच हफ्तों में 7,000 मौतों का जो आंकड़ा दिया, वह भ्रामक है. बिजली, पानी, दवा, पौष्टिक आहार, परिवहन और सामान्य नागरिक सुविधाओं के अभाव से आने वाले दिनों में महामारी और कुपोषण से जो तबाही मचेगी, उससे और कितने लोगों

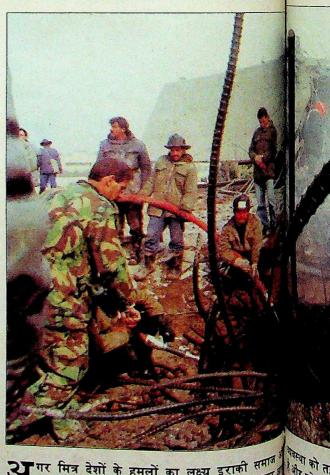


की जानें जाएंगी, कहा नहीं जा सकता. जॉर्डन के शाह हुसैन कहते हैं. ''इराक को व्यवस्थित ढंग से बर्बाद किया जा रहा है. लड़ाई का उद्देश्य इराक की उपलब्धियों को मटियामेट करना और उसे प्राचीन युग में पहुंचा देना है.''

युद्ध का 'असलीं' चेहराँ तो तभी उभरा जब इराक के पिण्चिमी कस्वे अल अमीरिया में दो अमेरिकी स्टील्थ बमवर्षकों ने बम गिराए, अमेरिका ने जोर देकर कहा कि उपग्रह और इलेक्ट्रॉनिक साधनों से उसे पक्का पता चल गया था कि यह एक 'सैनिक खाई' थी. मगर इराकियों का कहना था कि यह नागरिकों के छिपने की खाई थी. बहरहाल, टीवी के पर्दे रोते-कलपते लोगों, बच्चों, बूढ़ों, जवानों और औरतों की 300 क्षत-विक्षत लागों की तस्वीरों से पट गए.

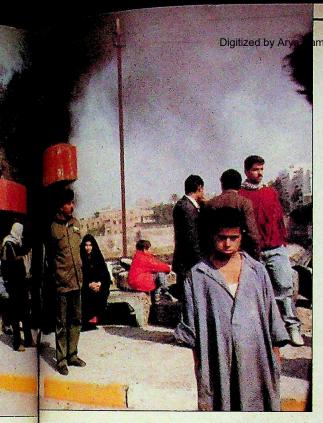
गदाद के प्रमुख बुद्धिजीवी और सहाम समर्थक मिद्धांतकार सलमान अल वसीती ने हाल में ही 'इंडिया टुडे' को बताया था कि हाल के संकट के कुछ 'अच्छे' परिणामों में इराक द्वारा अपनी कृषि की ताकत का फिर से एहसास करना है. इराक के पास किसी भी अर्ब देश से अधिक उपजाऊ जमीन है. लेकिन खेती भी बर्बाद हो गई है. आर्थिक प्रतिबंधों और फिर राष्ट्रसंघ की कड़ाई से इराकियों को अपनी खेती पर ध्यान देने की जरूरत महसूस हुई. लेकिन इस बारे में पिछले कुछ महीनों में जो भारी-भरकम योजनाएं बनी





अगर मित्र देशों के हमलों का लक्ष्य इराकी समाव है दावा कर सकते हैं. आज बगदाद पूरी तरह तबाह तर्जा

और पूरे देश



Digitized by Arya majofipun<del>dali</del>jor <del>फ्रिक्ष्मावां वर्ष किति</del>ग <del>कर्मा</del> पडेगा इस कारण भी इराक के लिए बड़ा संकट आता दिख रहा है इसका बड़ा कारण तो यह है कि देश के उर्वरक कारखानो को, भले ही वे कम हैं, बमबारी ने तबाह कर दिया है फिर किसान भी अपनी पैदावार बाजार में ला नहीं पाते. अनाज गांवों में पड़ा ही सड रहा है. बिजली और डीजल न होने से फसल के लिए महत्वपूर्ण आठ हफ्तों तक पानी नही मिला है गांवो से आने वाले लोग अकाल के किस्से सुनाते हैं.

जब पूरा देश ही बर्बादीँ की ओर बढ़ रहा हो तो फिर आंकड़ों का कोई मतलब नहीं रह जाता. तारिक अजीज का अनुमान है कि बर्बादी 1,200 अरब डॉलर की हुई है जो इराक की तेल की पांच वर्षों की कमाई है. तेल के अलावा आमदनी के दूसरे स्रोतों से वंचित इराक जैसे देश को इस क्षति की भरपाई करने में दशकों लग जाएंगे.

इस बात के संकेत भी हैं कि अब ये सवाल बहराष्ट्रीय सेना

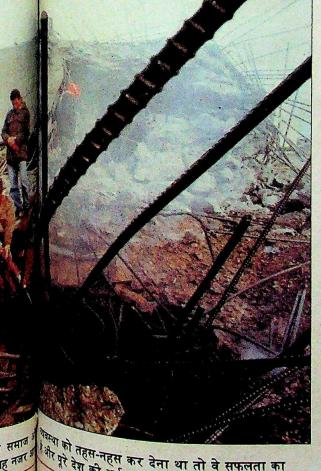


के कुछ सहयोगियों के मन को भी क्रेंदने लगे हैं. लेकिन राष्ट्रपति बुश के सूरक्षा सलाहकार रॉबर्ट गेट्स की राय इस खेमें में खासा वजन रखती है, जिन्होंने पिछले हफ्ते इराक की बर्बादी से संबंधित सारे सवालों को यह कहकर खारिज किया कि "इराक गरीब देश नहीं है. वह अपने पूर्नीनर्माण का खर्च उठाने के काबिल है.'

लेकिन सारे हमले झेल रहे लोगों के लिए शांति की वापसी इतनी आसान नहीं लगती. वे तो इसे देख पाने के लिए जिंदा रहने की कोशिशों में ही उलझे हैं. उन्होंने अब तक काफी युद्ध देख और भुगत लिया है. यही कारण है कि पिछले पखवाडे सद्दाम हसैन ने जब पहली बार कुवैत से वापसी की बात कही तो बगदाद की सड़कों-गलियों में खुशी जाहिर करने वालों का रेला उमड पडा.

इस उम्मीद के मुरझाने और जमीनी जंग शरू होने पर भी उन्होंने थोडी राहत महसूस की. जब मित्र देशों की सेना के बमवर्षकों ने क्वैत की तरफ रुख कर लिया तो बगदाद के लोग पहली बार चैन की नींद सो पाए.

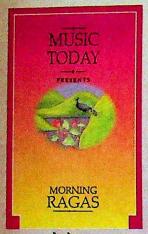
अब उनकी उम्मीद इसी पर टिकी है कि समर्पण की सहाम की घोषणा स्थायी शांति लाएगी. और आज मध्यपूर्व में यह सवाल सबसे महत्वपूर्ण है कि क्वैत से इराक की वापसी क्या स्थायी शांति ला पाएंगी या फिर चार दशकों से दहकने वाला यह क्षेत्र उथल-पूथल के एक और दौर में फंस जाएगा.



# भोर से अर्धरात्रि तक के राग

Digitized by Arva Samai Foundation के चुनिदा पन अने विश्व अदिन में प्रकृति पात के से प्रकृति हैं। से यत तक के रंगों की अनूदी संगीत याता. एक-एक घंटे के 16 ऑडियो कैसेटों पर प्रतिष्ठित संगीतकारी के चुनिदा पिन अने की विश्व अनूदी संगीत याता. एक-एक घंटे के 16 ऑडियो कैसेटों पर प्रतिष्ठित संगीतकारी के चुनिदा पिन अने की विश्व अनूदी संगीत याता. एक-एक घंटे के 16 ऑडियो कैसेटों पर

और आपके घर डाक अथवा कृरियर से पाने की सुविधा.



## भोर के राग

माग-1 (कोड ए 90001) ललित

राजन और साजन मिश्र (गायन) भैरव

शाहिद परवेज़ (सितार) अहीरं भैरव श्रुति सदोलिकर (गायन)

भाग-2 (कोड ए 90002) मियां की तोड़ी

अमजद अली खां (सरोद) भटियार

पंडित जसराज (गायन)

विभास श्रुति सदोलिकर (गायन)

भाग-3 (कोड ए 90003) जीनपुरी

पद्मा तलवलकर (गायन)

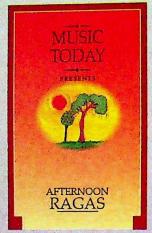
बिलासखानी तोडी अमजद अली खां (संरोद)

देसी तोड़ी हरिप्रसाद चौरसिया (बोसुरी)

भाग-4 (कोड ए 90004) कुकुम बिलावल

मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन) देशकार

शाहिद परवेज़ (सितार) भैरवी पद्मा तलवलकर (गायन)



## दोपहर के राग

भाग-1 (कोड ए 90005) शुद्ध सारंग

अमजद अली खां (सरोद)

मल्लिकार्जुनं मंसूर (गायन) गौड सारंग

पद्मा तलवलकर (गायन)

भाग-2 (कोड ए 90006) बृंदावनी सारंग

हरिप्रसाद चौरसिया (बांस्री) मधमद सारंग

पंडित जसराज (गायन) धनी

शाहिद परवेज़ (सितार)

भाग-3 (कोड ए 90007) भीमपलासी

मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन) पटदीप

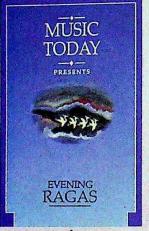
श्रुति सदोलिकर (गायन)

शाहिद परवेज (सितार)

भाग-4 (कोड ए 90008) मुल्तान

राजन और साजन मिश्र (गायन) हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी)

पील् अमजद अली खां (सरोद)



## सांध्य के राग

भाग-1 (कोड ए 90009)

मारवा

पंडित जसराज (गायन) श्रो

श्रुति सदोलिकर (गायन)

हंसध्वनि शाहिद परवेज (सितार)

**भाग-2** (कोड ए 90010)

राजन और साजन मिश्र (गायन)

स्याम कल्याण अमजद अली खां (सरोद)

नंद

मिल्लकार्जुन मंसूर (गायन)

भाग-3 (कोड ए 90011)

शुद्ध कल्याण पद्मा वलवलकर (गायन)

मांझ खमाज

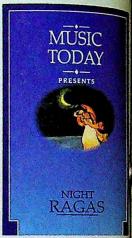
हरित्रसाद चौरसिया (बांसुरी) दुर्गा

राजन और साजन मिश्र (गायन)

भाग-4 (कोड ए 90012) यमन

शाहिद परवेज़ (सितार) शंकरा पंडित जसराज (गायन)

मिश्र धारा श्रुति सदोलिकर (गायन)



### रात्रि के राग

भाग-1 (कोड ए 90013) शुद्ध नट

मिल्लकार्जुन मंसूर (गायन) केदार

पद्मा तलवलकर (गायन) झिंझोटी

हरिप्रसाद चौर्यसया (बांसुरी)

भाग-2 (कोड ए 90014) वागेश्वरी

पंडित जसराज (गायन)

हमीर पद्मा तलवलकर (गायन)

तिलक कामोद शाहिद परवेज़ (सिवार)

भाग-3 (कोड ए 90015)

मालकौस

हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी) मारु विहाग

श्रुति सदोलिकर (गायन) जैजैवंती

राजन और साजन मिश्र (गायन) भाग-4 (कोड ए 90016)

नायकी कान्हड़ा श्रुति सदोलिका (गायन) देश

पंडित जसराज (गायन) दरबारो अपजद अली खां (सरोद)

टायरोली:

(टैक्स पैकिंग और पंजना शामिल)

(a) 45 %. प्रति कैसेट

इंडिया दुडे की एक रेगुलर 'एड्रेसबुक' मुफ्त. व्युडिक दुडे के 16 केसरी के एक साथ आईर पर आप पाएंगे 85 रू मूल्य को एक रेगुला रेडिया दुढे एड्रेस बुक मुफ्त

इंडिया टुडे कंपैक्ट एड्रेस बुक' मुफ्त खुकिक टुडे के 8 से 15 कैसेटों का आईर एक साथ देने पर आप पाएंगे 50 रू पूरुप बी

एक इंडिया ट्रंड कंपीबर एडेस कुक मुस्त



- ' दिल्ली से बाहर के स्थानों के चेंचों के राज्य 10 र. को अतिरिक प्रति पुंची करकात, महार और दिस्ती के केन विभाद हुएहों का सम्बाधिका होने अवस्थक
- केसेट आपके घर विकटन हाक या कृतियर में पहुंचाए जाएंगे.
- ितानों के लिए कारण कम से कम 3-4 मताह के तम्य दें "जाता दें ने के लिए कारण कमा पर्न नात कम कम कम प्रकार आईत मार्ग पर लिकार को 4 है 16 व मार्ग मार्ग कीरों के उनका आईत मार्ग पर लिकार को 4 है के मार्ग पर्न अपेश पृक्ष प्रकार अईत पर्न पर्न लिकार मार्ग के से के मार्ग पर्न अपेश प्रकार कुठ अन्यवा निवाल के सेने पर्न को पर्न को पर्न कारणे "देश तरिक पूर्वक हुई के जम को और प्रकार हुँ, बार बीका ने 39 वर दिल्ली 10001 के पर्न पर्न मेरे

काडन के	संट संख्या	प्युजिक दुवे कैसेटों के लिए नीचे लिखे विवरण के अनुसार 45 ह. प्रति वेस्ट क
一 1000年		(टेक्स, पैकिंग और मंजना शामिल) ऑर्डर देना चाहता/चाहती हूँ।
R 90002 -		to the same and small offer cal anomy after 6.
Q 90003 —		मेरे लिए 🛮 उपहार 📗
R 90004 -	1 1 2 1	पुजिक दुई से देव हैं की रिवार कार प्रेमार का प्रार्थित के हिस्सी से बहा के औ
0,90005 -	191	के लिए 10 म. और बोर्डे) /डिमोड ह्राम्ट संलग्न कर छा/रहे हैं।
T 90006		ऑडं। किए कैसरें की संख्या
¥ 90007 -		इस देश गाँकि
¥ 90006 -		Mi Name
₹90009 -		Widress
TE COLOR	The state of the	Auton -

ऑर्डर फॉर्म

0 90011 कुरत तर्ग प्रमें कुम्बूद क्रमेश द्वीप हैं। ब्रांस में हैं क्रमें में हैं क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें क्रमें हैं अपने आहे अपने क्रमें हैं क्रमें क्रम

देश में पहली बार व्हाइट सीमेन्ट अल्ट्राफ़ाइत! जो आपके फर्शको दे सही-सही फ़िलिश, स्व्बस्रत डिजाइत

कैसेटो पर

ग

90013) (गायन)

(गायन)

(बांसुरी) 90014)

॥यन) (गायन)

संत्रर)

10015) (बांसुरी)

गायन) १ (गायन)

10016) गायन) ॥यन) (सरोद)

神神神

100 年 100

चड़र सीमेंट निहोन सुप्रीम के साथ । जपान के मिरोन सोमेर तकनीक से निर्देश केष्ठ उत्पादन-द्निया भर में सबसे आगे। मशहर आसानी ब्रांड के निर्माता को भेट। निहोन सुप्रोम—खासतीर पर अल्डा-सफेदो, अल्डा-चमक, अल्डा-मजबूती और अल्ट्रा-क्रिफायत का यक्तीन दिलाये। क्योंकि इसे ज्यादा फिलर के साथ इस्तेमाल किया जाये: पिगमेंट्स के साथ आसानी से घुलमिल जाये; रंगों में बेहतर चमक लाये। मार्बल चिप्स के साथ ज्यादा मज़बूती से चिपक जाये, किस्म-किस्म की डिज़ाइन बनाये; सालौंसाल फर्श वैसा ही खूबसूरत नज़र आये। अब खुशी-खुशी आगे बढ़ें, अपना 🌽 सपना पूरा करें। मोज़ेक टाइल्स और टेराज़ो पैटर्न में खूबसूरत फर्श गढ़ें। अल्ट्राफ़ाइन सचमुच, अल्ट्राफाइन रंग-रूप-सजावट की शान।



Nihon Nirmaan Limited की प्रस्तृति भालोटिया ग्रुप की एक कम्पनी, जापान के निहोन सीमेन्ट के. लि. के तकनीकी और आर्थिक सहयोग से निर्मित । निको हाउस, 2 हेयर स्ट्रीट, कलकत्ता 700 001

मोज़ेक टाइल्स रायरोलीन वाल फ़िनिश पैटर्न वाले फ्लोर सीमेन्ट पेन्ट्स 📤 रंगीन सीमेन्ट प्लास्टर प्राचित्र प्राचित्र प्राचीत्र के प्राचीत्र क्षेत्र प्राचीत्र क्षेत्र 🛕 बिल्डिंग और कंस्ट्रवशन के लिए



## राज्य-दर्पण

# महाराष्ट्र तकतीकी समाधान

हितीफोन के तारों और कम वार्वाते मड़क पुलों की वजह कि भीड़ भरे इलाकों मे वर्ग वाले भगवान जगन्नाथ के वंशे इंबाई भी कम होती जा हो है उच्च तकनीक के कारण शाह इस समस्या का समाधान क्तिनीकी ही हूंडा गया. इसका क्ष इंटरनेशनल सोसायटी फॉर ाषा कांशमनेस (इस्कॉन) को झ बार आठ टन वजनी क्डों के एवं पर 30 फुट ऊंचा होंग नादा गया. इस पर स्या मुदर्शन चक्र लगा था.



रष यात्राः अड्चनें नहीं

尺.

हो खुक

इज़र. श जगाए

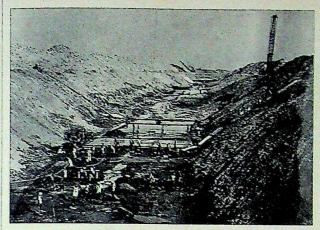
के ख्ले

पदार्थों से

धानु भजन गाते इसे चौपाटी कें जा रहे थे. 'इस्कॉन' के लेकों ने स्थ में इस तरह पेंच ए वे कि चंदोंने की ऊंचाई को क्ष्यादा किया जा सके.

रेष में हाइड्रॉलिक वेक भी लगे कितंन के जनसंपर्क संन्यासी कहते हैं, "मुलेश्वर की कियों में गुजरने में भी हमें विहोई दिकता नहीं होगी. उच्च जीक में लैस इस रथ की यात्रा भाकारों मुहर लगाने के लिए गीन वहें नेता भी मौजूद थे वाकायदा इसे झंडी के रे वे राज्य के वित्तमंत्री असंतुष्ट रामराव कि मुंबई के महापौर छुगन का और आवास राज्यमंत्री Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## गले में घंटी कौन बांधे



सतलुज-यमुना नहर परियोजनाः काम ठप

• लगता है सतलुज-यमुना जोड़ नहर परियोजना पर काम काफी अज्ञभ घड़ी में जुरू दिया गया था. 1988 में उग्रवादियों ने इसके 30 मजदूरों को गोली से भून डाला था तब से काम बंद है. इसके बाद दो वरिष्ठ इंजीनियरों की हत्या से मुख्य इंजीनियर के पद पर आने को कोई तैयार नहीं है. भावड़ा-व्यास विकास बोर्ड में प्रतिनियुक्ति पर गए के.के. गुप्ता ने यह पेशकश ठुकरा दी. अब सरकार सेना के इंजीनियरों को यह पद सौंपने पर विचार कर रही है. चुंकि लागत 550 करोड रु. से कहीं ज्यादा बढ़ गई है, इसलिए जाहिर है परियोजना पूरी करने की अंतिम तिथि मार्च 1991 से आगे बढ़ानी पड़ेगी.

## मध्य प्रदेश आखिर बंटवारा हो गया

 राज्य के सबसे महत्वपूर्ण हिंदी दैनिक 'नई दुनिया' के माझीदारों के वीच लंबी रस्साकशी के बाद आखिर बंटवारा हो गया है. अभय छजलानी और वसंतीलाल सेठी के पास इंदौर संस्करण रहेगा जबकि भोपाल संस्करण राजेंद्र तिवारी के हाथ जाएगा. पांच वर्षों की अनिज्ञितता से इस हिंदी दैनिक के संपादकीय पृष्ठों का स्तर गिरा है, और प्रतियोगी असवारों ने छपाई के मामले में इसकी बराबरी कर ली है. नतीजतन, पांच वर्षों में इसकी प्रसार संख्या 1.50 लाख से घटकर 1.27 लाख रह गई है. अब देखें बंटवारा क्या रंग लाता है.



'नई दुनिया' द्वारा आयोजित कार्यक्रमः बंटवारे का रंग



चिमनभाई: कितना साम्य?

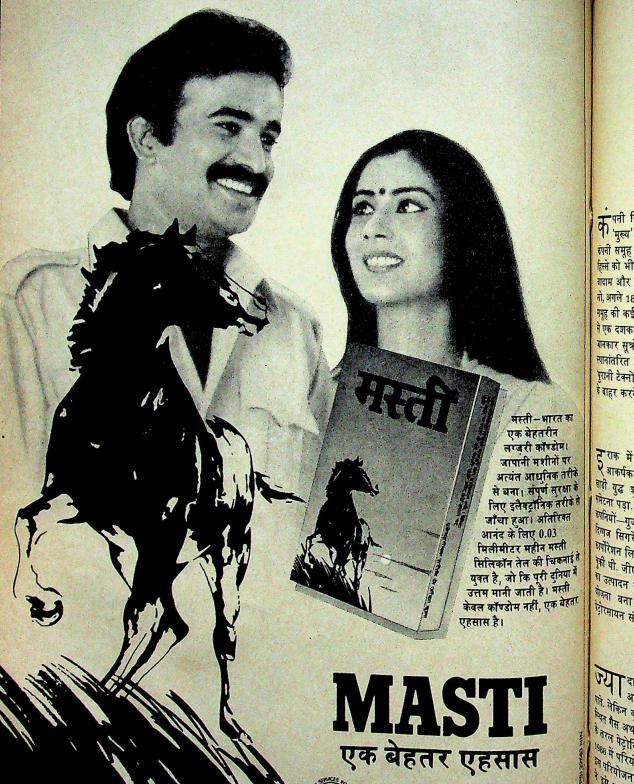
## गुजरात हास्यास्पद तुलना

• सरदार पटेल में चिमनभाई पटेल की तूलना हास्यास्पद कोशिश ही मानी जाएगी. लेकिन विधायकों की खरीद-फरोख्त करने वाले चिमन और भारत के लौह पुरुष में यदि कोई समानता है तो वह है उनकी गंजी चांद. लेकिन मुख्यमंत्री के खुशामदी मृहल्क तुलना से बाज नहीं आते और उन्हें छोटे सरदार कहकर प्रकारने लगे हैं. उनकी दलील है कि एक शक्तिशाली नेता वाली चिमन की छवि और दिल्ली में उनके प्रभाव ने गुजरात को राष्ट्रीय मंच पर उसी तरह महत्वपूर्ण बना दिया है. जिस तरह यह सरदार पटेल के

जोड़-तोड़ की राजनीति के लिए ही अधिक माने जाने वाने चिमन इस हास्यास्पद तुलना ने अच्छी तरह वाकिफ है वे कहने हैं, ''मैं तो बहुत छोटा आदमी हूं. इतने बड़े आदमी की बराबरी कैसे कर मकता हूं लेकिन अपने समर्थकों को उन्होंने ऐसी तुलना स बाज आने को नहीं कहा. जाहिर है, इसमें उन्हें मजा आ रहा है

लेकिन बहतों को यह असर भी रहा है. राज्य भाजपा अध्यक्ष णंकर सिंह वाघेला कहते हैं. "मुख्यमंत्री मरदार तो है लेकिन मत्ता के भूखों के." सरदार के भतीजे चिमनभाई के. पटेल कहते हैं, "आज ऐसा एक भी नेता नही है, जिससे सरदार पटेल की तुलना की जा सके." अब चिमनभाई की प्रतिक्रिया का इंतजार है.

# मस्ती ने बनाया हम मज़ा का मालिक



•पनी रि की 'मुख्य' इंपनी समूह हिस्से को भी गदाम और मो, अगले 18 समूह की कई ने एक दशक गनकार सूत्र यानांतरित

पुरानी टेक्नो हे बाहर कर

ट्र राक में आकर्षक वाही युद्ध व भेमेटना पड़ा. रंपनियों—गुज रिगाज सिगारे अपरिशान लि कि थी. जी। ग उत्पादन गेजना बना

भेते, लेकिन व ियत गैस अथ हे तरल पेट्रोरि 1988 में परिय <sup>हेब परियोजन</sup>

ने इसे इससे भिवाई उसे न

विषणक : परिवार कल्याण विभाग, भारत सरकार, सी एस एम पी के अन्तर्गत पाँपुलेशन सर्विसेज इन्टरनैशनल, इंडिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# रियायत का बोझ

रियायतें देने पर भारत हर वर्ष कितने पैसे खर्च करता है? सरकारी आंकड़े इस बारे में पूरी कहानी नहीं बताते, 1990-91 के सरकारी बजट में यह खर्च 11,000 करोड रु. से कम रखा गया था. इस रकम का ज्यादातर हिस्सा भोजन, उर्वरक, निर्यात और किसानों के कर्ज में रियायत देने पर बर्च किया गया. लेकिन सरकारी अर्थशास्त्रियों के एक नए अध्ययन के अनुसार यह खर्च 60,000 से 70,000 करोड़ रु. बैठता है यानी सकल घरेल उत्पाद का 16 से 17 प्रतिशत. मिसाल के तौर पर, 1989-90 में जहां प्रति यूनिट बिजली उत्पादन का औसत खर्च 91.40 पैसे था वहीं औसत उपमोक्ताओं से मात्र 68.52 पैसे वसूले गए. किसानों को तो सिर्फ 14.37 पैसे प्रति यूनिट देना पड़ता था. उच्च शिक्षा में, जहां छात्रों के डर से फीस बहुत कम है, सालाना सब्सिडी 5,000 करोड़ के आसपास थी. सो, वित्त मंत्रालय उर्वरकों को रियायत में कटौती की लड़ाई भले ही जीत ले, लेकिन यह उसकी बड़ी जीत नहीं कही जाएगी.

## घर-व्यापार भारत की ओर

पाती ब्रिटानिया के मालिक जे.एम. राजन पिल्लै अपना पिंगुस्य निवास लंदन से सिंगापुर तो ला ही रहे हैं, अपने ग़नी समूह के भूने हुए बादाम और स्नैक्स व्यवसाय के बड़े हिसे को भी सिंगापुर से भारत लाने की सोच रहे हैं. कंपनी के गराम और स्नैक्स 'ओले और प्लांटर्स ' के नाम से बिकते हैं. गे, अगले 18 महीने में महाराष्ट्र के पिछड़े इलाके महाड में इस मूह की कई इकाइयां स्थापित होने की उम्मीद है. इस निवेश है एक दशक में 800 करोड़ रु. का निर्यात होने की उम्मीद है. गनकार सूत्रों के अनुसार पिल्लै ने अपनी इकाइयों को भारत यानांतरित करने का फैसला सिंगापुर सरकार के तथाकथित पुरानी टेक्नोलॉजी वाले' उद्योगों को सिंगापुर की शहरी सीमा है बाहर करने के निर्णय के बाद किया.

## रंग में भंग

रत का

डोम।

नों पर

क तरीके

सुरक्षा के

तरीके से

रिवत

स्ती

यकनाई से

द्निया में

क बेहता

मस्ती

दे एक में भारतीय कंपनियों और कर्मचारियों को जब अतर्वक प्रबंधन ठेकों से लाभ मिलने का समय आया तो वहीं युद्ध शुरू हो गया और उन्हें अपना बोरिया-बिस्तर भरता पड़ा. इराकी अधिकारियों से कम-से-कम तीन भारतीय र्णियो गुजरात नर्मदा वैली कार्पोरेशन (जीएनएफसी), मिगरेट कंपनी आईटीसी और इंडियन पेट्रोकेमिकल्स भारिकान लि. (आईपीसीएल) की सौदेबाजी काफी आगे बढ़ की थीं जीएनएफसी और आईटीसी जहां उर्वरक और सीमेंट भे उत्पादन करने वाली दो सरकारी कंपनियों के प्रबंधन की किता रही थीं, वहीं आईपीसीएल बसरा में एक कित्तायन संयत्र का संचालन करने वाली थी.

## अपवाद भी

दातर सरकारी निगम समय पर और मूल लागत अनुमानों के भीतर परियोजनाएं कभी पूरी नहीं कर कि भीतर परियोजनाए कमा हूर कि भीतर पर बिजयपुर कि कि कि अपवाद भी हैं. मिसाल के तौर पर, बिजयपुर भा कुछ अपवाद भी हैं. मिसाल क तार न के करोड़ रू. केतिल के कि कि अपिर इंडिया लि. (गेल) के 300 करोड़ रू. है तिल पेटोलियम गैस संयंत्र को ही ले. 'गेल' को मध्य नवंबर कि में प्रिक्ति प्रालयम गैस संयंत्र को ही ले. गल का जान थी. भिष्पियोजना लगाने के लिए सरकार से मंजूरी मिली थी. है से देशको को तीन साल बाद पूरा करना था. लाउल. भिवाहे उसे एक साल पहले ही पूरा कर दिया और पिछले किवाह उसे चीलू भी कर दिया.

# मांग-आपूर्ति की खाई

 सी उद्योगपित को मुख्यतः बिजली पर आधारित सा उद्यागपात पा पुल्या । उद्योग कहां शुरू करना चाहिए? पूरव में या उत्तर में? जवाब है: पूरब में. कुछ लोगों को ताज्जुब हो सकता है. लेकिन, केंद्रीय ऊर्जा मंत्रालय के अनुसार पूर्वी क्षेत्र में अगले चार वर्षी में सबसे ज्यादा मांग के अनुपात में बिजली की आपूर्ति में कमी 22.1 फीसदी से घटकर 13 फीसदी हो जाएगी. दूसरी तरफ

ब	विजली संकट दलता स्व	रूप कि वास्त्र मन
	ती मांग के वक्त %	A STATE OF THE PARTY OF THE PAR
1989-90	क्षेत्र	1994-95 (अनुमानित )
14.2%	उत्तर	26.7 %
15.3%	पश्चिम	7.6%
19.1%	विक्षण	17.6%
22.1%	पूरब	13 %
0.2 %	् उत्तर- पश्चिम	33%
17.2%	अखिल भारतीय	16.3%

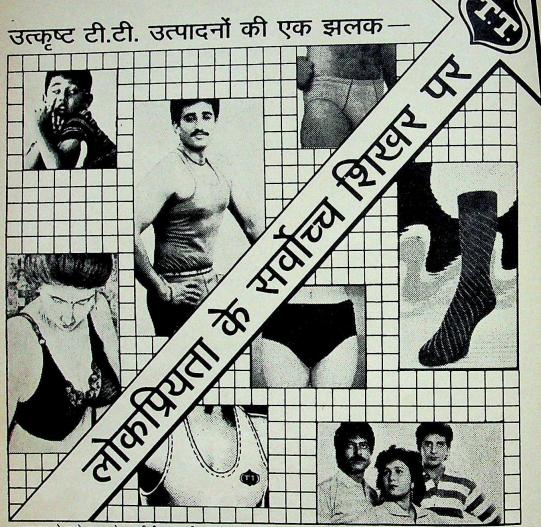
उत्तरी क्षेत्र में इसी अवधि में यह कमी 14.2 फीसदी से बढ़कर 26.7 फीसदी हो जाएगी. सबसे ज्यादा असर पूर्वोत्तर क्षेत्र पर पडेगा जहां बिजली की आपूर्ति में कमी 1989-90 के मात्र 0.2 फीसदी से बढ़कर 33 फीसदी हो जाएगी (देखें चार्ट).

कमी की मुख्य वजह यह है कि आठवीं योजना (1990-95) के दौरान पर्याप्त क्षमता वाले संयंत्र नहीं लगाए जा सकेंगे. हाल ही में योजना आयोग के एक कार्यदल ने सिफारिश की थी कि आठवीं योजना के दौरान बिजली उत्पादन की क्षमता 38,369 मेगावाट बढ़ा दी जाए. बिजली परियोजनाएं लगाने के लिए निजी कंपनियों को उत्साहित करने की बात की जा रही है लेकिन आठवीं योजना के दौरान नई उत्पादन क्षमता में निजी क्षेत्र का योगदान मात्र 887 मेगावाट ही रहने की संभावना है.

## नई जमीन की तलाश

रतीय इस्पात प्राधिकरण लि. (सेल) अब लोहा और इस्पात की टेक्नोलॉजी, परियोजना और प्रबंधन सलाहकार सेवा का निर्यात करेगा. कंपनी पूर्वी यूरोप और तीसरी दुनिया में ठेके हासिल करने के लिए यूगोस्लाविया की 'इंटरनेशनल सेंटर फॉर पब्लिक इंटरप्राइजेज इन डेवलिंपग कंट्रीज' को पटा रहा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



सफलता के रास्ते पर चलते हुए, टी.टी. अन्दरूनी पहनावे के क्षेत्र में आरामदाय महत्वता की वजह से आज सर्वोच्च शिखर पर पहुंचा है। हमेशा की तरह आगे ही आगे रहने की अपनी परम्परा में पिछले 25 वर्षों से अधिक समय से, टी.टी. का हर उत्पादन आराम की कसौटी पर खरा उतरा है। आज टी.टी. विकास, विविधता तथा लाभ का प्रतिक है। टी.टी. अपने असंख्य उपभोक्ताओं को सही मूल्य, सही गुणवता देने के लिए वचनबध है।

टी.टी.

अंडर वियर, बनियान, ब्रा, पैंटी, टी शर्ट, जुराबें

25 वर्षों से अधिक श्रेष्टता का प्रतीक

Parichay



में अंपू की सकते वाली वाद इसी द पान मसाल कैनियों में उप परमने का बाती पलेक्स अगोक चतुर्हे में कंपनियों हो गई है औं भीमा तक व

गांच साल में

गली इकाइ

वहकर करीट कोई भी होरितक्स व

न अपने पाच हे लिए उसे

गुरू कर वि भूम जेम्स इ

को वे जान वामकर जव

कुछ केप वित्यां उस्ते वित्यां वित

तिरुपति टेक्सनिट लिमिटेड

होटी वैतियों में बिक्री

# रा सा खरा

# अब इनके जरिए उत्पाद की बिक्री का परीक्षण भी

प्रिवियन के पाउच (पुड़िया) का जमाना फिर पूरे जोर-शोर से लौट भग है '80 के दशक के शुरुआती काल में ग्रेंपू की एक बार इस्तेमाल की जा मने वाली छोटी थैलियां आई थीं. उसके गर इसी दशक के मध्य में कई तरह का पत मसाला पॉलिथिन की इन छोटी वित्यों में आने लगा. लेकिन अब तो ये र्शेलियां उत्पाद बाजार में उतारकर ग्रसने का कारगर माध्यम हो गई हैं इपितयों के लिए ऐसी थैलियां बनाने वाती फ्लैक्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड के अध्यक्ष अगोक चतुर्वेदी के शब्दों में, "इन थैलियों में कंपनियों की पहुंच दूरस्थ इलाकों तक होगई है और इनकी वृद्धि दर अकल्पनीय मीमा तक बढ़ गई है.

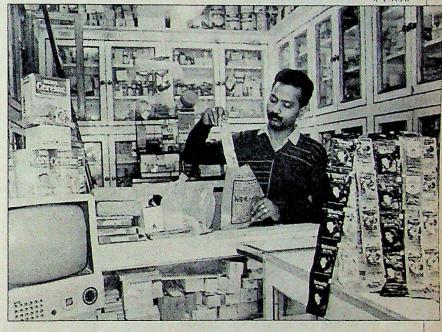
अव साबुन से लेकर टॉफी तक, खांसी रोकने के सिरप से पाचक चूर्ण तक, विकेटिंग ऑइल से बालों में लगाने वाले ले तक और सेनेटरी नैपकिन से अचार क सब चीजें इस्तेमाल करो और फेंको वली इन थैलियों में भरकर आ रही हैं. आंकड़े भी इन थैलियों की कामयाबी हों कहानी कहते हैं. एक अनुमान के भ्तुमार छोटी थैलियों में बंद सामान का ल मालाना कारोबार 500 करोड़ रु. का हैं जो मालाना 25 फीसदी की दर से बढ़ हा है इस दिन-दूनी रात-चौगुनी तरक्की ग एक और उदाहरण यह है कि पिछले गंव साल में इन थैलियों की पैकिंग करने <sup>भृती इकाइयों</sup> की संख्या चार गुना क्कर करीव 200 हो गई है.

कोई भी पीछे नहीं रहना चाहता. गिलिक्स बनाने वाली कंपनी एचएमएम विभने पाचक चूर्ण इनो की बिक्री बढ़ाने े लिए उसे 5 ग्राम की थैली में बेचना कि कर दिया एचएमएम के विपणन भूत जेम्स वर्न्स के अनुसार, ''इन थैलियों के इ हों ते जाना वहुत आसान होता है, भामकर जब आप यात्रा पर हों.''

कें कंपनियां नमूनों के लिए ये किंवां इस्तेमाल कर रही हैं. हाल ही में भेड़े कर वित्त के वित्त वाजार में भेड़े गई है ताकि वह अपनी विपणन किन अजमा सके. डाबर के विपणन हें उपाद को आजमाने के बाद लोग हमारे सामान्य पैकिंग खरीदने लगेंगे."

मजेदार बात यह है कि प्लास्टिक की वोतलों या डिब्बों के मुकाबले ये थैलियां महंगी पड़ती हैं. इंडियन ऑयल कार्पोरेशन का अनुमान है कि जब उसका 2-टी

जरूरतों को भी पूरी करती हैं. पांच तारा होटलों को सावन, शैंपू और टेल्कम पाउडर के ऐसे पैकेटों की जरूरत होती है जो एक बार में ही पूरे इस्तेमाल हो जाएं. एओ नारियल तेल बनाने वाली अहमद मिल्स ने नारियल तेल की 10 ग्राम की थैली वेचनी शुरू कर दी है. इसकी विपणन प्रवंधक उमिला जुत्गी ने बताया, "हम बाजार के सभी वर्गों में घुसपैठ करने की कोणिण कर रहे हैं." इन थैलियों में शैंपू और ट्रथपेस्ट वेचने वाली हिंदुस्तान लीवर के एक प्रवक्ता के शब्दों में,



लुब्रिकेटिंग ऑयल प्लास्टिक के डिब्बों में वेचा जाता है तो पैकिंग खर्च उत्पाद की कीमत का नौ फीसदी बैठता है पर पॉलिथिन की छोटी थैलियों का पैकेजिंग खर्च कुल कीमत का 50 फीसदी है.

पर देहाती इलाकों में प्रति इकाई की कीमत ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं होती. लोग ऊंची आरंभिक कीमत की वजह से सामान नहीं खरीदते. मसलन, गोदरेज सोप्स ने पाया कि गांवों में दवा की दुकान वाले खांसी का सिरप चम्मचों में बेचते हैं. इसी से प्रेरणा लेकर कंपनी ने अब खांसी का एक बार में ही इस्तेमाल किया जा सकने वाला अपना नया सिरप 'निवारण' 50 पैसे की थैलियों में बाजार में उतारा है. गोदरेज सोप्स के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एच.के. प्रेस के अनुसार, "कम आमदनी वाला पूरी बोतल खरीदने के बजाए छोटी थैली खरीदना ही ज्यादा ठीक समझेगा."

पर इन थैलियों की कामयाबी सिर्फ उनकी कीमत की वजह से ही नहीं है. ये

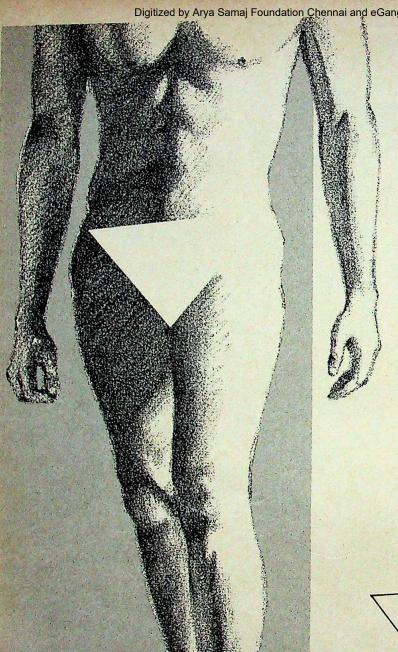
## द्कान में कई तरह की थैलियां: विपणन की सुविधा

"उपभोक्ता अब अपने परिवार में विभिन्न तरह के नुडल्स और सूप ला सकता है."

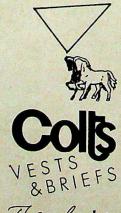
इन सबके बावजूद इन थैलियों के साथ नाकामी भी जुड़ी हुई है. इन थैलियों में ट्थपेस्ट बिक्री की शुरुआत करने वाले कॉलगेट को अपना उत्पाद बाजार से लगभग वापस ही ले लेना पड़ा क्योंकि उपभोक्ताओं को इसके इस्तेमाल में परेशानियां ही परेशानियां दिखाई देती थीं. पर इन थैलियों के व्यापारियों के लिए तो यह छोटी सी बाधा है. शैंपू बिक्री के मामले में तो इन थैलियों का 50 फीसदी बाजार पर कब्जा है. और फिर इन थैलियों की बिक्री का सालाना बाजार 10 फीसदी की दर से बढ़ रहा है जबकि बोतलों के बंद सामान की बिक्री दो फीसदी की दर से ही बढ़ पा रही है.

- मुरजीत वासगुप्त, शिव तनेजा के माथ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



He world what it takes to be a man





The bare essentials

A Quality product from :

VIJAYAKUMAR MILLS LTD Kalayamputhur Post, Palani, Tamil Nadu · 624 615

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

SASI/VMU3/91

मिखरी बाजार निया. संकेत उपर जाएंगी माझा कोपों प्रवृति पर थे नेशुरू में का ग्रेयर बाजा मवेदनशील र

1170.82 **प** विकवाली भी म्बी. 21 गिरकर 1150 ग्रइम्स का नुनकांक 586

वित्तीय सं विकी भी. प्र गनकारों के तंस्याओं ने दे वेवर निकार

नमा स्टॉक

हेवर बाजार

हीमतों में उछाल की संभावना

प्रविती में देश भर के शेयर विजारों ने अपना उत्साह वापस पा ल्या संकेत यही हैं कि कीमतें धीरे-धीरे बर जाएंगी. पर वित्तीय संस्थाओं और मा कोषों ने कमाई के लालच में इस वित पर थोड़ी रोक लगाई. प्रमुख शेयरों रेश्ह में काफी तेजी दिखाई जिससे मुंबई वागर के 30 शेयरों वाला मवेदनशील सूचकांक बड़ी तेजी से चढ़कर 1170.82 पर पहुंचा लेकिन इनकी किवाली भी शुरू हो जाने से यह तेजी की. 21 फरवरी को यह सूचकांक विकर 1153.3 पर आ गया. इकॉनॉमिक गुइम का अखिल भारतीय शेयर मूल्य गुनकांक 586.8 पर बंद हआ.

वित्तीय संस्थाओं ने खरीद भी की और कि भी प्रमुख दलालों और बाजार के गनकारों के अनुसार कुछ बड़ी वित्तीय स्याओं ने टेल्को और टिस्को जैसे प्रमुख वर निकाले और साथ ही जयप्रकाश



इंडस्ट्रीज और मैसूर पेट्रोकेमिकल्स जैसे नकदी खरीद वाले शेयर भी.

दूसरी ओर, नई योजनाओं से आई भरपूर राशि से अमीर बनी वित्तीय संस्थाओं ने खरीद शुरू की. विश्वस्त सूत्रों से मालूम हुआ कि अपनी 10वीं योजना घोषित करने वाले कैनबैंक साझा कोष ने कुछ प्रमुख शेयरों की खरीद की.

बाजार के इस उत्साह वाले माहौल में एसीसी 1950 रु. तक पहुंचने के बाद 1870 पर बंद हुआ. टिस्को भी 175 रु. तक आकर 168.75 रु. पर रुका. अन्य प्रमुख शेयरों में भी थोड़ी-बहुत गिरावट आई. लेकिन इस आम प्रवृत्ति के विपरीत ग्रेट ईस्टर्न शिपिंग 10 फीसदी बढोत्तरी पाकर

Digitized by Arya Samaj Foundation किलान ai and eGangotri. 32.50 र. पर बंद हुआ. नकदी खरीद वाले अधिकांश शेयर भी आगे बढ़ने का रुख दिखा रहे थे.

> इस पखवाडे सबसे ज्यादा गिरावट मन् छाबरिया के डनलप के शेयरों में आई जो 51 रु. तक गिरे. ईस्ट इंडिया होटल के शेयरों में 5 रु. की गिरावट आई और वह 45 रु. पर रुका. बाजार पर नजर रखने वाले शायद इस वर्ष पर्यटन में गिरावट का क्प्रभाव होटल उद्योग पर पडता देख रहे हैं. काफी फायदे वाला शेयर बडौदा रेयान रहा जो 21 फरवरी को 72.50 रु. ऊपर आकर 540 रु. पर रूका.

पिछले साल के तेज उफान और फिर आई गिरावट को संभाल न पाने के लिए मुंबई शेयर बाजार के अधिकारियों की काफी खिचाई हुई थी, सो इस बार वे बाजार से जुड़े अनेक मुद्दों पर बातचीत करने के लिए जुटे. इसमें बड़ी बिक्री पर लगी रोक समाप्त कर दी गई.

लेकिन सभी खरीद पर निश्चित तारीख तक डिलीवरी देने की बात तय की गई. साथ ही वर्गीकृत शेयरों में दो दिन के समय पर सौदा करने वाले दलालों को कुछ रियायत भी दी गई. उनके लिए सौदे की सीमा 25 लाख रु. से घटाकर 20 लाख रु. कर दी गई.

		61 -11-	
जमा स्टॉक			-
			य में
1	191		में कि
<b>अं</b> चा	नीचा	बंद	कि
		21.2.91	इस
मोह तेतेड 136.00			
	109.00	128.50	5.50+
्रिया पेट्स	1300.00	1870.00	340.00+
	215.00	255.00	10.00+
पार बाँदो 59.00 विक केंद्र	42.00	56.00	11.50+
THE COLOR	500.00	560.00	
19101	400.00	540.00	72.50+
	228.00	258.00	1.00+
	168.00	195.00	12.00+
वि सहस्र 82.50 विस्तिम् 220.00	40.00	77.50	15.00 ÷
220.00 r atr 124.00	150.00	211.00	31.25+
140.00	112.00	124.00	4.00+
215.00	116.00	136.00	5.00+
175.00	162.50	213.75	36.25+
नेतर रामो	132.50	172.50	22.50+
अवनामिर	250.00	4350.00	525.00+
	250.00	300.00	18.75 ÷
	78.25	125.00	27.50+
1012	123.00	179.00	20.50+
FEFF 50.00	49.50	51.00	1.00
Di 2	42.50	45.00	5.00 -
रहा नाहतीन 230.00 हा किला नाहतीन 43.75	127.00	147.00	7.00+
43.75	140.00	230.00	37.50 +
230.00 (15.00)	32.00	40.50	6.50+
210.00	25.00	32.50	6.00+
210.00 202.50 127.50	150.00	170.00	6.25+
127.50	167.50	196.25	11.25+
127.50 267.50	90.00	122.50	15.00+
	200.00	262.50	12.50+
	650.00	960.00	230.00+
25.75	140.00	158.75	11.75 +
3500.00	18.80	24.25	3.50+
190 43.00	20.00	3400.00	550.00+
137.50 327.50	30.00	41.00	4.75+
327.50	110.00	125.00	2.50+
	240.00	327 50	27 50 1

-- 327.50 240.00 **327.50 27.50**+

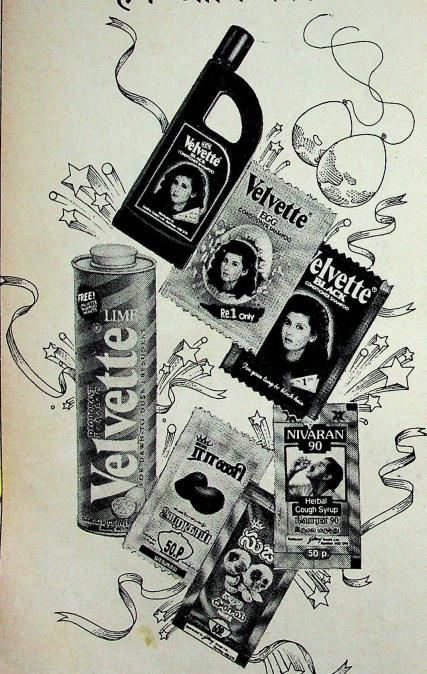
624 615

				西南
	, 19	91		म्बव
	ऊंचा	नीचा	बंद	इस स्टॉक
			21.2.91	The last
आईटीसी	131.00	99.00	129.00	22.00+
जे.के.सिथेटिक्स	37.50	27.00	38.50	. 3.00+
काइनेटिक इंजी	170.00	150.00	160.00	2.50 -
किलों. क्युमिस	121.25	95.00	115.00	5.00+
केएसबी पंप्स	210.00	160.00	210.00	25.00+
लार्सन-दुब्रो	125.00	90.00	120.00	15.00+
तिप्टन		57.50	72.50	-
सोहिया-मशीन्स		28.50	35.00	4.00+
एलएमडब्ल्यू	3575.00	2380.00	3575.00	525.00+
मदुरा कोट्स		193.00	222.00	16.00 +
महिद्रा-महिद्रा	75.00	60.00	87.50	- 5
मास्टरशेयर्स	30.00	20.00	28.00	3.75+
मोटर इंडस्ट्रीज		675.00	825.00	75.00+
मुकुंद लिमि	200.50	155.00	195.25	23.75+
नेशनल आर्गे	125.00	925.00	1075.00	60.00+
नेस्ले इंडिया	141.25	111.25	135.00	7.50+
निरलॉन		16.00	19.50	0.50+
ओरके सिल्क मि	28.50	17.50	27.50	4.00+
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स		53.00	60.50	3.25 +
प्रीमियर ऑटो	50.00	30.00	42.00	5.00+
रेमंड	136.25	110.00	131.25	10.00+
रेकिट-कोलमैन		205.00	226.00	9.00+
रिलायंस इंडस्ट्रीज	.141.25	91.25	135.00	21.00+
सीमेंस इंडिया	127.00	112.50	123.75	6.25+
शॉ वैलेस		77.00	110.00	19.00+
थीराम फाइबर्स	39.00	33.00	39.00	1.50+
एसकेएक बेय	2400.00	1650.00	2350.00	350.00+
स्पिक		33.00	50.00	9.00+
दाटा स्टील	.175.00	130.00	168.00	18.75+
टेल्को		142.50	165.00	2.50+
टाइटन वाचेस	82.50	58.00	82.50	7.50+
वाम ऑर्गेनिक	. 143.75	102.50	142.50	22.50+
वीडियोकॉन	. 270.00	180.00	270.00	20.00+
बोल्टास	. 110.00	92.50	107.50	5.00 +
विमको		16.00	23.75	3.75+
				N 12

भारतीय	रुपए	का मूल्य		
			Tital	地
		इकाई	THE DE	व्यत् व
देश	मुद्रा	इकाइ	T.	
36				
आस्ट्रेलिया आस्ट्रिया				14.9312
बहरीन	शालग . जीवार	100	180.6032	180.1171
बांग्लादेश				54.0864
कनाडा				16.4623
डेनमार्क				3.2988
मिख				6.5238
फांस				3.7313
हांगकांग	डालर	1,	2.4599	2.4362
इंडोनेशिया	रुपिया	100	1.0003	0.9877
ईरान				-
इटली	बीरा	100	1.7128	1.6905
जापान				14.4300
केन्या				0.7594
कुवैत				-
मलेशिया				7.0338
मारीशस				1.3857
,नेपाल				0.6603
हालैड				11.2580
पाकिस्तान				0.8513
सिंगापुर				11.0214
स्पेन				0.2037
श्रीलंका				0.4711
स्वीडन				3.4007
स्विट्जरलैड				14.8547
तंजानिया				0.0949
थाईलैंड				75.3347
ब्रिटेन				37.0302
अमेरिका				18.9843
सं.अ.अमीरात	ादरहम	1		
सोवियत संघ	हबल.	1	22.7870	22.7847
जर्मनी	डम	1	13.0208	12.6904

स्रोत: वैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 21.2.91

# जहाँ तक आपके संपन रहेंगे, हम आविष्कार करते रहेंगे।



सुविधा जनक पैक में शैम्पू सिर्फ एक सपना था जब तक हम वेल्वेट इन्टरनेशनल से वेल्वेट शैम्पू सैशें का प्रवर्तन किये।

हर भूमिक

उन अध इंतजा

अपनी इक

इंतजार. कु बाद उन्होंने

कछ भी न

में उनकी

तगी उस अ

कैमरे के स

भौंहे, आंखें

हाल. कम

उस वक्त भ नेटी थीं, म

निपस्टिक

रबाए, गले

मजीली सां

बुद्ध कह । मौम्यता क

मका. चेह

मभ्रांत अ

तन्जा जा

जिंदगी भ

और वोल-वोलने का

वहत

अशोक

कव?

और दुबारा जब अपने अच्छे से अच्छे शैम्पू को सस्ते दाम में पाना चाहा तब भी आविष्कार करते रहें। इसका परिणाम था हाई क्वालिटी 100/200 ml. वेल्वेट शैम्प् । बस यही नही । हम आपको वेल्वेट डियोडेरेन्ट टाल्क देने के लिए नये परिवर्तन करते रहे भारत का एकमात्र डियोडेरेन्ट टाल्क -इर्गासन डी.पी. 300 सहित। पर यह अन्त न था। अब है निवारन 90 भारत का पहला खाँसी शीरा - जनता तक पहुँचने के लिये खरीदने योग्य दामें में। और रानी और सुजा अचार -भारत का पहला अचार - सैशे में - एक प्रवर्तन जो मार्केट पर छा गया।

इनमें से अधिकतम उत्पाद का वितरण केवल क्रिक्य सोप्स लिमिटेड द्वारा ही किया जाता है। इसके साथ हम यह भी विखास देते हैं कि भविष्य में आप बहुत सारे आविष्कार देखेंगे, जो आपके अधिकतम माँगो, चाहों और इच्छाओं को पूरा कर सकें।

नवीनता । वेल्वेट जीवन की अनोखा शैली।

वेट्वेट इन्टरनेशनल फार्मा प्रोडक्टस प्रा. लि.

कार्पोरेट आफिसः A-3, दूसरी मंजिल, पार्सन मेनेर, 602, अन्ता सालै, मदास 600 006 फोन : 865440, 475896, टेलेक्सः 041 - 5355 VEL IN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

-1/90/PC

वेल्वेट सैशें

से

पाना

रहें।

ग्टी

के

गरत

खाँसी

शे में

ह्त

गपक

शैली।

# मौन संयम,

हा भूमिका में एक परिष्कृत पहचान

उन अधमुंदी, पथरा चुकी आंखों में उद्गंजार अब भी पसरा हुआ था, अपनी इकलौती संतान मोहनीश का हतजार कुछ कह जाने की कोशिश के बाद उन्होंने जैसे फैसला कर लिया था क्छ भी न कहने का बस, इस क्षण के बाद में उनकी चुप्पी कई-कई कहानियां कहने ला उस अभिनेत्री की जिसका अंग-प्रत्यंग कैमरे के सामने वाचाल हो उठता था-भौंह, आंखें, चेहरा, होंठ, त्वचा, चाल-इाल. कम बोलती थी तो बस एक जवान. उस वक्तं भी जब वे सजी-धजी चिता पर बंदी थीं, मांग में सिंदूर सजाए, होंठीं पर निपस्टिक लगाए, दांतों में तुलसी दल खाए, गले में मंगल सूत्र, बदन पर मजीली साड़ी लपेटे तो लग रहा था कि कुछ कह रही हैं. क्रूरतम कैंसर उनकी मीम्यता को कहीं लेशमात्र भी छु नहीं मका. चेहरे पर वही सलोनापन, वही मभ्रांत आभिजात्य. पास खड़ी बहन न्जा जार-जार रो रही हैं.

जिंदगी भर जिससे बैर पाला और बोलचाल बंद रखी उससे वोलने का चाव जागा भी तो

'बहुत कम बोलती थीं वे,''

अशोक कुमार और नूतन



सुनील दत्त बता रहे थे, ''और जितना कम बोलती थीं, उतनी ही पावरफुल एक्ट्रेस थीं वे. उनके साथ काम करने में मैं कई बार घबराता था-इतनी मंजी हई आर्टिस्ट के मुकाबले कैसे खंडा रह सक्ंगा मैं? लेकिन उन्होंने इस बात का कभी भी जरा-सा भी एहसास नहीं होने दिया कि वे स्टार हैं, नामी हैं..."

सुनील दत्त का यह बेबाक बयान परिवर्तन के एक पूरे दौर का साक्षी है और फिल्मों में नृतन के एक निश्चित महत्व को रेखांकित कर जाता है. नूतन की सफलतम और प्रतिष्ठापद फिल्मों के नाम देखिए, हीरो का नाम जानने तक की चिरनिद्रा में लीन

जरूरत नहीं पडती—सीमा, स्जाता, बंदिनी... हर फिल्म की कहानी उनके और सिर्फ उनके गिर्द बुनी जाती थी. नूतन पर निर्माता-निर्देशक और दर्शकों को सहज भरोसा था कि उनकी चाह चाहे मनोरंजन की हो या अभिनय कंला की बारीकियों में खो जाने की, ग्लैमर की चाह हो या चुलबुलेपन की, प्रबल पारिवारिकता की पक्षधर हो या एक अकेली स्त्री के सबल चरित्र चित्रण की, यह एक अकेला नाम उन्हें निराश नहीं होने देगा. अपने समय की कुछ अन्य भावप्रवण अभिनेत्रियों के

साथ उन्होंने फिल्म हीरोइन को जो एक महत्ता दिलाई, उसका व्यक्तित्व सुनिश्चित बनाया, उसको जो गरिमा प्रदान की उसी ने नृतन को

नूतन बनाया.

अभिनेता राजेंद्र कुमार का यह कहना बिलकुल सही है कि यह ऊंचाई पाने के लिए नूतन

को शरीर प्रदर्शन की उस नीचाई पर कभी भी उतरना नहीं पड़ा जिसे आज फिल्म एक्टिंग का जरूरी हिस्सा मान लिया गया है. हालांकि यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य ही है कि फिल्म के परदे पर स्वीमिंग सूट पहनने वाली पहली अभिनेत्री नूतन ही मानी जाती हैं (दिल्ली का ठग, 1950). लेकिन शालीनता उनके ऐसे हर रोल के साथ भी पूरी तरह जुड़ी रही जिसमें उन्होंने नायक के साथ भरपूर उछल-कूद की. देव आनंद के साथ 'पेइंग गेस्ट', 'बारिश', 'मंजिल' और 'तेरे घर के सामने' जैसी फिल्में कौन भूल सकता है? राजकपूर के साथ 'अनाड़ी', 'कन्हैया', 'छलिया' और ' दिल ही तो है' की नायिका नृतन भला कहां किसे, कब चीपं

स विशेषता के लिए नूतन को याद किया जाएगा वह है संयम. इसी ने उन्हें भारतीय नारी की भूमिका के लिए उपयुक्त अभिनेत्री बनाया



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगीं? 'सरस्वतीचंद्र' में विरक्त पति को पारिवारिकता के प्रति आसक्त करने की कोणिश करने वाली नूतन 'छोड़ दे सारी दुतिया किसी के लिए, यह मुनासिब नहीं आदमी के लिए' जैसी शांत, संयत भावना से अलग हटकर कहां कुछ करती दिखाई वीं?

"यह नूतन का दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास ही था जो हर किसी को अनिश्चितता के भंबर में फंसाए रखने के लिए मणहूर फिल्म जगत में हमेशा टिकाए रहा", यह टिप्पणी है

शम्मी कपूर की. नूतन के एक अन्य सफल नायक की. हालांकि शम्मी कपूर नूतन की अलग-अलग ढंग की उन भूमिकाओं का जिक्र कर रहे थे जिन्हें स्वीकारने में नूतन कभी जरा भी नहीं हिचकिचाई लेकिन इसी के साथ यह भी एक सच है कि फिल्मों में सफलता पाने के बाद दो-दो बार नूतन फिल्मों से दूर हुई और फिर पहले से कहीं ज्यादा शान से, ज्यादा परिष्कृत हो, बिना किसी विशेष प्रयास के फिल्म जगत में लौट भी आई. पहली बार वे फिल्मों से दूर हुई थी तब जब वे अपनी



निश्छल मुस्कराहटः सफलता का राज

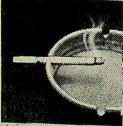
मशहूर अभिनेत्री मां शोभना समर्थ के निर्देशन में बनी फिल्म 'हम लोग' में बलराज साहनी जैसे मंजे हुए कलाकार और नासिर खां के साथ नायिका के रूप में 'नगीना' में काम कर चुकी थीं. दूसरी बार वे फिल्मों से दूर हुई विवाह के बाद लेकिन जब लौटने का निश्चय किया तो उन्हें हाथोहाथ लेने को निर्माता फिर लाइन लगाकर खड़े हो गए. 'अनुराग', 'सौदागर', 'मैं तुलसी तेरे आगन की' जैसी

मॅच्योर भूमिकाओं वाली फिल्में उनके इसी दूसरे दौर की कामयाब फिल्में हैं.

देव आनंद आज भी नूतन के उस संयम के कायल हैं जो सारी उम्र नूतन की विशेषता बना रहा और खुद देव के अभिनय के दामन से फिसलता ही रहा. देव कहते हैं, "अपने इमोशंस, अपनी एक्टिविटीज, अपने हावभावों पर जो हक उन्हें हासिल था, वह सीखने की चीज है." इस कथन से यह तथ्य पूरी तरह उजागर होता है कि जिस एक अन्य विशेषता के लिए नूतन की

सदा याद किया जाएगा और फिल्म अभिनय कला के विद्यार्थियों को उनका अभिनय पाठ की तरह पढ़ना पड़ेगा, वह है संयम. इसी संयम ने उन्हें भारतीय नारी की भूमिका के लिए सबसे उपयुक्त अभिनेत्री ठहराया. और इसी संयम की सराहना विदेशी समारोहों में गई फिल्मों में उनके अभिनय को मिली. संयम कितना बड़ा शस्त्र और शास्त्र सांबित हो सकता है यह समझने के लिए आज की हीरोंडनों को नूतन की फिल्में वार-वार देखनी ही पड़ेंगी.

# कुछ आदतों से दांतों पर दाग़-धब्बे पड़ जाते हैं









# मुक्ता चमक की आदत उन्हें साफ़ कर देती है!

मुक्ता चमक आयुर्वेदिक विधि से तैयार किया गया एक अनोखा फार्मूला है जो बुरे से बूरे धब्बेदार और बदरंग दांतों का भी साफ़ कर देता है। बस, मुक्ता चमक का उपयोग पंक पर दिये गये निर्देशों

के अनुसार कीजिए। आप देखेंगे कि पान खाने, सिगरेट पीने, या पान-मसाला खाने से दांतों पर पड़े दाग्न-धब्बे धीरे-धीरे ग्रायब हो जायेंगे। और नज़र आयेंग चमचमाते बेदाग्र दांत!



जी हां, यह टूथपाउडर नहीं टीथ व्हाइटनर है

हमारे वितरक : नई दिल्ली • डी. जे. शाह एण्ड सन्स, 1/6190, देवनगर, करोलबाग, फोन : 581137 • 5734610, राजस्थान • श्रीजी एजेंसीज़. धृला हाउस, बापू बाज़ार, जयपुर, फोन : 565228, मध्य प्रदेश • भगवानदास मेडिकोज़, महारानी रोड, इंदौर • श्री कृष्ण आरोग्य मंदिर, घोड़ा नकाश, धोपाल • लाला रामस्वरूप आर सी एण्ड सन्स, अंधेरदेव, जबलपुर • दाऊ मेडिकल एण्ड जनरल स्टोर्स, मुंगेली नाका, बिलासपुर • अतुल ड्रग रतलाम • नज़र मेडिकल स्टोर्स, खेडिकी: In Public Domain. Guruk प्राप्तिक हुर्ता राज्यक्र प्राप्तिक विलासपुर • आनंद एंटरप्राइज,

फिल्में र की

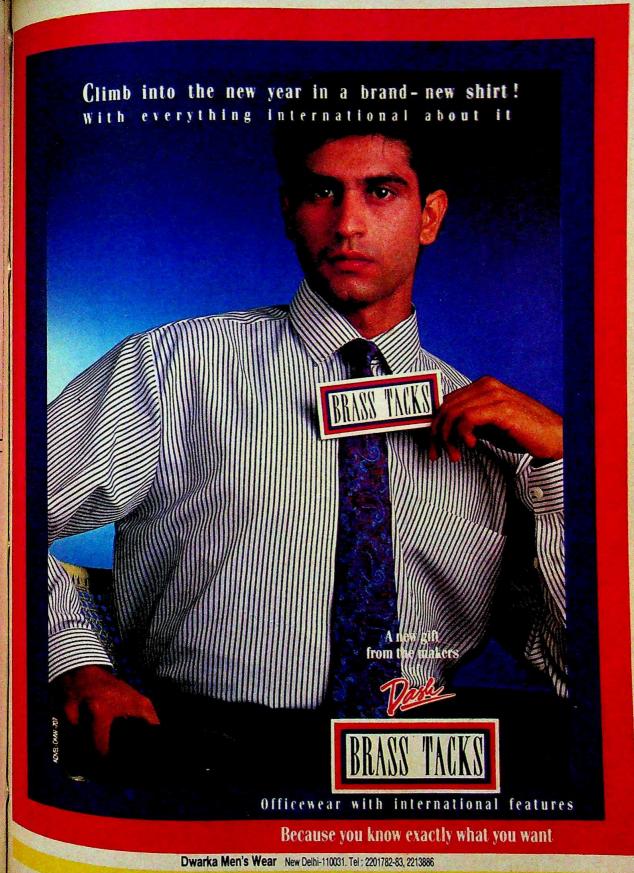
नूतन के पे सारी

ा बना भनय के

हा. देव अपनी वभावों ल था, '' इस तरह स एक तन को फिल्म उनका , वह है । नारी उपयुक्त ाम की फिल्मों कितना सकता रोइनों नी ही तिवारी

र है!

ACLIM



Financially sound distributors'/dealers' enquiries solicited

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



# ये कौन-सा मुकाम

# प्रचार-प्रसार बढ़ा पर कलात्मक स्तर में गिरावट आई

म गहर प्राप्त के चक्करदार नृत्य की •शहूर फिल्म 'उमराव जान' में याद है आपको? उस जमाने के मुजरों का इस फिल्म में सुंदर चित्रण किया गया था. लेकिन मुजरा अब अमीर और रंगीन तवीयत वाले लोगों की सजी-सजाई महिफलों, फिल्मी सेटों या हैदराबाद, लखनऊ, मेरठ, मुंबई, और दिल्ली के नवाबी कोठों तक ही सीमित नहीं रहा. मुस्लिम शैली का यह रिसक नृत्य मध्यम वर्ग की बैठकों में भी पहुंच गया है.

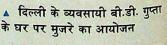
मुजरा अब बिगड़े दिल शहजादों या आला अमीरों की जागीर भर नहीं रहा. लोग-बाग आज वेधड़क मुजरे का कार्यक्रम तय कर-करा सकते हैं. इसका आनंद अब बेहिचक बच्चों, दोस्तों और अपने पूरे परिवार के बीच लिया जाने लगा है.

समय के लिहाज से मुजरे ने भी कई मुकाम तय कर लिए हैं. मुजरे के नए दौर में फिल्मी अंदाज का बोलवाला है. नर्तकियों

के कपड़े भी तड़क-भड़क वाली फिल्मों की नकल हो चले हैं. जितने अधिक भड़कीले वस्त्र हों, उतना ही बेहतर माना जाता है. डिस्को मुजरा भी चल पड़ा है जिसकी तर्ज गरवा जैसी है. इसके शब्द तो भारतीय भाषा के होते हैं पर धुन पाश्चात्य डिस्को से प्रेरित होती है.

पुराने जमाने के मुजरे के कद्रदां यह जानकर अफसोस से उफ कर बैठते हैं कि अब इसका सबसे विकृत रूप 'कैबरे मुजरा' भी चल पड़ा है जिसमें एक-एक कपड़ा उतारकर बदन उघाड़ा जाता है. कई मुजरे देख चुके और कई आयोजित कर चुके संजीव कपूर कहते हैं, "लड़िकयों के बदन से कपड़े उतरवाना कोई बड़ी बात नहीं, सवाल सिर्फ यह होता है कि आप कितना पैसा खर्च कर सकते हैं."

और इस सबके मूल में सवाल पैसे का ही होता है. मुजरा करने वाली कुछ नर्तिकयां तो आयोजन और पैसे के प्रबंध का



सारा जिम्मा आयोजक संगठनों की ही सौंपना पसंद करती हैं. दिल्ली में पी नामक संगठन चलाने वाले मनोहर बर्म नियत समय के मुजरों के लिए 8,000 है लेकर 25,000 ह. तक राणि वस्ति है राणि का निर्धारण नर्तिकयों की मंह्या संगीतकारों का स्तर और भड़कीले माही के अनुसार ही किया जाता है।

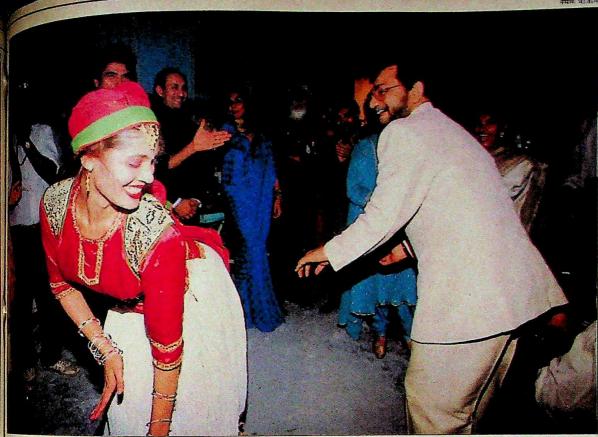
राजधानी में ही श्रीमती रमणराजन है पास स्वतंत्र रूप से काम करने वाली नर्तिकयों का ग्रुप है. वे प्रति शाम के 8.00 से 10,000 रु. वसूल करती हैं. दिल्ली ही जयभगवान ऐंड पार्टी के पास 12 नर्तिक का ग्रुप है और वह प्रति शाम के 10,000 है

मकबूल फिद गाः शाही अं ना है. इसी त चि ग्रुप 'एक्स मे यह ग्रुप 1

म के हिसाव एटे म्यूजिकर की और ए 5,000 ह. तक वृतियादी त क, नर्तकि H. नियम जी वादकों का-ध्वनि के होता है. कि के दाम अ ोस' के म ेते हैं, ''अग ी मैलीं भाइम हो, विद्वाक कपड भी है, तो इ नितिता वर्च : भीधुनिकता ेषी नकल से

होंई भी कुश

भी नहीं और



मज्बूल फिदा हुसैन के जन्मदिन पर गाः शाही अंदाज

महै इसी तरह दिल्ली और मुंबई में विगुप 'एक्सप्रेशंस' में आठ नर्तिकयां हैं म यह ग्रुप 15,000 से 40,000 रु. प्रति मके हिसाव से पैसे लेता है. यहां तक कि हरे म्यूजिकल ग्रुप', जिसमें केवल एक की और एक गायक हैं, 7,000 से <sup>100 ह</sup>. तक लिया करता है.

कुनियादी तौर पर खर्च केवल क, नर्तकियों,

ाना, नियम और भी बादकों तथा <sup>गिंग-ध्व</sup>नि के इंतजाम होता है हां, तड़क-कि दाम अलग से लगते भेम' के मनोहर शर्मा हैं, "अगर 'राम तेरी मैलीं के नृत्य भाइम हो, जिसमें क्षिक कपड़ों में भीगी नजर नर्तकी ों है. तो इस पर 2,000 ह. निक्ति मर्च बैठेगा."

गुप्ता

नों को है

में भी

नोहर भर्म

,000 F A

वसूलते हैं

की संख्या

ले माहौत

णराजन है

वाली 10

市 8.00

दिल्ली की

2 नर्तिक्यों

10,000

श्रम्भिकता की अंधी दौड़ और नेकल से सराबोर इन आयोजनों केंद्र भी कुशल नर्तकी नृत्य के प्रेम के कि भारती. स्वतंत्र कलाकार मधु बताती हैं कि उन्होंने अपनी आर्थिक तंगहाली से बचने के लिए ही इस पेशे को चना. रुचि और शिक्षा-दीक्षा से कथक नर्तकी रहीं मधु अब दर्शकों की पसंद के मुताबिक हाव-भाव पेश करती हैं. वे अभी हाल ही में नव वर्ष के अवसर पर नई दिल्ली के एक पांच-सितारा होटल में कार्यक्रम देने गईं. उन्होंने नृत्य

> की शुरुआत तो पारंपरिक शैली में की पर रात ढलते-ढलते उन्हें श्रोताओं

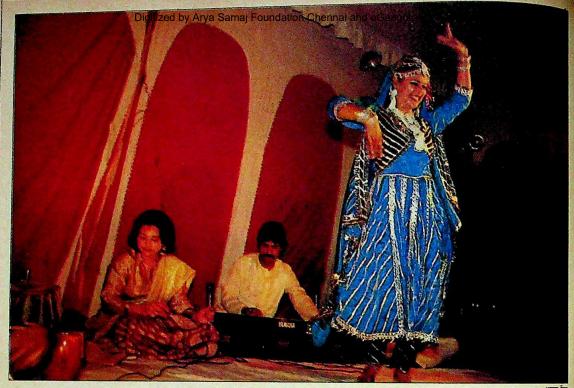
की मर्जी को देखते हुए चालू हिंदी फिल्मी गानों पर उतरना पड़ा. वे अफसोस से कहती हैं, "आज के श्रोता हमारी सांस्कृतिक सोच को समझ पाने के लिहाज से धैर्य लेकर नहीं आते."

मुंबई की शहनाज, जो कि शादीश्रदा हैं और एक बेटे की मां भी हैं, इस धंधे में पिछले 10 वर्षों से हैं. वे भी यही मानती हैं कि इस काम से मिलने वाले पैसे और बल्शीश से ही वे खिची चली आईं. मध् बताती हैं कि वे अब अच्छे रहन-सहन की

आदी हो चुकी हैं. और "शायद कुछ और काम कर भी नहीं सकतीं."

लेकिन मुजरे वाली सभी शामें भड़काऊ या भोड़ी नहीं हुआ करतीं. मिसाल के तौर पर, रीना धारा ने पिछले साल अपने पति के 60वें जन्मदिन पर मुंबई में मुजरे आयोजन किया. नजदीकी रिश्तेदारों और संबंधियों की मौजदगी में आयोजन अपेक्षाकृत साफ-सुथरा रहा. उनके शब्दों में, 'इस मुजरे में साधारण साड़ी पहने एक नर्तकी, एक गायक, तबला, सारंगी और हारमोनियम भर थे."

ए मुजरे के दौर में फिल्मी अंदाज का बोलबाला है. नर्तकियों के कपड़े भी अब तड़क-भड़क वाली फिल्मों की नकल हो चले हैं. वस्त्र जितने अधिक भड़कीले हों, उतना ही बेहतर माना जाने लगा है.



## मुजरे का एक निजी आयोजनः नवधनाढ्यों में लोकप्रिय

हालांकि मूजरे के अधिकतर आयोजन पारिवारिक आनंद या फिर यार-दोस्तों को दावत देने के नए तरीके के रूप में ही हुआ करते हैं पर पैसे वाली नई मनमौजी पीढ़ी के लिए तो इसका कुछ और ही अर्थ होता है. खास तौर से 'तूतक तूतक' जैसे गानों के शोर में थिरकते नौजवानों के लिए मुजरा दूसरे मायने रखता है. इस तरह के आयोजन का पहला

नियम तो यह है कि जेव भरी-पूरी हो जिसके मार्फत नर्तकी को तेजी से नाचने और ज्यादा मादक अदाएं दिखाने के लिए प्रेरित किया जा सके. आयोजिका नंदिता चौहान कहती हैं, "कई बार तो मुजरे के खत्म होने तक लडिकयों को अधिक नहीं तो अपनी कीमत के, बराबर अतिरिक्त पैसे मिल ही जाया करते हैं."

हो सकता है कि मुजरे दौरान पैसा लुटाता कोई बेहतर शौकीन श्रोता आगे बढकर

नर्तकी को छुने या फिर कोई हाव-भाव दर्शाने की कोशिश करे, इसलिए ज्यादातर नर्तिकयां सावधान रहा करती हैं. हाल ही में रोटरी क्लब के तत्वावधान में एक मुजरे वाली शाम आयोजित करने वाली शीना कौर कहती हैं, "हमसे पूछा गया कि किस तरह के लोग मौके पर आ सकते थे और साथ में हमारी योग्यताओं की भी जांच की गई. पूरी तरह संतुष्ट होने पर वे लोग राजी हए.'

> जैसे-जैसे इस नृत्य-शैली को मध्यमवर्गीय परिवारों

> > सभी मुजरों की शामें भड़काऊ या भौंडी नहीं हुआ करतीं. कुछ नर्तकियां परंपरागत शैली का मुजरा करने की कोशिश करती हैं लेकिन प्रचार- प्रसार बढ़ने के बावजूद पुराने मुजरे का स्तर गिरता जा रहा है

स्वीकृति मिलती जा रही है, इसका प्रचार-प्रसार भी बढ़ रहा है. पर कलात्मक धरातल पर इसकी खुबियों में काफी ह्रास आ रहा है. मुजरे के क्षेत्र में मशहूर हस्ती रह चुकी नैना देवी दिल्ली के चावड़ी बाजार की याद दिलाती हैं, जहां रोल्स रॉयस, डाइम्लर्स और इस तरह की विदेशी गाडियों की कतार धनाढ्य शौकीनों को कोठों तक पहुंचाया करती थीं. लेखक प्राण नेविल कहते हैं "मुजरे में गिरावट पाश्चात्य प्रभाव के

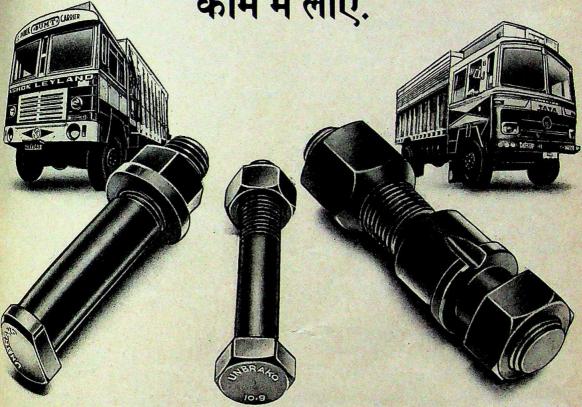
आने के साथ ही शुरू ही गई और बाद में रही-सही कसर '30 के दशक में फिल्मों ने पूरी कर दी. और आज के मुजरे में अढ़ाई ठुमरी या दादरा की कोई अंश शेष नहीं है.

आधुनिकता तमाम और मूलभूत परिवर्तनों के बाद भी मुजरे में विशेष आकर्षण है. पर मुजरा चाहे शहरी बैठकखानों में आयोजित हो या शादी के मौकों पर, रोटरी क्लबों में या होटलों की पार्टियों में हर रूप में यह नवाबों की महिफलों की रौनक बढ़ाने वाले उन जलसों से बहुत —कुसुम साहती भिन्न हैं.

हे हें हैंगा सेंटर,

70 इडिया टुडे • 15 मार्च 1991

जब बात पुर्ज़े बदलने की आए, तो वही अपनाएं जो जाने-माने निर्माता काम में लाएं.



# अनब्रेको हाई-टेन्साईल ऑटोमोबाइल नट और बोल्ट

घटिया नट और बोल्ट अपनाकर आप थोड़े बहुत पैसे ज़रूर बचा लेते हैं, लेकिन अपने वाहन की उम्र भी कम कर लेते हैं. इसीलिए तो भारत के अग्रणी वाहन निर्माता अपने इंजन स्टड, ब्रेक बोल्ट, व्हील बोल्ट और नट आदि के लिए ख़ास तौर पर

पसंद करते हैं — अनब्रेको नट और बोल्ट. तो अबकी बार जब आप अपने वाहन की मरम्मत करें तो अपनाएं वही नाम, जो मूल निर्माताओं के लिए भरोसे की पहचान. अनब्रेको. फिट हों बेहतर. फिट हों कसकर.

पाठित रिक भारतम् कास्टनसं लिमिटेड, भूत भीटर, 17, कूपरेज रोड, बम्बई -400 039.

है. पर बियों में में बियों में में दिल्ली गाती हैं, कतारें महति के के महति के हो। सही सही

जरे में दरा का है. विकता तिनों के

विशेष

मुजरा

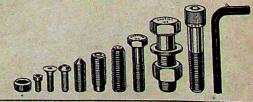
गादी के

लबों में ट्यों में,

ावों की वड़ाने

में बहुत म साहनी



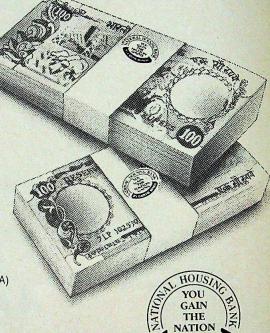


# क्या संपत्ति बेच रहे हैं ?

खरीदिए एन एच बी 9% कैपिटल बॉण्ड्स दीर्घकालीन संपत्ति जैसे जमीन, मकान, शेयर, सेक्योरिटी और आभूषण की बिक्री से प्राप्त आपका कैपिटल गेन 100% कर मुक्त एन एच बी 9% कैपिटल गेन बॉण्ड्स के तहत कई लाभ आपके लिए – आपकी पूँजी के लिए.

- लगायी गयी पूंजी पर आपको सालाना 9% ब्याज मिलता है, जिसे आप अर्धवार्षिक आधार पर प्राप्त कर सकते हैं.
- या, अगर आप चाहें तो बॉण्ड्स खरीदने की तारीख़ से तीन महीने बाद 9% सालाना की दर से पूरे तीन साल का अग्रिम ब्याज कमीशन काटकर प्रति 1000 रु. की पूंजी पर 240 रु. के हिसाब से प्राप्त कर सकते हैं. इसमें बीच के तीन महीने का भी ब्याज शामिल हैं इस प्रकार आपको एक दिन के भी ब्याज का नुकसान नहीं होता.
- आयकर अधिनियम 1961 के u/s 54E के तहत कैपिटल गेन कर मुक्त
- ब्याज उपार्जन के स्रोतों पर कोई कर कटौती नहीं
- पारा (1)(xvie) के तहत 5 लाख रु. तक की छूट जिसमें संपत्ति कर 5 (1A) के तहत अन्य 'इलिजिबल एसेट्स भी शामिल है.
- आयकर अधिनियम 80L के तहत ब्याज कर मुक्त.
- पैसा भेजने का खर्चा एन एच बी उठाएगा.
- 150 से भी अधिक केंद्रों पर सालो भर सममूल्य पर उपलब्य.
- प्रमुख आवास वितिय संस्थान होने के नाते हमारा फर्ज है मकान उपलब्ध कराना. तथा इसके लिए धन जुटाना. इसलिए यह बहुत ही संतोष की बात है कि इस बॉण्ड के माध्यम से लगी हुई आपकी पूंजी का इस्तेमाल अधिक-से-अधिक लोगों के लिए मकान उपलब्ध कराने में होगा.

नीचे लिखे पते पर आवेदन पत्र उपलब्ध हैं और यहीं पर स्वीकार भी किए जाते हैं. राष्ट्रीय आवास बैंक (बंबई तथा दिल्ली) ● कैनफ़िना कार्यालय ● इश्यू संबंधी इन 10 बैंकों की 151 शाखाएं 51 केन्द्रों पर इलाहाबाद बैंक, आंध्र बैंक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा, कनारा बैंक, सिटी बैंक (साखर भवन बंबई), फ़ेयरग्रोथ फ़ाइनांशियल सर्विसेज, इंडियन बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, स्डेट बैंक ऑफ़ मैसूर, दि वैश्य बैंक लिमिटेड.



 यह पहेली डिया टडे के

रेअंक पर अ

। वर्गों के भी

गळ ही संकेत

। तीर के चि

के गव्द कहा किथर जाते हैं

े तीर के चि ता अंक हर ही मंख्या दण े वृत्त का अ

श्रोतं वाते गर ति होगाः भटमैले रं स्मित्री रहेरे भवंप्रथमः तेत सर्वगुद्धः एकारस्वरू

हे. जिए जाएंदे

िविवग में विके कर्मच

भीवार के स

भाग नहीं ले



(भारतीय रिज़र्व बैंक के पूर्ण स्वामीत्व में) निजी आवास का सुनहरा विश्वास

तीसरा माला, बंबई लाइफ़ बिल्डिंग, अकबर अलीज के ऊपर, 45 वीर निरमन रोड, बंबई 400 023 फोनः 222702. 224347 छठा माला, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, 18-20, कस्तुर्वी गांधी मार्ग, नई दिल्ली 110 001. फोनः 3712016, 3712036

# इंडिया टुडे वर्ग पहेली-28

	Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri													
		市市	3	7										नाम
a contract of	ise odi i	ा पुरा विद्रा	E	लोग ह	हेरान			<sup>5</sup> ┌►						-
						पद पाने	<b>→</b> <sup>5</sup>	अदा के	12 ▼	चिपका नहीं		<b>5</b> ↓	ताऊ की	पता
				रंग में	<b>→</b> <sup>4</sup>	की आस		साथ		रहता			मुनी	-
L			4	आ गए						5 <b>←</b>	ए- श्रेणी			
和	5_	इंका	वैर मे	ग्रस्त							श्रणा के			
ग्रुपत ग्राते		के 'खास'	9 4											
<u></u>														
		4 √	दावतें	उड़ाई		दिग्गः	न नेता	<b>→</b> 4			प्रमाण	दिए	<b>→</b> <sup>7</sup>	
					थोड़े पीले-	<b>⊋</b> 5	पींगें				टोपी	<b>→</b> 6		पिन
23			रिश्तों की	<b>→</b> 5	गेहुंए		बढ़ा रहे				उछल पड़ी			go
हो तरगा			का बयानी		दावा रख		4							, e
4		(-)			सकते हैं		Ar ye							वर्ग प् एफ न
तेवर तय		दवा रं	ग लाई		7 4									₹
कर दिए		2					वे स	किय हैं						प्रविष्टियां
64							6 4							उ

नाम		
पता		
पिन -		

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-28, इंडिया टुडे, एफ-14/15, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथिः 20 मार्च 1991 उत्तर के लिए देखें: 1-15 अप्रैल 1991 का अंक

- यह पहेली शब्दश: ्डिया टुडे के 28 फरवरी 1991 कें अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए ग्द्र ही मंकेत है.
- े गीर के चिन्ह बताते हैं कि गव्द कहा से गुरू होकर क्थिर जाते हैं.
- नीर के चिन्ह के साथ का अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गी हो मंच्या दर्शात है.
- े कृत का अर्थ है कि उसमें भने वाने गव्दांण का प्रयोग
- <sup>मटमैले</sup> रंग वाले वर्ग िम ही रहेंगे.
- भवंप्रथम पहुंचने वाले तीन सर्वगुद्ध हलीं को क्तिरस्वरूप 500-500 ह दिए जाएंगे.
- ि विविया मीडिया इंडिया ति के कर्मचारी और उनके भिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ने सकते.

4347

				TO SHAN		To the	100					- Care	
-16	Somi	T 202		7_	चिता	मुला :	नहीं है	3 _	शातिर	नेता	विपक्ष	के	14
5	डिय	4114		बा	करोड़ी की	के	6	31	दि	गो	द	₹ (	ज
		जग का जन		बू		मामने शपथ		दि	वरदहर	स है	<b>→</b> 3		ग
1	0	Hall C		भा		<b>↓</b>	वें	(F)	टे	श्व	₹		ना
				क	तीन	<b>7</b> 3	7 √	पुस्सा आ			स्तो	गीता बेल	थ
5	चुके ग	ग्टा <u>खे</u>	कभी	ч	धार फूंक	н	बी	गया	9 ₹	नई लाइन	गी	ਸੇ ਸੇਂ	¬ <sup>10</sup>
रा			इरी नहीं	टे		ब्रि	जू		मु	16	मजने	<b>→</b> 4	को
जे	'आज'		6 6	( <del>q</del> )	लि	ना	P	वा	₹		का मोह	सु	ल्लु
श	की आयाज	7	4	टि	क	रि	<b>2</b>		ली	5 <b>↓</b>	उसे पैड	ल	रु
ख		<b>T</b>	अध्यक्ष	दहाना		पक्ष	ना		म	ìत	्पड दिया	क्ष	ਜ
न्ना		घु	के जिले	पमद नहीं	5 <b>√</b>	नहीं नेते	य		नो	छा		णा	क्ष्मी
बुरी	4	वी	बीमारी	6	Э	शो	<b>क</b>	सि	E	ल	4 5	रिहाई	ना
तरह घाषल	भू	₹.	में डटे		त				र	*	ए	की मांग	रा
	रे	н	5	गा	7	<b>H</b>	क	₹	जो	₹	₹		य
	ना	हा	'मोनो	नांगं है	सी				शी		शा		ण
	ल	ч		5	ती	) न	Ų	कां	त		व		म्मा

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-26 का हल पुरस्कार विजेता

कमल कुमार गांव-कवूलपुर बांगर, डाकघर-धौण फरीदाबाद-121007 (हरि.)

मुकेश कुमार वर्मा उ.प्र. राज्य चीनी निगम 111, ओरियंटल हाउस, गुलमोहर एंक्लेव नई दिल्ली-110049

मुरेश गोयल 'दुर्गा,' खेड़ रोड, बालोतरा जिला-बाडमेर-344022 . (राज.)

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri बिहार और उत्तर प्रदेश

# वादे हैं वादों का क्या...

हिंदीभाषी क्षेत्र के इन दो अहम राज्यों में सरकारें निरंतर बदलती रही हैं और हर नया मुख्यमंत्री अपने गद्दी मजबूत करने के चक्कर में नए वादों का सब्जबाग दिखाता रहा है मगर इन वादों का हश्र क्या होत रहा है यह इन दो राज्यों के विकास की रफ्तार से जाहिर है.

वादों की बाढ़ में डूबते-उतराते

—फरजंद अहमद

'छले दस वर्षों से बिहार में सिर्फ वादों की खेती होती आ रही है. हर नेता जो मुख्यमंत्री बनता है, वादों की बारिण करता है और चंद लमहों के लिए लोग सपनों की दुनिया में खो से जाते हैं. पूर्व मूख्यमंत्री दिवंगत कर्पूरी ठाक्र के निजी सचिव और बिहार लोकदल के अध्यक्ष लक्ष्मी साह फलसफाना अंदाज में कहते हैं, "उम्मीद पर दुनिया कायम है और शायद यही वजह है कि हर बिहारी को नेताओं के वादों पर एतबार हो जाता है. मगर जिस दिन सपनों का जाल टुटेगा, उस दिन आग लग जाएगी."

पिछले माह बिहार के युवा मुख्यमंत्री

निर्माणाधीन बांध पर लाल यादव

लाल प्रसाद यादव ने, जिन्होंने गत वर्ष चिल्ला-चिल्लाकर कहा था कि वह नया बिहार बनाने के लिए वचनबद्ध हैं, एक बार फिर वादों की बारिश कर दी और कहा कि उनकी सरकार ने बिहार के उद्धार के लिए कई 'क्रांतिकारी कदम' उठाए हैं. नव वर्ष के तोहफे के तौर पर उन्होंने कई घोषणाएं की-सरकारी नौकरी की उम्र सीमा 30 वर्ष से बढाकर 35 वर्ष कर दी जाएगी; ग्रामीण पेयजल व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाएगा और 1991 के बाद बिहार का कोई गांव पेयजल सुविधा से वंचित नहीं रहेगा; भूमिहीनों के बीच 32,000 एकड जमीन वितरित की जाएगी. महिलाओं के लिए 'महिला विकास निगम' की स्थापना की जाएगी; और इस वर्ष (1990-91) के अंत तक एक लाख शिक्षित बेरोजगारों को नौकरी दी जाएगी.

पूर्व इंकाई मूख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र ने तुरंत एक लंबा बयान जारी किया और गुस्से में कहा कि उनके द्वारा चलाई गई योजनाओं का सेहरा यादव अपने सिर बांधना चाहते हैं. लालू यादव की इस घोषणा का, कि उनकी सरकार संथाल परगना के जिला मुख्यालय दुमका में कि कान्' विश्वविद्यालय की स्थापना करें नि पर प्रथम मिश्र ने याद दिलाया कि उनकी सरकार विद्वितीय म विधानसभा में विधेयक पास कर एक सं क्षत्र भगतान. पांच विश्वविद्यालयों की स्थापना का निर्ण कर किया था और इसमें विश्वविद्यालय भी शामिल है.

आज पूरा बिहार इन्हीं दो नेताओं है हुई में एक स तू-तू-मैं-मैं के बीच पिस रहा है. मिश्र कह प्रमेनए तोहपे हैं, "मैंने कोई ऐसे वादे नहीं किए थे जिल मरकार ने पूरा न किया हो." उधर, लालू यादव कहें 🛍 ह. तक हैं कि "पहली दफा लोगों को एहसास हुर वह मगर कैसे कि सरकार भी कोई चीज है. पूछना है वादव के कट्टा उनसे पूछिए जिन्होंने पहली दफा ए कि समाई महसूस की है."

राहत का एहसास जरूर हुआ था भी का ऋण अ लोगों को जरूरत से ज्यादा उम्मीद भी बहु म वर्बादी 19 थी क्योंकि लालू यादव ने न सि समें हुई थी. भ्रष्टाचार मिटाने के लिए अवार मानों की निरीक्षण करना और भ्रष्ट कर्मवारि हिंभी गारि तथा अधिकारियों के कान ऐंठने शुरू नि बल्कि कई ऐसी योजनाएं भी सुनाई लोगों के मन के मुताबिक थीं. शपय तेते में कि ह मात्र 12 दिनों बाद विधानसभा में 1990 की खाकर 30



अर्थशास्त्री डी.डी. गुर के मुताबिक बिहार के पिछड़ने की असली वर्जी यहां की राजनैतिक अस्थिरता है

74 इंडिया ट्रंडे • 15 मार्च 1991

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, 1

वंष ग्रामीण , किसानों व 市 10,000 , बहाबस्था र प्रति माह , हर गांव काधिक गांवे

कार्यक्रम की

योजना उ

, गरीव म 'सिध्-कार् ने अपन किया तो कु

ममाफ किया

ण, मिश्र कह वहर वहा मा रखीं वि

वहीं लाभान्ति असी तरफ ह ता है कि जब (दिमंबर भित्री हुए तो में राज्य की

कोप से : वे बूट लिए र खिले दस मुख्यमंत्री\_ विदेणवरी

ीं नारायण प्रमाद या विह्यार की 1980 市

ने योग भूमि ही मिनाई व बर प्रस्तृत करते हुए यादव ने 32-बर प्रस्तृत करते हुए यादव ने 32-वर्गक्तम की घोषणा की थी जिनमें क्ष घोषणाएं ये थीं:

मुख्य प्रोगणाए य था. गृंबेजा उपबंध का 60 प्रतिशत गृंबेजा विकास पर व्यय करना. क्षानों को विभिन्न स्रोतों से दिए क्षानों के किसन्न स्रोतों से दिए

क्या होता , बृद्धावस्था पेंशन 30 ह. से बढ़ाकर

हर प्रति माह करना. १ हर गांव में पीने का पानी और आधिक गांवों में बिजली पहुंचाना.

त्राधिक पान को मानृत्व के पान्ति को मानृत्व के पान्ति करें का पर प्रथम मानृत्व के लिए 300 रु. की सरकार में द्वितीय मानृत्व के लिए 500 रु. कर एक को बहु भगतान

नाका निर्म सर जब पिछले पखवाड़े विहार 'सिधुका<sub>र कार</sub> ने अपनी उपलब्धियों का प्रचार किया तो कुछ ही का जिक्र हुआ और

ो नेताओं दे<sub>न्दी</sub> में एक साल पुरानी घोषणाओं को है. मिश्र कहें <sub>परे गए</sub> तोहफे के तौर पर सुनाया गया. किए थे जि तुसकार ने कहा कि किसानों का तूयादव कहें 100 है. तक का ऋण माफ कर दिया एहसास हुद्य गई मगर कैसे और किनका?

पूछना हैं।

दिक्ता रहिं

दिक्ता रहिं

क्षेत्र "संचाई कुछ और है. 1986 तक का समित्र कुछ और है. 1986 तक का समित्र किया गया है जबिक 90 प्रतिशत हुआ था और किया गया है जबिक 90 प्रतिशत हुआ था और क्षेत्र के वाढ़ और 1988 के ने न कि को हैं। अगर सरकार सही मायने ए अवात किया के सहायता करना चाहती है कि किया है भी गामिल करना चाहिए.

ती सुनाई वे शुप्प को देते हैं शप्प को वारे भी कि वृद्धावस्था पेंशन की राशि विकास के स्थाप के बारे में कि वृद्धावस्था पेंशन की राशि कि कि उन्होंने पेंशन की वृद्धा कर 100 रु. कर दिया कि वृद्धा कर 100 रु. कर दी मगर कहते हैं कि उन्होंने पेंशन की वृद्धा कर 100 रु. कर दी मगर कि केवल 50,000 से 60,000 की को लिभान्वित हो सकेंगे.

क्षित्र जात.

क्षित्र देस सालों में (1980 से 1990)

क्षित्र देस सालों में (1980 से 1990)

क्षित्र निर्मान जगन्नाथ मिश्र, चंद्रशेखर

क्षित्र निर्माद यदिव आए—और छह गए

क्षित्र की प्रगति का हाल कुछ यों है:

क्षित्र के कुल 92.30 लाख हेक्टेयर

क्षित्र की सुविधा मुहैया हो सकी

.डी. गुर

हार के नी वर्ग

तिक

# किसिम-किसिम की कसमें

हार में 1980-90 के दशक में कुछ मुख्यमंत्रियों ने कई रोमानी और लुभावने वादे किए थे.जो तालियों की गूंज और वाहवाही में डूबकर रह गए. उनकी एक



जगन्नाथ मिश्रः जून '80-अग. '83 30 सूत्री कार्यक्रम):

1. भिक्षुक गृह की स्थापना. भिक्षुकों को प्रतिमाह 30 क. सामाजिक सुरक्षा पेंशन

2. कुष्ठरोगी गृह की स्थापना और सभी कुष्ठरोगियों को 30 क. प्रतिमाह सामाजिक सुरक्षा पेंशन

3. रिक्शा चालक कल्याण परियोजना

4. कृषक दुर्घटना सहायता योजना

5. फसल बीमा योजना आदि

चंद्रशेखर सिंह: अग '83-मार्च '83 (21 सूत्री कार्यक्रम):

 1. 1500-2000 आवादी वाले गांवों को पक्की सड़कों से जोड़ना
 2. बुनकर कल्याणः बुनकरों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए बुनकर कल्याण कोप की स्थापना

.3. ताड़ी छेदकों के लिए कल्याण कोप की स्थापना का प्रस्ताव
 4. राज्य की राजधानी पटना की मुख्य सड़कों को चौड़ी करना
 5. हिंदी भवन का निर्माण करना



बिंदेश्वरी दुबे: मार्च '85-फर '85 (18 सूत्री कार्यक्रम):

1. उत्तरी बिहार में लोगों को जल जमाव से छुटकारा दिलाने के लिए विशेष योजना

2. 40 करोड़ रु. की एक विशेष योजना जिसके तहत 20 नई सड़कों का निर्माण

3. 100 साल पुराने सोन नहर का आधुनिकीकरण

4. आदिवासी क्षेत्र के 500 आबादी वाले गांवों को पक्की सड़क से जोड़ने की योजना

भागवत झा आजादः फर. '88-मार्च '89

1. सचिवालय की कार्यशैली और कार्यक्षमता को बढ़ाना 2. राज्य भर में फैले हुए भ्रष्टाचार को जड़ से खत्म करना और लोगों को राहत दिलाना

3. राजनीतिकों द्वारा दलाली का धंधा चलाने पर रोक 4. अफसरों और मंत्रियों की जवाबदेही मुकर्रर करना 5. भूमि सुधार ठीक से लागू करने की योजना.

6. मध्य बिहार के नक्सल प्रभावित इलाकों में ऑपरेशन सिद्धार्थ





सत्येंद्र नारायण सिन्हाः मार्च '89-दिसं. '89:

1. राज्य के अराजपत्रित कर्मचारियों को केंद्रीय वेतनमान

 शिक्षकों की वाहवाही लूटने के लिए तनख्वाह के अलावा अध्यापन भत्ता

3. औरंगाबाद में सुपर ताप बिजलीघर लगाने की योजना

4. बिहार में औद्योगिक विकास के लिए भारी-भरकम योजना

 जिन इलाकों में ऑपरेणन सिद्धार्थ चल रहा था वहां के लिए गरीबी उन्मलन और विकास की योजना

लालू प्रसाद यादवः मार्च 1990- (32 सूत्री कार्यक्रम):
1. वृद्धावस्था पेंशन 30 रु. से बढ़ाकर 100 रु. प्रतिमाह
2. ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं के लिए शौचालय व्यवस्था
3. गरीब महिलाओं के लिए मातृत्व भत्ता (300 रु. प्रतिमाह मातृत्व

के अवसर पर और 500 रु. दूसरे बच्चे पर)
4. शिक्षित बेरोजगारों को नौकरी के लिए साक्षात्कार परीक्षा देने

जाने के समय मुफ्त बस यात्रा की सुविधा 5. पटना और रांची में पुलिस आयुक्त की व्यवस्था



अब यह आंकडा बढ़कर 26.49 लाख हेक्ट्रेयर हुआ.

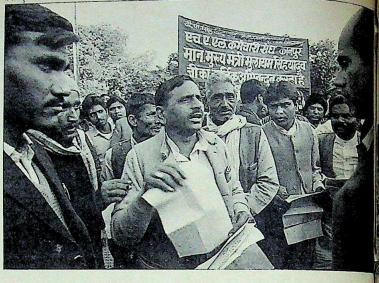
- ▶ 1970-71 में यहां प्रति व्यक्ति आय 402 म भी जो अब बढकर 488 है. हो गई (1970 7) मुल्यों के आधार पर 3.39 प्रतिणत बढोतरी)
- आज भी 67,566 गांवों में से 273 गांवों में पंयजन का कोई स्रोत नहीं है. यही नहीं, 12,412 यावों में स्वच्छ जल का प्रबंध भी
- अभी भी केवल 23,648 गांव (35) प्रतिणत) 'ऑल-वेदर' सडक से जुड़े हैं यानी कि बिहार में प्रति 100 वर्ग किमी. पर 10 किमी. रोड है.
- बिजली की हालत तो और भी खराब है 1976-77 में बिहार का प्लांट लोड फैक्टर 50 प्रतिशत था जो अब केवल 32 से 34 प्रतिशत है

मशहर अर्थशास्त्री डी.डी. गुरु कहते हैं, राज्य के पिछड़ने की असली वजह यह है कि राजनैतिक अस्थिरता के कारण हर मुख्यमंत्री कर्सी बचाने में लग जाता है और अपने पहले के मुख्यमंत्री के कार्यक्रमों की जगह नई घोषणाओं में लग जाता है. जब भी कोई तया मुख्यमत्री हुआ वह पहले वाले के कार्यक्रमों को मिटाकर नई घोषणाएं करने में लग जाता है.".

वादों और प्रगति का क्या हाल है इसका एक नमूना. भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के वरिष्ठ नेता और ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के महासचिव चत्रानन मिश्र ने कहा कि केंद्रीय वित्तमंत्री यणवंत सिन्हा ने लिखित रूप से कहा है विण्व बैंक द्वारा दिए गए 100 करोड़ रुपए में से नलकपों पर 20 करोइ रुपए व्यय किए गए और 1000 तलकृप के आधुनिकीकरण के विपरीत केवल 113 पर ही कार्य शुरू किया गया.

खद इंका के लोग भी चिकत हैं कि विहार में क्या हो रहा है. विधान परिषद में काग्रेस (इ) मृख्य सचेतक कमलनाथ सिंह ठाकुर कहते हैं, 'धोड़े शब्दों के हेरफेर से पिछले एक दणक में सभी मुख्यमंत्री एक जैसी घोषणाएं करते रहे हैं. मगर घोषणाओं से न तो लोगों का पेट भरेगा और न सडक बनेगी और न ही सेतों को पानी मिलेगा. सवाल घोषणाओं का नहीं, मुख्यमंत्रियों की इच्छा शक्ति का है."

विहार नेताओं और मुख्यमंत्रियों के वादों के बोझ तले इतना दब गया है कि उसे सास लेने में भी मुश्किल हो रही है. डर है कि कही विहार वादों के बोझ तले दम न तांड दे लेकिन नेताओं को इससे क्या फर्क पड़ता है. उन्हें मालूम है कि लोगों की याददाण्त कमजोर होती है. पर चुनाव लोगा की याद वापस लौटा लाता है.



उत्तर प्रदेश

# निभाना तो कोई रवायत नहीं

रकारों का अपने वादे भुला देना स्तिरा का जान ... कोई नई बात नहीं है. और अगर उत्तर प्रदेश की मुलायम सिंह यादव सरकार भी अपने वादों पर अमल नहीं कर रही हो तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है. हालत यह है कि राज्य में एक भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जहां लक्ष्य का 50 फीसदी काम पूरा हआ हो. कई कार्यक्रम तो शुरू ही नहीं हए. ऊपर से मुसीबत यह कि नया वजट भी जल्दी ही पेश किया जाने वाला है.

नई सरकार ने ग्रामीण विकास, कृषि, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि क्षेत्रों के लिए 21 सूत्री कार्यक्रम का जोर-शोर से ऐलान किया था. 1990-91 वर्ष में किसानों के दस हजार रुपयों के ऋण बकायों की माफी पर ही 350 करोड़ रुपए का प्रावधान था. भूमि सेना पर 38 करोड़ और बहु-प्रचारित ग्रामीण गौचालयों पर 26.39 करोड़ रुपए बर्च करने थे. 15 हजार प्राइमरी स्कूलों के भवन और 11 राजकीय महाविद्यालयों के भवन बनने वाले थे. जवाहर रोजगार योजना में भी 510.93 करोड़ रुपए खर्च होने थे. सहकारिता के माध्यम से 500 करोड़ के अल्पकालिक ऋण और 60 करोड़ रुपए के मध्यकालिक ऋण बांटे जाने वाले थे. सबसे ज्यादा शोर विजली का उत्पादन वढ़ाने को लेकर था. विद्युत परिषद के ढांचे में मूल-भूत बदलाव के लिए एक उच्चस्तरीय समिति बनाई गई थी. सड़कों और परिवहन

मुलायम सिंह यादवः उम्मीद मरी

के सुधार के ढेरों दावे थे. लेकिन ऐसे तमा ऐलान कोरे ही साबित हए.

असामान्य हालात और राज्य की तवा पर पूर्व मूख्यमंत्री और वरिष्ठ इंका न नारायणदत्त तिवारी की टिप्पणी है, वार केंद्र और राज्य दोनों जगह विकास दृष्टिकोण नदारद था. सिर्फ लोकलुभार फैसले, चाहे देश-प्रदेश भाड़ में जाए 🔊 माफी को ही लें. सरकार सहकारी कैं स्थानीय खाते में कर्जदार के नाम 10 हर् रुपए जमा लिखवा दे रही है. स्रोत वैक पैसा डाल नहीं रही है, क्योंकि पैसा है की नतीजा सड़क ठप, पुल ठप, कारबाने हा दिश ६६ भीसट कोई भी स्रोत बैंक कर्ज माफ करने के नि पैसा देने से रहा."

पूर्व सिंचाईमंत्री और फिलहाल जन दल विधानमंडल नेता रेवती रमण मि कहा, "बजट योजना में 40 फीसदी करी तय है. जब दो-तिहाई विभाग मुख्या अपनी जेब में रखेगा और 24 घंटे राजनी करेगा तो अफसरों के बूते चल सरकार." हालत है भी ऐसी ही मंत्रिक के विस्तार के बावजूद अभी मुख्यमंत्री पास करीब 30 विभाग हैं. 5 लाख रोजी के सृजन के सवाल पर नियोजन सर्विव ? किशोर टालमटोल करते हैं. उनका और 10 फीसदी तक ही पहुंचता है. लघु उड़ी की भी हालत ठीक नहीं है.

लघु उद्योगों की प्रतिवर्ष एक लाव इकाइयों के लक्ष्य के विपरीत सिर्फ 100 की सूचना है. मझोली और वड़ी इका की सूचना अनुपलब्ध है. उधर, राज्य हैं परिषद द्वारा छोटे ट्रांसफार्मर, बंभे ड

े पेयजल य वों शेखी : भी दीगर ह विके भवन नि नियोजन संस को झूठा साहि भार 30 नवंब निहाई में भी

तबनऊ में उ

भुर्वे बनाने वा

स्रोड़ रुपया

ग इससे तम

है विद्युत प

वाली सर

ना नहीं तला

गम में पेयज

ाक नहीं

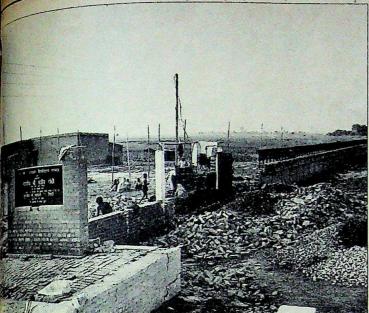
विश्ववि

ग्रीम सेना ये ें ही तैयार न वालकों के वे के वावजूद न वमेरे मान मुठा स क्रामिक्षार हु नेता रेवती

<sup>कृह</sup> हो पाय

ग्लयों के निम

<sup>के 14.1</sup> प्रति



## ततनऊ में अधुरा बना आंबेडकर विश्वविद्यालय परिसर

मीद मरी

न ऐसे तमा

ज्य की तवाहं

ष्ठ इंका न

वणी है, 🖫

ह विकास

लोकल्भाव

में जाए क्

ाम 10 हबा

करने के ति

रमण सिंह

तिसदी कटी

ाग मुख्यमं

घंटे राजनी

चल उ

ही. मंत्रिमंड

मुख्यमंत्री

ाख रोजग

न सचिव १

उनका आर्व

लघु उच

एक लाव

सिर्फ 10.0°

वड़ी इका

राज्य वि

र, संभे

भुर्वे बनाने वाली मझोली फैक्टरियों का गोड़ रूपया इस साल अदा नहीं हो ा असे तमाम छोटी फैक्टरियां बंद विद्युत परिषद के ढांचे में बदलाव वाली सरकारी समिति अब तक ला नहीं तलाश पाई.

ग्य में पेयजल की सुविधा भी सभी कारी कें कि नहीं पहुंच पाई है. राज्य म संस्थान के मुख्यमंत्री को प्रेषित स्रोत वैक 1990 के प्रतिवेदन के अनुसार पैसा है नहीं विपराल योजना के लक्ष्य के विपरीत कारबात हैं <sup>27,68</sup> फीसदी हैंडपंप लगाए गए हैं.

सिह जिन लहाल अर्ग भी भेबी बघारते थे, उनके हाल योजनाओं भी दीगर नहीं हैं. मसलन, प्राइमरी भिक्र भवन निर्माण का वादा, वादा ही वियोजन संस्थान के दस्तावेज उनके की माबित करते हैं. दस्तावेजों के ी अ नवंबर, 1990 तक जिलों में काई में भी कम स्कूलों का निर्माण कि हो पाया. निजी और सार्वजनिक को के निर्माण कार्य की शुरुआत भी हो 14.1 प्रतिशत ही है.

भिना योजना' का अक्तूबर तक वित्यार नहीं हो पाया था. प्रदेश के के कल्याण की योजना साल हे अवजूद अभी अस्तित्व में नहीं ज विमाने का नारा भी के माबित हुआ. यहां तक कि के रेजियावत हुआ. अहा जनता कि के बारे में जनता नेता रेवती रमण सिंह की प्रांका है,

रायणदत्त तिवारी के अनुसार इस बार केंद्र और राज्य दोनों जगह विकास का दृष्टिकोण नदारद था. सिर्फ लोकलुभावन घोषणाएं की गईं

''इससे आधी से ज्यादा कटौती हो जाएगी." वृद्धावस्था पेंशन पाए लोगों का चयन भी जून से बंद है.

सातवीं पंचवर्षीय योजना के अपूर्ण कार्यक्रम भी अधुरे ही रहे. विश्व बैंक की मदद से मध्य गंगा-अपर गंगा नहर के आधुनिकीकरण की परियोजना के लिए पिछले 6 महीने से सरकार एक मुख्य अभियंता तक नहीं दे पाई. इसी तरह टांडा थर्मल पाँवर प्लांट की चौथी यूनिट इस साल 104 करोड़ रुपए की कमी के कारण अगले साल के लिए खिसक गई. पूर्व वीरबहाद्र मुख्यमंत्री दिवंगत महत्वाकांक्षी 'रामगढ ताल परियोजना' की दो वर्ष से लगातार मियाद बढ़ रही है. घाटा देने वाले निगम और उपक्रमों को निजी क्षेत्र में देने के ऐलान को भी साल भर बीत गया. नतीजतन ऊंचाहार, आनपारा-की थर्मल प्लांट्स व प्रतापगढ़ ट्रैक्टर्स लि. का भाग्य अधर में लटका है.

क्ल जमा यह कि उत्तर प्रदेश सरकार दयनीय हालत में है. वह न फैसले ले सकती है और न नौकरशाही की लगाम कस सकती है. इसका कुफल भोगने के लिए प्रदेश के नागरिक अभिशप्त हैं.

# लेखा-जोखा

(30 दिसंबर से 1990 तक के वादों का)

- ▶लक्ष्य
- ■लक्ष्य प्राप्ति
- ▶15,000 प्राइमरी स्कूल भवनों का निर्माण
- 2932 (30 नवंबर 1990 तक)
- ▶ 2,00,000 निजी शौचालयों का
- 28281 (सुपर स्ट्रक्चर तक)
- ▶ 40,000 हजार घरेलू सुलभ शौचालयों को जल प्रवाहित शौचालयों में परिवर्तन का लक्ष्य
- शृन्य
- 100 सार्वजनिक सुलम शौचालयों का निर्माण
- प्रदेश के सभी रिक्शा चालकों को रिक्शा मालिक बनाने की योजना
- निराश्रितों के लिए महानगरों में रैन बसेरों का निर्माण (योजना प्रारूप ही नहीं बना)
- शृन्य
- वृद्धावस्था पेंशन योजना
- जून माह से ठप (हरिजन और समाज कल्याणमंत्री के अनुसार कानून व्यवस्था में प्रशासन के फंसे होने के
- 532 नए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र स्रोलना
- सिर्फ 162 के लिए 14 नवंबर को राशि स्वीकृत हो पाई (निर्माण नहीं)
- ▶ 19 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र
- अभी तक एक केंद्र की भी राशि स्वीकृत नहीं. 15 केंद्रों की फाइल चल रही है, निर्माण का प्रश्न ही नहीं
- भूमिहीन खेत मजदूरों के कल्याण की भूमि सेवा योजना (1981 जनगणना के अनुसार भूमिहीन खेत मजदूरों की कुल संख्या-51.68 लाख)
- 15 दिसंबर 1990 तक लाभार्थी संख्या-20316 मात्र
- ग्रामीण विद्युतीकरण योजना के तहत 2550 गांवों का लक्ष्य था
- 30 नवंबर तक 685 गांव हुए
- ग्रामीण पेयजल योजना 5860 गांवों का लक्ष्यः हैंडपंप-28101, पाइप-
- 1636 गांव हुए, हैंडपंप-7780, पाइप-45

एस.पी. बालासुब्रमण्यम

# सफल साधना

# दक्षिण के सुपरहिट पार्श्वगायंक अब हिंदी फिल्मों में भी सफल

💶 क्षिण में पार्श्वगायकी के क्षेत्र में 25 वर्षों तक धाक जमाए रखने वाले एस.पी. वालास्त्रमण्यम अव हिंदी सिनेमा जगत में धूम मचा रहे हैं. यह आखिरी किला था जिसे उन्हें फतह करना था. उनकी प्रतिभा बहुआयामी रही है. गायक के अलावा वे संगीतकार भी हैं. और पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने अपनी अभिनय क्षमता भी सिद्ध की है. और उनकी उम्र महज 46 साल है.

1980 में के. बालाचंदर की सुपरहिट फिल्म 'एक दुजे के लिए' में जब उन्होंने 'तेरे मेरे बीच में' गाना गाया तो जैसे पूरे देश की भावनाओं को छु लिया. इसके दस साल बाद 'मैंने प्यार किया' के लिए गाया उनका गीत बेहद सफल रहा और इसने उन्हें 1990 का फिल्मफेअर पुरस्कार भी दिलाया. 'मैंने प्यार किया' के गीतों ने साबित कर दिया कि वे हिंदी फिल्मों में भी जबरदस्त कामयाबी हासिल कर सकते हैं. इस बारे में किसी को शक हो तो संगीतकार नौशाद क्योंकि सकते कर बालासुब्रमण्यम इन दिनों उनके साथ 'तेरे पायल मेरे गीत' फिल्म के लिए काम कर रहे हैं.

उनका कैरियर जिस तरह लड्खड़ाते हुए आगे बढ़ा उसे देखकर दक्षिण में उनकी णानदार सफलता पर आश्चर्य होता है. उनके पिता आंध्र प्रदेश में 'हरिकथा विद्वान' थे जो

जीवनयापन के लिए गांव में धार्मिक लोकगीत गाकर सुनाया करते थे. संगीत में बालासुब्रमण्यम की दीक्षा यहीं से शुरू .हई. कर्नाटकी शास्त्रीय संगीत का उन्हें कोई औपचारिक पाठ नहीं पढ़ाया गया. वे कबूल करते हैं, "आज भी मैं शास्त्रीय संगीत का सा रे ग तक नहीं जानता."

1963 में मद्रास में जब वे इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे थे तो एक स्गम संगीत प्रतियोगिता के लिए उन्होंने खुद ही गाना लिखा, धुन बनाई और प्रतियोगिता में गाकर सुनाया. उनका गाना खत्म होने से पहले ही उन्हें सर्वश्रेष्ठ घोषित कर दिया. इसके तीन साल बाद उन्होंने पहला गाना रिकॉर्ड करवाया जिसमें पी. सुशीला,

टी.बी. श्रीनिवास और दिवंगत रघु रमैया सह-गायक थे. सुशीला याद करती हैं, "तब वे केवल 18 वर्ष के थे और मुझे संदेह हो रहा था कि वे गा भी पाएंगे या नहीं. लेकिन उनका गाना शुरू होते ही मेरे संदेह दूर हो गए."

तमिल फिल्मों में प्रवेश करने का सुनहरा मौका उन्हें 1969 में मिला. तब एम.जी रामचंद्रन ने प्रसिद्ध संगीत बालाचंदर की 'मानातिल उरुधि वेदम और उनके एक सहयोगी की 'केलाडी कानमणि' में बालासुन्नमण्यम ने अपने अभिनय से लोगों को चमत्कृत कर दिया. फिलहाल वे छह निर्माणाधीन फिल्मों में भूमिकाएं निभा रहे हैं.

अपनी आमदनी से वे आज एक स्विधा-संपन्न जीवन जी रहे नुंगमबंक्कम में बंगले के आलावा उनका अपना रिकॉर्डिंग स्टुडियो भी है जिसका नाम एस.पी. कोदंडपाणि के नाम पर रहा है जो उनके गुरु और खोजकर्ता रहे हैं.

उनकी असली स्वाहिश फिल्म निर्देशन की है. उनकी दिनचर्या इतनी व्यस्त होती है कि कई नौजवान लोग भी पस्त पर जाएं. कभी-कभी तो एक दिन में 19 गाने

जबूत नींव

। हर अच्छे

तं कोशिश होत तं रीड के लिए

ने विद्यायियों

गरी मजबूत

इंच के लिए

ेमर्गापत है ले।

वाज में. वहां

कृत की सं

। अगर भार

ों हालत औ

नृति के दर्शन

लेगा के कामेश

विवि से व मकता. पुरा

वनों और प्रांगए

विवि देश

नेनों और दर्ज

ों हो अपने स

विवि के पास

ली ही कि

तिबों के पास

उनकी प्रतिभा बहुआयामी रही है. गायक के अलावा वे संगीतकार भी हैं और पिछले कुछ वर्षों में उन्होंने अपनी अभिनय क्षमता भी सिद्ध की है

> निर्देशक के.बी. महादेवन से उन्हें 'अदिमाई पेन' (दासी) में गाने का मौका देने का अनुरोध किया था. उनका पहला ही गाना तुरंत हिट हो गया और बालासुब्रमण्यम ने तब के हिट पार्श्वगायक टी.एन. सौंदर्यराजन की जगह ले ली.

विश्वनाथ की सुपरहिट 'शंकराभरणम्' ने बालासुब्रमण्यम को 1979 में पहला राष्ट्रीय पुरस्कार दिलाया. इस फिल्म के सभी छह गाने शास्त्रीय रागों पर आधारित थे. शास्त्रीय गायन की कोई शिक्षा-दीक्षा न पाए एक गायक के लिए यह निश्चित रूप से कोई छोटी उपलब्धि नहीं थी.

गायन के अलावा अभिनय के क्षेत्र में

इलयराजा और बाला

त्क रिकॉर्ड करा देते हैं अर तक वे 19 हजार से ज्यादा गाते गा चुके हैं. उनके कई दोस्ती और सहयोगियों को विता है <sup>कि</sup> वे कुछ ज्यादा ही मेहनत कर

रहे हैं. पिछले साल फरवरी में उल् धूम्रपान की वजह से गले में तकली है गई. बालामुब्रमण्यम ने बेफिक्री से की "सारा शोर बेकार का था. मुझे केवल ए महीने के आराम की जरूरत थी और बिलकुल दुरुस्त हो गया."

उनके प्रशंसक उनका नाम गिनीज कु में दर्ज कराने की कोशिश कर रहे क्योंकि उन्होंने 'केलाडी कानमणि' में ब मिनट तक बिना रुके गाना गाया. ते आंध्र प्रदेश के इस सामान्य से दिखते व व्यक्ति के लिए यह बात महत्वहीं क्योंकि उन्हें मालूम है कि 25 वर्ष उनकी उपलब्धियां ही अपने आप -आनंव विश्वतार्थ उनका गुणगान हैं.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

विश्वविद्यालय परिक्रमा and the state of t

इलाहाबाद विविः देर से

से चलने वाले फैशन के मुताबिक लगभग सभी संकायों की परीक्षाएं निर्धारित कार्यक्रम से दो-तीन साल पीछे चल रही हैं

कला संकाय इस मामले में विवि का आदर्श संकाय बना है. इसमें एलएलएम 1986 सत्र की परीक्षाएं आयोजित करने की फूर्सत विभाग अभी तक नहीं निकाल पाया है. और एलएलबी के 88 सत्र का हाल यह है कि चार महीने पहले इसकी मुख्य परीक्षा का परिणाम तो घोषित किया जा चुका है पर इस सत्र की वैक पेपर परीक्षाएं होनी अभी बाकी हैं. उधर, बीए, बीएससी और बीकॉम के पिछले साल शुरू हए सत्र के लिए प्रवेश कार्य पांच महीने से जारी है और विधि संकाय में तो प्रथम वर्ष 1990 के लिए अभी प्रवेश कार्य का श्रीगणेश भी नहीं हो पाया है. यानी बिहार के शैक्षिक वातावरण से होड़ बदस्तूर जारी है.

**—हरिमंगल सिंह,** इलाहाबाद

Digitized by Arya Samai Foundation Chennal and eGangotri चिपकने का चस्का

> • सरकारी जमीन और फुटपाथ पर जबरन कब्जे की

कलाकारी के लिए अभी तक तो दिल्ली ही मशहूर थी. मगर अब यह कलाकारी कालेज के प्रिसिपल पद पर काविज होने में भी इस्तेमाल की जा रही दिल्ली विश्व-विद्यालय मोतीलाल नेहरू कालेज इन दिनों ऐसी ही से खबरों का केंद्र बना हुआ है

1986 में इंका के टिकट पर राज्यसभा में भेजे जाने पर रत्नाकर पांडे को विश्वविद्यालय के नियमों के तहत इस कालेज के प्रिंसिपल पद से छुट्टी पर जाना पड़ा. पर छुट्टी के बावजूद वे कालेज की प्रबंध समिति में सक्रिय रहे. मगर प्रिंसिपल की गद्दी का विछोह वे बहुत दिनों तक सह नहीं पाए और गत वर्ष जुलाई में वे

नियमों की परवाह किए विना इस गद्दी पर फिर विराज गए. तब से विश्वविद्यालय अपने कई नियमों की दहाई दे चुका है. मगर पांडे





रत्नाकर पांडे और विजय गोयल

टस से मस नहीं हए.

कार्यकारी परिषद के सदस्य विजय गोयल ने पांडे के खिलाफ मोर्चा संभाल लिया है. पांडे की जिद के विरोध में गोयल ने इस कॉलेज की प्रबंध समिति से इस्तीफा दे दिया है. गोयल ने कार्यकारी परिषद तथा विद्वत परिषद के सदस्यों के साथ नई दिल्ली के बोट क्लब पर धरना देने की भी धमकी -विजय क्रान्ति

## कृत की संस्कृति

पाई है

धि वेदम

'केलाडी

ने अपने

कर दिया

फिल्मों में

रहे

वा उनका

है जिसका

म पर रहा

रहे हैं.

म निर्देशन

यस्त होती

पस्त पर

में 19 गाने

बाला

主意研

ज्यादा गान

कई दोस्ती

चिता है कि

मेहनत कर

में उत्

कलीफ ही

ते से कहा

हत्वहीन

5 वर्ष व

न आप

व विश्वना

खबुत नीव

। हर अच्छे स्कूल और विवि

तं कोशिश होती है कि जिंदगी

तंतीं के लिए तैयार किए जाने

ने विद्यार्थियों की शैक्षिक नींव

ात्री मजबूत रखी जाए. इसी

लेंग के लिए इलाहाबाद विवि

अर्मापत है लेकिन थोड़े विहारी

क्षा में. वहां पिछले कुछ साल

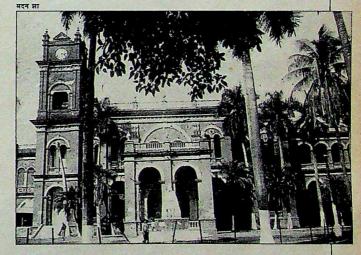
। अगर भारत में संस्कृत की व हानत और उससे जुड़ी कृति के दर्शन करने हों तो के कामेश्वर सिंह दरभंगा कि विवि से बेहतर स्थान नहीं मकता. पुराने राजमहल के नों और प्रांगण में चलने वाला विवि देश भर में फैले 70 निगं और दर्जनों उच्च शिक्षा भों हो अपने साथ शमिल किए

विविके पास कमी है तो सिर्फ ती ही कि इससे जुड़े कई किं के पास कक्षाएं चलाने के

लिए भवन ही नहीं हैं. कुछ के पास भवन है तो इतने छात्र ही नहीं है कि हर अध्यापक के जिम्मे कम से कम एक विद्यार्थी भी आ सके. कई संस्थानों के शिक्षकों का एकमात्र काम हर महीने आकर अपनी तनस्वाह बटोरना ही होता है. कई छात्रावास भी हैं पर समस्या सिर्फ इतनी ही है कि उनमें रहने के लिए छात्र नहीं हैं. लिहाजा उनमें से कई हिस्सों पर बाहरी या असामाजिक तत्वों का कब्जा जम चुका है.

**—मदन झा,** दरभंगा

संस्कृत विविः बेहाल





# कोई माई-बाप नहीं

 देश के कई राज्यों. में विश्वविद्यालयों के कुलपति अपनी जिम्मेदारियों को निभा पाने में खुद को असमर्थ पा रहे हैं. लेकिन मध्य प्रदेश में विवि बिना कुलपति के भी उतने 'अच्छे' चलते हैं जितने कुलपति की मौजूदगी में चला करते हैं.

इन दिनों राज्य के चार विवि

रीवा विविः जोर-आजमाइश

अपनी इसी महारत का प्रदर्शन करने में लगे हुए हैं. ताजा मेरिट लिस्ट के सदस्य हैं-अवधेश प्रताप सिंह विवि रीवा, घासीदास विवि बिलासपुर, हरिसिह गौर विवि सागर और वरकतुल्ला विवि भोपाल. इनमें से सागर विवि तो हाल ही तक सेवानिवृत्त पुलिस महानिदेशक की कमान में चल रहा था. विवि से पिड छुड़ाने का सबसे रोचक किस्सा रीवा विवि के प्रो. एम.के.जैन का है जिन्हें कुलसचिव कृष्णा जी तिवारी के साथ टक्कर में इस्तीफा देना पडा. तिवारी के पुत्र-पुत्रियों को परीक्षा में शानदार सफलता मिलने की वजह से उठे विवाद से शुरू हुई नोकझोंक सारी हदें लांघते हए हाईकोर्ट तक जा पहुंची. इसका नतीजा यह है कि जैन तो अपना पल्ला झाड़कर वापस दिल्ली आईआईटी चले गए और तिवारी का तबादला विवि से बाहर कर

> -शरद औदीच्य, रीवा और ऋषिकांत सक्सेना, भोपाल

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

 प्रानी चीज अनमोल हुआ करती है. कम-से-कम अभिनेता परीक्षित साहनी के बारे में तो ऐसा ही लगता है. धारावाहिक 'गुल गुलशन गुलफाम' में वृद्ध और दयालू हाजी की जानदार भूमिका के बाद उनका नाम एकदम से चर्चा में आ गया है. हाजी की भूमिका ने परीक्षित को वह बुलंदी दी है जो लाजो जी बनने के बाद 'बुनियाद' में अनिता कंवर को मिली थी. फिल्मों में कामयाबी न हासिल कर पाने वाले परीक्षित अंततः अपने पिता के साथे से बाहर निकले दिखाई पडते हैं. वैसे भी पिता बलराज साहनी के साथ की जाने वाली उनकी तुलना ने कभी उनका दिमाग खराव नहीं किया था लेकिन आज वे अपने पिता के सच्चे वारिस साबित होते दिख रहे हैं.

 देशभक्तों और संगीतज्ञों के बाद अब शायरों की बारी है. बहुत जल्द दिखाया जाने वाला धारावाहिक 'कहकणां' जोश मलीहाबादी, फिराक गोरखपूरी और जिगर मुरादाबादी जैसे आधुनिक उर्दू शायरों के जीवन पर आधारित है. और अच्छी बात यह है कि इस धारावाहिक में उम्दा णायरी की भरमार है. इस धारावाहिक के लेखक-निर्माता प्रसिद्ध गायर और फिल्मी गीतकार अली सरदार जाफरी हैं और इसका निर्देशन जलाल आगा ने किया है. धारावाहिक की पहली दो कड़ियां मौलाना हमरत मोहानी के बारे में है. प्रसिद्ध अभिनेता फारूक शेख ने इसमें मुख्य भूमिका निभाई है और दीप्ति नवल उनकी पत्नी की भूमिका में हैं. राष्ट्रवादी शायर मोहानी ने अंग्रेजों के खिलाफ अपनी आवाज बूलंद की थी. यह धारावाहिक शायरों का निर्मित किया है और शायरों के ही बारे में है.

◆ दूरदर्शन अपने तूणीर में
कई बेहतरीन तीर छिपाए बैठा है.
हालांकि उबाऊ धारावाहिकों
की जगह अब औसत से भी घटिया



▲ साहनी (बाएं) 'गुल गुलशन गुलफान में: अच्छा अभिनय



▲ फारूक और दीप्ति 'कहकशां' में: शायर बोलेंगे



अर्चना 'सांघ्य राग' में: संवेदनशील भूमिका

धारावाहिक दिखाए जा रहे है पर दूरदर्शन की निर्मित की कई उत्कृष्ट टेलीफिल्में डिब्बों में ही बंद पड़ी हैं महेश भट्ट की 'डेही' सिनेमाघरों में धड़ल्ले से चल रही है और अनुपम खेर के समझ अभिनय की तारीफों के पूल भी बांधे जाने लगे हैं. लेकिन बाल महेंद्र की 'साध्य रागम्' डिब्बी में ही बंद है. यह संवेदनशील और खबरसूत फिल्म एक ऐसे वुजुर्ग के इदिगिर्द घूमती है जो अपने हैं। घर में बेगाना है. इस फिल्म में अभिनेत्री अर्चना ने एक ऐसी गर्भवती बहु की भूमिका बखुबी निभाई है जो मद्रास के अपने छोटे से फ्लैट में अपने लिए अधिक स्थान चाहती है. दिलचस्प बातगृह है कि वालाचंदर की फिल्म 'वीड्' में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का

राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने वाली अर्चना अपने लिए पर की भी तलाश कर रही हैं. गाः

• क्या दूरदर्शन
समझदार हो चला है? लोग
हैरत के साथ आंखें
फाड़कर इसकी ओर
मुखातिब होने लगे हैं तो
इसलिए नहीं कि इसके
कार्यक्रमों का स्तर
मुधर गया है. फर्क सिर्फ
इतना है कि छोटे परदे
पर अब 'बड़ी' वातें भी
दिखाई जाने लगी हैं
धारावाहिक 'संबंध' में
गुजरात की प्रेम
कहानियां दिखाई जा है
हैं. यह धारावाहिक

ह. यह वारासाए पूरी तरह रुचिकर तो नहीं का पाया है लेकिन इसमें वैवाहिंक संबधों की दुरूहता को जिस तरह दर्णाया गया है वह एक स्वागतयोग्य नयापन है अजित वाच्छाणी कस्बे के छंटे हुए व्यक्ति की भूमिका में जमते हैं इसी तरह नीना गुप्ता ने काम-काजी महिला की भूमिका बखूबी निभाई है जो पति की इस्त के वावजूद बच्चा नहीं चाहती

इसी तरह धारावाहिक 'इकाई, दहाई सैकड़ा ने भी दर्म को अपनी ओर आक्षित क्यि है. इसमें मुंबई के वेश्यालयों की खबर ली गई है. वह दृश्य तो खास तौर से अलग-सा है जिसे पिता बने श्रीराम लागू अपनी बेटी को 'खुश करने' के लिए की पेश करते हैं. जबाब नहीं!

# यस्त एग्ज़ेक्युटिका के लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव

ता रहे हैं त की कई व्यों में ही

की 'हैही से चल र के सज़क के पुल भी केन बाल

प् डिब्बा नणील और

रेसे वुजुर्ग गे अपने ही

फिल्म में

क ऐसी का बख्बी

अधिक चस्प बात गह

फिल्म भनेत्री का जीतने रने लिए घर हर रही हैं

के अपने छोटे

त्ला है? लोग आंखें ओर लगे हैं तो कि इसके स्तर फर्क सिफ छोटे परदे

वातें भी लगी हैं 'संबंध' मे प्रेम

देखाई जा ही वाहिक नहीं बन वैवाहिक

ने जिस तरह

है. अजित

नं जमते हैं T ने काम-

हे हुए

मिका पति की इन री चाहती.

गहिक

ने भी दर्भ चित किया

यालयों की

दृण्य तो र्ग है जिसमे

ग् अपनी

नहीं! \_HU S

के लिए

एकसाथ कई काम करने की कोशिश न करें। लिस्ट बनाकर क्रमानुसार करें।

• अपनी hobbies के लिए समय जरूर निकालें। यह आपके दैनिक कार्य में उपयोगी सिद्ध होंगी।

• आप कितने भी व्यस्त हों, अपना sense of humour बनाए रखें । यह आपको तनाव-मुक्त रखेगा ।

गाडी दफ़्तर से थोड़ी दूर छोड़कर पैदल चलें । लिफ़्ट छोड़कर सीढ़ियां चढ़ें ।

काम के कारण खाने का समय न मिले तो पौष्टिक बिग सिप्प ही पी लें।





पीजिए बिग् सिप्प् रहिए दसं कदम आगे

# गृहिणियों को स्वस्थ रखने के लिए पाँच सरल उपाय

खाना हल्का ही खाएं, पर बीच-बीच में पौष्टिक नाश्ता लेती रहें। दिन भर चुस्त रहेंगी।

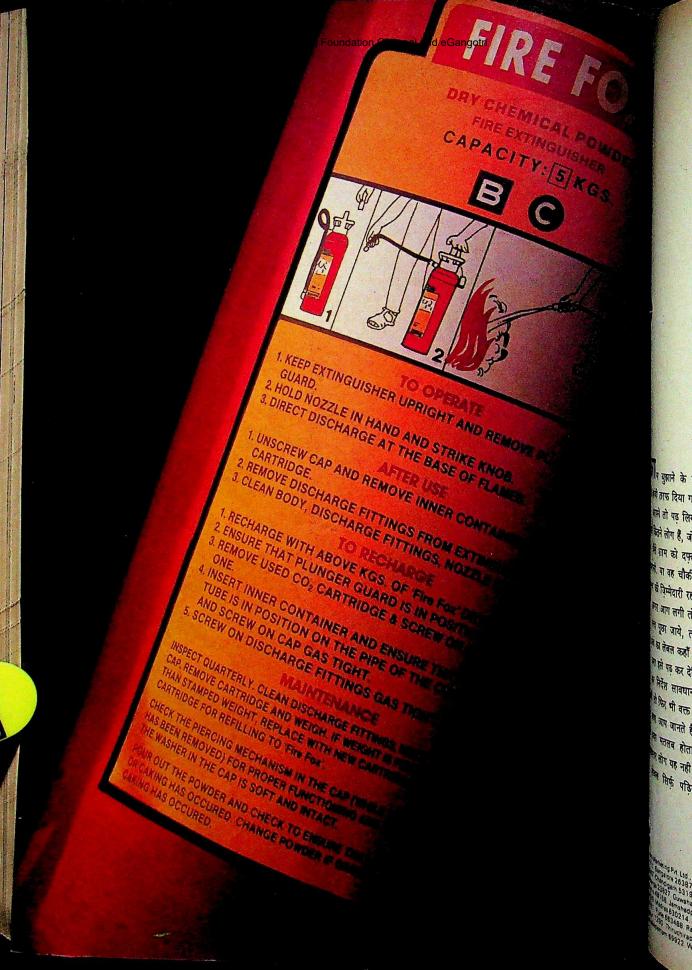
> हर समय बस-टैक्सी का इस्तेमाल न करें। जहाँ तक हो, पैदल चलने की आदत डालें।

25 की उम्र के बाद चाय-कॉफ़ी में चीनी और सलाद-दही में नमक

 स्वास्थ्यकारी खान-पान अपनाएं – डबलरोटी की जगह ब्राउन ब्रेड, आलू चिप्स की जगह बेक किए हुए आलू, तली हुई सब्ज़ी की जगह भांप में पकी सब्जी।

 ऐसे पेय न पिएं जो Calories ज्यादा दे और पोषण कम। इनकी जगह पौष्टिक बिगु सिप्पु पिएं।

बिग् सिप्प् प्रोटीन-भरा सोया मिल्क शेक आप जैसे व्यस्त लोगों के लिए झटपट पौष्टिकता पाने का बेजोड़ साधन है। प्रोटीन, लौह-तत्वों, फाइबर व विटामिनों से भरपूर बिग् सिप्प् आपको चुस्ती-फुर्ती देता है और आपकी कार्य-क्षमता बढाता है।



# District Arya Samai Ponta In Chenna and Gang II

ा बुबाने के यंत्र का यह लेबल पिढ़ये, विताफ दिया गया है.

हों तो पड़ लिया, पर आपके दफ़्तर में न के तोग हैं, जो इसे पढ़ नहीं सकते.

हैं जा को दफ़्तर के बाद डयूटी देनेवाला हैं ज वह चौकीदार, जिसपर रात-भर सारे हैं ज़िम्मेदारी रहती है.

न आग लगी तो ये लोग क्या करेंगे?

है पूछ जाये, तो आपने भी आग बुझाने हैं के तेवल कहाँ पढ़ा होगा?

क्षे पढ़ कर देखिये.

निर्देश सावधानी से पढ़ लीजिये, क्योंकि के भी वक्त है आपके पास.

कार जानते हैं, कि क्लास 'बी' या 'सी' कतन होता है? (पता लगा लीजिये,

किर्फ़ पढ़िये नहीं, मुँहज़बानी याद

कर लीजिये.

क्योंकि जब आग लगती है, तो आपके पास बस चन्द मिनिट होते हैं — उसके बाद वह बेकाबू हो जाती है.

उस वक्त, घबराहट में पचासों निर्देश पढ़ने की फुर्सत कहाँ होगी आपको?

आसान रास्ता तो यह होगा, कि आप सीजफायर ले आयें.

सीज़्फ़ायर एक छोटा-सा, मगर शक्तिशाली, आग बुझाने का यंत्र है — इतना छोटा, कि हथेली में समा जाये.

यह इस्तेमाल में इतना आसान है कि कोई भी इसे इस्तेमाल कर सकता है. बस नॉज़ल का मुँह लपटों की निचली ओर करके दबाइये.

सीज़फ़ायर की जबरदस्त शक्ति का राज़ है हेलॉन 1211 — संसार का सबसे असरदार आग बुझाने का साधन. तभी तो सीज़फ़ायर की आग बुझाने की शक्ति बड़े यंत्रों के बराबर है.

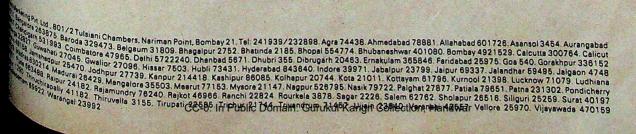
और यह हर तरह की आग का मुकाबला कर सकता है — आग चाहे लकड़ी, मिट्टी के

> तेल, गैस, या बिजली से लगी हो. इसे न तो दोबारा भरने की ज़हरत है, न सर्विसिंग की — यह हर वक्त तैयार है.

सीज्फायर किसी दूकान में नहीं मिलता, इसीलिये आप नीचे दिये हुए नंबरों पर फोन करके ही इसे मैंगा सकते हैं.

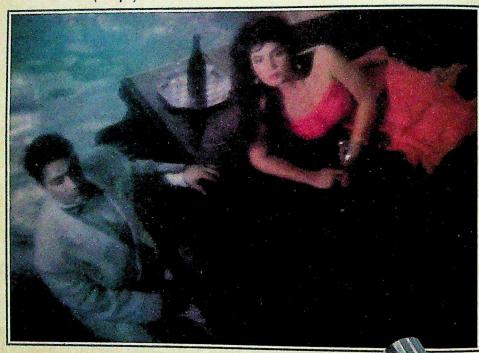
अगर अब भी आप सीज्फायर का लोहा नहीं माने, तो ना सही. इसी बहाने आपने आग बुझाने के यंत्र का लेबल तो पढ़ लिया — जो कोई नहीं पढ़ता.

इसे पास न रखना आग से खेलना है.



HRI

# आइए, श्रेष्ठता के शिखर पर



श्रेष्ठता के शिखर पर तो बिरले ही पहुँचते हैं. जैसे कि आप. और हाँ, ब्लू स्ट्रैटोस भी. यूरोप की ख़ास खुशबू, जो लिपटी रहे आपके पहलू से, सारा दिन.

ब्लू स्ट्रैटोस आफ़्टर शेव और कोलोन. साथ-साथ टाल्क और शेविंग क्रीम की उत्कृष्ट जोड़ी.

आप की तरह ही, सामान्य से न्यारी.

# ब्लू स्ट्रैटोस के साथ श्रेष्ठता का शिखर चूमिए

यूरोप की ख़ास ख़ुशबू, अब आप के लिए भारत में.

Old Opice बनाने वालों की पेशक श

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ग्रम्पाम से आ

ह्मर कल तर बाते थे, आ ग्रांबन-डीजल' मेर पानी में बा रही है, र मनता ऐसे हे मंगे नीडर हा में डीजल मा में नेता जी वे स्वाब की तार्र ऐसे शरी

मड़क के जिन्नदी आ जिन्नदी हैं, जे की लग्न की नात

लक कभी देखे

काई अनुशा ने हैं." वह परि

बेव ड्राइवर बेवो जनता में बेह कैसे," हैं बेते हाल अ बेत होगा," पर आप लो

बिहासन अ दिन करें ने उन्होंने फ बिता की के बाता की भाग की

म कुमियों स्मापक है स्मापक है

# हर ओर कतार की दरकार

'व्यू' है. जिधर नजर जाए बस क्यू ही क्यू है. लोगों के दिल दहलाने वाले विकराल टक ठप हैं. सामने से गुजरते बच्चे-से स्कूटर

हं गृह बिरा रहें हैं. बड़े बेधड़क उनके स्पाम से आ जा रहे हैं. जो रौबदार ह्मा कल तक 'चल वे चल' की हांक नातं थे, आज पंप वाले छोकरे से वित-डीजल' की चिरौरी में लगे हैं. शेर कारी एक घाट पर हैं. वकरी के ठाठ गर पानी मांग गया है. बकरी ठेंगा ता ही है. लोकतंत्र और सियासत में

नता ऐसे ही आती है. षो लीडर हार जाता है, में डीजल मार जाता है. ले नेता जी से इस सुखद लाव की तारीफ की—

ऐसे गरीफ वाहन कि कभी देखे हैं क्या! " भड़क के जाने-माने क्वादी आज खालिस जेवादी हैं,'' उन्होंने

हम तो ऐसी प्यार की भ की वात सोच भी

काई अनुशासन-पर्व का

<sup>बह</sup> परिवार <sup>लिकाल</sup> था. यह डीजल "पर इधर तो दूसरे आ गए."

"यही इनडिसिप्लिन तो हमें बरदाश्त

'लोकतंत्र में क्या ऐसा मृनासिब है?'' ''जब हजारों स्थायी पदों के लिए रिजर्वेशन मुमिकन है तो एक अस्थायी पोस्ट के लिए क्यों नहीं! "

''तो आप लोग 'क्यू-सिस्टम' में यकीन नहीं रखते हैं "

''क्यों नहीं! टोपी गई, धोती आई. अब कतार में हमारी बारी है."

''आपकी पार्टी के भाई-भतीजावाद में चाचा-ताऊ की तू-तू मैं-मैं नहीं है."

''पूण्तैनी प्रधान की आज्ञा से अन्य पदों

चलन है. हम इस खोज की खुशखबरी स्नाने नेता जी के पास जाते हैं. वे टेलीफोन घुमा रहे हैं—

''क्या मुश्किल है. सूबह से परेशान हैं.'' "अव कैसा गम. टेलीफोन निगम है!" ''पहले तो नंबर नहीं मिलता. मिला

तो कहते हैं प्रतीक्षा कीजिए, क्यू में हैं."

"यही तो प्रगति की निशानी है. ट्रक भी कतार में अड़े हैं, टेलीफोन भी!"

''पर हम अपना सार्वजनिक वयान कैसे जारी करें! "

"आपके मन में प्रधान के पद का अरमान तो है नहीं. वाकी आप जो चाहे बखान करें. कौन-सी रोक है?"

> "मामला इतना आसान नहीं है. जो उनको सोचना है वही तो हमें बोलना है,'' वह अपनी बात आगे बढ़ा पाते कि उनके कोई चाहने वाले आ धमके—''दस साल पहले आपने वादा किया था. कुछ तो करिए! "

"क्या हो गया भाई! बताइए तो."

"इतने साल से रोजगार दफ्तर के चक्कर लगा रहे हैं. बाल पकने को आए पर हम बेकार के वेकार हैं."

"हिम्मत मत हारिए! अभी तो हमारे प्रधान से लेकर हम सब 'क्यू' में हैं. आप भी रहिए."

वह हमारे चलने तक टेलीफोन की लाइन में लगे रहे. हम क्यू-कल्चर से ठगे रहे. हमें यकीन होने लगा कि देश के अच्छे दिन बस आने ही वाले हैं. दुनिया-जहान में तरक्की का दूसरा नाम क्यू है. जिंदगी के हर दायरे में कतार की दरकार है. रेल, बस, हवाई-उड़ान, राशन की दुकान से लेकर रोजगार-दफ्तर, दवा-दारू, इलाज, अस्पताल, घाट-श्मशान तक. यही वक्त की पुकार है. अब तक तो हम खुशहाली के हिमालय पर होते. पर क्या करें! चंद सिरिफरे क्यू जंप कर जाते हैं. पर अब तो ट्रक, उनके ड्राइवर और हमारे नेता सभी कतार में इंतजार कर रहे हैं. देर-सबेर ट्रक का डीजल का और लीडर का कुर्सी का, ही रहेगा. क्या पता म्युनिसपैलिटी के नल में एकाध बाल्टी जल का अपना भी आ जाए.



व ड्राइवरों तक में डिसिप्लिन आ वो जनता में भी आएगा." ह कैसे," हमने जानना चाहा. बो हाल आज डीजल का है, कल के होगा," उन्होंने ढांढस बंधाया क आचरण-भाषण में क्षासन आएगा."

विकरेन चाकरी, नेता करेन उन्होंने फलसफा समझाया. भा पत्ने नहीं पड़ा," हमने अपनी किली को कोसा.

शे भाग चाहते हैं, नियम-अनुशासन

भ कृषियों की भी तो कमी है. बड़ी

वि<sub>तिकि</sub> वेश-परंपरा का नुमाइंदा है.''

के लिए उछलकूद को सब स्वछंद हैं."

यहीं तो फर्क है. एक पार्टी के जेबी लोकतंत्र में आपसी उठा-पटक परमीशन लेकर होती है. कहने को आजादी है मगर आका की शंतों पर. इशारा हुआ नहीं कि सब कतार-हाजिर हैं. शिवजी की बारात उर्फ जनता दल में मुसल्सल उथल-पुथल का इंकलाबी माहौल है. कुछ प्रधान की सुनते हैं, कुछ नायब की. बाकी बागी किसी की नहीं. कोई अपनों की खुलेआम टांग खींचता है, कोई कुर्सी, कोई कॉलर. बिलकुल डीटीसी का नजारा है. एक-दो सत्ता की बस पकड़ने के लिएं दौड़ते हैं तो दस-बारह कमर कसकर उन्हें रोकने के लिए. खानदानी दल का दृश्य मंदिर का है. भगवान के पास पहुंचने को धक्का-मुक्की है. उनके गुणगान गाने, आरती उतारने और प्रसाद चढाने का

O. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

महानगर

## चल निकलने का चमत्कार

मराठी भाषा का सांध्य अखबार तमाम आशंकाओं के बावजूद सफल

मान्य समझ तो यही कहती थी कि इस अखबार के चल निकलने के आसार नहीं हैं. हालांकि मुंबई भारत का एकमात्र शहर है, जहां पाठकों की संख्या इतनी है कि एक सांध्य अखबार खप सके, लेकिन मराठी भाषा में शुरू होने वाले अखबार को मीडिया विश्लेषक अक्सर संदेह की नजर से देखते हैं.

32 वर्षीय प्रकाशक-संपादक निखिल वागले के मराठी सांध्य दैनिक 'महानगर' ने सभी अटकलों को झुठला दिया. मुंबई के बेहद प्रतियोगी बाजार में इसकी रोजाना करीब 80,000 प्रतियां बिकने लगी हैं. वागले बताते हैं, "मराठी अखबारों की वृद्धि दर तो धैर कम है ही, हमें अच्छे फीचर वाले सांध्य अखबार का अभाव भी खलता रहा. सो, हम इसमें जूट गए."

क्रिकेटर संदीप पाटील के घर की गैराज में रहकर अपना कैरियर श्रूरू करने वाले वागले ने आठ वर्ष से भी कम समय में लंबा सफर तय किया है. 'अक्षर' के दिवाली विशेषांक की सफलता के बाद वागले के कैरियर का पहला महत्वपूर्ण पडाव था क्रिकेट पाक्षिक 'एकच शतकार'. रंगीन पुष्ठ, तडक-भडक वाली साज-सज्जा और सबसे बढ़कर एक विवादास्पद क्रिकेटर के संपादक बनने से तो इस लघ पत्र ने सनसनी फैला दी. प्रकाशन के दो वर्षों के भीतर इसकी प्रसार संख्या आसमान छुने लगी और 1985 में जब भारत ने शारजाह कप जीता तो इसकी 1.10.000 प्रतियां विकने लगीं. सितंबर 1985 में वागले ने एक फिल्म पाक्षिक 'चंदेरी' णूरू की. अभिनेत्री रोहिणी हट्टंगड़ी को इसकी संपादक बनाया. वागले की पत्नी मीना कार्निक ने कार्यकारी संपादक की कुर्सी संभाली. 'चंदेरी' की प्रसार संख्या 65,000 बताई गई है.

लेकिन वागले के प्रकाशन संस्थान को मराठी पत्रकारिता की मूख्यधारा में लाने का श्रेय 'महानगर' की सफलता को ही है. मंत्रियों के आलीशान बंगले हों या उपनगरीय रेलगाडियों के भीड भरे डिब्बे. लोगों के बीच चर्चा का विषय 'महानगर' का ताजा संस्करण ही होता है. पिछले



निखिल वागले और उनका 'महानगर': अटकलें गलत साबित हुई

**ा** राठी सांध्य अखबार 'महानगर' की सफलता का श्रेय इसके फीचरों और जानी-मानी हस्तियों के लिखे कॉलमों के अलावा नई संपादकीय शैली को भी है

महीने जब जॉर्ज फर्नांडीस ने शरद पवार के राजीव गांधी से कथित मोहभंग पर इस अखबार को इंटरव्यू दिया तो असंतुष्ट मंत्री अपने विरोध का औचित्य साबित करने के लिए इसी का हवाला देने लगे. आडवाणी की रथ-यात्रा की आलोचना करते हए जब इसने विहिप महासचिव अशोक सिंहल को 'राजनैतिक सोच से शून्य विदूषक' का खिताब दिया तो मध्य मूंबई में स्थित अखबार के दफ्तर को बम से उडा देने की धमकी दी गई.

'महानगर' की सफलता का श्रेय इसके फीचरों और जानी-मानी हस्तियों के लिखे कॉलमों के अलावा नई संपादकीय शैली को भी है. खासकर, दो अखबारों— 'सांघ्यकाल' और 'तरुण भारत' के मुकाबले तो ये बहुत निखरे हुए हैं. प्रतिदिन वर्ग पहेली, बच्चों के लिए पृष्ठ, महिलाओं से संबंधित विशेष लेख के अलावा अखबार में अरुण शौरी, अरुण साधु, सुनील गावसकर, निखिल चक्रवर्ती जैसे लोगों के कॉलम भी होते हैं. संगीत समालोचक अमरेंद्र नंदू धनेश्वर कहते हैं, "दूसरे मराठी अखबारों के विपरी 'महानगर' लेखकों पर पैसा खर्च करता है लेकिन अखबार की सफलता का मुख्य है इसके प्रखर संपादन को ही है.

. उत्पादन

महत्त्वपूर्ण मरी

ई ते उत्पादन

से जाता है, उ

गै समय पर पू

1、扇角 社

वंभी की सप

अंनी के उत्पार

सत्य होने प

रेपद्रा समय

बलब है वितर

क्यास खो देन

भ जमाने का म

राजनीतिकों और पार्टियों आलोचना करते हुए भी रिपोर्टिंग एकदम निष्पक्ष रखते हुए वागले ने असंभव काम कर दिखाया है. शिवन प्रमुख बाल ठाकरे को 'अपरिपक्व' कर्ड उनकी आलोचना करते रहने के बाव उन्हें ठाकरे को आदर्श मानने वाले सैनिकों की निष्ठा हासिल है अभिनेता अमोल पालेकर कहते "उनका दृढ़ राजनैतिक दृष्टिकोण, वि भी पार्टी की आलोचना करते वक्त पर हावी रहता है."

'महानगर' के लिए जब कोई वैंक हैं को के देने को तैयार नहीं था तो वागले देही से उधार, और पिता की भविष्य निर् पैसा लेकर इसकी गुरुआत की अब की सफलता देखते हुए वागले यह क्षेत्र हैं कि मराठी पाठकों की और

प्रकाशन परोसे जाए.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



# रवास कारण हैं कि आपको युनाइटेड इंडिया की मशीनरी ब्रेकडउन डन्श्यूरेन्स पालिसी क्यों लेनी चाहिए.

1, उत्पादन से संबंधित
"इत्त्र्जूणं मशीनों में से एक भी ट्य हो ई वे उत्पादन का पूरा काम तो रूक है जाता है, उत्पादन का नियत कार्यक्रम चैक्य पर पूरा नहीं हो पाता."

#### 2. बिक्री से संबंधित.

खर्च करता है का मुख्य थे

पार्टियों रिपोर्टिंग

वागले ने (

रपक्व' कही

ने के बाव

ने वाले वि

ल है. पि

र कहते

ड्टकोण, झि

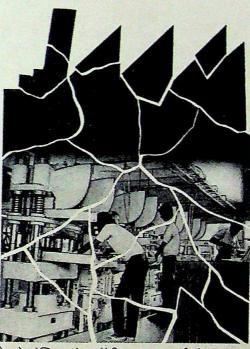
रते वस्त

कोई के हैं। जागले की अब

और की

\_GH.

कानी की सफलता या असफलता कानी के उत्पादनों के बाजार में लगातार स्त्राय होने पर बहुत निर्मर करती है. उपल समय पर न पहुंचाए जाने का ब्लब है वितरकों और ग्राहकों का काम को देना और प्रतिस्पर्धियों को क समने का मौका देना."



3. मुनाफे से संबंधित.
"मशीन बंद, तो समझिए कैश-फ्लो में
गड़बड़ी, पैसे की तंगी. रोज के कामकाज
में लगी पूंजी, गैर-उत्पादक लागत में
फंस जाती है. इस सबसे मुनाफा काफी
कम हो जाता है."

4. देखमाल से संबंधित.
"टर्बाइन्स, कम्प्रेसर्स, पंप्स, जनरेटर्स, ट्रांसफॉर्मर्स समी कीमती मशीनें हैं. इनकी रोजमर्रा की देखमाल तो मुमिकिन है लेकिन इनका अचानक ठप हो जाना महंगा पड सकता है."

म शीनरी चाहे इलेक्ट्रिकल हो या मैकेनिकल, काम कर रही हो या बंद, उसकी सफाई की जा रही हो या जांच, ओवरहॉलिंग हो रही हो या उसे हटा कर इंश्योर्ड कराई सीमाओं में ही फिर से बिठाया जा रहा हो — यूनाइटेड इंडिया अचानक हो जानेवाली क्षति या टूट-फूट की स्थिति में भरपाई करती है. मशीनरी ब्रेकडाउन यांनी मशीन के ठप हो जाने से मुनाफे में आ जाने वाली कमी जैसी स्थितियों के लिए इस पॉलिसी की विस्तारित सुविधा भी उपलब्ध हो सकती है.

हां तो, आप बड़ी फैक्टरी के मैनेजर हो या लघु उद्योगपति, इस बात का पहले से पक्का इन्तजाम कर लें कि मशीनरी के टप हो जाने और फिर से पैसा लगा सकने की हालत न होने की वजह से आपका सारा कामकाज ही न रुक जाए.

यूनाइटेड इंडिया की बीमा पॉलिसी को बना लीजिए— अपनी पॉलिसी का अटूट हिस्सा.



### यूनाइटेड इंडिया इन्श्यूरेन्स कं. लि.

(जनरल इन्थ्यूरेन्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया की सहायक संस्था) २४. व्हाइट्स रोड, मद्रास ६०००१४.

जल्दी करें. आप हमारे 1120 से भी ज्यादा कार्यालयों में कहीं भी संपर्क कर सकते हैं.

HTA 7782



बल्लम डोमाल

घमक्कड़ प्रवृत्ति वाले रचनाकार बल्लभ डोभाल की अब तक कहानी, कविता और उपन्यास के 22 पुस्तकें में प्रकाशित हो चुकी हैं. आम तौर पर पर्वतीय परिवेश को उभारने वाले इस लेखक की प्रस्तुत रचना व्यवस्था पर तीसी चुटकी





शे इमजोरिय

ने इनना क्य हा सकता. ह मकता है. संदार व ए किसी ने म ग राष्ट्रपति था. त मपने में उ बही बाद है.

त में आपसे है

नपने क्यों उ

मा माकार

नुना था, उ

शदमी के भा

ते हैं. किसी

ताया कि स

र्गंद्र के अवन

र करते हैं.

एता है, वह

होता है, या

रेता है. इ

में अवचेत

र्बान होती है

हेबात सच ह

धवंतन में ऐ

हों थी. ऐसी

ग नहीं स

पूर्व नह

त बनने की भजांकर र

जीवन यह

त पुरानी नहीं, कल रात की ही बात है. सपना हुआ था और सपने में वह सब हो गया. सपने की बात कहुंगा तो लोग हंसेंगे, हंसी उड़ाएंगे. सोचता हूं तो स्वयं मुझे भी हंसी छूट आती है.

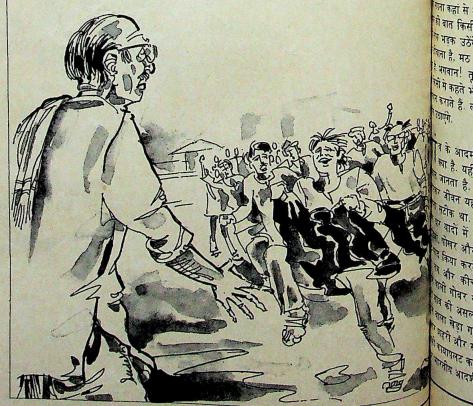
सपना हुआ था. ऐसा कि जिससे मेरा कोई संबंध नहीं, किसी तरह का वास्ता नहीं. सपने की बात न होती तो होनी वाली उस घटना को मैं रोक लेता, उसका प्रतिरोध करता. मैं उन लोगों से साफ कह देता कि मेरे साथ ऐसा अभद्र व्यवहार न करो. मैं इस योग्य नहीं हूं. राष्ट्रपति के लिए तुम किसी दूसरे आदमी को चुन सकते हो. जानते हो राष्ट्रपति की क्या मर्यादा होती है? कितनी बड़ी जिम्मेदारी उठानी पड़ती है. पहली बात तो यही कि मेरे जैसा आदमी राष्ट्रपति बनने के लायक होता ही नहीं.

मैं उन लोगों को आसानी से समझा देता और वे लोग मान भी जाते. लेकिन मैं विवश था. सपने की बात है, मैं कुछ कर न सका और उन लोगों ने मिलकर मुझे राष्ट्रपति चुन लिया.

कितने आश्चर्य की बात है. मैं किसी संस्था अध्यक्ष चुना जाता, कहीं सभापति बना दिया ग गांव का प्रधान, ब्लॉक प्रमुख या जिला पिए मेंबर कुछ भी बन सकता हूं, इतनी योग्यता अंदर है. लेकिन राष्ट्रपति बनने योग्य बिलकल ह सोचता हूं, होनी पर किसी का बस नहीं. एक सब कुछ हो गया. इतनी फुर्ती से कि ...मैं मह किनारे खड़ा हूं, एकाएक भीड़ मेरे सामने ह आती है: वे ही लोग बताते हैं कि मुझे राष्ट्रफी लिया गया है. वे मेरा नाम लेकर जिंदाबाद के लगा रहे हैं. इन्हीं लोगों ने पास आकर मेरे उतार लिए और राजकीय वेशभूषा के साथ अभिषेक कर दिया. देखते-देखते मेरी कायापतः और मैं राष्ट्रपति कहलाने लगा.

वाह री किस्मत! तू भी आदमी को का रंग दिखाती है. मुझ जैसे नाकारा आदमी की रात में राष्ट्रपति बना दिया. इतनी योग्यत अंदर कहां थी. राष्ट्रपति बनने के लिए योग्यता की जरूरत नहीं है, पर मेरे अंदर है

एकाएक भीड़ मेरे सामने उमड आती है. वे ही लोग बताते हैं कि मुझे राष्ट्रपति चुन लिया गया है. इन्हीं लोगों ने पास आकर मेरे कपड़े उतार लिए और राजकीय वेशभूषा के साथ मेरा अभिषेक कर दिया. देखते-देखते मेरी कायापलट हुई और मैं राष्ट्रपति कहलाने लगा



In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

व स्था क्या वेमानी नहीं है? ऐसी धृष्टता त्र स्वता, किंतु सपने ने कर दिखाया तो मैं

किसी ने मुझे यह नहीं बताया कि मैं किस

क्षित्र वात् और...राष्ट्रपति मैं बन तो न गाएपति हूँ मेरे लिए यह जानना बहुत

पर त मपने में जो हुआ, बही बाद है.

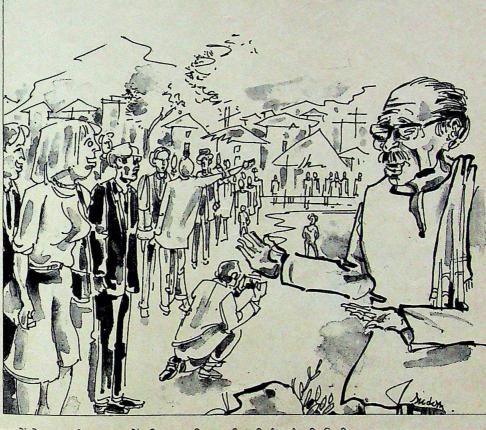
वर्ष आपसे ही पूछता किसी संस्था क्याने क्यों आते हैं? ना दिया इ स्मा माकार होते हैं? जला परिषद नी योग्यता नृता था, ज्यादातर ज्ञातमी के भविष्य का य विलक्त ह कि हैं किसी ने यह म नहीं. एका ताया कि सपने मन के ...मैं महब र्ढि के अवचेतन को रि सामने ह ह करते हैं. अवचेतन झे राष्ट्रपति हता है, वहीं या तो जदाबाद के होता है, या सपने में आकर मेरे तंता है. इन्हीं दो या के साथ में अवचेतना की री कायापतः र्बान होती है

मी को क्या<sup>र शत</sup> सच होगी. पर मनतन में ऐसी कोई आदमी को हो थी. ऐसी बात मैं ानी योग्यता ने नहीं सकता. मैं के लिए मेरे अंदर ते पूर्व नहीं कि वनने की इच्छा मंजोकर रखूं. फिर लाकहां से आ गया. गेवात किसी से कहूं ने भड़क उठेंगे. कहेंगे

नित है, मठ में बैठकर महलों के ख्वाब देख भावान! तूने ऐसा सपना ही क्यों दिखाया में में कहते भी नहीं बनता. सपने औकात की काते हैं लोग मुनेंगे तो औकात की बात

के आदमी की औकात भला होती ही भा है. यही खेड़ा गांव है. यह गांव मेरी भागता है. इसकी धूल-मिट्टी को तन पर भीवन यहां तक पहुंचा है. तब यह गांव महीक था. गांव में वेतरतीब खड़े कच्चे-भारों में यथावत बने हैं. यहां आसपास भीवर और मिट्टी-पत्थर के टीलों पर हम किया करते. अब याद आती है घर-गांव और कीचड़ सनी पगडंडियों की...जहां भी गोवर की गंध मन को भा जाती थी. कि की असल पहचान थी. लेकिन अब वह भा भेड़ा गांव नहीं रह गया है, देहाती न किंग और सरकारी बन गया है. सरकार ने भिषानट कर दी है. इसकी वह गंध उड़ गई किलीय आदर्भ गांव का रुतबा इसे दिया गया

विदेशी मेहमानों के लिए इसकी काया दुलहन की भांति संवर उठती है. भारतीय गांवों की इस खुशहाली पर वे मुग्ध हो रहते हैं. इसी के कारण एक आदर्भ ग्रामीण होने का आदर्भ मुझे प्राप्त हुआ है. मैं आदर्ण ग्रामीण हूं पर नौकरी के लिए तो



शहरों की खाक ही छाननी पड़ी है. नौकरी मिली तो ऐसी कि गांव से सूबह-शाम का नाता रह गया. सोचा, वहीं कहीं शहर में रहने लगूं तो सुबह-णाम की दौड-ध्रप से पीछा छुटे. लेकिन मजबूरियां ऐसी कि शहर में रहना संभव नहीं. तब मुझे स्वयं भी अपनी औकात के बारे में सोचना पडता है कि मैं क्या हं...न शहर के अभिजात स्विधाभोगियों में मेरा नंबर आता है...न आदर्श गांव का ग्रामीण ही मैं बन सका हूं. मैं अपने को कहीं रख नहीं पाता. गांव और शहर के मध्य रास्ते पर त्रिशंकु की तरह लटका हुआ...बस! यही मेरी औकात है. ऐसा आदमी सपने में राष्ट्रपति बनता है तो हंसी की ही

खणी भी कम नहीं. सपने में सही, इतनी बडी पोस्ट पर मैं पहुंच तो सका. राष्ट्रपति की गरिमा मेरे अंदर अपना कुछ तो असर छोड़ गई है. लेकिन क्छ भी याद नहीं पड़ता कि मैं किस देण का राष्ट्रपति हूं. तब भी मैंने इस बात को जानने की कोशिश नहीं की. जरूरत होती तो मैं किसी से पूछ लेता. लेकिन पूछता कैसे?..पूछता तो लोग हंसते, हंसी उड़ाते कि मैं कैसा राष्ट्रपति हं जिसे इतना भी

🧲 श-विदेश के लोग भारतीय गांव देखने जब आते हैं तो यही खेड़ा गांव उन्हें दिखाया जाता है. तब विदेशी मेहमानों के लिए इसकी काया दुलहन की भांति संवर उठती है. वे मृग्ध हो रहते हैं

Digi<del>li रहिते। भे जीमतां प्रिकितिकां क्रिक्तिकां क्रिक्तिकां क्रिक्तिकां अचानक उसमें आ जाती है, वह क्रिक्तिकां क्</del> किसी को कुछ कहने-बोलने की हिम्मत नहीं. वे लोग भी सामने कुछ न कहते. लेकिन उनके सोचने को कौन रोक सकता है. कहने की असमर्थता आदमी सोच से पूरी कर लेता है. वे लोग जरूर सोचते कि राष्ट्रपति क्या बन गया, खुदा बन गया है. आदमी के मुंह में लगाम लग सकती है पर उसके

शक्तिशाली बन जाता है. लेकिन कि असहाय...कि स्वयं कुछ करने में असमर्थ कि इस उठता है पूछ भी नहीं सकता कि वह किस देश का गुरु क्यितियों व सोचकर प

यही मेरे साथ हुआ है. तब मुझे किसी से किया कि न पूछने की आवश्यकता न रही. कुछ भी न जानी तिगों को पं

जैसे कि सब कुछ जानता वा गर चल मेरे आगे-पीछे सब क वी-गैरसरकार जानकार लोगों की भीड़ अपनी ही ऐसे लोग तैनात थे जिन उंगलियां देश की नवा गाक अपनी सधी होती हैं. वे ही जाता है. देखत सब तरह की जानकारी वागत ममार तमाम भाषण-वार्ताओं में राजपथ, र्ग वर्षा हुई कायदे-कानून बातें...देश में पड़ने न ज कोई दुभिक्ष, महामारी, मुबा कि पाकर बाढ़ का प्रकोप...जन्म-प्रविदेवने की इच से लेकर निर्माण, 🔭 है यह सर विकास आदि आयोजनो नहि ऊंची सं जानकारी वे मुझे देने न तभी किसी पर उन्होंने भी नहीं बत् व गांवों का मैं किस देश

राष्ट्रपति हं राष्ट्रपति बनने के विनाम ऊचा ह मुझे देश की समस्याओं अर प्रसन्नता आभास कुछ तो हुआ गरि गांव दे समस्याएं खुलकर मेरे माने हैं कि उन नहीं आईं. लगता विकार्यक्रम तै समस्याएं आकर मेरे दता और वता पर रुक गई हैं, उनमें के अनुस वहा गांव साक्षात्कार नहीं हो पा

ा गांव क्यों

हों, किसी दूर

नेगों ने मे

उत्तर न हि

ही तैयारियां

या और कह

देशग गांव

की माने, बोर

व गांव देख

किरो "

है. जैसे कोई दरवाने न उन्हें लौटाए दे रहा हो. उनकी जगह देशों विक् से आए निमंत्रण मेरे सामने ढेर कर दिए को शीत उभ मेरे सम्मान में उत्सव, प्रीतिभोज और खाउँ गांव...य समारोहों की धूम मचने लगी है. ये ही सब बार विमन वेचैनी लिए समस्या बन गई हैं. मैं सोचने लगा जाऊं...कहां नहीं. किस देश का निमंत्रण खीं का जरुरी करूं और किसे इनकार कर दूं. किंतु यह निर्णा नेणा मे पूह उन लोगों ने मेरी इच्छा पर न रहने दिया कार्यक्रम उनके द्वारा ही तैयार किया जाता औ देश-विदेश की यात्राओं में व्यस्त रहने लगा

चता हूं तो मन पुलकित हो उछी सपने ने मुझे वह दिखा दिया जो इस व में तो कभी संभव न था. तब मेरी आंखीं व सुंदर ही सुंदर था. मन-प्राण और शरीर की रोम सौंदर्य की पराकाष्ठा से अभिषिका है सपने में भी ऐसी तृप्ति मिल जाती है गई पहली बार मेरे अनुभव में आई. रह-रहकर में के लिए विदेश यात्राओं के मुखद क्षण साकार हो की विदेश यात्राओं के मुखद क्षण साकार ही की किया राष्ट्रपति भवनों के बीच आयोजित समाति की में भूत उमड़ने वाले चेहरों की शालीनता की मैं भूत



सोच को रोका नहीं जा सकता.

मैं किसी से पूछ लेता लेकिन तब पूछने की फुरसत कहां थी. मेरे आगे-पीछे चारों ओर अंगरक्षक, पहरेदारों की भीड़ सतर्क थी. सब लोग मेरी हरकतों पर निगरानी रखे हुए थे. कंधा बुजलाने के लिए भी यदि मेरा हाथ उठता तो लोग उसके कई-कई अर्थ लगाने बैठ जाते. अखबारों में तस्वीरें छप जातीं. दूरदर्शनवाले गोष्ठियों का आयोजन कर इस तथ्य पर पहुंचते कि खुजली के कारण ही राष्ट्रपति का हाथ गरदन तक पहुंचा है और कोई कारण समझ में नहीं आता.

अपने चारों ओर मुझे फौज की टुकड़ियां ही नजर आने लगीं. कई बार वड़े अफसरान फौजी जनरलों और तोपों से दागी गईं सलामियों का उत्तर दे पाना भारी पड़ जाता. रह-रह कर आभास होता कि मैं किसी बड़े देश का ही राष्ट्रपति हूं और उस देश की समूची संपन्नता को मुझ पर लुटा देने की कश्मकश चल रही है. मुझे देखने के लिए वहां की जनता कीट-पतंगों की तरह उमड़ आई है. सोचता हूं तो मन ही मन आश्चर्य होता है. एक व्यक्ति के राष्ट्रपति बनने पर बनने पर कैसी

सी चता हूं तो आश्चर्य होता है. एक व्यक्ति के राष्ट्रपति बनने पर कैसी भव्यता अचानक उसमें आ जाती है, वह कितना शक्ति-शाली बन जाता है. लेकिन कितना असहाय कि स्वयं कुछ करने में असमर्थ.

समर्थ क्रिकेट के उन सुंदरतम और श कर क्रिकेट के के बीच से मैं अव्यव के के श का राष्ट्रका विवस में अंद्यूता कैसे निकल का राष्ट्रका प्रचाताप भी कम नहीं हो मानकर पण्चाताप भी कम नहीं होता.

किसी से जिया कि नदी, पहाड़, जंगल और लहराती भी न जातने को पीछे छोड़ता हुआ मैं अनेक देशों कुछ जानवा वा पड़ा हूं दुनिया के देशों से अपने ों से का की सम्यापित हो चले हैं. गों की भीड़ कर अपनी ही गरिमा से मुक्त नहीं हो पाता.

ग की नव्य अपनी भारत यात्रा का स्मरण हो हैं. वे ही जाह देखता हूं कि भारत की राजधानी में जानकारी है वालत समारोह मनाया जा रहा है. राष्ट्रपति गण-वार्ताओं को राजपथ, जनपथ और दूर-दूर तक जैसे गं वर्ण हुई हो. सचमुच मेहमाननवाजी में में पड़ने क्षा कोई सानी नहीं. जनता का हार्दिक मारी, मुता कि पाकर मैं धन्य हुआ. मैं इस देश को कोप...जन्म-प्रवेतने की इच्छा प्रकट

है, वह कि की संस्कृति, प्यार-मुहब्बत औछांद्रांध्रककार क्षेप्रंथ Samaj Foundation Chennai and eGangotr नेकिन कि संग्री स्थितियों को याद कर मन आज वे वोले, ''कार्यक्रम जो उन प्राप्तिक के समार की उन संदरतम और

''नहीं! '' मैं तनिक उत्तेजित हो जाता हूं. ''बेड़ा गांव को क्या देखना...शहर के पास जो गांव होता है, वह गांव नहीं रह जाता. वह गांव दिखाकर तुम मुझे वेवक्फ नहीं बना सकते. वेहतर यही है कि मैं अपनी इच्छा से किसी दूसरे गांव को देखूं."

सुना तो वे सावधान हो गए. बोले, "अपनी इच्छा से आए कहीं जा नहीं सकते, किसी अन्य गांव को देख नहीं सकते."

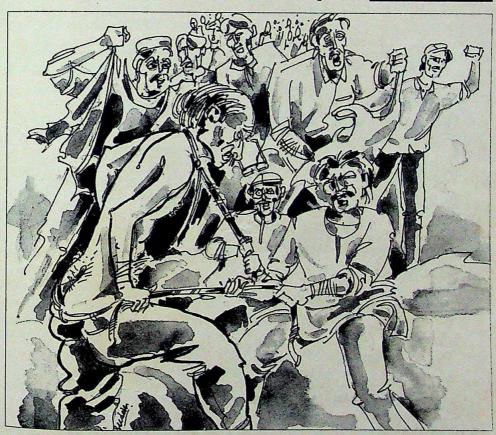
''लेकिन भारत में इतने गांव पड़े हैं, फिर खेड़ा गांव में ही क्या रखा है? मैं वहां नहीं जाऊंगा," मैंने

''नहीं?''

"हरगिज नहीं."

कहने की देर थी कि उन लोगों ने मुझे घेर

उन्हीं निर्दय हाथों ने देखते-देखते मुझे नंगा कर दिया और सडक के किनारे एक पत्थर पर बिठाकर आगे चल पड़े. उन्हें किसी दूसरे आदमी की तलाश थी



वनने के लिनाम ऊचा हुआ है. समस्याओं अर प्रसन्नता होती है गांव देखने की तो हुआ प नकर मेरे मार हिंकि उन लोगों ने वैकार्यक्रम तैयार कर कर मेरे दर्ग और वताया कि हैं, उनमें की अनुसार कल वत गांव दिखाया नहीं हो पा दरवाजे न गह देशों-विंही अवचेतन में जैसे र दिए जाते

ह यह सभ्यता ही

कारण संसार में

दं आयोजनो निहै उंची संस्कृति का मुझे देने वागी किसी ने बताया भी नहीं बता दे गांवों का देश है, मरेंग की वृनियाद है

रदे-कानून

निर्माण,

कस देश

अतीत उभर आया <sup>हा गांव...यह</sup> नाम और मा ही सब बाते विमन वेचैनी महसूस <sup>भा</sup> लगा कि खेड़ा वने लगा, अना जरूरी नहीं है. नमंत्रण स्वीर विवोगों से पूछा, "तुम यह निर्णा हने दिया <sup>य गांव</sup> क्यों दिसाना किसी दूसरे गांव ा जाता औ हुने लगा.

नोगों ने मेरी बात

हो उठत

जो इस<sup>डी</sup>

ो आंखों में

शरीर का व

पिक्त हो है

ती है यह

त समारोही

अतर न दिया. सुवह हुई और खेड़ा गांव भी तैयारियां होने लगीं. मैंने फिर से वही भा और कहा, "मुझे खेड़ा गांव नहीं जाना भाग गांव दिसाओं तो चलूं."

को भाने, बोले, 'इस देश के सभी गांव ऐसे भाव देख लिया तो समझो हिंदुस्तान के ती है भी निवा तो समझो हिंदुस्तान के नरह हो कि पांच होता है। इसलिए किसी दूसरे गांव जाना

कार्यक्रम को रह कर दो. त समार्थिक विषया, "उस कार्यक्रम को रह कर दो. को मैं भूव को देखने का कार्यक्रम बनाया जा लिया. उनमें से कुछ मेरे ऊपर झपट पड़े. वे मेरी हत्या भी कर सकते थे. लेकिन ऐसा न कर उन्होंने फूर्ती से मेरे कपड़े उतार लिए. उन्हीं निर्दय हाथों ने देखते-देखते मुझे नंगा कर दिया और सडक के किनारे एक पत्थर पर विठाकर आगे चल पड़े. अब उन्हें किसी दूसरे आदमी की तलाश थी. मैं जानता हं, उन्हें ऐसे आदमी की तलाश है जो उनके कार्यक्रम के अनुसार खेड़ा गांव जा सकता हो...और खेड़ा गांव में भारत के सभी गांवों की तरक्की व खुणहाली देख सकता हो.

विज्ञान-तकनीक

Digitized by Arya इवातेबाह्म राजिकारां है Chennal यात हो समस्याओं के प्रति अधिक परिप्र

कोयले की

विज्ञान-तकनीक

संपादकः रघुनाथ

मिश्र, वीरेंद्र सिंह

कीमत 200 ह.

क्ल पृष्ठ: 600

राष्ट्रीय ग्रंथ रचना

गवेषणा

केंद्र, रांची

अच्छा प्रारभ

अपने आप में महत्वपूर्ण मानक ग्रंथ

वेषणा का तात्पर्य आम तौर पर विषणा का पार में से लेकिन

काथल का

साथ समय गवेषणा शब्द का अर्थ मात्र खोज तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि व्यापक होता गया. कोयले को गवेषणा का अर्थ भी सामान्यतया कोयले की खोज ही माना जाता रहा और कुछ

दशक पूर्व तक यही अर्थ था भी. तब निजी कोयला कंपनियों का आधिपत्य था और वे कोयला भंडारों का गलत-सही दोहन

कोयला उद्योग के राष्ट्रीयकरण के बाद इन सब में काफी बदलाव आया. देश के औद्योगिक विकास के लिए निर्वाध रूप से अपेक्षित मात्रा में कोयले की आपूर्ति को ध्यान में रखकर कोयले की गवेषणा का अर्थ भी व्यापक हो गया. कोयले की लगातार बढ़ती हुई मांग को देखते हुए आवश्यक यांत्रिकीकरण के लिए तथा अपेक्षित सूरक्षित खनन नीति के अनुसरण के लिए वैज्ञानिक आधार पर विश्वसनीय तकनीकी आंकड़ों का संकलन वर्तमान कोयला गवेषणा का महत्वपूर्ण अंग है.

आम तौर पर यह भ्रांति फैलाई जाती है कि हिंदी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों पर ग्रंथ लिखे ही नहीं जा सकते हैं. यह ग्रंथ 'कोयले की गवेषणा' इन तमाम भ्रांतियों की निरर्थकता को तो सिद्ध करता ही है, साथ ही इस विषय में पूर्णतया मौलिक ग्रंथ होने के कारण महत्वपूर्ण मानक ग्रंथ बन गया है. अंग्रेजी में भी ऐसा कोई मानक ग्रंथ नहीं है.

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसका प्रकाशन कोल इंडिया लि. और उसकी सहयोगी कंपनियों द्वारा स्थापित सीएमपीडीआई, रांची के राष्ट्रीय ग्रंथ रचना केंद्र ने किया है. यह अपने आपमें एक महत्वपूर्ण शुरुआत है.

इस ग्रंथ में 160 चित्रों और 84 तालिकाओं के माध्यम से 14 अध्यायों में प्रामाणिक जानकारी दी गई है. इन अध्यायों को कोयला उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत विशेषज्ञों एवं वैज्ञानिकों

निक्षेप, क्षेत्र-गवेषणा, वेधन, संरचनात्मक गुणात्मक अध्ययन, अध्ययन, परिमाणात्मक अध्ययन, वर्णनात्मक भू-अध्ययन, भू-तकनीकी गवेषणा, भूवैज्ञानिक पूर्वेक्षण, जल भौतिकीय अध्ययन, पर्यावरणीय अध्ययन, खदानों के आयोजन और अभिकल्पन के लिए विणिष्ट भूवैज्ञानिक अध्ययन, कंप्यूटर के

प्रयोग और भूवैज्ञानिक प्रलेखन नामक अध्यायों में विषय से संबंधित सामग्री प्रस्तृत की गई है. ग्रंथ के अंत मे अंग्रेजी-हिंदी तथा हिंदी-अंग्रेजी शब्द मुची भी दी गई है.

यह ग्रंथ कोयला

क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों तथा गोध छात्रों के लिए उपयोगी संदर्भ ग्रंथ है. वास्तव में यह मात्र सैद्धांतिक नहीं बल्कि व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित वैज्ञानिक लेखों का संकलन है. भूमिका कोल इंडिया अध्यक्ष मा.प. नारायण ने लिखी है. ---देवेन

कहानी संग्रह

डोगरा परिवेश की कथाएं

"गरी कविता 'राजें दियां मंडियां' 5 | से लेकर हिंदी कथा रचना तक

सचदेव साहित्य में एक लंबा सफर तय किया है. अभी तक छह संग्रह प्रकाणित करा चुकी लेखिका के ताजा संग्रह 'गोद भरी' में कुल 11 कहानियां हैं

प्रस्तुत संग्रह की विशेषता यह है कि

इसकी हर कहानी किसी महिला पात्र के गिर्द घूमती है. पद्मा ने नारी संबंधी विषयों को पहली बार नहीं छुआ है. उनकी डोगरी कविताओं में भी नारी के मनोभाव, चिताएं और आकांक्षाएं अभिव्यक्त होती रही हैं. वैसे, 35 वर्ष के साहित्यिक सफर के दौरान उनकी लेखनी प्रेम-प्यार की दहलीजें लांघकर जीवन में होती दिखी है.

लगभग सभी कहानियां डोगरा परिक से संबंधित हैं. खासकर 'मिलनी' विशनी मौसी, 'कानवाई' की गुलाबी की 'पेंशन' की लछमा बुआ के किरदारों। विवाह संस्था में जकड़ी डोगरा नाती है तीन आयाम दिखते हैं.

'मिलनी' उस महिला की कहानी है के दूसरी औरत के चक्कर में फंसे आप डॉक्टर पति को सामाजिक बंधनों चलते, चाहकर भी तलाक नहीं दे पाती अंततः वेटे के विवाह में पति को मिलकी करने देने के सिवा उसके पास कोई चार नहीं बचता. उधर, 'कानवाई' में गृहा पति को परमेश्वर मानने वाली गुलाबी नपुंसक पति द्वारा वंश चलाने के लिए पराये मर्द से शारीरिक संबंध बनाने के मजबूर किए जाने के बावजूद, तीननीन बेटों की शादियों के बाद भी दो जिदिएयाँ का बोझ उतार फेंकती है और अपे 'असली मर्द' के साथ चल देती है. प 'पेंशन' की लछमा बुआ सारी उम्र पति। नाम से ही मायके में काट देती है औ पति की मौत के बाद भी उसकी पेंशन है नहीं ठकरा पाती.

ये रूढिवादी डोगरा समाज में बत अंतर्द्रद के ही प्रतिबिंब हैं, जहां पुरान मान्यताओं के साथ-साथ नई मान्यताएं सिर उठाने लगी हैं. मगर जो उग्र तेग पद्मा के साहित्यिक जीवन के शुरुआली वर्षों में दिखते थे, इन कहानियों में जार झलक नजर नहीं आती.

शीर्षक कहानी 'गोद भरी', 'गोरे के जी' और 'शेरा करक्क' भी संवेदनाओं ह छूती हैं. पर 'पांव तले' में मनोवैज्ञानि गहराई का अभाव दिखा. वैसे, किताव

भूमिका लेखक क यह टिप्पणी कि पण

की भाषा 'कई स्थान पर काव्यात्मक जाती है और क भारतीय ज्ञानपीठ. कहीं भावुकता पुट अखरता भी.है कई बार सही ता कुल पृष्ठ: 12 + 120 है. डोगरी गब्दों भी उन्होंने भ

इस्तेमाल किया है जो अधिकांशतः सह मालूम होता है पर कहीं हिंदी पा<sup>ठक</sup> अखर भी सकता है.

बहरहाल, डोगरी में लता मंगेशकी गाए 'निक्के फंगडू उच्वी उड़ार्ग गीतकार पद्मा की इन कहानियों से वा है कि वे सचमुच 'ऊंची उड़ान' भरते हैं। —ओम प्रकार <sup>हती</sup>



गोद भरी कहानी संग्रह पद्मा सचदेव नई दिल्ली-3 कीमतः 55 ह.

391

नये बीपीएल-सैन्यो के साथ मौजों की लहरों में लहराइये. 70 वाट की गहराई में गोते लगाइये. चाहें तो स्पीकर अलग कर लीजिये. 5 बैंड ग्राफिक इक्वेलाइज़र कम-ज्यादा कर लीजिये. या चाहें तो एफ एम सहित 4 बैंड रेडियो का आनंद लीजिये. पर हाथ से यह सपननैया मत जाने दीजिये.

बी पी एत्न सैन्यों की मधुर तरंग.





उड़ान है यों से तर्ग न' भरते तर म प्रकाश मा

वक परिषक्त

गरा परिवेह मिलनी' हो गुलाबी औ किरदारों है रा नारी है

कहानी है जो फंसे अपने

वंधनों है रहीं दे पाती

को मिलनी

म कोई चाग हैं में शुरू है

ाली गुलाबी गाने के लिए

ध बनाने को द, तीन-तीन दो जिदगियों

और अपर देती है. पा उम्र पति रे देती है औ

BPL-SANYO
Two-in-Ones

बरसों संग मधुर तरंग

### हुस्र और अक्ल भी

उस फिल्म के मुहूर्त का निमंत्रण देने वाले कार्ड पर यह तो लिखा नहीं था कि लड़िकयां क्या पहनकर आएं और क्या न पहनें. इसलिए कई बड़ी फिल्मों में हीरोइन का रोल कर रही नई नायिका दिव्या भारती ने वही पहना जो उन्हें अच्छा लगा. और वह नहीं जिसे पहनने की जरूरत नहीं लगी. इसमें कोई एतराज क्यों करे? पर एतराज हुआ उन दो हीरोइनों की ओर से जो दिव्या से पहले फिल्मों में आ गई थीं और जिन पर दो-एक फिल्मों में फ्लॉप होने का ठप्पा भी लग चुका है.

"जिन्हें अभी 'कपड़े' (एक खास वस्त्र का नाम लेकर कही गई थी यह बात) पहनने तक की तमीज नहीं है उन्हें हीरोइन लिया जा रहा है. हे राम, क्या होगा इस



दिव्या: ब्यूटी विद वेन

इंडस्ट्री का?" एक ने चिता प्रकट की.

"अभिनय से ज्यादा ध्यान 'कपड़े' पहनने और उतारने (यहां भी उस वस्त्र विशेष का ही नाम लिया गया) पर ही लगाना हो तो दूसरे कई धंधे हैं. फिल्म इंडस्ट्री में भीड़ क्यों बढ़ाते हैं लोग?" एक ही सांस में दोहरी बात कहकर दिव्या अगर उस जगह से आगे न बढ़ गई होतीं तो उस शुभ मुहूर्त में कुछ-न-कुछ अशुभ जरूर घट जाता. इसलिए मुनने-देखने वालों ने दिव्या की तारीफ की ब्यूटी विद ब्रेन!



#### प्रा'जी के प्यार का चक्कर

पार्टी में धर्मेंद्र आए और चले गए. पार्टी में जयप्रदा आई और चली गई. कोई ध्यान ते। बात नहीं है यह. जुहू के होटल सन एन सैंड से, जहां यह पार्टी हो रही थी, न धर्मेंद्र का घर हा न जयप्रवा का फिर भी वोनों जल्दी घर नहीं पहुंचे. दोनों के घर से किसी खास संदेश है पूछताछ करता फोन बारी-बारी से आया. धरम जी की तारीफें होने लगीं, "इसे कहते 🖥 पाठा. जया जैसी मॅच्योर से लेकर इम्मॅच्योर सोनम तक सब दीवानी हैं..."

सोनम शादी करने चली गई हैं और जयप्रदा धर्मेंद्र के साथ रोमांस का खंडन कर चुकीं। बावजूद धर्मेंद्र के साथ उनका नाम इस पार्टी में इन दो फोन कॉलों के बाद जिस तेजी से उड़ उसी ने दिल में शक पैदा कर दिया. प्रा'जी (धर्मेंद्र) के पूरे पंद्रह चमचे पार्टी में उनकी है इमेज पुल्ता करने की कोशिश में लगे हुए थे. यह स्क्रीनप्ले आजकल ऐसी हर पार्टी में गैए जाता है जहां प्रा'जी हो आते हैं. बदलता है सिर्फ हीरोइन का नाम!

#### बेटी को बनाया हथियार

मुंबई से पंचगनी कार से जाएं तो भी रास्ता 6-8 घंटे का तो है ही. इस सफर में सिर्फ दो लोग साथ जाएं-एक स्त्री और दूसरा पुरुष, एक हसीन और दूसरा जवान, एक प्रेमी और एक प्रेमिका तो भला क्या-क्या गुल नहीं खिल सकते? खबर है कि राजेश खन्ना के 'आशीर्वाद' में लौट आने की जिस संभावना को डिपल असंभव करार दे चुकी हैं, वह इस सुहाने सफर के बाद सच हो सकती है.

लेकिन यह सफर मुमकिन हुआ कैसे? बास तौर पर यह जानते हुए कि टीना मुनीम की णादी के बाद से राजेश के टूटे र्दिल को किसी मरहम की तलाश है?

जुहू पार्ले स्कीम में चल रही उस शूटिंग में, जहां डिपल काम कर रही थीं, राजेश कार लेकर पहुंचे और उन्हें बताया कि पंचगनी के बोर्डिंग स्कूल में पढ़ रही बच्ची

राजेश: मरहम के फेर में

की तबीयत अचानक बिगड़ गई है । जिकार की जाना जरूरी है.

ह्यं से कहां

पंचगनी में बच्ची अच्छी थी हैं कि आ रमा पर थोड़ी-सी खुजली जरूर उभर आ विके मीके पर लेकिन उसके इलाज के 'फेर' में राजें में मुप्ते अमे लों में काम मनचाहा मरहम भरपूर लग गया



ed banya Same Foundation Chennal अपि विकाल कर्मा की रसवर्षा

#### प्रतिद्वंद्विता

मां बनने के होटे-से अधिकार के लिए कितनी नडाई नडनी पडती है, यह जाहिर हुआ उस स्वायत समारोह में जिसमें दो-दो युवा माएं-रोहिणी हट्टबही और रीमा लागु फिर मां बनने के मौके जुटाने के लिए एक-दूसरे से कन्नी काटे जा रही थीं

के नामी निर्देशक बेटे की शादी का था, प्रोड्यूसरों की भीड़ काफी थी इधर जब से 'आमिकी' हिट हुई है. रीमा लाग् की मांग

ममारोह क्योंकि वडे प्रोड्यूसर

मा के रोल के लिए तेजी-से बढ़ी है. अब तक ऐसी मां के रूप में रोहिणी का एकछूत राज था जिस पर रीमा लागू ने हमला बोल दिया है. रीमा ने रोहिणी के 'पार्टी' वाले रोल का सविस्तार बयान किया और रोहिणी ने रीमा के उन नृत्यों की पूरी फेहरिस्त पेश कर दी जिसमें उन्होंने द्विअर्थी गानों पर द्विअर्थी अदाएं दिसाकर जाने क्या-क्या कोणिण की थी. पार्टी में अधेड प्रोड्यूसरों ने इन अधेड अभिनेत्रियों की जवानी के कई करतब बड़े रस लेकर सुने

रीमा लागू: कैसी-कैसी मुश्किल

#### । जाने कौन-सी रेंज

ध्यान देने।

द्रिका घर 🏻

स संदेश है

कहते हैं स

कर चुकी

तजी से उड़

उनकी ही

पार्टी में बोहा

ड़ गई है जिलार की रफ्तार जरा तेज हो तो एं से कहां पहुंच सकता है. इसका ही थी हैं कि स्मा विज के नए सीरियल की उभर आहे महि पर

र' में राजेंग अमेरिका और इंग्लैंड तक से नों में काम करने के ऑफर आ रहे है," उन्होंने चहककर बताया, "वहां लोग यह मानते ही नहीं कि 'हिमालय दर्शन' वाली मॉडर्न और हिम्मती जवान लड़को ही 'चन्नी' की देहाती औरत हो सकती है. एक्टिंग की इस रेंज की वजह से ही..."

इतना ही बताया या उन्होंने कि उन्हें गाँट के लिए बुलावा आ गया और पास बैठे उनके सह कलाकार को मौका मिल गया, "रेंज तो हमने भी बहुत दिखाई थी 'महाभारत' में और 'चन्नी' में भी हम ही थे

> इनके साथ लेकिन हमें तो नहीं आया विदेशों से एक भी ऑफर. इन्होंने जाने विदेशियों को अपनी कौन-सी रेंज विखा वी?"

छी-छी, बुरी बात है! टीवी के कलाकारों के मुंह से ऐसी दोहरे अर्थवाली बातें? क्या पता विदेशों में रमा को कार रेस कलाकार का रोल दिया जा रहा हो! आखिर रमा हिमालयन कार रैली में हिस्सा लेने वाली एकमात्र फिल्म-टीबी आर्टिस्ट हैं कि नहीं?

रमा विज: कैस-कैसे आंफर

वेकी थांफ जब से बच्चा किसाने समे हैं, वेलने-बाने को श्रीकीन उन साइड होरोइनों ने किनाराकशी कर ती है जो उनके निर्द मंडराया करती थीं. जैकी बेटे की जिस तरह गोद में लिए उसकी नुमाइश किया करते हैं, उससे उकताकर इन ग्लैमर गर्ल्स ने उन्हें नाम दिया है-'गए काम से.'

अब यह असर मुंबई के पास के उस छोटे से हिल स्टेशन के हवा-पानी का था या पानी में किसी 'मिलावट' का कि वर्षा उसगांवकर के साथ रोमांटिक सीन करते वक्त जैकी कुछ ज्यादा ही रोमांटिक होते चले गए और उन्हें होश ही नहीं रहा कि डायरेक्टर कब का 'कट' कह चुके और कैमरा कब से बंद पड़ा है.

हिंदी फिल्मों में आने से पहले मराठी के



जैकी और वर्षाः नए अंदाज

दो-चार नायकों को एक साथ संभाले रखने की ख्यातिप्राप्त वर्षा इससे जरा भी परेशान नहीं हुई. डिनर के बाद जैकी जब गपशप के बहाने उनके पास आ बैठे तो वर्षा ने फुहार शुक्र की उनके बेटे की चर्चा से और लगीं उस नन्हें की तारीफ के बड़े-बड़े पुल बाधने. वर्षा की इस रसवर्षा से पूरी तरह भीग, जैकी दादा इतने ठंडे हो गए कि अच्छे बच्चों की तरह सीधे अपने कमरे में जाकर बेटे के खयालों में खोकर सो गए.







पहचान देने का फैसला कर लिया. निर्देशक सिप्पी पहले ही एक शादी कर चुके हैं.

पिछले पखवाडे उन्होंने 'वीरांवाली' विधिवत ब्याह रचाया निर्देशक और अभिनेत्री की जोडी कितनी जमती है, समय ही बताएगा. सिप्पी के शब्दों में, 'देखें, दूसरा अनुभव कैसा रहता है." 'शोले' की तरह

#### रॉक नहीं राग

हिट बनाइए, जनाब!

 बीबीसी के लिए फीचर तैयार करने वाली प्रोड्यूसर कैरोलिन स्विनबर्न ने

नीलाः बदली धन

वुर्गाः अव्भुत मेल

#### चमकने की तैयारी

• वे किसी बडे फिल्मी सितारे की बेटी तो नहीं हैं लेकिन जाने-माने फिल्मी घराने से संबंध जरूर रखती हैं. वी.णांताराम की नातिन और प्रख्यात शास्त्रीय गायक पंडित जसराज की पुत्री होने के अलावा दुर्गा जसराज खद भी अच्छी गायिका हैं और अब बड़े परदे पर चमकने की तैयारी में हैं. फिल्म 'ब्लफ मास्टर' में वे कृष मलिक के साथ नायिका बनकर आ रही हैं तो फिलहाल एक अनाम

फिल्म में नीतीश भारद्वाज के साथ. फिल्मी पृष्ठभूमि के साथ प्रतिभा और सलोने चेहरे के मेल को देखते हुए उनकी सफलता संदिग्ध नहीं लगती.

#### एक और रिकॉर्ड

 मणहर फिल्म 'णोले' के निर्माता-निर्देशक रमेश सिप्पी और अभिनेत्री किरण जुनेजा में अच्छी-सासी जान-पहचान तो 'बुनियाद' के समय ही हो चुकी थी. मगर 'बृतियाद' के पटाक्षेप के चार वर्ष बाद अब दोनों ने अपने

रमेश और किरण



#### व्यक्तिगत भेंट

 ऑक्सफोर्ड यूनियन के सामने अपने विचारोत्तेजक भाषण के बाद पर्यावरणमंत्री मेनका गांधी को प्रिंस चार्ल्स ने चाय पर आमंत्रित किया. मेनका के अनुसार यह भेंट 'व्यक्तिगत' थी.

'महिलाएं और शास्त्रीय संगीत' विषय पर रेडियो कार्यक्रम के पिछले पखवाडे सरोदवादिका शरण रानी माथुर, ग्वालियर घराने की गायिका नीला भागवत, ठुमरी गायिका विद्या राव और तबलावादिका अनुराधा राव से सहयोग लिया. नीला भागवत कहती हैं, "विषर पर स्विनवर्न की पकड़ देखकर में तो हैरान ही रह गई."

#### भिक्षाटन की नई शैली

 भिखारी भी परिवर्तनों से अछुते नहीं

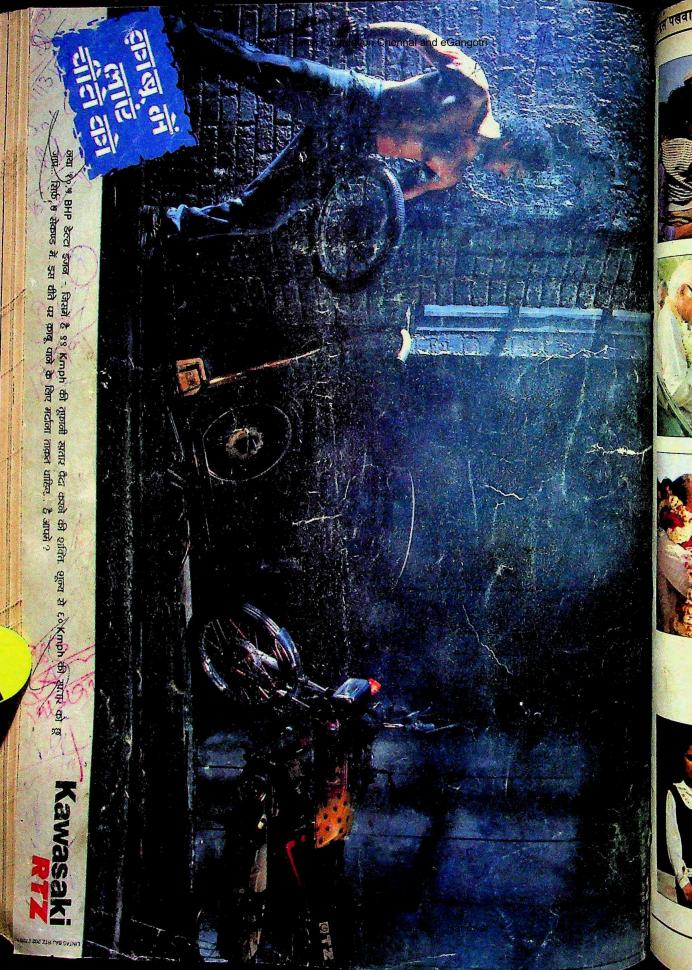


तान देः अलग तान

कलकत्ता की एक उपनगरीय से दूसरी में बेहिचक घूमते भिक्षाटन करने वाला तान एकतारा या करताल बजा भीख नहीं मांगता. उसके हार्यो जापानी कैसियो का एक ही बाजा होता है. खुशगवार अंदा में दे बताता है, ''मैं एक दिन कम-से-कम 75 रु. बना तेता है वैसे, दे की मंजिल ये दौड़त भागती ट्रेनें नहीं हैं. उसका तर है एक अच्छा ऑर्केस्ट्रा ग्रुप जो ज बेहतर जिंदगी दे. अगर वह अ उद्देश्य के प्रति समर्पित रही वह दिन दूर नहीं जब उसकी मी भी एक मिसाल होगा.

98 इंडिया दुंडे • 15 मार्च 1991





Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

#### 1991



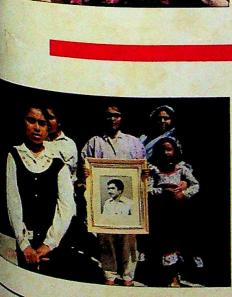




#### लोगों को लुभाने की कसरत

महज 16 मंहीने के भीतर ही भारत एक और आम चुनाव से मुकाबिल है. सभी मुख्य नेताओं ने अपने-अपने वोट वैंक को भुनाने के लिए चुनाव अभियान शुरू कर दिया है. और इसके साथ ही आशंकाएं यही हैं कि यह देश के इतिहास की सबसे ज्यादा रंजिश भरी चुनावी लडाई होगी. मंडल और मस्जिद, पिछड़े और अल्पसंख्यक, स्थायित्व और अराजकता तमाम तरह के मुद्दे उछाले गए हैं. इस 'चुनाव विशेष' में इन खास मुद्दों को समेटा गया है-चुनाव प्रचार के महारथी, चुनावी जोड़-घटाव, विश्लेषण, जनमत को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण मुद्दे और राज्यों के चुनावी माहौल का ब्यौरा.

आवरण कथा .....21



#### हारकर भी नहीं हारे

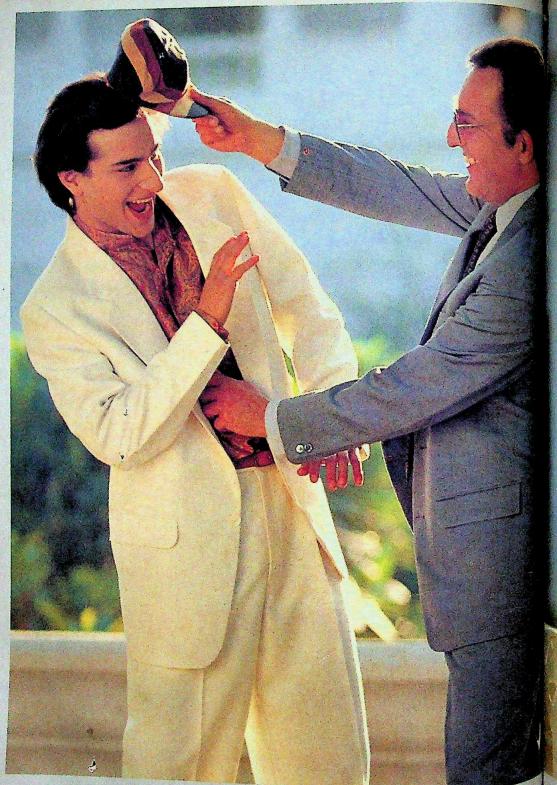
क्वैत में लोकतंत्र की मांग उसी तरह जोर पकड़ रही है जैसे वहां के जल रहे तेल कुओं की आग. वहां फंसे भारतीयों की त्रासदी तो और भी भयानक थी.

विशेष लेख......55

कसौटी10
तेवर12
राजरंग14
हिंदोस्तां हमारा16
आवरण कथा
मध्यावधि चुनावः
इम्तिहान में उतरने की तैयारी 21
चुनाव प्रचार के महारथी22
राज्यवार विश्लेषण38
चुनावी गणित48
चुनावी झलिकयां 52
विशेष लेख
कुवैत के भारतीय:
हारकर भी नहीं हारे55
आजकल
हरियाणाः जागीर पड़ी खतरे में 61
प्रधानमंत्री: अकेले ही बने सूरमा 62
अंतर्कथा 63
असमः आसार बुरे 64
बिहारः बेजा वजूद
दिल्ली: फिर धमाके65
व्यापार चक 67
विश्वविद्यालय परिक्रमा 69
विशेष लेख
भाजपा: लंबी जबान, ढीली कमान 74
स्वास्थ्यः
बस्तरः महामारी का अभिशाप 80
आरपार81
कहानी 84
कितावें 88
अंतरंग92
परदे के उस पार94

आवरणः अजीत नैनन और अतिल शर्मा

र्चाचत चेहरे...... 96



A RANGE OF EMOTIONS FROWA



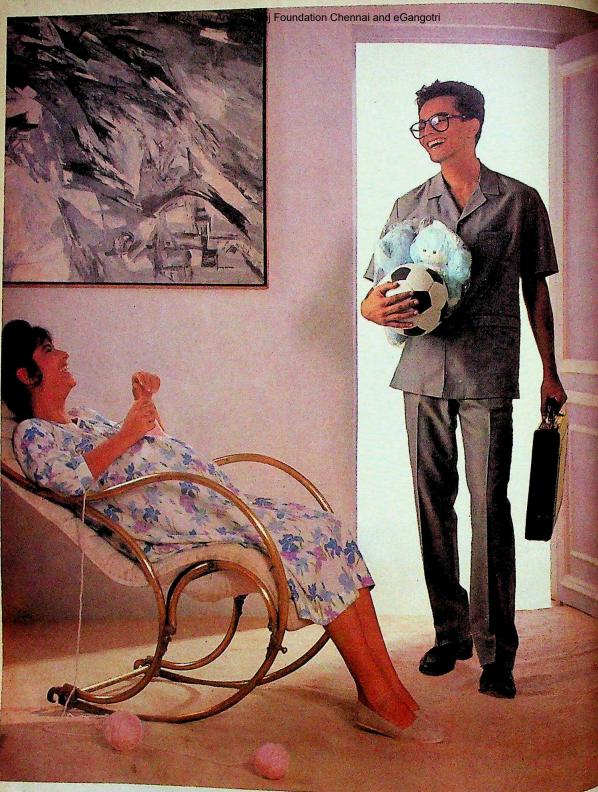
R

T

ROWALIOR

SUITING

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harida a



जिन्द्रगि को बिगएं सर ऑस्वों पर!

Rusult às la Collection, Haridwar



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मौक

वनता की रंगेसर ने ! आवधि चु स्तराताओं व ह वे लोकतं हो सबक सिर

ह जमीनी ल न्हाम का सम नकी 'अधज ग्रनसिकता व

ज्ञनी प्रतिष्ठ गह इराक स रो दांव पर ग सकेगा. मुगाव (बिहार

। यह तो गही के आर जनी हठधर्मि ग अमन औ हो वे अप जिनियत इस गतीन (बिहा

े युद्ध में व कित पर उन भेषों सैनिको में हत्या का क्ष्मा (विहार

। मुरक्षा । न कराने वाजत तो द हों लिखा ह नाग कर ध्यता का वि

गष्ट्रसंघ एक विका की भग (बिहार)

भ अमेरिका नाओं का म का का म का कराना क्या की सब का किया किया किया किया किया

न्त्रो

### मौका सबक सिखाने का

ज्ञता की अदालत में (आवरण कथा, 31 वं) हुड़ी चारों पार्टियों की चुनावी भारताओं पर रिपोर्ट जानकारी से पूर्ण थी. क्षेत्रहर ने प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देकर व्यविध बुनाव के लिए रास्ता साफ कर ह्यताओं को यह सुनहरा मौका थमाया है हिं तोकतंत्र से खिलवाड़ करने वाले नेताओं ग्रेमबक सिखा सकें.

संजय कुमार

#### हर मोर्चे पर हार

बमीनी लड़ाई शुरू होने के तुरंत बाद हाम का समर्पण (आवरण कथा, 15 मार्च) नर्की 'अधजल गगरी छलकत जाए' वाली श्निसकता का ही परिचायक है. सद्दाम ने इती प्रतिष्ठा बनाने और बचाने के लिए जिस गह इराक सहित दूसरे देशों की अर्थव्यवस्था गेरांव पर लगाया, उसे सहज नहीं भुलाया ग सकेगा.

स्याव (विहार)

अंजनी कुमार 'बबलु'

। यह तो जगजाहिर है कि सद्दाम अमेरीकी वहीं के आगे चारों खाने चित गिरे हैं लेकिन म्ली हर्ट्धामता से उन्होंने पूरी मानव जाति म अमन और चैन छीन लिया. अगर समय हो वे अपनी जिद छोड़ देते तो आज भानियत इस घोर तबाही से बच जाती.

विहार) मनोज कुमार 'मनुज'

 युद्ध में सद्दाम हुसैन हर मोर्चे पर हारे हैं. ति पर उनका कब्जा कायम न रह सका. वों सैनिकों सहित कितने ही निरीह लोगों <sup>में ह्या</sup> का कलंक उनके सिर लग गया. विनय मिश्र

मुखा परिषद के प्रस्ताव में कुवैत को कि कराने के लिए बल प्रयोग करने की माजत तो दी गई थी, लेकिन उसमें यह कहीं कि लिखा था कि उस प्राचीन सम्यता का का कर दिया जाए जहां से पश्चिमी भाताका विकास हुआ. यह विचारणीय है कि क्षित्र एक विश्व संस्था है, फिर वहां भिक्ति की दादागीरी क्यों चलने दी गई.

माधवेंद्र तिवारी

। अमेरिका के नेतृत्व वाली बहुराष्ट्रीय भारता क नतृत्व वाला अष्ठ प्रेम की मकसद कुवैत को इराकी कब्जे से ति कराना ही न था, बल्कि सद्दाम हुसैन जैसे भि को सवक भी सिखाना था और ऐसा कि किया भी इराक की अर्थव्यवस्था पूरी के वे बरबाद हो गई. Mit (# 21)

सुनील बापट



मध्यावधि चुनावों से जनता में इतनी हताशा नहीं फैलनी चाहिए. असल में यह एक नई राजनैतिक चेतना की शुरुआत है. वृंदावन (उ.प्र.) सुरेश चंद्र शर्मा

दो बार का अनुभव यही बताता है कि आजादी के 43 वर्ष बाद भी कांग्रेस का कोई मजबूत विकल्प नहीं तैयार हो पाया है. बुलंदशहर (उ.प्र.) श्रीकृष्ण शर्मा

वर्ष: 5, अंक 11, 1-15 अप्रैल 1991

संपादकीय कार्यालयः निविग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001 फोन. 3315801-4. टेलेक्स : 31-61245 INTO IN, तार ज्यानकार्याः उत्तरकारम् । स्वरं स् हाउब, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001 फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: मर्जुलेट, नई दिल्ली. ● मुख्य विज्ञापन कार्यालय: 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, मुंबई-400021. फोन: 2020152, 2020026 2029435, टेलेक्स : 11-5373 THOM IN, तार लिवभीडिया, मुंबई ● क्षेत्रीय विकायन कार्यासयः के-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली 110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार. लिबमीडिया, नई दिल्ली फागुन चैवर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन . 477188. टेलेक्स . 041-6177 INTO IN. तारः लियमीडिया. मद्रास ● 74/1 सेट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन. 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया,

बंगलूर • 12-मी, एवरेस्ट 46-मी, चौरंगी रोड, कलकता-700016. फोनः 225398. 221922, देनेक्सः 21-7138 INTO IN, तारः लिबद्दन-मीडिया, हलकत्ता. • कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विज्व भर में सर्वाधिकार मुरक्षित किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित इंडिया दुंडे अनिमंत्रित प्रकाणन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. • . लिविंग मीडिया इंडिया लि , एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा यांमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित

#### खतरनाक जिद

इराक की 'बेहिसाब बरबादी' (15 मार्च) यही बताती है कि एक तानाणाह की जिद देश को किस भयावह मुकाम की ओर ले जाती है. सहाम हुसैन की वजह से इराक 20 वर्ष पीछे चला गया है.

अकोला (महाराष्ट्र)

प्रकाशचंद्र रांदड

 सहाम की मोर्चे से नाटकीय वापसी का यह मतलब नहीं है कि वे डर गए या उनकी महत्वाकांक्षा खत्म हो गई. वजह यह थी कि वे युद्ध को 'इस्लाम बनाम ईसाइयत' का रंग देने में कामयाव नहीं हए.

कानपुर (उ.प्र.)

राहल निगम

 इराक में हुई बरबादी का ऐसा सचित्र, तथ्यपूर्ण और जीवंत वर्णन केवल इसी पत्रिका से अपेक्षित था. आप पाठकों की कसौटी पर हमेशा ही खरे उतरे हैं.

सिवनी (म.प्र.)

नितिन कुंडया

#### संवैधानिक बाध्यताएं

'विवादास्पद भूमिका का काला अध्याय' (15 मार्च) पढ़ा. लेखक शायद यह भूल गए कि संविधान की धारा 356 के अंतर्गत राज्य सरकार को भंग करना या अपदस्थ करना केवल केंद्रीय मंत्रिपरिंपद के निर्णय को कार्यान्वित करना ही होता है. यदि राष्ट्रपति इससे सहमत न हों तो मंत्रिमंडल को पूर्निवचार के लिए भेज सकते हैं. फैसले को कार्यान्वित करने से तब तक वे इनकार नहीं कर सकते जब तक त्यागपत्र न दे दें.

ग्वालियर (म.प्र.)

इंद्रमुखण वर्मा

 यह ठीक है कि राष्ट्रपति की संवैधानिक बाध्यताएं होती हैं. लेकिन इतना जरूर है कि जहां वे अपने विवेक का इस्तेमाल कर सकते थे वहां भी चूक गए. मसलन, बजट की जगह लेखानुदान पेश करने के लिए संसद की कार्यसूची में फेरबदल पर वे आपत्ति उठाकर हस्तक्षेप कर सकते थे. राजीव गांधी से गुप्त वार्ता से भी उन्हें परहेज करना चाहिए था.

चौमहला (राज.)

विनेश पारकर

 चूंकि राष्ट्रपति संविधान का सर्वोच्च प्रहरी होता है. अतः उसका व्यक्तित्व इतना विराट और चरित्र इतना गरिमामय होना चाहिए कि उसकी छाया में लोकतंत्र पर कोई आंच न आ सके. लेकिन वेंकटरामन जिस तरह की पक्षपातपूर्ण भूमिका अदा कर रहे थे, उससे पद की निष्पक्षता और गरिमा ही संदेहास्पद होती जा रही थी. साहबगंज (बिहार) अभिजित राय 'रिक'

की नई पेशकश



सी 91016 महाराजापुरम संथानम (गायन) संकरी समक्र ; राम नीनू नामिन्ना ; हिमगिरि तनैये/पदसनति मुनिजना : एहि अन्नपूर्णे ; शनमुखम भजः



ए 91008 हरिप्रसाद चौरसिया (बांस्री) राग ललित/राग भूपाली



राम नारायण (सारंगी) राग मारवा/मिश्र देस और मिश्र भैरवी



सी 91017 टी एन कृष्णन (वायलिन) महा गणपतिम; मारि वेरे; रघुवमसा सुधा/ सारसाक्षा ; पारुलना माता : रमणै तरुवय



सी 91015 एम बालमुरली कृष्णा (गायन) नीदैया रादा; वेगमय बृहदीस्वरा : ओंकारा : तिल्लाना



# MAESTF

हिन्दुस्तानी

बिस्मिल्लाह खान/

राग रागेश्वरी/राग क्रि

ए 9100

南柳八

ने बन्हरा और

क्खा और र

क्त ताल/जय त



ए 91005 गंगूबाई हंगल (गायन) राग बिहाग/राग बागेश्री



सी 91014 वी दुरैस्वामी आयंगा। वैंकटासैल विहार ; वितेवा घन रागमितका तानमः

पहली बार.... भारतीय संगीत के 17 चोटी के उस्तादों के स्वर में हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के खज़ाने में से उन्हीं की रूचि के रागों का बेहतरीन गुलदस्ता. हर संगीतकार की अपनी पहचान की महक वाले इन रागों और कृतियों का चुनाव उन्होंने स्वयं किया है. यही कारण है कि डिजिटल पद्धति से आपके लिए खास तौर से रिकार्ड किए गए ये कैसेट आपको अनूठी संगीत लहरियों में झुला कर मस्त कर देंगे.

उस्तादों की पसंद - आपके लिए संगीत का ऐसा खज़ाना जो भारतीय संगीत विरासत के मौजूदा प्रतिनिधियों की महारत का आइना है. चुनींदा दुकानों में उपलब्ध 17 कैसेटों का अनूठा सेट डाक या कूरियर सेवा के रास्ते आपके घर के दरवाज़े पर उपलब्ध



CC-0. In Public Domain. Gun I Kangri Collection, Haridwar

इंडिया टर्ड प्रस्तति



ए 91003 गिश्वरी/एम कि विशंकर (सितार) गम आसा मैरव संग्रहरा और मिश्र गारा धुन



ए 91004 भीमसेन जोशी*(गायन)* राग रामकली/राग शुद्ध कल्याण



ए 91002 मल्लिकार्जुन मंसूर *(गायन)* राग शुक्ल बिलावल/राग रईसा कान्हरा और राग आडंबरी केदार



ए 91006 किशोरी अमोनकर (गायन) गग अहीर भैरव/राग संपूर्ण मालकौस



ए 91007 पंडित जसराज (गायन) राग बैरागी भैरव/राग दरबारी कान्हरा



ए 91010 शिव कुमार शर्मा (मंतूर) राग भूपाल तोड़ी/राग कीखाणी

# DHOICE संगीत



ए 91013 क्षिन और जाकिर हुसैन (तबला) क तत/उप ताल और पश्तो



ए 91012 असद अली खान (रुद्र वीणा) राग आसावरी/राग मालकौस

सी 91017



ज़हीरुद्दीन और वसीफुद्दीन डागर (धुपद) राग लित/राग कामबोझी

48 E (ET HE)	
10万元 10万 4	कैसेट के आईर पर पैकिंग और
48 ह (कर सहित). 1 से 4 कि के हम में 10 ह. अतिरिक्त. श्री विताम शुक्क नहीं लगेगा.	5 या अधिक कैसेट के आईए
12	

्रें के अप के चैकां पर 10 रु. अधिक जोड़ें. के का का, मदास और दिल्ली से भेजे गए चैक/ड्राफ्ट का एम

का शो जिसी है. ति को रे के बाद हितीवरी के लिए कम से कम 3-4 सप्ताह तक

आयंगा।

#### मेल-आर्डर फार्म

		गरा आडर पान
कोड सं.	कैसेटों की संख्या	हाँ, मैं 'म्यूज़िक दुडे' के कैसेट 48 रु. प्रति कैसेट की दर से खरीदना चाहता/चाहती हूँ, (कृपया 1 से 4 कैसेट तक के आर्डर पर पैकिंग और वितरण शुल्क के लिए
ए 91001		हूं. (कृषया ) ते ये कतट तक के आंडर पर पाकर आर वितरण शुल्क के लिए 10 रु. अतिरिक्त भेजें), मुझे ये कैसेट
ए 91002		10 b. Sillical 14). 38 4 wac
ए 1003		अपने लिए 🗆 उपहार देने के लिए 🗅
ए 91004		चाहिए, विवरण नीचे है.
ए 91005		
ए 91006		इसके लिए 'म्यूजिक दुडे' के नाम पर रु का क्रांस किया हुआ चेक/
ए 91007		डिमांड ड्राफ्ट संलग्न है (दिल्ली से बाहर वाले चैक पर 10 रु. अतिरिक्त जोड़ें)
ए 91008		कुल देय राशि रु.
ए 91009		
ए 91010		मेरा नाम
ए 91011		पता
ए 91012		
ए 91013		पिनफोन
सी 91014		उपहार पाने वाले का नाम
	ain Gurukul Ka	ngri Collection, Haridwar
THE OFFICE	an <del>n our unul m</del> a	ing and one other, Harrawar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

 विपक्षी पार्टियों द्वारा राष्ट्रपति के अभिभाषण का बर्हिष्कार एक गलत परंपरा की गुरुआत है जो भविष्य में हर छोटे-मोटे विवाद की आड लेकर दोहराया जाता रहेगा.

जाहिद अब्बास टीड़ी उदयपुर (राज.)

 राष्ट्रपति के विवादास्पद फैसलों का आपने सही चित्रण किया है. आज राष्ट्रपति ही नहीं, पूरा भारतीय लोकतंत्र हास्यास्पद बनकर रह गया है. राष्ट्रपति ही क्या राज्यपाल, मंत्रीगण, सांसद, विधायक सभी का बचकाना व्यवहार हमें शर्मिदा करता है.

पंचकुला (हरियाणा)

मुकेश शर्मा 'मेघ'

#### हए शर्मसार

'ये कौन-सा मुकाम है' (15 मार्च) पढ़ा. 'मूजरा' न केवल शहरी धनिकों की ऐयाशी का साधन है, बल्कि गांवों-कस्बों में लगने वाले मेलों में 'डांस पार्टी' के नाम पर ये मुजरे आकर्षण के केंद्र रहते हैं. हिंदी फिल्मी गीतों की तर्ज पर जो 'मूजरे' होते हैं उन्हें देखकर सिर शर्म से झुक जाता है

सेंधवा (म.प्र.)

अविनाश वावीकर

#### आरक्षण नहीं, सुव्यवस्था

आखिर विश्वनाथ प्रताप सिंह किससे 'फिर जूझने की तैयारी' (15 मार्च) कर रहे हैं. छात्रों से? या फिर भारत से? जिसे वे मात्र वोटों की खातिर जाति के आधार पर खंडित करना चाहते हैं. आज देश को, समाज को आरक्षण की जगह सृव्यवस्था की जरूरत है. विकास कमार जैन

 दरअसल पिछड़ों, हरिजनों और अल्पसंख्यकों के लिए पार्टी पदों में साठ फीसदी आरक्षण की घोषणा वी.पी. सिंह की परंपरागत शैली की खतरनाक चाल है. पिछली बार पिछड़ों को नौकरियों में 27 फीसदी आरक्षण की घोषणा से कई जानें गई थीं. अब साठ फीसदी आरक्षण के जरिए वे अपने को 'देवदूत' के रूप में स्थापित करना चाहते हैं. पलामू (बिहार)

#### यह कैसा तर्क

'नजर-नजर के फेर' (कसौटी, 15 मार्च) में आपने अमेरिकी विमानों को पेट्रोल देने के फैसले को भारत-अमेरिका संबंध सुधार से जोड़ा जबिक यह सरकार की कथनी-करनी के अंतर को दर्शाता है. एक तरफ घरेलू उड़ानों में कटौती का फैसला किया गया तो दूसरी तरफ अमेरिकी विमानों को ईंधन देने का.

महिदपुर (म.प्र.)

राजा बाबू पोखरना

परशुराम तिवारी

 पद्म विभूषण से सम्मानित मकबूल फिदा हसैन का महिलाओं के प्रति रवैया सर्वविदित है. अपने जन्मदिन की पार्टी पर 'मूजरा' करवा कर उन्होंने सिद्ध कर दिया कि राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सम्मान व्यक्ति के नैतिक चरित्र को ऊपर नहीं उठा सकते.

संजीव चौधरी जबलपुर (म.प्र.)



 यह जानकर हैरत हुई कि मकबूल फिदा हसैन जैसा व्यक्ति भी मुजरे की चकाचौंध से बच नहीं पाया. कहां वे नंगे पैर रहते हैं (इस दर्शन में वे अपने आपको गरीबों से जुड़ा समझते हैं) और कहां अपने जन्म दिन पर कूल्हे मटकाऊ मुजरा करा रहे हैं. उनके जन्म दिन पर लिया गया यह चित्र उनके व्यक्तित्व से उलट है. एक सुसंस्कृत व्यक्ति से समाज ऐसी अपेक्षा नहीं करता. भग्तपुर (राज.)

#### हरेक की यही चाह

'देर से ही सही, चेते तो' (15 मार्च) न आशाएं जगा गया. हर भारतीय यही चाहता है कि उसका वही पुराना पंजाब लौट आए जिस राजनीतिकों की गलतियों ने दहकती भट्टी का दिया है.

भोपाल (म.प्र.)

नितिन प्रतीह

#### भाजपा में कांग्रेसी संस्कृति

'कायदा कानून अपने हाथ में' (15 मार्च) यही दर्शाता है कि भाजपा में काग्रेसी संस्कृति के लोग प्रवेश कर गए हैं जिन्हें पार्टी के सिद्धांतों से कोई मतलब नहीं है. इन लोगों को पटवा का समर्थन हासिल होता रहेगा क्योंकि वे भी निजी हितों के लिए सरकारी साधनों का इस्तेमाल कर रहे हैं. देवघर (बिहार) मंदलात

#### दो पाटन के बीच

'वादे हैं, वादों का क्या' (15 मार्च) पढ़कर लगा कि उत्तर प्रदेश और बिहार जिन दो पारो के बीच पिस रहा है, उनमें एक सांप्रदायिक दंगों का है और दूसरा नेताओं के कभी न पूरे होने वाले वादों का.

पुणे (महाराष्ट्र)

रविशंकर

#### तुम-सा कोई नहीं

'मौन संयम, मुखर सौम्यता' (15 मार्च) <sup>हे</sup> अपनी अलग पहचान बनाने वाली नूतन का अवसान हिंदी फिल्म जगत के लिए अपूरणीय क्षति है संगीत और अभिनय के क्षेत्र में अपनी धाक जमाने वाली नृतन वास्तव में हिंदी सिन युग एक सफल अभिनेत्री थीं. सुनील बराते बुरहानपुर (म.प्र.)

 जब रूप, रंग, प्रतिभा, सादगी और संयम् का संगम होता है तब नूतन जैसी अभिनेत्री क जन्म होता है. नई-नई अभिनेत्रियां आती-जाती रहेंगी लेकिन नूतन-सा जादू शायद ही कीर जगा सके. नीति अप्रहोगी इंदौर (म.प्र.)

#### ऐसे चित्र न छापें

यौन सम्मेलन से संबंधित 'वर्जनाएं तोड़ी की कोशिश' (28 फरवरी) पढ़ा लेकिन जि 'इंडिया टुडे' को परिवार के सभी सदस्य की चाव से पढ़ा करते थे, इस लेख के साथ क्र अण्लील चित्र के चलते उसे छिपाकर रह है। पड़ा. ऐसे लेख और चित्र न छापें पुष्पा प्रसाद हरूल

जमालपुर (बिहार)

अंजु सिंह

जब बात पुर्ज़े बदलने की आए, तो वही अपनाएं जो जाने-माने निर्माता काम में लाएं.



# अनब्रेको हाई-टेन्साईल ऑटोमोबाइल नट और बोल्ट

घटिया नट और बोल्ट अपनाकर आप थोड़े बहुत पैसे ज़रूर बचा लेते हैं, लेकिन अपने वाहन की उम्र भी कम कर लेते हैं. इसीलिए तो भारत के अग्रणी वाहन निर्माता अपने इंजन स्टड, ब्रेक बोल्ट, व्हील बोल्ट और नट आदि के लिए खास तौर पर पसंद करते हैं — अनब्रेको नट और बोल्ट. तो अबकी बार जब आप अपने वाहन की मरम्मत करें तो अपनाएं वही नाम, जो मूल निर्माताओं के लिए भरोसे की पहचान. अनब्रेको. फिट हों बेहतर. फिट हों कसकर.

Undra KO

मार्च) नई ो चाहता है आए जिसे तो भट्टी बना

नितिन प्रतीह

कृति

(15 मार्च) सी संस्कृति हैं पार्टी के न लोगों को ा क्योंकि वे साधनों का

मंदलात

ार्च) पढ़कर जन दो पाटो सांप्रदायिक कभी न पूरे

रविशंकर

5 मार्च) है ो नूतन का ए अपूरणीय त्र में अपनी हिंदी सिने

सुनील बराते

और संयम् मिनेत्री का आती-जाती दहीं कोई

ति अप्रहोत्री

नाएं तोड़ने

निकन जिस

सदस्य बरं साथ वर्षे र रख देवी

प्रसाव हकार

वृहिंद्या संटर, 17, कूपरेज रोड, बम्बई -400 039. 2025163. टेलेक्स: 011-4974.





Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# पहल अपने हाथ रखनी होगी

ध्यावधि चुनाव के पहले चरण म ध्यावाध चुनान र से हुई की गुरुआत जिस रंग-ढंग से हुई है, चुनाव अभियान के आगे बढ़ने से उसके विकराल सामाजिक तनाव का रूप धर लेने की संभावना दिखती है. भाजपा ने कहा है कि चाहे जो हो जाए वह अगले अक्तूबर में अयोध्या के विवादास्पद स्थल पर ही मंदिर बनाने का आंदोलन और तेज करेगी. यानी उसका चुनाव अभियान राम के ही सहारे चलेगा. मगर उसके साथ थोडी रोटी भी मिला दी जाएगी.

दूसरी ओर वी.पी. सिंह की फौज पर मंडल का नया भूत चढ़ रहा है. राजनैतिक जमीन में जातिवादी तत्व इतने गहरे समा गए हैं, खास तौर से बिहार और उत्तर प्रदेश में, कि हर उम्मीदवार अपने-अपने इलाके में जातियों को एकजुट कर रहा है, उनमें जातिवाद उभार रहा है. मंदिर और मंडल से बचकर निकलने की कोशिश कर रहे कांग्रेसी वोट बटोरने के लिए इनके मुकाबले अधिक तार्किक, लोगों के मन में उतरने लायक नारे दे पाने में खुद को असमर्थ पा रहे हैं. उनकी ओर से मरियल-सी आवाज में 'स्थायित्व' का नारा भर उठ रहा है.

पर राजनैतिक नेताओं के प्रभामंडल और इनके फैलाए



भावनात्मक उभार के घेरे से बाहर निकल आया हर समझदार आदमो मानता है कि चुनाव के जरिए अपना च्नने वाली परिपक्त लोकतांत्रिक व्यवस्था में जाति और धर्म को मुद्दा नहीं बनाना चाहिए और ऐसा करना लोगों की असली जरूरता पर परदा डालने की तिकड़म भर है और यह स्थायित्व क्या बला है? अपने आप में यह निरर्थक है. इसके साथ ठोस, मूल्य आधारित सामाजिक और आर्थिक उपलब्धियां न हों तो इसका कोई मतलब नहीं. संसद में सिर्फ भारी

बहमत मिलने से स्थायित्व तो आता है लेकिन इससे शासक क्र हो जाते हैं और वे अपनी जिम्मेदारियों को धता बता देते हैं.

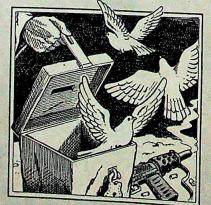
ऐसे में इस चुनाव के रूप में लोगों को सिर्फ नेताओं को दंडित या प्रस्कृत करने का मौका ही नहीं बल्कि नेताओं को चुनावी मुद्दे तय करने से रोकने का हक भी मिला है. लोगों को हर उपलब्ध मंच या मौके का इस्तेमाल करके यह बात कहनी होगी कि उन्हें समाज-तोड़क अपीलें नहीं अपित् विवेकसम्मत बातें पसंद हैं. उन्हें नेताओं को उल्लू सीधा करके चलते बनने का मौका नहीं देना चाहिए वल्कि उन्हें मुद्दों और उनके समाधानों पर ही बात करने के लिए मजबूर कर देना चाहिए.

# लोगों को उनका हक दीजिए

विधानसभा चुनने के लिए मतदान 'जाव के लोगों को अपनी नई करने के अधिकार से साढ़े तीन वर्षों तक वंचित रखा गया है. बार-बार इसके लिए यही सफाई दी जाती है कि उग्रवादी बंदूक के जोर पर वोट डालवा लेंगे और फिर अलगाववादियों की सरकार खालिस्तान की घोषणा कर देगी. लेकिन वास्तविकता इतनी सीधी-सपाट नहीं है. उग्रवादियों और आम लोगों की इच्छा एक ही नहीं है. हो सकता है कि चुनाव उग्रवादियों को दरिकनार कर राजनैतिक प्रक्रिया का

पूर्नानधीरण करने का सबसे कारगर हथियार साबित हो. राजीव गांधी को अपने शासनकाल के आखिरी दिनों में इस बात का एहसास हुआ था और उन्होंने चुनाव कराने का वादा किया था. वी.पी. सिंह ने विधानसभा चुनाव कराने का वादा किया और चंद्रशेखर ने भी. लेकिन ये वादे उतनी ही तेजी से हवा हो गए जितनी तत्परता से किए गए थे. और पूरा राज्य किसी राजनैतिक दिशा के अभाव में विभिन्न हिंसक गिरोहों और सरकारी भ्रष्टाचार का बंधक बना रहा.

दरअसल, पिछली घटनाएँ बताती हैं कि राजनैतिक समाधान ढूढना उतना जोलिम भरा काम नहीं है. जितना दिखता है.



पिछले लोकसभा चुनाव में इंका का उम्मीदवार गुरदासपुर से जीता था ता इंद्रकुमार गुजराल लुधियाना से इन दोनों क्षेत्रों को उग्रवादियों का प्रभाव क्षेत्र माना जाता है. दूसरे इलाकों स बहुजन समाज पार्टी के गैर-सिंह उम्मीदवारों ने भी अच्छे वोट पाए सिख छात्र संगठन और उग्रवादी समूहा ने, जिन्होंने 1984 में चुनाव की वहिष्कार किया था, भी पहली बार चुनाव में हिस्सा लिया. और सबस महत्वपूर्ण बात यह है कि नौ लोकसभा सदस्यों ने जिनमें बिमल खालसा और

घोटर पाई, 182

गान, रोनकी मुख

ीं: वै० धर्मेन

का बाल महार

मोक्ट होचया

एवा स्ट्रीट मोट

केरर द्धिय

केन देखा गोपिय केन केपीन बास केने गेड

अतिदरपाल सिंह भी शामिल हैं, न तो चुनाव के समय और व बाद में खालिस्तान का मसला उठाया.

आज सेना के 'ऑपरेशन रक्षक' की सफलता के कारण राज्य के सीमावर्ती जिलों के नागरिकों में सुरक्षा का भाव आया है और हिंसा में कमी हुई है जिससे स्कूल और दूसरे सरकारी संस्थानों में कामकाज शुरू हो पाया है. अब पंजाब में 'चुनाबी जुआ' सेलने का सही समय आ गया है. अधिकांश लोग शांव चाहते हैं, खालिस्तान नहीं निष्पक्ष चुनाव लोगों को अपनी क्षेत्रीय आकाक्षाएं प्रकट करने का लोकतांत्रिक अधिकार देते हैं और अलगाववाद यह अधिकार नहीं देने से ही मजबूत होता है

10 ीतया दुई • 15 अर्थन, 1991

स्मोई में आपका साशी



युज्ञाह्यद्धि (R)
प्रेशार कुकर व प्रेशर पन

# अधिकृत विक्रेता

#### ग्जरात

से बाहर र आदमी रिए अपना परिपक्त गाति और गहिए और गि जरूरतों म भर है है? अपने सके साथ जिक और तो इसका सिर्फ भारी गासक कूर दिते हैं को दंडित हो चुनाबी ों को हर हनी होगी म्मत बार्ते वनने का समाधानों

इंका का ता था तो से. इन ना प्रभाव

लाकों से गैर-सिंख

ोट पाए

दी समूही

गाव का

ली बार

र सबसे

नोकसभा

सा और

और न

ण राज्य

आया है

सरकारी

'चुनावी

ग गांति

अपनी

र देते हैं

होता है

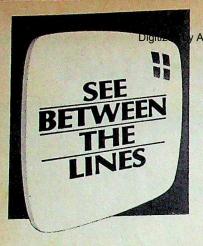
वाताबाद: मै० फैन्सी नावल्टी स्टोर्स, 1811/2, थी गेट, वत कार्रिर मो० हसेन, 1812, थी रोट, ● मे० अकबर क्त पारं, 1822, थी गेट, 🗆 बड़ौदाः पै० मोती लाल किलात, एम०जी० रोड, • मै० श्रीजी मेटल क, हेनकी मुहाने पोल, बजवाड़ा, 🔲 बल्सर: मै० खाम बनम राम एण्ड कंं, राम जी स्ट्रीट, • से० भेषतं (10. ए०एस० मैमन. मोटा ताइवाड, णि: १० धर्मेन्द्रा वासन भंडार, एम जी रोड, ● मैठ ए ह रहा पंचार, वोरा बाजार, महालक्ष्मी मंदिर के सामने, के महाबीर भेटल का०, पुराने बस स्टोप के पास, भारी: भे पृषांत्र मटल का०, पुरान बन स्टान कोर्ड भे पृषांत्रती स्टेनलेस स्टील मार्ट, 12 मत्या भें पुणाबना स्टन्तस स्टाल भारत, भेंडर, राध्या तालाव, • में० दीपक वासन भंडार, रता हो? मोटा योजार, • मे० दीपक वासन भंडार, व केंद्रर जी व केटर देशया नालाव, ● मे० नातन यासन भंडार, विकास केटर देशया नालाव, ● मे० शकित वासन भंडार, पृथ्या तालाव, ● म० सावत वासः पृथ्या तेलाव, □ नडीआडः मै० चारभुजा वासन विश्वास वाबार, प्रमुख्तः के अरीहंत स्टील के, छेत बोबार मैन रोड, • मैं o ठक्कर सबसी, 5/569 िना होपूरा, • में ० ठाकर वास जीवा राम एण्ड भारति स्वापता, • मैठ ठाकर वास जावा राज्य वित्ते सेन्टर, वित्ते के कार्याता स्टील सेन्टर, व्यवस्थातः पातः, ● मै० संगाता रक्ताः कृष्ण गीपंग सेन्टर, कालापीठ, ● मै० कनसारा को भीड भीव राम भोदी, रेशम वाली बिल्डिंग, बरानपुरी

□ अलवर: मै० जुनेजा बदर्स, ! वीर जीक, होप मर्कम, ● मै० भारत बर्तन भंडार, वाजाजा बाजार, □ अजमेर: मै० गोर्वधन लाईट हाजस, मटर गेट, □ चित्ती इगढ़: मै० आप की वृकान, भीरा मार्किट, कालीकोठरी जोवारा, ● मै० सुरेश स्टील एम्पोरियम, 26 नेहरू बाजार, ● मै० चारभुजा बर्तन भंडार, 6 नेहरू मार्किट, □ जयपुर: मै० महावीर जनरल स्टोर्स, 215 तरीपोलिया बाजार, ● मै० जैन स्टील सेन्टर, 141 तरीपोलिया बाजार, ● मै० जगदीश जनरल स्टोर्स, तरीपोलिया बाजार, □ जोधपुर: मै० सुपर स्टील सेंटर, तरीपोलिया बाजार, □ जोधपुर: मै० सुपर स्टील सेंटर, तरीपोलिया बाजार, □ जोधपुर: मै० सुपर स्टील सेंटर, तरीपोलिया सोड, ● मै० एवन प्रेडर्स, सोजाती गेट के अन्दर, □ कोटा: मै० गोस्वामी बदर्स, शारतेन्द्र भवन, लादपुरा, ● मै० नारावण जनरल स्टोर्स, रामपुरा बाजार, □ जवयपुर: मै० कंसारा लारा चन्द्र शंकर लाल, दिल्ली बाजार, □ जवयपुर: मै० कंसारा लारा चन्द्र शंकर लाल, दिल्ली बाजार, □ जवयपुर: मै० कंसारा लारा चन्द्र शंकर लाल, दिल्ली बाजार, □ जवयपुर: मै० लाल चन्द्र छुगान लाल चौधरी, घंटा घर, ● मै० राजेश मैटल्स, गली भंगवाली, सुरुज पोल, जदयपुर

#### हरियाणा

□ अम्बाला सिटीः मै० तीवान चन्द मनोहर लाल, कोतवाली बाजार, ● मै० सचवेवा सर्तन भंडार, पटेल रोड, ● मै० संजीव ध्यर हाउस, केसरा बाजार, □ बस्लबगढ़ः मै० जीवल मेटल

हाउस, मेन बाजार, चण्डीगढ़: मै० अग्रवाल डिस्ट्रीब्टर्स, शो रूम नं० 30. मेक्टर-26, मध्या मार्ग, • 🔲 फरीदाबाद: मै॰ मोहन स्टोर्स, मेन बाजार, • मै॰ न्यू लाईट हाउस, माकिंट नं । एनआईटी, • मै॰ कृष्ण लाल संजीय कुमार, दुकान नं 116, मार्किट नं० 1, एनआईटी, 🗌 हाँसी: मै॰ प्रशोत्तम लाल एण्ड सन्स, सदर बाजार, 🗌 जाखल मण्डी: मै० शिव दत्त राय कमल चन्द, अनाज मंडी, 🗌 हिसारः मै० क्रोकरी पैलेस, मोती बाजार, 🗌 जगाधरी: मै० सेठी मेटल स्टोर्स, रेलवे रोड. 🔲 जींदः मै० केदार नाथ पंवन कुमार, मेन बाजार, 🔲 कालका: मै० रत्ला राम द्वारका वास, चादनी चौक, • मै० बेनी प्रसाद परदमन कमार, बस स्टैण्ड, गांधी चौक, 🗆 कैथल: मैं सरस्वती वर्तन भण्डार, नरवारिया बिन्डिंग, • मैं राम प्रकाश रामेश कुमार, तलाई बाजार 🗌 कुरुक्षेत्र: मै० सरस्वती बर्तन भण्डार, मोती चौक, धानेसर, • मै० कुमार बर्तन स्टोरज्, कृष्णा गेट, 🔲 पानीपतः मै० मोहन सिंह धारी मल, मेन बाजार, • मै० जैन बर्तन भण्डार, मेन बाजार, • मै० जिया लाल जैन वास, हलवाई हाटा, मेन बाजार, 🗌 रोहतकः मै० श्याम लाल आवेश कुमार जैन, रेलवे रोड़ 🗌 रिवाड़ी: मै० शमा बर्तन भण्डार, किला रोड, • बलदेव सहाय हेमराज सैनी, गोकल बाजार.



Even after you've heard about it all and read about it all - see it all on India's first newsmagazine on video cassette - NEWSTRACK Press the play button and you're on the ringside seat to people, places, events, issues incisively covered like on no other medium ever before.

#### ➤ ONLY ON NEWSTRACK <</p>

#### SPECIAL OFFERS

#### SINGLE CASSETTE

- Current Issue Rs. 145/- for a single cassette.
- Back Issues Rs. 135/- each.

#### SUBSCRIPTION

- Annual Rs. 1380/- and a free INDIA TODAY ADDRESS BOOK.
- \* This offer is valid up to August 31, 1991. Address Books will be delivered at your given address within 4-6 weeks of receipt of order.

Mail a DD/Cheque favouring Living Media India Limited to P.O. Box No.29, New Delhi - 110 001.

Cheques/Demand Drafts payable at Deihi, Bornbay, Calcutta and Madras must be MICR only.

For more details contact Delhi: 3320689. Bombay: 2027867. Madras: 479163. Calcutta: 445398. Bangalore: 210834.

Home delivered by courier or Registered Post

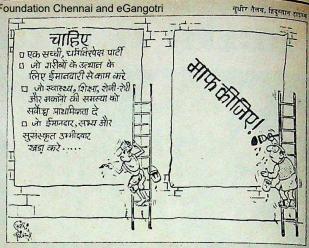
**India Today Presents** 



The newsmagazine to watch

MILESTONES/IT/236

Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



- मेरी राय यह है कि मैंने किसी भी अन्य प्रधानमंत्री से अच्छा काम किया है चंद्रशेखर, नई दिल्ली में संवाददाताओं से
- अगर दो कांस्टेबल राजीव पर नजर रख रहे थे तो वो हमारे पास आते, हम नजर उतार देते. अटल बिहारी वाजपेयी, टाइम्स ऑफ इंडिंग
- आपको वस इतना ही करना है कि चंद्रशेखर की जगह आडवाणी को कि दीजिए, भाजपा राम जन्मभूमि का मुद्दा फिर कभी नहीं उठाएगी.

देवीलाल, द टेलीगाड

0

d co aff

NH

अधि

- अगर देवीलाल अविवाहित ही रहते तो उनकी आज यह दुर्दशा नहीं हुई होती इस जीव को (मुझे) तो कहीं-न-कहीं जन्म लेना ही था, अच्छा होता किसी और ध में जन्म होता. ■ प्रताप सिंह (देवीलाल के बेटे), नवभारत टाइम
- चुनाव होते ही सभी हवाई अड्डों को सील कर देना चाहिए ताकि देवीलाल का परिवार देश से भाग न सके आंनंद सिंह डांगी, पंजाब केंग्रें
- दहेज दूल्हा ले जाता है यह तो सबने सुना होगा. पर इस मामले में परंपरा उन्हें गई है और दहेज इटली जा रहा है. मुरली मनोहर जोशी, हिं
- मैं 53 वर्षों से सार्वजनिक जीवन में हूं. राजीव गांधी और उनकी महिला मिंग (जयलिता) का सार्वजनिक जीवन दस बरस का भी नहीं है, और वे मु<sup>ब</sup> राष्ट्रद्रोही कहते हैं. एम. करुणानिधि, जनमती
- लड़ाई तिजोरी के हिस्सों की नहीं तिजोरी के गुच्छों की है.
  - विश्वनाथ प्रताप सिंह, पटना की <sup>रेती के</sup>
- मैं नारी सौंदर्य का प्रशंसक हूं जबिक भैरों सिंह शेखावत नारी पूजक हैं. प्रशंसक केवल प्रशंसा करता है जबिक पूजक कभी-कभी उसे छू भी लेता है.

पं. रामिकशन, राजस्थान जनता दल के विधान

- मैं तो अपने परिवार को दिल्ली घुमाने भी नहीं ला सका.
  - भाजपा सांसद राजेंद्र अग्निहीत्री (नौवीं लोकसभा के जल्द ही भंग हो जाने पर) इंडियन एक्सप्रेन
- विदेशी संगीत में शोर और प्रदूषण वढ़ गया है.

नौशाद, दैनिक हिंक्न्य

 मेरे पास जो कुछ भी है सब दिखा दिया, अब मैं अंग प्रदर्शन बंद कर दूंगी. शिल्पा शिरोडकर, भी टाइँ

# कैपिटलणेन पर, कार्ड कर मिले घर

NHB (एनएचबी) 9% कैपिटल बॉण्ड्स

- कैपिटल गेन सौ प्रतिशत कर मुक्त
- 9% व्याज का सालाना अग्रिम भुगतान.
- बेघरों को घर दिलाने में सहायक इस बात का संतोष.

प्रमुख आवास वित्तिय संस्थान होने के नाते हमारा फ़र्ज़ है अधिक से अधिक लोगों को मकान उपलब्ध कराना. एक ऐसा मकान जिसे वे अपना कह सकें. इस काम के लिए हमें अधिक-से-अधिक धन इकट्ठा करना है.

इसलिए आप अपनी दीर्घकालीन संपत्ति - जमीन, मकान, शेयर, सेक्योरिटिज, आभूषण आदि— की बिक्री से प्राप्त पूंजी को एनएचबी 9% कैपिटल बॉण्ड्स में लगाइए और पाइए, करमूक्ति के साथ-साथ कई और आकर्षक लाभ- एक ऐसा अवसर जो देश की आवास समस्या को सुलझाने में भी मदद क्रें.

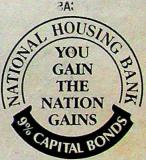
- लगायी गयी पूंजी पर आपको सालाना 9% ब्याज मिलता है, जिसे आप अर्घवार्षिक आधार पर प्राप्त कर सकते हैं.
- या, अगर आप चाहें तो बॉण्ड्स खरीदने की तारीख से तीन महीने बाद, 9% सालाना की दर से पूरे तीन साल का अग्रिम व्याज, कमीशन काटकर प्रति 1000 रु. की पंजी पर 240 ह. के हिसाब से प्राप्त कर सकते हैं. इसमें बीच के 3 महीने

का भी ब्याज शामिल है- इस प्रकार आपको एक दिन के भी ब्याज का नुकसान नहीं होता.

- आयकर अधिनियम 54E 1961 के तहत कैपिटल गेन कर
- ब्याज उपार्जन के स्रोतों पर कोई कर कटौती नहीं.
- धारा (1) (xvie) के तहत 5 लाख रु. तक की छूट, जिसमें संपत्ति कर 5(1A) के तहत अन्य 6 इलिजिबल एसेट्स भी शामिल हैं.
- आयकर अधिनियम 80L के तहत ब्याज कर मुक्त.
- पैसा भेजने का खर्चा एनएचबी उठाएगा.
- 150 से भी अधिक केंद्रों पर सालों भर सममूल्य पर उपलब्ध. नीचे लिखे पते पर आवेदन पत्र उपलब्ध हैं और यहीं पर स्वीकार भी किए जाते हैं. राष्ट्रीय आवास बैंक (बंबई तथा दिल्ली)

• कैनफ़िना कार्यालय • इश्यू संबंधी इन 9 बैंकों की 142

शाखाएं 51 केन्द्रों पर इलाहाबाद बैंक, आंध बैंक. बैंक ऑफ बडौदा, कनारा बैंक, सिटी बैंक (साखर भवन बंबई), फेयरग्रोथ फाइनांशियल सर्विसेज, इंडियन बैंक, पंजाब नेशनल बैंक, स्टेट बैंक ऑफ मैसूर, दि वैश्य बैंक लिमिटेड.



इश्यू प्रबंधकः कैनबैंक फाइनांशियल सर्विसेज लिमिटेड.



(भारतीय रिज़र्व बैंक के पूर्ण स्वामीत्व में) निजी आवास का सुनहरा विश्वास

तीसरा माला, बंबई लाइफ बिल्डिंग, 45 वीर निरमन रोड, बंबई 400 023 फोनः 222702, 224347 छठा माला, हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, 18-20, कस्तुर्बा गांधी मार्ग, नई दिल्ली 110 001. फोनः 3712016, 3712036.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

न किया है वाददाताओं से

स आते, हम म ऑफ इंडिया गी को विक्ष

न, द टेलीग्राड

हीं हुई होती सी और धर भारत टाइम

वीलाल का

पंजाब केमरी रंपरा उलट र जोशी, हिं

महिला भित्र र वे मुन र्वाध, जनमता

ग की रैती वे हैं. प्रशंसक

के विधाय

जाने पर

यन एक्सप्रेन दैनिक हिन्द

र डूंगी. र, भी शहर

#### पलायनवादी नेता

 आखिरकार वह घड़ी आ पहुंची जब विद्वेष, कटुता और एक दूसरे पर लांछनों की बजाए सौहार्द और सद्भावना का वातावरण वन गया. मौका था



नौंबी लोकसभा भंग होने से कुछ घंटे पहले, 500 सांसदों का अपनी पार्टी प्रतिबद्धताएं और प्रतिद्वंद्विता भूल फोटो खिचाने के लिए इकट्टे

देवीलाल अपने गंवई चुटकुलों से लोगों का मनोरंजन करते रहे. ज्यादा मजा तब आया जब उन्होंने सूझाव दिया कि सांसदों को पण्चाताप के लिए अपने कान पकडने चाहिए. कुछ सांसद राजीव गांधी और चंद्रशेखर के ज्यादा से ज्यादा करीव बैठने के लिए एक दूसरे को ठेलते रहे.

जिस व्यक्ति की गैर-मौजूदगी अखर रही थी, वे थे नौंबी लोकसभा के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति--पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह. अनुपस्थिति की वजह उनकी अस्वस्थता बताई गई. हालांकि उनका कहना था कि वे स्वस्थ होते तब भी इस फीटो सेशन का वहिष्कार करते क्योंकि इस लोकसभा को जनादेश हासिल नहीं. असल में 7 नवंबर को सदन में विश्वास मत प्राप्त करने मे असफल रहने के बाद उन्होंने एक ही मौके--तमिलनाडु में राष्ट्रपति शासन लागू करने पर-बहुस में भाग लिया. एक इंका सांसद ने उनकी अनुपस्थित का खुलासा इस तरह किया. 'यह तो उनकी

गैली के अनुरूप ही है कि जब स्थिति का सामना न कर पाएं तो पलायन कर जाएं."

#### आंच से दूर

 जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री के रूप में फारूक अब्दुल्ला ने मोटर साइकिल पर सैर करते, सिंगापुर में रिक्शा चलाते एक लापरवाह घुमक्कड व्यक्ति की स्याति अजित की थी. लेकिन वहां राष्ट्रपति णासन लागू होने के बाद उन्होंने श्रीनगर और घुमंतूपन दोनों को ही अलविदा कह दिया.

अब फारूक लौट हैं.पिछले दिनों वे तीन महत्वपूर्ण विवाह समारोहों में शरीक हए. ये थे - 'डंपी' अहमद, अनिल अवानी की और सुप्रिया पवार की शादी. अब ज्यादातर वे अपनी नई मारुति-1000 में नजर आते हैं, जिसे राजीव शैली में तुफानी स्पीड से चलाते चलते हैं, फिर एकदम ब्रेक लगाकर चीत्कार के रोक देते हैं. सुरक्षा के लिए साथ चलती कार का ड्राइवर बमुश्किल



ही पीछे से उनकी कार को टक्कर मारने से रोक पाता है.

#### पसंदीदा लोग

प्रधानमंत्री अपने • सभी इर्दगिर्द अपनी पसंद के उन अधिकारियों को ही देखना चाहते हैं जिनसे उनका निकट संपर्क होता है. मामला प्रधानमंत्री



कार्यालय का हो तो पसंदगी कुछ और सीमित हो जाती है. वेचारे चंद्रशेखर भी अपवाद नहीं हैं.

हाल ही में मेक्सिको में रोनेन सेन की नियुक्ति से प्रधानमंत्री कार्यालय में उनका संयुक्त सचिव का पद रिक्त हो गया. इसके लिए चंद्रशेखर की पहली पसंद थे एक बिहारी अधिकारी ग्याम शरण. लेकिन मेरिट नियमों के तहत दूसरे वरिष्ठ अधिकारियों के नामों पर भी विचार करना आवश्यक था. इसलिए न्यूयॉर्क में नियुक्त पी. मेनन और तोक्यों में कार्यरत के.पी.एस. मेनन के नाम भी विचारार्थ ले लिए गएं. उम्मीद थी कि विदेश के आकर्पण के नाते ये लोग प्रधानमंत्री कार्यालय में नियुक्ति को अस्वीकार कर देंगे. लेकिन दोनों ने इसके लिए हामी भर दी. अब सरन का नाम सूची में तींसरे नंबर पर है. प्रधानमंत्री कार्यालय या तो अब अपनी पन की नियुक्ति करे या दोवात अ सूची तैयार करे,

#### बदनाम तो हुए

 भारत को एक मामते। अंतरराष्ट्रीय तौर पर शर्मिदगी उठानी पड़ रही उसकी आजकल साउथ लो स्थित विदेश मंत्रालय में जोतें हैं। चर्चा दहै. ओटावा समेन आप अंतरराष्ट्रीय नागरिक संगठन के महासचिव पद विष-पत्र अतिरिक्त कार्यकाल के लि भारत ने एस.एस. सिंह ह नामांकन कर दिया था.

अगले कु

वह आपव

राजीव गांधी की सरकार व सफल देश के पूर्व नागरिक उड़्यन सिंग सिद्ध का 1988 में इस पद के लि सी-बाद वि मनोनयन किया था. नई हिले की ओर से की गई जबरत लॉबीइंग के चलते वे सिर्फ मिकारी देग वोट के अंतर से इस पद पर ग अयाओं क लिए गए. ा, प्रदूषित

पिछले साल सीबीआई के भी आदि. एचडीडब्ल्यू पनड्बी



एअरवस के संदेहास्पद मौदी सिलसिले में दाखिल एफआईआ में उन्हें सह-षड्यंत्रकारी बता हालांकि ये मामले अभी विचाराधीन हैं लेकिन चंद्रशेवा जाते-जाते सिद्धू की इस पर लिए फिर से नामांकन कर वि पर सिद्ध हार गए. वहां उत प्रतिद्वंद्वियों का कहना था कि वे अपने ही देश में संदेहासद तो इस पद के लिए कैसे उप्र हो सकते हैं.

#### ... और एक चुटकी

(सुनी-सुनाई)

महम उपचुनाव में अपनाए गए हथकंडों को जायज ठहराने के लिए जनता दल (स) के एक कार्यकर्ता की दलील, "बूथ लूटना ही सही लोकतंत्र है क्योंकि इससे विरोधी चुनाव में धांधली नहीं कर पाते."

# र भर के धूल-मैल से मुक्ति की सबसे स्विधाजनक युक्ति समझाने,दिखाने आया है यूरेका फोर्ब्स से आपका ये दोस्त.

त्य में जोते हैं अगते कुछ दिनों के बीच यूरेका फोर्ब्स का क्षेत्र आपके दरवाजे पर आएँगा और अपना गचिव पर हे तिया-पत्र दिखाएगा.

मब अपनी पन

या दोवारा क

तो हुए

एक मामले र पर पड़ रही साउथ लो

टावा गरिक उद्दूब

था.

गई जवरदस

र एफआईआ

ने अभी

न चंद्रशेश

इस पद हन कर दिवा

वहां उत्ते वहा वहा व संदेहास्पद । केस उपशु

ह आत्मविश्वास जगाएगा — और क्यों न ाल के लि स. सिद्ध इ 減 उसका संबंध भारत में अपनी तरह के सबसे की सरकार है। सफल बिक्री-संगठन से जो है, साथ ही जो, ज्र उहुयन सिक् इस पद के कि स्थि-बाद विश्वसनीय सेवा भी देते हैं.

गः वर्ड विलं हर आपको आधुनिक घरेलू उत्पादनों की वे सिर्फ ए सकारी देगा, जो आजकल की कई स पद पर इ असाओं को सुलझा सकते हैं, जैसे कि सीबीआई । प्रदूषित पेयजल, प्रदूषण, नौकरों की ाडुळ्बी बी जी आदि

> क दो अनोखे उत्पादनों का प्रदर्शन **णः यूरोक्लीन—एक बहु-उपयोगी सफाई** प्रणाली जो सादे वैक्यम क्लीनर से कहीं आगे है.

> > और अक्वागाई-नल की लाइन में जोड़ा जानेवाला वाटर फिल्टर-कम-प्यूरिफायर.

यूरोक्लीन आपके घर से धूल और कचरा चुन-चुन के निकालता है-वह धूल जो आपकी नजरों में कभी न आई हो. फिर भी जरा सी परेशानी नहीं देता. अक्वांगार्ड स्विच खोलने के बाद नल चालू करते ही स्वच्छ-स्वास्थ्यकर पीने का पानी देता है, चाहे नल के पानी में पहले कितने ही जीवाणु (बैक्टीरिया)हों.

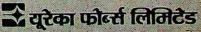
यूरेका फोर्ब्स का सेल्समेन आपको घर पर ही आकर बताएगा कि किस तरह इन उत्पादनों द्वारा आप अपने घर को स्वच्छ व स्वास्थ्यकर बना सकते हैं, और ये आधुनिक उपाय आपके परिवार के लिए कितने लाभकारी हैं.

हमारा सेल्समेन आपके घर आएगा यही सोच कर इंतज़ार करने की आवश्यकता नहीं है. उसे बुलाने के लिए इस पते पर लिखिए-पूरेका फोर्झ, पो.ऑ. बॉक्स 936, जी.पी.ओ. बम्बर्ड 400 001.





नल की लाइन में जोड़ा जानेवाला वाटर फिल्टर-कम-प्यरिफायर



स्वच्छ व स्वास्थ्यकर आधुनिक उपायों में अग्रसर.



8/EFL/188 R1 hn

#### भारी-भरकम सवारी

 यह किस्सा एक नाजुक मिजाज मारुति कार और उसे धम-धडाके के साथ चलाने वाले क्छ युवकों का है. युवा लोगों की यह टोली उज्जैन से इंदौर के लिए निकली और खाली सड़क देखकर उन्होंने अपनी मस्ती का जोश कार पर भी दिखाना शुरू कर दिया. लेकिन रास्ते में एक मोड पर अचानक ही एक हाथी आ गया. ड्राइवर के ब्रेक लगाते-लगाते भी कार ने हाथी को पीछे से टक्कर दे मारी. बेचारा हाथी अपना संतुलन कायम, नहीं रख सका और पीछे आ घुसी मारुति पर धम्म से बैठ गया.

कार इस बुरी तरह पिचक सभी काईनः अवतो



गई कि युवक अंदर ही फंसे रह गए वहां से गुजरने वाली बस के यात्रियों ने आकर उन्हें बाहर निकाला. पुलिस ने कार ड्राइवर, महावत और हाथी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है.

#### उलटी गंगा

इण्क हो जाने पर आदमी क्या-क्या नहीं कर बैठता? छिदवाड़ा जिले की एक महिला ने यह सावित कर दिखाया है.

पिछले दिनों जिले के जुन्नारदेव शहर में स्थानीय'



जी के बजाए पुलिस ने पूरी की. पुलिस को अजीव-सी शिकायत मिली है. अब तक तो इश्क-मुहब्बत से जुड़े मामलों में पुलिस को लड़कियों की ओर से ही शिकायतें मिला करती थीं. लेकिन इस बार का फरियादी एक पुरुष है जो एक महिला की ओर से धड़ाधड़ दागे जा रहे प्रेमपत्रों से परेशान हो चुका है. इस प्रेमिका ने यह भी धमकी दी है कि जब तक उसका यह प्रेमी उससे गादी नहीं कर लेता वह उसे इसी तरह प्रेमपत्र लिखती रहेगी. प्रेमपत्रों का पुलिदां नत्थी करते हुए इन सज्जन ने पुलिस से अनुरोध किया है कि उसे प्रेमपत्रों की इस गोलाबारी से निजात दिलाई जाए. फिलहाल हालत यह है कि इन पत्रों की

#### पुरोहित बनी पुलिस

■ आम तौर पर एक सामान्य हिंदुस्तानी पुरुष अपनी पूरी जिंदगी में सिर्फ एक ही बार घोड़ी पर चढ़ता है और कमर में तलवार लटकाता है. और यह भी उन्हीं किस्मत वालों को नसीब होता है जो दूल्हा बनते हैं. ऐसे में स्वामविक ही है कि मले दो-चार घंटे के लिए ही सही पर घोड़ी और तलवार का शौर्य दूल्हे के व्यक्तित्व में शामिल हो जाए. कुछ ऐसा ही जोश पिछले दिनों एक मोपाली दूल्हे ने प्रवर्शन किया और नतीजा यह है कि वह इन दिनों हवालात में बैठा है.

शुरुआत हुई बारात की आवभगत के साथ. खाना खिलाते समय वधू पक्ष के एक युवक के हाथ का बर्तन छलक गया और दूल्हे का भाई पानी से सराबोर हो गया. भला दूल्हे के पक्ष का ऐसा अपमान कोई कैसे सहन कर सकता था. लिहाजा तू-तू मैं-मैं शुरू हो गई. झगड़ा बढ़ता देख वधू के मामा ने बीचबचाव करने की कोशिश तो दूल्हे का भाई उन्हीं के साथ गुत्थम-गुत्था हो गया. अब बारी मामा के बेटों की थी. पिता का अपमान होते देख उन्होंने दूल्हे के भाई की अच्छी खासी मरम्मत कर डाली.

उधर, दूल्हे को लगा कि अपने खानदान की इज्जत आबरू के झंडे बुलंद रखने के लिए उसे ही अपना पुरुषार्थ दिखाना होगा. अपनी इस जिम्मेदारी को निमाने के लिए वह अपनी कटार समेत मैदान में कूद गया और देखते ही देखते उसकी कटार मामा समुर के पेट में घुस गई. अब मला ऐसे में शादी कहां होती. लिहाजा आगे की कार्रवाई पंडित जी के बजाए पुलिस ने पूरी की.

#### अनोखी सौगात

■ दर्जनों ऐसी समस्याएं हैं जिन्हें हल करवाने के लिए नागरिक संगठन और राजनेता आए दिन किसी न किसी तरह का आंदोलन छेड़े रहते हैं. कभी अपनी मांगें मनवाने के लिए घरने दिए जाते हैं तो कभी मरे हुए टेलीफोन की अर्थी शहर भर में घुमाई जाती है.

लेकिन हाल ही में बिहार के मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव को मज्ज्ञरों की भरमार के बारे में जो शिकायत प्राप्त हुई उसका अंदाज कुछ निराला था. उनकी डाक में तोहफे वाले एक फैकेट आया जिसे खोलने पर उसमें से पांच हजार मच्छर निकले. तोहफे के साथ मुख्यमंत्री को यह खबर भी दी गई थी कि उनके राज में

#### चेक का चक्कर

 राजधानी के लक्ष्मीबाई क्या में 30-35 साल की उम्र वाल एक ठग अक्सर किसी सरकार कालोनी में ऐसी जगह ज धमकता है जहां घर का काय निबटाने के बाद महिलाएं क् सेंक रही होती हैं. पहले से पत लगाए हुए व्यक्ति का नाम पत पूछकर बताता है कि उसके नाम आठ हजार रु. का चेक लाया है चेक का नाम सुनते ही उका व्यक्ति की पत्नी उसे घर ने जाती है जहां वह व्यक्ति उसे वताता है कि आज तो चेक जमा कराने की आखिरी तारीख है साथ ही यह सबर भी देता है कि चेक सिर्फ करेंट खाते में जमा



किया जा सकता है वेचापी महिला नया खाता खुलवाने के लिए उसे हजार-पंद्रह सौ ह भी दे बैठती है, मामला तब समझ में आता है जब शाम उसका पीत घर आने पर माथा पीटता है

पटना शहर में मच्छरों की आबादी इतनी बढ़ गई है कि लोगों का जीना हराम हो चुका है. यह भेजने बाते एनएसयूआई के नेताओं की आशा है कि शहर की सफाई के बारे में मुख्यमंत्री के कानों में मच्छर जरूर रेगेंगे.





Digitized by Arya Samai Foundation Chennal and eGangotri Phinte CC-0. In Public Domain. Garance



# पिकासी की सिमारी

आधुनिक 'क्यूबिज़म' कला का प्रतिरूप. पुनःकरण में

145

एक अलौकिक, स्वच्छंद

छलकता विश्वास. रेखाकृति

और रूप-आकार में

तन्मयता... एकाग्रता.

रेखांकन में मासूमी सीधापन.

नियोजित डिज़ाइन.

पिकासो की कला आप दूर से

ही पहचान सकते हैं.

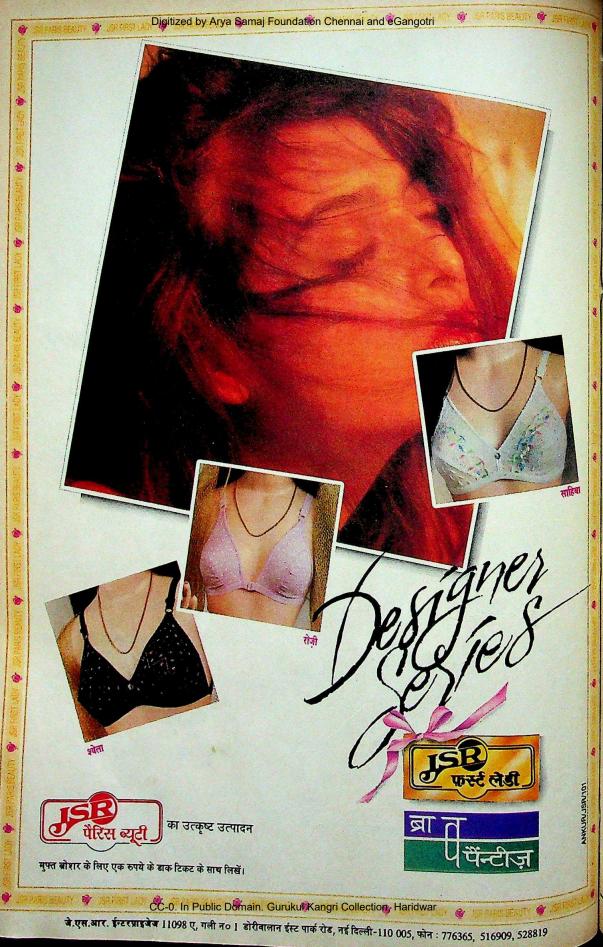
सिम्फ़नी. वर्तमान में, आने वाले कल का आभास. ऐसा उत्पाद जिसमें है सर्वोपिर उत्तमता की अनमोल पूँजी. आकार का आकर्षक संतुलन. भारत के घरों के लिए उत्तम.

रंग : खिलखिलाती हँसी की तरह प्रसन्नचित. मॉडल : कम गति अथवा तेज़ गति की शीतल हवा देने वाले. खिड़िकयों में लगाने योग्य. और एक अनूठा, शिक्तशाली 'फ्लोर' मॉडल भी. निरन्तर सेवा : पानी अपने-आप भरने की सुविधा द्वारा.

सिम्फ़नी : आज पिकासो होता तो यह भी खूब रंग जमाता.

पारत के सबसे अधिक बिकने वाले एअर कूलर ब के री ग्रूप की अनुपम भेंट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



पृहं चुन मही शु यह तो 1 वे विश्वनाथ तंते के साथ उम सम

पारियों के व हं बावजूद र हिदेश के 41 क ऐसी सं इह कर दी मप्ट बहुम त्तागण इस रमझ गए हिर से जना

होगा. इसी नेपी सिंह श्वमनकाल वसरवादी शजमाने व गवनैतिक त हे मगर मर

वेषवराते भं गेनहीं मान लाग में थे. तव वी.पी महल्या, अ गम थे और

मायित्व था आज देश गुलीकृत स ै-वी.पी.

<sup>बोह्बाणी</sup> वे ोजीव के दं भायित्व के रोने ही सर गे वनाते रहे

अव, जव शकी हैं, ये गेम्नविकता 京都

जिल्लाता संक ता संब को की सं के अधिक फ के की ए

पृहं चुनाव अभियान मार्च 1991 में नहीं शुरू हुआ.

यह तो 14 महीने पहले नवंबर 1989 वं विश्वनाथ प्रताप सिंह के गद्दीनशीन क्षे के साथ ही गुरू हो गया था.

उस समय वामपंथी और दक्षिणपंथी र्गायों के बाहरी समर्थन से सरकार बनने

वावजूद यह बिलकुल स्पष्ट था हिरंग के 40 करोड मतदाताओं ने क ऐसी संसद चुनने की परंपरा कर दी जिसमें किसी पार्टी को मप्ट बहमत नहीं प्राप्त हो. नागण इस तथ्य को अच्छी तरह गाप गए थे कि देर-सवेर उन्हें हिर में जनादेश हासिल करना ही इसी तैयारी में उन्होंने नेपी सिंह तथा चंद्रशेखर के का इस्तेमाल वसरवादी नारे गढ़ने और उन्हें ग्रामाने में किया. वे अपने गउनैतिक दांवपेंच तो आजमाते है मगर मतदाता के सामने जाने ष्वराते भी रहे. वे किसी मर्यादा गेनहीं मान रहे थे, सिर्फ मौके की लाग में थे.

<sup>तव</sup> वी.पी. सिंह के पास उनका हिल था, आडवाणी के पास उनके <sup>ोम ये</sup> और राजीव के पास उनका वायित्व था.

आज देश के चेहरे पर इन भिलीकृत समाधानों के बदनुमा दाग लगे नी.पी. सिंह के जाति युद्ध के, भारताणी के धार्मिक उन्माद के और विव के दोमुहेपन के, जिसके तहत वे जिल्लि के नारे भी लगाते रहे और के ही समर्थन वाली सरकार को पंगु

<sup>श्रव</sup>, अविक अग्निपरीक्षा में दो महीने के ये नेतागण अपने नारों को के निविकता का रंग देने की बाजीगरी में हे हुए हैं. इन्हें पता है कि भारतीय किरोता संकीर्ण, क्षेत्रीय और बांटने वाले को संदेह की नजर से देखता है. भितिए ये जानते हैं कि चुनाव में अधिक के अधिक फीयदा उठाना है तो नारे ऐसे कि हों। जिनका असर ज्यादा से ज्यादा

सो, नेतागण बाजीगरी के लिए अपनी झोलियां टटोल रहे हैं. वी.पी. सिंह अब 'सामाजिक असमानताओं' की बात करते हैं. जाति युद्ध का यह योद्धा अब स्थायित्व के महान पैरोकार की भूमिका अपना रहा है. उसने अपने तरकस में एक नया तीर शामिल कर लिया है-सच्चे संघवाद का. यह ऐसा मुद्दा है जो क्षेत्रीय पार्टियों और मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों दोनों को

र जनेताओं को पता है कि मतदाता बांटने वाले नारों को संदेह से देखता है

प्रभावित करता है. उन्होंने अगड़ी जातियों को भी खुश करने के लिए कह दिया है कि उनमें से गरीब लोगों को भी आरक्षण दिया जाएगा.

अपने को दूसरों से बीस साबित करने के इस खेल में राजीव ने भी महसूस किया है कि उनकी पार्टी सिर्फ स्थायित्व के नारे के भरोसे नहीं चल सकती. नतीजा यह कि उन्होंने सभी मुद्दों की खिचड़ी बनाई और उसे पेश कर दियाः "राम, रहीम, रोजी और रोटी." इसका मकसद हिंदुओं, मुसलमानों और बेरोजगारों को खुश करना था. राजीव ने खाड़ी शांति मिशन के नाम पर जो बेमतलब दौरा किया वह वी.पी. सिंह के मुसलमान वोटों को तोड़ने की कोशिश ही थी. और मुलायम सिंह यादव और चिमनभाई पटेल से चुनावी गठबंधन की उनकी कोशिश, जो स्थायित्व के नारे के एकदम उलट है, वी.पी. सिंह के

जातीय वोट बैंकों को ध्वस्त कर देने की रणनीति ही है.

ताज्जुब है कि भाजपा भी अकेले राम के भरोसे जीतने की उम्मीद करती नहीं दिख रही है. सो, अब राम के साथ रोटी और इंसाफ को भी जोड़ दिया गया है. यदि भाजपा बिहार और उत्तर प्रदेश में अपनी स्थिति मजबूत करना चाहती है तो उसे यह समझ लेना होगा कि पिछड़ी जाति का हिंदू पिछड़ी जाति का पहले है और हिंदू बाद में या हिंदू पहले है और पिछड़ी जाति का बाद में. भाजपा ने भारत को छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटकर उसे 100 छोटे राज्यों का संघ बनाने का समर्थन किया है. इसका मकसद उत्तर प्रदेश और दक्षिण बिहार के मतदाताओं को पटाना है जो अलहदा राज्यों के लिए आंदोलन कर रहे हैं. इसने नरमपंथी अटल बिहारी वाजपेयी को प्रधानमंत्री पद के लिए पेश कर

कट्टरपंथी रुख में भी परिवर्तन किया है. इस सारे मामले में चंद्रशेखर का रुख ज्यों का त्यों बना रहा है. वे नए गठबंधन की कोशिश कर सकते हैं-या यों कहिए कि किसी संगठित पार्टी की शरण में जा सकते हैं. उनका चुनाव अभियान वैसा ही गडुमडु है जैसा वे प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठने के पहले खुद थे. लेकिन उन्होंने दिखा दिया कि वे राष्ट्रीय मुद्दों से निबट सकते हैं.

यह चुनाव भारत का महान राजनैतिक सरकस है. रिगमास्टर, बैंडमास्टर, कलाकार, जोकर, जादूगर, तलवार निगलने वाले और पहलवान, सभी अपने-अपने करतब दिखाने निकल पड़े हैं. और ये सभी जानते हैं कि उन्हें ऐसे करतब दिखाने होंगे जिनसे हर तबका खुश हो जाए-तभी उन्हें तालियां मिलेंगी.

राजीव गांधी

## हाथ जोड़ना और शीश नवान

वरिष्ठ संवाददाता हरिंदर बवेजा ने राजीव गांधी के साथ गुजरात और ओड़ीसा के कस्बों, शहरों दौरा करने पर पाया कि उनका पहले वाला अक्खड़पन गायब हो चुका है



सी-90 बीचक्राफ्ट किंग एअर विमान जमीन पर उतरता है. वे अपना कुर्ता ठीक करते हैं, अपने बाल संवारते हैं और कॉकपिट से बाहर निकलते हैं. सिर्फ दो मिनट पहले वे हवाई

अड्डे के विमान नियंत्रण टॉवर से बात कर रहें थे और उड़नपट्टी पर पूरी कुशलता से विमान को उतार रहे थे. पायलट से नेता बने राजीव गांधी विमान की सीढियों से नीचे उतरते हैं. उन पर फूल बरसाने को आतूर भीड 'राजीव गांधी जिंदाबाद' के नारे लगा रही है.

इस समय रात के 8 बजे हैं. राजीव अभी-अभी भुज में उतरे हैं जहां वायू सेना के अधिकारियों ने उनके लिए चाय की मेज सजाई हुई है. वे इन अधिकारियों का मन भी रखना चाहते हैं और भीड़ को इंतजार भी नहीं करवाना चाहते. सो, जल्दी-जल्दी चाय गटकते हैं और अपने सुरक्षा अधिकारियों को एक खुली जीप तैयार रखने को कहते हैं. इस तरह की कोई जीप न पाने पर अधिकारी एक बंद जीप का तिरपाल ही हटा देते हैं. राजीव अगली सीट से टिककर खड़े हो जाते हैं और ड्राइवर को धीरे-धीरे चलने का निर्देश देते हैं. जीप

दोनों ओर भीड़ के बीच में से रास्ता बनाती चलती है. राजीव भीड़ की ओर कभी हाथ हिलाते हैं तो कभी दोनों हाथ जोडकर नमस्कार करते हैं.

लेकिन भीड़ आगे की तरफ नहीं उमड़ रही है. लोग उनसे हाथ मिलाने के लिए नहीं दौड़ रहे हैं. कहीं कोई गड़बड़ी जरूर है. राजीव का ध्यान पुलिस कर्मचारियों की ओर जाता है जो लोगों को उनकी तरफ बढ़ने से रोक रहे हैं. "गाड़ी रोको. पुलिस को हटाओ. मैंने सुरक्षा के लिए नहीं

कहा था,'' वे कहते हैं. ''वायरलेस से संदेश भेजो." वे अपने सुरक्षा अधिकारी को निर्देश

वे बमुश्किल 200 चलने के बाद जीप से क्दकर खड़े हो जाते हैं कि जब तक पुलिस नहीं हटेगी वे आगे नहीं बढेंगे. वे भीड़ में घुस जाते हैं और जैसे सब कुछ चरमरा जाता है. भीड के सैलाब में राजीव का सिर डुबता-उतराता दिखता है.

जीप फिर आगे बढ़ती है. और ड्राइवर एक बार फिर उसे सडक के किनारे खडे दूसरे समूह की ओर मोड देता है. राजीव का लहराता हुआ हाथ आश्चर्य से हवा में ही रुक जाता है क्योंकि लोग 'मूर्दाबाद, मुर्दाबाद' चिल्ला रहे हैं. गूजरात के कांग्रेसी नेता उन लोगों को 'भाजपा एजेंट' बताते हैं और राजीव को इनकी तरफ ध्यान न देने की सलाह देते हैं लेकिन पिछले आम चुनाव के उलट, जब उनकी कुछ सभाएं कम भीड़ के कारण रह कर देनी पड़ी थीं, वे उनकी तरफ बढ़ जाते हैं. वे जानना चाहते हैं कि मुर्दाबाद के नारे क्यों लग रहे हैं. वे ड्राइवर को रुकने का संकेत करते हैं और भीड़ से पूछते हैं कि समस्या क्या है. एक आदमी धिकयाते हुए आगे आता है और चिल्लाकर कहता है, "पुलिस ने पिछले दो घंटे से सभी सड़कों को बंद कर रखा है. मैं दिल का मरीज हूं और दो किमी पैदल चलकर आप हं. क्या वे आपके आने के सिर्फ 10 या 15 मिनट पहले रास्ते नहीं व कर सकते थे?"

उसके बाद का दृश्य चिकत कर है। वाला है. राजीव उस आदमी का हाथ पकर लेते हैं और माफी मांगते हैं क्या ये वही राजीव गांधी हैं जो महज 15 महीने पहते हेलीपैड पर उतरा करते थे, दौडकर मंत्र पर चढ जाते थे और जल्दी से भाषण देवा दूसरी सभा की ओर रवाना हो जाते थें क्या ये वही राजीव गांधी हैं जो अपने बुलेटप्रुफ जैकेट और अपने पास स बंदुकधारी सुरक्षा कर्मचारियों के बारे ज्यादा चितित रहते थे? क्या यह वही पर है जिसे लोगों ने अक्खड करार दे दिया गी राजीव कहते हैं, "मैंने अपनी गलतियों। सबक लिया है. मुझे लोगों से संपर्क बना रखना चाहिए था." उधर, वही भीड़ ग् 'जिंदाबाद' के नारे लगा रही है. भुव वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक की पत्नी जब माली पहनाने आती हैं तो वे रुक जाते हैं, लेकि बाद में चुटकी लेते हैं, "यह जानते हुए । मैंने उसकी माला स्वीकार की कि उसकी पित ही इन गड़बड़ियों की जड़ है."

हर जगह यही सब कुछ दोहराया जात है. हंसते, मुस्कराते हुए वे भीड़ की औ

हाथ हिलाते हैं, अपना नि माला पहनाने वालों के ति झुकाते हैं, लोगों से हैं। मिलाते हैं, बच्चों औ महिलाओं की ओर मात लोगों हैं, ऑटोग्राफ देते हैं, जो उर् जीप के साथ-साथ भी चल रहे हैं. सैकड़ों लड़ 'अंकल जी, ऑटोग्राफ' या 'राजीव व राजीव जी ऑटोग्राफ की हैं. कुछ दो रुपए का हस्ताक्षर के लिए बढ़ाते तो कुछ अपनी हथेलिया बढ़ा देते हैं. राजीव कि करना नी को मायूस

कहां-कहां गए: लखनऊ, कानपुर सहित उत्तर प्रदेश के नौ शहर; बीकानेर, पिलानी सहित राजस्थान के छह शहर; पटना सहित बिहार के छह शहर; पोरबंदर सहित गुजरात के आठ शहर; ओडीसा के तीन शहर और मध्य प्रदेश का मोपाल.

दूरी नापी: करीब 8,000 किमी.

कैसे गएः विमान से और मोटर से

रणनीतिः पहले चरण में उन इलाकों पर जोर जहां 1989 के चुनाव में शिकस्त मिली थी. राजीव ने अभियान मध्य प्रदेश से शुरू किया जहां मारी सफलता की उम्मीद है. स्यायित्व के मुद्दे पर जोर, राजीव को एकमात्र विकल्प बताना.



In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotr नामम भोजानी इंविरा गांधी की मूर्ति के सामने राजीवः "मैंने अपनी गलतियों से सीखा है"

शहरों का

चलकर आवा के सिर्फ 10 ते नहीं ग

कत कर है का हाथ पकर क्या ये वह महीने पहते दौड़कर मंद भाषण देक हो जाते थे हैं जो अपने ने पास स्रो ों के बारे यह वही शब दे दिया श गलतियों संपर्क बना ही भीड़ ग ते है. भुज हे ची जब मात

ता जब मान्य ति हैं, लेकिन जानते हुए भी ती कि उसस इ. है." विराया जाता

भीड़ की औ

माड़ का तुं, अपना कि वालों के लि गों से हा

वन्ते महिक्त के कि कि

सैकड़ों लड़ 'राजीव टोग्राफ ब्ल

रोप्राफ पए का ते लए बढ़ाते हथेलियां राजीव

करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwan

#### आवरण कथा

चाहते. मगर थकान का नामोनिशान तक नजर नहीं आता. वे कहते हैं, "इस बार मैं जीप से ही ज्यादा दौरा करूंगा."

और अब तो वे ऊंचे मंच से भी लोगों के साथ संवाद स्थापित करने की कला में पारंगत हो गए हैं. अब वे अपने भाषण से लोगों को पहले की तरह बोर नहीं करते बल्कि लोगों से बातें करते हैं, चुटकुले सुनाते हैं, उन्हें हंसाते हैं.

शरद मक्नेना

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri मानते हैं कि ''इंदिरा जी के राज में कीमतें बढ़ीं लेकिन उस समय देश में सूखा पड़ा था. लेकिन अब कीमतें क्यों आसमान छु रही हैं?'' और खुद ही इसके जवाब में कहते हैं, "स्राड़ी की लड़ाई के कारण नहीं, बल्कि सरकार के कुप्रबंध के कारण. गोदाम भरे हुए थे लेकिन सरकार ठीक से काम नहीं कर सकी. देश को ऐसी सरकार की जरूरत है जो पांच साल तक बनी रहे और महंगाई,

i आधार पर देश को बांट रही थी 🖈 दूसरी धर्म के आधार पर."

'क्रूर, गैर-जिमोदा राजीव जब सरकार के विरोध में छात्रों के आत्मक की बात करते हैं तो लोग बड़े घ्यान सुनते हैं. लेकिन जब वे भगवान राम बारे में बोलने लगते हैं तो भीड़ कसम्मा लगती है. राजीव कहते हैं कि भागा दरअसल वोट हथियाने के लिए राम ह

मंडल और

मापित्व द

अंतर स्प

हालां

मंदिर के

मुसलमान त गत्रीव भा

लकारने में

रेसमें ऊंची

मन्ती है. च रे वावजूद

हों के प्रभा

इस ऊहा

षाय सिर्फ

धायित्व व

ोजीव को '

मि कर रहे

में बात प

नेत्व में मि

हेर मकती

वेहर जाती



पायलट से नेता बने राजीवः "मुझे लोगों से संपर्क बनाए रखना चाहिए था"

"हमने इतनी जल्दी चुनाव की उम्मीद नहीं की थी. लेकिन जैसा कि आप जानते ही हैं, गैर-कांग्रेसी सरकारें कुछ ऐसी ही कमजोर होती हैं." भीड़ हंसने लगती है. वे आगे कहते हैं, "पहली सरकार 11 महीने में गिर गई और दूसरी सरकार सिर्फ चार महीने में भाग खड़ी हुई." तालियों की गड़गड़ाहट से आसमान गूंज उठता है. प्रसन्न मुद्रा में राजीव उस तबके की तरफ लौट पड़ते हैं जिसने उनका सबसे ज्यादा समर्थन किया है. यह तबका है महिलाओं का. वे स्थायित्व के मुद्दे से महंगाई पर आ जाते हैं, "महंगाई कितनी बढ़ गई है, यह मेरी बहनों से बेहतर कौन जानता है. गेहूं, सब्जी, मिट्टी का तेल-कोई भी चीज ले लीजिए, ये न सिर्फ महंगी हैं बल्कि दुर्लभ भी हैं." वे

कश्मीर तथा पंजाब जैसी समस्याओं को सुलझा सके. आपको स्थायी सरकार की जरूरत है. तभी देश समृद्ध हो सकता है, तभी विकास हो सकता है."

बातूनी राजीव एकाएक विषय बदल देते हैं. वे भाजपा और जनता दल की खिंचाई करने लगते हैं. मंडल और मंदिर के बारे में बोलने लगते हैं. फिर वे हिचक जाते हैं. उनके पार्टीवालों ने उनसे बार-बार कहा है कि वे मंदिर के मामले पर भाजपा के रवैये की आलोचना करने से बचें. लेकिन इन दोनों भावनात्मक मुद्दों पर चर्चा के बिना भाषण खत्म नहीं हो सकता. वे बोलना शुरू करते हैं फिर ठहर जाते हैं, फिर बोलना शुरू करते हैं, "अब देखो, दोनों गैर-कांग्रेसी सरकारें क्यों नहीं टिक पाईं? एक जाति के इस्तेमाल कर रही है, लेकिन भीड़ गह सुनने की इच्छुक नहीं दिखती राज् जैसे भाजपा के गढ़ों में लोग राजीव के से मंदिर की बात सुनते ही विरोध में हो जाते हैं. राजीव को अपना <sup>20 मितर</sup> भाषण 5 मिनट में ही निबटाना पड़ता है कई बार तो समझ भी नहीं पाते कि किया जाए.

विमान में वापस आने पर इस स्वार् कि "आप भाजपा से टक्कर क्यों लेते?" जवाब में वे हंसते हुए कहाँ "देखिए, आपके सवाल से विमा<sup>त</sup> डगमगाने लगा है." वे मुंह में एक ही डाल लेते हैं और विमान घने बादती ऊपर से उड़ना जारी रखता है. बीचक्राफ्ट विमान उस दिन पांवबी

रही यी औ गैर-जिम्मेदार हैं के आत्मदा बड़े ध्यान है गवान राम है भीड़ कसममार कि भावन

लिए राम इ

न भीड़ यह म

खती. राज

राजीव के

विरोध में

IT 20 मिनट<sup>1</sup>

ाना पड़ता है

ों पाते कि

र इस सवात

कर क्यों

हुए कहते से विमान

में एक टी

घने बादती

देन पांचवी

## अकेले राजीव के भरोसे

हंत और मंदिर के मुद्दों पर पार्टी का असमंजस बरकरार, सो व्यापित्व के नारों पर ही सारा जोर

देश बार अखबार के पन्नों पर बिच्छू है नहीं रेंगेंगे और न ही सांप फन क्राएंगे. 1989 के चुनावों के दौरान इंका हे प्रवार अभियान की वह आक्रामकता क्रा गायव हो गई है और उसका स्थान क्या है सहमी-सहमी हिचकिचाहट ने. गार्टी में किसी तरह काम निकालने की शवता ही बची रह गई है. हर बात पर कीक्ना रहना ही मूल मंत्र हो गया है.

अंतर स्पष्ट है. 1989 के आत्मविण्वास है जगह अब असमंजस है. दरअसल, का को अभी मंडल और मंदिर जैसे भागे चुनावी मुद्दों की काट ही नहीं सूझ ही है. पार्टी महासचिव गुलाम नबी गजाद शिशकते हुए कहते हैं, "हम मंडल क्लािंगों के खिलाफ नहीं हैं. दक्षिण में सारी पार्टी की राज्य सरकारों ने 60 मेनी आरक्षण लागू किया है." फिर वे गेंडी हिम्मत से जोड़ते हैं, "पिछड़ों के मेने हिम्मत से जोड़ते हैं, "पिछड़ों के मेने हिम्मत से जोड़ते हैं, "पिछड़ों के मेने हिम्मत से जोड़ते हैं, "विलक्ष इंका मिने हिम्मत से जोड़ते हैं विलक इंका सिने हिम्मत से जोड़ते हैं के मिने हिम्मत से जोड़ते हैं है का फायदा के से पिछड़ गई है.

मंदिर के मुद्दे पर भी पार्टी का रवैया निना ही दुलमुल रहा है. पार्टी अभी भी विनहीं कर पाई है कि वह अयोध्या के वित्र स्थल के किस ओर बैठेगी. <sup>भूलमान</sup> तो इंका से नाराज हैं ही, वित भाजपा को पूरे भरोसे से भिकारने में भी हिचकिचा रहे हैं क्योंकि किं जेनी जातियां उससे और दूर जा किती हैं. चुनाव प्रचार के जोर पकड़ने वानजूर राजीव अपने द्वारा उठाए गए में के प्रभाव के प्रति आश्वस्त नहीं हैं. <sup>इस</sup> उहापोह की स्थिति में पार्टी के भि सिर्फ एक ही चुनावी मुद्दा— भाषित्व का नारा वच गया है. वे विकल्प' के तौर पर कि रहे हैं और पार्टी अध्यक्ष खुद भ बात पर जोर दे रहे हैं कि उनके के कि हैं सिर्फ इंका ही स्थायित्व प्रदान के भिक्ती है. उनके खाते में एक बात के जाती है कि, सत्ता से बाहर होते

हुए भी भीड़ आकर्षित करने की उनकी क्षमता बरकरार है.

लेकिन उनके सामने एक नई चुनौती और जोर मार रही है. पार्टी से बंसीलाल की वरखास्तगी और राष्ट्रीय मोर्चे से उनके तालमेल की वजह से हरियाणा की सभी 10 संसदीय सीटें इंका के लिए असुरक्षित हो गई हैं. गुजरात में भाजपा एम.जे. अकबर की नई किताब में सरदार पटेल पर की गई विवादास्पद टिप्पणी को राजनैतिक फायदे के लिए इस्तेमाल कर रही है. एक वरिष्ठ इंका नेता कहते हैं, "स्थानीय भावनाओं को इस बिना पर भड़काया जा रहा है कि इंका पटेल के अपमान की निंदा नहीं कर पाई."

जाहिर है, इंका के लिए चुनावी राह आसान नहीं होगी. पार्टी अपने चुनाव



- 1989 के चुनाव के बाद से पार्टी में आत्मविश्वास की जगह उलझन की स्थिति.
- मंडल और मंदिर के सवालों पर अनिश्चितता के कारण भटकाव.
- एक सूत्री नाराः राजीव ही स्थायित्व ला सकते हैं.
- मित्र मंडली की जगह मंजे हुए नेताओं को तरजीह.

घोषणापत्र में आरक्षण पर अपने रवैये में फेरबदल करने की सोच रही है. इस बार का घोषणापत्र पिछली बार के 64 पृष्ठों के भारी-भरकम पत्र के मुकाबले काफी छोटा होगा. इसमें चार प्रमुख बातों पर जोर दिया जाएगा—स्थायित्व, रोजगार, महंगाई और विश्व में भारत की गिरती प्रतिष्ठा. हालांकि इसमें संदेह है कि इनमें एक भी मुद्दा भाजपा की हिंदू राष्ट्रीयता या वी.पी. सिंह के जाति आधारित आरक्षण का मुकाबला कर पाएगा.

इस हड़बड़ाहट का एक सकारात्मक पहलू यह है कि राजीव अपने सखाओं के बदले मंजे हुए नेताओं पर ज्यादा भरोसा करने लगे हैं. इस बार उनके दौरों के कार्यक्रम राजनैतिक सचिव जितेंद्र प्रसाद राज्यों के पार्टी नेताओं से सलाह करके तय करते है पूर्व वित्तमंत्री प्रणव मुकर्जी घोषणापत्र बनाने में शिरकत करने के अलावा राजीव को आर्थिक मुद्दों पर सलाह भी देते हैं और इंका के महासचिव अब उम्मीदवारों के चयन और चुनावी तैयारी के लिए प्रदेश नेताओं से मशविरा करते हैं.

पूरे प्रचार अभियान को विकेंद्रित करने के पार्टी के फैसले की वजह से राजीव के सखाओं—विश्वजीत पृथ्वीजीत सिंह और एस.एस. अहलूवालिया वगैरह—पर भी अंकुण लग गया है. कोई केंद्रीय कक्ष बनाने के बदले राज्य की पार्टी इकाइयों से पोस्टर छापने और जरूरत कें मुताबिक प्रबंध करने को कहा गया है. आक्रामक विजापन अभियान के खिलाफ तो पार्टी लगभग पूरी तरह से एकमत है. पार्टी प्रवक्ता विद्वल नरहिर गाडगिल कहते हैं, "इस बार हमारा संदेण सीधा-सादा और स्पष्ट होगा."

लेकिन निस्मंदेह पार्टी जीत के लिए राजीव पर ही निर्भर है. भाजपा और राष्ट्रीय मोर्चा के विपरीत इंका के पास प्रचार करने के लिए राष्ट्रीय नेताओं की दूसरी पांत नहीं है. राजीव को पूरा प्रचार अभियान अपने कंधों पर ही ढोना होगा. अकेले आदमी के लिए यह भगीरथ कार्य ही है. लेकिन अगर इंका फिर दक्षिण में भी अपनी हवा बहाना चाहती है तो वह राजीव की व्यक्तिगत अपील से ही हो पाएगा. यदि पार्टी दूसरी बार भी पराजित हो जाती है तो उन्हें अपनी राजनैतिक हैसियत और विश्वसनीयता की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी.

-भास्कर रॉय

200

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़ता है और 140 किमी सड़क यात्रा बाकी है. काफिला निर्धारित समय से आधा घंटा पहले पोरबंदर पहुंचता है और समुद्र के किनारे बने अतिथि गृह में रुकता है. 'अच्छी जगह है', कहते हुए वे समुद्र तट पर टहलने के लिए निकल पड़ते हैं.

रा सवेरे 6.45 बजे शुरू हुआ या. और अब आधी रात बीत चुकी है जब हम राजकोट में प्रवेश करते हैं, निर्धारित समय से तीन घंटे बाद. लेकिन लोग इंतजार कर रहे हैं. यहां पुरुषों से ज्यादा महिलाएं हैं. राजीव अपनी कार से उतरकर खुली जीप में चढ़ जाते हैं. यहां से उन्हें सभा स्थल तक पहुंचने में एक घंटा लगेगा. वे देर से पहुंचने के लिए भीड़ से माफी मांगते हैं. अपना भाषण खत्म करते हैं, फिर भीड़ से 'जय हिंद' बोलने के लिए कहते हैं, "थोडी और जोर से. और बहनों की तो आवाज सुनाई ही नहीं दी." वे फिर 'जय हिंद' बोलते हैं. भीड़ भी पूरे जोर से 'जय हिंद' बोलती है. वे फिर हाथ हिलाते हैं और खुली जीप में ही वापस अतिथि गृह चलने पर जोर देते हैं.

रात के दो बजे हैं मगर राजीव को सोने की फुरसत नहीं है. राज्य के इंका नेता उनके पीछे-पीछे अतिथि गृह तक जाते हैं. जो कुछ उपलब्ध होता है, खाते हैं. राजीव खाने-पीने के मामले में नखरा नहीं करते. रास्ते में भी जो मिला खा लिया. वे कभी न नहीं कहते, उस भीड़ को भी नहीं जो उन्हें चाय, शीतल पेय, आइसक्रीम, टॉफी और केले भेंट करती है. वे चाय और शीतल पेय साथ-साथ पीकर सभी का मन रखते हैं. भीड़ खुशी से चिल्लाने लगती है, "आधी रोटी खाएंगे, राजीव जी को लाएंगे."

खाना खत्म होता है और राजीव एक बंद कमरे में राज्य के नेताओं से पार्टी की रणनीति के बारे में चर्चा करते हैं. उन्हें आक्रामक होना चाहिए या नहीं? उन्हें गठजोड़ करना चाहिए या नहीं? उन्हें भाषण में किस बात पर जोर देना चाहिए? क्या स्थायित्व का मुद्दा ही पर्याप्त है?....

मुबह के 6.30 बजे हैं और हम अगली सभा में जाने के लिए तैयार हैं. क्या राजीव सोए? "हां, हां मैं दो घंटे सोया", वे मुस्कराते हैं. वे हमेशा की तरह तरोताजा दिखते हैं. मुंह में आम के स्वाद वाली टॉफी डालकर वे विमान उड़ाने के लिए निकल पड़ते हैं और बादलों की तरफ एकटक देखते हुए मन ही मन सोचते हैं कि क्या वे देश की बागडोर भी फिर थाम सकेंगे. इस संभावना के वारे में वे कहते हैं, "अभी कुछ कहना जल्दबाजी होगी. एक महीने वाद पूछिएगा."

# भावुक लफ्फाजी और उग्र तेवर

संवाददाता आलोक तिवारी उत्तर प्रदेश और बिहार में सामाजिक न्याय है लिए राजा के चुनाव अभियान का आंखों देखा हाल प्रस्तुत कर रहे हैं.



पटना का ठसाठस भरा गांधी मैदान. लोगों का सागर हिलोरें ले रहा है. धीरे-धीरे आती आवाजें जब नारों का रूप लेती हैं तो जैसे आसमान हिलने लगता. ऐसा लगता है कि

किसी गरम विशाल भट्टी से लपटें उठ रही

हैं. सूरज अपनी गरमी से आफत ता रहा

संदा का स

नाता है. ती.पी. सि

तं हैं लंबे

हा उनके चे

नाह से वे ल

कर हाथ हि

आवेश में भ

क्ष जनता

द्वीय मोर्चा

हिमें जा नि

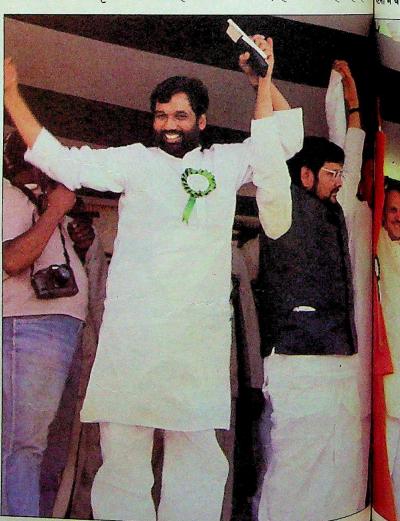
न ने लोग

द्वार इस

जा उठा

र्तस्वल की

अचानक शोर गुल बढ़ता है. भट्टी है वैति स्पार उफान-सा आ जाता है. नारों और धूल कि और मेर सांस लेना मुश्किल हो जाता है ला है। पट्टीय में टोपीधारी होमगार्ड के जवान अपने से बं श्रीपचारि लाठियों के सहारे आगे बढ़ते लोगों को अंदाज में पीछे हटने को कह रहे हैं कि ला में बी. प्



होंहा का संचालक बेटन हीपी. सिंह मंच पर तं है लंबे बुखार का ब्राउनके चेहरे पर है पर नह से वे लोगों की तरफ करहाय हिलाते हैं फिर ग्रवेश में भरकर मंच पर क्ष जनता दल और क्ष्में मोर्चा नेताओं की क न्याय है हुं में जा मिलते हैं. उन नं नें लोगों की ओर कर इस अदा में हाथ जैसे न उठा दिए फत डा रहा संस्त की फुटबाल टीम सुखा रहे है ही में मैदान मारकर आई ा है. भट्टी है <sub>वौतरफा</sub> तालियां बजती

रहे हैं.

नाता है. ला

ने लोगों को ह

रों और धून विशेष भोर मच जाता है. गष्ट्रीय मोर्चे के चुनाव अभियान की न अपने से वा इ औपचारिक शुरुआत पर्याप्त प्रभावी

यात्राएं कीं: चंद्रशेखर के इस्तीफे के बाद बिहार में पटना; उत्तर प्रदेश में आगरा और शाहजहांपुर; तथा गुजरात में सूरत और वडोदरा समेत पांच शहर.

दूरी तय की: करीब 5,280 किमी.

मुद्दा पिछड़ों और मुसलमानों के समर्थन को ठोस न्याय है.

> थी. पटना का गांधी मैदान जनता दल का 'अपना मैदान' भी था क्योंकि बिहार में लालू प्रसाद यादव के नेतृत्व में उसकी

सवारीः विमान, कार और रेलगाड़ी. रणनीतिः वी.पी. सिंह की रणनीति का मुख्य बनाना है. वे मंडल रिपोर्ट को लागू करने और महिलाओं के लिए आरक्षण का वादा करते हैं. उनके अभियान का मुख्य मुद्दा सामाजिक

सरकार ही है. और मंडल अभियान में वी.पी. सिंह के रामविलास लेफ्टिनेंट पासवान का भी यह क्षेत्र है.

लोकसभा भंग होने की घोषणा जब हुई तो वी.पी. सिंह वायरल बुखार की चपेट में थे. डॉक्टरों ने उन्हें पूरा आराम करने की सलाह दी. पटना रैली में वे आएंगे या नहीं, यह सवाल आखिर तक बना रहा. वे चुनाव अभियान के आखिरी थकाऊ दौर के लिए स्वस्थ बने रहना चाहते हैं, यह तो जाहिर ही है. इसीलिए उनकी अगली रैली आगरा

में इसके हफ्ते भर बाद हुई. प्रर उसमें पटना रैली से आधे भी लोग नहीं थे.

आगे का उनका चुनाव अभियान इतना ही प्रभावी रह पाएगा या नहीं, यह कहना तो जल्दबाजी होगी लेकिन एक बात साफ दिखती है. उनके पक्ष में माहौल तेजी से बदला है. 1989 के चुनाव में इतने उत्साह से हाथ उठाने वालों के साथ अभियान नहीं श्रूरू हुआ था पर तब वी.पी. सिंह प्रधानमंत्री की गद्दी तक पहुंच गए थे. पिछले 17 महीनों में एक धूमकेत की तरह उभरे वी.पी. सिंह का पतन तो हुआ है लेकिन उनकी जगह राजनेता-कूटनीतिज्ञ वी.पी. सिंह का उदय हो गया है.

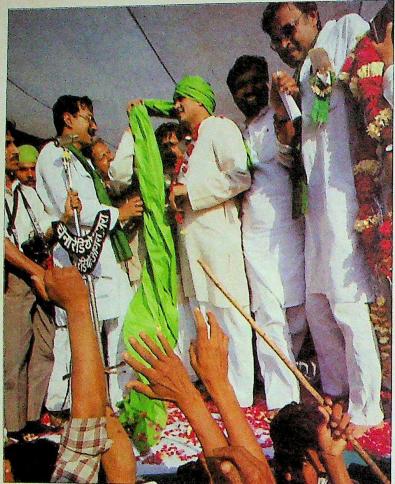
1989 की चुनावी सफलता के बावजूद वी.पी.सिंह को यह एहसास जरूर रहा होगा कि खुद उनका अपना कोई आधार नहीं है. और फिर हर किसी को खुश रखने के चक्कर में उनकी अपनी मिट्टी पलीद होने लगी थी.

अपने ही रचे राजनैतिक चक्रव्यूह में फंसे वी.पी. सिंह को पिछले अगस्त में एकाएक नया झुनझुना मिल गया. मध्यमवर्गीयों के लिए महत्वपूर्ण मूल्यों-वूल्यों की बात करनी उन्होंने बंद कर दी, वे सीधे रोटी-दाल की राजनीति पर उतर आए. अब उनकी सभाओं में एक विशिष्ट वर्ग के लोग ही आते हैं. उन्हें मंडल का राजनैतिक संदेश प्रिय है. वी.पी. सिंह के रूप में उन्हें एक ऐसा नेता नजर आता है जो बहादुरी भरे फैसले ले सकता है और उनके 'हितों' की रक्षा के लिए प्रधानमंत्री तक की कुर्सी छोड़

आजादी के बाद की 40 वर्षीय चनावी राजनीति के बाद विकास की सीढ़ी पर सबसे नीचे खड़े लोगों में आज भी इतनी उम्मीदें बची हैं. अब उन्हें अपनी कल्पनाओं को साकार करने का मौका हाथ आया



Digitized by Arya Samal Foundation Chennal and eGangotri



वी.पी. सिंह: "काटों भरी राह पर चलना है"

अता दल

खड़ों, ह

मंडल आय

मंडल अ

ही बात उ

जाडवाणी व

11 महीने जन्यमत स

ममले के लि

विसी भी दू

मा प्रवल

भी मंडल

र्गतिक्रया ः

नेकिन वी.

श्रीहम हैं.

है जिससे स

को और स

शे तहस-नः

स चंद्रशेख मों थे, वी

वह कहकर

हर ली कि

वारे में ल

मवर्षों के हि

गेदा किया

अब अग

गेता है ते

गेपसी पवन

ता 60 वा

नेक्पित क

भेटें दोव प

थेमर डाला

निव की त

नितापः उठ

देसरी

भामाजिक

शेरक्षण के

विवास दे रि

कि जाति

मंभवत:

लगता है. मथुरा के गोहरी गांव के क्षे किसान मोहनलाल को संदेह नहीं है। उनके गांव के लोग कहां वोट देंगे. वे के हैं, ''राजा साहब हमारे लिए कुछ करें। और मंदिर का क्या होगा? क्या का अयोध्या में मंदिर बनने के पक्ष में है उनका जवाब होता है, "मंदिर का हुन लिए क्या अर्थ है?"

वी.पी. सिंह की सभाओं में सारा की सामाजिक न्याय पर होता है. शायद पूराहे राष्ट्रीय मोर्चा आंबेडकर की विरासत ह चका है. आगरा की रैली की भूका वी.पी. सिंह ने आंबेडकर की मूर्ति को मार पहनाने से की.

र अपने पूरे अभियान में वीई 3 र अपन पूर सिंह एक खास रणनीति पर है होने वा काम कर रहे होते हैं. उत्तर प्रदेश की बिहार में उनके मुख्य प्रचारक है रामविलास पासवान, जिनकी मंच ए उपस्थिति ही लोगों में उत्साह भर देती। अपने भाषणों में पासवान कहते हैं, "हमा रास्ता अहिंसा का है लेकिन अगर है (आरक्षण पाने से) रोका गया तो हि फट पडेगी.''

वी पी. सिंह खुद तो ऐसी भा गवधानों मे इस्तेमाल नहीं करते पर उनके भाषण है कम भावनात्मक अपील वाले नहीं हा ''अगर गरीब के आसुओं पर ध्या<sup>न क्</sup>

वामपंथी दल

### सत्ता की साध

क जमाना था कि वामपंथियों ने संसद को हिकारत से 'सूअरों के बार्डे की संज्ञा दी थी. वही वामपंथी-माकपा और भाकपा-अब संसद के सहारे सत्ता पर काबिज होने के हर संभव प्रयास कर रहे हैं. राज्यों में अपनी सरकारों को बचाए रखने के प्रयास तो वे कर ही रहे हैं

वामपंथियों के लिए इससे पहले कोई आम चुनाव इतना महत्वपूर्ण नहीं रहा. इस तरह उन्होंने अब अपना रुख बदल लिया है. भाकपा महासचिव इंद्रजीत गृप्त कहते हैं, "लोगों को अगली सरकार के स्थायित्व का भरोसा दिलाने के लिए हमारा सक्रिय सहयोग जरूरी हो गया है." हालांकि माकपा ने अभी ऐसी साफ

बयानी नहीं की है पर वह अपने पिछले रुख से आगे बढ़ चुकी है. पार्टी के एक नेता सीताराम येचुरी कहते हैं, ''सरकार में शामिल होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता."

इस बीच खबर है कि कम्यूनिस्ट

पार्टियां दसवीं लोकसभा के लिए चुनाव में 160 सीटों पर लड़ना चाहती हैं. उम्मीद के मुताबिक वे हिंदी क्षेत्र में ज्यादा सीटों पर लड़ने की इच्छुक हैं. माकपा ने उत्तर प्रदेश में 1989 में केवल एक सीट जीती थी और अब वह जनता दल से छह सीटें मांग रही है. उसे बिहार में भी कुछ सीटें जीतने की उम्मीद है.

विडंबना यह है कि

हाल के वर्षों में सबसे ज्यादा प्रगति करन वाला वामपंथी दल इंडियन पीपुल्स फर (आईपीएफ, है. मुख्यतः बिहार मे सक्रिय आईपीएफ ने पिछली बार आग की सीट जीत ली थी और अगले चुनाव में भी इससे अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है

1989 कम्युनिस्ट पार्टियों को कुन मिलाकर 9 फीसदी बोट मिले थे. इससे कुछेक सीटो पर राष्ट्रीय मोर्चा को भी लाभ मिल सकता है.

चुनाव के बाद संता में साझेदारी के सवाल पर चाहे जो फैसला हो, इस व्यवस्था को वामपंथियों त जिस तरह मान्य किया है वह निश्चित रूप में एक महत्वपूर्ण बात है.





जता दल की रणनीति

वलना है"

गांव के हैं? ह नहीं है। ट देंगे. वे बहु

ा? बया आ के पक्ष में ह

गनीति पर इं

र प्रदेश औ

प्रचारक है

सकी मंच प

ह भर देती है

हते हैं, "हमाग

कन अगर है

गया तो हिं

ऐसी भा

नके भाषण

ाले नहीं होत

र ध्यान ग

प्रगति करने

पीपुल्स फर

विहार में

बार आरा

गले चुनाव उम्मीद है

यों को कुल

ोसदी बोट

नुछेक सीटों

र्ची को भी

ाद सत्ता मे

सवाल पर

T हो, इस

मपंथियों त

म किया है।

प से एक

भास्कर रांध

ता है.

दोना

## र्मा विभाजन से बटोरेंगे वोट

ए कुछ करें बिड़ों, हरिजनों और मुसलमानों के एकमात्र मसीहा के रूप में अपने आपको पेश करके विश्वनाथ प्रताप सिंह हुत आयोग की रिपोर्ट और आरक्षण मुद्दे की फसल काटने को तैयार

दिर का हमां पी. सिंह के लिए मंडल की व . फसल काटने का वक्त आ गया में सारा जो णायद पूराहे हे और यह स्थिति खुद उनकी बनाई हुई नी विरासत है मंडल आयोग की रिपोर्ट लागू करने की गुष्या है बात उठाकर ही उन्होंने लालकृष्ण मूर्ति को मार बहुवाणी को रथयात्रा शुरू करने और ॥ महीने पुरानी राष्ट्रीय मोर्चा की ज्यमत सरकार को गिराने के लिए यान में वीर्ष म्बबर कर दिया था इस लिहाज से मई में होने वाले आम चुनाव आरक्षण के मने के लिए निर्णायक सिद्ध होंगे.

मंभवतः देश के हाल के इतिहास में स्मि भी दूसरे मसले के कारण समाज में 🛅 प्रवल ध्रवीकरण नहीं हुआ. अभी भी मंडल की चर्चा मात्र से तीखी र्गिकिया सुनने को मिला करती है. किन बी.पी. सिंह अपनी बात पर <sup>पृद्धिग</sup> हैं. उन्होंने मंडल आयोग के <sup>अवधानों</sup> में एक ऐसा अचूक अस्त्र देखा जिससे सभी तरह के पारंपरिक वोट कों और सामाजिक वर्गों के समीकरणों ो तहस-नहस किया जा सकता है. सो, व बद्रशेखर अपनी दिशा तय करने में गें थे, वी पी. सिंह ने बेहद चालाकी से <sup>बहुकर अपनी</sup> चुनावी स्थिति मजबूत हर नी कि महिलाओं को भी मंडल के वा में नाया जाएगा. उन्होंने निर्धन भवर्षों के लिए भी 5 फीसदी आरक्षण का गदा किया है

<sup>अव अगर</sup> मंडल का जादू काम कर की है तो वी.पी. सिंह की सत्ता में <sup>गम्भी पक्की है क्योंकि आरक्षण का</sup> <sup>भा 60</sup> फीसदी मतदाताओं को कर लेगा. दक्षिण में, जहां 140 कि राव पर हैं, मंडल ने इतना गहरा का है कि वरिष्ठ इंका नेता विव की बात उठते ही पार्टी नेतृत्व के निताफ उठ खड़े हुए.

इसरी तरफ, किमाजिक त्याय' का नारा देकर कार्या के मसले को बिलकुल ही नया भेषाम दे दिया है. उनकी दलील है कि के जातिप्रथा वर्ग पर आधारित है, इसलिए आरक्षण का लाभ गरीबों को मिलेगा. मूसलमानों में भी उनकी छवि अच्छी है. उनका मानना है कि वी.पी. सिंह ने बाबरी मस्जिद की रक्षा के लिए प्रधानमंत्री की कुर्सी कुर्बान कर दी. अल्पसंख्यको में उनकी पहुंच का निश्चित प्रमाण हाल में केरल जिला परिषद के चुनावों से मिला, जहां मल्लपूरम के मुसलमान बहल क्षेत्र ने मुस्लिम लीग के बजाए वी.पी. सिंह के वामपंथी सहयोगियों को भरपूर समर्थन दिया.

लेकिन आगामी आम चुनाव जनता दल के लिए उतने आसान भी नहीं साबित होंगे. वी.पी. सिंह के सामने एक वड़ी समस्या यह है कि पार्टी का कोई संगठन नहीं है. सो, जनता दल अपने समर्थन को वोटों में बदल पाने की उम्मीद नहीं कर सकता.

वी.पी. सिंह के रामविलास पासवान और शरद यादव को गले लगाने से भी कई पार्टी नेता नाराज हैं. जनता दल में विभाजन के बीज अंक्रित हो चुके हैं. सबसे बुरी खबर पूरब से है, जहां असम गण परिषद ने असम के लिए पूर्ण स्वतंत्रता मांगने के एक पूराने प्रस्ताव से मिलती-जूलती बात उठा दी. उसके बाद ओडीसा के तेजतर्रार मुख्यमंत्री बीज् पटनायक ने भी अपने राज्य के साथ केंद्र के सौतेले व्यवहार का मसला उछाल दिया. इस पर इंका प्रवक्ता वी.एन. गाडगिल ने कहा, "राष्ट्रीय मोर्चा एक ऐसा पागलखाना है जिसमें कुछ मरीजों को अलगाववादी दौरे आते हैं.

वी.पी. सिंह का जोर वर्ग विभाजन पर भी है. वैसे कहा तो यही जाता है कि आम चुनाव में लोग राष्ट्रीय हित के अनूरूप निर्णय लेते हैं. इस हिसाब से वी.पी. सिंह को केवल '60 फीसदी समर्थन' ही प्राप्त है. बाकी 40 फीसदी में ही समाज का वह शिक्षित और संभ्रांत वर्ग है जिसके हाथ में पुलिस सहित समूचा सरकारी तंत्र है. किसी भी आम चुनाव में इस वर्ग की भूमिका अहम होती है. अब सवाल यह उठता है कि पुलिस और नौकरशाही से बैर मोल लेकर चुनाव जीत पाना संभव है या नहीं.

लेकिन पासवान कहते हैं, "मंडल पर हई प्रतिक्रिया से हमें इतना लाभ हुआ है, जितना उससे संबंधित फैसले से नहीं हुआ." उनकी राय है कि आरक्षण के मुखर विरोध ने पिछड़ों, हरिजनों और म्सलमानों को इकट्ठा करने में बड़ी भूमिका निभाई है. बहरहाल, वी.पी. सिंह की आरक्षण नीति को जल्दबाजी में लिया गया सनक भरा फैसला या फिर पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था ऐतिहासिक कुठाराघात कहा जा सकता है. लेकिन दरअसल यह क्या है, इसका फैसला आगामी आम चुनाव ही करेंगे.

- आरक्षण में महिलाओं को भी शामिल करने से व्यापक समर्थन. फिलहाल आरक्षण की सीमा में आने वालों के ही लगभग 60 फीसदी वोट हैं.
- अन्य अल्पसंख्यकों के साथ ही मुसलमानों को अपनी ओर करने पर खास ध्यान.
- वामपंथी दलों से गठबंधन करके प्रगतिशील होने की छवि पेश करना.

--- मास्कर रॉय

दिया गया तो वे पानी नहीं रहेंगे, तेजाब का रूप ले लेंगे." लेकिन उनकी बातें यादव और पासवान की तल्खी का मुकाबला तो कर नहीं सकती. पर वी.पी. सिंह ने क्छ गंभीरता बचाए रखी है. उनकी शैली आकर्षक है.

और फिर वे भोजपुरी में बोलने लगते हैं, "हम आपके दुई माइन क कथा सुनावत हई..." भीड़ इस कथा से पूरी तरह परिचित है. यानी परिवार के बंटवारे में एक भाई गाय का पिछला हिस्सा मांगता है तो दूसरा अगला. इसलिए एक भाई तो सारा दूध निचोड लेता है तो दूसरे के जिम्मे गाय को खिलाना भर रह जाता है. फिर घाटे में रहे भाई को उपाय सुझता है और वह दूध दूहने के समय गाय के सिर पर डंडा चलाने लगता है. नतीजा यह कि गाय दहने के समय लात चलाती रहती और दूध निकालने नहीं देती. इसके बाद दूध के बंटवारे का फैसला हो जाता है. भीड़ को अपनी जानी-पहचानी कथा का आनंद आता है. इस कथा से वी.पी सिंह भीड को हंसाने में कामयाब हो जाते है. उनके भाषणों के बीच में उन पर लगातार फूल फेंके जाते हैं एक बार वे कहते भी हैं, "फूल न फेंकिए, अब हमें काटों भरी राह पर चलना है."

फिर वे भावनात्मक पुट देते हैं, "एक बार महाराष्ट्र में एक दलित महिला ने कहा कि वह मुझे वोट देगी क्योंकि मैं उसकी जाति का हूं. यह सम्मान सबसे ऊंचा है, प्रधानमंत्री पद से भी बहुमूल्य. मैं नहीं जानता कि वह दलित मां कौन है पर मैं इस भरोसे को तोड़ नहीं सकता." फिर जोश भरने की बोली, "हम अब खजाने में हिस्सा भर नहीं चाहते. हमें इसकी तिजोरी की चाभी चाहिए. यह हमारा खजाना है और इस पर हमारा कब्जा होना चाहिए.'

वे श्रोताओं से यह भी कहते हैं कि वे कभी मुठभेड़ नहीं चाहते. वे याद दिलाते हैं कि वे ऊंची जाति के गरीबों के लिए भी कुछ सीटें आरक्षित करने के हिमायती हैं. बावजूद इसके, जातीय राजनीति के इस समाजतोड़क दायरे में उनकी पहले वाली ऊंची नैतिक हैसियत लुप्त हो गई है.

वी.पी. सिंह को नैतिक हैसियत की नाजुक जमीन का हमेशा खयाल रखना चाहिए था. और अब वे ज्यादा मजबूत आधार-भले ही वह समाज में विभाजन करने वाला हो-पर खड़े हैं तो उन्हें रूसी नेता मिखाइल गोर्बाचेव के विरोधी बोरिस येल्तसिन की एक बात गांठ बांध लेनी चाहिए थी कि-लोकतंत्र में प्रगति के लिए हर नेता को समाज के मतभेदों और विरोधाभासों को समेटकर चलते आना चाहिए.

लालकृष्ण आडवाणी

## गरिमामय लेकिन जोशीला अभियान

अमरनाथ के. मेनन और रमेश मेनन ने भाजपा के इस शीर्षस्थ नेता है कि असरदार दक्षिणी अभियान का जोर देखा



उनका व्यवहार बहुत संयत और गरिमामय है जनता को लूभाने के लिए वे न बच्चों को चूमते हैं, न तेजी से चलती कार से सडक के दोनों ओर खडे गांववालों की ओर देख

हाथ हिलाते हैं, न अपने गिर्द जमा भीड पर गले से उतारे हार ही फेंकते जाते हैं. कर्नाटक के राजनैतिक दृष्टि से अपेक्षाकृत शांत गांवों और कस्बों से अपना चनाव अभियान शुरू करते वक्त लालकृष्ण आडवाणी किसी नाटकीयता का सहारा नहीं लेते. भीड़ यदि उनसे 'क्छ कहने' का आग्रह करती है तो वे यही कहते हैं कि उन्हीं की पार्टी को वोट दें

भाजपा नेता इस चुनाव अभियान के दौरान जो कुछ कहेंगे, करेंगे, उस पर धर्म का रंग तो चढ़ा नजर ही आएगा. यह भी महत्वपूर्ण है कि आडवाणी ने कर्नाटक में चुनाव अभियान की शुरुआत धर्मस्यल स्थित श्री मंजुनाथेश्वर के मंदिर में दर्शन करने के बाद की. ऐसी धर्मपरायणता के साथ चुनाव अभियान की शुरुआत उनकी पार्टी के राजनैतिक भविष्य को प्रभावित करेगी. चुनाव अभियान की वास्तविक शुरुआत मंदिरों के नगर उडिपि हुई, जहां आठ हिंदू मठ हैं. यहां के धार्मिक नेता आम तौर पर राजनीतिकों और उनकी विवादास्पद गतिविधियों से दूर ही रहते हैं लेकिन आडवाणी का अभियान अपवाद रहा. उडिपि के पेजावर मठ के स्वामी विश्वेण तीर्थ उनकी पहली जनसभा में आणीर्वाद देने आए. हिंदू समाज के महत्वपूर्ण तबके-बाहमणों-के वोट खींचने की यह चतुराई भरी चाल थी.

आडवाणी के चुनाव अभियान की विशेषता उनकी स्पष्टता है. वे बिना कोई डींग हांके मतदाताओं के सामने एकदम सीधी-सपाट भाषा में अपनी पार्टी के घोषणापत्र की व्याख्या करते हैं. उनके दौरे की भी कोई भव्य तैयारियां नहीं की गई हैं.

रवार का ज गंतव्य के पूरे रास्ते पर उनके आगमन और कार्यक्रम की सूचना संबंधी कुछ पोस्टर भा बेंकिन लगे हैं. उनकी गाड़ी के आगे मील भर नवा लिक अभि गाड़ियों का काफिला नहीं चलता. चॉक्लेटी बोटों रंग की कंटेसा कार के आगे सिर्फ एवं उतना अ पुलिस पायलट जीप और पीछे सुरक्षा है का को दक्षि लगेडा की व लिए कुछ जीपे चलती हैं.

बी इंग्टि से

इसीलए अ

न कमजोर

ता कर सा

ब्द यह साबि

लको पार्टी

तंगापी क्षेत्र

न नहीं है.

न तक ले

ज है जहां अ

जहां उनकी पार्टी का बिलकुल जनाधार विवापक चु न हो ऐसे इलाके से चुनाव अभियान है शूरुआत करना उनके जैसे राष्ट्रीय स्तरा



की वृष्टि से बहुत अहम की वृष्टि से बहुत अहम की आडवाणी ने कि कर साहसिक कदम जा कर साहसिक कदम पार्टी इस रणनीति का पार्टी का आधार किया पार्टी का आधार क्या पार्टी का आधार क्या के तक ही न नहीं है. और पार्टी कि लहर सुदूर कि जा सकने में कहें बहां अब तक हिंदू गार का ज्यादा असर

आगमन और था इड पोस्टर भा जेंक्न हिंदुत्व में भील भर लंबा जीकि अभियान भरकर नता. चॉकलेटी में बेटों की फसल

ाष्ट्रीय स्तर

ागे सिर्फ एक व्याजा आसान नहीं होगा. 1984 में विद्य सुरक्षा के दक्षिण से केवल आंध्र प्रदेश में कोंग्र की सीट मिली थी. और अब तकुल जनाधा वें व्यापक चुनाव अभियान के बावजूद अभियान के

दौरे किए: चंद्रशेखर के इस्तीफे के बाद से कर्नाटक के बंगलूर सहित 12 शहर; आंध्र प्रदेश में हैदराबाद; दिल्ली; बिहार के पटना सहित 8 शहर; पं. बंगाल का कलकत्ता; उ.प्र. के बिलया सहित 9 शहर

दूरी नापीः करीब 3,000 किमी

यात्राः अधिकांश सडक मार्ग से

रणनीतिः खास तौर से दक्षिण तथा उन राज्यों पर जोर जहां पार्टी को इंका की कीमत पर वोट मिल सकते हैं. लक्ष्य मुख्यतः शहरी और कस्बाई मतदाताओं के वोट

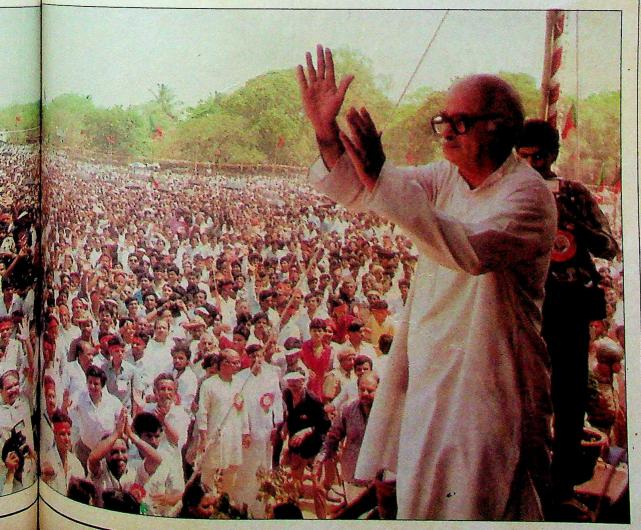


हो सकता है कि उसे दक्षिण में एक भी सीट न मिले. लेकिन पार्टी इस क्षेत्र में अपना अस्तित्व साबित करने को कटिबद्ध नजर आती है. मसलन, पार्टी कर्नाटक की सभी 28 सीटों पर चुनाव लड़ने का फैसला कर यह दिखाना चाहती है कि वह अपनी लड़ाई अकेले लड़ने का माहा रखती है.

लगता है भाजपा का शब्दाडंबर युवाओं को भी प्रेरित कर रहा है. देश की समस्याओं और मुद्दों पर पार्टी की स्पष्ट राजनैतिक समझ उन्हें उसकी तरफ खींच रही है. चुनाव रैलियों में आडवाणी ने कई बार शोर मचाते किशोर-किशोरियों को एक स्कूल मास्टर की तरह झिडका.

कर्नाटक में दावणगेरे कपड़ा मिलों के लिए विख्यात है. कम्युनिस्टों का गढ़ होने की वजह से राजनैतिक दृष्टि से यह भाजपा के लिए कतई अनुकूल जगह नहीं. लेकिन

आत्मविश्वास से भरे और गरिमामय आडवाणीः "सभाएं बहुत अच्छी रहीं."



भाजपाई रणनीति

### और मुद्दे हैं मंदिर के सिवा

मंडल के बवंडर का जवाब सिर्फ मंदिर से देने की जगह रोटी, इंसाफ और राष्ट्रवाद के नारे भी उठाने की नीति

स पत्रकार सम्मेलन में भाजपा उ अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी इस सवाल से थोडे परेशान लगे कि "पहले तो आप लोग सिर्फ राम का नाम भजते रहे, फिर उसमें रोटी जोड दी और अब इंसाफ का सवाल जोड रहे हैं. आगे और क्या जुडेगा?" दरअसल यह सवाल सामयिक भी था क्योंकि पार्टी का सर्वाधिक महत्वाकांक्षी और संकल्पवान चुनाव प्रचार अभियान शुरू करते हए जोशी ने घोषणा की कि 'सामाजिक न्याय' भी पार्टी का नारा होगा.

इस घोषणा से स्पष्ट है कि पार्टी की चुनावी रणनीति में बदलाव आया है क्योंकि चुनाव के लिए जबरदस्त जन-समर्थन जुटाने की तैयारी के बावजूद पार्टी के रणनीतिकारों को लगता है कि सत्ता पर काबिज होने में आरक्षण का मुद्दा ही उनकी सबसे बड़ी बाधा बन सकता है. हाल में भंग लोकसभा के 86 में से 17 पार्टी सांसदों ने एक बैठक में आणंका जाहिर की कि वी.पी. सिंह की आरक्षण नीति उनका चुनावी भविष्य विगाड सकती है. अहम बात यह है कि आशंका जाहिर करने वाले पूर्व सांसद मुख्यतः मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे राज्यों के हैं जहां पार्टी को बेहतर नतीजों की उम्मीद है.

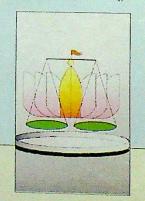
बिहार में तो पार्टी ने एक रास्ता निकाल लिया है. वहां पार्टी जोरदार प्रचार कर रही है कि आरक्षण का कर्पूरी फार्मूला, जिसमें आर्थिक पिछड़ेपन को भी आधार बनाया गया है, तब के उप मुख्यमंत्री और भाजपा नेता कैलाशपित मिश्र ने तैयार किया था.

पार्टी के सोच में बदलाव इस तथ्य से भी उजागर होता है कि वह अब हिंदुवाद की जगह राष्ट्रवाद पर जोर देने की बात कर रही है. राष्ट्रवाद का नारा जातिवाद और 'छदम धर्म निरपेक्षता' के जवाब में उठाया जाएगा जिन्हें, बकौल भाजपा दूसरे दल उभार रहे हैं. और भाजपा के राष्ट्रवाद को आडवाणी स्पष्ट करते हैं,

"प्रत्येक देश की अपनी समृद्ध संस्कृति और विरासत होती है. भारत में इसका मूल तत्व हिंद्रत्व में है."

पार्टी को उम्मीद है कि 'हिंदुत्व ही राष्ट्रवाद' का नारा उसके लिए तुरुप का पत्ता साबित हो सकता है और इसे कश्मीर एवं अयोध्या के विवादित मसलों के साथ अच्छी तरह जोडकर पेश किया जा सकता है. पार्टी के एक नेता कहते हैं, ''हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत पर गर्व है. हम इसे पूनर्स्थापित करना चाहते हैं. अयोध्या इस संघर्ष का प्रतीक है."

कश्मीर की बिगडती स्थिति के नाम पर भी पार्टी वोट बटोरने की कोशिश करेगी. आडवाणी के अनुसार, अनुच्छेद 370 ऐसा नहीं है जिसे रह नहीं किया जा सकता. आजादी के बाद जब दूसरे सभी



- मंडल वाले मुद्दे के जवाब में आर्थिक पिछड़ेपन का मुद्दा उठाना
- हिंदुवाद पर नहीं राष्ट्रवाद पर जोर देना
- राम मंदिर के सवाल पर निरंतर जोर देते रहना
- पार्टी को राष्ट्रीय विकल्प के रूप में पेश करते हुए सभी सीटों पर चुनाव लड़ना

राज्य भारतीय संघ में विलीन हो गएतो कण्मीर का विशेष दर्जा क्यों बनाए रहा गया.

ऐसे प्रतीकों और सुलगते सवालों के बावजूद भाजपा के वरिष्ठ नेतागा महसूस करते हैं कि 'राम का नाम' जहां उत्तर प्रदेश और गुजरात के मतदाताओं पर असर कर सकता है, वहीं दूसरे राजा में पार्टी को इस बात पर भी जोर देना होगा कि राष्ट्रवाद के प्रति प्रतिबद्धता मे ही भारत को स्थायित्व दिया जा सकता है. एक वरिष्ठ नेता कहते हैं, "लोग मस्जिदें गिराने और मंदिरों को बनाने में ही दिलचस्पी नहीं रखते. ज्यादातर पार्टी कार्यकर्ताओं की ओर से हमें यही जानकारी मिल रही है." वैसे, हिंदूल के मृद्दे को गौण बनाने के फैसले का कट्टरपंथियों ने विरोध किया है. एक बार वाजपेयी ने कहा भी था, "अगर भारत में मुसलमान नहीं भी होते तो भी पार्टी में कुछ लोग ऐसे हैं जो सिर्फ विरोध करने के लिए ही उन्हें ईजाद कर लेते."

आडवाणी का यह बयान कि वाजपेगी पार्टी की ओर से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे या फिर भगग वस्त्रधारी उमा भारती का पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 'भारत हिंदुओं का हैं के नारे लगाते भाजपा कार्यकर्ताओं का झिड़कना इस बात के संकेत हैं कि पारी नेतृत्व पसोपेश की स्थिति में है.

फिर भी, भाजपा के अभियान की सारा जोर स्थायित्व के मुद्दे पर रहेगा पार्टी की राष्ट्रीय कार्यसमिति के विष् सदस्य अरुण जेतली कहते हैं, "हमारा सबसे लोकप्रिय नारा होगा-मजबूत पार्टी, सुदृढ़ सिद्धांत और परिपन नेतृत्व." चूँकि क्षेत्रीय पार्टियों से तालमेत की कोशिश सफल नहीं हुई है इसित् पार्टी सभी सीटों पर चुनाव लड़ेगी. पार्टी महासचिव गोविंदाचार्य कहते हैं, "हर्गे सत्ता में आना है. इसलिए हम खुद की लोगों के सामने विकल्प के रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं. सभी सीटों पर चुनाई लड़ना सर्वोत्तम चुनावी रणनीति है, इसने पार्टी का आधार और मजबूत ही होगा

पुराने पड़ गए संदेशों को लेकर हैं। भर में निकले भाजपा के रथों के दौरों है एक बात स्पष्ट हो रही है कि पिछी साल आडवाणी की रथयात्रा के दौर्रा जो जन उभार था वह अब कमजोर <sup>वह</sup> -शाहनाज अंकलेसरिया अ<sup>व्या</sup>

और मास्कर रांध

lic Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

खाणी की ज क्षेक रहा. दा हहा फसाद मे प्रमातों ने भ

हुबाणी ने आ ता वे भाजपा उनके भाषण श्राहर बन

हैं चुनाव ह कि हर बा भा आता है म्बा है. "19" ोंगों में रोप श विकी अस <sup>984</sup> में इंदिर तिनुभूति की ण मौदे का मेहने की जरू हाराम मंदिर मुनाव अभि ीवगां से बीद

श्रिम्या तो के विद्यी हेंगी भी महन

व उनमे उन

ह्याणी की जनसभाओं में माहौल काफी ह्याणी की जनसभाओं में माहौल काफी हुं कर हुं। दावणगेरे में ही अयोध्या मुद्दे कर हुं। दावणगेर में ही अयोध्या मुद्दे कर हुं। ते कारसेवक मारे गए थे. कि कि माल बढ़ा दी. इसी ने अपील की कि इन मौतों का हुंबाली ने अपील की कि इन मौतों का हुंबाली ने अपील की वोट देकर चुकाएं. जुके भाषण 'चाहे जो हो, हम राम कि जुकर वनाएंगे' जैसे वाक्यों से बोझिल

हो गए तो

नाए खा

मवालों हे

नेतागण

नाम' जहां तदाताओं सरे राज्यो जोर देना विद्धता मे जा सकता हैं, "लोग वनाने में ातर पार्टी हमें यही हिंदुत्व के तेसले का एक बार भारत में ो पार्टी में रोध करने

वाजपेयी पद के भगवा पश्चिमी का हैं के र्ताओं का कि पार्टी

भयान का र रहेगाः के वरिष्ठ "हमाराः —मजबूतः परिपक्त

तालमेन

इसलिए

ओं. पारी

हैं, 'हमें

खुद को

में प्रस्तृत

र चुनाव

है. इसते

ते होगा

नेकर देश

ह दौरों है

कं पिछलें के दौरान

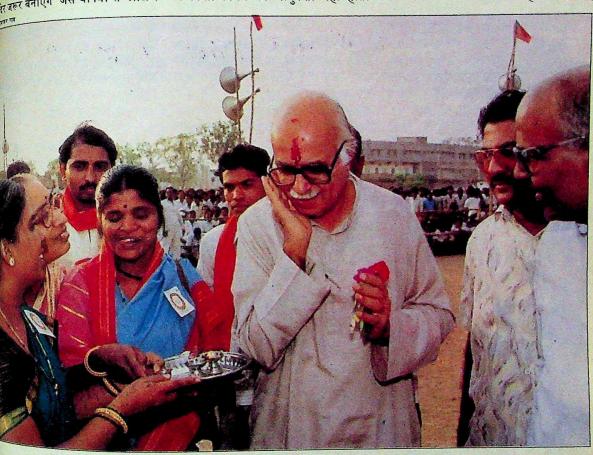
जोर पड़

रया अव्य

गस्कर रांध

शुरू करने से पहले भीड़ 'भारत माता की जय' और 'आडवाणी जिंदाबाद' के नारे लगाने लगती. जब वे जनता को बताते कि राजीव गांधी, वी.पी. सिंह और चंद्रशेखर की सरकारें क्यों इतनी बुरी तरह असफल रहीं, और क्यों अब भाजपा को एक मौका देने का वक्त आ गया है, तो उनकी आवाज में किसी किस्म की भावुकता नहीं होती. बार सबसे बड़ा सुखद प्रिवर्तन यह है कि सभी पार्टियों को अपनी नीतियों और महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपने रुख की साफ शब्दों में घोषणा करनी पड़ रही हैं."

उनके अनुसार भाजपा के पक्ष में दूसरा महत्वपूर्ण कारक पार्टी कार्यकर्ताओं पर ही निर्भर रहने की जगह नए चेहरों को मैदान में उतारने का फैसला है. इन नए



आडवाणी: "इस बार सभी पार्टियों को महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपना-अपना रुख साफ करना पड़ रहा है"

ति है जुनाव के बारे में उनका सिद्धांत यह कि हर बार एक गैर-राजनैतिक मुद्दा आता है और वोटों की दिशा तय कि है "1977 में इमरजेंसी के खिलाफ कि की असफलता की खीझ थी, तो कि में इंदिरा गांधी की हत्या से उपजी के मेंदे का घपला?" अब आगे यह की जिल्हा की जिल्हा में बोफोर्स के जिल्हा की जिल्हा से उपजी के मेंदे का घपला?" अब आगे यह की पाम मंदिर का होगा.

कृतिव अभियान के आखिरी चरण में भिर्मा में वीदर की ओर कूच करते वक्त आ मा तो उनकी जनसभाओं के बारे में कि अच्छी रहीं." आडवाणी के भाषण भिर्म महकाऊ नहीं रहे लेकिन भाषण जिस एकमात्र प्रसंग पर वे तैश में आ जाते वह था—उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव द्वारा उनकी रथयात्रा का विरोध. इस प्रसंग पर आडवाणी मुद्रियां बांधकर चीखते, "उत्तर प्रदेश के लोग यादव को सबक सिखाने का बड़े धैर्य से इंतजार कर रहे हैं."

पात्रा किताब में डूबे रहकर पूरी कर लेते हैं. उनके ड्राइवर की टिप्पणी थी, "जो स्थान उनके कार्यक्रम में शामिल न हों, वहां वे तब तक कुछ नहीं बोलते जब तक इसके लिए उन पर दबाव न डाला जाए." फिर भी यह पूछे जाने पर कि यह चुनाव अभियान इससे पहले के चुनाव अभियानों से किस तरह अलग है, वे कहते हैं, "इस

प्रत्याशियों में कुछ तो में जमे-जमाए कैरियर को छोड़कर आ रहे हैं.

इस सवाल का कि क्या भाजपा दक्षिण में कुछ असर डालेगी, आडवाणी गोलमील जवाब देते हैं, "असर तो सभी जगह होगा." लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि भाजपा पूरे जोर-शोर से चुनाव मैदान में उतर रही है. दक्षिणी राज्यों, पांडिचेरी, अंदमान लक्षद्वीप की 132 लोकसभा सीटों में से 100 पर पार्टी अपने उम्मीदवार खड़े करेगी. आने वाले हफ्तों में अटल बिहारी वाजपेयी विजयराजे सिंधिया, और सिकंदर बख्त जैसे इस पार्टी के सितारे नेता कर्नाटक आएंगे. ये नेता इतने भोले नहीं हैं कि दक्षिण से भारी जीत की उम्मीद करें, लेकिन वे इतना जरूर जानते हैं कि दक्षिणी राज्यों की वे ज्यादा दिन उपेक्षा नहीं कर सकते.

चंद्रशेखर

## फिर जडों की ओर

वरिष्ठ संवाददाता वाहेगुरु पाल सिंह सिद्धू ने चंद्रशेखर के साथ तीन राज्यों के दौरे में पाया कि वे निर्विकार भाव से प्रचार कर रहे हैं



सरकारी सफेद कारों का काफिला धूल उड़ाता हुआ पहुंचा और मंच के पास रुक गया. दरवाजे खुले और उसमें से दुबले-पतले दढियल चेहरे वाला शस्स उतरा. सधे कदमों

से वह आगे बढ़ा तो 'दिल्ली वाले चंदू काका जिंदाबाद' के नारों से दिशाएं गूंज उठीं. चंदू करौंदी) में शामिल हुए. जाहिर है कि 63 वर्षीय यह नेता अपना राजनैतिक कैरियर आगे बढ़ाने के लिए अपनी समाजवादी जड़ों की ओर मुड़ गया है. चंद्रशेखर के एक राजनैतिक सलाहकार ने गर्व से बताया, "कुछ साल बाद वे दूसरे जेपी (जयप्रकाश नारायण) बन जाएंगे."

प्रधानमंत्री के सरकारी विमान राजहंस की शान-शौकत के बावजूद लोहिया का oun सादगी का सिद्धांत जगह-जगह दिस का था विमान जैसे ही लखनऊ के लिए उहा खिचड़ी, करेला और रायता परोसा ग्या वरना राजीव गांधी के जमाने में तो दुनिक भर के पकवान परोसे जाते थे. पर चंद्रजेका के चेहरे पर शिकायत नहीं थी.

बनता दल

गर्टी सिर्फ

बनाने वार

मि ध्याव

पारियों ने

तिए हैं. औ

करने में जु

इस्त जनता

वहा रहा

ररकर बन

उपलब्धि य नहीं है. यह म्योंकि त मनमौजी त हमेशा टूटने इस पाट यहां तक ि क्ल मिलाव और वह थीमान क इस छवि व क्सर नहीं बनता दल वालमेल से नुनाव लड़ दावा किय अपने उम हकीकत से अफलातूनी

अब पार्टी : ममिति वन

लर पर दू

के तालमें

समिति में

प्रधानमंत्री

वतमंत्री

मुबह्मण्यम

चिमनभाई

और कर्नात

गामिल हैं.

भुद्दा उत्त

मरकारों व

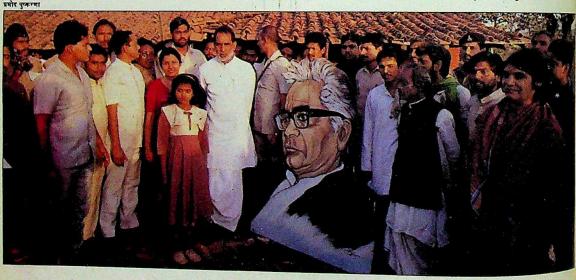
है अफवाह

हेका में श

इस स

कारों का काफिला अमौसी हवाई अहे दे बेगम हजरत महल पार्क (जहां मुलाया सिंह यादव ने लोहिया अधिवेशन है। आयोजन किया था) की ओर खाना हुआ वहां सड़कों के दोनों ओर लकड़ी की बल्लियां गड़ी हुई थीं पर भीड़ नहीं थे और सम्मेलन में 7,000 लोगों की मामूल भीड के सामने भी उनका उत्साह मह चुका. अड़ियल मुख्यमंत्री की वहां मौजुद्दी से ही सारा फर्क पड़ गया.

अपने लोहियावादी साथियों के साथ मंत्र पर विराजमान चंद्रशेखर संतोप ही प्रतिमूर्ति दिखे. मुस्कराते हुए, अपने साथियो



लोहिया का सहाराः "क्रांति तो गरीब की झोंपड़ी से शुरू हो सकती है"

काका यानी चंद्रशेखर ने अपने चुनाव अभियान की शुरुआत कर दी है, हालांकि जनता दल (समाजवादी) पहली औपचारिक च्नाव रैली 31 मार्च को नई दिल्ली में होनी है.

पहली ताल ठोकने के लिए चंद्रशेखर ने 23 मार्च का दिन चुना. इस दिन समाजवादी नेता राममनोहर लोहिया की 81वीं जयंती भी थी. डॉ. लोहिया को श्रद्धांजलि देने के लिए इस दिन वे दो कार्यक्रमों (लखनऊ और

अपने इस्तीफे के बाद यात्राएं: तारानगर, लखनऊ, करौंदी, इचलकरंजी, पटना, डुमरा, ्रिसवान, मसरक, छपरा, हिसार, कुरुक्षेत्र और

दूरी तय की: करीब 11,000 किमी.

सवारी: वायुसेना का विमान और अनेक सरकारी कारें.

रणनीति: अपनी हाल की सुधरी छवि के बावजूद पार्टी के गढ़ न होने से हर जगह अपनी उपस्थिति जताना उनके लिए मुक्किल होगा.

से बतियाते और मजाई करते हुए वे लोहिया के बार में वक्ताओं के विचार मु रहे थे. पर जब उनकी नज शामियाने के भीतर त बैनरों पर पड़ी तब वे थोड़ खिन्न जरूर हुए. उन <sup>व</sup> जय-जयकाः की यादव लिखी हुई थी. मसर्ता भुलायम सिंह नाम नहीं हैं आंदोलन है/शोषित, दिती का भगवान है. यादव बोलने के ति

खड़े हुए कहने लगे उन्होंने इंका का सम्बं लिया जरूर पर सिद्धांतीं है

34 . रिया ट्रेड • 15 अप्रैल. 1991

बनता दल (स)

दिस क

लिए उड़ा,

रोसा ग्या

नें तो दुनिय

र चंद्रशेषा

हवाई अहे ने

हां मुलायम

धवेशन ग

रवाना हुआ

लकडी हो

ड़ नहीं बी

की मामूली

उत्साह नही

हां मौजूदगी

के साथ मंत्र

संतोप की

पने सावियो

र मजान

ह्या के बार

विचार 🗗

उनकी नजी

भीतर तं

व वे थोड़ा

. उन प

य-जयकाः

. मसत्व

म नहीं ए

वत, दिती

के वि

त समर्थत

सिद्धांतीं है

## मौदेबाजी करने की इच्छा

वर्टी सिर्फ 40-50 सीटों पर जोर देने के मूड में ताकि सरकार बाते वाली पार्टी उसका समर्थन लेने पर मजबूर हो जाए

मध्याविध चुनाव के लिए डेढ़ महीने से भी कम का वक्त बचा है. सभी गरियों ने चुनावी तेवर अिल्तियार कर लिए हैं और अपनी-अपनी रणनीति तय करने में जुट गई हैं. लेकिन गुटबाजी से क्त जनता दल (स) डर-डरकर कदम खा रहा है. नवंबर में जनता दल से एकर बनी इस पार्टी की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि यह अब तक टूटी नहीं है. यह अविश्वसनीय उपलब्धि ही है स्वोंकि तरह-तरह के हताश और मनमैजी तत्वों के मेल से बनी यह पार्टी हमेंशा टूटने के कगार पर ही रही है.

इस पार्टी के पास संगठन, झंडा और वहां तक कि चुनाव चिन्ह भी नहीं है. कुल मिलाकर इसके पास एक ही पूंजी है और वह है प्रधानमंत्री चंद्रशेखर की 'शीमान कामयाव' की नई छवि. पार्टी इस छवि का भरपूर लाभ उठाने में कोई क्सर नहीं छोड़ना चाह रही है. शुरू में अनता दल (स) ने किसी राष्ट्रीय दल से तालमेल से साफ इनकार करते हुए अकेले <sup>चुनाव</sup> लड़ने की शेखी बघारी थी. उसने दाबा किया था कि वह 500 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़ा करेगी. लेकिन हिनेकत से दो-चार होने पर पार्टी ने ऐसे <sup>अफलातू</sup>नी दावों से तौबा कर ली. इसने अव पार्टी की आठ सदस्यीय उच्चस्तरीय मिनित बनाई है जो राष्ट्रीय और क्षेत्रीय भार पर दूसरे दलों से गठबंधन या सीटों है तालमेल पर विचार करेगी. इस क्षिति में प्रधानमंत्री चंद्रशेखर, उप-<sup>प्रधानमंत्री</sup> और पार्टी अघ्यक्ष देवीलाल, वितमंत्री यशवंत सिन्हां, वाणिज्यमंत्री विकाण्यम् स्वामी, मुलायम सिंह यादव, चिमनभाई पटेल, ओमप्रकाश चौटाला, और कर्नाटक के नेता एच.डी. देवगौड़ा

इस समिति के सामने सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा उत्तर प्रदेश और गुजरात की मुक्तारों को इंका समर्थन जारी रहने का के अफवाहें थीं कि मुलायम और चिमन भामिल होने वाले हैं. खास बात यह है कि ये दोनों नेता जनता दल (स) की कार्यकारिणी की दो दिवसीय बैठक में नहीं आए

लेकिन चंद्रशेखर के वफादारों का आकलन कुछ और है. उनकी दलील है कि चंद्रशेखर की जो छिन बनी है उसके कारण मुलायम या चिमन के साथ रहने या न रहने से चुनाव में कुछ खास फर्क नहीं पड़ेगा. परंतु दोनों मुख्यमंत्रियों ने कार्यकारिणी की बैठक खत्म होने के ही दिन दिल्ली आकर चंद्रशेखर और देवीलाल से मुलाकात की इससे साफ जाहिर होता है कि फिलहाल वे इन्हीं के साथ हैं. पर केवल इतना ही काफी नहीं है. वित्तमंत्री यशवंत सिन्हा कहते हैं, "आर या पार अब मामले का निवटारा कर ही देना है. या तो वे इका से नाता



- चंद्रशेखर की 'श्रीमान कामयाब' की छवि को मुनाने के भरसक कोशिशः
- जाट मतदाताओं के एकमुश्त बोट लेने का प्रयास.
- उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह यादव और गुजरात में चिमनमाई पटेल सरकारों के लिए इंका के समर्थन को बनाए रखना.

तोड़ दें या हम इंका से तालमेल कर लें."

देवीलाल के बेटे रणजीत सिंह की अगुआई में असंतुष्ट जाट गुट भी पार्टी के लिए परेशानी बना है. जगदीप धनकड़ विद्रोह का झंडा बुलंद करके इंका में जाने की धमकी दे ही चुके हैं. सुब्रह्मण्यम स्वामी भी पार्टी नेतृत्व पर इंका से तालमेल के लिए दवाब डाल रहे हैं. लेकिन इंका को जाट क्षेत्रों में अपने सक्षम उम्मीदवार खड़े करने का भरोसा है इसलिए वह ऐसे प्रस्तावों को खास महत्व नहीं दे रही. जद (स) के असंतुष्ट भी अब यह समझ गए हैं कि उन्हें टिकट सिर्फ जनता दल (स) से ही मिल सकता है. इसलिए उन्होंने बगावत का झंडा गिरा लिया है.

इस बीच चंद्रशेखर ने जाट मतदाताओं से सीधे अपील करने का फैसला लिया है. इसीलिए उन्होंने राजस्थान के जाट बहुल चुरु की जनसभा में चुनावी चाशनी उंड़ेली. उन्होंने मुख्यमंत्री भैरों सिंह शेखावत से कहा कि 'पानी की समस्या' से पीड़ित गांवों पर प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाइए. उसे 48 घंटे में पास कर दिया जाएगा.

चंद्रशेखर ने चुनाव के बाद की भी योजना तैयार कर डाली. वे मानते हैं कि अबकी भी संसद में किसी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलेगा. इसलिए उनकी पार्टी 40 से 50 सीटों पर ही जोर देगी ताकि सरकार बनाने को इच्छुक किसी दल को जद (स) का समर्थन लेना ही पड़े. इसीलिए इसके नेताओं ने चुनाव के बाद के तालमेल की संभावना से इनकार नहीं किया है.

जनता दल (स) की इस रणनीति का तकाजा है कि वह अभी किसी भी दल को अछूत न घोषित करे. इसीलिए कार्यकारिणी की दो दिन की बैठक के बाद पारित प्रस्ताव में गोलमोल बातें ही थीं. प्रस्ताव में राजनैतिक और सांप्रदायिक गड़बड़ियों के लिए न तो किसी पार्टी का नाम लिया और न ही किसी की नीतियों की निंदा की गई. मंडल और मंदिर जैसे मुद्दों पर भी साफसाफ कुछ नहीं कहा गया.

पार्टी के दोहरे रुख और चंद्रशेखर की छवि को देखते हुए लगता है कि चुनाव के बाद यह खास भूमिका निभा सकती है. लेकिन यह तभी संभव है जब पार्टी एक बनी रहती है.

-वाहेगुर पाल सिंह सिद्

समझौता नहीं किया. मानो वे कह रहे हों कि केंद्र में इंका से जनता दल(स) का गठजोड सिद्धांतहीन था

भोंडसी के बाबा जब उठे तो उन्होंने इसका जवाब भी दिया. वह भी बिलकुल लखनवी अंदाज में एक शे'र दागकर: 'मुझे दे न गाज ये धमिकयां/गिरें लाख बार ये विजलियां/मेरे सल्तनत-ए-आणियां/मेरी मिल्कियत ये चार पंख.' पंडाल में गूंजी वाहवाही से पता चल गया कि उन्होंने मैदान मार लिया है. उनकी ठक्राई जाग पड़ी. वे बोले कि आत्मसम्मान महत्वपूर्ण है. जिसने एक बार समझौता कर लिया उस पर राष्ट्र के सम्मान की रक्षा का विश्वास कैसे किया जा सकता है?

लखनऊ में चंद्रशेखर का पुराने बोट बैंक के प्रति सचेत राजनीतिक भी जाग उठा. वे समय निकालकर लखनऊ के ऐतिहासिक छोटे इमामबाई को भी देखने गए, जहां उन्होंने चादर चढ़ाई. जब वक्फ के अधिकारियों ने

उनके सामने इराक में एक शिया नेता की गिरफ्तारी का मामला उठाया तो वे उर्दू में बोलने लगे और खाड़ी क्षेत्र में शांति के लिए कुछ अबूझ-सी बातें कह डालीं.

इमामवाड़ें के बाहर जमा भीड़ ने उनका स्वागत किया. जवाब में चंद्रशेखर ने भी अपनी मुस्कान उन पर फेंकी. और इसके बाद यह काफिला एक और उड़ान के लिए हवाई अड्डे की ओर चल पड़ा. इस बार हेलिकॉंग्टर की यात्रा खजुराहों के पास करौंदी के लिए थी, जो मध्य प्रदेश के जवलपुर से 70 किमी दूर है.

इस पिछड़े क्षेत्र का चंद्रणेखर के लिए खास महत्व है. करौंदी डॉ. लोहिया की कर्मस्थली थी. इसे वे भारत का केंद्र मानते थे और यहां एक आदर्ण गांव स्थापित करना चाहते थे. चंद्रणेखर ने साथ चल रहे मध्य प्रदेण के राज्यपाल कुंवर महमूद अली खां से कहा, "मैं यहां लघु भारत बनाना चाहता हूं. जैसे मिलान में मिनीइटली है." यही वजह है कि उन्होंने युवा जनता दल (स) के पहले राष्ट्रीय अधिवेणन को संवोधित करने के लिए यही जगह चनी

यहां चंद्रशेखर ने 'गरीव वनाम अमीर'

Samaj Foundation Chennal and eGangotri

चंद्रशेखर का स्पष्टीकरणः "मैं तो चुनावों के लिए तैयार नहीं हूं."; (इनसेट) उनका बनाया रेखांकन

और 'शहरी बनाम ग्रामीण' की पुरानी परंपरा का लोहियावादी भाषण दिया, ''क्रांति

प्रधानमंत्री के दफ्तर से नहीं निकलती, यह अमीर या पैसेवालों के घर से नहीं आती, क्रांति तो गरीव की झोंपड़ी से ही निकल सकती है."

वहां जमा 5,000 की भीड़ में सिरोही तहसील के आसपास के गांवों के गोंड वनवासी, लोदी, कुर्मी और हरिजन थे, जो उन्हें शांतचित्त होकर सून रहे थे.

पर जनता दल (स) की एकमात्र संपत्ति, चंद्रशेखर की लोकप्रियता भी अब खत्म हो रही है. जिले के एक अधिकारी ने बताया कि एक महीने पहले ही उनकी रैली में 25,000 लोग आए थे. रैली में पास ही के एक गांव से साइकिलों पर आए कुछ लोगों का कहना था, "वे अच्छा वोलते हैं पर कुछ नया नहीं कर रहे. गरीबों की समस्याएं जस की तस हैं."

कुरुक्षेत्र के मंच पर उन्होंने चादर पर जो रेखाएं उकेरीं उससे भी उनकी निराशा जाहिर होती है. उन्होंने एक ऐसे आदमी का रेखांकन बनाया जिसके चेहरे से डर झलक रहा है और अजीबो-गरीब आकृतियां है लोगों ने इस रेखांकन को अपने-अपने ढंग से देखा.

वहां मैंने चंद्रशेखर से पूछा कि क्या वे डॉ. लेहिया के नाम का इस्तेमाल उमी तरह कर रहे हैं जैसे मंडल के नाम का वी.पी. सिंह कर रहे हैं? जवाब झल्लाहट भरा था, "ये सब वेकार की बातें हैं. क्या मैं डॉ. लोहिया का जन्म दिवस बदल दूं? क्या मुझे डॉ. लोहिया की बातें इसलिए बंद कर देनी चाहिए कि लोग इसे मेरे चुनाव अभियान का हिस्सा मान लेंगे?"

पौ फटते ही चंद्रशेखर उठ खड़े हुए. मनोहर गांव में घूमते हुए उन्होंने गांववालों से क्षेत्र के विकास कार्यों के बारे में बातचीत की. और सात बजते-बजते कारों का काफिला धूल उड़ाता हेलिपैड की ओर वढ़ गया. एमआई-8 हेलिकॉप्टर खुजराहो लौट रहा था.

वहां पहुंचकर वे कुछ देर बाद फिर विमान पर सबार हो गए. इस बार मंजिल थी महाराष्ट्र में इचलकरंजी, फिर अगले दिन हरियाणा का कुरुक्षेत्र. वहां उनके

भाषण में ऐसा लगा जैसे वे शास्त्रीय संगीत की मंद सप्तक शैली में बोल रह हों. शुरू होती है मौजूदा हालात पर गांधी और लोहिया के सिद्धांतों में प्गा लयकारी. मसलन, कुरुक्षेत्र में उन्होंने कहा कि वे भी गरीबों, दलितों और पिछड़ों के उत्थान के लिए महाभारत शुरू करने जा रहे हैं और अंत में उन्होंने अपने विचार इतने दनादन रखे जैसे कोई वादक झाला वजाकर श्रोताओं को चकाचौंध कर देता है. उसके बाद वे अपने विरोधियों <sup>पर</sup> वरसे. जब उनका जोश चरम पर था, अचानक ही वे ठंडे पड़ गए. और इसके पहले कि 'चंद्रशेखर जिंदाबाद' के नारे गूंजते, वे मंच से उतर चुके थे. तुरंत ही वे कार में बैठे और अगली रैली के लिए रवाना हो गए. मार्च के उत्तरार्ध के एक हफ्ते में ही वे आठ राज्यों के दर्जन भूर समारोहों में शामिल हुए, जाहिर है कि कामचलाऊ प्रधानमंत्री के पास ज्यादा समय नहीं है.



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

## लोगों के रुझान से तय होंगे नतीजे

राजनैतिक पार्टियों के भविष्य को तय करने वाले चुनावी रुखों और उनके नियामकों को आंकड़ों के जिरये समझा जा सकता है. इंडिया टुडे ने यह जानने के लिए कि मौजूदा चुनाव का वैज्ञानिक आकलन कैसे किया जाए, मशहूर चुनाव आंकड़ा विशेषज्ञ और टीवी टिप्पणीकार प्रणय रॉय से बातचीत की.

चुनाव अभी किस दौर में है?

द्भ निया के अधिकांश बड़े लोक-तंत्रों में चुनाव में सिर्फ एक ही दौर रहता है-प्रचार अभियान का. लेकिन भारत में बहदलीय व्यवस्था और अलग-अलग मतदाता समूह होने के कारण चुनाव के दो दौर होते हैं. पहला दौर, जो अभी चल रहा है, चुनाव के अंतिम नतीजों पर बहुत असर डालता है. इसी दौर में नेता और दल बदलते हैं, गठबंधनों का स्वरूप उभरता है और इससे इंका विरोधी पार्टियों की एकजुटता का स्तर (सूचकांक) निश्चित होता है तथा मतदाताओं के रुख में आने वाला बदलाव भी प्रभावित होता है. इंका को भी इसी दौर में दलबदल कराना और बेहतर चुनावी साथी ढूंढ़ना होता है. दूसरा दौर चुनाव प्रचार के साथ शुरू होता है. इसी दौर में मतदाताओं के रुख में बदलाव आता है. जो पार्टियां पहले दौर का महत्व न समझकर सिर्फ दूसरे पर ही घ्यान केंद्रित करती हैं उनको इसका नुकसान उठाना पड़ता है. वी.पी. सिंह ने पहले दौर का महत्व समझने में खुद को अव्वल सावित किया है तो राजीव गांधी चुनाव प्रचार वाले दौर में बेहतर

रुख में बदलाव क्या है?

क पार्टी के बोट दूसरे पार्टी में जाना ही बदलाव है. और यह बदलाव पूरे एक क्षेत्र में समान रहता है. पश्चिमी देशों में तो पूरे देश के स्तर पर एक-सा बदलाव होता है पर भारत में एक जैसा रुख आम तौर पर प्रदेश भर में ही रहता है.

कितनी सीटें मिलेंगी या खोएंगी यह दो बातों पर निर्भर है-एक, विपक्षी एकता का सूचकांक (विएसू) और दूसरे, किस पार्टी के पक्ष या विरोध में कैसी हवा है सभी चार्टः बी.फे. गर्मा इका का रिकार्ड सीटें जीतीं 352 1952 '57 '62 '67 '71 प्रतिशत बोट 48.1% 43.7 42.7 40.8 '62 '67 '71 . '77 '80 '84 '89 बोटों में प्रतिशत सुकाव +5.4 8.2 1977/ 1980 1980/ इंका के सिलाफ मुकाव +5% विपक्षी एकता सूचकांक औसत 73

मिसाल के तौर पर अगर आंध्र प्रदेश के एक भाग में मतदाता इंका से दूर हो गया है तो पूरे प्रदेश में आम तौर पर ऐसा ही होगा. एक ही प्रदेश में कहीं एक पार्टी के वोट बढ़ जाएं और कहीं घट जाएं ऐसा अमूमन नहीं होता.

विपक्षी एकता सूचकांक क्या है?

यह सूचकांक कांग्रेस विरोधी वोटों को बंटने से रोकने की खातिर इंका से सीधा मुकाबला करने के लिए विपक्षी पाटियों के बीच हुए तालमेल को बताता है. यह काम ऐसा चुनावी गठबंधन करके भी अंजाम दिया जाता है जितनी कम सीटों पर तिकोने या बहुकोणीय मुकाबले होते हैं यह सूचकांक उतना ही ऊंचा होता है.

विपक्षी एकता का इंका के चुनावी भविष्य पर क्या असर होता है?

पक्षी एकता दो तरह में व चुनाव परिणामों प्रभावित कर सकती है—मतदाताओं की अवधारणा और विशुद्ध चुनावी गणित से. अगर मतदाता को गह लग जाता है कि विपक्षी दलों में सचमुच एकता हो गई है, वे सरकार बना सकते हैं और उनका बीट वेकार नहीं जाएगा तो इंका की लोकप्रियता में गिरावट आ सकती है, जब दो पार्टियां गठबंधन करती है तो उनके परंपरागत बोट भी गु जाते हैं. पर, उनके दो-तीन फीसरी वोट घट भी जाते हैं. जैसे मान ते कि किसी राज्य में जनता दल के 20 फीसदी बोट हैं और भाजपा के <sup>15</sup> कार बोटों व

85 + 80 + 77 - 75 - 72 -

केदी. ऐसे में जि हैं तो इस मेदी बोट मि अराजगीं वाले जिंहें जैसे, अ अ मिला ले ते लि बोटों पर जा.

र् चुनाव 197 व 1980 या 1

तेम वार रे में विपक्षी वे है लेकिन े बहुत अंतर वे बहुत ऊंचा गिवों में औ निकांक 73 प ल्ता पार्टी ने वाह दिया थ अप १० है।हिं गे जो औसत रें असल, नदानाओं की <sup>के का</sup> विद्य में में 1989 भी नेमी लग रेवितः असन्तिर

गेट की गणिन

### विपक्षी एकता सूचकांक (विएसू) और वोटों के झुकाव में परिवर्तन के कारण इंकाई सीटों का अनुपात

क्राई बोटों का प्रतिशत 34%	35%	36%	37%	38%	39%	40%	41%	42%	43%	44%
हाइ बाटा	ना के खिला	फ झुकाव				इंका के पक्ष	में झुकाव			
% झुकाव -5	-4	-3	-2	-1			2	3	4	5
					A 198	9 स्तर				V

工	in f	र्दका की सीटें										
117	विएसू में परिवर्तन	3411				10 (A. 15)		NAME OF				
85	+8	83	93	109	127	137	155	175	187	205	221	238
80	+3	101	113	131	144	170	183	199	211	233	266	289
77	0	113	130	145	165	184	197	231	252	268	290	310
75	-2	120	138	155	179	210	227	244	260	288	305	321
72	-5	138	173	198	209	231	245	263	288	308	325	352
70	-7	165	188	205	223	239	258	276	300	321	340	361
67	-10	186	207	222	240	255	277	301	323	342	362	373
65	-12	200	217	237	249	271	299	318	334	361	371	383
												चार्ट नं

विरोधी रोकने की ऐसी ऐसे में अगर दोनों मिलकर ले हैं तो इस मोर्चे को करीब 33 मुकाबला खेरी वोट मिलेंगे. इस एकता से गर्टियों के गगजगीं वाले वोट बहुत ही कम ता है. यह मिहं जैसे, अगर इंका और द्रमुक धन करके विमिला ले तो इससे दोनों दलों के 🎙 बोटों पर खास अंतर नहीं

ये समझा , मशहर

गर आंध दाता इंका रे प्रदेश में ा. एक ही ने वोट बढ़ नाएं ऐसा

है जितनी

बहुकोणीय ांक उतना

तरह से

तदाताओं

चुनावी को पह

दलों मे

सरकार

का बोट

इंका की

ा सकती

करती है

भी गु

फीसदी

मान ते

ल के 20

ग के 15

तें

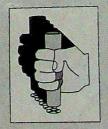
🎖 बुनाव 1977 जैसा है <sup>ग 1980</sup> या 1989 जैसा ?

रें वार 1989 की तुलना प्रविपक्षी एकता सूचकांक तो विकेत इतना नीचे भी नहीं बहुत अंतर डाले. 1989 में भी विकृत ऊचा नहीं था. पिछले आठ विं में औसत विपक्षीं एकता कित 73 पर था. 1977 में जब ना पार्टी ने कांग्रेस को एकदम विया था तब यह सूचकांक हाई 90 पर था. 1989 में यह 77 ों औसत से 4 अंक ऊपर था. रेखिमल, 1989 का चुनाव नित्राओं की राय के महत्वपूर्ण के विद्या उदाहरण है. अनेक ते तो 1989 की विपक्षी एकता कि विभी यह उनकी राय थी कि अमिलियत अलग् थी. लेकिन के गणित उत्तर प्रदेश गुजरात

सीटों की भविष्यवाणी कैसे करें

- 1. चार्ट 1 को दिशानिर्देश मानते हुए 1991 के चनाव के लिए विपक्षी एकता सूचकांक चुनें.
- 2. पिछले चार चुनावों में वोटों के रुख में बदलाव और चार्ट 1 में दर्ज इंका को मिले मतों के प्रतिशत के आधार पर संभावित बंदलाव का रुख पहचानें.
- 3. अब अपने चुन विपक्षी एकता सूचकांक को संभावित बदलाव से जोड़कर भविष्यवाणी करने के लिए चार्ट 2 का प्रयोग करें.

1989 के चुनाव में यह सूचकांक 77 था, और इंका को 197 सीटें मिलीं. उसी सूचकांक पर इंका के पक्ष में एक फीसदी बदलाव होने पर उसे 231 सीटें मिल जाएंगी. एक फीसदी उलटा बदलाव होने पर यह संख्या घटकर 184 रह जाएगी.



और मध्य प्रदेश में एकदम अलग ढंग से चला. दरअसल उत्तर प्रदेश में सूचकांक मात्र 64 पर था लेकिन ऐसा लगा कि इंका विरोधी सभी दल एकजुट हैं. इस एहसास ने काफी वोट इंका के खिलाफ और विपक्ष की ओर कर दिए. इसने उत्तर भारत में इंका के खिलाफ मतदाताओं का रुख भी तय किया होगा.

1980 का उदाहरण लें जब इंका सत्ता में वापस आई. तब विपक्षी एकता सूचकांक 65 पर आ गया था. यानी 1977 से 25 अंक नीचे. और यह जीत इंका के हक में गई. इस बार मुचकांक की गिरावट का इतना नाटकीय असर नहीं दिखेगा क्योंकि अगर यह 65 परं भी रुकता है तो इस बार गिरावट 12 अंकों की ही

'विएसु' और वोटों में बदलाव का सीटों पर असर

टे तौर पर विपक्षी एकता सूचकांक में तीन अंकों की गिरावट इंका को 15 से 20 सीटें अधिक दिलवा देती है. लेकिन मतदाताओं की पसंद में एक फीर्सदी (क्ल पड़े वोटों का प्रतिशत) का बदलाव भी विपक्ष की ओर हो गया

तो इंका की यह बढत समाप्त हो जाती है. जैसे 1989 में इंका ने 39.5 फीसदी वोट पाए. अगर यह 38.5 फीसदी हो जाए तो इसका अर्थ इंका के सीटों में 20 की कमी है. लेकिन अगर 'विएसू' 77 से गिरकर 74 पर आ गया तो इंका को 20 सीटें ज्यादा मिलेंगी और उसके वोट कम होने से पड़ने वाला असर समाप्त हो जाएगा. लेकिन इस चनाव में विपक्षी एकता सूचकांक में बदलाव मतदाताओं की धारणा के असर से ज्यादा महत्वपूर्ण शायद ही हो. विपक्षी एकता या अलगाव के बारे में लोगों की जो धारणा बनेगी वह इंका के पक्ष में या विपक्ष में होने वाले बदलाव की दिशा तय करेगी.

### बहकोणीय या सीधे मुकाबलों का चनाव पर क्या असर होता है?

नारे देश की चुनावी व्यवस्था में अगर किसी पार्टी को मिलने वाले मत एक खास सीमा को पार कर जाएं तो उसका असर अधिकांश राज्यों पर होता है. दो पार्टियों में सीधा मुकाबला हो तो यह सीमा 44 फीसदी होती है और तिकोना मुकाबला हो तो 35 फीसदी.

यह पेचीदा चुनावी व्यवस्था एक मजेदार स्थिति भी पैदा करती है यानी पड़े मतों में ज्यादा अंतर न होने से भी कुछ पार्टियां बाजी मार लेती हैं. तीन मूख्य प्रति-द्वंद्वियों में जो पार्टी इस सीमा को पार कर ले वह उस प्रांत की सारी सीटें जीतने की स्थिति में होती है. तिकोने मुकाबलों में यदि कोई पार्टी एक निश्चित सीमा से ज्यादा वोट ले लेती है तो इस चुनाव में हो सकता है कि अलग-अलग प्रदेशों में मजबूत अलग-अलग पार्टियां एकतरफा जीत हासिल करें.

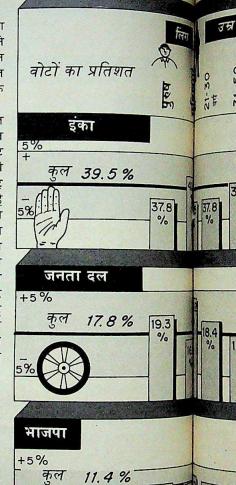
भाजपा या जनता दल की संपूर्ण जीत के लिए क्या जरूरी है?

सी भी अन्य दल की तरह भाजपा या जनता दल के लिए तिकोने मकाबले में जीत हासिल करना आसान होगा क्योंकि सीधी भिडंत में वोट प्राप्त करने की खास सीमा बढ जाती है. यह एक राज्य में 45 फीसदी तक हो जाती है.

पिछले चुनाव में देश भर में पड़े कुल वोटों के भाजपा ने 11.4 प्रतिशत हासिल किए. पर कछ राज्यों में इससे ज्यादा वोट पाए. लेकिन इसमें भाजपा का नुकसान भी है, खास तौर पर मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र जैसे उन राज्यों में जहां वह मजबूत है लेकिन जनता दल कमजोर है. यहां मुकाबले दरअसल तिकोने नहीं होंगे. ऐसे में इन राज्यों में वोट प्राप्त करने की खास सीमा और बढ जाएगी और उसे पाना उतना ही मुश्किल होगा. इस मामले में जनता दल सौभाग्यशाली है क्योंकि बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे जिन राज्यों में वह मजबूत है वहां मुकाबले तिकोने होंगे और उसकी वोट प्राप्त करने की खास सीमा कम होगी. ऐसे में पार्टी इन राज्यों में कम वोट पाकर भी जीत सकती है.

#### क्या बड़े वोट बैंक भी एकदम बदलते हैं?

वंबर 1989 में मतदान केंद्रों से बाहर आ रहे लोगों का जो सर्वेक्षण 'इंडिया ट्डे-मार्ग' ने किया था, उससे पता चलता है कि वोट बैंक एकदम नहीं बदला करते. जैसे, इंका को पूरे देश में 39.5



11.9

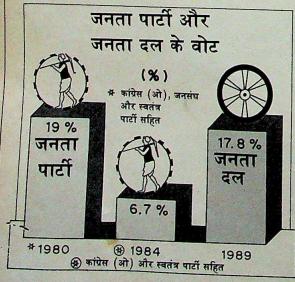
विभाजनं

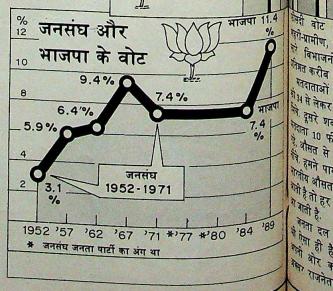
<sup>मृतदाताओं</sup>

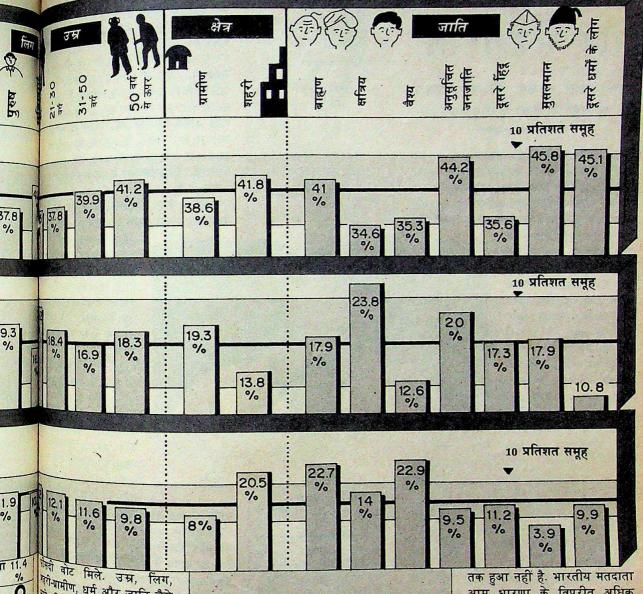
नेनता दल

1989

मर्वेक्ष







भी-ग्रामीण, धर्म और जाति जैसे विभाजनों में यह औसत किंगत करीब ऐसा ही था.

भत्राताओं के हर समूह से इंका असे लेकर 45 फीसदी तक वोट में दूसरे शब्दों में कहें तो सारे भारता 10 फीसदी के घेरे में ही असत से 5 फीसदी ऊपर या भित स 5 फासदा अस्ति । हमने पाया कि अगर अखिल कार्याय औसत प्रतिशत में गिरावट को है तो हर समूह में यह गिरावट

काता दल का समर्थन आधार भोगा देल का समयन जा ही है. पूरे वोट बैंक को की है। हैं पूर वाट की और करने का जो स्वाब किर करन का जा राजनेता देखते हैं वह अभी

सभी राजनैतिक पार्टियों के औसत राष्ट्रीय प्रतिशत वोट में उम्र, लिंग, जाति और क्षेत्र— हर समूह का मतदाता शामिल है. समी मतदाता समूह 10 फीसदी के घरे में ही रहते हैं, औसत से पांच फीसदी ऊपर या नीचे. इससे न सिर्फ यह संकेत मिलता है कि भारतीय मतदाता अधिक समरूपी है बल्कि यह भी कि वोट बैक एकदम नहीं बदला करते, वे पार्टी की औसत के थोड़ा ऊपर-नीचे रहते हैं.

आम धारणा के विपरीत अधिक समरूपी रहा है.

यही हाल मुसलमान वोटों का भी है. 1989 में इंका के मुस्लिम वोटों में कमी आई पर थोक भाव में वोट नहीं टुटे. दरअसल, इंका को वोट देने के मामले में मुसलमानों का औसत दूसरे मतदाता समूहों से कहीं अधिक था.

सिर्फ भाजपा ही इस आम हिसाब से एकदम अलग-थलग रही है. छिटपूट मुसलमानों और थोक भाव में ब्राह्मणों के वोट पाने वाली भाजपा पर दूसरी राजनैतिक पार्टियों की तरह दस फीसदी के घेरे वाला फार्मूला लागू नहीं होता.

उत्तर प्रदेश

मंदिर बोलेगा और मंडल भी

असली टक्कर भाजपा और जनता दल में होने की उम्मीद, इंका अभी द्विधाग्रस्त

स्तृत उत्तर प्रदेश ही शायद एकमात्र ऐसा राज्य है जहां मंडल और मंदिर दोनों ही मुद्दों पर वास्तविक जनमत संग्रह होगा. हालांकि इंका राज्य में वापसी की पुरजोर कोशिश में स्थायित्व के तुरुप का इस्तेमाल कर

रही है पर जगजाहिर है कि यही एकमात्र तुरुप नहीं है जो जातीय और सांप्रदायिक मुद्दों पर विभाजित चुनावी बाजी में कारगर सिद्ध होगा.

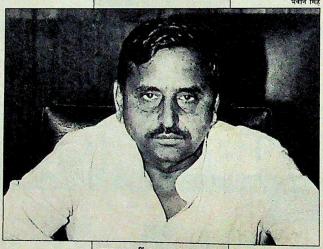
हालांकि सभी प्रमुख खिलाड़ी तीनों ही मुद्दों में तालमेल बिठाने को मजबूर हुए हैं पर असली टक्कर तो भाजपा और विश्वनाथ प्रताप सिंह के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय मोर्चे के बीच ही होनी है. दोनों ने ही मंडल और मंदिर पर थोड़े-बहुत हेरफेर के साथ अपनी स्थिति एकदम सुस्पष्ट कर रखी है और उनके लिए

स्यायित्व के मुद्दे को भी साथ जोड़ लेना बहुत आसान है. इंका का रुख स्थायित्व के मुद्दे पर तो स्पष्ट है पर मंदिर और मंडल के मुद्दे पर उसकी

द्विधा बरकरार है.

लोकसभा के कुल सदस्यों के छठे हिस्से का चुनाव करने वाले राज्य के 8 करोड़ मतदाताओं की एक और अनोसी विशेषता है, जो माहिर से माहिर खिलाड़ी की बाजी पलट सकती है. इसके इलाके पूरी तरह जाति या संप्रदाय के आधार पर बंटे हुए हैं. पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जाटों और मुसलमानों का वर्चस्व है तो पूरव में यादवों और कुर्मियों के कुछ क्षेत्रों के अलावा बाहुल्य ठाकुर और बाह्मण जैसी ऊंची जातियों का ही है. मध्य उत्तर प्रदेश में पिछड़े और हरिजन प्रभावी हैं तो पहाड़ी इलाकों के मतदाताओं का समीकरण कुछ अलग ही है. अभी तक यह बता पाना मुश्किल है कि हवा किधर वह रही है.

फिलहाल, प्रारंभिक अनुमान तो यही है कि चुनाव प्रचार गरमाने के साथ सांप्रदायिक र्विभाजन बाकी मुद्दों को ग्रस लेगा. यह विभाजन भयोध्या की कार सेवा के बाद राज्य के 63 में से



मुलायम सिंह यादवः आधार घटा

दलगत स्थितिः कुल सीटें : 85, जनता दल: 33, जनता दल (स): 18, इंका: 15, भाजपाः ८, बसपाः २, भाकपाः 2, माकपाः 1, हिंदू महासभाः 1, निर्दलीयः 2, रिक्तः 3

मुकाबलाः तिकोना

मौजूदा रुझानः इंका, माजपा और जनता दल में. टक्कर. भाजपा ताकत बढ़ा सकती है

मुख्य मुद्देः मंडल और मंदिर मुद्दे पर वस्तुतः जनमत संग्रह.

41 जिलों में भड़के दंगों के बाद तेज हो गण कि वर अमेठी, फतेहपुर और कानपुर समेत अधिकार महत्वपूर्ण क्षेत्रों में जिस तरह भगवा ध्वज क ओर लहराते दिखते हैं, वे इस बात का संकेत कि भाजपा जनता दल और इंका को उन्हें पारंपरिक गढ़ों में चुनौती देने को कटिबढ़ है जनता दल विधायक गुट के नेता रेवतीरमण मि कहते हैं, "इस बार लोग व्यक्तियों के बत पार्टियों के लिए मतदान कर सकते हैं" यह उने मन में बैठा डर ही बोल रहा है कि भाजपा की पार्टी बाजी मार ले जा सकती है. भाजपा कल्याण सिंह कहते हैं, "लोग उन पार्टियों हो आजमाना चाहेंगे जिन्हें अभी तक मौका नहीं मिला है." निश्चित रूप से भाजपा इसी मौके हो तलाश में है.

इसलिए हैरत की बात नहीं है कि इंका और मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव का जनता त

(स) संयुक्त मोर्चा बनावे की बात सोच रहे हैं. पिछने पखंवाड़े उनकी चार-बार बैठकें हुई. करीब-करीब ग्र तय है कि कानपुर से मैनपुरी तक फैले मध्य उत्तर प्रदेश में लगभग 15 सांसदों पर अस रखने वाले मुलायम मि यादव लोकसभा चुनावी न भी चर्चा के मुख्य बिंदु रहें।

यादव सरकार और उनके मौजदगी कार्यकलाप को जनता स और भाजपा चुनावी मुर बनाएंगे. और अगर इंका की जनता दल (स) से तालमें नहीं हो पाता तो वह भी

यादव की कई नाकामियों पर तीसे प्रहार करेंगी मंडल मुद्दे पर आश्रित वी.पी. सिंह का जनता ल यह बात उछालेगा कि सत्ता में चिपके रहते लिए ही यादव ने चंद्रशेखर और इंका से मिलकी षड्यंत्र किया. भाजपा मंदिर मामले में यादव कड़े रुख को सांप्रदायिक रवैया साबित करने हैं कोशिश करेगी.

अभियान के आरंभिक चरण में जनता व अजित सिंह का ज्यादा-से-ज्यादा उपयोग पश्चिमी उत्तर प्रदेश पर घ्यान केंद्रित करेगा. इ क्षेत्र के कुल 20 में से 14 सांसद उसके हैं. पूर्व प्रचार के मुख्य नायक वी.पी. सिंह ही होंगे. गाँ के लिए एक और ताकतवर क्षेत्र होत्वंड हो जहां उसके 10 में से 5 सांसद हैं. लेकिन लगहा कि 30 फीसदी मुसलमान आबादी वाले हैं इलाके में बेहद सांप्रदायिक स्तर पर मत्वा होगा और इसलिए भाजपा के लिए भी महत्वपूर्ण है.

जनता दल (स) जुरुआती अभियान में पूर्व उत्तर प्रदेश में ध्यान केंद्रित करेगा जहां उसकें में से 7 सांसद हैं. इस क्षेत्र में पिछले बुनाबों

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kand

ला है लेवि व आधे जिलो ला हा है. हं भाजपा इन त प्रदेश इंका मकता है. या अमेठी (पूर्वी ता प्रदेश), क हा। जैसे कुछ लों से बातची तंत्रपनी अपील ारी मारने की ता उनका प्र र्तपरी तरह

ग्रज्ञपा की आं हा के 48 वर गं प्राप्तस्त हैं ावा देगे. फते शीनान पांडेय गरव की फै रगानता से र वहते हैं, तो

र्रजाबाद के

मीलाल का गतमेल कर

ज्य में । सिफानि व्यमंत्री वन गेवों की किर व्य और उन केर देवीलाल बीटला वि देख मंत्री तव कार्यकत कों को लो क्षीदवार तव वीलाल तथा हो बड़ा करन

की की आस वेदों का बंट रेहात और कि

ियेत्र से ला

हो गुणक कर पर मतदान जातीय आधार पर ही अधिकार भारति है तेकिन पिछले साल पूरव के कम-से-विश्वी जिलों में सांप्रदायिक हिंसा या कर्फ्यू ला रहा है. यहां धर्म मुख्य मुद्दा बन गया है. क्षाजपा इन जिलों में जोर लगाएगी. मध्य त प्रदेश इंका के लिए मजबूत आधार साबित कता है यहां उसके 15 में से 5 सांसद हैं. को (पूर्वी उत्तर प्रदेश), इटावा (पश्चिमी ब्राप्रदेश), कानपुर और बिल्हौर (मध्य उत्तर मा असे कुछ क्षेत्रों में 'इंडिया टुडे' की अनेक भाजपा है जो से बातचीत से पता चलता है कि नेता भले पार्टियों हो किशनी अपील को व्यापक बनाकर हर मंच पर मौका नहीं विमारने की कसरत में जुटे हों, मतदाता मुद्दों भी मौके को ता उनका प्रतिनिधित्व करने वाली पार्टी के र्तपरी तरह सचेत हैं.

क्षाबाद के नामी वकील वीरेश्वर द्विवेदी को इंका और व्या की आंधी चलती दिखती है, तो उसी जनता दत ोर्चा बनाते ए के 48 वर्षीय चिकित्सक डॉ. मुहम्मद रफी है हैं. पिक्षने गंजाखस्त हैं कि मुसलमान भाजपा का सफाया चार-चार गता देंगे. फतेहपूर के छोटे किसान, 30 वर्षीय -करीब वर् श्रीताल पांडेय वी.पी. सिंह और मुलायम सिंह र से मैनपुरी व्य की फैलाई जातीय तथा सांप्रदायिक गाउनता से मुक्ति के लिए इंका को वोट देना हों हैं, तो इसी क्षेत्र में हसवा में खोमचा

इस बार शक्ति संतुलन वर्ग, जाति तथा कुछ हद तक धर्म की भावनाओं से तय होगा. यदि इंका पुरानी हैसियत पा भी लेती है तब भी भाजपा को ही फायदा मिलता दिखता है. जनता दल को अपनी ताकत बरकरार रखने के लिए जोर लगाना पडेगा.

लगाने वाले, जाति से कुर्मी, 45 वर्षीय शिवराम सिंह का समर्थन वी.पी. सिंह को है "क्योंकि वे पिछड़ों के लिए लड़ रहे हैं:" यहां तक कि जिन लोगों ने अभी मन नहीं बनाया है, उन्हें भी पता है कि पार्टियों का क्या रुख है. फतेहपुर के 45 वर्षीय दर्जी, मुहम्मद इदरीस कहते हैं, 'किसी को भी एकमुश्त समर्थन नहीं मिल पाएगा. वी.पी. सिंह प्रधानमंत्री रहते हुए भाजपा से मिलकर साजिश कर रहे थे, मुलायम सिंह यादव ने पीएसी से मुसलमानों को मरवाया और इंका अयोध्या में ताला खोलने की जिम्मेदार है. आम तौर पर हमारे वोट तीनों पार्टियों में बंट जाते. लेकिन अब ये हालात पर निर्भर हैं."

कुल मिलाकर उत्तर प्रदेश में इस बार शक्ति संतुलन बड़े पैमाने पर वर्ग तथा जाति और कुछ हद तक धर्म की भावनाओं से तय होगा. अगर इंका पिछली बार खोई अपनी पुरानी हैसियत भी पा लेती है, तब भी भाजपा को ही फायदा मिलता लगता है. वामपंथियों की कोई औकात नहीं है और जद को अपनी ताकत बरकरार रखने के लिए जोर लगाना पड़ेगा. लगता है जनता बदलाव चाहती है पर विभिन्न मुद्दों पर ध्रुवीकरण के महेनजर आखिरी फैसला चौंकाने —दिलीप अवस्थी वाला हो सकता है.

ध्वज गृ

का संकेत है को उनके

कटिवद्ध 🛊

ीरमण सिंह

ों के बदने

'' यह उनके

राजपा जैसी

तर प्रदेश में

रों पर असर

रायम सिंह चुनावों मे बिंदु रहेंगे कार बी र उनके

जनता दत

नावी मुहा

ार इंका की से तालमें

तो वह भी हार करेगी

जनता रह

के रहने क

से मिलका

में यादव है

त करने की

जनता देव

पयोग की

करेगा. ह

हैं. पूर्व हैं।

लखंड होग

न लगता

वाले इत

र मतदान

ए भी ग

ान में पूर्व

चुनावों है

<sup>विलाल</sup> का मोर्चा जद और भाजपा से निमेल कर जबदरस्त चुनौती देगा

िण्य में विधानसभा चुनाव के विपस सिफारिश करने के लिए ही वापस अमिप्रकाश चौटाला सबकी भोतें की किरकिरी बन गए हैं. बंसीलाल का व और उनके इर्द-गिर्द विपक्ष का जुटना उन्हें के स्वीलाल को महंगा पड़ता लग रहा है. वैटला विरोधी लहर इस कदर हावी है वि मंत्री तक साथ छोड़ गए) कि जनता दल ि कार्यकर्ताओं में हार का डर बैठ गया है. भि को लोकसभा सीटों के लिए उपयुक्त भोदनार तक नहीं मिल पा रहे हैं. संभव है विलाल तथा 'कठपुतली ' मुख्यमंत्री हुकुम सिंह भेषडा करना पड़े. यहां तक कि चंद्रशेखर को भित्र में लड़ने का न्यौता दिया जा रहा है भिकी आम दो ही बातों पर टिकी है विपक्ष के तं उसके अ भें की बंटवारा, और दूसरा, देवीलाल के की और किसान समर्थक नारे.

दलगत स्थिति: कुल सीटें: 10; इंका 4; जनता दल (स) 4; रिक्त: 2.

मुकाबलाः बहुकोणीय

मौजुदा रुझानः बंसीसाल की हरियाणा विकास पार्टी एक मजबूत विकल्प के रूप में उमरी है और संभवतः जनता दल और माजपा दोनों से गठबंधन करेगी. वह ताऊ और उनके बेटों के खिलाफ नाराजगी का भी फायदा उठाएगी. इंका में समस्याओं के बावजूद कुछ राहत का एहसास.

मुख्य मुद्देः देवीलाल और उनके कुनबे से मुकाबला शायव सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक



बंसीलालः मैदान संमाला

इंका की अपनी ही समस्याएं हैं. आनंद सिह डांगी के साथ आ मिलने से इसे थोड़ी राहत जरूर मिली है. इंका में थोड़ा जोश इस नाते भी है कि 1989 में विपक्षी ताकतों के संगठित होने के बावजूद उसने चार सीटें जीत ली थीं. वोट खींचने की ताकत रखने वाले पार्टी के मुख्य नेता भजनलाल फरीदाबाद से चुनाव लड़ने को उत्स्क हैं तो पार्टी पिछड़ी जाति के एक उम्मीदवार के अलावा अंबाला और सिरसा सीटों के लिए अनुसूचित जातियों के दो उम्मीदवारों को खडा करने पर विचार कर रही हैं.

कुल मिलाकर स्थिति अस्पष्ट है, सिव इसके कि देवीलाल और उनके लाल के लिए खतरे की घंटी बज रही है. अपन क्या स्व

बिहार

### जातीय गणित फिर से हावी

लालू यादव के आत्मविश्वास भरे चुनाव अभियान से इंका आतंकित

''बिहार में लालू लहर के अलावा और कोई - मुख्यमंत्री लालु प्रसाद यादव

भेले ही चुनावी शब्दाडंबर य ह भल हा जुलाल लेकिन इससे एक कड़वी सचाई सामने आती है. वह यह कि बिहार में पिछड़ों और

अगड़ों के बीच का जाति युद्ध खतरे की सीमा पार करने जा रहा है. दरअसल, छह महीने पहले राष्ट्रीय राजनीति के मंडलीकरण से ही जाति युद्ध का आखिरी दौर भी गुरू हुआ था.

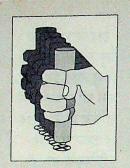
आत्मविश्वास से भरे लालू प्रसाद यादव जैसे-जैसे अपनी चुनावी लड़ाई की योजना पर से परदा हटा रहे हैं, इंका आतंक में तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त कर रही है. पूर्व मूख्यमंत्री और पार्टी की राज्य इकाई के अध्यक्ष

जगन्नाथ मिश्र ने राज्यपाल मुहम्मद शफी कुरेशी को ज्ञापन दिया जिसमें आशंका जाहिर की गई कि पिछड़ों की गुंडागर्दी से दूसरी पार्टियों को चुनाव में काफी नुकसान होगा. मिश्र की आशंका चाहे कितनी ही सही हो, इसमें दो राय नहीं कि लालू ने महज अपने राजनैतिक शब्दाडंबर से, जिससे मनोवैज्ञानिक 'लालू लहर' पैदा हो गई है, चुनाव पूर्व लड़ाई का पहला दौर जीत लिया है.

इस बात के सबूत पटना में ही नहीं, गांवों, शहरों और निर्वाचन क्षेत्रों में भी दिखे, जहां लोग अगड़ों-पिछड़ों की लड़ाई के बारे में खुलेआम बातें करते हैं. हर गांव में लोग 'मंडल के समर्थन और विरोध में हैं. वैशाली के बुजुर्ग तौरा गांव के युवक रामिकशोर यादव ने कहा, "हमें (पिछड़ों को) तो जनता दल से ही सरोकार है."

बिहार की चुनावी तस्वीर के जाति के रंग में रंगे होने से मंडल चैंपियन रामविलास पासवान जैसे नेताओं की अलोकप्रियता या जनता दल के विनियादी ढांचे का अभाव जैसे दूसरे मुद्दे दब गए हैं. मसलम, पासवान के निर्वाचन क्षेत्र में जनता हुल का न तो कोई दफ्तर है और न कोई भेहाधिकारी. यही बात प्रदेश स्तर पर भी लागू

हैं 4 डिंगा दे के गड अप्रैमी: 1001





लालू प्रसाद यादवः ताल ठोंककर अखाडे में

दलगत स्थितिः कल सीटें: 54; जनता दल: 20; आईपीएफः 1; माकपाः 4; जद (स): 10; झामुमो: 3; भाजपाः 9; माकपाः 1; इंकाः 4; मक्सिस्ट कोआडिनेशनः 1; रिक्तः 1

मुकाबलाः त्रिकोणीय

मौजुदा रुझानः जनता वल मंडल के मरोसे; इंका 'लालू लहर' से आतंकित.

मुख्य मुद्देः जातिवाद के आगे अलोकप्रिय नेतृत्व और संगठन की कमजोरी जैसे मामले भी दब गए हैं.

होती है क्योंकि पदाधिकारी के नाम पर पार्टी प्रमुख रामसुंदर दास ही हैं जो लाल कार के में बिलाफ असंतुष्टों को भड़काने में लगे हैं.

एक और कड़वी सचाई यह है कि सामान मतदाता, चाहे वह किसी भी जाति का हो, अप विवेदा हुई ऊपर इतनी जल्दी-जल्दी चुनाव थोपने राजनेताओं से नाराज है. उसका मानना है कि वाली भ राजनेता अपने तुच्छ राजनैतिक स्वार्थों के चले वं आई। जा ऐसा कर रहे हैं. वैशाली जिले की दीघी पंचाय हैं मिलेंगी. उ के मतदाताओं ने इसके विरोध का एक अनोक कारण ये ज तरीका निकाला है. उन्होंने इस चुनाव का कि इंदर सि बहिष्कार कर दिया है. अवकाशप्राप्त स्का अग्रई वाले शिक्षक, 65 वर्षीय रामलखन चौधरी ने केंद्र हो काफी नुकस होकर कहा, "हम चुनाव के खिलाफ हैं और हा पिछले साल पंचायत के 4,000 मतदाता वोट नहीं देंगे."

जातिवाद का बोलबाला होने के कारण इंका बता दल (स सहित ज्यादातर राजनैतिक पार्टियां सभी आहेवं रह गए निर्वाचन क्षेत्रों के लिए ऐसे उम्मीदवारों की होत है तेकिन सम

में व्यस्त हैं जो धन, बन निर्म सहयोगी और जाति जैसी चुनावी डियन पीपुल्स जरूरते पूरी कर सके लिए ही अ नालंदा जिले के हरतीत ब्लॉक के इंका अध्यष्ट विदेश्वर प्रसाद सिंह कहा । जिस्थान हैं, "आज के माहील हैं चुनाव व्यक्तित्व और जाति के आधार पर ही लड़ राजनैतिक विचारधारा या मान्यताओं के आधार पर नहीं."

चुनाव का बिगुल बा जाने से लड़ाई का नजाग अब स्पष्ट हो गया है. अब

इस चुनाव को पिछड़ों से हिसाब-किताब चुकता करने का मौका मान रहे हैं. पिछड़े इसे सता प काबिज होने और एक ऐसे राज्य में अपनी राजनैतिक आधार मजबूत करने का सुअवसर मान रहे हैं जो लोकसभा में उत्तर प्रदेश के बार सबसे अधिक सदस्य भेजता है, जाहिर है, बिहार में चुनावी दांव इतना ऊंचा पहले कभी नहीं बी

लेकिन विडंबना यह है कि निराश इंका इं स्थिति में भी चुनाव जीतने की उम्मीद कर है है. पार्टी नेताओं का मानना है कि मतदाताओं की एक बड़ा तबका जाति युद्ध में शामिल होने की अनिच्छुक है इसलिए 'स्थायित्व' का उनका ना कारगर साबित हो सकता है. यह पहला मौका जब पार्टी ने उम्मीदवारों के चयन में जिला और ब्लॉक स्तर के कार्यकर्ताओं को शामिल करते फैसला किया है. 54 सीटों में से हरेक सीट लिए वह तीन नामों की सूची बनाने की हों रही है. इसमें से जो उम्मीदवार 'लालू वहाँ यानी पिछले एक साल में उनके द्वारा पैदा हुए पिछड़ी जाति के उन्माद को रोकने के कार्बि पाया जाएगा, उसे ही टिकट दिया जाएगा.

जहां सभी पार्टियां चुनाव के लिए जातियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विवृद्ध सभी सी ने आएगी. 19

भ में से 11

गजपा सरव हेकारण इंट

१ । भ्रष्टा नीजावाद के ला हरिदेव ज <sup>हे</sup> आत्मविश्वा ो भाजपा व निया सरका वैताह ही ल और इंका िपछले साल रेली स्थिति वतंबर में हु भेने कुछ औ विधां जब ज नीए तब पा कियमी राजा शे बहुत अस

हतना 'ही भे बोट देने व होता लग र जिस भी पार म परका बिठा रही हैं, वहीं भाजपा दक्षिण जो लाजू के अपने गढ़ में आंतरिक झगड़ों के लाजू के लाजू की मीटों पर चनाव लटने ने स्वार्थ के क्ष सभी सीटों पर चुनाव लड़ने के मूड में है. कि सामान है कि लालकृष्ण आडवाणी के राम का हो, अने वर्त हुई हिंदुत्व की लहर वोटों में तब्दील वाएगी 1989 के चुनाव में यहां से नौ सीटें ानना है कि वाली भाजपा को उम्मीद है कि इस बार थों के चता ह आड़ी जातियों के हिंदुओं के बल पर ज्यादा ोघी पंचाया है मिलेगी. उसका मानना है कि मंडल विवाद एक अनोह कारण ये जातियां उसकी तरफ आ गई हैं. चुनाव का क्लंड्दर सिंह नामधारी और समरेश सिंह की प्राप्त स्का गुर्बाई वाले गुट के अलग हो जाने से भाजपा री ने कें कें काफी नुकसान भी पहुंचा है.

हैं और हैं। पिछले साल जनता दल के टूटने के बाद उसके ॥ में से 11 सांसद चंद्रशेखर के नेतृत्व वाले

कारण इंका इता दल (स)में चले गए थे. भंग लोकसभा में उसके 20 सांसद ां सभी आहे बचे रह गए. अब वह 45 सीटों पर लड़ने की योजना बना रहा रों की क्षोत्र होकिन समस्याओं ने अभी से सिर उठाना गुरू कर दिया है. धन, ब कि सहयोगी वामपंथी पार्टियां ज्यादा सीटें मांग रही हैं जबकि सी चुनाबं ज़िल पीपुल्स फंट कई सीटों पर जनता दल और भाकपा के कर सकें ज़िलाफ ही अपने उम्मीदवार खड़े कर सकता है. इस बात की

राष्ट्रीय मोर्चा जहां पिछड़ों की राजनीति के कारण चुनावी दौड़ में आगे है, वहीं इंका और भाजपा

अगडों के वोटों पर

निर्भर हैं

संभावना कम ही दिखती है कि राष्ट्रीय मोर्चा इन मुद्दों को संतोषजनक ढंग से सुलझा पाएगा.

पिछले चुनाव में मूसलमानों ने जनता दल-राष्ट्रीय मोर्चे को पूरा समर्थन दिया था लेकिन इस बार शायद वे वैसी एकजुटता न दिखा पाएं. हालांकि उनका कहना है कि लालू ने राज्य में सांप्रदायिक शांति बनाए रखी लेकिन उनका मानना है कि राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार ने केंद्र में कुछ नहीं किया. इस बीच, जनता दल (स) ते, जिसकी बिहार में राजनैतिक जड़े ही नहीं हैं, सभी 54 सीटों पर लड़ने का फैसला किया है जिससे मैदान में योद्धाओं की संख्या बढ़नी स्वाभाविक है.

लेकिन प्रेक्षकों का मानना है कि पिछड़ों की राजनीति और 'लालू लहर' के कारण राष्ट्रीय

मोर्चा चुनावी दौड़ में आगे है. बिहार की आबादी में 52 फीसदी पिछड़े हैं. अल्पसंख्यकों और अनुसूचित जातियों को मिलाकर यह संख्या 72 फीसदी बैठती है. इंका और भाजपा के अगड़ी जातियों के वोटों पर निर्भर रहने से प्रमुख राष्ट्रीय पार्टियों की रणनीति जातियों के समीकरण पर निर्भर है. यानी बिहार खूनी चुनावी लडाई की तरफ बढ़ता दिख रहा है. .

सिंह कहते गामस्थान

के हरनौत ना अध्यक्ष

माहौल में

ही लड़ा

राजनैतिक

मान्यताओं

बिगुल वर्ग

का नजारा

या है. अगई

ताब चुनता

से सत्ता पर

में अपना

ग सुअवसा

देश के बार

है, विहार

ी नहीं धा

ग इंका इ

द कर ए

दाताओं क

ल होने ब

उनका नार

ना मौका है

जिला और

न करने की

क सीट ह

की सीव

गालू लहा

वेदा किए

के कार्बित

जातियों है

एगा.

# रदार संघर्ष

नजपा सरकार के कामकाज से असंतोष है कारण इंका की स्थिति मजबूत

भाजपा का उत्ततः। भ्रष्टाचार, अकुशलता और भाजपा को उसकी निष्क्रियता, भीजाबाद के कारण सत्ता से हटा देंगे." इंका ला हिर्दिव जोशी की यह टिप्पणी उनकी पार्टी शालिविश्वास को बताती है. राजस्थान में इंका भाजपा को असली चुनौती देगी जहां की भाषा सरकार ने हिमाचल प्रदेश की सरकार भे<sub>ताह</sub> ही लोगों की उम्मीदों पर पानी फेरा है. और इका सिर्फ हवाई दावे ही नहीं कर रही विद्वते साल विधानसभा चुनाव में ही इंका ने भी स्थिति कुछ सुधारी और फिर पिछले किंदर में हुए स्थानीय निकाय चुनावों में भी के कुछ और मजबूती पाई. हाल में नाथूराम का जनता दल छोड़कर इंका में वापस का जन पार्टी का उत्साह और बढ़ गया। िन्मी राजस्थान के जाटों में 70 वर्षीय मिर्धा

निना ही नहीं, पिछले चुनाव में जनता दल हो नहां, पिछल चुनाव म जाता पक्ष होते वाले मुसलमानों का रुख इंका के पक्ष होता लग रहा है. पिछली बार 37 फीसदी वोट भी पार्टी एक भी सीट नहीं जीत पाई थी.



मैरों सिंह शेखावतः मुश्किल मुकाबला

दलगत स्थितिः कुल सीटें: 25; माजपा:13; जवः 3; जव (स): 6; माकपाः 1; रिक्तः 2

मुकाबलाः द्विपक्षीय मौजदा रुझानः जाट बोट इंका की झोली में जा

मुख्य मुद्देः महंगाई और राजनैतिक अस्थिरता सो, इस बार उसकी हालत तो सुधरेगी ही.

भाजपा के लोगों का मानना है कि राज्य की रग-रग से वाकिफ मुख्यमंत्री भैरों सिंह शेखावत का राजनैतिक कौशल इस बार भी पिछले चुनाव जैसी जीत दिलवा देगा. पिछले चुनाव में भाजपा ने एक सीट छोड सभी पर जीत हासिल की थी. शेखावत ने अपना पुराना हिसाब लगाना भी शुरू कर दिया है और जनता दल (स) के साथ सीटों के

तांलमेल की बात गुरू कर दी है. उनकी निजी लोकप्रियता के बारे में तो कोई शक नहीं करता पर स्वच्छ सरकार देने का भाजपा का वादा पूरा नहीं हुआ, यह जगजाहिर है. सरकारी दफ्तरों में कोई भी काम बिना घूस के नहीं होता.

भाजपा के लिए एक और मुश्किल यह है कि पिछली बार की तरह उसे जनता दल का मजबूत सहयोग हासिल नहीं है. लेकिन इस बार खुद जनता दल मृतप्राय है. और पहले के अनुभव बताते हैं कि विभाजित विपक्ष इंका के लिए वरदान से कम नहीं होता.

मतदाताओं के लिए इस चुनाव में महंगाई और राजनैतिक अस्थिरता ही मूख्य मुद्दे होंगे और इसके लिए वे मूख्य दोषी राज्य में शासक दल भाजपा को ही मानते हैं.

- नरेंद्र कुमार सिंह, जयपूर्ण में

मध्य प्रदेश

बराबरी का

मुकाबला

सुंदरलाल नाकारापन असर दिखा सकता है

ध्यावधि चुनाव की सबसे दिलचस्प लड़ाई देश के हृदय क्षेत्र में लड़ी जाएगी. मध्य प्रदेश न सिर्फ भाजपा के निए आदर्श राज्य माना जाता रहा है बल्कि यह उसकी लोकप्रियता की परीक्षा भूमि भी है. दो बराबर के प्रतिद्वंद्वियों के होने के कारण यहां लड़ाई जबरदस्त होगी. सो, नतीजों को लेकर अनिश्चितता बनी हुई है.

राज्य की 40 संसदीय सीटों के लिए भारतीय जनता पार्टी और कांग्रेस (इ) असली दावेदार हैं. बाकी राजनैतिक दलों की हैसियत न के बराबर है. हालांकि जनता दल को '89 के चनावों में चार सीटें मिली थीं लेकिन उसे सिर्फ आठ फीसदी वोट ही मिल पाए थे.

लोकसभा की 27 सीटें लेने के कारण भाजपा के इस राज्य में मजबूती से पैर जमे हुए लगते हैं. इंका को आठ सीटें मिली थीं और वह दौड़ में काफी पीछे ठहरती है. पर भाजपा की ताकत को देखते हुए जितनी उसकी बढत दिखती है दरअसल उतनी है नहीं. भाजपा को पिछले चुनाव में 40 फीसदी वोट मिले थे जबकि इंका को 38 फीसदी. ऐसे में इंका को चुनाव की तस्वीर बदलने के लिए सिर्फ छह फीसदी वोट अपने पक्ष में करने की जरूरत है.

इसीलिए इंका में खुशमिजाजी और हौसला बना हुआ है. राज्य इंका अध्यक्ष अर्जुन सिंह कहते हैं, "भाजपा सरकार की नाकामी को देखते हुए हम अपनी स्थिति सुधारने के लिए पूरी तरह तैयार हैं." आम राय यह है कि हवा इंका के पक्ष में है. हालांकि पार्टीजनों का मानना है कि बहुत कुछ उम्मीदवारों के सही चयन पर निर्भर करता हैं. मध्य प्रदेश इंका के उपाध्यक्ष हजारीलाल रघुवंशी का मानना है, "अगर उन्हीं पुराने, पिट चुके चेहरों को इस बार भी टिकट मिले तो यह लड़ाई भी हमारे लिए काफी मुश्किल साबित हो सकती है." अर्जुन सिंह, श्यामाचरण शुक्ल, मोतीलाल वोरा और माधवराव सिंधिया जैसे पार्टी के दिग्गज चुनाव अभियान में पूरी ताकत से उतरने जा रहे हैं.

क्ल्प्रेंस (इ) की बुनियादी समस्या चार गुटों में चलने वाली कटु लड़ाई है. यह लड़ाई इतनी जबरदस्त है. कि पटवा सरकार के खिलाफ

मध्य प्रदेश न सिर्फ भाजपा के लिए आदर्श राज्य माना जा रहा है बल्कि यह उसकी लोकप्रियता की परीक्षा भूमि भी है



सुंदरलाल पटवा: बढते असंतोष का सामना

दलगत स्थिति: कल सीटें: 40; भाजपा: 27; इकाः 8; जदः 3; निर्वलीयः 1 रिक्तः 1

मुकाबलाः द्विपक्षीय

मौजूदा रुझानः भाजपा मुश्किल में. जनता दल का मैदान में बहुत वजूद नहीं. मुसलमान वोट इंका के पक्ष में जाने की संभावना, हालांकि उसके अपने खेमे में जबरदस्त फूट है.

मुख्य मुद्देः अयोध्या में राम मंदिर के सवाल को लोग अल्पकाल के भाजपा शासन की उपलब्धियों से तौलेंगे.

अविश्वास प्रस्ताव के दौरान भी उभर आड भी भाजपा को सावधान रहना चाहिए दो मा पहले हुए पंचायत चुनावों को यदि कोई स्के माना जाए तो लगता है कि इंका कार्य सुविधाजनक स्थिति में है. स्थानीय संस्थाओं है चुनावों में उसे भाजपा जितनी ही सीटें मिली मे

भाजपा के नेता इस बात से वाकिफ है। सत्तारूढ पार्टी होने के नाते उन्हें सरकार विरोध भावनाओं का सामना करना पड़ेगा. मतराज ग्रामानसेता महंगाई और अस्थिरता से काफी नाराज है.

हालांकि राम मंदिर का मुद्दा शहरों में अर्थ भी जिंदा है पर गांवों में उस पर धूल जम की

है. इसके अलावा भाजपा के सांप्रदाविक रवैए के कारण भी राज्य के मुसलमान का । लिए य को बोट देने को मजबूर होंगे. पिछली बा है उनकी व उन्होंने जनता दल को वोट दिए थे. भोपात सकर आया है के हाजी मजीद हुसैन का कहना है, "जनता एल पार्टी इक दल सरकार नहीं बना सकता इसिला और विपक्षी म्सलमान अपने वोट बर्बाद नहीं करता लगें कितनी ध चाहते." भाजपा अपनी उपलब्धियों है मूखमंत्री वि आधार पर जनता के पास जाना चाहती है गर काफी अ समस्या सिर्फ यही है कि उपलब्धियां उत्तर बाडे शिवसे असरदार नहीं हैं. कुछ चुनावी वादे जह खायकों-विध पूरे किए गए हैं. पर अनिधकृत झोपड़पृष्टि कि और मू को उहाकर उनके निवासियों को राजधार अंबनिक तौ से बाहर ले जाने के कारण पार्टी की गरी। एइ से ठाकरे विरोधी छवि बनी है. जबिक इंका ने जि गई जाने ल जमीन पर वे बसे थे, उसका उत् । स्था-सेना व मालिकाना हक दे दिया था. प्लेपर तुले ग्रकरे लोक

सुंदरलाल पटवा सरकार का एक औ विवादास्पद फैसला था तेंद्र पत्ता नीति है जिन लड़ना परिवर्तन करना. यह पत्ता बीड़ी बनाने के का भीद है कि आता है. मध्य प्रदेश में तेंदू पत्ते का 650 करी शा रोगृनी रु. का व्यापार होता है और इसमें 10 ना वनवासी 40 दिन रोजगार पाते हैं. इंका शासन दौरान अर्जुन सिंह ने निजी ठेकेदारों से तेंदू पी का व्यापार छीनकर उसे मजदूरों की सहकाणि संस्थाओं को सौंप दिया था और इस काम में 25 करोड़ रु. का मुनाफा कमाया था. भाजपा ने <sup>जे</sup> वापस ठेकेदारों को सौंप दिया.

व अगर ठाकरे

मिकार की

मकते है

भाजपा व

वही आज

की की तरह

शोगें मीटें जीत

भाजपा का अपना कुनबा ही दुरुस्त नहीं इसलिए उसे इस तथ्य से कोई राहत नहीं सकती कि राज्य इंका में जबरदस्त फूट है उसके शीर्षस्य नेता एक दूसरे को फूटी आंबी सुहाते. पटवा के अनुसार भाजपा की अके गरेन पूरे क उम्मीद उसकी 'साफ सुथरी' छवि है. वे कही "हम जब से सत्ता में आए हैं हम पर भ्रष्टीयाँ कर का एक भी आरोप नहीं लगा है." लेकिन पूर्व यह नहीं समझ पाते कि आम आदमी प्रशासित भ्रष्टाचार से परेशान होता है क्योंकि यही उर्व जिदगी पर सीधे असर डालता है.

लगता है कि भाजपा फिसलन भरी इलाह खड़ी है और इस निराशा भरी स्थिति में उम्मी करती है कि भगवान राम उसे पराजय की ही में किस्से पराजय गाल में पूरा में है में गिरने से बचा लेंगे.

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangr

### राठा क्षत्रप को ए. दी मही संस्थाओं हे टें मिली मो किफ हैं हि

गा. मतराम ग्राम्या-सेना गठबंधन में तनाव गाठवाडा, विदर्भ में स्थिति अनिश्चित

कार विरोधी

राज हैं. हरों में अभी ल जम चुनी

सांप्रदािक राज्य के मुख्यमंत्री शरद पवार के सलमान के पिछली बा है उनकी वफादारी की एक और 'परीक्षा' ए थे. भोपात लकर आया है. इससे यह भी परख होगी कि ा है, "जनता, एय पार्टी इकाई में वे असंतुष्टों से कैसे निबटते न्ता इसिंत और विपक्षी खेमे में उलझाव पैदा करने की नहीं करना जमें कितनी क्षमता है.

लिब्धियों है मूलमंत्री विपक्षी दलों में खलवली मचाने का ना चाहती है। ग्रामी अच्छी तरह कर रहे हैं. पिछले व्धियां उतने बाड़े शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे के दो मुख्य वादे जल खुकों विधानसभा में विपक्ष के नेता मनोहर क्षोपड़पड़िं कि और मुंबई के मेयर छगन भुजवल में को राजधा<sup>त्री</sup> अंग्रनिक तौर पर ठन गई. भुजवल ने जिस र्टी की गरी हिसे ठाकरे की अवज्ञा की, उससे अटकलें इंका ने कि आई जाने लगीं कि वे सेना में टूट करवा कर उसका उर्द मिया-सेना गठबंधन की संभावनाएं धूमिल ग्लेपर तुले हैं.

गकरे लोकसभा की लगभग आधी सीटों पर ा नीति हैं ज़िल लड़ना चाहते हैं. उधर, भाजपा को ताने के का स्मीद है कि वह महाराष्ट्र से अपने सांसदों की ा 050 करों<sup>क्</sup> वोगुनी कर लेगी. पर उसे यह भी डर है में 10 ला । जगर ठाकरे को उनका हिस्सा नहीं मिला तो



शरद पवारः वफादारी की परीक्षा

दलगत स्थितिः कुल सीटें: 48; इंका: 28; माजपा: 10; भाकपाः 1; जनता दल: 4; निर्दलीय: 1; जनता दल(स):1; शिवसेना: 3;

मुकाबलाः तिकोना मौजदा रुझानः इंका स्थित सुधारने की तैयारी में. भाजपा-सेना गठबंधन में तनाव

मुख्य मुद्देः मंदिर, स्थिरता, सामाजिक बदलाव वे हिंदुत्व की लहर को तोड़ देंगे.

सेना को मालुम है कि उसका असर एक खास तबके पर ही है. इसलिए उसने बाद में अयोध्या मृद्दे से खुद को कुछ दूर कर लिया था.

पर असली सनसनी मराठवाड़ा और विदर्भ क्षेत्रों में है, जहां विश्वनाथ प्रताप सिंह के दौरे के दौरान भारी भीड़ जुटी थी. इस भीड़ में ज्यादातर मुसलमान और दलित थे. इंका और हिंदू गठबंधन दोनों के लिए यह स्पष्ट चुनौती है.

इस बार फिर इंका की संगठन क्षमता और स्थिरता का उसका वादा मतदाताओं को हाथ पर मोहर लगाने के लिए प्रेरित करेगा. पिछले चुनाव के बाद से पवार ने महाराष्ट्र की चीनी लॉबी पर अपनी पकड़ और मजबूत कर ली है. पर मुंबई, ठाणे और पूणे के आठ शहरी निर्वाचन क्षेत्रों में पार्टी को कडी टक्कर का सामना करना होगा. इसके अलावा मराठवाड़ा, विदर्भ और कोंकण में भी मैदान आसान नहीं होगा. -एम.रहमान

सहकारिक स्माचल प्रदेश

एक औ

का शासन है से तेंद्र पत

काम में 275

ाजपा ने उने

फूट है व ते आंखों व

र भ्रष्टाबी

लेकिन पटवी

प्रशासनि

यही उसन

री ढलान प

त में उम्मी

# त वहीं की मुद्रा में

बी अंके गरेन पूरे कर पाने के कारण शांताकुमार . वे कहते कितर की स्थिति कमजोर

विनोबी बादे दोधारी तलवार साबित हो मिकते हैं. डेढ़ साल पहले जो नारा भाजपा को सत्तासीन करने में सहायक बना की आज शांताकुमार सरकार के गले में भे के तरह फंस गया है. 1989 में लोकसभा की जय की हा को बीट फेस गया है. 1989 म लागा. भिक्कार जीतने वाली भाजपा इस बार बचाव जय का भी भार जीतने वाली भाजपा इस बार बचान के हुमार है जनता दल उससे पूछ रहा है: "झूठे



शांताकुमारः बिगड़ती बात

वादे, बढते दाम, कहां गया हाथ को काम."

अपने चुनावी वार्दे पूरे न कर पाने के लिए भाजपा पैसे की कमी का रोना रोती है. भाजपा विधायक ईश्वर दास कहते हैं, "वादे न पूरे कर पाने की वजह नीयत में खोट नहीं, पैसों की कमी ही है." लेकिन सेब का समर्थन मूल्य 2.75 रु. से 1.30 रु. प्रति किलो करके सेब उत्पादकों की नाराजगी मोल लेने का दोष कह किसी और के माथे नहीं मह सकती. यह बात सटा के

लिए महंगी पडेगी. थियोग के एक सेब उत्पादक ने कहा, "शांताक्मार कहा करते थे कि से/ हिमाचल की शान, जान और पहचान है. मगर पिछले वर्ष उन्होंने हमें धोखा दे दिया. अब हमारी बारी है और हम चूकेंगे नहीं. इस बार हमारे

लिए या तो इंका है या जनता दल."

इंका ने अभी तक अपने उम्मीदवार तय नहीं किए हैं. नेतृत्व पर इस बार भी प्रदेश की चारों मुख्य जातियों - ब्राह्मण, राजपूत, हरिजन और वनवासी-तथा अन्य पिछड़ी जातियों को एक-एक टिकट देने के पुराने फार्मूले को मानने का दबाव पड़ रहा है. लेकिन अधिकांश मामलों पर पार्टी में भारी मतभेद हैं. यदि पूर्व मुख्यमंत्री रामलाल की वापसी होती है तो ये मतभेद और उग्र हो सकते हैं.

दलगत स्थितिः कुल सीटें: 4; भाजपा: 3; इंकाः 1

मुकाबलाः तिकोना

मौजदा रुखः महंगाई आदि मुद्दों पर भाजपा

मुख्य मुद्देः स्थानीय मुद्दे हावी होंगे.

जनता दल इस बार नए चेहरों को सा रहा है. इसके अध्यक्ष मेजर विजय रहा ह. ३५५ मनकोटिया ने कहा है कि उनकी पार्टी काए पार्टी कार्य और हमीरपुर में पिछड़े उम्मीदवारों को कि देगी. जनता दल (स) के नेता ठाकुर रामना भले ही पूर्व मुख्यमंत्री हैं लेकिन इसकी कोई सह पैठ नहीं है.

उम्मीद है कि प्रदेश के स्थानीय मुहे हैं अयोध्या मामले पर भारी पड़ेंगे. भाजपा के राह अभी भ रोटी' के नारे का भले ही शहरी इलाकों में का काई असर हो पर दूरदराज के पहाड़ी इलाकों में की का पानी, नौकरी और महंगाई ही असली में —कंबर संघू, शिमताः अगामा की रा

गुजरात

### हाथ मिले तो बात बने

इंका और चिमनभाई का गठबंधन हो तो भाजपाई रथ के पहिए थमें

जीव गांधी के गुजरात के तुफानी दौरे की समाप्ति और भाजपा नेता सिकंदर बस्त के द्वारका से दिल्ली तक के जन-जागरण अभियान रथ के गति पकड़ने के साथ ही साफ होने लगा कि केंद्र में स्थायित्व, हिंदुत्व और महंगाई जैसे मुद्दे ही चुनाव प्रचार पर हावी रहेंगे. इसके साथ ही एक महत्वपूर्ण बात यह हुई कि राजीव मुख्यमंत्री चिमनभाई पटेल के साथ गठबंधन के लिए सहमत होते दिखे.

राजकोट और जुनागढ़ जिलों में राजीव को मिले व्यापक जनसमर्थन के बावजूद प्रदेश इंका को आलस्य और आपसी कलह की जकड़ से निकलना होगा. तभी वह भाजपा के बढते प्रभाव को रोक पाने में सफल हो सकेगी. जनता दल (स) के साथ गठजोड़ करने के सवाल पर भी इंका के भीतर मतभेद हैं. एक ओर सोलंकी जैसे दिग्गज का यह मानना है कि पार्टी तिकोने संघर्ष में विजयी रहेगी, जबिक चौधरी और दूसरे नेता गठबंधन के पक्ष में हैं. इस बीच, चंद्रशेखर ने राज्य स्तर पर किसी भी प्रकार के समझौते से इनकार किया है. लिहाजा, चिमनभाई के सामने अब यही रास्ता बचा है कि वे प्रांतीय स्तर पर कोई पार्टी बना लें.

मगर इंका नेतृत्व यह मानकर चलता दिख रहा है कि एक अनुकूल मुख्यमंत्री कम-से-कम चार तरह से फायदेमंद सिद्ध होगा:

न्त्रतासनिक मशीनरी का लाभ मतदान के दिन मिलेगा

चिमनभाई के पास अफरात धन है, जो पार्टी



चिमनभाई: सघंर्ष तगड़ा

दलगत स्थितिः कल सीटें:26 जद (स): 9; माजपाः 12; इंकाः 2; रिक्तः 1

मुकाबलाः द्विपक्षीय

मौजदा रुखः इंका और चिमनभाई में गठबंधन संमव. माजपा ने इंका के वनवासी और क्षेत्रीय वोट बैंकों में सेंध लगाई

मुख्य मुद्देः केंद्र में स्यायित्व, राम मंदिर, मूंगफली तेल की कीमत.

(इंका) के काम आ सकत विमंत्री बीजू वित होंगे. प

• लोकसभा के साथ-सार प्रहीने पहले विधानसभा चुनाव करा पटनायक स जाने पर रोक, ताकि पार्ट शिर कोई व में बड़े पैमाने पर गुटवार जिलताओं की रनायक के तौ को रोका जा सके.

 पारंपरिक रूप किए हैं. चिमनभाई के लिए आरक्षि किप्रिय नेता वोट बैंक के एक बड़े हिं मुख्य विपक्षं का लोभ (हालांकि पटेंगे निस्थिति से उ के पास 18 फीसदी बोट है जातथा विध है, हम जनता पर वे साधन संपन्न हैं).

1989 में इंका को कृ 37 फीसदी वोट मिले जनता दल को 28 फीसर जिल

नावी जंग

वता में च

।। सफल दौ

व्यमंत्री ई.के

त्यार हैं.

ने का फैसल

गे वाम मोर्चे

मयुक्त लो लावा दो छोर

कीर केरल को

हैन दोनों व

जेनता दल

क्षेत्र करना

में मिकोड़ र

एके एंथनी

और भाजपा को 30 फीसदी. लेकिन इस ए भाजपा कुछ चमत्कार दिखा सकती है. पिछी साल हुए व्यापक दंगों के बाद, जिनमें राज्य म में करीब 300 लोग मारे गए थे, भाजपा वनवासियों और क्षत्रियों के इंका के पारंपि वोट बैंकों में सेंध लगाने का मौका मिला भाजपा का यह दावा भी है कि उसने सौराष्ट्र क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत कर ली है, जहाँ गर वर्ष के आडवाणी की रथयात्रा गुरू हुई थी.

मंडल या जनता दल के लिए गुजरात में जगह नहीं है. भंग लोकसभा में अविभाग जनता दल के 11 पूर्व सांसदों में से केवल है वी.पी. सिंह का साथ दिया था. लेकिन जनता सभी सीटों पर अपना भाग्य आजमाना चाहता ताकि वह इंका के वोट काट सके. वैसे मुसलमान जिनके पास 10 फीसदी बोट हैं, बीब सिंह को नेता मान चुके हैं.

इस संदर्भ में एक वड़ा मुद्दा मूंगफली के की कीमत में हुई वृद्धि है. अगर इका मुह्म का साथ देती है तो उसे इस मुद्दे का लाभ मिलेगा पर भाजपा इसे उछालने के लिए तरह तैयार बैठी है.

लेकिन, यह भी तय है कि इंका-विमान गठबंधन भाजपा के आगे बढ़ते रथ की अंग -उदय माहूर पछाड़ सकता है.

विजय म

पार्टी काला रों को टिक् कुर रामनात की कोई साम

असली मूं

का को 👯 ट मिले वे 28 फीसरे रिल न इस दश

भाजपा व

ना मिला

सने सौराष्

अविभागि

केवल हो

न जनता है

ना चाहता

के. वैसे

ट हैं, वीष

फली के ते

का मुख्यम

ता लाभ ग

के लिए प

उदय माहर

नपा के का अभी भी सदमे में और भाजपा का ताकों में की विष्हां कोई असर नहीं ताकों में पीने

संधू जिम्साः गामी चुनाव हर दृष्टि से ओडीसा भी <sub>की</sub> राजनीति के दबंग व्यक्तित्व-म आ सक्त व्यमंत्री बीजू पटनायक—की शक्ति परीक्षा कि होंगे पर सवाल यह है कि क्या पटनायक के साथ-सार, महीने पहले वाला जादू फिर जगा पाएंगे? नाव करा एनायक सरकार का कामकाज कसौटी पर ताकि पार्ट श्रीर कोई काम वैसा प्रभावी नहीं है जबकि पर गुरवार्व किताओं की फेहरिस्त लंबी हो चली है. फिर लायक के तौर-तरीकों ने अजीबोगरीब हालात

लेए आर<mark>िल क</mark>िप्रिय नेता हैं. यह वे बखुबी जानते हैं. क बड़े हिं पुर्य विपक्षी पार्टी इंका अभी भी पराजित लांकि पटें निस्थिति से उवर नहीं पाई है. पार्टी की वरिष्ठ सदी वोट बात्या विधायक नंदिनी सत्पथी का यह दावा पन्न हैं) 🎉 हम जनता दल के पांव उखाड़ देंगे,' खोखला

रूप के किए हैं. मगर पटनायक ही सर्वाधिक

बीजः कोई मुकाबले में नहीं

दलगत स्थितिः कुल सीटें: 21, जनता दल (स) :5 जनता दलः 9, इंकाः 3, भाकपाः 1, माकपा :1, रिक्तः 2

मुकाबलाः एकतरफा

मौजदा रुझानः बीजू पटनायक अपनी लोकप्रियता पर निर्भर, कोई भी राष्ट्रीय नेता चुनाव प्रचार के लिए आमंत्रित नहीं. इंका पिछली हार से नहीं उबरी.

मुख्य मुद्देः बीज् पटनायक के नेतृत्व में जनता दल की उपलब्धियां



और भ्रामक लगता है.

प्रतिद्वंद्वी के रूप में जनता दल (स) राज्य में विशेष असर नहीं रखता और कालाहांडी से सांसद रहे रेल राज्यमंत्री भक्तचरण दास और बलांगीर के बालगोपाल मिश्र ही पार्टी के ऐसे दो नेता हैं जिनकी सिर्फ अपने इलाकों में जड़े हैं.

हिंदीभाषी क्षेत्रों में भाजपा मजबूत है पर ओडीसा में पार्टी नेतृत्व का यह खयाल कि पड़ोसी मध्य प्रदेश में उसकी ताकत का फायदा उसे मिलेगा, नितांत भ्रामक है. इसलिए पूरी संभावना यही है कि पलड़ा बीजू पटनायक की ओर ही झुका रहेगा.

### ने राज्य शब वाम माच के पारंपि

ति है, जहां <sup>गर वर्ष</sup> के सफल दौर के बाद नयनार विवा जंग को तैयार रात में के

> मिता में चार वर्ष का उथल-पुथल भरा पर मफल दौर पूरा कर चुकने के बाद केरल के भिन्नी ई.के. नयनार अब फिर चुनावी जंग के कित्यार हैं साथ ही विधानसभा चुनाव करा में का फैसला समझदारी वाला है. जनता दल <sup>है वाम</sup> मोर्चे में णामिल है.

> भेयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे में अब इंका के कार्या पाकता।त्रक माच म जन के के बोटे-छोटे गुट करल कांग्रेस (मणि) के केरल कांग्रेस (बालकृष्ण पिल्लै)—ही बचे जि दोनों का कोई लास महत्व नहीं है.

भेता देल वाम मोर्चे में मुस्लिम लीग को त-चिमनश्रा के करना चाह्ता है पर माकपा अभी नाक-भी पिकोइ रही है. उधर, प्रदेश इंका अध्यक्ष य को अंत भे एवनी मुस्लिम लीग को फांसने की पूरी

ई.के. नयनारः पूरी तरह निश्चिंत

दलगत स्थितिः कुल सीटें: 20; इंका: 14; माकपाः 2; केरल कांग्रेस (म): 1; कांग्रेस (स): 1

मुकाबलाः तिकोना

मौजदा रुझानः मरियल इंका की अगुआई में संयुक्त मोर्चा बचाव की मुद्रा में; वाम मोर्चा, मंडल समर्थक और धर्मनिरपेक्ष ताकतें मुसलमानों और पिछड़ों के बोट पाएंगी.

मुख्य मुद्देः मंडल आयोग की सिफारिशों पर बहस और धर्मनिरपेक्षता विरोधी ताकतों से संघर्ष.



कोशिश कर रहे हैं. उन्हें एहसास है कि ऐसे तुफान में इंका अकेले नाव नहीं से सकती.

वाम मोर्चे ने यह भी दिखाया है कि उसमें राज-काज अच्छी तरह चलाने का राजनैतिक संकल्प है. अब तक राज्य में मतदाताओं के प्रति इतना आश्वस्त कोई मोर्चा या दल नहीं रहा है.

अगर मुस्लिम लीग अकेले मैदान में उतरने का फैसला करती है तो संयुक्त लोकतां कि मार्ची संसदीय और विधानसभा दोनों ही चुनावों में धूल चाटने लगेगा.

आंध्र प्रदेश

तीसरी ताकत भी उभरी

इंका के लिए 1989 का रिकार्ड दोहराना संभव नहीं, भाजपा मुकाबले में

'छले चुनावों में इंका को 42 में से 39 पुछल चुनावा न राग ... लोकसभा सीटें मिली थीं. तब से आज तक इंका की लोकप्रियता नीचे ही आई है.

ऐसा नहीं कि तेलुगु देशम के आसार बेहतर हुए हैं. भाजपा के जोर मारने से इंका विरोधी उसके समर्थक टूट रहे हैं. जनता दल, माकपा और भाकपा शायद तेलुगु देशम के साथ ही मिलकर मोर्चा लें पर भाजपा अकेले लडेगी.

तेल्गु देशम के साथ सबसे बड़ी समस्या यह है कि उसे कम्मा लोगों की पार्टी के रूप में जाना जाता है. उसे सत्ता में आने के लिए वी.पी. सिंह के पिछड़े वर्गी के समर्थकों और वामपंथी दलों का सहयोग लेना ही होगा.

वैसे मुख्यमंत्री एन जनार्दन रेड्डी ने अपने करीब 100 दिन के शासनकाल में इंका की छवि वापसी की चाह

दलगत स्थितिः कुल सीटें: 42; इंका: 38; तेलुगु देशमः 2; एआईआईएमः 1; रिक्तः 1

मुकाबलाः तिकोना

मौजुदा रुझानः इंका को वामपंथी दलों और जनता दल समिथत तेलुगु देशम की कड़ी चुनौती का सामना है; भाजपा की मजबूत होती स्थिति.

मुख्य मुद्देः मंडल; मंदिर; दंगों को नियंत्रित कर पाने में सरकार की असफलता.



सुधारने का भरसक प्रयास जरूर किया है.

भाजपा मंदिर का मुद्दा भी जोर शोर से उह हा पूरी तरह रही है. जिन क्षेत्रों में नक्सलवादियों की पहा हते वाला भ मजबूत है, वहां भाजपा को समस्या का सामा हो है, "साथ करना पड़ सकता है. उग्र विचारधारा सो म और श्रम वाला पीपूल्स वार ग्रुप तेलुगू देशम की सहाका निय पावंदि कर सकता है क्योंकि मंडल मसले पर दोनों के में यह त विचार समान हैं.

आने वाले दिनों में राज्य के चुनावी माहौता शिंतरपेक्षता बड़ा बदलाव आने वाला है. अब बदलाव भने हैं। हो की पीछे लिए होगा या नहीं, यह तो समय ही बताएग नि वे इस वि

-अमरनाथ के. केन लके राज्य में

तमिलनाडु

### बदला भंजाने का मौका

इंका-अल्ला द्रमुक का मोर्चा द्रमुक को टक्कर देने को तैयार, पीएमके भी मैदान में

अगर चुनावी गणित अन्ना द्रमुक और इंका के पक्ष में जाता है तो इतिहास और राजनैतिक कीमियागीरी करुणानिधि के पक्ष में जाती दिखाई दे रही है. द्रमुक इस बात पर जोर देगी कि केंद्र ने जनता की चुनी सरकार को बर्खास्त करके अत्याचार किया है. मुक्ति चीतों का मुद्दा दोधारी तलवार है इसलिए जयललिता को चुनाव प्रचार के दौरान निजी करिक्से पर ज्यादा भरोसा करना पड़ेगा. जद (स) और अन्नाद्रम्क की भी बात चल रही है.

इंका और अन्ना द्रमुक गठबंधन के लिए भी चना जीतना आसान नहीं है. जयललिता पहले हीं कह चुकी हैं कि सीटों के तालमेल के लिए या फार्मुला बनाना पड़ेगा. पर पट्टलि मक्कल

जयललिताः चमत्कार का इंतजार

दलगत स्थितिः कुल सीटें: 39; इंकाः 27; अन्ना द्रमुंकः 11; भाकपाः 1.

मुकाबलाः तिकोना

मौजूदा रुझानः इंका-अन्ना द्रमुक के मजबूत मोर्चे के मुकाबले द्रमुक आगे. वित्रयार संघम की पार्टी पीएमके तीसरी ताकत के रूप में उभर रही.

मुख्य मुद्देः द्रमुक सरकार की बर्खास्तगी; और मंडल आयोग की रिपोर्ट पर अमल.



काची (पीएमके) इन दोनों मोर्चों का वृत्त गणित विगाड़ सकती है. यह पार्टी विश्वयार है का राजनैतिक संगठन है. वह बोट काटकर हैं। को जितवा सकती है. लेकिन यदि करणाति और राष्ट्रीय मोर्चे के उनके सहयोगी दल और वामपंथी—जिनका राज्य में प्रभाव व बराबर है, पिछड़ों तथा अनुस्चित जातिया सारे वोट ले जाते हैं तो उसका अर्थ यह होती करणानिधि और वी.पी. सिंह के हाथों राज्य पिछड़ों का मसीहा बनने के तमाम स्वाहित केंग्ना फर्नाई के सपने चकनाचूर हो गए, —आर्व विकास

ामपंथी मोन

ग फैसला चा लिहाजा यह

र्जाटक

है एस. वंग को लोकं वेष्यी नेताओं विकार कर व्या है. इस प ना और पूर्व : वे वीरेंद्र पा की अच्छ विकार करने कें न तो पा मिया है. र

# भोर्च फिर

ार्य में इंका की तंद्रा का फायदा गर्मायी मोर्चे को मिलेगा

कसभा की 42 सीटों के साथ-साथ राज्य की 294 विधानसभा सीटों के समय से में महीते पहले ही चुनाव कराने का ज्योति बसु के सार है. जा ऐसला चालाकी भरा तो है ही, चुनावों के जार में क्र पूर्व तरह तैयार नहीं इंका के लिए उद्विग्न को की पा को साम हो है, "साथ-साथ चुनाव कराने के पीछे इरादा रधारा खो त और श्रम बचाना है." दशकों से कमरतोड़ की सहाख जिंव पावंदियों से अपाहिज बन चुके राज्य के पर दोतों है में यह तथ्य महत्वपूर्ण है.

तिहाजा यहां राष्ट्रीय महत्व के मुद्दे, जैसे कि वि माहीतः मिनिएसेसता और गैर-कांग्रेसी विकल्प स्थानीय दलाव भते हैं को पीछे धकेल देंगे. राज्य की जनता के ही बताएग ते दें इस लिहाज से कम ही महत्व के हैं कि स्राचय के के राज्य में एक ऐसी सरकार है जो देश भर

ज्योति बसुः चालाकी भरा फैसला

दलगत स्थितिः कुल सीटें: 42; आरएसपीः 4; माकपाः 27; एआईएफबीः 3; भाकपाः 3; इंकाः 4; जीएनएलएफः 1.

मुकाबलाः दो पक्षों में सीधी भिड़त

मौजूदा रुझानः माकपा की अगुआई बाला मोर्चा इंका को तगड़ी चुनौती देगा; इंका अभी पूरी तरह तैयार नहीं; भाजपा का थोड़ा-बहुत असर.

मुख्य मुद्देः धर्मिनरपेक्षता और वैकल्पिक सरकार जैसे मुद्दों ने स्थानीय मुद्दों को पीछे धकेल दिया है.



में भूमि सुधारों में अव्वल है और उन्हें राजनैतिक स्थायित्व दे रही है. लोग यह भी जानते हैं कि इस सरकार के तहत अनाज की पैदावार में काफी बढ़ोतरी हुई है, ग्रामीण और लघु उद्योगों को चाहे थोड़ा ही क्यों न हो, बढ़ावा मिला है.

बावजूद इसके वाम मोर्चा की चिंता के कारण हैं. पिछले तीन चुनावों में इंका ने 40 प्रतिशत वोट बटोरे. 1989 के संसदीय चुनावों में उसने यह प्रतिशत बढ़ाकर 43 कर लिया. लेकिन इंका चुनावी मुद्दे तय करने की हालत में नहीं है.

भाजपा का मामूली प्रभाव है, सो लगता है नतीजा वही जाना-पहचाना होगा. — रुवेन वनर्जी

र्जाटक

न्नियार संब

नाटकर हुन

करणानि

योगी-जन

प्रभाव न

जातियो

यह होगा

ायों राज्य

स्वाहिंगमें

नंव विश्वनी

# लए जोड़-तोड़

<sup>मित्रोर</sup> पड़ी इंका के खिलाफ विपक्ष <sup>क्रियुर</sup> होने की कोशिश में

कत्रभा चुनाव की घोषणा ने कर्नाटक में अचानक राजनैतिक गहमागहमी बढ़ा को की लोकंप्रियता में आई भारी गिरावट ने किता करके नए गठजोड़ बनाने को प्रेरित का कैरें मुख्य भूमिका जनता दल वे बीरेंद्र पाटील पर भी डोरे डाल रहे हैं.

के अच्छा पर भी डोरे डाल रहे हैं.
कि अच्छा प्रदर्णन नहीं कर पाएगी, इससे
कि करने वाले कम ही लोग हैं. वंगरप्पा की
कि पाटील जैसी है और न ही वे उतने
कि कि हैं वावजूद इसके, प्रदेश इंका अध्यक्ष
कि ही कि देश में कर्नाटक ही

एस. बंगरप्पाः उतने लोकप्रिय नहीं

दलगत स्थितिः कुल सीटें :28; इंकाः 27, रिक्तः 1

मुकाबलाः द्विपक्षीय

मौजूदा रुझानः
1989 के बाद से इंका की
स्थिति कमजोर; मुख्य
चुनौती जद से; हेगड़े
देवगौड़ा और पाटील
को रिझा रहे हैं, लिंगायत
और बोक्कालिगा इंका
से नाराज.

मुख्य मुद्देः भ्रष्टाचार, बंगरप्पा सरकार की अकुशलता, मंडल



ऐसा राज्य होगा जहां पार्टी को सभी सीटों पर विजय मिलेगी

इस बीच हेगड़े का मानना है कि पिछड़े वर्गों और अल्पसंख्यकों के समर्थन से जनता दल की संभावना बेहतर हुई है. राज्य में भाजपा सभी सीटों पर अकेले लड़ने जा रही है लेकिन उसे एक भी सीट मिलने की उम्मीद नहीं है.

जाहिर है, मुख्य मुकाबला इंका और जनता दल या उसके गठजोड़ के बीच ही हो जगर इंका 1989 वाला प्रदर्शन दोहरा लेती है तो इसे अपूर्व घटना ही माना जाएगा - रमेश मेनन, बंगलूर है

#### कब्जा करने की कला

ट उत्साह उबाल ले रहा हो तो किसी के मी रोके नहीं रुकता. महम के नामी बागी आनंद सिंह डांगी जिस

दिन इंका में दाखिल हुए, ऐसा ही नजारा देखने को मिला. पूर्व मुख्यमंत्री भजनलाल और पार्टी महासचिव मीरा कुमार से घिरे जब वे इंका कार्यालय के प्रेस कक्ष में आए तो एम.जे. अकबर भाजपा के खिलाफ जोरदार तकरीर कर



रहे थे. लगातार बूथ कब्जे का हल्ला मचाने वाले डांगी अंदर घुसते ही माइक्रोफोन की ओर लपके और मंच कब्जा लिया.

### नीयत बुरी

म ध्य प्रदेश में इंका ने मुख्यमंत्री पटवा के बारे एक नया नारा दिया है. यह है: "पटवा तेरी नीयत बुरी, मुंह में राम बगल में छुरी."

### हवा नहीं होना चाहते

पटना रैली के बाद राष्ट्रीय मोर्चा के नेता पटना हवाई अड्डे पर इंतजार कर रहे थे तभी वहां एक आगंतुक आ गया जिसे देख हर कोई अचरज में पड़ गया. ये थे उप-प्रधानमंत्री देवीलाल. वे पूर्वोत्तर से यात्रा करके दिल्ली आते समय पटना रुक गए थे. उन्होंने करुणानिधि, इंद्रकुमार गुजराल, रामविलास पासवान और अन्य नेताओं को 'लिफ्ट' देने की पेशकश की जिसे उन्होंने ठुकरा दिया. बाद में जनता दल के एक नेता ने कहा, "हम उनके साथ उड़कर हवा नहीं होना चाहते."

### नीरस बयानबाजी

जनेता आजकल बयान देने में जरूरत से ज्यादा सावधानी बरतने लगे हैं. कारण भी स्पष्ट ही है. पर



इससे उनकी बयानबाजी का मजा गायब हो गया है. सो, कई बार पत्रकार भाई लोग खब मिर्च-मसाला लगाकर बयानों को चटपटा बना देते हैं. राष्ट्रीय मोर्चा अध्यक्ष मंडल की बैठक के बाद पी. उपेंद्र ने एक पत्रकार गोष्ठी में सरकार गिराने के मामले देवीलाल और राजनारायण की तुलना की. परंतु इस तुलना को अप्रिय मानकर एक रिपोर्टर ने टिप्पणी की, राजनारायण का स्तर क्यों घटाते हैं?"

### राजीव का महायज्ञ

न कहता है कि सिर्फ भारतीय जनता पार्टी का हो साधुओं और हिंदू कार्यकर्ताओं पर एकाधिकार है? हा दिनों राजीव गांधी के चुनाव क्षेत्र अमेठी में, जिसे उन्होंने सजाया-संवारा और विकसित किया है, सहस्त्र चंडी महायज्ञ क्ल रहा है. इसमें एक साथ 55 पंडित वैदिक मंत्रों का पाठ करते है इसके रंगीन निमंत्रण पत्र में लिखा है, "राजीव गांधी ही कर्मभूमि पर हो रहे महायज्ञ में शामिल होइए." इस पत्र पर संरक्षकों में टिकरमाफी आश्रम के स्वामी हरि चैतन्य ब्रह्मचारी जो नेहरू परिवार के गुरु हैं और इंका सांसद शिवप्रताप मिथका नाम भी लिखा है. महायज्ञ के आयोजक हैं जगदीश पीयूष जिनका धंधा राजीव के लिए नारे तैयार करना है.

### चमचों का अकाल

र में चोट के कारण माधव राव सिंधिया कुर्सी पर कै थे और उनके हाथ में सूप का प्याला था. उन्हें चम्मव की जरूरत थी. उन्होंने कहा, "अरे भाई एक चमचा ला दो. मुसीबत है, इलेक्शन टाइम में चमचों की भी कमी हो जाती है.

### अमेठी का पानी

रबंदर में एक जनसभा के बाद राजीव गांधी गुलाम नबी आजाद, माधव सिंह सोलंकी और प्रदेश स्तर

के अनेक कांग्रेसी नेताओं के साथ गुजराती खाना खाने बैठे. भोजन परोसे जाने में देर हो रही थी, सो पूर्व प्रधानमंत्री ने एक सेब उठाया और खाने लगे. इस पर आजाद हड़बड़ा गए और उन्होंने राजीव से कहा, "सर पता नहीं, यह सेब धुला भी है या नहीं." राजीव ने कहा, "अमेठी का पानी पी लेने के बाद तो कुछ भी चलेगा."



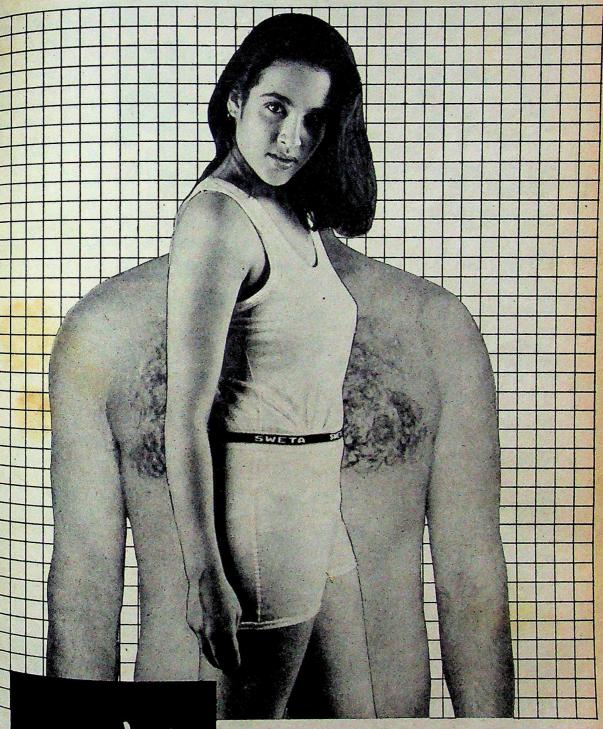
#### टायर पक्चर

जीव गांधी की भोपाल यात्रा की शुरुआत उनकी गाडी के टायर के पंक्चर होने से हुई. हवाई अड्डे से काफ़्ति रवाना हुआ. राजीव की जिप्सी अचानक रुक गई. कांग्रेसियों वे तुरंत दूसरी खुली जीप की व्यवस्था तो कर दी पर एक कांग्रेसी के कहा, "हे भगवान, पहले कौर में ही मक्खी!"

### कैदी चिमन

ष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में विमनभाई पूर्वत नहीं आए थे तो एक रिपोर्टर ने पूछा कि उनकी जी किसने ली. तब ओमप्रकाश चौटाला बोले, "क्या किसी कैंदी की जगह किसी निर्दोष को रखा जा सकता है?

### WETA UNDERWEAR-BANIAN FOR MEN ONLY



Men's Wear Women's Craze

टीं का है। ार है? इन नसे उन्होंने हायज्ञ का ठ करते हैं गांधी की स पत्र पर ब्रह्मवारी, प मिश्र का

र्गी पर बैठे चम्मच की रो. मुसीबत

नकी गाड़ी विकासियों कोंग्रेसियों वे कांग्रेसी वे

ाई पटेंस सकी जगह ने कैदी की UNDERWEAR-BANIAN

CO-o. m.r upile Domain. Gurukul-Kangri Collection, Haridwar

### कमल और कैक्टस



जपा का चुनाव मिल्ल कमल रहे या नहीं, इस पर विवाद छिड़ा हुआ है. ऐसी एक याचिका चुनाव आयोग के सामने भी है. लेकिन सबसे अजीब तर्क इंका सांसद कमलनाथ ने दिया है कि वे कमल के नाथ (मालिक) हैं, सो इस पर कोई और दावा नहीं कर

सकता. लेकिन उनके भाजपाई प्रतिद्वंद्वी कहते हैं कि संजय गांधी के इस पूर्व चेले के लिए तो कैक्टस ही ठीक प्रतीक है.

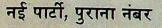
#### लात मारने की बात

स्ती बार राजमुंदरी सीट पर 70,000 से अधिक मतों से विजयी अभिनेत्री से नेता बनी जमुना का कहना है कि इस बार वे 1,00,000 वोटों से जीतेंगी. उनका मानना है कि ऐसा वे 'देण में अस्थिरता के लिए' राष्ट्रीय मोर्चा के अध्यक्ष नंदमूरि तारक रामराव को ''जिम्मेवार'' ठहराकर करेंगी. लेकिन मामला इतना ही नहीं है. दरअसल, बात यह है कि आज के ये राजनैतिक प्रतिद्वंद्वी कभी फिल्मों में साथ-साथ काम कर चुके हैं और जमुना को याद है कि 'कैसे उन्होंने एक फिल्म में रामराव को 'लात मारी' थी. फिल्म 'श्रीकृष्ण तुलाचरम' में, जिसमें वे सत्यभामा बनी हैं और कदमों में पड़े कृष्ण को ठोकर मारती है, रामराव कृष्ण बने थे. जमुना को उम्मीद है कि इस बार के चुनावी युद्ध में भी सचमुच वैसा ही होगा.

### रिमोट कंट्रोल सरकार

रा में उभरी कुछ प्रमुख समस्याओं के समय हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रदेश से गायब रहे. इसे जनता दल खूब

उद्धाल रहा है. जब पिछले साल सेब उत्पादकों का आंदोलन हुआ तो वे मुंबई में थे और जर मंडल विरोधी आंदोलन ने प्रदेश को अशांत बना विया तो वे अमेरिका में इलाज करा रहे थे. नया नारा है, "रिमोट कंट्रोल से सरकार चलाने के लिए भाजपा को वोट दें."



नता दल (स) इतनी अस्तव्यस्त हाल में है कि उसके अध्यक्ष देवीलाल के घर पर पार्टी मुख्यालय का टेलीफोन नंबर भी नहीं है. राजनैतिक रिपोर्टिंग में नए आए एक संवाददाता ने 197 पर फोन करके जनता दल (स) कार्यालय का चंदर मांगा. उसे बताया गया यह पार्टी ही नहीं है. देवीलाल के घर फोन किया. वहां से एक नंबर बताया गया जिस पर फोन करने पर जवाब मिला, "जनता दल कार्यालय." संवाददाता के आश्चर्य का अंदाज लगाया जा सकता है.

अपनों को ही भूल गए

त पटना के गांधी मैदान की है. राष्ट्रीय मोर्चा की यह पहली चुनाव रैली थी. विपक्ष के कई दिग्गज इस सभा में



थे. भारी भीड़ के बीच अज्ञात भाषा (अंग्रेजी) में व्यंग्य के बिय भरे वाण छोड़कर तिमलनाड़ के पूर्व मुख्यमंत्री मुत्तवेल करणानिष्व ने जितनी तालियां बटोरी उतनी किसी और ने नहीं. लेकिन जब उन्होंने जयलिता के बारे में कहा, "मैंने जनहित में 20 बार जेल यात्रा की है लेकिन जिल लोगों ने सिर्फ सिनेमा और वीडियो फिल्मों में जेल देखी है वे मुझे राष्ट्रद्वोही कहते हैं", तो वे भूल गए कि मंच पर राष्ट्रीय मोर्च के अध्यक्ष और एक्टर रहे एन.टी. रामराव भी बैठे हैं.

ोसर गुप्त

पी के लि

इह करने क

1.65,000 हम

को में हिम्

वा-पैसा,

वेतों में अमा

क बात का

तरह नहीं ज

ल स्वर्गलोक

ये 7,000

भावना के उ

ग्रेनजर कि

लको अपनी

में भूख

### पिछवाड़े वाली पार्टी

नता दल (स) का दैनिक संवाददाता सम्मेलन उस्भे दिल्ली के डॉ. राजेंद्र प्रसाद रोड स्थित मुख्यालय के पिछवाड़े होता है. एक समर्थक ने कहा, "क्या यह व्यवस्था भी वैक डोर वाले राजनैतिक दल के अनुरूप ही नहीं है?"

### बीजू का फतवा

मिं लगे हैं. ओडीसा विधानसभा में अपनी खास गैली हैं उन्होंने कहा, "राजीव गांधी हों, वी.पी. सिंह या चंद्रजेबर इस अस्थिरता के लिए सभी दोधी हैं. राजीव ने अपने घर पर श्र सरकारी चौकीदार लगा रखे हैं. अगर दो और चौकीदार रखवाली के लिए लगा दिए गए तो क्या आफत आ गई."

### काले शीशे का कमाल

नतां दल नेता अजित सिंह को अकबरपुर और फैजाबाद की हाल की यात्रा में गलती से बी.पी. सिंह समा

लिया गया. जैसे ही वे रंगीन शीशे वाली कार से बाहर आए और माला पहनाने को उत्सुक समर्थकों से घर गए, तभी पीछे से मंडल आयोग विरोधी नौजवान नारे लगाने लगे, "बूनी कातिल, वी.पी. वापस जाओ." मामला गड़बड़ होता देख अजित झट से फिर कार में घुस गए. अगले पड़ाव पुरा बाजार में भी यही सब हुआ. निष्कर्ष यह है कि रंगीन शीशे में छुपकर चलने वाले नेता को दूसरों पर पत्थर नहीं फेंकना चाहिए.



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

BA हिस्सा दुई के 15 अप्रैस 1991

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotr

कुवैत के भारतीय

# हारकर भी नहीं हारे

इराकी कब्जे के बाद भी कुवैत में जमे रहे 7,000 भारतीयों ने अनोखा धैर्य, हौसला और समूह भावना दिखाई, दमन के आगे वे टूटे नहीं

ोसर गुप्ता, कुवैत मे

स सभा में चि अज्ञात ग्य के विष

मलनाडु के करुणानिधि

ोरी उतनी लेकिन जब के बारे में

में 20 बार

किन जिन

नेमा और

देखी है वे

हैं", तो वे

र राष्ट्रीय

एक्टर रहे

लन उसके

ख्यालय रे

यवस्था भी

ते गरियाने

स गैली मे

वंद्रशेषर

घर पर 50

चौकीदार

रपुर और सिंह समा

गई."

ठे हैं.

के लाख कुवैतियों के साथ ही 7,000 भारतीयों के लिए भी एक-एक चीज जोड़कर जिंदगी को फिर से इकरने का समय आ गया है. ये वे भारतीय हैं जिन्होंने अपने 155,000 हमवतनों के साथ कुवैत छोड़ देने के बजाए इराकी हों में हिम्मत में रहने का धैर्य दिखाया. उनका सब कुछ उजड़ बा—पैसा, जमीन-जायदाद, नौकरी और ज्यादातर को इराकी हों में अमानवीय यातनाएं और अभाव भी सहने पड़े. पर उन्हें कु बात का संतोष है कि वे कुवैत में ही हैं. वे उन लोगों की गढ़ गहीं जो अब इस चिंता में दुबले हो रहे हैं कि वे खाड़ी के उस्वर्णोक में दुबारा जा भी पाएंगे या नहीं.

ये 7,000 लोग साहस, आत्मसम्मान और उत्कृष्ट समूह <sup>गुवना</sup> के जीते-जागते सबूत हैं. खास तौर से इस तथ्य के <sup>हेतबर</sup> कि उनसे किसी भी पक्ष की सहानुभूति नहीं थी और <sup>तकी अपनी</sup> सरकार ने उन्हें रामभरोसे छोड़ दिया था. इनमें 300 लोग तो अभी भी लापता हैं. कयास किया जाता है कि वे इराक की जेलों में हैं. दो लोग अस्पताल में बमबारी के दौरान मारे गए. दो और, जो दिल का दौरा पड़ने से सिधार गए, के पायिव गरीर भारत लाए जाने के लिए मुर्दाघर में पड़े हैं. वजहः कुवैत में दाह-संस्कार की इजाजत नहीं है. ज्यादातर भारतीयों के घर इराकी सैनिकों और उनके फिलस्तीनी साथियों ने लूट लिए. बहुत-सी औरतों से बलात्कार हुआ. कुवैत के गाही खानदान के ज्यादातर लोगों के लिए महलों का डिजाइन बनाने वाले आर्किटेक्ट हरभजन सिंह वेदी के गब्दों में, "किसी भी तरह से यह आसान नहीं था पर हम जी सके यह हमारी बिरादरी की खासियत है." कुवैत से भारतीय दूतावास के चले जाने पर उन्हें भारतीयों की नागरिक समिति का संयोजक चुना गया.

यह समिति सलमिया के भारतीय स्कूल के प्रधानाचार्य के दफ्तर में बनी. सलमिया, शहर के बाहर बसा मध्यमवर्गीय आबादी वाला मुहल्ला है. इस समिति ने यहीं से आपसी तालमेल बनाए रखने का तो काम किया ही, वह दूतावास का, आपात

क ड्राइवर बाबासाहेब पैदल चले जा रहे थे कि एक इराकी गश्ती दस्ते ने रोककर उनसे पहचान पत्र मांगे. उनके पास अभी भी मूल कुवैती दस्तावेज थे, हालांकि काबिज फौज ने '2 अगस्त को कुवैत के कोई देश न रहने' पर ऐसे सभी दस्तावेजों को बदलने का आदेश जारी किया था. बाबासाहेब को घसीटकर स्थानीय थाने में ले जाया गया. वहां से उन्हें शहर के बाहरी हिस्से में स्थित शोएग जेल और फिर युद्ध के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ की आखिरी तिथि पास आने पर बसरा भेज दिया गया. युद्ध शुरू होने से पहले उनका तबादला बगदोंद के निकट एक जेल में कर दिया गया.

उनके नेत्रहीन पिता जहां मुंबई में बेसबी से उनका इंतजार कर रहे थे, वहीं माता उनकी तलाश में रात-दिन एक किए हुए थीं. बसरा में कार्यरत भारत के अस्थायी दूतावास ने हालांकि उनकी मां से अक्सर रूखा व्यवहार किया पर उन्होंने पैसा उधार लेकर और अपने कपड़े तक बेचकर तीन बार बसरा और एक बार बगदाद की यात्रा की. दूतावास के अधिकारी उन्हें अपने बेटे का खयाल छोड़कर वेफिक भारत लौटने को कहते रहे. लेकिन इस बेरुखी के आगे उन्होंने हार नहीं मानी. वे बताती हैं कि उन्होंने दूतावास के अधिकारियों से कहा, अगर आप लोग गुम हो गए होते तो क्या आपकी मांएं आपको यहां अपने हाल पर छोड़ देतीं?" उनकी दुआएं रंग लाई. सहाम विरोधी बागियों ने जेल तोड़कर अनेक भारतीयों, पाकिस्तानियों, बांग्लादेशियों और श्रीलंकाइयों को आजाद कर दिया. इनमें उनका बेटा भी था, जो अब सफवां के निकट एक शरणार्थी शिविर में अपनी मां से आ मिलने की बड़ी बेसबी से इंतजार कर रहा है.



मां की दुआओं ने बचाया

कृष्णाबाई गणपति गायकवाड़, 55 वर्ष और उनका 32 वर्षीय बेटा बाबासाहेब



भैं भूला, बीमार और मरने के करीब था. मेरी मां की दुआओं ने ही मुझे उस नर्क से लौटाया" चिकित्सकीय केंद्र का, यहां तक कि पुलिस थाने का भी काम करती रही. जब फोन डेड पड़े थे, टेलेक्स लाइनें अस्तित्वहीन हो चुकी थीं और उपग्रह फोन लगाने का मतलब था सिर में गोली खाना तब बाहरी दुनिया से संपर्क का एकमात्र साधन था एक क्लासरूम में छिपाकर रखा गया हैम रेडियो.

शुरू में जब इराक ने
सभी विदेशी दूतावासों को
कुवैत खाली करने का
निर्देश दे दिया तो भारतीय
दूतावास भी बसरा में
स्थानांतरित कर दिया
गया. तब भारतीय समुदाय
का संपर्क बाकी दुनिया से
पूरी तरह कट गया था.
तभी तिष्वनंतपुरम के 25
वर्षीय डिप्लोमाधारी शाजी
जॉन वर्गीज ने हैम रेडियो
के जरिए भारत से संपर्क
साधने की हिम्मत दिखाई.



"मेरे लौट आने से घर में खुशी है पर हमारे दिन तो तभी फिरेंगे जब मेरे पिता लौट आएं"

नौनिहाल ने नहीं हारी हिम्मत

अलिया मुहम्मद अली, 12 वर्ष, और उसका परिवार

त जनवरी को चौथी जमात की यह छात्रा अपने अब्बा मुहम्मद अली के साथ खरीदारी करने गई थी. इराकी फौज ने उन्हें उसी जाने-माने 'अपराध' के लिए हिरासत में ले लिया—िक उनके पास इराकी रिहायशी दस्तावेज नहीं हैं. एक से दूसरे थाने होते हुए उन्हें शोएग जेल मेज दिया गया. उन्हें खाना नहीं मिला. ठंड भी इस कदर थी कि 'हमारे सिर जमने लगे.' किसी रिश्तेदार की कृपा से अलिया को एक

कंबल मिला जो उसने बीमार अब्बा को दे दिया. शून्य से नीचे तापमान के बावजूद खुद उसने अपना काम एक बड़े-से तौलिए से चलाया. कुवैत से उन दोनों को बसरा और फिर बगदाद ले जाया गया. अलिया याद करती है कि रात को जब बमवर्षक विमान आते तो सभी कैदी डर से 'अल्ला-हो-अकबर' चिल्लाने लगते. आखिरकार, दो दूसरी भारतीय महिलाओं सहित उसे रिहाकर बगदाद की गलियों में अकेले छोड़ दिया गया. 900 किलोमीटर के सफर में बमबारी को झेलते और तबह पुलों को पार करते हुए वह कुपोषण और निर्जलीकरण का शिकार होकर घर पहुंची.

भारतीय पक्ष

### कोई सगा न रहा

देतकथा सुनाई जाती है. एक मूर्छ प्याज की चोरी करते पकड़ा गया. पंचायत ने उसे सजा सुनाई कि वह या तो सौ कोड़े खाए या सौ प्याज. चोर ने प्याज खाना कबूल कर लिया. लेकिन 10 प्याज खाने के बाद ही उसकी बस हो गई और वह कोड़े मारे जाने का अनुरोध करने लगा. अभी 10 कोड़े ही पड़े थे कि वह पीड़ा सहन न कर पाया और फिर प्याज खाने की सजा मांगने लगा. इसी तरह सिलसिला चलता रहा और आखिरकार उसे दोनों सजाएं भुगतनी पड़ीं.

ऐसी ही कलाबाजी की नीति से भारत की दशा भी उस मूर्ख जैसी हो गई है. इराकियों के अलावा फिलस्तीनी और जॉर्डनवासियों सरीखे दूसरे सद्दाम समर्थक अरब भारत को अमेरिकी पिट्ठू करार देते हैं क्योंकि उसने अमेरिकी विमानों को ईंधन मुहैया कराने की सुविधाएं दीं. उधर, खाड़ीवासी और कुवैत के लोग भारत को सद्दाम की कठपुतली मानते हैं क्योंकि उसने ईंधन की सुविधा बंद कर दी. ये लोग राजीव गांधी और उनके सलाहंकारों के बयानों का हवाला भी देते हैं जिनका इस क्षेत्र में व्यापक प्रचार हुआ है.

अम्मान में यह रुख परिवर्तन रातोंरात हुआ. पहले टैक्सी चालक किसी भारतीय से अक्सर भाड़ा नहीं लेते थे और 'अमित बच्चन' पर चर्चा करते हुए उसे सिगरेट तक पेश किया करते थे. लेकिन ईधन मुहैया कराने की पहली खबर आते ही यह रुख बदलकर पूरी तरह शत्रुतापूर्ण हो गया. तर्क यह या कि 'आप बी-52 विमानों को तेल दे रहे हैं जो अरब बच्चों को बमवारी का निशाना बना रहे हैं.'' इस शत्रुता की क्षतिपूर्ति अरबों के दूसरे पक्ष की ओर से आभार प्रकट किए जाने के रूप में होगी, यह उम्मीद भी ईधन की सुविधा बंद करते ही खत्म हो गई.

खाड़ी क्षेत्र में भारत को कमजोर इरादे वाला देश माना जाता है. एक वरिष्ठ सऊदी अधिकारी ने कहा, "विदेश नीति चलाने वाले अपने लागू-भग्गुओं से कह दीजिए कि खाड़ी में अब उनके प्रति कोई सम्मान नहीं बचा है"

औपचारिक तौर पर, उच्च कुवैती अधिकारी टिप्पणी करते हुए सावधानी बरतते हैं. लेकिन अनौपचारिक रूप से भारत के रवैए के प्रति उनमें कटुता है एक अधिकारी ने कहा, "नेहरू और गांधी के देश से हमें कम-से-कम यह उम्मीद थी कि वह इराकी कब्जे की खुलेआम निंदा करेगा." विपक्षी नेता खालिद सुलतान ने तो दो टूक शब्दों में कहा, "हम सभी भारत के रवैए से मायूस हुए हैं. कांग्रेस पार्टी का रवैया तो और भी क्षोभनीय है."

दुर्भाग्य से, नेताओं के इस असमजस की कीमत राष्ट्रीय हित के रूप में चुकानी होगी. भारत को अब कुवैत के पुनर्निर्माण में कोई हिस्सेदारी मिलते की उम्मीद नहीं है. इराक और फिलस्तीनी क्षेत्र में भी भारत को अब कमजोर, अविश्वसनीय देश माता जाएगा. भारत ने मध्य-पूर्व की आगीं किसी आर्थिक या राजनैतिक कार्यसूत्री में से खुद को बाहर कर लिया है.

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri की शुरुआत, अल्ट्राफ़ाइन

देश में पहली बार व्हाइट सीमेन्ट अल्टाफ़ाइन! जो आपके फर्शको दे सही-सही फ़िलिश, रवृबसूरत डिजाइन

व्हाइट सीमेंट निहोन सुप्रीम के साथ। जापान के निहोन सीमेंट तकनीक से निर्मित, श्रेष्ठ उत्पादन-द्निया भर में सबसे आगे। मशहर आसानो ब्रांड के निर्माता की भेंट। निहोन सुप्रीम-खासतौर पर अल्ट्रा-सफेदी, अल्ट्रा-चमक, अल्ट्रा-मज़ब्रुती और अल्ट्रा-क्रिफायत का यक्तीन दिलाये। क्योंकि इसे ज्यादा फिलर के साथ इस्तेमाल किया जाये; पिगमेंट्स के साथ आसानी से घुलमिल जाये; रंगों में बेहतर चमक लाये। मार्बल चिप्स के साथ ज्यादा मज़बूती से चिपक जाये. किस्म-किस्म की डिज़ाइन बनाये; सालोंसाल फर्श वैसा ही खूबसूरत नज़र आये। अब खुशी-खुशी आगे बढ़ें, अपना सपना पूरा करें। मोज़ेक टाइल्स और टेराज़ो पैटर्न में खूबसूरत फर्श गढ़ें। अल्ट्राफ़ाइन निहोन सुप्रीम---नज़र आये बेहतर! काम. करे बेहतर! सचम्च, अल्ट्राफाइन रंग-रूप-सजावट की शान।



### अल्ट्राफाइन सजावट का शान

Nihon Nirmaan Limited की प्रस्तुति भालोटिया युप की एक कम्पनी, जापान के निहोन सीमेन्ट के. लि.के तकनीकी और आर्थिक सहयोग से निर्मित ।

निको हाउस, 2 हेयर स्ट्रीट, कलकत्ता 700 001

पैटर्न वाले फ्लोर सीमेन्ट पेन्ट्स

रंगीन सीमेन्ट प्लास्टर

टायरोलीन वाल फ़िनिश प्राणान वाल फ़िनिश 🛕 एंग्लामरेटेंड माबल 🛕 प्राणान कर्मार में, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, चंडीगढ़, पंजाब और मध्य प्रदेश में, अर्था क्रिक्टिक के नाम से भी अपने द्वारा मार्केट किया जाता है जम्मू और कश्मीर में, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, चंडीगढ़, पंजाब और मध्य प्रदेश में, अर्था क्रिक्टिक के नाम से भी अपने द्वारा मार्केट किया जाता है जम्मू और कश्मीर में, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, चंडीगढ़, पंजाब और मध्य प्रदेश में, अर्था क्रिक्टिक के नाम से भी अपने द्वारा मार्केट किया जाता है जम्मू और कश्मीर में, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, चंडीगढ़, पंजाब और मध्य प्रदेश में, अर्था क्रिक्टिक के नाम से भी अपने के क्रिक्टिक के नाम से क्रिक्टिक के नाम से भी अपने के क्रिक के नाम से क्रिक्टिक के नाम से क् बिल्डिंग और कंस्ट्रक्शन के लिए

Mudra: Cal: NNL: 0490 Hin

वर्ष. थी जमात

पने अब्बा दारी करने उन्हें उसी र हिरासत स इराको हैं. एक से गोएग जेल

राना नहीं र थी कि ा.' किसी या को एक खुद उसने द ले जाया से 'अल्ला-

र बगदाद

और तबाह

ने लग्गु ते में अब चा है." व क्वैती रावधानी हिंप से म्दुता है.

रू और कम यह ठिंजे की क्षी नेता शब्दों में रवैए से रवैया तो

असंमजस रूप में कुवैत के मिलते क और को अब

Silvicrete

. माना आगामी **गर्यमू**ची



"मुझे इसके जोखिम का अंदाज तो था पर भारत से संपर्क का यही एकमात्र उपाय भी तो था"

बाधाओं के बावजूद संपर्क बनाए रखा

शाजी जॉन वर्गीज, 25 वर्ष

राकी कब्जे के बाद जब कुवैत में विदेशों से सारा संचार टूट गया तो स्थित भारतीय दूतावास अधिकारियों ने तिरुवनंतपुरम के इस इलेक्ट्रॉनिक्स डिप्लोमाधारी को मदद के लिए बुलाया. पहले उन्होंने दूतावास से भारत के साथ रेडियो संपर्क कायम करने में सहायता की. लेकिन जब दूतावास का बसरा में तबादला हो गया और भारत से सारा संपर्क टूट गया तो उन्होंने सलिमया बस्ती के भारतीय स्कूल की छत पर एक कक्षा में यह

उपकरण लगाया. दूसरे साथी जहां गली की निगरानी करते, वहीं वे दिन में एक बार 'एक-दो-तीन' की धुन के जरिए भारत से संपर्क साधते. कई बार उनकी बात सीधे दिल्ली से होती तो कई बार केरल के किसी दूसरे शौकिया ऑपरेटर से. इस ऑपरेटर से वे मलयालम में बात करते थे और आस पास मंडराते इराकियों को झांसा दिया करते थे. सारा मामला बहुत जोखिम भरा था क्योंकि अनुमति के बिना शौकिया रेडियो के इस्तेमाल पर तत्काल गोली मार दी जाती. मगर यह 7,000 भारतीयों की एकमात्र जीवनरेखा भी थी.

समिति के एक सदस्य और नौवहन अधिकारी मैथ्यू कुरुविला ने बताया, "इस बारे में फैसला करना हिम्मत का काम था क्योंकि इराकी कब्जे वाली जमीन से शौकिया रेडियो से संपर्क करने की सजा मौत ही मिलती. पर हमने खतरा मोल लिया." वर्गीज हर

रोज 'एक, दो, तीन' का कोड इस्तेमाल कर भारत से और कभी-कभी विदेश मंत्रालय से संपर्क साधते थे. वे केरल के एक शौकिया रेडियो ऑपरेटर से भी संपर्क साधने में कामयाब हो गए. उससे वे मलयालम में बात करते थे ताकि इराकी यदि सुन भी रहे हों तो उनकी समझ में कुछ न आए. इराक के कब्जे के बाद, और खासकर आखिरी तीन महीनों में दिल्ली ही क्या कोई भी उनकी मदद नहीं कर सकता था. बाद में वंधक के तौर पर इस्तेमाल किए जा सकें, शायद इसीलिए इराकियों ने गैर-क्वैतियों की अंधाधंध धरपकड़ शुरू कर दी. बहाना था 'सही' पहचान-पत्रों का न होना. इराकियों ने घोषणा कर दी थी कि सभी बाहरी लोगों को अपने

हमने कह दिया कि वे दूतावास की संपत्ति है." पर सिमिति बहत-से दूसरे स्कूलों की संपत्ति नहीं बचा सकी. वेदी के शब्दों में, "स्कूलों से अक्षरण बलात्कारं किया गया."

भारत आ गए कई लोगों के घरों की भी यही दुर्गति की गई



"मुझे उम्मीद है कि मेरे पति लौट आएंगे पर जब तक वे मिल नहीं जाते हम कुवैत से कैसे निकलेंगे"

लौटने की आस

फातिमा राजीवते, 43 वर्षे, और उनकी बेटी अनीसा

क्वैती परिचय पत्र सौपका

इराकी परिमट ले तेना

लापता भारतीयों का

पता लगाने और जेल में बंद भारतीयों को रिहा कराने के

वच गए भारतीयों ही

एकमात्र चिता नहीं थी

हिफाजत करना और उनकी

सलामती की खबर भारत में

परिसर में टाटा की वे वसें

खड़ी हैं जिन्हें कुवैत के छह

भारतीय स्कूल इस्तेमाल

करते थे. इनमें से एक स्कूल

की प्रधानाचार्या इंदिरा शर्मा

ने बताया, "इराकी कई बार बसें लेने आए पर हर बा

परिवारों

पहुंचाना. एक स्कूल के ब्याकभी नहीं व

लेना चाहिए.

चाहिए और अपनी कार्र गाउँ का इराकी पंजीकरण करा

लिए इराकी अधिकारियों के व्हें अपको अप पास भागदौड़ करना ही वहां

उनका एक और काम या संसधारण कप भारतीयों की जायदाद की

क्रे के क्या है।

म्राड्या फाइवर

 जीवते परिवार के लिए रोजी-रोटी कमाने वाले गेर अहमद को एक दिन अचानक इराकी सेना के गश्ती दस्ते ने पहचान पत्र व पाए जाने पर पकड़ लिया. कई दिवी तक हैरान-परेशान रहने के बा उनके परिवार को इस मयात गिरफ्तारी का कुछ अस्पष्ट विवर्ष ही मिल पाया अनेक याचिकाओं है बावजूद इराकी अधिकारियों उनकी गिरफ्तारी की पुष्टि करते है मी इनकार कर दिया युद्ध समाप होने के बाद रिहा हो चुके या महाम विरोधी बागियों के जेल तोड़ते वर

भाग आए कुछ भारतीयों ने सबर दी है कि वे अभी भी 300 दूसरे भारतीयों के साथ बगदाद के में फंसे हो सकते हैं. उनके परिवार के किली में फंसे हो सकते हैं. उनके परिवार के लोग इस उम्मीद में अल्ला से दुआएं कर रहे हैं कि वे किसी दिन जरूर घर लौट आएंगे. शापन उन्होंने के उम्मीद में अल्ला से दुआएं कर रहे हैं कि वे किसी दिन जरूर घर लौट आएंगे. शायद उन लोगों की दुआएं कुछ रंग लाएं और सद्दाम की जेलीं है वि अपने घर हंसी-कुशी लौट अपरं अपने घर हंसी-खुशी लौट आएं.

## जी पुरानी रेडियल तकनीक आपको गुमराह कर रही है ?

ब्रांडियल टायर एक जैसें

हं अपको अपनी मोटर के लिये क्षेंग्रियल चाहिये, तो देखिये, हे रावे क्या है।

काम या निमाधारण कपड़ा या फाइबर

मध्य पा फाइबर ग्लास स्टील का स्कूल के बता कभी नहीं कर सकते। न होत बेल्टेड रेडियल आपकी

मोटर की क्षमता बढ़ाते हैं। यह ईंधन अधिक बचाते हैं, ज्यादा माइलेज देते हैं एवं हर प्रकार की सड़कों पर बेहतर पकड रखते हैं।

तभी तो संसार की 97% मोटरें स्टील बेल्टेड रेडियल टायरों पर चलती है।

फिर आपकी मोटर क्यों न उठाए स्टील का फ़ायदा । ब्रेक लगाते समय, मोड़ते समय या गीली सड़कों पर मोटर चलाते समय, स्टील रेडियल टायरों की मज़बूती और सुरक्षा का मुकाबला नहीं।

लीजिए, अर्त्तराष्ट्रीय-स्तर के स्टील रेडियल सयर।

केवल जे के द्वारा निर्मित। यही है असली रेडियल।

असली रेडियल के बारे में अधिक जानकारी के लिए, इस पते पर लिखें: श्री एस. वी. श्रीनिवासन्, रेडियल क्लब, जे.के.इन्डस्टीज लिमिटेड 3, बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002





त्र सौपका

करण करा तीयों का जेल में वंद

हा कराने के कारियों के ना ही वहां तीयों की नहीं थी ायदाद की

और उनकी र भारत में रों की वे वसे

वैत के छह इस्तेमाल एक स्कूल इंदिरा शर्मा नी कई बार र हर बार

T कि वे स्कूलों की से अक्षरभ

ति की गई

ने तिए ाले शेव क इराकी न-पत्र त कई दिनों के बाब

मयानक विवर्ण काओं के रयों ने करने से

समाप्त ग सहाम इने पर वाद जेत

वे किसी लों से बे

भारतीय नागरिकों ने बताया कि इराकियों के फिलस्तीनी साथी अक्सर इराकी सैनिकों को अमीर भारतीयों के घर बताते थे और फिर दोनों उन्हें मिलकर लूट लेते थे. वेदी ऐसी भारतीय औरतों के बारे में बताते हैं जिनके साथ उनके परिवारवालों की मौजूदगी में बलात्कार हुआ, ''पर अब वे सामाजिक परेशानियों के चलते इसकी शिकायत नहीं करेंगी." पर बचे रहे भारतीयों के साथ भारत सरकार ने जो व्यवहार किया उसका उन्हें सबसे ज्यादा दुख है. दूतावास के कर्मचारी सबसे पहले भागे, और उसके कर्मचारी बहुत कठोरता से पेण आते थे. कृष्णाबाई गणपत गायकवाड़ का कहना है, "वे इतने निष्ठुर थे कि अगर भारत में होते तो मैं उन्हें चप्पल से मारती." उनके ट्रक ड्राइवर बेटे बाबासाहेब को इराकियों ने गिरफ्तार कर लिया था. उनकी

पहले इराकियों की बात मानी और अपना दूतावास बंद किया आपके विदेशमंत्री ने सबसे पहले अधिकृत कुवैत की यात्रा क्ष और इराकियों का समर्थन किया हम आप पर क्यों भरोत करें?" वेदी भविष्यवाणी करते हैं कि 1,72,000 भारती कर्मचारियों में से 40,000 से ज्यादा कुवैत नहीं लौट सकेंगे

भारत विरोधी भावनाओं के अलावा कुवैती सरकार है बदली हुई नीतियों के कारण भी यह भविष्यवाणी सच सावित हो सकती है. अधिकारियों का कहना है कि कुवैत के पास उस पुरान स्थिति में लौटने का कोई रास्ता नहीं है जिसमें 70 प्रतिम आबादी आप्रवासियों की थी और वह 30 प्रतिशत कुवैतियों के सेवा करती थी. एक वरिष्ठ अधिकारी ने संकेत किया कि कुर्वत सरकार आबादी को 'संतुलित' रखने के लिए एक योजना का रही है ताकि विदेशियों के



## ''मेरे बच्चे जेल में भूखे रहे और उनके जिस्म पर फफोले पड़ गए. मगर अब हम नई जिंदगी शुरू कर सकते हैं"

स्टेशन ले जाया गया. शुरू में पूछताछ के बाद इस परिवार को कहा गया कि सारा मामला चंद लम्हों में ही निबट जाएगा. पर स्थानीय थाने से शोएग जेल और फिर बसरा ले जाए जाने पर उनकी सारी उम्मीदों पर पानी फिर गया. जेल में उन्हें खाने के नाम पर दिन भर के लिए एक मूखी रोटी और आधा गिलास पानी दिया जाता. दो और तीन साल के बच्चे —अनिशा और . आशा—सूखकर कांटा हो गए और उनके सारे जिस्म पर फोड़े उमर आए. आखिरकार, भाग्य से या 'ईश्वर की असीम कृपा से' जब सारा परिवार रिहा होकर घर लौटा तो पाया कि उनकी गैर-मौजूदगी में उनका घर उजाड़ हो चुका है. कुछ बचा नहीं था, यहां तक कि खाने के लिए भी कुछ नहीं था. और अगर राहत के लिए बनाई गई भारतीय सिमिति ने उन्हें तत्काल चावल, खाद्य तेल और ईंधन मुहैया न कराया होता तो वे भूखों मर गए होते. मासूम अनिशा की हालत तो यह है कि वह अभी ठीक से चल भी नहीं पाती.

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शिकायत है कि वे जब भी अपने वेटे का पता लगाने दूतावास गईं उन्होंने उनसे बुरा सलूक किया. और इस पखवाड़े के अंत में जब कुवैत में भारतीय दूतावास खुलेगा तो उसे नाराज कुवैतियों से कहीं ज्यादा क्रुद्ध भारतीयों का सामना करना पड़ेगा.

भारतीय समुदाय परेशानियों की ओर संकेत करता है. पिछले पखवाड़े सबसे पहले अमेरिकी दूतावास ने आप्रवासी श्रमिकों को बुलाना शुरू किया. लेकिन उसने भारतीयों को छोड़ दिया. कई वरिष्ठ कुँवैती अधिकारियों ने, जिनमें संयुक्त राष्ट्र संघ स्थित क्वैती राजदूत शामिल हैं, भारतीयों को न बुलाने का संकेत दिया हैं. वेदी कहते हैं, "कुवैतियों का कहना है कि आप लोगों ने सबसे

## सारा परिवार सींखचों के पीछे

अनिशा, (2 वर्ष) और आशा (3 वर्ष) के साथ चिता और सुमति रेड्डी

**"**ठ जनवरी को रेड़ी परिवार अपनी कार अदेलिया स्ट्रीट खरीदारी करने गया था. एक पुलिसवाले ने उन्हें रोककर अपने साथ चलने को कहा क्योंकि कार पर कुवैती लाइसेंस प्लेट लगी हुई थी. इराकियों ने आदेश जारी किया था कि सभी कारों पर नई इराकी नंबर प्लेटें लगाई जाएं. उन्हें स्थानीय पुलिस

> चला सकते हैं." मुतावा परोक्ष हप भारतीयों को भी चेताव देते हैं. उनका कहना है है कोई भी देश विदेशी श्रीमन को आमंत्रित करते सम अपनी सुरक्षा को पूरानी घ्यान में रहेगा. विदेश श्रमिकों को इस आधार है आमंत्रित किया जाएगा अधिग्रहण के दौरान उन्

रिकार्ड क्या था. वे आगे कहते हैं कि अंतिम फैसला नई अवि नीति को अंतिम रूप दे दिए जाने के बाद किया जाएगा आखिर में अगर आप्रवासी श्रमिक लौटते भी हैं तो वे कुर्वत पहले जैसा सुविधाजनक नहीं पाएंगे. मुतावा कहते हैं कि सही आप्रवासियों के लिए मुफ्त चिकित्सा और रियायत के सुविधाएं खत्म कर देगी. अधिकारियों का कहना है नागरिकता कानून को भी बदला जाएगा और कुवैती ग्रीव लागू किया जाएगा. "यह लोगों के हुनर पर निर्भर करेगा वर्ष कुनैत में जनके कार्या कुवैत में उनके रहने के वर्षों पर." इससे हजारों भारती स्वासकर केरल के उन्हें खासकर केरल के लोगों का, भविष्य अंधकारमय हो जाएगी

"अभी मैंने तय नहीं किया है कि विदेशियों की संख्य

आबादी मूल निवासियों वी आबादी से ज्यादा न हो

योजनामंत्री सुलेमान अब्दर रजाक अल मुतावा कहते हैं

कितनी होगी. लेकिन हो

क्वैतियों और गैर-क्वैतियों

की आबादी के बीच संतुल

कायम करना होगा हमारे

इसलिए सभी आप्रवासिय

को वापस बुलाना हमार

रहमान अल अवधी कहत

होगा. अवधी कहते हैं,

संसाधन चौपट हो गए गराला पर

मजबूरी नहीं है." मंत्रिमंडत मामलों के राज्यमंत्री अब् कि क्वैतियों को बाह्य मदद के बिना रहना सीवत

ए चंडीगढ़ पर

चार नौकरानियों के बजा ना, तभी जा दो नौकरानियों से की गङ्गवा गड़बह पह घटना इ ले वाली थी रेटाला ने इन या था कि वे हैं. परंतु निम्रता से पाल निकेन ताजप शिला को ग्रहा

> धानसभा की गीपत कर दिया में सेल राज्यमं ने तीनों के खि याचिकाएं क्षों के सदन है। एहं गए और : वा गई. अ

व्यक्ष एच. एस

\*(H)

न बंद किया

सकेंगे.

सरकार के

च सावित हो

70 प्रतिशत

कुवैतियों के

योजना वना

वदेशियों क

विासियों की

ादा न हो

मान अब्द

वा कहते

नहीं किया है

की संख्या

लेकिन हमे

गैर-क्वैतियो

बीच संतुल

होगा. हमा

आप्रवासिक

ने के बजाए

से कार

क्ष हप न

ी चेतावन

हिना है वि

शी श्रीमक

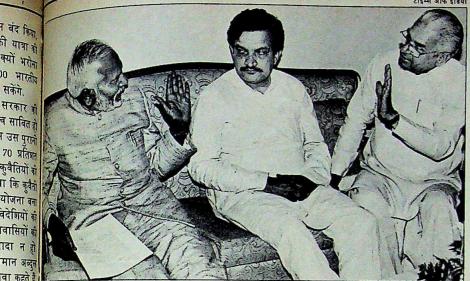
करते समा

ते पूराम्

II. "विदेशी

आधार प

ाएगा. औ



# गीर पड़ी खतरे में

## हो गए किला पर मुख्यमंत्री बनने के छठे दिन ही गाज गिरी

ाना हमार पिछले पखवाड़े हरि-" मंत्रिमंडन याणा के जनता दल (स) मंत्री अब्दु विधायकों को ाधी कहते हैं ओमप्रकाश चौटाला को को वाहग हना सीबन तीसरी बार विधायक दल का नेता चुनने के हते हैं, व

ए वंडीगढ़ पहुंचने का वायरलेस संदेश <sup>जा, तभी</sup> जाहिर हो गया कि देवीलाल <sup>हे</sup> हुन्<sub>वा ग</sub>ड़बड़झाले पर उतारू है.

वह घटना इसलिए भी ज्यादा परेशान वित्र वाली थी क्योंकि दो दिन पहले ही धा था कि वे हुकुम सिंह की जगह लेने के हैं परंतु 'निर्वाचित' होने के बाद की कहा, 'मैं पार्टी का अनुशासित हैं और उसके आदेशों का निम्रता से पालन करता हूं."

के पांचवें दिन ही जाएगा है के ग्रहण लग गया. विधानसभा रान उनक भिन्न एस. चड्डा ने सत्तारूढ़ जनता नई आबार के तीन विधायकों को कानमभा की सदस्यता के अयोग्य वे कुवैत है कि का सदस्यता का मंत्री के दिया इनमें पहली बार मंत्री वे कुवा कर दिया. इनमें पहला बार कि में के राज्यमंत्री वासुदेव शर्मा भी थे. वित्रों के सिलाफ दलबदल कानून के के भविकाएं लंबित पड़ी थीं. इससे 82 ग्रीन की भागकाए लावत पड़ा था. ब्राह्म के सदन में जद (स) के 39 सदस्य जान सिंदन में जद (स) क 39 प्राप्त भीर बौटाला सरकार अल्पमत मंत्रिमंडल की आपात बैठक बूलाई और राज्यपाल से विधानसभा भंग करने और नए चुनाव कराने की सिफारिश की.

लेकिन इंका, भाजपा और जनता दल ने राष्ट्रपति से अनुरोध किया कि चूंकि चौटाला सरकार अल्पमत में है इसलिए उसकी सिफारिश न मानी जाए और उन्हें बरसास्त कर विधानसभा चुनाव कराए जाएं. इंका के प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सिंह और भजनलाल ने राज्यपाल धनिकलाल मंडल से भेंटकर राष्ट्रपति शासन के तहत चुनाव कराने की मांग की. इन नेताओं ने कहा कि चौटाला को अगर कार्यवाहक मुख्यमंत्री रखा गया तो महम की घटनाओं

की पुनरावृत्ति होगी.

चौटाला तय मान चुके थे कि आगामी चुनावों में केंद्र की जनता दल(स) सरकार पराजित हो जाएगी और अगली सरकार मौजदा हरियाणा सरकार को बरखास्त कर चुनाव करवाएगी. इसलिए वे कार्यवाहक मूख्यमंत्री के रूप में चुनाव का सामना करना चाहते हैं. चौटाला के पिता और गुरु देवीलाल इस तमाशे को इतनी जल्दी में निबटा लेने के इच्छुक थे कि वे दिल्ली से राज्यपाल धनिकलाल मंडल को लेकर चंडीगढ़ उड़ गए ताकि शपथ ग्रहण समारोह फौरन निबटाया जा सके. पर तभी उन्हें कुछ सद्बुद्धि आई और वे मंडल को शपथ ग्रहण समारोह के

मंडल के साथ वीरेंद्र सिंह और भजनलालः विरोध

लिए रवाना करके चंडीगढ से ही दिल्ली लौट आए.

विपक्षी दलों ने अपनी नाराजगी उनकी ताजपोशी नहीं जाहिर हरियाणा इंका अध्यक्ष वीरेंद्र ने कहा, धोखाधड़ी, झठ और देवीलाल के परिवारवाद की नंगी हवस का सबसे गंदा उदाहरण है." भाजपा ने हरियाणा विधानसभा को तुरंत भंग करके राष्ट्रपति शासन लागू करने और नए चुनाव कराए जाने की मांग

की. जनता दल (स) के एक वरिष्ठ नेता ने कहा, "यह सारा तमाशा बुलेट से वोट जुटाने की मंशा से किया गया चौटाला की इस चाल का प्रधानमंत्री चंद्रशेखर की छवि पर भी बूरा असर पड़ा है.

लेकिन चौटाला की नई ताजपोशी से राज्य में विद्रोह भड़क गया. जनता दल(स) के तीन मंत्रियों—धर्मवीर, नरवीर सिंह और सुरिंदर मदान ने चौटाला की वापसी के पहले ही विधानसभा से इस्तीफा दे दिया. कुछ की नाराजगी गुपचुप भी है. चौटाला को चुनने' के लिए हुई बैठक में पार्टी के 44 में से 39 विधायक और चार निर्दलीय विधायक ही मौजूद थे.

वैसे आने वाले चुनाव चौटाला के लिए मुश्किल ही साबित हो सकते हैं. अपने उग्र रवैए के कारण वे अपने समर्थकों को दूर करते जा रहे हैं. कृपाराम पूनिया, हीरानंद आर्य, मूलचंद जैन, वीरेंद्र सिंह और बनारसीदास गुप्त जैसे नेता उनसे अलग हो चुके हैं. चौटाला समर्थकों को आशंका है कि उनकी वापसी से दलबदल का दौर चल पड़ेगा. कुछ लोग इंका में जा सकते हैं तो कुछ जनता दल में.

जद (स) के तीन विधायकों की सदस्यता न छिनती तो चौटाला विधानसभा भंग करने की सिफारिश नहीं करते. इसके लिए केंद्र सरकार भी उन्हें मजबूर करने की स्थिति में नहीं थी. लोकतांत्रिक नियम-कायदों को ठेंगा दिखाकर और हरियाणा को पुश्तैनी जागीर मानकर राज करने के चौटाला के मंसूबे को पलीता लग ही गया. अब देखना यह है कि जनता उनके बडबोले दावों की हवा कैसे निकालती है.

# अकेले ही बने सूरमा

## प्रशासन के नाम पर अराजकता और अकर्मण्यता

<sup>■</sup>ह एक सर्वविदित तथ्य है कि य ह एक स्वायात । भारत के प्रधानमंत्री का पद भारी दायित्वों वाला है. और यह भी अतिशयोक्ति न होगी कि चंद्रशेखर स्वतंत्र भारत के ऐसे प्रधानमंत्री हैं जिनके सिर पर सबसे ज्यादा बोझ है. वे खुद तो लोकतंत्रीकरण और विकेंद्रीकरण के हिमायती हैं पर उनके प्रधानमंत्री कार्यालय में ही जैसे केंद्र सरकार की सारी सत्ता सिमट गई है.

नतीजा यह कि सब कुछ जैसे ठहर-सा गया है. लोकसभा के केवल 62 और राज्यसभा के महज 9 सदस्यों के समर्थन से प्रधानमंत्री बने चंद्रशेखर की त्रासदी यह है कि वे मंत्री पद के लिए 50 सांसद तक नहीं जुटा पाए. परिणामस्वरूप उन्हें खुद ऐसे 15 बड़े विभाग संभालने पड रहे हैं जिनका जिम्मा कबीना स्तर के अलग-अलग मंत्रियों को सौंपा जा सकता था. और प्रधानमंत्री का कार्यालय कल मिलाकर 50 छोटे-बड़े विभागों और मंत्रालयों का कामकाज देख रहा है.

चंद्रशेखर मंत्रिमंडल की कमजोरियां पहले दिन से ही उजागर हो गई थीं. उनके पास न तो ऐसा कोई गृहमंत्री है जो मस्जिद-मंदिर विवाद जैसे गंभीर मामलों को देख सके और न ही ऐसा कोई उद्योगमंत्री है जो देश की उद्योग नीति को कोई दिशा दे सके.

नतीजतन, फिलहाल प्रधानमंत्री कार्यालय में तकरीवन एक दर्जन आला अफसर और राज्यमंत्री कमल मोरारका ही सारे मुख्य विभागों का कामकाज देख रहे हैं. मगर चंद्रशेखर अपने दफ्तर के लिए भी कम समय निकाल पाते हैं. उन्हें राजनैतिक गतिविधियों से फुरसत नहीं मिलती.

इस कदर बोझ से लदे-प्रधानमंत्री खामियां शुरू में सामने नहीं आईं. क्योंकि तब चंद्रशेखर और उनके ज्यादातर मंत्री अपनी गद्दी जमा ही रहे थे और अपनी

आका यानी इंका के भरोसे समस्याओं को निबटा रहे थे. परंतू इन लोगों ने जमने के बाद जब खुद काम करना शुरू किया तो नौकरशाही से वास्ता पड़ गया. नौकरशाहों को जब तक ऊपर से आदेश न मिलता, वे काम करने से इनकार कर देते. वे प्रधानमंत्री के लिखित आदेश तक की मांग करते.

इस स्थिति का सबसे ज्यादा नुकसान

लेलना पड़ा है—गृह मंत्रालय को कि जम्मू-कश्मीर, असम और पंजाब में कुति कराने जैसे अहम फैसले करने हैं विभाग वैसे तो राज्यमंत्री सुनोधकार सहाय के अधीन है मगर वे राज्यपान और राजनैतिक दलों को कोई निर्देश क्षे की स्थिति में नहीं हैं क्योंकि ये नी उनकी बात सुनने को तैयार नहीं. मसलन, प्रधानमंत्री चाहते थे हि

पंजाब के उग्रवादियों से बातचीत शुरू है जाए ताकि वहां चुनाव कराने का माहे वनाया जा सके. चंद्रशेखर ने सिमरनजी हा है. इस सिंह मान से भी राज्य में अमन काया विकृद दुवे ने करने के उपायों पर बातचीत की फिरहे समसंभाला है दूसरी राजनैतिक समस्याओं में उलझ गए और मामला खटाई में पड गया. सहार और नागरिक उड़्यन राज्यमंत्री हरमोहा धवन ने कुछ कोशिश की पर उन्ने सरहेहैं कि मामला बना नहीं.

इसी तरह असम के मामले में सहाय उल्फा समस्या से निबट रहे थे और पूर्व लाएम सिद्धू

राज्यपाल देवीदास ठाक्र से एका चुनाव निर्देश दे रहे थे. लेकिन अक् प्रधानमंत्री से निर्देश चाहते है क्योंकि गृह मंत्रालय उना होने के कार अधीन था. मगर वे उनसे संपर्व

न कर पाए. उलटे उन्हें पर विवस और से हटा ही दिया गया ठाकुर ने उल्फा नेताओं है अच्छी समझदारी बना है दें सी तरह थी. अब नए राज्यपात ह आने से मामला जि मिनेत्रालय मे पुरानी स्थिति में वत विरो पूरा वि गया है. इसी तरह मंदिर वी.पी. सिंह विवाद चंद्रशेखर की शुरुआत पहल बेकार चलीं गईहै और दोनों पक्ष र्षि टकराव के मूड में हैं.

चुनाव की घोषणा केंद्रीकरण के खतरना नतीजों को उजागर करन शुरू कर दिया है. मु चुनाव आयुक्त ने 20 ती पुलिस बल तैनात कर की मांग की है. लेकिन मंत्रालय यह मांग 🖫

नहीं कर सकता क्योंकि फीसदी केंद्रीय सुरक्षा है जम्मू-कश्मीर, असम औ



62 : डिया दुंडे • 15 अप्रैल, 1991

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri

जब में तैना क्षा आईटी बं लाना पड़ेगा. ना पर ही ह वार से फुर र्गाजकता है आतमंत्री से उ विदेश मंत्रा दो महीने र

वना राजनैति तिया के चक्व जारराष्ट्रीय छ अमीर देशों क कर से उबा निस्ते पसवाडे

वहार गए. ज और नौकरशाह हे लिए नाम गएक आरोर्प

(नुकसान व र र उद्योग क्त में पेश वि भको भारी : कार बदलने विनहीं हुआ हों पर सोचने विजनिक क्षेत्र गें भी जिसे ब ही था, काम व गहिर है र तो के अति वे गर महीने अने पर कोई

का. आठवीं य हैले की तीसरी हैं इस सरकार ही कि सामाजि गहें जुझारू विद्यह समझ केला ही सबसे बेलाने का.

नहीं.

गया. सहाव

ठाक्र को

श चाहते है

दिया गया

त नेताओं

राज्यपाल व

पक्ष फि

घोषणा व

खतरना

गगर करन

T B. F

लेकिन !

मांग प्र

क्योंकि हैं

असम औ

में हैं.

ला में तैनात है, चुनाव में बीएसएफ का आईटीबीपी को सीमा क्षेत्रों से य को जिले विवा पहेगा. यह फैसला प्रधानमंत्री के ाव में चुनाव त ही हो सकता है जिन्हें चुनाव रने हैं. यह बार से फुरसत नहीं है. मंत्रालय के सुबोधकांत क्षिकारियों के तबादले को लेकर भी राज्यपानो ई निर्देश देने गाउकता है क्योंकि अधिकारी सीधे कि ये लोग ज्ञानमंत्री से आदेश चाहते हैं

विशेश मंत्रालय में भी ऐसी ही स्थिति वीत शुरू भें हो महीने से भी ज्यादा समय से यह ता राजनैतिक दिशा-निर्देश के काम कर का माहीन हा है इस स्थिति में विदेश सचिव सिमरनजीत अमन काया दुक्ट दुवे ने ही लगभग विदेशमंत्री का की. फिरवे समस्माला है और इसी हैसियत में पूरी लिया के चक्कर लगा रहे हैं, भारत की में उलझ गए जाराष्ट्रीय छवि को संभाल रहे हैं और त्री हरमोहा और देशों को इस बात के लिए तैयार पर उन्हें स रहे हैं कि वे भारत को विदेशी मुद्रा के कर से उबारें. भारत की प्रतिष्ठा को ले में सहाय विक्षे पहावाड़े उस समय धक्का लगा जब थे और पूर्व स्त्रण. सिद्ध 'आईसीएओ' के महासचिव एका चुनाव बड़ी अजीबो-गरीब हालत किन अक रहार गए. जाहिर है, राजनैतिक नेतृत्व र्गा गौकरशाही के बीच पर्याप्त तालमेल लय उन्हें होने के कारण ही सिद्ध को इस चुनाव उनसे संगं निए नामजद किया गया जबकि लटे उन्हें ए जिल्हा और एचडीडब्ल्यू घोटालों में वे गएक आरोपी हैं.

रें भी तरह उद्योग मंत्रालय को भारी ारी बना ती ४ तुकसान झेलना पड़ा है. फिलहाल म मंत्रालय में एक ही उपमंत्री हैं दसई में बा विभाग प्रधानमंत्री के अधीन तरह मंदिर वी.पी. सिंह के शासनकाल में मंत्रालय रक उद्योग नीति तैयार की थी जिसे कि में पेश किया गया था. चंद्रशेखर ने वली गई कि भारी आलोचना की थी. मगर कार बदलने के बाद भी इस मामले में अनहीं हुआ क्योंकि प्रधानमंत्री को इन भिष्र सोचने का वक्त ही नहीं मिला. विजिनिक क्षेत्र से संबंधित नीति दस्तावेज रिभी जिसे वस तैयार हुआ बताया जा हिंग, काम आगे नहीं बढ़ा है.

गहिर है राजनैतिक जोड़-तोड़ और ने 20 ला के अति केंद्रीकरण में फंसे चंद्रशेखर नात करें भार महीने के शासन में किसी अहम के पर कोई फैसला नहीं किया जा के अठिवीं योजना की रूपरेखा तैयार के की तीसरी कोश्रिश भी नाकाम रही सुरक्षा ब के कि सरकार की एकमात्र उपलब्धि यह के तामाजिक तनावों में भारी कमी भेट जुमारू समाजवादी चंद्रशेखर को कार समाजवादा प्रशासिक राज न भित्र है सबसे बेहतर तरीका है राज

अतकेथा इंद्रजीत बधवार

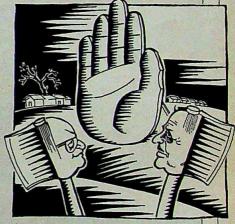
## नो लाठी

"जीव गांधी और उनके सिपहसालारों ने 'स्थायित्व' के नारे को ठीक उसी तरह चिपटकर पकड़ लिया है जिस तरह समुद्र में डूबते जहाज के नाविक जहाज के मस्तूल को जी-जान से पकड़ लेते हैं. लेकिन क्या यह नारा उन्हें उफनते चुंनावी समुद्र से पार लगा देगा? चुनाव प्रचार के पहले दौर में चाहे जितनी शेखी बघारी जा रही हो, ज्यादातर इंकाइयों का मन आशंकित है और चिता से उनके चेहरे पीले पड़े हुए हैं.

इस बार मध्यावधि चुनाव में वे उस कड़वे हकीकत के साथ— और उसे वेमन से स्वीकार करते हुए—उतरेंगे जिसका एहसास होते ही उनके चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगती हैं. पार्टी आलाकमान के एक वरिष्ठ सदस्य ने इस कड़वे हकीकत की स्वीकारोक्ति बड़ी सफाई से की, "मुझे लगता है कि देश की राजनीति अब वहां पहुंच गई है जहां लोग अब और मूर्ख बनने का तैयार नहीं हैं. अब लोग हमारा खेल समझने लगे हैं और हमारी चालों को पहले ही भांपने लगे हैं."

यह एहसास कि हर किसी को हर समय मूर्ख नहीं बनाया जा सकता, राजीव और उनके विचारवंत सलाहकारों की टोली के बीच चले उन बहस-मुबाहसों से

ही ज्यादा उजागर होता है जिनमें तय किया गया था कि मध्यावधि चुनाव का जोखिम उठाने के बदले दोनों जनता दलों में टूट करवाकर और दलबदलुओं को साथ लेकर पिछले दरवाजे से सरकार बना ली जाए. जोर इस बात पर दिया जा रहा था कि लोगों में पार्टी की विश्वसनीयता बहाल की जाए. इसके लिए किसी तरह की चत्राई या चमत्कारी बात करने से काम नहीं चलेगा क्योंकि लोग अब और धोखा खाने को तैयार नहीं हैं. जिन प्रमुख तर्कों ने राजीव को चनाव के पक्ष में मन बनाने के लिए प्रेरित किया, वे ये हैं-चंद हताश

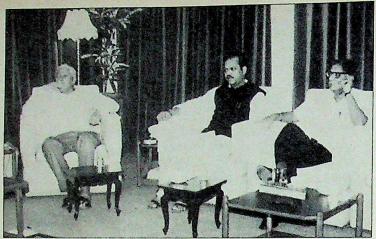


सांसदों के गूटों से समझौता करना पार्टी की 'स्थायित्व की पैरोकार' वाली छवि के खिलाफ जाएगा जिसे बनाने के लिए वह एड़ी-चोटी का पसीना एक कर रही है; और कि दूसरी पार्टियों के सांसदों का पार्टी में स्वागत करने तथा उन्हें स्थान देने से इंकाइयों का मनोबल टूटेगा और फिर अस्थिरता का माहौल बनेगा.

राजीव देश के लगभग हर गली-मुहल्ले में 'स्थायित्व' की बोली लगाते घूम रहे हैं, मगर उनकी पार्टी ऐसे काम कर रही है कि यह नारा खुद उसके लिए गले की घंटी साबित हो सकता है. उत्तर प्रदेश में राजीव के हरकारे (कुछ तो अपनी नाक दबाते हुए) मुलायम सिंह यादव के साथ सौदा पटाने की कोशिश कर रहे हैं ताकि मुख्यमंत्री अपने सहयोगी चंद्रशेखर को मंझधार में छोड़कर राज्य में इंका के साथ सीटों का तालमेल कर लें. गुजरात में ऐसा ही सौदा भारी-भरकम चिमनभाई पटेल के साथ करने के प्रयास जारी हैं.

वैसे, ये दोनों मुख्यमंत्री कूट राजनीति में चाहे जितने माहिर हों और वी.पी. सिंह के वोटों को तोड़ने की चाहे जो क्षमता रखते हों, पर हैं सुविधाजनक रास्ते पर चलने में उस्ताद. प्रमाण चाहिए तो वी.पी. सिंह सरकार को गिराने में इनकी भूमिका की याद कर लेना ही काफी होगा. अस्थायित्व के खेल के इन दो ध्रंधरों के साथ सांठगांठ की कोशिशों ने स्थायित्व का नारा देने वाली इंका को उस खाई में धकेल दिया है जिसे अविश्वसनीयता की खाई ही कहा जा सकता है.

-प्रमु चावला



## आसार बुर

#### कई फैसलों से स्थिति उलझी



असम में पिछले पखवाडे घटनाक्रम परिणति सुखद कतई नहीं थी. 27 मई के बाद राज्य में राष्ट्रपति शासन की अवधि बढाने

और राज्यपाल देवीदास ठाकुर को हटाने की मुहिम ऐन ऐसे समय गुरू हुई जब उल्फा से बातचीत के उनके प्रयासों में तेजी आई थी. ठाकुर की गलती यह थी कि वे इंका के इशारे पर काम करने को तैयार नहीं थे. तभी राजीव गांधी ने यह बयान दे डाला कि, "असम को बचाना है तो ठाक्र को हटाना ही होगा.''

इंका के करीब 25 नेताओं को उल्फा ने मौत के घाट उतार दिया था. इसलिए उसे यह नाराजगी थी कि ठाक्र इस विद्रोही संगठन के नेताओं से संविधान के दायरे में वातचीत करने और उन्हें क्षमादान देने के लिए सहमत होने लगे थे. ठाकुर ने इंका के दबाव में चुनावों के मद्देनजर कुछ अधिकारियों का तबादला करने से भी इनकार कर दिया था जिससे प्रदेश इंका अध्यक्ष हितेण्वर सैकिया भी नाराज थे.

हालांकि केंद्रीय गृह राज्यमंत्री सूबोध-कांत इस बात से सहमत थे कि सेना के 'ऑपरेशन वजरंग' और तीन महीने के राष्ट्रपति शासन के अपेक्षित लक्ष्य हासिल नहीं हुए. फिर भी राष्ट्रपति शासन की अवधि का बढ़ाया जाना आण्चर्यजनक ही रहा. खुद सुबोधकांत ने यह बयान दिया था कि उल्फा की 'युद्धविराम' की घोषणा

मुबोधकांत और ठाकुर

एक सकारात्मक संकेत है. उधर, इंका सहित अधिकांश राजनैतिक पार्टियां राज्य में जल्दी चुनाव कराने की पूरजोर मांग कर रही थीं.

इसीलिए पूर्व मुख्यमंत्री और असम गण परिषद (अगप) के अध्यक्ष प्रफुल्ल कुमार महंत ने तीव प्रतिक्रिया व्यक्त की कि, ''केंद्र की इन कार्रवाइयों के कारण ही स्वतंत्र असम की मांग को बल मिलेगा." लेकिन दूसरी ओर स्वयं महंत के खिलाफ उनकी पार्टी में विद्रोह की चिनगारियां भड़कने लगी हैं. अगप के महासचिव भृगु कुमार फुकन और पूर्व विधिमंत्री दिनेश गोस्वामी के नेतृत्व में परिषद के 10 शीर्षस्थ नेताओं ने महंत पर आरोप लगाए हैं कि उन्होंने असम को 'अशांत क्षेत्र' घोषित करने के केंद्र के फैसले में भागीदारी निभाई. महंत ने इसका खंडन किया है पर पार्टी में विभाजन के स्पष्ट संकेत जाहिर होने लगे हैं.

अगप का भविष्य भी अधर में लटका है. उधर, हाल के प्रशासनिक बदलाव भी किसी अच्छे आसार के सूचक नहीं हैं. ठाकुर की जगह ओडीसा के जाने-माने नेता लोकनाथ मिश्र को राज्यपाल नियुक्त किया गया है जिनके लिए अलगाववादी आंदोलन की भीषण समस्या से जूझ पाना कठिन साबित हो सकता है. साथ ही राज्यपाल के तीनों सलाहकार भी बाहर से लाए गए हैं.

सबसे बड़ा डर यह है कि 'स्वतंत्र असम' का लक्ष्य हासिल करने के लिए गिन-गिनकर हत्या करने वाला उग्रवादी संगठन उल्फा, फिर कट्टरवाद की ओर मुड़कर 'युद्धविराम' की हाल की पहल को हिंसा की नई ज्वाला की भेंट चढ़ा सकता

—फरजंद अहमद

## लेकिन हाईकोर्ट ने बाधा डाल दी



इसकी कल्पना बुनियारी स्तर पर लोकतंत्र है प्रतीक के रूप में की गई थी. लेकिन विहार की 11,678 पंचायतें कुछ अरसे से राजनैतिक

अराजकता का प्रतीक वन गई हैं. 1978 में जब इन पंचायतों के चुनाव हुए थे, तब ने सात मुख्यमंत्री आए और गए पर चुनाव कराने के ज्यादातर आधे-अधरे प्रयाम कभी सफल नहीं हो पाए हैं.

पिछले पखवाड़े ऐसा लगा कि मौज़ा पंचायतों का अनैतिक अस्तित्व खत्म होते को है. पटना हाईकोर्ट के जस्टिस एस अली अहमद और जस्टिस जी.सी. भक्का ने 'ग्राम रक्षा दल समाचार' के संपाक मणिकांत पांडेय की ओर से दाय लोकहित याचिका पर फैसला सुनाते हा पंचायत मुखियाओं को जवाहर रोजगा योजना (जरोयो) के तहत आने वाल



जस्टिस अहमदः महत्वपूर्ण कैसता

सरकारी परियोजनाओं पर अमल करते रोक दिया. वजहः साढे पांच साल अपना कार्यकाल पूरा कर चुकने के वि इन पंचायतों का वजूद खत्म हो गया है

अदालत सीवान जिले में भिती पंचायत के उपमुखिया भानुप्रताप मिह एक याचिका पर भी विचार कर ही याचिका में विकास उपायुक्त के उ आदेश को चुनौती दी गई हैं अं उन्होंने खंड विकास अधिकारी को बर्म के तहत आने वाले कार्यक्रमों पर करने के लिए कहा था. अदालत ते वार्ट कि मुखियाओं और पंचायत समितियों

ल योजनाओं कों पर हिसोदारी नह पर पंचाय हंगी. इस पै बान् प्रसाद य मं निरस्त क हों। उन्होंने का हो रहे अने देगी." क्म को देख

रोजगार योज करोड रु. ख तं तक और क्या था. चु कम मुखिया रामीण विका ग्वायतों को

म गति

ग्रजिव भी

२ सरकार 1947 के पंचा करके पंचायत अवधि को नि व्हाया था. अगले चुनाव सच तो य नर का लोक पाया है. 197 नोगों की मौ गरियदों के विदेशवरी दुवे करके पंचाय अनुसूचित ज लए आरक्षित गर स्थगन अ वह मामला स् परिषदों का व ने यह मियाद वेकालीन पंच ज़ाहिमी औ केमला प्रसाद ने आपत्ति की है ऊपर प्रशा ने पिछ लिए 17 करो भाष्रदायिक व्यमित कर

अव पटन

निस्त करने

गरी होने की

बुनियादी

किर निकस्मी

डाल दी

ना वुनियारी

लोकतंत्र हे

प में की गई

विहार की

वायतें कुष्

राजनैतिक हैं. 1978 में

ए थे, तब मे

पर चुनाव

ाधूरे प्रयाम

कि मौजूदा

व खत्म होने

ास्टिस एम

.सी. भस्का

के संपादक

से दाया

सुनाते हुए

र रोजगा

आने वाली

कृष्णमुरागे शि

फैसला

ल करने

ने के गाँ

गया है

में भितनी

प सिंह के

तर रही

के उन

है जिले

को उर्ग

पर अमन

त ने पा

मितियों है

ह पोजनाओं के क्रियान्वयन में सिवाए को पर दस्तखत करने के कोई क्रियारी नहीं है

र पंचायते शायद अभी भी कारगर हुंगे इस फैसले से बौखलाए मुख्यमंत्री त्रुप्रसाद यादव ने संकेत दिया है कि वे वंतिरस्त करने के लिए अध्यादेश जारी लों उन्होंने कहा, "सरकार जरोयो के क्क हो रहे विकास कार्यों में बाधा नहीं र्<sub>ति देगी."</sub> इस योजना में फंसी भारी क्षम को देखते हुए मुख्यमंत्री की चिता गीव भी है. सरकार ने इस ग्रामीण तंत्रगार योजना के तहत 1988-89 में 309 हरोड़ ह. खर्च किए और इस महीने के <sub>ज़ं तक</sub> और 46 करोड़ रु. देने का वादा ह्या था. चुनाव सिर पर होने से यह क्म मुखियाओं के लिए महत्वपूर्ण होती. त्रमीण विकास विभाग इसके लिए सीधे जायतों को पैसा मुहैया कराता है.

दूस गितरोध के लिए लालू इंका स्मरकार को दोषी ठहराते हैं जिसने 1947 के पंचायती राज कानून में संशोधन करके पंचायतों की नियमित पांच साल की विश्व को सिर्फ छह महीने के लिए ही बाया था. इसके पहले कोई पंचायत अने चुनाव तक कायम रह सकती थी.

सच तो यह है कि राज्य में बुनियादी नरका लोकतंत्र ठीकठाक काम नहीं कर ग्या है. 1978 के पंचायत चुनावों में 59 गों की मौत हुई थी. 1980 में जिला शिपदों के चुनाव हुए. फिर, 1987 में विदेखरी दुवे सरकार ने अध्यादेश जारी क्के पंचायतों में 25 फीसदी स्थान भृमूचित जातियों और जनजातियों के <sup>जिए</sup> आरक्षित कर दिए. हाईकोर्ट ने इस गरस्यगन आदेश जारी किया और अब कृमामला सुप्रीम कोर्ट में पड़ा है. जिला पियदों का कार्यकाल खत्म हुआ तो दुवे वेयह मियाद बढ़ाने की कोशिश की. पर किलीन पंचायती राज निदेशक आशिक जाहिमी और ग्रामीण विकास आयुक्त भिना प्रसाद (जो अब मुख्य सचिव हैं) त्रें अपित की. नतीजतन, जिला परिषदों अपर प्रशासक नियुक्त कर दिए गए. विद्वान पिछले साल पंचायत चुनावों के तिए 17 करोड़ रु. निर्धारित किए थे पर भारतियिक हिंसा के बाद इन्हें फिर धिगत कर दिया गया.

अब पटना हाईकोर्ट के फैसले को नित्स करने वाले एक और अध्यादेश के बे बेनियादी स्तर का प्रशासन एक बार निकम्मेपन की ओर अग्रसर लगता

दिल्ली

## फिर धमाके

#### बम विस्फोटों का नया सिलसिला

ते पखवाड़े दिल्ली में एक के बाद एक हुए पांच बम विस्फोटों ने राजधानी के आत्मविश्वास को एक बार फिर झकझोर दिया.

23 मार्च की शाम पश्चिम दिल्ली के तिलक नगर क्षेत्र की ख्याला जेजे कॉलोनी में लगने वाले शनि वाजार में लगभग एक ही समय पर हुए दो विस्फोटों में 13 लोग मारे गए और 60 से अधिक घायल हुए. इससे पहले 18 मार्च को कनॉट प्लेस के एक व्यस्त रेस्तरां के टॉयलेट में बम फटा जिससे एक ग्राहक की जान गई और तीन कर्मचारी घायल हुए. इस घटना के चार दिन बाद ही कनॉट प्लेस इलाके के एक बाजार केंद्र में हुए विस्फोट ने भवन के

एक हिस्से को नष्ट कर दिया. विस्फोट के कारण बाहर सड़क पर गिरने वाले मलबे से राह चलते चार लोग घायल हो गए.

ख्याला बम कांड में मारे गए एक व्यक्ति की जेब में मिले कागजों के आधार पर की गई गिरफ्तारियां और विस्फोट की शैली से यही संकेत मिल रहे हैं कि इनके पीछे पंजाब से जुड़े उग्रवादियों का हाथ है.

इस साल राजधानी की इस नई विस्फोट श्रृंखला की शुरूआत एक नए अंदाज में

21 जनवरी को हुई जब इंद्रप्रस्थ एस्टेट स्थित दिल्ली पुलिस के मुख्यालय और तीस हजारी अदालत के अहातों में बने पार्किंग स्थलों पर खड़े किए गए एक-एक स्कूटर में लगभग एक ही समय दो शक्तिशाली विस्फोट हुए. इन दोनों विस्फोटों ने 39 लोगों को घायल करने के अलावा पुलिस मुख्यालय और अदालत के कई शीशे तोड़ दिए. इससे पहले एक ट्रैवल एजेंसी के दफ्तर की सीढ़ियों पर एक हलका विस्फोट भी हो चुका था.

उग्रवादियों ने क्रमणः 25 और 27 जनवरी को भी आसफ अली रोड पर खड़ी एक टूटी फूटी कार तथा चांदनी चौक के जुबली सिनेमा के टायलेट में दो हलके विस्फोट किए जिनमें सात लोग घायल हुए. लेकिन उनका अगला हमला काफी

गंभीर परिणाम बाला रहा. 19 फरवरी को अंतरराज्यीय बस अड्डे से देहरादून के लिए चली बस में मोदीनगर के निकट एक शक्तिशाली बम फटा जिसने 10 यात्रियों की तुरंत जान ले ली और 16 को घायल कर दिया.

इन बम विस्फोटों की वजह में दिल्ली पुलिस की आलोचना होनी स्वाभाविक ही थी. स्थानीय भाजपा सांसद मदनलाल खुराना ने इसे पुलिस विभाग के निकम्मेपन का उदाहरण बताया. लेकिन कानून और व्यवस्था विभाग के अतिरिक्त आयुक्त परमजीत सिंह बाबा कहते हैं, "उग्रवादियों की गतिविधियों पर नजर रखने और बाहर से दिल्ली में उनके प्रवेश को रोकने के अभियान में कोई ढील नहीं आई है" उनकी मान्यता है कि इन विस्फोटों का यह मतलब नहीं लगाया जाना चाहिए कि पंजाब के उग्रवादियों ने अब दिल्ली में ठिकाने बना लिए हैं.

अपनी मजबूरियों का जिक्र करते हुए वरिष्ठ पुलिस अधिकारी उन कामों की



विस्फोट स्थल की जांचः अनवरत आतंक

एक लंबी फेहरिस्त पेश करते हैं जो उन्हें सामान्य कानून व्यवस्था के अलावा करने पड़ते हैं. उदाहरण के लिए पिछले साल आम राष्ट्रीय समारोहों के अलावा दिल्ली पुलिस को राष्ट्रीय स्तर की 19 रैलियों, नए पुराने प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति आदि के 2026 समारोहों तथा देशी विदेशी विरिष्ठ मेहमानों की 1221 दिल्ली यात्राओं की सुरक्षा व्यवस्था देखनी पड़ी.

ऐसी हालत में दिल्ली के नागरिकों के लिए एक ही रास्ता बचता है कि आतंकवाद के प्रति वे खुद जागरूक हों और उसके साए में उसी तरह रहना सीखें जैसे पंजाब, कश्मीर और असम के लोग सीख चुके हैं.

- फरजंद अहमद



#### सनद रहे

निधनः प्रख्यात फिल्म निर्माता 55 वर्षीय जी. अर्रावदन की हृदयाघात से मृत्यु. कम वजट



वाले नवयथार्थवादी
सिनेमा के लिए प्रसिद्धः
अर्रावदन ने 'उथारायनम'
से ख्याति अजित की. एक
फ्रांसीसी संस्था सिनेमोत
फ्रांसे ने 1984 में उनकी
फिल्मों को दिखाया.

उनकी अन्य फिल्में हैं कंचन सीथा, एस्थप्पन, ओरिदायु और वस्थुथारा.

स्वीकृतः नेशनल एनडाउमेंट फाँर ह्युमनिटीज ने वाल्मीकि रामायण के अंग्रेजी अनुवाद के लिए 90,000 डॉलर का द्विवर्षीय अनुदान दिया. इसके संपादक होंगे कैलीफोर्निया विश्वविद्यालय, वर्कले (अमेरिका) के रिचर्ड पी. गोल्डमैन. प्रतिबंधितः पशुओं के प्रति क्रूरता निरोधक कानून, 1960 के तहत जारी एक अधिसूचना के जरिए जानवरों के प्रशिक्षण और प्रदर्शन पर रोक. राज्य सरकारों को इस पर अमल करने के आदेश.

लौटाई: जालंधर से प्रकाशित और सबसे अधिक विकने वाले पंजावी दैनिक 'अजीत' के प्रबंध संपादक बर्राजदर सिंह ने पद्मश्री उपाधि

लौटा दी है. उन्होंने अखबार पर प्रधानमंत्री चंद्रशेखर की टिप्पणी के विरोध में ऐसा किया. उनका मानना है कि पहले उनकी पत्रकारिता को पुरस्कृत करना और फिर उसके बाद उसी पर सरे

उसके बाद उसी पर संदेह जाहिर करना "राष्ट्रीय सरकार को शोभा नहीं देता." दावा ठोंकाः खाड़ी युद्ध के कारण वेघर हुए केरल के एक भारतीय परिवार जी. वर्णी

इदीचेरिया, उनकी पत्नी और बच्चों की ओर से संपत्ति के नुकसान और मानसिक पीड़ा के लिए सहाम हुसैन और इराकी सरकार पर 1060 लाख डॉलर का दावा ठोंका

र ए ती ख ता रतीय परिवारों की

गया. यह वेघर हुए भारतीय परिवारों की ओर से दायर मुकदमों में एक है.

रहस्योद्घाटनः 1966 में रूस में प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री की मृत्यु पर से अमेरिकी न्यूज ऐंड वर्ल्ड रिपोर्ट ने परदा हृटाया केजीबी ने उनके कमरे में बातचीत मुतर्व के लिए यंत्र लगा रखा था पर शास्त्री की गृही मुनकर भी उसने अनसुना कर दिया. म साल भूक अगर भ्रेम चौहान का रहे हैं. निद्धले साल फैटरी के सा गृंकुत उद्यम गम अप, लि गृंत पंटा बन मृंगुफे को अर र स्वदेश भे

मई में चु वित्तमंत्र वितामात्री साझा के बाह: अंतरर वितीय घाटे व् 2500 करोड़ गेरीके के बारे बार में एक के विभन्न प्र भाग लीजिए भाग सामाना की कंपनियों व

परियोज परियोज प्रकार से हरें मिम्राल के ते कीम्राल एथि। कीलोजी से केले आधिक हैंदी लेकिन कीम्राल के कि

## बड़ों से भिड़ंत

जार में निरमा उतारकर हिंदुस्तान लीवर का पसीना निकाल देने वाले करसनमाई पटेल एक बार फिर उसे चुनौती देने जा रहे हैं. बमुश्किल कुछ महीने पहले अपने कार्बोलिक साबुन का नाम निरमा ब्वॉय (जो अब निरमा बाथ के नाम से बिक रहा है) रखने पर उन्हें हिंदुस्तान लीवर से लड़ाई लड़नी पड़ी थी. अब पटेल ने गुजरात में सुपर सर्फ जैसे दिखने वाले डिब्बे में सुपर निरमा उतारा है. सो, पटेल और हिंदुस्तान लीवर के बीच एक और लड़ाई के आसार दिख रहे हैं. यही नहीं, पटेल ने बाजार में कॉलगेट जैसा स्वाद वाला निरमा टूथपेस्ट मी उतारा है जिसकी कीमत कॉलगेट से कम है. उन्होंने रेकिट ऐंड कोलमैन के रॉबिन ब्ल्यू को टक्कर देने के लिए निरमा नील घोल और माचिस कंपनी विमको की नींद हराम करने के लिए निरमा माचिस भी बाजार में उतारी है. लगता है, पटेल की महत्वाकांक्षा ताकतवर कंपनियों को उनके ही मैदान में पछाड़ने की है.

#### विदेश में ठंडी लड़ाई

दूस साल गर्मी में भारत के शहरी इलाकों में कोला लड़ाइयों रें का अगला दौर शुरू होगा. लेकिन पार्ले समूह के मालिक क्षेत्र बौहान घर से दूर विदेश में तलवार भांजने की योजना खा रहे हैं. और वह जगह है सोवियत संघ में उज्जेबिकस्तान. किले साल अक्तूबर में उन्होंने उज्जेबिकस्तान की नुकुस बीयर फिटरी के सहयोग से 8 करोड़ रु. की लागत वाला शीतल पेय मुक्त उद्यम लगाने का प्रस्ताव पेश किया. इस उद्यम की क्षमता वास अप, लिम्का, गोल्ड स्पॉट और सिट्टा की 30,000 बोतलें शिं पंटा बनाने की होगी. लेकिन समस्या रूबल में होने वाले जांक अस्थायी तौर पर निर्धारित रुपया-रूबल विनिमय दर रिस्तेश भेजने की है.

#### इकट्ठे देंगे शेयर

मिं चुनाव के बाद जब केंद्र में नई सरकार बनेगी तो वित्तमंत्री यशवंत सिन्हा की उस योजना को कार्य रूप किया जाएगा जिसमें कई सरकारी उपक्रमों की 20 फीसदी शेयर शिसाझा कोषों और वित्तीय संस्थानों को देने का प्रावधान है. विद्वा अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से किए गए बादे के अनुसार कियाय पटे को कम करने के लिए सरकार सिर्फ इसी उपाय से 2500 करोड़ ह. उगाह सकती है. सिन्हा शेयर पूंजी बेचने के गिंक के बारे में खुद ही संदेह में थे. वैसे, योजना यह थी कि बार में एक नई 'यूनिट' उतारी जाए जिसमें सार्वजिनक क्षेत्र मिल लीजिए 10 कंपनियों) के समूह बनाकर हर समूह में भी मुताफा देने वाली और कम मुनाफा देने वाली दोनों तरह के किया के रखना था.

वेघर हए

ते. वर्गीज

वारों की

धानमंत्री अमेरिकी

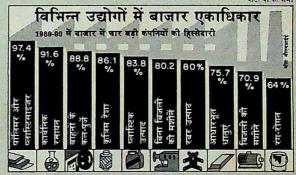
हराया के मुनने के गुहार

## काम कभी नहीं रुकता

परियोजनाओं की भी बिल चढ़ जाती है जिन्हें पिछली किता से हरी झंडी मिली होती है. लेकिन कुछ अपवाद भी हैं. किता के तौर पर, आर.पी. गोयनका समूह की निर्यात-किताओं में मद्रास में बननी है. चंद्रशेखर के इस्तीफा देने के किता ममलों की कैबिनेट सिमित ने इसे अपनी मंजूरी किता यह कोई बड़ी नहीं बिल्क छोटी-मोटी उपलब्धि है. किता यह कोई बड़ी नहीं बिल्क छोटी-मोटी उपलब्धि है.

#### एकाधिकारवादी रुझान

लिमर और प्लास्टिसाइजर का क्षेत्र ज्यादा मुनाफे और कम चुनौतियों वाला है. सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनॉमी (सीएमआईई) के एक अध्ययन में इस क्षेत्र में वाजार एकाधिकार की बहुत ऊंची दर पाई गई. 'इंडिया टुडे' ने पॉलिमर और प्लास्टिसाइजर उद्योग के सभी उपक्षेत्रों में एकाधिकार दरों का औसत निकालने पर यह दर 97.4 प्रतिशत



पाई. सीएमआईई ने जिन 2,000 कंपनियों का अध्ययन किया उनमें से 76 प्रतिशत का एकाधिकार स्तर (जो किसी उद्योग के कुल बाजार में चार बड़ी कंपनियों के शेयरों के रूप में परिभाषित किया जाता है) 1987-88 में 50 प्रतिशत था जो दो साल बाद 80 प्रतिशत के करीब पहुंच गया. कार्बनिक रसायन, पॉलिमर, कृत्रिम रेशा और वाहनों के कल-पुर्जे बनाने वाले उद्योगों का तो बाजार एकाधिकार स्तर बहुत ही ऊंचा था लेकिन उपभोक्ता वस्तुओं वाले उद्योगों का स्तर कम था.

### देरी कौन करता है

मित्रमंडल को भेजे गए एक प्रस्ताव में कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय के सचिव को सरकारी परियोजनाओं को लगाने में देर करने वाले व्यक्तियों और संगठनों का पता लगाने का अधिकार देने की बात कही गई है. माना जाता है कि इससे सरकारी परियोजनाओं पर अमल में होने वाली देरी को रोका जा सकेगा. सचिव को यह अधिकार भी देने का मुझाव दिया गया है कि यदि वे परियोजना अधिकारियों के प्रयास में कमी पाएं तो उनसे स्पष्टीकरण मांगें. लेकिन सार्वजनिक क्षेत्र के विभिन्न 'उपक्रमों की गतिविधियों पर नियंत्रण रखने वाले प्रशासकीय मंत्रालयों ने इस कदम का स्वागत नहीं किया है.

शेयर बाजार

## खिलाड़ी डरे

#### कई बड़े शेयर लुढ़के

आ म चुनाव की दौड़ शुरू होते ही बाजार में भारी अनिश्चितता का माहौल बन गया. पर 22 मार्च को खत्म होने वाले पखवाड़े में ज्यादातर खबरें बुरी ही थीं. और इसके दो दिन पहले जब यह खबर आई कि भारतीय रिजर्व बैंक ने आयात को बंद ही कर दिया है तो सभी प्रमुख गेयरों ने गहरा गोता लगा दिया.

20 मार्च को हुए अनिधकारिक सौदों में टाटा स्टील 155 ह. पर पहुंच गया (एक दिन पहले यह 160 ह. पर बंद हुआ था), रिलायंस 115 ह. पर (121.50 ह. से), और एसीसी (2,130 ह. से) 2050 ह. पर जा पहुंचा. ज्यादातर दलालों का मानना है कि रिजर्व वैंक की पाबंदी से लगभग सभी उद्योग लड़खड़ाने लगेंगे क्योंकि अर्थव्यवस्था की हालत बदतर होना अवण्यंभावी दिखता है. उस दिन कारोबार के समय मुंबई शेयर बाजार (मुंशेबा) का 30 शेयरों वाला



संवेदनशील सूचकांक 0.84 अंक तक उठकर 171.92 के विंदु पर पहुंच गया था. पर इकॉनॉमिक टाइम्स का अखिल भारतीय मूल्य सूचकांक 607.6 पर ही बना रहा. पर 22 मार्च के वंद भावों में एसीसी समेत कई शेयर डुबकी लगा गए.

इससे पहले कि एक और कत्लेआम होता, साझा कोष तथा वित्तीय संस्थान अपना-अपना नगद नारायण संभाले मैदान में उत्तर आए. इस राहत अभियान में सबसे आगे थे भारतीय यूनिट ट्रस्ट और जीवन बीमा निगम. इन्होंने कहर बरपा देने के इरादे से आए मंदड़ियों के अरमानों पर पानी फेर दिया.

इस पखवाड़े सबसे ज्यादा कमाई की

आदित्य बिड़ला की ग्रेसिम इंडस्ट्रीज (25 रु. तक), दवा कंपनी हेक्स्ट (100 रु तक), एसकेएफ वेयरिंग (75 रु. तक) और मफतलाल की पेट्रोकेमिकल्स कंपनी नेशनल आर्गेनिक (80 रु. तक) ने नुकसान झेलने वालों में थे— बजाज आंट्रो और अशोक लेलैंड (दोनों 5 रु.) और टेल्को (10 रु.). पर सबसे ज्यादा नुकसान वीडियोकॉन का हुआ जो पष्ठबाई में 50 रु. से ज्यादा था.

बाजार के साथ ही हुई दूसरी घटनाओं में दलालों ने वित्तीय संस्थानों की उम कोशिश को तो फिलहाल के लिए रोक ही लिया जिसमें वे पिछले दरवाजे से शेवर बाजार के पूर्ण सदस्य बनना चाहते थे मुंशेबा की प्रशासनिक परिषद के सदस्य वंद कमरे में छह घंटे तक बैठे, और अंत में जब वे वहां से निकले तो एकमत थे जानकार सूत्रों का कहना है कि मुंगेबा अध्यक्ष जी.बी. देसाई ही ऐसे व्यक्ति वे जिन्होंने कंपनियों की सदस्यता के पक्ष में वोट दिया. फिलहाल तो इस कदम मे सीवीआई कैप्स, कैनवैंक फाइनेंशियल और इंफास्ट्रक्चरल लीजिंग ऐंड फाइनेंशियल सविस लिमिटेड की बाजार में दलाल और व्यापारी की भूमिका निभाने के अरमानों पर पानी ही फेर दिया.

जमा स्टॉक				म जिस		
	1	991		पलवाडे की स्पि		
	<b>ऊंचा</b>	नीचा	बंद			
			22.3.91	इस		
अशोक लेलेड	142.00	109.00	126.50	5.00-		
एसो.सीमेंट	2370.00	1300.00	2170.00	295.00+		
एशियन पेंट्स	267.50	215.00	260.00	-		
एटलस कोपको	83.50	42.00	80.00	3.00 +		
बजाज ऑटो	640.00	500.00	575.00	5.00 -		
बड़ौदा रेयॉन	630.00	400.00		5.00 +		
बाटा इंडिया	93.00	72.00	84.00	6.00 -		
बल्लारपुर	306.00	228.00	300.00	26.00 +		
बिरला जुट	209.00	168.00	185.00	5.00 -		
ब्लो प्लास्ट	110.00	40.00		20.00 +		
बांबे डाइंग	230.00	150.00	222.50	10.00 +		
विटा इंडिया	152 00	112.00	137.00	3.00-		
वक बांड	152 00	116.00	144.00	14.00 ÷		
केस्ट्रोल इंडिया	271 25	162.50	250.00	13.75 +		
केडबरी इंडिया	187 50	132.50	171.25			
सेंचुरी टेक्सटाइल्स	4525 00	3625.00	4475.00	8.75 - 175.00 +		
कोलगेट पामी	317 50	250.00	305.00			
सायनामिड.	130.00	76.25	117.50	10.00+		
डीसीएम	300.00	123 00		2.50-		
डनलप	61.00	46.50	283.00	71.50 +		
आई होटल्स	52.00	42.50	56.00	2.00 +		
एकार्ट्स	140 00	127.00	49.00	1.00 -		
फनो. केबल्स	260.00	140.00	140.00	8.50 -		
रवारे नाइलोन	12 75		220.00	-		
ते.ई. मिपिंग	48.00	32.00	37.00	0.50 -		
ज.स्टेट फॉट.	210.00	25.00	41.25	4.25 +		
सिम इंडिया	217.00	150.00	177.50	7.50 ÷		
बु.एल्यू.	227.50	167.50	222.50	25.00 +		
		200.00	253.75	1.25+		
दुःसीबा	1080.00	650.00	1040.00	90.00+		
दुस्तान लीवर		140.00	167.50	6.25 +		
हुस्तान मोटर्स		18.80	21.00	1.00 -		
re	.3600.00		3400.00	100.00+		
पन आर्गेनिक	47.50	30.00	41.25	2.25+		
प्यन रेपॉन	_ 137.50	110.00	118.50	0.25 -		
रमॉल-रेड	385 00	240.00	345.00	15.00+		

				य क
	1	991		पत्नवाड़े की स्नि
				कि
	अंचा	नीचा		इस स्टॉक
			22.3.91	The party of the p
आईटीसी	138.00	99.00	136.00	9.00+
जे.के.सिथेटिक्स	37.50	27.00	33.50	0.50+
काइनेटिक इंजी	181 25	150.00	171.25	3.75
किली. क्यमिस	146 25	95.00	146.25	16.25 +
कएसबी पंप्स	225 00	160.00	200.00	10.00 -
लासन-दुबा	132.50	90.00	112.50	2.50 -
लिप्टन	98 75	57.50	90.00	15.00 +
लोहिया-मशीन्स	37.50	25.00	28.00	0.50 +
एलएमडब्ल्य	4025 no	2380.00	3890.00	140.00 +
मदुरा कोट्स	235.00	193.00	235.00	2.00+
माहद्रा-मोहद्रा	75 00	60.00	68.75	3.75 +
मास्टरशेयर्स	31.00	20.00	27.25	0.25+
मोटर इंडस्ट्रीज	880.00	675.00	830.00	0.23 4
मुक्द लिमि.	200 00	155.00	187.50	2.50 -
नशनल आगे	1200 00	925.00	1180.00	80.00 +
नेस्ते इंडिया	152.50	111.25	145.00	10.00 +
निरलनि	25 nn	16.00	21.00	1.00+
आरक सिल्क मि.	34 35	17.50	28.25	0.25 +
पेडको इलेक्ट्रॉनिक्स	71.50	53.00	70.00	4.00 +
प्रीमियर ऑटो	51 50	30.00	43.00	1.50 +
रमड	143 75	110.00	140.00	3.75 +
रेकिट-कोलमेन	265.00	205.00	256.00	16.00+
रिलायंस इंडस्ट्रीज	163.25	91.25	122.50	5.00 -
सीमेंस इंडिया	128.75	112.50	125.00	2.50 +
शॉ वैलेस	118.00	77.00	110.00	8.00+
श्रीराम फाइबर्स	40.50	33.00	36.00	4.50 -
एसकेएफ बेय	2450.00	1650.00	2375.00	75.00 +
स्पिक	59.00	33.00	48.00	2.00 -
टाटा स्टील	187.50	130.00	158.75	6.25 -
टेल्को	193,75	142.50	172.50	10.00 -
टाइटन बाचेस	86.25	58.00	85.00	5.00 +
वाम ऑर्गेनिक	152.50	102.50	137.50	5.00 -
वीडियोकॉन	285.00	180.00	190.00	50.00 -
बोल्टास	125.00	92.50	122.50	3.75÷
विमको	26.00	18.00	22.50	0.50 -

भारतीय	रुपए व	हा मुल्य	Г	
		,	山道	H. B
			विका र	F.E.
देश	मुद्रा	इकाई	百二	.5
आस्ट्रेलिया			*E 0030	14.8452
आस्ट्रिया				167.2241
बहरीन				
बांग्लादेश				54.785
कनाडा				16.615
डेनमार्क	डाल र	1	2 10032	3.060
मिस्र		4	5 9580	5.745
फांस				3,4602
जर्मनी	<del></del>		12 0773	11.775
हांगकांग	419		2 4946	2.470
इंडोनेशिया	sier	****	1 0087	0.9954
ईरान	e1441	400		
इटली	। रयाल	100	1 5995	1.578
जापान	लारा	100	14 3885	14 0252
केन्या	47	100	0.7926	0.7652
कुवैत	।भालग			
मलेशिया			7.0815	7.012
मारीशस	डालर	diner	1 2885	1.252
नेपाल	6441	Luner	0.6777	0.665
हालैड	6441	Loren	10.5501	10.43
पाकिस्तान	141057	Imme	0.8826	0.8524
सिंगापुर	5441	lane	10.9952	10.5533
स्पेन	डालर	I lane	0.1913	0.182
श्रीलंका	чнт	A	0.4784	3 2223
स्वीडन	रुपया	areas America	3.2563	13.5787
स्वाडन	b(ell		13.8173	0.0351
तंजानिया	।स्वस फक	4	0.1011	75.25TI
याईलेड	ाणालग	-00	77.5149	34 5380
Torre	-		34,03	19 238
अमेरिका	पाड	A land	19.4175	
				22.780
स.अ.अमारात सोवियत संघ	ादरहम		22.7870	ш.
त्तावयत सर्घ	रवल	no lugar		

योतः वैक ऑफ तोनयो, नई दिल्ली, 22.3.91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection. Haridwar

य स्मी परीक्ष में । विहार के जिल्ला विविद्यें में । जिल्ला विविद्यें में में महिल-मदि में में महिला वेले के में महिला हुँड नि र जमाल हुई पहुं

गोरख

णेता में इनमें क्लो जिनमें से क्लो जिनमें से कि विद्यापिय की मामान्य कि कि विद्याल कि विद्य

वय किया ग

कुलपतियों

ने के लिए उन्हें जियाद करने प किया पंकज अ

ाजनताओं भार राहत मिर्दे ता करने के नार मिर्दाशियाएं वटे कानों में से हिर्दे भार अब सिर्फ भार बाते. पुनिधाओं की

मित्राओं की किए पर हर भाग पत्र हर भाग पत्र हर भाग पत्र की भी की क्षेत्रों भी की की का भी की की की भी की की की

68 . दिया दुंहे ♦ 15 अप्रैल, 1991



गोरखपुर विश्वविद्यालयः दिलचस्प खींचतान

#### साख का मामला

 आम तौर पर होता तो यह है कि विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अधिकारियों के बीच चलने वाली खीचतान और छात्र संगठनों की आपसी प्रतिस्पर्धा में विद्यार्थियों, खासकर मेधावी विद्यार्थियों का नुकसान होता है.

लेकिन गोरखपुर में यह छड़ी इन दिनों उलटी दिशा में घुमती दिख रही है. कुछ सप्ताह पहले छात्र नेताओं के एक गृट को अपनी साख बनाने की सुझी और उन्होंने

सर्वप्रथम आने वाले विद्यार्थियों के सम्मान में समारोह कर डाला. लोक निर्माण राज्यमंत्री शारदानंद अंचल के हाथों इन विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक दिए गए.

इस गुट की वाहवाही से मौजूदा छात्र संघ नेता परेशान हो गए. उन्होंने भी एक आयोजन कर डाला. 14 मार्च के दिन प्रदेश इंका अध्यक्ष महावीर प्रसाद के हाथों इन मेधावी विद्यार्थियों को नए सिरे से स्वर्ण पदक वितरित कर दिए गए. -हर्ष क्मार सिन्हा,

गोरखपुर से

#### ह भी परीक्षा है

स्ट्रीज (25

(100 F

ह. तक)

ल्स कंपनी

तक) ने

जाज आंटो

ह.) और

से ज्यादा

नो पखवाडे

ो घटनाओं

ों की उस

ए रोक ही

ते से शेयर चाहते थे.

के सदस्य

गौर अंत में

र्कमत धे

कि मुंगेवा

व्यक्ति वे

के पक्ष मे

कदम मे

शयल और

ाइनें **शिय**ल

लाल और

अरमानो

Hord P

W.d.

14.8452 39

167.2241 78

54.785

16.615 41 32

3.05円 5.7485 3.4602 80

11.775 73 2.470

0.9954

1.572 14 029

0.765

1.262

10.43

3 2223

0.0551 75.2571 34.539 19.239

• बिहार के ललित नारायण र्ग्यना विवि के कुलपति ने इस न महल-मंदिर विवाद से पढाई होंने की वजह से परीक्षाएं ल लेने के लिए एक नया र्म्या दूंद निकाला है. उन्होंने जमाल हर्ड पढ़ाई के आधार पर 🕮 प्रज्नों की सूचियां तैयार लाकर कॉलेजों में बंटवाई हैं. विया किया गया है कि वार्षिक निया में इनमें से 10 प्रक्न दिए <sup>ल्ले</sup> जिनमें से किन्हीं 5 प्रश्नों के विद्यार्थियों को देने होंगे. भो गामान्य विवि में कुलपति वह कदम विद्यार्थियों को रम निहाल कर देता. लेकिन <sup>ह विज्व</sup>विद्यालय में नाराजगी मुगवुगाहंट कुछ और ही ल दे रही है. कई विद्यार्थी अब भुवात से नाराज हैं कि पास ने के लिए उन्हें कम-से-कम 15 न याद करने पड़ेगे.

विनय पंकज और हितेंद्र कुमार गुप्ता, दरभंगा से

#### कुलपति की तलाश जारी है

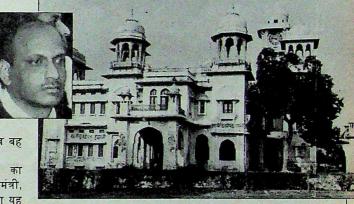
कि इलाहाबाद विवि को 'पूरव का ऑक्सफोर्ड' माना जाता था. उस जमाने में इस विवि में प्रवेश पाना,

पढ़ाना या कुलपति होना गौरव की बात हुआ करती थी. लेकिन वह यूग वदले अब एक जमाना बीत चुका है. और जमाने के इस वहाव में बहते हुए यह विवि भी अब उसी मुख्यधारा में आ पहुंचा

है जिसमें देश के बाकी विवि वह

णायद इसी बदलाव का तकाजा है कि देश को प्रधानमंत्री, मंत्री और कुलपति देने वाला यह विवि इन दिनों खुद एक अदद कुलपति के लिए मोहताज है. ऐसा नहीं कि उ.प्र. शासन इस मामले में आखें बंद किए हुए हैं. इस पद पर चयन के लिए दो बार पैनल तय किए जा चुके हैं. लेकिन दोनों

वार कुछ ऐसा संयोग हुआ कि पद के लिए अंतिम उम्मीदवार का नाम तय करने से पहले ही राज्य वी.पी. सिंह और वर्तमान प्रधानमंत्री चंद्रशेखर भी इसी विवि के छात्र रहे हैं. फिलहाल हालत यह है कि राज्य सरकार इस तलाश को नए सिरे से चलाए



राकेशधर (अपर): और इलाहाबाद विविः बदला जमाना

में सरकार बदल गई. इन दिनों इसी विवि के पूराने छात्र नेता राकेणधर त्रिपाठी उच्च णिक्षा राज्यमंत्री हैं. पिछले प्रधानमंत्री

हए है. सवाल पूछने पर त्रिपाठी हर बार यही जवाब देते हैं, "घबराइए नहीं, तलाश जारी है. -राकेश कुमार, इलाहाबाद से

## <sup>कुलपितयों</sup> का मोर्चा

गजनताओं को यह देखकर विद्याहत मिलेगी कि देश की के नाम पर अपने लिए निम्विधाएं वटोरने और देश के को में से हिस्सा मार लेने के <sup>शोप अब</sup> सिर्फ उन्हीं पर नहीं

भिवधाओं की मलाई वटोरने, के अभिपर हर हालत में कब्जा का यम की यह कला अब त्रा का यह का अल्डी-किमी कि जमा चुकी है.

वह तीजा उदाहरण काशी किंगींठ की है जो देश की



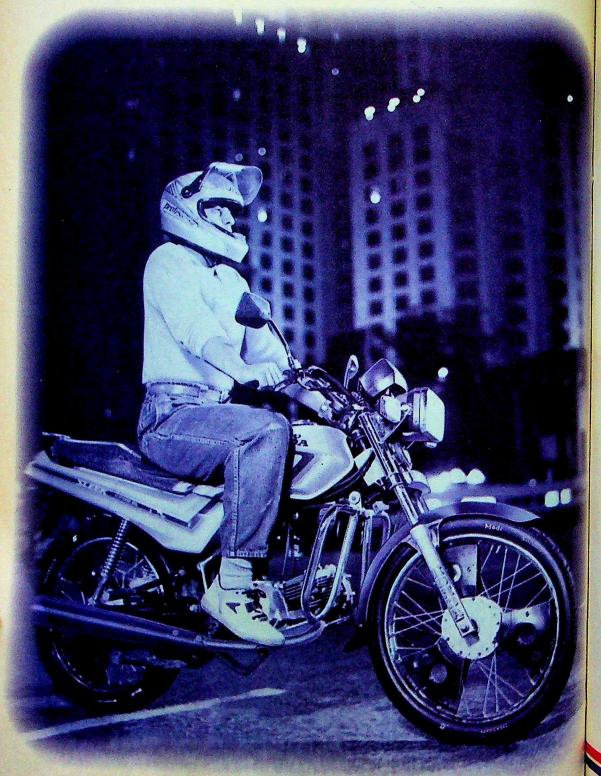
पारंपरिक संस्कृति की प्रतीक संस्कृत भाषा आधुनिक राजनैतिक संस्कृति को रखने जिम्मेदारी अपने कंधों पर लादे हुए है.

अपनी इस दूसरी जिम्मेदारी को निभाने का काम वहां के चार ऐसे कुलपति भी कर रहे हैं जिन्हें पहली जिम्मेदारी से मुक्ति

काशी विद्यापीठः कब्जे के रोग से पीडित मिले जमाना बीत चुका है. क्लपति पद से मुक्त होने के बरसों बाद भी अभी वे अपने मकानों पर कब्जा जमाए हुए हैं. अपने भविष्य के लिए इस पूंजी को सूरक्षित बनाए रखने के लिए इन लोगों ने अपने कार्यकाल में ही इन मकानों को अपने बेटे-बेटी या पतोहू के नाम अलाट करा लिया था. लेकिन मौजूदा कुलपति ने इन मकानों को खाली कराने के नोटिस जारी कर दिए हैं. नतीजा यह है कि पूर्व कुलपति अब नए कुलपति के खिलाफ मोर्चा लगाने में व्यस्त हो गए हैं.

-रामशंकर सिंह, वाराणसी से

# Digitized by Africaj Foundation Chennai and Gango Tolling Toll



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

H

आपको क् कौन जाने

हगर में ब

कब किस चौराहे पर

काबू खो

इसीलिये उ

वेहद भरोरं

# वाजवात का बदल मिन्नाजा



## भरोसा है, मोदी टायर अपने साथ

<sup>आपको</sup> कुछ और चौकन्ना रहना होगा।

कौन जाने मौज-मस्ती का ये सफर कब ख़तरनाक

इगर में बदल जाए।

कब किस मोड़ या

चौराहे पर आप

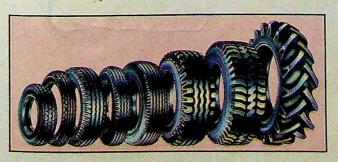
कावू खो बैठे।

इसीलिये आपको चाहिए

वेहद भरोसेमंद टायर।

ख़ास डिज़ाइन वाले ऐसे टायर जो हर मुश्किल से टकराएं और आपको मंजिल तक पहुंचाएं। सुरक्षित! आप भी भारत में सबसे मनपसन्द मोदी कॉन्टीनेन्टल मोटर साइकिल

> और स्कूटर का भरोसा आज़माएं। क्योंकि आपके साथी के दिल में मचल रहे हैं धूम मचाने के अरमान।





CC-0. In Publification of Company Comp

### इंडिया टुडे वर्ग पहेली-30

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

												pich with	
		oiil &	3)	रुख		पूर्व प्रमुख के	<b>⊸</b> 6		छोटे साहब		4 √	क्या	। रोष वें । उठ
			<u>5</u>	सही था		के बेटे		7√	नाम			हमारे प्रिय	10 ▼
		-00	5	74								मित्र	
			a	आमः	नफरत	<b>⊋</b> 6			3				
11.8	अला	त्ता है जात	and the state of	छवि	<b>→</b> <sup>5</sup>				मुख्य निशाना	बात सुधांरी			
3√	लोगों	से दूरी	वेतन नहीं मिल	पवित्र उभरी					है	जाए			
			मिल रहा	<b>→</b> 8						3			
		3								3			
	सबर	सांसद म	ही पुत्री							शुरू वि	कए दो		
4	का स्रोत	कई बार	$\neg 6$				3 -	तेवर ग	ारम थे				
		वलील वी			•	7 <sub>[</sub> →							$\bigcirc$
						नेता का-		5					
	भीग- कर	<b>⊸</b> 3				विरोध		शह		मुद्दे पर	<b>⊸</b> ³	चलन	$\neg^3$
	विखा विया				पेशे-	ब्राह्मण	विद्वान	को ' मात		वृढ़ रवैया		बढ़ा :	
4			$\bigcirc$	$\bigcirc$	वर गायक	6 →							
निर्मात	मी हैं				74								

नाम	
पता	
पिन	

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-30, इंडिया टुरे, एफ-14/15, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम ति<sup>षि</sup> 20 अप्रैल 1991 उत्तर के लिए देखें: 1-15 मई 1991 का अंक

- मह पहेली गव्दण:
   इडिया टुडे के 31 मार्च 1991 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए णब्द ही संकेत है.
- ▶ तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- ► तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गी की संख्या दर्णाते हैं.
- ► वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- मर्वप्रथम पहुंचने वाले तीन सर्वशुद्ध हलोंको पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु. दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

Ę		खादि		7	प्रो	ति	मा	गौ	री	बे	वी		
रिश्तों में दरार			रिश्तीं में दरार					5	सो	नि	का	गि	ल
						पद पाने	<b>→</b> <sup>5</sup>	अदा के	12 √	चिपका		5	ताः
			7	रंग में	<b>→</b> 4	की आम	मा	माथ	ह	नहीं रहता		चं	की मुनं
		-	7	आ गए	दे		घ		कु	5	ų.	豆	
कम सपत	5₽	डंका के	वंर हे	रे प्रस्त	वी		व		म	₹	श्रेणी के	शे	
वाने	चि	'साम'	9 4	वि	ला	н	च	व	वि	ग	मु	ख	
5	म	ल्टी	ऐ	क्स	ल		व		a	H		7	
	न 4 🖵 दावते		न 4 दावते उड़ाई		इन्हें ।		नेता 🕎 4		्र4 ना	सि प्रमाण	दिए	7	
	भा	अ			थोड़े पीले-	<b>⊋</b> <sup>5</sup>	पोंगे	बं	रा	ह	टोपी	_ 6	एम
23 को	र्द	द	रिक्तों की	¬ <sup>5</sup>	गेहुंए	अ	बढ़ा रहे	ग	य		उछ्छल पड़ी	यू	के
रगा		ना	बयानी	ह	दावा रस	मृ	4	₹	ण	जी	त	नु	ना
4	श्री	न	ग	₹	सकते है	त		) म	या			स	रा
बर ।प		दवा र	। लाई	सि	7	T	Ħ.	सुं	व	τ	दा	H	य
र ए		2	गो	T		ज	वे सरि	त्य हैं	) a			ती ती	ण
4	ड	ने	श्व	(7)	मि	श्र	6 4	वें	क	z	रा	H	न

इंडिया दुडे वर्ग पहेली-28 का हत

पुरस्कार विजेता

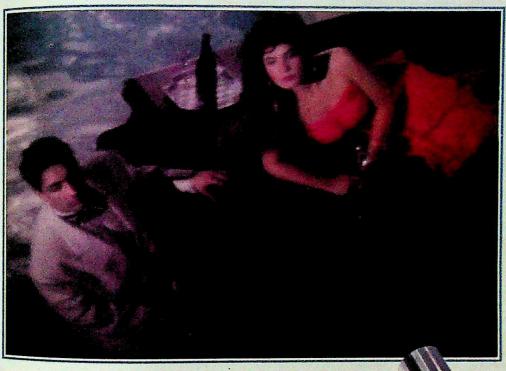
हरिश्चंद्र जैन प्रधानाध्यापक, रा.मा. विद्यालय 365 हैड, वाया रावला श्रीगंगानगर (राज.)

मगीरथ छीपा ए-110, शाहपुरा भोपाल-462016 (म.प्र.)

स्नेह अग्रवाल द्वारा-जयप्रकाण भारती बी-2, पूसा रोड (एचटी फ्लैट्स) नई दिल्ली-5

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं विजेताओं को बधाई

## आइए, श्रेष्ठता के शिखर पर



श्रेष्ठता के शिखर पर तो बिरले ही पहुँचते हैं. जैसे कि आप. और हाँ, ब्लू स्ट्रैटोस भी. यूरोप की ख़ास ख़ुशबू, जो लिपटी रहे आपके पहलू से, सारा दिन.

ब्लू स्ट्रैटोस आफ़्टर शेव और कोलोन. साथ-साथ टाल्क और शेविंग क्रीम की उत्कृष्ट जोड़ी.

ा दुई, नेस,

म तिथिः

अंक

टुडे का हत

वला

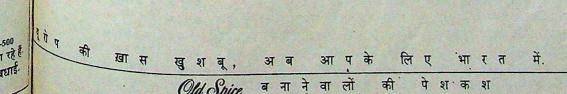
H. X.)

गरती

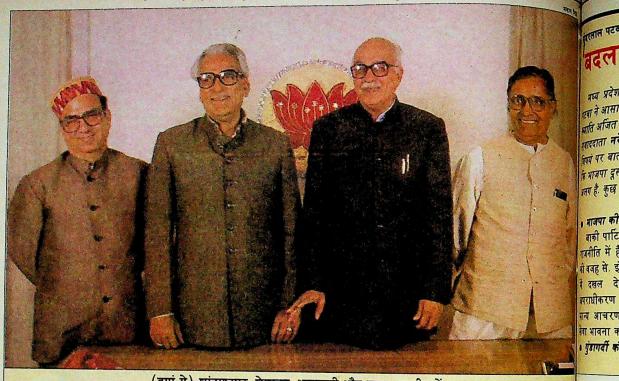
T.)

आप की तरह ही, सामान्य से न्यारी.

ल् ऐ्टोस के साथ श्रेष्ठता का शिखर चूमिए



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri



(बाएं से) शांताकुमार, शेखावत, आडवाणी और पटवाः उम्मीद में

भाजपा

# लंबी जबान, ढीली कमान

भ्रष्टाचार का कोई बड़ा मामला नहीं, आडंबर भी कम किया लेकिन भाजपा शासित राज्य सरकारों के सभी वादे पूरे नहीं हुए

— नरेंद्र कुमार सिंह, जयपुर, शिमला और भोपाल में

व कोई पार्टी देश में एकदम नई राजनैतिक संस्कृति लाने की शेखी बघारे तो उससे उम्मीद की जाती है कि पहले अपने शब्दों को यथार्थ की कसौटी पर कस ले. भाजपा का दावा था कि सत्ता में आने पर एक वैकल्पिक संस्कृति और वैकल्पिक राजनैतिक मूल्य उसकी आचार संहिता का आधार बनेंगे. और पार्टी सत्ता के दुरुपयोग, व्यक्ति पूजा, गुटबाजी, पार्टी के भीतर लोकतंत्र के नाम पर छलावा और सर्वव्यापी भ्रष्टाचार जैसे इंकाई दुर्गुणों से बिलकुल अछुती रहेगी.

मध्य प्रदेश, राजस्थान और हिमाचल प्रदेश में पार्टी के एक वर्ष के शासन के बारे में मतदाताओं की राय ही इसके केंद्र में सत्ता के दावे का कमोबेश फैसला करेगी.

इन राज्यों की 69 में से छह लोकसभा सीटें ही हासिल करने वाली इंका तीनों राज्यों में आक्रामक चुनाव अभियान छेड़ेगी.

भाजपा का अब तक का रिकार्ड तो यही कहता है इसकी सरकारों ने अपेक्षाकृत स्वच्छ प्रशासन दिया है. किसी भी मुख्यमंत्री के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप नहीं हैं. लेकिन इसका एक अलग और विशिष्ट संस्कृति देने का वादा गले नहीं उतरता. भाजपा शासन के एक वर्ष में किसी भी राज्य ने कोई चमत्कारी बदलाव महसूस नहीं किया.

मसलन, पहला सवाल यह कि क्या भाजपा ने अपने चुनावी वादे पूरे किए हैं? जवाब होगा-हां और ना. क्या पार्टी गुटबाजी नियंत्रित कर पाई है? नहीं क्या सत्ता में बने रहने के लिए इसने अपने विरोधियों के साथ क्षुद्र समझौते किए हैं? जवाबं है-राजस्थान में तो किए हैं लेकिन

बाकी दोनों राज्यों में नहीं. क्या इसके मी सादा, आडंबरहीन जीवन जी रहे जवाब है कुछ हद तक तो तड़क मु कम करने में कामयाब रहे हैं ते पल्लेखनीय कुछ नहीं. क्या इसके नेता अ जनता के लिए उपलब्ध हैं? जवाब होगा नहीं, सिवाय भैरों सिंह शेसावत के जी बंगले में तो कोई भी कभी भी जा सकता बगले में तो कोई भी कभा भा आ निक्त भी के स्थाप के स् गुसलखाने से धोती लपेटकर बाहर निक्त भी के मंत्री प गुसलखाने से धोती लपटकर बार कि मेरी प शेसावत से बात कर सकता है, क्या कर कि मेरा शेसावत से बात कर सकता है, क्या कर सम्ब शेसावत से बात कर सकता है है? वह माना के की कार्यशैली लोकतांत्रिक रही है? वह मानार के सि की कार्यशैली लोकतात्रिक रहा पर के श्वार के बि शीर्ष नेतृत्व के फैसले अमूमन इस पर के श्वार की श्वि जाते रहे हैं.

ते रहे हैं. असल में भाजपा यदि अपनी अने विनिक घोषणा असल में भाजपा यदि अपना आचार संहिता स्थापित करने के मक्सर गित्रमा यह आचार संहिता स्थापित करने के मित्रमों के भिका यह कामयाब रहती तो इसके मित्रमों के गिल्मों से कामयाब रहती तो इसके मान का राज्यों से व्यवहार एक-सा होने की उम्मीद बार्ग में बंदरूनी सकती थी. लेकिन ऐसा नहीं हुआ वासन का नासन सकती थी. लेकिन ऐसा नहीं हुआ कि तीर पर पार्टियों की तरह भाजपा का शासन

मध्य प्रदेश व्या ने आसा

वारि अजित बारदाता न विषयं पर बात कि भाजपा दूर मा है. कुछ

बाकी पार्टि गुजनीति में है र्व वजह से. इं रे दसल दे गराधीकरण गय आचरण वा भावना व । गुंडागर्दी कं

असफ व्य चुनने की व भ्रष्टाचार के स , और मी

## दलाव रातोरात तो नहीं होता'

ग्रव प्रदेश के मुख्यमंत्री मुंदरलाल वाने आसानी से उपलब्ध न होने की वात अजित कर ली है. लेकिन प्रधान बाद्याता नरेंद्र कुमार सिंह से वे इस कां पर बात करने को राजी हो गए क्षे भाजपा दूसरी पार्टियों से किस तरह त्रग है. कुछ अंशः

। गाजपा की राजनैतिक संस्कृति परः बाकी पार्टियां निजी स्वार्थों के लिए जनीति में हैं पर हम अपने सिद्धांतों बैबबह से. इंका नेता न सिर्फ प्रशासन देवल देते थे, राजनीति का लाधीकरण भी करते रहे. भाजपा ाव आचरण, संयमी व्यवहार और ना भावना की पक्षधर है.

। गुंडागर्दी की घटनाओं परः

ऐसे मामले अपवाद हैं और हमने इनमें प्रशासन को समुचित कानुनी कार्रवाई करने से कभी नहीं रोका.

 सरकार की पहली वर्षगांठ पर होने वाले प्रचार स्टंट परः

इस तरह के समारोहों की तो परंपरा ही रही है. हम अलग दिखना चाहते हैं पर ऐसा रातोरात नहीं हो सकता.

तबादलों के धंधे परः

पिछले वर्ष सत्ता परिवर्तन से कुछ तबादले अपरिहार्य हो गए थे. इस वर्ष कम ही तबादलों की उम्मीद है.

• अब तक के अपने सबसे बडे मंत्रिमंडल के बारे में:

मध्य प्रदेश इतना बडा राज्य है कि छोटे मंत्रिमंडल के सहारे इसे चलाया ही नहीं जा सकता.

भी है कि मुख्यमंत्री शांताकुमार का प्रशासन बहुत लचर रहा. मुख्यमंत्री ने तो यह कहकर कि हमारी आर्थिक मजबूरियां थीं..पार्टी की असफलता को कबूल ही कर लिया है. पार्टी ने राज्य में मजदूरों को पंजाब के मजदूरों के बराबर मजदूरी देने और शिक्षित बेरोजगारों को भत्ता देने का वादा किया था. दोनों ही वादे पूरे नहीं हए. भाजपा ने 'हर रसोईघर के लिए एक नल' का नारा भी दिया था, जिसे पूरा करने के .लिए 500 करोड़ रु. की जरूरत थी. लेकिन हिमाचल प्रदेश सरकार सिर्फ 2 करोड़ रु. ही जुटा पाई है.

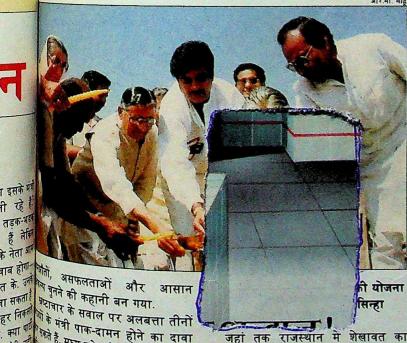
दूसरे राज्यों में भी अधूरे वादों की यही कहानी है. मध्य प्रदेश में भाजपा ने सभी तरह के कृषि ऋण माफ करने और बेरोजगारी भत्ता देने का वादा किया था. इनमें से एक पर तो अमल हुआ लेकिन बेरोजगारी भत्ते की योजना अब तक ठंडे बस्ते में पड़ी है.

"जस्थान में कुछ चुनावी वादे पूरे हुए तो कुछ अधूरे रहे. जिन बेतों में सिंचाई की स्विधा नहीं, वहां से भू-राजस्व नहीं उगाहा जा रहा है. कृषि ऋण माफ कर दिए गए हैं लेकिन लोगों को चुंगी हटाए जाने का अब भी इंतजार है.

भाजपा की नई और उत्कृष्ट मूल्य आधारित राजनीति देने के गर्वीले दावों को सबसे बड़ा झटका, जिस तरह राजस्थान सरकार बची हुई है, उससे लगा है. यह जनता दल से अलग हुए गूट के समर्थन से सत्ता में बनी हुई है और जद (दिग्वजय) गुट के 26 में से 16 सदस्यों को मंत्री बनाया गया है. इनमें से कुछ के खिलाफ तो आपराधिक मामले लंबित हैं. शेखावत की ईमानदारी को तो विपक्ष भी मानता है. लेकिन इंका विधायक सूरेंद्र व्यास कहते हैं, "शिखावत ने सरकार बचाने के लिए जीवन भर की ईमानदारी की पूंजी गंवा दी."

सादा जीवन-शैली और आम जनता की पहुंच के भीतर होकर शेखावत ने इस गलती की थोड़ी भरपाई कर ली है. जयपूर में तो टैक्सियां मुख्यमंत्री के बंगले के पोर्टिको तक जा सकती हैं. उनके ड्राइंग रूम के दरवाजे हमेशा खुले रहते हैं लेकिन वे पार्टी की गुटबाजी और अनुशासनहीनता को दूर करने में कामयाब नहीं हो पाए हैं. नरमपंथियों के अगुआ शेखावत हैं, तो कट्टरपंथियों का नेतृत्व उनके कैबिनेट मंत्री ललितिकशोर चतुर्वेदी ने संभाला हुआ है. चतुर्वेदी कबूल करते हैं, "हमने यह रोग दूसरी पार्टियों से लिया है."

गृटबाजी यदि राजस्थान में मौजूद है तो मध्य प्रदेश में इसका उग्र रूप देखा जा



ता सकता है भरोबार के सवाल पर अलबत्ता तीनों हर हिंक के मंत्री पाक-दामन होने का दावा

इसके म

ती रहे। तड़क-भड़ी

हैं लेकि

के नेता अ

कित है मध्य प्रदेश में सुंदरलाल पटवा हैं? विकास के सिलाफ किसी तरह के बड़े स पर की शिकायत नहीं है. पटवा ने भीर मंत्रियों की संपत्ति की प्ती अपिका कर अच्छी शुरुआत की. पता महार्वे के हैं में ता यह मतलब नहीं कि भाजपा भित्र प्राची में भेष्टाचार जड़ से उखड़ भिक्षास भ्रष्टाचार जङ् । भिक्षा सुत्रों का कहना है कि ति व व विकास किता ति पर पर पूस लेने के बजाए पार्टी हुआ कार पर घूस लेने के बज ज्ञासन के हैंदा उगाहा जा रहा है.

जहां तक राजस्थान में शेखावत का सवाल है, वे तो यह भी कह चुके हैं कि भ्रष्टाचार से लड़ना उनका धर्म है. चंदा उगाही से अधिकारियों को दूर ही रखा गया है. पार्टी की राज्य इकाई के अध्यक्ष रामदास अग्रवाल कहते हैं, "जयपुर सम्मेलन से तो साबित हो गया है कि हम सरकारी संसाधनों का इस्तेमाल पार्टी हितों के लिए नहीं करते."

हिमाचल प्रदेश में कोई बड़ा घोटाला नहीं हुआ लेकिन सिक्के का दूसरा पहल यह

CC-0 In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सकता है और इसके लिए पटवा ही जिम्मेदार हैं. उनके अक्खड़ नेतृत्व ने विधायकों, सांसदों, पार्टी कार्यकर्ताओं और मंत्रियों को उनसे अलग कर दिया है.

इंका शासित राज्यों की तरह मध्य प्रदेश में भी गैर-निर्वाचित चौकडी का जबरदस्त प्रभाव है और पटवा कमजोर धरातल पर खडे हैं. उनकी सरकार पर

भाजपा राज्य इकाई के उपाध्यक्ष कैलाश सारंग, राजमाता सिंधिया के सहायक एस.सी. आंग्रे, भाजपा उपाध्यक्ष क्शाभाऊ ठाकरे और पटवा के छोटे भाई संपतलाल पटवा की चौकड़ी हावी है. इनमें से कोई भी सरकार में नहीं है. सारंग और ठाकरे राज्यसभा के सदस्य हैं जबकि बाकी दो की कोई पहचान नहीं है. पटवा उनका

वचाव इस तरह करते हैं, "लोग उनके व्यक्तित्व के कारण ही अपनी शिकाव लेकर उनके पास जाते हैं. मैं सिर्फ इत्ना ही कह सकता हूं कि वे सरकार है कामकाज में दखल नहीं देते."

मध्य प्रदेश में पार्टी कार्यकर्ताओं है अनुशासनहीनता भी बड़ी तेजी से बढ़ रही है. ऐसी कई घटनाएं हुई हैं जिन्में

मुसलमान तबका

'जपा शासित राज्यों के मुसल-मानों के लिए 'हिंदू राज' के पैरोकारों की हर भंगिमा और हर शब्द खास मतलब रखते हैं. मिसाल के तौर पर भोपाल के राजभवन में शपथ ग्रहण समारोह के समय 'जय सियाराम' के बोल गूंज रहे थे. और पिछले साल अक्तूबर में जयपूर में भयावह सांप्रदायिक दंगों के समय पुलिस ने कई भाजपा कार्यकर्ताओं के खिलाफ दंगे में शिरकत के आरोप लगाते हए एफआईआर दर्ज की. पर शेखावत सरकार ने अभी तक इस पर कोई कार्रवाई नहीं की है.

ऐसी कई घटनाएं गिनाई जा सकती हैं. शिमला का रिज सुरक्षित क्षेत्र है.

प्रधानमंत्री के अलावा और किसी को वहां सभा करने की अनुमति नहीं है. मगर भाजपा ने इस परंपरा को तोड़ दिया. और किसके लिए? विश्व हिंदू परिषद के महंत अवैद्यनाथ के लिए. भाजपा ने जोर देकर घोषणा की थी कि उसके शासन में अल्पसंख्यक सुरक्षित रहेंगे. पर इंदौर की गृहिणी यास्मीन खां कहती हैं, "हम यहां दांतों के बीच जीभ की तरह जी रहे हैं."

भाजपा के सभी मंत्री यह बताते नहीं थकते कि उनके राज्य सांप्रदायिक तनाव से अपेक्षाकृत मुक्त हैं जबकि इंका शासित राज्यों में यह आम बात हो चली है. लेकिन मुसलमानों के दिमाग पर केवल उस कड़वी हकीकत का ही असर नहीं होता कि कितने राज्यों में कितने दंगों में कितनी जानें गई.

लेकिन मध्य प्रदेश में तनाव उत्पन्न करने वाले कारण ज्यादा ही हैं. भाजपा

लेकिन हम वहां भी नहीं जा सकते. हम जाएं तो जाएं कहां? क्या हम इस देश के नागरिक नहीं हैं?"

30

अलबत्ता होर्डिंग तो विश्व हिंद परिषद की उग्र इकाई बजरंग दल ने ही लगाए थे पर सुंदरलाल पटवा का योगदान भी कम नहीं था. दिवाली के दौरान उन्होंने यूनीसेफ के बधाई पत्रों को खारिज करके राम की तस्वीर वाले बधाई पत्रों को महत्व दिया. उनकी सरकार का पक्षपाती रवैया तब और भी उजागर हुआ जब फरवरी में इंदौर के मुसलमानवहल बंबई बाजार में अनिधकृत मकानों को तोडने की कार्रवाई चली. हफ्ते भर तक कर्ष्यू लगा दिया गया. करीब 300 परिवार बेघर हो गए. लगभग 2.5 लाख ह. के घरेलू सामान और करीब 1 लाख ह. के जेवरात की लुटपाट हो गई. लेकिन इन सबसे वहां के निवासी चौंके नहीं पूर्व

इंका विधायक हसनत सिहीकी ने, जो थोड़े समय के लिए भाजपा मे शामिल हो गए थे, कहा, "भाजपा में उदार लोगों को तो खुर्दबीन में खोजना पडता है. इनकी सरकार निश्चित रूप से पक्षपाती हैं."

शेखावत सिंह अल्पसंख्यकों के प्रति जो तथाकथित 'नरम' रवैया है उसके लिए उनकी पार्टी के उग्र तत्व उनकी बिचाई करते हैं. भीलवाड़ा में विहिप की रैली पर गोलीबारी के लिए पार्टी के उग्रवादी तत्व शेखावत की भारी आलोचना कर रहे थे.

मूसलमान हिमाचल प्रदेश में आबादी बहुत कम है. बावजूद इसके पिछले साल दंगों के बाद कई मुसलमानों ने शिमला छोड़ दिया. जैसा कि शहर के एक अधेड मुसलमान दर्जी बताते हैं, "पुलिस पर हमें कोई यकीत नहीं रहा." यकीन का उठ जाता ही भाजपा शासन की 'उपलब्धि' लगती है - नरेंद्र कुमार सिंह, जयपुर, शिमला और

राजस्थान में सांप्रदायिक दंगा; पटवा का बधाई पत्र



हीं, आडंबर भी कम किया ों के सभी वादे पूरे नहीं ह

ी 69 में से छह लोकसभा सीटें रने वाली इंका तीनों राज्यों में नाव अभियान छेड़ेगी.

ा अब तक का रिकार्ड तो यही सकी सरकारों ने अपेक्षाकृत सन दिया है. किसी भी खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप न इसका एक अलग और के सत्ता में आने के तुरत बाद भोपाल में 'देश के हिंदू राज्य की राजधानी' में लोगों का स्वागत करते सैकड़ों होर्डिंग टंग गए. इंदौर की 30 वर्षीय गृहिणी सरवर खां की टिप्पणी है, "भाजपा सरकार हमें पाकिस्तान सदेड़ देना चाहती है.

Digitized by Arya Samaj Foundation Rand Land Condition C

ी<sub>हाँ!</sub> सेरा बाथसुइट जो भी अपनार अतमें एक ही बात नज़र आए

'लोग उनके नी शिकायते सिर्फ इतना सरकार के

र्यकर्ताओं व से बढ़ रही

हैं जिनमे

कते. हम इस देश

व हिंदू ल ने ही वा का वाली के ाई पत्रों ोर वाले उनकी ाव और में इंदौर नार में ने की ह कर्प्यू परिवार ह ह. के व रु. के केन इन हीं. पूर्व ने, जो तपा में जपा में रीन से सरकारें

का किथित उनकी बिचाई हेप की र पार्टी

भारी

लमान

इसके, कई - जैसा

न दर्जी यकीन

ना ही

ती है.

ना और

पाल मे



रविस अन्दान!

जी हां! नहाने के अपने भव्य सामानों से साधारण जगह को भी सुन्दर बना देना सेरा के लिए बच्चों का खेल है.

पेश है - क्राउनी, कोंका, कॉर्नेट, कॅप्री और बहुत सारे डिज़ाइन. रंग और डिज़ाइन को ध्यान में रखते हुए आपके खास पसंदीदा सेट्स. फीके न पड़ने वाले चमकदार या सादे शेड्स अब एक बड़ी रेंज में उपलब्ध

सेरा स्पेस सेवर और वॉटर सेवर, लाजवाब सॅनिटरीवेयर जो जगह और पानी की कमी को०ध्यानामें अखनक आफ्रकी सुनिधानुसार/angri बनाए गए हैं.

तो फिर फ़ौरन जाइए, अपने सबसे नज़दीकी सेरा शोरूम में और ले आइए कुछ अलग ही अंदाज़ अपने आधुनिक रहन- सहन के तरीके में!



मधुसूदन संरामिवस

(मधुसूदन इण्डस्ट्रीज लि. का एक डिवीजन) ई-15, एन. डी. एस. ई.-॥, नई दिल्ली-110 049

Collection, Haridwar सरा बाथसुइट-घर सम्पूर्ण बनाए

भैरों सिंह शेखावत

## 'मेरी छवि धर्मनिरपेक्ष है'

भाजपा के उग्र से उग्र आलोचक के मन में भी राजस्थान के मुख्यमंत्री भैरों सिंह शेखावत के लिए एक उदार कोना मिलता है. उनसे बातचीत के अंश:

• भाजपा की संस्कृति कैसे अलग है? हमारे दल में कोई गृट नहीं है. मतांतर तो स्वाभाविक हैं पर हम उन्हें उछालते नहीं.

• इस फर्क का कोई उदाहरण?

हमारे दल ने कभी सत्ता का दुरुपयोग नहीं किया. हमारा ताजा सम्मेलन उदाहरण है. हमने सरकारी साधनों का उपयोग नहीं किया. कोई अधिकारी नहीं कह सकता हमने चंदा जुटाने में उसकी मदद ली.

• चंदा कैसे जुटाया गया? जनता से जुटाया गया. मंत्री इस



कार्य में नहीं लगे थे.

• जद विधायकों के मामले में आपका क्या कहना है?

जनता दल के साथ हमारी संयुक्त सरकार थी. उनमें कुछ ने मेरा समर्थन जारी रखा तो कुछ ने हटा लिया.

 भाजपा के शासन में अल्पसंख्यक असुरक्षा महसूस करते हैं?

दरअसल वे ज्यादा सुरक्षित महसूस कर रहे हैं. मेरी छुवि धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति की है.

शांताकुमार

# 'विकास को नई दिशा दी है'

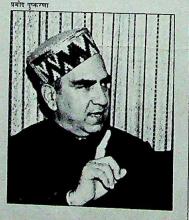
हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री शांताकुमार हिंदी के कवि, लेखक और संघ 'प्रचारक' रहे हैं पर उनकी प्रसिद्धि बढ़िया वक्ता होने के नाते है. लेकिन दिल की बीमारी ने उन पर कुछ अंकुण लगा दिया है. उनसे बातचीत के अंशः

• राज्य सरकार में भाजपा संस्कृति

यह हमारी उपलब्धियों में झलकता है. हमने विकास को नई दिशा और नया लक्ष्य दिया है.

अपने आर्थिक उपायों परः

मंत्रियों ने सार्वजनिक भोज देना बंद कर दिया है. अब सार्वजनिक समारोहों पर मामूली खर्च होता है. अधिकारियों को दी गई अतिरिक्त कारें ने ली गई हैं. पिछले साल के वजट में हमने 63 करोड़ रु. बचाए.



• राजनैतिक हस्तक्षेप के बतौर किए जाने वाले तबादलों परः

तबादलों के साथ यही मुश्किल है. इसलिए हमने दिशा-निर्देश तय किए हैं. इससे विधायकों में असंतोष है पर भाजपा विधायक अनुशासित हैं.

• इंका से अलग दिखने परः

हम खोखले वादे और घोषणाएं नहीं करते. हमारे मंत्री सादा जीवन जीते हैं. जब कोई मंत्री राज्य में दौरे पर निकलता है तो उसके साथ सिर्फ एक अतिरिक्त कार रहती है.

. कार्यकर्ता, विधायक और मंत्री शामिल है इन लोगों ने कानून अपने हाथ में के सरकारी अधिकारियों पर हमले किए की गुडागर्दी की. पटवा का दावा है कि तेल व्यक्तियों के खिलाफ कार्रवाई की गर्हे लेकिन एक विधायक की, जो एक याने प धावा बोलने का अभियुक्त था, गिरफ्तां ही नहीं हुई उलटे, जिला पुलिस अधीक का तबादला कर दिया गया.

हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री शांत क्मार की भी कार्यशैली निराशाजनक है इंकाई मुख्यमंत्रियों की तरह वे भी लोक की पहुंच से दूर हैं. वैसे, शांताकुमार क दावा है कि उन्होंने बेमतलब के सरकार्ग खर्चों में भारी कटौती की है. वे जोर के कहते हैं, "पिछले साल हमने 63 करोड़ । वचाए." कटौती पेट्रोल की सपत सरकारी समारोहों और परिवहन में हैं। गई है. पहले मंत्री जब दौरे पर जाते वेतं उनके साथ वाहनों का काफिला होता ग अब उनके साथ सिर्फ एक अतिरिक्त का चलती है. उद्योगमंत्री किशोरलाल गर्दे कहते हैं, "इंका शासन के आबिरी चा महीनों में सरकार ने 200 उद्घाल समारोहों पर 9.60 लाख रु. बर्च हिए लेकिन हमने 55 समारोहों पर 🕅 90,000 रु. खर्च किए हैं."

शेखावत ने भी सरकारी खर्गी कटौती की है. उनके आर्थिक उपायों रे जिनमें पेट्रोल की खपत और टेलीफी बिलों में कटौती शामिल है, राज्य ने अ करोड रु. बचाए हैं. लेकिन मध्य प्रदेश भाजपा आडंबरपूर्ण समारोहों से दूर ए में विफल रही है. राज्य में चाहे स्कूल में नई चारदीवारी का उद्घाटन समारोह या नई बस सेवा शुरू होने का, प्रचार भूखे मंत्रियों को इनमें जाने से कोई पहिं नहीं होता.

सरकार ने खर्च में कोई संयम बरता है. ईंधन की खपत कम नहीं हुई पिछले एक साल में राजकीय विमान खर्च बढ़कर दोगुना यानी 2.13 करोड़ हो गया है. पटवा की हवाई यात्राओं कारण इस पर रोजाना औसतन <sup>58,00</sup> रु. का खर्च आता है. भाजपा से यह कि ने नहीं कहा कि वह राज्य प्रशासन राजनैतिक व्यवहार का ज्यादा व ढांचा बनाकर देश की राजनैतिक व्यवस् को बदलने का भारी-भरकम दावा क साफ-सुथरी सरकारें मुहैया कराते के भाजपा की तारीफ की जानी बा लेकिन राजस्थान, मध्य प्रदेश हिमाचल प्रदेश के लोग अभी भी हैं मोर्चों पर शब्दाडंबर के हकीकत में बिरी

का इंतजार कर रहे हैं.

१५ मार्च। क्ल माल तक नेमांन का मुनाब अति महन्द।

मेन, किन महि का प्रनाव। नेपा वो भनमा जायेमी। पन अने मुझे ही
देनतमें उत्त दिया। यही तो है जिन्हणी।
हेनतमें उत्त दिया। यही तो है जिन्हणी।



**Modern** Suitings Ltd.

OSulsom AMADELS

ी शामिल व हाथ में नेहा नले किए औ है कि दोवों ई की गई है एक थाने प ा, गिरफ्तारं लस अधीख

मंत्री शांता ाशाजनक है वे भी लोग ताकुमार क के सरकार्ग वे जोर देवर 63 करोड़ ह की सपत वहन में की र जाते थे तं ला होता ग तिरिक्त कार लाल गर्व गिखरी जा ० उद्घास खर्च किए पर सिं

ते सर्चों न उपायों रे र टेलीफोन राज्य ने अ घ्य प्रदेश है से दूर ए हि स्कूल है। समारोहहैं ा, प्रचार कोई पहें

संयम ग नहीं हुई। विमान व 3 करोड़। यात्राओं तन 58.00 से यह कि शासन औ ादा स्वर्भ क व्यवस् दावा क

दाव के बीत में कि भी कि

में बहत



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

MEGACORP/367/90 HIN

# अभिशाप

#### तरह-तरह की बीमारियों से वनवासी क्षेत्र में मृत्यु का तांडव

राजधानी दिल्ली मा होता तो प्रभावित इलाके में प्रधानमंत्री का अचानक दौरा हो जाता, उप-राज्यपाल को हटा दिया जाता और देश भर में हल्ला मच जाता. जुलाई 1988 में दिल्ली की पूनर्वास कॉलोनी नंदनगरी में हैजे के कारण 100 से ज्यादा मौतें होने

(मस्तिष्क ज्वर) ने हमला बोल दिया और अकेले इसी महीने 184 मौतें दर्ज की गई. बस्तर संभाग के आयुक्त सुदीप बनर्जी बताते हैं कि अब तक आंत्रशोथ, पेचिस से 196 और मस्तिष्क ज्वर, बुखार तथा दूसरी बीमारियों से 132 मौतें हुई हैं. वनर्जी कहते हैं, "कुछ विकासखंडों में रोगों की प्रबलता अति तीव्र है. इसलिए यह कहना कठित है कि इस पर काबू कब तक पाया जा सकेगा."

रायपूर मेडिकल कॉलेज के चिकित्सक दल में बस्तर गए डॉ. ए. आर. दल्ला के अध्ययन का निष्कर्ष है कि बस्तर में मलेरिया सर्वव्यापी है. 1990 में 2,17,249 व्यक्तियों का रक्त परीक्षण किया गया. इनमें से 25,986 मलेरिया से पीडित पाए गए जबिक 19,303 लोगों को फेल्सीफारम मलेरिया था. इसे मस्तिष्क मलेरिया कहा

भारी कमी है. डॉक्टर बस्तर है कालापानी मानते हैं. हालत कितनी सराह है इसका अंदाजा इसी से लगाया ग सकता है कि बस्तर भेजे जाने के सिलाइ जबलपुर के डॉक्टर अदालती स्थानारेश ले आए जबकि सरकार ने डॉक्टरों को हर महीने वेतन के अतिरिक्त 2000 रु. देने हो घोषणा की है. अभी भी जिले में डॉक्टो के 90 पद रिक्त हैं. जिला प्रशासन पडोसी जिलों से करीब 30 डॉक्टर बुना रखे हैं. लेकिन डॉक्टर तबादले के ला भोपाल के द्वार खटखटा रहे हैं.

वस्तर जिले के कांकेर से इंका के पूर्व सांसद अर्रविद नेताम का मानना है कि इस महामारी से भाजपा सरकार की अकर्मण्यता पूरी तरह उजागर हो गई. उन्होंने केंद्र से दवाइयां और डॉक्टर भेज के लिए प्रधानमंत्री की पत्र लिखा है

हो जाती है.

वंग की दादा

र सांप्रदायिक

राज्यसभा

ही. जो सांस

उब हाथ पसा

हमने अपने क्षे रिवाई, "अभी ग्रप तस्ते पर

'हम खुद ्रें दिल तो

योडे दिन

मि ले लेते."

"हम तो अ बरमत में

वही 'सेवव वर चुराते हे ल बीसें निप

समय बडा

पूर्व यानी :

नेसान के वर तान का इंसा

हमने म

गततायी

गुलामों की र

आपने हि

एकाघ हो

कुछ सास

'अपने देश

आपने क्षेत्र

क्यों नहीं!

गदत है. हम र

मैनही उठाया

वं तक बांट

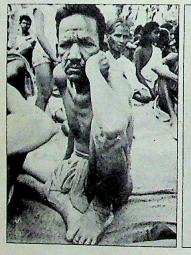
भिने दस्तखत

हम लोकस

प्रधानमंत्री

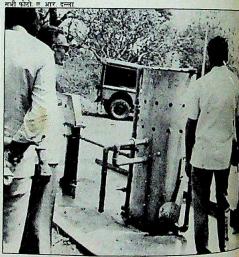
किविकार

वह तो जन



गरीबी, कुपोषण और दुषित पानी पीने को अभिशप्त वनवासियों के लिए रोग तो पुराने सखा हैं

कुपोषण का शिकार (बाएं); और दूषित पानी का शुद्धिकरण



पर यही सब हुआ था.

लेकिन मध्य प्रदेश के दूरदराज निपट वनवासी जिले बस्तर में आंत्रशोथ, पेचिस, मेनिनजाइटिस और बुखार से जनवरी से 25 मार्च तक अधिकृत तौर पर 366 और अनिधकृत तौर पर 600 से ज्यादा मौतें होने पर कहीं पत्ता तक नहीं खड़का.

गरीबी, कुपोषण, बासी अन्त और दूषित पानी पीने को विवण बस्तर के वनवासियों के लिए खूनी पेचिस, मलेरिया और आंत्रशोथ तो जैसे पुराने सखा हैं. हाल के वर्षों के आंकड़े इसकी पुष्टि करते हैं. 1986-87 में 77 और 87-88 में 178 वनवासी खूनी पेचिस के शिकार हुए थे. लेकिन इस बार तो महामारी ही फैल गई.

विकांसखंडों-दरभा. तीन तोकापाल और वस्तानार में मौतें हुई और डेढ महीने के भीतर जिले के 32 में से 28 विकासखंडों को सर्वग्रासी रोगों ने घेर लिया. मार्च में एकाएक मेनिनजाइटिस

जाता है और इसमें मृत्यु दर बहुत ज्यादा पाई जाती है. वे कहते हैं, "दरअसल असली बीमारी 'बस्तर सिड्रोम' है. यानी क्रानिक मलेरिया रक्त की (एनीमिया) का कारण बनता है और क्पोषण से शरीर की प्रतिरोध क्षमता कम हों जाती है. ऐसी हालत में प्रदूषित पेय जल से आंत्रशोथ का साधारण रोगाणु भी वस्तर में मृत्यु का कारण बन जाता है."

चिकित्सकों की इस टीम ने कई गांवों में कुओं और नालों के रुके हुए पानी का रासायनिक परीक्षण करने पर इसमें मल का प्रदूषण पाया. यह पानी मनुष्य के पीने लायक नहीं है. सरकारी नलकूप एक तो नाकाफी हैं दूसरे उनके पानी में लौहकण की मात्रा अत्यधिक है. राज्य के वनवासी कल्याणमंत्री बिलराम कश्यप बताते हैं कि महामारी फैलने के बाद 26 रिंग नलकूप खनन कार्य कर रहे हैं.

लेकिन डॉक्टरों, स्वास्थ्य संस्थाओं की

नेताम कहते हैं, "राज्य सरकार पूरी तर् लाचार दिखाई देती है. उसने अब इसकी गंभीरता नहीं समझी है. गोतिब की तो छोड़िए वहां इंजेक्शन भी नहीं है लेकिन कश्यप का कहना है कि 20 ता गोलियां और 2 लाख वैक्सीन मुंबई मंगाई गई हैं. उनका कहना है, "बस्तर हर तीसरे-चौथे साल ऐसा कहर हूल रहा है. लेकिन इंका सरकारों ने सह आंकड़े हरदम छुपाए रखे.'

जिला प्रशासन ने अभी तो हैं महामारी से जूझने के लिए "आपरेडन निरामय' चलाकर लगभग सभी महर्का को झोंक दिया है लेकिन चुनाव गहमागहमी भुरू होते ही सारा प्रभाव उसमें व्यस्त हो जाएगा और पेयजन भी किल्लत होने लगेगी. तब बस्तर वनवासियों की नियति सिर्फ ऊपर वार्व - जगदीश उपासने, ब्यूरो रिपोर्टो के ली ही हाथ होगी.

CC-0. In Public Domain: Gurukul Kangri Collection, Haridwar

## नए कारनामों की ओर

वस्तर को कतनी सराव लगाया जा के सिलाफ स्थगनादेश

स्टरों को हा

0 रु. देने की

में डॉक्टो

प्रशासन ने

डॉक्टर व्ला

दले के लिए

हालात की इनायत है हम दार्शनिक हो चले हैं. हमें एहसास है हर अच्छी चीज की शुरुआत में ही उसका अंत निहित है. मजेदार 'पार्टी' खत्म

तं जाती है. न हमेशा जंग चलती है, न इंका के पूर्व लग की दादागीरी, न भूखे-नंगे की सांस, ानना है कि रसाप्रदायिक दंगे. संसद तक का अंग-भंग सरकार को शाज्यसभा चालू है, लोकसभा चल ार हो गई ही जो सांसद भौंक के भीड़ भगाते थे, गॅक्टर भेजने अहाय पसारे वोट की भीख मांग रहे हैं. लिसा है इसे अपने क्षेत्र के एमपी के साथ हमदर्दी ब्रिह, "अभी तो तख्ते-ताऊस के दिन थे. ग्राप तस्ते पर आ गए."

"हम बुद दिल्ली में भले हैं दिल तो आप लोगों के

वोड़े दिन दिमाग से म ले लेते."

"हम तो आपके सेवक हैं. बिस्मत में फिर हाजिर

यही 'सेवक' कल तक वरं बुराते थे. आज बिना ल बीसें निपोर रहे हैं. सच समय बड़ा बलवान है. गुर्व यानी भूत होकर ही निसान के वक्त सत्ताधारी का इंसान जगता है.

हमने मौका न चूकते से उनके है. गोतियों गी नहीं हैं भेलामों की जानकारी चाही-

र पूरी तरह

ने अब भी

क्त 20 लाव न मुंबई है

"बस्तर म हर दूर्वा रों ने सर्व

तो ई

"आपरेजन

री महक्सी

चुनाव व

बस्तर

गेटों के हा

आपने दिल्ली जाकर क्या झंडे

<sup>"फ़ाघ</sup> हों तो गिनाएं. कमाल हो

े ख़ सास-सास उपलब्धियां तो बता

भिपने देश में लोगों को बकवास की े हम संसद में चुप रहे."

शाने क्षेत्र की समस्याओं का सवाल मही उठाया."

भों नहीं! हमने तो अपना 'लेटर-ति वांट रखा था. जिसने जो लिखा, र्ग प्रशास विने दस्तालत किया." पेयजल हैं र वाते हैं

हम लोकसभा का जिक्र कर रहे हैं." भ्यानमंत्री के पद को हमने परिवार कि कि प्रिकार से खुटकारा दिलाया."
कह तो जनता का फैसला था."

"पौने दो साल में दो-दो आला वजीर बनाए. जरा सोचिए."

"सब आपके झगड़ों का नतीजा है." "हमने कांटे से कांटा निकाला."

"वह कैसे," हमने चौंककर जानना

"जात-पांत के जहर को हमने मंडल के असर से मिटाया."

''पर उसकी वजह से तो सैकड़ों छात्रों ने आत्मदाह किया.'

"यही तो. अगड़े जल मरेंगे तो अगडे-पिछड़ों के झगड़े कैसे रहेंगे."

"रेडियो-दूरदर्शन की आजादी के मामले का क्या हुआ."

काबिलियत की दरकार है, न प्रवेश पर रोक. आप भी मैदान में आ जाएं."

"माफ करें! हम क्यों अपनी इज्जत गंवाएं."

"मिडिल क्लास को आत्म-सम्मान की दिकयानूसी बीमारी है.'

"आप लोगों के कोई उसूल नहीं हैं." ''लोग लाख थू-थू करें, हमें पॉवर

प्यारी है." "आप को विदेशी मुद्रा के घटते बैलेंस

और बढ़ते उधार की फिक्र ही नहीं है." 'विदेशी मसलों पर तभी तो हम मौन

हैं. अब कौन है जो हमें लोन नहीं देगा." हम अपने चुने सूरमाओं का लोहा मान

> गए. यह तो गनीमत है कि पांच साल नहीं रहे वरना क्या न कर गुजरते. हमने भविष्य का सवाल किया-

''अब क्या इरादा है.'' "सत्ता में लौट आने का वादा है."

"जन-समर्थन का इतना भरोसा है."

''हमें अपने सहयोगियों की कद-काठी और लाठी पर यकीन है.'

"जम्हरियत में जोर-जबरदस्ती की क्या जरूरत

"जनता हमें चाहती है." "अगर आपके विरोधी का भी यही खयाल हो तो

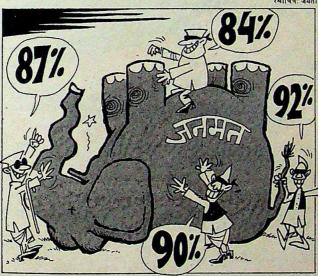
क्या हो?"

"हम उसका भ्रम दूर कर देंगे. कर ले दो- दो हाय."

"आप तो हिंसा पर उतारू हैं."

"आपने पढ़ा नहीं. हममें से कुछ ने गांधी की समाधि की अमर ज्योति बुझाकर तवारीखी इंकलाब की पहल कर

हम जानते हैं. बदलाव के इस दौर में सब मुमिकन है. अभी तक नेता झुठे वादों और नारों से मतदाता को धता बताते थे. अब इलेक्शन की भैंस लाठी से हंकेगी. सत्ता के लिए हर तरह के अनैतिक सांठ-गांठ और दल-बदल की मानसिक हिंसा 'चोट दो, वोट लो' की शारीरिक हिंसा में तब्दील हो रही है. बुद्ध, महावीर और गांधी के मुल्क में नेताओं की यही अहम उपलब्धि है



"हम राजीव-दर्शन से हटकर टोपी-दाढ़ी के वर्णन तक आ गए."

"बधाई! पर आपकी शत-प्रतिशत कामयाबी से आम आदमी भूखों मरेगा."

"उसी की भलाई के लिए तो चुनाव हो

'इससे तो कीमतें और बढ़ेंगी,'' हमने शंका जताई.

"नहीं भाई! थैलियां खुल रही हैं. रैलियां चल रही हैं. बेकार कार पर हैं.

"यह धंधा तो कुछ दिन का है." "हम भी तो टेंपरेरी हैं."

"आपका गुजारा कैसे होता है." "खाने को चंदा है, मूंडने को बंदा. यों चलते-चलते हमने पेंशन भी बढ़वा ली."

"मेवा खाने को आप जनसेवा कहते

''हमारे पेशे में न किसी खास

# Digitized Markagatios has sugar क्या आप मेरी दुकान की प्रदर्शन खिड़की का बीमा कर सकते हैं?

क्या आप मेरी द्कान का आग से बीमा कर सकते हैं ?

क्या आप मेरे माल का चोरी से, बीमा कर सकते हैं?

क्या आप मेरी दुकान में लगे प्लेर ग्लांस का बीमा कर सकते हैं? प्रभी निजी क्या आप मेरी नकदी का, रास्ते में होहै? चोरी से, बीमा कर सकते हैं? क्या आप मेरी साईकल का

बीमा कर सकते हैं?

मा आप

न् इण्डिया

भवालों के

क्या आप मेरे गोदाम का बाढ़ से बीमा कर सकते हैं ?

क्या आप मेरी दुकान का दंगाईयों से बीमा कर सकते हैं ?

क्या आप मेरे न्योन साइन बोर्ड का, बिजली गिरने से बीमा कर सकते हैं?

क्या आप क्षतिग्रस्त अनाजों का क कर सकते हैं ?

क्या आप काम करते हुए टांग दूर पर मुरक्षा के लिए मेरे यहां काम कर्ने का बीमा कर सकते हैं? क्या आप किसी ग्राहक के मेरी हैं

में घायल हो जाने की दशा में सुरक्षा के मेरा बीमा कर सकते हैं?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ह्या आप व्यवसाय से संबंधित यात्रा के नमें निजी सामान का बीमा कर

लगे प्लेर

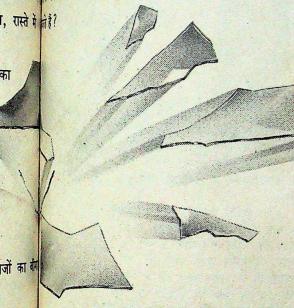
का

र रांग रू

ाम करने व

के भी ह

सुरक्षा के



न् इण्डिया. हमारे पास हैं आपके स्वालों के जबाब.

उस बस चलान स रा को इस बात की समझ कि सारे क्रोध और मात्र निशाना वह रि जब फसादी टोली ले सिख नौजवान पर ट उमड़ी, तो लक्ष्मी ने र लिया. दोनों हाथ व उसने अपनी भारी शर की कतारों के बीच लिया था.

"एक ओर हो जा का अगुआ, जो एक मूंछों वाला बदमाश आवाज में बोला.

"क्यों लेकिन?" गए चेहरे में से दहः आई, "जाओ, नहीं ह "हट जाओ माई, भीड़ में से एक होंठ-

मुस्टंडा बोला, "नहीं तो उस गद्दार से पहले तुम्ह पडेगा."

"गहार? कौन गहार?" लक्ष्मी ने टोली को देखते हुए कहा, "मुझे तो कोई गद्दार नहीं दिखाई "वह सरदार गहार है."

"पर किस तरह?"

"इसने हमारी प्रधानमंत्री की हत्या की है." "जिन्होंने की है, वे मारे गए हैं या पकड़े जा

रेडियो पर सुना है."

"सारे सरदार गद्दार हैं," गंजा मूंछों वाल प्रधानमत्री के खून का बदला सरदारों के खून से व "अच्छा, और उस समय कहां थे तुम बड़े सूरमे महात्मा गांधी को गोली मारी थी. क्यों नहीं आ

## न्यू इण्डिया एश्योरेंस



भारतीय साधारण बीमा निगम की सहायक कंपनी.

आपका विश्वास है हमारा विकास.

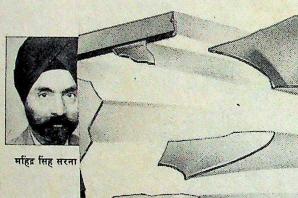
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

# والم الم

वया अवि मरि दुन्ति का जान स नान

कर सकते हैं?

क्या आप मेरे माल का चोरी से, बीमा कर सकते हैं ?



स नंबर 5.
से चलती थी
रोड, ऑल इंडिए
दिल्ली से होती हुं
नाम पहले बंगा
पाकिस्तान से आ
इस बस में सफर
कनाँट प्लेस की
करते थे.

दहणत न केवल र

क्या आप मेरी दुकान का दंगाईयों से

उस दिन जब बीमा कर सकते हैं? से चलने लगी तो

कर सकते हैं?

क्या आप मेरे न्योन साइन बोर्ड का,

लेकर कन्याकुमार कि कि कि कि कि प्राचित कर दी गई थी. पद्यपि अमृतसर दरबार साहब में हुए ऑपरेशन नीला तारा के पण्चात प्रधानमंत्री की जान को खतरा पैदा हो गया था, तथापि किसी को सपने में भी खयाल नहीं था कि यह दुर्घटना सचमुच घटित हो जाएगी. अकस्मात घटित होने के कारण इसकी दहणत और भी गहरी थी. बस में अधिकांण लोग गुमसुम बैठे थे. यदि कोई बोलता, तो भयभीत खुसर-फुसर में बोलता. बस ने अभी स्टॉप से हरकत नहीं की थी कि सामने से दो स्त्रियों ने आकर हाथ दे दिया. उनमें से एक पच्चीस वर्ष की सांवली-सी युवती थी. उसके हाथों में एक बड़ी-सी गठरी थी. और वह स्पष्ट तौर पर गर्भवती दिखाई देती थी. दूसरी स्त्री पचास-पचपन वर्ष की थी और उसने तीन वर्ष का बच्चा गोद में उठाया हुआ था. बस पकड़ने के लिए वे जल्दी-जल्दी चलती हुई आई थीं. बस पर सवार होने के बाद भी बड़ी उन्न की स्त्री भारी-भरकम शरीर के कारण अभी तक हांफ

रही थी.

''बैठ जा पाशो, अगर जगह मिलती है,'' उसने सांवली युवती से कहा.

सभी सीटें भरी हुई थीं. देर से आने के कारण सिर्फ वे दोनों ही खड़ी हुई थीं.

सीटों पर बैठे हुए लोग मुख घुमाकर करवट बदल रहे थे कि कहीं उनको उठने की ग्लानि न बरदाश्त करनी पड़े. कइयों ने नजरें झुका रखी थीं. कई खिड़िकयों से बाहर झांक रहे थे और कई 'इविनग न्यूज' की ओट में चेहरे छुपा रहे थे.

बस के बीच में बैठा हुआ एक सिख नौजवान अपनी सीट क करने के लिए उठा.

क्या आप मेरे गोदाम का बाढ़ से बीम "तू बैठा रह पुत्तर," बड़ी उम्र की स्त्री ने उसके कंधे पर

"नहीं मां जी, मैंने बस एंड्रोजगंज तक जाना है."

"भला हो पुत्तर," लक्ष्मी ने कहा, "बैठ जा पाशी ते रमेश को भी पकड़ ले."

अब तक लक्ष्मी का सारा ध्यान बच्चे में था. जब वह अपूर्व भोते काम भी के घुटने पर बैठ गया, तो लक्ष्मी का मन बिखरने लगा. विवास की की कम न विखरता प्रवाह में बहने लगा.

यह प्रवाह प्रधानमंत्री की हत्या का नहीं था. यह प्रवाह की अपनी जिंदगी की त्रासदी और अपने घर के बर्बाद होने की

चिराग दिल्ली से आती बार भी वह कनाँट प्लेस तक होकर आई थीं. बस चितरंजन पार्क से भरी हुई आती थीं हैं उसकी बहू गर्भवती थी और उनके पास गठरी और गोद में या तथापि कोई सीट देने के लिए नहीं उठा था. किसलिए उठ भी पड़ता तो जिंदगी कितनी-सी सुखदायक हो जाती के सभी सुख तो पांच महीने पहले ही अनिल अपने साथ ते गई उस दैत्य जैसे ट्रक के पीछे दूर तक घिसटता उसका थ्री-व्हीतर खून से लथपथ उसके जवान पुत्र की लाण, जो पुलिस उठाई थीं. हजारों विलाप और लाखों रुदन भी ईश्वर के मन में कृष थीं. हजारों विलाप और लाखों रुदन भी ईश्वर के मन में कृष डाल सके थे और लोगों ने लकड़ियों के ढेर पर उसके पुत्र लेटाकर तीन वर्ष के बच्चे के हाथ से आग लगवा दी धी किता कर की साम होना भर न निकाला. दमें और गुत्र विनार तीन उसे पुरानी थी लेकिन वह जवान पुत्र की सामों के बीमारी तो उसे पुरानी थी लेकिन वह जवान पुत्र की सामों

छ वे अनिल हे महारे छोड़ छा मकान औ के पीने लगे. मिलाई की को में काम भी जोते और सि नेता कम न प्या पद्यपि विस्तार केटोरी है

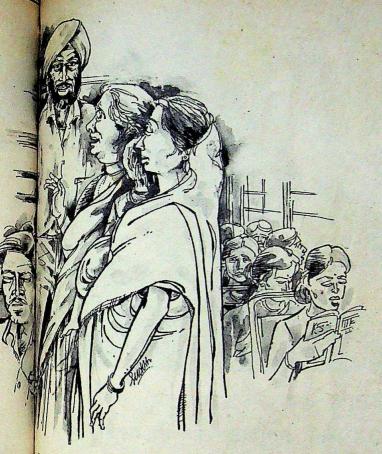
रहा था.

बह वह विल

म सुबह मा हो गई में दो स्त्रि चुरा रहे उन्हें अ

के अकस्मात

ेभरी. आई



रहा था अब सांस रुकती, तो घंटों रुकी ही रहती. फिर हुर वह विलकुल न जागा. बड़ा जोर लगाया लक्ष्मी ने-अवे अनिल के बापू! एक बार तो आंख खोलकर देख. हमें के कंधे पर <sup>है स्</sup>हारे छोड़ चला है जालिम.'' चिराग दिल्ली का किराए का हो मकान और पित की गरीबी. दुख-दिरद्र घूंट-घूंटकर शरीर गर्पने लगे. भला हो पाणो के बाप टेलर मास्टर का, उसने की में पाणो को नाना प्रकार की नाईटियां सिलना सिखा मिलाई की एक पुरानी मशीन ले दी और जनपथ की दो वह अपूर्व कि काम भी दिलवा दिया. कपड़े की गठरी वह दुकानों से की और सिलने के बाद नाईटियों की गठरी पहुंचा आती. गों कम न हुई लेकिन भूख-नग्नता की डायन से छुटकारा ण ग्विप जिंदगी आंसुओं से सराबोर थी तथापि हाथ में शैर कटोरी में दाल तो थी.

नी सीट व

गणी. ते, ह

ाती थी.

गोद में सलिए उ

जाती? जि

ाथ ले गर्म

उसके पु

री थी व

सामा क

के अकस्मात रुक जाने के धक्के से लक्ष्मी सोचों के पाताल अर्डिएनए मार्केट के निकट सड़क बड़े-बड़े पत्थर

भ सुबह अकस्मात प्रधानमंत्री की कि गमसम थे महोगई थी. बस में सब गुमसुम थे. में वो स्त्रियों को खड़ी देख सभी लोग के पूरा रहे थे... एक सिख नौजवान ने <sup>उन्हें अपनी</sup> सीट देनी चाही.

रखकर रोकी हुई थी और फसादियों की टोली नारे लगा रही थी, "खून का बदला खून से लेंगे." "सरदार गहार हैं." फिर वे नारे बस के अंदर घुस आए, जैसे क्रोध और नफरत का एक झक्कड़ बस पर बरस पड़ा हो.

एक हट्टा-कट्टा आदमी लोहे का लट्ट दोनों हाथों में हथौड़े की तरह उठाए . ड्राइवर के सिर पर खड़ा हो गया ताकि उसे बस चलाने से रोके रखे. सवारियों को इस बात की समझ आते देर न लगी कि सारे क्रोध और नफरत का एक मात्र निशाना वह सिख नौजवान था. जब फसादी टोली लोहे की लट्टें उठाए सिख नौजवान पर टूट पड़ने के लिए उमड़ी, तो लक्ष्मी ने उनका रास्ता रोक लिया. दोनों हाथ कमर पर रखकर उसने अपनी भारी शरीर के साथ सीटों की कतारों के बीच वाला राह घेर

"एक ओर हो जाओ माई," टोली का अगुआ, जो एक गंजे सिर वाला मूंछों वाला बदमाश था, गरजती आवाज में बोला.

''क्यों लेकिन?'' लक्ष्मी के सूर्ख हो गए चेहरे में से दहकती हुई आवाज आई, "जाओ, नहीं हटती."

"हट जाओ माई, रास्ता छोड़ दो," भीड़ में से एक होंठ-कटा काला स्याह

मुस्टंडा बोला, "नहीं तो उस गद्दार से पहले तुम्हारा सिर फाड़ना

''गद्दार? कौन गद्दार?'' लक्ष्मी ने टोली को आग्नेय नजरों से देखते हुए कहा, "मुझे तो कोई गद्दार नहीं दिखाई देता."

''वह सरदार गद्दार है."

''पर किस तरह?''

''इसने हमारी प्रधानमंत्री की हत्या की है.''

"जिन्होंने की है, वे मारे गए हैं या पकड़े जा चुके हैं. मैंने खुद रेडियो पर सुना है."

"सारे सरदार गद्दार हैं," गंजा मूंछों वाला बोला, "हमने प्रधानमत्री के खून का बदला सरदारों के खून से लेना है."

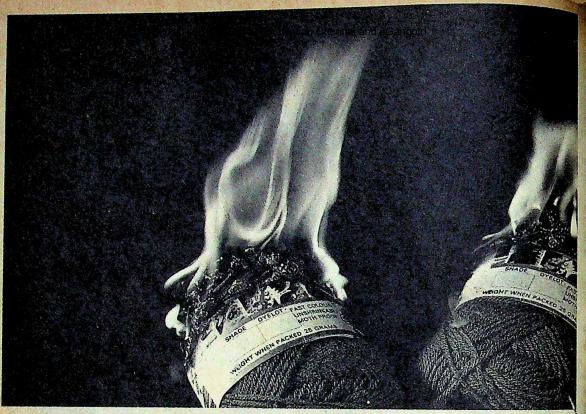
''अच्छा, और उस समय कहां थे तुम बड़े सूरमे, जब एक हिंदू ने महात्मा गांधी को गोली मारी थी. क्यों नहीं आपने सभी हिंदुओं का सिर फाड़ दिया. एक नायूराम को फांसी दे दी. वाकी हिंदुओं को किसी ने फूल भी न मारा."

इसं दलील का गंजे मूंछों वाले और उसकी गुंडा टोली पर रत्ती भर भी असर न हुआ.

"तुम सीधी तरह से रास्ता छोड़ोगी कि नहीं?" लोहे के लट्ट के दोनों सिरे पकड़ कर गंजे मूंछ वाले मुस्टंडे ने लक्ष्मी को पीछे धकेलना चाहा लेकिन लक्ष्मी ने उसको गरेबान से पकड़ लिया और एक तगड़ा घूंसा उसके नाक पर जड़ दिया, जिससे उसके नाक से नकसीर का परनाला बह निकला.

"तुम हरामजादे, लगाओ तो मुझे हाथ," लक्ष्मी की वाणी चिंगारियां छोड़ रही थीं, "तुम्हारा खून न पी लूं तो मुझे बाप की वेटी न कहना."

लक्ष्मी की कठोर ढाल से वास्ता पड़ते ही कुछ फसादी बस के



## जब आपने कहा कि आनेवाने वर्ष में उत्पाद्न सबको चौंका देगा, तब आपका मतलब यह तो नहीं था!

सपने सजाना अच्छी बात है. ख़ासतौर पर आने वाले कल के. रिकॉर्ड बिक्री. अधिक लाभ. बेहतर कार्य-स्थितियां...

परन्तु जब आप सब ओर बराबर नज़र रखते हैं कि सारे कार्य ठीक-ठीक हों तब व्यापारिक समझदारी यह भी है कि संभावित दुर्घटनाओं के भी पूरी तरह नज़र अन्दाज़ न किया जाए. दंगों के कारण ऑफिस का नुकसान. गोदाम में आग. क्षतिप्रस्त प्राप्त माल. कारखाने में दुर्घटना.

यूनाइटेड इंडिया में, हम बरसों से जोखिमों को सोचते-समझते आ रहे हैं. इसे कैसे कम किया जा सकता है? कैसे नियंत्रित किया जा सकता है? इसकी भरपाई कैसे की जा सकती है? हमारा विश्वास है कि व्यापार में सबसे बड़ा जोखिम वह होता है जिसे एक बार उठाने के बाद भी उससे लापरवाही बरती जाए

आइये, 1120 ऑफिसों में से कहीं भी हम से सम्पर्क कीजिये. साथ मिल बैठकर हम आपके व्यापार में संभावित जोखिमों पर विचार केंगे

उनकी भरपाई के लिए उचित रास्ता खोजेंगे. व्यक्तिगत सेवाओं

के साथ शीघता से क्लेमों का निर्णय करेंगे.



गरयों की अर

गो चपलें र्थ

भन रहे हो. उ आप सरदार

तिर फांसी का एने जलियां व नाओं को, जिन्

तियो, एहसार कोध ने लड़की मुबुक-सी थी

क उसके चेह वहरों में से सु वस की वाकी

थी. उनके स कि गए. फिर बोग सीटों से

िभी ने इस ध

ो उस सिख नौ

वे मुंछों वाले

की हिन

के उस हट्टे-क वे बम के ड्राइन

(जनरल इंश्योरेस कागोरेशन ऑफ इंडिया का सहायक संस्थान) CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection 24, व्हिट्टिसी ग्रेड, मद्रास-600 014

देश के लिए बनाएं, सुरक्षा योजनाएं

का में बढ़ आए थे, ताकि वह को ओर से अपने शिकार तक को ओर लेकिन उनकी नीयत को दक्कें लेकिन उनके से उठ को ही पाशो एक झटके से उठ को ही पाशो एक झटके से लगाए कोई और रमेश को कंधे से लगाए

वर्गेक्कर खड़ा हा पर ब्रवार!" लाल-पीली होकर ब्रोबरबी, "आगे नहीं बढ़ना, नहीं क्रिक्ष को काटकर फेंक दूंगी." क्रिक्षण के लिए फसादियों की ली टोली भयभीत हो गई. गुंडा बी टोली अयभीत हो गई. गुंडा बी मं कुछ जराइमपेशा मुस्टंडे थे, बु समाज विरोधी और बाकी सी बढ़ाने वाले.

श्वनी टोली के अगुआ होंठ-कटे होने पाशो को कंधे से पकड़कर

क जा कंजर," बिफरी शेरनी निरह पाशो गरजी, "तुम होते के हो मुझे हाथ लगाने वाले."

बेटे रमेश को सीट पर फेंकते हुए जो ने सिर झुकाकर होंठ-कटे

गओं को

ना.

कता है?

हुं के पेट में इतने जोर का घूंसा लगाया कि उसके होशक्य उड़ गए. अभी वह संभला नहीं था कि पाशो उसके गले क्य उसने उसका मुंह नाखूनों से नोच डाला. फिर सहसा की उंगिलयों की कंघी उसकी गरदन के गिर्द कस गई. मुस्टंड के कि लह उसके हाथ से गिर पड़ी. कि अचानक सबसे पिछली सीट पर बैठी एक बंगाली लड़की कि अगली टोली पर बरस पड़ी. उसके हाथों में पैरों से की अगली टोली पर बरस पड़ी. उसके हाथों में पैरों से की अगली थीं. फसादियों के सिरों पर ताबड़तोड़ मारते हुए वैंगे जा रही थीं, "जालिमों, क्यों आप हिंदू धर्म की अर्थी का रही थीं, "जालिमों, क्यों आप हिंदू धर्म की अर्थी का रही थीं, "जालिमों, क्यों आप हिंदू धर्म की अर्थी का रही हो. आप गुरु तेगबहादुर का बिलदान भूल गए. भूल आप सरदार भगत सिंह को, जिसने देश की आजादी की कि अलियां वाले बाग का बदला लिया था. भूल गए गहारी की कि, जिन्होंने कलकत्ता के बजबज घाट पर गोलियां खाई. किया, एहसान फरामों, जाओं, कहीं डूब मरों."

भिष्ठ ने लड़की की नरम नसों में कंपकंपी लगा दी थी. पतली भुकःसी थी वह. पतली और पीली थी उसकी कलाइयां. भुज्यके चेहरे की जर्दी में खून सुर्ख चमक मार रहा था. ऐसे हैं में में सुर्ख क्रांतियां जन्म लेती हैं.

म की वाकी सवारियां अब तक बिटर-बिटर यह तमाशा देख भी उनके सहमें और वेलाग चेहरे अब हुंकारे का साकार कि गए फिर एक मूक हुंकारा आवाज में बदल गया. चारों मि सरदार को हमारे ह्वाले कर दो," गंजा मूंछों वाला

ति गिला, भार का हमार हवाले कर दा, गुला कूने ।'' कियो ने इस धमकी पर कान न रखा और सवारियों का सघन भिक्त नौजवान के चारों ओर मानवता की मजबूत ढाल

भि भृशों वाले मुस्टंडे ने अपने पीछे खड़े एक गढ़वाली लड़के भि को हिल्वा पकड़ा और जल्दी से फर्श पर लुढ़का दिया. भि अभ हट्टे कट्टे आदमी फसादी बस से नीचे उतर गए भि के हाइवर की चौकीदारी कर रहा था.



बाकी का पेट्रोल उन्होंने <mark>बस की बाहर की बाँडी पर छिड़क</mark> दिया.

"माचिस किसके पास है?" गंजे मूंछों वाले ने अपनी गुंडा टोली से पूछा.

"मेरे पास है उस्ताद." हट्टे-कट्टे आदमी ने बस के अंदर से पुकारा.

जब वह एक हाथ से अपने कुर्ते की जेब में से माचिस टटोलने

चानक सबसे पिछली सीट पर बैठी एक बंगाली लड़की फसादियों पर बरस पड़ी. उसके हाथों में चप्पलें थीं. वह बोले जा रही थी, "जालिमो, क्यों हिंदू धर्म की अर्थी निकाल रहे हो."

लगा, तो ड्राइवर ने उठकर उसके हाथ से लोहे की लट्ठ छीन ली. उसी क्षण अगली सीट पर बैठे एक बंगाली नौजवान ने उस आदमी को अपने कसरती बाजुओं में जकड़ लिया. फिर ड्राइवर और उस बंगाली नौजवान ने मिलकर उसे बस से नीचे धक्का दे दिया.

इससे पहले कि माचिस मिलती और तीली जलती, ड्राइवर बस को तेजी से रिवर्स गेयर में पीछे लक्ष्मीबाई नगर वाले फ्लाई ओवर तक ले गया. वहां से उसने बस सरोजिनी नगर की ओर मोड़ ली. वह भीतरी रिंग रोड छोड़कर आउटर रिंग रोड से चितरंजन पार्क पहुंचना चाहता था.

कुछ देर बस के अंदर पेट्रोल की दुर्गंध आती रही लेकिन जल्दी ही इनसानियत का इत्र इस दुर्गंध पर छा गया.

अनुवाद - सुरजीत

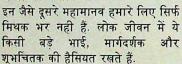
उपन्यास

#### कृष्ण का रूप ही बदल दिया

कृष्ण भारतीय समाज के तीन प्रमुख नायकों में से एक हैं. राम

पुरुषोत्तम

पुरुषोत्तम हैं तो शिव औघड कल्याणकारी श्रीकृष्ण असीमित हैं-प्यार करते हैं तो असीमित, है असीमित, छल करते हैं (लोक कल्याण के ही) तो असीमित. ये तीन या



और इसी श्रीकृष्ण को नायक बनाकर जब डॉ. भगवतीशरण मिश्र ने अपना वृहद् उपन्यास लिखा है तो जाने क्यों उन्होंने इसमें अपने अनेक आग्रहों को घुसेड दिया है. सबसे पहला आग्रह, जो दुराग्रह जैसा लगता है, तो उपन्यास के नाम का है. इसका पहला खंड प्रथम पुरुष नाम से है (जो न जाने कहां से छपा है) तो दूसरा 'पुरुषोत्तम' नाम से. यह नाम असल में राम का है. कृष्ण को राम का नाम देने का कोई खास कारण नहीं है-

दूसरा आग्रह उपन्यास को ऐतिहासिक बनाने का है. यह सही है कि जरासंध के समकालीन कृष्ण ऐतिहासिक लगते हैं. द्वारका की हाल की खोज भी इसकी पृष्टि करती है. पर ये कृष्ण लोकमानस के नायक कृष्ण नहीं हैं. लोकमानस वाले कृष्ण का तो माखन चोर, हजारों गोपियों से प्रेम करने वाला, महाभारत का नायक रूप ही प्रमुख है.

इन कुछ बातों को छोड़ दें, जो बहुत हद तक उपन्यास के रस को समाप्त कर देती हैं, तो उपन्यास के इस खंड में जरासंध वध से लेकर महाभारत में दुर्योधन वध तक की मुख्य कथा है. आखिर में कृष्ण की गोद में राधा के दम तोड़ने और श्रीकृष्ण की मौत का भी किस्सा बहुत छोटे में निबटाया गया है.

डॉ. मिश्र का यह वृहद् उपन्यास पढ़ने के बाद इतना तो तय लगता है कि उन्होंने श्रीकृष्ण के बारे में काफी सूचनाएं, जहां से भी संभव हुई, जुटाई हैं और सबको एक

कथा में पिरोने के लिए पर्याप्त कल्पना-शीलता दिखाई है. पर यह कल्पनाशीलता उन्होंने कृष्ण-कथा को नए संदर्भों में प्रस्तुत करने के लिए नहीं दिखाई है.

उपन्यास में कई स्थानों पर किए गए उनके नए प्रयोग भी नहीं रुचते. जैसे कि सुदामा के दर्शन को बेवकूफी भरा बृताकर उसे पराजित होते दिखाना.

पुरुषोत्तम उपन्यास मगवतीशरण मिश्र राजपाल ऐंड संस, दिल्ली

कीमत: 150 ह.

कुल पृष्ठ: 500

ब्रह्मपुराण, विष्णु-पुराण, महाभारत, ब्रह्मवैवत, हरिवंश, श्रीमद्भागवत, गर्ग और संहिता पद्मपुराण में आई कृष्ण कथा में उन्होंने क्या कुछ बदलाव किया है, वह इस समीक्षक जैसे अल्पज्ञाता के लिए बता पाना मुश्किल

है. पर एक बात बहत महत्वपूर्ण है कि कृष्ण का चरित ही ऐसा है कि इतने सारे प्रसंग आएं और रोचकता न हो, ऐसा संभव नहीं है. और फिर कृष्ण के जीवन के सारे किस्से एक जगह पढ़ने का आनंद ही क्छ और है. पूण्य भी मिल सकता है.

-अर्रावद मोहन

हास्य-व्यंग्य संग्रह

## अलग शेलो

#### लेकिन सामग्री में नयापन नहीं

वेच्य व्यंग्य संग्रह को पढ़ते हुए एक बात तो निश्चित रूप से कही

जा सकती है कि की अन्य विषयों की जानकारी और गहन अध्ययन रचनाओं को और तथ्यपरक बना देती है. ज्यादातर व्यंग्यों में दिए गए उद्धरणों को पढ़कर त्यागी के व्यंग्यकार

होने पर किसी को भी ईर्ष्या हो सकती है कि जो आदमी अच्छा-सासा एक इतिहासकार हो सकता था, वह शब्दों से जदोजहद कर रहा है. उनका इस तरह व्यंग्यों में उद्धरण देना जहां इनके गहन अध्ययन और चातुर्यकला का प्रमाण प्रस्तुत करता है, वहीं उनके चौर्यकर्म (त्यागी जी बुरा न मानें) को भी दर्शाता

है. उदाहरण के लिए 'निराला की किवन में हास्य-व्यंग्य' रचना को लिया सकता है. पूरी रचना में प्रारंभ के अनुच्छेदों को छोड़ दिया जाए तो बार बची रचना व्यंग्य के नाम पर महत् च्टक्लेबाजी है.

इसके बावजूद लेखक की सराहा करनी पड़गी कि वे इन उद्धरणों। उचित जगह ही इस्तेमाल करते हैं मा ही उन्हें ऐसा करते हुए किसी अपराह बोध का एहसास नहीं होता. संग्रह में, के व्यंग्य संस्मरणों पर आधारित हैं, वे जाह मार्मिक और मानवीय संबंधों की पर्ल का उद्घाटन करते हैं. 'कुछ सरकार्ष संस्मरण' में उन्हीं मानवीय संबंधों की अनुभवों तथा जीवन में भोगे हुए को जि खूबसूरती से व्यंग्य के माध्यम से प्रस्त किया गया है, वह अद्भुत है. व्यंग है बहाने 'नौकरशाही' पर तीखा प्रहार कि है लेखक ने.

ऐसा नहीं है कि खुशामद, जोड़-तोड़ जाति, धर्म और प्रांतीयता का सहाग मात्र सरकारी या अर्ध-सरकारी सेहाओं ही लिया जाता है अपितु साहित्य क्षेत्र इससे अछुता नहीं रहा है. 'संपादकी याद में व्यंग्य इस तथ्य की पुष्टि कर है. यह व्यंग्य पाठकों और संपादकों है अवश्य पढना चाहिए.

संग्रह की अन्य विशेषताओं में एक उनकी भाषा-शैली. त्यागी ने मुहावर्षा ठेठ भाषा इस्तेमाल कर अपने व्यंगों। आम पाठक की पहुंच से दूर नहीं हैं दिया है. यही वजह है कि कई व्यंगों पंक्तियों को पढ़ते हुए आप अपनी ह नहीं रोक सकते. रही बात इस समीक्षक की कि वह त्यागी जी के ले के बारे में ज्यादा क्या कहे क्योंकि जी

कहना था वह गद्य शृंगार' में रणवीर रांग्रा, धनंजय वर्मा, डां जनमेजय, कमलिकशोर नका, डॉ. और डॉ. बार्नेड दिया कह

खाकसार क्या की और अंत में, त्यागी जी यदि कुंद्री बाद स्वयं अपनी इस पुस्तक को पहें उनका एक व्यंग्य सस्ते में ही देवा जाएगा. विषय भी इसी पुस्तक में है और वह है इस पुस्तक में प्र गलतियां. कुल मिलाकर यह संग्रह गलतियां. कुल मिलाकर यह परिवासिक पिता पिता पिता पिता पिता पिता परिवासिक परि —मगवानदास मोर

अलग है.



विषकन्या हास्य-व्यंग्य संग्रह रवींद्रनाथ त्यागीं भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली कीमत: 45.00 रु. कुल पृष्ठ: 118

> विस्तिविक जीवन क्रिविपूर्ण

88 जिल्ला इंड 🔸 15 अप्रैस, 1991

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection

ला की किवा तो लिया व प्रारंभ के है नाए तो बार्च म पर महत

की सराहर

उद्धरणों इ

करते हैं. सार कसी अपराक

. संग्रह में, जे

त हैं, वे ज्याह धों की पर्ल

कुछ सरकार्त संबंधों औ हुए को जि यम से प्रस्तु

है. व्यंग है । प्रहार कि

द, जोड़-तो का सहार ारी सेवाओं हित्य क्षेत्र में

पुष्टि कर

संपादकों व

ओं में एक

ाने व्यंग्यों है दूर नहीं हैं। कई व्यंग्यों हैं

अपनी ह

त इस

योंकि जो था वह गार' में राग्रा, वर्मा, डॉ.

ाशोर <sup>गा</sup> डॉ. मार्स ॉ. बार्लेड

दिया की दिया की दिक्ख

को पहेंगे

ही तैयार।

संग्रह

नवास मोर



## आंख से निकलती चींटियां : रहस्य क्या है

दिल्ली की एक लड़की गीतू शर्मा की आंख से निकलती चींटियां औषध विज्ञान के लिए चुनौती बन गयी



रहस्यमय सौर मंडल

अन्तरिक्ष यानों से उपलब्ध नयी जानकारियों ने रहस्य और गहरा किया



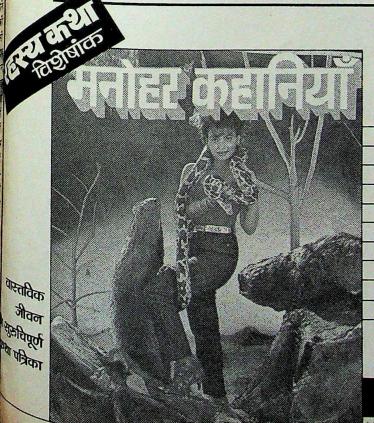
## अशोक भण्डारी: सिर्फ जादूगर ही नहीं

विश्वविख्यात जादूगर अशोक भण्डारी ने ढोंगी तांत्रिकों और बाबाओं के कथित चमत्कारों का रहस्य भी खोला है



## लोकनाथ ब्रह्मचारी: अलौकिक व्यक्तित्व

बंगाल के महान सन्त लोकनाथ ब्रह्मचारी के चमत्कारों और रहस्यों की कहानी



भारत में सबसे ज्यादा बिकनेवाली हिन्दी पत्रिका

## पर्वाचरकाचार्या

अन्य रहस्य कथाएं

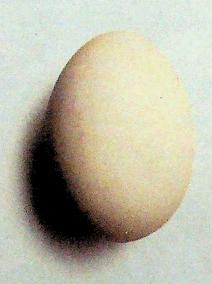
तालाब के किनारे अाईने का भेद

आज ही खरीदिये

ri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# क्विस्टेरेख खूब सारा



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

# कों लेस्टें रोल बिल्कुल नहीं



तो यह है कि बादाम आपके खून में कोलेस्टेरोल की मात्रा के हैं इनमें हाइ-मोनो अनसैच्युरेटेड फैट्स होते हैं जो दिल की बीमारी के काफी हद तक कम कर देते हैं. बादाम तो एक संपूर्ण आहार है खिना आयरन हैं और जो प्रोटीन तथा विटामिन-ई से भरपूर है. ब्रिट्स होते के उद्देश्य से प्रकाशित



भोतः यू. एस. डी. ए. कंटीन्यूइंग सर्वे ऑफ फूड इनटेक्स बाइ इंडिकिज्युअल्स 1986

- अन्न कपूर आखिरकार बडे परदे पर बेतुकी कॉमेडी वाले अपने अभिनय से अलग हटकर छोटे परदे पर उतरने की तैयारी में हैं. इस छोटे कलाकार ने बेहद खूबसूरती से तैयार की गई मार्मिक टेलीफिल्म-'पथराई आंखों के सपने' में जबरदस्त अदाकारी की है. यह फिल्म इसी वर्ष दिखाई जाएगी. विश्वनाथ प्रताप सिंह की साली रानी लक्ष्मी कुमारी चुडावत की रचना पर आधारित फिल्म के चुटीले संवाद लिखे हैं— निर्माता बृजेंद्र राही ने. कहानी रेगिस्तान के दो अभागे प्रेमियों की है. वैसे, कहानी में नयापन नहीं है लेकिन इसे थोड़ा रोचक मोड़ दे दिया गया है. नायक बदसूरत-सा गडेरिया है लेकिन उसके एकतारे की तान और सुरीले गीत देवताओं और पत्थर-दिल सुंदरियों को भी पसीज देते हैं. निर्देशन प्रमोद सोनी का है जिन्होंने प्रख्यात फिल्म निर्देशक महेश भट्ट के साथ बरसों तक काम करके भाव-प्रवणता उभारने और मध्र संगीत फिल्माने में महारत हासिल कर ली है. दूसरी खुबियों के अलावा फिल्म में सुकन्या क्लकर्णी का मंजा अभिनय देखने को मिलेगा.
- 'मालगुडी डेज' के प्यारे-से बच्चे 'स्वामी' को सराहने वाले दर्शक अब फिर उसे छोटे परदे पर देख सकेंगे. लेकिन 'स्वामी' यानी मास्टर मंजुनाथ इस बार मालगुडी' में नहीं बल्कि मॉरीशस में नजर आएगा. भारत-मॉरीशस सहयोग से बनने वाले दस संडों के बाल धारावाहिक 'स्टोन ब्वॉय' की कथा इस खूबसूरत प्रायद्वीप की एक किवदंती पर आधारित है और आप्रवासी भारतीयों के इर्द-गिर्द घूमती है. यह कहानी इस तरह है: एक युवा ग्वाने की मुलाकात कुछ परियों से होती है जो उसे पत्थर बना देती हैं. मॉरीशस में भारतीयों के पलायन पर शोध कर रहा एक भारतीय लेखक इससे संबंधित तथ्य जुटाता है. वह अपने दोनों बच्चों के साथ मारीशस पहुंचता है और यहीं से कथा शुरू होती है.
- शास्त्री भवन के गलियारों में आजकल सन्नाटा छाया है. आकाशवाणी और दूरदर्शन को स्वायत्ता देने वाले



'पथराई आंखों के सपने' में सुकन्या और अन्न्र



🔺 'स्टोन ब्वॉय' में मंजुनाथ (बीच में): अब मॉरीशस में



मंडी हाउस: अनिर्णय का सन्नाटा

प्रसार भारती विधेयक को झाड़-पोंछकर ठंडे बस्ते में इक दिया गया है और प्रशासन में अचानक आए ठहराव के कारह सभी नीतिगत फैसले रोक निए गए हैं. एक वरिष्ठ नौकरणाह कहते हैं, "यह तो ठहराव का वक्त है. ऐसे में कोई भी पार्टी ह विधेयक को हाथ नहीं लगाना चाहती." इस बीच मंडी हाउस कमरों में बिखरे धारावाहिक बनाने के तकरीबन 3,500 प्रसात को कंप्यूटर में भरकर शास्त्री भवन के एक कमरे में रख दिया गया है, जहां वे फर्श की शोभा बढ़ा रहे हैं. इन प्रस्तावों की जार के लिए एक 61 सदस्यीय समिति गठित की गई लेकिन आ तक कोई फैसला नहीं हो पापा है और कई फिल्म निर्माताओं। मानना है कि फैसला होगा भी नहीं.

> सरकारी रेडियो और टेलीविजन में आम तौर पर बगावत की घटनाएं नहीं होतीं लेकिन पिछले महीने ऐसा लगा कि दूरदर्शन पर पहली बार किसी ने जैसे कब्जा जमा लिया. हालांकि यह कब्जा क्षणिक लेकिन इसे नाटकीय नहीं कहा जा सकता. उस रोग सुबह 6.51 पर प्रसारण शुरू होने से पहले दिसाग जाने वाला 'कलर बार' छोटे परदे पर चमक स्व कि अचानक फ्लैश

आया, 'एकता मंच के नेता गिरफ्तार, वरिष्ठ इंजीनियर हड़ताल पर'. शुरुआती जांव बाद उस दिन इ्यूटी कर रहीं सहायक अभियंता सुनीता सनी को निलंबित कर दिया गया लेकिन मंडी हाउस अभी तक है 'कब्जे' से उबर नहीं पाया है दूरदर्शन की 'हाइजैकिंग' की व पहली घटना भले ही हो, आकाशवाणी को इसका अनुभी चुका है. कुछ वर्ष पहले दूरदर्शन के कर्मचारी आर.एल.एल. गौडा आकाशवाणी स्टुडियो में धुरे माइक्रोफोन छीनकर कन्नड भाषा के आंदोलन के समर्थन है बोल गए. बाद में उन्हें निलंबित कर दिया गया अव दूरदर्शन घर में खिपे गहारी की तेजी से तलाश कर रहा

अधिक जानव म्ह्याजा इंट

क्या आ

यदि हां, त

यदि नहीं,



महाराजा मिक्सर-ग्राइंडर हेवी ड्यूटी मोटर। जो लगातार 60 मिनट तक काम करते रह सकती है। 3 जार — आपके हर कोर्स को एक खास यादगार खाद देने के लिए। मनमोहक और कभी न टूटने वाली केसिंग। मोटर कपलिंग ऐसी मजबूत कि टूटने का सवाल ही नहीं।



सुप्रीम सैंडविच टोस्टर लाजवाब डिजायन। और सैंडविच तैयार होने पर अपने आप बंद हो जाने की सुविधा।



महाराजा वैक्यूम क्लीनर गंदगी खींचने की 30% अधिक क्षमता। स्टोरेज

क्षमता ८ लीटर । पहियों पर लगी ए बी एस बॉडी जिससे झटकों का पता ही न चले।



यदि हां, तो आपने कुछ गंवा दिया।

यदि नहीं, तो यह सब आपको मिलेगा।

क्या आपने कभी महाराजा को नज़र अंदाज़ किया है?

यक को स्ते में इान शासन में व के कार्ष ने रोक लिए नौकरजाह हराव का भी पार्टी ह

हीं लगाना मंडी हाउम

रावाहिक

3,500 XH

र शास्त्री

में रस दिवा

की शोभा

तावों की जार स्यीय

ई लेकिन अ

हीं हो पाया

निर्माताओं न्ता होगा

नाएं नहीं

प्रसारण

म्लैश

या गया

पाया है

हो,

किंग' की वर

का अनुभव हले रे

यो में धुसे ब

हे समर्थन है

गया. वंब

'गहारों

कर रहा है

कन्नड

तं

महाराजा वॉशएड जानदार मोटर जो 3 घंटे तक बिना रुके काम कर सकती है और कुछ भी धो डालने की क्षमता रखती है - चाहे लेस हो या भारी पर्दा। आवश्यकतानुसार धोने, निचोड़ने और सुखाने की अलग-अलग टाइमिंग और काम करने के विभिन्न तरीकों में उपलब्ध । विशेष बज् अलार्म । कास्टर्स। और भी कई स्विधाएं। ये सब स्टील की मजबूत बॉडी में, जिस



अत्यधिक मजबूत और तेज-रफ्तार मोटर। सेल्फ-क्लीनर भी बडा आरामदायक।

महाराजा ऑटो आयरन (प्रेस) तत्काल गर्म होने वाली। तीन तरह के तापमान की सुविधा।

पर खरोंचों का कोई असर न पड़े।

अत्याधुनिक प्रभावकारी स्त्रे-अटैचमैन्ट। शॉकप्रूफ बॉडी।

महाराजा रुपये का पूरा मूल्य देता है। महाराजा का हर प्रॉडक्ट आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप है। जिससे आपको, हर छोटी से छोटी सुविधा भी प्राप्त होती है। अगली बार जब आपको किसी घरेलू उपकरण की आवश्यकता हो तो अपने रुपये के पूरे मूल्य का ही सौदा लें और महाराजा का ही चयन करें.

<sup>अधिक जानकारी</sup> के लिए: प्रााज इंटरनेशनल लि. पोस्ट बॉक्स नं. 2866, वे दिल्ली-110060.

Arahem/TM/1120 Hin

-Maharaja-WHITELINE

APPLIANCES

ये आपकी खुशी के लिए कुछ भी सह लेंगे।

#### पिता ने किया पलड़ा भारी

आपम में बोलचाल बंद होने के वावजूद गरमागरम प्रेम दृश्य देने म न कतराने वाले कलाकारों की मूची में क्या पूजा मट्ट और आमिर खां का नाम भी जुड़ने जा रहा है? चांदीवाली आउटडोर स्ट्डियो में चल रही शूटिंग के दौरान लक्षण तो इसी बात के दिखाई दे रहे थे.

शूटिंग के बीच मिलने वाली फूरसत के समय दोनों अपने दल



पूजाः पानी नाक से ऊपर न जाए

अलग-अलग बनाए अपने-अपने पक्ष में यह प्रचार कर रहे थे कि मैं ही सबसे महान हूं. पलड़ा पूजा का भारी लग रहा था क्योंकि इस फिल्म 'दिल है कि मानता नहीं' में डायरेक्टर उनके पिता महेश भट्ट हैं. छोटे कद के आमिर इस वजह से थोड़े दबे हुए जरूर ये लेकिन दबी जबान में लोगों से यह कहने से भी बाज नहीं आए कि 'हमारी हर फिल्म तो महेश जी डायरेक्ट नहीं करेंगे न? उस दिन देख लेगे, कौन कितने पानी में है?'

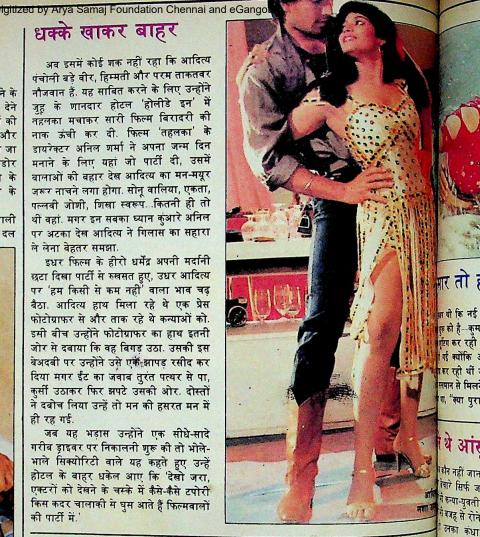
डर यही है कि कहीं पानी नाक से ऊपर न चला जाए.

#### धक्के खाकर बाहर

अब इसमें कोई शक नहीं रहा कि आदित्य पंचोली बड़े वीर, हिम्मती और परम ताकतवर नौजवान हैं. यह साबित करने के लिए उन्होंने जुहू के णानदार होटल 'होलीडे इन' में नहलका मचाकर सारी फिल्म बिरादरी की नाक ऊंची कर दी. फिल्म 'तहलका' के डायरेक्टर अनिल गर्मा ने अपना जन्म दिन मनाने के लिए यहां जो पार्टी दी, उसमें वालाओं की बहार देख आदित्य का मन-मयूर जरूर नाचने लगा होगा. सोनू वालिया, एकता, पल्लवी जोशी, शिखा स्वरूप कितनी ही तो थीं वहां. मगर इन सबका घ्यान कुंआरे अनिल पर अटका देख आदित्य ने गिलास का सहारा ले लेना बेहतर समझा.

इधर फिल्म के हीरो धर्मेंद्र अपनी मर्दानी छटा दिखा पार्टी से रुखसत हुए, उधर आदित्य पर 'हम किसी से कम नहीं' वाला भाव चढ़ वैठा. आदित्य हाथ मिला रहे थे एक प्रेस फोटोग्राफर से और ताक रहे थे कन्याओं को. इसी बीच उन्होंने फोटोग्राफर का हाथ इतनी जोर से दबाया कि वह बिगड़ उठा. उसकी इस वेअदबी पर उन्होंने उसे एक झापड़ रसीद कर दिया मगर ईंट का जवाब तुरंत पत्थर से पा, कुर्सी उठाकर फिर झपटे उसकी ओर. दोस्तों ने दबोच लिया उन्हें तो मन की हसरत मन में ही रह गई.

जब यह भड़ास उन्होंने एक सीधे-सादे गरीव ड्राइवर पर निकालनी शुरू की तो भोले-भाले सिक्योरिटी वाले यह कहते हुए उन्हें होटल के बाहर धकेल आए कि 'देखो जरा, एक्टरों को देखने के चस्के में कैसे-कैसे टपोरी किस कदर चालाकी से घुस आते हैं फिल्मवालों की पार्टी में.'



#### भारत कुमार की बेरुखी

'इस सीरियल का डायरेक्शन कौन कर रहा है?' यह था वह सरल-सा सवाल जो 'भारत के शहीद' सीरियल के सेट पर मनोजक्मार से पूछा गया और जिसे मुनकर भारत कुमार दुर्वासा हो गए.

कसूर सरासर सवाल पूछने वाले का था. उसे भारत (कुमार) का इतिहास पता होना चाहिए. पर अब ऐसे लोगों का क्या किया जाए जो अतीत में नहीं वर्तमान में रहना चाहते हैं? जिस तरह आज के भारत में शहीबों की कुर्बानी सिर्फ कहानियों हैं। रह गई है उसी तरह भारत कुमार के संदर्भ हैं। यह सीरियल खुद इतिहास बनता जा रहा है तो यही याद नहीं आता कि यह सीरियल है कि में? वैसे भी, आजकल देशमक्ति की उक धीरज कुमार ने हथिया ली है उनसे.

सवाल पूछने वाले पर सासे सफा हो चुकते जब भारत ने उसके देशनिकाले का हुक्म जारी तो मुहफट गरीब ने फिर एक सवाल वा 'अगर डायरेक्टर सचमुच आप हैं तो सारी हैं सारा काम आपके इस एक्टर बेटे कुणात है

पूछकर क्यों करती है? औ वह सबके सामने आपते लंबी गैरमौजूदगी का सब नहीं हिचकता?

इतना पता नहीं उस पूछने वाले को कि अपने औ मामलों में बाहरी मारत को कमी पसंव नहीं प वह चाहे देश हो या व्यक्ति

मनोज कुमारः कैसी की मुसीबत



94 इंडिया टुडे • 15 अप्रैल 1991

CC-0.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयणाः आन-वान-णान की फिक्र

तरुण कुमारं. लगता है कोई अधेड़ खुद को जवान कहने की कोशिश कर रहा है. नाम से तो टपकनी चाहिए आन-बान-शान."

"जैसे सलमान खां," सलमान खां ने चुटकी ली. "नहीं," आयशा ने उन्हें

काटा और नव तरुण की मुखातिब होकर बोलीं, "कुमारों के जमाने तो गए."

पता लगाते-लगाते हाथ लगी वह कहानी जिसके

मुताबिक आयशा की अब तक की छोटी-सी जिंदगानी के फिल्मी खलनायकों में हैं तीन कुमार 'कयामत की रात' के प्रोड्यूसर कुमार मंगत, निर्माता-निर्देशक मेहल कुमार (मीत मेरे मन के) और तीसरे 'हाय मेरी जान' वाले रूपेश कुमार. तीनों के साथ फिल्म निर्माण के दौरान उनकी खासी खटपट चली.

कुमारों के प्रति पैदा हुई यह नफरत आयशा के दिल से जितनी जल्दी निकल जाए उतना अच्छा क्योंकि चाहे सपनों का राजकुमार हो या नन्हा राजकुमार, जिंदगी में होगा ही शुमार!



#### ता होगा ही शुमार

गायी कि नई हीरोइन आयशा जुलका ने नई ह ही है क्मारों को कोसना. वे सलमान के ला कर रही थीं. बात की पुष्टि वहां पहुंचते हुं क्योंकि आयशा उस नए-नए हीरो को हर रही थीं जो अपने लिए नया नाम ढूंढ़ता लगान से मिलने इस आउटडोर शूटिंग में चला ग, "स्या पुराने जमाने का नाम छांटा है-

की नहीं जानता कि राज नारे सिर्फ जनसेवक हैं? किया-युवती-वयस्का को वैकाह से रोने की जरूरत लका कंधा खुद-व-खुद

हानियों ही

रहा है.

की दुर्ग

तो सारी

कुणात है

ते है? औ

आपसे

का सबब

हों उस

ती व संव नहीं व हाजिर हो जाता है. अभिनय की राजनीति और राजनीति का उनका अभिनय, दोनों ही गर्दिण में हैं. समाज सेवा के लिए इससे अच्छा मौका और क्या होता?



अपनी इस निःशुल्क (कुछ को संदेह है इसमें) सेवा का नवीनतम लाभ उन्होंने पहुंचाना चाहा किमी काटकर को. उस दिन किमी डबिंग के लिए आई और चार कलाकार मिल बैठे तो चर्चा शुरू हो गई नूतन की असामयिक मृत्यू की. मृहा था कि उनकी जैसी प्रतिभाणाली अभिनेत्री णवयात्रा पर इतने कम लोग क्यों पहुंचे? इस पर क्यों कोई शूटिंग बंद नहीं हुई?

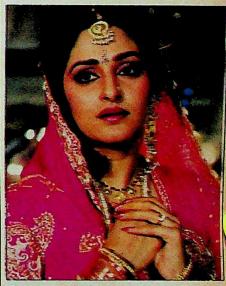
किमी श्मशान गई थीं और अंत तक बैठी रहीं. उनकी संवेदना की तारीफ यहां भी हुई. किमी की आंखों में आंसू छलक आए. राज ने उनकी तारीफों के पुल बांधे, कंधा पेण करने की नींव रखनी शुरू की लेकिन किमी का अवसाद अब तक बह चुका था. अचानक हंसकर उन्होंने राज के मंसूबे मटियामेट कर दिए, 'मेरा उनसे भला क्या मुकाबला? मैं ग्लैमर गर्ल, वे शालीन. वे एक्टिंग में परफेक्ट, मैं सिर्फ स्टडेंट.

आंमुओं मे हंमी का यह सफर किमी ने जिम तेजी से तय किया, उसमे राज बब्बर अब तक हक्के-

राज बब्बरः जनसेवा के बहाने

# प्रतिद्वंद्विता!

जयप्रदा को उस दिन रिकार्डिंग थियेटर में मौजूद देख माथा ठनका. 'आज गाना जयप्रदा गाने वाली हैं, किसी ने बताया. लेकिन यह भी तो कोई खास बात नहीं हुई. अगर अमरीश पूरी रिकार्डिंग थिएटर में आकर गाना रिकार्ड करा सकते हैं तो जयप्रदा क्यों नहीं गा सकतीं? और जब जयप्रदा भी गाने के इस अचानक उठे गौक पर किए सवालों को टालने लगीं तो भ्रम पक्का हो गया, 'आखिर कुछ तो है जिसकी पर्दादारी है...



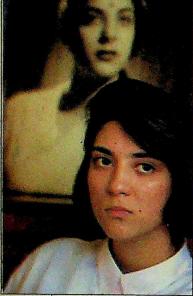
जयप्रदाः नहले पे दहला

दरअसल, यह श्रीदेवी और जयप्रदा के बीच चलने वाले शीतयुद्ध का एक हिस्सा था. श्रीदेवी ने जयप्रदा को मॉडर्न पोशाकें पहन आधुनिका बन दिखाने के लिए ललकारा तो जयप्रदा ने जवाब दिया पूरी तरह भारतीय नारी बनकर. जयप्रदा ने नृत्य में ललकारा तो श्रीदेवी ने नहले पे दहले की कूटनीति में अपने एक-दो गाने खुद गाकर स्वयं को नंबर वन माबित कर रखा था और जयप्रदा मौका ढुंढ रही थीं हिमाब बराबर कर लेने का. उसी का नतीजा था फिल्म 'सोने की लंका' का यह गीत जिसे आनंद-मिलिंद के निर्देशन में गाने जयप्रदा आई थीं और जिसमें प्रेस फोटोग्राफरों की भरपूर उपस्थिति का इंतजाम किया गया था.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

#### बेटी भी पीछे नहीं

मां नरिगस मशहूर अभिनेत्री थीं, पापा सुनील दत्त फिल्में बनाते हैं और भाई संजय अभिनेता हैं. फिर यह छोटी लड़की क्यों पीछे रहती. 25 वर्षीया प्रिया दत्त ने अपनी मां के ऊपर 35 मिनट का एक वृत्तिज्ञ तैयार किया है. इस फिल्म में उन लोगों के इंटरव्यू हैं जो नरिगस को नजदीक से जानते-



प्रियाः किसी से कम नहीं

समझते थे. प्रिया कहती हैं, "हालांकि कथ्य बहुत व्यक्तिगत है पर इसे एक बेटी द्वारा निर्मित लगना भी तो चाहिए."

#### शाही ठाटबाट के नमूने

 जापानियों के जेहन से अभी अपने सम्राट के पुत्र के मिलेंगे. ओसाका में मार्च से सितंबर तक जोधपुर के पूर्व महाराजा गज सिंह दितीय के निजी संग्रहालय की कुछ बेशकीमती चीजें प्रदर्शित की जाएंगी. इनमें खालिस चांदी से निर्मित जोधपुर के किले की

#### पायल पहनेंगी

◆ उड़नपरी पी.टी. उपा ने धाविकाओं वाले जूते उतार पायल पहनने का फैसला किया है. पिछले पखवाड़े उनकी सगाई मारतीय औद्योगिक सुरक्षा बल के इंस्पेक्टर वी. श्रीनिवासन से हो गई. उषा कहती हैं, "खेल जगत को अलविदा कहने का वक्त आ गया है." पर ऐसा भी नहीं है कि उषा ने खेल जगत से एकदम, नाता तोड़ लिया हो. उनके दुल्हे श्रीनिवासन कबड़ी में माहिर जो हैं.



प्रतिकृति के अलावा आकर्षण का केंद्र भारत की अपने ढंग की वह अकेली कार होगी जो 1935 में निर्मित रॉल्स रायस 'फैंटम-द्वितीय' मॉडल है. संग्रहालय की वह नायाव घड़ी भी प्रदर्शित की जाएगी जो एक घोड़ागाड़ी की शक्ल में है और जिसके घोड़े की टिकटिक दोपहर होते ही टाप भरने लगती हैं.

#### पेप्सी दा जवाब नई

• कोला कंपनियों की जंग अब अदालतो तक जा पहुंची है. वैसे, विवाद लहर पेप्सी की ओर से तब शुरू हुआ था जब उसने कपिल देव को एक जोरदार विज्ञापन में काम करने के लिए राजी कर लिया था. लेकिन पारले कंपनी चुप न बैठ सकी उसने अपना एक प्राना विज्ञापन ही जारी कर दिया जिसमें कपिल थम्स अप का जयगान करते दिखाई देते हैं कपिल त्रंत अदालत तक जा पहुंचे. अब उन्होंने पारले पर 1983 के उस करार के उल्लंघन का दावा ठोक दिया है जिसके तहत वह विज्ञापन पांच वर्षों के लिए ही दिखाया जाना था. कपिल के अनुसार, "मेरा थम्स अप के साथ कोई करार नहीं है. मैं पेप्सी के साथ ही जुड़ना चाहूंगा क्योंकि वह ज्यादा बड़ी चीज



कपिलः वाह पेप्सी

है. या यों कहें कि ऐसी जवाब नई

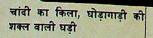
#### प्यार की जीत

गोल्फ की मणहूर भाग बिलाड़ी, 30 वर्षीया नोनिता और गोल्फ के ही पाक्स मितारे 29 वर्षीय फैजन ही जब विवाहसूत्र में बंध ऐहे हैं जीत किसकी मानी जाएं?

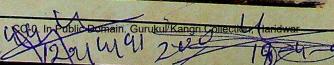


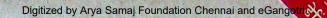
फैजल और नोनिता

दोनों पहली बार गर्ने मैदान पर ही तब मित बें टूर्नामेंट के लिए ही इस्लामाबाद गई भी के नोनिता ने उन्हें शादी के पर 'उलझाए रक्षा', पर जीत प्यार की ही हुई



विवाहोत्सव के भव्य नजारे मिटे भी नहीं होंगे कि उन्हें भारतीय शाही ठाटबाट के नमूने देखने को





Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGang संपूर्ण समाचार पत्रिका

ाह पेप्सी हैं कि पेप्सी

मशहूर भारत या नोनितान ही पाकिस

र नोनिता

बार में के कि कि कि कि

वां वर

विशाल संगठन के बूते चुनाव में चौंकाने वाली जीत हासिल करने के लिए पार्टी केतसंकल्प. मगर इसके लिए जनमत का भारी समर्थन जरूरी



THE CHARLES

इस चुनाव को उभा गाव के भाव तो लेकिन ए कंसंगत बहुः वासरावे में

तती है. ऐस विद्या टुडे' हस कराने कं तिए हमने विशि

और तर्क अ ग्रमंत्रित किया स बहस के मु गएंगे. सुली व ग्रासण, आर्थि

नाकर बहस

भी एक-दूसरे ही वे चूके व

मतःस्पूर्त था उ यह बात अ

एकमत थे. ह्य गया. विशि

ने मंसूबे

बनावा 'अव विदिल्ली के तस हे अपने नाटकी

और असम: दु

# Rothmans

KING SIZE



THE BEST TOBACCO MONEY CAN BUY

Made in India under licence by Godfrey Phillips (India) Ltd. Rs.20/- PER PACK

Inclusive of all taxes

Statutory Warning: Cigarette smoking is injurious to health

म नुनाव ने उन बुनियादी मसलों में नुनाव ने उन बुनियादी मसलों में नो उभार दिया है जो भारतीय कि के भावी स्वरूप को प्रभावित कि ने प्रेंसे महत्वपूर्ण मसलों पर कि नित्त हैं। ऐसा न हो, इसके लिए खिंग टुडे ने इन मसलों पर खुली कि हमने विभिन्न तबकों के उन प्रबुद्ध को के अनीपचारिक माहौल में भीर तर्क और विश्लेषण के लिए

भार तक जो इन विषयों के जानकार हैं. कई दौरों में हुई अनिक के मुख्य अंश हमारे आगामी अंकों में प्रकाशित किए एपे. बुली बहस के लिए निर्धारित विषय थे: धर्मनिरपेक्षता, अधिक स्थित और संघीय व्यवस्था.

सा अंक में हम धर्मनिरपेक्षता पर हुई बहस के मुख्य अंशा नामित कर रहे हैं. हालांकि नोकझोंक के कई क्षण आए पर कुल नाकर बहस विचारोत्तेजक भी थी और सूचनाओं से भरपूर चै सर्वधा भिन्न-भिन्न राजनैतिक विचारधाराओं वाले वक्ताओं भी एक-दूसरे को धैर्यपूर्वक सुना. मगर अपने तर्क पेश करने से पै वे चूके नहीं. विचारों का आदान-प्रदान रोचक और कास्मूर्त था और विषय पर सार्थक बहस हुई.

ण्हं बात अत्यंत उत्साहवर्धक थी कि भाग लेने वाले लोग ग्लीभिन्न मान्यताओं के बावजूद अनेकता में एकता के विचार एकमत थे. भारतीय संस्कृति को बार-बार 'समन्वयात्मक' ही खण्या विभिन्न समुदायों की अपनी-अपनी पहचान पर गहन



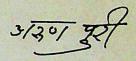
धर्मनिरपेक्षता पर बहस में भागीदार

चर्चा हुई, पर अंततः एकता के सूत्रों और हिंदुओं तथा मुसलमानों की पारंपरिक विरासत और उनके ऐतिहासिक संदर्भों पर ही जोर दिया गया. भाग लेने वाले तकरीबन सभी वक्ता इस बात पर भी सहमत थे कि 'धर्मनिरपेक्षता के सवाल' को सभी राजनैतिक पार्टियों ने हवा दी है और अब इसका उपयोग वोट हथियाने जैसे क्षुद्र और संकीर्ण स्वार्थों के लिए किया जा रहा है.

पूरी बहस को टेपरिकॉर्ड किया गया

और कुल मिलाकर छः से भी अधिक घंटों के कैसेट तैयार हो गए. इसे अंतिम स्वरूप देना हमारे आशुलिपिकों और संपादकों के लिए एक बड़ा काम बन गया. दुर्भाग्यवश हम पूरी बहस को अभी ज्यों का त्यों प्रकाशित नहीं कर पा रहे हैं पर बाद में इसे पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने पर विचार करेंगे.

वक्ताओं के गहन ज्ञान और उनकी समझदारी से यह तो जाहिर होता ही है कि इस देश में बौद्धिक प्रतिभा की कोई कमी नहीं है. दुःख तो यह है कि विचारकों के ज्ञान और उनके सोच का अपेक्षित प्रभाव सार्वजनिक बहस या आचरण पर नहीं पड़ता. हमें आशा है कि इन बहसों के प्रकाशन से हम इस कमी को कुछ हद तक दूर कर पाएंगे.



#### इस पखवाडे



र मंसुबे

विवास में भाजपा मंदिर विवाद विवास के किया के तस्त की दावेदार है. इस बार प्रदर्शन के मंसूबे हैं.



#### जम्हूरियत का जनाजा

बिहार में हत्याओं, बूथ कब्जे और राजनीति में अपराधियों के बढ़ते वर्चस्व के कारण चुनाव मजाक बन गए हैं. इस बार भी इन सबकी तैयारी चल रही है.

खास रपट......58



#### प्यार से पहले इकरार

मध्यम और निम्न आय वाले वर्ग के युवा प्रेमियों में उन्मुक्तता बढ़ रही है. वे पार्कों, समुद्र तटों आदि में चोरी-छिपे बैठे बतियाते देखे जाने लगे हैं.

विशेष लेख......82

#### अगले पन्नों पर

.7
11
11 12 16
16 50
50

हरिजन बोट:	
बदलते दौर में बदलते आधार	54
बिहारः जम्हूरियत का जनाजा	
<u>पुलाकात</u>	
गिकस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ.,	66
विशेष लेख	
इंटिंग: प्यार से पहले इकरार	82

परवे के उस पार	90
सिनेमा	99
कहानी	98
चर्चित चेहरे	104

आवरणः प्रशांत पंजियार

# आपकी त्वचा का रखवाला



बादाम मैंगनीज का एक अच्छा स्रोत है. एक आवश्यक खनिज जो त्वचा के दाग-धब्बों, असमय की झुरियों, जलन तथा दूसरी कई समस्याओं से त्वचा का बचाव करता है.

ब्लू डायमंड आमंड ग्रोअर्स, सेक्रेमेंटो, कैलिफोर्निया व्दारा जनिहत के उद्देश्य से प्रकाशित



जानकारी स्रोतः द सर्जन जनरत्स रिपोर्ट ऑन न्यूट्रीशन एंड हैत्थ, यू.एस. डिपार्टमेंट ऑफ हैत्थ <sup>एंड</sup> ह्यूमन सर्विसेज पहिलक हैत्थ सर्विस पहिलकेशन नं. 88-50210, 1988.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

-CA-BYPLIB

# एक तरीका... अपने पैरों को ठंडा रखने का।



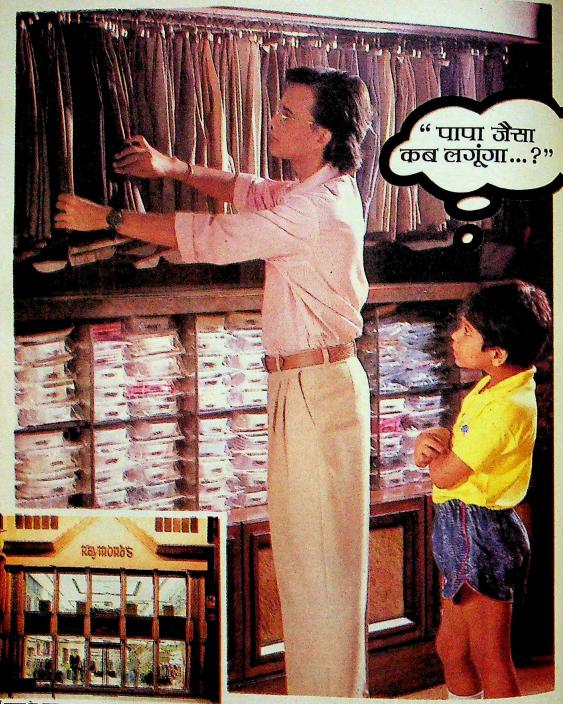


एक बेहतर उपाय।



ान की शान और बेहद आराम।

जो **D**\$



मिर्ज़ा इस्माइल रोड; जयपुर

उम्र का क्या? व्यक्तित्व निखारने के लिए रेमण्ड रीटेल शॉप से अच्छी जगह और कहां? सूटिंग, शर्टिंग, ट्राउज़िंग, सफ़ारी फ़ैब्रिक्स, कम्बल, **पार्क एवेन्यू** रेडीमेड,एक्सेसरीज़ और टॉइलेटरीज़.



रेमण्ड

पुरुषों के लिए भारत की सर्वोत्कृष्ट श्रृंखला – अब ६८ शहरों में.

इंका की : उमीदें उफ हा इतना उ सकी सबसे कांग्री सरक विकासनीयता

इम्तिहान इया 15, अप्रै तोषों को लुभ हैं, सबसे ज्या मतदाता है. विद एक नाग समने सबसे व वे में किसी-न

■ मध्याविध हो सकता है, करकार बने. करकार से जब् हो इन चुना हो नहीं रह ग क्वाल (म.प्र.)

शेखपुर (उ.प्र

पह कटु र अयोग पर पू कड़े करवा कि जे जगह एक अस्तीय जनत इंड विशेष भ्यावधि चुन

तीमक का कार हैं (महाराष्ट्र) अवरण नि

ती राजनेताओं तीनुष व्यक्तित व्यक्ष के दर्पण तिविव स्पष्ट वेद्यावाद (म.प्र

अंक का आ भाकदम सह भाकदम सह भाकदम सह

मुनपुष्ठ व प्रतितक पार्

#### उत्साह स्वाभाविक

का की चुनाव तैयारियों पर आवरण कथा उम्मीदें उफान पर' (30 अप्रैल) पढ़ी. इंका म इतना उत्साहित होना स्वाभाविक ही है. सकी सबसे बड़ी वजह यह है कि दो बार गैर-होसी सरकारों की विफलता ने उसकी किवसनीयता को बढ़ा दिया है.

सीमा श्रीवास्तव

#### किसे चुनें

इम्तिहान में उतरने की तैयारी' (आवरण भा 15, अप्रैल) पढ़ी. आज जविक सभी नेता त्रोगों को लुभाने की कोशिश में जी-जान से जुटे है सबसे ज्यादा असमंजस की स्थिति में मताता है. उसने अब तक यही देखा है कि दिएक नागनाथ है तो दूसरा सांपनाथ. उसके गमने सबसे बड़ी समस्या यही है कि उसे इन्हीं में किसी-न-किसी को चुनना है.

गोरबपुर (उ.प्र.)

रमेश प्रसाद दुवे

■ मध्याविध चुनाव का औचित्य तभी सिद्ध हो सकता है, जब केंद्र में स्थायी और स्पष्ट <sup>मु</sup>कार बने. जोड़-तोड़ की राजनीति और गकार से जनता इतनी निराश हो चुकी है कि में इन चुनावों में किसी तरह की दिलचस्पी हैं नहीं रह गई है.

नेपाल (म.प्र.)

संतोष श्रीवास्तव

 यह कटु सत्य है कि जनता दल ने मंडल ग्योग पर पूरा जोर देकर अपने शरीर के दो कें करवा लिए जिससे उनकी शक्ति ग्यारह में जगह एक-एक हो गई है. और इसी तरह गतिय जनता पार्टी और कांग्रेस (इ) भी विशेष मुद्दों तथा वादों को लेकर श्रावधि चुनाव के कठिन इम्तिहान में उतरी आगे यह देखना है कि ये मुद्दे और वादे <sup>भिक का काम करेंगे</sup> या फिर नींव का कें (महाराष्ट्र)

ण,

U

रविशंकर 'काका'

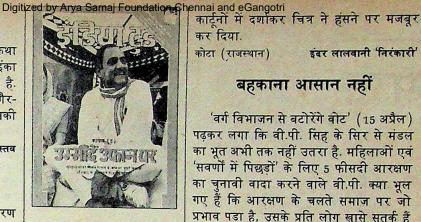
भावरण चित्र बहुत चुटीला एवं मनोरंजक श राजनेताओं का चरित्र और उनका कुर्सी-भूग व्यक्तित्व इसमें स्पष्ट दिखाई देता है. भूष के दर्पण के सहारे नेताओं के वास्तविक भिविव स्पष्ट करने के लिए धन्यवाद.

अतुल बीवान

। <sup>श्रंक का</sup> आवरण देश की वर्तमान राजनीति भाक्तम सही चित्रण है. चुनाव सरकस हो क वैतागण जोकर. (3.4.)

वीपक कालरा

भाषपुष्ठ बहुत ही जानदार लगा. विभिन्न भौतिक पार्टियों द्वारा बनाए गए मुद्दों को



 इंका की खुबी यही है कि वह अपनी गलतियों से सबक लेती है. दूसरी पार्टियों को यह सद्बुद्धि न जाने कब आएगी.

राधारानी शर्मा

यदि इंका जीतती है तो इसकी वजह उसकी लोकप्रियता नहीं, बल्कि गैर इंका दलों से जनता का मोहभंग होगा.

रजनीरानी पाठक

वर्ष: 5, अंक 13, 1-15 मई 1991

संपादकीय कार्यालयः लिविग मीडिया इंडिया नि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 3315801-4, देलेक्स: 31-61245 INTO IN. तार: लिबमीडिया, नई दिल्ली. ● मुख्य सर्कुलेशन कार्यालयः इंडिया दुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कपिटेट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001 फोन: 3313076-8, टेलेक्स 31-62634 INTO IN. तार: मर्कुलेट, नई दिल्ली. ♦ धुक्य विकापन कार्यालय: 28 ए और बी, जांसी मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइट, मुंबई-400021. फोन. 2026152, 2029326 2029435, देनेक्म: 11-5373 THOM IN, तार: तिवमीडिया, मुंबई · क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालयः के-छ, कनाट मर्कम, नई दिल्ली 110001. फोन. 3325375, 3323576, 3321323, 3321273; टेनेक्स 31-62124 THOM IN, तार निवमीडिया, नई दिल्ली फागुन चैंबर्स, 26 कमाडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105 फोन: 477188 टेनेनन 641-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मदाम 🔹 740 सेंट मार्क्स रोड, बगलूर-560001. फीन 568448, 579037, 579089. देलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: निवमीडिया, बंगलूर • 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कसकता-700016. फोन: 225398. 221022, टेनेक्स: 21 7138 INTO IN, तार: निवडन-मीडिया, कलकता • कांपीराइट 1984 निविध मीडिया इंडिया नि. विषय भर में सर्वाधिकार मुरक्तित. किसी भी रूप में मामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री की लौटाने की विश्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविय मीडिया इंडिया लि., एफ-14. कॅपिटेट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अक्श पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा याँमसन प्रेस इंडिया नि फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित

कर दिया. कोटा (राजस्थान)

इंदर लालवानी 'निरंकारी'

#### बहकाना आसान नहीं

'वर्ग विभाजन से बटोरेंगे वोट' (15 अप्रैल) पढ़कर लगा कि वी.पी. सिंह के सिर से मंडल का भूत अभी तक नहीं उतरा है. महिलाओं एवं 'सवर्णों में पिछड़ों' के लिए 5 फीसदी आरक्षण का चुनावी वादा करने वाले वी.पी. क्या भूल गए हैं कि आरक्षण के चलते समाज पर जो प्रभाव पड़ा है, उसके प्रति लोग खासे सतर्क हैं और किसी बहकावे में नहीं आएंगे. मंडल ने समाज के विभिन्न तवकों के बीच जो नफरत और जलनं पैदा कर दी है, उसके बाद आरक्षण का फायदा उठाकर भी कोई करेगा क्या? महिदपुर (म.प्र.) विश्वास डोसी 'निलेश'

#### मुखद बदलाव

'हाथ जोड़ना और शीश नवाना' (15 अप्रैल) पढ़ने के बाद दिल में यह एहसास हुआ कि वास्तव में राजीव गांधी में लोगों से मिलने के तौर-तरीके में काफी बदलाव आया है. विश्वास नहीं होता कि ये वही राजीव गांधी हैं जिनसे मिलने के लिए उनकी ही पार्टी के वरिष्ठ नेताओं को कई घंटे तक प्रतीक्षा करनी पड़ती थी और अपनी बारी आने पर अनेक 'मेटल डिटेक्टरों' से गूजरना पड़ता था.

मोहना गेट (महाराष्ट्र)

मनोज कुमार श्रीवास्तव

#### दिखावट से दूर

'गरिमामय लेकिन जोशीला अभियान' (15 अप्रैल) से एक बात तो स्पष्ट हुई कि भारतीय जनता पार्टी के नेता जो भी कहते हैं स्पष्ट कहते हैं, दिखावटी या बनावटी घोषणाएं उनके भाषणों में नजर नहीं आतीं. हकीकत तो यह है कि उन्हें देश से प्यार है न कि बाकी नेताओं की तरह कुर्सी से.

टूंडला (उ.प्र.)

अखिलेश श्रोत्रिय

#### हवाई दावे

'लंबी जबान ढीली कमान' (15 अप्रैल) में तीन राज्यों में सत्तासीन भाजपा पर सटीक टिप्पणी की गई है. यह सही है कि भाजपा सरकारों ने भ्रष्टाचार में कुछ कमी की है लेकिन उन्होंने सत्ता संभालते हुए जो हवाई वादे किए थे उनके पूरे होने के आसार नहीं नजर आते. उनकी सबसे बड़ी खामी यह है कि वे अल्पसंख्यकों में विश्वास नहीं पनपा सके. भोपाल (म.प्र.)

■ यही सही है कि भाजपा ने सर्वेंब्यापी भ्रष्टाचार से अपने आप को दूर रखते हुए अपनी स्वच्छ पार्टी की छवि को बनाए रखा है. लेकिन ढीली कमान की वजह से पार्टी में आंतरिक गूटीय असंतोष भी दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है. साथ ही किए गए वादों पर अमल न करने और राष्ट्रीय स्तर पर सिर्फ एक ही मुद्दे (मंदिर विवाद) में सिमट जाने से आम जनता में भाजपा के प्रति रुचि कम हुई है. मुनील बरोले ब्रहानप्र (म.प्र.)

#### दहशत में कौन?

'मूसलमान दहशत में' (15 अप्रैल) नितांत एकतरफा लगा. सहारनपुर में दंगा झेल चुके लोगों से पुछिए कि दहशत में कौन है अल्पसंख्यक या बहसंख्यक. सरकार की तुष्टीकरण नीति के कारण हमें तो अपना भविष्य अंधकारमय लगता है. इंदौर की यास्मीन और सरवर से अनुरोध करती हूं कि एक बार सहारनपूर आकर देखें कि बहसंख्यकों का कितना नुकसान हुआ है, और कितनी लडिकयां लापता हैं.

सहारनपुर (उ.प्र.)

सीमा शर्मा

#### सभी तो गद्दार नहीं

कहानी 'बस नं. 541' मार्मिक लगी. हिंदुओं को यह बात अपने जेहन से निकाल देनी चाहिए कि 'सरदार गद्दार' हैं. गुरु तेगबहादुर, भगत सिंह, ऊधम सिंह आदि की राष्ट्रभिक्त और बलिदान देश के लिए अनजाना नहीं है. बांसी (उ.प्र.) सत्येंद्रपाल सिंह यादव

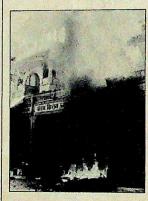
 कहानी सिख-हिंदू एकता का परिचय न होकर इनसानियत और साहस का परिचय थी. आज हमारे समाज को मंडल-मंदिर की नहीं इनसानियत की रक्षा के लिए पाशो और लक्ष्मी जैसा साहस दिखाने वालों की जरूरत है. हर अच्छी शुरुआत अकेले ही करनी पड़ती है जैसे पाशों ने की थी. दिल्ली

विकास कुमार जैन

#### इतनी उपेक्षा क्यों?

'महामारी का अभिशाप' (15 अप्रैल) पढ़ते ही दिल में हूक-सी उठी कि क्या दिल्ली-वासियों और वस्तरवासियों की भारतीयता में फर्क है जो बस्तरवासियों को न्यूनतम चिकित्सा स्विधाएं उपलब्ध कराने में म.प्र. की भाजपा सरकार कतरा रही है. जिस पानी को पीने के लिए एक बार जानवर भी मूंह मोड़ लें, उस पानी को बस्तरवासियों को जिंदा रहने के लिए पीना पड़ रहा है. उनकी इस दयनीय स्थिति के लिए मौजूदा म.प्र. सरकार नहीं वरन सब पूर्व

रिपोर्ट पढ़कर आपकी निष्पक्षता पर संदेह होने लगा. यह स्थान कई अवैध कार्यों का अड्डा बना हुआ था. इन्हें बंद करना साबित करता है कि भाजपा ऐसे असामाजिक कार्यों को बंद करने को कृतसंकल्प है. बैतुल (म.प्र.) मिलिंद निगुडकर



 लेख एकपक्षीय और पक्षपातपूर्ण लगा. असलियत तो यह है कि कांग्रेसी शासन में मुसलमान अधिक खुशहाल और निर्भीक रूप से रहते आए हैं. जहां तक इंदौर के बंबई बाजार की बात है, वहां वेश्यावृत्ति, जुआ, लूटमार, हत्या जैसे अपराध पूर्व सरकार के एक नेता की शह पर होते आए हैं. इस जगह के अवैध कब्जे यदि भाजपा सरकार ने खत्म कर दिए तो इसे लूटमार किस तरह कहा जा सकता है. भोपाल (म.प्र.) देवेंद्र उदय

Samai-Foundation Channai and किस्ताहों जिल्होंने बस्तर की चीत्कार को अनसुना कर दिया. धौलपुर (राज.) े अभित केन

#### धैर्य से सहा

'हारकर भी नहीं हारे' (15 अप्रैल) पढ़ी. इराकी फौज ने 'पहचान पत्र' न होने का बहाना लेकर भारतीयों पर जो जुल्म ढाए वे असहनीय एवं शर्मनाक थे. लेकिन भारतीयों ने जिस धैर्य व हौसले के साथ उन्हें झेला उसमे महात्मा गांधी का अहिंसा व्रत याद आ गया. मेरठ (उ.प्र.)

#### मौका तो दें

'लोगों को उनका हक दीजिए' (कसौटी, 15 अप्रैल) पढा. पंजाबवासियों को अपनी 'राज्य सरकार' चुनने के लिए मताधिकार करने का अवसर दिया जाना चाहिए. वहां साढ़े तीन वर्ष से राष्ट्रपति शासन लागू है. लोकतांत्रिक गतिविधियां ठप पड़ चुकी हैं. शासन व्यवस्था उत्तरदायित्वहीन नौकरशाही के पास है. ब्रजेंद्र नारायण व हरेंद्र नारायण पटना (विहार)

#### पैर पर कुल्हाड़ी

'कोई सगा नहीं रहा' पढ़कर खाड़ी में भारत की स्थिति का पता चला तो बेहद दुख हुआ. भारतीय नेताओं ने एक बार फिर 'अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी' चलाई है जिसके चलते खाड़ी में भारत की स्थिति खराब हुई है. अनुराग विक्रम सिंह इलाहाबाद (उ.प्र.)

#### अपनी जमीन कौन-सी?

'चर्चित चेहरे' (31 मार्च) पढ़ा जहाँ विजय अमृतराज भारत को हॉलीवुड में जमाना चाहते हैं, वहीं चालीस साल से भारत में रह रहे कपूर खानदान के ऋषि कपूर पाकिस्तान को अपनी जमीन बता रहे हैं. यह एक अ<sup>जीव</sup> किस्म का दोहरापन है. नवेद अनवर पाश गाजियाबाद (उ.प्र.)

#### गलत जानकारी

31 जनवरी के अंक में विश्वविद्याला परिक्रमा के अंतर्गत ललित नारायण मिथित विश्वविद्यालय, दरभंगा (बिहार) में आपके संवाददाता तथ्यों की वास्तविकता तक पहुंची में असफल रहे हैं. उनका यह कहना कि इह विवि को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) की मान्यता नहीं मिली, बिलकुर्त गलत है. प्रमात कुमार सित् मधुबनी (विहार)

भी चनव मा है. इसव क्रिया है जि देशन के वह रा आ जमते ह्या गया म ओं में यह कडती जा र व्यवस्था परि कार है. यह शदर्शों के वि ग्ह्या जा सकत सबसे जारि उम्मीदवारों

> अके लिए प्र काम करने एजनैतिक पा उम्मीदवारों व हों ऐसा न व

गांगने जैसी व हो उसमें ऐसे

बापक भागी

गोंहर है. व मागती घूम र ही रखवाली केरराष्ट्रीय व जुटाने माते रहे हैं. क्हा ने पिछत कि देशों में हाया. जापान वेहं रियायत में मंगठन है गेगामी चुनाव निर्हासिल नेकिन दुनि में पीछे मं विधित देश

भी में कभी

नी है इस

क्षेया बाद

ह बाता, कुछ ए कहा प्रतिह

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## प्रत्याशियों की परख जरूरी

रतीय मतदाता चुनावी मिनकरों से चूर-चूर-सा हो बा है इसकी एक वजह वह चुनाव किया है जिसके चलते राजनीति के देशन के वही लंपट वार-वार कुर्सियों ए आ जमते हैं जिन्हें वह खारिज कर खा गया मान चुका होता है. इससे बंगों में यह खतरनाक मान्यता जोर कड़ती जा रही है कि चुनाव के जरिए ज्वन्या परिवर्तन की बातें करना कार है यह निराशावाद लोकतंत्र के अदर्शों के लिए नुकसानदेह है. तब खा जा सकता है कि उपाय क्या है?

तर भी

अमित कैन

र) पढ़ी.

होने का

ढाए वे

रतीयों ने

ना उससे

गया,

शिव खान

भौटी, 15

ो 'राज्य

करने का तीन वर्ष

कतांत्रिक

व्यवस्था

र नारायण

में भारत ख़ हुआ ने ही पैर

खाडी में

वक्रम सिंह

ा. जहां

जमाना

त में रह

किस्तान क अजीव

नवर पात्रा

विद्यालि

मिथिला

ं आपक

ह पहुंचन

कि इस

आयोग

विलक्त

गर सिन्हा

**†**?

मित्रसे जाहिर उपाय तो यह है कि केवल जाने-माने ईमानदार ज़्मीदबारों को वोट दिया जाए. लेकिन यह भी चांद-तारे ज़िले जैसी बात होगी क्योंकि जो व्यवस्था खुद ही जड़ हो गई हो समें ऐसे लोग कहां मिलेंगे. लेकिन परिवर्तन की प्रक्रिया में आपक भागीदारी के बिना कोई परिवर्तन संभव भी कहां है- को लिए प्रतिबद्धता और संकल्प की जरूरत होती है.

काम करने वाली व्यवस्था के आकांक्षी हर मतदाता को सभी पर्कतिक पार्टियों पर निरंतर दबाव डालना चाहिए कि वे उन स्मीदवारों को खड़ा करें जो प्रतिवद्ध जनसेवा के लिए विख्यात हैं ऐसा न कर पाने के लिए पार्टियां यह बहाना बनाती हैं कि



ज्यादा बुरे उम्मीदवारों से मुकाबले के लिए उन्हें मजबूरन बुरे उम्मीदवार खड़े करने पड़ते हैं. यह तर्क व्यवस्था को जानबूझकर नुकसान पहुंचाने की उस प्रक्रिया के बचाव का ही तर्क है जिसमें वे मतदाताओं के सामने निम्न कोटि के विकल्प पेश करने का निहित स्वार्थ साधते हैं.

इस देश में चरित्रवान, अनुशासित और प्रतिबद्ध लोगों की कमी नहीं है. लेकिन ये लोग व्यवस्था में शरीक नहीं होते क्योंकि इन्हें राजनीति की गंदी दुनिया में कदम रखना ठीक नहीं

लगता. यह एक तरह का हताशावाद ही है जो लोकतंत्र को कमजोर करता है. ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है कि अच्छे लोगों ने राजनीति में आकर कोई सैद्धांतिक समझौता या मजहवी अथवा क्षेत्रीय भावनाओं को भुनाए विना ही बुरे लोगों को परास्त न किया हो.

मतदाता अगर आज पार्टियों के पुराने पड़ चुके नारों और कार्यक्रमों से ऊब चुके हैं तो बेहतर यही होगा कि वे किसी पार्टी या किसी नेता का खयाल किए बिना उम्मीदवारों को परस्कर वोट दें. यह एक ऐसा उपाय साबित हो सकता है जो पार्टियों को लंपटों से दूर रहने पर मजबूर कर सकता है.

# भीख से नहीं भरेगा भंडार

रत सरकार इन दिनों वहीं कर रही है जो करने में वह कर रही है जो करने में वह मिंदर है वह दुनिया भर में भीख मेंजी धूम रही है. इस देश के भंडार है रखनी करने वाले लोग कराने वाले लोग कराने कि मुहिम अच्छी तरह कि मैं जुटाने की मुहिम अच्छी तरह कि मैं पहाने पिछले दिनों जापान और कुछ का निया जापान से कर्ज, विश्व बैंक से के मेंगठन से थोड़ा दान यानी ये

भाभी बुनाव के बाद अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से भी कुछ अरब कि होसिल करने की भूमिका बन सकते हैं.

विकित दुनिया के बड़े महाजन इन दिनों जो कर्ज दे रहे हैं भी के पिछ में कि दौर में अंतरराष्ट्रीय रूप से अस्थिर रखने की कि या बाद में कोई संशोधनात्मक उपाय करने लायक नहीं के कि पिछ में कि पिछ में पिछ मे



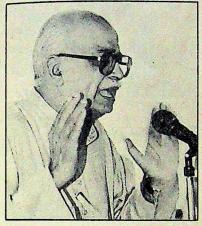
अल्पकालिक उपाय के रूप में शायद ही और कुछ किया जा सकता था लेकिन असली समाधान निर्यात के मामले में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने और नौकरशाही के शिकंजों को ढीला करने जैसे बुनियादी उपायों में ही निहित है. आयात पर रोक लगाने के कृत्रिम उपायों की जगह ये समाधान भुगतान संतुलन की समस्या का बेहतर हल बन सकते हैं. समस्या यह है कि निकट भविष्य में निर्यात को बढ़ावा देना आयात पर बुरी तरह निर्भर होगा क्योंकि भारतीय उद्योग को

अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचने में वक्त लगेगा. मतलब यह कि आयात पर खर्च बढ़ेगा जिसे विदेशी कर्ज लेकर या प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ाकर ही पूरा किया जा सकता है. 80 के दशक में हमने कर्ज को ही प्राथमिकता दी. नतीजतन देश पर 100 अरब ह. से ज्यादा का कर्ज चढ़ चुका है. अब इसके भुगतान का समय आ रहा है इसलिए फिर अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष का दरवाजा खटखटाने की नौबत आ गई है. अब सवाल यह है कि चुनाव के बाद गद्दीनशीन होने वाले नेता आर्थिक मोर्चे पर होने वाली परीक्षा क्या दूसरे देशों की चाटुकारिता करके ही पास करना चाहेंगे. पिछला अनुभव यही दिखाता है.

15 मई 1991 + इंडिया ट्रेड 7

"आज़ादी को टुकड़ों में नहीं बांटा जा सकता. आज़ादी तभी सार्थक होती है जबिक सब उसमें भागीदार हों – चाहे वे गरीब हों या अमीर; हमसे सहमत हों या न हों; तथा उनके धर्म और मान्यताएँ कुछ भी हों."

-लाल कृष्ण आडवाणी



व से हम आज़ाद हुए हैं तबसे इसी भय में जीते आए हैं कि कहीं अपनी आज़ादी खो न बैठें.

अलगाववाद का भय, आतंकवाद का भय, शोषण का भय, अपनी सांस्कृतिक पहचान खो देने का भय... बहुत दिनों से हम ऐसी राजनीतिक संस्कृति को झेलते आ रहे हैं जो फूट, अविश्वास, प्रतिशोध और हिंसा को बढ़ावा देती आई है.

आज स्वतंत्र भारत में पहली बार, एक नई, राजनीतिक दिशा नज़र आने लगी है: भारतीय जनता पार्टी

पहली बार भारत के मतदाताओं को मौका मिल

रहा है कि वे सही राजनीतिक संस्कृति को चुनें, ऐसी पार्टी जो राष्ट्रीयता से प्रतिबद्ध है.

भा.ज.पा. धारा 370 को रद्द करवाएगी जो कश्मीर को हम सबसे अलग करती है और देश में अलगाववाद के जहरीले बीज बो रही है.

भा.ज.पा. समान नागरी कानून और मानव अधिकार आयोग स्थापित करेगी जिनके ज़रिए सभी नागरिकों को सुरक्षा मिलेगी. भा.ज.पा. व दूसरी पार्टियों में असली फ़र्क यही है. भा.ज.पा. के लिए अल्पसंख्यक 'वोट बैंक'' मात्र नहीं हैं, बिल्क भारत के नागरिक हैं, जिनके हक अन्य सबके बराबर हैं – न किसीसे कम, न किसीसे ज़्यादा !

भारत की राष्ट्रीय पहचान पर होने वाले हर आक्रमण का भा.ज.पा. पूरी शक्ति के साथ मुकाबला करेगी — चाहे वह कश्मीर में हो. पंजाब में या अयोध्या में.

मज़हब के आधार पर नौकरियों में आरक्षण के प्रस्ताव पर भा.ज.पा. विकृत धर्मिनरपेक्षतावादियों का विरोध करेगी.

आप जानते हैं कि आप भा.ज.पा. पर भरोसा कर सकते हैं.

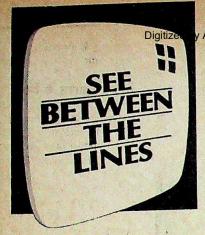
क्योंकि भा.ज.पा. के पास जो है वह दूसरों के पास नहीं : बेदाग़ ईमानदारी, स्थिर नीति, आंतरिक अनुशासन व स्थिरता, परिपक्व नेतृत्व और ऐसे समर्पित कार्यकर्ता — जो अपना स्वार्थ नहीं, देश का हित देखते हैं.

जरा सोचिए, आपने बाकी सब को मौका दिया और भारी कीमत चुकाई. इस बार आपके वोट की हकदार है भारतीय जनता पार्टी जो जनता का कल्याण करेगी, देश का उद्धार करेगी, पूरे भारत को मज़बूत, स्थिर और संगठित बनाएगी.

# रामराज्य की ओर चलें की भा.ज.पा. के साथ चलें के

अगर्प सर्वभूतेम्यो ददाम्येतदृष्टतं मम। (मभी प्राणियों को अभय देवा, यही मेरा प्रण है: राम सभी भारतीयों के लिए आवर्श पुरुष है, सत्यनिच्छ, न्याय और करुवा के प्रतीक.

राम\* रोटी इन्साफ़ भय से मुक्ति अभावों से मुक्ति भेदभाव से मुक्ति



Even after you've heard about it all and read about it all - see it all on India's first newsmagazine on video cassette - NEWSTRACK Press the play button and you're on the ringside seat to people, places, events, issues incisively covered like on no other medium ever before.

#### ➤ ONLY ON NEWSTRACK <</p>

#### SPECIAL OFFERS

#### SINGLE CASSETTE

- Current Issue Rs. 145/- for a single cassette.
- Back Issues R\$ 185/- each.

#### SUBSCRIPTION

- Annual
- Rs. 1380/- and a free INDIA TODAY ADDRESS BOOK.
- \* This offer is valid up to August 31, 1991. Address Books will be delivered at your given address within 4-6 weeks of receipt of order.

Mail a DD/Cheque favouring Living Media India Limited to P.O. Box No.29, New Delhi - 110 001.

Cheques/ Demand Drafts payable at Delhi, Bombay, Calcutta and Madrag must be MICR only.

For more details contact Delhi: 3320689. Bombay: 2027867. Madras: 479163 Calcutta: 445398. Bangalore: 210834.

Home delivered by courier or Registered Post

**India Today Presents** 



The newsmagazine to watch

MILESTONES/IT/236



• जब से मनुष्य पृथ्वी पर आया है तब से ही भ्रष्टाचार है और जब तक मनुष रहेगा, भ्रष्टाचार रहेगा. चंद्रशेखर, नई दुनिया

• लेकिन यह बात जरूर है कि मैं अगर पार्टी अध्यक्ष होता तो राम रथ यात्र का स्वरूप वह नहीं होता जो आडवाणी जी ने दिया.

अटल बिहारी वाजपेयी, जनमत्ता

• आगामी

का ने भले है सी है पर प हेकि उसकी स बात पर

जार के दौरा

कर बैठे

विम्मेदारानाः

लके धनिष्ठत

बबाड़े भर उ

भी ही अनर्गत

क्षेत्रे फिर रहे

ह उनके नेता

ग्रेंडर बोलना

नमय अपने 3 श ध्यान रखन

कई भोज

ह भेसी वधा

वे मता में होते

मेश्ता था.

श्वानमंत्री का

कुराष्ट्रीय सेन

महाम हुसै

यक्तिगत संबंध

बेदोलन में भ

जिमाल करते

हे लिए सहाम

र्भी तरह

विविव से अ विक करते हु विक्री कहकर

नेक महायक

मित्र करते हु। तकतों की व

न्होंने हाल

 हमें (राष्ट्रीय मोर्चा को) 300 से ज्यादा सीटें मिल गई तो चौंकिएगा मत. नंदमूरि तारक रामराव, फंटलाल

 मदारी की तरह आप टोपी से खरगोश निकालकर बार-बार जनता को धोता नहीं दे सकते. बलराम जासड, दैनिक द्रियून

 पत्थर भी स्थिर है और पहाड़ भी. काग्रेस की स्थिरता के मायने क्या हैं? प्रमोव महाजन (भाजपा नेता), धर्मकुन

• हमारी टक्कर तो रामनामी ओढ़े भाजपा से है. इस बार वह अकेले लड़ेगी तब पता चलेगा कि ऊंट और पहाड़ की ऊंचाई में कितना अंतर है.

■ रेवती रमण सिंह (जंद नेता), माग

भाजपा व कमल क्या है? राम ही सर्वेसर्वा हैं.

ललित किशोर चतुर्वेदी, राजस्थान पित्रक्षे

• हमारा राज आ गया तो चने हम बाद में भूनेंगे. पहले हम उन्हें (भाजपा कांशीराम, नवभारत टाइम्स भूनेंगे.

 भोसलों का वंशज होने के नाते मैंने अपने जीवन की संघ्या में हिंदुल है प्रचार में खुद को रोकने का निश्चय किया है.

बाबासाहेब मोसले (पूर्व मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र), तोक्सवा

 टीम में हमारी जरूरत है या नहीं इसका जवाब मैं नहीं आनेवाला वक्त दें।

प्रोंकि दम से करें ■ विवेक सिंह (हाँकी खिलाड़ी), बाँ क्योंकि हम तो ठहरे खिलाड़ी.

 भ्रष्ट राजनेताओं को बोल्ड करने के लिए उतरा हूं. मैं राजनीति में भी टिआउट रहेगा चेतन चौहान, पंजाब केंग्री नॉटआउट रहंगा.

 आपको बता दूं कि जब रिव शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को श्री
रोल्ड कर सकता है अपना की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को श्री
रोल्ड कर सकता है अपना की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को श्री
रोल्ड कर सकता है अपना की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को श्री
रोल्ड कर सकता है अपना की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को श्री
रोल्ड कर सकता है अपना की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को श्री
रोल्ड कर सकता है अपना की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को श्री
रोल्ड कर सकता है अपना की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को श्री
रोल्ड कर सकता है अपना की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को श्री
रोल्ड कर सकता है अपना की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को श्री
रोल्ड कर सकता है अपना की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को श्री
रोल्ड कर सकता है अपना की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को श्री
रोल्ड कर सकता है अपना की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को श्री
रोल्ड कर सकता है अपना की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को श्री
रोल्ड कर सकता है अपना की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी को शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी की शास्त्री फॉर्म में होता है तो सह की शास्त्री फॉर्म में होता है तो वह किसी की शास्त्री फॉर्म में होता है तो स्वास्त्री फॉर्म में होता है तो स्वास्त्री फॉर्म में स्वास्त्री फॉर्म में स्वास्त्री फॉर्म में होता है तो स्वास्त्री फॉर्म में स्वास्त्री फॉर्म में स्वास्त्री फॉर्म में स्वास्त्री फॉर्म में स्वास की शास्त्री फॉर्म में स्वास की शास्त्री में स्वास की शास क बोल्ड कर सकता है. आज भी वह सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में एक है. रिव शास्त्री, स्पोर्ट्सारा

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri जनसंपर्क में माहिर

कहीं भूल न कर बैठें

अगामी लोकसभा चुनावों से काने भले ही भारी उम्मीदें बांध ती है पर पार्टीजनों का मानना कि उसकी कामयाबी बहुत कुछ म बात पर निर्भर करेगी कि



तक मन्ष्य

नई दुनिया

रथ यात्रा

ती, जनमत्ता

र्गा मत.

, फंटलाइन

को धोखा

निक द्रिय्न

म्या हैं?

T), धर्मयुग

न्ते लड़ेगी

ता), माबा

थान पत्रिका

(भाजपा)

रत टाइम्स

हिंदुत्व के

लोकसवी

वक्त देगा

(ड़ी), <sup>आब</sup>

ति में भी

जान केसरी

नी को भी

स्पोर्दमस्य

अके नेता राजीव गांधी चुनाव बार के दौरान कोई भयंकर भूल कर बैठें या कोई विमेदाराना वयान न दें. लिहाजा लके पनिष्ठतम सहायक पिछले विवाड़े भर उनके मुंह से निकली निही अनर्गल बातों की वजह से कार्त फिर रहे हैं. उन्हें लगता है हैं उनके नेता को बहुत संतुलित कर बोलना चाहिए और बोलते भय अपने आसपास के माहौल <sup>श ध्यान</sup> रसना चाहिए.

कई भोज समारोहों में राजीव हैं मेली बघारते आए हैं कि यदि रेमता में होते तो खाड़ी युद्ध टल भ्ता था. वह कैसे? पूर्व वानमंत्री का जवाब था कि वे हुगद्रीय सेना के हमले से पहले महाम हुसैन के साथ अपने क्षितागत संबंधों और गुटनिरपेक्ष तिवन में भारत के प्रभाव का भान करते हुए कुवैत से हटने निए सहाम पर दबाव डालते. भी तरह एक रात्रि भोज में ती होल ही में मास्कों में वेतिव में अपनी मुलाकात का के करते हुए उन्हें कई बार भेदी कहकर पुकारा इस बीच, महायक परेशानी में पड़े क सहयोगी ने अफसोस किए करते हुए कहा कि ऐसी ही

उनकी छवि एक समझदार नेता 📍 की नहीं बन पाती.

#### खोज का विषय

 भाजपा के चुनाव चिन्ह पर उठे विवाद ने एक 'जीवंत सामाजिक, धार्मिक बहस' के लिए रास्ता स्रोल दिया है. परीक्षा के सवालों की तरह पार्टी के विरोधी पूछते हैं कि धर्म को चुनाव चिन्ह की लपेट में लेने का काम सबसे पहले किस पार्टी ने किया. ज्यादातर लोग इसकी जिम्मेदारी भाजपा पर ही डालेंगे. लेकिन भाजपा अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी की मानी जाए तो यह जवाव एकदम गलत है. दक्षिण भारत के दौरे के बाद उन्हें लगता है कि धर्म को चुनाव चिन्ह की लपेट में लेने का काम सबसे पहले इंदिरा गांधी की पार्टी ने किया.

जोशी ने इस विषय पर नया अध्याय खोल दिया है. जिसे इंका निस्संदेह 'संशोधनवादी' करार देगी, जोशी के मुताबिक केरल के ताजा दौरे में उन्होंने देखा कि एक



मंदिर में हाथ को भगवान की तरह पूजा जाता है. विजय भाव से उन्होंने बताया कि यह मंदिर हाथ को इंका का चुनाव चिन्ह बनाए जाने से भी पुराना है. उनका सवाल है, "क्या यह चुनाव के लिए धर्म का दुरुपयोग नहीं?" खोज करने वाले अब यह पता लगा रहे हैं कि हंसिया और भितें हुए कहा कि ऐसी ही प्रतीक बनाए जान स पर्ण के कलकत्ता में पूजे तो नहीं जाते थे.

 नागरिक उड्डयन राज्यमंत्री हरमोहन धवन जनसंपर्क की कला में माहिर हैं, खासकर जब मामला

पत्रकारों से मधुर संबंध बनाने का हो. पत्रकारों लिए सुविधाएं जुटाने



में उन्हें कोई संकोच नहीं. अपनी छवि बेहतर बनाने के लिए उन्हें शायद यह जरूरी लगता है

चंडीगढ़-जहां से उन्हें फिर टिकट मिलने की उम्मीद है-से बतौर सांसद धवन ने इस बात की पक्की व्यवस्था की कि कार्बुजिए के बनाए इस शहर में स्थित उनके परिवार के 'महफिल' रेस्तरां में पत्रकारों को रियायतें देने का स्रयाल रसा जाए. वेटरों और प्रबंधकों को उन्होंने निर्देश दे रखा है कि खान-पान के बिलों में पत्रकारों को छूट मिलनी चाहिए.

पत्रकारों के प्रति उदारता के किस्से चंडीगढ़ की हदों के बाहर भी हैं. बतौर उड्डयनमंत्री उन्होंने एअरलाइंस के कर्मचारियों को भी यह समझा रखा है कि टिकट के लिए चक्कर काटते पत्रकारों को अति विशिष्ट व्यक्ति जैसा सम्मान दिया जाए.

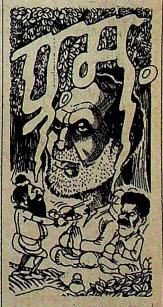
यही नहीं, लोकतंत्र का चौथा खंभा कही जाने वाली इस विरादरी के लिए हाल ही में धवन ने चंडीगढ़ प्रेस क्लब को 'डिश ऐंटेना' उपहार में दिया, सोने पर मुहागा यह कि उन्होंने उद्घाटन के लिए प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के वहां आने की व्यवस्था भी करवा ली. प्रधानमंत्री आए और उनके टीवी का बटन दबाते ही केबल 🌢 'स्रताज' हुआ करते थे.

न्यूज नेटवर्क के पीटर अर्नेट परदे पर उभर आए.

#### सितारे सुधारने के लिए

• चंद्रशेखर के सहयोगी कहते आ रहे हैं कि उनके सितारे चाहे कितने ही गर्दिश में हों, वे अक्तूबर तक देश के प्रधानमंत्री बने रहेंगे. यह पूछे जाने पर कि संविधान की किस व्याख्या के तहत यह संभव है तो वे फुसफुसाते हैं कि ऐसी भविष्यवाणी की जा चुकी है. इस भविष्यवाणी पर उन्हें इतना भरोसा है कि तर्कसंगत बात भी मानने को तैयार नहीं दिखते.

पहले अनुमान लगाया गया कि ऐसी तसल्ली देने वाले शायद चंद्रास्वामी होंगे. लेकिन जल्द ही असलियत सामने आ गई. मैकबेथ की तरह हमारे प्रधानमंत्री ने भी वनगमन किया. यहां उनका भाग्य बांचने वाली कोई जादूगरनी नहीं, वरन मध्य प्रदेश के रायगढ़ जिले में जशपूर के बाबा श्रीराम थे. अपने छोटे भाई और बेटे के साथ चंद्रशेखर ने बाबा के आश्रम में



ढाई घंटे की तांत्रिक पूजा की. जब तक वहां रहे, बाहर के किसी व्यक्ति को आने की इजाजत नहीं दी गई. तांत्रिक पूजा में किसी बाहरी व्यक्ति का व्यवधान सहनीय नहीं होता और मामला जब प्रधानमंत्री का हो तो सुरक्षा का बहाना तो होता ही है.

पिछले वर्ष प्रधानमंत्री बनने से कुछ पहले वे इस आश्रम में आए थे. उस समय वे महज 'बलिया के

#### बेचारा ज्योतिषी

 पिछले दिनों चुनाव की घोषणा होते ही राजधानी के पार्टी मूख्यालयों और प्रभावी नेताओं के घरों पर टिकटार्थी नेताओं के जमघट लग गए. लिहाजा टिकटार्थियों के पीछे-पीछे तिलकधारी ज्योतिषी भी वहां पहंच गए. लेकिन ग्रहों के गुणा-भाग में वेचारे ज्योतिषी महाराज खुद अपने ही प्रहों की दणा देखना भूल गए और इसी चक्कर में मारे गए. इंका मुख्यालय में उन्होंने गलती से दो टिकटार्थियों को एक ही चनाव क्षेत्र से टिकट मिलने की भविष्यवाणी कर दी. बदिकस्मती से दोनों को इसका पता चल गया



और उसके बाद वही हुआ वेचारे जिसकी उम्मीद थी. ज्योतिषी महाराज दुम दबाकर ऐसे भागे कि किसी और पार्टी के दफ्तर जाकर सांस ली.

#### गुल बिजली के गुल

■ ठीक मौके पर विजली का गुल हो जाना कैसे-कैसे गुल खिला सकता है इसका एक नया उदाहरण पिछले पखवाडे श्रीगंगानगर के किशनपुरा गांव में देखने को मिला. एक ही



परिवार की दो लड़कियों का विवाह एक ही समय के लिए तय हुआ और कार्यक्रम के मुताबिक दोनों बारातें ढोल-नगाडे बजाती ठीक समय पर वधुओं के दरवाजे पर आ पहंची.

शादी का कार्यक्रम. लगन मंडप तक तो ठीकठाक चला लेकिन लगन शुरू होने से ठीक पहले बिजली गुल हो गई. मुहर्त का ध्यान रखते हुए विजली आने का इंतजार किए बिना पंडित जी ने दोनों लगन निबटा दिए. लेकिन यह क्या? बिजली आते ही लोगों ने पाया कि लगन मंडप में फेरों के समय दुलहनें बदल गई थी. आखिरकार वहां मौजूद बुजुर्गों ने यही फैसला किया कि इस गलती को ईश्वर की मर्जी मानकर नए रिण्तों को ही स्वीकार कर लिया जाए.

# भाषण प्रतिय

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

#### भाषण-परीक्षा

 चनाव के दिनों में पार्टी नेताओं के लिए सबसे कठिन काम होता है सही उम्मीदवारों का चयन करना. अक्सर ऐसा होता है कि सीटें कम होती हैं और टिकट पाने के दावेदार कई गुना ज्यादा. किस नेता को खुश किया जाए, किसे नाराज यह सिरदर्द होता है. ऐसे में पार्टी की एकता तोड़े बिना ठीक-ठीक उम्मीदवारों को टिकट देने का यह काम खले तराज में मेढक तौलने से कम पेचीदा नहीं होता.

इससे निबटने के लिए बाकी पार्टियों ने क्या नुस्खे अपनाए यह तो वे जानें लेकिन पौड़ी गढ़वाल से जनता दल के विधानसभा उम्मीदवार छांटने के लिए पार्टी नेता चंद्रमोहन सिंह नेगी ने जो तरकीब अपनाई

वह हिंदुस्तानी लोकतंत्र के इतिहास में अनुठी ही है.

टिकटाथियों की लंबी सूची से परेशान नेगी ने पिछले पखवाडे देहरादून, चकरौता और मसूरी के 15 उम्मीदवारों को देहरादून बुला भेजा. स्थानीय डाक बंगले में इनके बीच एक विशेष भाषण प्रतियोगिता कराई गई. इस प्रतियोगिता में उम्मीदवारों की माषण शैली और दलील देने की क्षमताओं की जांच की गई और माइक्रोफोन पर और बिना माइक्रोफोन के उनकी आवाज को भी परखा गया. मजेदार बात यह रही कि जनता दल के अलावा जद (स) के एक विधायक और एक निर्दलीय विधायक ने भी हिस्सा लिया. इसके दौरान एक जज की हैसियत से नेगी अपनी टिप्पणियां भी लिखते रहे ताकि इनके आधार पर टिकटों का फैसला किया जा सके.



 मद्रास के खूबसूरत इलाके मरीना क्षेत्र में तेजी से दौड़ती दो कारों ने लोगों को कुछ देर के लिए जहां का तहां खड़ा कर दिया. आगे वाली कार में दो महिलाएं बैठी थीं और पीछा करने वाली कार में एक सजा-संवरा अधेड व्यक्ति था.

लेकिन एक मोड पर पिछली कार ने दूसरी कार का रास्ता काटकर उसे फकने पर मजबूर कर दिया. लोगों के देखते-देखते पिछली कार वाले पुरुष ने चीखती, चिल्लाती एक महिला को खींचकर अपनी कार में डाला और रफूचक्कर हो गया. इस रोमांचक घटना के चश्मदीद गवाह एक सिपाही ने तुरंत पुलिस कंट्रोल रूम को खबर भेजी

#### मुर्दे का प्रोटेस्ट

 यह घटना अंबाला छावनी में घटी. सड़क से शवयात्रा गुजर रही थी. गड्ढों की भरमार मे ऊवड़लावड़ सड़क पर ठोकर साते और सड़क पर फैली गृदगी की सड़ांध से परेशान लोग 'राम नाम सत्य है' बोलते हुए चले जा रहे थे कि अचानक ही अर्थी पर लेटा मुर्दा उठ बैठा और पास साइकिल उठाकर श्मशानघाट की ओर भाग निकला. शवयात्रा में शामिल लोगों ने जब कुछ दूर पीछा कर उसे जा पकड़ा तब उसने अपने भागने का राज खोला. उसने बताया कि ऊवड़लावड़ सड़क पर लगने वाले झटकों और वहां



फैली बदबू ने ही उसे भाग सर् होने पर मजबूर किया था.

दरअसल यह मूर्दा कोई और नहीं बल्कि स्थानीय 'नानसेंस-क्लवं के अध्यक्ष महोदय थे.

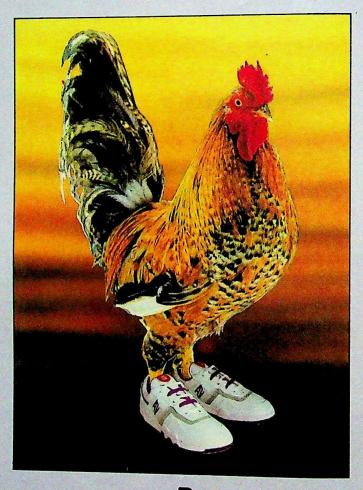
और कुछ ही देर बाद कार की धर दबोचा गया. लेकिन पुनिस का उत्साह तब ठंडा पड़ गया बढ़ पता चला कि महिला को उठा वे जाने वाला पुरुष असल में उसका पति हैं जो रूठकर भागी पती को वापस घर ले जाने के लिए उसका पीछा कर रहा था.





Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# Trot! Trot!!! Trot!!! with action shoes round the clock.



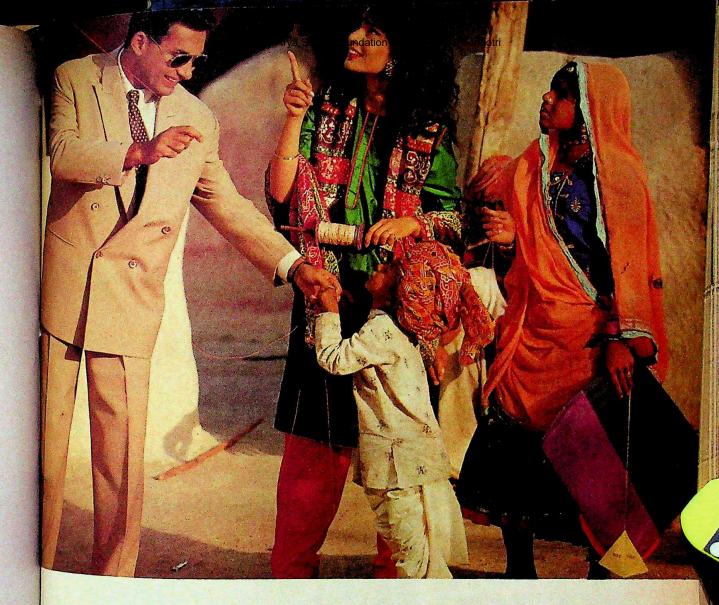


**B**e it your early morning walks, or your day-time executive schedules or those leisurely evenings, or midnight flaunts.

**G**o ahead! swoop into action with action round the clock. The anytime, everytime shoes for everyone



CC-0. In Police Drimain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



इसी में सिमटा था मेरा सब संसार,

तुमसे मिलने से पहले.

उड़ी जाती थी पतंग मेरे ख़यालों के संग

तुम्हें देख, मैं बुना करता था सौ सौ सपने

हम बड़े होंगे, बनेंगे जीवन साथी...

आज फिर दिल ने भरी है ऊंची उड़ान

काटने को बस, है नहीं कोई पतंग

सब कुछ जैसे बस वही एक सपना है.

s d-

h ne,

# ARAMSUITINGS

COME HOME TO



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri आरतीय जनता पार्टी



अपने विशाल और अनुशासित संगठन के बूते पार्टी लोकसभा में अपनी सीटों में नाटकीय बढ़ोतरी करने के मंसूबे रखती है मगर इसके लिए जनमत के भारी समर्थन और झुकाव की जरूरत है

#### शाहनाज अंकलेसरिया अय्यर

रे धारदार, आकर्षक और सटीक. रणनीति उद्देश्यपूर्ण और स्पष्ट. अभियान चार पहियों वाले वाहन से. और प्रधानमंत्री पद के लिए पहली बार राष्ट्रीय छवि वाले नेता के रूप में लालकृष्ण आडवाणी. का नाम. यह 1989 वाली भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नहीं है जो आत्मसंशय से ग्रस्त थी, गठबंधन के लिए साथी की तलाश में थी और 1985 के चुनाव में संसद की मात्र दो सीटें मिलने से लगे सदमे से उबरने और बेहतर प्रदर्शन के लिए बेताब थी. 1991 की भाजपा के मंसूबे बूलंद दिख रहे हैं.

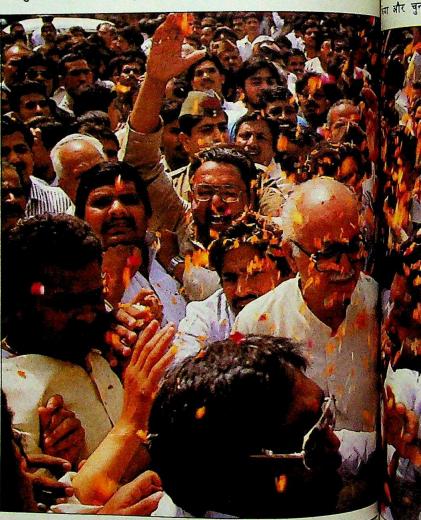
इस बार भाजपा ने जिस अभूतपूर्व और महत्वाकांक्षी तरीके से अपने कार्यकताओं को सक्रिय किया है, वैसा किसी राजनैतिक पार्टी ने आज तक नहीं किया था. बडी सावधानी से चुने गए कोई दो लाख आरएसएस कार्यकर्ता हिंदू हित के पक्ष में समर्थन जुटाने के लिए पहले ही देश भर में फैल चुके हैं.

संगठन की मजबूती के कारण भाजपा को दो फायदे हैं. पहला यह कि सिर्फ 16 महीने के भीतर दूसरी बार होने वाले आम चुनाव में जब मतदान का औसत मतदाताओं में आम हताशा और झुलसती गर्मी के कारण कम होने की संभावना है तब सिर्फ प्रतिबद्ध कार्यकर्ता ही अपनी पार्टी के लिए वोट जुटाने में सफल हो सकते हैं. और दूसरा यह कि जहां जनता दल और कांग्रेस (इ) पूरी तरह से विश्वनाथ प्रताप सिंह और राजीव गांधी की छवि पर

आर्श्रित हैं, वहीं भाजपा एकमात्र ऐसी पार्टी है जो किसी एक हस्ती की छवि के सहारे नहीं है.

यह बात लोगों के दिलो-दिमाग में बैठाने के लिए भाजपा के 15 प्रमुख नेता--जिन्हें राष्ट्रीय कार्यकारिणी के एक सदस्य उत्साह से 'हमारे चमकते सितारे' कहते हैं—पार्टी के 'राम, रोटी और इंसाफ' के संदेश के साथ देश के कोने-कोने में पहुंच रहे हैं. ये नेता दो हफ्तों में ही 11 राज्यों में लगभग 4,000 जनसभाएं कर चुके हैं.

हालांकि कुछ पार्टी महासचिव खुले तौर पर तो दावे कर रहे हैं



उमलार पैदा हपता है कि

अत और उन्म स्या यह है वि उपूरं को थोड़े त्ता, वह कह क है कि यह

त अपने को उ

महे को दूस ने कोशिश के

कों के जत्ये

शाबों के निक

क्षक्षारी, ज

बोध्या मसले

बोट क्लब में

पार्टी इस उत भे अप हिंदुओं

के जो राम

उत्तर प्रदेश में आडवाणी के चुनावी दौरे की शानवार सूर्व

कि वे इस जून में दिल्ली में केसरिया झंडा फहराएंगे लेकिन किं बातचीत में वे पार्टी की संभावनाओं के बारे में ऐसी शेवी व बघारते. उनका कहना है कि नीचे के कार्यकर्ता 1989 से वहाँ काम करेंगे काम करेंगे और भाजपा को केंद्र में कांग्रेस (इ) और जनता हत विश्वसनीय राष्ट्रीय विकल्प के रूप में प्रतिष्ठित करेंगे. पार्टी में भरोसा है कि भरोसा है कि वह हिंदू लहर पर सवार होकर सबसे ज्यादा वीले उत्तर परेक को वाले उत्तर प्रदेश को फतह कर लेगी.

लेकिन यह जरूरी नहीं कि नेताओं के मुविचारित फार्मूत वृक्षी . -

प्रणांत पंजियार

पाकार पैदा कर ही दें. पार्टी के वरिष्ठ नेताओं को यह अच्छी पाकार पैदा कर ही दें. पार्टी के वरिष्ठ नेताओं को यह अच्छी देखा है कि पिछले अक्तूबर में आडवाणी की रथयात्रा से उठा देखा है कि पिछले अक्तूबर में आडवाणी की रथयात्रा से उठा का है. इसलिए भाजपा के सामने का ग्रह है कि मंदिर के मुद्दे को जीवित कैसे रखा जाए. उसने का ग्रेड फेरबदल के साथ जीवित रखने की कोशिश की है. पूर्ट के वह हिंदुओं को अपने देश में गर्व के साथ अपने मूल्यों के है कि यह हिंदुओं को अपने देश में गर्व के साथ अपने मूल्यों के है कि गर रखने के अधिकार की अभिव्यक्ति है. पार्टी ने रमें को इसरी तरह से भी जिलाए रखने की कोशिश की है. को इसरी तरह से भी जिलाए रखने की कोशिश की है. कोशिश के तहत पार्टी ने अयोध्या में सत्याग्रह के लिए कार को के जत्ये लाने के विश्व हिंदू परिषद के अभियान का समर्थन हो और चुनाव की घोषणा होने के बाद पार्टी नेतृत्व ने

मिसाल के तौर पर पूर्व भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी के हाल के चुनाव अभियान को लें, जो कि पंजाब का उनका पहला चुनावी दौरा था. उनकी अपील मुख्यतः हिंदू श्रोताओं से भी थी. लेकिन संदेश में आश्चर्यजनक रूप से नरमी थी. उन्होंने अपने समर्थकों को हिंदूवादी नारे न लगाने की चेतावनी दी. उन्होंने धर्मिनरपेक्षता को फिर से परिभाषित करने और अल्पसंख्यक समुदायों को राजनैतिक पार्टियों की जोड़-तोड़ वाली साजिश से मुक्त करने की जरूरत पर उद्देलित करने वाला भाषण दिया.

भाजपा ने अब एक नया नारा दिया है, "सबको परखा, हमको परखें." इस अभियान का मकसद दूसरी पार्टियों से सहानुभूति रखने वाले मतदाताओं को भाजपा पर दांव लगाने के लिए प्रेरित करना है. दूसरी पार्टियों के मुकाबले ज्यादा अनुशासित पार्टी की अपनी

छवि को भी भाजपा भुनाना चाहती है. उसके कार्यकर्ता हरिजनों तथा आदिवासियों के बीच दस वर्षों से जितनी मेहनत से काम करते रहे हैं, वह भी उसे चुनाव में खासा फायदा पहुंचाएगा. अस्पृश्यता, साक्षरता, स्वच्छता आदि को लेकर जो अभियान चलाए गए हैं उनका असर चुनाव नतीजों पर जाहिर हो सकता है.

#### मजबूत स्थिति

#### राम और संगठन का सहारा

गुजरातः पार्टी नेताओं को उम्मीद है कि यहां 1989 के मुकाबले बेहतर स्थिति रहेगी. 1989 में जनता दल से गठजोड़ करके पार्टी ने यहां 12 सीटों पर चुनाव लड़ा था और सभी पर विजयी हुई थी.

पार्टी ने वनवासियों, हरिजनों और अन्य पिछड़े वर्गों के कांग्रेस के परंपरागत वोट बैंक में सेंध लगा दी है. और, कभी वी.पी. सिंह के प्रमुख समर्थक रहे मध्यम वर्ग का झुकाव अब भाजपा की ओर हो रहा है. पार्टी के दूसरे बड़े नेता सुरेश मेहता कहते हैं कि 'हमको परसें' वाला नारा जोर पकड़ रहा है. चुनाव अभियान में भाजपा मुख्य प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस (इ)-चिमनभाई पटेल गठबंधन से बहुत आगे है.

उत्तर प्रवेशः इस राज्य में पार्टी की बढ़ती हुई ताकत का अंदाज कांग्रेस(इ) और जनता दल के इन बयानों से ही लग जाता है कि ज्यादातर निर्वाचन क्षेत्रों में भाजपा ही उनकी मुख्य प्रतिद्वंद्वी होगी. नारायण दत्त तिवारी कहते हैं, "इटावा और बलिया

जैसी चंद सीटों पर जनता दल से हमारी टक्कर है. बाकी क्षेत्रों में भाजपा से ही हमारा मुकाबला है." अजित सिंह भी कहते हैं, "असली टक्कर तो भाजपा से है. कांग्रेस तो तीसरे नंबर पर है."

यह पहला मौका है कि भाजपा यहां 80 से अधिक सीटों पर चुनाव लड़ने जा रही है. अब तक का इसका सबसे बढ़िया रिकार्ड 1967 का रहा है जब इसने 77 सीटों पर चुनाव लड़कर 12 पर जीत हासिल की थी. राम मंदिर वाला उन्माद तो ठंडा पड़ा है मगर पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है.

AGTE RES

विमें के निर्माण के लिए हिंदू लहर का आह्वान

लेकिन निर्वे

गेबी ग

नता दल है

गे. पार्टी हैं।

ज्यादा सीटी

गर्मले चुना

भिष्मिती, जम्मू और गुजरात से तीन यात्राएं आयोजित करके के को पुनर्जीवित किया. ये यात्राएं 4 अप्रैल को दिल्ली की भें एक विशाल जनसभा में तब्दील हो गई.

भिन्न हम पक विशाल जनसभा में तब्दील हा गई. हम उत्साह को वोटों में बदलने के लिए प्रतिबद्ध तो है ही, के हिंडुओं की आश्रांकाओं को दूर करने की कोशिश भी कर हम बहु की राम का राजनैतिक लाभ उठाने के विरोधी हैं. नतीजा भाषान के नारों का जवाब देने की कोशिश कर रही है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मुलायम सिंह ने अयोध्या में कार सेवा से निबटने की जिस तरह से कोशिश की उससे कई निर्वाचन क्षेत्रों में बड़ी संख्या में लोग भाजपा के समर्थक बन गए.

बिहारः परंपरागत रूप से समाजवादियों और कम्यूनिस्टों के प्रभत्व वाले बिहार में अचानक ही धर्म के प्रति झुकाव बढ़ा है. पार्टी महासचिव यशोदानंदन सिंह गर्व से कहते हैं, "लोगों के बीच हमारी साख बन गई है."

पिछले छह महीनों से बिहार में मंडल लहर ही दिखाई पड़ रही थी. लेकिन अब इस लहर के मुकाबले केसरिया लहर भी चल पड़ी है जिसका प्रमाण दिल्ली में विहिप की रैली में राज्य से आए लोगों की भारी संख्या है.

दक्षिण बिहार के आदिवासी क्षेत्र भाजपा के परंपरागत गढ़ रहे हैं. आज पार्टी यह देखते हुए सभी सीटों पर चुनाव लड़ने जा रही है कि आडवाणी की रथयात्रा और राज्य में उनकी गिरफ्तारी ने ग्रामीण मतदाताओं को उद्देलित कर दिया था. जिलों और ब्लाकों में अपनी निर्वाचित इकाइयों और ज्यादातर जगहों पर बूथ स्तरीय कमेटियों के कारण भाजपा जनता दल और कांग्रेस (इ) से बहुत आगे है.



राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखाः भाजपा के संगठित, अनुशासित

करनाल की सीट गंवानी पड़ी

#### पहले से बेहतर

#### बूंद-बूंद से सागर बनने की संभावना

पंजाबः यहां इसका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा है. इसका आधार शहरी गैर-सिख हैं. इनके वोट भी इसके और कांग्रेस के बीच बंटते हैं. लेकिन इस बार भाजपा 13 में 8 सीटों पर चुनाव लड़ रही है

और शहरी इंकाई मतदाताओं को अपनी तरफ मोड़ना चाहती है हरियाणाः हरियाणा में यह अपने बूते सभी 10 सीटों पर चुनाव लड़कर बड़ा दांव खेल रही है. 1989 में देवीलाल से चुनाव समझौते के कारण इसे अंबाला और

थी. अंबाला के बुजुर्ग नेता कुल (प्रमुख मीटे) सूरजभान जैसे एक-दो 161 प्रमुख राज्यों में 45.3 पार्टी का प्रदर्शन 39.7 (1989 चुनाव) 85 नडों 30.5 24.7 26.2% महाराष्ट् बिहार दिल्ली मीटों की राजस्थान गुजरात हिमाचल प्रदेश हरियाणा 40 48 25 26 10

### वोटों के वारे-न्यारे

पिछले चुनाव में भाजपा ने 225 सीटों पर चुनाव लड़ा और 11.4 फीसदी वोट हासिल करके 86 सीटें जीती. लेकिन पार्टी की चुनावी संभावनाओं का रमसे सही अंदान नहीं नगाए कर किया है कि किया है कि किया है कि सीटें जीती. लेकिन पार्टी की चुनावी संभावनाओं का इससे सही अंदाज नहीं लगाया जा सकता. दिल्ली और मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिटार जैसे अटम राज्यों में दसे मिले होतें हुए किल और बिहार जैसे अहम राज्यों में इसे मिले वोटों का औसत राष्ट्रीय औसत से ऊपर था. इसके अलावा तब अहम राज्यों की कृत 200 में से 161 सीटों पर दसने ही चनाव लहा थर राज्यों की असत से ऊपर था. इसके अलावा तब अहम राज्यों की कि 299 में से 161 सीटों पर इसने ही चुनाव लड़ा था. इस बार पार्टी 425 से ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ रही है. इसे उम्मीद है कि हिंदी क्षेत्र—बिहार और उत्तर प्रदेश में तिकोने संघर्ष में उसे अच्छा फायदा होगा, और पारंपरिक गढ़ों में बढ़त कायम रखते हुए यह दक्षिण में और ज्यादा वोट पाकर कुछ और सीटें हासिल करेगी.

तद अभियान खताओं के क

गालः पार्टी

सा प्रदर्शन अ 1294 में से 2 गर्टी ने 198 जी कोशिश ट कर मजबूत प्रतिशत से व में उसे 1. १ प्रतिशत व कमजोर नह गेहाः भाजपा व खती है. वेषर उसकी र वनवासी जि वहोंने की उम ने की कोशिश प्रदेशः यहां नीद है. जहां ताओं की

क्रिक विक भी मोधी अर्प 1989 : عالم महाराष्ट्र में है के रूप में अ ेंभी मानते हैं किना गठजोड

मा अध्यक्ष ए

िया बड़े वि नित हप से ने मीटें जीतें भुने लोकस भीतमत बोट

भीटें और तिता मुकाबले जीवत मतद



नव अभियान के वाहक

चाहती है

पर चुनाव

ाव समझौते

ल

बोदो

चुनावी

र प्रदेश

हए यह

उम्मीदवारों को लोकसभा के लिए भाजपा के सभी उम्मीदवार बिलकुल नए हैं. पार्टी को उम्मीद है कि अंबाला, करनाल और कुरुक्षेत्र के जी.टी. रोड वाले क्षेत्र में उसका प्रदर्शन अच्छा रहेगा क्योंकि वहां किसी जाति का प्रभुत्व नहीं है.

कर्नाटकः पिछली बार यहां की 5 सीटों पर चुनाव लडकर एक भी सीट न जीतने वाली भाजपा इस बार आत्मविश्वास से भरी हुई दिखती है. कांग्रेस(इ) के झगड़ों, सरकार की खराब छवि और कांग्रेस(इ) के खिलाफ एकजूट होने में जनता दल, जनता दल और अन्य दलों की

लताओं के कारण भाजपा का मनोबल बढ़ा है. लालः पार्टी को पूरा विश्वास है कि इस बार इस राज्य में ग्रप्रदर्शन अच्छा रहेगा. वैसे, भाजपा ने यहां 32 संसदीय सीटों 💯 में से 240 विधानसभा सीटों पर लड़ने का फैसला किया चारं ने के ने निर्दी ने 1987 में जब से इस राज्य में पैर जमाया है तब से को कोशिश यही रही है कि वह बढ़ते जन असंतोष का फायदा कर मजबूत विकल्प बने. 1987 के विधानसभा चुनाव में उसे प्रतिगत से भी कम वोट मिले थे. लेकिन 1989 के लोकसभा व में उसे 1.77 प्रतिशत वोट मिले. 1990 के निगम चुनावों में रिप्रतिशत वोट मिले. महासचिव पारस दत्त कहते हैं, "अब हम क्मजोर नहीं रहे.'

का भाजपा यहां भी अपनी स्थिति और मजबूत करने का ा खती है. 1989 में इसने छह सीटों पर चुनाव लड़ा था और पर उसकी जमानत जब्त हो गई थी. फूलबनी और कालाहांडी जनासी जिलों में, जहां ईसाई मिशनरियां सक्रिय हैं, पार्टी को होंने की उम्मीद है. यहां ईसा के मुकाबले यह राम को खड़ा की कोशिश कर रही है.

प्रितेशः यहां पार्टी को इंका विरोधी वोटों में भागीदारी की हैं जहां तक तेलुगु देशम का सवाल है, उसके प्रति जाओं की उदासीनता पहले की तरह बरकरार है. प्रदेश मा अध्यक्ष एम. वेंकय्या नायडू कहते हैं, "हम भरोसेमंद और शिक विकल्प के रूप में दिख रहे हैं. इसलिए मतदाताओं से भी भी भी अपील यह है कि वे हमें भी एक मौका दें."

क्ष्या १९ हाक वहमा मा एक नाम में दक्षिणपंथी, हिंदूवादी गठजोड़ ने कांग्रेस(इ) के हिराष्ट्र में 48 में से 14 लोकसभा सीटें जीतकर मुख्य विपक्षी के हम में अपनी पहचान बनाई थी. 1991 में, मुख्यमंत्री शरद भी मानते हैं कि सत्तारूढ़ दल को सबसे बड़ी चुनौती भाजपा-गठजोड से हैं. राज्य भाजपा के महासचिव धर्मचंद ि विश्वास से दावा करते हैं, "इस बार हमारा प्रदर्शन के <sup>१९ । वश्</sup>वास से दावा करते हैं, ''इस बार हमा का किस हैं। भी भीटें की किस होगा. गठजोड़ में शामिल दोनों पार्टियां ्री भीटें जीतेंगी.'

भिक्षतमा चुनाव में नवगठित भाजपा-सेना गठजोड़ ने भीभित वोट झटककर सनसनीखेज शुरुआत की थी. सेना ने भीटें और आठककर सनसनीक्षेज शुरुआत का जा पिर भीर भीजपा ने 10 सीटें जीती थीं. राज्य में फिर भार भाजपा ने 10 सीटें जीती था. राज्य सिलमान के मुसलमान के कारण रिक्षित होंगे, और भाजपा को उम्मीद ह ।क गुरास भाजपा को उम्मीद ह ।क गुरास भाजपा के कारण

उम्मीदवारों का चयन

#### च-समझकर



इस पार्टी के उम्मीदवारों की सूची में वकीलों की बहुतायत है. जैसे, मध्य प्रदेश में भाजपा का हर चौथा उम्मीदवार अवकाशप्राप्त अधिकारियों को भी लगभग इतनी ही प्रमुखता प्राप्त है. उत्तर प्रदेश से इसके उम्मीदवारों की सूची

अवकाशप्राप्त डीआईजी हैं-श्रीशचंद्र दीक्षित, भारतेंद्र प्रकाश सिंघल और श्यामलाल. लेकिन सबसे चर्चित नाम है पूर्व महा लेखापरीक्षक त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी का. आधे दर्जन भगवा वस्त्रधारी साधु भी भाजपा उम्मीदवार हैं.

पार्टी ने इंका से दलबदल करके आने वालों को भी टिकट दिए हैं. जैसे प्रसिद्ध इंका नेता मोहनलाल गौतम की बेटी शीला गौतम अलीगढ़ से इसकी उम्मीदवार हैं.

वी.पी. सिंह के 'मंडल अस्त्र' की काट के लिए उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश में उसने अन्य पिछडी जातियों को पर्याप्त संख्या में टिकट दिए हैं. महिलाओं को भी पर्याप्त प्रतिनिधित्व मिला है. अकेले मध्य प्रदेश में पार्टी

पार्टी के उम्मीदवारों की सूची में वकीलों की बहुतायत है, तो अवकाशप्राप्त सेनाधिकारियों और पुलिस अधिकारियों की भी अच्छी संख्या है. विहिप कार्यकर्ताओं, हरिजनों, महाराजाओं और मुसलमानों को भी टिकट दिए गए हैं

ने पांच महिला उम्मीदवार खडे किए हैं. विजयराजे सिंधिया के ग्वालियर राज परिवार के अलावा मध्य प्रदेश, कर्नाटक, ओडीसा, बिहार और उत्तर प्रदेश के पूराने रजवाड़ों के अनेक वंशज इस पार्टी की ओर से चुनाव मैदान में हैं.

पार्टी उपाध्यक्ष मुंदर सिंह भंडारी कहते हैं, "इन लोगों का चयन इनके जीतने की बेहतर संभावना के चलते ही हुआ है." इसी कारण विक्टर बनर्जी, अरविंद त्रिवेदी, दीपिका जैसी फिल्मी हस्तियों, चेतन चौहान जैसे खिलाडी और अवकाशप्राप्त अधिकारी चतुर्वेदी का भी चयन किया गया.

पार्टी ने विश्व हिंदू परिषद और उसकी युवा शाखा बजरंग दल के लोगों को भी टिकट दिए हैं. उत्तर प्रदेश बजरंग दल के प्रमुख विनय कटियार फैजाबाद से चुनाव लड़ रहे हैं. महंत अवैधनाथ गोरखपूर से इस बार भाजपा के उम्मीदवार हैं. कार सेवा और अयोध्या आंदोलन में जिन लोगों ने अगुआई की, उन्हें उम्मीद के अनुसार ही टिकट भी मिले हैं. जैसे, दक्षिण के कार सेवकों की जिम्मेवारी संभालने वाले प्रकाश नारायण त्रिवेदी को बांदा से टिकट मिला है.

साथ ही खुद पर से सांप्रदायिकता का लेबल उतारने के लिए भाजपा ने करीब आधा दर्जन मुसलमानों को भी टिकट दिया है.

वह कांग्रेस(इ) के वोट बैंक में और बड़ी सेंध लगाएगी. उसका गठजोड़ राम मंदिर को मुख्य चुनावी मुद्दा बना सकता है.

#### कड़ा मुकाबला

#### असली चुनौती के क्षेत्र

# पहले से बदतर

असलियत खुलने के खतरे

मध्य प्रदेशः हाल में मह की रैली में पार्टी के सबसे करिश्माई वक्ता अटल बिहारी वाजपेयी का ठंडा स्वागत और जन जागरण अभियान के दौरान राज्य में पार्टी अध्यक्ष मुरली मनोहर जोशी ॣ्रारहा है कि सत्तारूढ़ पार्टी किसान विरोधी है.

का इससे भी ठंडा स्वागत यही दर्शाता है कि अपने ही गढ़ में भाजपा की हालत पतली है. राज्य में पार्टी का कामकाज निराशाजनक तो रहा अभूतपूर्व गृटबाजी से भी उसकी ताकत क्षीण होती रही है.

गैर इंकाई वोटों के बंटने से भाजपा को सबसे ज्यादा नुकसान होगा. पिछली बार उसे जनता दल से गठबंधन के कारण लाभ मिला था. पार्टी का नया नारा 'हमें परखें' शायद काम नहीं देगा क्योंकि मतदाताओं ने उसे लिया है और कसौटी पर खरा नहीं पाया है.

राजस्थानः मुख्यमंत्री भैरों सिंह शेखावत राज्य में पार्टी एकमात्र प्रभावशाली और लोकप्रिय नेता इस चुनाव में उनकी राजनैतिक दक्षता की कड़ी परीक्षा होगी.

लेकिन शेखावत की स्थिति ढुलमुंल है. वे विपक्षी एकता का महत्व अच्छी तरह समझते हैं जिसके कारण इंका को पिछली बार यहां 37 फीसदी बोट मिलने के बावजूद एक भी सीट नहीं मिली थी. विपक्षी पार्टियों में एकता न होना भाजपा के लिए सबसे ज्यादा नुकसानदेह है. इसके लिए दूसरी सबसे नुकसानदेह चीजें हैं—शेखावत गुट और मंत्रिमंडलीय सहयोगी ललित किशोर चतुर्वेदी के नेतृत्व वाले 'आरएसएस गुट' के बीच तनातनी, कमजोर संगठन और असंतुष्ट कार्यकर्ताओं की संख्या में वृद्धिः

राजस्थान

तमिलनाड्

उत्तर प्रदेश

पश्चिम बंगाल

अन्य राज्यों को छोड़कर

भाजपा-शिवसेना गठजोड

25 13

39 0

85

42 0

484

8

पिछली बार पार्टी को वोट देने वाले जाटों का इससे नाराज होना और इंका द्वारा हरिजनों तथा मुसलमानों के बीच अपने बोट बैंक फिर से हासिल करने की कोशिश करना भी भाजपा के बिलाफ जाएगा. लेकिन 1989 के चुनाव की तरह अगर मुसलमान फिर जनता दल की तरफ झुके तो भाजपा को परोक्ष रूप से फायदा ही होगा.

हिमाचल प्रदेशः मुख्यमंत्री शांताकुमार कई मोर्ची, खासकर सेव नीति के मामले पर अपनी सरकार की विफलता की सफाई के की कोशिश कर रहे हैं. ताकतवर सेब लॉबी उनके खिलाफ हो गई है. इस लॉबी को शांत करने के लिए कई तरह की महत्वपूर्व रियायतें देने की घोषणा की गई. लेकिन लोगों का विश्वास कांग्रेस (इ) और जनता दल के इस प्रचार पर जाता नजर आ

> असमः यहां पार्टी का पहले का प्रदर्शन भने ही प्रभावशाली न रहा हो लेकिन पार्टी इस बार कुल 14 में से 7 सीटों पर चुनाव लड़ है. और वह हिंदीभाषी समुदाय के समर्थन पर भरोसा कर रही है. ये समुदाय उल्फा के आतंक से भाजपा के करीब आ गए हैं. भाजपा का प्रयास उन जगहों पर मौजूदगी का एहसास कराना है जहाँ उसका अब तक कोई केरलः पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा ने यहाँ की सभी 20 सीटों पर चुनाव लड़ा था लेकिन उसे एक भी सीट पर उसे 4.51 भी

क्या

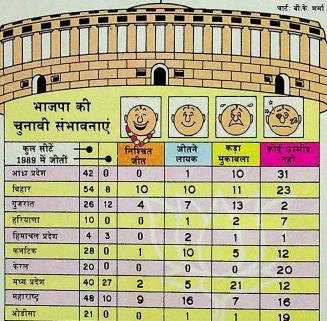
यदि ह

यदि न

वजूद ही नहीं था. जीत हासिल नहीं हुई थी. फिर प्रतिशत वोट मिले हैं. सिद्धांत रूप से भाजपा मार्क्सवादियों को अपना कट्टर दुश्मन मानती है

जिनका वह अंततः बाला चाहती है. इसलिए उसकी फौरी चिंता जीतने की नहीं बल्कि चुनावी प्रक्रिया और वोटों के प्रतिशत के बढ़ोतरी के जरिए अपना वजूद और ताकत बढ़ाने की है तमिलनाडुः पार्टी ने 39 में से 11 लोकसभा सीटों पर लड़ने की महत्वाकांक्षी योजना बनाई है. उसे उम्मीद है कि वह कुछ सी जीतेगी. तिमलनाडु में भाजपा की जीत के भले ही कोई आसा नजर न आएं लेकिन बहुत कुछ पार्टी के प्रभाव वाले जिलों है इसके उम्मीदवारों और प्रतिद्वंद्वियों पर निर्भर करता है 1989 तक भारत तक भाजपा यहां कोई महत्वपूर्ण राजनैतिक ताकत नहीं बी लेकिन आज यहां पार्टी की प्राथमिक सदस्यता 1.25 क्रांस बढ़कर 5 लाख हो गई है. कोयंबतूर, नीलगिरि, कन्याकुमारी और मदुरै में उसकी स्थिति अपेक्षाकृत मजबूत है.

- एम. रहमान, अमरनाथ के. मेनन, फरजंद अहमद, नर्देव कुमार लिए विलीप अवस्थी, कंबर संघू, रमेग नेत्र आनंद विश्वनाथन की रिपोर्टों के आधार प्र



चार्ट इंदिया दुड़े के प्रदेश संवादबाताओं के आकलन के आधार पर बनाया गया है. यह किसी वैज्ञानिक सर्वेक्षण पर आधारित नहीं है पर इससे अप्रैल के दूसरे हफ्ते में हवा के रख और मतदाताओं के मूड की एक सलक मिलती है जब पार्टियों ने लोकसमा चुनावों के लिए अपने उम्मीदवारों की योषणा नहीं की थी.

3

0

21

77

9

0

43

0

123

12

39

10

42

246

1

11

0

38

सीटें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



महाराजा मिक्सर-ग्राइंडर

हेवी ड्यूटी मोटर। जो लगातार 60 मिनट तक काम करते रह सकती है। 3 जार — आपके हर कोर्स को एक खास यादगार खाद देने के लिए। मनमोहक और कभी न टूटने वाली केसिंग। मोटर कपिलंग ऐसी मजबूत कि टूटने का सवाल ही नहीं।



महाराजा सैंडविच टोस्टर लाजवाब डिजायन । और सैंडविच तैयार होने पर अपने आप बंद हो जाने की सुविधा ।



महाराजा वैक्यूम क्लीनर गंदगी खींचने की 30% अधिक क्षमता। स्टोरेज

क्षमता 8 लीटर । पहियों पर लगी ए बी एस बॉडी जिससे झटकों का पता ही न चले ।



यदि हां, तो आपने कुछ गंवा दिया।

क्या आपने कभी महाराजा को नज़र अंदाज़ किया है?

ासकर सेव सफाई देने खिलाफ हो महत्वपूर्ण

ा विश्वास

नजर आ

पार्टी का

दर्शन भने

ली न रहा

पार्टी इस 4 में से 7

नुनाव लड़

और वह

मुदाय के रोसा कर

दाय उल्फा

भाजपा के

हैं. भाजपा जगहों पर

T है जहां

तक कोई

लोकसभा

पा ने यहां

सीटों पर

या लेकिन

सीट पर

हीं हुई थी.

उसे 4.51 मिले थे.

से भाजपा को अपना मानती है

तः सात्मा

लए उसकी

र वोटों है

ढ़ाने की है

लड़ने की

कुछ सीरे इ आसार

जिलों में

青. 1989

नहीं धी

त्ताव ते मारी और

कुमार सिंह रमेश वेतन आधार पर

दगी

महाराजा वॉशएड

जानदार मोटर जो 3 घंटे तक बिना रुके काम कर सकती है और कुछ भी घो डालने की क्षमता रखती है — चाहे लेस हो या भारी पर्दा। आवश्यकतानुसार घोने, निचोड़ने और सुखाने की अलग-अलग टाइमिंग और काम करने के विभिन्न तरीकों में उपलब्ध। विशेष बज़ अलार्म। कास्टर्स। और भी कई सुविधाएं। ये सब स्टील की मजबूत बॉडी में, जिस पर खरोंचों का कोई असर न पड़े।



जूसर-ब्लेंडर अत्यधिक मजबृत और तेजे-रफ्तार मोटर। सेल्फ-क्लीनर भी बड़ा आरामदायक।

महाराजा ऑटो आयरन (प्रेस) तत्काल गर्म होने वाली। तीन तरह के तापमान की सुविधा।

महाराजा

अत्याधुनिक प्रभावकारी स्प्रे-अटैचमैन्ट। शॉकप्रूफ बॉडी।

महाराजा रुपये का पूरा मूल्य देता है। महाराजा का हर प्रॉडक्ट आपकी आवश्यकताओं के अनुरूप है। जिससे आपको, हर छोटी से छोटी सुविधा भी प्राप्त होती है।अगली बार जब आपको किसी घरेलू उपकरण की आवश्यकता हो तो अपने रुपये के पूरे मूल्य का ही सौदा लें और महाराजा का ही चयन करें.

अधिक जानकारी के लिए : **महाराजा इंटरनेशनल** लि. 86. विक्रम टावर, 16. राजेन्द्रा प्लेस, नई दिल्ली-110 008 फिस: 573104, 5755919, टैलेक्स : 3177246 MIL IN —Maharaja—

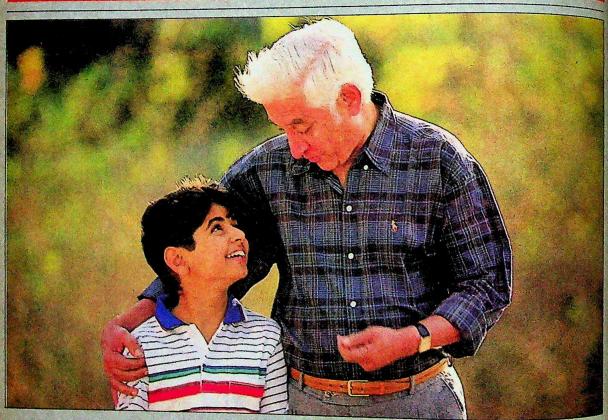
WHITELINE

APPLIANCES

Arithein/IM/1120 Hin (R)

ये आपकी खुशी के लिए कुछ भी सह लेंगे।

#### एक पहचान



# हमारी बहुमूल्य निधि

#### ग्राहकों की आस्था

ग्राहकों से हमारे प्रगाढ़ सम्बन्ध — हमारी बहुमूल्य निधि की परिभाषा।

जी हाँ! हमारे ग्राहकों की आस्था और उनसे हमारे प्रगाद सम्बन्ध ही हमारी बहुमूल्य निधि है। और है इस विश्वास का प्रमाण हमारे पॉलिसी-धारकों का विशाल समुदाय। जो कि 45 लाख से भी अधिक है। इस संख्या को आप "विशाल" कहेंगे ना!

#### प्रिय ग्राहकगण

आपकी सुरक्षा और उससे सम्बन्धित आपकी सभी जरूरतों की पूर्ति हमारा सतत् उद्यम रहा है।

हमारी ग्राहक-सेवा का एक नया आयाम है — एक विशेष 'ग्राहक-परामर्श' अनुभाग । यह सेवा आपको हमारे बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली तथा अन्य कई क्षेत्रीय कार्यालयों में उपलब्ध है। आपकी शिकायतों पर समुचित विचार तथा हर सम्भव समाधान के लिए एक विशेष विभाग तो कृत संकल्प है ही। इसके अतिरिक्त हमारी आन्तरिक प्रणाली द्वारा बकाया दावों की निरन्तर समीक्षा तो की ही जाती है।

औद्योगिक क्षेत्र के लिए उपयुक्त सुरक्षा सम्बन्धी सेवा भी उपलब्ध है — निःशुल्क! बिना किसी पूर्वाग्रह के आप इस सेवा का लाभ उठा सकते हैं, चाहे आपने हमसे बीमा ले रखा हो, या लेना चाहते हों।

#### प्रिय पॉलिसी-धारक

है। CC-0. In Public Domain. Gurukul Kanghi Edllection, Haridwar ओरिएण्टल की विशिष्ट परम्पा

आपकी सन्तुष्टि, आपकी आस्था, तथा आपक 'ओरिएण्टल' में विश्वास ही हमारी बहुमूल्य निधि है।



ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड

(जनरल इंश्वोरेस कॉपोरेशन ऑफ इण्डिया की सहायक कंपनी

याहकों से सौजन्य -

वंफादार जाते हैं. य

वाजपेयी, नालकृष्ण वष विजयराजे तिकडी सर्वशक्ति म है. ये सर्भ मे अधिक

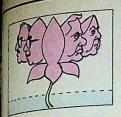
बारएसएस अंग्रेजी पहली बा विचारधाः साथ वे पृ

H मन्व (57 (70 auf) जोशी को सर्वोच्च ि महत्वपूर्ण इलाहा विद्यालय भौतिकशान

प्रोफेसर परंपरा से हैं कुमाउं बाह्यण . **आक्रामक** 

दे करते महरी पंज वहनाने वाल निए उपल

वस्तार 'उ वर बहस च



संगठन तंत्र

# नेता जो मायने रखते हैं

भाजपा का ढांचा बेहद अनुशासित और संस्थागत है. इसमें नियम-कायदों और आदेशों का कड़ाई से पालन होता है. पार्टी में न तो अज्ञात रूप से काम करने वाले दरबारी हैं, न ऐसे

कादार जो किसी खास नेता का गुणगान करते हों. सभी फैसले विभिन्न स्तरों पर खुली बहस के बाद सर्वसम्मित से लिए कारी हैं. यही बाद में पार्टी लाइन बन जाती है. इसके बाद कोई भी व्यक्ति दूसरों पर मनमर्जी नहीं लाद सकता.

#### सर्वोच्च तिकडी

खले एक दशक में 61 वर्षीय अटल बिहारी वर्षीय 63 नालकृष्ण आडवाणी और राजमाता वर्षीया विजयराजे सिधिया की पार्टी तिकडी सर्वशक्तिमान बनकर उभरी है. ये सभी पिछले 30 साल मे अधिक अरसे से पार्टी या भारएसएस से जुड़े रहे हैं.

अंग्रेजी बोलने वाले, पश्चिमी संस्कृति में ढले आडवाणी को पहली बार जननेता के रूप में पेश किया जा रहा है. पार्टी विचारधारा के सबसे सशक्त पोषक और प्रवक्ता होने के साथ-माथ वे पूरी तरह संगठन के प्रति समर्पित हैं. गंभीर, और



संतुलित वाजपेयी उदारता के प्रतीक हैं. कुंआरा, कवि, भाषण देने में माहिर, मिलनसार और उत्तम भोजन का आकांक्षी यह नेता बदलाव और समझौते की लाइन को भी मुखरता प्रदान करता है. नारीत्व की शक्ति की प्रतीक तथा दुर्गा और रानी झांसी के गुणों का मिश्रण राजमाता हिंदुत्व की

इस कदर प्रबल समर्थक हैं कि लोगों की भावना को छुने की क्षमता रखती है.

विचारों और मुद्दों के प्रवर्तन में इन तीनों का रोजाना संपर्क रहता है. यहीं से पार्टी लाइन बनकर निचले स्तरों पर पहुंचती है.

सबको साथ लेकर चलने वाला है. मराठी ब्राह्मण ठाकरे कड़े अनुशासन के हामी और कर्तव्यनिष्ठ हैं और भूल के लिए किसी

वरिष्ठ नेता तक को नहीं बल्शते. भंडारी सर्वोच्च तिकड़ी के बाद

सबसे ताकतवर नेता हैं. वे पदाधिकारियों तथा उम्मीदवारों के

#### महत्वपूर्ण चौकड़ी

मन्वय समिति पार्टी अध्यक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी (57 वर्ष), कुशाभाऊ ठाकरे (69 वर्ष), सुंदर सिंह भंडारी (70 वर्ष) और गोविंदाचार्य (44 वर्ष) से मिलकर बनी है. गेंगी को छोड़ बाकी सभी सिक्रिय आरएसएस प्रचारक हैं. ये भवींच्य तिकड़ी और निचले स्तर के कार्यकर्ताओं के बीच महत्वपूर्ण माध्यम हैं.

इलाहाबाद विश्व-विद्यालय भौतिकशास्त्र के प्रोफेसर जोशी परंपरा से जनसंघी है कुमाऊं का यह ब्राह्मण भाषण में **ओक्रामक** और

ा आपका

हमूल्य

व्या









चयन में निर्णायक भूमिका निभाते हैं. तमिल ब्राह्मण गोविंदाचार्य व्यक्तित्व अद्भुत वाले नेता हैं. चुनाव क्षेत्रों और उम्मीदवारों गणित उंगलियों पर गिन लेने की वजह से 'चलता-फिरता कंप्यूटर' कहा जाता है.

#### छह का समूह

करते हैं. उपाध्यक्ष, 67 वर्षीय कृष्णलाल शर्मा पार्टी के महरी पंजाबी भरणार्थी रुख की अभिव्यक्ति हैं. सफारी सूट िलाने वाला आरणार्थी रुख की आभव्याक्त हुए अस्ति प्रेस के किए अपना आरएसएस का यह प्रचारक किसी भी समय प्रेस के किए उपलब्ध रहता है. 70 वर्षीय केवल रंतन मल्काणी पार्टी भितार 'आर्गेनाइजर' का संपादन करते हैं और वैचारिक मुद्दों के किस्तार के किस के किस के मुद्दों के किस किस के किस कि भा बहुस चलाए रखते हैं. आरएसएस के तेजतर्रार नेता रहे पार्टी

महासचिव, केरल के 61 वर्षीय ओ. राजगोपाल को दक्षिण भारत में संगठन की रीढ़ माना जाता है. मुंबई के छोटे उद्योगपित, 64 वर्षीय वेदप्रकाश गोयल पार्टी कोष के लिए धन जुटाते हैं. महाराष्ट्र के देवदास आप्टे के जिम्मे पोस्टर और प्रचार सामग्री बांटने का काम है. और दिल्ली के 60 वर्षीय केदारनाथ साहनी भी उद्योगपतियों और परंपरागत शहरी व्यापारी बोट बैंक से संपर्क का काम देखते हैं.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri प्रचार अभियान

#### परदे के पीछे के योद्धा

ज्ञार एवं अभियान समिति के संचालक के.आर. मल्काणी हैं पर इसके दिशा-निर्देशन का काम 39 वर्षीय अरुण जेतली करते हैं, जो वी.पी. सिंह सरकार में अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल हुआ करते थे. समिति के दूसरे सदस्यों में ये लोग भी शामिल हैं: आरएसएस के प्रतिबद्ध कार्यकर्ता और परदे के पीछे रणनीति गढ़ने वाले, गुजरात के नरेंद्र मोदी, जिनका राज्य के दलितों में अच्छा-खासा प्रभाव माना जाता है. फिर, महाराष्ट्र के दिग्गज और भाजपा के राष्ट्रीय सचिव, 47 वर्षीय प्रमोद महाजन हैं, जिन्होंने आडवाणी की रथयात्रा का संचालन किया. और संघ के प्रचारक, 73 वर्षीय जगदीश प्रसाद माथुर हैं जिनके जिम्मे मुख्य काम खासकर क्षेत्रीय समाचार जगत से संपर्क साधना है.

# संघ से संबंध

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भाजपा और विहिप के बीच जो घनिष्ठ संबंध है, उसे मजबूती देने का दारोमदार आरएसएस पर ही है.

आरएसएस से संबंधः भाजपा का हर दूसरा केंद्रीय और प्रादेशिक पदाधिकारी या तो आरएसएस का समर्पित प्रचारक या स्वयंसेवक है अथवा रह चुका है. पार्टी पर आरएसएस की पकड़ 1988 के बाद से निरंतर मजबूत होती रही है, जब भाजपा ने जनसंघ के उग्र हिंदुवादी पूराने स्वरूप की ओर लौटने का निर्णय किया था. इससे पहले भी जब भाजपा के बड़े नेता वार्षिक सम्मेलन के लिए नागपूर स्थित आरएसएस मुख्यालय में जमा हुआ करते तब पार्टी को राजनैतिक दिशा-निर्देश यहीं से मिला करता. दिल्ली में भाजपा और आरएसएस के अन्य सगठनों के बीच नियमित संपर्क बना रहता है.

चयन प्रक्रियाः जिस उम्मीदवार की सिफारिश जिला इकाई नहीं करती, उसे आलाकमान से स्वीकृति मिलनी लगभग असंभव ही है क्योंकि चयन प्रक्रिया में आरएसएस के स्थानीय नेता णामिल रहते हैं. मिसाल के तौर पर, दिल्ली के वरिष्ठ आरएसएस नेता कौशल किशोर उम्मीदवारों के चयन के समय लखनऊ में मौजूद थे और एक अन्य नेता शंकर तिवारी पार्टी की विहार इकाई की मदद कर रहे थे.

जिला इकाई पहले कुछ नामों की सूची तैयार करके उसे राज्य संसदीय बोर्ड को भेज देती हैं. फिर कमोबेण हर मामले में संघ के राज्य स्तरीय नेता उस सूची पर अपनी राय देते हैं और तब वह सूची केंद्रीय संसदीय बोर्ड को भेज दी जाती है. भाजपा महासचिव गोविंदाचार्य के अनुसार, ''हम पार्टी के स्थानीय नेताओं पर विश्वास करते हैं. जरूरी न हो तो ऊपर से किसी को थोपा नहीं जाता."

इसके अलावा, इस चुनाव में केवल आरएसएस के स्वयंसेवकों को ही पैसे की देखभाल, प्रचार सामग्री के वितरण, मतदान केंद्रों पर व्यवस्था और मतदाताओं को घरों से बाहर आने के लिए प्रेरित करने जैसे महत्वपूर्ण दायित्व सौंपे जा रहे हैं.



वन पर लिख

ज़नी सांस्कृ

वं स्टिकर भं ह लिखा हो

ने बोट दुगा.

अभियान

इं और रंगी

र्गंडयां वांटी

सत के फुल

प्रचार के नि

हे मुसलमान

नवाया जाए

लिमान वि

नार अभिया

हे पैमाने पर

किह्यां अपन

गीहत्य संघ दे

ल्म की शूरि

पहला कैसे

बीए दूसरे द

भें इस मनो

काजन तथा

इस वीडियं

किंहें का पू

वने है जब

मिका में हैं

हमरे कैसेट की की रा

केव्हिया, रा

नाओं का

मध्याओं पर

जागार भाव वा है इसव कियों में प्रद

भाजा

मीता-रा

मतदाताओं को चूड़ियों, टी शर्टों, चाबी के रिंग और बिदियों आदि से लुभाने की तैयारी

पने विरोधी के तरकश से ही तीर निकालका होंगी चनावी हमला बोलने से बढ़िया तरीका और क्या हो सकता तीनी पर इन है. भाजपा ने यही किया है. भाजपा के महासचिव गोविंदाचार्य हा कहना है, "हमने स्थिरता का नारा चुरा लिया है." और इं राष्ट्रवाद से जोड़ दिया है. "सिर्फ राष्ट्रवाद ही स्थायित्व दे सकता है.' यह तर्क उनके मुख्य मुद्दों में एक है. भाजपा खुद को एकमान स्थिर पार्टी के रूप में पेश कर रही है.

भाजपा ने इंका से और बहुत कुछ भी ले लिया है. भाजपा नेता अरुण जेतली के शब्दों में, "हमने उनके 1989 के अभियान का विचार ले लिया है. हम इस बात पर जोर दे रहे हैं कि हम अकेने अपने बूते पर ही चुनाव लड़ रहे हैं." इसलिए उनका नया नार है—देश में साझा सरकार नहीं चल सकती. अटलबिहारी वाजपेर्य इसे यों कहते हैं कि भाजपा 'खीर' देगी दूसरों की तरह 'खिबई। सरकार' नहीं.

पार्टी अपनी अलग पहचान बनाने की कोशिश में है. मसला गह कश्मीर का हो, पंजाब का या असम का, प्रखर राष्ट्रवाद ही इसपूर अभियान का मूलमंत्र है. पार्टी के सदस्य इसे "उप-राष्ट्रवारी मानसिकता" के खिलाफ एक औजार मानते हैं. उसका नया नाए है, "वे जाति-जाति से तोड़ेंगे, हम संस्कृति से जोड़ेंगे." उसके अभियान में अयोध्या का जिक्र तो सबसे प्रमुखता से होगा ही ग इसे राष्ट्रीय अस्मिता और एकता के प्रतीक से जोडा जाएगा.

भाजपा अपना पुराना, परंपरा अनुगामी होने का चोला भी उतारकर फेंक रही है. इसका महत्वपूर्ण वोट बैंक युवक हैं और 4 अप्रैल की विश्व हिंदू परिषद की रैली से यह जाहिर भी हो गया है इसलिए प्रचार अभियान में कागज की टोपियां भी बाटी जाएंगी



पोस्टरों के जरिए उग्र प्रचारः एकता पर जीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

क्ष पर तिखा होगा, "मुझे त्ती सांस्कृतिक विरासत गार्व है." इसके अलावा वं स्किर भी होंगे जिन पर ह लिखा होगा, "मैं भाजपा

ने बोट दूगा." अभियान में इस तरह की हुं और रंगीनियां भी शामिल मीता-राम लिखी र्नुयां बांटी जाएंगी तथा मत के फूल वाली कमीजें भी हों। भाजपा बिदिया भी

गरद सक्तेना

ग और

निकालकर

रा हो सकता

वदाचार्य का " और इसे

त्व दे सकता

को एकमात

भाजपा नेता

रिभयान का **हम अकेले** 

नया नारा

री वाजपेवी

रह 'सिचडी

मसला चाह

इ ही इस पूरे

प-राष्ट्रवादी

नया नारा

डेंगे." उसके

होगा ही पर

चोला भी

त हैं. और

हो गया है

ाटी जाएंगी

नाएगा.

होंगी पर इन विदियों पर कमल का फूल बना होगा. कुछ विदियां गमनामी भी होंगी.

पिछले अभियान के मुकाबले इस अभियान का आकार-प्रकार भी काफी भारी-भरकम होगा. पार्टी अपनी शोभायात्रा इस बार बिहार, गुजरात, पश्चिम ओडीसा, कर्नाटक

80 अखबारों और पत्रिकाओं में विज्ञापन निकालने की योजना बनाई जा रही है. इनमें से कुछ में आरक्षण, अयोध्या, कश्मीर और उप-राष्ट्रीय मानसिकता जैसे मुद्दों पर आडवाणी, वाजपेयी और म्रली मनोहर जोशी की कही गई बातें होंगी.



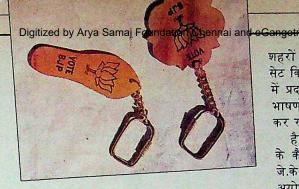
प्रवार के लिए टी शर्ट

एक और नया कदम यह होगा पुमलमानों के नाम आडवाणी के खुले खत का विज्ञापन <sup>आताया</sup> जाएगा, जिसमें आडवाणी बताएंगे कि उनकी पार्टी जिमान विरोधी नहीं है. दूसरी पार्टियों के विपरीत भाजपा का भार अभियान काफी कुछ विकेंद्रित है. इस बार वीडियो को भी केमाने पर आजमाया जाएगा. महाराष्ट्र और गुजरात की पार्टी भारां अपनी वीडियो फिल्में खुद बना रही हैं. मुंबई के मराठी िय संघ प्रेक्षागृह में भाजपा-शिवसेना गठजोड़ के लिए बन रही ल्य की शूटिंग चल रही है.

हिंग कैसेट लोक नाट्य शैली का है जिसमें नृत्य और गीतों के कि दूसरे दलों के नेताओं की खिल्ली उड़ाई गई है. साठ मिनट हिंस मनोरंजन फिल्म के बीच-बीच में आडवाणी, ठाकरे, का तथा दूसरे कई नेताओं के छोटे-छोटे संदेश हैं.

भ वीडियो फिल्म के 30 मिनट के मुख्य भाग का मुख्य पात्र है कि को पुलिस सिपाही अजय वाडवकर. इसमें भी वे सिपाही को है जबकि मराठी अभिनेत्री प्रिया अरुण 'जनता देवी' की कि में हैं जो अपना स्वयंवर रचाती हैं.

को कैसेट को भाजपा ने 'वीडियो सभा' नाम दिया है. इसमें के किया किया के वीडियो सभा नाम विकास के किया के राज्य इकाई के अध्यक्ष एन.आर. फरांडे, धर्मचंद भिह्मा, राष्ट्रीय सचिव प्रमोद महाजन समेत 10 प्रादेशिक भा राष्ट्रीय सचिव प्रमोद महाजन समत पर जैसी भा महंगाई, पेयजल की कमी और झोंपड़पट्टी जैसी भा महगाई, पेयजल की कमी आर जाउँ है. भार प्रतिकों से सीधा संवाद है. यह 60 मिनट का कैसेट है. भाषर दर्शकों से सीधा संवाद है. यह 60 मिनट का फैसला के बीडियो स्थ पर पैसे न खर्च करने का फैसला भा भाजपा ने वीडियो रथ पर पैसे न खच करण का वीडियो भा में कि वदले बड़े गांवों में पार्टी कार्यकर्ताओं को वीडियो 



कमल के चिन्ह वाले चाबी रिंग

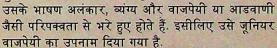
शहरों और कस्बों में कार्यकर्ता वीडियो सेट किराए पर लेकर मुहल्लों में रात में प्रदर्शन करेंगे. भाजपा गीतों और भाषणों के ऑडियो कैसेट भी जारी कर रही है.

हैरत की बात यह है कि भाजपा के कैसेट निर्माण में इस बार डॉ. जे.के. जैन गामिल नहीं हैं और अयोध्या पर उनकी खून-खराबे वाली फिल्म को भी कुछ नरम बना दिया जाएगा. दिल्ली में आडवाणी पर 20 मिनट की फिल्म बनाई जा

रही है. राजस्थान और मध्य प्रदेश की सरकारों की उपलब्धियों पर भी फिल्म बन रही है. - मधु जैन और एम. रहमान

क्रांति हिंदवाणी

क्रांति साल का 🤏 हिंदवाणी वह काम कर रहा है जो उसकी उम्र को देखते हए सचम्च क्रांतिकारी माना जा सकता है. यह बच्चा गुजरात में भाजपा की चुनावी सभाओं में भीड खींचने वाला मूख्य वक्ता बनकर उभरा है.



अहमदाबाद में तो 20,000 की भीड़ ने फिल्मस्टार मनोज कमार को अपना भाषण संक्षिप्त करने पर मजबूर कर दिया. भीड क्रांति को अभी और सूनना चाहती थी. उसके व्यंग्यवाणों को दोबारा सूनने की लोग मांग करते हैं. एक नमूना: "चमन के माली ने खुद चमन को उजाड़ डाला, मां ने उजाड़ा थोड़ा, बेटे ने तो पूरा उजाड़ डाला."

क्रांति को कभी शब्दों की कमी महसूस नहीं होती. यहां तक कि अनुच्छेद 370 और 'अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण' जैसे मामलों की भी वह बिखया उधेडता है. वह अपना भाषण अक्सर पार्टी की वैचारिक लच्छेबाजियों से खत्म करते हुए दहाड़ता है, "विजय निश्चित है; चलो दिल्ली; दिल्ली के लाल किले पर भगवा लहराएगा; कमल खिलेगा."

वलसाड में छठी कक्षा के विद्यार्थी क्रांति को प्रोत्साहित करने वाले उसके पिता छाताराम हिंदवाणी हैं, जो भाजपा कार्यकर्ता होने के साथ-साथ सिले-सिलाए वस्त्रों के व्यापारी हैं. इस बच्चे ने भाषण देने की शुरुआत 1989 के चुनाव अभियान से की थी.

बड़ा होने पर क्या वह नेता बनेगा? वह कहता है, "इससे ही काम नहीं चलेगा. मैं पिता जी का कारोबार देखना चाहंगा." **— उदय माहरकर** 





भाजपा समर्थक

# दर थे, अब पास है

शहरी, संभ्रांत, अंग्रेजीदां लोग अब रंग बदलते जा रहे हैं. फिलहाल भगवा उनका प्रिय रंग है और गुलाब की जगह 'कमल' प्रिय फूल. भगवान पर उन्हें भले भरोसा न हो मगर वे हिंदुत्व का जयघोष का रहे हैं और यह मान रहे हैं कि खुद को हिंदू कहने में कोई हर्ज नहीं है.

शिहरी संभ्रांत वर्ग के बुद्धिजीवियों, कलाकारों, पत्रकारों, वकीलों और कंपनी अधिकारियों को अब हिंदुत्व से कोई परहेज नहीं. वे भाजपा को अपनी सांस्कृतिक विरासत की एकमात्र रक्षक पार्टी के रूप में मानने, स्वीकार करने लगे हैं. और भाजपा इसे लेकर अति उत्साहित है

भाजपा में अगर मिठ्न चक्रवर्ती, मनोज कुमार, विक्टर बनर्जी, माया अलघ जैसे सितारे आए तो रामायण धारावाहिक की 'सीता' दीपिका भी आई. फिर 'रावण' अर्रावंद त्रिवेदी पीछे क्यों रहते! इस तरह जिसने भी भाजपा का दरवाजा खटखटाया, पार्टी उसे ही अपने में समोती चली गई. उसने यह भी नहीं देखा कि उसके पास जो आ रहे हैं, वे कैसे लोग हैं.

भाजपा आज कंपनी अध्यक्षों, विज्ञापन की दुनिया से जुड़े लोगों, बुद्धिजीवियों, पत्रकारों और वकीलों की पसंदीदा पार्टी बनती जा रही है. भगवान के अस्तित्व पर भले ही उन्हें भरोसा न हो लेकिन खुद को हिंदू कहने में भला क्या हर्ज है!

हिंदुत्व का नारा अब धोती-चोटीधारी पंडों और मंदिरों तक ही सीमित नहीं रहा, इसकी गूंज धीमे ही सही वातानुकूलित दफ्तरों में बैठे, विदेशी मुद्रा विनिमय और विज्ञापन योजना पर बहस करने वाले लोगों से भी सुनी जाने लगी है. खूबसूरत चेहरे, जींस, गुच्ची जुते और विदेशी परफ्यूम के शौकीन भी अब राम जी की सेना में शामिल हो सकते हैं.

कुछ समय पहले तक यह युवा, संभ्रांत वर्ग भाजपा को पसंद तो करता था लेकिन सोचता था कि इससे सहानुभूति दिखाने पर उसके

साथी उसके बारे में क्या सोचेंगे. नई दिल्ली की एक बहुराधी कंपनी में अधिकारी, 40 वर्षीय राजकपूर का कहना है, "जिन लोगे के साथ मेरा उठना-बैठना है, वे लोग सरेआम यह कभी कवूल नही करेंगे कि वे एक सांप्रदायिक पार्टी का समर्थन करते हैं. लेकिन अव मैं खुलेआम इसे कबूल कर सकता हूं." भाजपा की छवि अब तक 'निक्करधारियों' की पार्टी की थी, हिंदी बोलने वालों की प्रतिक्रियावादी जनसंघियों की, दूसरे शब्दों में यह आधुनिक लोगो की पार्टी कतई नहीं थी.

ऐसे भी लोग हैं जो भाजपा को अब भी खुला समर्थन नहीं है रहे, हालांकि इसमें उनका पूरा भरोसा है. वे इसे भविष्य की एकमात्र पार्टी भी मानते हैं. लिहाजा, इस बार वे इंका को ही बोर देंगे क्योंकि यह जांची-परखी पार्टी तो है ही. स्थायित्व के नारे का आकर्षण अब भी कम नहीं है.

लेकिन हाल ही में ये लोग भाजपा को खुलेआम ही नहीं बिल आक्रामक तरीके से समर्थन देने लगे हैं. दिल्ली हाईकोर्ट के बार हा में एक वकील ने अयोध्या के मुद्दे पर उसके रुख की आलोचना की ही थी कि दर्जनों लोग उस पर बरस पड़े. ट्राटस्कीवाद के समर्थ रहे पत्रकार स्वप्न दासगुप्त ने आडवाणी की रथयात्रा को ज आंदोलन कहा और लिखा कि "अबं हमें राष्ट्रीय पहचान ही जरूरत" है तो वे लोगों के दुलारे बन गए.

उनीतिकों के

कि इन्होंने व

जी के लिए

का का स

नहीं, हर क्षे

र भाजपा ए

व हथियारों

न रहे हैं, "

को पार्टियां व भाय खिलव राष्ट्रीय का गोध्या मुद्दे ने म्-कश्मीर इ पहुंचाई है. गर्व अनुभव भाजपा ने र

नो सांस्कृति भाजपा के

वेशाम मंजूर

ोधा वे न क

कि उनके खर ्रवदवा नह

ने करने के में वहां धर्म हैं। के 42 विगमील वै विभीत वे कर्म भाजपा की

महिर है

असल में दुनिया भर में वामपंथ की असफलता ही भाजपा जैली दक्षिणपंथी पार्टी के उदय के लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार है लेकिन इसके अचानक लोकप्रिय हो उठने की सबसे बड़ी वर्ष

राम में क्या बुरा है यार ... आखिर वह भी तो प्रिंस था, सबसे पहला यप्पी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



जीतिकों के प्रति जनता का मोहभंग ही है. ये लोग सोचने लगे कि इन्होंने भारत को क्या बनाकर रख दिया है. यूएस एअररैप की के लिए समूह बिक्री एजेंट, 35 वर्षीय गौतम चड्ढा आम तौर का समर्थन करते आए हैं. अब उनका कहना है, "आर्थिक कहीं, हर क्षेत्र में हम दुनिया के नक्शे में सबसे नीचे आ गए हैं. अभाषा एक बेहतर विकल्प है तो इसे बनने दीजिए." निर्यात के हिंगारों के एक सफल व्यवसायी पिछले एक वर्ष से यही हैं हैं, "सबको मौका मिला तो भाजपा को क्यों न मिले? को पार्टियां इतने दिन से अर्थव्यवस्था तथा कानून और व्यवस्था

ालोचना की

द के समर्थक

त्राको जन

पहचान की

भाजपा जैसी

जम्मेदार है

बडी वर्ग्ह

न और अतिन वर्ग

गट्टीय कार्यकारिणी के सदस्य अरुण जेतली मानते हैं कि में आप पुरे ने जन भावनाओं को जरूर आंदोलित किया है लेकिन में अप पंजाब में हुई घटनाओं ने हिंदू स्वाभिमान को अप्तुंचाई है. इसलिए खुद को राष्ट्रीय विरासत के साथ जोड़ने में किं अनुभव करता है. दूसरे शब्दों में "गर्व से कहो हम हिंदू हैं" मोजपा ने संशोधित कर अपने स्टिकरों पर लिख दिया है, "मुझे को सोस्कृतिक विरासत पर गर्व है."

भाजा के नवदीक्षित सदस्यों को अपने नव-कट्टरवाद को निजा मंजूर करने में जरा भी संकोच नहीं, भले ही हिंदूवाद की निजा के नकर पाएं. 'हिंदुत्व' शब्द उनके लिए इसलिए महत्वपूर्ण कि उनके खयाल से भारत एकमात्र ऐसा देश है, जहां बहुसंख्यकों के ने के लिए वहुसंख्यकों की सरकारी छुट्टी की मांग के कि कि वहुसंख्यक समुदाय की छुट्टी काट दी जाती है के कि वर्षीय रघु पालट मुंबई के एक प्रतिष्ठित और निजा कै कै कि एक प्रतिष्ठित और निजा कै कै कि एक प्रतिष्ठित और निजा कै के कि एक प्रतिष्ठित और निजा कै कि कि एक प्रतिष्ठित और निजा कै कि कि एक प्रतिष्ठित और निजा कै कि कि एक प्रतिष्ठित और निजा के कि कि साम कि साम कि साम कि साम कि साम कि कि साम कि

है. मद्रास में एक विज्ञापन एजेंसी में लेखाधिकारी 28 वर्षीय एस. लक्ष्मीनारायण ने पिछले चुनाव में एक मुसलमान को वोट दिया था. लेकिन अब कसम ले बैठे हैं कि दोबारा ऐसा नहीं करेंगे. वे कहते हैं, ''चालीस वर्ष पहले ईसाई हमारे धर्म की जड़ें खोद रहे थे. अब मुसलमान ऐसा कर रहे हैं, कल कोई और समुदाय आ जाएगा. हिंदुत्व का नारा बुलंद करने का यही वक्त है.''

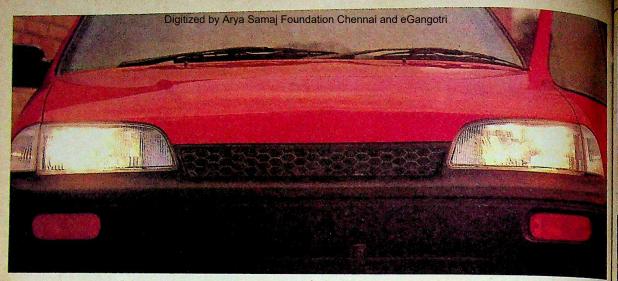
मुंबई के 27 वर्षीय फोटोग्राफर और आंतरिक सज्जाकार विनेश गांधी का मानना है कि हिंदुत्व का नारा राजनैतिक स्टंट से बढ़कर कुछ नहीं है और भाजपा के सत्ता में आते ही यह खत्म हो जाएगा. "आडवाणी और वाजपेयी बहुत चालाक राजनीतिक हैं. बाकी राजनीतिक जब 20 फीसदी लोगों को रिझाने में लगे हों तो 80 फीसदी को लुभाने की कोशिश समझदारी ही है."

भाजपा अपने कार्यकर्ताओं की बदौलत ही चकाचौंध की दुनिया में पैठ कर पाई है. लिटास में लेखाधिकारी, 26 वर्षीय मनीप शुक्ला भाजपा के समर्थक हैं और कार्यकर्ता आधारित पार्टी में उनकी पूरी आस्था है. यह भी कम हैरत की बात नहीं कि ईसाई भी भाजपा के खिलाफ नहीं रहे. चालीस पार कर चुके पूर्व क्रिकेट खिलाड़ी माइकल दलवी कहते हैं, "मैं ईसाई हूं. लेकिन धर्म यदि भारत को एक रख सकता है तो ऐसा होने दीजिए."

नव-कट्टरवाद भी अब फैशन बन गया है. कलकत्ता की कॉकटेल पार्टियों में लोग इंका और माकपा की चर्चा तो खैर करते ही रहते हैं. लेकिन अब जैसा कि वहां के एक इलेक्ट्रॉनिक्स व्यवसायी मंगल पटेल बताते हैं, "भाजपा के सिद्धांतों का प्रतिपादन लोकप्रिय बनने की गारंटी देता है."

भाजपा के ये नए सदस्य हिंदुत्व की लहर पर चढ़कर भले ही आए हों, ये धार्मिक बिलकुल नहीं हैं. श्रद्धाभाव भी अक्सर गायब रहता है. इनका असली भगवान तो पैसा है, या बड़े उद्योगपित. आखिरी बार उन्होंने किसी भगवान को पूजा होगा तो वह दीपावली की लक्ष्मीपूजा ही रही होगी. लेकिन अब हिंदू होना राजनीति हो गई है.

अब हिंदू होने का मतलब है-कभी इस बात पर पछताना नहीं. —मधु जैन, साथ में मुंबई में रंजना बनर्जी और ब्यूरो रिपोर्टें



## सर्वोत्तम कूलैन्ट चुनना भी सर्वोत्तम कार चुनने से कहीं कम नहीं।

याद है, जब आपने अपनी कार खरीदी थी। उसे खरीदते समय एक-एक वात का ध्यान रखा था। उसकी मेन्टनेन्स पर भी आप इतना ही ध्यान देते हैं। बढ़िया से बढ़िया इंजिन ऑयल, ब्रेक आयल, टायर... कितनी सावधानी बरतते हैं आप।

लेकिन क्या आपने कभी अपनी कार के कूलैन्ट पर ध्यान दिया है? क्या आपको कूलैन्ट का नाम तक याद है?

शायद नहीं!

बस यहीं आप गलती कर बैठते हैं।

वास्तव में कूलैन्ट भी बड़ी सावधानीपूर्वक चुना जाना चाहिए। उतनी ही सावधानी से जितनी कि आप कार चुनते समय अपनाते हैं। क्योंकि एक बढ़िया कूलैन्ट केवल पानी का ही स्थान नहीं लेता। वह तो आपकी कार के रेडियेटर को अत्यधिक गर्मी, जंग और छीजन से भी बचाता है। ताकि न केवल कार की मेन्टनेन्स के खुर्च में कमी आए बल्कि ईंघन की खपत भी कम हो।

जी हां! एक बेहतरीन कूलैन्ट ही आपकी कार को लंबी उम्र देता है। जैसे सन कूज़र कूलैन्ट!

- सन कूज़र आपकी कार को अत्यधिक गर्मी से रक्षा करता है। इसका ब्रायलिंग प्वाइंट (उबाल बिंदु) इतना ज्यादा है (175°C) कि गर्मी भले ही कितनी ज्यादा क्यों न हो इस पर कोई असर नहीं पड़ेगा। आपको टंपरेचर गेज पर नजर डालने तक की जरूरत नहीं।
- 2. सन क्रूज़र आपकी कार को अत्यधिक ठंडक से भी बचाता है। सर्दी कितनी ही कड़ाकेदार क्यों न हो सन क्रूज़र आपका पूरा साथ निभायेगा। क्योंकि इसका जमाव बिंदु - 43°C से भी नीचे है! यानी रेडियेटर में पानी जमने का सवाल ही नहीं।

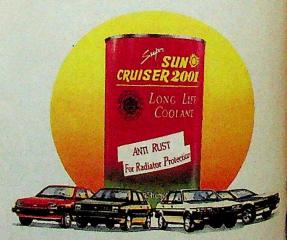
3. यह आपकी कार की जंग और छीजन से रक्षा करता है।

सन क्रूज़र में जंग से लड़ने की जबर्दस्त ताकत है। यह रेडियेटर को लुक्किंट करता है और भीतरी सर्कुलेशन सिस्टम को जंग से पूरी सुरक्षा प्रदान करता है। यार्ग आपकी कार का रेडियेटर रहे हर दम पूरी तरह सक्षम!

अव आप समझ ही गए होंगे कूलैन्ट का महत्व। इसलिए अगली बार पूरी सावधानी बरतें: केवल सर्वोत्तम कूलैन्ट ही खरीदें। <sup>उस</sup> बता कर।

सन कूज़र।

ै जिन करों में कूलेन्ट-सिस्टम की व्यवस्था नहीं है वे अब बहुत ही कम कीमत एर 'सन क्रूजर एक्सपैशन बॉटत' लगवा कर कूलेन्ट का पूरा लाभ डठा सकते हैं। पूर्ण विवसण के लिए कृपया अपने निकटतम सन क्रूजर डॉलर से संपर्क की।



सन क्रूज़रः केवल कूलैन्ट ही नहीं कार के लिए टॉनिक भी!



कर मेरनेना के को में सन कुका को रंगिन गड़ड मुख्य पान को । CC-0. In Public Domain: Gurük II सिवा चित्र **पिता विशेष स्थापन विशेष सिवा विशेष** सिवा की किया है के विशेष स्थापन स्यापन स्थापन स्थाप राम मंदिर

खः अक्तूब स्याकर सक भीमा को

वयोध्या, ब धर्मस्थल कि धुमलमान ने कोई मांग न

<sup>बाह्वान</sup> से ब मंडल आयं

लः संशोधन मा कर भार्यकों जैसे दृति रहने भार्यमिकता नितियों में

विद्वां को बातियों के देवरा बढ़ा वेष सीमा क्षेत्रता नहीं

केंद्र-राज्य

भी कर विद्या नीतियां और कार्यक्रम

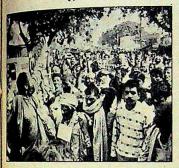
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# राजनैतिक यथार्थ से रूबरू

हिंदुत्व भले ही भारतीय जनता पार्टी के चुनाव प्रचार का मुख्य मुद्दा हो पर सत्ता में आने पर यह पार्टी हिंदू सरकार चलाने का ठप्पा स्थायी तौर पर नहीं लगवाना चाहेगी. राजनैतिक यथार्थ माजपा की प्राथमिकताओं की सूची में से राम जन्मभूमि के मुद्दे को नीचे धकेल देगा. प्रमुख संवाददाता जफर आगा ने

ग्रवपा के कुछ मुख्य मुद्दों का लेखाजीखा लिया है.

#### घरेलू नीति



अयोध्या में कार सेवक

#### राम मंदिर

टर को लुक्किंट

ता है। यानी

खरीदें। तम

खः अक्तूबर में निर्माण शुरू करना है. बा कर सकती है: सत्ता में आने पर समय श्रीमा को लेकर आगा-पीछा करेगी. ब्योच्या, बनारस और मथुरा के तीन श्रीस्थल हिंदुओं को देने के लिए श्रीसमान नेताओं से बातचीत और आगे श्रीई मांग नहीं करेगी. मस्जिद ढहाने के बाह्वान से कन्नी काटेगी.

#### मंडल आयोग

ल संशोधन हो तो मंजूर.

मा कर सकती है: गैर-परंपरागत
मर्थकों जैसे पिछड़े वर्गों में अपना आधार
द्वात रहने के लिए एक नए फार्मूले को
गामिकता देगी जिससे अन्य पिछड़ी
महिंदों में अधिक गरीब और अधिक
महिंदों के ज्यादा आरक्षण मिले. अगड़ी
महिंदों के गरीबों के लिए आरक्षण का
मा बहाएगी. इस श्रेणी के लिए
स्ता नहीं.

## मान्य संबंध

कि विकेंद्रीकरण हो. कि कर सकती हैं: राज्यों में दूसरी निर्वाचित सरकारों को बरखास्त करने के लिए अनुच्छेद 356 का कभी-कभार ही इस्तेमाल करेगी. राज्य सरकारों की सलाह से राज्यपालों की नियुक्ति करेगी. वित्त आयोग से राज्यों के लिए केंद्रीय राजस्व के बढ़ते अंशदान की संभावना तलाशने को कहेगी. राज्यों को रिजर्व वैंक से सीधे ऋण लेने की अनुमति देने पर विचार करेगी. उत्तर प्रदेश में उत्तरांचल और बिहार में वनांचल को छोड़ बेहतर प्रशासन के लिए छोटे-छोटे नए राज्य बनाने के अपने वादे पर अभी स्पष्ट नहीं है. मद्रा, रक्षा, संचार और विदेश नीति ही केंद्र के पास रहें, ऐसी कोई मांग मंजूर नहीं.

#### अनुच्छेद ३७०

रुखः खत्म हो.

क्या कर सकती है: संवैधानिक संशोधन के लिए संसद में वांछित दो-तिहाई बहुमत के अभाव में क्या करेगी, खुद स्पष्ट नहीं है. कश्मीर में गैर-कश्मीरियों को संपत्ति का अधिकार देने के बारे में स्पष्ट नहीं है.

#### समान नागरिक संहिता

रुखः पक्ष में अभियानः

क्या कर सकती है: ऐसी समान संहिता के लिए जल्दबाजी नहीं करेगी. इस मुद्दे को बातचीत से हल करेगी और उम्मीद करेगी कि देश के मुसलमान पाकिस्तान की तरह बहुपत्नीत्व और तुरंत तलाक पर हए परिवर्तनों को मान लेंगे.

#### वक्फ की संपत्ति

रुखः विशेष प्रबंध पर रोक हो.

क्या कर सकती हैं: इसे मुसलमानों पर छोड़ेगी. वक्फ बोर्ड का जहां राम जन्मभूमि जैसे हिंदू धर्मस्थलों से विवाद है, वहां वक्फ संपत्ति को समुदाय का अंदरूनी मामला मानेगी. मुसलमानों के अनुरोध पर बेहतर प्रबंध करने में सहायता दे सकती है.

#### कश्मीर, पंजाब और असम

रुखः कठोर.

क्या कर सकती है: भौरी प्राथमिकता ऐसे हालात पैदा करना होगी जिससे चुनाव के जरिए राजनैतिक हल निकालने में मदद मिले. इंका के विपरीत क्षेत्रीय गुटों की आकांक्षाओं का दमन नहीं करेगी, बशर्ते कि वे अलगाववादी न हों.



पंजाब में बम विस्फोट

#### अल्पसंख्यक आयोग

रुखः खत्म हो.

क्या कर सकती हैं: धीरे-धीरे इसे मानवाधिकार आयोग में बदलेगी जिसके पास बिना भेदभाव के किसी भी समुदाय की शिकायतों पर गौर करने के अधिकार होंगे. इसका ब्यौरा अभी तैयार नहीं पर जाने-माने नागरिक अधिकार आंदोलन से जुड़े कार्यकर्ता, विधि विशेषज्ञ और सामाजिक कार्यकर्ता इसके सदस्य होंगे.

#### शिक्षा नीति

रुषः मौलिक कुछ नहीं.

क्या कर सकती है: 6-14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को मुफ्त शिक्षा देने का वादा. प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम चलाने का इरादा है पर शिक्षकों में अनेक पार्टी अनुयायियों के मद्देनजर मौजूदा नीति में विशेष बदलाव की उम्मीद नहीं. शिक्षा संस्थानों में निजी निवेश का कोई पक्का फैसला अभी नहीं.

# Digitized by Area Samai Found on किरा आया हूं धी सर्वे आका, में किरा आया हूं धनवर्षा (3).

धनवर्षा (3)

विकल्प 2:

विलंबित मासिक आमदनी. **ऊंची ब्याज दर: 16% से 21%.** पाइए 54 चेक पहले ही.

कम से कम 5000 रुपयों का निवेश कीजिए. एक वर्ष के बाद से अगले 41/2 वर्ष तक नियमित मासिक आमदनी पाइए, प्रारंभ में ब्याज की दर होगी 16% जो योजना के अंत तक बढ़ कर 21% तक हो जाएगी. और खास फायदे की बात यह कि आमदनी के सभी चेक आपको शुरू में ही मिल जाएंगे.

इतना ही नहीं...

पंजी में होनेवाली वृद्धि का 100% वितरण निवेशकों में किया जाएगा. शीघ्र निवेश करने पर विशेष छूट. 3 वर्ष के बाद यूनिटें भुनाने की सुविधा. सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया से ऋण मिलने की सुविधा. और, धारा 80 L के अंतर्गत आयकर में बचत तथा घारा 5 के अंतर्गत संपत्ति

कर में छूट. पूंजी का प्रत्यावर्तन न करने के आधार पर अनिवासी भारतीय भी निवेश कर सकते हैं.

आपके चुनाव के लिए अन्य विकल्प भी हैं:

विकल्प 1 - तुरंत मासिक आमदनी. इसमें आपको 12.5% से 14% तक बढ़नेवाला ब्याज मिलेगा और आमदनी के 66 चेक मिलेंगे पहले ही.

विकल्प 3 तथा 4 - संचित आय/पूंजी की वद्धि. इनमें आपको मिलेगी एकमुश्त 103% आमदनी तथा पूंजीवृद्धि सहित आपकी शीघ्र निवेश करनेवालों के लिए आकर्षक छूट!

निवेश की तिथि

1%

मर्ड 1-15 मई 16-31

1/2%

एअर बस

सार्वजनि

रतः सतव

क्या कर

देगी. रह

रणनीतिव

क्षेत्रों को

निजी निव

क्षेत्र में प्र

सप्ट है प

बारे में अ

एकाधिक

रबः फिर स्या कर किसी औ बजाए वि हिस्सेदारी आंकने क को आंका

विदेशी रि

हतः नियम वा कर काम हो स बनुमति इ वाले क्षेत्र निर्यातोनमुर

विकल्प वा सफ्ट नहीं स्थिति में ि बुद्धिमानी

बजट बन

खः जनता था कर

रेगी. सर वर्षव्यवस्थ

सभी भूगतान सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया की निर्धारित शाखाओं में करने होंगे. उत्तरी भारत. चंडीगढ़, नई दिल्ली और बम्बई में भुगतान पंजाब नैशनल बैंक की शाखाओं में भी किए जा सकते हैं.

अधिक जानकारी' के लिए कुपया जीवन बीमा निगम की किसी भी शाखा से अथवा जीवन बीमा निगम सहयोग निधि के एजेंट से संपर्क कीजिए.



# धनवर्षा (३)

जल्दी करें! योजना उपलब्ध : 11 मार्च से 31 मई 1991 तक.



जीवन बीमा निजम सहयोज निधि आपके उद्देश्य की पूर्ति — हमारा ध्येय

त्वर के उतार चढ़ाय का प्रधाय पहता है. तथा उनके दुस्टा/प्रायोजक संस्थान प्रतिलाभ का कोई भरोता या गरंदी नहीं दे सकते. ये प्रतिलाभ, निर्म की निवेश नीति सर्वे निवादन चरित्रक के प्राराणी के सामान्य है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar





<sub>एअर बस ए-320</sub>: निजी निवेश को बढ़ावा

#### मार्वजनिक क्षेत्र

रतः सतर्कतापूर्ण. स्या कर सकती है: सर्वोच्च प्राथमिकता हेगी. रक्षा, रेलवे तथा संचार के रणनीतिक क्षेत्रों और तेल उद्योग के कुछ क्षेत्रों को छोडकर सारे सार्वजनिक क्षेत्र में निजी निवेश को बढावा देगी. सार्वजनिक क्षेत्र में प्रतियोगिता बढ़ाने पर सिद्धांततः सप्ट है पर यह किस सीमा तक हो, इस बारे में अस्पष्ट है.

#### एकाधिकार कानून

रतः फिर से परिभाषित हो.

ला कर सकती है: प्राथमिकता देगी. किसी औद्योगिक घराने के आकार के बजाए किसी विशिष्ट क्षेत्र में उसकी हिसोदारी को बाजार में इजारेदारी गंकने का आधार बनाएगी. हिस्सेदारी को आंका कैसे जाए, इस पर फैसला नहीं.

#### विदेशी निवेश

रतः नियम कड़े हों.

षा कर सकती है: जिन क्षेत्रों में देसी काम हो सकता है, वहां विदेशी निवेश की बनुमति नहीं देगी. इसे उच्च तकनीक वार्ने क्षेत्रों में सीमित करेगी मगर निर्यातोन्मुस इकाइयों और आयात के विकल्प वाले क्षेत्रों में बढ़ावा देगी. इस पर पिट नहीं कि विदेशी मुद्रा के संकट की स्थिति में विदेशी निवेश को सीमित करना बुद्धिमानी होगी या नहीं.

## जिट बनाने की प्रक्रिया

का जनता को जोड़ा जाए. भा कर सकती हैं: सर्वोच्च प्राथमिकता भी सरकार हर तीन महीने बाद क्षेंव्यवस्था की स्थिति के बारे में

#### भारतीय रिजर्व बैंक

रुखः स्वायत्तता दी जाए.

क्या कर सकती है: चुनाव आयोग की तरह इसे स्वायत्त संस्था में बदलेगी ताकि वित्त मंत्रालय का नियंत्रण न रहे. मंत्रालय वैंक को अनावश्यक मुद्रा छापने पर बाध्य करता आया है जिससे मुद्रास्फीति और मुद्रा अवमूल्यन हो जाता है. सेंट्रल अमेरिकन बैंक को आदर्श माना जाएगा.

#### योजना आयोग

रुखः पूनर्गठन हो.

क्या कर सकती है: पंचवर्षीय योजनाओं का मौजूदा ढांचा बरकरार रखेगी पर दीर्घकालिक उद्देश्य से आयोग का पूनर्गठन करेगी ताकि लाइसेंस प्रणाली हटाई जा सके. आयोग को योजना के वित्तीय पहलुओं पर विचार करने और राज्य सरकारों के साथ निरंतर सलाह करने के लिए प्रोत्साहित करेगी.

#### भुगतान संतुलन का संकट

रुखः बुलंद दावे.

क्या कर सकती है: अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से मदद मांगना टालेगी क्योंकि पार्टी का मानना है कि इस समय मुद्रा कोष से मांगे गए दो अरब डॉलर (4,000 करोड़ ह.) ऋण के बजाए परियोजनाओं की सहायता वाली 20 अरब डॉलर (40,000 करोड़ ह.) की अप्रयुक्त रकम को अल्पावधि के लिए खर्चा जा सकता है. परियोजनाओं को सहायता देने वालों से सहायता की रकम में से 1-2 फीसदी रकम छोड देने का अनुरोध किया जाएगा जिससे 1,000 करोड़ रु. जुटाए जा सकते हैं. बाकी रकम आप्रवासी भारतीयों से जुटाई जाएगी जिन्हें देश में निवेश करने के लिए भारी रियायतें दी जाएंगी:

#### अं. मू. कोष की शर्ते

रुखः इनका विरोध किया जाए.

क्या कर सकती है: अर्थव्यवस्था को अंदरूनी प्रतियोगिता के लिए खुला छोड़ने के सिवा ऐसी कोई शर्ते मंजूर नहीं करेगी. अनुदान जारी रखेगी क्योंकि उच्च आय वर्गों से निम्न आय वर्गों को पैसा

#### निजी आयकर सीमा

रुखः दर में कमी हो. क्या कर सकती है: मुघ्यम वर्गों और व्यवसायियों को आयक्र में राहत देगी. कर चोरी रोकने के प्रयास करेगी पर तरीके सत्ता में आने के बाद तय होंगे.

#### विदेशी मुद्रा कानून

रुखः इसकी समीक्षा हो.

क्या कर सकती है: यह कानून सिद्धांतत: मान्य है क्योंकि पार्टी भारतीय बाजार को बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए खोलने को तैयार नहीं. पर इसकी समीक्षा करेगी.

#### चुंगी और बिक्री कर

रखः खत्म हो.

क्या कर सकती हैः सत्ता संभालने पर चुंगी और बिक्री कर खत्म करने के अपने प्राने वादे को तत्काल अमली रूप देगी.

#### विदेश नीति



निर्गृट सम्मेलनः बदलता रुख

रुखः एकदम रद्द हो.

क्या कर सकती है: गुटनिरपेक्षता और समाजवादी खेमे के साथ दोस्ती को प्राथमिकता की 'नेहरूवादी' धारणाओं को करेगी. मल्काणी कहते "गुटनिरपेक्ष आंदोलन मर चुका है". वे पैदा हो रही बहुधुवीय दुनिया में भारत को एक महत्वपूर्ण ध्रुव बनाने की बात करते हैं पर उन उद्देश्यों को पाने के बारे में अस्पष्ट हैं. पार्टी नेताओं का दावा है कि आर्थिक रूप से मजबूत भारत विश्व राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा. भारत-अमेरिका संबंधों के बारे में पार्टी में मतभेद हैं. पश्चिमी यूरोपीय देशों और जापान से गहरे दोस्ताना संबंध होंगे.



मंदिर और मेंडल by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

# आस्था और पहचान का द्वंद्व

आगामी चुनाव में मंदिर और मंडल के मुद्दे हावी रहेंगे और उन्हें भुनाने की कोशिशें भी होंगी. मगर बुद्धिजीवियों को लगता है कि पुराने नारों की जगह नए नारे देने होंगे

उत्तर्सांस्यकों के साथ आम तौर पर पहचान का संकट जुड़ ही जाता है. वे इस उलझन में रहते हैं कि तरजीह किसे दें—अपने विश्वास को या राष्ट्रीयता को. बहुसंख्यक समुदाय को इस तरह की परेशानी कभी-कभार ही होती है. यही कारण है कि मंदिर-मस्जिद विवाद से उठे सवाल जकड़े हुए लगते हैं. मई में होने वाले चुनाव से यह फैसला हो जाएगा, हिंदू खुद को पहले हिंदू मानते हैं या अहीर, कुर्मी, ब्राह्मण, हरिजन आदि.

और चूंकि यह कोई भी नहीं जानता कि लोगों का फैसला क्या होगा, सो बुद्धिजीवियों के बीच इस मुद्दे पर कुछ ज्यादा ही तीखी बहस छिड़ी हुई है. प्रसिद्ध पत्रकार कुलदीप नैयर कहते हैं, 'भारतीय मतदाता को इससे पहले इतने सांप्रदायिक और जातिवादी नारों से पाला नहीं पड़ा था.'' अपने यहां के बुद्धिजीवी राजनीति और मतदाता के व्यवहार के बारे में पश्चिमी सोच से इस कदर प्रभावित हैं कि उन्हें पता भी नहीं है कि राम का नाम चुनाव में क्या लहर पैदा कर सकता है. हाल में ही भाजपा में शामिल हुए पूर्व महा लेखापरीक्षक त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी कहते हैं, ''महात्मा गांधी जैसी शिष्ट्सियत ने भी रामराज जैसे धार्मिक प्रतीकों का उपयोग किया था.''

इस बात से कोई इनकार नहीं करता. नामी लेखक, और पत्रकार से राजनेता बने राजमोहन गांधी कहते हैं, "भगवान राम

का नाम खुद ही काफी असर रखता है."

मार्क्सवादी वृद्धिजीवी भी यह मानने को तैयार नहीं हैं कि आगामी चनाव में राम के नाम का कोई प्रभाव नहीं पडेगा. मगर उनके अनुसार राम मंदिर जैसे सांप्रदायिक मुद्दे के अचानक अहम हो जाने के पीछे की प्रक्रिया को जानने की जरूरत है. नेतागण वोट के लिए जाति और धर्म का नाम हमेशा से लेते रहे हैं. इसी क्रम में भाजपा दूसरों से एक कदम आगे निकल आई है. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के वामपंथी इतिहासवेत्ता हरवंस मुखिया . कहते हैं, "जनता को साथ लाने के इन आदिम तरीकों ने ही भाजपा को एक बडा हिंदू वोट बैंक बनाने की प्रेरणा दी है."

भाजपा अपने मकसद में सचमुच सफल होगी या नहीं इस बारे में अलग-अलग राय है. परंतु अनेक विद्वानों, लेखकों और राजनीति के पंडितों का मानना है कि हिंदू नारों का इतना असर पहले कभी नहीं था. कुलदीप नैयर बड़ी जातियों के शहरी तबकों में 'हिंदूनादी लहर' के फैलाव की चर्चा करते हैं. लेकिन यह लहर वोट भी दिलाएगी या नहीं इस बारे में अनिश्चय में हैं.

प्रसिद्ध समाजवादी मधु लिमये यह मानने से ही इनकार करते हैं कि कोई हिंदू वोट बैंक भी है. लेकिन वे भी कुछ राज्यों में भाजपा का प्रदर्शन बढ़िया होने की भविष्यवाणी करते हैं.

सेंटर फॉर पॉलिसी रिसर्च के विद्वान प्रो. बशीरुहीन मानते हैं कि बड़ी जातियों के अलावा पिछड़ी जातियों और हरिजनों पर भी भाजपा का असर है. यह भाजपा की साफगोई और ठोस संगठन वाली छिव के कारण है. लेकिन मंडल वाला मुद्दा कुछ निराकार-सा है. इसने निचले तबकों को सत्ता में भागीदारी के नाम पर आर्काषत किया है. लेकिन खुद पिछड़ों के बीच ही विभाजन उन्हें एक ठोस वोट बैंक बनने नहीं देगा. आम तौर पर यादव और कुर्मी समृद्ध हैं. ये जातियां और आगे बढ़ने की आस में मंडल मुद्दे पर एकजुट होंगी. लेकिन 'कम राजनैतिक चेतना रखने वाली' दूसरी कई पिछड़ी जातियां मंडल मुद्दे पर एकजुट नहीं भी हो सकती हैं.

कुछ राजनैतिक हलकों की इस मान्यता से अनेक राजनैतिक

ीवनासपुर: वे नेगम एक्ट स्वा

प्रात्त स्टोरज्,

अस्टोरज पी.

ो, □ छितवाउ कार, □ छत्रर

का 🗆 वर्गः ।

म बेटलब, जर

अमृना लाल

क्रमान, फालव

मई में होने वाले चुनाव से यह फैसला हो जाएगा कि हिंदू खुद को पहले हिंदू सानते हैं या अहीर, कुर्मी, ब्राह्मण, हरिजन आदि. यह कोई भी नहीं जानता कि लोगों का फैसला क्या होगा. बुद्धिजीवियों में इस पर बहस छिड़ी हुई है.

EHIS DIG TO COLUMN ANY SHE TO COLUMN TO COLUMN THE PROPERTY OF THE PROPERTY OF



# एजिडिंडि प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

### अधिकृत विक्रेता

### मध्यप्रदेश

होंगी.

तों का हीं था. लहर' लाएगी

र करते ज्यों में

गनते हैं नों पर र ठोस इा कुछ शारी के गीर पर नी आस चेतना एकजुट

ननैतिक :: प्रणव रत

नते

विनासपुरः मै० रूप जनरल स्टोरज्, गोल बाजार, • मै० गि एक स्वाम मेटल स्टोरज, गोल बाजार, ● मै० का स्टोर , गोल बाजार 🗀 मोपाल: मै० रामचन्व कारोर प्री.ओ. बैरगढ़, ● मै० लक्की सेन्टर, लाल्वानी ते. छित्रवाडाः चै० प्रमात जनरस स्टोरज ब्धवारी कार पर के हजारी साल नारायण वास, चौक कारपुरः म० हजारा साल नारायण जाते. किर्मा वै० सुमारा मेटलज्, जवाहर चौक, ● मै० किरेलज्, जवाहर चौक, ● मैं० जैन एन्सिनियम, कार्यात्, अभिव मारुति सावर्ज्, इन्दिरा मार्केट, 🗆 कार्ति । प्रश्नित बावजं, इन्दिरा माक्ष्ट, अर्थे स्टील भेत्र, के पाह राम पेशु राम, टोपी बाज़ार, अर्थे स्टील भाषाः भै० चाह् राम पेषा राम, टोपी बाजार, 
भाषाः अनुन ताल मार्केट, सराफा बाजार, 
भाषाः वश्यात, सराफा बाजार, 
भाषाः वश्यात, सराफा बाजार, 
भाषाः अनुन सेरज्
भाषाः, भाषाः बाजार, लश्कर, 
भाषाः भाषाः अनुन सेरज्
भाषाः, भाषाः अने गोद, लश्कर, 
भाषाः भाषाः अने गोद, लश्कर, 
भाषाः अने कुमार हिंदि होडम, 6/5, सातीपुरा, एम जी. रोड, • मैं० कुमार प्रिकेश रोर है, एम जी. रोड, • मैं० कुमार किरोत रोर है, एम जी. रोड, (कृष्णपुरा), • मैं० रामचन्ड स्वाप, १ भारत होत्त्व, एम.जी. रोड. (कृष्णपुरा), ● प्राप्त सन्ज, भारत होता वाजार, ● कैंट छोडत राम एण्ड सन्ज, र के प्राप्त २ करेरा बाजार, • में ० छाइत राज् के कार्जेर मार्ग, • में ० रामचंड एण्ड सन्ज, कसेरा प्रमासाम बावजं, 31, श्री महावीर मार्ग, □ पतायाम पावर्ज, 31, श्री महावार माध, क्षेत्रक वे विद्यालय संस्टर, 24-25 आशीर्वाद मार्केट, भूष मिटीजून सेन्टर, 24-25 आशाबाद नाज्य में के नेशानल स्टोरज्, जवाहरगंज, • मैं के नेशानल स्टोरज्, जवाहरगंज, • मैं के लाडरंगंज भीता है। भै० नेरानल स्टोरज, जवाहरगज, कार्यज, ाकिर हेड कें, कोतवाली बाजार, • मे० नारायण बादर्ज,

631, खटीक मोहल्ला, सराफा बाजार, 🗆 कोरबा: मै० श्री रामगोपात राधेश्याम अग्रवात, मेन रोड, 🛘 कटनी: मै० भारत स्टीलज्, शालीमार मार्केट, • मै० राघास्वामी वर्तन भण्डार, माधव नगर, • मै० गुरु नानक क्रोकरी स्टोर, गोल वाजार, 🗆 रायपुरः मै० बम्बे टॉयज् सेन्टर, बनजारी रोड, ● मै० मनमोहन चंव जैन, सदर वाजार, • मै० सुराना बादर्ज, पो.बॉक्स नं. 27/59, मालविया रोड, • मै० अभिनव ट्रेडर्ज, 19, अशोक मार्केट, नया पाड़ा, • मै० जे.एम. हरना मेटल मार्ट, बद्धाप्रा, • मै० इंडियन गिपट हाऊस, 4/5, शदानी मार्केट, बनजारी रोड, ● मै० सुरेश सावजं, पो. बॉक्स न. 53, मालविया रोड., □ रीवा: मै० विजय क्रॉकरी स्टोरज, बेंक्ट रोड, ● मै० राज इलैक्ट्रीकल, ८, वेंकट मार्केट, 🗌 रतलामः मै० नंदन एजेंसीज, 10/ A, डालू मोदी बाजार, ● मै० हकीमुद्दीन एण्ड सन्ज, मानक चौक, 🗌 सतनाः मै० गिषटो स्टील सेन्टर, पन्नीलाल चौक, • मै० युद्ध सास गोविन्व प्रसाव, चाँदनी टाकीज़ के पीछे, 🔲 सागरः मै० जैना स्टील, कटरा बाज़ार, • मै० शोभा राम सुरेश चंद, चक्र घाट, 🗆 उज्जैनः मै० असी मोहम्मद, ग्लाम हसैन, गोपाल मंदिर मार्ग, न्वीक बाजार, • मै० महालक्ष्मी पात्र भण्डारं, 125, पाटनी बाजार

### बिहार

🔲 पटनाः मै० अजन्ता कमरियस कं० एक्जिबिशन रोड.

### हिमाचंल प्रदेश

े कुल्लू: मै० कक्कर एण्ड लाम्या जनरल स्टोर्स, अखेरा वाजार, ो मंडी: मै० हिमाचल जनरल स्टोर्स, गांधी चौक, ो मनाली: मै० प्रामस स्टोर्स, दी माल, ● मै० हिम जनरल स्टोर्स, दी माल, ो परवानु: मै० हिमाचल होतसेल सिडिकेट, S.C.F-27, सेवटर-1, ो रामपुर ब्र्शहर: मै० राम किशन जीवा राम, मैन बाजार, ● मै० श्याम सिंह एण्ड बर्बर्स, मेन बाजार, ● मै० राजेश वर्बर, मेन बाजार, ो होमला: मै० संत लाल इंदर सेन अग्रवाल, 31 लोवर बाजार, ● मै० चंगाल क्रोकरी हाउस, एग माकिंट, ो तापड़ी: मै० जान चन्व यश पाल, वी एवं पी ओ:

### पश्चिमी बंगाल

बर्द्धवानः मै० वैस्ट बंगाल स्टोर, 185 बी०बी० घोष रोड,
तेननुबनला, 
 सिलीगुड़ीः भै० सरिया टी कं०, चौधरी कटरा,
महाबीरस्थान।

### मनिप्र

- ☐ इम्फालः मै० वेसवृत इन्टरप्राईजिज्, थंगल बाजार, पो.ओ.
  - असम
- 🛘 गुव्हाटी: मै० प्रिया नाथ कार, देवन पेटी रोड, फैंसी बाजार.

A PROPERTY OF THE PA-6/es

पंडित सहमत नहीं हैं कि भाजियां 1798 ban मुलक्तिवळें वह सामाणवां वहार के किया में ही प्रमान किया में कि 1967 में ही बेहतर प्रदर्शन करेगी. भाजपा के प्रदर्शन की उम्मीदें बढ़-चढ़कर लगाई जा रही हैं, ऐसी मान्यता तीन तरह के लोगों की है. एक समूह तो मानता है कि भारतीय लोगों का उदार और सौम्य स्वभाव भाजपा के सांप्रदायिक चुनावी प्रचार के चक्कर में नहीं आषुगा. प्रो. मुखिया कहते हैं, "भारतीय समाज 'अति' को बर्दाश्त नहीं करता." वे बताते हैं कि मुस्लिम राज के करीब 500 वर्षों के दौरान भी शरीयत के कानून भारत के कानून नहीं बन पाए. दूसरे शब्दों में, इस्लाम को भी इस भारतीय 'उदारता' को स्वीकार करना पडा.

दूसरा समूह सिर्फ साधारण गणित के आधार पर भाजपा की उम्मीद को सही नहीं मानता. इस बार वह अकेले लड़ रही है.

हिंदुओं से जुड़ा कोई मुद्दा—गोरक्षा का—एक पार्टी का मुख्य मुद्दा बना था. इससे जनसंघ ने दिल्ली की सात में से छह सीटें उत्तर प्रदेश में 12; राजस्थान में 3; मध्य प्रदेश में 10; हरियाणा, पंजाब, चंडीगढ़ और बिहार में एक-एक सीट जीती थी. स्वतंत्र भारत में यही एक मौका था जब एक पार्टी ने विशुद्ध सांप्रदायिक आधार पर चुनाव लड़ा था और अच्छी संख्या में सीटें जीती थीं मधु लिमये बताते हैं, "लेकिन जनसंघ का असर हिंदीभाषी क्षेत्र में ही सिमटा रहा." और यह कहकर वे यही निष्कर्ष निकालना चाहते हैं कि 1991 में भी भाजपा का असर कुछ क्षेत्रों में ही सीमित रहेगा.

इंका देश के सभी समुदायों और समूहों को अपनी ओर खींचने

की अपनी परंपरागत नीति पर चल रही है. 1989 के चुनाव के पहले मुसलमानों राष्ट्रीय नायक की हैसियत में पहुंच गए सैयद शहाबुद्दीन ने इंसाफ पार्टी बनाकर सचमुच अपनी उंगलियां झुलसा लीं. चुनाव में पिटने के साथ ही उन्होंने म्सलमानों के बीच भी अपनी हैसियत गिरा ली. प्रसिद्ध पत्रकार श्यामलाल कहते हैं, "राजनेता आर्थिक समस्याओं को जातीय और धार्मिक स्वरूप भले ही दे दे ऐसे हथकंडे पूरे देश को मान्य नहीं हो पाते."

A

इस चुना

है, इंडिंग

बहस

एम.जे.अव

म्बप्न दास

वेतली,

जसवंत सि

में धर्मनिपे

और भावं

कर रहे है

इसः बहस

प्री ने कं

सपादक इ

देविका रि

सहयोग से

धर्मनि

98

क्या जात

विफल हो

वंदर्भों में प

गेया है. व

मुसलमानों

विता थी. र

जिता में क

वुगवंत सि

भारतीय र

के सम्तुल्य

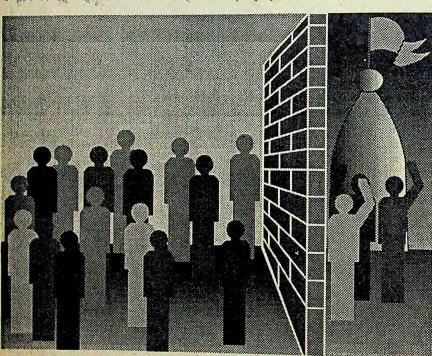
हेपारी आ

नेबेडीगरण

मंदिर के बहरहाल, चलते इस चुनाव में एक नया और प्रमुख मुद्दा उभर गया है. भाजपा ने 'असली बनाम नकली धर्मनिरपेक्षता को केंद्रीय मुद्दा बना दिया है. इसी प्रकार मंडल के मुद्दे के चलते नए तरह के नेताओं की जमात उभर सकती है जिसमें मुख्य ह्य से पिछड़े और हरिजन शामिल

होंगे. पुराने समीकरण टूटने से भारत जब नई राजनैतिक पहुंचान की तरफ बढ़ रहा है, सब कुछ अस्थिरता के दौर में हैं.

1991 के चुनाव देश के इतिहास में नया दौर शुरू करने के लिए याद किए जाएंगे. पुराने नारे और नेता न काम कर पाएं ती नए लाने ही पड़ते हैं. इसे पूरे पश्चिमी जगत के वैचारिक संकट से भी जोड़कर देखा जा सकता है. अपने यहां भी अब तर्क समाजवाद हर चुनाव में मुद्दा हुआ करता था लेकिन अब पूर्व यूरोप की तरह यहां भी इसका कोई नाम नहीं लेता. श्यामनाल बताते हैं, "इस बार तो कांग्रेस ने अपने चुनाव घोषणापत्र में इसका जिक्र भी नहीं किया है." इस बदलाव से क्या कुछ निकलकर आता है, उससे भारतीय राज्य व्यवस्था का भावी स्वरूप तय होगा. लेकिन इस बीच बुद्धिजीवी चुनाव में बड़े पैमार्ने पर हिंसा भड़कने के अंदेशे से परेशान हैं. हाल की अपनी यात्राओं में कलनीए के में कुलदीप नैयर ने जो कुछ देखा उसमें उन्हें 'विभाजन पूर्व के दिनों की छाया' नजर आई.



कई बुद्धिजीवियों का मानना है कि भारतीय लोगों में इतनी समझदारी है कि वे कभी बांटने वाले नारों के बहकावे में नहीं आते. वे मानते हैं कि भारतीय समाज अति को कभी बर्दाश्त नहीं करता

और साथ ही यह तथ्य भी है कि विघ्य के दक्षिण और पूर्वी भारत में इसका प्राय: कोई आधार नहीं है. जबकि इन क्षेत्रों में 200 से अधिक साँसद चुने जाते हैं. हिंदू धर्मशास्त्रों के विद्वान डाँ. कर्ण सिंह जोर देकर कहते हैं कि मंदिर (और मंडल) मुद्दे का बहुत सीमित असर होगा, "समाज को बांटने वाले नारों से नहीं बहुकने की समझदारी लोगों में है." उन्हें नहीं लगता कि भाजपा बहमत के कहीं आसपास भी पहुंच पाएगी.

फिर मंडल का मुद्दा भी उलझाने वाला है. हिंदू वोट बैंक जैसी कोई चीज बनने की राह में यह वड़ा रोड़ा बनेगा. इंदिरा गांधी के सहयोगी रहे पी.एन. हक्सर कहते हैं, "जाति भारतीय समाज की एक आदिम संस्था है." भाजपा के कुछ नेता भी जाति के महत्व को स्वीकार करते हैं लेकिन वे मानते हैं कि हिंदुत्व इसे पीछे छोड देगा.

हिंदू समाज की जड़ों को हिलाने वाली इन प्रवृत्तियों की तह में जाने की कोशिश में बुद्धिजीवी इतिहास को टटोल रहे हैं ताकि

Mil.

67 并計 स्य मुहा ; उत्तर

रियाणा, स्वतंत्र प्रदायिक तिती थीं. ाषी क्षेत्र

नकालना ों में ही

र खींचने त नीति 1989 के

सलमानों

क की ए सैयद

फ पार्टी

. चुनाव

उन्होंने

चिभी

रा ली.

गमलाल

आर्थिक

ोय और

ही दे दें,

देश को

देर के

में एक

्। उभर

'असली

रपेक्षता

ा दिया

न के गुर

रह के

उभर

प रूप से

शामिल

पहचान

करने के

पाएं तो

संकट से

व तक मब पूर्वी

ामलाल

ापत्र में

या कुछ ा भावी

हे वैमाने

यात्राओ

पूर्व के

कर आगा

अपनी

# केसा स्वरूप, कैसी भूमिका

<sub>झ चनाव</sub> में धर्मनिरपेक्षता का भविष्य निशाने पर है और मतदाता सांप्रदायिक आधार पर विभाजित है इंडिया टुडे ने जाने-माने विचारकों, विश्लेषकों और नेताओं को इस मुद्दे पर बहस के लिए न्यौता

की पहली कड़ी ए.जे.अकबर, बिपन चंद्र, जावेद हबीब, म्बर् दासगुप्त, गिरिलाल जैन, अरुण नेतनी, आशीष नंदी, खुशवंत सिंह, असर्वत सिंह और सीताराम येच्री भारत में धर्मनिपेक्षता के मूल, इसके मौजूदा अर्थ और भावी हैसियत के बारे में परिचर्चा बर रहे हैं. नई दिल्ली में आठ घंटे चली इस बहस की अध्यक्षता संपादक अरुण पृति ने की. परिचर्चा का संपादन फीचर मंगदक शेखर गुप्ता ने उपसंपादिकाओं विका सिंह और अनुराधा अवस्थी के महयोग से किया. बहस का संपादित रूपः

धर्मनिरपेक्षता

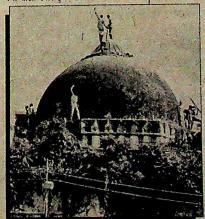
गिरिलाल जैनः दुनिया के विभिन्न हिस्सों में धर्म की एक तरह से वापसी हो रही है भारतीय राष्ट्रवाद को आम तौर पर रूसी प्रयोग के संदर्भ में परिभाषित क्षा जाता रहा है. लेकिन रूसी प्रयोग के किल हो जाने से भारतीय राष्ट्रवाद को उन किमों में परिभाषित करना तर्कसंगत नहीं रह मा है और फिर, पहले दुनिया भर में किन्तिमानों की संवेदनशीलता को लेकर सही भी थी बाड़ी की घटनाओं के बाद अब इस किता में कमी आ सकती है

भिक्त सिहः में सोचता हूं कि गिरिलाल जैन भाजीय राष्ट्रवाद को हिंदुत्व के नवजागरण भागतिया मान रहे हैं. और यह भी कि भागे आजादी का आंदोलन मूलतः इसी भागादा का आदालन पूजाता विकासरण की अभिव्यक्ति, था. गांधी और

बौद्धिक स्तर पर धर्मनिरपेक्षता अस्मिता, सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्रवाद का पर्याय है पर व्यवहार में तो अयोध्या विवाद और सांप्रदायिक दंगे ही दिखते हैं

30 अक्तूबर 1990 को बाबरी मस्जिद के गुंबद पर चढे कार सेवक

गभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा



नेहरू ने इस पर जो मुलम्मा चढ़ाया था वह धर्मनिरपेक्षता का था. दरअसल यह उस मायने में धर्मनिरपेक्ष नहीं था क्योंकि यह गैरधार्मिक नहीं था. धर्मनिरपेक्षता की उनकी परिभाषा मूल रूप से सर्व धर्म सद्भावना, यानी सभी धर्मों का सम्मान था. इस देश पर मुसलमानों ने एक हजार वर्षों तक राज किया. फिर अंग्रेजों ने राज किया. आजादी के वाद यह उम्मीद भी की जानी चाहिए थी कि हिंदू अपने अधिकारों को कभी-न-कभी जताएंगे ही.

बिपन चंद्रः मैं गिरि की इस बात से कतई सहमत नहीं हूं कि भारतीय राष्ट्रवाद, और उसके अंग के रूप में धर्मनिरपेक्षता को रूसी प्रयोग के आधार पर परिभाषित किया गया. यहां धर्मनिरपेक्षता की तीन परिभाषाएं हैं. पहली यह कि धर्म और राजनीति को अलग-अलग रखना चाहिए. गांधी जी ने जब यह कहा था कि धर्म और राजनीति को अलग नहीं किया जा सकता तो धर्म से उनका आशय आध्यात्मिक और नैतिक व्यवस्था से था. पर उन्हें यह एहसास था कि भारत जैसे देश में किसी आस्था विशेष को राजनीति से जोड़ने से सांप्रदायिकता पैदा होगी.

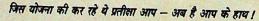
> धर्मनिरपेक्षता ः की दूसरी परिभाषा यह थी कि किसी बह-धर्मी समाज में राज्य को सभी धर्मों के साथ समान बरताव करना चाहिए-वह या तो हर धर्म का सम्मान करे या फिर हर धर्म से तटस्थ रहे.

धर्मनिरपेक्षता का तीसरा पहलू भारत में बहुत ही महत्वपूर्ण है औपनिवेशिक शासन. जिसके खिलाफ राष्ट्रीय आंदोलन चल रहा था, पहले से ही पहली और दूसरी धारणाओं पर अमल कर रहा था. लेकिन वह राष्ट्रीय

### पुक बार पिंठर से ! सर्वाधिक मांगवाली मासिक योजना

# 7-वर्षीय मासिक आय यूनिट योजना बोनस और वृध्दि के साथ '91

अतिरिक्त लाभ के साथ. एक से बढ़ कर एक, दो उत्तम विकल्पः



संचयी वृद्धि में कम से कम रु. 1000 या अधिक ; अथवा नियमित मासिक आय में रु. 5000 या अधिक का निवेश कीजिए. अधिकतम सीमा कोई नहीं. अपनी पूंजी को फलता-फूलता देखिए.

यदि आवश्यकता पड़े तो सममूल्य पर 3 वर्ष बाद पूरा नकदीकरण.

कर में घूट: (1) अधिनियम 80L के अंतर्गत रु. 13,000 तक अर्जित आय, कर मुक्त. (2) धारा 5 के अंतर्गत संपत्ति कर में घूट. व्यक्तियों के लिए स्रोत पर आय कर की कोई कटौती नहीं.

गिरबी रखने की सुविधा : सेंट्रल बैक ऑफ़ इंडिया द्वारा यूनिट के ऊपर ऋण सुविधा. डिवीडेन्ड : महीने की 15 तारीख से पूर्व सम्मिलित होनेवाले को पूरे महीने का डिवीडेन्ड और 15 तारीख के बाद सम्मिलित होनेवाले को ½ महीने का डिवीडेन्ड प्राप्त होगा.



### भारतीय यूनिट ट्रस्ट

90 ताख यूनिट धारकोंवाली विश्वासपात्र संस्था.

आवेदन फेर्स्स करी स्थीतहरू किसे करते हैं

□ उत्तरी व पश्चिमी शंत्र में सभी सेंट्रस बैक माझाओं में, ग्राजस्थान में स्टेट बैक ऑफ विकारेर एण्ड जवपुर.
□ दिसमी क्षेत्र में सभी फंतरा बैक एव भारतीय स्टेट बैंक माझाओं तथा उनके सहयोगी बैकों में
□ पूर्वी क्षेत्र में सभी भारतीय स्टेट बैंक शाखाओं तथा इनके सहयोगी बैकों में □ और सभी मू टी आई कार्यास्त्रये.
अधिक जनकारी के सिए कृष्ण संपर्क करें?

पोजना तीन महीने के लिये खुली: 1 औप्रल से 30 जून, 1991



संचयी वृद्धि

ब्राहोलन में हो ब्राह्में के ब्रामीनरपेक्षत हम में परिश् ब्राह्मीय नंदी

ग्रमीनरपेक्षतः समस्या से वि भी धार्मिक आज भारत रहे हैं. और

गष्ट्रवाद व सारी जर आधारित है

जावेद हबी व जी मूल सम् भारतीयों व

मंविधान उ गारंटी भी

वही है. अ मंरक्षण की केनाम पर

अत्यसंख्यकः विलाफ है धर्मनिरपेक्षत

मांग की हैं माप्रदायिक

की जरूरत धर्मनिरपेक्षत

ने नहीं की मोताराम ये

नेव छुट रह

भी यह धार

ग नहीं पैद

धारणा तव

श और पूंज

ए जब तक

हेगा तव त

में बतरा द

इसलिए,

मालों में ज

में भी वात

नाज धर्मी

गतीय विश

विना होगा. प्रीभाषा व

हते हैं, उ

में ख्रेच हिंद

वरण जेतल

कि में किर

भूतिमाता इ

ह. 1000 बन जाते हैं ह. 2<sup>500</sup>

+ 2 बोनस डिवीडेड तीसरे व पांचवे वर्ष में

+ परिपक्वता पर पूंजी वृद्धि का लाभ

THE MARKET

नियमित मासिक आय

13% डिवीडेन्ड की

मासिक अदायगी

+ 2 बोनस डिवीडेन्ड

तीसरे व पांचवे वर्ष में

+ परिपक्वता पर

पूंजी बृद्धि का लाभ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri तहत हिंदुत्व, भारतीय लोकाचार

इदोनन में शामिल हिंदुओं और मुसलमानों इदोनन की कोशिश कर रहा था. इसलिए इसित्पेक्षता को सांप्रदायिकता के विरोध के इसे परिभाषित किया गया.

वर्ष पारसायन पराने समित्र केना चाहिए था कि आग्नीय नंदी: हमें समझ लेना चाहिए था कि जंबित एक शताब्दी से हमारे नेता अंकित्यक्षता के सिद्धांत के जिएए जिस सम्या में निवटने की कोशिश कर रहे थे वह वैधिक और जातीय असहिष्णुता. लेकिन अब भारत में हर दिन औसतन डेढ़ दंगे हो हैं और फिर, धर्मिनरपेक्षता, राज्य और गृहवाद की पश्चिमी धारणा के वारे में आगी ज्यादातर समझ कितावों पर अधारत है, असलियत पर नहीं.

जावेद हबीबः मेरे विचार में भारतीय जनता ही मूल समस्या, संविधान के अनुसार, सभी भरतीयों की समानता है लेकिन साथ ही र्मवधान अल्पसंख्यकों के अधिकारों की गरंटी भी देता है. विरोधाभास की मूल जड की है. अल्पसंख्यक जब उस अनुच्छेद के गंखण की मांग करते हैं तो बहसंख्यक लोगों हेनाम पर एक तबका शोर मचाता है कि यह <sup>इससंस्यकवाद है</sup> और यह राष्ट्रवाद के <sub>विलाफ</sub> है. पहली बार भाजपा भंतिरपेक्षता को परिभाषित करने की स्पष्ट गंग की है. इससे मैं खुण हूं. हमें सिर्फ गप्रविषक दंगों के समय ही धर्मनिरपेक्षता <sup>ही जरूरत</sup> दिखती है. हम लाशों पर मिनरपेक्षता की परिभाषा तय कर चाहते हैं, गे नहीं की जा सकती.

भेताराम येचुरी: मेरे विचार से जो महत्वपूर्ण विव्युद्ध रहा है वह यह है कि धर्मनिरपेक्षता की वह धारणा सिर्फ मानवीय चेतना के स्तर में नहीं पैदा हुई बिल्क 17वीं शताब्दी में यह शिणा तब फूटी जब सामंतवाद खत्म हो रहा अंगर पूंजीवाद कदम रख रहा था. भारत जब तक पुराना सामंतवादी ढांचा कायम होगा तब तक धर्मनिरपेक्ष विरोधी विचारों अंवतरा बना रहेगा.

100

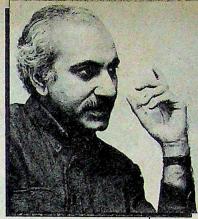
5. 2500

डिवीडेन

वे वर्ष म

ता पर

ता लाभ



एम.जे. अकबर इंका नेता

"सेक्यूलरिज्म शब्द की एक समस्या है कि हमें इसका सही भारतीय शब्द नहीं मिला है"

"अल्पसंख्यकों की सांप्रदायिकता की नहीं, बहुसंख्यक सांप्रदायिकता की आलोचना होती है"

बिपन चंद्र प्रोफेसर, इतिहास, जनेवि



तहँत हिंदुत्व, भारतीय लाकाचार या भारतीय संस्कृति से जुडी प्रायः हर चीज को दिकयानुसी, रूढ़, सांप्रदायिक और आडंवरी करार दे दिया गया. इसका नतीजा यह है कि अगर आज संविधान सभा बनती और डॉ. आंबेडकर उसमें कहते कि मैं अनुच्छेद 48 का प्रस्ताव करता हूं जिसके तहत राज्य गो-बध बंद करने का भरसक प्रयास करेगा तो भाजपा के 86 सदस्य इस प्रस्ताव के शायद एकमात्र विरोधी होते. भारत में हिंदुत्व का अर्थ सिर्फ धर्म नहीं है.

यह इस देश का सांस्कृतिक लोकाचार है. मुसलमान बाबर के साथ भारत नहीं आए. वे भारत के निवासी ही हैं जिन्होंने किसी कारणवण अपना धर्म बदल लिया.

इसलिए आडवाणी जी ने वार-वार कहा है कि उन्होंने कहीं भी हिंदू शब्द का इस्तेमाल नहीं किया है लेकिन वे हिंदू, भारतीय या इंडियन का अर्थ देश की सांस्कृतिक विरासत के संदर्भ में देखना पसंद करेंगे, न कि किसी खास पूजा पद्धति या धर्म के संदर्भ में

# दांव पर क्या लगा है?



स्वप्न दासगुप्तः अव दरअसल यह पूछा जा रहा है कि हमें किस तरह का भारत चाहिए? राष्ट्रीय आंदोलन की दो मुख्य धाराएं हैं—एक चाहती है

कि राज्य-व्यवस्था धर्म से पूरी तरह निरपेक्ष रहे. और दूसरी अल्पसंख्यकों के हक में थोड़ा पंक्षपात करना चाहती है.

एक और विचार यह है कि भारत कई तरह की स्वायत्त इकाइयों का समूह है जिसे आधुनिक राज्य-व्यवस्था ने एक सूत्र में बांधा है. इसलिए साझा राष्ट्रवाद कायम करने की कोणिश एक अभिशाप है, यह सिद्धांत अजनवी भी है और नुकसानदायक भी मूल रूप में यही दो दृष्टिकोण हैं जिन पर इस चुनाव में बहस होगी. इसमें टकराव भी होगा लेकिन यह अच्छा ही है कि टकराव मतपेटियों के जिए होगा, दंगों के जिएए नहीं.

येचुरी: धर्मनिरपेक्षता का मुद्दा कोई पहली बार नहीं आया है. याद कीजिए 1939 में गोलवलकर ने एक किताब लिखी थी, जिसमें उन्होंने हमारी राष्ट्रीयता को परिभाषित करने की बात की थी. और साथ ही उन्होंने हिंदू राष्ट्र की पूरी योजना की क्ष्परेखा भी

## अस्थिर नीतियां, अस्थिर पार्टियां, अस्थिर सरकारें...

क्य की स्थिरता पर मंडराते इन खतरों को कन तक नरदाश्त करेंगे हम ?

All Parish and All Pa

तका-

वितव

प्रमृत की ध इसलिए हा है वह निए नहीं अधुनिक भ और मिर उ से की बाद

नंघर्ष गुरू विवधताएं

इसलिए भ आधार तभ

इनने-फूलने एम.जे. अव

इतिहास प

माल के मुस

पाकिस्तान

और भार

मुसलमानों

गलतियों के

गो आर्थिक

चंद्रः मेरे

धर्मनिरपेक्षर

पहुंचाए गए

इसी से यह

वह कहना

नुनावी मुह

म्य च्नाव

हवीव: मैं म

भय को सूत्र

कों डर है नि

गटियां मूस

ण में इस्ते

शे ओर

<sup>मुमल</sup>मानों

बाहिए. मेरे

मम्या है.

कि हिंदू स

म में उन

हिंदुओं और भय दूर कर भौजूदा

मानमानों, के भविष्य तो हमें समझना हो क्या के अगर य

नो हिन्दुओं

अस्थिरता – कांग्रेस का ही दूसरा नाम. भारतीय राजनीति के विचित्र अखाड़े में, सबसे लंबा खेल खेला है कांग्रेस ने.

और सबसे अधिक अंक प्राप्त किए हैं. आइए, आज के आंकड़ों पर एक नजर डालें.

औसतन् कांग्रेस के मुख्यमंत्री का जीवनकाल है 14 महीने – और मंत्री तो एक विभाग में 10 महीने भी नहीं टिकता.

प्रदेश कांग्रेस कमेटी का कोई अध्यक्ष अगर पूरे 6 महीने भी अपने पद पर बना रहे तो नया रिकार्ड कायम करेगा.

ये सब तो बड़ी मामूली बातें हैं. जानते हैं कांग्रेस के मंत्रियों के विभाग कितनी बार बदले गए?

5 वर्ष में 29 बार.

और कांग्रेस स्थिरता की दुहाई देती है!

क्या हम मूल सकते हैं कि कैसे आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में कांग्रेस ने खुद अपने मंत्रिमंडलों का तख्ता पलट दिया?

पहले अल्पमत सरकार को समर्थन दिया. फिर हरियाणा के दो सिपाहियों द्वारा राजीव गांधी पर जासूसी करने का बेमतलब मुद्दा उठाकर, सरकार का समर्थन वापस लेकर, संसद को ही भंग करा डाला.

और कांग्रेस बात कर रही है स्थिरता की!

बहुत हो चुका, अब और नहीं! हमने बाकी सब को मौका दिया. और भारी कीमत चुकाई. अब वक्त आ गया है—भा.ज.पा. के साथ चलने का. भारतीय जनता पार्टी

केवल भा.ज.पा ही ऐसी पार्टी है जो स्थिर व्यवस्था, स्थिर सरकार और, सबसे प्रमुख बात तो यह कि वही देश को स्थायित्व भी देगी.

भा.ज.पा. – एकमात्र ऐसी पार्टी जिसने देश के स्थायित्व और संस्कृति पर आनेवाले हर खतरे का लगातार डट कर सामना किया है.

चाहे वह धारा 370 हो या अयोध्या की समस्या.

भा.ज.पा. — जिसकी मुख्य विशेषता है आंतरिक अनुशासन और स्थिरता.

ऐसी पार्टी जिसके पास ठोस संगठन और स्थिर नीति है. जिसके नेताओं की ईमानदारी बेदाग़ है.

आप ही की तरह, भा.ज.पा. भी राष्ट्रवाद के सही अर्थ के प्रति पूरी तरह समर्पित है — यानी सबको समान हक, मगर तुष्टीकरण किसी का नहीं.

देश का भविष्य बनाना आपके हाथ में है. अवसर आपके सामने है.

भा.ज.पा. को बोट दें

# रामराज्य की ओर चलें अ

अभयं सर्वभूतेष्यो ददास्येतद्वतं सम। (मभी प्राणियों कि अध्य देना, बही सेरा प्रण है। राम सभी भारतीयों के लिए आदर्श परुष हैं,

राम\* भय से मुक्ति

本

राटा अभावों से मुक्ति इन्साफ़ भेदभाव से म्वित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwa

RK SWAMY/BBOO BE

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri एकता का कोई सांस्कृतिक रास्ता

जावेद हबीब संस्थापक, बाबरी मस्जिद ऐक्शन कमेटी

"भारतीय परंपरा की हिंदू परंपरा के रूप में व्याख्या करना गलत ही है"

"विहिप से ही अपने दावे छोड़ने को कहा जाता है. मुसलमानों से कोई नहीं कहता"

स्वप्न दासगुप्त

प्रमृत की थीं.
इसिलए फिलहाल देश में जो संघर्ष चल इसिलए फिलहाल देश में जो संघर्ष चल ता है वह धर्मिनरपेक्षता की परिभाषा के ता है वह धर्मिनरपेक्षता की परिभाषा के किए नहीं है. यह संविधान में लिखे गए किए नहीं है. यह संविधान में लिखे गए अपृतिक भारत के सिद्धांतों और आदर्शों और मिर उठा रही सांप्रदायिकता के वीच है. में की वात सिर्फ यह है कि एक वार जब माजाज्यवाद विरोधी, उपनिवेणवाद विरोधी कार्य शुरू हो गया तो भारत की आंतरिक विधालाएं अपनी सांस्कृतिक परंपराओं में जार के आधार पर सिर उठाने लगीं. सिलए भारत की एकता का वैचारिक आधार तभी वन सकता है जब आप इन विवधताओं का सम्मान करें और उन्हें स्त्रे-फूलने का मौका दें.

एन जे. अकबर: दरअसल अल्पसंख्यकों के तिहास पर ही हमला हो रहा है. आठ सौ मल के मुसलमान शासन पर हमले हो रहे हैं, पिकस्तान के निर्माण पर हमले हो रहे हैं और भारत में अल्पसंख्यकों खासकर मुसलमानों को अतीत की तथाकथित पतियों के लिए दोषी ठहराया जा रहा है में आर्थिक रूप से सबसे विपन्न समुदाय है. मेरे खयाल से 1952 के बाद से अमिरिपेक्षता के विचार जनता के बीच नहीं खंगा गए. यही इस संकट की वजह है और भी से यह संकट इतने बड़े पैमाने पर टूटा है. कि कहना ठीक नहीं है कि पहली बार यह मार्वी मुद्दा बना है. 1952 में नेहरू नें इसे

मुख चुनावी महा बनाया था.
हैवैद: मैं मुसलमानों के भय और हिंदुओं के खको सूत्र रूप से पेश कर सकता हूं. हिंदुओं के के इर है कि मुसलमान फिर राजनैतिक तौर पर द्वा जाएंगे और यह कि धर्मिनरपेक्ष परियां मुसलमानों का राजनैतिक ताकत के ले में इस्तेमाल कर रही हैं. इसलिए हिंदुओं में ओर से चुनौती है. वे कहते हैं कि मुलमानों की कोई राजनैतिक ताकत होनी

भहिए. मेरे विचार में यही मुख्य भाषा है. मुसलमानों को डर है हिंदू सांस्कृतिक और धार्मिक भ उन पर छा सकते हैं. हमें भ उन पर छा सकते हैं. हमें भ उन पर हा सकते हैं. हमें भ उन पर हा सकते हैं. हमें भ उन पर हा सकते हैं. हमें भ पुरक्त करना है.

भौजूरा हालात में अगर हम भूग्नमानों, हिंदुओं या भारतीयों भे भीवण की वाकई मुरक्षा चाहते तो हमें इन वातों को साफ अंभ्या होगा कि संस्कृति क्या है, अगर यह सांस्कृतिक समस्या है विद्युओं और मुसलमानों के बीच



भी होगा. मुझे लगता है कि इकबाल इसके सबसे बेहतर प्रतीक हैं. उनकी एक नज्म में राम को इमाम-ए-हिंद कहा गया है. कौम से बहिष्कृत होने का खतरा उठाकर आंखों में आंसू भरकर मैं हिंदुओं और राम जन्मभूमि आंदोलन के नेताओं से यह कहता हूं कि एक सांस्कृतिक पहचान के रूप में राम एकता का प्रतीक बन सकते हैं. पर जब बाबरी मस्जिद समिति से किसी समय जुड़ा रहा एक आदमी यह कहता है कि वह राम की

प्रतिष्ठा कायम करने के लिए तैयार है तो कोई प्रतिक्रिया नहीं होती.

अकबरः मुझे लगता है कि सेक्यूलरिज्म शब्द के साथ वड़ी मुश्किल यह है कि हम जो कहना चाहते थे, उसके लिए उपयुक्त भारतीय शब्द नहीं ढूंढ पाए. आज भी हम अंग्रेजी मूल के इस शब्द को ही चला रहे हैं. मेरा मानना है कि भारतीय संदर्भों में यह शब्द अप्रासंगिक है. भारत में धर्मनिरपेक्षता, जैसा कि गांधी ने कहा, धर्म की अनुपस्थित नहीं बल्कि सर्व धर्म समभाव है.

खुशवंत सिंहः मैंने उन तीन या चार खास मुद्दों को उठाने की कोशिश की है जो किसी भी धर्मनिरपेक्ष राज्य को अपने लिए स्वीकार कर लेने चाहिए. सबसे पहले तो सरकारी पदों पर बैठे लोगों—राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री या मंत्री वगैरह—को अपनी धार्मिकता का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए जो कि आजकल आम हो चुका है. इसकी अति आप पंजाब के मुख्यमंत्री के तौर पर जानी जैल सिंह के कार्यकाल में देख सकते हैं. तब हर कार्यक्रम अरदास से शुरू होता था. वे अकालियों की हवा निकालना चाहते थे पर उन्होंने सिंख कट्टरता की नींव रख दी.

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि राज्य को चाहिए कि वे धर्म को संरक्षण देना बंद कर दे.

तीसरी बात, सरकारी प्रचार माध्यमों के दुरुपयोग की है. फिर आप कहीं भी जाइए, आपको लाउडस्पीकरों का कान-फाडू शोर मिल जाएगा. इसी तरह जुलूसों को देखिए. यह भी दूसरे लोगों पर अपनी धार्मिकता थोपने जैसा है. ये अल्पकालिक तरीके हैं. जैन: खुशवंत इसे लागू कौन करेगा?

खुशवंत सिंहः हां, हमें जनमत बनाना होगा. भरा मतलब है यहां हम, आप सब मुझसे एकमत हैं कि यह होना चाहिए.

संविधान चाहता है कि हमारा दिमाग वैज्ञानिक ढंग से सोचे. पर महाभारत और रामायण धारावाहिकों के जरिए सरकारी प्रचार तंत्र मिथकों आदि का अदर्शन किसा

भय से मृत्ति

total from well to make

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and

तरह से करता है. अच्छा है कि मां ही बेटे को रामायण की कथा सुनाए. पर इसे एक साल तक दूरदर्शन पर दिखाने का मतलब यह है कि दूरदर्शन अनपढ़ों और नीम-अनपढ़ों की बुद्धि कंद कर देना चाहता है.

चंद्रः देश में इस विषय पर सार्वजनिक वहस नहीं हुई है कि जब हम जातिवाद, भाषावाद और क्षेत्रवाद के खिलाफ सफलतापूर्वक लड़ चुके हैं तो सांप्रदायिकता के खिलाफ क्यों विफल रहे. मेरा खयाल है कि यहां सांप्रदायिक नाकतों को एहसास हो गया है कि जिन्ना तभी एक जनशक्ति के रूप में उभर पाए और देश को विभाजन के कगार पर ले जा सके, जब उन्होंने 'इस्लाम खतरे में है' का नारा बूलंद किया. यह एक भ्रामक नारा है. आज एकमात्र समाधान यही है कि मंदिर बनने दिया जाए लेकिन मस्जिद की भी रक्षा

में मानता हं कि इस देश में कट्टर मुस्लिम सांप्रदायिकता मौजूद है. और जब मैंने कहा कि धर्मनिरपेक्ष लोग कोई कड़ा रवैया नहीं अपना रहे तो मेरा मतलब था कि वे अल्पसंख्यकों की सांप्रदायिकता की इतनी तीसी आलोचना नहीं कर रहे जितनी बहुसंख्यकों की सांप्रदायिकता की.

हबीबः मुसलमान शासकों ने ज्यादितयां की हैं. लेकिन दुर्भाग्य से मुसलमान शासकों के इतिहास को ही इस्लाम के इतिहास का पर्याय समझा जाता है. जबकि इस्लाम के इतिहास को पैगंबर के इतिहास से जोड़ा जाना चाहिए. इसी तरह भारतीय परंपराओं को हिंदू परंपरा मान लिया जाता है, जो कि राजनैतिक दृष्टि से बहुत खतरनाक है. भाजपा सत्ता में आने के लिए किसी और मुद्दे को क्यों नहीं उठाती? राम सत्ता के प्रतीक नहीं हैं, वे तो त्याग के प्रतीक हैं.

राम जन्मभूमि समस्या के लिए तो तीन फार्मूले हैं. और ज्यादातर मुस्लिम नेताओं को

वे मान्य हैं. लेकिन विश्व हिंदू परिषद का एक भी महत्वपूर्ण नेता उन्हें नहीं मानता. तब हमने सोचा कि कहीं तो समझौता होना ही चाहिए. यदि कोई मुसलमान राम का अनादर करता है तो मैं भाजपा का पक्ष लूंगा. यह तो मेरी कल्पना के ही बाहर है कि ऐतिहासिक, धार्मिक, व्यावहारिक दबावों के चलते कोई मुसलमान यह कह दे कि वह राम का अनादर करता है. जेतली: मेरे खयाल से असल समस्या भारत में मूसलमानों की भूमिका के प्रति हमारे नजरिए के



अरुण जेतली भाजपा नेता

"हिंदुत्व सिर्फ धर्म का ही पर्याय नहीं बंल्कि वह संस्कृति, लोकाचार का द्योतक है"

"सहअस्तित्व और सद्भाव की बात क्या सिर्फ एकपक्षीय मामला

> गिरिलाल जैन पत्रकार



कारण है. क्या वे चुनाव के दिनों में सिर्फ वोट भर डालने के लिए हैं? या वे राजनैतिक सत्ता के पुर्वे भर हैं? या देश की मुख्य धारा में हर तरह से भाग लेने वाले भारत के नागरिक?

यह कहना आसान है कि भाजपा ने अयोध्या का मुहा इसलिए उठाया है कि इससे उसे च्नावी फायदा होगा. भाजपा के लिए तो यह 1989 में भी फायदेमंद हो सकता था. लेकिन भाजपा नेतृत्व विहिप पर समझौते के लिए दबाव डाल रहा था. लेकिन

समझौते की कोई शुरुआत ही नहीं की गई इससे यह भ्रम फैला कि सरकार इस मामले को दवा ही देना चाहती है. सरकारी अध्यादेश की वापसी इन तथाकथित उदार सुझावों की नामंजूरी ही थी. इसकी वजह यह वताई गई कि इसके साथ लगी जमीन 'वक्क' की थी. और वक्फ की जमीन आप कैसे बे सकते हैं? जबिक वैष्णो देवी और तिरुपति जैसे प्रसिद्ध हिंदू मंदिर कानून के तहा अधिग्रहित किए जा चुके हैं.

जसवंत सिंहः मेरे विचार से धर्मनिरपेक्षता के मूल अर्थ और भारत में इसके व्यावहारिक स्वरूप में अंतर है. व्यावहारिक अर्थ में अल्पसंख्यकों में दहशत धर्मनिरपेक्षता फैलाकर, फिर उस दहशत का शोषण करते हुए वोट खींचने का जरिया भर रह गई है. मे दावे के साथ कह सकता हूं कि धर्मनिरपेक्षण की नेहरू की परिकल्पना ऐसी नहीं रही होगी. जिस रूप में आज इसे लिया जा रहा है. आव इसका जो स्वरूप है वह भारत के राष्ट्रीय हित के लिए बहुत घातक. है. धर्मनिरपेक्षण आखिर शासन चलाने को सिद्धांत भर ही ती नहीं है. यह तो बहुत ही कारगर और अनोवा सिद्धांत है. इसे विकृत रूप में नहीं लिया जाता चाहिए. इसे ऐसी मूर्ति नहीं बनाया जाना चाहिए जिसे मंदिर में स्थापित करके पूर्व शुरू की जा सके. मगर हम यही करना बहुत हैं धर्मनिरपेक्षता के पीछे आप जितना दौर वह आपसे उतनी ही दूर होती जाएगी और अंततः पहुंच से ही दूर हो जाएगी. इसिली हमें इसके सकारात्मक पक्ष पर जोर देता है येचुरी: मान लीजिए, हम कहें कि धर्म औ राजनीति को एक दूसरे से मिलाना वही चाहिए?

जसवंत सिंहः तब आपको यह तम करनी पड़ेगा कि धर्म क्या है. मैं भी एक हिंह लेकिन कौन-सा हिंदू हूं? रामानुजाबारी शाक्य या शैव या वैष्णव? मेरा ह्यात है वि रामकृष्ण मिभन द्वारा अल्पसंख्यकों का हर्व मांगना वेवकूफी नहीं, एक तरह की वंगर्पी है आपको अल्पसंख्यक का दर्जा क्यों वि

के दिनों में कि लिए हैं? के पुर्जे भर गरत में हर भारत के

न है कि
का मुद्दा
इससे उसे
भाजपा के
पे फायदेमंद
न भाजपा
तैते के लिए
ा. लेकिन
हीं की गई
इस मामले

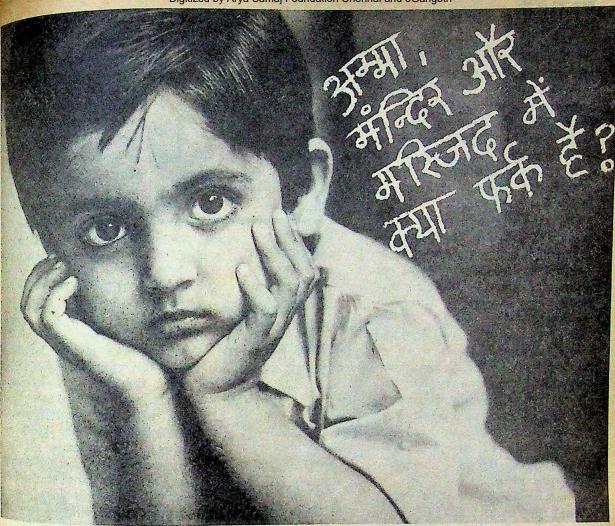
थित उदार ो वजह यह मीन 'वक्फ' गप कैसे ने र तिरुपति के तहत

गरपेक्षता के व्यावहारिक का अर्थ में विकास करते हैं विकास करते हैं में भीनरपेक्षता रही होगी. हा है. आज के राष्ट्रीय मिनरपेक्षता अर ही ती विकास करते ही होगी.

तीर अनेबा लिया जाना पाया जाना करके पहले हैं। जित्ना चाहते हैं। जित्ना चाहते हैं। जित्ना चाहते हैं। जित्ना चाहते हैं। चित्र चेता हैं। जित्ना चाहते हैं।

तय कर्ता क हिंदू में का वर्ष

ो वेशमी है। क्यों दिवा



कांग्रेस (इ) का मानना है कि, सभी धर्म एक समान हैं, और केवल एक स्थिर सरकार ही देश में शांति और भाईचारा बनाये रख सकती है।

स्थिरता को वोट दें

कांग्रेस(इ)को वोट दीजिए

Issued by The General Secretary (Incharge Publicity), All India Congress Committee (I) 24, Akbar Road, New Deihl.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

sein.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

जाए? आपको बराबरी का दर्जा मिला है? और आप भी तो उतने ही भारतीय हैं. जितना कि मैं हं

हबीब: कुछ पार्टियों के लिए बेहतर होगा कि वे साफ-साफ कहें कि वे इस धारा को संविधान से हटा देना चाहते हैं. हर पार्टी के अपने अल्पसंख्यक आधार हैं, यहां तक कि भाजपा के भी. ऐसा क्यों? शायद इसलिए कि ये पार्टियां इन अल्पसंस्थकों को वोट बैंक के रूप में ही देखती हैं.

मुसलमान गंदी बस्तियों और झोंपडपट्टियों में रह रहे हैं. वहां न नागरिक सुविधाएं हैं न ट्युबलाइटें, न पार्क, न अस्पताल, न सड़कें, न बैंक, न स्कुल. असली समस्याएं ये ही है. क्या आप एक भी लोकतांत्रिक देश का नाम गिना सकते हैं, जो अल्पसंख्यकों की समस्याओं से त्रस्त नहीं है?

नदीः मैं एक वाक्य में आपको वताऊंगा और आप उस पर मनन करें. केवल एक ही संस्कृति ऐसी है जो मौलिक है, कहीं से उधार ली हुई नहीं है. बाकी सभी संस्कृतियां कहीं-न-कहीं से निकली हैं. इसलिए समन्वयवादी है. लोकतांत्रिक व्यवस्था में वहसंख्यकों को स्वतः बड़ा दर्जा मिल जाता है, और यह अल्पसंख्यों के मुकावले ऊंचा होना है.

### इसका हल क्या है?



येचुरी: जो लोग आज हिंदूवाद की दुहाई दे रहे हैं, वे अपने राजनैतिक लाभ के लिए ही इसका इस्तेमाल कर रहे हैं. मिसाल के तौर पर विवेकानंद के इस कथन

को ही देखें: "मुझे उस व्यक्ति पर अंदर से दया आती है जो दूसरे धर्मों के विनाण की आकांक्षा रखता है और अपने धर्म की उन्नति चाहता है."यहीं हिंदू संस्कृति है. आज जो कुछ हमारे देश में हो रहा है, वह हिंदू धर्म के आदर्शों के बिलकुल विपरीत है. यहां एकांत में बैठकर हम इस बात पर जिरह कर सकते हैं कि हिंदुवाद का सही अर्थ क्या है और क्या नहीं. लेकिन यथार्थ में और व्यवहार में इसका क्या अर्थ है? इस देश में आज किस तरह के नारे गुज रहे हैं?

सवाल, यह है कि लोग आज



जसवंत सिह भाजपा नेता

"धर्मनिरपेक्षता तो आजकल जैसे भय पैदा करने का औजार बन गया है"

"अगर मुसलमानों की संख्या हिंदुओं के बराबर होती तो वे इसे इस्लामी राज्य घोषित कर देते"

ख्शवंत सिह



हिंदुत्व के दार्शनिक या धामिक पहलुओं पर विचार नहीं कर रहे हैं. वे तो वस केवल एक साम धर्म के मानने वालों को इस देश में रहने, जीने का अधिकार देने की सोच रहे हैं.

स्वप्नः आजादी के चार दशकों के वाद आज ये समस्याएं क्यों क्षि उठा रही हैं? मैं आपकी इस वात से सहमत हूं कि देश का धर्म से कोई वास्ता नहीं होना चाहिए लेकिन किसी सर्वसम्मत राष्ट्रीय नजरिए का अभाव भी एक जिंदल समस्या है. इसका विकृत हुए

अगले क्

समेन आप

त्वय-पत्र

वह आत

ग्ग्... उस

हे व सफल

स्री-बाद वि

वह आप

ानकारी देग

नस्याओं क

प्रदूषित

वह दो अ

णाः यूरोक्त

जी आदि.

पंजाव में 1984 में देखने को मिला. साथ ही हम कश्मीर में अलगाववादी भावनाओं का उबाल देख रहे हैं, असम में भी आसार कुछ ऐसे ही लग रहे हैं. इन सबसे यही बात पकी होती है कि भारत को एक रखने वाले मुत्र अब कमजोर पड़ रहे हैं. इसी संदर्भ में हमारे सामने कई ऐसी कोशिशों के उदाहरण है कि खंडित राष्ट्रीयता वाले इस देश को एक स्वरूप दिया जाए इसीलिए राष्ट्रवाद का एक टिकाऊ स्वरूप तैयार करने के राजनैतिक सोच को आकार देना जरूरी हो गया है. और इस राजनैतिक प्रक्रिया में सांस्कृतिक विरासत और उसके प्रतीक चिन्हों को पुनर्जीका करना भी शामिल है. सावरकर ने भी हिंदुल को वाराणसी या हरिद्वार के पंडों की जागीर नहीं समझा था. उन्होंने इसमें एक ऐसा राजनैतिक आदर्श देखा था जो लोगों की पहली वार उन्हें उनकी हिंदू पहचान का बीध करा सकता था.

येचुरी: यह भारतीयता हिंदूबाद के आधार पर तो नहीं आ सकती. भारत अपनी विविधता में ही एक रह सकता है, एकहपती

स्वप्नः यह भाव उस विचार के प्रति साझ प्रतिबद्धता से ही जन्म ले सकता है जिने भारत कहा जाता है. मैं आपको पंजाब की उदाहरण दूंगा. पंजाब में अलगाववाद की बढ़ उस संभावित विलगाव में छिपी हैं जो पिछी सौ वर्षों के दौरान बनाई गई एक अलग सिंब पहचान की ही देन हैं. यह पहचान हिंदूल की मुख्यधारा से अलग है.

येचुरीः भारतीयता के भाव में पूरी जनता की मनोभाव शामिल होना जरूरी है और वह केवल हिंदुत्व तक सीमित नहीं हो सकती जैनः ऐसा नहीं कि हिंदू आहत है. हिंदुओं है अपनी शक्ति को एकजुट कर लिया है भाजपा हिंदुओं की शिकायतों का नहीं बर्वि उनके आत्मविश्वास का प्रतीक हैं. लेकिन गृह उत्तर भारत में ही अधिक सार्थक है क्यां परंपरा और मर्यादा को क्षति पहुँचाने त्या राजनीति को घिनौना रूप देने की का

र भर के धूल-मैल से मुक्ति की सबसे सुविधाजनक युक्ति समझाने, दिखाने आया है यूरेका फोर्ब्स से आपका ये दोस्त.

अगले कुछ दिनों के बीच यूरेका फोर्ब्स का समेन आपके दरवाजे पर आएगा और अपना विय-पत्र दिखाएगा.

ग धामिक

डी कर रहे वास धर्म स देश में

र देने की

दशकों के क्यों सिर ो इस वात

का धर्म से

ा चाहिए त राष्ट्रीय

एक जटिल

वकृत हप

ा. साथ ही

वनाओं का गासार कुछ

बात पक्की

वाले सूत्र र्भ में हमारे

हरण हैं कि

को एक

ाद का एक

राजनैतिक या है. और

क विरासत

पुनर्जीवित भी हिंद्रल

की जागीर

एक ऐसा

लोगों को न का बोध

के आधार रत अपनी

एकस्पता

प्रति साझ

T है जिसे पंजाब का

द की जहें

जो पिछले अलग सिब

हिंदुत्व भी

जनता का

और यह

हिंदुओं ने लिया है

नहीं बनि लेकिन पर हे क्योंकि चाने तथा

का काम

सकती.

बहु आत्मविश्वास जगाएगा - और क्यों न 喊 ... उसका संबंध भारत में अपनी तरह के सबसे व सफल बिक्री-संगठन से जो है, साथ ही जो, र्जी-बाद विश्वसनीय सेवा भी देते हैं.

वह आपको आधुनिक घरेलू उत्पादनों की ज़्ज़री देगां, जो आजकल की कई जयाओं को सुलझा सकते हैं, जैसे कि ह प्रदूषित पेयजल, प्रदूषण, नौकरों की नी आदि

वह दो अनोखे उत्पादनों का प्रदर्शन **णः यूरोक्लीन—एक बहु—उपयोगी सफाई** प्रणाली जो सादे वैक्यम क्लीनर से कहीं आगे है.

और अक्वागाई-नल की लाइन में जोड़ा जानेवाला वाटर फिल्टर-कम-प्यूरिफायर.



यूरोक्लीन आपके घर से धूल और कचरा चुन-चुन के निकालता है-वह धूल जो आपकी नजरों में कभी न आई हो. फिर भी जरा सी परेशानी नहीं देता. अक्वागार्ड स्विच खोलने के बाद नल चालू करते ही स्वच्छ-स्वास्थ्यकर पीने का पानी देता है, चाहे नल के पानी में पहले कितने ही जीवाणु (बैक्टीरिया)हों.

यरेका फोर्ब्स का सेल्समेन आपको घर पर ही आकर बताएगा कि किस तरह इन उत्पादनों द्वारा आप अपने घर को स्वच्छ व स्वास्थ्यकर बना सकते हैं, और ये आधुनिक उपाय आपके परिवार के लिए कितने लाभकारी हैं.

हमारा सेल्समेन आपके घर आएगा यही सोच कर इंतज़ार करने की आवश्यकता नहीं है. उसे बुलाने के लिए इस पते पर लिखिए-यूरेका फोर्ब्स, पो.ऑ. बॉक्स 936, जी.पी.ओ. बम्बर्ड 400 001.



<sup>६</sup>-उपयोगी सफाई प्रणाली में वेक्सूम क्लीनर से कहीं आगे है.

EFU188 R1 hn

अल्लाला

नल की लाइन में जोड़ा जानेवाला वाटर फिल्टर-कम-प्यूरिफायर

🛨 यूरेका फोर्ब्स लिमिटेड स्वच्छ व स्वास्थ्यकर आधुनिक उपायों में अग्रसर



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

ज्यादातर यहीं हुआ है.

भारत 1947 से केवल ताम को छोड़कर हिंदू राष्ट्र ही रहा है. मुस्लिम नजरिए से यह बात कष्टकर है पर यह एक ऐसी सचाई है जिससे वे भागना चाहते हैं. वे बार-बार खुद को मूर्ख बनता देखते रहते हैं. अल्पसंस्यक की अपनी पहचान को बचाने के नाम पर वे ख्द को भारत के नागरिक के रूप में स्थापित करने के इच्छुक नहीं. यह एक अजीबोगरीब स्थिति है. और इससे अधिक मूर्वता की बात क्या हो सकती है? मेरा अभिप्राय यह है कि मुसलमान अपनी ही मुर्खता के शिकार हैं. मैं यह सार्वजनिक तौर पर कहने को तैयार हं उस स्थान के लिए कैसी मारामारी जो अब मस्जिद है ही नहीं? अगर मुसलमान चालाक होते तो इस इमारत को हिद्ओं को पहले ही सौंपकर भाजपा की हवा बाहर कर देते. भाजपा अपनी ताकत पूरी तरह मजबूत करने तक मंदिर बनाना कर्ताई नहीं चाहेगी.

मेरी अपनी मान्यता है कि अल्पसंख्यकों ने वैसा किया होता तो उनकी बेहतर सुरक्षा होती क्योंकि भाजपा बचाव पर उतर आती और उसके पास वैसे बहाने नहीं होते जो इंका बनाती आई है. मुसलमानों को पूर्ण नागरिक की हैसियत से अपने अधिकारों की मांग करनी चाहिए.

हबीबः जरा बताइए; पूर्ण नागरिक से आपका क्या तात्पर्य है?

जैनः अल्पसंख्यकों के नाते अपने अधिकार मत मांगिए.

हबीबः फिर हमारे संविधान में ऐसा क्यों लिखा गया है?

जैनः संविधान मैंने नहीं लिखा.

स्वप्नः मेरे हिसाव से राम जन्मभूमि मसले का केवल एक समाधान हो सकता है. और यह येचुरी के आदर्श के नजरिए से नहीं हो सकता. तब तो आप काशी. मथुरा और 3.000 दूसरे स्थानीय विवादों को फिर से हवा

देंगे. और जब भी यह पिटारी खुलेगी, हम समस्याओं के गर्त में इव जाएंगे. इसलिए ऐसे में सबैधानिक गारंटी का सहारा ही लिया जा सकता है. यह एक खुली बात है जो आडवाणी कह चुके हैं. जैनः स्वप्न, तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि हिंदुओं को यह खानिभाव मुसलमानों ने नहीं दिया. उसे यह खानिभाव उपनिवेणवादियों और बाद में जवाहरलाल के नेतृत्व में उनके अनुयायियों ने दिया.

खुशवंत सिंहः मेरा नजरिया ठोस,



आणीष नंदी वरिष्ठ अध्येता, सेंटर फाँर स्टडी ऑफ डेवर्लीपंग सोसाइटिज

"धर्मनिरपेक्षता, राज्य और राष्ट्रवाद के बारे में हमारी समझ व्यावहारिक नहीं, किताबी है"

"असली संघर्ष तो संविधान की मूल धारणाओं और सांप्रदायिकता के बीच है"

सीताराम येचुरी माकपा नेता



यथार्थपरक है. इसमें बौदिक्ता कम है. हमने धर्म को वेलगाम कुट दे रखी है. सरकार को स्कूलों में धर्म की पढ़ाई पर विलकुल गेक लगा देनी चाहिए.

मेरा खयाल से भाजपा भयानक है, और वह कट्टरवाद की दोगली संतान है. अकाली भी ऐसे ही है उन्हें समर्थन मिल रहा है क्योंकि के लोगों को उकसाकर उनके भीतर की विकृतियों से खेल रहे हैं. और इसके साथ-साथ ढेर सारा कुप्रचार भी किया गया है, खास तौर मे मुसलमानों के खिलाफ यह कहकर

कि उनके यहां बच्चे ज्यादा हो रहे हैं और उनकी चार-चार पित्नयां होती हैं, वे क्या सावित करते हैं. कई हिंदू एक से अधिक पित्नयां रख रहे हैं. करुणानिधि की तीन पित्नयां हैं, राजमंगल पांडेय की दो या तीन हैं, उसके बाद लोग यह इलजाम लगाते हैं कि उनके घर बच्चे ज्यादा हैं. इसका क्या जवाव हो सकता है? बी बी. गिरि के 11 बच्चे थे और लालू प्रसाद यादव के नौ. भाजपा या कांग्रेस ने अरुण गोविल को राम के स्प में और दारा सिंह को हनुमान के भेष में चुनाव प्रचार के लिए भेजा था. अब वे अकालियों और दूसरों को उपदेश दे रहे हैं.

किसी भी धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति का यह परम दायित्व है कि वह भाजपा को पराजित करने में योगदान करे. मैं अकालियों के नाण का भी इच्छुक हूं. मैं मुस्लिम लीग की भी हार देवना चाहता हं.

आडवाणी कहते हैं कि भारत हिंदुओं के कारण धर्मिनरपेक्ष है. ठीक है, मैं यह दलीन मानने को तैयार हूं: अगर आज मुसलमान हिंदुओं की संख्या के बराबर होते तो वे इस देण को इस्लामी देश घोषित कर देते. पर हमारे लिए गर्व की बात तो यह है कि हम एक धर्मिनरपेक्ष देश में है, हालांकि यहां अभि फीसदी हिंदू रहते हैं. गांधी और नेहह औं हिंदुओं ने ऐसा फैसला किया, न कि आज के इन हिंदुओं ने.

ये तो कट्टरवाद के मारे हुए वे क्षुद्र लोग हैं जिन्हें देश के भविष्य का कर्तर्ड ध्यान नहीं जो भी मुसलमान विरोधी है वह उनकां हीरों है में सिर्फ इतना ही कह सकता हूं कि जिस कि उन्होंने अयोध्या में मस्जिद को हाथ लगाओ होता, उस दिन उन्होंने भारत की आत्मा को शारमा को आत्मा को, और धर्मनिरपेक्षता की आत्मा को सार डाला होता. यहां इस बात का आत्मा को मार डाला होता. यहां इस बात का आत्मा को मार डाला होता. यहां इस बात का भीई मतलब नहीं है कि मस्जिद में तमा कोई मतलब नहीं है कि मस्जिद वहां है और बनाई गई है या नहीं, मस्जिद वहां है और बनाई गई है या नहीं. मस्जिद वहां है और हमते हिंदुओं को इस बात पर गर्व है कि हमते दूसरों के पूजास्थलों को नहीं तोड़ा.

The state of the s

बोफ़ोर्स और एच.डी.डब्ल्यू. पनर्डाब्बयां, खानदानी राज और भाई-भतीजावाद...

वईमान नताओं को कब तक हम देश को लूटत एहने देंगे?

घोखा - कांग्रेस का दूसरा नाम.

### विश्वासघात!

वौद्धिकता. लगाम दूर

। स्कूलों में नकुल रोक

पा भयानक की दोगली ऐसे ही है है क्योंकि वे नके भीतर रहे हैं और र तौर से यह कहकर रहे हैं और हैं, वे क्या से अधिक से अधि

गाते हैं कि

क्या जवाव

1 वच्चे थे

भाजपा या

के रूप में

य में चुनाव

अकालियो

न यह परम

ाजित करने

गण का भी

हार देखना

हिंदुओं के

यह दलीन

मुसलमान

तो वे इस

र देते. पर

音雨哥

के यहाँ 80

नेहरू जैसे

के आज के

भुद्र लोग है न नहीं जो

नं हीरों है

जिस दिन

ाथ लगाया आत्मा को रपेक्षता की स बात की

में नमाव र तोड़का हां है और कि हमने यह विश्वासघात नहीं तो और क्या है कि अपने फ़ायदे के लिए देश की सुरक्षा और जनता की ज़िंदगी ही दांव पर लगा दी गईं.

जनता के साथ यह विश्वासघात उसी सरकार ने किया 💊 जिसे उसने बड़े भरोसे के साथ चुना था.

बोफ़ोर्स, एच.डी.डब्ल्यू. पनडुब्बियां, एयरबस ए-320...

जब सरकार कुछ बड़े व्यापारियों के इशारे पर सौदे पर सौदे करती जाए तो उसका अर्थ और हो भी क्या सकता है?

### लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ विश्वासघात

कांग्रेस, द्वारा पूरी ताकत से एक ही खानदान का राज थोपने के प्रयत्न—जिससे निरंकुरा शासन पनपता है — यह लोकतात्रिक मूल्यों के साथ विश्वासघात नहीं तो और क्या है?

कानून में संशोधन करके, सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसले का मखौल उड़ाना, देश के सर्वोच्च न्यायालय के जजों की नियुक्ति में मनमानी करना — और क्या हैं?

और इमर्जेंसी! कांग्रेस की उस अविस्मरणीय,डरावनी देन को आप और क्या कहेंगे?

कांग्रेस सरकारों द्वारा प्रेस की आज़ादी पर निरंतर

हमला, और अधिकारी-तंत्र तथा अन्य संस्थाओं को विकृत बनाना-इन पर आपकी राय और क्या हो सकती है?

### बहुत हो चुका, अब और नहीं!

हमने बाकी सब को मौका दिया.

और भारी कीमत चुकाई.

अब वक्त आ गया है-भा.ज.पा. के साथ चलने का.

क्या आपने कभी सुना है कि किसी जाँच आयोग ने भा.ज.पा. के किसी नेता को भ्रष्टाचार के आरोप में दोषी ठहराया हो?

यह भा.ज.पा. ही है जिसने न्यायपालिका और प्रेस जैसी लोकतात्रिक संस्थाओं पर हुए हमले का या अधिकारी-तंत्र को विकृत करने के हर प्रयास का ज़ोरदार विरोध किया.

भा.ज.पा. — साफ-सुथरा प्रशासन, स्वतंत्र समाचार-माध्यम और निडर न्यायपालिका के लिए प्रतिबद्ध.

भा.ज.पा.—जिसके नेताओं की ईमानदारी बेदाग़ है. आप ही की तरह, भा.ज.पा. भी राष्ट्रवाद के सही अर्थ के प्रति पूरी तरह समर्पित है — यानी सबको समान हक़, मगर तष्टीकरण किसी का नहीं.

देश का भविष्य बनाना आपके हाथ में है. अवसर आपके सामने है. भा.ज.पा. को वोट दें.

रामराज्य की ओर चलें की

विकास स्वामंबद्दन मय। विकास के नमय देना, वहीं थेना पूर्व है.) विकास के किए नाटमं एकता है.) विकास के किए नाटमं एकता है.

राम\* भय से म्बित

型

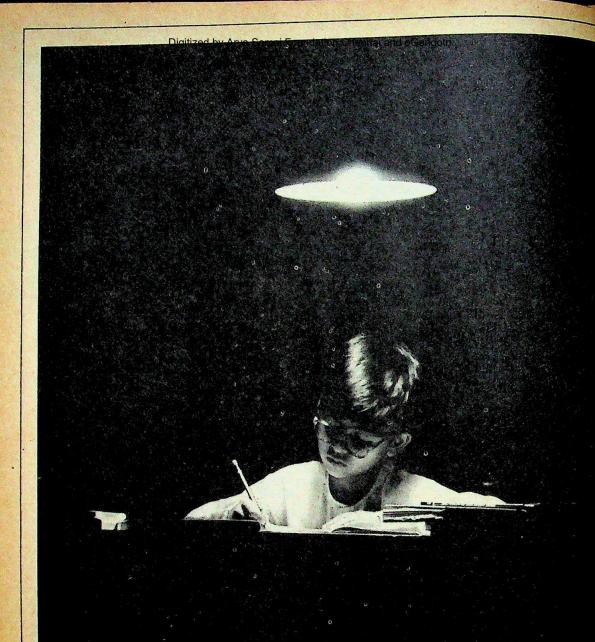
रोटी अभावों से मनित

A.

इन्साफ़ भेदभाव से निकत

CC-0 In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridway

RK SWAMY/BBDO BUP 6213 HIN



बड़े उ

सहपा में देर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

# अपने सहपाठियों के मुकाबले आशीष को प्राप्त है एक अनुचित सुविधा. वो अंधेरे में देख सकता है.

वहां पड़ोस में बिजली गुल है. पर आशीष बिल्कुल बेख़बर है इस बात से. जब कि उसके सहपाठी मोमबत्ती की रौशनी में पढ़ने की कोशिश कर रहे हैं, आशीष बड़े आराम से पढ़ाई कर रहा है. इसकी वजह है उसके घर में तैनात बुलडॉग की की पहरेदारी. ऐसी शक्ति जो मिलती है श्रीराम हौंडा के पोर्टेबल जेनसेट से. ये जेनसेट कभी भौंकता नहीं. सिर्फ सुरक्षा करता है. बड़ी ख़ामोशी से ये गुल हुई बिजली से फैले अंधेरे को भगा देता है.

रही बात आपके लाडले की. क्या वो भी आशीष के सहपाठियों में से एक है? या फिर, आशीष की तरह, वो भी अंधेरे में देख सकता है?



भीतम **हैंडा पावर इक्किपमेंट लिमिटेड**, कीर्ति महल, पांचवी मंज़िल, १९, राजेंद्र क्षेत्र, नहें दिल्ली-११०००८. फ्रोन : ५७३९१०३/०४/०५



LINTAS (DELHI) RC HON 3 2536 H

# संदेह में पड़ें

ट्यारी ममी

इस चुनाव में मैं सोच-विचारकर वोट दूं यह मुझाव देने के लिए धन्यवाद. जैसा कि आपने कहा था मैंने सभी पार्टियों के चुनाव घोषणा-पत्र जमा किए और सबको पढ़ा भी. इनकी शानदार योजनाएं देखकर तो मैं उत्साहित हं.

मम्मी, ऐसा लगता है कि अगर हमने कांग्रेस को बोट दिए तो वह प्राइवेट टीवी और रेडियो स्टेशन खुलवाकर हमें दूरदर्शन के ऊबाऊ कार्यक्रम झेलने से मुक्त करा देगी. ऐसा लगता है कि ये माध्यम उस प्रसार भारती से प्रतिद्वंद्विता करेंगे, जिसे आप बकवास कहती हैं.

और आपको मालूम है कि इंका और क्या-क्या करने जा रही है? वह गांव के गरीबों के लिए दस लाख और हरिजन तथा वनवासियों के लिए दस लाख घर बनवाने जा रही है. पार्टी 10 लाख कुएं

खुदबाएगी और एक करोड़ लोगों को रोजगार देगी. हरिजन और वनवासियों के 50 लाख घरों में बिजली पहुंचाएगी और यह सब वह सत्ता में आने के पहले साल ही कर डालेगी.

और अगर हमने राष्ट्रीय मोर्चा को वोट दिए तो 10 वर्षों में वह बेरोजगारी दूर कर देगा. वी.पी. सिंह अब काम के अधिकार की बात नहीं करते. यह काम भाजपा के जिम्मे छोड़ दिया गया है जिसने पूरे देश में रोजगार गारंटी योजना चलाने का वादा किया है. और चंद्रशेखर की समाजवादी जनता पार्टी एक करोड़ लोगों को काम देने वाली रचना वाहिनी बनाने की बात कहती है. चार साल में वह पूरे देश में सभी को साक्षर बना देगी. मम्मी आप भी हरदम कहा करती हैं कि यह आदमी तो अच्छे काम करना चाहता है, सिर्फ क्संगति में पड़ गया है.

आपने अर्थव्यवस्था और व्यापार में आगे होने वाले बदलावों की बात नहीं सूनी होगी. अगर इंका जीती तो जाने किन-किन कामों में निजी क्षेत्र को आने की अनुमति दे देगी और अनेक क्षेत्रों से सरकारी कंपनियों का पत्ता कट जाएगा. स्पष्ट रूप से बजट का घाटा इतना कम हो जाएगा कि हम इसे भूल ही जाएंगे. भाजपा मुद्रा आपूर्ति को आधा कर देगी और विकास दर को 7.5 फीसदी तक पहुंचा देगी. राष्ट्रीय मोर्चा घाटा कम करने की बात करता है और इंका सत्ता में आने के पहले साल में ही गैर-विकास खर्चों में 10 फीसदी कटौती करने का दावा करती है. मम्मी, इतनी सारी योजनाओं को लागू करने के बावजूद ये दल खर्च कैसे घटा देंगे?

अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए बहुत कुछ किया जाना है. राष्ट्रीय

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGarmips ने योजना मद से काफी बड़ा भाग इन पर खर्च करने का वादा किया है इंका लखनऊ में 110 करोड़ रु. की लागत से डॉ. आंबेडकर विश्वविद्यालय स्रोलना और वनवासियों के लिए विशेष अदालतें गठित करना चाहती है. और पालम हवाई अहे का नाम आंबेडकर के नाम पर करने का वादा किया है.

इन सबको देखकर तो लगता है कि सचमुच का रामराज्य आ जाएगा. हां, सभी पार्टियां अयोध्या में राम मंदिर के मसले पर एकमत नहीं हैं:

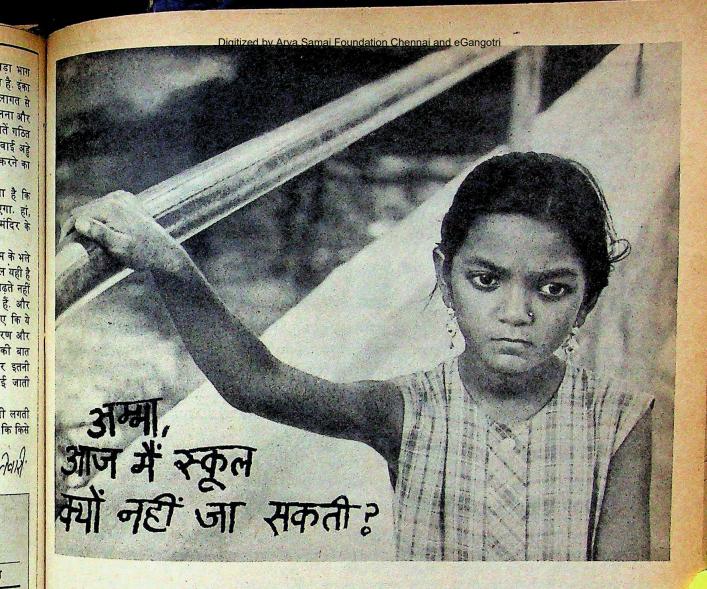
पर, कश्मीर, पंजाब और असम के भले के बारे में सभी एकमत हैं. मुश्किल यही है कि आतंकवादी घोषणा-पत्र तो पढ़ते नहीं और लोगों को मारे चले जाते हैं. और आपको खुद पढ़कर देखना चाहिए कि ये सभी राजनेता सत्ता के विकेंद्रीकरण और लोगों के हाथ में सत्ता सोपने की बात कितनी निष्ठा से करते हैं. फिर इतनी राज्य सरकारें भला क्यों गिराई जाती रहती हैं, मम्मी?

उनकी बातें भली और प्रभावी लगती हैं, फिर भी मैं नहीं जान पाया हूं कि किसे वोट दूं.

अगातों के लिवारी

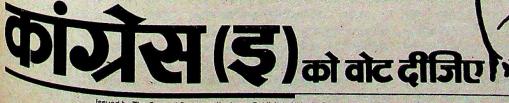
इंडिया टुडे के सवालों का जवाब इंका की ओर से प्रणव मुकर्जी, राष्ट्रीय मोर्चा से जयपाल रेड्डी, सजपा से सत्यप्रकाश मालवीय ने दिया. भाजपा का जवाब आवरण कथा में समाहित है.

सवाल	इंका .	रामी	सजपा
खाद्य सामग्री, खाद पर रियायत कम करेंगे?	गैर-विकास सर्चों को घटाएंगे	<b>हां</b>	नहीं
मंडल रिपोर्ट पूरा का पूरा लागू करेंगे?	भारता सुविधाएं जारी रहेंगे. साथ ही आर्थिक रूप से पिछड़ों को नौकरियों में आरक्षण देंगे	हां	सुधार करेंगे
पंजाब, कश्मीर के उप्रवादियों से वार्ता करेंगे	शांतिपूर्ण समझौते की कोशिश करेंगे	gi	हां
पार्टियों के कोषों का सार्वजनिक लेख परीक्षण कराएंगे?	सरकार फैसला करेगी	ξί	पार्टी फैसला करेगी
अयोध्या में राम मंदिर बनवाएंगे	मस्जिद गिराए बिना	मस्जिद की छुए बिना	मस्जिद को तुः सान पहुंचाए
राज्यों को आधिक न्यायत्तता देंगे?	सरकारिया आयोग की सिफारिशें लागू करेंगे	ąi į	दे सकते हैं
धारा 370 को रह करेंगे?	नहीं	नहीं	नहीं
विदेशी निवेश को बढ़ावा देंगे?	सरकार फैसला करेगी		हां



एक स्थिर सरकार ही देश में सुरक्षा और व्यवस्था प्रदान करा सकती है जिससे, हर आदमी चैन से जी सके... हर बच्चा स्कूल जा सके।

स्थिरता को वोट दें



Issued by The General Secretary (Incharge Publicity), All India Congress Committee (I) 24, Akbar Road, New Delhi,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

8.0

Digitized by Arya Samai Foundation Cheffinal and eGangotri

# दुस्साहसी कदम

राष्ट्रपति रामस्वामी वेंकटरामन और मुख्य चुनाव राजनीति के प्रति अपने चिर दुस्साहसिक और आयुक्त टी.एन. शेषन के साथ जूझने के लिए अपने आंदोलनकारियों वाले रुख को सही साबित करते हुए मंत्रिमंडलीय फैसले को

प्रधानमंत्री चंद्रशेखर ने आखिरकार पंजाब और असम जैसे अशांत राज्यों में चुनाव कराने का फैसला कर ही लिया. इंका समेत कई राष्ट्रीय पार्टियों विरोध और बड़े पैमाने







(बाएं से) चंद्रशेखर, शेषन और वेंकटरामन

हथियार बनाना पड़ा वैसे, चुनाव की इस आकस्मिक घोषणा है संभावित उम्मीदवार कानून-व्यवस्था के कर्णधार दोनों ही सकते में आ गए

न मतदा

वेपर उन्हें

विजय मिल

उधर, गमर्थन र अकाली दल

नेने का पै

इस्तार सि

बोर इशार

चुनावों व

स्ता बहुव

आन वाले.

योगों के व

शना पहल

कि मना में

र्यात क्या र

शन जैसे

टेम अव

२ लोकत

काली की

के इतनी

हो थी कि

में में ले

ल्या की

टेकर गांदि वे गया है

वेमा इतना

में घोषणा

व स्थल न

के के लिए

और :

वित्मक ह

विया है, उ

मरकार

पर चुनावी धांधली तथा आतंकवादी हिंसा की पंजाब से कंवर संधु और असम से फरजंद अहमद की आशंकाओं को दरिकनार करने के साथ-साथ उन्हें रिपोर्ट:

## अनिश्चित माहौल

### उग्रवादी अब चुनावी राजनीति करेंगे

ने भी इसमें हिस्सा लिया. अमृतसर में तो क्छ मृत उग्रवादियों के रिश्तेदारों ने भी नामांकन के पर्चे भरे.

इस बीच, सिमरनजीत सिंह मान की अगुआई वाले अकाली दल ने एक नया ही रूप दिखाया. तलवंडी साबो में वैशाखी समारोह के दौरान मान ने यह कहकर सनसनी पैदा कर दी कि पंजाब में चुनाव स्वतंत्र और संप्रभुतासंपन्न सिख राज्य के मुद्दे पर लड़े जाएंगे. जाहिर था कि मान ने उप्रवादियों को खुण करने के लिए ही यह उग्र रवैया अपनाया.

मान की आलोचना अनेक क्षेत्रों से हुई है. इंका अध्यक्ष राजीव गांधी ने उग्रवादियों का राज्य की विधानसभा में वर्चस्व हो जाने की आशंका जाहिर की है. पंजाब भाजपा प्रमुख मदनमोहन मित्तल ने मान को उनके अलगाववादी बयानों के लिए गिरफ्तार करने की मांग की है.

सरकार भी मान के उग्र तेवर का मुकावला करने की कोशिश कर रही है. चंद्रशेखर ने पूर्व आईएएस अधिकारी गुरतेज सिंह की पहल से बनी 'सिख और पंजाब समस्या के समाधान के लिए समन्वय समिति' से बातचीत की और कई

'रियायतों' की घोषणा की इनमें उन सिख बंदियों भी रिहाई, जिन पर कोई मुकदमा नहीं चल रहा है मंदिर मे स्वर्ण श्रद्धालुओं के बेरोकटीक

प्रवेश की गारंटी शामिल हैं. समिति अराजनैतिक होने का दावा करती है पर इसके सदस्यों का सिख छात्र संघ के मंजीत सिंह गुट से करीबी संपर्क हैं. मंजीत गुट ने राजनैतिक दल के रूप में काम करने की घोषणा की है और वह इन 'रियायतों की चुनावी मकसद के लिए इस्तेमाल करते क इरादा रखता है.

उदार अकाली नेतृत्व अब अकाली व (मान) के साथ विलय के अपने फैसते पर पुर्निवचार करने को बाध्य हुआ है. <sup>अकार्ती</sup> दल (बादल) ने तो अलग होकर चुनाव लड़ने का फैसला किया है. पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाण सिंह बादल के अनुसार उनकी पार्टी विधानसभा की करीब 74 और लोकसभी की 10 सीटों पर उम्मीदबार खड़े करेंगी उन्होंने मान पर तीनों धड़ों को एक करने नाकाम रहने का आरोप लगाया.

इस बीच, चार दलों का संयुक्त मीब वनाने के प्रयास कुछ आगे बढ़े हैं की भाजपा, माकपा और भाकपा उग्रवास्त्रि हारा समर्थित उम्मीदवारों को सीशी दुवर देने पर विचार-विमर्श करती आ रही वजह यह है कि 1989 के बुनाबों उग्रवादियों द्वारा समर्थित उम्मीदवारों की

"जाब में चुनाव के

पामले में शुरू से ही अनिश्चितता बनी रही है प्रधानमंत्री चंद्रशेखर राज्य में संसदीय और विधानसभाई दोनों चुनाव

कराने की घोषणा की लेकिन चुनाव आयोग ने उन्हें बाकी देश के चुनावों से अलग कर दिया. और वह मतदान तिथियों की घोषणा में अस्वाभाविक रूप से देर किए जा रहा है. अफसरशाही ने भी अड़ंगा लगा दिया है. पंजाब में पहले से ही तैनात अईसैनिक बलों की 350 कंपनियों के अलावा राज्य सरकार की 300 अतिरिक्त कंपनियों की मांग बाकी देश के साथ ही चुनाव की संभावना को रह करने के लिए पर्याप्त थी. गृह मंत्रालय के साथ एक बैठक में पंजाब के अधिकारियों ने इस समय चुनाव खासकर विधानसभा चनाव कराने का विरोध किया.

इस मामले में उग्रवादियों का अदृश्य हाथ भी अपना कमाल दिखा रहा था. चनावी प्रक्रिया की वहाली को रोकने के लिए उन्होंने अपनी कार्रवाइयां तेज कर दी.

बहरहाल, राजनैतिक प्रक्रिया की श्रुरुआत भी अकस्मात ही हुई. अमृतसर, जालंधर और लुधियाना के तीन नगर निगमों के लिए 28 अप्रैल को हुए चुनाव के लिए काफी उत्साह दिला, खासकर व्यापक प्रचार और उम्मीदवारों की संख्या के मामले में पंजाब में आम चुनावों का विरोध करने वाली भाजपा और वामपंथी पार्टियों

इंडिया दंडे 🔸 15 मई 1991

Digitized by Arya Samaj Foundation Chemnaf and eGangotri

गर निगमों के चुनावों से राजनैतिक प्रक्रिया की शुरुआत एक महत्वपूर्ण कदम है, हालांकि राजनैतिक दल आम चनाव को लेकर अभी आपस में उलझ रहे हैं

लोपोके गांव में अकाली दल की सभा में मान; और (नीचे) अमृतसर बमकांड का एक शिकारः नाजुक दौर

ल मतदान के आधे से भी कम मत मिले पर उन्हें 13 संसदीय सीटों में से 10 पर विजय मिल गई थी.

व्य चुनाव

लए अपने

फैसले को

ाना पड़ा

को इस

योषणा है म्मीदवार न-व्यवस्था

दोनों ही

आ गए.

अहमद की

घोषणा की

वंदियों की पर कोई

ल रहा है

मंदिर मे

बेरोकटोक

हैं. समिति

रती है पर

घ के मंजीत

जीत गुट न

म करने की

(यायतों को

ल करने का

अकाली दत

ने फैसले पर

है. अकाली

कर चुनाव के मुख्यमंत्री

उनकी पारी

र लोकसभा

खडे करेगी एक करने मे

युक्त मोर्ब

हैं हों।

उपवादियाँ

निभी रक्त

आ रही है

चुनावों में दिवारों की

उधर, उग्रवादी भी निष्क्रिय नहीं बैठे हैं. उग्रवादियों के शक्तिशाली गुट का गर्थन रखने वाले नवनिर्मित बब्बर काली दल ने चुनावी प्रक्रिया में हिस्सा न ने का फैसला किया है. इसके संयोजक **ख्तार सिंह नारंग ने मान के नए तेवर की** <sup>और इशारा करते</sup> हुए अमृतसर में कहा, वृगवों के जरिए 'आजादी' की बात ल्ला बहकावा भर है और हम इसमें नहीं गने वाले." दल ने चुनाव लड़ने के इच्छुक गीं के सामने आठ सवाल पेश करके गुना पहला गोला दागा है. वह चाहता है कि मना में आने वाले लोग उग्रवादियों के र्णि क्या रुख अपनाएंगे यह स्पष्ट करें.

<sup>सरकार</sup> ने अपराध संहिता में संशोधन <sup>हिने</sup> जैसे अप्रत्याणित कदम उठाकर यह र्गव भंदारी

तय कर दिया है कि राष्ट्रपति शासन के दौरान प्रशासनिक या पुलिस अधिकारियों की कार्रवाइयों पर उंगली नहीं उठाई जा सकती. यह व्यवस्था इस आशंका से की गई है कि पंजाब में निर्वाचित सरकार की स्थापना के बाद बदला साधने की कार्रवाई

न शुरू हो जाए.

दांव तो ऊंचे लगे हैं पर लगता है. सरकार ने यह फैसला इस उम्मीद में किया है कि चाहे जो कीमत चुकानी पड़े, चुनाव उग्रवादियों को राजनीति की मुख्यधारा में ले आएगा. - कंवर संध

असम

## जोखिम भरा खेल

उल्फा की अनुकूल प्रतिक्रिया

ट्रेम अव्यवस्थित राज्य में 🖣 लोकतांत्रिक प्रक्रिया की कोली की संभावना हाल क इतनी शीण नजर आ हों थी कि चुनाव के सुझाव र में लोगों का ध्यान

का की अलगाववादी गतिविधियों मे कर गांति स्थापना की संभावना की ओर के चुनाव कराने की घोषणा का के इतना नाटकीय रहा है कि उल्फा ने भेषण्णा कर दी है कि वह चुनाव प्रक्रिया भिन नहीं देगी. उसने अगली कार्रवाई हिंदे लिए युद्धविराम की अवधि बढ़ा दी की राष्ट्रीय पार्टियों के खिलाफ किन्द्र कार्रवाई' ते करने का फैसला कारवाइ त करन का अ उत्भा महासचिव अनूप चेटिया ने

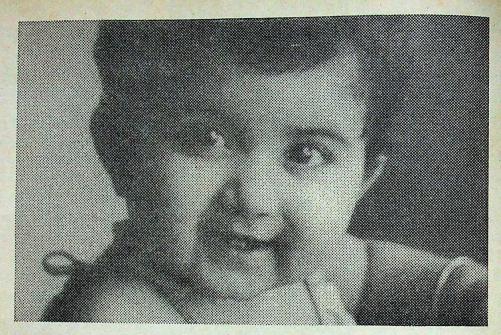
प्रेस विज्ञप्ति में कहा है, "असम की जनता की गांति और सौहार्द स्थापना की मांगों का ही यह नतीजा है." राज्यपाल लोकनाथ मिश्र ने खुशी जताते हुए कहा, "उनके इस कदम की मैं सराहना करता हूं."

उल्फा की अप्रत्याणित पहल ने दूसरी राजनैतिक पार्टियों को भी चुनाव कराने का समर्थन करने का साहस दे दिया है. प्रशासन ने भी उल्फा की सदाशयता के जवाब में उल्फा के खिलाफ सेना की कार्रवाई स्थगित कर दी. यहां तक कि इंका भी, जो 28 नवंबर 1990 को राष्ट्रपति शासन लागु होने के बाद अपने कार्यकर्ताओं पर बढते हमलों (इस दौरान इंका के 25 कार्यकर्ती

मारे जा चुके हैं) की वजह से निष्क्रिय हो गई थी, आनन-फानन में सक्रिय हो गई. असम प्रदेश इंका के महासचिव स्वरूप उपाध्याय की टिप्पणी थी, "यदि उल्फा अपने वादों पर खरी उतरती है तो यहां के हालात सुधरेंगे और राजनैतिक प्रक्रिया गुरू हो जाएगी."

असल में उल्फा के चुनावों का समर्थन करने के बाद बाकी पार्टियों के पास चुनावों का विरोध करने की कोई वजह रह नहीं

15 महै प्रका • इंतिमान्त्रे **61** 



## एक नन्ही-सी वजह, जिसकी खातिर लेनी चाहिए आपको यूनाइटेड इंडिया की निजी दुर्घटना बीमा पॉलिसी

आपका दुलारा बच्चा. आपका प्यारा परिवार. उनका भविष्य आपके हाथ में है. और आपकी खुशी उनके हाथ में.

तभी तो उनके भले के लिए हर कोशिश करते हैं आप. भगवान न करे, आपके साथ अचानक कोई दुर्घटना हो जाए तो उस हालत में आपके परिवार को खतरे से बचाए रखने का एक उपाय है यूनाइटेड इंडिया की निजी दुर्घटना बीमा पॉलिसी.

दुर्घटना में हमेशा के लिए या कुछ समय तक के लिए, पूरी तरह या किसी हद तक अपाहिज़ हो जाने पर या मृत्यु हो जाने पर यह पॉलिसी मुआवजा देती है. दुर्घटना में शारीरिक क्षति पहुंचने पर डॉक्टरी इलाज और दवाइयों के खर्चे के लिए भी इस पॉलिसी के तहत राशि का कुछ हिस्सा दिया जा सकता है.

पूरे परिवार के लिए पैकेज तथा 'ऑन ड्यूटी' / 'ऑफ ड्यूटी' दुर्घटना की स्थिति में कम दर के प्रीमियम पर आप सुरक्षा पा सकते हैं.

इसलिए आप चाहें कन्स्ट्रक्शन इंजीनियर हों चाहे इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, जानवरों के डॉक्टर हों या बैंक में कैशियर, मशीन ऑपरेटर हों या दुकानदार... यूनाइटेड इंडिया की निजी दुर्घटना बीमा पॉलिसी लेने में समझदारी है, सुरक्षा है और अपने परिवार के लिए आपके प्यार का सब्त भी. जलदी करें. हमारे ११२० से भी ज्यादा कार्यालयों में से किसी में भी संपर्क करें.



यूनाइटेड इंडिया इन्श्यूरेन्स कं. लि. (पुनर्गठित

ममर्थन वि नेता गोल

यदि असम् उपयुक्तः

प्रदेश में मुकाबले ः प्रफुल्ल व

प्रधानमंत्री करने की

प्रक्रिया में

गष्ट्रपति

न्नाव कर

इसदे का

अंचलिक

<sup>मदस्यों</sup> है वैफिटनेंट

मीजूदगी

अत्मसम्

हुए इस स

दिसाया ग

की पूर्व सं

प्रचार सर्

दोवा है वि

या. रिटार

प्रमाद जो

गजनैतिक

नेनाहकार

विश्वना

कर देते है

भूमों स्

ने गव उत

विविद्या

यह सा

हालांवि

(जनरल इन्स्यूरेन्स कॉर्पोरशन ऑफ इंडिया की सहायक संस्था) २४, व्हाइट्स रोड, महास-६०००१४:

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

TA 7773



अब चुनाव प्रक्रिया में खलल न डालने के उल्फा के फैसले से दूसरी पार्टियां भी राजनैतिक प्रक्रिया को जिंदा करने के पक्ष में आ गई हैं

उत्फा कार्यकर्ताओं के आत्मसमर्पण के मौके पर ले. जनरल बरार और राज्यपाल मिश्र; (नीचे) अगप की बैठक

ाई है. असम गण परिषद (अगप) के धडों-अगप और अगप (पुनर्गठित), जनता दल, कांग्रेस (स) और वामपंथी दलों ने चुनाव कराने का गमर्थन किया है. पूर्व मुख्यमंत्री और जद नेता गोलप बोरबोरा की दलील है कि गरि असम में चुनाव के लिए माहौल उपयुक्त नहीं है तो विहार और आंध्र परेंग में भी नहीं है क्योंकि वहां इनके मुगवले ज्यादा हिंसा व्याप्त है. लेकिन मुल्ल कुमार महंत को शक है कि भ्यानमंत्री चंद्रशेखर ने सिर्फ "यह सावित रते की कोणिश की है कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया में उनका विश्वास है."

हालांकि प्रधानमंत्री तो जब से वहां
गण्पित जासन लागू हुआ, तभी से
गुनाव कराने की तैयारी कर रहे थे. उनके
रादे का स्पष्ट संकेत तब मिला, जब कुछ
अंचिलक प्रमुखों सहित 162 उल्फा
म्हियों ने पिचमी कमान के अध्यक्ष
मिन्नेंट जनरल के.एस. बरार की
मिन्नूद्रा में राज्यपाल के सामने
अस्मिमर्पण किया. उत्तरी लखीमपुर में
हुए इस समारोह को टीवी पर प्रमुखता से
दिसाया गया.

यह समर्पण प्रधानमंत्री की असम यात्रा है पूर्व संघ्या पर हुआ. उल्फा के केंद्रीय प्रवार समिति सचिव सिद्धार्थ फुकन का वेखा है कि यह सब सिर्फ 'स्टेज शो' ही प्राट्यार्थ आईपीएस अधिकारी के.एन. भाद जो फिलहाल कानून-व्यवस्था और कितिक मामलों पर राज्यपाल के प्रविकार हैं, फुकन के दावों को का देते हैं. उनका कहना था, "आंचलिक स्मृत्रों सहित जिन लोगों ने समर्पण किया, कि वे उल्फा के कार्यकर्ता ही थे. ये या तो कि कित हैं या इनका प्रशिक्षण अभी चल

इंडिया

088.

रहा था." रोचक बात तो यह कि समर्पण करने वाले कार्यकर्ताओं को माता-पिता से या उन्हीं से हिंसा छोड़ने का आश्वासन पाकर जमानत पर छोड़ दिया गया.

समर्पण के बारे में दिए सरकारी बयान की विश्वसनीयता तब और बढ़ गई जब उल्फा के 12वें स्थापना दिवस पर इसके अध्यक्ष अर्रावद राजखोआ ने एक विस्तृत परिपत्र जारी कर कहा कि उनका संगठन हाल में की गई गलतियों के लिए जनता से क्षमा मांगता है और "भविष्य में वह ऐसी गलतियां नहीं दोहराएगा" सहसा लगने लगा कि 'ऑपरेशन बजरंग' का मकसद पूरा हो गया.

स पर महंत ने खीझते हुए टिप्पणी की कि राजनैतिक प्रक्रिया में दखल न देने का वादा उल्का ने पहली बार नहीं किया है. लोगों को ज्यादा उत्सुकता इस बात की है कि अगप के विभाजन का उनकी चुनावी संभावना पर क्या असर पड़ेगा. अगप नेताओं पर भारी दबाव पड़ रहा है कि वे एकजुट होकर काम करें और 'महान असम' के सपने को दुस्वप्न में न बदलें. अगप की एकता में उल्फा के भी दांव लगे हैं. वे पार्टी सूची में अपनी पसंद के उम्मीदवारों के नाम डालने की आस लगाए बैठे हैं या उन्हें निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में खड़ा कर अगप से समर्थन की मांग कर सकते हैं.

अगप (पुनर्गिठत) के ताजा अलगाववादी बयानों से यह उल्फा के करीब आ जाएगी. अगप (पु.) अब जोर देकर 1978 के मंगलदोई प्रस्ताव को उठाने लगी है, जिसमें आत्मिनिर्णय के अधिकार का उल्लेख है. पिछले पखवाड़े डिब्रूगढ़ में इसके नेताओं ने पूर्ण स्वायत्तता की मांग उठाने का फैसला किया जिसके मुताबिक विदेश, प्रतिरक्षा, संचार और मुद्रा संबंधी मामले ही केंद्र के पास रहेंगे, बाकी सभी प्राकृतिक संसाधनों पर राज्य का अधिकार होगा.

अब जब असम में चुनाव की उपयोगिता पर बहस और बहस से उपजे भ्रम से संकट की स्थिति हो गई है, लग रहा है कि सरकार ने शांति स्थापित करने की कोशिश कर एक जोखिम भरा कदम उठाया है.



15 मई 1991 · steut दुंट 53

हरिजन वोट

# हरिजन बोट Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri बदलते आधार

एक जमाने में केवल कांग्रेस के लिए सुरक्षित माने जाने वाले इस वोट बैंक के दरवाजे अब दूसरी राजनैतिक पार्टियों के लिए भी खुले

-भास्कर रॉय, मह और दिल्ली में

ेश के कोने-कोने से रात-दिन की पात्रा करके आए थके-मांदे मर्द, औरतें और बच्चे वड़ी श्रद्धा से भूमि को छु रहे थे. वे 20वीं सदी के अपने मसीहा डॉ. भीमराव अंबेडकर को श्रद्धांजलि देने उनकी जन्मस्थली पहुंचे थे. अंबेडकर को देवता की हैसियत देने के लिए मध्य प्रदेश के मह में आएं ये हजारों दलित दरअसल अपनी अलग पहचान की तलाश में हैं.

कुछ और लोग भी मह पहुंचे. ये थे वोट की फिराक में रहने वाले नेतागण. चुनावी कार्यक्रमों की व्यस्तता के बावजूद इन लोगों ने दलित नायक की प्रशस्ति के लिए मह जाने का समय निकाल ही लिया. सभी ध्रंधर वहां पहुंचे--राजीव अटलबिहारी वाजपेयी, कांगीराम-जो यह जानते थे कि हरिजन वोट हासिल करने के लिए यह बहुत जरूरी है. अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित 79 सीटों के

अलावा देश की आबादी में भी उनकी 17 फीसदी हिस्सेदारी है. उनके वोट बहुत सारे निर्वाचन क्षेत्रों में निर्णायक होते हैं.

कभी कांग्रेस का वोट वैंक माने जाने वाले हरिजनों ने इधर कांग्रेस से मोहभंग होने के संकेत दिए हैं. इस मायने में 1989 का आम चुनाव ऐतिहासिक था. पहली बार हरिजनों पर इंका की मजबूत पकड़ ढीली हो गई. भाजपा और जनता दल के गठजोड़ ने इंका से ज्यादा सीटें जीतीं. अंबेडकर की राजनैतिक विरासत का दावा करने वाली कांशीराम की बहुजन समाज पार्टी

(दाएं) अंबेडकर को श्रद्धांजलि देते हरिजन; (दाएं ऊपर) बसपा रैली का नेतृत्व करते कांशीराम; और (दाएं नीचे) समर्थकों के साथ पासवान

(बसपा) ने तीन सीटें जीतीं.

निस्संदेह हरिजन राजनीति में भारी बदलाव आ चुका है. जनता दल नेता रामविलास पासवान कहते हैं, "हरिजन राजनैतिक रूप से अब ज्यादा जागरूक हो गए हैं और अपनी हैसियत जताने को तैयार रहते हैं. वे इंका के मोहपाण से वाहर आना चाहते हैं."

पढ़े-लिखे हरिजन नौजवानों की वं एस. डांभरे पीढ़ी की आकांक्षाएं अपने मां-वाप से की जाजीवन ज्यादा ऊंची है. पर उन्हीं के तबके हैं होने अंवेडर स्रेतिहर मजदूर जैसे दरिद्र नारायणों की ले का कह जिंदगी में कोई बदलाव नहीं आया है मों के अज ज्यादातर नेताओं ने उन्हें निराशा के सिंग होते हरिज कुछ नहीं दिया. उनमें अनेक लोगों के लिए इंका अभी भी एक सुरक्षित ठिकाना है

इंदौर के पास के तिनीनी हो डर प गांव के हिंदू सिंह का कहनी है, "कई सरकारें आई औ नी इसी पू गई पर हमारी किस्मत वही गेव वाधाओं बदली. मैं वोट कांग्रेस की ही समें ही वि दूंगा क्योंकि हमने हमेंग यही किया है."

रिजन वो

मतलव था

वांकर के

गमवान का

हिजिनों वे

शापी घटना

हमत हैं. थो

वेत अद्विती

ों को एकजु

मक्सद पूर

विनों को ही

वे बेयान र

को एक

कुछ ही दूरी पर के निरंजनपुर के लाल मिह ऐसी ही निराशा वह करते हैं, "इन नेताओं मेही एक ही चीज मिलती है औ एक ही चाज निल्ला है निति के वह है मतदान के पहले कि वह है मतदान के किता के विस्ता के विस्ता शाराब." मगर जो नौकरी कि कि वहुंजा हैं और जिनकी स्थिति कु अच्छी है, वे भाग्य पर की ही भरोसा रखते हैं तार्ष से बसपा की मह आए सरकारी



चुनावी वादे

कांग्रेस (इ) वैधानिक अधिकारों से लैस अनुसूचित जाति/जनजाति आयोग

लखनऊ में 110 करोड़ रु. की लागत से डॉ. अंबेडकर विवि.

 अनु. जाति/जनजाति के लोगों को छोटे कारोबार के लिए कर्ज जनता दल

हरिजन कल्याण के लिए योजना में प्रावधान

रिक्त आरक्षित मदों पर नियुक्तियों के लिए कानून

हरिजनों के लिए मुफ्त आवास की योजना

अस्पृश्यता निरोधक कानून

अनुसूचित जातियों के लिए मुफ्त कानूनी सेवा

पालम हवाई अड्डे का नाम डॉ. अंबेडकर पर रखना

जनता दल (स)

हरिजनों के लिए शिक्षण की मुविधाएं

सरकारी नौकरियों में भरती के प्रमावी उपाय



गनों की मं<mark>ग्ला डांभरे 'हरिजनों के पिछड़ेपन' के</mark> i-वाप से वहीं जगजीवन राम को दोषी मानते हैं के तबके के होंने अवेडकर का विरोध किया था. नारायणों ही में का कहना है कि कांग्रेस ने सिर्फ नों के अज्ञान का फायदा उठाया है. हीं आया है राशा के सिवा हो हरिजन शब्द पर ही आपत्ति है. लोगों के लिए जिन वोटों पर इंका के एकाधिकार ठिकाना है मत्त्व था कि देश भर में उनके वोट के तिलान ही डरें पर पड़ते थे. इंका नेता पी. सह का कहना किर के शब्दों में, "हरिजनों का गरें आई औ वि दर्रा पूरे देश में एक-सा रहा है. किस्मत ख विधाओं से हटकर उन्होंने हमेणा कांग्रेस को ही म में ही विश्वास जाहिर किया है.'' हमने हमेश

री पर वं

लाल सिंह भी

राशां व्यन

नेताओं से हमें

मलती है औ

कें पहले लि

जो नौकरी

स्थिति 🗖

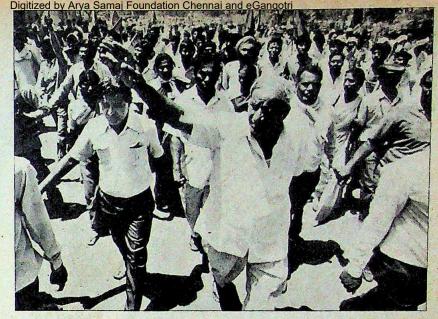
ते हैं. नाण्

महूं रेती

कर्मवार्व

भिवान का दावा है कि जनता दल के िजनों के समर्थन में आया उभार भी <sup>शुपी घटनाक्रम</sup> है, पर कांशीराम इससे मा है थोक हरिजन बोट का उनका विविद्याप है. वे कहते हैं, "हरिजन के एक जुट करना संभव है पर इससे किसद पूरा नहीं होता. अगर हरिजन वसपा को बोट दें तो इससे हो भाहे वहुजन समाज के मुसलमान और <sup>घटक</sup> हमसे विमुख हो जाएं. मैं गग्य पर कर भो को ही नहीं, इन सभी सामाजिक के एक सूत्र में बांधने की कोणिण

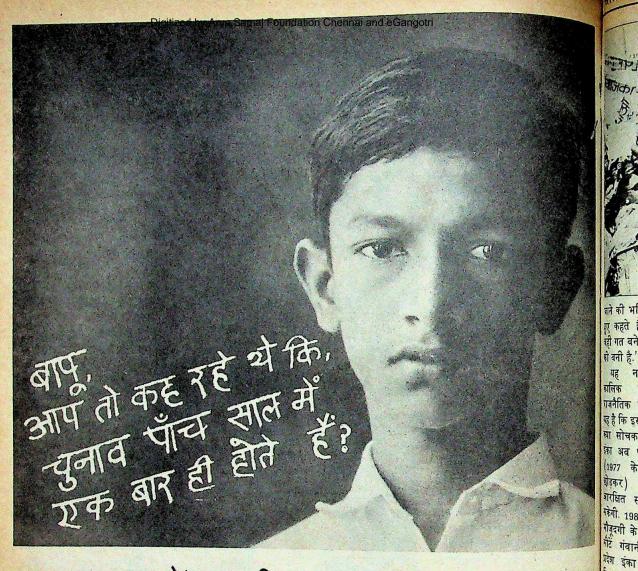
भ मेडल मुद्दे के बाद के हालात





में नए सामाजिक समीकरणों की संभावना का संकेत देता है. मंडल रिपोर्ट को मुद्दा बनाकर वी.पी. सिंह ने समाज के निचले तवकों को एकजूट करने की कोशिश की है. वे अल्पसंख्यकों, हरिजनों और पिछड़ों को एकजूट करना चाहते थे. लेकिन मजेदार बात यह है कि उनके इस कदम को चुनौती इंका से नहीं, भाजपा से मिली है. भाजपा के अयोध्या आंदोलन ने बुरी तरह विखरे हिंदू समाज को राम के नाम पर कुछ हद तक एकताबद्ध किया है. सो, मंडल की कामयाबी का मतलब होगा भाजपा का नाकाम हो जाना. मुद्दा अब राम या मंडल का है. लेकिन भाजपा के विचारक यह नहीं स्वीकार करते कि राम आंदोलन में उच्च जातिवादी पूर्वाग्रह निहित हैं. भाजपा के उपाध्यक्ष केवल रतन मलकानी के अनुसार, "अयोध्या में मारे गए ज्यादातर लोग हरिजन थे. हमारे आंदोलन ने मरहम का काम किया है, पुल बनाया है." पर शिवशंकर के लिए, "भाजपा निस्संदेह उच्च तबके की पार्टी है, जैसी कोई भी कट्टर पार्टी होती है."

. इन दोनों आंदोलनों का सामाजिक पहल उनके कट्टर राजनैतिक संदेश के कारण ओझल हो गया है. इन्हें सही संदर्भ में देखने से लगता है कि हिंदू समाज के दो तबके एक-दूसरे के खिलाफ खड़े हो गए हैं. खुद को महाकवि वाल्मीकी के वंशज बताने वाले दलित राम आंदोलन के अनुयायियों के विरुद्ध सत्ता की लडाई लड रहे हैं. पर कांशीराम 'राम भक्तों' की हैसियत कम हो



केवल एक रिथर सरकार ही जन-आदेश की पवित्रता का विश्वास दिला सकती है।

मह मानते हुई निर्वाच

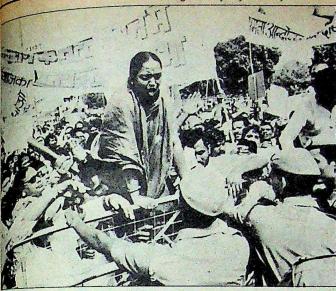
लारे वोट

वार्व को ज़ि

स्थिरता को वोट दें

# कांग्रेस(इ)को वोट दीजिए

Issued by The General Secretary (Incharge Publicity), All India Congress Committee (I) 24, Akbar Road, New Delhi.



अपने समर्थकों के साथ मीरा कुमारः विरासत को सहेजने की जिम्मेदारी

पार्ट: बी.के. शर्मा

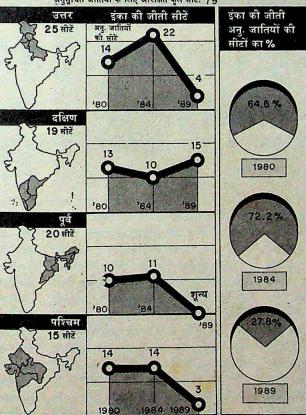
तो की भविष्यवाणी करते हा कहते हैं, "उनकी भी ही गत बनेगी जो हरिजनों शैवनी है."

नजरिया दीर्घ-यह है. फिलहाल गवनैतिक दलों की चिंता ह है कि इस महीने हरिजन मा मोचकर वोट डालेंगे. का अब पहले की तरह 1977 के अपवाद को बोडकर) 70 फीसदी गरिवतं सीटें नहीं जीत केगी. 1989 में बसपा की गौजूदगी के कारण उसे 70 गेंटें गंवानी पड़ीं. मध्य होंग इंका अध्यक्ष अर्जुन महमानते भी हैं, ''राज्य के र्हे निर्वाचन क्षेत्रों में बसपा भारे वोट काटेगी."

जनता दल के नेताओं को ज्याद है कि सामाजिक भाष का उनका नारा भारी को किया में हरिजन वोटों को किया के बेंग की महत्वपूर्ण की महत्वपूर्ण हैं। जाने-माने हरिजन कार्यकर्ता सत्यदेव की विकार के विकार की विकार की

श्रों को विहार में नवादा से टिकट दिया श्रों के विहार में नवादा से टिकट दिया श्रों ने हील वीटों को खींचने के लिए केएडी ने हाल ही में गुजरात में नरेश श्री मणहूर हिरजन हस्तियों को शामिल केली के भाजपा शासित तीन राज्यों में भी पलड़ा पार्टी की ओर झुकने की

हरिजन वोटों का रुखः कांग्रेस (इ) के प्रति बढ़ता मोहभंग अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित कुल सीटें: 79



उम्मीद है. पार्टी के महासचिव गोविंदाचार्य के अनुसार, "संघ और भाजपा कार्यकर्ताओं ने हरिजनों में जो काम किया है, वह पार्टी के लिए महत्वपूर्ण साबित होगा."

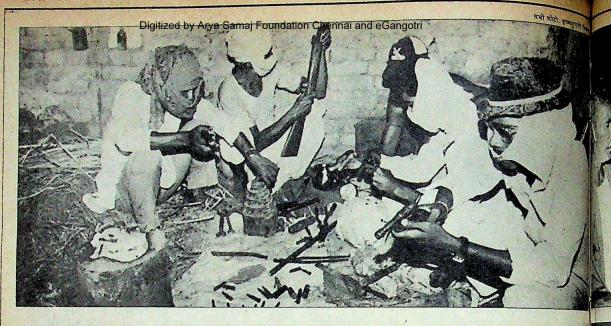
और जहां तक इंका का सवाल है, वह यह माने बैठी है कि सिर्फ राजीव गांधी हरिजन बोटों को वापस पार्टी के पक्ष में ला सकते हैं. हालांकि कुछ महीने पहले हरिजन वोटों को खींचने की कोशिश में दिवंगत जगजीवन राम की बेटी मीरा कुमार को पार्टी का महासचिव बना दिया गया था पर वे सांगठनिक कामों में इतनी व्यस्त हैं कि हरिजन क्षेत्रों में अभियान चलाने के लिए समय नहीं निकाल पा रहीं.

भाजपा ज्यादातर आरक्षित सीटों पर चुनाव लड़ रहीं है. मध्य प्रदेश सरकार ने महू में एक करोड़ रु. की लागत से अंबेडकर स्मारक बनाने का फैसला किया है. देखना है कि भाजपा अपने सवर्ण पूर्वाग्रहों के बारे में हरिजनों की राय को बदलने में कितनी कामयाब रहती है.

कांशीराम को उम्मीद है कि उनकी पार्टी को पंजाब और उत्तर प्रदेश में खासी कामयाबी मिलेगी. उन्हें पार्टी की सीटों की संख्या भी दस गुना बढ जाने की आस है. उनकी अनदेखी नहीं की जा सकती, इसका इजहार इसी से होता है कि इन दोनों राज्यों में सभी दल उनसे गठजोड करने को आतूर हैं. मुलायम सिंह यादव और सिमरनजीत सिंह मान दोनों ही उनसे गठजोड करना चाहते हैं. कांशीराम हैं, "मैं कोशिश में हं कि फिर किसी को बहुमत न मिले. मैं अपने वोटों का इस्तेमाल इसी के लिए करूंगा."

हालांकि हरिजन वोटों में इंका की हिस्सेदारी कम होने की संभावना है पर जहां जनता दल और वसपा कमजोर हैं, वहां इंका को फायदा मिलेगा ही. हरिजन

वोट जिसके भी हिस्से में आएं, अगले चुनाव में एक और राजनैतिक निश्चितता ढह जाएगी. कोई नहीं जानता कि मंडल के बाद के दौर में जातीय राजनीति का ऊंट किस करवट बैठेगा. हरिजनों को छोड़ हर कोई अनिश्चितता से आतंकित है. सिर्फ हरिजनों को उम्मीद है कि उनका भविष्य उज्ज्वल है.



एक गांव में नाजायज हथियार बनाने का काम जोरों परः फलता-फूलता धंधा

# जम्हरियत का जनाजा

विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के कार्यकर्ताओं की हत्याओं, बूथ कब्जे, राजनीति में पेशेवर अपराधियों है बढ़ते वर्चस्व के कारण चुनाव मजाक बनकर रह गए हैं

टनाक्रम राजनैतिक अपराध की किसी हिनाक्रम राजातात है. 19 सनसनीखेज फिल्म जैसा लगता है. 19 अप्रैल, मंगलवार को भारी-भरकम काया वाले 68 वर्षीय भूमिहार, जनता दल नेता नगीना राय, जो कभी बिहार के सहकारी आंदोलन के आधारस्तंभ थे, शाम को गोपालगंज से अपने गांव गोपालपूर आ रहे थे. उनकी कार कुचईकोट थाने के तहत भोपतपुर में पहुंची ही थी कि कुछ लोगों ने घात लगाकर उन पर हमला कर दिया और गोलियों से उन्हें भून दिया. संवेदनशील गोपालगंज निर्वाचन क्षेत्र के ताकतवर जनता दल उम्मीदवार राय की तुरंत मृत्यु हो गई. मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव ने, जो गोपालगंज जिले के ही हैं, हत्यारों को तुरंत पकड़ने के लिए पुलिस को आदेश दिया. पुलिस ने भी पूरी तत्परता दिखाते हुए कुछ ही घंटों के भीतर इंका विधायक बच्चा चौबे को गिरफ्तार कर लिया राय के राजनैतिक प्रतिद्वंद्वी माने जाने वाले बच्चा चौवे और उनके दो बेटों, जिनमें भूषण भी णामिल हैं. के नाम प्राथमिक सूचना रिपोर्ट दर्ज कर ली गई.

नगीना राय बिहार के प्रमुख नेताओं में से थे. 1983 में भी उन पर बम फेंका गया था. मगर वे वच निकले थे. बंदूकों के बल पर जीने वाले नगीना राय की बंदूकों से हुई मौत से पूरा राज्य प्रशासन हिल उठा. राज्य प्रशासन वैसे भी चुनाव के पहले राजनैतिक हत्याओं में आई अचानक तेजी और हथियारों के जमावड़ों को रोकने की जी-जान से कोशिश कर रहा था. मुख्यमंत्री लालू यादव ने कहा, "हम अपराधियों को राज्य को बंधक बनाने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया को नष्ट करने की इजाजत कतई नहीं देंगे."

पिछले हफ्ते तक जिला और प्रखंड स्तरों पर कम-से-कम 15 राजनैतिक नेताओं और कार्यकर्ताओं की हत्याएं हो चुकी थीं. इसमें जहानाबाद के युवक कांग्रेस (इ) अध्यक्ष रामविनय शर्मा शामिल हैं. हिंसक राजनीति के लिए पहले से ही बदनाम बिहार में चुनाव अभियान से काफी पहले ही ज्यादातर राजनैतिक पार्टियों के कार्यकर्ताओं की हत्याएं ग्रुरू हो चुकी हैं. कई उग्र वामपंथी गुटों के राजनैतिक संगठन

इंडियन पीपुल्स फंट को सबसे ज्याद नुकसान उठाना पड़ा है. इसके हैं गिमल है. कार्यकर्ताओं को गोलियों से भून विया माहि बादि वा और चुनावी गतिविधियों में शामिल विद्या ग दूसरे कार्यकर्ताओं का गया जिले में अपहुण कार सूत्रों कर उनकी हत्या कर दी गई. इंका के अ तक चार कार्यकर्ताओं और नेताओं है गएने 500 हत्या हो चुकी है जबकि भाक्षा, मार्क रिना (देह और भाजपा ने अपने एक-एक कार्यका गंवाए हैं. एक पुलिस अधिकारी ने मूर्व माई बताय भी, "ये हत्याएं इस बात का सकते हैं। कर्का, ि इस बार राज्य में किस तरह चुनाव हों गेंडर मिले दरअसल, पुलिस मुख्यालय में विकि

संगानि जिला कारीर राजनैतिक पार्टियों उम्मीदवारों की 'चुनाव तैयारियों के बी में जो खबरें पहुंच रही हैं उनसे प्रणासन पसीना आ रहा है. राजनीति में अपराधि के काले क के प्रवेश और राज्य में उनकी तृती बं<sup>ती</sup> से प्रशासन पहले ही पंगु हो चुका है। चुनाव अभियान और हथियारों

जमावड़ा, बूथों पर कब्जे के लिए क्र आपराधिक गिरोहों और लठैतीं की अपराधिक गिरोहों और और प्रशिक्षण देना आदि 'चुनाबी तेषां

नगीन इंका शर्मा र 15 रा और हत्य

ना है कि मिनियों कित में कार्स

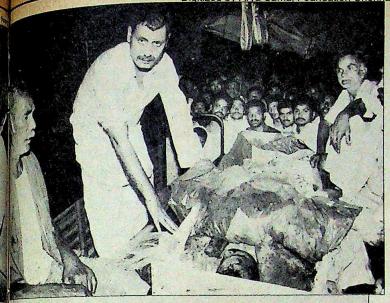
हर है। हि

स्मी लोहा

अनुमार,

पोरों के

ya Samai Foundation Chennai and eGangotri. युवा इका नेता शर्मा की लाश (बाएं) और राय (नीचे): हिंसा के शिकार



प्रचार अभियान तेज होने से पहले ही जद नेता नगीना राय और युवा इंका नेता रामविनय शर्मा समेत कम-से-कम 15 राजनैतिक नेताओं और कार्यकर्ताओं की हत्याएं हो चुकी हैं

राधियों है

सबसे ज्यार

. इसके व

भून दिया एवं

शामिल वीव

नले में अपहार

ई. इंका के अ

र नेताओं ही

ाकपा, मारुष

-एक कार्यकर्ग

कारी ने मान

त संकेत हैं।

चुनाव होंगे. तय में विभि

रियों के बी

से प्रशासन में अपराधि

ही तूनी बोर्ब

चुका है. हथियारों

लिए वंदे

नावी तैयार्ग

हैतों की

र

संभावि

गमिल है. चुनाव की घोषणा होते ही अबि बनाने वाले लगभग 5000 अड्डों मिट्टियां गांवों में अचानक सुलग उठी. कार सूत्रों का कहना है कि चुनाव में शारों की मांग समय पर पूरी करने के हैं 500 और अड्डे काम करने लगे हैं हिना (देहात) जिले के एक गांव के विष्ठ और 'अनुभवी' मिस्त्री ने पिछले वह बताया, 'ऐसे हरेक अड्डे को 200 से विका, पिस्तौलों, कट्टों और णॉटगनों विंहर मिले हैं और चूंकि इन हथियारों काई एक महीने के भीतर करनी है, कारीगर दिन-रात काम कर रहे हैं हैं हैं हिंथियारों के दाम भी बढ़ गए भी लोहार की देखरेख में कई अड्डों में के का काम चल रहा है. विशेषज्ञों भूमार, इस बार कुल मांग और भारों के प्रति उन्माद को देखते हुए ति है कि इस अड्डों का कारोबार 1 के भार कर जाएगा.

भिन्नों का कहना है कि वे अपने कि में कभी बेईमानी नहीं करते. एक



मिस्त्री ने कहा कि पिछली बार एक इंकाई ने उन्हें ऑर्डर दिया था और इस बार एक जनता दल कार्यकर्ता बयाना दे गया है. उसने कहा, "हम 'पहले आओ, पहले पाओ' वाले सिद्धांत में विश्वास करते हैं." दूसरी तरफ राज्य प्रशासन इन अवैध अड्डों के बारे में जानते हुए भी इनके खिलाफ कुछ नहीं कर पाया है. इसकी वजह यह है कि विभिन्न पार्टियों के नेता इनसे सीधे जुड़े हुए हैं.

स रकारी सूत्रों के अनुसार, मुख्य-मंत्री के करीबी समझे जाने वाले एक 'ताकतवर' विधायक पिछले पखवाड़े उत्तर बिहार के समस्तीपुर गए और वहां के स्थानीय व्यवसायियों से चुनाव अभियान के 'वित्तीय पहलुओं' पर बातचीत की. विधायक जब वहां से वापस लौटे तो उनकी कार के पीछे एक मारुति थी जिस पर कारबाइन समेत कई आधुनिक हथियार और अपराधी लदे थे. लेकिन पुलिस इस गाड़ी को रोकने की हिम्मत नहीं जुटा पाई. सरकारी सूत्रों का कहना है कि राज्य में

ज्यादातर नेताओं के घर शस्त्रागार बने हुए हैं लेकिन "हम अधिकृत तौर पर कुछ नहीं जानते." एक अनुमान के अनुसार, राज्य में हर पांचवां आदमी आत्मरक्षा या राजनीति करने के लिए कोई-न-कोई हथियार रखता है. इस तरह यहां अवैध बंदूकों की संख्या दूसरे राज्यों के मुकाबले सबसे अधिक है. अगर भूमिगत अड्डों को मिले मौजूदा ऑर्डर को देखा जाए तो चुनाव के समय तक चुनाव प्रबंधकों के हाथों में और 10 लाख अवैध हथियार पहुंच जाएंगे.

राजनीति में अपराधियों के प्रवेश की एक और वजह है. अपराधियों ने महसूस किया कि जब उनकी मदद से दूसरे लोग विधायक और सांसद बन सकते हैं तो वे खुद ही क्यों नहीं उन तरीकों का इस्तेमाल

> कर वीआईपी बनें. सो, वे भी धीरे-धीरे विधानसभा में प्रवेश करने लगे. पिछले चुनाव में तो ऐसे 40 लोग विधानसभा में आ गए जो या तो आपराधिक रिकार्ड वाले थे फिर जिनके खिलाफ आपराधिक मामले लंबित थे. इनमें ज्यादातर निर्दलीय के रूप में जीतकर आए थे. और एक बार जब वे विधायक बन जाते हैं तो पुलिस उन्हें पकड़ने या उनके खिलाफ चल रहे मामलों को आगे बढ़ाने की

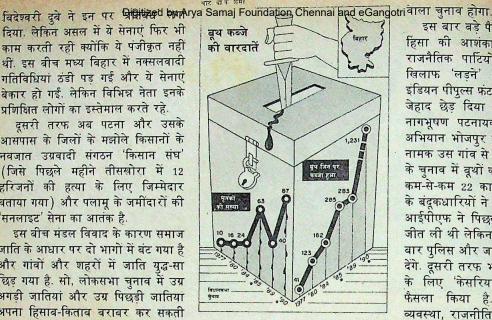
हिम्मत नहीं कर पाती.

अस्सी के दशक में जब जमींदार और सामंतों ने नक्सलियों और उनकी 'लाल सेनाओं' की मार से बचने के लिए अपनी 'निजी सेनाएं' बनाई तो जातिवाद से ग्रस्त राज्य प्रशासन के लिए स्थिति और भी जटिल हो गई. भूमिहारों ने जहां अपनी 'ब्रह्मिष सेना' बनाई, वहीं कुमियों ने 'भूमि सेना', राजपूतों ने 'कुंवर सेना' और 'आजाद सेना' और यादवों ने 'लोरिक सेना' बनाई. इन लोगों ने बेरोजगार युवकों को अपनी सेनाओं में भर्ती किया, हथियारों का प्रशिक्षण दिया और फिर उन्हें खुला छोड़ दिया. इन सेनाओं से दोहरा लाभ हुआ. उन्होंने भूमिहीन किसानों और हरिजनों की तरफ से लड़ने वाले उग्रवादियों के हमलों से उनका बचाव तो किया ही, चुनावों में अपनी जाति के उम्मीदवारों को लठैत और हथियार भी मुहैया कराए.

जब इन सेनाओं का आतंक बढ़ा तो लोग इनसे बचाव के लिए गुहार करने लगे. नतीजा यह कि तत्कालीन मूख्यमंत्री दिया. लेकिन असल में ये सेनाएं फिर भी काम करती रही क्योंकि ये पंजीकृत नहीं थीं. इस बीच मध्य बिहार में नक्सलवादी गतिविधियां ठंडी पड गई और ये सेनाएं बेकार हो गई. लेकिन विभिन्न नेता इनके प्रशिक्षित लोगों का इस्तेमाल करते रहे.

दूसरी तरफ अब पटना और उसके आसपास के जिलों के मझोले किसानों के नवजात उग्रवादी संगठन 'किसान संघ' (जिसे पिछले महीने तीसखोरा में 12 हरिजनों की हत्या के लिए जिम्मेदार वताया गया) और पलामु के जमींदारों की 'सनलाइट' सेना का आतंक है.

इस बीच मंडल विवाद के कारण समाज जाति के आधार पर दो भागों में बंट गया है और गांवों और शहरों में जाति युद्ध-सा छिड़ गया है. सो, लोकसभा चुनाव में उग्र अगड़ी जातियां और उग्र पिछड़ी जातियां अपना हिसाब-किताब बराबर कर सकती हैं. राजनैतिक पार्टियां पहले से ही सिर्फ एक चुनावी मुद्दे पर खुलेआम बात करती रही हैं-पिछड़े बनाम अगड़े का. इससे प्रशासन



के लिए बड़ी मुसीवत पैदा हो गई है क्योंकि जो संकेत हैं उनसे यही पता चलता है कि यह अब तक का सबसे अधिक खून-खराबे

इस बार बड़े पैमाने पर बूथ कब्बे हिंसा की आशंका के मद्देनजर विकि राजनैतिक पार्टियों ने चुनावी हिसा ख़िड़ी की विलाफ 'लड़ने' का फैसला किया के पहली ब इंडियन पीपुल्स फंट ने बूथ कब्जे के बिकार करें। जेहाद छेड़ दिया है और उसके सके नागभूषण पटनायक ने पार्टी का कार तिए कि ह अभियान भोजपुर जिले के धनवार कि वंसे वड़ी नामक उस गांव से शुरू किया है जहां 186 के चुनाव में बूथों की रक्षा करते हुए उसे ग्रह मुख्यम कम-से-कम 22 कार्यकर्ताओं को जमीता होने कहा के बंदूकधारियों ने मार दिया था. हाला कि पार्टी व आईपीएफ ने पिछली बार आस की सं कांग्रेस ( जीत ली थी लेकिन उसे आशंका है कि ह गरीय छात्र बार पुलिस और जमींदार उस पर कहर हा पुन प्रेमचंद देंगे. दूसरी तरफ भाजपा ने वूथों की रह ग्रेर युवक के लिए 'केसरिया वाहिनी' बनाने के सकी को ग फैसला किया है. उसने कानून की भी निर्वाच व्यवस्था, राजनीति के अपराधीकरण क्री सार्व का पै अपराधियों के राजनीतिकरण को मूह्य ग कब्जे की ग्रन्ती या चुनावी मुद्दा बनाने का फैसला किया है 'केसरिया वाहिनी' का नेतृत्व करने को <sup>कै किया जा</sup>

> विभकों का कडे असलि विशे उम्मी क पास लटे

रके कारण

गेपर कब्ज

बंदुकों का

में के लिए

जावर उप

कर्ताओं

अज करने

ें भी किय

भार 1977

मों को अपन

क्षे कम-

मारे व

वों में च

ने और 19

2 अभियान

गेन और ।

1990

ोन 87 रा

नेकिन

ेष भटनार

मार्थ नहें के जि

भ उनके ह

विमे ही ।

बुथ कब्जा

क दशक पहले चुनाव आयोग से 'बूथ कब्जे का जनक' की उपाधि पाने वाले बिहार में चुनावों का इतिहास दिलचस्प रहा है. सरकारी रिकार्डों के म्ताबिक, पहले तीन चुनावों (1952-1962) में हिंसा, बूथ कब्जा और जालसाजी नहीं हुई. लेकिन 1967 में इतिहास ने उस समय नया मोड़ लिया जब खतरनाक माफिया सरगना कामदेव सिंह वेगूसराय में कम्यूनिस्ट पार्टी से अलग हो गया और उसने कम्युनिस्टों को हमेशा के लिए खत्म कर देने की कसम खाई.

कामदेव सिंह ने भाकपा के खिलाफ लड़ने वाले किसी भी उम्मीदवार के समर्थन का फैसला किया. उसने भाकपा विरोधी उम्मीदवार के समर्थन में बुथ कब्जे के लिए पैसे और लठैत देने भी शुरू कर दिए. शुरू में 'बूथ कब्जा' मध्य और पूर्वी भाग के कुछ ही जिलों तक सीमित रहा. सरकारी रिकार्डों के मुताबिक, 1969 में पहली बार 80 बूथों पर कब्जा हुआ और वहां फिर से मतदान के आदेश दिए गए, लेकिन 'बूथ कब्जे' का चलन रोगाण् की तरह तेजी से फैल गया और चुनाव जीतने के इस तरीके को अपनाने की होड़



ज्यादातर राजनैतिक पार्टियों में लग गई. 1971 में 35 विधानसभा क्षेत्रों में फैले 20 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में वूथ कब्जे की खबरें मिली. लेकिन 1977 में, जब पूरे देश में कांग्रेस विरोधी लहर चल रही थी, इस आंकड़े में थोड़ी-सी गिरावट आई और 22 विधानसभा क्षेत्रों में फैले 10 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में 41 जगहों पर बूथ कब्जे की खबरें आई. 1980 में कांग्रेस (इ) की लहर के दौरान इस आंकड़े में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई और 42 विधानसभा क्षेत्रों में फैले 19 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में बूथ कब्जे हुए. फिर 1984 में विख्यात

मोकामा में बूथ कब्जे के लिए जाते अपराधीः सर्वमान्य तरीका

'सहानुभूति लहर' के दौरान 28 लोक्सी निर्वाचन क्षेत्रों में 162 बूथों पर कव्ये हैं। और उसके बाद 1985 में विधानम चुनाव के दौरान 285 बूथों पर कर्जे फिर 1989 का चुनाव आया और उन 88 विधानसभा क्षेत्रों में फैले 34 लोकन निर्वाचन क्षेत्रों में 283 जगहीं गर कञ्जे हुए जो अब तक का सबसे रिकार्ड है. 1990 के विधानसभा वृत्ता 1231 बूयों पर कब्जे हुए

इविया दहे • 15 मई 1991

रूप कर्ल कही। 'हमें आशंका है कि इस बार हैन कर किया विकास की मारी हो। इस बार है की जाएगी. इस लिए, हमारे लिए लिए की मारी की मारी है। इस किया की मारी लिए ला किया है वहली बार जरूरी हो गया है कि हम करों के विवाद की मुकाबला करें. इसलिए नहीं कि हम उसके संग्री मीटों पर चुनाव लड़ रहे हैं, बल्कि क्षिए कि हमें इस बार राज्य में एकमात्र धनवार कि वही पार्टी के रूप में उभरने का ग है जहां 18 गांसा है" यादव की इस आशंका की करते हुए ज्या मह मुख्यमंत्री की वह घोषणा है जिसमें को जमीता होते कहा या कि वे इस बार किसी भी मा था. हाला हती पार्टी को चुनाव नहीं जीतने देंगे. कांग्रेस (इ) की छात्र शाखा भारतीय

शंका है कि हो प्रिय छात्र संघ (एनएसयूआई) के राज्य रस पर कहरहा मुल प्रेमचंद मिश्र ने कहा कि एनएसयूआई व्यों की क्ष्मित प्रवक्त कांग्रेस (इ) ने मुख्यमंत्री की ती वार्त के अपने किया है और "हमने कानून की निर्वाचन क्षेत्रों में 'बूथ सुरक्षा दस्ता' राधीकरण की लाने का फैसला किया है. हर हालत में रण को मूब एक ब्ले को रोकने के लिए इन दस्तों को सला किया है गुनूनी या गैरकानूनी रूप से हथियारबंद त्व करने वारे गै किया जाएगा.'

थ कन्जे की बढ़ती हुई प्रवृत्ति के अलावा इस बार अगडी और पिछडी जातियों में भी काफी तनाव है और इससे चुनाव में भारी हिसा होने की आशंका है

सबसे पहले भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने राजनीति को अपराधियों से मुक्त कराने के लिए अभियान छेडा था और जब उसके नेताओं ने अनशन करने और धरना देने की धमकी दी तो सरकार ने राजनेताओं और अपराधियों के संबंधों की जांच के लिए

जहानाबाद में आईपीएफ के कार्यकर्ताः बुथ कब्जे के खिलाफ

पूर्वी भोर्चा अध्यक्ष नंदिकशोर Digitized by Arya Samaj Foundation Chennaj an कि उस कि इस बार केंद्रीय बल संवेदनशील बूथीं पर भी तैनात किया जाएगा ताकि बूथों को अपराधियों से बचाया जा सके. लेकिन राजनैतिक पार्टियों ने शेषन की घोषणा पर उत्साहवर्द्धक प्रतिक्रियाएं नहीं जाहिर कीं. किसी ने खलेआम इसका स्वागत नहीं किया.

दूसरी तरफ राज्य प्रशासन शांतिपूर्ण मतदान के लिए केंद्र पर अर्द्ध सैनिक बलों की कम-से-कम 200 कंपनियां और होमगाडों के लिए 60,000 राइफलें भेजने का दवाब डाल रहा है. लेकिन पर्यवेक्षकों का मानना है कि बड़ी संख्या में केंद्रीय बलों की मौजूदगी से स्थिति में कोई फर्क नहीं पडेगा. मसलन, 1977 में 20,000 मजिस्ट्रेटों के मातहत 1.10 लाख पुलिसवाले तैनात किए गए थे, फिर भी 10 लोग मारे गए और भारी संख्या में वूथों पर कब्जा कर लिया गया. 1980 में भी 16 बटालियन केंद्रीय बल और 1.35 लाख राज्य पुलिस बल तैनात किया गया था. इसके बावजूद 16 लोग मारे गए और बिना किसी रुकावट

सिकों का कहना है कि ये सरकारी छ असलियत नहीं दर्शाते क्योंकि धी उम्मीदवार के कमजोर होने और केपास लठैतों और हथियारों की कमी के कारण हमेशा ही बड़ी आसानी से गेंगर कब्जा कर लिया जाता है.

कों का इस्तेमाल सिर्फ बूथों पर भे के लिए नहीं किया जाता बल्कि भवर उम्मीदवारों के राजनैतिक कितीओं और गड़बड़ी रोकने की का करने वाले लोगों को मारने के में किया जाता है. प्राप्त आंकड़ों के भर 1977 में मतदान के दौरान 10 में को अपनी जान गंवानी पड़ी जबकि भें कम-से-कम 16 और 1984 में 24 मारे गए. बाद के विधानसभा वों में चार उम्मीदवारों सहित 63 ने और 1989 के चुनाव में 40 लोग अभियान के दौरान, 27 मतदान के न और एक मतदान के बाद) मारे <sup>1990 के</sup> विधानसभा चुनाव के ति क्ष राजनैतिक अभियानकर्ता मारे किन मुख्य निर्वाचन अधिकारी भटनागर का मानना है कि "यहां कुछ नहीं होता जो दूसरे राज्य में होता हो. बिहार में स्थिति उतनी भी हो जितनी कि बताई जाती है." के उनके इस दावे की असलियत तो भित्र में ही पता लगेगी. — फरजंद अहमद

लिए जाते

28 लोकसभी

पर कब्जे हर

विधानमंग

पर कव्ये हैं।

T और उस

34 लोकसंब

ाहों गर हैं

T सबसे <sup>वर्ष</sup>

ाभा मुनाव है

हुए.

**नरीका** 



विधानसभा की समिति बनाने और उसकी अनुशंसाओं को लागू करने की घोषणा की. लेकिन इस घोषणा के बाद कुछ नहीं हुआ. कांग्रेस (इ) नेता कमलनाथ सिंह ठाक्र ने अफसोस जताते हुए कहा कि सभी पार्टियां राजनीति चुनावी हिंसा और अपराधीकरण की निंदा तो करती हैं लेकिन वे खुद के गिरेबान में कभी नहीं झांकतीं.

लेकिन इस बार मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन ने स्थिति को गंभीरता से लिया है और हाल ही में पटना में घोषणा की कि यदि किसी निर्वाचन क्षेत्र में मतदान में गड़बड़ी की कोशिश की गई तो वहां चुनाव ही रद्द कर दिया जाएगा. उन्होंने यह के बुथों पर कब्जा हुआ. अर्द्ध सैनिक बलों की संख्या में वृद्धि होने के साथ चुनावी हिंसा भी बढ़ी.

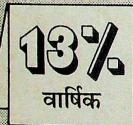
इस बार स्थिति पहले से भी बदतर हो सकती है क्योंकि विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के बूथ सुरक्षा दस्ते हिंसा का मुकाबला करने की कोशिश करेंगे और बुथों की रक्षा के नाम पर शायद खुद ही उन पर कब्जा कर लेंगे.

नगीना राय और कुछ दूसरे राजनैतिक नेताओं, कार्यकर्ताओं की हत्याओं से यह स्पष्ट है कि बिहार में चुनाव का अंतिम निर्णायक दौर कौन-सी शक्त अस्तियार करेगा. -फरजंद अहमद

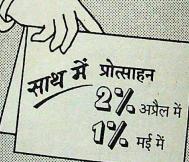
### SBIMUTUALFUND

# मासिक आय योजना II

मैग्नम मासिक वेतन आपको दिलाए







(हैं, मधर्म के व विकोण के

के कुछ है मंघर्ष का

निवर्तमान भैदान में

पर्चा दासि

में से छ

टिकट नहीं ने जदा विधायकों नेवर्ष में विकियों ने

मुख्यमंत्री

गादव ने

विधानसभ

विधायकों टिकट देव

करने की

तीनों

प्रदेश नेता

के यह चु

मुही पर भाजपा के

केलराज वि मंत्रर्थ राम

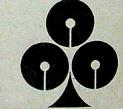
त्रोगों के श्रोपंस के

नेवारी व कुल मि

और योजना के अंत में पूंजी-वृद्धि का लाभ भी

- 🔲 योजना अवधि : छै वर्ष
- 🔲 पुनः खरीद बाई वर्ष बाद. 1.7 1995 से सममूल्य पर
- □ धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थाएं तथा धर्मादा संस्थाएं भी इस योजना में निवेश करके सेक्शन 11 (5) के
  अंतर्गत कर-लाभ उठा सकती है.

आवेदन स्टेट बैंक की सभी जिला एवं सब-डिवीज़नल/तालुका शाखाओं में खीकृत किए जाएंगे. अधिक जानकारी के लिए अपनी नज़दीकी शाखा से सम्पर्क करें.



SBI MUTUAL FUND

ट्रस्टी एस बी आई कैपिटल मार्केट्स लि. 191, मेकर टावर्स 'ई' कफ़ परेड, बम्बई 400 005.

एस बी आई एम एफ : लगातार अपेक्षा से अधिक उत्तम परिणाम प्राप्त करने वाले कार्यकुशल निधि प्रबंधकों द्वारा संचालित.

■ म्यूच्युअल फ्रंड तथा सिक्योरिटी निवेश बाजार के उतार-चढ़ाव से प्रभावित होते हैं. ■ पिछली कार्यकुरालता भावी परिणाम का सूचक है, यह आवश्यक नहीं.

योजना खुली

लवारें जबिक खिंच गई
हैं, राज्य में तिकोने
क्षर्य के आसार दिख रहे हैं.
क्षिण के एक-एक कोने पर
क्षेप्रेस, भाजपा और जनता
ल खड़ा है. समाजवादी
वनता पार्टी (सजपा) और

बहुबन (बसपा) पिण्चिमी और पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ हलकों में इस संघर्ष को चौकोने कप्र हलकों के ताकत रखती हैं.

भाजपा और कांग्रेस ने अपने ज्यादातर निवर्तमान विधायकों को ही इस बार भी भैदान में उतारा है. कांग्रेस ने ऐसे 94 में से

Digitized by Arya Samai Foundation Chennai and eGangotri

# तिकोने संघर्ष

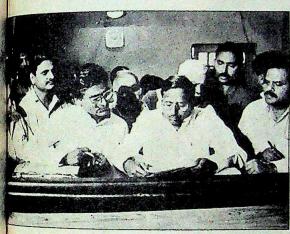
### सजपा, बसपा भी कहीं-कहीं ताकतवर

स्थायी सरकार के मुद्दे पर लड़ा जाने वाला चुनाव होगा. पिछले पंद्रह महीनों की जोड़-तोड़ से जनता ऊब चुकी है." जनता दल नेता रेवती रमण सिंह कहते हैं, "सामाजिक न्याय के हमारे संघर्ष को जनता का पूरा समर्थन मिलेगा." इन बयानों से यही लगता है कि
ये नेता अच्छे खासे वौट की
उम्मीद में हैं. इसलिए
अंतिम फैसला मुख्य तौर पर
स्थानीय कारणों जैसे
चुनाव अभियान का स्वरूप,
आंतरिक गुटबाजियां और
उम्मीदवारों की छवि पर

ही निर्भर करेगा.

कांग्रेस ने 230 से ज्यादा नए लोगों को इस बार मौका दिया है. पार्टी के एक वरिष्ठ नेता कहते हैं, "नए लोगों के कारण स्थानीय गुटबाजियों को कम करने का मौका मिलेगा." भाजपा ने 376 नए

सभी फोटों आर के गुप्ता





र्षा दाखिल करते मुलायमः गद्दी का सवाल

इंका नेता तिवारी, बलराम और राजेंद्री: वोटों की फिक

वेबल 8 और भाजपा ने 55 में से छह विधायकों को किट नहीं दिया है. सजपा ने जद (स) के 119 विधायकों में से 100 को मण्य में उतारा है क्योंकि गिक्यों ने पार्टी छोड़ दी हैं। पुष्पमंत्री मुलायम सिंह गियानसभा के 16 निर्दलीय विधायकों को पार्टी का किट देकर यह कमी पूरी करने की कोणिश की है.

तीनों प्रमुख पार्टियों के प्रदेश नेताओं का मानना है कि यह चुनाव कुल मिलाकर पूरों पर ही लड़ा जाएगा जिया के प्रदेश महासचिव किया मिश्र कहते हैं, "यह किया सम्भक्तों और बाकी की किया के नेता नारायण दत्त किया का मानना है कि मिलाकर यह एक

ND

ति.

यत्रया

# बगावत से मुश्किल

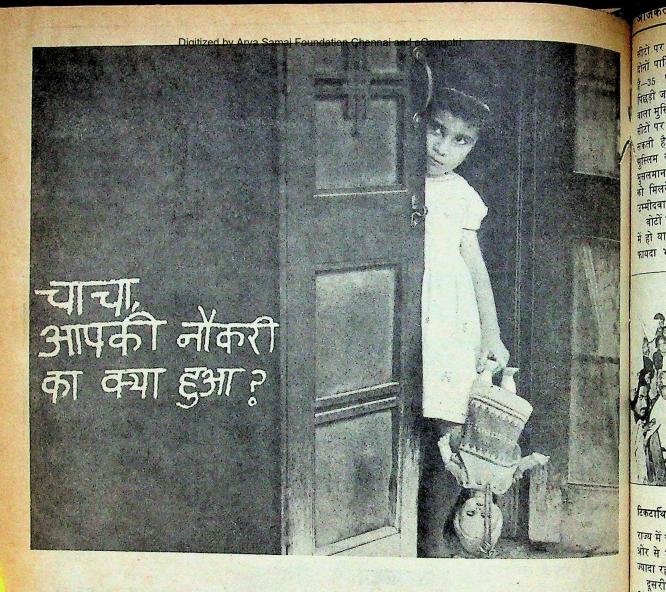
स्थमंत्री मुलायम सिंह यादव इस तथ्य से परेशान हो गए होंगे कि उनके 119 में से 19 विधायक साथ छोड़कर चले गए. इसलिए पार्टी ने 100 विधायकों को ही टिकट दिए. इन 19 विधायकों में से 15 जनता दल में शामिल हो गए हैं. वागियों में एक मंत्री और छह विधायक तो, जिनमें से चार यादव हैं, उनके कट्टर समर्थक माने जाते थे. 32 वर्षीय अमीर आलम सां को अभी 2 अप्रैल को पर्यावरण विभाग का कबीना मंत्री बनाया गया था ताकि ये लोग दल छोड़कर न जाएं लेकिन इन्हों आलम सां ने दल बदलने वालों का नेतृत्व किया. उन्होंने मंत्री पद और पार्टी से इस्तीफा दे दिया.

पार्टी को हुए इस भारी नुकसान को पूरा करने के लिए मुलायम सिंह ने 16 निर्दलीयों को पार्टी के टिकट दिए हैं. बागी खेमें के एक वरिष्ठ नेता का कहना है कि उत्तर प्रदेश के लिए जनता दल की सूची अगर पहले तय हो गई होती तो सजपा से और भी लोग बाहर चले आते. पत्रकारों ने जब मुलायम सिंह से इस दलबदल के बारे में पूछा तो उनका सीधा-सा जवाब था, "मैं अकेले पार्टी के लिए 250 सीटें दिला सकता हूं. आपको जो मन में आए लिखते रहिए."

लोगों को चुनाव में खड़ा किया है. पर टिकट बंटवारे के मामले में इसकी स्थित कांग्रेस या जनता दल से भिन्न नहीं है. प्रत्येक सीट के लिए करीब 10 मजबूत दावेदार थे. अब जिन्हें टिकट नहीं मिला है वे पार्टी उम्मीदवारों की एअपमा प्रतिद्वंद्वी मान सकते हैं.

इन स्थानीय कारणों के अलावा बोट बैंकों में खयानत की समस्या से भी तीनों बड़ी पार्टियां बितित हैं. भाजपा और कांग्रेस का एक ही बोट बैंक है—अगड़ी जातियां. इन जातियों के मतदाताओं की स्था 27 फीसदी है. इसलिए दोनों पार्टियां एक दूसरे के बोट ही काटेंगी.

जनता दल के लिए परेशानी की मुख्य वजह यह होगी कि सजपा के 310



केवल एक स्थिर सरकार ही १० करोड़ नये रोजगार, वर्ष २००० से पहले उपलब्ध करा सकती है।

निए व मुसीवत पिछले च् हरिजन हैं को करी नुकसान वेसपा के भेकेल सा इस

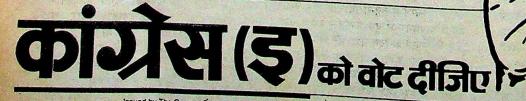
समीकरण

केवल उ पार्टी वार

के लिए फीमदी जातियों

केमी ज

स्थिरता को वोट दें



All India Congress Committee (I) 24 Akbar Dand No. 19 19

बनियों को टिकट दिया है. अनुसूचित जाति के उम्मीदवारों की संख्या 27 फीसदी रखी है. लेकिन इनमें से अधिकतर 93 स्रक्षित क्षेत्रों से खड़े किए गए हैं.

कांग्रेस ने मंडल और मंदिर दोनों को समान महत्व देने की कोणिश की है. उसने 21 फीसदी टिकट ब्राह्मणों को, 14 फीसदी ठाकुरों को और 3 फीसदी बनियों तथा कायस्थों को दिए हैं. इसके अलावा उसने 13 फीसदी टिकट मुसलमानों को दिए हैं. 1989 के मुकाबले इस बार ज्यादा टिकट अन्य पिछडी जातियों के उम्मीदवारों को दिए गए हैं. पिछली बार यह औसत 11

अपने उम्मीदवार खड़े किए हैं? igiti<mark>द्वाद्वी भा</mark> , Ay हें <del>श्री स्वी</del> अपूर्त अपने उम्मीदवार खड़े किए हैं? igiti<mark>द्वाद्वी भा ,</mark> Ay हें श्री स्वी हैं. इसने ज्यादातर मुस्लिम उम्मीदवार उन स्थानों से खडे किए हैं जहां भाजपा मजबूत है और अन्य पिछड़ी जातियों के उम्मीदवार वहां खड़े किए हैं जहां जनता दल मजबूत है.

> सजपा मुख्यतः यादवों के भरोसे दिख रही है. इसके 310 उम्मीदवारों में से 124 उम्मीदवार अन्य पिछड़ी जातियों के हैं जिनमें 70 फीसदी उम्मीदवार यादव हैं. इसने 24 फीसदी मुस्लिम और ऊंची जातियों के 43 उम्मीदवार खडे किए हैं जिनमें 55 फीसदी ब्राह्मण हैं. इनमें अरुण शंकर शुक्ल उर्फ अन्ना, जो लखनऊ के





विकटायियों से घिरे प्रदेश भाजपा अध्यक्ष

जद नेता अजित सिंहः मंडल महातम

गज्य में इस बार हिंदुओं की और से मतदान का औसत न्यादा रहने की संभावना है. दूसरी ओर कांग्रेस के <sup>लिए</sup> वसपा एक बड़ी मुसीवत वन सकती है. पिछले चुनाव में बसपा ने हरिजन बोट काटकर कांग्रेस को करीब 30 सीटों का <sup>नुकसान</sup> कराया. इस बार वसपा के मजबूत उम्मीदवार कांग्रेस को तीसरे नंबर पर धकेल सकते हैं.

इस बार जातियों का ममीकरण भी काफी कुछ वदल गया है. भाजपा ने केवल ऊंची जातियों की पटीं वाली छवि को मिटाने के लिए अपनी सूची में 26 भीमदी स्थान अन्य पिछड़ी शतियों के उम्मीदवारों को है। इनमें से 60 फीसदी भों जाति के हैं. वैसे भाजपा ने 22 फीसदी

## बंदूकें बोलेंगी

जपा और इंका दोनों ही मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव को आसानी से बाजी नहीं जीतने देंगे. मुख्यमंत्री के गढ जसवंतनगर में दोनों ने ही ऐसे उम्मीदवार खड़े कर दिए हैं, जो मुलायम सिंह को परेशान करने में तो सक्षम हैं ही. भाजपा ने चंबल घाटी में रॉबिनहड जैसी छवि वाले डकैत सरगना रहे मान सिंह के पुत्र, पूर्व दस्यु सरदार, 64 वर्षीय तहसीलदार सिंह को खड़ा कर दिया है. इंका ने फिर दर्शन सिंह यादव को टिकट दिया है, जो 1989 के चुनावों तक मुलायम सिंह के बहुत करीबी लोगों में से थे.

हालांकि राजनैतिक दृष्टि से तहसीलदार सिंह और दर्शन सिंह दोनों का ही बहुत अधिक महत्व नहीं है लेकिन वे अपने मतदान केंद्रों की रक्षा करने में सक्षम होंगे. संवाददाताओं के साथ बातचीत में तहसीलदार सिंह ने चेतावनी दी, "अब देखते

हैं, जसवंतनगर में बुध कैसे लूटेंगे."

पर ठीक एक दिन बाद आत्मसमर्पण कर चुके दस्यू मुखिया जनक सिंह यादव ने एक स्थानीय अखबार से कहा, "तहसीलदार सिंह को यह नहीं भूलना चाहिए कि ऐसे भी कई हैं जो मुलायम सिंह की रक्षा करेंगे."

क्ल्यात अपराधी रहे हैं और मूलायम सिंह के दाहिने हाथ माने जाते हैं, भी शामिल हैं.

मुलायम सिंह फिर से .सांप्रदायिकता का पत्ता खेलने लगे हैं. 24 अप्रैल की उनके सरकारी निवास, जहां वे आम तौर पर रहते नहीं हैं, पर बम विस्फोट के बाद उन्हें यह खेल खेलने का फिर से मौका है. मिल गया उन्होंने पत्रकार सम्मेलन बूलाकर आरोप लगाया है कि यह "भाजपा या उसके सहयोगी संगठन के लोगों का काम है. ये लोग गडबडी फैलाने पर आमादा लगते हैं." लेकिन अब चुनावी बयार चाहे जिस तरफ भी बहे, इस बार का चुनाव राज्य में नए राजनैतिक समीकरणों को जन्म दे सकता है.

-- दिलीप अवस्थी

मियां नवाज शरीफ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chemma कोठळा के प्रजाबी ढंग को भी बदवा

## 'कश्मीर को छोड़कर बाकी सभी समस्याएं तो बहुत छोटी हैं'

चालींस वैर्प से भी कम उम्र में मियां नवाज गरीफ ने पानिस्तान के प्रधानमंत्री का पद संभाला था तब कोई यह नहीं गानता था कि वे ज्यादा दिनों तक चल पाएंगे. लेकिन छह महीने के भीतर ही उन्होंने जो लोकप्रियता हासिल की है वह केवल अपने वृतं पर अर्थनीति में उदारता उनकी एक बडी उपलब्धि है. इसके अलावा उन्होंने पाकिस्तान के सुबों के वीच सिंध नदी के पानी के बंटवारे का मुसला अस्थायी तौर पर ही सही, सुलझा लिया है. संघ के कोप में सुबों की हिस्सेदारी के सवाल को भी उन्होंने सूलझाया है और रोना तथा मूल्लाओं से दूरी बनाए रखी है.

बहुधंधी कंपनी समूह इत्तेफाक ग्रुप (सालाना कारोबार 1000 करोड़ रु. से ज्यादा का) के मालिक नवाज शरीफ ने खाड़ी मसले पर अपनी नीति को लेकर सेनाधिकारियों के साथ टकराव जैसे

पेचीदा राजनैतिक गृत्थियों को सूलझाने में अपने मिलनसार स्वभाव और उद्यमणीलता का भरपूर इस्तेमाल किया. उनके भाई 38 वर्षीय शाहबाज शरीफ उनके सबसे बड़े सहायक साबित हुए है. शाहबाज नेशनल असेंबली के सदस्य हैं. इसके अलावा उन्हें कोई मंत्रिमडलीय विभाग या सरकारी पद हासिल नहीं है. पिछले पखवाडे वे भोहाजिर कौमी महाज को समझाते-बुझाते पाए गए. महाज और नवाज गरीफ की पार्टी इस्लामी जम्हरी इतेहाद के रिश्ते तनावपूर्ण चल रहे हैं.

नवाज् शारीफ न तो कोई पुराने मामंत हैं, न कोई कट्टरपंथी नेता और न ही कोई फौजी हस्ती. लेकिन साठ के दशक में बड़े आर्थिक सुधार करने वाले ताकतवर नेता अयुव बां के बाद इस मुल्क के इतिहास में वे अहम शस्सियत वनकर उभर रहे हैं.

आर्थिक बदलाव की रफ्तार इतनी तेज है कि सरकार और नौकरशाही का पूरा स्वरूप ही बदल रहा है. संघीय मंत्रिमंडल के सदस्य चौधरी शुजात हुसैन कहते हैं, "मैं उद्योग और आंतरिक विभाग का मंत्री हूं. लेकिन एकाध हफ्ते में ही उद्योग विभाग का वजूद नहीं रह जाएगा. यह शख्स कितनी तेजी से आगे बढ़ रहा है."

लेकिन नवाज णरीफ की अपनी समस्याएं भी हैं. आर्थिक बदलाव की रफ्तार गलत दिणा में भी जा सकती है या परमाण् कार्यक्रमों को लेकर अमेरिका का दवाब बढ़ते जाने तथा सहायता में कटौती से सुष्किलें बढ सकती हैं.

सबसे ज्यादा मुश्किल विवादास्पद शरीयत बिल को पास कराने में आ सकती हैं नवाज शरीफ का कहना है कि उन्होंने आम सहमति से ऐसा विल तैयार किया है जो बेनजीर सरकार द्वारा पेण बिल से ज्यादा नरम है. लेकिन इस मामले में वे तेजी दिखाना नहीं नाहंगं वणतें उनकी पार्टी का समर्थन करने वाले मुल्ला उनसे रजामद हो.

हालांकि वे जॉर्गिंग और क्रिकेट का अपना प्रिय गगल छोड़ने कारण दुखी हैं. वे वेहद अनौपचारिक ढंग से राजनीति करते हैं के अब प्रेस का सामना करने में णरमाते भी नहीं. लाहौर के सरकार् गेस्ट हाउस फीमैशंस हॉल में उन्होंने फीचर संपादक शेवर गुका और सीनियर एसोसिएट एडीटर **अरुण चाको** से दो घट या की इस बातचीत के अंश:-

 सत्ता में रहने के छह महीनों को आप किस तरह देखते हैं? खदा की दुआ से हमें लोगों से मजबूत जनादेश मिला. लोगों प्रानी समस्याएं मुलझाने के लिए मुझे भारी बहुमत दिया. हम हा काम में जुटे हैं. विभाजन पूर्व से ही जमा होती जा रही समस्यात का ढेर लगा है. जैसे प्रांतों के बीच सिंधु नदी के पानी के बंदबार का ही सवाल है. इसे लेकर लगातार प्रांतों के बीच नाराजगी औ विवाद रहा है हमने इस समस्या को तानाशाही अंदाज ग अदालती आदेश से नहीं, मेल-मिलाप से सुलझाया सत्ता में आने है पहले से ही हम इस दिशा में काम कर रहे थे क्योंकि राष्ट्रीय संसाधनों को प्रांतों के बीच बांटने पर हमारी सहमति तब से बी और आधिक बदलाव?

हमें इसी क्षेत्र पर नाज है. पहले अनेक अंदेशे थे. पर अब चारो ओर से अच्छी खबरें आ रही है. शेयर वाजार का सूचकांक है 🕒 🝱

ऊंचाई तक पहुंचा है. हमारे यहां विदेशी निवेश शुरू हो गया है. विदेशी मुद्रा भंडार बढा है. हम पाकिस्तान को स्ना वाजार बनाने की तरफ तेजी से बढ़ ए हैं. असल में मैं सरकारी दखल कम में कम करना चाहता हूं. ऐसी सरकार जिसके काम कम हो पर वह प्रभावी है। सरकार को सिर्फ वही काम करन चाहिए जो उसे करने ही चाहिए सरकार को उद्योग, होटल, सीमेंट कारखाने, रेस्तरां या वास्तुजिल सलाहकार एजेंसी चलाने से क्या लेग-देना? इसका कोई मतलब नहीं है.

यहां के गांवों को संसाधनों की कमी नहीं हो जाएगी?

नहीं. असल में गांवों में रोजगार की जरूरत है. सरकार ब जितने संसाधन जुटा ले, पूरा रोजगार पैदा नहीं कर सकती हिं निजी क्षेत्र ही यह कर सकता है. चूकि वेरोजगारी देश की सबी वड़ी समस्या है इसलिए हमें अधिक उद्योग लगाने ही होंगे. हमें ग्रामीण इलाके में होने वाले सभी निवेण को करों से पूरी तरह मुन कर दिया है.

 लेकिन इससे भी ग्रामीण वित्त की समस्या नहीं मुलक्षेगी हमने इस पर विचार किया है. जब हम बैंकों को निजी क्षेत्र भेज रहे हैं तो हमने तय किया है कि एक को ग्रामीण बैंक बना है हम चाहेंगे कि निजी क्षेत्र ही इसे चलाए. लेकिन वह नहीं बन्म तो सरकार ही उसे चलाए. इसमें मैं नहीं हिचकूंगा.

• क्या आप कभी आर्थिक बदलाव की रफ्तार को भी तेल रेशान टाए क्रें? परेशान हुए हैं?

मैं ऑपको बताऊं कि लोगों ने हमें कैसे डरा दिया था. उत्ती भविष्य के बारे में काफी भयानक तस्वीर खींची. लेकिन मेंने की कि देश के वृहत्तर हितों को देखते हुए जोखिम लेकर भी कैसते हैं। होंगे, इसने फैसरे हैं होंगे. हमने फैसले लिए और परिणाम अच्छे निकले. हमने विहे मुद्रा की अदला-बदली मुफ्त कर दी है. अब कोई भी विदे

लेकिन क्या ऐसे खुलेपन से आपि

जरूर. क वाग लगान कर भी अ ले किया गह तो खा गहर जा र वना रह ग म इससे रि

किस्तान मे

। हम भ

• क्या य औद्योगि ही उपलब्धा गों को क क्या है. को

राने की जर ा वैक के निजीकरण से काम के

् सार्वज वेच देंगे. क दुनिय में मानत

की भी वि वेत के हवा े उनके

🕇 झे आर्थिक बदलावों पर

नाज है. हमने विदेशी पूंजी को

आकषित करना शुरू कर दिया

है. हम पाकिस्तान को खला

बाजार बनाने की तरफ तेजी से

बढ़ रहे हैं"

भी वदना गल छोड़ने ह व करते हैं और र के मरकान क शेखर गुना घंटे वात की

ह देखते हैं? मला. लोगों ने दिया. हम इत ही समस्याओं नी के बंटवारे गराजगी और ते अंदाज ग ता में आने के योंकि राष्टीव त तब से थी

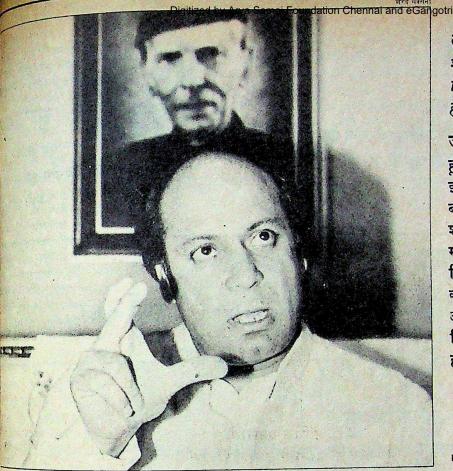
पर अब चारो सूचकांक न रे यहां विदेशी विदेशी मुद्रा तान को सुन जी से वढ़ ऐ दखल कम म ऐसी सरकार ह प्रभावी हो काम करने ही चाहिए ोटल, सीमेंट वास्त्राणत् से क्या लेगा-

नहीं है. पन से आपने सरकार चहि सकती. मिर्फ रेश की सबने ते होंगे. हमने री तरह मुक्त

मुलझेगी. निजी क्षेत्र वैक बना है। नहीं चला को भी तेहा

कन मेंने वि री फैसने से हमने विदेशी भी विदेश

था. उन्होंने



स. आपका नया शरीयत विधेयक तो विवादों से घिर गया

ज.मैं कठमुल्ला नहीं हूं. मेरा मानना है कि इस्लाम तरक्की और बहबूदी का मजहब है. शरीयत बिल का मकसद मजहबी रियासत कायम करना कभी नहीं रहा और इससे मजहबी रियासत कायम भी नहीं होगी

किस्तान में विदेशी मुद्रा खाता खोल सकता है.

• हम भारतीय भी?

<sup>बहर, क्या</sup> आप विदेशी नहीं हैं? कल अगर शेखर गुप्ता यहां वीं लगाना चाहें तो जरूर लगाएं. आप यहां एक करोड़ डालर कर भी आ सकते हैं और किसी को यह बंताने की जरूरत नहीं विकिया रकम आई कहां से. कोई फार्म नहीं भरना पड़ेगा. आप हैं तो बाता बुलवा सकते हैं. इसी तरह अगर आप पैसे लेकर हा जा रहे हैं तब भी कोई सवाल नहीं पूछेगा. अब सिर्फ यह ना रह गया है कि रुपया आसानी से परिवर्तनीय मुद्रा बन जाए. म इससे सिर्फ एक कदम पीछे रह गए हैं.

भया यही विकास की कुंजी है?

भैद्योगिक विकास दो बातों पर निर्भर करता है. एक तों पूंजी अस्ति को का कायदे कानूनों के जंजाल से मुक्ति मिले. हमने ऐसा ही आहें कोई लाइसेंस नहीं, निवेश की सीमा नहीं, सरकार के पास को जहरत नहीं. अपनी संभावना रिपोर्ट दीजिए और पैसों के के के पास पहुँचिए. अब मुझे लगता है कि अगर वैंकों का भीकरण नहीं हुआ तो इस सब पर पानी फिर जाएगा. इसलिए भ काम को पहले करना है.

भार्वजनिक क्षेत्र की अन्य इकाइयों के साथ आप क्या करेंगे? वेष तेंगे. अभी ऐसी 40 इकाइयां विकने जा रही हैं. मुझे लगता है दुनिया के इतिहास में इतने बड़े पैमाने पर यह काम नहीं हुआ है मान्य के इतिहास में इतने बड़े पैमाने पर यह काम नहीं हुआ भागता है कि इनमें से कई न चल पाने वाली हैं और शायद भी विके ऐसे में हमें उन्हें खत्म करके उनकी जायदाद निजी के हवाले करनी पड़ेगी.

े उनके कर्मचारियों का क्या होगा?

उन्हें 12 से 18 महीने का नोटिस मिलेगा या मोटी रकम देकर अलविदा कह दिया जाएगा. अगर सरकार व्यापार में उतरती है तो भ्रष्टाचार बढ़ जाता है. कंट्रोल और पावंदियां काफी ज्यादा हैं. काम से किसी का निजी जुड़ाव नहीं रहता. मजदूर इधर-उधर भटकते रहते हैं. उन्हें या तो सही वेतन नहीं मिलता या फिर सरकारी संसाधनों की कीमत पर मिलता है. इस रकम का इस्तेमाल विकास कार्यक्रमों पर होना चाहिए. मैं इस मामले में बहुत स्पष्ट हूं. मैं भ्रष्टाचार नहीं होने दूंगा और सरकारी पैसे पर अकुशलता नहीं चलने दूंगा.

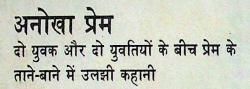
• जैसा विकास आप चाहते हैं उसके लिए पूंजी कहां से आएगी? व्यवस्था के बाहर से रकम जुटानी होगी, यानी वह रकम जिसका हिसाब किताब नहीं है, जिसे आप काला धन कहते हैं. हमने घोषणा कर दी है कि एक साल तक जो पूंजी नए उद्योगों में लगेगी उसका स्रोत हम नहीं पूछेंगे. यह रकम मुनाफा देने वाली अर्थव्यवस्था में क्यों न लगे? हमने पाया कि पिछले कुछ वर्षों में काफी पैसा जमीन जायदाद में लग रहा है. अब यह पैसा उद्योग में क्यों न लगे?

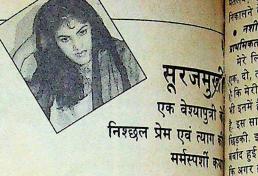
आप काले धन को खराब नहीं समझते?

जब तक आप समय-समय पर सफाई करते रहें तब तक कुछ भी गंदा नहीं होता. मुझे राष्ट्रीय बजाना बढ़ाना है. पैसे की कोई कमी नहीं है. पर हो सकता है कुछ पैसा सामान्य व्यवस्था के बाहर भी चल रहा हो.

क्या नशीले पदार्थों से आने वाला पैसा भी?

मेरा दर्शन अलग है. अगर हम किसी रकम को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अंग नहीं बनाएं और बहुत ज्यादा कानून बघारते रहें तो यह रकम अपराध, नशीले पदार्थों और तस्करी में जाएगी







सासों की कैद में

प्यार, विश्वास, प्रतिशोध एवं विश्वासघात के कई पहलुओं को समेटनेवाली मार्मिक कथा



सौदा और सिन्दूर

अपने 'मरद' का इन्तजार कर रही एक आदिवासी युवती की कहानी

वास्तविक जीवन की सुरुचिपूर्ण कथा पत्रिका

प्रेमके आवेश में घटित बेमिसाल सत्यकथाएं

१० से अधिक प्रेम-कथाओं सहित १५ सत्वेक

आज ही खरीदिये

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मतलब यह

र्बाद हुई

आर्कापत उमी ओर • संसा

नहीं लगत पाकिस्तान

दोनों मुल पह काम सकता.

के लिए मकान की

हमें इतर्न पर नहीं : पहले हमें • क्या

मैं भा के लिए ब क दूसरा

• क्या समस्याअ कश्मी पाकिस्तान

माय कोई रोस्ती कर तो भारत

कामीर : मुलझाया वपनाकर

म यही क रेगों का े लेकि

भी देश ह केह सकत

क्यों न वह संभव एवं त्याग है

र्मस्पर्शी का

वत्व यह नहीं है कि हमें इस धंधे की कुछ रकम वहां से बाहर कित्तिने के लिए आकर्षित नहीं करनी चाहिए.

नशील पदार्थों की समस्या कितनी गंभीर है? आपकी ग्राथमिकताओं में इसका नंबर क्या है?

मेरे लिए सभी प्राथमिकताएं इतनी महत्वपूर्ण हैं कि उनको क, तो, तीन नंबर पर डालना मेरे लिए मुश्किल है. मुझे लगता कि मेरी पहली प्राथमिकताएं कई हैं. नशीले पदार्थों की समस्या भ इनमें है. इस साल हमने इस धंधे पर सबसे कड़ा प्रहार किया इस साल हमने इनके पौधे नष्ट करने के लिए विमान से दवा

ब्रिडकी, इसकी काफी फसल क्वंद हुई है. समस्या यह है कि अगर हम इसमें लगे कुछ धन को सामान्य धंधों में आर्कापत नहीं करेंगे तो यह सी ओर चला जाएगा.

• संसाधनों की बात हरते समय क्या आपको नहीं लगता कि भारत और गिकस्तान हथियारों पर इतना सर्च क्यों कर रहे हैं?

मेरा मानना है कि रोनों मुल्कों को साथ-साथ वैठकर इस पर विचार करना चाहिए. पाकिस्तान पह काम अकेले नहीं कर मनता. हमें साथ बैठकर रोनों मुल्कों के पुराने झगड़े मुलझाने चाहिए. जब लोगों के लिए रोटी, कपड़ा और मकान की समस्याएं हो तो हमें इतनी रकम हथियारों

ए नहीं सर्च नहीं करनी चाहिए. लेकिन इस दिशा में बढ़ने के हिले हमें एक दूसरे के अंदेशे भी दूर करने होंगे.

• क्या आप पहल करने को तैयार हैं?

मैं भारत के प्रधानमंत्री से इन सभी मामलों पर विचार करने है लिए बहुत उत्सुक हूं. यह एक पक्का वादा है. लेकिन मैं चाहूंगा कि दूसरा पक्ष भी इसी भावना से काम करे.

• स्या आपको लगता है कि दोनों देशों के बीच की इन <sup>बमस्याओं</sup> को युलझाना संभव है?

करमीर को छोड़कर बाकी सभी छोटी समस्याएं हैं. अगर किस्तान और ईरान दोस्तों की तरह रह सकते हैं तो भारत के भाव कोई दिक्कत क्यों हो? अगर ब्रिटेन और फांस जर्मनी से रीसी कर सकते हैं, अमेरिका कनाडा से नजदीकी रख सकता है ो भारत-पाकिस्तान क्यों नहीं? लेकिन मैं यह भी बता दूं कि किमीर इतनी गंभीर समस्या है कि अगर हमने इसे नहीं भिन्नाया तो यह हमारा खून चूस लेगी. हमें यथाथवादी नजरिया काता पर हमारा धून पूस जान है। के को पर बात करनी चाहिए, माले में मैंने श्री चंद्रशेखर पहीं कहा था. मैंने कहा कि हम ऐसा समाधान ढूंढे जो दोनों रेशों का मान रखे.

े लेकिन चार दशकों की कटुता के बाद क्या दोनों में से किसी भी देग की सरकार अपने लोगों को पुराना नजरिया बदलने को

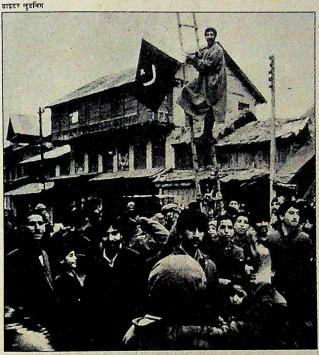
भों नहीं? अगर दोनों देशों के नेता इस मुद्दे को न भुनाएं तो भिम्ब है. कश्मीर की स्थिति पर गौर कीजिए. पिछले चुनाव

विश्वाली दवाओं ने दुनिया भर में तबाहीं अभिवारिकी श्रेशक स्थाल। निमेश्वरहां का क्रिकी क्षेत्रकी के खेळीट डाले. अब आप वहां चुनाव नहीं करा सकते. क्या आप इस हाल को बनाए रहना चाहते हैं? क्या आप ऐसा करके रह सकते हैं? क्या समाधान ढूंढना आपकी जिम्मेवारी नहीं है. 40-45 वर्षों में हम समाधान नहीं ढूंढ़ पाए हैं. इस ख़ुनी विवाद को हम कितना लंबा खींचेंगे? जब तक यह पूरा ही खुन न चुस ले?

आप दोनों पक्षों का मान रखने वाले समाधान की बात करते

हैं. क्या आपके दिमाग में इसका कोई खाका है?

मैं उसे अभी यहां इंडिया ट्डे के लिए कतई जाहिर नहीं करना चाहता.



स.किसी भी देश की सरकार पुराना नजरिया बदल पाएगी?

ज.क्यों नहीं. अगर दोनों देशों के नेता इस मुद्दे को न भुनाएं तो यह संभव है. इस खुनी विवाद को हम कितना लंबा खींचेंगे? जब तक यह पूरा ही खून न चूस ले?

क्या भारत में सांप्रदायिक विवाद और अयोध्या विवाद के बारे में पाकिस्तान के नजरिए में कोई बदलाव आया है? क्या कुछ नरमी आई है?

मैं जरूर कहंगा कि बाबरी मस्जिद मसले पर भारत सरकार ने सही नजरिया अपनाया है जिसकी हमें तारीफ करनी चाहिए. जब तक उनका नजरिया यही रहेगा हम समर्थन करते रहेंगे.

• लेकिन क्या आपको इस मसले पर भारत सरकार की सीमाओं का एहसास है?

हां, है. दोनों ही तरफ ऐसी सीमाएं होती हैं. कण्मीर में भारत क्या कर रहा है? यह विवादग्रस्त इलाका है और वहां जो कुछ भी किया जाता है, उससे यहां चिता होने लगती है. मैं फिर कहता हूं कि साथ बैठकर समाधान ढूंढ़ना चाहिए.

• क्या भारत में हिंदू उभार और चुनाव पर पड़ने वाली उसकी छाया से आपको चिंता होती है? क्या आप चुनाव के बाद भाजपा की सरकार बनने के अंदेशे से चितित हैं?

मुझे पूरा भरोसा है कि अपनी सरकार चुनते समय भारत के लोग सभी बातों का खयाल रखेंगे. जहां तक हमारी बात है हम हर उस आदमी से बात करके खुश होंगे जो भारत के लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहा हो. भारत का प्रधानमंत्री चाहे जो हो हमारे लिए सब समान हैं.

 तो आप भारत में भाजपा सरकार बनने की संभावना से चितित नहीं हैं?

देखिए लोग उसीकी सदकार चुनेंगे जिसे सर्वश्रेष्ठ मानेंगे. मुझे

ऐसा कोई अंदेशा नहीं है. असिंभींप्यन्धिक्षेत्री किरिकावश्ची विमस्त्री मार्थिक श्रीका किरिकावस्त्री हैं Gangotri के लोगों ने इस्लामी जम्हरी इत्तेहाद की सरकार चुनी तो भारत में इस बात का डर जाहिर किया गया कि यह कठमुल्ला सरकार होगी. सभी तरह की बातें होती रहती हैं. लेकिन क्या आज यह नहीं माना जा रहा है कि यही सरकार प्रगतिशील है जिसकी भारत के साथ निभेगी?

• पंजाब और कश्मीर के उग्रवादियों को पाकिस्तानी मदद मिलने के बारे में भारत में जो चिंता फैली हुई है क्या आपने कभी उसे समझने की कोशिश की?

ऐसी कोई बात नहीं है और मैंने इस बारे में चंद्रशेखर को पूरी

ईमानदारी से आश्वासन दिया है. जहां तक पंजाब की बात है तो वह पूरी तरह से भारत का घरेलू मामला है. दरअसल हम पूरी गंभीरता से चाहते हैं कि भारतीय पंजाब में जितनी जल्दी हो सके अमन-चैन लौट आए. देखिए ऐसे आरोप चलते रहते हैं. यहां भी कई लोग हैं जो कहते हैं कि सिंध में हिंसा और बम विस्फोटों के पीछे भारत का हाथ है. दोनों तरफ ऐसे गृट हैं. पर हम नया अध्याय शुरू करना चाहते हैं.

• पर भारत में कई लोग मानते हैं कि चंद्रशेखर ने हाल ही में पंजाब के जिन उग्रवादियों से बातचीत की वे पाकिस्तान के अपने छुपने के ठिकानों से आए थे.

इसका कोई दरअसल खुद चंद्रशेखर ही इससे इनकार कर चके हैं.

• क्या आप भुद्रो परिवार और पाकिस्तान पीपुल्स

नहीं, मैं स्वस्थ व सम्मानजनक परंपरा शुरू करना चाहता हूं. हम जम्हूरियत को मजबूत बनाना चाहते हैं. दरअसल उन्होंने (बेनजीर ने) जो किया वह सबसे रही काम था. जिस तरह से उन्होंने अपने राजनैतिक प्रतिद्वंद्वियों को सताया और मेरे खानदान की इज्जत पर कीचड़ उछाला. जहां तक आसिफ जरदारी की बात है तो यह तो एक न्यायिक मामला है. हमारा इससे कुछ लेना-देना नहीं.

• पर माना जाता है कि सिंध सरकार हर जायज-नाजायज तरीके से उनके पीछे पड़ी है और वह भी शायद आपकी इच्छा के खिलाफ?

देखिए सिंध सरकार कानून और व्यवस्था की गंभीर समस्या से मुकाबिल है, उसे पापीपा और इजइ समेत सभी पार्टियों के उन लोगों से निवटना है जो डाकुओं और अपहर्ताओं की मदद करते हैं. वह किसी से सिर्फ उसकी सियासी पृष्ठभूमि के कारण ही खास तरह का बरतात्र नहीं कर सकती.

पाकिस्तान के नए शरीयत बिल पर बढ़ रहे विवाद से क्या

नए विल से आम सहमति बनाने का मेरा रवैया झलकता है में मानता हूं कि इस्लाम तरक्की और बहबूदी का मजहव है. यह बिल हमें उस ओर ले जाएगा. शरीयत बिल का मकसद मजहनी रियासत कायम करना नहीं और इससे यह कायम भी नहीं होगी मैं आपको पहले भी बता चुका हूं कि मैं कठमुल्ला नहीं हूं.

 अब जरा इस महाद्वीप से दूर चलें. पाकिस्तान को अमेरिको मदद रोक देने की समस्या कैसे खड़ी हुई?

मदद रुकने से हम ज्यादा परेशान नहीं हैं. और हमने मदद की बहाली के लिए अमेरिका से दरयाफ्त भी नहीं की. हमें तय करना



स. क्या आप भुट्टो परिवार से बदला लेने की राजनीति नहीं चला रहे?

ज. नहीं, मैं स्वस्थ व सम्मानजनक परंपरा शुरू करना चाहता हूं. दरअसल (बेनजीर ने) अपने राजनैतिक प्रतिद्वंद्वियों को सताया और मेरे खानदान की इज्जत पर कीचड़ उछाला

है कि हम दूसरों पर अपनी निर्भरता बढ़ाना चाहते हैं या अ<sup>पने</sup> पैरों पर खडे होना.

 अमेरिका द्वारा मदद को आपके परमाणु कार्यक्रम से जोड़ें पर आपकी प्रतिक्रिया क्या है? एक सार्वभौम राष्ट्र होते के कारण क्या आपको यह बात परेशान नहीं करती कि एक इसी देश आपके परमाणु कार्यक्रम के बारे में सफाई मांगे.

में कई बार कह चुका हूं कि हमारा परमाणु कार्यक्रम शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए हैं. लेकिन हां, में इस मसले पर कुछ परेशान जरूर हूं. हम इसके लिए अमेरिका को कोई सफाई नहीं देंगे. मदद मिले या न मिले. हमें अपना काम खुद देखना बाहिए हमें किसी को कोई आण्वासन देने की जरूरत नहीं

• क्या आपके पहले की सरकार की नीति कुछ अला नहीं थी-जाकर अमेरिका से मदद मांगना?

मैं कुछ नहीं कहूंगा. आप खुद नतीजे निकाल सकते हैं की सरकार की नीति अमेरिका से अच्छे संबंध वनाने की है. पर हुन घरेलू मामलों में कोई समझौता नहीं करेंगे. और अगर हमारे पूर्ववर्तियों की नीति अलग थी तो हम उससे बंधे हुए नहीं है

अ प्रवा इस र्शवार की तिवर्तनीय ि रो आम लो तभ देगी. उ र्तिम भारती खेंचर के 9 ए बाकी 11 हेंगे. लेकिन स्मा नहीं जिनके 40

> 'टा स जूता ात समूह हा रहे हैं। लाई है जिस रही है इ भ हॉलैंड

गमदी) प्रस

नाधारण ३

थार स । हाथ ज कुक बांह वेवय माल्य गहिनम ने भ्रमिति दी विष्टुं लिए हम कार भाम में

भोवार वा

वीनतम हि

भेगी एमअ

Digitized by Arva Samaj Foundation Chennal and eGangotri दुश्मनों से दोस्ती

दिरजेंट बनाने में उपयोग होने वाले बहुत ही सस्ते और साधारण कच्चे माल— लीनियर अल्काइल बेंजीन (लैब) को कहां से और कैसे खरीदा जाए, इसके लिए भारी जोड़-तोड़ होने लगी है. दो वर्ष पहले निरमा, हिंदुस्तान लीवर और जेके समूह के स्ट्रा प्रोडक्ट्स को 'लैब' परियोजना लगाने के लिए अनुमति पत्र जारी हुए थे. लैब बनाने में प्रमुख कच्चा माल है एन-पैराफिन जो मिट्टी के तेल से निकाला जाता है.

इंडियन पेट्रोकेमिकल्स और तिमलनाडु पेट्रोप्रोडक्ट्स वगैरह को किरासन से पैराफिन निकालने की अनुमित मिली हुई है. इसके बाद तेल एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने फैसला किया कि सरकारी तेल कंपनियां ही पैराफिन निकालने का काम करेंगी और दे ही नए लैब निर्माताओं को एन-सपैराफिन बेचेंगी. और इस फैसले ने डिटरजेंट बाजार की जानी दुश्मन कंपनियों—निरमा और हिंदुस्तान लीवर—को एक साथ ला दिया है.

#### मनमर्जी का मामला

झलकता है गहव है. यह

सद मजहबी

नहीं होगी

को अमेरिकी

नि मदद की

तय करना

। भुट्टो दला लेने

नहीं

स्वस्थ

करना

रअसल

तंक

मेरे

ोचड

हें या अपने

म से जोड़ते

ट्र होने के

एक दूसरा

कार्यक्रम

ने पर कुछ

पफाई नहीं

ना चाहिए

अलग नही

ते हैं. मेरी

हे. पर हम

गर हमारे

信意

क

हीं हूं.

नाटकीय बढ़ोतरी

प्रवासी भारतीय क्या विशेष तरह के लोग हैं? इस वात पर एक वार फिर गौर कर लीजिए. हिंदुजा श्वार की प्रमुख भारतीय कंपनी अशोक लीलैंड ने ऐसी श्वितंतीय डिवेंचर की श्रृंखला जारी करने का प्रस्ताव किया है शे अम लोगों की तुलना में आप्रवासी भारतीयों को अधिक त्या केगी. अगले दो महीने में आने वाला राइट आधार का यह श्वित भारतीय अंगधारकों से पक्षपात करता है. 200 रु. के इस विवर्ष के 90 रु. तो दो महीने बाद दो शेयरों में बदल जाएंगे ए बाकी 110 रु. 12.5 फीसदी सूद दर पर सात वर्षों तक पड़े शे. लेकिन खुद हिंदुजा परिवार के निवेश में यह अपरिवर्तनीय इसा नहीं जुड़ा होगा. अगर सरकारी वित्तीय संस्थाओं ने जिनके 40 फीसदी शेयर हैं जबिक हिंदुजा-इवको के 38 शिवरी) प्रस्ताव का विरोध नहीं किया तो यह 31 मई की अग्राधारण आम सभा में पास हो जाएगा.

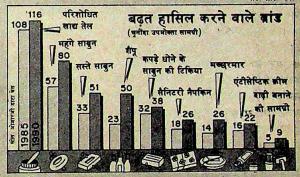
#### दूसरा कदम आगे

ा समूह अपनी कंपनी टाटा एक्सपोर्ट्स के माध्यम से जूता निर्यात के क्षेत्र में कदम रख चुका है. अब वे ताज कि समूह की निर्यात इकाई के साथ दूसरा कदम भी आगे कि है हैं इसने ताज रेइन शूज नामक नई सहयोगी कंपनी किई जिसमें तकनीकी सहयोग जर्मनी की सोहलेन फैब्रिकेशन कि जर्मनी के अलावा यह अमेरिका, ब्रिटेन, आयरलैंड कि हों हैं जर्मनी के अलावा यह अमेरिका, ब्रिटेन, आयरलैंड कि हों हो हैं जर्मनी के अलावा यह अमेरिका, ब्रिटेन, आयरलैंड

#### बढ़ता उफान

गिर साद्य पदार्थों के व्यवसाय में भले ही कुछ लोगों के हाथ जले हों पर यह उफान बढ़ता ही जा रहा है. हाल में कु बांड ने मसालों का कारोबार शुरू किया और इसने किया माल्या की जैम और केचप कंपनी को खरीद लिया; किया ने बिटानिया के सोया फूड डिवीजन के अधिग्रहण की कित्र हैं, टेट्रापैक पेय के मामले में बहुत सफल न होने के किया आहर कारोबार में जमी-जमाई नेस्ले अब सोया और ब्रेबजर किया में ही हाथ लगाने की सोच रही है. 100 करोड़ ह. किया वाला बांबे आयल समूह अब इस क्षेत्र में उभरने वाला किया होता है है जो पुणे की 2 करोड़ ह. कारोबार वाली एमआईएल लि. को खरीद रहा है.

उन्हें दशक के उत्तरार्द्ध में भारत में छोटी-छोटी चीजों के अनेक ब्रांड उभरे हैं. ऑपरेशन रिसर्च ग्रुप द्वारा हाल में किए गए सर्वेक्षण से यह बात अधिक स्पष्ट होती है. 1985 में शैंपू के मात्र 23 ब्रांड थे जबिक 1990 में 50 ब्रांड हो गए. जिन दूसरे क्षेत्रों में भारी बढ़ोतरी हुई है वे हैं—मच्छर अगरवत्ती (1985 के 14 ब्रांडों की जगह 1990 में 26), सैनिटरी नैपकिन (18 से



बढ़कर 26) और महंगे साबुन (57 से बढ़कर 80).

#### समझौते को उत्सुक

छले कई वर्षों से अनेक दवा कंपनियां अपनी कीमतें पं बेवजह' अधिक करने के मामले पर सरकार से भिड़ी पड़ी हैं. सरकार का दावा है कि इन पर 1979 के दवा (कीमत नियंत्रण) आदेश के अनुसार 150 करोड़ रु. से अधिक का बकाया है. इनमें दो बहराष्ट्रीय कंपनियां हेक्ट्स (75 करोड़ रु. से अधिक) और ग्लैक्सो (करीब 50 करोड़ रु.) पर सबसे अधिक बकाया है. कंपनियों ने इस दावे को गलत बताया और विभिन्न अदालतों में इसके खिलाफ मामले दायर किए थे. लेकिन पिछले महीने कंपनियों ने रास्ता बदला और अदालत से बाहर मामले को निबटाने का सुझाव दिया. लेकिन अभी तक खुद को मजबूत स्थिति में मानकर सरकार ने यह पेशकश ठुकरा दी. बड़े अधिकारियों का दावा है कि अदालत में अपनी दलीलों के न ठहर पाने के डर से ही ये कंपनियां अब समझौते की बात कर रही हैं. पर कंपनियों का कहना है कि ऐसा नहीं है, वे सिर्फ परेशानी से बचने के लिए यह कर रही हैं. उत्पाद कर की भारी 'चोरी' के आरोप में फंसी सिगरेट कंपनियां इस मामले को अधिक दिलचस्पी से देख रही हैं.

क्रिकेट

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

## बेहदा कायदो का खेल

#### घटिया पिचों, कठिन नियमों ने घरेलु क्रिकेट का भट्ठा बिठाया

पकी टीम पांच दिवसीय मैच अग में बिना विकेट खोए 250 ओवर में 1,000 रन बनाती है जबिक प्रतिद्वंद्वी टीम 30 ओवर में 9 विकेट पर 121 रन बनाती है. मानिए या न मानिए, आप मैच हार गए. आप कह सकते हैं कि यह तो क्रिकेट नहीं है. लेकिन देण में क्रिकेट-- और प्रथम श्रेणी का क्रिकेट ऐसे ही खेला जा रहा है. नतीजा भी स्पष्ट है: स्तर गिर रहा है और दर्शक घट रहे हैं.

यही नहीं, क्प्रबंधन, बेमतलब के नियमों, खराब पिचों और अधिकारियों की उदासीनता ने घरेलू क्रिकेट को ऐसी अवस्था में ला दिया है जहां मैदान में कम और मैदान के बाहर ज्यादा करतब दिखाए जाते हैं. सौभाग्यवश पिछले पखवाड़े, दिल्ली क्रिकेट एसोसिएशन (डीसीए) और पंजाब एसोसिएशन के बीच एक प्री-क्वार्टर फाइनल मैच को लेकर चल रही बेमतलब की अदलती लड़ाई खत्म हो गई. लेकिन रमन लांबा दलीप ट्रॉफी के एक मैच में रशीद पटेल के साथ हुई झड़प के बाद

अपने ऊपर लगे प्रतिबंध के खिलाफ अदालत में चले गए. इस सीजन में राष्ट्रीय क्रिकेट में अदालतों से तीन बार न्याय मांगा गया. साथ ही पराजित टीमों ने भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) में भी कई शिकायतें दर्ज कराई.

#### चौंकाने वाले स्कोर

- बंगाल के खिलाफ कर्नाटक 6 पर 791
- त्रिपुरा के खिलाफ बंगाल 7 पर 758
- दक्षिण क्षेत्र के खिलाफ उत्तरी क्षेत्र 747
- बंगाल के खिलाफ शेष भारत 9 पर 737
- दिल्ली के खिलाफ मुंबई 8 पर 719
- तिमलनाड् के खिलाफ कर्नाटक 8 पर 719
- कर्नाटक के खिलाफ बंगाल 9 विकेट पर 652

अधिक रन बनाने वालेः वी. अर्जून राजा 267, श्रीकांत कल्याणी 260, के.ए. जशवंत 259, दिलीप वेंगसरकर 258, प्रवीण आंबरे 246, सबा करीम 234, रवि शास्त्री 217.

(समी स्कोर 1990-91 सीजन के)

मंसूर अली खां पटौदी तकनीकी मा मतलब द्वारा समय-समय पर बदले जाने हो हो हो नियमों के दलदल के बारे में कहा त बरेलू "भारत में क्रिकेट कैलकुलेटर से वेता जाती है ज है." दरअसल, इन्हीं नियमों के दलका है और खेल की यह दुर्गति हुई है और कपान हर जाता अपनी टीम के प्रदर्शन के बजाए मार्गा जिनमें संबंधी नियम, दंड संबंधी नियम और संबंधी. में पर ज्यादा ध्यान देना पड़ता है.

नियमों में इस तरह की विसंगतिक की उसने कारण घरेलू क्रिकेट में खिलाडियों क तमिलन दर्शकों की कोई दिलचस्पी नहीं रह में हो तो को घरेलू क्रिकेट से कुछ समय से कोई प्रीवन के उभरकर सामने नहीं आई है. यहां तह कि हिमाच 'वंडर व्वाय' कहे जाने वाले म तेंडुलकर ने भी अपना पहला ईरानीय मैच इस सीजन में ही खेला. घरेलू हैं की द्रदेशा का आलम यह है कि इस की में पांच मैच इसलिए नहीं हो पाए को अंपायर आए ही नहीं.

बीसीसीआई अध्यक्ष सिंधिया खेल के बदलते स्वरूप के आ नियम बनाने को कतई गलत नहीं मा हैं. वे कहते हैं, "नए नियमों को दो की तक आजमाया जाना चाहिए. विशेषा इन्हें एक साल के चितन-मनन के बनाया है. नियमों को बार-बार बत अच्छी बात नहीं है."

मुंबई के खिलाफ क्वार्टर फाइनल में बल्लेबाजी करते दिल्ली के अजय गर्म



:72 इंडिया टुडे ◆ 15 मई 1991

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

न भारत मे

भार वेला जा

गरेलू क्रि परेल कि बीच भा

र शक्ति हि 28 रनों म 12 से व के 12वें f तरह के नहीं है ीर बल्लेबा

ष पर उभ वील क्रिकेट विजा रहे। विभक्त स्रो के पास उ

> केट बनाए र भी गेंदव

तकनीकी का मतलब यह नहीं कि अकेले तदर्थ बदले जाने को ही बेल का बेड़ा गर्क किया है. बारे में कहा त घरेलू क्रिकेट घटिया पिचों पर टर से मेहा के जहां बल्लेबाज मौज से रन मों के दलका है और बेचारा गेंदबाज पसीना और कप्तान है इस सीजन में ऐसे कई , बजाए भाषा है जिनमें विशालकाय स्कोर बने नियम और के बटें). मजेदार बात तो यह है कि भारत में पेनाल्टी रनों को मान्यता की विसंगतिक क्षी उसने पिछले साल गोवा के बिलाड़ियों तिमलनाडु के 912 रनों में से नहीं रह मार्ग तों को घटा दिया था.

य से कोई प्रीव तीजन की मुख्य बातों में एक यह है. यहां तर कि हिमाचल प्रदेश के मध्यम तेज क्मि। प्रांधं यहं में फिर्मि। एहें Sartai प्रियेगा प्रेशं शास्त्रिमिका त्रा है Gang goti प्रमुख युवा गेंदबाज अब गेंदबाज आशीष विस्टन जैदी ने हरियाणा के खिलाफ क्वार्टर फाइनल में 14 विकेट लिए और बंगाल के प्रतिभाशाली हरफनमौला सौरभ गांगूली ने पश्चिमी क्षेत्र के खिलाफ 117 रन पर चार विकेट झटककर अपनी मध्यम तेज गेंदबाजी से प्रभावित किया. कर्नाटक के 21 वर्षीय मध्यम तेज गेंदबाज जावागल श्रीनाथ ने प्री-क्वार्टर फाइनल में महाराष्ट्र के खिलाफ 7 विकेट लिए. ओडीसा के सुशील कुमार ने त्रिप्रा के खिलाफ 15 विकेट लिए.

एकदिवसीय खेल की लोकप्रियता बढने से भी खिलाडी बल्लेबाजी पर ज्यादा ध्यान

बल्लेबाजी पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं. अगर यही रवैया रहा तो स्पिनर अनिल कंबले, जिन्होंने कर्नाटक के लिए शतक ठोंका, जे. श्रीनाथ और बंगाल के सौरभ गांगूली हरफनमौला बन सकते हैं.

भारतीय खेल के पूरातनपंथी प्रशासकों ने जहां इस आनंददायक खेल को अपने तदर्थ और बेमतलब के नियमों से चौपट किया है, वहीं वे इसे अदालतों तक भी ले गए हैं. डीसीए ने जब अखिल भारतीय पैनल के अंपायर प्रीतम सूद को 12 फरवरी को पंजाब के खिलाफ एक मैच में एक अंपायर के न आने पर अंपायरिंग करने को कहा तो पंजाब के मैनेजर बिशन सिंह बेदी ने इस पर आपत्ति की. नतीजा यह कि दोपहर के भोजन तक एस.वेंकटराधवन के साथ एक ऐसे अंपायर से अंपायरिंग करवाई गई जिसने क्वालिफाई नहीं किया था. दोपहर के भोजन के बाद सूद को लाया गया. दिल्ली के नौ विकेट से जीतने के काफी समय बाद पंजाब ने पता नहीं वह नियम कहां से खोज निकाला जिसमें कहा गया है कि किसी मैच के दौरान अंपायरों को नहीं बदला जाएगा. दिल्ली को जीत से वंचित कर दिया गया और फिर से मैच कराने का आदेश दिया गया. लेकिन पंजाब अदालत में चला गया और मैच को रुकवा दिया. आखिरकार दो माह बीतने पर उसने मामला वापस ले लिया और मैच से हट गया. डीसीए के सचिव मनमोहन सूद कहते हैं, "नियम खुद ही बाधाएं पैदा कर देते हैं." बीसीसीआई ने इस प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए जो उपाय सोचे हैं उनमें शिकायत दर्ज कराते समय 25,000 रु. जंमा करना शामिल है जो वापस नहीं होंगे. फिलहाल यह दर केवल 1,500 रु. है.

कई प्रमुख क्रिकेटरों और प्रशासकों का मानना है कि क्रिकेट को संरक्षण देने से इसमें फिर से जान फूंकी जा सकेगी. संरक्षण देने की योजनाओं में एक यह भी है कि बीसीसीआई और देव फीचर्स हर टीम को प्रायोजित करेंगे और एक ऐसी व्यवस्था बनाएंगे कि ताकतवर 10 टीमें एक समूह में होंगी और बाकी 17 दूसरे समूह में. सिंधिया के अनुसार, इससे कमजोर टीमों को ज्यादा मैच खेलने को मिलेंगे और फिर वे टॉप लीग के लिए क्वालिफाई कर सकेंगी. इस योजना में शुरू में 2.5 करोड़ रु. की लागत आएगी. यदि इस तरह के कड़े उपाय नहीं किए गए तो घरेल क्रिकेट आंकड़ा विशेषज्ञों की ही दिलचस्पी का खेल रह जाएगा.

—बीनु के. जॉन



ाने वाले

हला ईरानी ट

ला. घरेलू नि

है कि इस सं

हीं हो पाए को

स्वरूप के अन

गलत नहीं ग ामों को दो सी

हिए. विशेषा

न-मनन के

बार-बार बक

माधवर

गक्ष

माधवराव सिधिया

ए नियमों को दो सीजन तक आजमाया जाना चाहिए. बार-बार नियमों को बदलना ठीक नहीं. आखिर उन्हें विशेषज्ञों की समिति साल भर तक सोच-विचार के बाद ही बनाती है"

फाइनल के सिरत में क्रिकेट कैलकुलेटर से कालाता है. ज्यादातर नए नियमों ने ग्लेल क्रिकेट की लुटिया डुबो दी है. गेलू क्रिकेट और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट के <sup>रीच</sup> भारी अंतर है''



मंसर अली खां पटौदी

मिन्त सिंह हरियाणा के खिलाफ <sup>128</sup> रनों में 14 छक्के मारकर एक ें 12 से अधिक छक्के मारने वाले <sup>मिके</sup> 12वें खिलाड़ी बन गए.

कित्त्ह के भानदार छक्कों का यह नहीं है कि भारतीय क्रिकेट कुछ ि वल्लेबाजों के साथ अंतरराष्ट्रीय विपर उभरने वाला है. पटौदी कहते किकेट और अंतरराष्ट्रीय स्तर के बारहे क्रिकेट में भारी अंतर है." भिक्त सी रहे कपिलदेव को छोड़, के पास अभी भी कोई विश्वसनीय कि दिलीप वेंगसरकर ने सुझाव भी पित्रों को सोदकर उछाल देने केट बनाए जाने चाहिए." हें भी गेंदबाजों ने धारदार गेंदबाजी

#### यह क्रिकेट तो नहीं

- भागफल नियमः बंगाल (9 पर 652) ने कर्नाटक (6 पर 719) की ऊंचे भागफल के आधार पर हरा दिया. भागफल के लिए रन में ओंबर से भाग दिया जाता है.
- पेनाल्टी के नियमः आंध्र प्रदेश के खिलाफ हैवराबाद को 255 रन बनाने थे लेकिन 7 पर 150 रन बनाकर उसे विजय मिल गई क्योंकि आंध्र की ओर से 10 ओवर कम गेंवबाजी से उसे 120 रन पेनाल्टी के मिल गए.
- बोनस अंकः पहली पारी में बढ़त लेकर आंध्र प्रदेश ने फिर बल्लेबाजी नहीं की. उसे उम्मीद थी कि केरल के विकेट लेकर वह बोनस अंक पा लेगा. पर केरल ने 13 ओवरों में 75 रन बनाकर मैच जीत लिया.

-आंकड़े: मोहनदास मेनन

#### क्याञाक देश

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri की नई पेशकश



सी 91016
महाराजापुरम संथानम (गायन)
संकरी समकुरु; राम नीनू नामिन्ना; हिमगिरि
तनैये/पदसनति मुनिजना ः एहि अन्नपूर्णे;
शनमुखम भजः



ए 91008 हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी) राग ललित/राग भूपाली



ए 91009 राम नारायण (सारंगी) इए मारवा/मिश्र देस और मिश्र पैरवी



सी 91017 टी एन कृष्णन (गयलेन) महा गणपतिम; मारि वेरे; रघुवमसा सुपा/ सारसाझा; पाठलना स्मता; रमणै तहवय



सी 91015 एम बालमुरली कृष्ण (गायन) नीदैया रादा; वेगमय बृहदीस्वरा: ओंकारा; तिल्लाना

# MAESTRO

पहली बार.... भारतीय संगीत के 17 चोटी के उस्तादों के स्वर में हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के खज़ाने में से उन्हीं की रूचि के एगों का बेहतरीन गुलदस्ता. हर संगीतकार की अपनी पहचान की महक वाले इन रागों और कृतियों का चुनाव उन्होंने स्वयं किया है. यही कारण है कि डिजिटल पद्धति से आपके लिए खास तौर से रिकार्ड किए गए ये कैसेट आपको अनूठी संगीत लहिरयों में झुला कर मस्त कर देंगे.

उस्तादों की पसंद — आपके लिए संगीत का ऐसा खजाना जो भारतीय संगीत विरासत के मौजूदा प्रतिनिधियों की महारत का आइना है. चुनींदा दुकानों में उपलब्ध 17 कैसेटों का अनूठा सेट डाक या कूरियर सेवा के रास्ते आपके घर के दरवाज़े पर उपलब्ध.



Kangri Collection, Haridwar

इंडिया दुडे प्रस्तुति



ए 91005 गंगूबाई हंगल (गायन) राग बिहाग/राग बागेश्री



क्खा और

न ताल/जय

सी 91014 वी दुरैस्वामी आवगा वैकटासैल विहार घन रागमतिका तालग

以下下 50 世 FIFE

विस्मिल्लाह खाने ए 910 राग रागेस्वी/राम के 2 गंकर

ति शंकर एग आसा कहता और

हं जहाा अ



मल्लाह खाने ए 91003 रागेश्वरी/राग वि विशंकर (सितार) एग आसा भैरव ब्रहरा और मिश्र गारा धुन



ए 91004 भीमसेन जोशी (गायन) राग रामकली/राग शुद्ध कल्याण



ए 91002 मल्लिकार्जुन मंसूर (गायंन) राग शुक्ल बिलावल/राग रईसा कान्हरा और राग आडंबरी केदार



ए 91006 किशोरी अमोनकर (गायन) राग अहीर भैरव/राग संपूर्ण मालकौस



ए 91007 पंडित जसराज (गायन) राग बैरागी भैरव/राग दरबारी कान्हरा



ए 91010 शिव कुमार शर्मा (मंतूर) राग भूपाल तोड़ी/राग कीरवाणी

### HOICE संगीत



ए 91013 क्खा और जािकर हुसैन (तबला) न ताल/जय ताल और पश्ती



ए 91012 असद अली खान (रुद्र वीणा) राग आसावरी/राग मालकौस



जहीरुद्दीन और वसीफुद्दीन डागर (धुपद) राग ललितं/राग कामबोझी

10 - 1	
48 रु. (कर सहित). 1 से 4 इन्हें के का में 10 रु. अतिरिक्त. और विताण शुक्क नहीं लगेगा.	कैसेट के आईर पर वैकिंग औ
के और किया प 10 है. अतिरिक्त	5 या अधिक कैमेट के आई
का नहीं लगेगा	o in situate table to site

बाहा के वैकों पर 10 ह. अधिक जोडे कता, मदास और दिल्ली से मेजे गए चैक:/द्राफ्ट का एम मा होना पहरी है

क्षाना पहता है. क्षेत्रत मिलने पर ही रिजिस्टर्ड डाक या कृरियर से कैसेट मेजे जाएंगे. प्रोत के बाद हितीवरी के लिए कम से कम 3-4 सप्ताह तक

पेड़ने के लिए संलग्न आईर-फार्म का प्रयोग करें. शिष्ट और जन्य मुगतान 'स्यूजिक दुवे' के नाम पर इस पते युनिक दुई, यो बा. 29, नई दिल्ली- 110001. भाका और कीमते केवल भारत में लागू होंगी.

CC-0. In Pa

वृतीदा द्कानों में भी उपलब्ध

का तानम



मेल-आर्डर फार्म	
कोड़ सं, कैसेटों की संख्या हाँ, मैं 'प्यूविक दुडे' के कैसेट 48 ह. प्रति कैसेट की दर से खरीदना चार ए 91001	स्ता/चाहती के लिए
ए 91002 10 हे. आतारकत मंत्र). मुझ य कसट	
ए 91003 अपने लिए 🗆 उपहार देने के लिए 🗅	
ए 91004 साहिए, विवरण नीचे है. ए 91005 हसके लिए 'स्यूचिक टुडे' के नाम पर रु का कास किया हुआ	ए चेका
ए 91006 - हिमांड द्रापट संतम्म है (दिल्ली से बाहर वाले चैक पर 10 के अतिरिक्त	जोहें )
7 91007	
ए 91008 कुल देव राशि रु	
ए 91010 मेरा नाम	
ए 91011 पता	
ए 91012 फीन	
ए 91013 सी 91014 - प्रतिकृति उपहार पाने वाले का नाम (क्वारिका कार्कार कार्	
<b>型 01016</b>	1.75
Approprient Gurukul Kangri Collection, Haridwar	

#### इडिया टुड वर्ग पहली-32

9	ME A			6	ized h	J 7.1 Y		J 1 30	raati	JIT OTT	<del>onnai a</del> असी	म धैर्य	7
A His	1			अब	5						3√	इस.	
18		7		क्या करूं	धूल में		नेता की		मुद्धी में	<b>7</b> 6		काम शुरू	
3	ange:		IX.		लोट		खोज बेकार		जादू				
1			7	मिनी	राजा		4					और निपुण होंगे	7
	6 ←	संघ प्र	चारक		5 L					C		होंगे	
5 →							5 √	लल्ले	ा-चप्पो				
वल के		5 √	नई प	त्रिका	6								
क अगुआ					हिट व	फल्म			4	O			
			हमारे पक्ष में	<b>→</b> 3	3				वादों को		मद्रास के	<b>→</b> <sup>5</sup>	
			में लहर		अटल	न धी			पूरा नहीं		निकट		
			6							3 √	चार		
	सपनों को		जिन्हें		शीक है	पढ़ना					बार हटे		
उनके 10	भाषा		नाज है		3								
लाख हैं	12												
12													

नाम पता पिन

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-32, इंडिया टुडे, एफ-14/15, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथिः 20 मई 1991 उत्तर के लिए देखें: 1-15 जून 1991 का अंक

- यह पहेली णब्दण: इंडिया टुडे के 30 अप्रैल 1991 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए णब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 ह. दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

T TOTAL TOTAL			Townson.										
	No.		)	<b>ठल</b>		पूर्व प्रमुख के	76		छोटे		4 √	क्या व	रोष वें
			1	सही वा		के बेटे	Ħ	<sup>7</sup> √	साहब नाम		मु	हमारे	10 7
	-co			7	वे	वी	T	T	তা	野	(T)	प्रिय मित्र	रि
		n (i)		आम	नफरत	76	मं	त्यें	<sup>3</sup> <b>┌</b> →	अ	जी	ਜ'	च
<b>阿斯</b>	वाला	unit.		छवि पवित्र	¬⁵	फा	व	व	मुख्य	बात	п		£
3 ₹	लोगों	से दूरी	वेतन नहीं	पावत्र उभरी	खा	*	बु	ता	निशाना है	सुधारी जाए			वाँ
₹			मिल रहा	78	ति	ক	ते	रा	No. St. A.	3 4	ម	a	न
जी		3	ना	हि	ग	अ		и		3 ┌▶	4	2	म
4	खबर का	सांसद	की पुत्री	मां	জি	मु		ण		गुरू वि	केए बो		T
4 √	स्रोत	कई बार	<b>→</b> 6	ā	मा	ल्ला	3 ←	तेवर ग	रम थे				जा
गी		दलील वी	ч	न्नू		7	(H)	ਰ	पा	ल	Ħ	लि	4
র			श	B		नेता	R	5	चं	T	मे	व	7
য	भीग- कर	$\sqrt{3}$	व	4		का विरोध	मा	शह		मुद्दे	3	चलन	_3
र्मा	विषा विषा	शा	त	सि	पेशे-	बाह्मण	विद्वान	को मात		पर इद रवया	Ħ Ħ	बढ़ा है	Ť
4 1>	সু	ही	fĦ	हा	वर गायक	-6 L	मा	τ	ती	मं		n n	सि
निर्माता	भी हैं	न	न्हा		74	स	3	षा	ल	È	7	7	या

. इंडिया टुडे वर्ग पहेली-30 का हल

पुरस्कार विजेता

एस. के. सिंह आई.ए.एस.आर.आई. लाइब्रेरी एवेन्यू नई दिल्ली-110012

ऋचा जैन गली छत्ता बड़ौत; उ.प्र.-250611

आशा माथुर 501/टाइप III शास्त्री नगर गांधी रोड ग्वालियर (म.**प्र.)**-474011

इन तीनों को 500-500 ठ. के चेक मेजे जा रहे हैं विजेताओं को बधाई

मर्दों के लिए ओल्ड स्पाइस बॉडी टॉल्क. जो भी आए पास, उसे जादू का एहसास.



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भीतु स्पाइस् ाण महिल्क तीन कित्तों में उपसद्ध <del>औरिजनस्माहम सरक</del>

ग टुडे,

तेम तिथिः

खें: अंक

टुडे ) का हल

ता

गई.

0611

)-474011

-500 तरहे हैं बधाई



आप के लिए लेकर आए हैं एक नई अनुपम सुविधा: ङ्यूअल मोड शटल रिंग। ताकि वीडियो चलाना अत्यन्त सरल हो जाए। अलग-अलग बटन दबाने का अब झंझट ही नहीं, केवल सोनी के नए शटल रिंग को घुमाएं और टेप को मनचाही स्थिति में ले आएं: प्ले, फॉरवर्ड या रिवर्स धीमी स्पीड, सामान्य स्पीड,



लेकिन साथ ही उतना सरल भी! यही नहीं, सोनी के झ वी सी आर में ऐसी और मी अनेक नवीनतम सुविधारं है कि आपको सोनी जैसी विख्यात कम्पनी से उम्मीद रहती है। हर्न आज ही अपने लिए ये वीसीआर ले आएं और स्वां है लें कि हर कोई सोनी वीएचएस का इतना दीवाना है

## नए आधुनिकतम ''ड्यूअल मोड शटल'' रिंग के साथ

#### SLV-X 50

- ●2-सिस्टम (PALMESECAM) एक सेकेंड से भी कम समय में स्क्रीन पर पिक्चर के लिए 'सुपर ऐक्सेस मैकेनिजम'● साफ स्टिल और स्लो मोशन के लिए DA Pro 4 ● HQ ● यूनी कमांडर (SLV-X 50 और ब्लैक ट्रीनीट्रॉन दोनों को कंट्रोल करता है)
- 1 माह/ 8 इवन्ट टाइमर ऑटो मेनू डिजिटल ऑटो ट्रैकिंग FR पिक्चर सर्च हाई स्पीड रिवाइंड ऑटो हेड क्रीनर • ऑटो वोल्ट

#### SLV-X 30

- 2-सिस्टम (PALMESECAM) ड्यूअल मोड शटल सिंग सुपर ऐक्सेस मैकेनिज़म और हाई स्पीड रिवाइंड पिक्चर क्वालिटी • स्थार के लिए टर्बो पिक्चर • डिजिटल ऑटो ट्रैकिंग • ऑटो मेनू • 1 माह/ 8 इवन्ट टाइमर • स्टिल और स्तो मोशन
- FR पिक्चर सर्च ऑटो हेड क्रीनर ऑटो वोल्ट HO यूनी कमांडर (SLV-X30 और ब्लैक ट्रीनीट्रॉन, दोनों को कंट्रोल करें)



VHS वीडियो कैसेट टेप. नए और बेहतर हाई रिजेन्स्न वाले "वाई वैक्स" हेप E-180V 180 मिनट की अर्थे E-120V 120 मिनट की अर्थे

विर्माण कर

ए से ही हम

केंत कर सबे े वार्न और

नटाइल्स के लैंड, अमरीक

आज

लेक है. इ

विकी विदेशी

नियति

हैं की गर्य

हेर्ग

क्वा

SAY YES TO D



भारत में सोनी अधिकृत सर्विस केन्द्र: अतिपिया सर्वित होट्न का ए सिद्धार्थ केन्द्रत हैं कि सिद्धार्थ के कि सिद्धार्थ 5.8-602 दुकान नं 8. मुबारक बाजार, आबिद रोड, **हैदराबाद**- 500029 फोन- 233131 ●बायोनिक्स सारियर बिल्डिंग, एक. शाहाज़ाद बिल्डिंग, जे. सी. रोड, बंगलार-5000 5.8-602 दुकान नं 8. मुबारक बाजार, आबिद रोड, **हैदराबाद**- 500029 फोन- 233131 ●बायोनिक्स सारियर बिल्डिंग, एक. जी. रोड इर्गाकुलम, कोचिन- 682016 फोन- 389402

## भारत की सर्वाधिक उद्यमी और विकासशील कंपनियों में से एक सेन्युरी यह मानती है कि भारतीय उत्पादनों को अंतर्राष्ट्रीय मान्यता प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए

"किसी भी कंपनी के सबसे अच्छे सेल्समेन <sup>वे है</sup> उसके उत्पादन और सेवाएं. इसे ध्यान में <sup>क्रि ही</sup> सेन्चुरी ने निरंतर उच्चतम स्तर के उत्पादनों निर्माण करने की अपनी नीति बनायी है.

न सुविधाएं है, कि

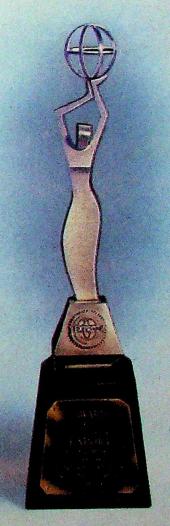
द रहती है। इ

और स्वयं है

N

क्वालिटी के प्रति अपनी इसी लगन की <sup>म्हु ते ही</sup> हम अनेक अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में सम्मान ना दीवाना कर का सके हैं. इसी लगन के बल पर ही तो हम के वार्न और टायर कॉर्ड के अलावा अपने कॉटन के कुल उत्पादन का ८० प्रतिशत भाग, हैं, अमरीका और यूरोप के प्रमुख देशों को नियति

> आज हम भारत के सबसे बड़े उत्पादक-हैं इस वर्ष में हम १४० करोड़ रुपयों के है के दिदेशी मुद्रा अर्जित करेंगे — अपने ही निर्यात करनेवाली किसी भी एक कंपनी द्वारा के गयी यह सर्वाधिक राशि है.



यही नहीं, हमने अनेक उल्लेखनीय कीर्तिमान स्थापित किए हैं, भारत से कॉटन टेक्सटाइल्स निर्यात करने में, पिछले ८ वर्षों से हमारा पहला स्थान बना हुआ है. इन वर्षों में हमने लगातार प्रथम प्रस्कार और ट्रॅफियां जीती हैं. अब हमारी टेक्सटाइल यूनिट को १९९० के लिए 'इंटरनेशनल टेक्सटाइल मिल ऑफ़ द इयर' का सम्मान मिला है - भारत की पहली टेक्सटाइल मिल जिसे यह गौरव प्राप्त हुआ है. हमारे निरंतर प्रयासों से अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारत और भारतीय उत्पादनों के प्रति विशेष आदर भावना उत्पन्न हुई है."

बी.के. बिरला



राष्ट्रीय परिग्रेक्ष्य... अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य

मेचुरी देक्सटाइल्स एंड इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड • सिन्धुरी टिक्सिटाइल्स िस्म्धुरी रिक्सिटाइल्स एंड इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड • मैहर सीमेंट • मानिकगढ़ सीमेंट • सेन्चुरी पत्प एंड पेपर • सेन्चुरी शिपिंग • सेन्चुरी बिल्डर्स

## इस पेज पर अपती उंगलियां फिराइए. यही एहसास आप पायेंगे सिएट रेडियल की संवारी में.

सिएट प्र अलग. ब टायर व

र्त्यु-कॉर्ड ज रोट-धक्के ब परिणाम

> ख़ास टे है. साथ ही

परिणाम् परोसेमंद इन्हीं खु आए और जी हां. यही तो अपनाने सिएट



प्तिएट फ़ार्मूला-। रेडियल्स एक अलग ही दर्ज़े का टायर है. बअलग. बनावट अलग.

यय की परिघि के साथ खड़ी या रेडियल दिशा में इंकॉर्ड जहां टायर का लचीलापन बढ़ाते हैं वहां इंक्कि बर्दाश्त करने में ज़्यादा सक्षम भी बनाते हैं.

परिणाम : आरामदेह सफ़र.

ख़ास टेक्स्टाइल बेल्ट ट्रेड को और मज़बूत साथ ही ट्रेड का संपर्क सड़क से बराबर बनाए

परिणाम : बेहतर पकड़ के साथ-साथ बेहतरीन परेसेमंद ब्रेकिंग और सुनियंत्रित स्टीयरिंग.

इन्हीं ख़ासियतों के कारण टायर ज़्यादा दिन चले, पेट्रोल ख़र्च आए और पंचर होने की नौबत भी कम आए.

जी हां. और इन सबसे बढ़कर है कार पर बेहतर नियंत्रण.

यहीं तो है जापान की याकोहामा रबर कम्पनी की विकसित अपनाने का फ़ायदा.

सिएट फ़ार्मूला-। रेडियल्स. शानदार ड्राइविंग का



कार पर बेहतर नियंत्रण



डेटिंग

## प्यार से पहले इकरार

पढ़ाई, नौकरी के लिए घर की चारदीवारी से बाहर निकली लड़कियां पुरानी मान्यताएं तोड़कर अब उन्मुक्तता से प्रेम संबंध बनाने लगी हैं

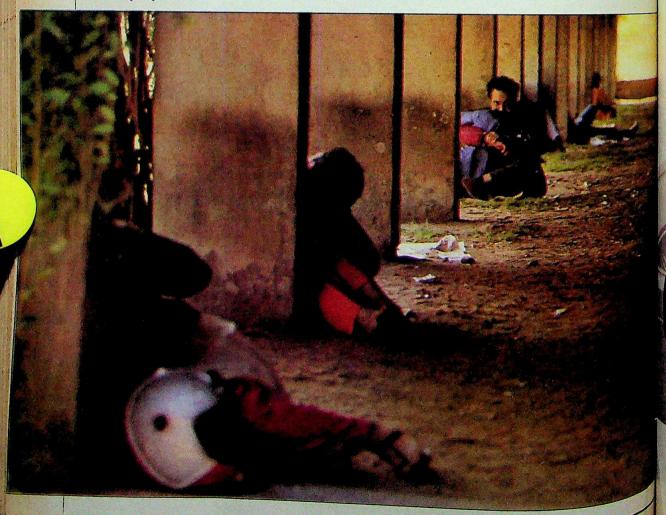
-मधु जैन और एम. रहमान

मजनूं की लैला और रोमियों की जूलियट अब बाल्कनी में खड़ी नजर नहीं आती. न ही अब वह पहुंच के बाहर रह गई है. उसे हर जगह अपने प्रेमी के साथ देखा जा सकता है, पार्कों में प्यार-दुलार का मजा लेते हुए, समुद्र तट पर, सिनेमा हाल में, हर कहीं.

लेकिन अभी दशक भर पहले मध्यम वर्ग के युवा लड़के-लड़िक्यों को रोमांस के नाम पर एक-दूसरे को दूर से निहारकर ही संतोष करना पड़ता था. लेकिन अब सपने हकीकत में बदलते जा रहे हैं. शहरों में तकरीबन हर तबके के युवाओं में 'डेटिंग' (तयशुदा मुलाकातों) का प्रचलन बढ़ता जा रहा है—खासकर मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग में. हुढ़िवादी परिवारों में भी मिलने-जुलने पर लगी तमाम पार्वी धीरे-धीरे ढीली पड़ती जा रही हैं.

परंतु ज्यादातर निम्न मध्यम तां माता-पिताओ को 'डेटिंग' गब्द से का परहेज है. हालांकि बेटियों के घर वका पहुंचने के बंधन उन्होंने ढीले कर िया रोमांस का प्रचलन बढ़ा तो यह सार्वका भी हो गया. प्रेमी जोड़े सब जगह देवें सकते हैं. ऐसे जोड़े पहले भी रहे हैं तें

हर तबके के युवाओं में डेटिंग (तयशुदा मुलाकातों) का प्रचलन बढ़ता जा रहा है-सासकर मध्यम और निम्न मध्यम वर्ग में



## TODAY, IS A CAR REALLY CONVENIENT FOR COMMUTING?



## OR IS THERE A MORE SUITABLE ALTERNATIVE AVAILABLE TO YOU?



WAMS 017/91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रं तोड़कर

तमाम पार्वीः रही हैं: मिष्यम वर्ग शब्द से अव में के घर वक्तः डीले कर दिए में यह सार्वजी तब जगह देवे

भी रहे हैं लेकि

अपवाद स्वरूप ही. और ये इतने झेंपू और शमीं होते थे कि कोई देख ले तो झट हाथ अलग कर लेते थे. लेकिन आज के यूवा प्रेमियों में इस तरह की झिझक या शर्म नदारद है.

मुंबई के महानगरीय स्वरूप और कामकाजी महिलाओं की भारी तादाद ने डेटिंग का प्रचलन बढाने में मदद की है. लेकिन अब दूसरे शहर भी इसकी होड़ में आते जा रहे हैं. दस वर्ष पहले हाथ में हाथ डाले किसी जोडे को देखना कोई दुर्लभ पक्षी देखने जैसा ही था आज ये चिडिया की तरह हर जगह देखे जा सकते हैं. दिल्ली के बुद्ध जयंती पार्क में टहलने निकल जाइए, हर झाडी की ओट में दुबका जोडा मिलेगा. पिछले 17 वर्षों से माली का काम करने वाले धनीराम कहते हैं, "यहां इतने जोड़े आते हैं कि कोई ध्यान भी नहीं देता."

सो, हैरत की बात नहीं कि पेशे से

सेल्समैन, 27 वर्षीय गुलशन मेहरा इस उजाड पार्क में काफी समय गुजारते हैं. यहां पुरा एकांत पाने के लिए वे चौकीदार को 20 रु. का टिप देते हैं. पिछले सात वर्षों में गूलणन का यह आठवां रोमांस है. उनकी नवीनतम प्रेमिका है 22 वर्षीय शांति, जो सरकारी दफ्तर में स्टेनोग्राफर है. प्यार करने के लिए घनी झाडियो वाले पार्क उनकी पसंदीदा जगह है. वे कहते हैं, "हम वहां प्यार करते हैं. वहां तो आप कुछ भी कर सकते हैं."

किन यदि पुलिसवाला आ धमके तो रोमांस का मजा किरकिरा हो जाता है सरकारी दफ्तर में निजी सहायक आनंद चोपड़ा कहते हैं, "आपके पास हमेशा 50 रु. रहने चाहिए. यदि पुलिसवाले को पैसे न मिले तो वह लड़की के मां-बाप को सब कुछ बताने की धमकी देता है. यदि

ous के के पास पैसा भी नहीं और जेंगे जान-पहचान भी नहीं तो ऐसों को कई बा प्रिलसवाले पीट भी चुके हैं और लड़कों की बेइज्जती कर चुके हैं. डेटिंग का संबंध पैसे से कम, शारीरिक संबंधों से ज्यादा है."

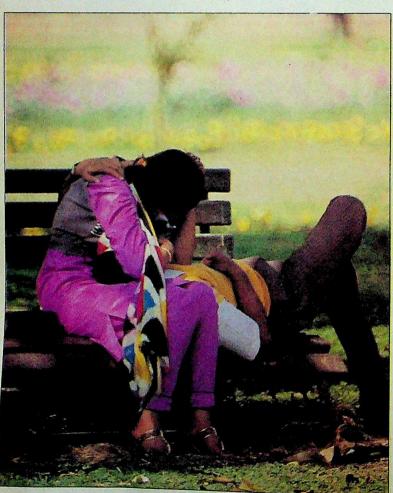
पत्रिका 'आंध्र ज्योति' में स्तंभ लिसने वाले और सलाहकार डॉ. नारायण रेड्डी के पास गर्भ-निरोधक उपायों के बारे में राव लेने के लिए युवा लड़िकयों के बहुत पत्र आते हैं. ऐसी ही एक लड़की है जो एलूक शहर में पली-बढ़ी है लेकिन गांव में अपन परिवार के साथ रह रही है. बेहद हताशा में वह लिखती है, "पुरुषों की तरफ मैं बहुत आकर्षित होती हूं. यहां मेरा दम घटता है मैं जिंदगी का मजा लेना चाहती हूं. मुझे भी पुरुष की जरूरत है."

दिल्ली के मेरी स्टोप्स क्लिनिक में सलाहकार बीना शिवपूरी का मानना है कि जैसे-जैसे डेटिंग का प्रचलन बढ़ता जा रहा है, रोमांस का शौक घटता जा रहा है. युवा लडकियां नीरस जिंदगी में 'श्रिल' लाने ग प्रेमी की तलाश में रहती हैं. कई के माता-पिता कामकाजी होते हैं. घरों में वे अकेली होती हैं, तो अपनी बोरियंत मिटाने और काम या पढाई के बोझ से बचने के लिए वे इस राह पर उतर पडती हैं. कलकता की छोटी-सी कुरियर फर्म में काम करने वाली रीमा दे दफ्तर के दो पुरुषों के साथ डेिंग कर रही हैं. वह अक्सर दोनों के साथ बाहर जाती हैं, ज्यादातर ईडन गार्डन्स में वे कहती हैं, "जिंदगी में रंग भरने का गही एक तरीका मेरे पास है. अपने मामूली वेतन से मनोरंजन का कोई साधन तो में वही

जुटा सकती." स्कूल और कॉलेजों के बढ़ते दबाव भी इसके लिए जिम्मेदार हैं. घर में दोहरी आमदनी होने की वजह से निम्न मध्यम् वर्ष की लड़कियां भी अब पब्लिक स्कूलों में पढ़ने लगी हैं. दिल्ली की स्त्री रोग विशेषा कुसुम भल्ला का कहना है कि "स्कून" कॉलेज में ये लड़िकयां उच्च मध्यम वर्ग की बराबरी करना चाहती हैं." वीडियो है आने से अमेरिकी फिल्में भी अब महुन उपलब्ध होने लगी हैं. हिंदी फिल्मों से उर्द प्रेरणा भी मिलती है और सामार्जि मान्यता भी.

छात्र जहां क्लास गोल करके रोमांस् लिए निकल पड़ते हैं, दफ्तरों में काम कर्त वाली महिलाएं काम से छुट्टी मार दोगहर है एकांत रेस्तरां की ओर चल देती हैं ज़र्म को अधेड व्यक्तियों को अपनी सेक्रेटिरियों हैं सारण के साथ देखा जा सकता है. ये युवा हिल्ली दिल्ली के पुराने किले के खंडहरी व तालकटोरा गार्डन में बेलों से लदी महान नीचे प्यार की कसमें खाते, मिलन की मुख

16/NS 018/91



अव के प्रेमी जोड़े झेंपू या शर्मीले नहीं हैं. उनमें शर्म या झिझक लगभग नदारद है

#### HERE' IS A COMFORTABLE AND **CONVENIENT 'SWITCH-OVER'**



The car was your status symbol! Your pride and joy once upon a time! Chronic and obstinate traffic jams, lack of availability of parking space, unexpected rise in fuel costs and the high cost of maintenance, have created mixed feelings.

> The joy has diminished! Your search for a suitable, convenient alternative, that surmounts all the hassles of city driving and yet upholds your social image, has begun. It leads you to KINETIC HONDA. And you say YES. A 'switch-over' that will make you proud and happy ...... once again!

#### KINETIC HONDA

THE FUTURE BELONGS TO US

सेक्रेटरियों ई युवा जोडं

खंडहरों या

रने का यही मामूली वेतन

तो मैं नहीं

ते दबाव भी

र में दोहरी

न्न मध्यम वर्ग क स्कूलों में

रोग विशेषः

कि "स्कूल-घ्यम वर्ग की

वीडियो के

अब सहब **क्तिं से उ**र्ह

सामाजिक

के रोमांस के

में काम करने

ार दोपहर<sup>‡</sup> देती हैं. गाम

ों और ऊंची

को कई बार र लड़की की का संबंध पैसे यादा है."

लदी मेहर के

नन की मुंबर

TEVAS 018/91

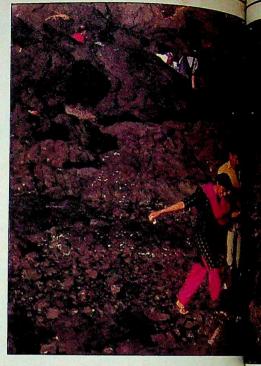
घड़ियों में खोए नजर आते हैं. इन्हीं में एक हैं 24 वर्षीया मीना. वे एक ब्यूटी पार्लर में काम करती हैं. और कुछ घंटे की छुट्टी लेकर अपने 'पुलिसिया' दोस्त से मिलने आती हैं. वे मानती हैं कि उनके पिता ने देख लिया तो घर से बाहर निकाल देंगे. लेकिन रोजमर्रा की बोरियत मिटाने के लिए वे 'डेटिंग' पर आती हैं.

दिल्ली में प्रेमियों के मिलन के लिए बाग-बगीचे हैं तो मद्रास और मुंबई में समुद्र तट. मुंबई के काली, पथरीली चट्टानों वाले समुद्र तट तो इन लोगों के लिए स्वर्ग से कम नहीं. इनकी लोकप्रियता इसी से जाहिर है कि बांद्रा बस स्टैंड राक्स में अभिसार के लिए आए प्रेमियों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है. हालांकि जुहू बीच और हैंगिंग गार्डन में भी युवजन एकांत की कुछ घड़ियां बिताने आते हैं.

अब मेलजोल बढ़ाने में महिलाओं का बहुत हाथ है. कई बार तो पहल भी उन्हीं की तरफ से होती है. शाम के 5.15 बजे हैं. 21 वर्षीया स्टेनोग्राफर फरीदा शेख अपने शर्मीले से दोस्त के साथ बैठी है. वह अपना नाम नहीं बताना चाहता. हालांकि फरीदा में वह आत्मविश्वास भरपूर है जो शहर की महिलाओं में हाल ही में आया है. वह कहती है, "आप जो पूछना चाहती हैं,

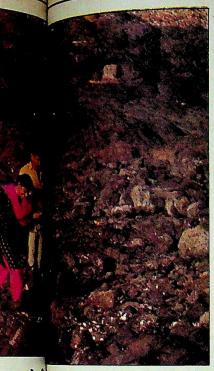
पछिए मैं जवाब दूंगी." उनका प्यारं जब शुरू हुआ, वह सिर्फ 14 वर्ष की थी. उसकी शिकायत है, "मुंबई में प्रेमियों के लिए कहीं भी एकांत नही है. लेकिन इसकी मुझे परवाह नहीं." मिलने पर ये दोनों ज्यादातर पारिवारिक समस्याओं. दोस्तों और फिल्मों की बातें करते हैं. वह बताती है, "शादी से पहले शारीरिक संबंधों में मेरा विश्वास नहीं. वह सब हमने बाद के लिए बचा रखा है."

बहुत-सी लड़िक्यां शादी को टाल शारीरिक संबंध बनाने लगी हैं. लेकिन यह अब भी लुके-छिपे ही हो रहा है. फिर मिलने-जुलने का रिवाज अचानक क्यों बढ़ गया है. दरअसल डेटिंग के बारे में मान्यताओं को बदलने में हमारे समाचार माध्यमों का भी कम योगदान नहीं. फिल्में, टीवी कार्यक्रम, ब्लू फिल्में और



द स वर्ष पहले हाथ में हाथ डाले कि देखन देखने जैसा ही था. आज ये चिहिंद् जगह





पथ डाले कि देखना कोई दुर्लभ पक्षी न ये चिडिंग जगह देखे जा सकते हैं अश्लील पत्रिकाएं <mark>यौन मुक्तता लाने में</mark> बहुत सहायक रही हैं.

कहने को तो टेलीफोन भी प्यार की गाड़ी आगे बढ़ाने में मददगार रहा है लेकिन सबसे ज्यादा श्रेय महिलाओं की बदलती स्थिति को है. स्त्री रोग विशेषज्ञ और भारत परिवार नियोजन संघ में यौन शिक्षा कार्यक्रमों के सलाहकार डॉ. महेंद्र सी. वत्स कहते हैं, "यौन संबंधों से जुड़ी रूढ़ियों को बदलने में शहरों की महिलाएं बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं."

क वक्त था जब भले घरों की लड़िकयां नौकरी नहीं करती थीं. लेकिन आज जैसा कि 'संजीवनी' और 'सुमैत्री' जैसी संस्थाओं की संस्थापक किरण भाटिया बताती हैं, ''लड़िकयों के नौकरी करने को सामाजिक मान्यता मिल चुकी है.'' निम्न मध्यम वर्ग की महिलाएं भी बड़ी संख्या में नौकरी करने के लिए घर से बाहर निकल चुकी हैं और इसके साथ ही पुरानी रूढ़ियां और परंपराएं ढहने लगी हैं. आर्थिक स्वतंत्रता के साथ-साथ दूसरी तरह की आजादी भी उन्हें मिलनी लगी है और कई तरह के मौके भी. काम के संबंध भी प्रेम संबंधों में तब्दील हो जाते हैं और घर से बाहर रहने का मौका भी मिल जाता है.

अक्सर आर्थिक हालात और वर ढूंढ़ पाने की मां-बाप की विफलता लड़कियों को प्रेम संबंध बढ़ाने पर मजूबर करती हैं. वे इस उम्मीद में रहती हैं कि शायद इसी तरह उन्हें पति मिल जाए. गुजरात विश्वविद्यालय में समाजशास्त्री उपाबेन कान्हरे कहती हैं, ''कई बार दहेज के झंझट से बचने के लिए मां-बाप भी लड़कियों को प्रोत्साहित करते हैं.''

अहमदाबाद में लैबोरेटरी तक्नीशियन, 23 वर्षीया प्रभा त्रिवेदी नियमित रूप से रमेश के साथ बाहर जाती है. रमेश से उसकी मुलाकात पिछले वर्ष नवरात्रि पर हुई थी. उसके माता-पिता इस संबंध से बहुत खुश नहीं थे क्योंकि रमेश ब्राह्मण नहीं है. लेकिन प्रभा के पिता को राजी होना पड़ा क्योंकि उन्हें दो बेटियां अभी और ब्याहनी हैं.

जाहिर है, डेटिंग मध्यम वर्ग के लोगों की जिंदगी का भी स्थायी अंग बन गई है. पुराने बंधन और परंपराएं जैसे-जैसे ढीली पड़ती जा रही हैं, कामदेव के बाणों के वार बढ़ते जा रहे हैं. और पिता भी अब बेटियों को ताले में बंद करना भूल गए हैं.

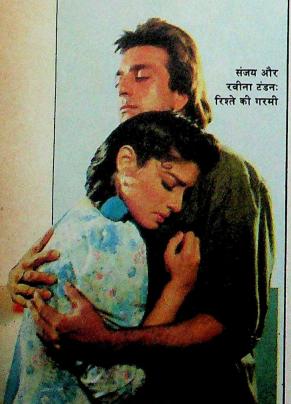
पहचान छिपाए रखने के लिए नाम बदल दिए गए हैं.



#### मौके की 'मजबूरी'

आखिर वह फरमान, जो रिपोर्टरों और खास तौर पर छायाकारों को बेहद नागवार गुजरा, किसने जारी किया था? इस फरमान के मुताबिक स्ट्डियो में लगाए गए उस ख़बसूरत सेट पर किसी का भी आना वर्जित था.

लेकिन आखिर ऐसी क्या खास वजह हो गई? बताया गया कि संजय दत्त और रवीना टंडन पर कुछ 'मोस्ट इंटीमेट'(यानी गरमागरम?) सीन फिल्माए जा रहे हैं. लेकिन संजय दत्त कब से शरमाने लगे ऐसे सीन करते समय? बात गले उतरी नहीं तो खोजबीन शुरू की और अंदरूनी कहानी बाहर आ गई. संजय दत्त और रवीना टंडन के बीच जो कुछ पनप रहा है उसे प्यार कहने से दोनों कतरा रहे हैं, फिर भी मिलने का कोई मौका वे हाथ से गंवाना नहीं चाहते. इस एक नए रिश्ते की गंध पाते ही प्रोड्यूसर ने वही किया जो होशियार प्रोड्यूसर हमेशा से करते आए हैं-शृटिंग और सीन की डिमांड के नाम पर हीरो-हीरोइन को वह सब करने पर 'मजबूर' करो जो वे खुद करने को बेचैन हैं. 'इस सब' की शूटिंग वे फटाफट कर देते हैं और उसे देख वितरक दाम बढ़ाने में आनाकानी नहीं करते. इस सेट पर संजय ने रवीना को रिहर्सलें भी खुद करवाई, टेक भी खुद, रीटेक भी खुद. डायरेक्टर इस 'इंटीमेसी' को दूर से देखते रहे.





रवा था. ले पार्टी चूंकि निजी थी, इसलिए हमसे मेहमानों की लिस्ट न पूछिए. अपनी मर्जी से वो ना निलि दत्त वे हम आपको बताए देते हैं-मुनमुन सेन और रूपा गांगुली. दोनों एक-दूसरे को फूटी आंख मुहाने वाली. मुंबई में नाममात्र के काम के बावजूद मुंबई की खर्चीली जिंदगी में ठसके से रह महर्त था 'ह वालीं. मगर इस पार्टी में रूपा मुनमुन से पूरी तरह मात ला गई. 'छिपते भी नहीं और साम को हरमेण आते भी नहीं स्टाइल की जो ड्रेस मुनमुन पहनकर आई थीं उसका भरपूर फायदा उन्हों कर ली. उ कभी झुककर, कभी मुड़कर, कभी अंगड़ाई लेकर, कभी मस्ती में लापरवाह खिलखिलाहट विताय बहाने ऐसे उठाया जैसे घर से परफेक्ट रिहर्सल करके आई हों बंद गले के ब्लाउज औं में से कुछ बनारसी सिल्क की साड़ी वाली रूपा ने वहां से चुपचाप खिसकना ही बेहतर समझा किस्से वार बनाया सारांश--एक पार्टी में दो धारदार बंगालिनें नहीं टिक सकतीं.

#### अपने अपने 'फ्रस्ट्रेशन'

बंगले में साफ-सफाई, रंग-रोगन, उठाना-धरना सभी कुछ जोरों पर था. मालूम हुआ हेमामालिनी फिर 'अपर के कमरे' की रौनक लौटा लाना चाहती हैं.

यह कमरा सिर्फ नृत्य का रियाज रूम है. बरसों तक हेमा यहां सुबह कई घंटे रियाज किया

करती थीं. कुछ समय से यह क्रम टूट-सा गया था. हेमा अब क्यों जबरदस्त रियाज करना चाहती हैं?

"डांस तो हमेशा से मेरा 'फर्स्ट लव' रहा है. अब एक्टिंग कम करके ज्यादा टाइम इसी को दूंगी. एक्टिंग में तो लगता है, अच्छे रोल लिखे ही नहीं जा रहे. देखिए व हीरोइनें क्या-क्या करने लगी हैं आजकल...," उन्होंने उस शूटिंग के दौरान बताया

पता नहीं उनका इशारा आयशा जुल्का की ओर था या नहीं, जो इस सीन में उनके अर्थ आयशा की परिष्कृत माथ थीं. आयशा की प्रतिक्रिया, "ये एक्टिंग को क्या कम वक्त देंगी? वक्त ने तो इन्हें खुद एक्टिंग से बाहर कर दिया है. अच्छा है, डांस ही करें. फेल हो जाएं तो बहाता ती रहेगा-आंगन टेढ़ा." या, हेमा की तरह असफल होने का 'फ्रस्ट्रेशन' था यह.



हेमामालिनी नृत्य की धुन



श्रीदेवीः मुहूर्त पर ही मूड गड़बड़ाया

#### यो उखड़ा नाजुक मूड

नें में मौजूदगी अच्छी थी. धूमधाम का इंतजाम भी प्रोड्यूसर-डायरेक्टर हरमेश मल्होत्रा ने रता था. लेकिन मूहर्त होते-होते हीरोइन **श्रीदेवी** का नाजुक मूड उखड़ गया. मुहर्त शॉट तो में से बो ना नील दत्त के समझाने और बिगड़ती बातों को संभालने की उनकी कला के कारण सकुशल कूटी आंख वा लेकिन लौटने तक श्रीदेवी के चेहरे पर श्री नहीं लौटी.

सके से रहे गहर्तथा 'हीर राझा' का. हरमेश मल्होत्रा की फिल्म 'नगीना' जब से सुपरहिट हुई है और साम के हरमेश मल्होत्रा पर अखंड विश्वास है. इसी विश्वास के कारण श्रीदेवी ने यह फिल्म भी पदा उन्हों कर ली. ऊपर से, इस फिल्म के हीरो हैं अनिल कपूर. श्रीदेवी को हरमेश और अनिल ने ा<mark>खिलाहट । यही बताया कि फिल्म सुपरहिट से कम कुछ बन ही नहीं सकती. लेकिन मुहूर्त में आए</mark> लाउज औं में से कुछ ने तो जानबूझकर और कुछ ने अनजाने श्रीदेवी से कह दिया, "कम-से-कम एक ा. किस्से व<sup>ार</sup> बनाया जा चुका यह सब्जेक्ट कभी हिट हो ही नहीं सकता. आज के जेट रफ्तार जमाने को पसंद आती हैं ऐसी कहानियां?" डर है शूटिंग के समय तक हीर नट ही न जाए.

मामालिनी

त्य की धुन

ादा टाइ

देखिए न

बताया

न में उन् ने तो इन्ह

बहाना त

#### प्रत्यक्ष को क्या प्रमाण?

फिल्म सिटी में बसाए गए राजमहल के उस प्रांगण में यहां से वहां तक थिरकती फिर रही थीं मुस्कानबाला पल्लवी जोशी. यहां वे हालांकि टी.वी. सीरियल 'मृगनयनी' का कुछ पैच-वर्क निबटाने आई थीं लेकिन उन्हें लौटने की जरा भी जल्दी नहीं थी.

"अपनी फिल्मों, सीरियलों में से किसका इंतजार सबसे ज्यादा है आपको?"

'इसी मृगनयनी का,'' उन्होंने कहा और फिर शरमाकर भाग निकलीं.

जानते हैं क्यों शरमाईं? इस सीरियल के अपने सह कलाकार मोहन भंडारी के साथ उनके रोमांस की चर्चा अब जरा खुलकर जो होने लगी है. यह बात और है कि सीधे सवाल करने वाले कुछ पत्रकारों को तो पल्लवी ने रूखा-सा खंडन थमाकर चलता कर दिया, और फिर उसी सवाल को लेकर देर तक हंसती-बतियाती रहीं. यह सब देखकर लगा कि प्रत्यक्ष का प्रमाण मांगने की जिद कहीं-कहीं छोड़ भी देनी चाहिए.

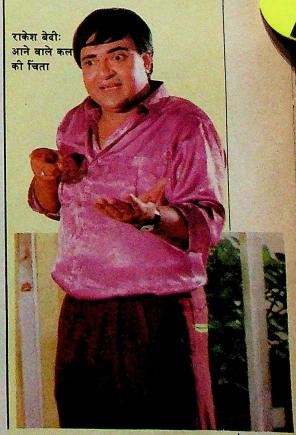
पल्लवी जोशीः मुस्कराहट के भेद

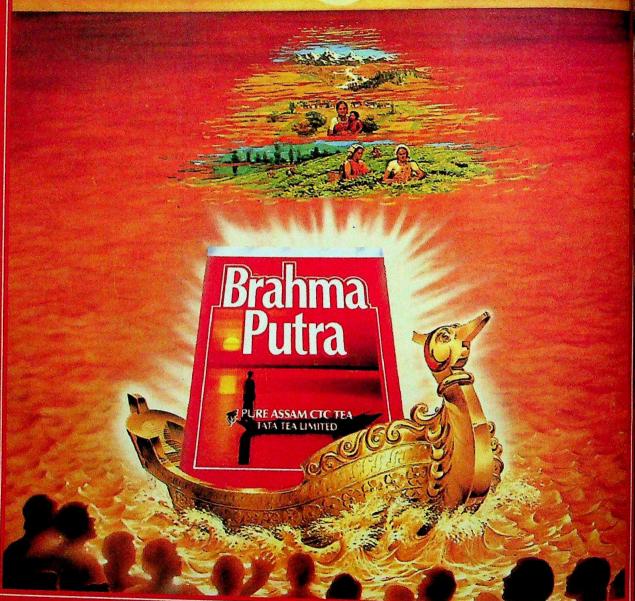
#### कामीडयन की ट्रेजेडी

राकेश वेदी और इतने हैरान-परेशान? सदा हंसने-हंसाने वाले को यह कौन-सी चिता खाए जा रही है? कामेडियन की जगह ट्रेजेडी किंग की सी अदाएं क्यों? टेलीविजन सेंटर में हुई उनसे यह मुलाकात पिछले पांच दिनों में सातवीं थी. फिल्म के सेट, आउटडोर शूटिंग, सीरियल, वॉयॉसग, एैड फिल्म की शूटिंग कहां-कहां नहीं मिल जाते वे आजकल. इतना काम, फिर भी चेहरे से मुस्कान गायब?

"आप सही कह रहे हैं?" उन्होंने कहा, "काम कम नहीं है आज मेरे पास. लेकिन इसमें से कौन-सा काम ऐसा है, जिसके लिए कल भी लोग मुझे याद रखेंगे? यही कहीं मोटा, कहीं गबदू, कहीं देहाती, कहीं गंवार. मोटापे के घेरे में बंद इन चरित्रों से निकलना चाहता हूं मैं, वरना फिल्मों में बने रहने के लिए मुझे मोटापा बनाए रखना होगा और कद्र मेरी नहीं, मेरे मोटापे की होगी. मैं नहीं चाहता कि अमजद भाई जैसे बढ़िया आर्टिस्ट की तरह कल मैं भी सिफे शरीर से पहचाना जाऊं, काम से नहीं."

कठोर लेकिन कड़वा सत्य. अब समझे आप कॉमेडियन की ट्रेजेडी ! रोते दिल से भी हंसने-हंसाने की मजबूरी.





टाटा टी ने हमेशा आपको उत्तम चाय दी है। और अब ब्रह्मपुत्र के उपजाऊ मैदानों से टाटा टी शुद्ध असम चाय का एक अनोखा मिश्रण पेश करते हैं-ब्रह्मपुत्र चाय ।

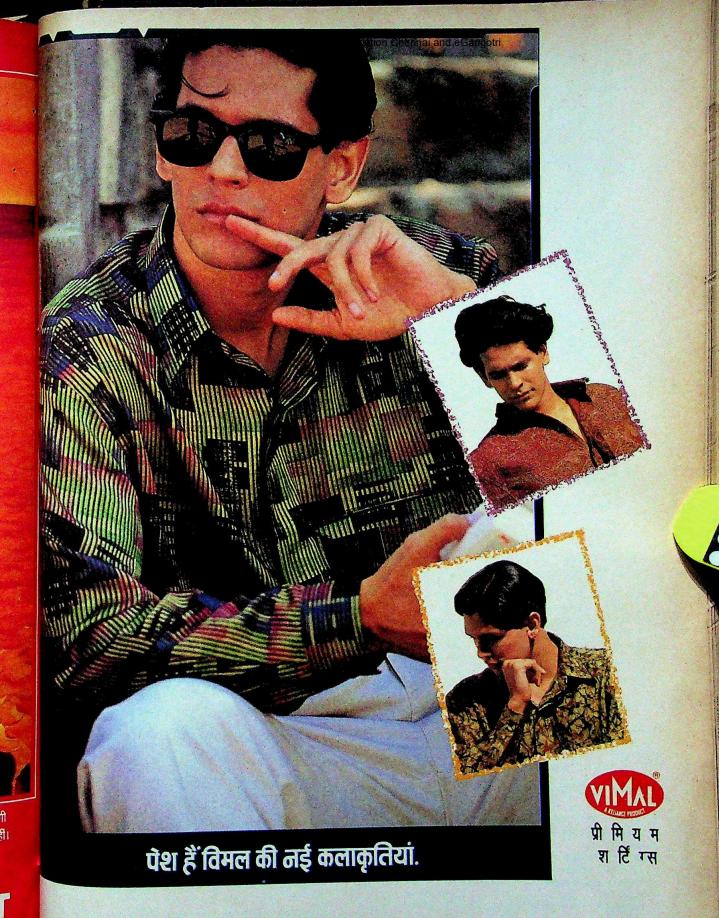
महान नदी ब्रह्मपुत्र द्वारा पालित-पोषित और उसकी सौधी मिट्टी में उगी यह चाय वो भरपूर स्वाद और सुगंध लेकर आती है जिसका जवाव नहीं। मुनासिव कीमत पर असम का असली ज़ायकेदार कड़क चाय का मज़ा-ब्रह्मपुत्र चाय।

असमका अमृत ब्रह्मपुत्रचाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Har

टाटा टी लिमिटेड

की छटा वे कला-

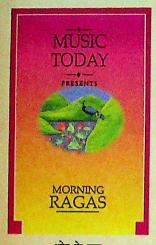


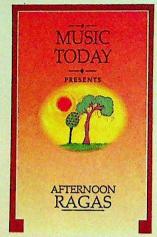
की छटा ये प्रिंटेड शर्टिंग्स और जैकार्ड्स. गहरे हल्के. मोटे महीन प्रिंट्स. हर महीने 350 से भी

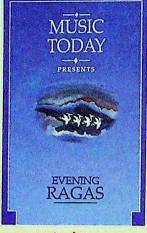
कला-कल्पनायें, विमल ने संजोए हैं कलात्मक रूप. CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

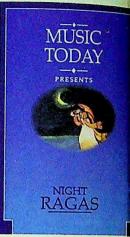
Mudra:A:RIL:5588 Hin.

दिन से रात तक के रंगों की अनूटी संगीत यात्रा. एक-एक घंटे के 16 ऑडियो कैसेटों पर प्रतिष्ठित संगीतकारों के चुनिंदा राग उनके विशिष्ट अंदाज में, विशुद्ध खर की पकड़ डिजिटल पद्धति से तैयार कैसेटों पर और आपके घर डाक अथवा कृरियर से पाने की सुविधा.









भोर के राग भाग-1 (कोड ए 90001) ललित राजन और साजन मिश्र (गायन) भैरव शाहिद परवेज़ (सितार) अहीर भैरव श्रुति सदोलिकर (गायन) भाग-2 (कोड ए 90002) मियां की तोड़ी अमजद अली खां (सरोद) भटियार पंडित जसराज (गायन) विभास श्रुति सदोलिकर (गायन) भाग-3 (कोड ए 90003) जीनपुरी पद्मा तलवलकर (गायन) बिलासखानी तोड़ी अमजद अली खां (सरोद) देसी तोड़ी हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी) भाग-4 (कोड ए 90004) कुकुम बिलावल मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन) देशकार शाहिद परवेज़ (सितार)

दोपहर के राग भाग-1 (कोड ए 90005) शुद्ध सारंग अमजद अली खां (सरोद) सुघरई मिल्लकार्जुन मंसूर (गायन) गौड़ सारंग पद्मा तलवलकर (गायन) भाग-2 (कोड ए 90006) बृंदावनी सारंग हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी) मधमद सारंग पंडित जसराज (गायन) धनी शाहिद परवेज़ (सितार) भाग-3 (कोड ए 90007) भीमपलासी मिल्लकार्जुन मंसूर (गायन) पटदीप श्रुति सदोलिकर (गायन) मांड शाहिद परवेज़ (सितार) भाग-4 (कोड ए 90008) मुल्तानी राजन और साजन मिश्र (गायन) मध्वंती हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी) पीलू अमजद अली खां (सरोद)

सांध्य के राग भाग-1 (कोड ए 90009) मारवा पंडित जसराज (गायन) श्री श्रुति सदोलिकर (गायन) हंसध्वनि शाहिद परवेज़ (सितार) भाग-2 (कोड ए 90010) पूरिया राजन और साजन मिश्र (गायन) श्याम कल्याण अमजद अली खां (सरोद) नंद मिल्लकार्जुन मंसूर (गायन) भाग-3 (कोड ए 90011) शुद्ध कल्याण पद्मा तलवलकर (गायन) मांझ खमाज हरिप्रसादः चौरसिया (बांसुरी) दुर्गा राजन और साजन मिश्र (गायन) भाग-4 (कोड ए 90012) यमन शाहिद परवेज़ (सितार) शंकरा पंडित जसराज (गायन) मिश्र धारा श्रुति सदोलिकर (गायन)

रात्रि के राग भाग-1 (कोड ए 90013) शुद्ध नट मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन) केदार पद्मा तलवलकर (गायन) झिंझोटी हरिप्रसाद चौरिसया (बांसुरी) भाग-2 (कोड ए 90014) वागेश्वरी पंडित जसराज (गायन) हमीर पद्मा तलवलकर (गायन) तिलक कामोद शाहिद परवेज़ (सितार) भाग-3 (कोड ए 90015) मालकौस हरिप्रसाद चौरसिया (बीसुरी) मारु विहाग श्रुति सदोलिकर (गायन) जैजैवंती राजन और साजन मिश्र (गायन) भाग-4 (कोड ए 90016) नायकी कान्हड़ा श्रुति सदोलिकर (गायन) देश पंडित जसराज (गायन) दरबारी

अमजद अली खां (सरोद)

शि कपूर

नए

की ताज

जुबा' चमत

वियत सह

भी-कभी ज

ज़े लगता

हिटकर दे

दिती है अ

भीतर छि

गुदगुदा उ

गणि क हिं राज क

शने को नह हो हैं, "मैं

भी नहीं

हान फिल्म इस फिल

गेव के

मरी जगहों गामिल

अवि व-जब स

विक

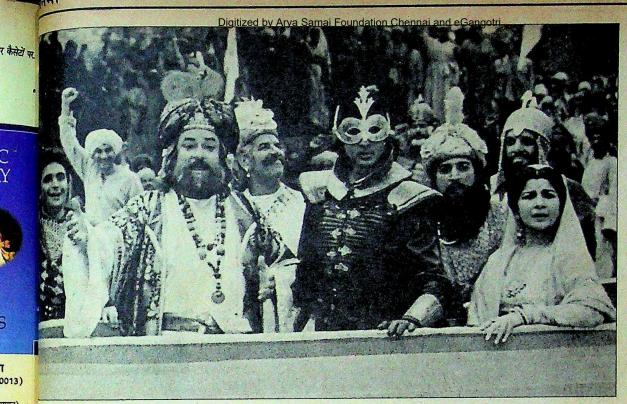
(टैक्स पैकिंग और भेजना शामिल) @ 45 रु. प्रति कैसेट

भैरवी

पद्मा तलवलकर (गायन)

- दिल्ली से बाहर के स्थानों के चेकों के साथ 10 रु. की अतिरिक्त ग्रीश आवश्यक.
- मुंबई, कलकता, मडास और दिल्ली के चेक/डिमांड ड्राफ्टों कर एमआईसीआर
- कैसेंट आपके घर रजिस्टर्ड डाक या कृरियर से पहुंचाए जाएंगे.
- \* डिलीकरी के लिए कृपया कम से कम 3-4 सप्ताह का समय दें,
- उपहार देने के लिए कृपया उपहार पाने वाले का नाम और पता संलग्न ऑर्डर फार्म पर लिखकर भेजें.
- देग राशि म्यूजिक टुढे के नाम करें और 'म्यूजिक टुढे'. पोस्ट बॉक्स 29, नई दिल्ली-110001 के पते पर भेजें.
- कृतवा ऑर्डर पर्यम् कम्प्यूटर प्रोसेसिंग सुविधा हेतु अंग्रेबी में ही घरे. अगर संलग्न ऑर्डर फार्म न मिले तो अपना ऑर्डर अपने नाम, पता
- और देव राजि के साथ 'म्यूज़िक दुढ़े' पोस्ट बॉक्स 29, नई दिल्ली-110001 को मेज है CC-0.1
- \* दर व पेशकश सिर्फ भारत में ही लागू है

			आंडर फॉर्म	
कोड नं-	कैसेटों की संख्या		चि लिखे विवरण के अनुसा	र 45 रु. प्रति कैसेट की दर से (टैक्स, पैकिंग और पेजना शामि
1 及90001		ऑर्डर देना चाहता/चाहती हूँ।		
ए 90002		मेरे लिए 🛘 उपहार 📋		
ए 90003		म्युजिक टडे को देव		वेक (दिल्ली से बाहर के ऑर्डरों के लिए 10 ह. और
1 R90004		जोड़ें)/डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर	— ए. का रखाकित	वक (दिल्लो संबाहर के आंडरों के लिए 10 र. अर
R 90005		न्त्रा क्रांक केंग्रिट संस्थान कर	रहा/रहा हूं।	
1 ए 90006	100	आईर किए कैसेटों की संख्या		
₹ 90007		कुल देव राशि		
1 T 90008		My Name		
1 T 90009		Address		The second secon
¥ 90010				
I T90011	The state of the s		All Property and the second	
I 1790012	1000		Pin	Phone No.
E 90013		Gift for		
I R 90014		Address		STORE OF STREET
THE RESERVE OF THE PERSON OF T	-			The second secon
Public Do	<del>omain. G</del> u	rukul Kangri Collect	ion, Haridwar	



## वमत्कारों की चकाचौंध

#### शि कपूर का निर्देशक के रूप में पहला जादुई प्रयास

बिरकार शिंश कपूर अपने नए अवतार में प्रकट हो ही गए. की ताजालरीन मनोरंजक फिल्म पूर्वा चमत्कारों से भरी हुई है: भारत-वियत सहयोग से बनी इस फिल्म में भी-कभी जादू-टोना कुछ ज्यादा ही सिर को लगता है. लेकिन तर्कबुढि से जरा हैटकर देखा जाए तो यह फिल्म आनंद देती है और बच्चों के साथ-साथ बड़ों

भीतर छिपे बैठे बच्चे को गुदगुदा जाती है.

गायन)

गयन)

बांसुरी)

0014)

यन)

ायन)

तार)

015)

(सुरी)

यन)

(गायन)

016)

**(**一)

रोद)

शिष्टी कपूर अपने बड़े हैं राज कपूर की श्रेणी में को नहीं रख रहे. वे क्षिते हैं, "मैं उनके जैसा तो भी नहीं हो सकता. वे क्षान फिल्म निर्माता थे." कि फिल्म में भारत-भित्र के साथ-साथ कई शामिल किया गया है। शामिल किया गया है। शामिल किया गया है। शामिल किया गया है। शामिल किया समुद्र के पास

जाकर आवाज देते हैं, एक डॉल्फिन मछली तुरंत बाहर निकल आती है. चमकदार नीली आंखों और बड़े सिर वाला एक विशाल जंतु नायक को अपने पंजे में दबीच लेता है. नायक अजूबा जुल्म के खिलाफ लड़ता हुआ जांबाज लगता है.

जादू का घोल पीते ही अमिताभ बच्चन और ऋषि कपूर बौने बन जाते हैं.

> प्य मानिए, मैं राज कपूर की जगह कभी नहीं ले सकता. वे महान फिल्म निर्माता थे''

> > शशि कपूर

'फिल्म' का एक दुश्यः रोमांचक मनोरंजन

परदे का दृश्य 'एलिस इन वंडरलैंड' जैसा बन जाता है. अंगूठे जितने ऋषि कपूर अपनी प्रेयसी सोनम के भरेपूरे वक्षस्थल में छिप जाते हैं और अमिताभ तो अपने बौने रूप में कप में ही डूबने-उतराने लगते हैं,

पीटर परेरा के विशेष दृश्य संयोजनों में नियो लेजर द्वारा किए गए प्रयोग और आकार में लाए गए अंतरों की वजह से कथा सूत्र रोमांचक हो गया है. लेकिन 'अजूबा' मूलतः एक मसाला फिल्म है. बुराई के प्रतीक के रूप में अमरीश पुरी हैं. अच्छे पात्र के रूप में बहरिस्तान के सुलतान बने शम्मी कपूर हैं. उनकी पत्नी मल्लिका नेत्रहीन हो जाती है. इस भूमिका

में रूसी अभिनेत्री ने बेहतरीन अदाकारी दिसलाई है.

अजूबा सिंहासन का वारिस है पर यह उसे पता नहीं. महाभारत के कर्ण की तरह अजूबा भी मां के लिए तरसता रहता है. अंत में उसे मां-वाप, राजपाट और हिंद सुंदरी—डिंपल कपाड़िया मिलती है.

कई आलोचक 'अजूबा' से संतुष्ट नहीं हैं. लेकिन यह विशुद्ध मनोरंजन तो है ही.



अमिताम बच्चन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

#### अब नया अवतार

#### पहली बार राष्ट्रीय पुरस्कार मिलने से आह्लादित

"1982 में जब मैं अस्पताल में मरणासन्न था, तो इसी देश की जनता ने मेरे जीवन के लिए प्रार्थना की थी. अब ये ही लोग मुझ पर जूते फेंक रहे हैं."

> —अमिताभ बच्चन, 'इंडिया दुडे' 30 अप्रैल, 1987

आब अमिताभ ने देश से मुलह कर ली है. जनता से उन्हें 'चुम्मा' भी मिल रहा है और पुरस्कार भी. वह प्रशंसा और प्यार जो दुर्लभ हो चला था, अमिताभ उसे फिर अनुभव करने लगे हैं.

अमिताभ अब एक नए रूप में सामने हैं. वे बेहतर अनुभव कर रहे हैं. परदे पर खोई प्रतिष्ठा फिर हासिल होने लगी है. उन्हें दोषी ठहराने के लिए उठी उंगलियां नमस्ते के लिए जुड़ने लगी हैं.

बोफोर्स विवाद थमने के बाद; 'हम' की व्यावसायिक सफलता के बाद; दो दशकों के अभिनय कैरियर में पहली बार राष्ट्रीय पुरस्कार मिलने के बाद; सबसे बढ़कर सार्वजनिक रूप से प्रधानमंत्री द्वारा पीठ थपथपाए जाने के बाद अमिताभ फिर

सुर्खियों में आ गए हैं.

पिछले वर्ष यह लंबा-दुबला अभिनेता सबसे टकराता रहा—अदालतों में फिल्म व्यापार पत्रिकाओं से और अखबारवालों से (फिल्म व्यापार पत्रिका के साथ अब भी उनकी लड़ाई जारी है. पत्रिका 'फिल्म वर्ल्ड' ने जब 'हम' की सफलता के आंकड़ों को फर्जी बताया तो अमिताभ ने उन्हें 'चप बैठ जाओं वाले अंदाज में धमका दिया था). लेकिन अब वे ज्यादा खुशमिजाज और मिलनसार नजर आते हैं—खासकर अखबारवालों को मिलना हो तो उनके सचिव से संपर्क करने की जरूरत भी नहीं. अमिताभ असबारों को इंटरव्यू देने की मंजूरी खुद ही देते हैं. "हाल ही में एक पत्रकार ने मुझसे पूछा कि मैं हर पत्रकार से मिलने का वक्त खुद ही तय क्यों करता हूं. अपने निजी मामले मैं खुद ही निबटाना पसंद करता हूं. हो सकता है सचिव उनसे रुखाई से बात करे. इससे पत्रकार पहले से धारणा बना सकते हैं कि मैं आक्रामक हूं, रूखे स्वभाव का हूं, लड़ाकू हूं. यहां मेरी फिल्मी छवि भी काम नहीं आती क्योंकि , उनमें भी तो मुझे रूखे व्यक्ति के रूप में ही

पेश किया जाता रहा है."

अब उनके चेहरे पर हर वक्त मुस्कान चिपकी रहती है. ये वही अमिताभ हैं जिन्होंने इमरजेंसी के दौरान गुस्से में अखबारवालों से पीठ फेर ली थी और इस लड़ाई को पंद्रह वर्ष जारी रखा. उनका मानना है कि अखबारवालों से 'कुट्टी' करने का असर उनकी फिल्मों पर बिलकुल नहीं हुआ. 15 वर्षों तक उनकी फिल्में सफल होती रहीं और वे टॉप पर रहे. वे कहते हैं, "जब मैं राजनीति में आया तो मुझे लगा कि अखबारवालों के बिना काम चला लूंगा. ऐसा हुआ नहीं. इसका असर मेरे राजनैतिक कैरियर पर पड़ा. यदि मैंने समाचार माध्यमों से संपर्क रखा होता तो मुझ पर उनके इतने तीखे हमले न होते."

आज तो अमिताभ को बातों में मजा आने लगा है. बातें तो उनके लिए दवा का काम देने लगी हैं. उनका मानना है, "मैं कहना चाहूंगा कि प्रेस के साथ बात गुरू करना ही एक बहुत बड़ा सुधार है. अब तक यह सब मेरे जेहन में जमा था. अब मैं अपनी भावनाओं को बड़े आत्मविश्वास से अभिव्यक्त कर सकता हूं. कई बार हम अपनी निजी जिंदगी और अनुभवों को अपने तक ही सीमित रखते हैं. लेकिन जब अखबारवाले ऐसे सवाल पूछते हैं, जिनकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता तो मैं सोच में डूव जाता हूं. अब मैं तनावमुक्त महसूस करता हूं, आराम से बात कर सकता हूं."

अमिताभ अब जरा खुलने लगे हैं, तो इसका असर उनके जीवन के दूसरे पहलुओं पर भी पड़ा है. बंगले की ऊंची-ऊंची दीवारों के पीछे बच्चन अब बहुत बदले हुए व्यक्ति हैं कम चिड़चिड़े, सहज और अपने परिवार को चाहने वाले. "घर के कामकाज भी अब मुझे सहज लगने लगे हैं. घर में मेरा बरताव बिलकुल अलग तरह का होता है. सभी चीजों को मैं बेहतर ढंग से ले रहा हूं." अमिताभ हालांकि एप्रिन पहनकर घर का कामकाज करते नहीं नजर आएंगे, न ही उनकी लंबी-लंबी उंगलियां कार की ग्रीज में . सनी नजर आएंगी लेकिन वे अपने निजी कक्ष के प्रति कुछ ज्यादा ही सचेत हो गए हैं. लैप-टाप कंप्यूटर, फैक्स मशीन और ढेर सारे संगीत उपकरणों से लैस इस कमरे के बारे में अमिताभ बताते हैं, "ये उपकरण



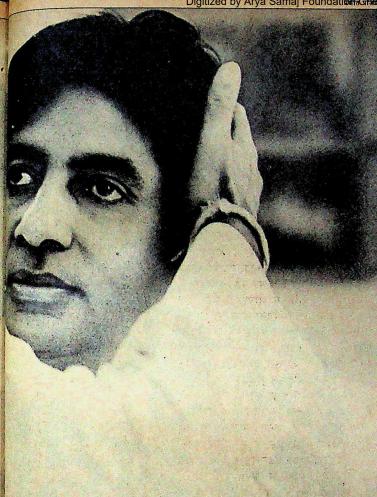
मुझे बहुत अच्छे लगते हैं. लेकिन कमरे ब अमितामः अस्तव्यस्तता से जया को बहुत उलझ महसूस होती है क्योंकि किसी को यह कम भ संगीत— साफ करने की इजाजत नहीं.''

साफ करने का इजाजत नहां इन दिनों संगीत के मामले में उन्हें ने रागों के शौक चरीया है. जब वे अपना सिथेसाइज मुंबह के रा न बजा रहे हों तो संगीत रिकार्ड करने मसरूफ रहते हैं. घर भर के टेलीफोनों उन्होंने हर तरह का संगीत रिकार्ड के बी जीवन दिया है. उनके घर में हर तरह का संगीत सुना जा सकता है. सुबह चहचहाते पक्षिय की आवाज एक कोने से सुनाई पड़ेगी हैं. वेटे अभि तेजी से गिरते झरने की कलकल दूसरे कोर तेजी से गिरते झरने की कलकल दूसरे कोर से. एक ओर से रेगिस्तान की सांय-साय हैं। हैं. वे अमिताभ जहां भी जाएं, वहां का संगीत भी मैंने वेटे साथ लेकर ही लौटते हैं. आजकल उनसे श्री कि मु मिलने जाने वालों का स्वागत पियानों की जाया कि म धुन से किया जाता है. एक बार तो बी जवाब ध अफीकी धुन का टुकड़ा चुरा लाए. टीन जारी रि आनंद ने जब उसे सुना तो मजाक किया कि भी अव इसे हटा लो वरना भप्पी लहरी ले भागी।

लेकिन अमिताभ का रुझान भारतीय के वह ऐसा

94 इंडिया दुई • 15 मई 1991





जनीति में आया तो लगा कि अखबारवालों के बिना काम चला लूंगा. यदि मैंने समाचार माध्यमों से संपर्क रखा होता तो मुझ पर उनके इतने तीखे हमले न होते

से के साथ रिश्ते सुधर जाने से अब मैं अपनी भावनाओं को बड़े आत्मविश्वास से अभिव्यक्त कर सकता हूं

दि र के कामकाज भी अब मुझे सहज लगने लगे हैं. घर में मेरा बरताव अलग है. सभी चीजों को में बेहतर ढंग से ले रहा हूं

त कमरे वे अमिताभः खोई प्रतिष्ठा वापस

यह कम्मीय संगीत—विशेषकर वादन की ओर उन्हें गया है. वे बताते हैं, "मैं 'म्यूजिक उन्हें रागों की कैसेट जरूर सुनता हूं. संयेसाइज ई करने <sup>1</sup>47ह के राग, शांम को शांम के राग तीफोनों भी बभी तक जारी है.

 संबंधों और भावनाओं की बात करता है और मुझे बताता है कि वह किस तरह खुद को तैयार कर रहा है."

"पहला परदा अब भी बच्चन का पहला और आिबरी प्यार बना हुआ महला और आिबरी प्यार बना हुआ है. लेकिन वे थोडी उलझन में हैं. राष्ट्रीय पुरस्कार दिलाने वाली फिल्म 'अग्निपथ' जैसी सशक्त भूमिकाएं लें या 'जुम्मा-चुम्मा' जैसी उछलकृद करने वाले 'स्टार' की छवि आगे बढ़ाएं. वे दोनों के लिए ही राजी हैं. जुलाई में उनकी नई फिल्म 'खुदा गवाह' पूरी हो जाएगी. उसके बाद वे कहीं जाकर खुद को टटोलना चाहते हैं कि आगे क्या करें. उनके सामने विकल्प हैं—'अग्निपथ' जैसी अपनी उम्र के अनुकूल भूमिकाएं या 'हम' के उत्तरार्ध जैसी प्रौढ़ भूमिकाएं. अब तो फार्मुला फिल्मों में भी बदलाव आ रहा है. 'खुदा गवाह' के काफी बड़े हिस्से में वे श्रीदेवी के पिता बने हैं तो 'इंद्रजीत' में नीलम के बड़े भाई. 'अकेला' में उन्होंने एक प्रौढ पुलिसवाले की भूमिका निभाई है-"कुछ-कुछ मेरे निजी जीवन की तरह."

फैसला करने के लिए शायद वे सिक्का उछालें. लेकिन जैसा कि वे बताते हैं, "मुझसे बेहतर कोई नहीं जानता कि मेरा शरीर क्या कर सकता है." माइसथीनिया ग्रेविया उन्हें फिर जकड़ सकता है, "कभी आप अचानक अपने होंठों को दबाने में नाकामयाब रहते हैं, और पानी मुंह से गिरने लगता है. आप बाल बना रहे हों, और हाथ सहसा शिथिल पड़ जाते हैं. आप सीढ़ियां चढ़ रहे हैं, छह सीढ़ियां चढ़ने के बाद अचानक आपको लगता है कि आपके पैर आगे नहीं बढ़ रहे."

बहरहाल, बज्बन जरा भी परेशान नहीं हैं वी.पी. सिंह सत्ता में लौटते हैं, तब भी नहीं. वे कहते हैं, "मेरा जीवन कभी भी सामान्य नहीं रहा. 50 वर्षों में मैंने 50 वर्ष की जिंदगी जी ली है."

अब अमिताभ जिंदगी का मजा नए सिरे से लेने लगे हैं. शाकाहार के दिन बीते और अब थोड़ी, मदिरा, थोड़ा मांसाहार और कभी-कभी सिगार की जिंदगी उन्होंने अपना ली है. दूसरे शब्दों में, ''बुजुर्गीयत भी शालीनता से आनी चाहिए.'' मधु कैन

# बहुत हो चुका, अब और तहीं अब आर

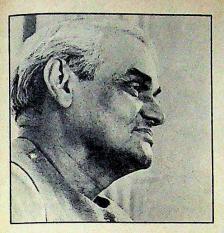
संबंध

करते

उनवे

RK SWAMY/BBDO BJP 6214 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Francisco



बरसों तक हमने कांग्रेस को देश में फूट डालने दी.

अपने स्वार्थ और खानदानी राज कायम करने के लिए उन्होंने देश की स्थिरता की बलि चढ़ा दी.

अपनी गद्दी से चिपके रहने के लिए वे एक के बाद एक राज्य का संबंध बाकी देश के साथ खराब करते चले गए.

कांग्रेस और भ्रष्टाचार एक ही सिक्के के दो पहलू बन गए.

जब जनता ने कांग्रेस से छुटकारा पाया तो कांग्रेसी दलबदलुओं ने गद्दी हथिया ली.

वे भी बंटे और टुकड़े-टुकड़े हो गए. दल बदलते रहे, भेदभाव करते रहे.

और हाँ, वे फिर इकट्ठे हुए और नए जोड़-तोड़ किये.

कांग्रेस ने अल्पसंख्यकवाद का सहारा लेकर हममें फूट डाली तो उनके 'सुयोग्य' उत्तराधिकारियों ने हमें तोड़ने के लिए जात-पांत का इस्तेमाल किया,

एक भारतीय को दूसरे भारतीय के खिलाफ बरगलाया.

भाई को भाई का दश्मन बनाया.

और अब तो पानी नाक तक आ गया है.

आतंक और उग्रता को अलगाववाद का हथियार बनाया.

वर्तमान और भूतपूर्व कांग्रेसी असम और पश्चिम बंगाल में

षुसपैठियों की रक्षा करना चाहते हैं, मगर कश्मीरी हिंदुओं की यातना से उनका दिल नहीं पसीजता.

जनता दल का एक मुख्य मंत्री तो अपने राज्य को देश से अलग करना चाहता है. उनकी पार्टी पुलिस तथा अईसैनिक बलों में मज़हब के आधार पर भरती करना चाहती है.

अब कांग्रेस भी अपने चुनाव घोषणा-पत्र में मज़हब के आधार पर नौकरियों में आरक्षण करने का वादा कर रही है.

और जले पर नमक यह कि अपनी संस्कृति की अनमोल घरोहर पवित्र भूमि का उद्धार करने के लिए शांतिपूर्ण सत्याग्रह करने वाले कार सेवकों पर गोलियां बरसाई गईं.

उघर 2,00,000 से भी अधिक कश्मीरियों को रक्षा नहीं की गई उन्हें अपने घर-बार छोड़कर भागना पड़ा. यह विकृत धर्मीनरपेक्षता की सबसे बडी पराजय है.

आज हमारा स्वाभिमान खतरे में है, हमारी पहचान दाँव पर लगी है.

#### बहुत हो चुका, अब और नहीं!

हमने बाकी सब को मौका दिया.

और भारी कीमत चुकाई.

अब वक्त आ गया है-भा.ज.पा. के साथ चलने का.

भारतीय जनता पार्टी.

एकमेव पार्टी-जो हमारी स्थिरता और संस्कृति की रक्षा के लिए हमेशा लड़ी है.

चाहे धारा 370 हो या अयोध्या की समस्या.

भा.ज.पा. - आंतरिक अनुशासन और स्थिरता की प्रतीक.

जिसके नेताओं की ईमानदारी बेदाग है.

आप ही की तरह, भा.ज.पा. भी राष्ट्रवाद के सही अर्थ के प्रति पूरी तरह समर्पित है – यानी सबको समान हक्, मगर तुष्टीकरण किसी का नहीं.

देश का भविष्य बनाना आपके हाथ में है. अवसर आपके सामने है. भा.ज.पा. को वोट दें.

## रामराज्य की ओर चलें के

अभवं सर्वमृतेम्बो स्वास्थेतदृष्टवं मय। (सभी प्राप्तिमों को अभव देना, यही मेरा प्रण है, राम सभी भारतीयों के लिए आदर्श पुरुष है, सत्यानच्छ, न्याय और करुणा के प्रतीक

राम\* भय से मुक्ति

本

रोटी अभावों से मुक्ति

A

भेदभाव से मुक्ति



अलका पाठक

पेशे से रेडियो पत्रकार अलका पाठक की कई कहानियां छप चुकी हैं. ज्यादातर कहानियां निजी अनुभव पर आधारित हैं. प्रस्तुत कहानी के जरिए उन्होंने यह बताने की कोशिश की है कि सरकारी प्रचार माध्यम लोगों से, हकीकत से किस कदर कटे हुए हैं.

ही है चरम उपलब्धि. इससे ज्यादा और हो क्या सकता है, मिल क्या सकता है? मन बिल्लयों उछल रहा था. घर लौटने का रास्ता था तो बही, पर खुशी के परस से लजाकर सिकुड़ गया था. सीना चौड़ा, चेहरे पर चमक, संतोष और उपलब्धि का गर्व. इसी सबको लेकर अभय कमरे से उठा था और घर तक पहुंचा था. सारे रास्ते वह चाहता रहा था कि अपनी उपलब्धि के बारे में किसी बताए. असल में किसी को किसी से कुछ लेना-देना नहीं था.

जिसे लेना-देना था उसने भी तो एक ही शब्द इस्तेमाल किया था—'गुड'. बस, हो गया! अफसर की कुर्सी पर बैठा आदमी बहुत बौना लगा था. चलो, 'गुड' कहा, न कहता इतना भी. क्या कर सकता था अभय! इन लोगों के लिए तो उपलब्धि की गंगा सिर्फ डीपीसी से निकलती है और

कटर तो है नहीं, दवा भेज देते हैं. एक कंपाउंडर ही होता तो दवा किसी के काम तो आती? अब दवाएं हम फेंक देते हैं. और क्या करें?"

प्रमोशन में समा जाती है. जिंदगी भर सीनियरटी लिस्ट ही रामायण-गीता है जिसे बांचा करो. यही करना था तो रेडियो में क्यों आए, कहीं भी किरानी लग जाते. कमरे में निदेशक की कुर्सी पर बैठे हैं और कार्यक्रम की उपलब्धि के नाम पर सिर्फ 'गुड'. मन में यों उठी थी तो बात, कि काम तो ऐसा किया है जिस पर एक अदद लेटर ऑफ एप्रीसिएशन (प्रशंसा पत्र) मिलना चाहिए, पर जो पाया नहीं वो देंगे कैसे? उसके लिए दिल कहां से लाएंगे? लगा था कि वह गंवई गांव-देहात में इतर दिखाकर लौटा गंधी है जिसे किव बिहारी पहले ही मतिमंद कह चुके हैं.

जिस प्रशंसा को रेडियो का निदेशक नहीं कर पा रहा है, वह गंवई गांव के बिना पढे-लिखे लोगों के चेहरे पर लिखा देख आया है अभय कई जन तो इतने सीधे कि पांव छुने को झुके थे. उनको अपने पांव से उठाते अभय संकोच से भर गया था. क्या कहे, असल में नौकरी ही की है. यह पागलपन जरूर है कि अच्छा कार्यक्रम कर लेने के लिए टेपरिकार्डर लिए वह पैदल कीचड़-मिट्टी में पांव सान लाया है. जब तक कोई निजी लाभ न हो कौन सरकारी नौकरी के लिए ऐसा कष्ट उठाएगा? वह भी राजपत्रित अधिकारी? भेजना ही था तो किसी संघर्षशील बेरोजगार नौजवान को 'कैजुअल' बुकिंग देकर साक्षात्कार करने भेजते. स्वयं चैत-बैसाख की धूप में टेप-रिकार्डर लेकर भटकने का क्या औचित्य था? 'गांवों में स्वास्थ्य सुविधाएं' विषय पर स्वास्थ्य सेवाओं के निदेशक की वार्ता कराना और भी आसान था. जानकारी तो वही मिलती. पर यह तरीका अभय का नहीं है, घिसे-पिटे लोगों का है.

"इनको कुछ रूरल डिस्पेंसरी दिखवा दीजिए." निदेशक ने अपने स्वास्थ्य सूचना अधिकारी को अभय को रेफर कर दिया था. सूचना अधिकारी ने अभय को ऊपर से

नीचे तक देखा था. तौलती-सी निगाहकता तो पु कौन-से गांव में रिश्तेदारी में जाना होग जहां के लिए हेल्थ की जीप के लिए चार फेंका है. प्रोग्राम जैसे होते हैं, समझते हैं कल को फी दवाओं, नकली बिल के लिए सने म्लाकात की बैकग्राउंड है यह. न तो चार छह महीने में बीवी बच्चा जनने अस्पताह त्यू रिव आनी होगी, उस वक्त सेपरेट रूम केंद्रित बड़ दरकार होगी. सूचना अधिकारी ने अपने भाव लेव अन्भवी निगाहों से अभय का एक्स-रे लिया था, बहुत देखे हैं रेडियो वाले. वैसा ही एक कमरे में शुरुआत में समाज के दर्द से सभी मरे जाते हैं. यही सोचकर बड़ा लापरवाह जवा फेंका था—"इंटीरियर में कोई कैंप लगाएं। हां, यह तो ले चलेंगे साथ. तभी देख लीजिएगाल ली थी. लोग भी ज्यादा होंगे तो इंटरव्यू भी अच्छेल, बातर्च हो जाएंगे." नहीं एक रस्मी धन्यवाद देकर अभय उठ गया हर भी था

था. अभी किसी ढंग के आदमी से पाला महीने भ नहीं पड़ा होगा. दफ्तर में भी कार-मांग पत्र कराकर भ लौट आया था—'स्टेट ट्रांसपोर्टः कितने दिन करता भी दफ्तर की कार किस-किस गंवई-गांव-देहाता तो न सा में घूमेगी. किसी फाइव स्टार में कोई?'' कॉन्फेंस होती तो बात और थी. होती तो भी दवाएं क्या अभय के हिस्से आती. वह वीआईपी जो आती है अधिकारियों का हिस्सा होती. यह पगडंडी से?''

> ा अस्पताल जालों पर फिर बोला देते हैं. एक भी काम तो नेक्या करते देते हैं."

गांव के लिए

ता, वह ग इसता तो

तीछे हो है तो समझा क्यों पूछन तल खुलव

सब में वह

ही नहीं सब

गया है" बि

आ गया : एस्त होने

क्या करें, र देते हैं? " जी, घूरे पर जिनहें सा

ीम नहीं हुउ नहीं मिल मती हैं, यह



र्वाव के लिए है. सरकारी बसों में ता, वह गांव-गांव घूमा था. वह इसता तो नंगे-अधनगे बच्चों का नीछे हो लेता. गांव के सरपंच से ते समझाना कि वह क्या पूछना म्यों पूछना चाहता है? "तो गांव तल खुलवा दोगे तुम?" सीधे अब में वह हकला गया था. "जब ही नहीं सकता तो फिर क्यों मगज त्या है" बिना कहे भी साफ-साफ आ गया भाव पढ़-पढ़कर उसकी एसत होने लगी थी. नया नहीं ी निगाहकता तो पुराने को ठीक तो करा

गरी

गाना होग

लिए चार समझते हैं। ल के लिए सने गांववालों के तो चार अस्पताहरत्यू रिकॉर्ड किए और ्<sub>रूम की हत</sub> बड़ा तीर मारा' ने अपनी भाव लेकर निदेशक के स-रे लिया <sub>ता हो एक</sub> कमरे में जा पहुंचा मरे जाते

ाह जवाब प लगाएं। हां, यह ठीक है. उसने अपनी लीजिएगाँउल ली थी.

भी अच्छेछ, बातचीत और खोजबीन से नहीं एक डिस्पेंसरी मिल गई थी. उठ गया हर भी था. छह-सात साल से नहीं से पालागी महीने भर ही रहा कागज पर. -मांग पत्र कराकर भाग गया था. यहां धूल कतने दिन करता भी क्या? "डॉक्टर नहीं ांव-देहाती तो न सही पर इन दवाओं का

होती तो सी दवाएं?" वीआईपी जो आती हैं?" ह पगडंडी से?"

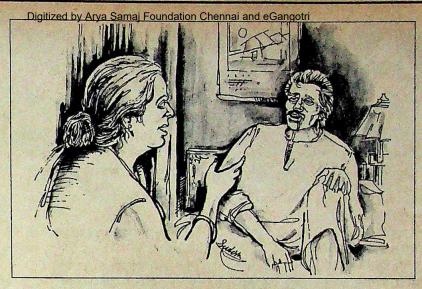
> म अस्पताल के लिए नहीं आतीं?" गलों पर गांव का मुखिया खीझ फिर बोला—"डॉक्टर तो है नहीं, ति हैं. एक कंपाउंडर ही होता तो भी काम तो आती?" ीक्या करते हैं?"

देते हैं."

क्या करें, पता नहीं कोई जहर की

· (清 意?!! गै, घूरे पर फेंके तो कोई जानवर निहें बान लें. सो सूबे कुएं में

वि नहीं हुआ था. यह तो सुना है नहीं मिलतीं पर दवाएं कुएं में ोती है, यह नई बात थी. वह सभी



के साथ जाकर सूखा कुआं देख आया था. दवाओं की कई पेटियां सचमूच दिखाई दे रही थीं. उस वक्त लगा था कि कंधे पर अगर टेपरिकार्डर न होकर कैमरा होता तो स्वास्थ्य सेवाओं के निदेशक से पूछा जा सकता था. उसे बचने को बहाना न मिलता! इस पर तो स्वास्थ्यमंत्री से सवाल भी बनता था.

पर 'अगर..' होता तो होता. जो है उसी उपयोग करना चाहिए! गांववालों के इंटरव्यू रिकॉर्ड किए और सफलता से लदा-फदा वापस लौट आया था. 'बहुत बड़ा तीर मारा है' का भाव लेकर वह निदेशक के कमरे में जा पहुंचा था. उन्होंने बात सुनकर बहुत ठंडेपन से कहा था कि डायरेक्टर हेल्थ के रिएक्शन के बाद ही प्रसारित होना चाहिए!

उत्साह की छूत न अपने डायरेक्टर को लगी, न उनके. अलबत्ता सूचनाधिकारी ने ज़रूर दांत कुरेदते हुए कहा था—"बड़ी जल्दी की यार. हम लें चलते! " उसने बड़े बेमन से कार्यक्रम बनाया था. टाला जा सकता था जितना, उतना टला. हेल्थ के डायरेक्टर, सूचना अधिकारी और छोटे-बड़े सब पहुंचे. अभय ने ऐसे वह कुआं दिखवाया जैसे यह सिमसिम खोलना वह ही जानते

हों. जवाब सचमुच न था.

आते ही एक डॉक्टर वहां पोस्ट करने और दवाओं के दुरुपयोग की जांच का आदेश दे दिया है, ये दोनों ही बातें उन्होंने इंटरव्यू में कह दी. कार्यक्रम जैसा धमाका सोचा था, न हुआ एक आम फुसफुस प्रोग्राम. गलती जो थी ठीक हो गई. और क्या चाहिए? फांसी तो इस पर होनी न थी, न हुई. बंद अस्पताल में डॉक्टर की तैनाती करा दी-भई दम है लड़के में. कहा किसी ने नहीं. अभय को लगा कि लोग कहना चाह रहे हैं. प्रशंसा करना आसान है

क्या? अपने दिल में सोचते होंगे!

इतवार को वह गांव देखने चला था. देखना चाहिए न कि अब क्या हालत है. गांववाले क्या कहते हैं. उनके चेहरे का संतोष देख लगा था इस नौकरी में इससे ज्यादा क्या कर सकते हैं. क्या पा सकते हैं.

घर लौटकर बहुत देर तक वह पत्नी को अपनी उपलब्धि बताते रहे. वह सुनती रही. फिर अपनी आंखें पति के चेहरे पर लगा बोली—"तुम्हें इसका क्या मिलेगा?"

"इंक्रीमेंट ?"

"अरे नहीं." "कोई इनाम."

"फिर काहे को हलकान हो रहे थे?" लगा था कि उसकी उपलब्धि को समझना पत्नी के वश का नहीं है. पैसे या इनाम ही अंतिम सीमा नहीं है. अभय ने पत्नी को समझाने का तरीका सोचा था पर एक तो वह कामयाब न हुआ, दूसरे उसने सयाल ही छोड़ दिया. बेक़ार है.

उसकी उपलब्धि का चलता-फिरता पत्र था गांव, गांववाले. फिर गया. डॉक्टर आया था. पर तबादला करा ले गया. पहुंच वाला था. गांव में डिस्पेंसरी की जरूरत नहीं है. वह बदलकर ब्लॉक के कस्बे में पहुंच गई है. गांववालों से सरकारी दवाओं को नष्ट करने के बारे में तहकीकात हो रही है. इस रेडियोवाले ने बैठे-बिठाए मुसीबत और खड़ी कर दी! गांववाले कतराए. एक ने तो धप्प से हाथ जोड़कर और कहा कि "भर पाए भइया तुमसे तो."

दफ्तर में कार्यक्रम दूसरे अधिकारी को मिल गया है. अभय सरकारी विभागों से ठीक तालमेल नहीं रख सका था. इसलिए इस तरह के कार्यक्रम करने के उपयुक्त न माना गया था.

## साक्षात्कार एक उम्मोदवार से 10



हम देश के सियासती दलों के समान नजरिए से दंग हैं. सबका संसदीय उम्मीदवार चनने का एक ही ढंग है. सब आंकते हैं कौन

कितना दबंग है; फलां क्षेत्र में कितने हिंदू हैं, कितने मुसलमान; जातियों का जोड़तोड़ क्या है. आततायी ने इस बारे में रिसर्च की है. उनका निष्कर्ष है कि प्रत्याशी समाजवाद के आधार पर सेलेक्ट होते हैं. यहां 'स' का ताल्लुक संप्रदाय, 'मा' का माल, 'ज' का जात, <sup>'</sup>वा' का वात (वादे करने की काबिलियत) और 'द'

का दंद-फंद (मत पेटी पर कब्जे की कला) से है. यही वजह है कि आजादी के बाद से हर पार्टी समाजवाद लाने को कमर कसे हैं.

हमने आततायी की मौजूदगी का फायदा उठाया, "जब सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं तो हार-जीत कैसे होती है?"

''जिसका पूरा 'स', 'मा', 'ज', 'वा', 'दें तगड़ा होता है, वही मोर्चा मार लेता है."

''आप वोटों की 'स्विग' और विरोधी एकता के प्रतिशत जैसी बातों पर ध्यान नहीं देते?"

"ज्योतिष संशय भुनाता

है. कंप्यूटर लहर बनाता है. कई तरह के चोंचले हैं.'

"पर पिछले तीन चुनावों में तो बुद्धिजीवी अनुमान सही साबित हए हैं."

''इस बार आप 'समाजवाद' की तकनीक ट्राई करें."

हमने हार मान ली. इतना वड़ा आयकर महकमा चोरबाजारियों के काले धन की तलाश में नाकामयाब है. शरीफ नेताओं के 'मा' का पता लगाने की अपनी क्या बिसात? क्या पता उनके 'द' से टकराकर हाथ-पैर भी सलामत बचें न वचें. फिर हमने सोचा कि अपने शहर के उम्मीदवार से मुलाकात तो कर ही डालें. क्छ ज्ञान बढ़ेगा. इस बार गुमनाम सिंह नाम की कोई नई हस्ती मैदान में है. हमने उनसे बातचीत की, "आप कितने दलों में आ-जा चुके हैं?"

"हमारा अपना दल था," उन्होंने मूंछों पर ताव दिया.

"आप पहली बार पॉलिटिक्स में प्रवेश कर रहे हैं?"

'आना ही पड़ा,'' उन्होंने हाथ के डंडे से फर्श ठोंका. और बोले "ये सब अपना घर भरकर वाहवाही लुट रहे हैं. हम समता लाकर बदनाम हैं."

"समता कोई नई स्वयंसेवी संस्था बन गई है क्या! "

"हम दौलतमंद की दौलत जरूरतमंद की जरूरत पूरी करते हैं."

"यह तो खुलेआम डकैती है."

"अब हमने रिटायरमेंट ले लिया है."

रेखानित्रः जयतो भूखा तो तू हर हाल में मरेगा पर अपने नता के पेट की श्री तो सोचः..!!

"इस दंगल में क्यों उतरे?"

"अपनी योग्यता और अनुभव से यही धंधा मेल खाता है."

"आप पेशेवर नेता के आगे टिक पाएंगे?" हमने जानना चाहा.

'हम जनता को सचाई बताएंगे."

"वह क्या है?" हमने चर्चा जारी रखी. "नौ सौ चूहे खाकर हज करने का इरांदा रखने वाली बिल्ली, चूहे खाना चालू रखने वाली से बेहतर है.

"यह हमारे नेताओं का अपमान है." "तो क्या उनका यशगान करें."

"उनमें खराबी क्या है."

"न साधु की जात है, न डकैत की. पर नेता देश की जात और संप्रदाय में बांट

'हमारे सारे लीडर अखंडता और एकता के मंत्र जपते हैं."

"यही तो दिक्कत है. शेर के इरादे रख मेमने से वादे करते हैं."

"आप एका कैसे लाएंगे?"

''रोटी का न धर्म है, न जात. हम भूखों को भाईचारे का पाठ पढाएंगे."

"इससे क्या होना है?"

"हम अपने रोटी-राज में मेहनतकश के लिए रोटी जुटाएंगे."

"हमारे नेता भी सालों से गरीबी हटा

''उन्होंने सिर्फ अपनी और अपनों की हटाई है. हम जनता की गरीबी मिटाएंगे," detail. ''इस चुनाव में आपका नारा क्या है?'

''हमकों चृनिए, उनको धुनिए.''

"जनता के लिए आपका cause क्या पैगाम है?"

"हमारा एकसूत्री प्रोग्राम जनता को सियासती गुंडों से Illion बचाना और रोटी-राज लाना है."

हमारी चर्चा आगे बढ पाती कि कुछ कद्दावर कद-काठी के बंदकधारी अंदर आ गए. उनमें एक ने गुमनाम nge of जी के चरणों पर लोटकर कातर स्वर में फरियाद की, "दहा ! आपने यह क्या किया?"

''क्या हो गया बच्चा?'' उन्होंने नीचे से उसे उठाया. "आप धर्म-ईमान का धंधा छोड कहां जा रहे

हम स्वभाव से डरपोक हैं. इसीलिए वोट देने से कतराते हैं. मतदान केंद्र के मल्लयुद्ध में कौन फंसे. पिछली बार गए तो लौटा दिए गए. हमारा वोट पड़ चुका था. हर बार ऐसा ही होता होगा. ऐसे ही मतों से प्रजातंत्र फलता-फूलता और दादा नेता जीतता है. हमने ग्रमनाम भाई से पूछा, "उन्होंने मतपेटी हथिया ली तो आप क्या करेंगे?"

"किसमें हिम्मत है?" उन्होंने चेलों पर नजर डाली.

फिलहाल अपनी शंका बरकरार है. क्या होगा बता पाना मुश्किल है पर हम एक बात से खुश हैं कि भेड़ और भेड़िए एक घाट पर पानी पी रहे हैं. 'रावण' और 'सीता' एक ही दल में हैं. मुल्क का एका शतिया बढ़ रहा है !

erman sign. Tl

toes. W

sh Pu

vested

ars. A

irona dia.

interr othar

bristie.

anjayM tharuc

name

our nex ck you

HOULD GIVE BOOT.

ीबी हटा erman technology. German sign. The German obsession तटाएंगे." detail. They're all in Puma ह्या है?" <sub>1008</sub>. Which is quite natural. आपका cause every Puma shoe lows the result of \$ 500 गुंडों से Illion worth of cold, hard sh Puma, Germany have गि बढ़ vested in research over the ars. And that includes the गुमनाम inge of 15 shoes that Puma irona have introduced in dia. Sports shoes worn international champions. Othar Matteaus. Linford Aristie. Prakash Padukone. injay Manjrekar. Mohammed <sup>zh</sup>aruddin. Vijay Amritraj, name just a few. So make ur next pair a Puma. And ck your heels in delight.

ोटी-राज

र कद-

अंदर आ

लोटकर

ाद की, ह क्या

च्चा?"

उठाया.

न का ना रहे

सीलिए

केंद्र के

ार गए

इ चुका ऐसे ही

र दादा गाई से

तो आप

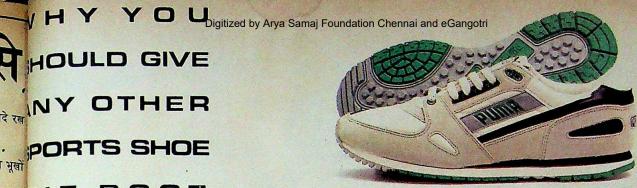
लों पर

ार है र हम भेड़िए

' और एका



HE HIGH-PERFORMANCE SHOE. ORTS



Dominator. Hi-tech running shoes.



Invader-Hi. Advanced basketball shoes.



Control. Designed for hard courts.



Super Cup. Professional tennis shoes.

Sort Mark of Puma AG, West Germany.

deed Trade Mark of Carona Ltd., India.

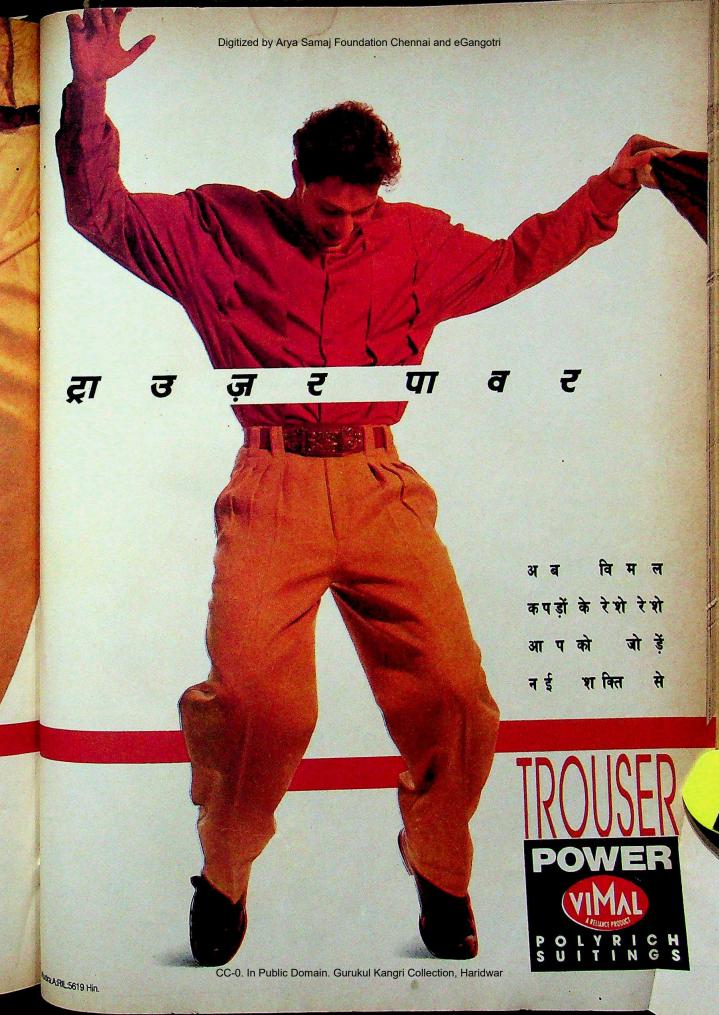
Carona Ltd., India.

port, West Germany.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

▲ Enterprise/CS/113





Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैंड की धुनों पर नाचती नत्यांगनाओं कार्निवाल शैली के नृत्य तो पेण किए ही, कुछ ऐंद्रजालिक करतब भी दिखाए. कहना न होगा कि उनके इस कार्यक्रम में वह मसखरापन भी था जो आम तौर पर कार्निवालों में होता है. आयोजन में शरीक होने के लिए खास तौर पर पधारे ब्राजीलियाई राजदूत ओक्टोविया रेन्हो नेवेस कहा, 'भारत और

ब्राजील के संबंध भविष्य में और भी मजबूत होंगे.'' रुपहले परदे पर एक और पुत्र

• एक और 'सितारा-पुन्न' फिल्मी आकाश पर चमकने की तैयारी कर रहा है. यह है शिमला टैगोर और मंसूर अली खां पटौदी का पुन्न सैफ खां. सैफ एक रोमांटिक फिल्म में नायक बनकर आ रहे हैं. उम्मीद है उनके चाकलेटी चेहरे की चर्चा किशोर पीढ़ी में खूब होगी. लेकिन क्रिकेट की जगह एक्टिंग क्यों? उनका जवाब है, ''क्रिकेट मैं खेलता जरूर हूं मगर मजे के लिए. इसे कैरियर बनाने का इरादा



सैफ खां: मां के नक्शेकदम

लांबाडा नृत्यांगनाः होश उड़ाने की अदा

### बाजीलियाई बयार

◆ ब्राजीलियाई वयारों ने पिछले दिनों मुंबई को झुमा दिया. यह वयार संगीत की थी. सांवा बैंड की आठ आकर्षक नृत्यांगनाओं ने अपने नृत्य और संगीत से जो समां बांधा वह अद्भुत था. इन लांबाडा नृत्यांगनाओं ने रंग-विरंगे पंखों वाली पोणाकों से झांकते जिस्मों को जिन अदाओं के साथ नचाया उनसे उन्होंने लोग के होण उडा दिए.

यह कार्यक्रम ताज होटल के आलीशान नृत्यकक्ष के उद्घाटन के लिए आयोजित 10 दिवसीय कार्निवाल बाजीलिया में शामिल था. • प्रीतीश नंदी का भी जवाब नहीं है. पत्रिका बिके यह भी तो संपादक की ही एक जिम्मेदारी है. इसके लिए बिजापन में खुद ही अपने चेहरे के साथ उतरना पड़े तो क्या हर्ज है. पिछले दिनों अखबारों में नंदी के दो चित्र—एक केश के साथ और दूसरा गंजे सिर वाला—छपे. अपनी पत्रिका इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इंडिया के नए स्वरूप

ई छवि

के लिए



के विज्ञापन के लिए खुद नंदी सिक्रिय हो गए. वे कहते हैं, "मैंने तो अपने सिर को विज्ञापन से काफी पहले ही सफाचट करवा लिया था." अब देखना है कि उनकी तस्वीरों से पत्रिका की तकदीर कितनी बुलंद होती है.

प्रीतीश और अमरीश पुरी; और (ऊपर) विज्ञापनः विचित्र प्रयास

### गाड़ी अटक गई

• देवीलाल के चहेते के के दीपक की गाड़ी, लगता है अटक ही गई है. राष्ट्रपति भवन के फरमान ने हैम्बर्ग में वाणिज्यदूत के रूप में उनकी नियुक्ति को स्थिगित कर दिया. दीपक कहते हैं, "कोई सूचना मुझे नहीं भेजी गई है." मिल जाएगी, मिल जाएगी जनाब!



कार्टून जयना

नहीं.'' अब आमिर खां और सलमान खां जैसों के सावधान होने की बारी है.

### पार्वती के भगत

 हरिकशनलाल भगत को देखकर कोई भी कह सकता है कि वे पार्टी के लिए ही बने हैं. मगर पिछले दिनों वे जिस पार्टी में नजर आए उसका इंका से कोई ताल्ल्रक नहीं था. इस पार्टी में वे पॉप गायिका पार्वती खां के साथ नाचते नजर आए. इस समारोह में वैसे तो हेमामालिनी और चंकी पांडे भी मौजूद थे. मगर आकर्षण का केंद्र रहे भगत. मजे से नाचते रहिए भगत जी, भो तो अब शुरू ही है.

भगत और पार्वतीः नाचने का जमाना





For the gracious people

ामिर खां ां जैसों के वारी है.

ल भगत भी कह पार्टी के हैं. मगर जस पार्टी ाका इंका नहीं था. वे पॉप ां के साथ

इस सि तो र चंकी थे. मगर

हे भगत हुए भगत रू ही है.

तीः ाना

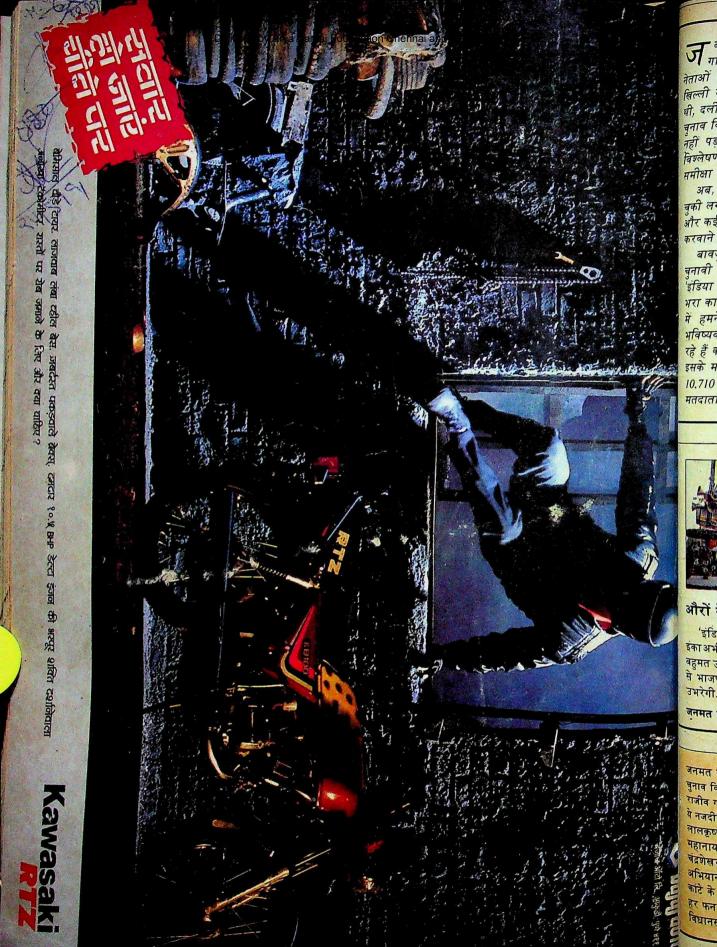


Every genuine
WILLS GOLD FLAKE
cigarette bears the name
W.D. & H.O. WILLS

**₩ GOLD FLAKE** A BRAND OWNED BY I.T.C. LTD. MADE IN INDIA.

CLARION C-GFK-16R2

STATUTORY WARNING: CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH



विश्लेषण ममीक्षा

अब, चुकी लग् और कई करवाने बाव बुनावी 'इंडिया

में भाजप उभरेगी.

जनमत

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व 1980 में इंडिया टुडे के जनमत सर्वेक्षण ने इंदिरा गांधी की वापसी की भविष्यवाणी की तो राजनैतिक नेताओं और राजनीति के जानकारों दोनों ने जमकर उसकी बिल्ली उड़ाई थी. छिद्रान्वेषियों की, जिनकी संख्या बहुत बडी थी, दलील थी कि भारत जैसे विशाल और पेचीदे देश के लिए बनाव विश्लेषण के पश्चिमी तरीके और भविष्यवाणियां माफिक <sub>नहीं</sub> पड़ती. लेकिन इंदिरा गांधी <mark>की</mark> जीत हुई और चुनाव विज्लेषण यानी मतदान के रुझानों का वैज्ञानिक अध्ययन और ममीक्षा की प्रक्रिया ने सफलतापूर्वक अपना स्थान बना लिया.

अब, करीब दस साल बाद यह प्रक्रिया काफी स्वीकृति पा बकी लगती है. जनमत सर्वेक्षणों की अपनी अहमियत बन गई है और कई प्रकाशन संभावित नतीजों की भविष्यवाणी के लिए इसे करवाने लगे हैं.

बावजूद इसके ऐसा नहीं है कि जनमत सर्वेक्षण के माध्यम से चनावी भविष्यवाणी का काम दुरूह नहीं रह गया है. दरअसल <sup>"</sup>इंडिया ट्डे' में बैठे हम लोगों के लिए खासकर यह बड़ा जोखिम भरा काम है, खासकर इस तथ्य के मद्देनजर कि 1989 के चुनाव में हमने कांग्रेस (इ) को 195 सीटें मिलने की सटीक भविष्यवाणी की थी. मौजूदा चुनाव तो सबसे कठिन साबित हो रहे हैं क्योंकि इस बार त्रिकोणात्मक मुकाबला उभर आया है. इसके मद्देनजर हमने अपने सर्वेक्षण को व्यापक बनाया है और 10,710 मतदाताओं से करीब-करीब दोगूने अर्थात् 20,312 मतदाताओं को टटोला.

पिछली बार की तरह इस बार भी हम मतदान-बाद का सर्वेक्षण कर रहे हैं जिसके नतीजे 26 मई के राष्ट्रीय अखबारों में प्रकाणित किए जाएंगे. इस अंक में हम पार्टियों पर केंद्रित अंकों की शृंखला की आखिरी कड़ी के तहत जनता दल की संभावनाओं को भी टटोल रहे हैं. इसके साथ ही महत्वपूर्ण मुद्दों पर बहस की कड़ी में विशेषज्ञों ने आरक्षण पर व्यापक चर्चा की है.

चुनाव प्रचार की गरमी और शोर अपने चरम पर है और जनमत सर्वेक्षण आगामी परिदृश्य की एक छाया दिखा रहे हैं. इन सबसे एक बार फिर यह जाहिर हो जाता है कि देश के मतदाता दिनोंदिन समझदार होते जा रहे हैं. भारतीय मतदाता विकल्पों को तौलने और कामकाज की समीक्षा करने के काबिल हो गया है. वह उन दलों को खारिज कर देता है जिनसे उसका मोहभंग हो चुका है और जिन्होंने वादे निभाए उन्हें फिर गद्दीनशीन कर देता है. इंका की 1985 से 1989 के बीच आधी संख्या रह गई, इसी अवधि में भाजपा कई गुना बढ़ गई है और जनता दल को सरकार चलाने का भी मौका मिला जो शायद इस बार न मिले. जाहिर है, मतदाता सोच-समझकर अपना संदेश सुनाना जानता है. और एक बार फिर उसका फैसला स्वागतयोग्य ही साबित होना चाहिए.

3/30/ 2

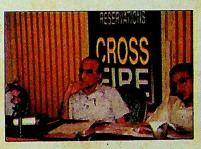
### इस पखवाडे



### औरों से आगे

'इंडिया ट्डे-मार्ग' के विश्लेषण के अनुसार इका अभी दूसरों से आगे चल रही है लेकिन स्पष्ट बहुमत उसे नहीं मिल सकेगा. आश्चर्यजनक ढंग में भाजपा दूसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में

जनमत सर्वेक्षण.....



### मुलगते सवाल की समझ

मंडल विवाद ऐसे खतरनाक मोड़ पर पहुंच गया है जहां उसके प्रति लगाव और नाराजगी दोनों भरपूर है. इस पर बहस के लिए 'इंडिया टुडे' ने कुछ विशेषज्ञों को चर्चा के लिए आमंत्रित किया.



### प्रलयंकारी विभीषिका

बांग्लादेश में आए 12 घंटे के भीषण समुद्री तुफान ने समुचे देश को बूरी तरह झकझोर दिया है. इस महाप्रलय ने करीब 5 लाख लोगों की जानें ली हैं और अर्थव्यवस्था को पंगू कर दिया है.

### अगले पन्नो पर

जनमत सर्वेक्षण	4
चुनाव विशेष	
राजीव गांधी:	
<sup>ये नजदीकियां</sup> और दूरियां भी	13
लालकृष्ण आडवाणीः	
महानायक का महा-अभियान	17
चंद्रशेखर:	
अभियान की औपचारिकता	22
कीट के मकाबले:	
ि फेन का सदारा	26
विधानसभाओं के चनावः	

तीखी लड़ाई3	2
चुनावी हिंसाः आशंकाओं के काले बादल	8
विमानों का उपयोगः जरूरी हो गया डैने फैलाना	14
चुनावी सट्टाः कोई बढ़ रहा, तो कोई पिछड़ रहा	
राष्ट्रीय मोर्चाः अभी से उभर आई चेहरे पर झुरियां	
सास रपट	,,

प्रलयंकारी	विभीषिका	74
तर्क-वितर्क		81

### आवरण संकल्पनाः प्रणव दत्त

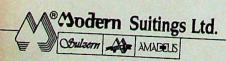
वर्षः 5, अकः 14 16-31 **4\$** 1991

कांपीराइट 1997 मीविया मीदिया इंडिया लिमि. सर्वाधिकार सुरक्षित. सामग्री का किसी भी लग में पुतर्मुद्रवा प्रतिबंधित. अरुव पुरी द्वारा निविधा मीदिया इंडिया निर्मित के लिए दिल्ली प्रेस. दिल्ली में मुद्रित और प्रकाणित.

बांग्लादेश:

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri, अस्ति, हर्गिमूल (क्रमाली विवेद्यावलीण्ड । विवेद्य







Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal a



ओनिडा टी वी से ईर्षा न की जिए. खरीद ली जिए.

ओनिडा २१

पडोसियों की जले जान आपकी बढ़े शान.

Avenues 0:627:91



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri जनमत सर्वक्षण

# कांग्रेस (इ)

# औरों से आगे

इंका बाकी दलों से ज्यादा पसंदीदा लेकिन भाजपा की ताकत में उल्लेखनीय बढ़ोतरी. वह विपक्ष की सबसे बड़ी पार्टी हो सकती है

इंडिया टुडे ने 51 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों में जनमत सर्वेक्षण का काम 'मार्ग' (मार्केटिंग ऐंड रिसर्च ग्रुप) को सौंपा. इसके लिए विभिन्न किस्म के रुझानों वाले वे निर्वाचन क्षेत्र चुने गए जिनसे तकरीबन पूरे देश के माहौल का अंदाज लग जाए. 'मार्ग' के 250 से भी अधिक सर्वेक्षणकर्ता 7 से 10 मई तक 400 जगहों पर घूमे और 20.312 'मतदाताओं' से बातचीत की. इनमें 14,340 (70.6 फीसदी) लोग देहाती और 5,972 (29.4

फीसदी) लोग शहरी इलाकों के थे. सभी से पूछा गया, "अगर चुनाव कल होता है तो आप किसे वोट देंगे?" मतदाताओं से अपनी पसंद से निशान लगाकर उसे चलती-फिरती मतपेटी में डालने को कहा गया. इन नतीजों को कंप्यूटर में डालकर सभी 51 निर्वाचन क्षेत्रों के घ्यान का पता लगाया गया. इलाके के घ्यान से यह हिसाव लगाया गया कि इंका संबंधित इलाके में कितनी सीटें जीत सकती है. नतीजों का आकलन प्रणय राय और 'मार्ग' ने किया है. कोई र

विभिन्त
 एकजुट
 शांति सांप्रदा

• स्थिर र

• कोई र

• कोई अ

• हिंदू हि सबसे

• भाजप

जनता राष्ट्रीय

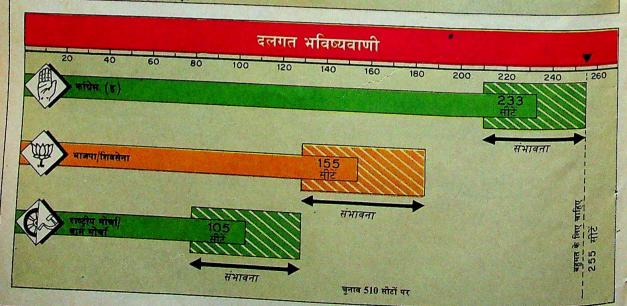
कोई र

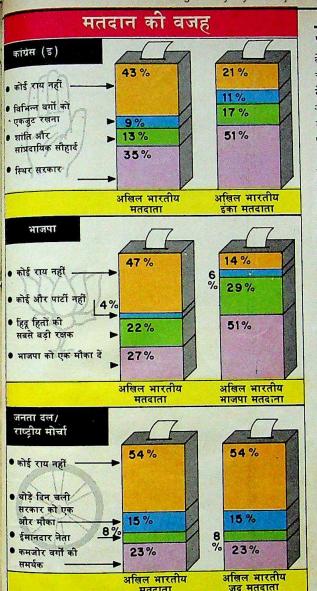
• योडे

ईमान कमजे

कांग्रे

लोव	त्सभा में इं	काकीस	दस्य संख्य	π			
	107 सीटें उत्तर	132 सीटें दक्षिण	128 सीटें पूर्व	143 सीटें पश्चिम	इंका की कुल सीटें	लोकसभा की कुल सीटें	सीटों का प्रतिशत
1991 भविष्यवाणी	32	86	45	70	233	510*	45.9
1989 वास्तविक	26	108	21	40	195	529 **	36.9
1984 वास्तविक ल चार क्षेत्रों के नतीजो समेत जहां चु असम (14 सीटें) छोडकर जना चनार	114	71	- 96	134	415	542	76.6





''अगर

मे अपनी

लने को

निर्वाचन

से यह

ोटें जीत

केया है.

260

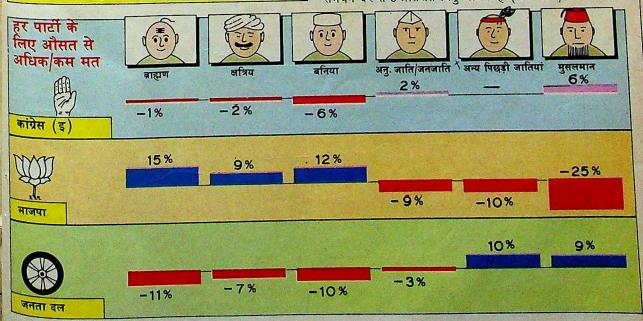
दि लोकसभा के चुनाव 7 मई से 10 मई के बीच होते, जिन दिनों यह जनमत सर्वेक्षण कराया गया, तो कांग्रेस 233 सीटों के साथ फिर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरती. भाजपा इस चुनाव में छुपी हस्तम सावित हो सकती है जो शिवसेना के गठजोड़ से 150 से अधिक सीटें हासिल कर दूसरी सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभर सकती है. इससे भारतीय राजनीति का नजारा ही बदल जाएगा. पलड़ा दाई तरफ झुक जाने से मध्यमार्गी और दक्षिणपंथी पार्टियां लगभग 80 प्रतिशत सीटें जीत सकती हैं.

'इंडिया टुडे-मार्ग' जनमत सर्वेक्षण के अनुसार, भगवा लहर के पीछे राम तो एक महत्वपूर्ण कारक हैं ही, भाजपा की तरफ मतदाताओं के भारी झुकाव की वजह दूसरी पार्टियों के घटिया प्रदर्शन के चलते उनसे मोहभंग होना भी है. भाजपा को वोट देने वालों में से आधे से ज्यादा लोग नई पार्टी को मौका देना चाहते हैं. विडंबना तो यह है कि राजस्थान और मध्य प्रदेश में व्यवस्था विरोधी यही भावना भाजपा के भी खिलाफ काम कर रही है. 1989 में कांग्रेस विरोधी अभियान की अगुआई करने वाला जनता दल इस बार लड़खड़ा गया है और बिहार तथा उत्तर प्रदेश के बाहर वस्तुतः उसका अस्तित्व ही नहीं है.

मतदान के दिन तक राजनैतिक स्थिति नहीं बदली तो इंका अपनी प्रमुख सहयोगी अन्ना द्रमुक द्वारा लड़ी जा रही सभी 12 सीटें जीत लेने के बावजूद 255 से 10 सीटें पीछे ही रहेगी. यदि भाजपा का रथ आगे बढ़ता रहा और इंका को 220 से कम सीटें मिलीं तब इंका बड़े पैमाने पर दलबदल के जिरए ही सरकार बना सकेगी.

1989 की तुलना में इंका को अपने वोटों में 1-2 प्रतिशत की गरावट के बावजूद लगभग 40 सीटों का फायदा होने की उम्मीद है. लेकिन वोटों में आई इस कमी के लिए गैर-इंकाई पार्टियों के बिखराव से ज्यादा कहीं दूसरी वजहें जिम्मेदार हैं (विपक्षी एकता सूचकांक में 1989 के बाद से 10-15 प्रतिशत गिरावट आई है).

इंका को सबसे ज्यादा लाभ भाजपा शासित राज्यों मध्य प्रदेश और राजस्थान, और जनता दल शासित राज्य ओडीसा से मिलने की उम्मीद है. भाजपा ने कांग्रेस के अगड़ी जातियों, खासकर बाह्मणों के वोट बैंक में काफी बड़ी सेंध लगा दी है. लेकिन अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और मुसलमानों पर उसकी पकड़ मजबूत बनी हुई है. मुसलमानों में जनता दल की भी अच्छी पैठ है और उसका मुस्लिम समर्थन उसके कुल औसत समर्थन दर से 8 प्रतिशत बिंदु अधिक है (देखें चार्ट).



### मतदान को सबसे ज्यादा प्रभावित कर सकने वाले मृहे

महंगाई का मृहा ही अगले चुनाव के मतदान पर सबसे ज्यादा असर डालेगा. बाकी तीनों मुद्दे काफी पीछे हैं. भाजपा के समर्थकों, मुसलमानों, उत्तर व पश्चिम के मतदाताओं, सबके लिए अयोध्या का मुद्दा दूसरे नंबर पर है.



भाजपा का सबसे ज्यादा असर उत्तर प्रदेश और गुजरात में है. कर्नाटक में, जहां आज तक उसे एक भी सीट नहीं मिली है, वह छुपी रुस्तम साबित हो सकती है और दूसरी पार्टियों को पटखेनी दे सकती है. यहां तक कि माकपा शासित पश्चिम बंगाल में भी वह (वोटों के मामले में) खाता खोलने की उम्मीद कर रही है. भाजपा के आधार में वृद्धि से मुख्यतः जनता दल को नुकसान हुआ है. जनता दल के लगभग 25 प्रतिशत मतदाता भाजपा की तरफ चले गए हैं. कुछ इंकाई वोट भी भाजपा की तरफ गए हैं.

'इंडिया टुडे-मार्ग' जनमत सर्वेक्षण से एक महत्वपूर्ण बात यह सामने आई हैं कि भाजपा अब 'बनिया' पार्टी से अगड़ी जातियों की पार्टी वन गई है. आज ज्यादातर ब्राह्मण इंका से ज्यादा भाजपा का समर्थन कर रहे हैं. क्षत्रियों और बनियों की भी यही स्थिति है.

एक महत्वपूर्ण बात यह है कि 14 प्रतिशत मतदाताओं के मृताबिक वे मतदान के पहले अपना इरादा बदल भी सकते हैं. (दरअसल, नवंबर 1989 में इंडिया टुडे-'मार्ग' ने मतदान करके निकले मतदाताओं का जो सर्वेक्षण किया था, उससे यह बात सामने आई थी कि 9 प्रतिशत मतदाताओं ने चुनाव के दिन या उससे एक दिन पहले अपना इरादा बदल दिया था.) यहां यह उल्लेखनीय है कि अगर 1 प्रतिशत भी वोट खिसके तो 15-20 सीटें हाथ से निकल

### अन्य पिछडे वर्गों के लिए आरक्षण

40 फीसदी से कुछ ज्यादा मतदाता पिछड़े वर्ग को आरक्षण देने के विचार से सहमत हैं, हालांकि इस विचार का विरोध (34%) भी कम नहीं. बाकी 22 फीसदी अभी, अनिण्चय में हैं. आरक्षण के पक्के हिमायती राष्ट्रीय मोर्चा के समर्थक हैं, जबकि भाजपा और शिवसेना के मतदाता साफ तौर पर इसके खिलाफ हैं. ब्राह्मण पूरी कट्ता के साथ मंडल के खिलाफ हैं (65 फीसदी खिलाफ और 12 फीसदी पक्ष में), और बाकी अगडी जातिया भी इसके विरोध में हैं (50% खिलाफ और 30% पक्ष में).

### क्या सरकार अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण करती है?

एक-चौथाई मतदाताओं ने इस पर कोई टिप्पणी करने से ही इनकार कर दिया. बाकी में बहमत की राय थी कि सभी सरकारों ने अल्पसंख्यकों का तृष्टीकरण किया है. मुसलमानों में इस सवाल पर मतभेद हैं.

### क्या मस्जिद को गिराने या हटाने से सांप्रदायिक सद्भाव को चोट पहुंचेगी?

बहमत की राय में राम मंदिर बनाने के लिए बाबरी मस्जिद को गिराया या हटाया गया तो इससे सांप्रदायिक सद्भाव में दरार आ जाएगी जिसे भर पाना मुश्किल होगा.

### क्या गठबंधन सरकार स्थिर हो सकती है?

गठबंधन सरकारों के अनुभव अच्छे नहीं रहे. 51% मतदाताओं का मानना है कि गठबंधन सरकारें स्थायित्व नहीं दे सकतीं, जबिक 21 फीसदी मानते हैं कि गठबंधन सरकार भी स्थायित्व दे सकती है. भाजपा के समर्थक ज्यादा मानते हैं कि गठबंधन सरकार स्थिर हो सकती है.

जाएंगी. सर्वेक्षण और मतदान के बीच मतदान की प्राथमिकताओं में परिवर्तन और नमूने में निहित त्रुटियां 3-4 प्रतिशत तक हो सकती हैं. इन कारणों से नतीजों में 50-70 सीटों के उलटफेर हो सकते हैं. मतदान का औसत भी विभिन्न पार्टियों की सफलता पर प्रभाव डाल सकता है. पिछले चार वर्षों में भारतीय चुनावों में मतदान का औसत लगभग 60 प्रतिशत रहा है. आम तौर पर यह माना जाता है कि कम वोट पड़ने पर कार्यकर्ता आधारित पार्टियों या प्रतिबद्ध मतदाताओं वाली पार्टियों को लाभ होता है. इस तरह कम वोट पड़ने पर भाजपा को, और अधिक वोट पड़ने पर इंका को फायदा होने की उम्मीद है. फिर, परंपरा से महिलाओं से ज्यादा पुरुष वोट डालने जाते हैं. इस तरह, महिलाओं के वोटों में वृद्धि से इंका को और पुरुषों के वोटों में वृद्धि से भाजपा को अधिक सीटें मिल सकती हैं. मुसलमान मतदाताओं के चतुराईपूर्ण मतदान से (यानी भाजपा को हराने वाली किसी भी पार्टी को वोट देने से ) चुनाव के दिन परिदृष्य बदल सकता है. भारत के इतिहास में यह पहली दफा होने जा रहा कि 150 से अधिक सीटें पाने वाली एक पार्टी (भाजपा) अपना आधार वेहद ध्रुवीकरण के बल पर हासिल कर लेगी जो मूलतः अगड़ी जातियों से गठित होगा. यह सब बातें कुल मिलाकर अस्थिरता को ही बढ़ावा देंगी.

\_इंद्रजीत

का ाह यह वि मं बदलने राजनैतिव मोर्चा सर ध्रवीकरण वजाना और कीम हों. कम न कर प की गर्टियां-रम्क अप में बदना हीं और गजर आ सत्तास् **ठिवंधन मस्थिरता** गदि ने गे जो कां हर सकत न्थिति य गठजोड महारे स अपेक्षा नमत स मह 230 गिसिल व म्थिति मे

नर्दलीय

भ, और

हिंद, झा

गर्टी तव

मकती है

**गामकर** 

<sup>के</sup> दलबर

कावले

गोप्रेस वे

उत्तर प्रदे

भेर राज

भाजा

CC-0. In Public Domain. Curukul Kangri Collection, Haridwar

## राष्ट्रीय राजनीति

# दो दलीय व्यवस्था की ओर अग्रसर

इंद्रजीत बधवार, ब्यूरो रिपोर्टी के साथ

को

अभी, र्गा के साफ डंडल में),

0%

रे से

गभी

ानों

गव

ारी

पक

%

हीं

ताओ

क हो

र हो

ा पर

वों में

र यह

टियों

तरह,

त को

यादा

द्धे से

सीटें

न से

से )

ं यह

एक

सिल

वातें

में ग्रेस की सीटों के बारे में अपेक्षाओं के सतही विश्लेषण से जो सबसे स्पष्ट और उल्लेखनीय निष्कर्प निकलता है ह यह कि यह पार्टी स्विणम राजनैतिक अवसर को स्पष्ट बहुमत बंबदलने में सक्षम नहीं रही है. पिछले 18 महीने कांग्रेस के मुफ्त गजनैतिक विज्ञापन के महीने जैसे रहे. तीन टांगों पर खड़ी राष्ट्रीय गंवी सरकार अपनी भीतरी कलह और धार्मिक तथा जातीय ग्रवीकरण एवं हिंसा के कारण तार-तार होकर विखर गई. देण का

क्रांना खाली होता रहा और कीमतें आसमान छूती हों, कमजोर सरकार कुछ न कर पाई. राष्ट्रीय मोर्चा की सहयोगी क्षेत्रीय गर्टियां—तेलुगु देशम और ग्रमुक अपने-अपने गृह राज्यों में बदनामी ही मोल लेती हों और विपक्ष बंटा हुआ गर आया.

गैर-कांग्रेसी सत्तारूढ ाठवंधन की अक्षमता, गस्थिरता और महंगाई गदि ने ऐसे नारे जुटा दिए गे जो कांग्रेस का झंडा बुलंद हर सकते थे. लेकिन आज स्थिति यह है कि यह पार्टी किजोड़ और दलबदल के हिरे सरकार बनाने की भेषेक्षा कर सकती है. गनमत सर्वेक्षण के मुताबिक है 230 के आसपास सीटें गिमिल कर सकती है. ऐसी प्यिति में यह अन्ना द्रमुक, निर्दलीय सांसदों की मदद ै और इंडियन पीपुल्स

हैंट, झारखंड मुक्ति मोर्चा और बंसीलाल की हरियाणा विकास पूर्टी तक से सौदे करके अपेक्षित बहुमत के लिए 255 सीटें जुटा किती है. इसे अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए दूसरी पार्टियों मिकर जनता दल के अजित सिंह और बीजू पटनायक के घटकों दिलबदल का सहारा लेना पड़ सकता है.

भाजपा ने जो तेज और संगठित अभियान चलाया, उसके भाजपा ने जो तेज और संगठित अभियान चलाया, उसके भावित कांग्रेस का अभियान औसत दर्जे का ही रहा. और यही भिर्म के लिए नुकसानदेह साबित हुआ. यह बात खास तौर से भाव लहर शुरू हुई और जिसकी भार पाजीव गांधी और कांग्रेस के दूसरे अभियानकर्ताओं ने पूरा

ध्यान नहीं दिया. तीन सप्ताह पहले तक लग रहा था कि कांग्रेस इस राज्य में अच्छा दावा रखेगी. कांग्रेस के स्थायित्व वाले नारे का असर मतदाताओं पर हो रहा था और उन्हें गैर-कांग्रेसी नारों का बेहतर विकल्प दिख रहा था. हरिजन मतदाता फिर से कांग्रेस की ओर रुख कर रहे थे. मुसलमान मतदाता अनिण्चय की स्थिति में थे और खुद को जनता दल के वोट बैंक के रूप में पहचाने जाने के अनिच्छुक थे. वे उन जीतने वाले उम्मीदवारों की तलाण में थे जो भाजपा को परास्त कर सकें. लेकिन कांग्रेस इन वोटों को अपने लिए पक्का करने में असफल होती दिखी. यह संगठन की कमजोरी,

गैर कांग्रेसी गठबंधनों की निष्क्रियता के चलते इंका को सुनहरी अवसर तो मिला था पर वह इसे स्पष्ट विजय में नहीं बदल पाई भीतरी गुटबाजी उम्मीदवारों के चयन में गड़बड़ी के कारण हुआ. इस तरह भाजपा कांग्रेस और जनता दल दोनों से आगे निकल गई. उसने साबित कर दिया है. कि वह हर वाधा को पार करने की क्षमता रखती है. यह बात इसके और विश्व हिंदू परिषद के कार्यकर्ताओं ने पिछले अक्तूबर में मुलायम सिंह द्वारा पूरे राज्य को सैनिक छावनी बनाने के वावजूद अयोध्या पहुंचकर साबित कर दी. उम्मीद है कि भाजपा उत्तर प्रदेश से अपनी सीटों की संख्या मौजुदा 8 से करीव सात गुनी और गुजरात से दोगुनी कर लेगी बल्कि लगता तो यह है कि उत्तर प्रदेश के बाद गुजरात में भाजपा का दूसरा गढ़ बने. इसका श्रेय कांग्रेस और चिमनभाई पटेल के जनता दल (गू)

गठजोड़ तथा इंका के 'साम' (क्षत्रिय, हरिजन, वनवासी, मुस्लिम) बोट बैंक को बेअसर करने के लिए महंतों, साधुओं और आर-एसएस के जबरदस्त प्रचार अभियान को जाता है.

उम्मीद है कि कांग्रेस कर्नाटक (जहां देवगौड़ा और हेगड़े का गठबंधन बहुत कारगर नहीं हो रहा है), महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और तिमलनाडु में अच्छी स्थिति में रहेगी. मगर उसे नुकसान भी उठाना पड़ेगा. कर्नाटक में बंगारप्पा सरकार की असफलताएं और वीरेंद्र पाटील के अपमान से आहत लिंगायत समुदाय कांग्रेस को नुकसान पहुंचा सकता है. महाराष्ट्र में बेहतर संगठन और गन्ना क्षेत्र पर अच्छी पकड़ के कारण उसकी स्थिति बेहतर रहेगी लेकिन

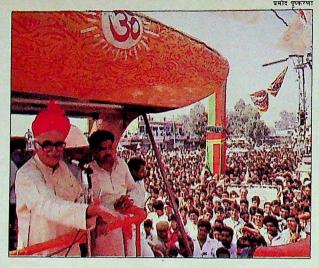
मुंबई, नागपुर, नासिक और पूणे जैसे शहरों में भाजपा-शिवसेना गठजोड उसे काफी नुकसान पहुंचा सकता है.

सुदूर दक्षिण के आंध्र प्रदेश में कांग्रेस को नुकसान उठाना पड़ सकता है, लेकिन बहुत ज्यादा नहीं. नक्सली प्रभावित उत्तरी तेलंगाना और तेलुगू देशम के असर वाले उत्तरी तटवर्ती जिलों में कांग्रेस को ज्यादा नुकसान होगा. लेकिन कल मिलाकर कांग्रेस तेल्ग् देशम से, जो बहत विश्वसनीय राष्ट्रीय विकल्प नहीं रह गई है, ज्यादा संगठित है. तमिलनाड् में अन्ना द्रम्क कांग्रेस गठबंधन सत्ता में वापस आने की स्थिति में दिख रहा है.

भाजपा अगर पश्चिम बंगाल, ओडीसा, गूजरात और कर्नाटक जैसे राज्यों में उम्मीद से बेहतर प्रदर्शन

कर सकती है, तो राजस्थान, मध्य प्रदेश, हिमाचल प्रदेश (जहां वह सत्ता में है) और हरियाणा जैसे राज्यों में उम्मीद से बदतर प्रदर्शन कर सकती है. दसवीं लोकसभा में जो हात महत्वपूर्ण और स्थायी महत्व की होगी वह यह कि देश में दो दलीय व्यवस्था उभर सकती है.

भगवा लहर एक सचाई बन गई है. भारतीय राजनीति के पिछले चालीस वर्षों में पहली बार कांग्रेस का एक ऐसा विकल्प उभर रहा है जो किन्हीं ऐसे गूटों का गठजोड़ नहीं है जिनका दिमाग कांग्रेसी सांचे में ढला हो और जो अपनी ताकत क्षेत्रीय और गुटीय सत्ता केंद्रों से हासिल करते हों. समाजवादी देशों ने जब से ख़ले बाजार की व्यवस्था को मंजूर कर लिया है तब से



भाजपा कांग्रेस और जनता दल दोनों से आगे निकल गई है और मजबूत सैद्धांतिक विकल्प देने की क्षमता रखती है

आर्थिक नीतियों के आधार पर सैद्धांतिक आग्रहों के बीच तुलनाएं बंद हो गई हैं. इस दृष्टि से जनता दल और मोर्चे सिद्धांतवादियों को छोड दे तो दूसरी राष्ट्रीय पार्टियों ने आर्थिक नीति से संबंधित आग्रहों को करीब-करीब छोड दिया है.

दुसरा राजनैतिक बदलाव यह हो रहा है कि केंद्रीय मंच पर धमाके के साथ भाजपा के अवतरित होने से 'विपक्षी पार्टियों' में भाजपा विरोधी मोर्चे बनाने की होड़ चल पड़ी है. पहले जब कभी कांग्रेस किसी मोर्चे या गठबंधन से चुनाव हारी तो वह धमाके के साथ वापस भी लौटी. लेकिन इस बार ऐसी उम्मीद नहीं है.

राम और मंडल के प्रभाव वाले उत्तर प्रदेश और बिहार को इंका भाजपा

और जनता दल के हाथों गंवा चुकी है. भाजपा ने हिंदू राष्ट्रवादी नारों के साथ उच्चवर्गीय मतदाताओं में अच्छी पैठ बना ली है. बिहार में लाल प्रसाद यादव के कारण जनता दल एक मजबूत क्षेत्रीय असर के साथ उभरकर सामने आया है. और यह स्पष्ट होता जा रहा है कि मंडल को राजनैतिक हथियार बनाने में वी.पी. सिंह बहुत ज्यादा सफल नहीं हो पा रहे हैं.

मतदाताओं ने बांटने वाले नारे देने वाली पार्टियों को राष्ट्रीय स्तर पर निर्णायक विजय दिलाने से इनकार कर दिया है और लगता है कि वे ऐसी किसी पार्टी को विशाल बहुमत देने के पक्ष में नहीं हैं जिसने राष्ट्रीय मुद्दों को संकल्प, राजनैतिक इच्छाशक्ति और प्रतिबद्धता से सुलझाने की क्षमता का परिचय न दिया हो.

## स्पष्ट बहुमत न मिला तो....

यदि 1989 की तरह इस बार भी किसी भी पार्टी को 200 से अधिक सीटें नहीं मिलती हैं तो सभी पार्टियां सरकार बनाने के लिए जी-तोड़ कोशिश करेंगी. कौन पार्टी किस पार्टी के साथ मिलकर सरकार बनाएगी, इस विषय पर पूरे देश में गरमागरम बहस छिड़ी हुई है.

पहली संभावनाः ईकाः 200 सीटें. 'सांप्रदायिक ताकतों को सत्ता से दूर रखने के लिए' वामपंथी पार्टियों से बातचीत चलाएगी. अजित सिंह और बीजू पटनायक को पटाकर जनता दल को तोड़ेगी. क्षेत्रीय पार्टियों, बसपा को भी पटाएगी. वामपंथी 'समीकरणों के पुनर्गठन' की संभावना मानते हैं.

दूसरी संभावनाः भाजपाः 200 सीटें. अन्ना द्रमुक, तेलुगु देशम जैसी क्षेत्रीय पार्टियों से गठजोड़ की कोशिश की जाएगी.

मनोबल खो चुके कांग्रेसियों को इंका छोड़कर भाजपा में शामिल होने को प्रोत्साहित किया जाएगा. लेकिन इंका के साथ किसी भी तरह की साझेदारी की संभावना नहीं है.

तीसरी संभावनाः राष्ट्रीय मोर्चा और वामपंथी दलः 150 सीटें (इंका: 180-190). वी.पी. सिंह प्रधानमंत्री पद पर दावा छोड़ भाजपा विरोधी मोर्चे के गठन के लिए जनता दल और राजीव विहीन इंका के विलय का समर्थन कर सकते हैं.

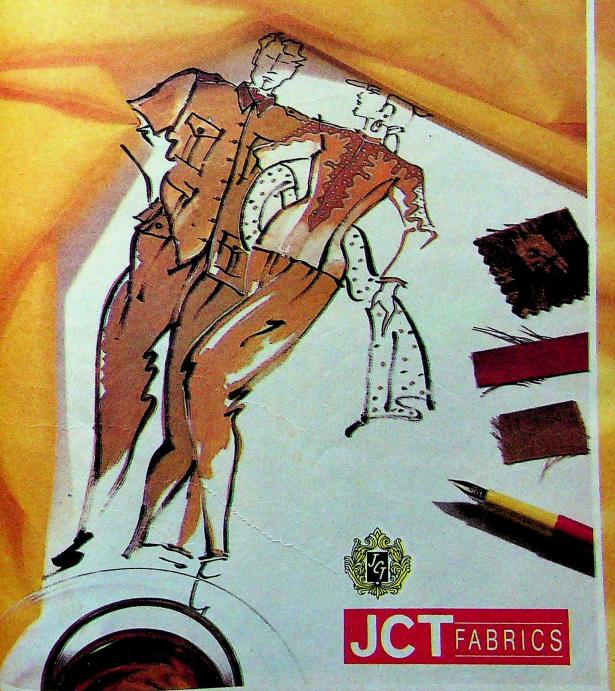
चौथी संभावनाः समाजवादी जनता पार्टीः 20-30 सीटें. इंका, राष्ट्रीय मोर्चा और वामपंथी दलों का गठजोड और भाजपा प्रत्येक को लगभग 150 सीटें. चंद्रशेखर की पहली कोशिश वी.पी. सिंह विहीन राष्ट्रीय मोर्चा और राजीव विहीन इंका से अपनी पार्टी के गठजोड़ की होगी.



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri Contract JCT. 24131 HIN CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

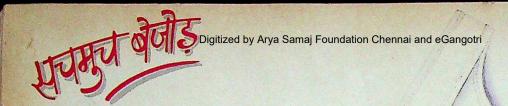


# अंदाज़ हो तो जेसीटी



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सूटि ग्स ● शाटिंग्स ● ड्रैस मैटीरियल्स



# Amu COMFY

बनियान • ड्रावर अंडरवियर







म्रक्षा वे अब वे र राजीव अलग वि और आते वर्ष दौडकर दो घंटे उनसे हा हफ्ते कर

अमूल कॉम्फ़ी की एक नई खोज .... अमूल कॉम्फ़ी ड्रावर । भारत की उष्ण जलवायु को ध्यान में रखकर बनाये गये अमुल कॉम्फ़ी ड्रावर । आपके तन बदन को चुस्त रखे, साथ हीं कोमलता का सही एहसास दिलाये । पहनने में जितना आरामदायुक उतना ही ज्यादा टिकाक भी ।

अन्तरराष्ट्रीय श्रेणी के अमूल

कॉम्फ़ी बनियान, ड्रावर व अंडरवियर सचमुच बेजोड़ हैं। एक बार पहनकर देखिए — फिर तो आपको दूसरा कोई जँचेगा ही नहीं।

अमूल कॉम्फ़ी बनियान• ड्रावर•अंडरवियर

निर्माता कि पा Rublic Pomain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar जी. इन्डस्ट्रीज़, तिरुपुर • कलकत्ता

STUAD/JG/2/91

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

# राजीव गांधी

# ये नजदीकियां लिकिन दूरियां भी

राजीव शुरुआती अनिश्चितता और असमंजस को झटककर लोगों के करीब होने की पुरजोर कोशिश कर रहे हैं लेकिन भाषण वही बेढंगे

-शेखर गुप्ता

एक नई ो ड्रावर । को ध्यान में कॉम्फ़ी न को नता का

ारामदायुक भी । क अमूल र पहनकर जपाट वापस पाने की राजीव गांधी की रणनीति इससे बेहतर नहीं हो सकती थी. पहले की कमजोरियों, मुरक्षा के घेरे और जनता से अलग होने की छिव से मुक्त होकर अब वे लोगों में घुल-मिल जाते हैं. 1991 के प्रचार अभियान में राजीव 1989 की बचाव की मुद्रा और चौंकन्नेपन से एकदम अलग दिखते हैं.

और हजारों लोग सिर्फ उन्हें देखने के लिए ही नहीं निकल आते बिल्क वे नए राजीव को छूते भी हैं, जो देश भर में भाग- दौड़कर हर रोज अक्सर दर्जनों सभाएं करते हैं और दिन में सिर्फ दो घंटे की नींद ही ले पाते हैं लोग चाहते हैं उन्हें करीब से देखें, उनसे हाथ मिलाएं, उन्हें छुएं और भले ही उन्हें धकेल दें. पिछले हफ्ते कलकत्ता के पार्क सर्कस में मंच पर चढते समय राजीव भीड़

से घिर गए. उनके करीब पहुंचने के लिए लोग धक्का-मुक्की कर रहे थे.

भीड़ में मिल जाने के अलावा राजीव की एक और नई रीति-नीति मुरक्षाकर्मियों को परेशान कर रही है. वह है फूलमालाओं का उछाला जाना. राजीव ने इस कला में महारत हासिल कर ली है और जब भीड़ में कोई महिला दिख जाए तो उनका निशाना लगभग पक्का ही होता है. अब उनकी यह बात फैल चुकी है और उनके पहुंचते ही लोग इस खेल की इंतजार में रहते हैं. वक्सर में, जहां कमलाकांत तिवारी तिकोने मुकाबले में फंसे हैं, भाषण से अधिक समय फूलमालाओं के इस खेल में बीता. यह खेल राजीव के लिए लाभदायक ही साबित होता है क्योंकि मंच पर आते ही वे जैसे मुरझा जाते हैं. राजीव गांधी अगर 1991 के चुनाव जीत जाते हैं तो यह उनके भाषणों की वजह से नहीं होगा जो वे देश भर में भाग-दौड़कर दिए जा रहे हैं. भला 40 हजार बनारसियों

ऋषिकेश में राजीवः लोगों को सहज उपलब्ध

सभी फोटो प्रणात पंजियार



को कैसा लगा होगा जब वे सुपर 301 और बौद्धिक संपत्ति अधिकार जैसे मुद्दों पर अपना भाषण दे रहे थे. इसके एक दिन पहले कलकत्ता से पूरब 68 किमी दूर डायमंड हार्बर में वे करीब 20,000 लोगों की भीड़ के सामने लोकसभा में किसी एक दल को बहमत न मिलने के खतरे को बता रहे थे. मसलन, पंजाब की स्थिति से कोई दल कैसे

निबटेगा जहां नई विधानसभा में पाकिस्तान समर्थित पंथक कमेटी का कब्जा होने वाला है. लेकिन डायमंड हार्वर में पंथक कमेटी के बारे में कोई जानता हो, ऐसा नहीं लगा. और उम्मीद के मुताबिक ही भीड शांत रही.

दरअसल समस्या यह लगती है कि इस प्रचार अभियान में

राजीव को कोई भी स्थानीय मुद्दों, समस्याओं और यहां तक कि पार्टी की गुटबाजी की जानकारी नहीं देता. वे वैसा कुछ बोल पड़ते हैं जो लोगों के पल्ले नहीं पड़ता.

फिर भी राजीव इस उम्मीद में चल रहे हैं कि उनकी नई अनौपचारिक शैली कुछ कर जाएगी. वे मानते हैं कि उन्हें 1989 के बाद लोगों से संपर्क बनाने जरूरत वातचीत)

वक्सर से बनारस के लिए गंगा को पार करते और प्रधानमंत्री चंद्रशेखर के क्षेत्र बलिया से होते हुए 150 किमी की दूरी तय करने में करीब छह घंटे लगे. यात्रा के दौरान उन्हें चाय की तलब लगी. बनारस से 85 किमी

• क्या आपको लगता है कि

संकेत मिल रहे हैं कि हमें

आप सरकार बना सकेंगे?

पूर्ण बहुमत मिलेगा लेकिन

कुछ छोटे-मोटे कारक है जैसे

बिहार और बंगाल में किस

• आपको मतदान में

गड़बड़ी की आशंका है.या

के

मतदान

औसत मे

तरह का मतदान होता है

हां,

काम के

प्रशासन्

लोगों से

• लेवि

ना रहा

मलाहक • लोग

पी.वी.न

गई हैं।

गह वर्ड

वह सच

• राज

और उर

ोसमें न

धु ही

एक

थवहार

**मरकार** 

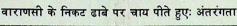
नहीं मैं व

मैं स

वोपं

काम

मुझे





बातचीत

# 'अब मैंने जान लिया कि सरकार में रहकर काम कैसे कराया जाता है

बक्सर से वाराणसी तक की सड़क यात्रा किसी दुःस्वप्न से कम नहीं है. प्रीमियर 118एनई की अगली सीट पर बैठे राजीव गांधी थके हुए लग रहे हैं. हालांकि वे कोई भी कसर बाकी नहीं रहने दे रहे हैं पर उनकी बातों से ऐसा नहीं लगता कि वे खंदक की लड़ाई लड़ रहें हैं. उनकी बातें चुनावी योद्धा की सी नहीं लगतीं. लेकिन जब वे प्रधान संपादक अरुण पुरी से बात करते हैं तो ऐसा लगता है कि वे पूरे सावधान हैं कि कहीं कुछ ऐसा न कह दें जिससे बाद में उन्हें मुश्किल हो. इसी बातचीत के अंगः

 चुनाव प्रचार के इस दौर में क्या आपको कोई स्पष्ट रुख दिखता है?

हमें काफी समर्थन मिल रहा है. लोगों में काफी उत्साह है. लेकिन जो पहली बात स्पष्ट दिखती है कि पिछले चुनाव में लोगों की जो नाराजगी थी वह एकदम नहीं है और इस हिसाब से हम खुले मैदान की जंग लड रहे हैं.

गिरांवट आने की?

मतों में किसी-न-किसी तरह हेर-फेर किए जाने की

कांग्रेस समर्थक इस बात से सबसे अधिक परेशान हैं कि कांग्रेस में नया क्या है? ऐसा क्या है कि जिसे अपार बहुमत होते हुए भी वे पांच वर्षों में नहीं कर पाए?

हमने 1989 में, मेरा मतलब है 85 से 89 तक क्या किया इसे देखिए. हमें जो देश मिला वह इंदिरा जी की हत्या के बाद का बदहाल देश था जिसे अनेक लोग टूट जाने के कगार पर खड़ा मान रहे थे. हमने कुछ ही वर्षों के भीतर ऐसी स्थिति बना दी कि कोई भी भारतीय देश टूटने की आशंका से ग्रस्त नहीं रहा

फिर आप लोग हारे क्यों?

जनता से हमारा संवाद खत्म हो गया था. इस बार हमने अपने घोषणापत्र में बहुत स्पष्ट तरीके से कह दिया है कि हम कितने समय में क्या-क्या करना चाहते हैं.

क्या 1989 की पराजय से आपने कोई और सबक सीखा है?

Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

राजीव गांधी ने उत्तर प्रदेश, बिहार,

थक कमेटी के

मुताबिक

भियान में

गी स्थानीय

और यहां

गुटवाजी

ों देता. वे

ड़ते हैं जो

ों पड़ता.

जीव इस

रहे हैं कि

गौपचारिक

गएगी. वे

1989 के

ार्क बनाने

नारस के

ार करते

द्रशेखर के

हुए 150

करने में

यात्रा के

की तलब

85 किमी

ाता है कि

सकेंगे?

कि हमें

लेकिन

क है जैसे में किस

ता है

गन मे

त है या

सत में

क कांग्रेस

हुए भी

नया इसे

वाद का

र खड़ा

ादी कि

र हमने

कि हम

खा है?

झ.

(देखें

पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, राजस्थान,
मध्य प्रदेश, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश,
हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, गुजरात,
ओडीसा, तिमलनाडु, और उत्तर-पूर्व समेत
15 राज्यों के 170 निर्वाचन क्षेत्रों की यात्रा
कर ली है. वे हर दिन तीन राज्यों में जाते
हैं और औसतन दर्जनों सभाएं करते हैं और

डायमंड हार्बर में

पहले जल्लापुर में एक ढाबे के किनारे काफिला रुका, उन्होंने कुल्हड़ में चाय पी और गांववालों से बतियाते रहे. बातचीत कुछ इस तरह हुई:

राजीवः क्या यहां कुछ विकास हुआ है? गांववासीः कुछ भी नहीं. आप खुद देख सकते हैं.

राजीव: गुजारा कैसे चलता है? गांववासी: कुछ भी करने को नहीं है. कोई रोजगार नहीं. खेत में थोड़ा ही उपजता है. सो, हम सब यही करते हैं जो आप देख रहे हैं, ऐसी ही चाय दुकान चलाते हैं.

राजीवः कोई आपकी मदद को नहीं आया? गांववासीः किसको पड़ी है? हमारे विधायक एकाध बार आते हैं. वादा कर जाते हैं पर होता कुछ नहीं.

राजीवः उनसे आप अपनी समस्याएं नहीं कहते? गांववासी : कोई इतनी दूर से कभी-कभार आपके गांव आता है. उस पर अपनी समस्याओं का बोझ डालना क्या अच्छी बात है? बताइए, ऐसा होता है या?

जब कारवां बनारस के बाहर पहुंचा तो राजीव खुली जीप में सवार हो गए. लोगों की ओर हाथ हिलाते, मुस्कराते, मालाएं उछालते वे आगे बढ़ने लगे. असमंजस, और अलग-थलग पड़कर 'जीतेंगे या लूजेंगे' वाले दिन गए.

हां, पहली बात तो हमने यह जानी कि सरकार में रहकर काम कैसे करवाया जाता है. तब मैं एकदम नया था. कि मेरे पास प्रशासनिक अनुभव नहीं था, प्रशासन और राजनैतिक व्यवस्था के कोगों से मेरा परिचय नहीं था.

 लेकिन आपके राजनैतिक सलाहकार नहीं बदले हैं सो माना ज रहा है कि आप अभी भी वही हैं.

मुझे नहीं मालूम कि आप किन लोगों को मेरा राजनैतिक <sup>म्ला</sup>हकार मान रहे हैं.

• लोग वही हैं—आर.के. धवन, माखनलाल फोतेदार, पी.वी.नरिसह राव. मेरा मतलब आपके निकट सहयोगियों से हैं. कामकाज में एकदम बदलाव आ गया है, जिम्मेदारियां तय हो पूर्व हैं कि कौन क्या करेगा. पहले समाचार जगत के लोगों को

पह वड़ी भारी गलतफहमी थी कि कौन क्या देख रहा है. तब भी वह सचाई नहीं थी, आज भी नहीं है.

राजनेता के रूप में अपने विकास के बारे में आप क्या कहेंगे? बोफोर्स मुद्दे पर अखबारों में हमारी भी काफी खिंचाई हुई और उस दौर में समाचार जगत ने जिस तरह का व्यवहार किया भूमें न कोई तर्क था, न कोई ठीक बात. और अब अचानक यह हो ही गायब हो गया है.

े एक स्तर पर आपकी सरकार ने भी समाचार जगत से ऐसा <sup>अवहार</sup> किया जैसे कि उसका कोई महत्व ही न हो. आपकी <sup>करकार</sup> ने दूरदर्शन का खुल्लमखुल्ला इस्तेमाल किया.

मैं समाचार जगत पर दोष नहीं लगा रहा.

ै नहीं, आप कह रहे हैं कि उसका व्यवहार अनुचित था. मैं कह रहा हूं कि हम पर बहुत तीखा हमला हुआ और इस मुद्दे पर हमारी विश्वसनीयता खत्म हो गई.

यह हमला सही था?
 मुझे नहीं लगता.

 अब सरकार में आकर आप किन बातों के प्रति अधिक सावधान रहेंगे?

पिछली बार हमारी एक कमजोरी रही कार्यक्रमों को लागू न करा पाने की. कार्यक्रम क्या हों इसकी सिर्फ अवधारणाएं भर हमने बनाई. कार्यक्रम कैसे चलें यह जिम्मा हमने नौकरणाही पर छोड़ दिया था.

• पहले आप अपनी मां, श्रीमती गांधी के साथ काम कर चुके प्रणव मुकर्जी, धवन जैसे लोगों से दूर रहने की कोशिश कर रहे थे और फिर आपने उनको अपना लिया.

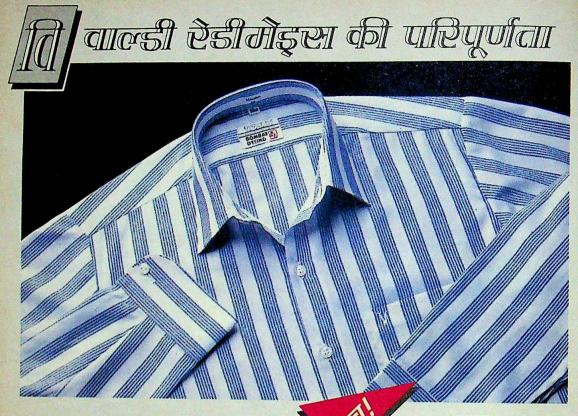
े देखिए, इन लोगों के बारे में ऐसी बातें कही गई थीं जिन्हें मैंने ठीक नहीं पाया.

 क्या आपके फैसला करने की प्रक्रिया में कोई बदलाव आया है? क्या आप मंत्रियों को अपने मन से फैसले करने देंगे?

यह सब अखबारों की मनगढ़ंत बातें हैं. तब भी हमारे मंत्रियों के पास सारे अधिकार थे. जब राज्य सरकारों के साथ मंत्रियों को बैठकर फैसले करने होते थे तभी प्रधानमंत्री कार्यालय का कोई व्यक्ति उनमें शामिल होता था.

• इस आरोप का आप क्या जवाब देंगे कि इंका का स्थायित्व का नारा मिथक भर है क्योंकि आपने अपने मुख्यमंत्री और मंत्री बड़ी तेजी से बदले?

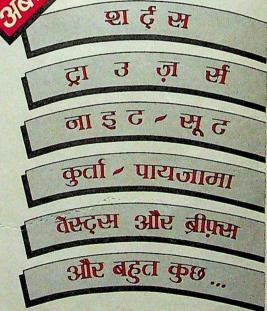
स्थायित्व और नीति तथा सरकार की स्थिरता में लोगों के बदलने का कोई अर्थ नहीं रहता.



अब बॉम्बे डाइंग की परिपूर्णता और भी विस्तृत. यानी ट्राउज़र्स से लेकर नाइट सूट तक, आपको मिलेगी एक एक चीज़ की क्वालिटी के स्तर में वहीं गहरी नज़र, वहीं सावधानी. जो आप पाते रहे हैं विवालडी शार्ट्स में.

हमारी सावधानी की शुरूआत होती है यार्न और कपड़ों के युनाव से. एक एक वीज़ में कलाकारी का बेहतरीन नमूना. बटन, ज़िप, इलास्टिक, धागा... सारी वीज़ें अपनी मिसाल आप. बखिये-टांके साफ़, सुथरे. जेब की सही फिटिंग. विवालडी रेडीमेड्स में आप कोई भी वीज़ अपनी जगह से हिटी हुई नहीं पाएंगे. यानी हर दृष्टि से परिपूर्ण.

विवाल्डी रेडीमेड्स श्रेणी की उत्कृष्टता. क्योंकि हमें प्यारी है अपनी साख.



–शाहन

दिखाई वें और का बल रहीं पर चढ़ व्यक्ति वें सिर से परम संवें जिससे वें

आने का



विविद्धिः १ डी में इ स बॉम्बेडाइंग छ १८७९ में स्मापित

लालकृष्ण आडवाणी

# महानायक का महा-अभियान

लोग इस 'देवदूत' को छूने, देखने-सुनने उमड़ पड़ते हैं. वे अपनी पार्टी की नीतियां बताते हैं, छुद्म धर्मनिरपेक्षता का पर्दाफाश करते हैं और मुसलमानों को आश्वस्त करते हैं

–शाहनाज अंकलेसरिया अय्यर

🖈 बदूत पधारता है. जैसे ही हरे-केसरिया झंडों से लैस नौजवानों के करीब 70 स्कूटरों का दस्ता कुछ दूरी से आता दिखाई देता है, प्रतीक्षा कर रही भीड़ बीच सड़क पर आ जाती है और कारवां रुक जाता है. लोगों का झुंड इस दस्ते के ठीक पीछे वल रही जीप की तरफ दौड़ पड़ता है. लोग इस जीप के बोनट पर चढ़ जाते हैं ताकि जीप पर चुपचाप खड़े सफेद बालों वाले व्यक्ति को छु सकें. कई लोग इस व्यक्ति का हाथ पकड़कर अपने सिर से लगा लेते हैं और ऐसा करके उनके पसीने भरे चेहरे पर परम संतोष के भाव उभर आता है. फिर वे किनारे हो जाते हैं जिससे गेंदे और गुलाब की मालाएं लिए खड़े दूसरे लोगों को आगे शने का मौका मिले. यह दुबला-पतला आदमी उनके अभिवादन

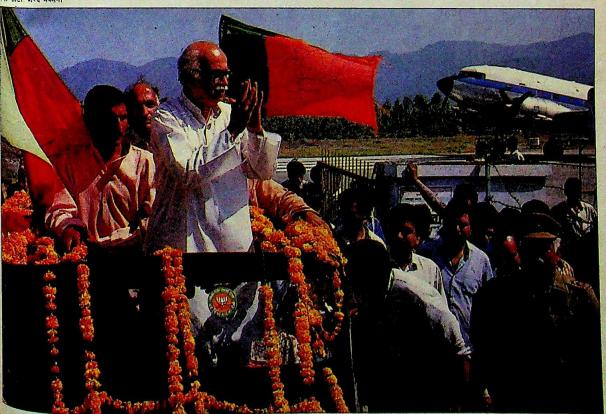
स्वीकार करता जाता है.

विशाल उत्तर प्रदेश के दो दिनों के दौरे के बाद लालकृष्ण आडवाणी विजेताओं के अंदाज में कहते हैं, "प्रदेश में भाजपा का तूफान आया हुआ है. लहर ने आंधी का रूप ले लिया है." और वे जोर देकर कहते हैं कि यह आंधी भाजपा को प्रदेश और केंद्र में गद्दी पर बैठा देगी. लेकिन कुछ लोग ऐसा नहीं मानते. एक छोटे कस्वे में 5,000 की भीड़ देखकर एक डीएसपी कहते हैं, "स्थानीय लोगों के लिए आडवाणी हेलिकॉप्टर की तरह अजूबा हैं; वे देखने की चीज हैं. लोग इस महानायक को देखने आते हैं.

कारण चाहे जो हो पूरे पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तर बिहार और अपने नई दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र की सभाओं में भी आडवाणी को सुनने के लिए बड़ी संख्या में लोग जुटते हैं. लोग उनमें अयोध्या का नायक देखते हैं, ऐसा रामभक्त जिसने मंदिर निर्माण

देहरादून हवाई अड्डे पर आडवाणीः दमदार अभियान

भी फोटो: शरद सक्सेना



TOAFRIEND'S EDDINGH



WARM WISHES FOR THE OCCASIONO



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

### H E R O A D I S N E V E R I 1 G VER LONG



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Hardward CL



यात्राएं कीं जिसमें उन्होंने 15,000

किलोमीटर का सफर विमान, रेलगाडी

और कार से तय किया. अब उन्हें गुजरात,

मध्य प्रवेश जाना है और फिर वे नई

दिल्ली के अपने चुनाव क्षेत्र में कुछ समय

वेंगे जहां वे पहले दो दिन दे चके हैं

के लिए गोलियों की भी परवाह नहीं की. लेकिन आडवाणी जोर देकर कहते हैं कि वे धार्मिक व्यक्ति नहीं, पार्टी के साधारण कार्यकर्ता भर हैं और छद्म धर्मनिरपेक्षता की राजनीति के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं.

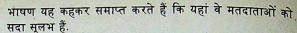
निश्चित रूप से आडवाणी अभी भी पार्टी के सबसे प्रमुख चुनाव प्रचारक हैं. चिलचिलाती धूप में भी हजारों लोग उनके इंतजार में सभाओं में घंटों बैठे रहते हैं. और जब वे पहुंचकर देरी के लिए क्षमा मांगते हैं तो उधर से जवाब आता है, "हम 30 घंटे भी इंतजार कर सकते हैं." जैसे ही वे मंच पर चढ़ते हैं, चाहे यह नुक्कड़ सभा का मंच हो या बाजार का या फिर किसी बड़े मैदान का, उनका सारा व्यक्तित्व ही बदल जाता है. खुद को अलग-थलग रखने और किंचित मुस्कान वाला उनका व्यक्तित्व गायब हो जाता है. उसकी जगह एक नेता ले लेता है जो श्रोताओं को समझाता है, डांटता है, पूचकारता है.

हर जगह एक ही संदेश दिया जाता है-भाजपा को वोट दीजिए क्योंकि यही पार्टी देश की एकता और हिंदू संस्कृति की रक्षा कर सकती है. चुनाव चिह्न चाहे जो हों, वी.पी. सिंह, मुलायम सिंह यादव और राजीव गांधी, सभी कांग्रेसी ही हैं जिन्होंने देश की ऐसी दूर्गति कर डाली है. हिंदुओं के खिलाफ ज्यादितयां इन्होंने की हैं. वे श्रोताओं को बताते हैं कि अन्य सभी

पार्टियों और उनके नेताओं ने अयोध्या में मूलायम सिंह यादव द्वारा कार सेवकों का नरसंहार करने का समर्थन

किया था. क्या अब समय नहीं आ गया जब ऐसे लोगों को जनता का फैसला मुनाया जाए. दिल्ली में वे बहुत छोटा

आडवाणी का कारवाः जबर-दस्त स्वागत



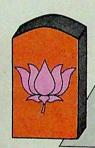
वे हर सभा में बताते हैं कि भाजपा मुसलमानों की विरोधी नहीं है. अन्य सभी पार्टियों के लिए मुसलमान मनुष्य नहीं, बोट बैंक हैं. आडवाणी दावा करते हैं कि अकेले भाजपा ही वोट बैंक की राजनीति के खिलाफ है. विदेशी बाबर ने जो जूल्म किए उसकी सजा मूसलमानों को नहीं दी जानी चाहिए. अगर बाबर ने अयोध्या के राम मंदिर को तोड़ा तो मुसलमानों ने पिछले 40 वर्षों से वहां नमाज वगैरह न करके उसे बचाए रखा है. वे कहते हैं, भाजपा छुद्म धर्मनिरपेक्षता के खिलाफ है.

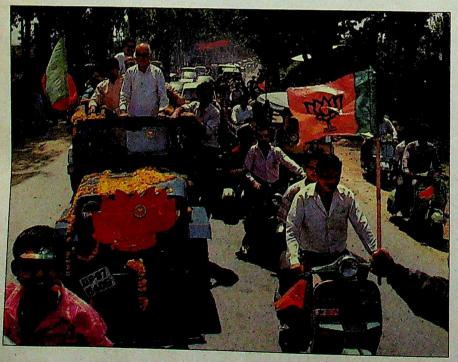
यह इस कठोर संयमी नेता का पहला ऐसा चुनावी दौरा है जिसमें वे पसीने से भीगे कुर्ते बदलने से भी तेजी से कारें बदल रहे हैं. उत्तर प्रदेश में चुनाव प्रचार के एक दिन में ही शुरुआत होंडा एकार्ड से करते हैं. फिर कांटेसा में सवार होते हैं और आखिर में मारुति 1000 में. ये गाडियां भाजपा के प्रमुख समर्थक अमीर व्यापारियों और उद्योगपतियों की हैं. इस बार भाजपा ने उत्तर प्रदेश विधानसभा के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं को भी खडा किया है. ये निष्ठावान कार्यकर्ता, जिनमें से कछ पहाड़ी क्षेत्रों में खुले संघ के स्कूलों में काम करते हैं या खेतिहर है, अब भाजपा समर्थक उस फौज के आगे फीके पड़ते जा रहे हैं जो

मारुति वाली है, पिछले महीने लालकृष्ण आडवाणी ने मध्य पान चबाती हैं और शान से रहती है. एक प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, बिहार और उत्तर प्रदेश की थके-हारे पुराने भाजपा कार्यकर्ता कहते हैं, "ये लोग प्रतीक हैं इस बात के कि पार्टी का जोर बढ़ रहा है. वे हमारे जीतने के लिए कडी मेहनत करेंगे."

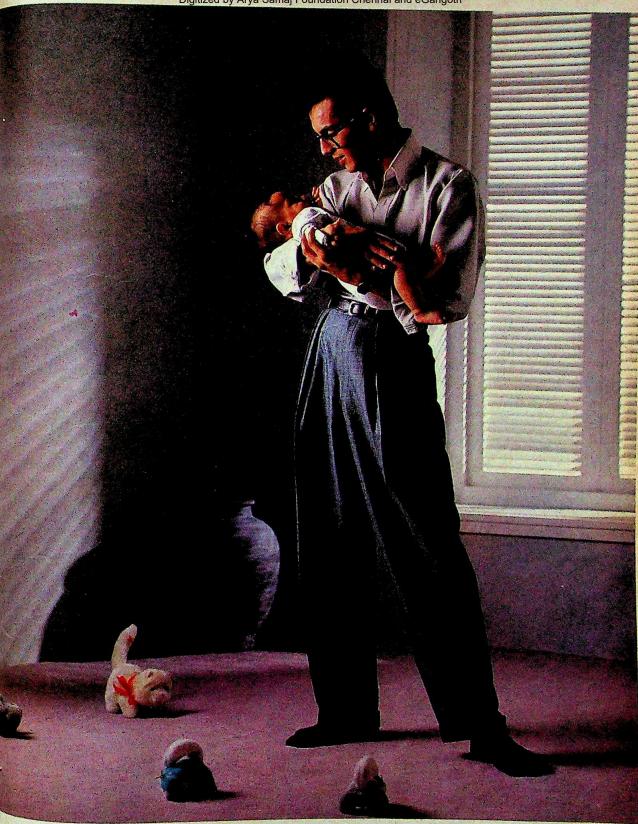
> पूरे दिन के थकाऊ प्रवास के बाद दिल्ली की एक सभा में रात 9.30 बजे उन्हें माइक पर झुका देख

> > उनकी पत्नी विस्मय से टिप्पणी करती हैं, "सचमुच उनमें दैवी शक्ति है." यह निरभिमानी महिला सादी सूती साडी में चप्पल पहने, घर की चाबियां पति के पीछे खडे सुरक्षाकर्मी की जेब में डालकर खामोशी से उनके साथ जीप पर सवार जाती परिवारजन भीड़ में किनार होकर ही उनका भाषण सुनते हैं. वे न तो उनसे समय मांगते हैं और न ही आडवाणी उन्हें समय दे पाते हैं. कोई भी नहीं जानता फि वे कौन हैं और न ही वे खुद जताते हैं. लेकिन जो आदमी इन सबको जानता है उसे यह भी पता है कि इस विनम्र आदमी की आज राजनीति भारतीय अनदेखी नहीं की जा सकती.





Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri



ेदनी को बिठाएं सर ऑस्वों पर!

देमण्ड हाउन्ह्य के लिए **पेंटाटी** जि

ओं को

र्ता

विरोधी ीं, वोट ोट बैंक म किए

गवर,ने छले 40

ने कहते दौरा है

दल रहे त होंडा खिर में अमीर

र उत्तर कर्ताओं

से कुछ हर है, हे हैं जो ली है, हैं और हैं. एक

भाजपा

हैं, ''ये बात के

ढ़ रहा हे लिए

त्रास के में रात का देख ाय से मचमुच .'' यह

सादी पहने, ति के -

की जेब गी से सवार

उनके किनारे भाषण

उनसे न ही दे पाते

ता कि वे खुद आदमी है उसे क

आज में

सकती.



चंद्रशेखर

# अभियान की

# औपचारिकता

अत्यल्प भीड़ वाली सभाओं में भी सुरक्षा प्रबंधों के कारण प्रधानमंत्री लोगों से काफी दूर-दूर, लेकिन भाषणों का तरीका काफी प्रभावशाली

- वाहेगुरु पाल सिंह सिद्ध

च्य मई की तपती द्रपहरी में जब विशालकाय एमआई-8 स्य मइ का तपता दुभहरा न उन्हार में कि मेर उतरता है हेलिकॉप्टर अस्थायी तौर पर बनाए हेलिपैड पर उतरता है तो गर्द का हल्का गुबार उठ पड़ता है. पुलिसकर्मी अपनी उड़ती टोपियां संभालते और स्वागत समिति के सदस्य हाथ में मालाएं थामे यहां से वहां भागते नजर आते हैं जबिक गांव के लोग कुछ हैरत, कुछ कौतूहल से इस तमाशे को देखते हैं. हेलिकॉप्टर रुकता है और चंद्रशेखर उसमें से निकलते हैं. वे अपनी नवगठित समाजवादी जनता पार्टी का अस्तित्व बचाने के लिए हिंदीभाषी क्षेत्र के एक ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र में आए हैं.

वे अनिगनत बार पायलटों से हाथ मिलाते हैं. सिर एक तरफ भुका है लेकिन आंखें चारों तरफ घूम रही हैं. वे तेजी से कदम

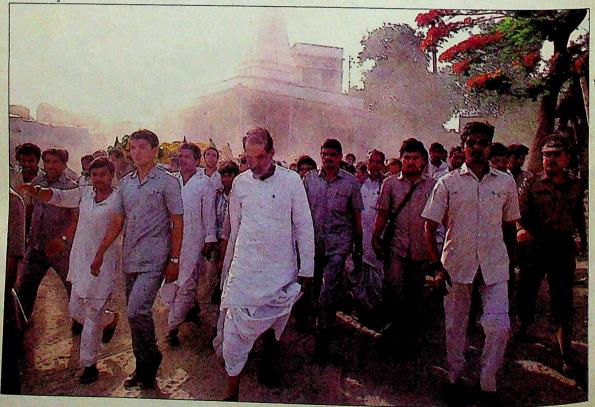
बढाते स्वागत समिति के सदस्यों की ओर बढ़ते हैं, जो अब तरतीब से लाइन में खड़े हो गए हैं. एक स्थानीय उम्मीदवार उनकी तरफ दौड़ता है और उनके पैर छुता है. प्रधानमंत्री जानी-पहचानी भोजपुरी में उसका हालचाल पूछते हैं. "का हो?" पार्टी कार्यकर्ताओं का एक गुट नारे लगाता है, "वीर चंद्रशेखर जिंदाबाद." इस पर पार्टी का स्थानीय लोकसभा उम्मीदवार उत्साह से कहता है "देखिए, ये कितने जोर-शोर से नारे लगा रहे हैं." इस पर भोंडसी के बाबा सवाल दागते हैं, "वो तो ठीक है, लेकिन कुछ वोट भी मिलेंगे कि नहीं."

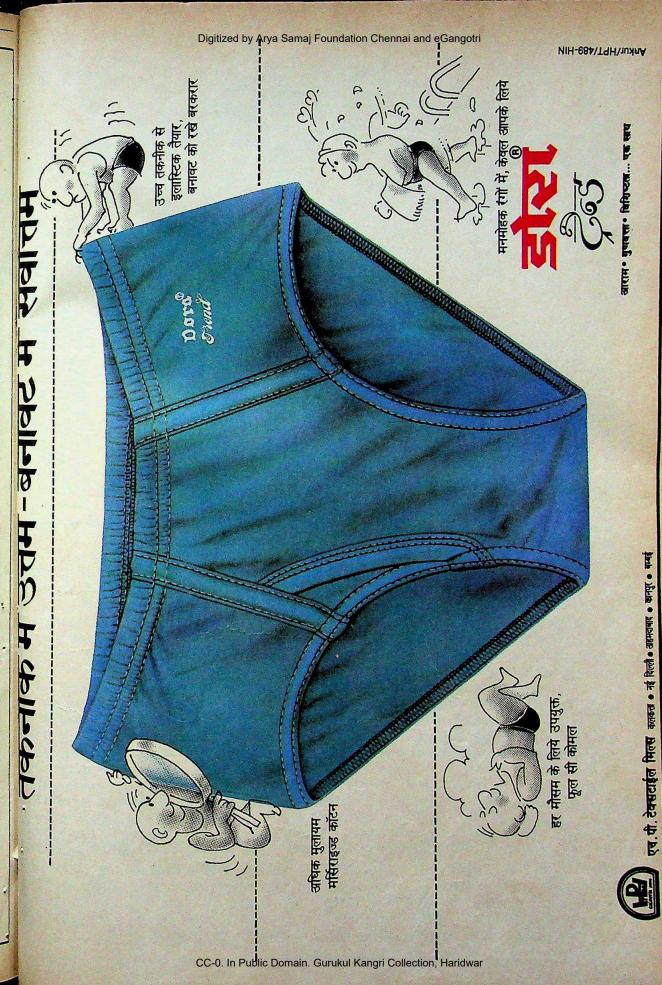
जनसभा में कुछ हजार लोगों की भीड़ की ओर वे हाथ हिलाते हैं, फिर अपनी निराशा छिपाते हुए अपना जाना-पहचाना भाषण शुरू करते हैं, "अब आपको ही चुनना है कि दिल्ली की पंचायत में कौन बैठेगा. आपको यह चयन निष्पक्ष भाव से करना

तकनाक म उत्तम - बनाबद म

सुरक्षार्कीमयों से घिरे चंद्रशेखर अपने चुनाव क्षेत्र बलिया में: जादू खो गया

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा





नो अब नीदवार जानी-''पार्टी द्रशेखर नीदवार ना रहे ठीक है,

वे हाथ हचाना ली की करना



### रोहतक में एक समा को संबोधित करते हए

हताशा को बडी शालीनता से कबूल करते हैं लेकिन प्रमुख स्रक्षा अधिकारी को शिकायत है, "बागडोगरा साफ-स्थरा नही है."

'साफ-सुथरा' यही एक शब्द चंद्रशेखर के चुनाव अभियान की व्याख्या कर देता है. उनका कार्यक्रम इस तरह तैयार किया गया है कि जनता के साथ सीधा संपर्क ही नहीं पाता. राजनीतिक चंद्रशेखर अब प्रधानमंत्री पद की मर्यादाओं से बंध गए हैं. एक वरिष्ठ समझदार राजनीतिक की भूमिका निभाने को इच्छक चंद्रशेखर कीचड-

एक मई से 30,000 किमी का सफर पूरा, उछाल् चुनाव करके चंद्रशेखर बिहार, महाराष्ट्र और अभियान चलाकर कर्नाटक समेत 10 राज्यों का दौरा कर अपनी साफ-सूथरी चुके हैं. उनके प्रचार अभियान का अंतिम, छवि पर धब्बा नहीं पड़ाव उत्तर प्रदेश और हरियाणा में होगा, लगाना चाहते. नतीजा यह जहां उनकी पार्टी को कुछ सीटें मिलने की कि उनके तीखे व्यंग्य और उम्मीद है. अपने निर्वाचन क्षेत्र बलिया में हास्य, जो जनता को उनके वे नियमित रूप से रुकते हैं लेकिन चंद्रशेखर करीब ला देते थे. अब गायब के भाषणों का अब लोगों पर जादू नहीं हो गए हैं.

चलता. कदाचित वे प्रधानमंत्री पद की गोड़ा में उन्हें अपने स्कूल के सहपाठी और 46 वर्षों से राजनीति में साथ रहे गौरीशंकर राय की मृत्यु

ववरण

न कमरे

हेंग/ड

ीन कम

इंडिंग/ड

गर कम

इंडिंग/ड

सिर

पहितका

रेन बैंक अ

पन्टल

गर : वी-

ोविजय :

योड़ा व

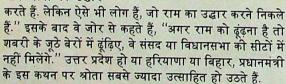
की खबर मिलती है. जद में ही बने रहने वाले राय की मृत्यु. बलिया में दिल का दौरा पड़ने से हुई. वे दिवंगत साथी के अंतिम दर्शन करने और उन्हें कंधा देने बलिया जाने का फैसला करते हैं. इस वजह से आठ जनसभाएं रद्द करनी पड़ती हैं.

अधूरे छूटे चुनाव अभियान को वे शाम को दरभंगा से फिर शुरू करते हैं और रात को 1.30 बजे दिल्ली लौटते हैं. अगली सुबह पौ फटने पर वे फिर अभियान पर निकलते हैं. अगले दिन इतवार है और उन्हें हरियाणा का तूफानी दौरा करना है. वे 12 जनसभाओं को संबोधित करते हैं. रात 11 बजे वे दिल्ली लौटते हैं और अपने भाषण की रिकार्डिंग के लिए दूरदर्शन के स्टुडियो की ओर निकल पड़ते हैं. इसके बाद उन्हें कुछ सरकारी फाइलें निबटानी हैं. इस तरह उनका दिन सुबह तीन बजे खत्म होता है.

सिर्फ तीन घंटे की नींद लेने के बाद वे एक और थकाऊ अभियान पर निकलते हैं. इस बार बारी महाराष्ट्र की है लेकिन काम की इस तूफानी गति का असर उन पर नजर आने लगा है उनकी आवाज पहले ही कांप रही थी. अब तो बिलकुल ही फटने लगी है. दिल्ली लौटने पर वे बहुत थके नजर आते हैं. 63 वर्ष के उम्रदराज चेहरे पर उम्र की रेखाएं साफ नजर आ रही हैं. वे बड़ी कठिनाई से धीमें से बुदबुदाते हैं, "मुझे लग रहा है, मेरी आवाज स्रो गई है." लेकिन चुनाव होने के बाद चंद्रशेखर आवाज के अलावा और भी बहुत कुछ खो चुके होंगे.

होगा. पैसे के लालच में या डरकर नहीं." पूर्वांचल की ग्रामीण जनता, चेहरे पर ऊब के भाव के साथ उन्हें सून रही है.

इसके बाद भाजपा पर हमला शुरू कर देते हैं. इस पार्टी का उल्लेख वे कभी नाम लेकर नहीं करते. वे कहते हैं, ''जब मैं बच्चा था, मुझे बताया गया कि राम लोगों का उद्घार

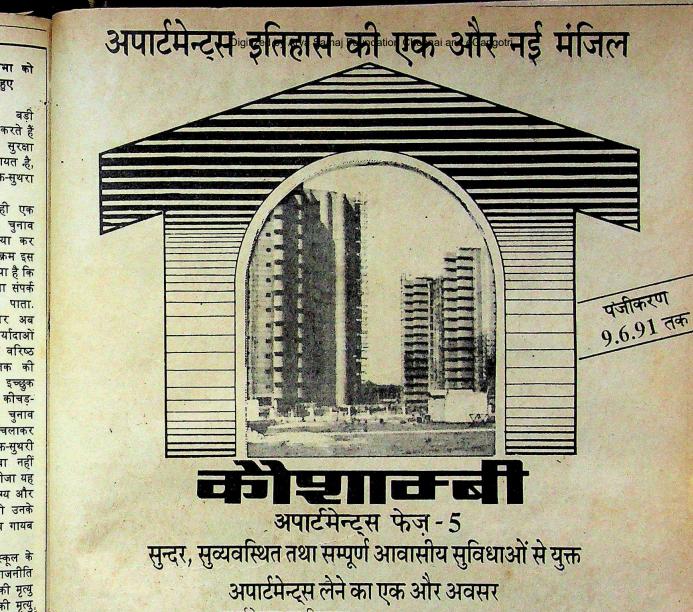


साफ-स्थरे, सारगर्भित और बिना किसी पूर्व तैयारी के भाषण के बाद असली नुक्ते पर चंद्रशेखर गलती कर जाते हैं. वे हाथ में धरी पर्ची पलटते हैं और बिना चश्मे के स्थानीय उम्मीदवार का नाम पढ़ने की कोशिश करते हैं. वे अटकते हैं, हकलाते हैं. नतीजतन नामों का गलत उच्चारण कर जाते हैं और श्रोताओं में ठहाके लगते हैं.

यह गलती बार-बार दोहराई जाती है और उनका करिश्मा फीका पड़ने लगता है. राजनैतिक विरोधियों को चित और श्रीताओं को मंत्रमुग्ध करने वाली उनकी वाक्पटुता और कटाक्ष अब नजर नहीं आते. हमेशा जनता को आसानी से उपलब्ध रहने वाले चंद्रशेखर जनता से दूर हो गए हैं. खुली जीप की जगह वे बंद कारों में घूमते हैं. हैरानी होती है कि क्या लड़ाई शुरू होने से पहले ही उन्होंने हार मान ली है?

• अगली सुबह इसका जवाब मिल जाता है. खराब मौसम के कारण उनका बोइंग-737 बागडोगरा में ही उतरने को मजबूर हो जाता है और उनकी 14 जनसभाएं रद्द करनी पड़ती हैं. चंद्रशेखर

मर्यादाओं से बंधकर लोगों से दूर हो गए हैं.



अपार्टमेन्ट्स लैने का एक और अवसर

अपार्टमेन्टस का विवरण

विवरण	सम्पत्ति श्रेणी कोड	कवर्ड एरिया (वर्ग मी. में)	अपार्टमेन्ट्रम का मूल्य लगभग रु.	पंजीकरण धनर्गाश + क. 20.00
ते कमरे का अपार्टमेंट (दो कमरे, विक्री/डार्यानंग व सुविधायें)	630	84.72	6,03,000/-	60,320/-
ीन कमरे का अपार्टमेंट (दो कमरे, होंड्रेंग/डार्यानंग लाज व सुविधायें) वार कमरे का अपार्टमेन्ट (तीन कमरे,	640	113.84	8,10,000/-	81,020/-
अपाटमन्ट (तान कमर,	650.	134.24	9,98,000/-	99,820/-

- यनाट प्लेस से केवल 10 मिनट दूरी पर
- चारों तरफ हरियाली व सन्दर वातावरण
- योजना का सरुचिपूर्ण ढंग मे निर्माण
- दिल्ली मेट्रोपोलिटन ऐरिया के अन्तर्गत
- समपूर्ण आवासीय स्विधाओं से यक्त

भगतान 4 छैमाही किस्तों में देय

कब्जा 2 वर्षों में

आर.बी. मौर्य

ाजनीति

जंतिम

करते हैं.

से फिर

अगली

ाले दिन है. वे 12

न लौटते

स्टुडियो फाइलें

होता है. थकाऊ

लेकिंन

लगा है.

ही फट्ने

वर्ष के ते हैं. वे है, मेरी

आवाज



प्रभनाथ मिश्र

अपार्टमेन्ट्स सरकारी कम्पनियों एवं कोऑपरेटिव सोसाइटी के लिए भी उपलब्ध

## ाजियाबाद विकास प्राधिकरण

एक सुन्दर शहर-हमारा सकल्प

<sup>ी पुस्तिका</sup> ओरियण्टल बैंक ऑफ कार्मस की निग्नीलिखत शाखाओं से रु० 50 /-का नकब भुगतान करके प्राप्त की जा सकती है। तथा डाक द्वारा रु० 60/- का मनीआर्डर भेजकर, ेत्र वैंक ऑफ कार्मस, श्री 193 राहूल पैसस, लोहिया नगर, गाज़ियाबाद से मंगाई जा सकती है!

पिन्टल बैंक ऑफ कामस

भार विशेष भारत भारत भारत पारत के किल्ली : ए-३०-३३ प्रथम तल • कनाट प्लेस, प्रिया सिनेमा काम्पलेक्स • प्रथम तल, बसन्त लोक, बिस्सी : दरियागंज, नेताजी सुभाष मार्ग विशेष के किल्ली : प्रथम के किल्ली : ए-३०-३३ प्रथम तल • कनाट प्लेस, प्रिया सिनेमा काम्पलेक्स • प्रथम तल, बसन्त लोक, बिस्सी : दरियागंज, नेताजी सुभाष मार्ग विशेष के किल्ली : प्रथम के किल्ली : ए-३०-३३ प्रथम तल • कनाट प्लेस, प्रिया सिनेमा काम्पलेक्स • प्रथम तल, बसन्त लोक, बिस्सी : दरियागंज, नेताजी सुभाष मार्ग ि भाग प्राप्त काहिया नगर (राहल पेलस), नई दिल्ला : ए.30-33 प्रथम तल ● कनाट प्राप्त प्रथम ताला काहित क**नकत्ता : 25 धापर हाउस, ब्रेबोर्न रोड, अमृतसर** : सीविल लाइन क्वीन्स रोड भाग काहित भाग वाजार, पांटयाला : दी माल, चण्डीगढ़: क्षेक्टर-|7 बी, मेरठ : मदर बाजीर, **लखनक 94, महित्मा गोधि मीग, हजरत गिल्लाका** काहित माल।



Digitized by Arya San क्रांतिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया विश्वास्त्र

# हर दर पे दस्तक

# हर फन का सहारा

कहीं लोकप्रिय या ताकतवर जूझ रहे हैं, कहीं नेता के मुकाबले अभिनेता खड़े हैं, कहीं पुराने, मंजे हुओं के सलमानों जि चला सामने नौसिखुए जोर आजमा रहे हैं तो कहीं निष्ठावान के आगे दलबदलू ताकत दिखा रहे हैं. किसी भी हें वोट दल को बहुमत न मिलने की आशंका के कारण ऐसी भिड़त दिलचस्प हो उठी हैं. 'इंडिया ट्डें' ने देश के तोसा करें कुछ ऐसे ही मजेदार मुकाबलों का जायजा लिया है. ड के बा तपाकी

वाराणसी धर्मक्षेत्रे क्रुक्षेत्र

यह क्षेत्र दो कारणों से प्रतिष्ठा का बन गया है. पवित्र धार्मिक स्थल होने के कारण भाजपा यहां से जीतने को बेचैन है, तो त्रिपाठी परिवार (कमलापित और लोकपित) का गढ़ माने जाने वाले इस क्षेत्र पर इंका कब्जा जमाना चाहती है. पर अब इसमें तीसरा कारण भी जुड़ा है. यहां के पिछड़ों में कम्यूनिस्टों का

आधार मजबूत हुआ है. इस लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले कोल असंला और गुंगापुर विधानसभा क्षेत्रों में वाम-पंथियों का अच्छा असर है.

और युद्ध का शंख बजने के साथ ही प्रदेश के पूर्व पुलिस प्रमुख श्रीणचंद्र दीक्षित और पूर्व मंत्री लोकपति त्रिपाठी गुत्थमगुत्था हो चुके हैं. दीक्षित को राम का भरोसा दिख रहा है तो त्रिपाठी को ठोस मुस्लिम वोटों का. जनता दल ने यह सीट माकपा के लिए छोड़ी है क्योंकि उसे मुस्लिम बोट मिलने की उम्मीद है.

दीक्षित की असली मुश्किल उनके बाहरी होने से है, जबिक पहली बार लोकसभा का जुनाव लड़ रहे लोकपति इस क्षेत्र की गली-गली को जानते हैं: और फिर उन्हें अपने पिता कमलापित के नाम का भी सहारा है जिन्होंने कार सेवा का विरोध किया था.

माकपा 🦟 के 🕝 उम्मीदवार राजिकशोर गंगापुर से विधायक हैं और जाति से कुर्मी हैं. जब

दोनों दिग्गज दरवाजे-दरवाजे पहुंचने लगे, तव तक राजिकशोर का हंका ने अभियान ठीक से गुरू नहीं हुआ था. ऐसे में वे दीक्षित और त्रिपाठी किट देने के बीच बराबरी का मुकाबला होने पर पिछड़े वोटों और अपने सने विवा गंगापूर और कोल असला विधानसभा क्षेत्रों के वोटों के सहारे जीत हुने तो पर की आस लगाए हुए हैं. पर फिलहाल तो यह बात दूर-दूर तक संभव नहीं लगती.

यहां का चुनाव निश्चित रूप से सांप्रदायिक रूप लेगा और फिर यहां के कुल 10 लाख मतदाताओं के 13 फीसदी मुस्लिम वोट महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे. अगर ये वोट थोक भाव से त्रिपाठी को लकत्ता उ मिले तो इसकी प्रतिक्रिया में हिंदू वोट दीक्षित को जा सकते हैं अगर मुसलमानों के वोटों के कारण त्रिपाठी के हिंदू वोट खिसके,

जिसकी ज्यादा संभावना है, तो उन्हें मुश्किल पड़ सकती है. दीक्षित और त्रिपाठी दोनों ही इन वोटों का महत्व जानते हैं. दीक्षित अपने भाषणों में कहते हैं, 'मुस्लिम भाइयो, राजनैतिक पार्टियों के रंगीन चश्मों से नहीं, अपनी आंखों से हमें देखिए. हम अपने मुद्दे पर लड़ रहे हैं. पर हम आपके खिलाफ

ाजपेयं

नके खिल ोली में ड

वाशी म कते हैं. ह फीसदी वाजपेयी

वरावर

र्मिनेत

-पेक्षा

भ वाला

बियों में

<sup>जह</sup> यह

गरराष्ट्री

भिनेता ि

अपना प्र

र्धी उन्हें

गेई कोर व

े पश्चिम

गह है उ एने की ि

ोटी और

हेपार्टी य

कलकत्त

भगढ़ मा

म्मीदवार

नाव में

ीले अशोव

अटखनी

ने में विध

1987 के

गर पर

विशे वाम

香意.

त्रिपाठी लेकिन लोकपति मुसलमानों के वोट के मामले मे अत्यधिक सावधानी बरत रहे हैं. अगर करीब 55 फीसदी अगड़ों के वोट इसकी प्रतिक्रिया में बदल गए तो लेने के देने पड़ जाएंगे. माकपा के राजिकशोर मुख्यतः 16 प्रतिशत कुर्मी बोटों पर निर्भर हैं. वे राष्ट्रीय मोर्चे के समर्थन के कारण मुसलमानों के वोटों की भी आस लगाए हुए हैं. चूंकि एवीं उत्तर प्रदेश की इस ह्दयस्थली पर इंका और भाजपा के दांव वहुत ऊंचे हैं इसलिए लड़ाई घमासान और खर्चीली होगी.



भाषण देते दीक्षितः जय राम जी की

उहिया ट्रें • 31 मई 1991

सी भी

देश के

न्शोर का

क संभव

भौर फिर

तम वोट

सकते हैं

खिसके,

r है, तो

नती है.

ों ही इन

. दीक्षित

हते हैं,

दूसरी

रंगीन

आंखों से

पर लड़

खिलाफ

त्रिपाठी

ामले में

रहे हैं

गड़ों के

में बदल

जाएंगे.

व्यतः 16

नर्भर है

ार्थनं के

ं की भी

क पूर्वी

यस्थली

के दांव

लडाई

गी.

## जिपेयी की राह आसान

्राटल बिहारी वाजपेयी चाहें तो अभी से 'लखनऊ से सांसद' में के लैटरहैंड छापने के आदेश दे सकते हैं. विपक्षी दलों ने के खिलाफ कमजोर-से प्रत्याशी खड़े कर यह सीट मानो उनकी ोती में डाल दी है. पिछली बार यहां से चुने गए जनता दल वाशी मांधाता सिंह ही उनकी सीधी जीत में थोड़ा आड़े आ कते हैं. हालांकि 11 लाख की आबादी वाले इस निर्वाचन क्षेत्र में

फीसदी आबादी मुसलमानों की है.

वाजपेयी के पक्ष में सबसे बड़ी बात यह है कि भाजपा नेताओं में सलमानों को सबसे कम खतरा उन्हीं से लगता है. उदयगंज में ज चलाने वाले जमील अहमद बताते हैं, "हममें से कुछ लोग हुं बोट दे सकते हैं क्योंकि हमारा यकीन है कि हम उन पर तिसा करें तो वे हमारे खिलाफ कोई कदम नहीं उठाएंगे." चुनावी ह के बाकी दो दलीय प्रत्याशी हैं—इंका के रणजीत सिंह और ज्या की हीरा सक्सेना. स्थानीय राजनीति में इनका अस्तित्व न

इंका ने पहले लखनऊ के पूर्व जिला मजिस्ट्रेट ओम पाठक को त्रिपाठी किट देने का फैसला किया था लेकिन एकाएक फैसला बदलकर ौर अपने सने विवाद खड़ा कर दिया. पाठक जब अपना नामांकन पत्र भरने हारे जीत हुंचे तो पता चला कि एक गुमनाम से—रणजीत सिंह को टिकट दे



नामांकन भरते वाजपेयीः झोली भरी

दिया गया है. एक अधिकारी की टिप्पणी थी, "उन्होंने वाजपेयी का रास्ता इतना साफ कर दिया है कि उन्हें लखनऊ आकर चुनाव प्रचार करने की जरूरत ही नहीं. वे राज्य के दूसरे हिस्सों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं." और वाजपेयी फिलहाल कर भी यही रहे हैं.

पाठी को लिकता उत्तर-पश्चिम

### भिनेता ने बांधा समां

भ पेक्षाकृत शांत समझा जाने वाला यह क्षेत्र अचानक ही बियों में आ गया है. इसकी गह यह कि है भाजपा ने तरराष्ट्रीय स्थातिप्राप्त फिल्म भिनेता विकटर बनर्जी को यहां अपना प्रत्याशी बनाया है. और र्धि उन्हें संसद तक पहुंचाने में ोई कोर कसर नहीं छोड़ रही है. र पिश्चम बंगाल में यही ऐसी <sup>गिह</sup> है जहां भाजपा मुकाबला ले की स्थिति में है. यहां राम, ि और इंसाफ के नारे के साथ हैपार्टी यहां की गलियों में उतर 传意

केलकत्ता उत्तर-पश्चिम इंका भगढ़ माना जाता रहा है. इंका भीदवार देवी पाल ने पिछले विव में वाम मोर्चे के समर्थन <sup>लि</sup> अशोक सेन की भारी अंतर <sup>,पट्ख</sup>नी दी थी. इस निर्वाचन व में विधानसभा की सात सीटें <sup>1987</sup> के विधानसभा चुनाव में ीर पर इंका जीती थीं और की वामपंथी दलों के पास गई थीं. हालांकि जद उम्मीदवार दिलीप चक्रवर्ती को वामपंथी दलों का समर्थन प्राप्त है पर उनकी जीत की उम्मीद किसी को नहीं है. पिछले रिकार्ड से इंका का ही पलडा भारी नजर आ रहा है

लेकिन विंक्टर अपने धुआधार चुनाव अभियान से सारे पुराने समीकरण उलटने की कोशिश कर रहे हैं. इसी वजह से देवी पाल

अपनी रणनीति पर नए सिरे से विचार करने को मजबूर हो गए हैं. लेकिन अभिनेता से नेता बने विकटर की जीत की संभावना दूर-दूर तक नहीं है. भाजपा को शहरी व्यापारियों के वोट मिलने की उम्मीद है. यह बंगालियों के क्षेत्रीय पूर्वाग्रहों की भावना को भी भुनाने की कोशिश कर रही है. इसीलिए विकटर ठेठ बंगाली बाबू बन यानी मलमल का धोती-कुर्ता पहन चुनाव अभियान पर निकलते हैं. और उनके भाषण का सारांश होता है, "भाजपा असल में बंगाली पार्टी ही है. इसके मूल बंगाल श्यामाप्रसाद मुकर्जी थे." लेकिन इस लच्छेदार भाषण के बावजूद इंका और वामपंथी दलों के पक्के वोट काटना इतना आसान नहीं है. पश्चिम बंगाल तो राजनैतिक ध्रवीकरण के लिए विख्यात है. फिल्मी सितारे जनता में लोकप्रिय जरूर हैं लेकिन राज्य में फिल्मी सितारों को जिताने की परंपरा नहीं रही है.



विकटर बनर्जी: सितारे गाँवश में

ाध्य प्रदेश

भोपाल पटौदी के पराक्रम

नावी दंगल में तीन दिग्गजों की मौजूदगी के कारण भोपाल की सीट समूचे मध्य प्रदेश में अत्यंत महत्वपूर्ण बन गई है. इंका ने पूर्व क्रिकेट कप्तान और भोपाल राजघराने के नवाब मंसूर अली खां पटौदी को खड़ा किया है, भाजपा ने पूर्व सांसद सुशील चंद्र वर्मा को उम्मीदवार बनाया है. और जनता दल ने केसरिया वस्त्रधारी स्वामी अग्निवेश को टिकट दिया है.

50 वर्षीय 'टाइगर' पटौदी के नाम का चुनाव स्वयं राजीव गांधी ने किया. जाहिर है, आलाकमान की नजर वहां के 17 फीसदी मुसलमान वोटों पर रही होगी. वैसे, पटौदी के आने से संघर्ष काफी दिलचस्प हो गया है. पटौदी पहले एक बार हरियाणा से चुनाव हार चुके हैं. लेकिन वे कहते हैं, ''वह वाकया 20 वर्ष पहले का है और उसका उद्देश्य 'प्रीवीपर्स' के खात्मे का विरोध कंरना ही था.'' लिहाजा वे राजनीति में नए ही कहे जाएंगे.

चुनाव प्रचार के दौरान पटौदी ने कई नई बातें करनी शुरू कर दी हैं. मसलन, गली-मुहल्लों के कम उस्र लोगों को गले लगाकर वे इस तरह के बादे करने लगे हैं, ''अगर मैं जीत गया तो झुगगी-झोंपड़ियों में रहने वालों को 99 वर्षों का पट्टा दे दिया जाएगा,'' आद़ि-आदि. लेकिन पार्टी कार्यकर्ताओं को यह सब नागवार लग रहा है. भाजपा प्रत्याशी वर्मा अपने प्रचार को सामान्य तरीके से चला रहे हैं. वे समर्पित कार्यकर्ताओं के हुजूम, क्षेत्र में अपने काम और एक लाख से भी अधिक कायस्थ वोटों पर निर्भर कर रहे हैं. स्वामी अग्निवेश अपनी पार्टी के लचर संगठन के कारण मुकाबले में नहीं हैं.



पटौदी (ऊपर); वर्मा (दाएं); और अग्निवेशः दिलचस्य मुकाबला

वि खन्ना

जनीति ।

ीट पर र

षा है अं

भीरता

ारावा हिन

न्होंने उसे

ह चुनाव

वाजारों

वह जब

रोजनी यादा बोर

ोरा किया

रेलाते औ

ही महिल

गनता हूं

ड़ने वाले या इसलि

हा जा र

ते हैं. रुप

या है, ले

रिकरार है

गेशिश क जिए स

जापुर

मजो

ने का व

(तरह

गेडकर र

शेली में ज

हें सीट न

गर् 1971

भु दंडवते

िनंडवते । हों से पां-

हे वे इस

वे लाएं

वदा पूरा

ोत के प्रत

ी समु लाके में ल

गातार



रायपुर

## उछलकूद भारी पड़ सकती है

जनैतिक दृष्टि से देखा जाए तो मध्य प्रदेश में सबसे रोचक मुकाबला रायपुर में होगा. यहां से इंका ने पूर्व

विदेशमंत्री विद्याचरण शुक्ल को खड़ा किया है. विद्याचरण शुक्ल दल बदलने की कला में माहिर हैं. उन्होंने इंका से जनमोर्चा और जनता दल से समाजवादी जनता दल तक की कूद लगाने के बाद ऐन चुनाव के वक्त 'घर' लौटने का निर्णय किया और अर्जुन सिंह जैसे विरोधियों के बावजूद टिकट हासिल कर लिया. विद्या भैया के रूप में प्रसिद्ध शुक्ल को टिकट दिलाने में उनके बड़े भाई और पूर्व मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल ने खासी मदद की क्योंकि विपक्ष के नेता के नाते मध्य प्रदेश में

टिकट के बंटवारे में उनका बड़ा हाथ था. 13 वर्षों के अंतराल के बाद एक खेमे में दोनों भाइयों की मौ दूदगी ने राज्य में इंका के भीतर की गुटबाजी को एक नया आयाम दे दिया है.

शुक्ल ने महासमुंद निर्वाचन क्षेत्र को इस बार छोड़ दिया है, जहां से वे पिछली बार जनता दल के टिकट पर 12,000 वोटों से जीते थे. इस बार रायपुर में भी उनकी स्थिति बहुत मजबूत नहीं

और रायपूर से वे पहले दो बार खड़े हुए, जिसमें से एक बार वे विजयी रहे हैं. उनके प्रतिद्वंद्वी निवर्तमान भाजपा सांसद रमेश वैस अपनी जीत को लेकर आश्वस्त है. पिछले चुनाव में वे 84,000 वोटों से विजयी रहे थे. वैसे राजनैतिक भाजपा अस्थिरता के शुक्ल के रिकार्डों का भरपूर फायदा. उठाने की कोशिश कर रही है. इसलिए लगता यही है कि चुनाव में बाजी मारना उनके लिए बहुत आसान् नहीं होगा.



वी.सी. शुक्लाः दलबदल का रिकॉर्ड

28 इंडिया टुडे • 31 मई 1991

ल्लो

ई दिल्ली सतारे को पसीना

 लंबी दूरी तय कर चुके हैं. कल के रूमानी हीरो राजेश व सन्ना को, जिनका वैवाहिक जीवन सुखी नहीं रहा, अंततः जनीति की शरण में आना पड़ा. उन्हें नई दिल्ली की प्रतिष्ठित हि पर भाजपा के लालकृष्ण आडवाणी के खिलाफ खड़ा किया वा है और उन्होंने इस लड़ाई को दूसरों के मुकाबले ज्यादा भीरता से लिया है. उनके एक युवा प्रशंसक ने जब टीवी हारावाहिकों में काम करने की अपनी महत्वाकांक्षा बताई तो होंने उसे फटकारते हुए कहा, "अभी एक्टिंग की बात मत करी, ह चुनाव का समय है." वे मतदाताओं को पटाने के लिए दिल्ली वाजारों और गलियों में पसीना वहा रहे हैं. एक शनिवार की

वह जब वे सरकारी अधिकारियों की एक कॉलोनी रोजनी नगर पहुंचे तो वहां गहमागहमी मच गई. गदा बोलने की जगह उन्होंने कॉलोनी के हर खंड का ता किया. वे हाथ जोड़ते, थोड़े-थोड़े अंतराल पर हाथ लाते और किसी भी दरवाजे पर रुक जाते. उन्होंने एक ही महिला से कहा, "मैं आपके पास आया हूं और मैं ानता हूं कि आप मुझे नहीं भगाएंगी.'' उन्होंने रास्ते में ड़ने वाले हर मंदिर में जाने का नियम बना लिया है. वा इसलिए कि उनके प्रतिद्वंद्वी को राम का अवतार हा जा रहा है? इस सवाल के जवाब में वे सिर्फ मुस्करा ते हैं. रुपहले परदे से उन्हें गायब हुए काफी अरसा हो या है, लेकिन महिलाओं और युवकों पर उनका जादू एकरार है. वे महिलाओं को प्रभावित करने की भरपूर गेणिण करते हैं. महिलाओं का दिल जीतना अभिनेताओं हिलए सबसे आसान काम जो होता है.



आडवाणी (ऊपर); और खन्ताः रंगारंग लड़ाई

तराल के

इंका के

दिया है,

वोटों से

त नहीं. पहले दो

में से एक

हैं. उनके

भाजपा

नी जीत

स्त हैं.

84,000

थे. वैसे

जनैतिक

ल के

फायदा.

**कर रही** 

यही है

मारना

आसान

शः

मजोर भी भारी

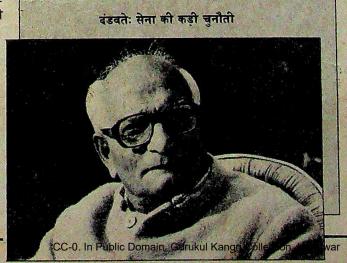
का का गढ माने जाने वाले राज्य महाराष्ट्र में इस रतरह का रिकार्ड विचलित कर देने वाला है. 1952 को

गड़कर यह लोकसभा सीट णातार समाजवादियों की ोली में जाती रही है. पहले हिसीट नाथ पै के पास थी <sup>गर</sup> 1971 से पूर्व वित्तमंत्री भें दंडवते के पास है. 1989 वंडवते इस वादे के साथ हों से पांचवीं बार जीते थे े वे इस क्षेत्र में कोंकण वे लाएंगे. उन्होंने अपना <sup>ोदा</sup> पूरा किया और आज समुद्रतटीय देहाती ताके में लगे साइनबोर्ड इस

के प्रतीक हैं कि रेलवे

का काम शुरू हो गया है. क्या विकास का स्पष्ट प्रमाण हिंदुत्व की भावनात्मक अपील पर भारी पडेगा? शिवसेना ने हाल के वर्षों में गोवा से लगे इस निर्वाचन क्षेत्र में अपना प्रभाव काफी बढ़ाया है. पिछले चुनाव में गुप्त सहमित के आधार पर शिवसेना के कार्यकर्ताओं ने इंका के खिलाफ दंडवते के लिए काम किया था. और इस बार, इंका द्वारा सेना के एक युवा मेजर को उम्मीदवार बनाए जाने से पार्टी के असंतुष्ट कार्यकर्ता शिवसेना के उम्मीदवार वामन महादिक के लिए काम करते बताए जा रहे हैं. महादिक ने

1989 में दक्षिण मध्य मुंबई से ताकतवर श्रमिक नेता दत्ता सामंत को हराया था लेकिन अपने खिलाफ दायर एक चुनाव याचिका से पैदा हुई समस्याओं के बाद वे कोंकण आ गए. पिछली बार दंडवते ने एक स्थानीय राजा को हराया था. इस बार उनका मुकाबला ताकतवर शिवसेना से है. यहां तक कि कमजोर उम्मीदवार भी उनके लिए परेशानी खड़ी कर रहा है.



अ मई 1991 ♦ इडिया टुडे 29

प्रणांत पंजियार

Digitized by Arva Samai Foundation Chennal and eGangotri रहा है फिर चौटाला का आतंक भी उनके लिए भारी पड़ रहा है.

रोहतक

## तूफान अब महज गर्दोगुबार

क के जिस तुफान ने 1989 में हरियाणा में सारे तिव उसाड़ दिए थे वह इस बार मात्र धूल का बवंडर भर रह गया है. रैलियां कभी-कभार होती हैं और उनमें भी कम ही लोग आते हैं. मर्सिडीज-2,400 में देवीलाल गांवों में पहुंचते हैं और ग्रामीण इलाकों और किसानों की बदहाली के अपने प्रिय विषय पर

ही बोलते हैं. लेकिन इस पर यकीन करने वाले कम ही हैं.

और जैसे-जैसे देवीलाल का कद घट रहा है, वैसे-वैसे चुनावी चुनौती बढती जा रही है इंका के उम्मीदवार भूपिदर सिंह हुडा ताऊ द्वारा रोहतक की सीट जीतने के बाद भी यहां से इस्तीफा देकर सीकर की सीट से सांसद रहने के मसले को उठा रहे हैं. महम की हिंसा का हवाला देते हुए वे कहते हैं, 'देवीलाल-

ने नोट छापने वाली मशीन देने की बात की थी लेकिन भेज दी मशीनगनें." महम का भूत देवीलाल का पीछा नहीं छोड



हुडा (बाएं); और देवीलालः पुराना असर खत्म

हरियाणा विकास पार्टी और जनता दल के गठबंधन ने भी एक जाट, इंदर सिंह ढल को टिकट दिया है. दोनों ही खेमे देवीलाल के ज़ा जाट बोट बैंक में सेंध की आस लगाए बैठे हैं. यहां जाट बोटरों की कमीद संख्या 39 फीसदी है. पिछड़ों की संख्या 40 फीसदी है.

देवीलाल के खेमे में इस बात की उम्मीद है कि शहरी बोट उनके दोनों प्रतिद्वंद्वियों में बंटेंगे. 1989 में भी उन्हें शहर में बहुत इस व कम वोट मिले थे लेकिन गांव के वोटों ने ही जिता दिया था. लेकिन रिपार्टी इ इस बार ग्रामीण मतदाताओं के कुछ तबके भी नाराज हैं. हाल में मतलवं । जब वे रोहतक गए थे तो गांव के बड़े-बूढ़ों ने कलोई विधानसभा सीट से समाजवादी जनता पार्टी का उम्मीदवार बदलने की मांग ने जगह य की. जब उन्होंने असमर्थता बताई तो लोगों ने उनके मूंह पर ही तेपी. ठाकु कहा, "अगर आप यह नहीं कर सकते तो हम उसको हरा देंगे." ावंत सिन ताऊ में अट्ट निष्ठा अब पुराने जमाने की चीज हो गई है. जबत ट्रेड

जनता द

वके हमले

व्यापक नि

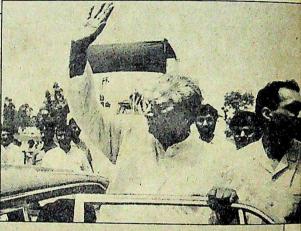
लेकिन

नती. ऐसे

वर (जो

हैं. लेकि

न फंसा



बडगरा

## अब चमत्कार का ही सहारा

यह निर्वाचन क्षेत्र गोल-मटोल के.पी. उन्नीकृष्णन को लगातार पांच बार संसद में भेजने के कारण पूरे देश का ध्यान अपनी ओर आर्कीयत करता रहा है. यह सीट उन्नी के लिए इतनी मुरक्षित रही है कि उन्होंने इसकी ओर ध्यान देने की जरूरत ही नहीं समझी. उनका मानना है

संसद और राष्ट्रीय राजनीति में उन्हें इससे कही बड़ी भूमिका निभानी है. दरअसल, पिछले लोकसभा चुनाव में उन्नी ने ज्यादातरहा समय देश की दूसरी जगहों पर राष्ट्रीय मोचि के अभियान में लगाया था. इसका फायदा भी मिला. वे कोई बहुत प्रभावशाली नेता. नहीं थे, लेकिन मंत्रिमंडल में उन्होने संचार विभाग हथिया लिया. उन्होंने अपने

निर्वाचन क्षेत्र पर पहली बार घ्यान दिया और दूरसंचार तथा परिवहन तंत्र में सुधार किया.

लेकिन इस बार उन्नी मुश्किल में हैं, अपनी विचारधारा की ताक पर रखकर इंका के नेतृत्व वाले संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे ने, जिसमें इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग भी शामिल है, निर्दलीय उम्मीदवार रत्न सिंह का समर्थन करने के लिए भाजपा से हाय मिला लिया है. मजाक में एक आदमी की पार्टी कही जाने वाली कांग्रेस (स) के लिए एकमात्र सुरक्षित सीट बडगरा थी. लेकिन इस बार यह उसके हाथ से खिसकती दिख रही है. कोई चमत्कार है उन्नी को संसद में वापस ला सकता है. पांच बार सांसद चुने जान

वाले उन्नी के लिए सचाई काफी तकलीफदेह साबित हो सकती है. दरअसल, लोगों के चहेते शस्स की उखाड़ फेंकने के लिए सिर्फ तालमेल अनैतिक जरूरत होती है. 1989 -में उन्नी सिर्फ 8,209 बोटों के अंतर से जीते थे. भाजपा उम्मीदवार को 45,558 वोट मिले थे. दोनों उन्नी को मात देने को इतने वेचैन हैं कि उन्होंने अपने उम्मीद-वारों को हटा लिया है.



इंडिया दुई 🔸 31 मई 1991

ोलाल के जा

भी एक

हरी बोट में बहुत ा. लेकिन हाल में धानसभा की मांग पर ही

रा देंगे." मोद पुष्करणा

र तथा ारा को गेर्चे ने, र्वलीय से हाथ

वाली **न** इस नार ही ने जाने सचाई

साबित असल, स को

, सिर्फ 89 में हों के

भाजपा 8 वोट ते को

चैन हैं म्मीद- ५

रहा है.

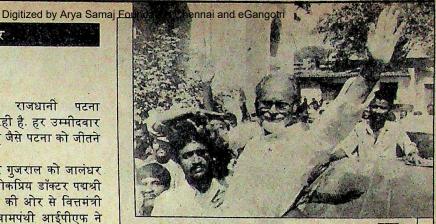
## विरोकि स्मीदवारों की चकाचौंध

मौर्य साम्राज्य की राजधानी 'क्तिशाली इस बार घनघोर चुनावी संघर्ष देख रही है. हर उम्मीदवार र पार्टी इसी अंदाज में चुनाव में उतरी है जैसे पटना को जीतने मतलबं विहार को जीतना है.

जनता दल ने पूर्व विदेशमंत्री इंद्र क्मार ग्जराल को जालंधर जगह यहां खड़ा किया है तो इंका ने लोकप्रिय डॉक्टर पद्मश्री नी. ठाकुर को. समाजवादी जनता पार्टी की ओर से वित्तमंत्री वांत सिन्हा मैदान में हैं जबिक अति वामपंथी आईपीएफ ने व्यत ट्रेड यूनियन नेता योगेश्वर गोप को खड़ा किया है. अब इन के हमलों से अपने दुर्ग के बचाव में लगे हैं भाजपा के लेखक-<sub>व्यापक</sub> निवर्तमान सांसद शैलेंद्र कुमार श्रीवास्तवः

नेकिन विहार में राजनीति सिर्फ योग्यताओं पर नहीं तती. ऐसे में मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव भले ही गुजराल को बर (जो पंजाब में अहीरों जैसी जाति है) बताएं, वे बाहरी हैं. लेकिन गुजराल ने खुद सफाई दी कि "मुझे जाति विवाद न फंसाएं. मैं जनता दल की नीतियों और कार्यक्रमों के धार पर वोट मांगने आया हुं."

गुरू में बहुकोणीय लग रहा मुकाबला धीरे-धीरे गुजराल नाम ठाकुर का मुकावला होता जा रहा है. शिक्षकों और यापकों में थोडा अलोकप्रिय हो गए श्रीवास्तव तीसरे नंबर चल रहे हैं.



गुजराल (ऊपर); और सिन्हाः जाति हावी





सूर्यदेव (ऊपर); और यादवः खूनी लड़ाई



### ताकत की आजमाइश

रा लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र में पड़ने वाला डांवर अस्ति लाकसमा अवस्ति । पहले तक गुमनाम था. लेकिन अव यह बिहार के रक्तरंजित चुनावी नक्शे के शीर्ष पर पहुंच गया लगता है. वजह: 1989 के चुनाव में यहां जमींदारों की निजी सेना ने बुथों पर कब्जा रोकने की कोशिश करने वाले इंडियन पीपुल्स फंट के कम-से-कम 23 कार्यकर्ताओं को मौत के घाट उतार दिया था. आईपीएफ ने अंतत: आरा की सीट जीत ली थी.

अब यह चुनाव अभियान का श्रीगणेश करने की आदर्श जगह वन गया है. आईपीएफ के अध्यक्ष नागभूषण पटनायक ने निवर्तमान सांसद और पार्टी उम्मीदवार रामेश्वर प्रसाद का चुनाव अभियान शुरू करने के लिए अपने पार्टी कार्यकर्ताओं के मार्च का नेतृत्व किया. 'धनबाद के डॉन' और समाजवादी जनता पार्टी (सजपा) के उम्मीदवार सूर्यदेव सिंह ने भी इसी जगह से अपना अभियान शुरू किया. और राजपूतों में उत्साह भर दिया. यहां राजपूतों और यादवों के बीच वर्चस्व का संघर्ष चलता रहता है. दिग्गज यादव नेता रामलखन सिंह यादव ने भी, जिन्हें जनता दल ने इंका से तोडकर अपने में मिला लिया और यहां से अपना उम्मीदवार बनाया, इस गांव का दौरा करने में देर नहीं की.

आईपीएफ से यह ऐतिहासिक सीट छीनने के लिए सिंह और यादव के मैदान में होने से लड़ाई दिलचस्प तो होगी ही, हैरतअंगेज भी होगी. यहां के एक मतदाता कहते हैं, "यह पहला मौका है कि हर उम्मीदवार को उपयुक्त प्रतिद्वंद्वी मिला है." जाहिर है, सभी तीनों उम्मीदवार--आईपीएफ के प्रसाद, सजपा के सिंह और जद के यादव इंकाई उम्मीदवार श्रीकांत निराला पर भारी हैं..



Digitized by Arya Samai Foundation Chennai and eGangotri विधानसभाओं के चुनाव

# तख्त हथियाने की तीखी लडाई

पांच राज्यों की विधानसभाओं के चुनाव का अभियान जैसे-जैसे तेज हो रहा है, इंका, राष्ट्रीय मोर्चा और भाजपा अपनी-अपनी जमीन पुख्ता करने में व्यस्त हैं





विन्ह पर उम्मीदव भीट के तिहाजा, गया लग

> (जिसमें इल से ( इई). इन निर्वाचन सवर्ण

अन्य पिट

इतमें से व जात पंजिमार

और समा

योंकि उ

काने :

गतियों व

नेसदी सी

ग ही मि

पछड़ी जा

उसके पास

गग नहीं

गकी सभ

क्ताह में

<sup>[यकंडा 3</sup> <sup>1</sup>मर्थन भ

ोलांकि ऐ

ममव भ

नेहद्ध पड़े

न्ता दल

लाई है.

ोट बैंक, ग

शे हैं. अब

गिने बोटो

गोक्षण भ

लहाल त

कुल नि

मुलाय

इस स

(बाएं) नारायण दत्त तिवारी; और मुलायम सिंह यादवः कठिन चुनौती का सामना

उत्तर प्रदेश

# गही के दो दावेदार

मुकाबला इंका-माजपा में, जद तीसरे स्थान पर

उत्तर प्रदेश में अजीब नजारा देखने को मिल रहा है. भाजपा, इंका और जनता दल तीनों प्रमुख पार्टियों ने विधानसभा चुनावों पर लोकसभा के मुकाबलों से भी ज्यादा जोर लगा दिया है. लोकसभा की 85 सीटों के लिए प्रचार का काम अभी औसत रफ्तार पर ही था कि प्रत्येक पार्टी के उम्मीदवार विधानसभा की सीटों के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाने लगे.

कई जगहों पर तो यह भिड़त लोकसभा से भी अधिक महत्वपूर्ण हो गई है. और काफी हद तक इसका कारण मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव की छवि है. मुलायम सिंह को चित करने के लिए हर पार्टी किसी न किसी रूप में सक्रिय है. यादव के तमाम शत्रुओं ने उन पर हमले इसलिए भी तेज कर दिए हैं क्योंकि यादव की स्थिति दिन पर दिन कमजोर होती रही है. अभी अप्रैल तक यादव अल्पमत सरकार के मुख्यमंत्री थे और अब वे 425 सदस्यों वाली विधानसभा में कुल जमा 90 विधायकों के नेता हैं. उनके विरोधियों का अंदाजा है कि मतदान के समय तक उनकी स्थिति और भी खराब हो जाएगी.

वाकी सभी दलों की तुलना में भाजपा प्रचार के मामले में कम-से-कम एक महीना आगे है. भाजपा के प्रचार का दायरा और एफ्तार दोनों ही राज्य के लिए अनोसे हैं. विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों में दूरदराज के 23 गांवों की यात्रा से साफ जाहिर हुआ कि चारों ओर दीवारों पर भाजपा के झंडे, पोस्टर और नारे विराजमान हैं. यह इस बात का प्रतीक है कि पार्टी ने कार सेवा आंदोलन और अयोध्या आंदोलन के खिलाफ यादव की सख्ती से उपजे विद्रोह को किस तरह एक सशक्त संगठन, का रूप दे दिया है. वाराणसी के एक प्राथमिक स्कूल शिक्षक रतनलाल शर्मा, जिनका परिवार इंका से भाजपा की ओर मुड़ गया है, कहते हैं, "हम मुलायम सिंह यादव के शुक्रगुजार हैं कि उन्होंने हिंदू समुदाय को गहरी निद्रा से झकझोरकर जगा दिया है." और यह चमत्कार पिछले दस महीने के

अंदर ही हुआ है.

दूसरी तरफ इंका जहां राज्य स्तर पर अपनी कार्यकारिणी गठित नहीं कर सकी, वहीं जनता दल के लिए राज्य स्तर पर संगठनात्मक सहयोग जैसी कोई बात नहीं है, जनता दल ने संगठन बनाने जैसी कोई पहल भी आज तक नहीं की.

लेकिन ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि भाजपा की कोई समस्या नहीं. मिसाल के तौर पर, पार्टी ने वाराणसी की गंगापुर सीट के लिए अपना चुनाव चिन्ह एक दान बहादुर सिंह नामक वकील को दे दिया. चुनाव मैदान में एक और दान बहादुर हैं जिन्होंने चुनाव

मुख्य रुझान

भाजपा प्रचार अत्यंत व्यापक

🔳 इंका जोड़-तोड़ में व्यस्त

जनता दल असंगठित
 और बदहाल

मुलायम सिंह खतरे में

32 इंडिया दुई • 31 मई 1991

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri बिन्ह पर अपना दावा जताया. और नतीजा यह है कि अब दोनों ही तम्मीदवार पार्टी चुनाव चिन्ह के बगैर ही चुनाव लड़ रहे हैं. इस मीट के लिए भाजपा के ही तीन अन्य विद्रोही उम्मीदवार हैं. तिहाजा, इंका उम्मीदवार के लिए संघर्ष अब काफी आसान हो गया लगता है. पर भाजपा की समस्याएं इंका से जटिल नहीं हैं /जिसमें अंत तक उम्मीदवार वदले जाते रहे) और न ही जनता हल से ( जिसके उम्मीदवारों के नामों की सूची काफी देर से जारी 🕵). इन दोनों ही पार्टियों के ढीलेपन के कारण तकरीबन हर तिर्वाचन क्षेत्र में इनके कम-से-कम दो विद्रोही उम्मीदवार खड़े हैं.

सवर्ण जातियों की पार्टी वाली छवि दूर करने के लिए भाजपा ने बन्य पिछड़ी जातियों के उम्मीदवारों को 26 फीसदी सीटें दी हैं: तमें से करीब 60 फीसदी उम्मीदवार कुर्मी हैं. इसलिए जनता दल



इटावा में विहिप रैली: राम का भरपूर आसरा

और समाजवादी जनता पार्टी को नुकसान उठाना पड़ सकता है, योंकि उनका वोट बैंक अन्य पिछड़ी जातियां ही हैं. देखादेखी में का ने भी अपनी परंपरागत जातीय छवि से हटकर पिछड़ी गितियों को 1989 के चुनावों के 11 फीसदी से बढ़ाकर इस बार 18 निसदी सीटों की उम्मीदवारी दे डाली है.

में कम-

रा और

क्षेत्रों में

रों ओर

हैं. यह

न और

द्रोह को

ने एक

इंका से

पादव के

नेद्रा से

महीने के

तर पर

र सकी,

तर पर

नहीं है.

ई पहल

तता कि

पाल के

र सीट

बहादुर

मैदान

चुनाव

इस समय राष्ट्रीय स्तर पर जनता दल को एकमात्र लाभ मंडल ा ही मिलेगा. मुश्किल सिर्फ यही है कि दूसरी पार्टियों ने भी अन्य पछड़ी जातियों को ला खड़ा किया है. जहां तक इंका का सवाल है, असके पास अब मतदाताओं के लिए स्थायित्व के सिवा कोई और 🔟 नहीं बचा और उसका भी कोई खास असर नहीं दिखता.

मुलायम सिंह यादव की जसवंत नगर-इटावा सीट को छोड़कर ोकी सभी प्रमुख मुकाबले वॉकओवर साबित होंगे. पर अंतिम <sup>फ्</sup>ताह में काफी कुछ हो सकता है क्योंकि इंका हमेशा की तरह हर् यकंडा अपनाएगी. केवल 16 फीसदी मुसलमान मतदाताओं के मर्थन भर से इंका की स्थिति काफी मजबूत हो सकती है. और विलंकि ऐसा होने के ज्यादा आसार नहीं दिखते पर बात बिलकुल मिमव भी नहीं कही जा सकती मुसलमानों का वोट भाजपा के किंद्ध पड़ेगा और उनमें यह बात घर करती जा रही है कि अगर निता दल जीतने की स्थिति में न हो तो इंका को समर्थन देने में ही लाई है. इसी लिहाज से कई निर्वाचन क्षेत्रों में इंका के पारंपरिक ीट वैंक, खास तौर से हरिजन, एक बार फिर इंका की ओर झुकने भे हैं अब इंका के सामने सबसे बड़ी चुनौती धुआंधार प्रचार और मने वोटों की संख्या बढ़ाने की है.

कुल मिलाकर उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों में शक्ति-भिक्षण भाजपा और इंका के बीच ही लग रहा है और जनता दल लिहाल तीसरे स्थान पर है

### अंतर्कथा इंद्रजीत बधवार

लकृष्ण आडवाणी ने अपनी मूंछों पर हाथ फेरा और सीधे मेरी आंखों में देखते हुए कहा, ''मैं इसकी अनदेखी तो नहीं करता. लेकिन छद्य-धर्मनिरपेक्षता के विरुद्ध यह वाजिब हिंदू प्रतिक्रिया है." यह बात करीब दो साल पहले 1989 के चुनावों के बाद की है. वे इस सवाल पर प्रतिक्रिया जाहिर कर रहे थे कि उनके पार्टी के अनेक उम्मीदवारों ने प्रचार के दौरान मुसलमान विरोधी तेवर अपना रखे थे. उस समय तक 'राम-राम' (सामान्य संबोधन) का स्थान 'जय श्रीराम' (उनका नारा) ने नहीं लिया था. तब मैं छुद्म-धर्मनिपेक्षता का अर्थ ठीक-ठीक समझ नहीं पाया था. वृद्धिजीवियों के बीच यह शब्द अभी प्रचलन में नहीं आया था. लेकिन यह जानकर सुखद एहसास हुआ था कि सौम्य और समझदार आडवाणी पार्टी के अन्य नेताओं की तरह ही अल्पसंख्यक द्वेष की निदा करते हैं.

लेकिन रथ पर सवार होकर शायद दुनिया कुछ बदली हुई दिखती हो. पश्चिम उत्तर प्रदेश के एक धूल-धूसरित लेकिन महत्वपूर्ण संसदीय निर्वाचन क्षेत्र में भाजपा के स्वामी चिन्मयानंद विधानसभा क्षेत्र से अपने पार्टी प्रत्याशी के एस. वैश्य के साथ प्रचार कर रहे हैं या यूं कहा जाए कि विश्व हिंदू परिषद उन लोगों के लिए प्रचार कर रही है. जगदगुरु शंकराचार्य सरस्वती महाराज और विहिप के दिग्गज अशोक सिंघल नुक्कड़ सभाओं में सबसे लोकप्रिय वक्ता हैं. जगदगुरु के आणीर्वाद से सभा शुरू होती है. जय श्रीराम के युद्धघोष से उनका हिंदुत्व पर प्रवचन गुरू होता है. फिर सिंघल माइक संभाल लेते हैं. वे लोगों से पूछते हैं, आप जय श्रीराम नारे का अर्थ जानते हैं? इसका अर्थ राम विरोधियों का विनाश है जो इस धरती में विष बेल बो रहे हैं. यह देश रामभक्तों और राम विरोधियों में बंट गया है. रामभक्ति यानी देशभिक्त है और राम विरोधी राष्ट्र विरोधी हैं. अल्पसंख्यक विषाण्ओं की तरह बढ़ते जा रहे हैं. हिंदुओं से परिवार नियोजन के नारे 'हम दो, हमारे दो' को अपनाने को कहा जाता है. अल्पसंख्यक 'हम पांच, हमारे पच्चीस' में विश्वास करते हैं. जगदगुरु और सिंघल धीरे से यह भी कहते हैं कि यह राजनैतिक सभा नहीं है. हम यहां वोट मांगने नहीं आए हैं. हम यहां हिंदू रष्ट्र का निर्माण करने आए हैं और जो एकमात्र पार्टी इसे बना सकती है, वह है भाजपा.

उम्मीदवार भाषण नहीं देते. उन्हें मंच पर बुलाया जाता है और जगदगुरु उन्हें आशीर्वाद देते हैं.

बरेली में लौटें. एक कार्यकर्ता उग्र साघ्वी ऋतंबरा का टेप बजा रहा है. आडवाणी उसे झिड़कते हैं, ''इस बकवास को बंद करो," दिल्ली में केवल रतन मल्काणी धर्मराज्य के प्रति पार्टी के विरोध पर जोर देते हैं. और देण के उन आभिजात्य घरों की बैठकों में जिनके स्वामी या सदस्यों ने नव हिंदूबाद को अपना लिया है, ऋग्बेद के महत्व पर बहस चल रही है. उधर उत्तर प्रदेश के देहातों में धर्मनिरपेक्षता की नाजुक डोर को तार-तार किया जा रहा है.

हरियाणा

### फिर लालन का खेल

बंसीलाल की चुनौती के आगे देवीलाल फीके

र वर्षों की अवधि ने स्पष्ट अंतर ला दिया है. 1987 के हरियाणा विधानसभा चुनाव में युद्ध रेखा बिलकुल साफ खिच गई थी: एक तरफ इंका थी तो दूसरी तरफ देवीलाल के नेतृत्व में विपक्षी ताकतें. इस लड़ाई में इंका को 90 में से पांच सीटें ही मिली. इस बार इंका की जगह समाजवादी जनता पार्टी ने ले ली है लेकिन इस बार विपक्ष विखरा हुआ है और ज्यादातर निर्वाचन क्षेत्रों में बहुकोणीय मुकाबला हो रहा है.

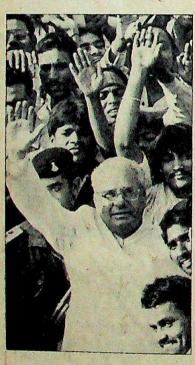
चुनाव मैदान में समाजवादी जनता पार्टी के अलावा इंका, हरियाणा विकास पार्टी-जनता दल गठजोड़ और कुछ ज्यादा ही आत्मविश्वास से भरी भाजपा भी है. लेकिन कोई भी पार्टी दूसरों

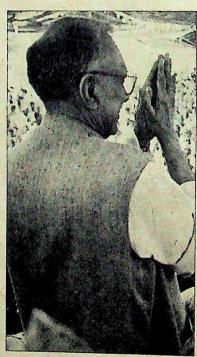
Digitized by Arya Śamaj Foundation Chennal and eGangotri स्वर्ग नेतृत्व का मुद्दा खुली छोड़ रखा है.

उधर, जनता दल के इस फैसले से कि हरियाणा विकास पार्टी के साथ उसका गठजोड़ बहुमत में आया तो बंसीलाल मुख्यमंत्री बनेंगे, राज्य में उसके कार्यकर्ता विमुख हो गए हैं. राज्य के चार वरिष्ठ पार्टी नेताओं ने हाल ही में जनता दल अध्यक्ष एस. आर. बोम्मई को लिखा, ''बंसीलाल के सामने इस तरह से घुटने टेक देने से पिछड़े बर्गों में हमारे वोट बैंक हमसे दूर हो जाएंगे क्योंकि वे बंसीलाल को जरा भी पसंद नहीं करते.''

इंका ने ऐसे कई लोगों को अपना उम्मीदवार बनाया है जो हाल में पार्टी में शामिल हुए हैं. इनमें भंग विधानसभा के अध्यक्ष एच.एस. चड्ढा और 'महम के शिकार' डांगी शामिल हैं. लेकिन भाजपा के सभी 90 सीटों पर चुनाव लड़ने से अधिकांश शहरी सीटें जीतने की इंका की योजना को धक्का लगा है. 1987 के चुनाव में भाजपा देवीलाल से गठजोड़ करके 19 सीटों पर चुनाव लड़ी थी और करीब 10 प्रतिशत वोट हासिल कर उसने 17 सीटें जीती थी.

चुनाव अभियान में स्थानीय मुद्दे प्रमुखता से उठ रहे हैं. बंसीलाल अपनी चुनाव सभाओं में लोगों से पूछते हैं कि वे 'विकास चाहते हैं या विनाश.' उनकी जनसभाओं में भारी भीड़ खिंच रही है







(बाएं से) भजनलाल; बंसीलाल; और देवीलाल: अस्पष्ट स्थिति

से आगे निकलने में सफल नहीं रही है.

नेतृत्व का मुद्दा सभी पार्टियों की मुख्य समस्या रही है. मतदाताओं के मिजाज को देखते हुए देवीलाल ने एक-दूसरे की टांग खींचने वाले अपने दोनों बेटों—ओमप्रकाश चौटाला और रणजीत सिंह को चुनाव मैदान से हट जाने को कहा. चुनाव प्रचार का संचालन देवीलाल के पोते कर रहे हैं.

जहां तक इंका का सवाल है, पार्टी आलाकमान ने पूर्व मुख्यमंत्री भजनलाल को मंडी आदमपुर और राज्य पार्टी प्रमुख वीरेंद्र सिंह को उचाणा से चुनाव लड़ने की इजाजत दे मुख्य रुझान

- देवीलाल बचाव की मुद्रा में
- जनता दल हतोत्साहित
- भाजपा हाशिये पर
- इंका गुटबाजी की शिकार
- बंसीलाल किसी के भरोसे नहीं

जहां वे लोगों से कहते हैं, "देवीलाल ने ऊंचे-चौड़े वादे किए लेकिन आपको क्या मिला? चौटाला और घोटाला."

मतदाता दुविधा में पड़ गया है क्यों कि विचारधाराओं की लड़ाई की जगह व्यक्तित्वों की लड़ाई की जगह व्यक्तित्वों की लड़ाई ने ले ली है. यदि फैसला पार्टी नेताओं के व्यक्तित्व को देखकर किया जाता है तो जीत संभवतः बंसीलाल की होगी. यबि मतदाता उम्मीदवारों पर ज्यादा घ्यान देंगे तो इंका अपने विरोधियों पर भारी पड़ सकती है यदि वोट जाति के आधार पर पड़े तो स्पष्ट बहुमत शायद किसी पार्टी को नहीं मिलेगा.

बा

द्रमुक

य हैं रहेंगी गलत स् बंटवारे की पूरी

जितना

राज भाषण जयल्रिल् ऐसी अव कर रहे का प्रति चुना

> रहना ब जैसा अ करुणानि जाने वा जाने वा जुनाव ब और अन के लिए जहां

> > समस्य संसदी प्रमुख होंगे. के पूर्व फाइक

हैं पण अच्छा अर जयला नाराज

पुरानी

कर दि

नहीं र

तमिलनाडु

ार्टी के

वनेंगे. वरिष्ठ गेम्मई देने से

कि वे

ो हाल

अध्यक्ष

लेकिन

ो सीटें

गव में

डी थी

ती थी.

हे हैं.

वेकास

रही है

## बाजी पलटने की होड़

द्रमुक और अन्ना द्रमुक दोनों को रामचंद्रन के नाम की टेक

य दि जयललिता को उम्मीद थी कि उम्मीदवारों की सूची सबसे पहले जारी कर वे चुनाव अभियान में सबसे आगे रहेंगी तो उनके प्रतिद्वंद्वी और द्रमुक प्रमुख करुणानिधि ने उन्हें गलत सावित कर दिया है. जनता दल की राज्य इकाई से सीटों के बंटवारे पर काफी ले-दे के बाद करुणानिधि और उनके सहयोगियों की पूरी कोशिश रही है कि उनका चुनाव अभियान अन्ना द्रमुक जितना ही धुआंधार हो.

राज्य भर में हजारों की संख्या में लोग इन दो नेताओं का भाषण सुनने के लिए रात-रात भर इंतजार करते हैं. करुणानिधि जयल़िलता पर सीधा हमला बोलते हैं. श्रोताओं को वे बताते हैं कि ऐसी अदना-सी नेता को अपने मुकाबिल पाकर बड़ा अटपटा महसुस

कर रहे हैं. ''अब मुझे इस नौसिखिया औरत का प्रतिद्वंद्वी बनना पड़ रहा है."

चुनाव अभियान पर जयललिता के साथ रहना बार-बार एक ही रिकार्ड सुनते रहने जैसा अनुभव है. वही भाषण, वही नारे. करुणानिधि पर उनका बार-बार दोहराया जाने वाला आरोप है कि उन्होंने एक नहीं, दो वार उन्हें खत्म करने की कोशिश की. इस चुनाव का रोचक पहलू यह भी है कि द्रमुक और अन्ना द्रमुक दोनों ही जनता को रिझाने के लिए एमजीआर का सहारा ले रहे हैं.

जहां तक अन्ता द्रमुक के वोट बांटने का





जयलिता (बाएं); और करुणानिधिः जोरदार संघर्ष

सवाल है, करुणानिधि अपनी रणनीति में सफल होते लग रहे हैं. अन्ना द्रमुक के तिरुनावक्कारसु गुट को द्रमुक मोर्चे में नौ सीटें मिली हैं और पांडियन गुट को एक. द्रमुक और अन्ना द्रमुक के झंडे एक ही मंच पर फहराते नजर आते हैं.

मजेदार बात है कि जयललिता और करुणानिधि दोनों पाट्टाली मक्कल काची (पीएमके) का गढ़ माने जाने वाले वन्नियार बहुल इलाकों में भारी भीड़ खींचने में कामयाब रहे हैं. हालािक 1989 के चुनाव में यहां कुल मतों के पांच फीसदी से भी कम वोट पड़े थे, और कई निर्वाचन क्षेत्रों में इसके उम्मीदवारों की जमानत भी जब्त हो गई थी. वह विधानसभा की 234 में से 200 सीटों पर लड़ रही है. द्रमुक ने 171 और अन्ना द्रमुक ने सिर्फ 168 सीटों पर उम्मीदवार खड़े किए हैं. और किसी को स्पष्ट लहर नहीं दिखती.

### मुख्य रुझान

- जयलिता अनिश्चित बढ़त बनाए हुए हैं
- करुणानिधि के चुनाव अभियान में तेजी
- अन्ना द्रमुक को विभाजन से
- द्रमुक तिमल क्षेत्रीयतावाद को उभार रही है

### पांडिचेरी

### कोई हवा नहीं

दें का और उसकी सहयोगी अन्ना द्रमुंक में अंदरूनी झगड़े बेतहाशा हैं. खासकर इंका के पाले में कुछ ज्यादा ही समस्याएं हैं. पूर्व मुख्यमंत्री एम.ओ.एच. फारूक को इस बार संसदीय क्षेत्र में भेज दिया गया और उनके स्थान पर प्रदेश इंका प्रमुख पी.षणम्गम पार्टी की ओर से मुख्यमंत्री पद के दावेदार होंगे. षणमुगम विधानसभा क्षेत्र कस्सीकडे से लड़ेंगे जो फारूक <sup>के</sup> पूर्व मंत्री पी. कानन का गढ़ माना जाता है. कानन और फारूक दोनों को ही षणमुगम का स्थानीय राजनीति में उभरना नहीं सुहा रहा है और दोनों ने उनके खिलाफ हाथ मिला लिए हैं पणमुगम कहते हैं, "ये सब अफवाहें मात्र हैं. हमें हर स्तर से अच्छा समर्थन मिल रहा है और हम बहुमत से सत्ता में लौटेंगे."

अन्ना द्रमुक जिन 10 विधानसभा क्षेत्रों में लंड रही है, उनमें जयललिता ने नए चेहरों को उतारा है. इससे पार्टीजन काफी नाराज हैं. अन्ना द्रमुक के पूर्व मुख्यमंत्री एस रामस्वामी ने अपनी पुरानी पार्टी पांडिचेरी मानीला मक्कल मुनानी को फिर जिंदा <sup>कर</sup> दिया जिसका 1989 में ही अन्ना द्रमुक में विलय हुआ था.

उन्होंने ने अन्ना द्रमुक का चक्का पंक्चर करने और जयललिता को सबक सिखाने की भी धमकी दी है.

जानकारों का मानना है कि अन्ना द्रमुक, इंका के लिए बोझ साबित होगी लेकिन इंका नेता अपनी बेचैनी छिपा रहे हैं. फारूक कहते हैं, "अगर अन्ना द्रमुक हम पर बोझ है तो जनता दल तो द्रमुक के लिए और भारी पड़ेगा." इसमें सचाई नहीं भी हो सकती है. सीटों के तालमेल की खटास अब घुलने लगी है. इस बार जनता दल को सिर्फ छह सीटें दी गई हैं. आम लोग और द्रमुक के नेता जनता दल के आपसी झगड़े को ही द्रमुक सरकार के गिरने की मुख्य वजह मानते हैं इसलिए इस बार द्रमुक को जनता दल के कारण कुछ समस्याएं जरूर झेलनी पड सकती हैं.

इस केंद्र शासित राज्य की राजनैतिक धडकन का सारांश वताते हए पांडिचेरी के शराब विक्रेता चार्ल्स फैंसिस राज कहते हैं, "तमिलनाड़ में सर्दी लगती है तो पांडिचेरी में छींक आने लगती है."

ऊंचे-ाला? योंकि

तत्वा पाटी ता है यवि

गे तो ती है. स्पष्ट Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri महा बना लिया है.

पश्चिम बंगाल

### मतदाताओं का वामपंथियों से मोहभंग ही इंका के पक्ष में जाने माकपाई रोड-रोलर वाली अकेली बात है, लेकिन

अंदरूनी कलह ने इंका की कमर तोड दी

क्सवादियों के रोड-रोलर के सामने इंका बहुत पिद्दी-सी दिखाई देती है. अंदरूनी कलह के कारण उम्मीदवारों के चयन में जो उठापटक हुई, उसने इसकी जीत की संभावना की और भी हवा निकाल दी. आपसी धोखेबाजी के कारण पार्टी की छवि को जबरदस्त धक्का पहुंचा है. डायमंड हार्बर पर राजीव गांधी की रैली में हुई धींगामुश्ती इस गूटवाजी का सुल्लमखुल्ला प्रदर्शन था. वहाँ पार्टी के दो गुटों के बीच जमकर भिडंत हुई और स्थानीय उम्मीदवार माया घोष सरेआम भीड के सामने अपनी रुलाई न रोक सकीं.

राज्य इंका अध्यक्ष सिद्धार्थशंकर राय ने पहले विभिन्न गूटों में समझौता करा दिया था लेकिन टिकट बंटवारे से इस लडाई का एक और चक्र शुरू हो गया. प्रत्येक गृट अपनी ताकत के अनुसार





ज्योति बसु (बाएं); सिद्धार्थशंकर रायः तुफान और दिया

सीटें मांग रहा था, सो एकता का रेतीला महल भरभराकर गिर पड़ा. पखवाड़े भर पहले असंतुष्ट टिकटार्थियों और उनके दादा छाप समर्थकों ने राज्य इंका मुख्यालय में जबरदस्त तोड़फोड़ की.

वाम मोर्चा इंका से मीलों आगे है. उसका चुनाव प्रचार हर दीवार पर दिखाई पड़ रहा है. और उसके उम्मीदवार अपने-अपने क्षेत्रों में घूम-घूमकर लोगों को बता रहे हैं कि इंका में गुंडा तत्वों के सिवा कुछ भी नहीं है. राज्य इंका कार्यालय में हुई मारपीट की घटना का प्रचार करके कानून और व्यवस्था सुधारने के इंका के दावों की खिल्ली उड़ाई जा रही है. मतदाताओं को समझाया जा रहा है कि 'वे आपस में ही शांति से नहीं रह सकते और यदि वे सत्ता में आ गए तो आपको भी शांति से नहीं जीने देंगे."

वामपंथियों ने चुनावी रणनीति तय करने से पहले काफी तैयारी कर ली थी. यह महसूस करते हुए कि अपने 14 वर्षों के शासन में उपलब्धि के रूप में कुछ भी गिनाने लायक नहीं है, कानून और व्यवस्था की हालत बदतर हुई है, उद्योग मंदा हुआ है, और हर तरफ बदहाली का माहौल है, उन्होंने बड़ी चतुराई से सांप्रदायिक एकता और धर्मनिरपेक्षता जैसे राष्ट्रीय मसलों को अपना चुनावी

मुख्य रुझान

अपना

मार्क्स

समपि

समझौ

दिखत

उन्नीकृ

भाजप

को मि

स्पष्ट

और

सचिव

विधान

जीत प

करती

सत्ता ह

मुस्लि

वालोम

संलोम कर र ठाने हु "संलो

व्यक्ति

भा

यह

पा

माकपा जीत की दावेदार

 सिद्धार्थशंकर राय के आने से थोड़ा-बहुत अंतर

**माकपा** उम्मीदवारों से बहत नुकसान की संमावना

सत्ता के मजबूत दावेदार होने के बावजूद वामपंथी पूरी तरह

पार्टी इसे भुना नहीं पा रही है.

फिर भी उन्हें अपनी जीत की

आशा है. इंका वामपंथियों के

खोखले वादों से जनता की

नाराजगी को भुनाने की मरे-जिए

कोशिश करेगी.

दिक्कतों से परे नहीं हैं. इस चुनावी दौड़ में 25 से अधिक बागी माकपाई खडे हो गए हैं और वे सत्ताधारी पार्टी के लिए खतरा बने हए हैं. इन बागियों के जीतने की तो उम्मीद नहीं की जा रही है लेकिन वे पिछले चुनावों में कम अंतर से जीतने वाले माकपा उम्मीदवारों के वोट तो काट ही सकते हैं.

लेकिन माकपा ऐसी किसी भी संभावना से इनकार करती है. इन बागी उम्मीदवार को छोटे-मोटे असंतृष्ट बताकर खारिज कर दिया जा रहा है. उनका जवाब है, "अगर हम इंका जैसी भारी-भरकम पार्टी का मुकावला कर सकते हैं तो क्या आप समझते हैं इन छोटे-मोटे लालवुझक्कड़ों को नहीं झेल सकते?'

### अनिश्चय की स्थिति

वामपंथियों को इंका की कड़ी चुनौती

द हफ्ते पहले केरल से मिले सभी संकेत बताते थे कि माकपा की अगुआई वाला वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (वालोमो) विधानसभा चुनावों में वस्तुतः झंडे गाड देगा. चार साल के उसके शासन की अच्छी-खासी उपलब्धियों का रिकॉर्ड था मुकाबले में इंका की अगुआई वाला संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (संलोमो) कमजोर और गृटों में बंटा था. पिछड़ों और मुसलमानों का बड़ा तबका वालोमो के पक्ष में था. लेकिन राजनीति में वक्त बदलते देर नहीं लगती. अब मुख्यमंत्री ई.के. नयनार शानदार जीत की उम्मीद नहीं कर सकते. संलोमों के पुराने तेवर लौट आए हैं और वह ऐसी कड़ी टक्कर दे रहा है जिसके लिए उसे पहले सक्षम नहीं माना जा रहा था.

राजनैतिक रूप से अनिश्चित माने जाने वाले केरल ने एक बार फिर अपने विरोधाभासों को उजागर किया है. पूर्व मुख्यमंत्री के

करुणाकरन ने सत्ता मे लौटने के प्रयासों में भाजपा का गृप्त समर्थन हासिल कर लिया लगता है. यह भले ही अपवित्र गठबंधन हो पर केरल में भाजपा का मुख्य निशाना हमेशा से मार्क्सवादी ही रहे हैं.

सारे खेल में यह भी एक चाल है. भाजपा जानती थी कि अगर उसे केरल में

### मुख्य रुझान

- वालोमो की तरफ से पूरी तैयारी
- संलोमो और भाजपा का अपवित्र गठबंधन
- मुस्लिम लीग संलोमो में लौटी

Digitized by Arya Samaj Foundation, Chennai and eGangotri

अपना आधार बनाना है तो सबसे पहले उसे येन-केन-प्रकारण मार्क्सवादियों का नाश करना होगा, जो उसी के समान संगठित, समर्पित और कार्यकर्ता आधारित ताकत हैं.

विदार

के आने

बागी

वागी

ा बने

ही है

ाकपा

ते है.

कर

गरी-

हैं इन

गोर्चा

चार थाः

गोर्चा :

मानो

वक्त जीत

ए हैं स्थम

बार

में जपा सिल

यह इंधन का

एक

राजनैतिक प्रेक्षकों का मानना है कि भाजपा ने इंका से गुप्त समझौता कर लिया है. दो सीटों पर उनके बीच गठजोड़ तो साफ दिखता है. लगातार पांच चुनावों में कांग्रेस (स) नेता के पी. उन्नीकृष्णन को जिताने वाले मशहूर बाडगरा संसदीय क्षेत्र में भाजपा और संलोमों का समर्थन निर्दलीय उम्मीदवार रतन सिंह को मिल रहा है. बीपुर विधानसभा क्षेत्र में भी ऐसा ही समझौता स्पष्ट नजर आता है.

पार्टी का मुख्य लक्ष्य विधानसभा में अपनी मौजूदगी दर्ज कराना और तिरुवनंतपुरम से लोकसभा के लिए लड़ रहे अपने राष्ट्रीय सचिव ओ. राजगोपाल तथा कासरगोड जिले में मंजेश्वरम विधानसभा क्षेत्र से खड़े अपने राज्य महासचिव के.जी. मरार की जीत पक्की करनी है.

भाजपा और इंका दोनों ही ऐसे किसी समझौते से इनकार करती हैं और इसे वालोमो का दुष्प्रचार करार देती हैं.

यह भले ही लगे कि भाजपा-संलोमो गठजोड़ से संलोमो को सत्ता हासिल करने में मदद मिलेगी पर यह शायद आसान नहीं. मुस्लिम लीग संलोमो में रहे या नहीं, शंकालु मुसलमानों का झुकाव वालोमो की ओर ही रहेगा. भाजपा के साथ इंका के गठजोड़ ने संलोमो के प्रति शंकाएं खड़ी कर दी हैं. वालोमो इसी की उम्मीद कर रहा है और इस 'अस्वाभाविक' समझौते को नंगा करने की ठाने हुए हैं. माकपा के महासचिव ई.एम.एस. नंबूदिरिपाद बताते हैं, ''संलोमो-भाजपा गठजोड़ ठीक उसी तरह का है जैसे दो डूबते व्यक्ति कसकर एक-दूसरे को पकड़ लें.''

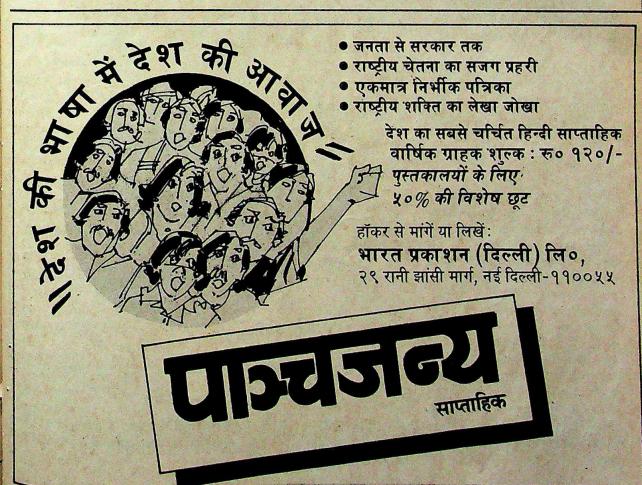




was if it is so much

नयनार (बाएं) और करुणाक्रनः बदलती हवा

पिछले पखवाड़े पार्टी में टिकट बंटवारे के मतभेद सुलझाने के बाद राज्य इंका अध्यक्ष ए.के. एंथनी और करुणाकरन चुनाव प्रचार पर निकल पड़े. दोनों यही संदेश दोहराते रहे कि सिर्फ इंका ही स्थायित्व ला सकती है, बढ़ती महंगाई को रोक सकती है और सांप्रदायिक तनाव खत्म कर सकती है. अगर भाजपा के साथ संबंधों के चलते हिंदू संलोमों के पक्ष में आ जाते हैं तो इंका निश्चय ही फायदे में रहेगी. लेकिन पता नहीं यह झुकाव वालोमों के प्रति मुसलमान वोटों के झुकाव से किस कदर बेअसर होगा. सो, इस बेहद जागरूक राज्य में तस्वीर अभी अस्पष्ट है.





Digitized by Arya Samai Foundation Chennai and eGangotri चुनावा हिसा

### आशंकाओं के

## काले बादल

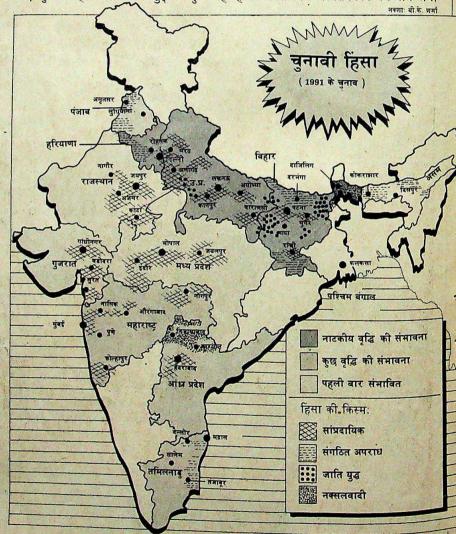
माफिया गिरोहों की ओर से बड़े पैमाने पर धांधली और मतदाताओं को डराने-धमकाने की संभावना से चुनावों पर हिंसा की अपशकुनी छाया गहराने लगी है

हार में चुनाव-पूर्व हिंसा में आई अचानक तेजी से आशंकाएं गहराने लगी हैं. फिलहाल 22 घटनाओं में 10 जानें जा चुकी हैं और जातीय सेनाएं खुलकर हथियारों का

तनाव से सबसे अधिक ग्रस्त उत्तर प्रदेश है जहां मतदाताओं का सांप्रदायिक आधार पर ध्रुवीकरण हो गया है. भाजपा मंदिर मुद्दे को भुना रही है तो जनता दल अल्पसंख्यकों पर दांव लगा

प्रदर्शन करने लगी हैं. लेकिन राज्य में चुनाव रद्द होने की संभावना पर देशव्यापी बहस छिड़ जाने से चुनाव में बडे पैमाने पर हिंसा की अपशकनी छाया पर से लोगों का ध्यान बंट गया है जो दूसरे राज्यों में भी फैलती जा रही है. दरअसल, इस बार चुनाव में 537 संसदीय क्षेत्रों में से 448 क्षेत्रों में हिंसा की संभावना है. इसलिए केंद्र सरकार और चुनाव आयोग राज्यों में स्थिति पर पकड बनाए रखने और अर्द्धसैनिक बलों की अतिरिक्त ट्कड़ियों को तैनात करने की मांग पूरी करने में जुटा हुआ है.

देश भर के छह लाख मतदान केंद्रों के लिए 1.5 करोड़ पुलिस पहले ही भेजी जा चुकी है. 1984 के चुनावों में 48 लोग मारे गए थे जबकि 1989 में बम विस्फोट, छुरेबाजी और गोली चलने से 197 लोगों की मृत्यु हुई थी. इस बार हिंसा में दोगूनी वृद्धि की संभावना के महेनजर चुनाव पर्यवेक्षकों की संख्या भी 75 से 300 कर दी गई है. मुख्य चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन कहते हैं, "खतरे के संकेत मिलने लगे हैं." गृह मंत्रालय अर्द्धसैनिक बलों की फिलहाल तैनात 970 कंपनियों के अलावा 650 कंपनियां और भेज रहा है. मतदान के दिन विशेष बल भी तैनात होगा जिसे चुनावी नियमों का विशेष प्रशिक्षण दिया गया है.



देश भर में हिंसा की संभावना वाले 335 क्षेत्रों में से 45 की स्थिति नाजुक और 175 की गंमीर बताई जाती है

110 577507D



ओं

देर

Digitized by Arya-Samai-Foundation Chennai and Cangatri घोषित किया जा चुका है. आंध्र 127 कंपनियां राज्य की 23 लाख पुलिस बल की मदद के लिए भेजी गई हैं. पिछले आम चुनाव में राज्य में 26 हत्याएं, 22 हत्या की कोशिशें और 38 लटपाट की घटनाएं हुई जिससे 695 मतदान केंद्रों पर फिर से चुनाव करवाना पड़ा. इस बार 5,000 मतदान केंद्रों को 'अंति संवेदनशील' बताया गया है. माफिया गिरोह और भाडे के गुंडों की ओर से बड़े पैमाने पर धांधली और मतदाताओं को डराने, धमकाने की आशंका है. दरअसल, मूख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने चार संसदीय और 33 विधानसभा क्षेत्रों में पार्टी

उम्मीदवार खडे किए हैं जिन पर हत्या, डकैती और अवैध शराब का धंधा करने के मुकदमे चल रहे हैं. मुलायम सिंह ने एटा, मैनपूरी, और इटावा फर्रुखाबाद अपने वफादारों को थानेदार भी बनाया है. उनके आलोचकों का आरोप है कि यह सब बुथ लटने का काम आसान करने के लिए किया गया है. राजनैतिक पंडितों मताबिक 12 फीसदी मतों की धांधली से विधानसभा क्षेत्र में जीत हासिल की जा सकती है जबकि संसदीय क्षेत्र में जीत के लिए 40 फीसदी मतों की धांधली की जरूरत है.

हार तो पहले ही भविष्य के संकेत देने लगा है. हथियारों का बाजार ख़ब गरम है और देसी हथियारों की बाढ़ आ गई है. पिछले पखवाडे कई उम्मीदवार तो हथियारबंद कार्यकर्ताओं साथ नामांकन भरने भी पहुंचे.

पटना जिले में बंदूक बनाने वाली भट्टियों में काम करने वाले एक लोहार के अनुसार, "हर भट्टी को 200 से 300 बंदूकें, पिस्तौल और शॉटगन बनाने का आर्डर मिला है." अधिकारियों की आशंका है कि इस बार चुनाव में जातीय झगड़े चरम पर पहुंच जाएंगे. भूमिहारों और यादवों ने अपना-अपना वर्चस्व कायम करने के लिए जातीय फौजें बना ली हैं. लेकिन मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव का मानना है कि स्थिति बहुत गंभीर नहीं है और विपक्ष उनकी सरकार को बरखास्त कराने के लिए ही यह हवा बना रहा है. 1969 में 80 बूथ लूटे गए लेकिन पिछले साल विधानसभा चुनावों में यह आंकड़ा 1,231 पर जा पहुंचा.

पड़ोस का पश्चिम बंगाल भी बहुत पीछे नहीं है. अधिकारियों को आशंका है कि मतदान के दिन तक स्थिति बदतर हो जाएगी, खासकर इसलिए कि भाजपा पहली दफा अपनी उपस्थिति दर्ज करने जा रही है और सांप्रदायिक भावनाओं में उफान दिखने लगा है. बढ़ते तनाव के कारण कुल 50,000 मतदान केंद्रों में से

प्रदेश में भी स्थिति संवेदनशील है. उग्रवादी पीपुल्स वार ग्रप ने चनाव बहिष्कार का आह्वान किया है और विभिन्न दलों की गाडियों पर हमले की आशंका बनी हुई है.

हरियाणा के जाट-बहुल हिसार, रोहतक और भिवानी जिलों में चनावी हिंसा की संभावना मंडरा रही है, जहां बूथ लट की परंपरा जैसी रही है. खासकर, बंसीलाल का जिला भिवानी तो संवेदनशील बना हुआ है जहां 1987 और 1989 में गंभीर झडपें. हुई. चौटाला के कुल्यात ग्रीन ब्रिगेड से तो भारी आशंकाएं

निजी सेनाएं हथियारों का खुलकर प्रदर्शन करने लगी हैं इसलिए इस बार लगता है कि केंद्रीय बलों और उम्मीदवारों के भाड़े के गुंडों के बीच होड़ होने जा रही है

> इस साल 'संवेदनशील' क्षेत्रों की सूची में अपेक्षाकृत शांत राज्य गुजरात, राजस्थान और मध्य प्रदेश के कुछ हिस्से भी जुड़ गए हैं. गूजरात के तीन बड़े शहरों में चुनाव-पूर्व दंगों ने राज्य के अधिकारियों को चौकन्ना कर दिया है.

> जाहिर है, अबकी बार केंद्रीय बलों और उम्मीदवारों के भाड़े के गुंडों के बीच होड़ होने जा रही है. सरकार राज्यों से केंद्रीय नियंत्रण कक्ष के माध्यम से संपर्क बनाए हुए है. डीआईजी तथा आईजी स्तर के अधिकारियों का एक केंद्रीय कार्य दल भी राज्य सरकारों के संपर्क में रहेगा. स्थिति जितनी बदतर लगती है, उतनी बदतर नहीं भी साबित हो सकती. पर मुख्य चुनाव आयुक्त कोई मौका नहीं चूकना चाहते. और अगर हर तरीका नाकाम रहा तो उनका आखिरी हथियार तो है ही यानी चुनाव रह करने का. चुनाव-पूर्व परिदृश्य के मद्देनजर शेषन को कड़ा रवैया अपनाने पर मजबूर होना पड़ सकता है.

—हरिंदर बवेजा और ब्यूरो रिपोर्टे

**□ इलाहा** व

मै० नावल्ट

इंटरप्राइसि

€o, 1143,

144, चौक

आजाद गली

वाजार, •

बाजार. 🗆 :

वय वीपक

मुभाष बाज

मन्स, चीक

गंज, □ बर्ग

पै० सत्य प्र

हरों सं, 99

धनवाला, [ नेहरू रोड़,

बाजार, 🗆

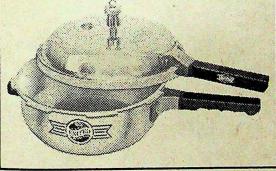
कोतवाली र

॰ सुशील रैं ओम स

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CHISTA SINUCEDI CHIEN





# रिप्रिटिडिडि प्रेशर कुकर व प्रेशर पन

### अधिकृत विक्रेता

### उत्तर प्रदेश

गंध ा ने की

लों की तो डपें• नाएं कुमार

ांत

नुड

ाडे

ोय

था

ज्य

है,

व

का

व

ोर्ट

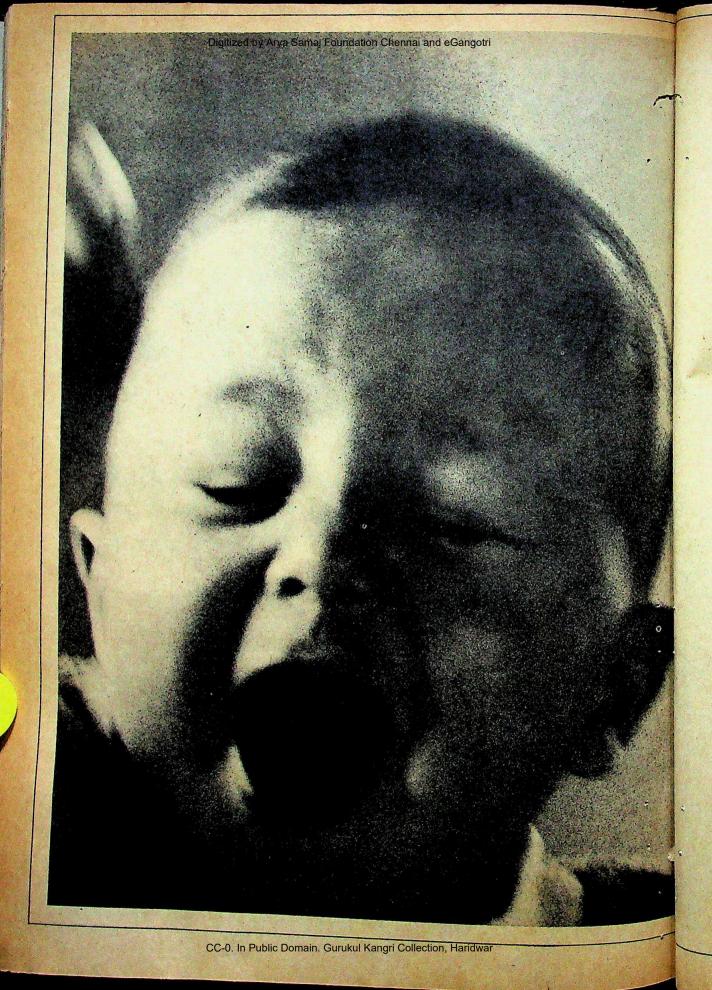
🛘 इलाहाबाद: मे॰ ग्र प्रसाद हीरा साल जैन, जैन भवन चौक, • मै॰ नावल्टी हाउस, 6-C, कमला नेहरू रोड, • मै॰ अल्का रटरप्राइसिस, 30 एम०जी० रोड, सिविल लाईन, • मै॰ जैन ट्रेडिंग कं0, 1143, कटरा कौसिंग, • मै० एस० नसीम अहमद एण्ड कं०, 144, चौक 🗌 आगरा: मे॰ आगरा बर्तन भंडार, 30/113, भाजाद गली, कसेरच बाजार, • मै० आहजा बर्तन भंडार, कसेरच बाजार, • मै० ओसवाल बर्तन भंडार, दौलत मार्किट, जौहरी वाजार, 🗆 अनपाराः मै० मोती रेडियो सेन्टर, 🗆 अलीगदः मै० वय वीपक सर्तन भंडार, महावीर गंज, • ये० वीपक सर्तन भंडार, भुभाष बाजार, रेलवे रोड, 🗌 बेहराइचः मै० श्याम सास एण्ड मन्स, चौक बाजार, 🗆 बान्दाः मै० बंगाल क्रोकरी हाउस, गूसी ाज, 🗆 बलियाः मै० विजय गन हाउस, स्टेशन रोड, 🗆 बस्तीः नै॰ सुशील कमार बर्तन मरघेन्ट, मंगल बाजार, 🗆 देवरियाः े ओम स्टोर्स, समीप कोतवाली, मोती लाल रोड़, 🗆 देहरादून: पे॰ सत्य प्रकाश एण्ड कं॰, 70/5, पलटन बाजार, • मै॰ कैपिटल रों सं, 99 पनटन बाजार, • मै० वाता राम, विनोद कुमार, धनवाला, 🗆 फरुखाबादः मै० राज ग्लास एषड क्रोकरी स्टोर्स, हिरू रोड़, • मै॰ सालिग राम मोला नाथ वर्तन स्टोर्स, चौक वाजार, 🗆 गोरखप्र: वै० अमर क्रोकरी सेंटर, माया बाजार कीतवाली रोड़, • मे॰ गणेशी नाल राम निवास अजेसिंस, गोल थर. • मैं ॰ मॉर्डन क्रोकरी मुजियम, 18 वाटर वर्क्स बिल्डिंग, गोल भेर • मै॰ फैन्सी बर्तन स्टोर्स, रेती चौक, • मै॰ विजय अजेसिंस, 16. 17 टाउन हाल मार्किट, • मै० गणेशी सास एण्ड सन्स, सिनेमा रोड. • मै॰ श्री गणेश इंटरप्राइसिस, 16 वाटर वर्क्स बिल्डिंग, 🗆 हरबोई: मै० श्याम नात एण्ड सन्स, रेलवे गंज, • मै० काशी राम बनवारी लाल, रेलवे गंज, 🗆 हसद्वानी: मै० सरवार क्रोकरी हाउस, नैनीताल रोड़, 🗆 हाप्ड: मै० क्रोकरी सेन्टर, रेलवे रोड़, □ झांसी: मै० काशी प्रसाद मिथेले शरण, शराफा बाजार, • मै० बम्बई स्टील एम्पोरियम, 175 जवाहर चौक, 🗆 जीनपुर: मै० ग्लास स्टोर्स, हर लालका रोड़, 🗆 कानपुर: मै० एशिया साईट हाउस, मैस्टन रोड, • मै० एस०एम० रशीद एण्ड सन्स, 43/205, मैस्टन रोड, • मै॰ गोपी साल ग्प्ता एण्ड कं०, 46/63, हटीया, • मै० लक्ष्मी बर्तन स्टोर्स, 108/130 सीसामक बाजार, • मै० नफीस क्रोकरी हाउस, मूलगंज, • मै० कुमार फैंसी स्टोर्स, 114 नवीन मार्किट, • मै॰ मौ॰ हनीफ मो॰ अनीस, मैस्टन रोड, • मै॰ कृष्णा कुमार, उमेरा चन्त्र, 68/10 भूसा टोली, • मै० रस्तोगी स्टील सैंटर, 67/5 हुना गंज, 🗌 लखनऊः मै० कन्हैया लाल, पराग बास, पीली कोठी, याहिया गंज, • मै० इंडर चन्व जैन एण्ड सन्स, अमिनाबाद, • मै॰ राम सरन एण्ड कं०, अमीनाबाद, • मै॰ संसार एजेंसिस, मुमताज मार्किट, • मै० चमन सास अग्रवास एण्ड सन्स, नजीराबाद, 🗆 लखीम पुर खेरी: मै० अम्बर मास, राधे श्याम, चंपा भवन मैन बाजार, 🗍 मेरठ: मै० शक्न सर्तन भंडार, बेगम पुल, ● मै० बाता राम गुप्ता एण्ड सन्स, वेली बाजार, ● मै० कृष्णा क्रोकरी एण्ड डिपार्टमेंटल स्टोर्स, सदर बाजार, • मै० सोना इलेक्ट्रीक एजेंसी, 184 सदर बाजार, 🗆 नजीबाबाद: मै० श्याम तास एण्ड सन्स, चौक, 🗌 मुजफ्फर नगरः मै० मितत इंटरप्राइसिस, 101 भगत सिंह रोड, 🗆 रामपुर: मै० अधवास क्रोकरी हाउस, मिस्टन गंज, • मै० सैलक्शन एम्पोरियम, 22 साफदर गंज, □ रायबरेली: मै० गुप्ता ट्रेडर्स, कापर गंज, ● मै० राधे श्याम धनश्याम बास गुप्ता, मलखाना, • मै० राज बन्ध, मिलन सिनेमा रोड, 🗆 रूपायधियाः मै॰ राम बुत स्टोर, पो०ओ० रूपायधिया, • मै॰ श्री राम स्टोर्स, पो०ओ० रूपायधिया, सहारनप्रः मै० निहास चन्द हरबंस नास, 15 नेहरू मार्किट, • मै० जसवंत राय नरेन्द्र कुमार, लक्ष्मी मार्किट, 🔲 शाहजहांपुरः मै० सहगत गिपट सेन्टर, गोविन्द गंज, • मै० सहगत क्रोकरीज, सदर बाजार, 🗆 शामलीः मै० सुगन चन्द सोहन ताल बड़ा बाजार, 🗆 सुल्तान पुर: मैं कमाली चलनी हाउस, शाह गंज. • मै० दशस्य सात एण्ड सन्स, चौक घटेरी, □ वाराणसी: मै० भारत ग्लास स्टोर्स, दाल मंडी, • मै० आइडियल ग्लास हाउस, वाल मंडी, • मै० मिलल ट्रेडर्स, D-11/8 क्रोतवाल प्रा, बांस फाटक, • में जिरधर दास एण्ड सन्स, बांस फाटक, • मै॰ मोहन ताल कृष्ण चन्द्र, D-10/15 विश्नाय गली, • मै० स्टेनलेस स्टील सेन्टर, बांस फाटक, • मै० ग्लास एण्ड प्लाईबुड सेन्टर, CK/39/9, दाल मंडी, 🔲 म्रादाबादः मै० नवीन ग्लास एजेंसी, कटरा पूरन जाट, गंज बाजार, 🗌 गोंडाः मै० पारस स्टीन एम्पोरियम, उतरोली रोड.

### कलकत्ता

🗇 कलकत्ताः मै० कृष्णा ट्रेडिंग कं०, P-11, चितपुर स्प्र,

भ्वनेश्वर (उड़ीसा)

भ्वनेश्वर : मै० जी० पी० सर्विसेज, 28 बाप जी नगर



# Polized by Arya Samaj Foundatio Chennai and eGang Ville Company Compan जो आपके घर के चिराग़ का भी रखाल रखे.

बिजली गायब होने पर, सबसे ज़्यादा तकलीफ़ जिसे पहुंचती है वो है आपका नन्हा मुन्ना.

अंधेरा उसे डराता है. अचानक गर्मी हो जाने से उसकी छोटी सी दुनिया बेचैन हो उठती है. ये सारी तकलीफ़ें गुस्से में बदल जाती हैं. और फिर वो रोना उसका जिससे आपका दिल बैठ जाता है.

पर उसे दुलारता और आराम पहुंचाता है आपका प्यार. और बुलडॉग की सुरक्षा

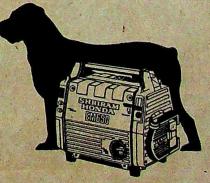
जो मिलती है श्रीराम हौंडा के पोर्टेबल जेनसेट से.

बुलडॉग की सुरक्षा बिजली गुल हो जाने की तकलीफ़ों को आपके लाडले से दूर रखती है, बड़े प्यार से ताकि वो अपनी ही दुनिया में खोया रहे. और इस जेनसेट की धीमी धीमी आवाज़ एक तरह से उसके कान में कहती है, "सब ठीक-ठाक है. घबराने की कोई बात नहीं".

तो फिर किसी और जेनसेट का घर लाना ठीक नहीं. घर में हो तो सिर्फ़ बुलडॉग

की पहरेदारी. आप कह सकते है कि इस जेनसेट में है

ममता का एहसास.



श्रीराम हाँडा पावर इक्विपमेंट लिमिटेड, कीर्ति महल, पांचवी मंत्रिल, १९, राजेंद्र प्लेस, नई दिल्ली-११०००८. फ्रोन: ५७३९१०३/०४/०५



Digitized by Arya Campi Faindation Channel and eGangotri

# जरूरी हो गया डेन फैलाना

आगामी चुनाव के चारों प्रमुख अभियानकर्ता—राजीव गांधी, लालकृष्ण आडवाणी, वी.पी. सिंह और चंद्रशेखर—इन दिनों ऊंची उड़ानें भर रहे हैं. चुनाव प्रचार के लिए मिले कम समय के कारण इन्हें देश भर में पहुंचने के लिए विमानों, हेलिकॉप्टरों का सहारा लेना पड़ रहा है.

-वाहेगुरु पाल सिंह सिद्धू, ब्यूरो रिपोर्टों के साथ

खुले आम चुनाव के महारिथयों ने अपने हैने फैला दिए हैं. और 1991 की चुनावी लड़ाई में वे सचमुच ऊंची उड़ान भर रहे हैं. 1991 के चुनाव अभियान के सभी धुरंधर—राजीव गांधी, लालकृष्ण आडवाणी, वी.पी. सिंह और चंद्रशेखर—सियासी हवाखोरी करते दिख रहे हैं. वे रोजाना पांच से छह घंटे विमान या हैलिकॉप्टर में गुजारकर एक से दूसरे निर्वाचन क्षेत्र की ओर उड़ान भरते हैं. समय को पछाड़ने के लिए हवाई यात्राएं करना उनके लिए जरूरी हो गया है.

पिछले चुनावों तक सिर्फ कामचलाऊ प्रधानमंत्री को ही आरामदेह और विशिष्ट विमान में बैठकर चुनाव प्रचार के लिए जहां चाहे वहां आने-जाने का सौभाग्य मिलता था. उनके वाकी प्रतिद्वंद्वी अपने चुनावी ठिकानों पर पहुंचने के लिए इंडियन एयरलाइंस या वायुदूत की दया पर निर्भर रहा करते थे. पर अचानक चुनावों की घोषणा और प्रचार के लिए मिले कम वक्त के कारण सत्ता के तीनों प्रमुख दावेदारों—इंका, भाजपा और जद—को विमान और हेलिकॉप्टर किराए पर लेने पड़े ताकि उनके प्रमुख नेता ज्यादा से ज्यादा क्षेत्रों में जा सकें. इसलिए चुनावी अभियान में अब इन नेताओं के अलावा आठ विमानों और नौ हेलिकॉप्टरों

की भूमि

दिन तक बेगूसराय तंक पहुंच

सबसे चालक व धी. इस लंबी दूरि बनाए र घोषणा दो सी-9

गांधी औ

स्रक्षाक

है 10,00 का ही पि वे 'सर'-

वे कहते

मिलता

कोई खा

चीजें है

विमान

आगे का

गांधी 24

158 उड

दिल्ली-र एएस-३०

विम

विमान से दूरदराज के क्षेत्रों तक पहुंचकर और वहां से आगे का रास्ता सड़क से तय करके मई के पहले हफ्ते तक राजीव गांधी 240 निर्वाचन क्षेत्रों का दौरा कर चुके हैं

44 Million 1 11 115 1991

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई. एक अनुमान के अनुसार मतदान के दिन तक ये विमान 2,000 घंटे की उड़ान भर लेंगे और गोंदिया, क्षेगुसराय, बोलनगीर, दीसा और पूर्णिया जैसी दूरदराज की जगहों तंक पहुंच जाएंगे.

सबसे पहले इंका ने विमान हासिल किया. राजीव की विमान-बालक की पुष्ठभूमि को देखते हुए यह कोई अप्रत्याशित बात नहीं थी. इसमें उन्होने एक तीर से दो शिकार कर लिए-प्रचार की लंबी दूरियां भी तय कर लीं और अपने पायलट लाइसेंस को जायज बनाए रखने के लिए जरूरी घंटों की उड़ान भी भर ली. चुनाव की घोषणा होते ही इंका ने दिल्ली के फ्लाइंग क्लब से छह सीटों वाले दो सी-90 किंग विमान किराए पर ले लिए. एक विमान में राजीव गांधी और उनके नजदीकी लोग सवार होते हैं और दूसरे में उनके मुरक्षाकर्मी तथा अखबारवाले लद जाते हैं. इन विमानों का किराया हैं 10,000 रु. प्रति घंटा. फ्लाइंग क्लब के दो पायलट भी इसी सौदे का ही हिस्सा हैं. लेकिन राजीव खुद ही मार्गदर्शन करते हैं अक्सर वे 'सर'-'सर' कहकर नियंत्रण कक्ष से भी खुद ही बात कर लेते हैं. वे कहते हैं, "मुझे उड़ान भरने में मजा आता है. इससे मुझे चैन मिलता है.

ो ही

लिए

वाकी

डयन

. पर

न्त के

–को

प्रमुख

ायान

प्टरों

पुरकरणा

विमान में उडान भरने वाले की सनकी जरूरतों के मुताबिक कोई खास तब्दीली नहीं की गई है. इसमें विलासिता की दो ही चीजें है-तंदूरी चिकन और शीतल पेय का डिब्बा. इस तरह विमान से दूरदराज की हवाई पट्टियों पर पहुंचकर और वहां से आगे का रास्ता सड़क से तय करके मई के पहले हफ्ते तक राजीव गांधी 240 निर्वाचन क्षेत्रों का दौरा कर चुके हैं जिसके लिए उन्होंने 158 उड़ानें भरी हैं. बाद में अभियान की जरूरत बढ़ी तो पार्टी ने दिल्ली-गल्फ एअरवेज से पांच सीटों वाले दो हेलिकॉप्टर-एक्रेल एएस-305 बी और एलोटे-3—भी किराए पर लिए.

जनता दल के प्रमुख अभियानकर्ता वी.पी. सिंह के लिए मंडल के संदेश को हवा की गति से सब तक पहुंचाना जरूरी है. पार्टी प्रवक्ता जयपाल रेड़ी के अनुसार, "पिछले चुनाव में वी.पी. सिंह सिर्फ उत्तर प्रदेश और बिहार का ही दौरा कर सके थे. इस बार विमान की वजह से हमें उम्मीद है कि वे उन सभी 300 निर्वाचन क्षेत्रों का दौरा कर सकेंगे जहां से हमारी पार्टी चुनाव लड़ रही है."

 टीं ने बिहार के सरकारी विमान सी-109 किंग की सेवाएं कुछ गोलमाल ढंग से हासिल की हैं. पार्टी सरकारी विमान लेने की बात को यह कहकर उचित ठहराती है कि निजी क्षेत्र के विमान और हेलिकॉप्टरों के साथ गडवड की जा सकती है. हालांकि पार्टी के सूत्रों का कहना है कि पार्टी विमान के लिए 5,000 रु. प्रति घंटा दे रही है पर पटना के सूत्रों का कहना है कि पिछले दरवाजे से कुछ ऐसी व्यवंस्था कर दी गई है कि पार्टी को यह विमान मुफ्त ही मिल गया है. बिहार सरकार का कोई मंत्री 'सरकारी' इस्तेमाल के लिए विमान अपने नाम से वुक कराता है और उसका इस्तेमाल वी.पी. सिंह और पार्टी के दूसरे नेता करते हैं.

लेकिन छह सीटों वाले इस विमान को अब वी.पी. सिंह ही अभियान चलाने के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं. हर रोज यह विमान दो से तीन जगह पहुंचता है. चुनाव तक यह विमान 40 से 50 उड़ानें पूरी कर लेगा. राजनैतिक दलों में यह औसत सबसे कम है. रेड्डी सफाई में कहते हैं, "हम इसका ज्यादा इस्तेमाल लंबी दूरी की यात्रा के लिए करते हैं जहां घरेलू उड़ान हमारे अभियान के माफिक नहीं बैठती है.'

लेकिन सबसे बढ़िया निजी विमान हासिल किया है भाजपा ने. पार्टी ने तीन विमान लिए हैं-इनमें दो सिंघानिया के 16 सीटों वाले पूराने डीसी-3 डकोटा हैं और एक तीन सीटों वाला बोनांजा.

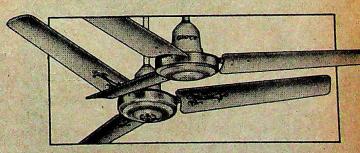
सबसे बढ़िया निजी विमान हासिल किया है भाजपा ने यह भीतर से काफी आरामदेह है. इसमें सोने का कोच है और प्रेस कान्फ्रेंस करने की सुविधा भी.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

ग्लोरी का कमाल मिले हवादार ठंढक सालोंसान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Harida

प्स, स्विच दबायें और ग्लोरी की रफ़्तार महसूस करें । बिना किसी शोर के, आराम से चारों तरफ हवा बिखेरें । हमेशा तेज़-तेज़ झोंके में बहे । तीन-तीन एरोडाइनेमिक मॉडलों में । हर डिज़ाइन कम्प्यूटर द्वारा तैयार । हरियाना के ज़ीन्द में स्थित भारत के आधुनिकतम प्लांट में निर्मित । सालोंसाल सुचारू संचालन की गारंटी । बिजली-खपत कम, सुपर सक्षम मोटर । बिना किसी झटके या हिचकोले के आराम से चले । डाइ-कास्ट अल्युमीनियम बॉडी । देश के उत्कृष्टतम डबल बॉल-बेयरिंग्स एवं ठंडी-ठंडी हवा की हिलोर वाला । अनुकूल दाम । ग्लोरी — बेशक, ऐसा आरामदेह अहसास, जो समूचे भारत की धड़कन बनता जा रहा है ।



# GIOLY BREEZEMAKERS

### शत-प्रतिशत हवा मशीन

निर्माता : हरियाना इवियपमेंद्रस लिमिटेड • हरियाना राज्य सरकार संयुक्त सेक्टर योजना ८०% ई. जिंह्से स्ट्रीट कलकता ७०० ०८७ • वितरण-अधिकार के लिये सम्पर्क करें Digitized by Arya Samai Foundation Chennai and eGangotri इकोटा उसके लिए एक अच्छी उपलब्धि है क्यों कि यह भीतर से काफी आरामदेह है. इसमें एक सोने का कोच है और प्रेस कान्फ्रेंस करने की मुविधा भी. आडवाणी इनका इस्तेमाल पढ़ने, सोने या बीच यात्रा के पत्रकार सम्मेलनों के लिए करते हैं. इसके अलावा पार्टी ने दो 6 सीटों वाले हेलिकॉप्टर भी लिए हैं. एक चेतक है दूसरा ह्यूज्स. डकोटा विमानों के लिए 10,000 रु. प्रति घंटे का किराया विया जा रहा है तो हेलिकॉप्टरों के लिए 15,000 रु. का.

छह विमानों, हेलिकॉप्टरों का यह बेड़ा बड़े व्यवस्थित तरीके से इस्तेमाल किया जा रहा है. ये मशीनें प्रतिदिन औसतन 4 से पांच घंटे उड़ान भरती हैं और आडवाणी समेत पार्टी के 19 नेताओं को विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों में ले जाने के काम आती हैं. पार्टी कार्यालय से यह सारा यात्रा अभियान चलाने वाले 26 वर्षीय चार्टर्ड एकाउंटेंट पीयूष गोयल के अनुसार, "विमानों के उड़ान कार्यक्रम तथा नेताओं की सड़क या रेलयात्रा में सामंजस्य बिठाने के लिए हमने कंप्यूटर का प्रयोग किया है. इससे हम विमानों का अधिकतम उपयोग कर पा रहे हैं."

इस्तेमाल कितना सटीक होगा यह इसी से जाहिर हो जाता है कि सिर्फ 11 दिनों में पार्टी के नेता उन 478 में से 370 चुनाव क्षेत्रों तक पहुंच जाएंगे जहां पार्टी लड़ रही है. इस दौरान विमान करीब 300 उड़ानें भर लेंगे. पिछले चुनाव के मुकाबले यह बहुत बड़ी उपलब्धि है. पार्टी के महासचिव गोविंदाचार्य के अनुसार तब पार्टी के नेता सिर्फ 140 क्षेत्रों का ही दौरा कर सके थे जबिक

पार्टी 226 सीटों पर चुनाव लड़ रही थी. पर भाजपा के इस हवाई अभियान में भी रुकावटें कम नहीं

चंद्रशेखर वायुसेना के जेट विमान का इस्तेमाल कर रहे हैं. अंत तक वे 400 उड़ानें भरकर 300 निर्वाचन क्षेत्रों का वौरा कर लेंगे





हैं. गोयल के अनुसार, "हमारे सामने डकोटा विमान के लाइसेंस प्राप्त पायलटों की कमी की समस्या

है." दरअसल, इसी वजह से एक उड़ान के दिशा निर्देशन का काम खुद विजयपत सिंघानिया ने किया.

विमान दो से तीन

जगह पहंचता है

चारों प्रमुख अभियानकर्ताओं में चंद्रशेखर ही ऐसे हैं जो भारतीय वायुसेना का जेट विमान इस्तेमाल कर रहे हैं. उनके लिए दो बोइंग-737 जेटलाइनर—राजहंस और राजदूत हैं और साथ ही एमआई-8 हेलिकॉप्टर का बेड़ा भी. बोइंग उनके लाव-लश्कर को हवाई अड्डे तक ले जाते हैं जहां तीन हेलिकॉप्टर तैयार रहते हैं. एक में चंद्रशेखर और पार्टी के पदाधिकारी बैठते हैं, दूसरे में सुरक्षा बलों के लोग और तीसरे में अखबारनवीस. जब तक अभियान खत्म होगा चंद्रशेखर 400 उड़ानें भरकर 300 निर्वाचन क्षेत्रों का दौरा कर लेंगे. कुछ में तो वे एक से ज्यादा बार जाएंगे. चंद्रशेखर ने बताया, "मैं पहले इससे भी धुरंघर अभियान चला चुका हूं. पर इस बार यह काफी आरामदेह है और मैं ज्यादा इलाकों तक जा सकंगा."

इन विमानों में खाने-पीने, नहाने और बैठक करने की सारी सुविधाओं की वजह से उनका बसेरा 7, रेसकोर्स रोड के आवास से उठकर विमान में ही हो गया है. विमान पर वे पार्टी नेताओं से बात करते हैं, कभी-कभी प्रेस से भी मिल लेते हैं और अगर उड़ान लंबी हुई तो एक-आध झपकी भी ले लेते हैं.

इस चुनाव में सभी नेताओं को एहसास हो गया है कि उड़ानें भरना बहुत जरूरी है, भले ही उनकी पार्टियों के कोषाध्यक्ष खर्च को लेकर परेशान होते रहें. Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

# LEAVES YOU WITH NO CHOICE

Office Choice Choice Aqua Pura

नाथ

हैं.

का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Ka

aridwar



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri चुनावी सट्टा

# कोई बढ़ रहा तो कोई पिछड़ रहा

देश भर में गैरकानूनी सट्टा बाजार में चुनावों के नतीजे पर करोड़ों के वारे-न्यारे

-इंडिया टुडे ब्यूरो

आप कोई भिवानी के आलू बाजार में टेलीफोन पर चल रही बातचीत सुन ले तो चकरा ही जाए. एक आदमी कांग्रेस(इ) के लिए 'गड्डी' (कार) खरीदना चाहता है. दूसरा 'पेटी' और तीसरा 'कोठी' खरीदने की बात कर रहा है. लेकिन हरियाणा के इस धूल-धक्कड़ वाले नगर में कम-से-कम 5,000 लोग तो ऐसे हैं ही जो इन बातों की असलियत जानते हैं. टेलीफोन पर इस तरह की बातें करने वाले लोग वे सटोरिए हैं जो चुनाव के नतीजों पर शर्त वद रहे हैं. 'गड्डी' का मतलब है कि सटोरिया 10,000 ह. की शर्त लगा रहा है, 'पेटी' का मतलब है कि एक लाख ह. और 'खोखा' का मतलब है एक करोड़ ह.

भिवानी देश के ढेर सारे सट्टा केंद्रों में से है, जहां मानसून के आगमन से लेकर चुनाव के नतीजों तक पर सट्टा लगाया जा सकता है. भिवानी में ही सट्टे के इस धंधे में हर रोज 25 से 50 लाख रु. तक के वारे-न्यारे हो जाते हैं. जैसे-जैसे मतदान का दिन पास आ रहा है, इसका कारोबार भी बढ़ने लगा है. आसपास के इलाकों के तकरीबन 10,000 सटोरिए इस धंधे में शामिल होते हैं.

पर इस धंधे का मुख्य केंद्र मुंबई ही है. विभिन्न दलो, यहां तक

कि उम्मीदवारों पर भी कितने के दांव लगें, इसका निर्धारण यहीं से होता है. यह सट्टा बाजार इतने व्यवस्थित ढंग से चलता है और इसकी जानकारी इतनी बारीक और विस्तृत होती है कि चुनावी हवा का रुख बताने में चुनाव विशेषज्ञों के विश्लेषण और अखबारों में छपने वाले जनमत सर्वेक्षण भी मात खा जाएं. अप्रैल के अंत और मई के पहले हफ्ते तक मुंबई में चल रहे करोड़ों रु. के इस गैरकानूनी धंधे में इंका ही सबकी पसंदीदा थी. पर बाद में जब यह लगने लगा कि इंका की जीत उतनी अच्छी नहीं रहेगी तो उसकी कीमत 2 पर 1 से 4 पर 1 तक गिर गई (2 पर 1 का मतलव हुआ कि अगर इंका को बहुमत मिलता है तो जीतने वाले को हर एक रु. पर तीन रु. मिलेंगे. 4 पर 1 का मतलब हुआ कि शर्त लगाने वाले ने इंका को बहुमत मिलता है तो जीतने वाले की हर एक रु.

सबसे पी त्येक क.

्मुंबई लंकत्ता ाला सट्टे

ा करोड़ रोड़ रु. गने वाले शाड़ी है फेलहाल गजपा के

दांव

ने बहुमत

ते). भाज

र 20:1 व

ा दांव थ

ोई सट्टा

में लेकर

ल में 10

ा नहीं. इ

का और

प्रधानम

भेमत 4:1

द्रशेखर प

**ग**विष्यवाप

गैर जनत

ह धंधा १

ाहल इला

ग सट्टा है

गले को 1

द्रा लगाने

गीतने पर

00 सीटें

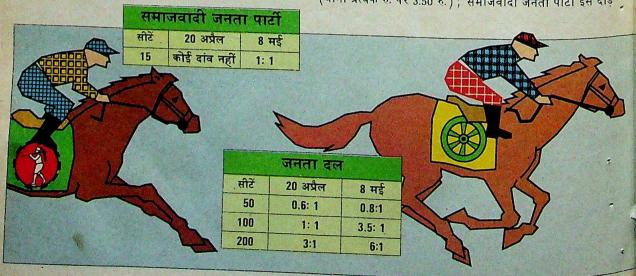
सीटे

100 150 200

दिल्ली

एक सटौरिए ने बताया, "यह तो घुड़दौड़ की तरह है. सटौरिए कभी घाटे में नहीं रहते" यह धंधा काफी गोपनीय तरीके से चलता है. इसलिए रुझान में ज्यादा असमानता न होने के बावजूद लगने वाले दांव बहुत भिन्न होते हैं. असली दांव तो मई के तीसरे हफ्ते ही लगने गुरू होंगे पर गुरुआती रुख इका के ही पक्ष में था. दलाल स्ट्रीट के एक अगुआ सट्टेबाज ने पिछले पखवाड़े निम्न दांव लगाए—इंका को बहुमत मिलेगा—4 पर 1 (अर्थात प्रत्येक एक रु पर चार रु.), इंका 201 सीटें जीतेगी—3 पर 2 (यानी प्रत्येक रु. पर डेढ़ रु.); भाजपा को बहुमत मिलेगा—8 पर 1 (अर्थात प्रत्येक रु. पर 8 रु.); भाजपा को 101 सीटें मिलेगी—1.8 पर 1 (अर्थात प्रत्येक रु. पर 1 रु.); जनता दल को 101 सीटें मिलेगी—3.5 पर 1 (यानी प्रत्येक रु. पर 3.50 रु.); समाजवादी जनता पार्टी इस दौड़

चार राष्ट्रीय पार्टियों के लिए अखिलः भारतीय सट्टा



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangoti

प्रधानमंत्री के दावेदार नेताओं

पर लगे दाव (कलकत्ता सट्टा बाजार)

राजीव गांधी

चंद्रशेखर

लालकृष्ण आडवाणी

विश्वनाथ प्रताप सिंह

मबसे पीछे है, उसकी जीत के लिए 15 पर 1 का दांव है (अर्थात लोक ह. पर 15 ह.).

मूंबई में तो मोटी रकम का लेन-देन होता ही रहता है. पर लकत्ता में शहर के थोक व्यापार केंद्र-वड़ा बाजार-में होने ला सट्टे का धंधा (जिस पर मुंबई के सटोरियों का नियंत्रण है) 🛮 करोड़ रु. के आसपास पहुंच चुका है. और इस आंकड़े के 20 तोड़ रु. तक पहुंच जाने की संभावना है. विभिन्न पार्टियों पर गने वाले दांव घट-वढ़ रहे हैं पर पसंदीदा इंका की स्थिति कुछ गड़ी है और भाजपा तथा जद की स्थिति कुछ सुधरी है. इलहाल वहां भी दांव मुंबई जैसे हैं—इंका के लिए 4 पर 1, ाजपा के लिए 10 पर 1, जनता दल के लिए 5 पर 1.

🕇 क हफ्ते पहले तक इंका पर दांव 2.5: 1 का था (यानी इंका ने बहमत मिलने की ज्यादा संभावना ो) भाजपा काफी पीछे थी और उस र 20:1 का सट्टा था. जद पर भी 20:1 ा दांव था. और चंद्रशेखर की पार्टी पर ोई सट्टा लगाने को तैयार नहीं था. से लेकर शर्त सिर्फ इतनी थी कि पार्टी ग में 10 से ज्यादा सीट जीत सकती है ा नही. इसके पांच सीटें जीतने पर 1: का और 10 सीट पर 2: 1 का सट्टा है

ा यहीं

और

नावी

वारों

। और

इस

व यह

उसकी

हुआ

्क रु.

ाले ने

गेरिए

नलता

लगने

ति ही

लाल

ाए-

चार

र डेढ़

. पर

ात्येक ै

**4**₹ 1 दौड़

प्रधानमंत्री वनने की सभावना में राजीव सबसे आगे हैं—उनकी ीमत 4:1 है, आडवाणी की 10:1 और वी.पी. सिंह की 15:1 है. द्रशेखर पर दांव सबसे ऊंचा यानी 1000:1 है.

दिल्ली के सट्टा बाजार में इंका के लिए 200 सीटों की विष्यवाणी की गई है. इसी तरह भाजपा को 100 सीटें मिलने ौर जनता दल को 50 सीटें मिलने पर सट्टा लगाया जा रहा है. ह धंधा थोड़े से लोगों तक ही सीमित है. प्राने शहर का चांदनी हिल इलाका इसका केंद्र है. कांग्रेस के 200 सीटें जीतने पर 80 पैसे महा है. (यानी अग़र इंका 200 सीटें जीतती है तो 1 रु. लगाने ाले को 1.80 रु. मिलेंगे. अगर पार्टी को 200 से कम सीटें मिलीं तो हा लगाने वाले का 1 रु. भी निकल जाएगा). कांग्रेस के 225 सीटें ोतने पर 1.90 रु. का दांव है और 250 पर 4 रु. का. भाजपा के 👊 सीटें जीतने पर 30 पैसे का सट्टा है. इस अंधविश्वासी बाजार में गुरू में भाजपा के लिए 80 पैसे की बाजी लगी थी और जनता दल पर भी बाजी 80 पैसे की ही थी.

सट्टे की राणि यह दांव लगाने वाले पर निर्भर करती है. ज्यादातर मामलों में इसकी कोई सीमा नहीं होती. वैसे, सटोरिए न्यूनतम सीमा तय कर देते हैं जो प्रत्येक बाजी के लिए 5,000 रु. से 20,000 रु. हो सकती है. एक अनुमान के अनुसार यहां हर रोज 5 लाख रु. का धंधा होता है. दिल्ली के सट्टा बाजार का कारोबार मुंबई के बाजार का एक चौथाई है और यह उसका ही एक हिस्सा है. राजीव गांधी के प्रधानमंत्री बनने की संभावना पर 75 पैसे और लालकृष्ण आडवाणी के प्रधानमंत्री वनने की संभावना पर 2.50 रु से 3 रु. तक का दांव लगा है.

4:1

10:1

15:1

1000:1

दिल्ली में चनाव लड उम्मीदवारों में हरिकशनलाल भगत की जीत की दर शुरू में 15 पैसे थी अब 30 पैसे हो गई है. आडवाणी की जीत की दर शुरू में 35 पैसे थी जो अब 25 पैसे हो गई है. उनके प्रतिद्वंद्वी इंका के राजेश खन्ना की जीत पर 2.50 रु. का दांव है.

इंदौर में तो सट्टा इस बात पर भी लगाया जाता है कि बड़ी पार्टी का टिकट किसे मिलेगा. राजकोट और जयपूर में सट्टा राजनैतिक रूप से

संवेदनशील शेयरों जैसे रिलायंस आदि पर लगाया जाता है.अहमदाबाद के सट्टा बाजार के हिसाब से देखा जाए तो 20 अप्रैल के बाद भाजपा की स्थिति उम्दा हो गई है पर इंका समेत किसी भी दल को 200 सीटें नहीं मिल रहीं. और वी.पी. सिंह को तो 100 सीटें भी नहीं मिल रहीं. माणेक चौक के सर्राफा बाजार से चलने वाले सट्टा बाजार में तो जनता दल का कोई नामलेवा भी नहीं है. शहर के एक सटोरिए के अनुसार, ''जनता दल पर कोई दांव नहीं लगाना चाहता.'

पर कुल मिलाकर जहां मध्य अप्रैल में ज्यादातर दांव इस बात पर लग रहे थे कि इका 240 सीटें जीतेगी, वहीं मई के पहले हफ्ते में यह संख्या 190 सीटों तक आ गई. इस तरह सट्टा बाजार की हवा तो त्रिशंक संसद की ही भविष्यवाणी करती है. चनावी बाजियों पर इतनी रकम अब तक कभी नहीं लगी. एक अनुमान के अनुसार 20 मई तक देश भर के सटोरिए 200 करोड़ रु. दांव पर लगा चुके

				होंगे, जो	रूरी चुनावी प्र	क्रिया के लि	ए पर्याप्त	है.	
भारतीय जनता पाटी									
सीटें	20 अप्रैल	8 मई	1				₩	4	
100	1:1	0.30:1		7					
150	3:1	1:1		21	W				
200	8:1	1.15:1							
F									
•				K				इका	
	A~			1-5-			सीटें	20 अप्रैल	8 मई
	////				775		150	0.3:1	0.3:1
1	47				17/	1	200	0.45:1	1:1
U	Carlow N					4	250	1.25:1 .	1.90:1
	*सट्टा	लगाने वाले	को जितनी ऊंची द	तिमलती है, सटो	रिए संभावना	उतनी कम	मानते हैं		

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri राष्ट्रीय मोर्चा

## अभी से उभर आई

# चेहरे पर झरियां

इस बार लोकसभा में बहुमत पाना तो दूर रहा, दोगुनी सीटें जीत पाने की संभावनाएं भी बेहद धूमिल ही दिखती हैं इस गठबंधन के लिए. सारा भार दल के नेता विश्वनाथ प्रताप सिंह के कंधे पर.

—जफर आगा, फरजंद अहमद और दिलीप अवस्थी के साथ

दि पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की बात पर यकीन किया जाए तो संसद में जनता दल के सदस्यों की संख्या इस बार दोगुनी होगी और पार्टी अपने ही बूते पर सरकार बनाएगी. पार्टी का अत्यंत 'आशावादी' अनुमान 300 सीटें जीतने का है, तो 'यथार्थवादी' अनुमान तकरीबन 200 सीटों का. बड़े आत्मविश्वास के साथ उसका दावा है कि "सामाजिक ताकतों का ध्रुवीकरण हमारे पक्ष में हो रहा है" रामविलास पासवान का कहना है, "परंपरा से इंका के बोट बैंक बने रहने वाले दलित और अल्पसंख्यक इस बार हमारे साथ हैं." जनता दल के नए मुल्ला सैयद शहाबुद्दीन का मानना है, "देश भर के मुसलमानों का झुकाव वी.पी. सिंह की तरफ हो रहा है." इन नेताओं का मानना है कि

मंडल मुद्दे से वी.पी. सिंह का जो वोट वैंक बना, वह सत्ता के गिलयारों में पहुंचने का टिकट है. लेकिन चुनाव अभियान के अंतिम चरण में पहुंच चुके वी.पी. सिंह अब यथार्थवादी हो गए हैं. वे कोई भविष्यवाणी नहीं करते. लेकिन पार्टी के सामने खड़ी गंभीर समस्याओं से वे बसूबी वाकिफ हैं. यह तब स्पष्ट हो जाता है, जब वे 'संभावित राजनैतिक अस्थिरता' की भविष्यवाणी करते हैं (देसें बातचीत).

साधारण गणित ही बता देता है कि पार्टी का बहुमत पाना तो दूर की बात है, उसे अपनी संख्या दोगुनी करने के लिए भी

कोई भारी-भरकम लहर बनानी होगी. और यह लगभग असंभव है. एकीकृत जनता दल को 1989 में 142 सीटें मिली थीं. इनमें से 86 सीटें बिहार और उत्तर प्रदेश से थीं लेकिन नवंबर 1990 में विभाजन के बाद जनता दल का आधार नाटकीय रूप से सिमटा है. संसद में इसकी सदस्य संख्या 75 ही रह गई है, जिनमें से 53 सदस्य उत्तर प्रदेश और बिहार से हैं. इसके कारण पार्टी का स्वरूप क्षेत्रीय होकर रह गया है.

चुनाव अभियान के इन कुछ महीनों में वी.पी. सिंह ने दक्षिण के राज्यों और महाराष्ट्र के कुछ इलाकों में काफी भीड़ जुटाई. इससे पार्टी का कुछ उत्साहवर्धन हो सकता है. लेकिन 1989 वाला जादू अब गायब है.

इसके कई कारण हैं. पार्टी की छिव सामाजिक रूप से पिछड़ों

और मुसलमानों की नई ताकत की प्रतिनिधि होने की भले ही दिखती हो लेकिन इसने वी.पी. सिंह के राष्ट्रव्यापी आधार को सीमित कर दिया है. वे उत्साही स्वयंसेवी छात्र और बुद्धिजीवी जिन्होंने उनके चुनाव अभियान का संचालन किया था, अब उनके दुश्मन बने हुए हैं.

मंडल मंत्र का दक्षिण भारत में असर भले ही हुआ हो लेकिन वहां यह चुनावी नारा नहीं बन सकता, क्योंकि दक्षिणी राज्यों में तो नौकरियों में पहले ही काफी आरक्षण है. उत्तर भारत में राष्ट्रीय पार्टियों ने भी मंडल विरोधी रुख नहीं अपनाया है. इंका ने इस बार अन्य पिछड़ी जातियों को पहले के मुकाबले ज्यादा सीटें दी हैं. और पिछड़ों को रिझाने में भाजपा भी पीछे नहीं रही है.

तिस पर जद का कोष भी खाली होता जा रहा है और इसे फिर से भरने को कोई आगे नहीं आ रहा. पार्टी की दरिद्रता पोस्टरों,

वैनरों, झंडियों यहां तक कि दीवारों पर लिखे नारों की संख्या में आई भारी कमी में साफ देखी जा सकती है. इस बार तो कार का इस्तेमाल भी एक विलासिता हो गया है. पार्टी प्रवक्ता एस. जयपाल रेड्डी कहते हैं, "हमारा समूचे चुनाव अभियान का बजट ही 25 लाख रु. का है."

तथा पाट

वी.पी. वि

स्तर पर

लिए जा

ही. वी.प

और इसं

वे पार्टी

यात्रा में

वीच एव

तमिलन

स उन्हें

मोर्चे के

प्रदेश. व

बरसे व

भाजपा

वोट वैंव

गादव के

मकती ह

वेह है उ

वैक में प

बिहा

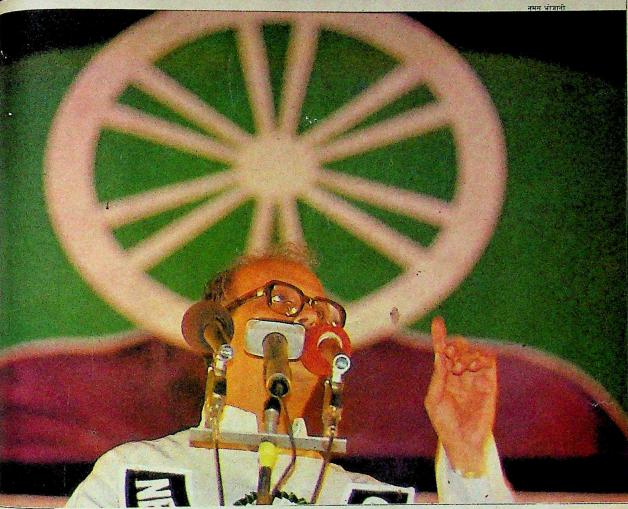
इस :

पार्टी का ढांचा विखरा-विखरा सा है हालांकि वी.पी. सिंह, उनकी वोट खींच सकने की क्षमता और अंतहीन ऊर्जा पार्टी को जोड़े रखे हुए है. इसके बावजूद जनता दल वी.पी. सिंह के नेतृत्व में सरकार बनाने के लिए संघर्षरत मजबूत पार्टी की जगह

अलग-अलग गुटों का समूह नजर आ रहा है: और ये गुट गुटों के रूप में ही सत्ता में आना चाहते हैं. इन विभिन्न गुटों का मकसद लोकसभा में अपनी सदस्य संख्या बढ़ाना है ताकि यदि इस बार भी किसी दल को स्पष्ट बहुमत न मिल पाए तो वे सांसदों की खरीद-फरोस्त को प्रभावित करने की स्थित में हों.

पार्टी के प्रमुख नेता आपस में ही लड़ रहे हैं. अजित सिंह और शरद यादव उत्तर प्रदेश में अपना वर्चस्व कायम करने के लिए लड़ रहे हैं तो ओडीसा के बीजू पटनायक (जनता दल के 75 सांसदों में से 9 ओडीसा से थे) ने खुलेआम घोषणा कर दी है कि वे वी.पी. सिंह को अगले प्रधानमंत्री के रूप में नहीं देखना चाहते. बिहार में मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव और हरिजन नेता रामविलास पासवान में भी मतभेद उभरे हैं. शीर्ष नेतृत्व में कलह और असंगठन

जनता दल का खजाना खाली हो रहा है, पार्टी संगठन नाम की कोई चीज नजर नहीं आती. बड़े नेता आपस में गुत्थमगुत्था हैं. बस वी.पी. सिंह की ऊर्जा ने पार्टी को जीवित रखा है



उत्तर प्रदेश की एक चुनावी सभा में वी.पी. सिंहः तमाम प्रतिकूलताओं के बावजूद हौसले ऊंचे

तथा पार्टी पदों के लिए जाति पर आधारित 60 फीसदी आरक्षण के यो पी. सिंह के फार्मूले से फैली नाराजगी से न तो पार्टी का निचले स्तर पर मजबूत संगठन बन सका है, न ही इस रणनीति से वोट और पार्टी का संगठन तो दयनीय दशा में है लिए जा सकते हैं. हों. वी.पी. सिंह कहते हैं, "पार्टी संगठन के लिए वक्त ही कहां था."

भले ही गर को द्धजीवी र उनके

लेकिन ज्यों में राष्ट्रीय स वार हैं. और

से फिर ोस्टरों, रों पर कमी में

ो कार गया है.

हते हैं,

बजट

सा है.-

खींच

पारी

जनता

वनाने

जगह

रुटों के

नकसद

ार भी

वरीद-

और

ए लड़

ादों में

त्री.पी.

गर में

वलास

गिठन

इस चुनाव के नतीजों से या तो राष्ट्रीय मोर्चा ट्रटेगा या बनेगा. और इसी से वी.पी. सिंह के कंधों पर भारी जिम्मेदारी आ पड़ी है. वे पार्टी के एकमात्र प्रमुख अभियानकर्ता हैं. उनकी चुनाव अभियान यात्रा में महाराष्ट्र से आंध्र प्रदेश तक का दौरा शामिल है. इस वीच एक दिन वे गुजरात में बिताते हैं, सुदूर दक्षिण में केरल और तिमिलनाडु के दौरों के बाद उन दो राज्यों की बारी आती है जहां में उन्हें सबसे अच्छे नतीजे मिलने की उम्मीद है, और जहां राष्ट्रीय मोर्चे के भाग्य का फैसला होगा. ये दो राज्य हैं बिहार और उत्तर भूदेण. वी.पी. सिंह का दौरा इतना लंबा है कि उत्तर प्रदेश में वे अरसे बाद 8 मई को ही पहुंच पाते हैं. उनकी गैर-मौजूदगी में भाजपा उन क्षेत्रों में सेंध लगा चुकी है, जहां जाटों और यादवों के वाट बैंक केंद्रित हैं.

बिहार में भी कुछ अप्रत्याणित समस्याएं आ सकती हैं जो लालू वादव के सभी 54 सीटें समेट ले जाने के दावे की संभावना को घटा भिकती हैं. दोनों राज्यों में जो सबसे बड़ी समस्या नजर आती है, वह है जनाधार वाले संगठन का स्पष्ट अभाव और पार्टी के वोट कैंक में पड़ी दरार.

इसमें कोई शक नहीं है कि बिहार अब भी जनता दल का ही गढ़ है और इसका श्रेय यदि किसी को है तो वह लाल प्रसाद यादव को ही है. उन्होंने पिछड़ों को एक राज्य की एक शक्ति में तब्दील कर दिया है. छोटी हैसियत से सत्ता में पहुंचकर बड़े आदमी बने बिहार के मूल्यमंत्री लालु प्रसाद यादव धुआंधार वक्ता हैं. प्रचार कार्य में भी उनका सानी नहीं है और विरोधियों के खिलाफ आग उगलने (देखें बॉक्स) की कला में भी उन्हें महारत हासिल है. प्रांतीय स्तर पर लालू यादव शक्तिशाली नेता के रूप में उभरे हैं और उनके रंग-ढंग एमजीआर वाले हैं. लेकिन यह बात पार्टी की कमजोरी भी सावित हो सकती है क्योंकि इसी के कारण बिहार में जनता दल का मतलब सिर्फ लालू से है.

और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि जाति के नाम पर की गई राजनीति के अपने नुकसान होते हैं. पिछड़े वर्गों के लोगों में आज यादवों का ही बोलबाला है. इससे कुर्मी, कोइरी और बनिया जैसी दूसरी पिछड़ी जातियों में घोर असंतोष फैलने लगा है. यह वर्ग अत्यंत पिछड़ी जातियों (ईबीसी) के साथ मिलकर राज्य की कल 52 प्रतिशत अन्य पिछड़ी जातियों की जनसंख्या का करीब 35 फीसदी है. टिकटों के बंटवारे में इस तथ्य को नजरअंदाज कर दिया गया. पूर्व सांसदों के अलावा यादवों को आठ सीटें, कुर्मी और कोइरी को दो-दो सीटें, राजपूतों को पांच और भूमिहारों को दो सीटें दी गईं. अत्यंत पिछड़ी जातियों को कोई भी सीट नहीं मिली.

भाजपा और इंका ऐसी ही दुखती रगों का फायदा उठाकर

'लाल तुफान' को मुट्टी में करने की आस संजोए हैं. लेकिन उत्तर प्रदेश में जनता दल जिस तरह अपने विनाश पर आमादा है उससे विपक्षी पार्टियों का काम आसान हो गया है.

वैसे जनता दल को अभी पूरी तरह चुकी हुई पार्टी नहीं कहा जा सकता क्योंकि आखिर-आखिर तक प्रचार में कुछ नए आयाम जुड सकते हैं. पर उत्तर प्रदेश में तो पार्टी की उम्मीदें बुझ रही हैं. अप्रैल के तीसरे सप्ताह तक जनता दल राज्य की सभी लोकसभा और विधानसभा सीटों पर भाजपा और इंका के साथ तिकोने संघर्ष में बराबरी पर था. पर तब से आज तक स्थिति में नाटकीय रूप से परिवर्तन आया है. आपसी कलह, उलझाव, पार्टी कार्यकर्ताओं में उत्साह की कमी और जिला स्तर पर संगठन के अभाव का असर अब साफ नजर आने लगा है.

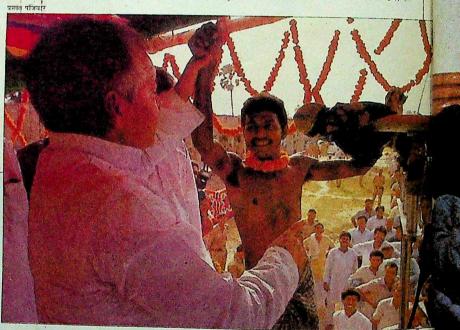
किसी भी सक्षम राजनैतिक संगठन में चुनाव के उम्मीदवारों को टिकटों के बंटवारे का काम जल्द से जल्द निवदाया जाता है.

लेकिन जनता दल इस काम को ठीक से अंजाम नहीं दे सका. टिकटों के बंटवारे के दौरान दल की आंतरिक कलह खुलकर सामने आ गई. और अरुण नेहरू तथा आरिफ मृहम्मद खां के नेतृत्व वाले जनमोर्चा गृट के अलग होने के बावजूद लड़ाई-झगड़े चलते रहे. विधानसभा के लिए टिकटों के बंटवारे के समय अजित सिंह और शरद यादव की जोर-आजमाइश ने हास्यास्पद

शक्त अख्तियार कर ली थी.

लखनऊ में. पिछले पखवाडे, वी.पी. सिंह का हवाई अड़े पर दिल्ली से पहंचते ही घेराव किया गया. घेराव लखनऊ के ही एक कथित माफिया सरदार के उग्र समर्थकों ने इसलिए किया क्योंकि तमाम आश्वासनों के बावजुद अंतिम समय में उनका टिकट काट दिया गया. अब ये सज्जन भाजपा में शामिल हो गए हैं. कई दूसरे निर्वाचन क्षेत्रों में जनता दल के अधिकृत उम्मीदवार कम-से-कर्म चार असंतुष्टों से लोहा ले रहे हैं. फिर उत्तर प्रदेश में वी.पी. सिंह और अजित सिंह को छोड़कर लालू सरीखा कोई नेता नहीं है. पर अजित सिंह पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक ही प्रभाव रखते हैं.

वी.पी. सिंह अच्छी तैयारी वाले पार्टी ढांचे के महत्व को यह कहकर नकारते हैं कि, ''जनता ही हमारा संगठन है.'' लेकिन वे या तो नासमझ साबित हो रहे हैं या फिर इस तथ्य को टाल रहे हैं. किसी भी पार्टी के महज नारेबाजी करने वाले नौजवान उत्तर



एक पासी युवक के साथ लालूः जनाधार

## तमाम तरह के रस-रंग

लालू प्रसाद यादव

आ देवाए और हाथ आसमान की ओर उठाए लालू यादव फिल्म

'गंगा जमुना' या 'संघर्ष' के प्यारे-दूलारे प्रविया भैया द्विलीप कुमार सरीखे लगते हैं. सरकारी हेलीकॉप्टर से राज्य के लगभग सभी 54 लोकसभाई क्षेत्रों का दौरा कर चुके लालू ने राजनैतिक मंच पर तमाम तरह के रस विखेरे हैं:

करुण रस: हमको यह कहने में कोई सरम नहीं है कि हम गरीब थे. हम एक गरीब यादव के बेटे हैं जिसके पास तीन बीघा जमीन और एक पूंछकटी भैंस थी.

सामाजिक संदेश: चपरासी के जैसा आदमी मुख्यमंत्री कैसे वन जाता है. इसलिए कि मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री उसी बायलट वक्स से निकलते हैं जिसमें आप भोट डालते हैं.

अवहेलना: कांग्रेस कहती है कि लालू सरकार को सस्पेंड कर दो. हम कोई दरोगा हैं कि आप जब चाहे सस्पेंड कर दें. कर के देखिए!

हास्य रसः हमको किसका डर है? जगन्नाथ मिश्रा का? हम बहुत लड्डू और पेड़ा मिश्रा को देख चुके हैं. या हम भाजपा से डरते हैं जो मंदिर के नाम पर करोड़ों का चंदा जमा करके इस नारे में विश्वास करती है कि दुनिया में आए हैं तो कुछ काम करिए, चंदे के पैसे से जलपान करिए.

वीर रसः लोग कहते थे कि आडवाणी के साथ भगवान हैं.

लेकिन असली राम हमसे बोले कि लाल यह आदमी जाली है, जाओ उसको चित कर दो. तो हमने पकड़ लिया आडवाणी को. और वे त्रंत चित हो गए.

तिरस्कारः हम चुनाव प्रचार के लिए अपना हेलिकॉप्टर इस्तेमाल काहे नहीं करें? मुलायम क्या नहीं कर रहे हैं? राजीव के तीन नहीं हैं? चंद्रशेखर जी का अपना जेटवा है. हम चीफ मिनिस्टर हैं. पैंदल चलेंगे क्या?

उम्मीदः आप गरीब और दबे हुए लोगों को सत्ता हासिल करने का यह मौका है. आज सत्ता का मतलब है कलम का ताकत. कलम के ताकत से हम गरीब लोगों का टैक्स माफ कर दिए. (और फिर वे आवाज देते हैं कि भीड़ में कोई पासी है. एक युवक झिझकते हुए मंच पर आता है. लालू उससे कमीज उतारने को कहते हैं और उसके सीने पर ताड़ के पेड़ की रगड़ से बने निशान की ओर इशारा करते हुए पूछते हैं— इस गरीव आदमी से पूछिए कि क्या अब इसे टैक्स देना पड़ता है. वह व्यक्ति खण हो कर ना कहता है. और लाल उस चुनाव क्षेत्र के बारे में कहते हैं—'ले लिया'). —शेखर गुप्ता



प्रदेश जैसे विशाल राज्य के चनावी संघर्ष को नहीं संभाल सकते. इंका जैसी पार्टी को तो ऐन समय पर ऐसे कार्यकर्ता मिल जाते हैं जो मतदान केंद्रों पर चौकसी रख सकें क्योंकि इंका में अभी भी ग्राम स्तर पर अनुभवी कार्यकर्ताओं की कमी नहीं.

खराब ढंग से चनाव की देखरेख का अंजाम पार्टी के लिए अन्य पिछडी जातियों के इलाकों में ही नहीं, मुसलमानों के संदर्भ में भी घातक हो सकता है. अन्य पिछडी जातियों के वोट भाजपा, इंका और सजपा में बंट सकते हैं और इंका मुसलमानों के वोट ले सकती है. जनता दल लोकसभा की 22 सीटों और विधानसभा की 105 सीटों पर अपनी पार्टी की जीत के प्रति आश्वस्त है क्योंकि इन क्षेत्रों में 20 फीसदी से भी अधिक मुसलमान मतदाता हैं. लेकिन जनता दल की गिरती छवि के मद्देनजर कई मुसलमान नेता अपना समर्थन पलटने की सोच रहे हैं. उनके सामने सबसे अहम मसला भाजपा को पराजित करने का है. और इसलिए वे

ऐसी किसी भी पार्टी के उम्मीदवार को वोट देना नहीं चाहेंगे जिसके हारने की संभावना उन्हें दिखेगी.

मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव भी अन्य पिछड़े वर्गी और मुसलमानों के वोटों पर डाका डाल सकते हैं और वी.पी. सिंह पुरी तरह इन्हीं पर आश्रित हैं. मुसलमान खास तौर पर पिछले अक्तूबर में कार सेवकों पर की गई सख्ती के कारण मुलायम से खासे प्रभावित हैं. मुसलमान वोट वैंक में आया कोई भी बदलाव जनता दल की उम्मीदों पर पानी फेरने के लिए काफी है. उत्तर प्रदेश में अजित सिंह के नजदीकी, रशीद मसूद इस बात से आशंकित हैं कि मूलायम मध्य उत्तर प्रदेश में जनता दल के उम्मीदवारों को नुकसान पहुंचा सकते हैं.

मुसलमान वोटों को लेकर फैली अनिश्चितता के कारण ही वी.पी. सिंह जामा मस्जिद के सैयद अब्दुल्ला बुखारी से समर्थन लेने का फतवा दिलवाने पर मजवूर हए, वदले में बुखारी को कुछ



### ढीली पड़ती गांठें

भी बीय और वामपंथी दलों से जनता दल के रिश्ते आपसी निर्भरता के आधार पर चल रहे हैं. गठजोड़ कहीं मजबूत हैं तो कहीं कमजोर. तमिलनाडु में सीटों के बंटवारे की तनाव भरी बातचीत के बाद अब दोनों ही पक्ष असहज महसूस कर रहे हैं. वी.पी. सिंह ने किसी तरह करुणानिधि को कुछ अतिरिक्त सीटें छोड़ने पर राजी तो कर लिया पर विवाद अभी शांत नहीं हुआ है. उधर **आंध्र प्रदेश** में तेलुगु देशम और जनता दल गठजोड़ का चुनावी भविष्य भाजपा की सेंध से खतरे में पड़ गया है. तेलुगु देशम ज्यादा से ज्यादा पिछड़े उम्मीदवारों को टिकट देकर लड़ाई में बनी रहना चाहती है ताकि वह कम्मा समुदाय की हिमायती वाली अपनी छवि भी कुछ धुंधली कर सके.

असम में असम गण परिषद (अगप) के विभाजन से राष्ट्रीय मोर्चा अब अकेले ही चुनाव लड़ रहा है. इस विभाजन ने ईका का हौसला इस कदर बढ़ा दिया है कि वह अब विधानसभा सीटों पर सबके सफाए का दावा करने लगी है.

राष्ट्रीय मोर्चा के नेताः दिखावे का एका

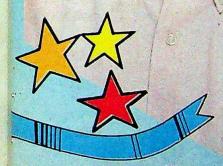
उधर हरियाणा में हरियाणा विकास पार्टी के बंसीलाल से वी.पी. सिंह के तालमेल से राज्य के कई पार्टी कार्यकर्ता खफा हैं. पर पार्टी का मानना है कि बंसीलाल सत्ता में वापस आ जाएंगे. हविपा को मालूम है कि पिछड़ों के वोट (कुल का 30 फीसदी) जीतने में जनता दल काम आएगा.

जहां तक वामपंथी पार्टियों का मामला है, वी.पी. सिंह इनके समर्थन से जनता दल की गरीबों के हिमायती और नरम वामपंथी छवि बनाए रखना चाहते हैं. उनका समर्थन करने के लिए साम्यवादियों की वजहें अलग हैं. राष्ट्रीय नीतियों पर असर डालने का उनका अरमान पुराना है. इसके लिए पिछड़ों और मुसलमानों के जिन वोटों की फसल बी.पी. सिंह बो रहे हैं वह भी उनके लिए महत्वपूर्ण है.

मंडल से उन्हें पिछड़ों में अपना आधार बनाने में मदद मिलेगी. केरल में वे इसी की उम्मीद लगाए बैठे हैं क्योंकि राज्य की पिछड़ी जातियों के लोग परंपरागत तौर पर इंका के वोटर हैं. पश्चिम बंगाल में उन्हें उम्मीद है कि राष्ट्रीय मोर्चा से गठजोड़ करके वे धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय की अपनी छवि को विस्तार दे सकेंगे.

मानिक चेता

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हिंगे

और सिंह छले म से जाव जात से

# पुटकी पानमसाला

प्यार के रिश्तों में एक अनोखी ताज़गी और मीठी-मीठी महक लाता है। हर मौके हर महफिल में रंग जमाता है। सौफ छुआरा और इलायची वाला माऊथ फ्रैशनर

मिनिक चेतावनी: बर्दा चबाना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।









विश्वनाथ प्रताप सिंह

विश्वनाथ प्रताप सिंह के बेहद सफल महाराष्ट्र दौरे के दौरान प्रमुख संवाददाता जफर आगा ने उनसे वातचीत की. अंशः

• इस चुनाव में मुख्य मुद्दे क्या हैं?

मुख्य मुद्दा है पिछड़े समूह की सत्ता में भागीदारी का. यह चुनावी लड़ाई से बड़ा मुद्दा है.

• आपके आलोचक आप पर जातिवाद के सहारे वोट बैंक बनाने

का आरोप लगाते हैं.

अगर वे मुझे जातिवादी कहते हैं तो कोई हर्ज नहीं. लेकिन मुझे बताएं कि आजादी के 40 वर्ष बाद भी क्यों भारत की आबादी में 75 फीसदी हिस्सा रखने वाले पिछडी जाति के लोग सभी महत्वपूर्ण राजनैतिक, आर्थिक और प्रशासनिक पदों से वंचित हैं? क्या यह जाति व्यवस्था नहीं है?

• इस आरोप को आप अपने खिलाफ दुष्प्रचार भर मानते हैं?

नहीं, यह सामान्य प्रतिक्रिया है. असल में उन लोगों को यह बताने की जरूरत है कि अगर यह गैरबराबरी चली तो एक दिन यह उनको भी लील जाएगी.

• पिछली बार आपका जितना भी पार्टी आधार था उसे भी आपने दल के विभाजन के बाद गंवा दिया है.

आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, ओडीसा में हमारा संगठन मजबूत है. उत्तर प्रदेश, विहार और गुजरात में भी है. और क्या मैं यह पूछ सकता हूं कि किस तरह पिछले चुनाव में विशाल और मजबूत संगठन वाली इंका को हमारे जैसे नए और कमजोर संगठन ने पछाड दिया था?

तब जनता दल एक था.

कार्यकर्ता आज भी हमारे साथ हैं. साथ ही लोग खुद भी सोचते-विचारते हैं.

 आपकी पार्टी के कुछ पुराने सहयोगी आपको कपटी कहते हैं जो चुनावी फायदे के लिए समाज को तोड़ रहा है.

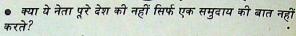
जब कभी भी वंचित तबका अपनी स्थिति सुधारने की कोशिश करता है, निहित स्वार्थी तत्व उसे ऐसे ही कोसते

लेकिन आरिफ और अरुण नेहरू......

ठीक वहीं लोग, जो असमान व्यवस्था से फायदे लेते हैं, ऐसे आरोप लगाते हैं

• आप भाजपा से लड़ने का दावा करते हैं और इमाम बुखारी और सैयद शहाबुद्दीन जैसे नेताओं से दोस्ती करते हैं जिन्हें आरिफ सांप्रदायिक मानते हैं.

ये सर्टिफिकेट (बुखारी और शहाबुद्दीन को) किसने दिए हैं?



एक समुदाय भी राष्ट्र का अंग है. अगर मैं एक बौद्ध धर्मगुरु से मिलता हं तो मुझे सांप्रदायिक नहीं कहा जाता. मैं किसी ईसाई धार्मिक नेता से मिलता हूं तो सांप्रदायिक नहीं कहलाता.

• क्या आप चनाव को मंडल मुद्दे पर जनमत संग्रह का रूप देना चाहते हैं?

हां, यह मुख्य मुद्दा है और हमने चुनाव की दिशा तय की है.

अगड़ी जाति के गरीबों को आरक्षण

देने के मामले में आपकी क्या राय है?

हम अगड़ी जाति के गरीबों के लिए 5 से 10 फीसदी आराक्षण देंगे.

 अगर किसी एक पार्टी को बहमत नहीं मिला तब क्या होगा?

राष्ट्रीय मोर्चा और वाम मोर्चा को स्पष्ट बहुमत मिलेगा.

• क्या 1989 जैसी विशेष दशा में जनता दल और भाजपा के साथ आने की संभावना है?

भाजपा के साथ सहमति की कोई संभावना नहीं है. हम भाजपा के एकदम विरोधी हैं

• राजीव गांधी को छोड़कर बाकी कांग्रेस के बारे में आपकी क्या राय है?

यह सवाल उतना महत्वपूर्ण नहीं है. मैंने भविष्यवाणी की थी कि 1989 के चुनाव के बाद दो-तीन वर्षों तक राजनैतिक ताकतों के प्नध्रवीकरण के कारण अस्थिरता बनी रहेगी. इस दौरान मैं रोज-ब-रोज की राजनीति पर ध्यान नहीं दूंगा कि आज कौन यहां आया, कौन वहां गया. मैं 27 मई से ही देश भर में सामाजिक शक्तियों के ध्रवीकरण पर ध्यान दुंगा.

 जिस तरह के सामाजिक बदलाव की बात आप करते हैं वह कभी बिना हिंसा

के संभव नहीं हुई है.

ऐसा होना भारत में संभव है. मंडल मुद्दे पर कहीं भी दंगा नहीं हुआ. जातीय दंगे नहीं हुए. लेकिन आप सामाजिक बदलाव को अगर दबाना चाहेंगे तो हिसा फूट सकती है. आंध्र प्रदेश में यह हो रहा,

जीदू वि

मजबूर

रेखिये

मादी है

वेनावट

विविध

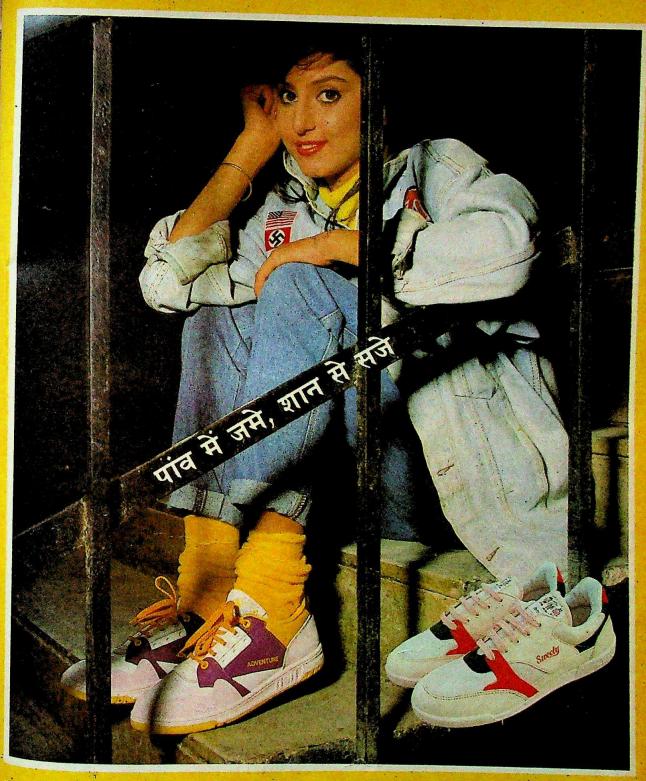
है. नक्सली मूलतः दलित हैं. हिंसा किसी और रूप में फूट सकती है.

निश्चित रूप से यह होगा. महात्मा फुले ने कहा था कि जब कभी भी सामाजिक शक्तियां सामाजिक बदलाव के अपने लक्ष्य को हासिल करने के निकट होती हैं तो सांप्रदायिक समस्या उठ खड़ी होती है. ठीक यही अभी हो रहा है. भाजपा को अचानक राम मंदिर की चिंता क्यों हो गई? वे असल में सामाजिक बदलाव की लड़ाई को दूसरी तरफ मोड़ना चाहते हैं



"भाजपा को अचानक राम मंदिर की चिंता क्यों हो गई? वे असल में सामाजिक बदलाव की लड़ाई को दूसरी तरफ मोड़ना चाहते हैं"

ublic Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar



जीदू विखेरिये. कुछ ऐसा समा बनाइये कि लोग आपको दोबारा देखने पर मजबूर हो जायें. एक्शन के जूते पहिनये और फैशन की रूमानी दुनिया में कदम रिषये. एक्शन के जूते आज युवा पीढ़ी में बेहद लोकप्रिय हैं. वजह बहुत सीधी-मादी है. अपनी खास बनावट और शैली के कारण ये जूते सबसे अनूठे हैं. इनकी बनावट ऐसी है कि आपके पांवों को पूरा आराम पहुंचे. सुंदर, सजीले ये जूते विविध रंगों में उपलब्ध हैं. इनका कोई जवाब ढूंढ़े नहीं मिलेगा.

नहीं

रू से ईसाई

वेना

ो है. **रक्षण** है? तए 5

नहीं

को

ननता की

कोई हदम

बाकी हैं? हैं है. तक के रान यान कौन पर

न की हंसा

डल गीय जिक इसा रहा

जब .

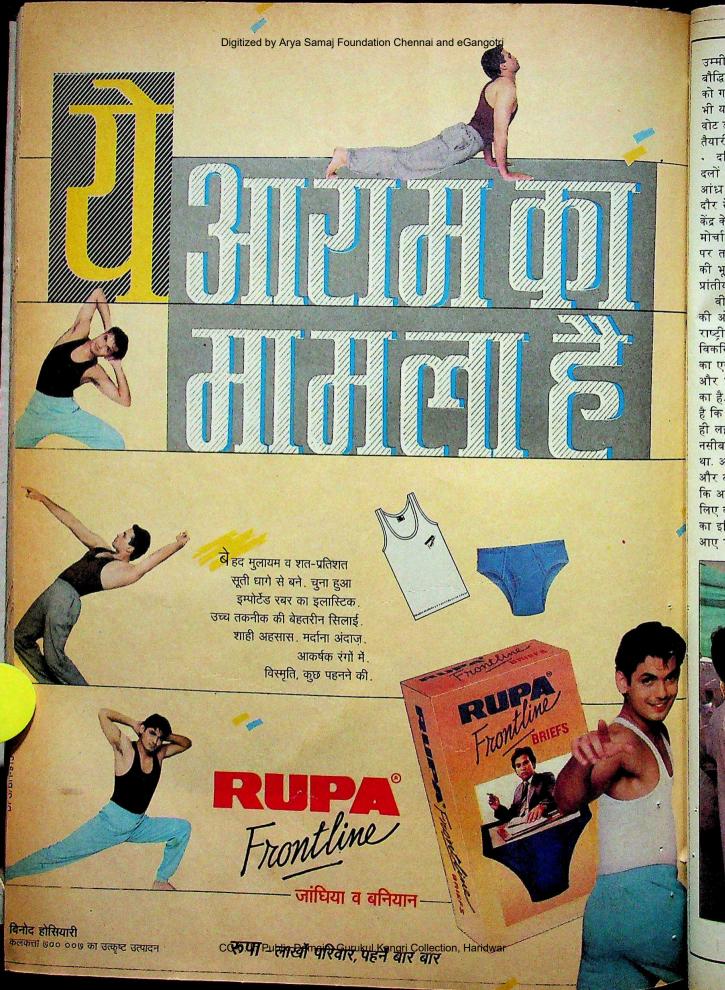
क्य

उठ

नक

नक





उम्मीदवारों के चयन की आजादी दी गई. लेकिन यह बात उन बौद्धिक मुसलमानों को नागवार लगी है, जो ऐसे धार्मिक फैसलों को गलत मानते हैं. साथ ही उन स्थानीय मुसलमान नेताओं को भी यह वात स्वीकार्य नहीं क्योंकि उनमें से कई "होशियारी से वोट डलवाकर'' भाजपा को हरा सकने वाले उम्मीदवारों के लिए तैयारी कर रहे हैं.

दक्षिणी राज्यों में, जहां वी.पी. सिंह क्षेत्रीय और वामपंथी दलों के साथ मिले हुए हैं, चालें अलग हैं. तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और यहाँ तक कि केरल भी मंडल वाली राजनीति के दौर से आगे निकल आया है. पर इन राज्यों में आम मतदाता केंद्र के हद से ज्यादा हस्तक्षेप से परेशान है. इन राज्यों में राष्ट्रीय मोर्चा संघवाद की बात उठा रहा है. वी.पी. सिंह तो खास तौर पर तमिलनाडु में करुणानिधि सरकार की बरखास्तगी में इंका की भूमिका के विरुद्ध आक्रामक रहे हैं. लिहाजा इन जगहों पर प्रांतीय 'आत्मसम्मान' को भुनाने की कोशिश चल रही है.

वी.पी. सिंह अब कह रहे हैं कि वे चुनाव के बाद के परिदश्य की ओर केंद्रित हैं. अगर वे हार भी जाते हैं तो उनकी मंशा राष्ट्रीय मोर्चा को राष्ट्रीय स्तर की एक ऐसी पार्टी के रूप में विकसित करने की है जो पिछड़ों, मुसलमानों और अल्पसंख्यकों का एकमात्र विशाल संगठन बन सके. उनका महती उद्देश्य इंका और भाजपा के खिलाफ एक अत्यंत सशक्त विकल्प खड़ा करने का है. वैसे दिल ही दिल में उनकी उम्मीद इसी बात पर कायम है कि 'पिछड़ों के मसीहा' के रूप में उनकी छवि अंततः एक वैसी ही लहर लाएगी जैसी इंदिरा गांधी को 70 के दशक के शुरू में नसीव हुई थी. लेकिन इंदिरा गांधी के पीछे समूचा बौद्धिक वर्ग था. और वी.पी. सिंह की समस्या यह है कि उन्होंने मध्यम वर्ग और बौद्धिक जनों में अपनी छवि इस हद तक खराब कर ली है कि अब वे चाहे कितने भी नए वोट बैंक क्यों न बना लें, उनके लिए व्यापक सहमित होनी मुश्किल है. और भारत की राजनीति का इतिहास इस बात का साक्षी है कि संक्चित दायरे में सिमट आए राष्ट्रीय नेताओं को खुला आकाश कभी नसीब नहीं हुआ.

वी.पी. सिंह

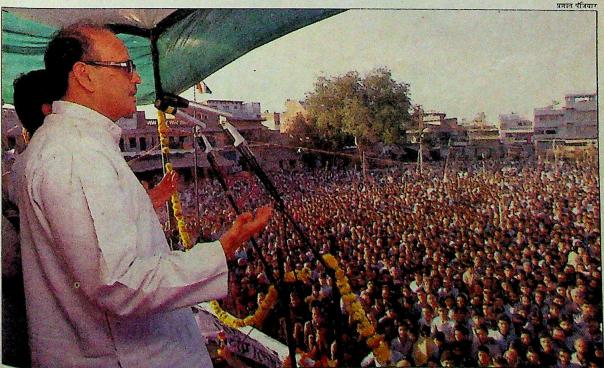
# स्वागत,

नए इलाकों में दिल खोलकर समर्थन लेकिन पुरानी जगहों पर मुट्ठी भर लोग ही जुटे

नावी रणनीति इतनी स्पष्ट कहीं और नहीं है. 'भारत के 75 फीसदी वंचितों' पर ध्यान दीजिए और उनसे राजनैतिक लूट में भागीदारी का वादा कीजिए तथा साथ ही शेष 25 फीसदी लोगों को जितना गरिया सकते हों, गरिया लीजिए जो वैसे भी आपसे दूर हो चुके हैं. यह चुनावी रणनीति कारगर हो रही है? जवाव हां और ना दोनों ही है. अब तक उत्तर भारत में वी.पी. सिंह के अभियान से लगता है कि मंडल/मस्जिद का संदेश कुछ इलाकों में गीले पटाखे की तरह फुस्स हो गया है तो कहीं-कहीं धमाके भी कर रहा है.

महाराष्ट्र के ब्रह्मपुरी में वे दोपहर में पहुंचते हैं. तापमान 44 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच चुका है. नव-बौद्धों और हरिजनों की इस छोटी बस्ती में भाषण देने के पहले वे रेस्ट हाउस जाकर भोजन और थोड़ा आराम करते हैं. पूरे कस्बे में उनके पहुंच जाने की खबर फैल जाती है. और फिर एक विशाल भीड़, जिसमें अधिकांश दलित हैं, कड़ी धूप में भी इस 'मंडल मसीहा' के दर्शन करने आ जाती है.

उनके भाषण में डॉ. आंबेडकर की भरपूर स्तृति होती है. वी.पी. सिंह वह किस्सा सुनाते हैं कि कैसे उनकी सरकार ने संसद में बाबा साहब की प्रतिमा लगाने का हिम्मत भरा काम किया. वे



महाराष्ट् के मालेगांव में चुनाव अभियान पर वी.पी. सिंहः सामाजिक समानता की लक्फाजी

कहते हैं, "पार्लियामेंट की दीवार में तो जगह थी लेकिन कांग्रेस के दिल में जगह नहीं थी." और लोग हर्षध्विन करके उनसे सहमति जताते हैं. एक स्थानीय हरिजन भीमराव जैसे इन सभी लोगों की तरफ से कहता है, "संसद में हमारे नायक की तस्वीर लगाकर उन्होंने हम सभी का सम्मान

इससे आगे औरंगाबाद में भी बड़ी भीड़ बी.पीं सिंह के इंतजार में धूप में बैठी है. इस शहर में मुसलमानों की बड़ी आबादी है जो मुबह दस बजे से ही उनका इंतजार कर रहे हैं. बाताबरण में उत्तेजना है. आम लोगों की भाषा बोलते हुए वे शर और किवताओं की पंक्तियां बोलते हैं और रह-रहकर

मस्जिद वाले मुद्दे पर लौटते हैं, ''उन्होंने कहा मस्जिद गिरेगी, नहीं तो सरकार गिरेगी. हमने कहा सरकार गिरेगी पर मस्जिद नहीं गिरेगी.'' 'शहादत' की इस कहानी पर जोरदार तालियां बजती हैं.

महाराष्ट्र में लगता है कि मंडल मंत्र का पिछड़ों पर असर हो रहा है. लगता है दलितों और मुसलमानों की तरफ से मिला



टिकट न पाने वाले नेताओं के समर्थक लखनऊ हवाई अड्डे पर वी.पी. सिंह का घेराव करते

समर्थन वी.पी. सिंह की थकान को दूर ही रखता है. सिर्फ तय समय पर पहुंचने की मुश्किल रहती है. सो, वे खाना छोड़कर उबला पानी पीकर और चने खाकर रहते हैं. यात्रा करते समय या तो वे अखबार पढ़ते हैं या फिर झपकी लेते हैं. सिर्फ पुणे में एक बार उनको अपने विद्यार्थी जीवन के दिनों की याद आ घेरती है. "अरे,

गली, एव गएगा: '' गगी बेड़िय ज़के शब्द दो दिन

अगडे उनव

# पिछले साल, रेफ्रिजरेटर खरीदने वाले हर 10 व्यक्तियों में से 5 ने केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर ही लिया.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी घुड़सवारी यहां होती है?'' वे एक राहगीर से पूछते हैं.
पुणे के बाद अगला पड़ाव नासिक का है. वहां विमान उतरने की
विधा नहीं है. लेकिन दौरा रोकने की जगह वे पांच घंटे की कार
विभाग करके मध्य रात्रि के बाद ही वे वहां पहुंच पाते हैं पर भीड़
जनका इंतजार कर रही होती है. और फिर जिस शानदार ढंग से
तिंग उनका स्वागत करते हैं उससे उनकी सारी थकान दूर हो
जिती है. वे उन्हें बताते हैं
के कैसे मंडल जादू से एक

दस दिनों में विश्वनाथ प्रत

से एक दस दिनों में विश्वनाथ प्रताप सिंह
महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, तिमलनाडु,
उत्तर प्रदेश, बिहार और दिल्ली के
करीब 112 चुनाव क्षेत्रों का दौरा कर
चुके हैं. वे ज्यादातर चुनावी दौरे कार
से ही करते हैं. लेकिन आंध्र प्रदेश,
महाराष्ट्र और तिमलनाडु में उन्होंने
पार्टी द्वारा बिहार सरकार के किराए
कि मैंन

महाराष्ट्र आर तामलनाडु म उन्हान पार्टी द्वारा बिहार सरकार के किराए पर लिए बीच क्राफ्ट विमान से लंबी दूरी की यात्राएं कीं. गली, एक कुर्मी, एक तेली, एक थांगड़ 'क्लास वन' अफसर बन गएगा: "लोहे की वेडियां तो काटी जा सकती हैं लेकिन मन पे

करते

र समय

ा पानी

तो वे

क बार

''अरे,

गो बेड़ियों को काटना ही मंडल और जनता दल का काम है.'' ज़के शब्द सीधे दिल में उतरते हैं. दो दिन बाद वे उत्तर प्रदेश पहुंचते हैं जहां हुआ हल्का स्वागत नेराश करता है. जैसे ही बी.पी. सिंह लखनऊ पहुंचते हैं, पार्टी के

गाड़े उनके सामने आ जाते हैं. ये विवाद टिकट बंटवारे के घपलों

से जुड़े हैं. लखनऊ हवाई अड्डे पर ही उन्हें स्थानीय माफिया नेता गुरुवख्ण सिंह के समर्थक घंटे भर तक घेरे रहे कि उनके नेता को टिकट क्यों नहीं दिया गया. वे चाहते हैं कि वी.पी. सिंह उसी क्षण कोई घोषणा कर दें. इस पर नाराज हो गए नेता अपने साथियों से बात किए बिना कुछ भी कहने या करने से इनकार कर देते हैं.

राज्य के नेता उन्हें वहां से निकालकर बाराबंकी ले जाने में सफल रहे जहां मात्र 500 लोग उनके इंतजार में सह खड़े हैं. स्थिति आगे और भी खराब दिखती है. है, फैजाबाद जाने के सारे रास्ते में जनता दल के लोग मात्र दो नुक्कड़ सभाएं ही कर पाते हैं.

ऐसी ही बेरुखी खुद उनके चुनाव क्षेत्र फतेहपुर के मतदाताओं ने पिछले महीने भी दिखाई थी जब वे वहां नामांकन पत्र जमा कराने गए थे. वी.पी. सिंह को अपनी प्रशंसा खुद करनी पड़ी, "फतेहपुर की धूल के सम्मान के लिए

मैंने खुद को धूल में मिला दिया. मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं ऐसा कुछ भी नहीं करूंगा कि आपको सिर नीचा करके चलना पड़े.''

एक वार तो विंदकी बाजार में दर्जन भर मंडल विरोधी नौजवानों ने नारा लगाया, "वी.पी. सिंह वापस जाओ." वी.पी. सिंह इससे खुण नहीं हुए. किसी भी राजनेता की तरह अच्छी भीड़ देखकर ही उनका उत्साह बढ़ता है और अगर लोग उपेक्षा करें या विरोध करें तो उत्साह ठंडा भी पड़ जाता है. अगर महाराष्ट्र के दौरे ने जनता दल का मनोबल बढ़ाया, तो उत्तर प्रदेश ने गिरा भी दिया. अब वी.पी. सिंह खुद को मंझधार में पाते हैं जहां कोई लहर उन्हें ठेलकर आगे पहुंचा देती है तो कोई पीछे ठेल देती है.

— दिलीप अवस्थी, साथ में जफर आगा और अमृत ढिल्लों





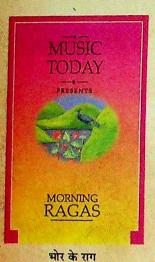


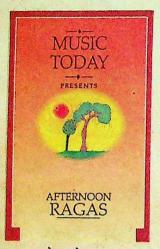
उपा दुउ मत्तुता सूरमण दुव

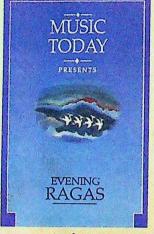
Pigitized by Arva Samaj Foundation Chennal and eGangotr

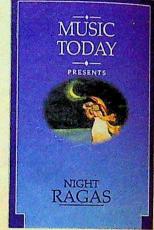
दिन से रात तक के रंगों की अनूटी संगीत यात्रा. एक-एक घंटे के 16 ऑडियो कैसेटों पर प्रतिष्ठित संगीतकारों के चुनिंदा राग उनके विशिष्ट अंदाज़ में, विशुद्ध खर की पकड़ डिजिटल पद्धति से तैयार कैसेटों पर.

और आपके घर डाक अथवा कूरियर से पाने की सुविधा.









राजन कई उनक

लेकर

लगा लगा

वी.पी रहे हैं साथ

शिर

'निस् महास

वारिक

की वे

हार

मुकाद

हैं. ऐ

मैदान

कौन

किर

की तू

आगार

विवाद

संबोधि

बंगाल

सांप्रद

कुछ न

सर

र्दा

भाग-1 (कोड ए 90001) ललित राजन और साजन मिश्र (गायन) भैख शाहिद परवेज़ (सितार) अहीर भैरव श्रृति सदोलिकर (गायन) भाग-2 (कोड ए 90002) मियां की तोड़ी अमजद अली खां (सरोद) पंडित जसराज (गायन) विभास श्रुति सदोलिकर (गायन) भाग-3 (कोड ए 90003) जौनपुरी पद्मा तलबलकर (गायन) बिलासखानी तोड़ी अमजद अली खां (सरोद) देसी तोड़ी हरित्रसाद चौरसिया (बांसुरी) **भाग-4 (कोड ए 90004)** कुकुभ बिलावल मल्लिकार्जुन मंसूर (गायन) देशकार शाहिद परवेज़ (सितार) भैरवी पद्मा तलवलकर (गायन)

दोपहर के राग भाग-1 (कोड ए 90005) शुद्ध सारंग अमजद अली खां (सरोद) स्घरई मिल्लकार्जुन मंसूर (गायन) गौड़ सारंग पद्मा तलवलकर (गायन) भाग-2 (कोड ए 90006) बृंदावनी सारंग हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी) मधमद सारंग पंडित जसराज (गायन) धनी शाहिद परवेज़ (सितार) भाग-3 (कोड ए 90007) भीमपलासी मिल्लकार्जुन मंसूर (गायन) पटदीप श्रुति सदोलिकर (गायन) मांड शाहिद परवेज़ (सितार) भाग-4 (कोड ए 90008) मुल्तानी राजन और साजन मिश्र (गायन) मधुवंती हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी) पोलू अमजद अली खां (सरोद)

> ए 90001 ए 90002

> ₹90003

₹ 90004 ₹ 90005

7,90006

0,90007

य 90008 य 90009

ए 90010

U 90011

₹90012

**Q90013** 

R 90014

nyPublic

सांध्य के राग भाग-1 (कोड ए 90009) मारवा पंडित जसराज (गायन) श्रुति सदोलिकर (गायन) हंसध्वनि शाहिद परवेज़ (सितार) भाग-2 (कोड ए 90010) पृरिया राजन और साजन मिश्र (गायन) श्याम कल्याण अमजद अली खां (सरोद) मिल्लकार्जुन मंसूर (गायन) भाग-3 (कोड ए 90011) शुद्ध कल्याण पद्मा तलवलकर (गायन) मांझ खमाज हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी) दुर्गा राजन और साजन मिश्र (गायन) भाग-4 (कोड ए 90012) यमन शाहिद परवेज़ (सितार) शंकरा पंडित जसराज (गायन) मिश्र धारा श्रुति सदोलिकर (गायन)

रात्रि के राग भाग-1 (कोड ए 90013) शृद्ध नट मिल्लकार्जुन मंसूर (गायन) केदार पद्मा तलवलकर (गायन) झिंझोटी हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी) भाग-2 (कोड ए 90014) बागेश्वरी पंडित जसराज (गायन) हमीर पद्मा तलवलकर (गायन) तिलक कामोद शाहिद परवेज़ (सितार) भाग-3 (कोड ए 90015) मालकौंस हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी) मारु विहाग श्रुति सदोलिकर (गायन) जैजैवती राजन और साजन मिश्र (गायन) भाग-4 (कोड ए 90016) नायकी कान्हड़ा श्रुति सदोलिकर (गायन) देश पंडित जसराज (गायन) दरबारी अमजद अली खां (सपेद)

मल्य

(टैक्स पैकिंग और मेजना शामिल) @ 45 रु. प्रति कैसेट

### कृपया ध्यान है

- दिल्ली से बाहर के स्थानों के चेकों के साथ 10 रू. की अतिरिक्त ग्रांश आवश्यक.
   मुंबई, कलकता, मद्रास और दिल्ली के चेक/डिमांड झुफ्टों का एमआईसीआर
- कैसेट आपके घर रिबस्टर्ड डाक या कृरियर से पहुंचाए जाएंगे.
- \* डिलीक्री के लिए कृपया कम से कम 3-4 सप्ताह का समय दें.
- \* उपहार देने के लिए कृपया उपहार पाने वाले का नाम और पता संलग्न ऑर्डर फार्म पर लिखकर फेटे
- ेंप बारि प्रश्निक रुद्रे के नाम करें और 'म्यूज़िक रुड़े', पोस्ट बॉक्स 29, नई दिल्ली 10001 के पत्रे पर भेजें,
- कृषणा ऑर्डर फॉर्स कम्प्यूटर प्रोसेर्सग सुक्रिया हेतु अंग्रेजी में ही घरे अपन संस्थान ऑर्डर फार्प न मिले तो अपना ऑर्डर अपने नाम, पता और देय राशि के साथ 'स्यूसिक टुंडे' योस्ट बॉक्स 29,
- व दिल्ली-110001 को पेज दे.
- दा व पेराकश सिर्फ पास्त में ही लागू है

	अर्थित देव स्थान है। अर्थित देव चाहता/बाहती है। भेरे लिए □ उपहर □ प्यूजिक दुढे को देव					
	Gift for	- Pin	Phone No			
Domain. (	AddressGurukul Kangri Collect	ion, Haridwar				

ऑर्डर फॉर्म

### ♦ विशे Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri

चिमन पर चुटकी

रेसेटॉ पर.

13)

रुयी)

15)

(यन)

चिमनभाई पटेल की राजनैतिक पैंतरेबाजी पर कई च्टकले चल निकले हैं. उनकी दलबदलू छवि को लेकर राज्य भर में कार्टन लगाए गए हैं. इनमें अहमदाबाद में लगा एक होडिंग उल्लेखनीय है, जिसमें वी.पी. सिंह और चंद्रशेखर चितित नजर आ साथ कैप्शन लिखा है—''चिमनभाई, ए नातरनू चेल्लू छे? (चिमन भाई क्या यह तुम्हारा आखिरी विधवा विवाह है? )

चिमन को परेणानी में डालने वाला एक और कार्ट्न है, जिसे उनकी ही पार्टी के एक विधायक वडोदरा बीचोबीच लगा छोड़ा मूंगफली के तेल की बढती कीमतों के लिए दलालों को जिम्मेदार ठहराते

हए इसमें चिमन से पूछा जा रहा है-रहे हैं और साड़ी पहने चिमनभाई राजीव की बांह पकड़े हैं. इसकें "चिमनलाल कहो कौन छे तेल नू दलाल?" (चिमनलाल बताओ कौन है तेल का दलाल).

### शिखंडियों की खातिर

कटक संसदीय सीट से भारतीय शिखंडी महासभा' के प्रत्याशी गदाहर बारिक के लिए मुद्दा है: हिजड़ों की वेहतरी. लेकिन बारिक की हार निश्चित है. उनका मुकाबला जे.बी. पटनायक से है. ऐसे में कोई उम्मीदवार मैदान में टिक पाएगा?



### खाली जगह को भरो

दिल्ली की दीवारें कब्जाने कार्यकर्ताओं लिखा, ''श्री.....को वोट उम्मीदवार का नाम खाली छोड़ दिया गया ताकि समय आने पर भरा जा सके. किसी शरारती ने वहां बड़े अक्षरों में लिख डाला, 'श्री 420'.



### कौन-कौन किस-किस में

दक्षिणपंथी और वामपंथी दलों की तू-तू मैं-मैं बदस्तूर जारी है. आगामी चुनावों के कारण यह विवाद और तेज हो गया है.

सतगछिया में एक रैली को संबोधित करते समय पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ज्योति बस्

सांप्रदायिक भावनाएं भड़काने के लिए भाजपा के खिलाफ क्या इशारा पार्टी की सभाओं में इन दोनों महान क्रांतिकारियों के कुछ नहीं बोल गए. लालकृष्ण आडवाणी के रथ पर लगे भगवान विशाल चित्रों की मौजूदगी की ओर था.



राम के चित्रों की आलोचना करते हुए ज्योति बसु ने कहा, "आडवाणी के रथ पर राम की तस्वीर का क्या अर्थ? क्या राम भी भाजपा के सदस्य हैं?"

जाहिर है कि जवाब नकारात्मक ही होगा. पर एक भाजपा नेता ने तत्काल चुटकी ली कि, "क्या मार्क्स और एंजेल्स माकपा के सदस्य हैं?" उनका

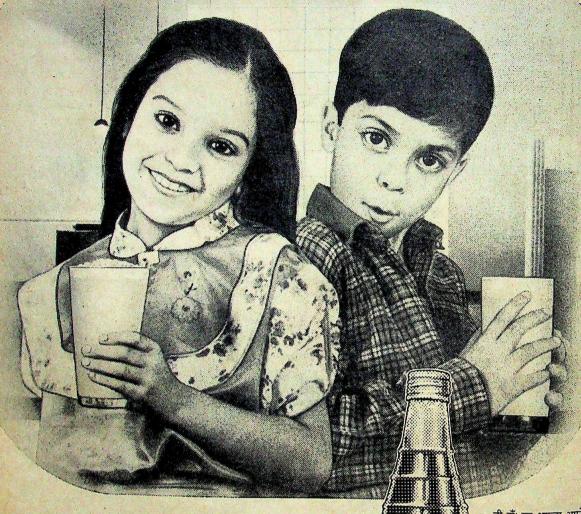
### ते व र

- आडवाणी और वाजपेयी दो-दो जगहों से चुनाव लड़ रहे हैं इससे प्रतीत तो यही होता है कि राम उनके साथ नहीं हैं. अजित सिंह, हिंदुस्तान वरना तो इन्हें राम भरोसे रहना चाहिए था.
- देश दूसरी गठबंधन सरकार को बर्दाश्त करने के लिए तैयार नहीं है.
- अटल बिहारी वाजपेयी, जनसत्ता

जनता दल अब जामा मस्जिद दल हो गया है.

- शांता कुमार, दैनिक ट्रिब्युन
- जब आप जीत जाते हैं तो हमारी राम-राम भी नहीं लेते और गरज पड़ी तो चार-चार बुलावे भेजे.
  - बयाना (राजस्थान) कांग्रेस सेवादल का एक कार्यकर्ता, जगन्नाथ पहाड़िया से, राजस्थान पत्रिका

हमारा मलपसन्द



रह अफ़ज़ा मिल्फ्शक! वाह! कितना मज़ेदार!

**FE 3140** 

85 वर्षों से अधिक समय से सबका मनपसन्द शरबत।

जी हाँ। सह अफजा अपने किसी भी मनपसन्द पेय में मिलायें और एक खास स्वाद और आनन्द पायें।

ताजगी से भरपूर, सह अफ़जा मिल्कशेक है सेहतमन्द भी। मौसम कोई भी हो, दूध में चीनी के बजाये रुह अफ़जा मिलाइये और उसके सारे गुण पाईये।

सह अफजा मिल्कशेका स्वाद और स्वास्थ्य बेमिसाल, सालों साल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

अपन

के लोगं अपने इ को झूट एक अ मांग वे क्छ न अपना

फैसला उम्मीद भर में

नामो तिम क्षेत्र के हैं. इस उम्मीद तादाद नाम : मतदात

से चुना वालास् इस

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

### अपना उम्मोदवार

उधर रायच्र जिले के कोप्पल शहर के लोगों ने यह तय कर लिया है कि वे अपने इलाके के गैरजिम्मेदार विधायक को झूठ बोलने नहीं देंगे. कोप्पल को एक अलग जिला बनाने की लोगों की मांग के बारे में जब विधायक महोदय कुछ न कर सके, तो स्थानीय लोगों ने अपना ही एक उम्मीदवार खड़ा करने का फैसला कर लिया. अचरज यह था कि वह उम्मीदवार एक गधा था. सजे-धजे गधे को शहर भर में धुमधाम से घुमाया गया. एक आयोजक के



अनुसार, "हमारे द्वारा चुने गए प्रतिनिधि बिलकुल ही उदासीन हैं. अधिकांश समय वे कहने भर के ही विधायक रहते हैं. अगर कुछ किए बिना ही वे चुन लिए जा सकते हैं तो फिर यह गधा क्यों नहीं."

और क्यों नहीं. एक तख्ती पर लिखे शब्द थे- "क्या आप मुझे कोप्पल का प्रतिनिधि बनाएंगे?" पर चनाव के नियमों के मुताबिक जानवरों के चुनाव लड़ने की कोई व्यवस्था नहीं है, चाहे वे · किंतने ही परिश्रमी या विश्वसनीय क्यों न हों. लिहाजा "लोगों के इस प्रतिनिधि" को भाग्य आजमाने का मौका नहीं मिल सका.



### टोपी पर नारे

सफेद गांधी टोपी भी अब पूरे चलन में है. समाजवादी कांग्रेस के नेता एस.डब्ल्यू. धाबे द्वारा पिछले सप्ताह नागपूर में संवाददाता गए सम्मेलन में समर्थकों को झकाझक सफेद खादी टोपी पहने देखा गया. उन पर तरह-तरह के रंगीन नारे अंकित थे.

### अलग दिखने के लिए

ग्वालियर के उम्मीदवार मदनलाल धरतीपकड अजीबोगरीब हैं. उन्होंने एक और धरतीपकड़ से अलग दिखने के लिए अपने नाम के साथ 'कुत्ता' शब्द लगा लिया है. उनकी पत्नी को डर है कि उनके बच्चों को कुत्ते के बच्चे कहकर बुलाया जाएगा.



### नामों का चक्कर

तमिलनाडु के सथूर निर्वाचन क्षेत्र के मतदाता काफी पसोपेश में हैं इस चुनाव क्षेत्र में न सिर्फ उम्मीदवारों की अच्छी-खासी तादाद है बल्कि उनके अधिकांश नाम भी एक जैसे लगते हैं. मतदाताओं को सात रामचंद्रनों में से चुनाव करना है, साथ में दो

बालासुब्रह्मण्यम भी हैं और दो पुघजेंदिज भी.

इसलिए नाम के प्रारंभिक अक्षरों के सिवा उनके नामों की मदद करें इस क्षेत्र के मतदाताओं की!



अलग-अलग पहचान के लिए कोई और चारा नहीं. और उसमें भी खासी मेहनत होगी क्योंकि रामचंद्रनों में के.एस.एस.आर. (एमजीआर के पुत्र), के.एस.ए., ई.एस.ए., और एक एस.आर.एस. के नाम हैं.

दूसरी तरफ एक और उलझन भी है. दोनों सुब्रह्मण्यमों का प्रारंभिक अक्षर

प्घजेंदिजों में एक 'सी' हैं और दूसरे 'जी' हैं. अब भगवान ही

"

पने किसी

मेलायें और

आनन्द

अफजा भी। ा में

फजा ारे गुण

स्वार्द

सालो

### चु ना वी ते व र

 जो राजीव गांधी डर के मारे पंजाब में चुनाव नहीं लड़ रहे हैं, जिस कांग्रेस (इ) के दो प्रमुख नेता बूटा सिंह और बलराम जालड़ राजस्थान माग आए हैं, ऐसे भगोड़ों और कायरों से पंजाब समस्या का समाधान नहीं हो सकता.

मैरों सिंह शेलावत, राजस्थान पत्रिका

अभी मैं भूल चुका हूं कि मैं पत्रकार हूं.

उदयन शर्मा, नई दुनिया

रामायण में एक काना घोबी था जिसने अग्निपरीका के बावजूद सीता को वनवास दिला दिया था. मुझे भी एक काने ने ही धर्मवास शास्त्री (पार्टी टिकट न मिलने पर), जनसत्ता मेरे राम से अलग करवा दिया है.

निराशा यानी आप नहीं जानते कि अस्पताल के ढेर सारे बिल कैसे चुका सकेंगे **3114**.

विचाई क ताल में भ तकता है? से बच में हों य

स समस्या लेम — स विंक प्रीर्ग ताल में भा वर्च, इंटेसि शन और

डिक्लेम में कते हैं. स् गत दुर्घट केवल मेंगि अप जितन बुले हैं ला

नियम हैं त मिलने गत दुर्घट ,50,000 तेम — अ

हीं ज़्यादा है नहीं गय न बीमाधा हैं तो उसे गर्ते कि 3 किया हो.

िंसव केयर प्यताली इ प्य की पह करी जांच

M

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चाई का डटकर मुकाबला कीजिए. डॉक्टरी इलाज या ताल में भर्ती होने की जरूरत कब, किसे आ पड़ेगी, कौन कता है? यह मुसीबत कभी आप पर आ जाए तो बिल से बच तो नहीं सकेंगे न आप, फिर भले ही आप इस में हों या न हों.

स समस्या का बेहतरीन इलाज है – मेडिक्लेम तेम – सख्त जरूरत के वक्त आपका सच्चा साथी र्षिक प्रीमियम अदा कर देने भर से मेडिक्लेम बीमा तल में भर्ती रहने का आपका खर्च, घर में अस्पताली इलाज र्व, इंटेसिव केयर (सघन चिकित्सा), किसी तरह के बन और इसी तरह के अन्य संबंधित खर्च उठा लेता है. हिक्लेम में आप दो तरह की योजनाओं में से कोई सी भी कते हैं. स्कीम ए में नियमित मेडिक्लेम तो है ही, साथ हैं गत दुर्घटना हो जाने पर आपको मिलने वाले लाभ. स्कीम केवल मेडिक्लेम के ही लाभ शामिल हैं.

गप जितना प्रीमियम देना चाहें, उसके मुताबिक आपके बुले हैं लाभ के 6 विभिन्न स्तर. जिसे चाहें, चुन लें. मियम हैं रु. 200 से लेकर रु. 1500 तक. मेडिक्लेम के त मिलने वाले लाभ की अधिकतम सीमा है रु. 96,500 गत दुर्घटना होने पर मिलने वाली अधिकतम राशि है ,50,000. (कृपया साथ ही दी गई तालिका देखें).

### लेम — अब पहले से कहीं ज्यादा लाभ.

अप्रैल 1991 से लागू होने वाली मेडिक्लेम बीमा योजना हैं ज्यादा लाभ जोड दिए गए हैं लेकिन प्रीमियम जरा भी नहीं गया है

न बीमाधारकों के पास मेडिक्लेम पॉलिसी पहले से है, वे हिं तो उसे नए लाभों वाली इस योजना में बदलवा सकते हैं गर्ते कि 31 मार्च 1991 तक उन्होंने खर्च का कोई दावा किया हो.

सताल के कमरे की किराया सीमा में वृद्धि.

मिव केयर (सघन चिकित्सा) और घर में कराए जाने वाले यताली इलाज संबंधी बेहतर लाभ.

मि की पहले से कहीं आसान श्रेणियां.

स्री जांच पड़ताल के खर्च की 75% तक वापसी.

	श्रेणियां						
I	Ш	m	IA	٧.	VI	Part Course	
						Contract of	
	43					-	
750	550	350	250	150	100		
1500	1100	700	500	300	200	I	
33000	24000	15500	11000	6600	4500		
					NE TO	2000000	
22000	13200	9200	7000	3000	2600		
28000	16800	12800	9000	5000	3400		
6000	3500	2500	1600	1400	1400		
2500							
/500	4500	3000	2000	1700	1700		
160000	100000	2500					
130000	100000	/500					
7 30							
1600	020						
1300	930	700					
1300	840	600	250	250	200		
	750 1500 33000 22000	750 550 1500 1100 33000 24000 22000 13200 28000 16800 6000 3500 7500 4500 150000 100000	750 550 350 1500 1100 700 33000 24000 15500 22000 13200 9200 28000 16800 12800 6000 3500 2500 7500 4500 3000 150000 100000 7500	750 550 350 250 1500 1100 700 500 33000 24000 15500 11000 22000 13200 9200 7000 28000 16800 12800 9000 6000 3500 2500 1600 7500 4500 3000 2000 150000 100000 7500	750 550 350 250 150 150 1500 11000 700 500 300 33000 24000 15500 11000 6600 22000 13200 9200 7000 3000 28000 16800 12800 9000 5000 6000 3500 2500 1600 1400 7500 4500 3000 2000 1700 150000 100000 7500 4500 3000 2000 1700 150000 100000 7500	750	

नोट : 1. यह सिर्फ़ सूचक तालिका है. पूर्ण विवरण के लिए देखिए - मेडिक्लेम पॉलिसी.

2. पहले से चल रही उन बीमारियों का विशिष्ट उल्लेख जिनका, बीमा कराने वाले व्यक्ति को पॉलिसी लेते समय पता है.

करों में घूट : वैक द्वारा दिए जाने वाले रु. 3000त्तक के प्रीमियम पर आयकर अधिनियम की धारा 80D के अंतर्गत आयकर से छूट मिलती है.

आपके लिए उपयोगी कुछ अन्य पारिवारिक/व्यक्तिगत बीमा योजनाएं:

- भविष्य आरोग्य समुद्र पारीय मेडिक्लेम गृहस्वामी व्यापक बीमा व्यावसायिक क्षतिपूर्ति
- व्यक्तिगत दुर्घटना

### अब पहले से भी कहीं बेहतर!

आज की एक विशिष्ट जरूरत



### भारतीय साधारण बीमा निगम

अधिक जानकारी के लिए हमारी आपरेटिंग कम्पनियों के किसी भी कार्यालय से संपर्क करें:





दी न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड



दी ओरिएण्टल इन्स्योरेंस कंपनी लिमिटेड



युनाइटेड इंडिया इन्स्योरेंस क्पनी लिमिटेड



परिवारों की परंपरा

हरियाणा में कई नेताओं के रिश्तेदार चुनाव लड़ रहे हैं. पूर्व मुख्यमंत्री राव बीरेंद्र सिंह समाजवादी जनता पार्टी के टिकट पर महेंद्रगढ़ लोकसभा सीट के लिए चुनाव लड़ रहे हैं. उनके पुत्र अजित सिंह को अटेली से विधानसभा का टिकट मिला है तो दूसरे बेटे इंद्रजीत सिंह इंका टिकट पर जत्तूसना से विधानसभा सीट के लिए खड़े हैं. हरियाणा के पूर्व मंत्री गोवर्धन दास चौहान के बेटे डाबवाली (सु.) सीट से इंका के टिकट पर खड़े हैं, तो उनकी बेटी हरियाणा विकास पार्टी (हिवपा) के



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and e Gargo दिवंगत सर छोटूराम के पोते बीरेंद्र सिंह
उचाणा विधानसभा सीट के लिए इंका
उम्मीदवार हैं तो उनकी पोती बसंती देवी
हसनगढ विधानसभा क्षेत्र से निर्देलीय
उम्मीदवार हैं.

हिवपा के सर्वेसर्वा बंसीलाल के पुत्र सुरेंद्र सिंह अब भी इंका में हैं. उधर, रोहतक में देवीलाल के चुनाव अभियान की बागडोर उनके पोते रिव सिंह के हाथ में है, जबिक रिव के पिता प्रताप सिंह देवीलाल खेमे में नहीं हैं. अलग-अलग पार्टियों का प्रतिनिधित्व करने वाले परिवारों की राजनैतिक परंपरा में चनाव के बाद कोई परिवर्तन आएगा, संदेह है.



#### पोस्टर की धमकी

भाजपा के मदनलाल खुराना दक्षिण दिल्ली में अपने प्रतिद्वंद्वी रोमेश भंडारी पर 'गोला' दागने को तैयार लगते हैं. खबर है कि वे पामेला वॉर्डेस और रोमेश की उत्तेजक फोटो का पोस्टर जारी करने वाले हैं, "रोमेश तेरी ये शान, पामेला तुझ पे हरवान."

#### उत्साह में चूक

पत्रकार नाराज होकर इंका के प्रेस कक्ष से चले आए. वजहः मणिशंकर अय्यर द्वारा इंका प्रत्याशियों की सूची एक संवाद समिति को कथित रूप से जाहिर करना. अय्यर उत्साह में यह नहीं छिपा पाए कि तमिलनाडु के मयिला-दुयुरै से वे प्रत्याशी हैं.



#### वोट से ज्यादा ऑटोग्राफ

दिल्ली की जनता फिल्म अभिनेता और इंका उम्मीदवार राजेश खन्ना और उनके चुनाव अभियान को उत्सुकता से देख

रही है. राजधानी में आखिर पहली बार कोई फिल्मस्टार चुनाव मैदान में उतरा है. मगर अभिनेता से नेता बने इस सितारे की चकाचौंध से दिल्ली की पत्रकार विरादरी प्रभावित नजर नहीं आती. वे तो ऑटोग्राफ लेने के लिए उनके गिर्द जमा भीड़ से जूझने में ही लगे रहते हैं. असल में



ऑटोग्राफ देना ही राजेश खन्ना के चुनाव अभियान का अहम हिस्सा बन गया है.

> जब भीड़ ने इतनी दूर खदेड़ दिया कि वह उनकी फोटो नहीं खींच पाया तो उसकी टिप्पणी थी, "जितने वोट उन्हें मिलेंगे, उससे ज्यादा तो वे अपने ऑटोग्राफ ही बांट देंगे." कभी-कभी यह बयान अतिशयोक्ति भी नहीं लगता पर वक्त ही बताएगा कि राजेश खन्ना लालकृष्ण आडवाणी से किस कदर निवट पाएंगे.

> उनकी फोटो खींचने गए एक फोटोग्राफर को

#### "

#### चुना वी तेव र

जो पार्टी एक मिल्जिट तोड़ने पर तुली हुई है वह देश की एकता व अलंडता कायम कैसे रख सकती है?

■ वी.पी. सिंह, वारंगल की जनसभा में

• यह लड़ाई मेरी नहीं बल्कि कांग्रेस की है.

राजेश सन्ना, नवभारत टाइम्से

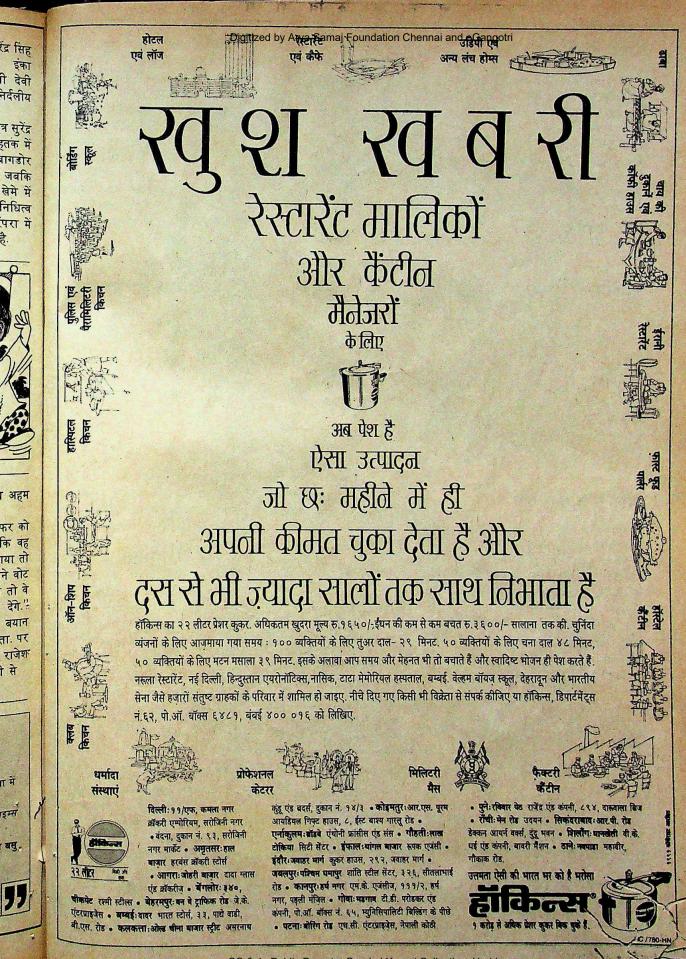
पश्चिम बंगाल में चुनावों में धांघली या बूथ कब्जे नहीं होते.

**ज्योति वसु**.

हंदिरा जी मेरी मां थीं. राजीव जी इस नाते मेरे भाई हुए. जब तक जिंदा रहूंगा, हनुमान की तरह से अपने राम की सेवा करूंगा. इतनी जोर से ताली पीटो की स्वर्ग तक आवाज पहुंच जाए.



वस्तव



#### चुनावी गरमी

चुनाव अभियान खासी
थकाऊ कसरत है खासकर
अगर यह जेठ की दोपहर में
चलाना पड़े. लेकिन हर कोई
मान रहा था कि मशहूर बॉडी
बिल्डर मनोहर आइच के लिए
यह महज बच्चों का खेल होगा.
लेकिन चुनाव की गरमी और गर्दोगुबार
इस लौह पुरुष को भी बरदाश्त नहीं हो पा रही.

पश्चिम बंगाल के दमदम क्षेत्र में चुनाव प्रचार करते वक्त जब राजनैतिक विरोधियों को चिलचिलाती धूप से वे बुरी तरह परेशान हो गए तो सड़क के भी डुबकी लगा ही लेगी.

Digitized by Arya Samai Foundation Chennai and eGangिक्सार बने एक तालाब में कूद पड़े और

जैसी कि उम्मीद थी, जनता तमाशाई बनी उन्हें देखती रही. उधर, आइच महोदय राजनैतिक गरमी भले ही न पैदा कर पाए पर गर्दोगुवार वैठाने के लिए तालाब में जरूर तैरते रहे. भीड़ अचरज में थी कि क्या आइच का यह कारनामा वामपंथी

प्रभाव वाले चुनावी माहौल को कुछ बदल पाएगा. लेकिन उनके राजनैतिक विरोधियों को पक्का यकीन है कि उनकी लोकप्रियता

#### 'वांडो नथी गांडो छे'

माधव सिंह सोलंकी के कारण लोग राजीव से ऐसे चिढ़े कि नारा गढ़ डाला, ''पारसियों कान तो गांडा होए. राजीव वांडो नथी, मथे गांडो छे.'' (पारसी संतानहीन होते हैं या पागल. राजीव संतानहीन नहीं, पागल हैं)





#### अदब की उम्मीद

मेजर और कर्नल रास्ते में टकरा जाएं तो मेजर कर्नल को रास्ता दे देता है. ओडीसा के ढेनकानल से भाजपा उम्मीदवार पूर्व कर्नल रमेशचंद्र पात्र यही उम्मीद कर रहे हैं. उनके मुकाबले इंका ने पूर्व मेजर के.पी. सिंहदेव को मैदान में उतारा है.

#### भगवान से संभाषण

ओडीसा के मुख्यमंत्री बीजू पटनायक ने अपने राज्य में अपनी पार्टी जनता दल के चुनाव अभियान की जिस तरह की शुरुआत

की उसे सीधे देवता से संभाषण के अलावा कुछ नहीं कहा जा सकता. उन्होंने शुभ मुहूर्त में पुरी जगन्नाथ के मंदिर के सामने आयोजित सभा में भगवान से ही सीधे अपील करके चुनाव अभियान शुरू किया.

पिछले महीने की एक चुनाव सभा में लोगों का हुजूम इस शानदार भाषण देने वाले नेता को सुनने की आस में जुटा लेकिन जब वे आए तो उन्होंने श्रोताओं से मुखातिब होने की जगह सीधे भगवान जगन्नाथ को संबोधित करना शुरू कर दिया: "कालिया, यह बता कि लोगों को गरीबी में क्यों पड़े रहना चाहिए?"

> दुनिया में इतनी मुश्किलें क्यों रहनी चाहिए? मुझे मुख्यमंत्री क्यों रहना चाहिए? मुझे लोगों के काम की खातिर क्यों नहीं बागी व वन जाना चाहिए?"

> सवाल अच्छे हैं पटनायक जी, लेकिन मुश्किल यह है कि सिर्फ भगवान के पास ही इनके जवाब नहीं हैं.



"

#### चुनावी तेव र

- इस देश में आज राम के साथ इतना दुर्व्यवहार हो रहा है कि रावण भी परेशान होकर सीता के पक्ष में हो गया है.
   वीपिका, (गुजरात में एक भाजपा प्रत्याशी), टेलीग्राफ
- यह राजपाट की लड़ाई है. राजपाट की लड़ाई में हिंसा नहीं होगी तो और कहां होगी.

कांशीराम, जनसत्ता

यह अलोकप्रिय क्या होता है? आपने कह दिया कि मैं अलोकप्रिय हूं तो बस हो गया?
 सिद्धार्थशंकर राय, दैनिक दृब्यून

गुजरात में जनता दल है कहां? उनके पास डाक का पता तक तो है नहीं. विश्वनाथ प्रताप सिंह का नुमाइश अब जजड़ रहा है.

■ जसपाल सिंह (जनता दल विधायक), जनपत्ती



4

育

**गोद्रेत** आपके लिए लाए हैं

और

जनता देखती होदय

ही न गुबार जरूर गे कि मपंथी उनके प्रयता

स्ते में लं को सा के भाजपा कर्नल दि कर लंका ने व को

नेकिन सीधे लिया, इए?"

क्यों

प्रमंत्री

गों के

बागी 🕫

न जी,

फ

ता

न

सिर्फ ' जवाब अत्यध्न अत्यध्न क्षान प्रमुख्य क्षान अत्य क्षान क्षान अत्य क्षान क्षान

Tones up both scalp and hair and arrests hair fall (Peaze see leafer inside) 50 ml

3

FOR EXTERNAL USE ONLY
Manufactured by.
Arshik Herbal Remotes
(India)
Vanchiyoor, Trenshran
Pin 656 CS. Kersik
Markeled by.

Godre Soup Limited Bombay 400 03

आयुर्वेदिक हेअर ऑइल. जानी-मानी और जांची-परखी जड़ी-बूटियां से बना. जो आपके सर की त्वचा और बालों को नया जीवन दे. बालों को झड़ने से रोके.

निर्माता - एसं. गोपालकृष्णन नायर आर्शिक हर्वल रेमडीज़ (इंडिया), वानचियुर, त्रिवेन्द्रम, पिन ६९५०३५ केरल. वितरक - गोदरेज सोप्स लिमिटेड, बम्बई ४०० ०७९.

306

भारत-भर के प्रमुख शहरों में



बांग्लादेश

# प्रलयंकारो विभोषिका

अब तक की सबसे बड़ी तबाही से निबटने में नामामूली राहत कार्य से लोगों का दुख और बढ़ा

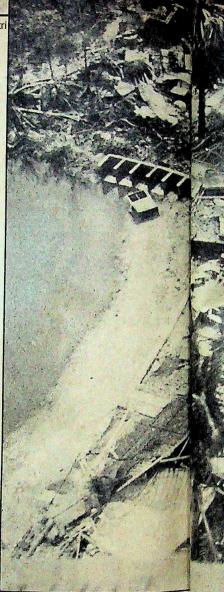
-रपटः अरुण चाको, बांग्लादेश में फोटोः मवान सिंह

देशहते अंधड़ से ध्वस्त हुआ 'कंफोर्ट मेरिन' जहाज निर्मम विनाश के जीते-जागते सबूत की तरह तट के नज-दीक सड़क पर पड़ा है. चारों तरफ मौत और तबाही का आलम है. यह जहाज बांग्लादेश के तटीय इलाकों में निष्ठुर प्राकृतिक शक्तियों के मृत्यु के तांडव का सिर्फ एक शिकार है. 29 अप्रैल को 12 घंटे तक चले प्रलयंकारी तूफान और 17 फुट ऊंचे समुद्री ज्वार ने लगभग 5 लाख लोगों की अपने आगोश में ले लिया और इस असहाय देश 'की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से चौपट हो गई. पृथ्वी पर इतने बड़े पैमाने पर शायद ही कभी विनाश हुआ हो.

चाहे कुतुबिदया रहा हो या सनद्वीप मुख्य भूभाग पर अनोवारा रहा हो या चोकोरिया, एक पल पहले वहां 10,000 से अधिक आबादी थी. लेकिन तीन घंटे बाद वहां कुछ नहीं बचा था. चारों तरफ सिर्फ खारा पानी लहरा रहा था और ताड़ के लंबे-लंबे पेड़ उसमें से झांक रहे थे.

'कंफोर्ट मेरिन' के सुरक्षा कर्मचारी जहीर अहमद उन गिने-चुने लोगों में से हैं जो चक्रवात में फंस गए थे और मौत की हवाओं और लहरों की कहानी कहने के लिए जिंदा बच गए. वे कहते हैं, "लहरें इतनी ऊंची और तेज थीं कि जहाज के डेक पर हम पांच लोग बैठे नहीं रह सके. सो, हम क्रेन पर चढ़कर सुरक्षित जगह पर चले गए. हमें कुछ भी, यहां तक कि अपने बंगल का आदमी भी दिखाई नहीं पड़ रहा था. हम इतने टूट गए थे कि हमें पता ही नहीं चला कि हम जिंदा हैं या मुर्दा. हम उस जगह रात 11 बजे से सबेरे छह बजे तक रहे. उस जगह के बारे में जानकर आप हमारे दर्द की कल्पना कर सकते हैं.

कई तो इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि उन्होंने उस विनाश में एक-एक घड़ी कैसे बिताई. सबसे ज्यादा नुकृसान ज्वार की भीमकाय लहरों से हुआ. ये लहरें 150 मील लंबी समुद्री पट्टी के साथ भीतरी इलाकों तक की घनी बस्तियों को मीलों बहा ले गई. इन लहरों ने चटगांव के पूरव में 40 मील के इलाके से लेकर दक्षिण में कोक्स बाजार से लेकर तमाम तटीय द्वीप्रों को अपने आगोश में ले लिया.



विनाश

कई घन गेगों की क निगाह खता है. एफ सिर्फ पूर्व वा ली ने बत सबसे पहंचने पर प ोग अपर्न वारों या गिः घटने के लटके गलम तो कानों की

ी पता ह



विनाश की कहानी कहता सनद्वीप; (ऊपर बाएं) समुद्र तट पर पड़ी लाश

कई घनी आबादी वाले द्वीपों में हजारों गों की जानें गईं. हवाई जहाज से जहां के निगाह जाती है, विनाश ही विनाश खता है. क्छेक जगहों को छोड़कर चारो एफ सिर्फ पानी नजर आता है.

ह पर चले अपने बंगल

रहा था.

ा ही नहीं

. हम उस

बजे तक

कर आप

भी नहीं

रा में एक-

ा नुकसान 1. ये लहरें

य भीतरी

को मीलो

दक्षिण में

रीय द्वीग्रों

₹"

पूर्व वायुसेना कर्मचारी मूहम्मद शौकत ली ने बताया कि समुद्र के पानी को द्वीप मिसवसे ऊंची जगह पर गले की ऊंचाई क पहुंचने में सिर्फ 10 मिनट लगे. समुद्र के र पर पानी का स्तर 10 फुट ऊंचा था. िण अपनी जान बचाने के लिए हताशा में विारों या छतों पर चढ़ गए या पानी का ि घटने तक किसी चीज पर पांच घंटे के पूरव ि लटके रहे. वे भाग्यशाली थे. अन्यथा ीनम तो यह था कि विद्युत केंद्रों समेत िनों की छतें उड़ गईं जबकि कच्चे घरों पता ही नहीं चला कि वे कहां गए.

शौकत अली ने बताया, "जब ज्वार आया तो कई लोग तुरंत मर गए. जो शरण लेने के लिए भागे, बह गए. दूसरे लोगों पर उनका घर ही गिर पड़ा. कई लोग लोहे की धारदार चहरों से घायल हो गए और मर गए. हमने छत में लगी बीमों से लटककर अपनी जानें बचाई."

सरकारी आंकड़े अब मृतकों की संख्या 1.3 लाख के आसपास बताते हैं. लेकिन यह तथ्य पर आधारित नहीं है. ठीक-ठीक कोई नहीं जानता कि तूफान और ज्वार प्रभावित इलाकों में कितने लोग रहते थे. बुरी तरह प्रभावित इलाके अभी भी पहुंच से बाहर हैं और त्रासदी के बाद कोई भी अधिकारी वहां नहीं गया है.

पिछले पखवाड़े के अंत तक बांग्लादेश के ज्यादातर समुद्र तटीय इलाकों में घुटने से



ज्वार की लहरों ने 'कंफोर्ट मेरिन' को समुद्र से 2 किमी दूर एक सड़क पर पहुंचा दिया

लेकर कमर तक नमकीन पानी भरा हुआ था. सबसे खौफनाक दृश्य तो हजारों सड़ती हुई लाशों का था जो या तो खेतों में तैर रही थीं या मेड़ों के किनारे लगी हुई थीं. समुद्र से भी नियमित रूप से हजारों लाशें तट पर आ रही हैं. अभी कल तक जो गांव जीवन से भरे हुए थे, वही अब कन्नगाह बन गए हैं. सनद्वीप के रहमतपुर गांव में कम-से-कम 5,000 लोग तुरंत मर गए, इस द्वीप में कुल 50,000 लोगों के मारे जाने की आशंका है.

टगांव में भी काफी नुकसान हुआ है जिसमें बंदरगाह और हवाई अड्डा शामिल हैं. कई फैक्टरियां और नया चटगांव निर्यात संवर्द्धन क्षेत्र, जहां हाल ही में काफी निवेश हुआ था, बुरी तरह प्रभावित हुए हैं. कई कंपनियां तो पूरी तरह से खत्म हो गई हैं. इनके दावों से कई बीमा कंपनियों का दिवाला निकल जाने की संभावना है. पूरे देश में विजली और टेलीफोन के खंभों और केवलों को भारी क्षति पहुंची है. दक्षिण-पूर्व चटगांव में तो इनका नामोनिशान तक नहीं बचा है. इन सेवाओं को पुनस्थिपित करने में काफी

रकम खर्च होगी. खालिदा जिया सरकार का यह दावा हास्यास्पद है कि अर्थव्यवस्था के अल्पकालिक और दीर्घकालिक सुधार के लिए केवल 1.3 अरब डॉलर की जरूरत होगी.

हवाई पट्टी पर खड़े बांग्लादेश वायुसेना के 40 विमान, जिनमें मिग-19 और हेलिकॉप्टर भी थे, मलबे में तब्दील हो गए. समूचा हवाई अड्डा ज्वार के पानी से डूब गया. जहां किसी विमान को होना चाहिए वहां एक मछलीमार जहाज पड़ा हुआ है जो ज्वार की लहर में बहकर आ गया था. कुछ विमान अभी भी उथले तालाबों में पड़े हुए हैं. तीन दिन पहले चेतावनी मिलने के बावजूद इन विमानों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचाने में वायुसेना की विफलता की कड़ी आलोचना हो रही है. अधिकारियों का कहना है कि इस काम के लिए पर्याप्त पायलट नहीं थे.

इस बीच चटगांव बंदरगाह में खड़े कई जहाज भी ज्वार में बहकर धरती पर आ गए. कुछ तो सड़कों पर इस तरह पड़े हैं कि यातायात ही बंद हो गया है.

29 अप्रैल को हवाएं 233 किमी प्रति घंटे की रफ्तार तक पहुंच गईं और शाम



खास रपट

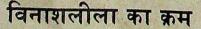
मनवरा, 10 वर्ष और अनवर हुसैन, 8 वर्ष

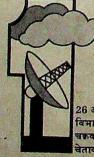
चटगांव के समुद्री किनारे पर इनकी झोंपड़ी बह गई और साथ ही इनकी मां भी. सौभाग्य से इनके पिता, चार बहनें और दो भाइयों ने कहीं ऊंचे पर शरण ले ली थी. लेकिन इनकी मां ने अपनी झोंपड़ी छोड़कर जाना मंजूर नहीं किया. अगले दिन उनकी लाश घर से करीब दो मील दूर क्षत-विक्षत अवस्था में मिली.

को छह बजे के आसपास बारिश शुरू हो गई. बारिश और तूफान रात भर जारी रहा इस बीच समुद्र ने भी उमड़ना शुरू कर दिया. लहरें किनारों को तोड़ने लगीं और भूभाग में घुसने लगीं. अगली सुबह दो बजे के आसपास समुद्र ने ऐसी तबाही मचाई जैसी किसी ने कभी देखी नहीं थी.

लेकिन मौत का तांडव यहीं खत्म नहीं हुआ. चटगांव के पास मुख्य भूभाग में स्थित अनोवारा में उथली कब्ने खोदकर शवों को जल्दी-जल्दी दफना दिया गर्या लेकिन लहरें उन पर की मिट्टी बहा ले गई

चार्ट प्रणव द





26 अप्रल मौसम विमाग द्वारा संमावित चक्रवात की चेतावनी



29 अप्रैल शाम छह बजे 230 किमी की रफ्तार से तेज हवाओं के बाद भारी वर्षा



30 अप्रैल सुबह 1 से 2 बजे के बीच 17-20 फुट ऊंची लहरों ने कई मील तक के क्षेत्र की बस्तियों को अपने साथ बहाकर मीषण तबाही मचाई

#### Your investment in I.D.F.C. is safe and secure



#### TAMIL NADU TRANSPORT DEVELOPMENT FINANCE **CORPORATION LIMITED**

HEAD OFFICE: 99, GREAMS ROAD, OFFICE COMPLEX, MADRAS-600 006 PHONE: 472917 & 476059 GRAMS: TAFCON BRANCH OFFICE TTC. BUS STAND COMPLEX, GANDHIPURAM, COIMBATORE

#### ACCEPTANCE AND RENEWAL OF FIXED DEPOSITS

PERIODIC	INTEREST	PAYMENT-SCHEME	(Scheme - I)
PLINOUIC	III I I I I I I I I I I I I I I I I I	LUITITIAL DOLLET IF	(Scheme 1)

MONEY MULTIPLIER SCHEME (Scheme - II)

PERIODIC INTERE	of Patricial School	IL (Scheme - 1)	The second second second			
Period of Deposit	Minimum Amount Rs.	Rate of Interest	Minimum Amount Rs.	Maturity value Rs.	Maturity value of additional amount of Rs. 1000/-	Yield per annum
25 months	5000/-	13.5%	3000/-	3966/-	1322/-	15.45%
36 months	5000/-	14%	3000/-	4545/-	1515/-	17.17%
48 months	5000/-	14%	3000/-	5220/-	1740/-	18.50%
60 months	5000/-	14%	3000/-	6000/-	2000/-	20.00%

Further deposits in multiples of Rs. 1000/- only.

The rates of interestinguished value have been approved in the Consentrated of Israel Noda vide GO Mc No. 80th Transport Department, dated 19.7.89

The maturity value under Money Multipler Scheme have been arrived at laxed on the compounding of intensi once in 2 months at a rare of rare cureding 14% p.a.

Minimum acceptable amount of deposit is Rs. 50000 under Schette Land. Rs. 50007 under Schette-II and further in multiples of Rs. 10000 under both the schemes.

Interest on deposits on Science I will be paid once in two months on fixed due dates (i.e.) Ist April 1st June, 1st August, 1st October, 1st December and

to february CR, for May, by July, let Separative to Newtonber, for languary and for March to ensure that the first installment of interest on every deposit is paid within 2 months from the date of the deposit.

9 Personam withhouse of deposits in the Alexand in everythmed cause of the document of the Corporation subsect to RNA rules record from time to first.

6. Fixed Deposit Rules grands for transmission.

7. He acceptance of Level Deposits will be subject to the terms and envelopment and and in the deposits area (see e.g. he applicate to form

8 Interest paid under both the schemes will be subject to declusion of income-tax at source, in accordance with the income tax rules at the appropriate rate.

9 The Rowne Book of India has count general permission to severa diprove on non-reparation have from non-residents of leatern national visign and ownerse corporate books predominantly owned by such persons.

The bankers for dealing in New-tendent Indian deposits are Canasa Bank. Thousandlights Branch. Madria-600 006. South India.

Portusion specified as not Non-Banking forested Companies (Rowert Bank) Disortion 1977 and Non-Banking Interest Companies and Macellaneous Non-Banking Companies (Additionated) Figur. 1977 are as online.

a. Name of the Company : TAMIL NADU TRANSFORT DEVELORMENT HNANCE # CORPORATION LIMITED

b. Date of incorporation : 25th March 1975 of the company

इनको

इनकी

चार

चे पर

मां ने

मंजूर

लाश

वक्षत

शुरू हो

र जारी

ने लगीं

ो सुबह

तबाही हीं थी.

म नहीं

भाग मे वोदकर

ा गया.

ले गई

प्रणव दस

c. Business carried on by the Company : To Imance manily the Purthase requerements of bases forces etc. of the Transport Undertakings substitute operating within the state of Transf Nicks

management of the Company

d. Brief particulars of the : The Company is managed by Board of Directors consisting of management of the Directors remnanted by Coverment of Tarral Nada

	NAME	OCCUPATION	ADDRESS
Thiru A.I	M. Sundararaj, IAS	Charman Thrusallusar Transport Corpo, Limited	No.33 McNaholas Road Il Line, Chrippet, Makras 600 031
Thiru R. Director	Santhanam, IAS	Secretary to Govt, of Tamil Nadu Transport Department	13, 8th Cross Street Shastir Nagar, Adyar Madras-600 020
Thiru M. Director	A. Gowrishankar, IAS		No 14, Il Main Road Gandhi Nogar, Advar Madras-600 020
Thiru P. Director	S. Pandiyan, IAS	Chairman & Managing Director Tamit Nadu Industrial Investment Corpn. Ltd.	AA43, III Main Read, Anna Nagar, Madras-600 040
Thiru K. Director	Subramanian, Bl	Managang Director Thirty aducar Transport	P.No.2717, 7th Street, Y Block, 12th Main Road

Thru R. Rathinasahapathy Darctor Institute of BL, MBA, FIL. Road Transport

Dr. R. Ganesan, Ph.D.

Thiru R.K. Sharma, IAS Managing Director

Threvaluear Transport Corpu Limited

Director
Thru M., Jeyaraj, BL, M.Se., Unexta Scher Vehicles Vanitariane Organication Director Managing Director Pallacan Transport Consultancy Services Ed land Secretary to Government of Tamil Mada

Y Block, 12th Main Road Anna Nagar West, Madras-600 040. TS.No. 4272, Kalamagal Nagar (W), Ekkatuthangal Nadras (OV) 097 Modras GAJ 977 Al. 105, 3rd Street Hith Main Road Arma Nagar Madots 600 040. Plot No. 269, 17th Last Street, Kamataj Nagar Theravanniyar Markas 600 041 No. 8, Krohna Apartments 2A, Warren Read. Mylapore Madais 600 004 liamport Department

Probs of the Company Issuer and after making procusous for tax, for the three farancial years annualisticly preventing the date of advertisement.

Profit Before tox Profit also las 5.32 11.20 10.98 1987-88 10.75 17.95 1989-90

s. Disidends declared by the Company in respect of the said years

h. Summarised financial position of the Company as appearing in the latest audited Balance Sheet:

(Re as lakes) As at 519 March 1990 1989 ASSETS HABILITUS Share Capital
Share Depend
Reserves and Surplus
Secured Loans
Unsecured Loans
Current Leabilities 581.00 802.00 934.80 14662.54 12475.37 1790.91 and Provisions 17933 82 15960 18 17933.82 15960.18

The Company can tase deposits under Reserve Bank of India directions upto a maximum of Rs. 67.84 crites based on capital structure on 51.3.90. The agospare of the deposit held on the last day of the year inunediately preceding the financial year for the above purpose in Rs. 49.16 cross.

There are no exercise deposit other than the unclaimed deposits

that the Company has compand with the provision of the Directions of the Reserve Bank of India applicable to  $\alpha$ 

tank or find appeared to the Directions does not imply that the reparament of deposits is good merel by the Reserve Rank of India; and

is that the deposits excepted recovered by the Congum, see unsecured and rank pain para-with other unsecreed habitations.

1 The advertisement is seared on the autority and in the name of the Board of Directors of the Company, the text of which was appeared by the Board on 27.9.90 and a copy of it has been filed with the Regional Office of the Department of Financial Companies. Reserve Benk of India. Bangalore.

(On behalf of and as authorized by the Beard of Directors) for Tanal Natu françoist Development Laurice Corpu. Ed. R.K. Sharma Managing Director

TAMIL NADU TRANSPORT DEVELOPMENT FINANCE CORPORATION LIMITED (TDFC) is a fully owned Government Company.

\* This company is managed by the Board of Directors nominated by the Government, mostly senior I.A.S.

The total deposits have crossed Rs. 175 crores.

\* RESERVE BANK OF INDIA has permitted TDFC to accept Non-Resident Indian deposits on nonrepatriation basis.

\* TDFC provides full security for your investment.

\* No bad debts or write-off in the last 15 years.

\* TDFC has been making profits since inception

\* The only organisation of its kind in the whole of India.

\* We now give Loan on Deposits

DIPR/398/MS/91/ELEGANT



रहल अमीन, 45 वर्ष

अनोवारा के छोटे किसान, अमीन अपने 10 में पांच बच्चों और अपनी सास को खो बैठे. वे याद करते हैं, "घुप अंधेरा या और मुझे कुछ नहीं दिलाई पड़ रहा था. लहर जब आई तो मैं अपने सभी बच्चों को संमाल नहीं सका." उन्हें उनकी लाशें अगली सुबह मलबे के नीचे दबी मिलीं. परिवार के बाकी सदस्यों ने घर में लगे खंभों से चिपककर जान बचाई.

indatio क्रिंगि क्रामव आमे व्यविश्वा प्रिक्त आबादी के 10 प्रतिशत से ज्यादापूर्ति प्रभ त्रासदी इतनी जबरदस्त और जीवन के लिए संघर्ष इतना प्रवल है कि लोग कुछ जुटाना पड़ रहा है. भी कर पाने की स्थिति में नहीं हैं. सो, बचे हए लोग

असहनीय दुर्गंध से बचाव के लिए अपने मूंह और नाक पर रूमाल बांध लेते हैं, और सडी मछलियों से षटे दलदली रास्तों के संकरे किनारों पर सावधानी से चलते हैं. ज्यादातर लोग जिंदा रहने के लिए खाना

और दवाओं की तलाश कर रहे हैं.

छह वर्षीय अलाउद्दीन अपना पूरा परिवार खो बैठा. उसके माता-पिता उसकी आंखों के सामने वह गए. वह अपने प्राणों की रक्षा के लिए एक पेड़ पर चढ़ गया और पानी घटने तक उसी पर बैठा रहा. अब वह एक स्थानीय अधिकारी के घर में शरण लिए हए है. वहां उसे कभी-कभार विमान से गिराया हुआ खाना मिल जाता है. लेकिन 10 वर्षीय करीम इतना भाग्यशाली नहीं. वह अपने मां-बाप को नहीं पा सका. उसे आशंका है कि वे भी बह गएं. कल उसे कहीं से एक रोटी मिली थी. राहत खाद्य तूफान

लोगों तक नहीं पहुंच पा रहा है. सो, बानींगी ही. लोगों को अपना खाना खुद ही जैसे तैहीं रही है

अनाज के भंडार बह गए या नष्ट हो गानी ने तब हैं. कोई माकूल राहत उपाय न होने से बरेबड़ी धान हुए लोग भी भूखों मर रहे हैं. यहां तक बिर साथ ह उनके पास पीने लायक पानी भी नहीं अससे फिल क्योंकि कुओं और तालाबों में खारा पानी है. अ भर गया है. वे दस्त, आंत्रशोथ और हैजे कीर्तर बनी बीमारी के शिकार हो रहे हैं. दवा दवाएं उपलब्ध न होने से लोग मरने भी लगे हैं. ग पानी

प्रभावित इलाकों, खासकर द्वीपों में खार्न गए हैं. य का भारी अभाव है. बाढ़ के कारण मूख्य कमी के भूमि से अनाज की आपूर्ति नहीं हो पा रही रही हैं. है. कीमतें आसमान छू रही हैं. लोगों कीलवी मोर् जेवें खाली हैं. वे भी

सनद्वीप के एक छोटे किसान शमसुक् थे. अ हक ने शिकायत की, "हमारी सारी फसलम्मुल हुड और पणु डूब गए. अनाज के दाम 300-40 गाँवी औ गुना बढ़ गए हैं. दुकानदार लूट रहे हैं. वैत्रशोथ से कहते हैं कि इस दाम पर लेना है तो लोग भीषण नहीं तो भागो. महिलाओं के पास तन ढंकन शिकार है के लिए कपड़े तक नहीं हैं." नके पेट में

बांग्लादेश में मांग और आपूर्ति की और इस स्थिति काफी नाजुक है. वहां अतिरिक्ताहत अकुश खाद्यान्न जैसा कुछ नहीं बचता और चूंकि तो राहर



बचे हुए लोग मय और मूल से बदहाल है और राहत का इतंजार कर रहे हैं

SPY MIN

से ज्यादापूर्ति प्रभावित हुई है इसलिए कीमतें तो सो, बाक्केंगी ही. इसके अलावा सप्लाई हो भी ही जैसे-तैहीं रही है. खाद्यान्न की समस्या तो शायद द ही हल भी नहीं होगी. समुद्र के खारे नष्ट हो गाती ने तकरीबन 1,000 वर्ग मील इलाके होने से बडेबड़ी धान की फसलों को नष्ट कर दिया हां तक बिर साथ ही जमीन को लवणीय बना दिया भी नहीं हससे फिलहाल तो उस पर खेती संभव ही खारा पानहीं है. अर्थव्यवस्था अगले कई वर्ष तक गैर हैजे कीर बनी रहेगी.

हैं. दबार दबाएं भी उपलब्ध नहीं हैं. ज्यादातर ही लगे हैं, ज पानी से होने वाले रोगों का शिकार पों में खाने गए हैं. शरीर में लवण और तरल पदार्थ गरण मुख्ये कमी के कारण खास तौर पर बीमारियां हो पा रहीं रही हैं. हम सनद्वीप में पहुंचे तो वहां लोगों बीलवी मोहिबुल्ला को दफनाया जा रहा वे भी लवण की कमी का शिकार हो न शममुक् थे. आमीं मेडिकल कोर के मेजर गरी फसक्ममुल हुडा ने बताया, "20 फीसदी

र 300-40 श्वादी और खासकर बच्चे दस्त और रहे हैं बेंत्रशोथ से पीड़ित हैं. हमारे पास दवाइयों है तो लेश भीषण कमी है. बहुत से बच्चे कुपोषण तन ढंकने शिकार हैं और बहुत से और हो रहे हैं.

ापूर्ति <mark>की और इस त्रास</mark>दी का सबसे दुखद पहलू है अतिरिक्तहत अकुशलता से बांटा जाना. तीन दिन और चूंकिक तो राहत नाममात्र की ही थी. फिर इसे

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri हवाई जहाज से टपकाया जाने लगा. अक्सर ऊपर से डाली गई सामग्री पानी में गिरकर

ऊपर से डाली गई सामग्री पानी में गिरकर गायब हो जाती है. डबलरोटी और चावल के बोरे भीग जाते हैं या उनमें इतनी मिट्टी भर जाती है कि वे खाने लायक नहीं रहते. लोगों का गुस्सा इससे और बढ़ रहा है.

आसमान से गिराई जा रही सामग्री लाटरी की तरह है. जहां सामग्री गिरती है उसके आसपास के लोग धान के खेतों को रौंदते मिक्खियों की तरह उस पर टूट पड़ते हैं. हालत इतनी खराब है कि हैलिकॉप्टर नीचे उतर नहीं पाते क्योंकि गुस्साए लोग अनाज की लूट के लिए उन पर टूट पड़ने के लिए तैयार दिखते हैं.

बांग्लादेश का प्रशासन भी अप्रभावी साबित हुआ. उसके लिए तो यह परीक्षा की घड़ी है. पर लापरवाही, अकुशलता और अव्यवस्था से सरकारी राहत अभियान एकदम नाकारा साबित हो रहा है.

राहत अभियान के नियंत्रण कक्ष चटगांव सिंकट हाउस में अफसर काम करने के बजाए बातें करते ही ज्यादा दिखाई दे रहे हैं. लगता है जैसे जनता की बदिकस्मती का उन पर कोई असर ही न पड़ा हो. और लंबे इंतजार के बाद ढाका से ऊबड़-खाबड़ रास्ते से होती हुई राहत जब वहां पहुंची तो उसे



फातिमा बेगम, 35 वर्ष

विधवा फातिमा अपनी तीन बेटियों और एक बेटे के साथ चुन्नापाड़ा गांव में रहती थीं. वे अपने बेटे 11 वर्षीय अताउज्जमन और बेटी 9 वर्षीय रानी को खो बैठीं. वे रोते हुए कहती हैं, "जब पानी अचानक तेज रफ्तार से आया तो हमने पास में ही खड़े लोहे की छड़ पकड़ ली. फिर मैंने देखा कि मेरा सबसे छोटा बेटा बहा जा रहा है और मैं चीखने लगी."



बचे हुए दो माग्यशाली निर्जन भूमाग पर उदास चल रहे हैं

लेने वाला ही कोई नहीं था. सरकार की ढाका से हटाकर चटगाव में बिठा देने का दिलचस्पी नकद राहत में ज्यादा दिखती है जबिक राहत सामग्री अक्सर बिना बंटे पड़ी दिखती है. 'केयर' के सहायक निदेशक रॉबिन नीधाम चत्राई से कहते हैं, "संचार साधनों के अभाव ने राहत अभियान को खासा नुकसान पहुंचाया है. हमें लगता है कि हालत निरंतर बदतर होती जा रही है. इससे हमारे लोग बहत दुखी और चितित हैं."

दरअसल, थोड़ी-बहत जो भी राहत लोगों तक पहुंच रही है वह गैरसरकारी संगठनों और अवामी लीग, जमात-ए-इस्लामी, यहां तक कि जेल में बंद पूर्व राष्ट्रपति एच.एम. एरशाद की जातीय पार्टी जैसे सियासी दलों से मिल रही है.

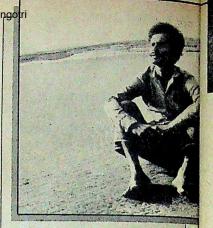
उधर, पश्चिम के दानकर्ता राहत सामग्री बांटने में बांग्लादेश सरकार की घनघोर आलोचना को देखते हए केयर और दूसरे गैरसरकारी संगठनों के माध्यम से ही बंटवा रहे हैं.

इस तरह के हमलों से परेशान प्रधानमंत्री खालिदा जिया ने कहा. "सरकार अपनी जिम्मेदारी समझती है और वह पीड़ित लोगों को हर तरह की मदद पहुंचाएगी ताकि उनके कष्ट दूर हों." उन्होने अपने पूरे मंत्रिमंडल को ही

प्रस्ताव रखा पर इससे कोई समस्या तो हल होती नहीं दिखती.

भेजे से गए हेलिकॉप्टरों के कारण राहत सामग्री वितरण की स्थिति सुधरी है. इसके अलावा भारतीय जहाज भी हर रोज राहत सामग्री लेकर आ रहे हैं. समस्या इस वजह से भी बढ़ गई है कि बहुत बड़ा इलाका ऐसा है जहां सड़क मार्ग से भी नहीं पहुंचा जा सकता. वहां पैदल ही जाया जा सकता है. अधिकारी यही नहीं करना चाहते. इसका अर्थ यह हुआ कि अभी सरकार को यह मालम ही नहीं कि नुकसान कितना हुआ है. सो, जिन लोगों को तूरंत राहत की जरूरत है, उन तक मदद पहंच नहीं सकती.

हमेशा अशांत रहने वाली बंगाल की खाडी के सबसे ऊपरी हिस्से में बसे बांग्लादेश की इस त्रासदी के घाव भरने में बरसों लगेंगे. और प्रलयंकारी तुफान और रौद्र रूप धरे समुद्र की आसमानी लहरों का कोप सहे लोग सिर्फ दुआ ही कर सकते हैं कि प्रकृति उन्हें फिर ऐसी सजा न दे. लेकिन अतीत में तो उनकी द्आएं कबूल ही नहीं हई थीं.



फजल-उल करीम, 26 वर्ष

मंड

बांटा,

एस.एस

एस.के.

शेखर ग

एस. प्रथा व्य विकृत रू ने भारती समझने व

एक द्कान में काम करने वाला फरुहा पाडा गांव के फजल के पास कुछ भी नहीं बचा है उसका समूचा परिवार-युवा बीवी लैला बेगम. और दो बेटे-5 वर्षीय अबूल कलाम और 3 वर्षीय अब्दुल सलाम बह गए. फजल समुद्र तट पर निरुद्देश्य घूमता रहता है. उसके पास न पैसे हैं और न यह मालूम है कि अगली बार खाना आएगा कहां से.



चटगांव के दक्षिण अनोवारा के ऊपर एक और चक्रवात उमर सकता है

आरक्षण

# मुलगते सवाल सूत्रों की समझ

मंडल रिपोर्ट लागू करने के फैसले ने समाज को जिस उग्रता और भावनाओं को जिस उद्रेक से बांटा, वैसा पहले नहीं हुआ था. अपनी तर्क-वितर्क शृंखला को आगे बढ़ाते हुए हमने वीणा दास, एस.एस. गिल, एस.के. गोयल, चंदन मित्र, दिलीप पडगांवकर, एस. जयपाल रेड्डी, डी.एस. शेठ और एस.के. सिंह को इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर बहस के लिए न्यौता. इस बहस की अध्यक्षता फीचर संपादक शेखर गुप्त ने की, संपादन किया है काजल बसु ने और उनकी मदद की है अंजिल अभ्यंकर ने.

#### जाति बनाम वर्ग

एस. जयपाल रेड्डी: भारत में जाति प्रथा व्यापक होने के साथ-साथ बहुत विकृत रूप में भी है. इसलिए जिन लोगों ने भारतीय समाज को वर्ग के आधार पर समझने की कोशिश की है, वे असलियत से वहुत दूर रह गए हैं. भारतीय समाज में वर्ग और जाति एक-दूसरे में गड़मड़ हैं.

दक्षिण में पिछड़ी जातियों के लिए सदियों से विशेष योजनाएं लागू होती आई हैं. नतीजतन, वहां जाति प्रथा उत्तर के मुकाबले कमजोर है.

योग्यता का सामाजिक और गैक्षिक वातावरण से उतना ही वास्ता है जितना सामान्य ज्ञान के स्तर से. मैं वसंत कुमार के मुकदमे में सुप्रीम कोर्ट के एक फैसले को उद्धृत करना चाहूंगा न्यायाधीश ने सवाल उठाया है, "योग्यता क्या है? यह शब्स गरीबी, अशिक्षा और संस्कृतिहीन

वातावरण में पला है. इसके पास पढ़ने को न किताबें हैं न पत्रिकाएं, न सुनने को रेडियो, न देखने को टीवी. इसके माता-पिता अशिक्षित हैं, स्कूल में मिले होमवर्क में उसकी मदद करने वाला कोई नहीं था. इतनी बाधाओं के बावजूद यदि वह प्रतियोगी परीक्षा में 40 या 51 फीसदी नंबर ले लेता है तो उस 70, 80 यहां तक कि 90 फीसदी नंबर लेने वाले उस बच्चे जितना ही योग्य माना जाना चाहिए जो सेंट पॉल हाई स्कूल और सेंट स्टीफंस

बहस के दौरान गर्मागर्मी का एक क्षण





इस परीक्षा के लिए

उसने विशेष कोचिंग भी लिया है."

भारतीयों के मानस पर धर्म, क्षेत्र या स्थान के मुकाबले जातीय पूर्वाग्रह ज्यादा रूढ हैं. जाति प्रथा हिंदू समाज की ही विशेषता नहीं है. मुसलमानों में भी जाति प्रथा है और ईसाइयों में भी.

अनुसूचित जातियों और जनजातियों के नौकरणाहों की कार्यक्षमता अन्य पिछडी जातियों के नौकरणाहों के मुकाबले ज्यादा ही है. इसका क्या मतलब हुआ? यह कि अन्य पिछड़ी जातियों के लोगों को भी आरक्षण की जरूरत है. लोग आर्थिक आधार की बात करते हैं. मैं उनका ध्यान एक विशेष उदाहरण की ओर खींचना चाहता हूं. कर्नाटक में 1962 से 1973 के बीच जब आर्थिक आधार पर आरक्षण दिया गया तो 1973 के अंत में पाया गया कि 90 फीसदी नौकरियां ब्राह्मणों को ही मिली.

निजी उद्योगों को ही लें. निजी क्षेत्र में कितने हरिजनों को रोजगार मिला हआ है? अब सार्वजनिक क्षेत्र का महत्व कम होता जा रहा है और निजी क्षेत्र विस्तार की राह पर है. लेकिन क्या किसी ने यह नहीं छोड़ा जा सकता. इसलिए ऐसे वर्गी को ढुंढ़कर मूख्य धारा में लाना होगा. अन्य पिछडी जातियों के लिए आरक्षण की व्यवस्था तो अनुसूचित जाति और अनुसुचित जनजाति के आरक्षण की व्यवस्था से भी पुरानी है. ऐतिहासिक कारणों से इंसकी णूरुआत दक्षिण भारत से

Digitized by Arya Samai Foundation Chennal and eGangetri कॉलेज में पढ़ा है. और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के भरीस आई है. एक तर्क के मुताबिक जाति व्यवस्था को कुछ इस तरह मान लिया गया है जिसमें मनू से मंडल तक कर्तर बदलाव आया ही नहीं है. मगर आप असली ऐतिहासिक तथ्यों को देखें तो आप पाएंगे कि शुद्रों की कुछ जातियां बहत ताकतवर रही हैं, और भूद्रों शक्तिशाली राज्य भी रहे हैं. अंग्रेजों के

द

शे

हिसा

संवेदन

हमने.

आर्थि

परखा

तथा

अपनी

मौजूद

कोई

हम अ

नहीं

भीव

वडा

मसले

इस ब

के ि

प्राथि

आज,

जिंदग

विका

जगह

आरध

कंपर्न

में 1

लगत

विडल

रखत

पारसं

आधु

संस्था

यही

सकर्त

अगर

होता

आप

के ि

वन र

नए

समार

बदले

आरह

के प्र

राजन

समझ

और

कोशि

क्षेत्र

अपन

सरक

भी

8

अ

वीणा दास प्रोफसेर, समाजशास्त्र दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स

रेड़ीः आंखें फेर लेने भर से जाति व्यवस्था नष्ट नहीं हो जाएगी. आप जाति व्यवस्था को सीधे हमला से ही दूर सकते हैं.

दासः अंग्रेजों ने यही तर्क दिए थे. जाति है इसलिए जाति आधारित जनगणना जरूर होनी चाहिए. यह चोर को पकड़ने के लिए चोर को ही जिम्मा देने जैसा तर्क है.

> एस. जयपाल रेड्डी महासचिव, जनता दल



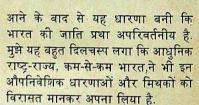
सोचा है कि वे किन्हें नौकरी पर रखेंगे?

डी.एस. शेठ: मैं आरक्षण को अतीत की गलतियां सुधारने का जरिया नहीं मानता, न ही मंडल आयोग को सामूहिक प्रतिशोध का पर्याय. आरक्षण तो भविष्य के लिए एक नीति है, क्योंकि आबादी के एक बड़े हिस्से को सदियों से बड़ी तरतीब से समाज में घुलने-मिलने से वंचित रखा जाता रहा है. यह तो एक बड़ी नीति का संवेदनशील पहलू है, जिसके तहत कई ऐसे कानून बने हैं ताकि लोग अपने नागरिक अधिकारों और दूसरों के साथ समानता के अधिकारों का इस्तेमाल कर सकें.

ऐसे में कुछ सकारात्मक कदम उठाने जरूरी हो जाते हैं. इसे सतत जारी

हुई लेकिन उन्हें यह आरक्षण तोहफे में नहीं मिला, बल्कि संघर्ष से मिला. शद्रों के अलावा एक तबका ऐसा भी है जो राजनैतिक रूप से ताकतवर है मगर सामाजिक रूप से पिछड़ा माना जाता है. आरक्षण असल में जातीय हैसियत को पेशे से अलग करता है. पेशा किसी एक जाति तक सीमित नहीं है. आधुनिक लोकतांत्रिक समाज में हम योग्यता के मृद्दे को किस नजरिए से देखते हैं? योग्यता क्या एक जाति या वर्ग विशेष का जन्मसिद्ध अधिकार है, या प्रशिक्षण और अनुभव से अजित गुण?

वीणा दासः आरक्षण के मामले पर सटीक तकों की पूरी शृंखला ही सामने



कई जगहों पर मैं तरह-तरह की अजीवोगरीव भूलें पाती सकारात्मक कदम उठाने की बात भी करते हैं और साथ ही आरक्षण की बात भी उठाते हैं--मानो दोनों एक ही बात हों. सर्वविदित सचाई तो यह है कि अमेरिका में कोटा निर्धारण कानून के खिलाफ है. परंतु सकारात्मक कदम को कानून की सहमिति प्राप्त है, कानूनन जनसंख्या के हिसाब से कोटा निर्धारित करना अनुचित है. मुझे हैरानी है कि प्रोफसेर शेठ सकारात्मक पहल, कल्याण और आरक्षण जैसे मुद्दों को एक साथ ऐसे कैसे रख सकते हैं, मानो अंतरपरिवर्तनीय हों.

शेठः मैं तो उन्हें तुलनात्मक भर बता

दास: तुलना नहीं हो सकती. सकारात्मक कदम से मेरा तात्पर्य यह है कि किसी विश्वविद्यालय का लक्ष्य, नौकरशाही के लक्ष्य से अलग होगा. समाधान का यह बिलकुल अलग सिद्धांत

शेठः लेकिन एक विश्वविद्यालय ऐसा लक्ष्य रखेगा कि हमें महिलाओं के लिए इतना प्रतिशत और अश्वेतों के लिए इतना प्रतिशत चाहिए.



इंडिया ट्रें 🔸 31 मई 1991

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri दासः जनसंख्या के अनुपात में तो नहीं. अजित कर सकते हैं. चाहे किसी के पास तक औपनि

शेठ: उपलब्ध नौकरियों के अनुपात के हिसाब से.

नाति

लया

कतई

आप

आप

बहुत

कि

है.

नेक

इन

को

की

हम

भी

वात

बात

कि

के

नन

रत

कि

गण

ऐसे

ये

ाता

ती.

है

क्य,

गा.

ात

सा

नए

नए

को व

क

एस.के. गोयलः आरक्षण एक अत्यंत संवेदनशील राजनैतिक मसला बन गया है. हमने सामाजिक परिवर्तन के लिहाज से आर्थिक कसौटियों पर इसे कभी नहीं परखाः भूमिहीन मजदूर, अनुसूचित जाति तथा जनजाति के लोगों के पास आज अपनी जमीन तो है, पर वे अभी भी मौजूद सामंती व्यवस्था को तोड़ने की कोई कोशिश नहीं करते. नतीजतन चूंकि हम अपने भूमि सुधार कानून ठीक से लागू नहीं कर सके इसलिए जाति प्रथा अभी

भी कायम है. जनसंख्या का इतना वड़ा हिस्सा अशिक्षित है. हम उस मसले से आंख चराए बैठे हैं. फर्क इस बात में है कि हम उच्च शिक्षा के लिए कितना धन देते हैं और प्राथमिक शिक्षा के लिए कितना. आज, गरीव तवकों को बेहतर जिंदगी दिलाने के लिए संसाधनों के विकास, की ओर ध्यान देने की जगह हम नए तामझाम बना रहे हैं. आरक्षण ने हमें क्या दिया है? कंपनी क्षेत्र के सरमायेदारों के बारे में 1979-80 के आंकड़ों से पता लगता है कि बदलाव क्या आया.

आज आप परिवर्तन देख सकते हैं. विडला समूह केवल मारवाड़ियो को रखता हो, ऐसा नहीं है. वहां ब्राह्मण और पारसी लोग भी ऊंचे ओहदों पर हैं. आधुनिकता की चपेट में परिवार नामक संस्था की पकड़ कमजोर होती जा रही है. यही बात जाति की पकड़ पर भी लागू हो सकती है. इसलिए आरक्षण की जगह अगर शिक्षण प्रणाली को बदलने पर ध्यान

होता तो सामाजिक परिवर्तन अपने आप हो जाता. सामाजिक परिवर्तन के लिए आरक्षण कोई साधन नहीं बन सकता. इससे रोजगार के कोई नए अवसर पैदा नहीं होते और समाज भी बंट जाता है. सौहार्द के बदले हम फूट डालते हैं.

चंदन मित्रः मेरे खयाल से आरक्षण का पूरा सवाल राजनीति के प्रश्न से जुड़ा हुआ है: सवाल राजनैतिक ताकत का है और मैं समझता हं कि कुछ खास जाति और सामाजिक वर्ग के लोग ही यह

कोशिश करते हैं कि आज तक आयिक क्षत्र में कुछ मामलों में जिस तरह उनका अपना नियंत्रण बना रहा है उसी तरह वे सरकारी नौकरियों और अन्य उद्यमों में भी अपनी हिस्सेदारी मांगकर सम्मान

500 एकड़ जमीन हो और वह गांव का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति हो और साथ ही गांव के ब्राह्मण भी जिसका लोहा मानते हों, पर अगर उसके बच्चे या परिवार के सदस्य जिला मजिस्ट्रेट, पुलिस अफसर वगैरह नहीं हों तो उसे एक खास किस्म का सम्मान नहीं मिल पाता. यह कुछ हद

एस.एस. गिल सचिव मंडल आयोग



गिलः लोगों से बातचीत के आधार पर मुझे लगता है इससे फायदा देखकर ही वे इसका समर्थन कर रहे हैं. सिंहः लगता है कि आप और मैं अलग-अलग तरह के लोगों के समूह से मिलते



एस.के. सिह पूर्व विदेश सचिव

तक औपनिवेशिक सोच के ही कारण है. आरक्षण तो मूलतः कृपक वर्ग, खासकर उत्तर भारत के नए और प्रभावी लोगों की सत्ता की ललक का नतीजा है. इसका सबसे ज्यादा जोर यादव समुदाय में है.

सवाल यह है कि क्या जाति के आधार पर आरक्षण उन वर्गों को भी दिया जाना चाहिए जो आज आरक्षण के उतने मोहताज नहीं जितने 40 वर्षों पहले थे.

जिस तरह से मंडल आयोग की रिपोर्ट तैयार की गई है, और जिस तरह जातिगत आरक्षण की व्यवस्था की गई है, उससे वे लोग लाभान्वित नहीं होंगे, जो इसके असली हकदार हैं.

दिलीप पडगांवकरः कई लोगों का खयाल है कि मंडल रिपोर्ट सैद्धांतिक रूप से तर्कसंगत नहीं है. मैं ऐसा इसलिए कह रहा हं क्योंकि जयपाल जी ने जब यह बहस शुरू विरोधी तो आरक्षण बुद्धिजीवियों का उल्लेख किया था. किसी आरक्षण विरोधी वृद्धिजीवी को तो नहीं जानता लेकिन ऐसे अनेक लोगों को जानता हं जिन्हें मंडल रिपोर्ट पर गंभीर आपत्ति है मगर उन्हें सामाजिक समानता लाने का कारगर तरीका मानने से इनकार नहीं. कई लोगों

की नजर में यह इसलिए बेत्की है क्योंकि इसमें इतिहास की भी कई विसंगतियां हैं. एक गलती इस तथ्य से आंखें मूद लेना भी है कि हमारे समाज में जितनी जागरूकता पिछले चार दशकों में आई है, उतनी 400 वर्षों में भी नहीं आई थी. मंडलीकरण की कोशिश भारतीय -समाज आधुनिकीकरण की प्रक्रिया पर आघात है. दूसरे, इसे राष्ट्रीय अखंडता पर प्रहार

माना गया. व्यक्ति के अधिकारों के प्रति हमारे संविधान निर्माताओं, खासकर आंबेडकर का नजरिया शुरू से ही स्पष्ट था. असल में उनका एक प्रसिद्ध भाषण है जिसमें उन्होंने कहा था कि इस संविधान से पहली बार ऐसी क्रांति आई है, जिसमें समुदाय या गांव नहीं व्यक्ति को केंद्रीय हैसियत मिली है. मंडल पर बहस इसीलिए भयावह हई क्योंकि राजनैतिक अवसरवाद एक बडें ्र मुद्दे--सामाजिक स्वतंत्रता-के साथ मिल गया. हमें

इस बात का जवाब भी ढूंढ़ना होगा कि समाज सुधार आंदोलन के अनेक नेता तथाकथित ऊंची जातियों के थे. उम्मीद है आप इस बात से जरूर सहमत होंगे कि ऐसे भी बुद्धिजीवी हैं जो जातिबाद में

विश्वास नही रखते और अपने आसपास की चीजों को सिर्फ जातीय परिप्रेक्ष्य में नहीं देखते.

रेड़ी: मैं भी ऊंची जाति से हं

पडगांवकरः मुझे खुशी है कि आप जाति को नहीं मानते. लेकिन यदि आप मूल सवाल पर जाना चाहते हैं तो पांच दिनों तक हुई उस महत्वपूर्ण बहस को आधार मानना होगा जो आंबेडकर और गांधी में 'पूना संधि' मंजूर होने से पहले हुई थी. आज जब मैं आंबेडकर को भगवान की तरह पूजे जाते देखता हं तो बड़ी हैरानी होती है, क्योंकि उनके कई लेख हिंदू धर्म, जाति प्रथा और गांधी जी के खिलाफ हैं. और अब आप देख रहे हैं कि सभी राजनैतिक दल उन्हें देवतूल्य बनाने में वढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं. मैं इसका स्वागत करता हूं क्योंकि इस समाज में उन लोगों को देवता मानने की विलक्षण उदारता है, जिन्होंने इसे अस्त-व्यस्त किया हो.

अपने आकलनों से मैं यह नहीं समझ पा रहा हं कि उत्तर भारत में यह क्या हो गया है. अपने आपको अन्य पिछडी जातियों में शुमार करने वालों की भी क्या उतनी मनोवैज्ञानिक क्षति हुई है जितनी कि महार या भंगियों की? हम ऐसे आरक्षण के खिलाफ नहीं हैं जहां समाज के आधुनिकीकरण, और राष्ट्रवाद की भावनाएं मजबूत करने के ध्येय को दरिकनार न कर दिया जाए. यदि एक-दूसरे से टकराए विना इसे हासिल कर लिया जाए तो अन्य पिछडी जातियों के आरक्षण के लिए भी बेहतर आम सहमति मिल सकेगी.

रेड्डी: मंडल रिपोर्ट पर दशकों तक धूल जमती रही. तब कहीं इसे ताक से उठाकर लागू करने की कोणिश की गई. अन्य पिछडी जातियों के लिए आरक्षण के विरोधी बृद्धिजीवी उनकी मदद का कोई और तरीका क्यों नहीं ढूढते.

दासः आप यह कहकर वहस को

धीरुभाई शेठ वरिष्ठ अध्येता, सेंटर फॉर स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटी

शेठः वोट बैक जनमत हासिल करने की प्रक्रिया का एक हिस्सां है. और मुझे इसमें कुछ भी गलत नहीं लगता.

मित्रः स्थायी वोट बैंक की दौड मैं समाज को बांटने की और भी कोशिशें की जाएंगी. शेठः नहीं, लोकतंत्र में अपनी गलतियों का निराकरण खुद करने की व्यवस्था होती है. मित्रः लोकतंत्र में आपकी आस्था का स्वागत है.

> चंदन मित्र संपादक, संडे ऑब्जर्वर



आमंत्रित कर रहे हैं कि अन्य पिछडी जातियों के लिए कोई और नीति क्यों नहीं है. मुद्दा यह है कि कई लोग अनुसूचित जातियों के अलावा किसी प्रकार के जाति आरक्षण को आधार नहीं मानते.

रेड़ी: मैं भारतीय समाज की असफलता का उल्लेख कर रहा हं.

## आरक्षण किसके

शेठः क्या इसे महज संयोग मान लेना चाहिए कि शिक्षा के मोर्चे पर भारत की प्रगति अति अल्प विकसित देशों की तुलना में भी बहुत कम है, या इसे यहां की सुनियोजित प्रशासनिक अव्यवस्था मानी जाए?

पडगांवकर: हां, निरक्षरता को दूर न

दुसरी प्रमुख असफलता ग्रामीण श्रमिक को संगठित न कर पाना है, जिसकी वजह से सब तरह के सामाजिक तनाव बढे हैं.

या पै हमार

तरफ

जाति

धंधे ग

डन उ

सकते

में हर

ऐतिह

कब र

जिसे

उपेधि

इसर्क

अगर

सबसे

करना

उन स

कायम

विषम

से आ

के एव

सुविध

यह है

इसक

रास्त

अगर

के भी

आप

सारी

बोलने

गतिह

रहे है

जाति

यही

गलर्त

. मु

ग

रेड़ी: इस असफलता का उदाहरण भी देखिए. कुछ निहित स्वार्थ हमारी नीतियों की प्राथमिकता को आकार देने में बहुत महत्वपूर्ण रहे हैं.

गोयलः ये पड्यंत्र वाले सिद्धांत हैं. असली समस्या तो हमारी व्यवस्था में निहित है. कुछ किमयां रही हैं और इस व्यवस्था में सुधार की जरूरत है लेकिन यह कहकर नहीं कि हमने जान-बूझकर इसे नुकसान पहुंचाया है.

रेड़ी: निहित स्वार्थ और दबाव गूटों का बहाना खुद को धोखा देने को काफी है. एस.के. सिंह: मैं नहीं जानता कि अब



तक कोई ऐसा वैज्ञानिक विश्लेषण कराया गया हो कि आरक्षण से अनुसूचित जातियों जनजातियों को किस तरह का फायदा पहुंचा. अनुसूचित जाति के कोटे में उन्हीं परिवारों के लोग भरे जाते हैं. तब उत्तर भारत में अनुसूचित जाति और जनजातियों के और अन्य पिछड़ी जातियो के बीच युद्ध ही हो जाएगा. उत्तर प्रदेश के बारे में मैं कह सकता हूं कि चार या पांच वर्ष पहले जाति के सवाल पर इतना विद्वेष नहीं था. लेकिन आज जातीय भावनाए प्रवल हो गई हैं. जहां तक सरकारी नौकरियों का सवाल है, मैं नहीं मानता कि हमारी ग्रामीण व्यवस्था में इनसे कोई? बहुत ज्यादा खुशी, या संतुष्टि जुड़ी है. न ही ज्यादा पैसे का प्रलोभन हैं अन्य पिछड़ी जातियों की श्रेणी में आने वाली कई जातियां पैसे की दृष्टि से समृद्ध हैं. हम और आप हमेशा अभिजात लोगों की चर्चा करते हैं. अभिजात किस मायने में? सिर्फ सरकारी ओहदे के लिहाज से? शिक्षा में

या पैसे में? अंत में, मेरा खयाल है कि पूर रिपिट में एक पूरा अध्याय—पाचवा परहेज करते थे कि यह मार्क्सवादी है, वे हमारा राजनैतिक नेतृत्व इस वात की तरफ ध्यान ही नहीं देता कि अनुसूचित जातियों- जनजातियों का प्रमाणपत्र देने के धंधे में कितना भ्रष्टाचार है.

न को

ह से

ा भी

तयों

बहुत

ा में

इस

किन

नकर

गुटों है.

अब

ाया

चेत

का

में

तब

भौर

ायों

न के

ांच

द्वेष

गए

ारी

ता

नेई:

इड़ी

कई

हम

र्चा

नर्फ

हमें यह भी देखना होगा कि समाज के इन उपेक्षितों को हम जो बेहतर शिक्षा दे सकते हैं, वह कितनी उपयोगी है. इस बारे में हमने बहुत कम काम किया है. अब ऐतिहासिक प्रश्न यह है कि एक समाज कब तक ऐसा ऋण वहन कर सकता है, जिसे इसे तथाकथित ऐतिहासिक दृष्टि से उपेक्षित लोगों को चुकाना होगा. आप इसकी कोई सीमा तय करेंगे या नहीं.

गोयलः दरअसल, मुझे लगता है कि अगर आरक्षण से ही शुरुआत करनी है तो सबसे पहले इसे शिक्षा संस्थाओं में लागू करना चाहिए. मेरे हिसाब से यह बवाल उन संरचनाओं की वजह से है जिन्हें हमने कायम किया है और ये सब आर्थिक विषमता पर आधारित हैं. और आरक्षण से आप यही कोशिश कर रहे हैं कि समाज के एक खास तबके को एक खास आर्थिक सुविधा मिल जाए. आप इससे सामाजिक सरचना नहीं बदल रहे.

मेरे खयाल से ज्यादा बेहतर सामाधान यह है कि आप इसकी खामियां ढुंढिए और इसका कोई विकल्प, कोई सकारात्मक रास्ता तैयार हो.

मुझे यह बात अजीब लगती है कि कोई अगर आरक्षण के विरुद्ध है तो वह दलितों के भी विरुद्ध होगा. और इसी तरह अगर आप आरक्षण के समर्थक हैं ती आपको सारी प्रगतिशील ताकतों की ओर से बोलने का हक मिल जाता है.

गिलः कहा जाता है कि मंडलवादी गतिहीन इतिहास के संदर्भ में सब कुछ कर रहे हैं और इस तरह से पूरे समाज को जाति व्यवस्था में ढाल रहे हैं. अगर हमें यही करना है तो यह एक बहुत बड़ी गुलती है. जातियों के सामाजिक आयाम अध्याय-ही है. बदलाव को मान्यता मिल गई है पर उनका कहना है कि जाति सिर्फ कर्मकांड में ही खत्म हुई है, पर राजनैतिक जमीन में इसकी जड़ें ज्यादा जम गई हैं. पाबंदियां शहरों में तो ढीली हो गई हैं पर गांवों में अभी भी वैसी हैं--इसकी वजहें भी साफ हैं. आलोचना का एक और बड़ा मुद्दा यह है कि मंडल समाज को जाति के आधार पर बांटता है. यह कहना बहत वचकानापन होगा कि जातिगत विभाजन अब खत्म हो रहे हैं. ये सारी बातें वही लोग कहते हैं जिन्हें जाति से फायदा मिलता है

जब हम सामाजिक व शैक्षणिक पिछडों का पता लगाने निकले थे तो हमने 11' पैमाने चुने थे. इनमें सिर्फ पहला ही यह था कि वे जातियां या वर्ग जिन्हें दूसरे भी पिछड़ा मानते हैं. हमने जाति नहीं ढूढ़ी, जाति ने तो हमें प्रेरणा दी. हैरत की बात है कि पहले जो लोग वर्ग शब्द से इसलिए

अव वर्ग के सबसे बड़े हितैषी बन गए हैं:

मेरे एक सम्मानित दोस्त ने मुझसे कहा, "आप मंडल के बारे में इतना लिख चुके हैं फिर भी यह नहीं जानते कि मेरे घर में मेरी मां के घर में पहले अनुसूचित जाति के लोग घुस नहीं सकते थे. अब वे रसोई तक पहुंच जाते हैं." मेरा जवाब था, "200 साल बाद तो वे आपका खाना तक बनाएंगे. आप उसे अपनी रसोई में इसलिए आने दे रहे हैं क्योंकि आप उसकी सस्ती मजदूरी का शोषण कर रहे हैं, आपकी बीवी वह काम करने को तैयार नहीं. और ऊंचे वर्ग के नौकर उस तनख्वाह पर काम करेंगे नहीं."

मैं यह उदाहरण बार-बार देता हं और मेरी चुनौती है कि कोई इसको गलत साबित करे. विभाजन इस स्तर का है कि देश की सभी आला दर्जे की नौकरियां उच्च जातियों के हाथ में हैं और फिर भी ऊंची जाति के लोग कह रहे हैं कि कोई

दिलीप पडगांवकर टाइम्स ऑफ इंडिया

पडगांवकरः आप ऐसी तुलना कैसे कर सकते हैं? क्या आपको नहीं लगता कि महात्मा बुद्ध से सीधे आंबेडकर तक आ जाना कुछ ज्यादा ही लंबी छलांग लगाना है? गिलः सामाजिक

> चिकित्सा के अभियान में सदा ही अस्थिरता आती है. इससे हंगामा मचता है. मैं सिर्फ उदाहरण दे रहा था. मैं मंडल को बुद्ध की बराबरी का बताने का कोशिश नहीं कर रहा.

एस.एस. गिल सचिव. मडंल आयोग



जाति विभाजन नहीं है और मंडल ने देश की जातीय चेतना को जगा दिया है. कुतक की भी हद होती है. मंडल जाति को खत्म कर रहा है. आप कहेंगे कि उन्हें अच्छी शिक्षा, अच्छी स्वास्थ्य सेवा दीजिए. बहुत अच्छा! अब तक हमने इस बारे में किया क्या? पहली योजना में हमने शिक्षा में सिर्फ 9 फीसंदी साधन लगाए. और अब हम सिर्फ 3 फीसदी साधन इसमें लगा रहे हैं. क्यों? क्या यह गलती नहीं है? मेरे बच्चे मॉर्डन स्कूल में जाते थे, नाती-पोते दिल्ली पब्लिक स्कूल में जाते हैं क्योंकि वे बेहतर माने जाते हैं. अब अगर गांव के स्कूल में इमारत नहीं है, उसमें अध्यापक नहीं है, ब्लैक बोर्ड नहीं है, पीने के पानी की सुविधा नहीं है, और अध्यापक नहीं आता, अगर आता भी है तो मुखिया का काम करता है तो मेरी मेहत पर क्या असर पड़ेगा? मुझे कोई नुकसान नहीं.



क्यों उपलब्ध कराऊं.

पर इसरी तरफ देखिए, वर्ग हितों की मांग है कि उच्च शिक्षा का विकास किया जाए, आईआईएम, आईआईटी, हार्ट इंस्टीटयंट, एस्कॉर्ट्स, बत्रा और दूसरे प्रतिष्ठान हों ताकि 70 साल की उम्र के लंपट करोडपित को 50,000 रु. प्रति दिन के खर्च पर भी जिंदा रखा जा सके. शिश मृत्यू दर बढ जाती है तो मुझे क्या फर्क पड़ता है? बच्चे तो गरीबों के ही मरते हैं, उन्हीं की बीवियां मजदूरी में खटती हैं. स्वास्थ्य हो या उच्च शिक्षा, यह याददाश्त की गलती नहीं है, यह नीतियों की नाकामी भी नहीं है, यह नंगा वर्ग हित है. यह विषमता ही अमीर और गरीब, मजबूत और कमजोर, नीची और ऊंची

स्तर तक सारे आर्थिक समीकरण बदल जाते हैं. हम मंडल के द्वारा सत्ता समीकरण को बदलने की कोशिश कर रहे हैं. शिक्षा तो बहत जरूरी है लेकिन अकेले शिक्षा से ही समाज को नहीं बदला जा सकता. मैं हजारों मिसालें दे सकता हं. किरानी या चपरासी के पद का विज्ञापन निकालिए और हजारों आवेदन आ पहुंचेगे. और आप देखें कि उनमें किनके बच्चों के ज्यादा आवेदन हैं, तो वे हमारे और आपके बच्चे नहीं होंगे, वे किसी आम आदमी, किसी कुली या खेतिहर मजदूर के

इसलिए मैं वहा संसंधिन by Arva Samai Foundation Chemai and Gangoti होंगे जो अपने जीवन की गाढी कमाई उनको शिक्षित करने में लगा देते हैं. बदले में वे कुछ नहीं पाते. उन्हें सिर्फ डाकिया, किरानी बना पाते हैं या अपना धंधा करते हैं. इसके अलावा कुछ नहीं. वहीं हम, मेरा मतलब ऊंची जाति वालों से है, अपने बेटे के लिए सब कुछ खरीद सकते हैं. और कुछ नहीं तो एक लाइसेंस ही और वह नाकारा इनसान लखपती बन जाता है.

मे यह

आंबेड

आया

जब २

फाड

अस्थि

रहा

मंडल

भी न

जाएग

मंडर्ल

के च

इस व

संख्या

थी. मे

ओर

आबा

आधी

तक रि

समाज

बिद्

आप

गलर्त

से 40

की सं

लागू

नतीज

जिनव

कोई

अनोर

की प्र

नहीं

का व

मेरी

रामम

आधुर्ग ही दे

fi

शे

गि

पडगांवकरः क्या आप मुझे इस सरलीकरण के बोझ से उबरने के लिए थोड़ा समय देंगे? मेरे कुछ सवाल हैं. पहले यह कि आयोग ने एक विशेषज्ञ समिति बनाई थी और रिपोर्ट के आंशिक अमल की घोषणा के बाद समिति का बहमत, शायद सभी सदस्यों ने लिखा कि रिपोर्ट में कुछ प्रणालीगत खामियां हैं. दूसरे, आपके पास एक शोध को नियोजित करने का एक दल भी था जिसके, गिल साहब, आप सदस्य थे और उन सात सदस्यों में से पांच ने रिपोर्ट के लिखने के ढंग पर गंभीर आपत्तियां उठाई हैं मतलब यह कि मंडल



जयपाल रेड़ी महासचिव जनता दल

> एस.के. गोयल अध्यक्ष, परामर्श अनुसंधान कमेटी, योजना आयोग



जातियों में बांटती है. मंडल ने इस दूरी को कम करने की कोशिश की. निचली जातियों को थोंडा- सा उठाकर ऊंची और नीची जातियों के समान धरातल पर लाने की कोणिण की. जब भी सामाजिक शल्य चिकित्सा होगी तो कुछ अस्थिरता तो आएगी. और इतिहास में सबसे ज्यादा सामाजिक अस्थिरता लाने वाले कौन थे? एक महात्मा बृद्ध थे और दूसरे महात्मा गांधी. जब गांधी ने हरिजनों के लिए काम शुरू किया तो लोगों ने कहा कि यह मूर्ख समाज को तबांह करके ही चैन लेगा. अंततः इतिहास में देखिए तो मूली पर लटकाए जाने वाले सभी शहीदों ने समाज को बांट दिया था. अब आर्थिक आधार यहां कैसे चलेगा? मंडल का आर्थिक आधार से कुछ लेना-देना नहीं. मंडल का गरीबी हटाने से कुछ लेना-देना नहीं. यह गरीबी हटाओ योजना नहीं है.

मार्क्स का कहना था कि जब पूंजीवादी परिवर्तन आता है तो पूजीवादी पहले सत्ता पर काबिज होते हैं. फिर उत्पादन के साधनों पर और फिर वे शीर्ष पर पहुंच जाते हैं. लेकिन जब सर्वहारा क्रांति होती है तो सर्वहारा सबसे पहले राजनैतिक

रेड़ीः समाज की असफलता में एक प्रतिमान दिखता है. नीतियों की प्राथ-मिकता को अपने फायदे के लिए मोडने में निहित स्वार्थी वर्ग ने काफी प्रभाव डाला है. गोयलः मैं इस षडयंत्र के सिद्धांतों को समझ नहीं पाता. व्यवस्था की समस्याओं की जांच का यह वैज्ञानिक तरीका नहीं है. रेड्डीः अभी तत्काल यह सवाल नहीं है कि दोष किसका है बल्कि यह देखने का है हमारी नीतियां कहां दोषपूर्ण हैं. गोयलः भविष्य पर नजर क्यों न रखी जाए?



ने प्रबंध और मुल्ला तथा महंत के बीच रचनात्मक फर्क को कम कर दिया है.

मुझसे कई बार पूछा जाता है कि मेरे संपादकीय विभाग में कितने हरिजन हैं तो जवाब यह है कि "देखिए, यह खुली व्यवस्था है. यह देखें कि अखबार में नौकरियों के लिए कितने हरिजन आवेदन करते हैं. और अगर वे आवेदन नहीं करते तो उन संस्थाओं को टटोलिए जहां पत्रकारिता की पढ़ाई होती है. आप पाएंगे कि उनमें भी वे अधिक नहीं हैं. अगर आप और आगे जाकर तलाशना चाहते हैं कि ऐसा क्यों है तो आप महसूस करेंगे कि उनकी अनुपस्थिति की वजह पूरी तरह, विषम शिक्षा व्यवस्था है जो उन्हें मौका नहीं देती."

मैंने तो यह सोचा था कि आप इस भाषणवाजी को संयमित करके ईमानदारी

में यह दिखाएंगे कि महात्मा बुद्ध से लेकर आप मान रहे हैं कि मध्यम वर्ग की नौकरियां हैं और किसके लिए हैं? कायदे आंबेडकर तक कैसा अनोखा बदलाव

गाढी

दिते

सिर्फ

पना

नहीं.

वालों

ररीद

इसेंस

वन

इस लिए

पहले

मिति

गमल

मत,

र्ट-में

ापके

का

आप

पांच

भीर

ंडल

बीच

मेरे

तो

वुली में

दन

रते

नहां

एंग

भाप

किं

कि

रह.

का

इस

ारी

गिल: मैं यह बताना चाह रहा था कि जब भी आप सामाजिक व्यवस्था में चीर-फाड करने की कोशिश करते हैं, थोडी अस्थिरता आती ही है. मैं यह नहीं कह रहा हूं कि मंडल बुद्ध हैं. असल में जब मंडल ने रिपोर्ट सौंपी तब उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि यह स्वीकार भी की जाएगी. आज सभी पार्टियों का इस कदर मंडलीकरण हो गया है कि वे उम्मीदवारों के चयन में भी इसका खयाल रख रहे हैं. इस बार पिछड़े वर्गों के उम्मीदवारों की संख्या इतनी है जितनी पहले कभी नहीं थी. मेरा मानना है कि यह सही दिशा की ओर कदम है क्योंकि देश की तीन चौथाई आबादी की देश के शासन में कम-से-कम आधी दखल तो होनी ही चाहिए. जहां तक विशेषज्ञों की असहमति का सवाल है, कहना चाहता हूं कि समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण दशमलव के छह बिंदुओं तक सही नहीं हो सकता. अगर

परिवर्तन में मूल भूमिका नहीं होनी चाहिए और फिर आप किस वर्ग को परिवर्तन का दारोमदार सौंपना चाहेंगे?

शेठः मेरे खयाल से मध्यम वर्ग ही

से तो आप नौकरी खोज रहे समूह में से 1 फीसदी के लिए ही आरक्षण दे रहे हैं.

और जहां तक आधुनिकीकरण का सवाल है, मेरे विचार से इसका अर्थ है

वीणा दास प्रोफसेर, समाजशास्त्र दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स

दासः हमें सकारात्मक कदम और आरक्षण को एक ही धरातल पर रखकर उसे एक ही बात मान लेने की आदत हो गई है. शेठ: मैंने जब इन दोनों अवधारणाओं का जिक किया तो उन्हें

तुलना भर करने लायक बता रहा था. दासः नहीं, उनमें किसी

तरह तुलना नहीं की जा सकतो.

धीर भाई सेठ वरिष्ठ अध्येता सेंटर फॉर स्टडी ऑफ डेवर्लापंग सोसाइटी

आप 4,000 मामलों में 5 से 10 फीसदी गलती की संभावना मंजूर करते हैं तो 200 भे 400 जातियों तक के गलत वर्गीकरण की संभावना है.

शेठः जहां भी आरक्षण ईमानदारी से लागू हुआ है, उसके सार्थक और प्रभावी नतीजे सामने आए हैं. और विशेषकर इसे उन वर्गों के लोगों को लाभ पहुंचा है, जिनके लिए मध्यम वर्ग में इतने वर्षों तक कोई जगह न थी.

मित्रः प्रोफेसर शेठ, आपने तो एक अनोखी बात कही है कि आध्निकीकरण की प्रक्रिया में मध्यम वर्ग की कोई भूमिका नहीं होती क्योंकि उस पर उच्च जातियों का वर्चस्व है. जहां तक इतिहास संबंधी मेरी जानकारी है, राममोहन राय से राममनोहर लोहिया तक के काल म आधुनिकीकरण की हर पहल मध्य वर्ग की ही देन है. आज किस बात से प्रेरित होकर परिवर्तन का सूत्रपात करेगा. पर मध्यम वर्ग का स्वरूप और उसकी संस्कृति पूरी तरह ऊंची जातियों तक ही सीमित है. एक नजरिए से तो मैं कहना चाहूंगा कि आज तक हमने जो व्यवस्था चलाई है, वह मोट्रे तौर पर भूल से चला पूंजीवाद है और धोले से भरा समाजवाद और इसके लिए काफी हद तक नौकरशाही की वह उच्च-वर्गीय संस्कृति जिम्मेदार है जिसने व्यापारियों को हमेशा ही छोटा और नींचा समझा है.

गोयलः मध्यम वर्ग क्या है और अभिजात किसे कहेंगे?

शेठः इसीलिए मैंने जानवूझकर 'अभिजात' शब्द नहीं कहा. मैंने 'मध्यम वर्ग को एक श्रेणी के रूप में देखा जिसमें पहचानें घूल-मिल जाया करती है.

गोयलः सबसे पहले तो यह सवाल अहम है. कि सरकार के पास कितनी



व्यवस्थित क्षेत्र में थोडी और गति. आध्निकीकरण के साथ ही सभी पूराने मूल्य टूटने लगते हैं. काफी समय तक तो बिड़ला समूह जूते और चमड़े से बने वस्त्रों का निर्माण शुरू करने से हिचकता रहा क्योंकि यह चमारों का काम समझा जाता रहा है. लेकिन अब अगर आंकड़ों को देखें तो यह वात चौंकाने वाली है कि खासकर दक्षिण भारत में ब्राह्मण समुदाय चमड़े के निर्यात का काम शुरू कर चुका है. अब कोई वर्जना ही नहीं. तर्क तो वैसे भी यही कहता है कि आधुनिकीकरण के साथ ही जातीय बंधन भी ढीले पड़ने लगते हैं.

मंडल आयोग की रिपोर्ट पर हुई अतिशय प्रतिक्रियाओं के कारण नीति से संबंधित सभी प्रमुख मुद्दे इस आम चुनाव में ताक पर रख दिए गए हैं. अब स्वास्थ्य, रोजगार, कृषक मज़दूर, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कर्ज आदि पर बहस नहीं हो रही. हमने अपनी प्राथमिकताओं को उलट-पूलट दिया है.

## सकट का

पडगांवकरः सत्ता की बागडोर अब धीरे-धीरे नौकरशाही के हाथ से निकलकर उद्यमियों की तरफ जा रही है.

आरक्षण का मसला धीरे-धीरे बेअसर हो जाएगा क्योंकि उसके स्थान पर समाज से ही उपजी कई नई समस्याएं उठ खडी होंगी. आज की तरह अगर सरकार वस्तुओं, धन-संपदा के आबंटन के केंद्र से हट जाए तो फिर सरकार में सचिव या

उप सचिव परिश्रिष्ट वेर मे Aस्विहित् maj Foundation Chennai and eGangoutiि घक महत्वपूर्ण हैं, उन्हें ही आज का आकर्षण भी घटेगा.

मेरे हिसाब से अब केवल तीन काम किए जाने हैं-सभी के लिए शिक्षा के अवसरों का विस्तार, उसके स्तर में सधार और सबों के लिए कम-से-कम एक हद तक स्वास्थ्य की जरूरतों की पूर्ति. लेकिन सबसे अधिक यह बात ध्यान देने की है कि आर्थिक विकास उस किस्म का हो जो कई तरह के सामाजिक तनावों को आत्मसात कर सके. मंडल आयोग का फुट डालने वाला असर इसलिए सामने आया क्योंकि देश के आदर्शवादी माहौल में परिवर्तन आ रहा है. साथ ही आर्थिक प्रतिद्वंद्विता का स्वरूप भी बदल रहा है और मौके भी कई तरह के उपलब्ध होने लगे हैं.

दासः हममें से कई लोगों के साथ समस्या यह है कि हम अनुस्चित जाति तथा जनजाति के लोगों के लिए आरक्षण की व्यवस्था करने के साथ ही दूसरी पिछडी जातियों को भी इसमें ऐसे शामिल कर लेते हैं मानो दोनों की समस्याएं और जरूरतें बिलकुल एक सी है जबकि ऐसा है नहीं. एक मामले पर तो समुचा राष्ट्र सहमत है परंत् दूसरे पर नहीं.

मित्रः कुल मिलाकर मंडल आयोग की रिपोर्ट एक अत्यंत खतरनाक दस्तावेज है जिसका पूरा अंदाजा अभी सबको नही मिल पाया है. यह रिपोर्ट ती शिक्षण संस्थाओं में भी आरक्षण इस हद तक लागू करने की बात करती है कि पिछड़ी जाति के छात्रों के लिए अलग छात्रावास बनाए जाएं. मुझे तो इस बात की भी आशंका है कि बहुत जल्द इस बात की मांग उठे कि निजी क्षेत्र में भी आरक्षण लागू कर दिया जाए क्योंकि इस तरह के लोक-लुभावन रास्ते पर एक बार चलना गुरू करने के बाद अंत कहीं नहीं आता. मैं पूरे जोर के साथ कहना चाहूंगा कि राष्ट्रीय कार्यक्रम की सूची में पहला काम मंडल आयोग की रिपोर्ट को निष्प्रभावी करना होना

शेठ: क्या इस बात पर सहमति है कि

अनुसूचित जाति तथा जनजाति से बाहर भी ऐसे समूह हैं जिन्हें विशेष स्विधाओं की आवश्यकता है?

दासः जी हां, लेकिन किस तरह की विशेष सुविधाएं? मुझे इस बात में पक्का यकीन है कि अगर सकारात्मक पहल की प्रक्रिया अपनाई जा रही हो तो स्पष्ट रूप से एक-एक वर्ग का मूल्यांकन करना होगा, न कि अन्य पिछडे वर्ग जैसे विशाल समुदाय का.

पडगांवकरः जैसे इस आरक्षण को प्रत्यायोजित किया जा रहा है...हां, खतरा तो है पर मूख्य रूप से इसलिए है, क्योंकि एक बार फिर मंडल ही दोषी है. कुछ तो इसलिए कि उसके पीछे मंशा कुछ और ही रही है, और कुछ इसलिए भी क्योंकि इसके सुझावों पर अमल की घोषणा का समय सरासर राजनैतिक अवसरवादिता का प्रतीक था. नतीजा यह है कि सभी एक-एक कर वही राग अलापने लगे है.

जो लोग राजनीति के अखाडे में

सबसे अधिक लाभ मिला करता है. चनावी गणित की प्रकृति से तो यही बात जाहिर होती है कि अब उस क्षेत्र में प्रभाव वढाना जरूरी हो गया है, जहां से राजनैतिक कार्यकर्ताओं की जमात आती है. और यही बात आर्थिक मुकामों पर भी लागू हो रही है. इनमें से 80 फीसदी गरीब और शोषित हो सकते हैं, पर सचाई तो यह भी है कि ढुंढ़े जाने पर अन्य पिछड़े वर्ग की श्रेणी में न आने वाले दूसरे कई समुदायों में भी ऐसे आंकड़े मिल सकते हैं. मैं चंदन की इस आशंका से सहमत हूं कि यह प्रवृत्ति दूसरे क्षेत्रों की ओर भी बढेगी. मुझे मूस्लिम नेताओं को मंडल के पचड़े में पडता देखकर अचरज होता है. मुझे इस वात का अंदाजा नहीं कि क्या उन्हें पता भी है कि कोई बात कभी उन पर गंभीर असर डालेगी.

सिंह: मैं समझता हं कि मुसलमान इसी खयाल में हैं कि अगर मंडल आज संभव हो जाता है तो आने वाले दिनों में वे भी आरक्षण की मांग कर सकेंगे. फिर तो हम

एस.के. सिंह विदेश सचिव

सिंहः मुसलमान सोचते हैं कि अगर मंडल लागू हुआ तो वे भी आरक्षण की मांग कर सकते हैं.

गिलः मुझे लगता है कि मुसलमान इससे ही अपना फायदा देखकर इसका समर्थन कर रहे हैं.

सिंहः मैंने और आपने अलग-अलग तरह के लोगों से बात की है. गिलः वर्गीय झुकाव अलग-अलग होता है.

एस.एस. गिल सचिव, मंडल आयोग मिटों-मॉर्ले और मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड

ओर वापस लौट रहे होंगे.

गिलः मूसलमान इसका समर्थन इसलिए कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें पता है कि इससे उनकी जमात को भी लाभ पहंचेगा.

सिंह: ऐसा लगता है कि हम और आप विलकुल ही अलग तरह के लोगों से मिलते रहे हैं...

गिलः जाहिर है. हर वर्ग के सोच भिन्न-भिन्न है.

शेठः चंदन, मैं समझता हं कि इन वोट वैकों की बाबत बहुत कुछ कहा जा चुका है. मानो वोट वैंक चुनाव के लिए बंधुआ मजदूरों के भंडार हैं. वोट बैंक जनादेण हासिल करने की प्रक्रिया के एक हिस्सा हैं. अगर मंडल आयोग वद है तो बैंकों का राष्ट्रीयकरण बदतर था.





The Premier Philosophy: Continuous refinement. Constant commitment.



The Premier Automobiles Ltd. PAL



Somes shown in the picture are not part of standard engineers

आज ता है. ते बात प्रभाव हां से आती पर भी गरीव

ाई तो पिछड़े रे कई

कते हैं. हूं कि बढ़ेगी. चड़े में ने इस हं पता गंभीर

न इसी संभव वे भी तो हम

की

मर्थन ता है लाभ

आप ों से

सोच

वॉट चुका धुआ दिश ा हैं. का

## पुरातन सदय. नया राशनी में











## फ़िलिप्स

## रोशनी का

#### चमत्कार



विक्टोरिया मेमोरियल, कलकता, प्रकाश व्यवस्थाः फिलिप्स इंडिया

पत्थरों में तराशी प्राचीन कलाकृतियाँ जीवंत हो उठें... नयी रोशनी में नहा कर. इतिहास की भावभीनी झांकी प्रस्तुत करनेवाला अभिनव प्रदर्शन. आवाज़ और रोशनी के माध्यम से. फिलिप्स रोशनी. स्थापत्य कला के भव्य सौंदर्य में प्राण फूंक देने की कला.

#### फ़िलिप्स कलात्मक फ़्लडलाइटिंगः और पुनर्जीवित हो उठता है अतीत.

किसी भी पुरावशेष या प्राचीन स्मारक में धड़कती है अतीत की आत्मा. प्राचीन इमारतों या प्रतिमाओं के मूर्त . सौंदर्य को आप सराहते हैं देख कर व छू कर.

लेकिन इस सुखद अनुभूति को सूरज की रोशनी का मोहताज बनाये रखना कहां तक उचित है? इसी समस्या के समाधान के लिए फ़िलिप्स ने जग-विख्यात उन्नत तकनीक अपनाकर ऐसी रचनात्मक प्रकाश व्यवस्था विकसित की है जिसमें नहां कर हर रात जीवंत हो उठते हैं प्राचीन रमारक. इस संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त दो विशिष्ट उपलब्धियाँ: लंदन का टावर बिज और पेरिस का आइफ़ेल टावर.

फिलिप्स इंडिया ने भी इस क्षेत्र में ख्याति अर्जित की है. जबलपुर के संगमरमरी पहाड़, जयपुर के हवामहल, बंगलुर के विधान सौधा तथा मैसूर स्थित वृन्दावन उद्यान के नाचते फव्वारे के लिए कलात्मक प्रकाश व्यवस्था प्रस्तुत करके.

इतना ही नहीं, केवल फ़िलिप्स ने ही संसार को दिया है 'सॉन-ए-ल्युमिये' का चमत्कार. तकनीकी जादूगरी का किरशमा जिसमें विभिन्न दिशाओं से आतीं तेज व मद्धम, सतरंगी प्रकाश किरणें इन्दधनुषी तानाबाना बुनती हैं. और इनका तालमेल रहता है दिलचस्प कथोपकथन एवं संगीत का नाटकीय संगम प्रस्तुत करनेवाले ध्वनिआलेख से. फिर तो देश-काल की सीमा लांघ कर आप पहुंच जाते हैं अतीत के आंगन में.

भारत में नयी दिल्ली के लाल किला, मदुरै महल, ग्वालियर किला और श्रीनगर के शालिमार बाग में 'सॉन-ए-ल्युमियं' प्रदर्शन दर्शकों का मन मोह लेता है—बार-बार. ये सभी फिलिप्स की रचनात्मक प्रकाश व्यवस्था के जगमगाते उदाहरण तो हैं ही, साथ ही ये कहते हैं फिलिप्स एल आइ डी इ सी (लिडेक) के तकनीकी कमाल की गौरवगाथा. लाइटिंग डिज़ाइन और इंजीनियरिंग सेंटर. अतीत को जीवंत करने के लिए सतत प्रयत्नशील.

कलात्मक फ़्लडलाइटिंग में अग्रणी. सारे संसार में.

मित्र: आरक्षण के आधार पर वोट बैंक

बनाने की कोशिश गलत नहीं है. लेकिन यह राजनैतिक नैतिकता का मामला है.

आपकी आशंकाएं अतिशयोक्तिपूर्ण हैं. लोकतंत्र में खुद को सुधारने की प्रक्रिया होती है.

मित्रः मैं लोकतंत्र में आपके यकीन का स्वागत करता हूं. मैं उत्तर प्रदेश के अपने दौरों से यही समझ पाया हूं कि जनता में मंडल का जादू नहीं चल रहा है. यह बहत हद तक संभव है कि विश्वनाथ प्रताप सिंह समाज का मंडलीकरण करने में सफल नहीं हो सके लेकिन बीज तो बो ही दिए गए हैं.

पडगांवकरः मंडल समाज की प्राणघातक बीमारी का लक्षण है या उसके पुनर्जीवन का? हममें ऐसे भी लोग हैं जिनको लगता है कि यह समाज की जानलेवा बीमारी है. मैं बार-बार सोचता हूं कि अनुसूचित जातियों-जनजातियों के आरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता लगभग पक्की है लेकिन उचित दिशा में बहुत कुछ नहीं हो पाया है. कुछ व्यक्ति या

कुछ समुदाय तो ऐसे हो सकते हैं जिन्हें इन आरक्षणों की सचमुच जरूरत है पर आप मोटे तौर पर गौर कीजिए, जैसा कि अभी तक होता आया है. और जहां तक संभव हो इस मुद्दे को राजनैतिक रूप से बचाइए.

सिंह: अगर मंडल आयोग की रिपोर्ट पर अमल हो जाता है तो अफसरशाही को नेता अपने इशारे पर नचाएंगे और खरीदने वाले उसे खरीद लेंगे. क्योंकि मर्यादा और व्यवहार की संहिता दबाव में विखर जाते हैं. मैं नहीं समझता कि अफसर दबाव और खरीदारों के आगे टिक पाने में कामयाब होंगे.

दास: मेरा कहना है कि आरक्षण से लोकतांत्रिक प्रणाली में भरोसा अंशत: टूटा है. कुछ साल पहले संसदीय बहस के मद्देनजर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने कहा था कि किसी संस्था में न्यूनतम योग्यता जैसी कोई बात नहीं चलती. जिसके पास उस पाठ्यक्रम से पहले की डिग्री होगी, उसे दाखिले का अधिकार है ही. मैंने कई बार देखा है कि कोई छात्र प्रवेश परीक्षा में शुन्य पाता है और अक्सर

इसकी वजह यह होगी कि उसके मन में यह उपेक्षा भाव होता है कि "मुझे परीक्षा पास करने की जरूरत ही नहीं." ऐसा छात्र मेरे सान्निध्य में ज्यादा कुछ नहीं सीख पाएगा. इसलिए मैं इस बात पर

जोर देती हं कि निश्चित रूप से समस्या यह नहीं है कि आप आरक्षण लागू करें पर संस्थाओं को उससे मुक्त रखें.

यदि आप अपना लक्ष्य तय कर लें कि पांच वर्षों में आप अनुसूचित जातियों और जनजातियों शोधार्थी के कितने उम्मीदवार तैयार करने में सक्षम हैं तब

चंदन मित्र संपादक, संडे ऑब्जर्वर



मित्रः क्या हमें उन जातियों को भी आरक्षण देना चाहिए जिनकी हालत आज 40 वर्ष बाद पहले से बेहतर हो गई है. रेड्डीः नेहरू कोई प्रतिक्रियावादी नहीं थे. भारतीय राज्य ने तब यह क्यों नहीं किया?



एस. जयपाल रेड़ी महासचिव, जनता दल



मेरे खयाल से आप उन्हें तैयार कर सकेंगे

गिल: जब आप ऐसे लोगों की भर्ती करते हैं, जो हर सुविधा से वंचित रहे हैं, और उनसे यह उम्मीद लगाते हैं कि उनका कामकाज स्विधा-संपन्नता में पले लोगों जैसा हो तो उनकी असफलता की वजह समझ आ सकती है. सो, समाज निर्माण की इस प्रक्रिया में वंचित लोगों की शैक्षिक योग्यता बढ़ा देना ही काफी नहीं माना जा सकता.

इसका दोष नौकरशाही अक्सर पर मढा जाता है और यह ठीक भी है. लेकिन दुर्भाग्य से गांवों-कस्वों में नौकरशाही को

वहत सम्मानजनक कैरियर समझा जाता है जब नौकरशाही में लोगों को भर्ती किया जाता है तो वे भी सत्ता के ढांचे का एक हिस्सा बन जाते हैं. जब हम राजनीति और वोट बैंक की बात करते हैं तो मेरा खयाल है कि उदार लोकतंत्र के एक पहलू के प्रति हमारा स्पष्ट नजरिया होना चाहिए. आप उन्हें वोट बैंक की संज्ञा दे सकते हैं. लेकिन हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था का यह अभिन्न हिस्सा है. लोक-लुभावन

नीतियां भी लोकतांत्रिक व्यवस्था का ही हिस्सा है. मंडल भी लोगों को बहलाए रखने का झुनझुना ही है, समस्याओं का समाधान नहीं है.

रेड़ी: आरक्षण की बदौलत ही हरिजन तब के मुकाबले ज्यादा संगठित हैं, जब आंबेडकर जीवित थे. ऐसा लगेगा कि आंबेडकर मृत्यू के बाद ज्यादा जीवंत और असरदार साबित हुए हैं क्योंकि जिन अनुसूचित जातियों को शिक्षा और रोजगार दोनों में आरक्षण मिला है, वे देश के राजनैतिक पटल पर एक महत्वपूर्ण

ताकत बनकर उभरे हैं. यदि विभिन्न राजनैतिक दल कांशीराम के साथ गठजोड को लालायित हैं तो इसलिए कि वे पिछड़े वर्गों के शिक्षित और नौकरी पेशा वर्ग का समर्थन जुटाने में सक्षम रहे हैं वे इस वर्ग का बहुत छोटा हिस्सा ही होंगे. लेकिन हर वर्ग की एक संभ्रांत वर्ग की जरूरत भी तो होती

वशास

विकाश कम

ता है—बढ

वा जाए तो व

भवशाली न

भावशाली ही

व तक की र

ए भी हम व

भा पॉलिसी

लेसी-धारक

विच प्राथमि

न्यादा दावे

मंडल रिपोर्ट जातिवाद पर हमला बोलने का सबसे बढ़िया तरीका है. जाति प्रथा हमें भले हैं

मुहानी न लगे लेकिन यह एक सर्वमान्य सचाई है. आंख मूंद लेने से आप इसकी उपेक्षा नहीं कर सकते. इस दैत्य को तभी नष्ट किया जा सकता है जब हम इसक अस्तित्व को कबूल कर लें.

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

# ओरिएण्टल

एक पहचान



## हमारा बहु-आयामी विकास

#### गहकों का निरन्तर बढ़ता विश्वास

सकेंगे.

रहे हैं, हैं कि में पले ता की समाज

लोगों काफी

र पर लेकिन ही को समझा लोगों वे भी गा वन और ो मेरा के एक जरिया ट वैंक हमारी

भावन का ही हलाए ों का

रिजन , जब । कि और जिन

और वे देश चपूर्ण यदि

ोराम

त हैं के कि

हैं वे Tही

एक

होती

पर

द्धिया

र ही

गन्य

सकी

तभी

सके

विकास कम्पनियों के लिए विकास का तात्पर्य ति है—बढ़ता हुआ कारोबार। इस मापदंड से का जाए तो हमारे विकास-वृद्धि की दर कम पवश्राली नहीं। 29.6 प्रतिशत कारोबार में वृद्धि विवशाली ही तो कही जाएगी न! और यह है हमारी विवक्त की सर्वाधिक वृद्धि दर।

है भी हम कहना चाहेंगे, हमारी आधारशिला तो भी पॉलिसी-धारक ही हैं। हमारी सेवा से संतुष्ट तेती-धारक जिनके दावों को मिलती है हमसे बेंच पाथमिकता। पिछले ही वर्ष हमने 3.5 लाख व्यादा दावे निपटाये, जिनकी कुल दायिता 400 करोड़ रुपए से अधिक थी। हमारे संतुष्ट पॉलिसी-धारक तो आप सब हैं ही, चाहे गृहस्वामी हो, या व्यापारी, अपना निजी व्यवसाय करने वाले हों, डाक्टर हों या इंजीनियर या कम्प्यूटर विशोषज्ञ, दुकानदार हों, किसान हों, मवेशीपालन व्यवसाय या किसी भी अन्य कारोबार से जुड़े हों। हमारे संतुष्ट पॉलिसी-धारकों की संख्या तो वर्ष-प्रतिवर्ष बढ़ ही रही है।

#### प्रिय प्राहकगण

आपके लिए कार्यरत हैं हमारे शिकायत निवारण, ग्राहक परामर्श और सुरक्षा व्यवस्था संबंधित हमारी विशेष सेवाएं। और आपकी सेवा में तत्पर है हमारा समस्त कर्मचारी वर्ग—18000 का विशाल समुदाय। और उपलब्ध है हमारी समस्त सेवाएं देश भर में हमारे करीब 1000 कार्यालयों द्वारा।

आप सहमत होंगे, हमारा विकास बहु-आयामी रहा है। और यह है हमारी सेवाओं के प्रति आप के निरन्तर बढ़ते विश्वास का प्रतीक।

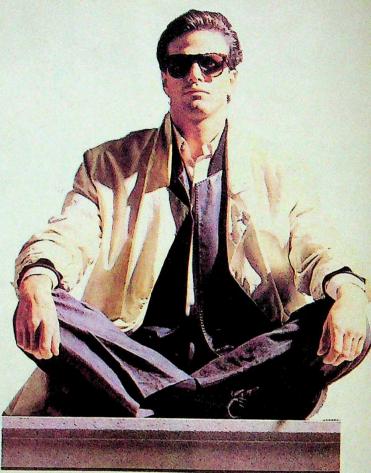


दि

#### ओरिएण्टल इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड

(अन्तरल इंश्योरेस कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया की सहायक कम्पनी)

प्राहकों से सौजन्य ओरिएण्टल की विशिष्ट परम्परा



WHAT THE MAN SHE'S
THINKING ABOUT
IS THINKING ABOUT

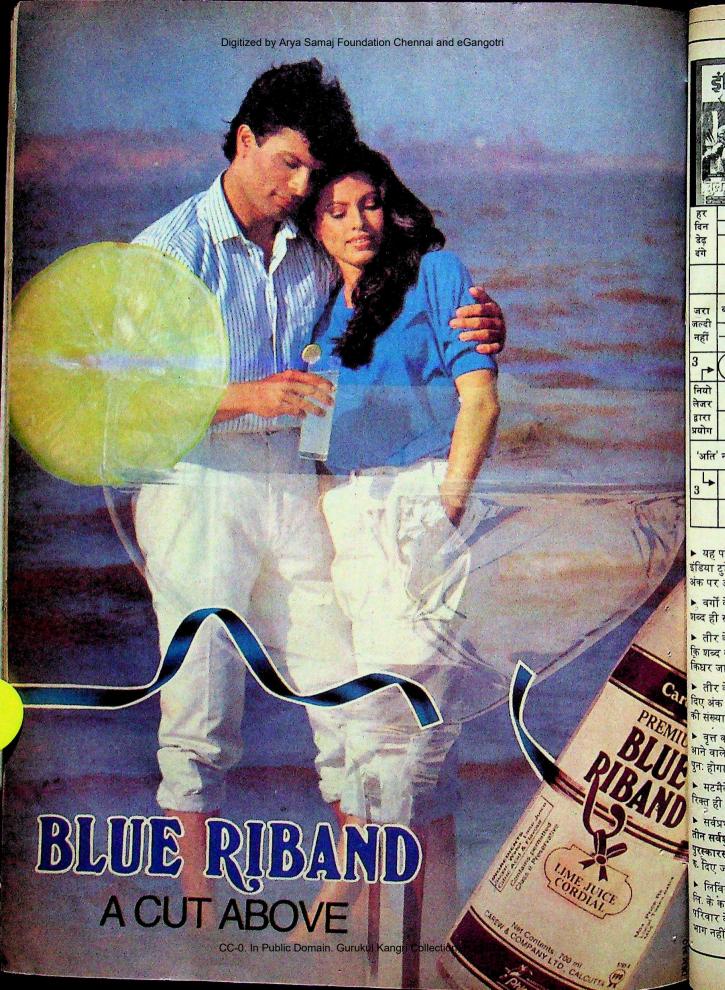
Pearls exclusives from



Chennai and eGangotri थमा अप. साथ रहा है, साथ रहेगा."

"मेरी ज़िन्दगी. रोज बदलती कहानी. बदलते रोल. बदलते साथी. लेकिन कुछ रिस्ते कभी नहीं बदलते.

Ambience/TU/112 Hin.



इंडिया ट्डे वर्ग पहेली-33

					and the same								
401	ंडिए	गाटु	5		भ्रष्ट को			<sup>5</sup> ┌►					
	A.			6 ←	बोल्ड	कमान के	<b>→</b> <sup>3</sup>	यादवों ने	दाहि	ने हाथ		हिंदू को	$\neg$ 6
N		為				अध्यक्ष		न बनाई	2			को ठेस	
					<sup>5</sup> →								
	शंह ग्र				राम क	ी बेटी		<b>5</b> →					
हर दिन	72	शक्ति की			कड़ी	परीक्षा	'जनत	ा देवी'	8 <b>₹</b>	संकोन	व नहीं		
डेढ़ दंगे		प्रतीक	<b>→</b> 8		8 <sup>L</sup>								
		<sup>7</sup> →		$\bigcirc$					$\bigcirc$	3	7		
जरा जल्दी	बजरंग	प्रमुख			6 ←	दिमाग	ा सोचे			इंदौर के	3 ←	'सुमैत्री	'की
जल्दा नहीं	<b>→</b> 3			<sup>5</sup> →	$\bigcirc$					के ' पास		रीटेक मी	
3	$\bigcirc$		$\bigcirc$	बड़े हिस्से में			4		$\bigcirc$		$\bigcirc$	सुद	<b>→</b> <sup>5</sup>
नियो लेजर				में पिता		रद्दी	काम ।			मान की			
द्वारा प्रयोग						शतक	<b>→</b> 3			ओर इशारा	<b>→</b> 3		
'अति	' नहीं					ठोंका		5			$\bigcirc$		
3				3	0			बल पर	नाचते	रहिए			
			राम त	याग हैं				जीने वाले	3 L				

नाम	
पता	
——— पिन	

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-33, इंडिया टुडे, एफ-14/15, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथिः 5 जून 1991 उत्तर के लिए देखें: 16-30 जून 1991 का अंक

- यह पहेली शब्दशः इंडिया टुडे के 15 मई 1991 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए गब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- ित्र के चिन्ह क पान दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गी
- की संख्या दशात ह.

  े वृत्त का अर्थ है कि उसमें अने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.

  े मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.

  - Է सर्वप्रथम पहुंचने वाले तीन सर्वशुद्ध हलों को रस्कारस्वरूप 500-500 ह. दिए जाएंगे.
  - े लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

	90.5			Tax				REM.					
The second	TE C		9-		बुजुर्ग तौरा		5 ₽	अफरात	न धन	दांतों के		मन में	78
		No.	3000	मंडल	गांव के		चि			बीच	73	बैठा डर	₹
			<b>*</b>	से मेंट	8	रा	<b>#</b>	कि	शो	₹.	पा	द	व
2			3	_ <b>↓</b> 5	ਸ	ज	न	ला	ਲ	राज्य	स्मी		ती
की अस्त्र	कसरत	A STANK		धन	<b>5</b>		भा	सबक लिया		है है	न		7
लोंगों भरो		<b>→</b> 6		है है	बि		407	केट	¬³	3	ने	ता	Ŧ
	9	इं	g	कु	(F)	τ	J	ज	च	ल		एक बार	'ण
लुधिय	ाना से	द्र	4	'स्टो	न	ब्बॉ	ਧ		जी		6 ₺	फिर चुनौती	सि
शोर बढ़	→ 3	जी	एक कि	वदंती	बो	6	স	ण	व	मु	क	र्जी	ह
गया है	नौ	त			Ħ ·	आयिक	सलाह				₹		
	शा	Ţ	जहां		दावा ठोक	<b>→</b> 5	6	नं	दि	नी	स	त्प	थी
	द	प्त	आठ मठ		विया	क	पांव उसार	4 √	एक	धूमकेतु	न	4 √	मंडल से
3	सासे	सफा	3 4	उ	डि	पि	देंगे	वी.	मास्ट की	₹	मा	पा	ताम
Ħ	राज में	4	भु	ज	а	ल	हम जी	पी.	तरह		ई	स	
नो	जीना हराम	अव	ता की			दे	सके	सि	44	आ	ड	वा	णी
ज	5	ला	लू	या	द	व	54	ह	₹	भ	ज	न	

## इंडिया टुडे वर्ग पहेली-31 का हल पुरस्कार विजेता

मुनीर अहमद अंसारी 239, जाहिदयान खत्ता रोड मेरठ-250002 (उ.प्र.)

अनुराग मिश्रा द्वारा-एस.के. मिश्रा 111/181, अन्नपूर्णी कुटी, हर्ष नगर कानपुर-208012 (उ.प्र.)

रामस्वरूप गुप्ता लेटेस्ट मैगजीन सेंटर गांधी अस्पताल रोड, जोधपुर-342001 (राज.)

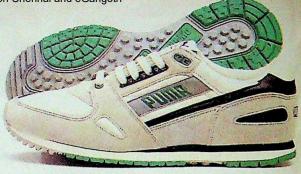
इन तीनों को 500-500 र. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

## SHOULD GIVE ANY OTHER SPORTS SHOE THE BOOT.

German technology. German design. The German obsession for detail. They're all in Puma shoes. Which is quite natural. Because every Puma shoe shows the result of \$ 500 million worth of cold, hard cash Puma, Germany have invested in research over the years. And that includes the range of 15 shoes that Puma Carona have introduced in India. Sports shoes worn by international champions. Lothar Matteaus. Linford Christie. Prakash Padukone. Sanjay Manjrekar. Mohammed Azharuddin. Vijay Amritraj, to name just a few. So make your next pair a Puma. And kick your heels in delight.



THE HIGH-PERFORMANCE



Dominator. Hi-tech running shoes.



Invader-Hi. Advanced basketball shoes.



Control. Designed for hard courts.



Super Cup. Professional tennis shoes.

B Registered Trade Mark of Puma AG, West Germany.
Registered Trade Mark of Carona Ltd., India.
Anufactured in technical collaboration with Pumack Grouph Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar
Jassler Sport, West Germany.

▲ Enterprise/CS/113

बैगी और उसी में सजे र मोर-जबर महौल में पर पिछ

का चुनाव और पर वे स शेयटा गतानुकूर्व बिस्तर गला गुस्

पश्चिम रि

मीता व

गटर अ

मरपूर भ

अब वे के धारा निम्चिता गरावाहि गीता की पुरिकल चकलिया नाजपा वे गर उतरने क्के तौर अब वे नीमनेत्री गामा म

मुख्आत है माता की मुद्दी तान माबा की मा उन्होंन

वं बोलूंगी मि देवी

<sup>ब्रल</sup>चिल

# चुनावी सितारे

यह देखा जा रहा है कि चुनाव-दर-चुनाव चुनाव में ग्लैमर का रंग बढ़ता ही जा रहा है, क्योंकि हर चुनाव में मशहूर हस्तियों की शिरकत बढ़ती जा रही है. इस बार के चुनावों की चमक बढ़ाने वाले कुछ सितारों की झलकियां 'इंडिया टुडे' पेश कर रहा है:

#### ब्बर के बोल

बैगी जींस, पावर टी-शर्ट और उसी के रंग के स्पोर्ट्स शू में सजे राज बब्बर बिहार के बोर-जबरदस्ती वाले चुनावी बाहौल में कुछ बेमेल भले लगें गर पिछले पखवाड़े उन्होंने पश्चिम बिहार में जनता दल का चुनाव प्रचार किया.

और जिस 'सद्भावना रथ'
पर वे सवार थे वह डीसीएम
ग्रेयटा से बना था. इस
गतानुकूलित गाड़ी में दो
बिस्तर लगे थे, चमक-दमक
गला गुसलखाना था, मिनरल
गटर और कोल्ड ड्रिक्स का
नरपूर भंडार भी था. ऐसा



राज बब्बरः गलैमर ही ग्लैमर

लगता है, राज बब्बर का जादू अभी कम नहीं हुआ है. वे कहते हैं, "आप हमें वोट देने का फैसला पहले ही कर चुके हैं तो मैं क्यों वोट देने को कहं?"

लोगों का फैसला तो विवाद का विषय हो सकता है पर कुछ राम भक्तों के प्रचंड शोर का जवाब देने में वे निश्चित रूप से प्रभावी साबित हुए हैं. बब्बर कहते हैं, "राम का नाम लक्स साबुन की तरह बेचा जा रहा है." आडवाणी की रथ यात्रा के बारे में इस अभिनेता का कहना है, "अगर राम को लोहे के रथ में सवारी करनी होती तो उनका दम घुट जाता." ये डायलाग फिल्मी ही लगते हैं.

#### मीता का अभियान

TROL

prise/CS/113

अब वे एक नए महाकाव्य के धारावाहिक में महत्वपूर्ण पूमिका निभाने में लगी हैं.और निश्चत रूप से यह दूरदर्शन के गरावाहिक 'रामायण' की पीता की भूमिका से अधिक ही पृष्किल है. वैसे, दीपिका नकलिया को गुजराती नहीं आती लेकिन वडोदरा में जाजपा के उम्मीदवार के तौर र उतरने पर उनका अभियान लके तौर पर नहीं चल रहा.

अब वे मतदाताओं में अपनी
भिनेत्रीं वाली छवि से ही
भामा मचा रही हैं. भाषण की
पुष्आत वे 'जय श्रीराम, भारत
भाता की जय' से करती हैं और
दिनेतानकर नारे लगाती हैं.
भाषा की समस्या से पार पाने

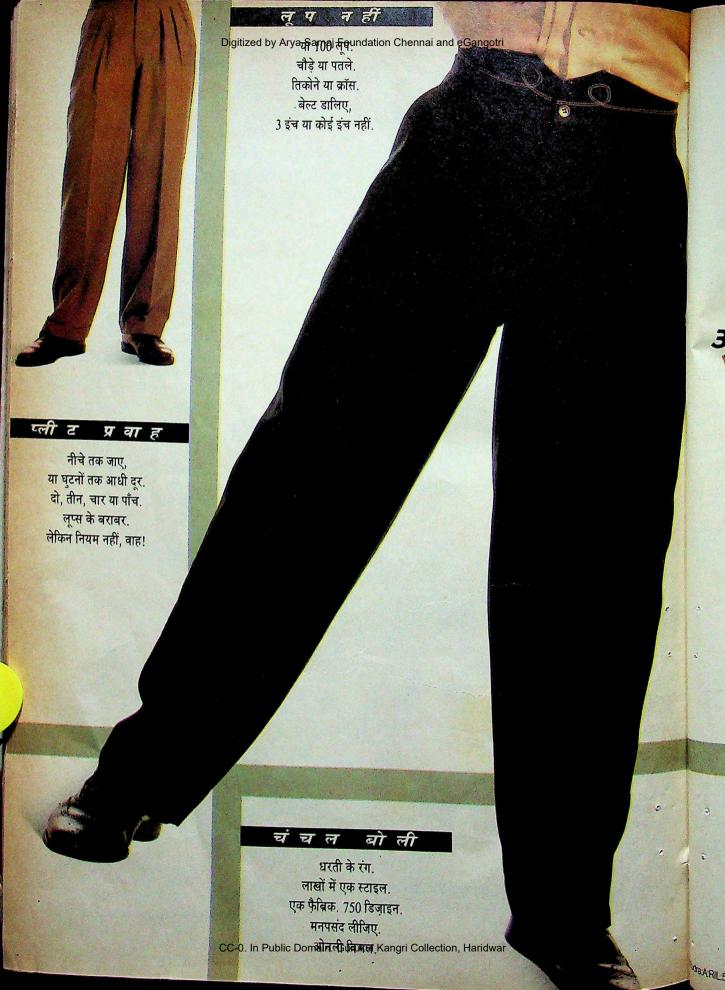
ो उन्होंने खूबसूरत तरीका ढूंढ़ निकाला है, ''मैं आपसे उसी भाषा वोलूंगी जिसमें आपने मुझे टीवी पर बोलते देखा है.'' टीवी की मि देवी के साक्षात दर्शन के लिए पडरा में 15,000 लोग विविताती धुप में घंटों खड़े थे.

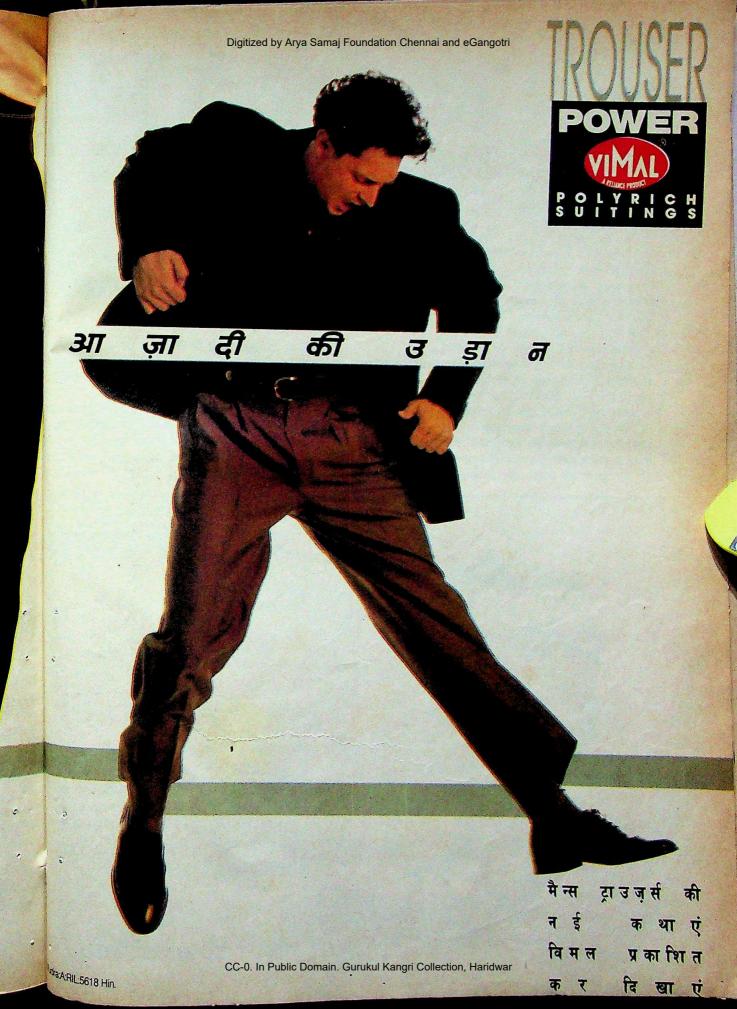


दीपिकाः परदे की छवि का लाभ

उम्मीद के अनुसार ही वे वडोदरा के पूर्व शासक परिवार के वंशज और इंका उम्मीदवार रणजीत सिंह गायकवाड़ की नींद हराम किए हुई हैं. चुनाव में राजा के मुकाबले राम, या कहें सीता जी का वजन ज्यादा लगता है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar



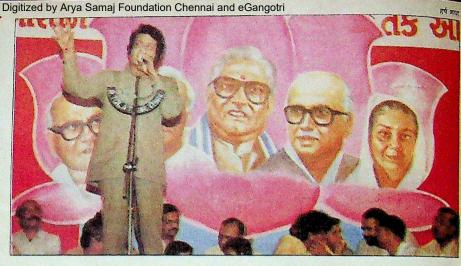


भारत कुमार की भक्ति

लगता है भारत कुमार यानी मनोज कुमार अब अपने ऊंचे आदशों से फिसल रहे हैं. अभिनेता मनोज कुमार की देशभक्त वाली छवि को उस समय काफी झटका लगा जब वे कथित तौर पर नशे में धृत होकर अहमदबाद में भारतीय जनता पार्टी की चुनाव सभा में गए. अंग्रेजी अखबार 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के मुखपृष्ठ पर यह चटपटी खबर छपने के बाद भारत कुमार ने अपने बचाव की बहुत कोशिशें की, लेकिन उनका तर्क बहुत कमजोर था. उन्होंने कहा, "यह मुझे भाजपा

के चुनाव अभियान से दूर करने की ही साजिश है."

लेकिन इसका यह मतलब नहीं लगाया जाना चाहिए कि इससे उनकी देशभिक्त के उत्साह पर ठंडा पानी पड़ गया है. वे अभी भी राष्ट्रीय हित या यों कहिए कि ईश्वर के कार्य में अपने को खपा रहे हैं. भाजपा का प्रचार करने के अपने फैसले के बारे में वे कहते हैं. "मैं प्रचार में इसलिए शामिल हुआ क्योंकि यह एकमात्र ऐसी अनुशासित पार्टी है जो देश की बुराइयों को दूर कर सकती है." लेकिन उनकी इस सफाई में भी दोहरापन झलकता है क्योंकि एक दौर वह भी था जब उन्होंने इंका के लिए समर्थन जुटाने के लिए



भाजपा की चुनाव सभा में मनोज कुमारः लड़खड़ाए

प्रचार किया था. लेकिन तब की अपनी इस कार्रवाई को उचित ठहराने के लिए वे एक व्यक्तिगत राज की बात बताते हैं और वह यह कि, "सिर्फ हरकिशन लाल भगत जैसे दोस्तों की मदद के लिए" ही उन्होंने ऐसा किया था.

भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में लिए अपने अभियान के बारे में वे बेहद संवेदनशील हैं. वे इसे "शानदार अनोखा और अभिभूत कर देने वाला अनुभवं बताते हैं. मगर यदि उन्होंने तेज निगाह वाले पत्रकारों को दूर न रखा तो यह अनुभव उनके लिए कष्टदायक भी साबित हो सकता है.

देसी स्त

उत्तर श्रेणी के जनता प टिकट दि ही अन्ना परेशानी 30 अ

एक में ही.

एक में अनेब्फ्रे

गोदरेज कोल्ड गोल्ड. मानो आपके पास हों कई रेफ्रिजरेटर.

अनोखी, संपूर्ण स्वचालित डिफ्रॉस्ट सूविधा बस, बटन दबाइए और फ्रीजर अपने आप डिफ्रॉस्ट हो जाता पानी बहकर अपने आप भाप बनकर उड भी जाता है. रंगों से मेल खाते भीतरी भाग

7 मनमोहक रंगों में उपलब्ध. साथ ही उनसे मेल खाती रंग-सज्जा भी. और साथ में पफ की शक्ति तो है ही.

इसके जैसा दूसरा रेफ्रिजरेटर है ही नहीं..

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangn Collection, Haridwals जाइन वैसी

जगह सममेव ज्यादा

तीन पूर

इज़ीस्ट सबसे ह एक अ

सुविधाः



ो उचित

और वह

मदद के

अभिभूत

निगाह

के लिए

फ्रेजरेटर.

हो जाता

त है.

वाती है ही.



अरुण शंकर शुक्ल उर्फ अन्नाः सैया भए कोतवाल

देसी स्टाइल

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने लखनऊ के 'ए' श्रेणी के हिस्ट्रीशीटर अरुण शंकर शुक्ल उर्फ अन्ना को समाजवादी ह बारे में जनता पार्टी की ओर से विधानसभा का चुनाव लड़ने के लिए टिकट दिलवाया. परंतु सार्वजनिक जीवन की देहरी पर पांव रखते ही अन्ना ने अपना ऐसा रंग दिखाया जो राज्य सरकार के लिए परेशानी का सबब बन गया.

30 अप्रैल को लखनऊ के खदरा इलाके की पुलिस चौकी के पास

एक सिपाही बैठा था. अचानक कहीं से एक पत्थर उसकी कुर्सी पर आ लगा. भन्नाए सिपाही ने आसपास दिखनेवाले छह लोगों को पकड़ लिया जिसमें एक सब्जी बेचने वाला भी था. उसकी पिटाई से सब्जीवाले की बांह की हड्डी टूट गई.

खदरा इलाका लखनऊ पश्चिम विधानसभा क्षेत्र में आता है. जहां से अन्ना चुनाव लड़ रहे हैं. फौरन वे दल-बल के साथ घटनास्थल पर पहुंच गए, 'दरोगा' की गरदन पकड़ी और उनके कार्यकर्ताओं ने पुलिस चौकी को तहस-नहस कर दिया. खुद अन्ना ने चौकी में रखे रिकार्ड को फाड़ डाला

और उनके आदिमयों ने चौकी में आग लगा दी.

इतने में जिले के वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंचे और अन्ना महाराज से हाथ जोड़कर गुस्सा थूक देने की विनती की.

मुख्यमंत्री मुलायम सिंह के चहेते अपराधी होने के नाते अन्ना को न केवल छोड़ ही दिया गया बल्कि अधिकारियों ने घटना से संबंधित पुलिसवाले को मुअत्तल भी कर दिया. एक राहगीर की टिप्पणी थी, "चुनाव को सही दिशा देने के लिए मुख्यमंत्री के लोगों को पुलिस चौकी को भस्म करने दिया गया." 'सही दिशा' का अर्थ उस राहगीर ने साफ नहीं किया पर क्या यह जाहिर नहीं है.

## नेबफ़्रेजरेटर

जगह बनाने वाले .स्पमेकर शेल्फ

ज्यादा चौडे व गहरे शेल्फ़ तीन पूरे और एक आधा.

इज़ीस्टोर सब्जी ट्रे सबसे बड़ी सब्ज़ी ट्रे. साथ ही एक अनोखी सेपरेटर ट्रे भी.

सुविधाजनक ओवरफ़्लो ट्रे



जुड़वाँ मक्खनदानी मक्खन व चीज रिखए. या एक खाना हटाकर बड़ी चीज़ों के लिए जगह बनाइए,

अंडों के लिए जुड़वाँ रैक, जिसे हटा भी सकते हैं 14 अंडे रखिए, चाहें तो इसे हटाकर दूसरी छोटी चीज़ें रख

पसंद आपकी – चाहे बायीं तरफ खुलनेवाला दरवाजा लें या दायीं तरफ़ खुलनेवाला

ज्यादा बडी बोतलों के लिए रैक 10 बड़ी बोतलें रखिए या 14 कोल्ड ड्रिंक की बोतलें.





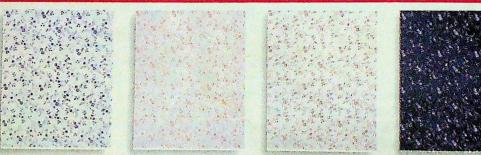
काजरिया पेश करते हैं, 8x10 वॉल टाइल्स की बेजोड़ श्रखला

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

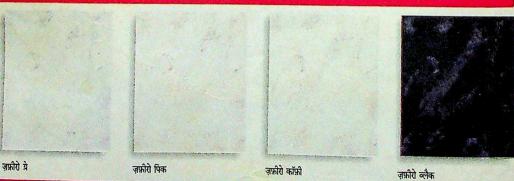




मेजोर्का सीरी



मेजोर्का प्रे मेजोर्का पिक मेजोर्का कॉफी जुफ़ीरो सीरीज



मेजोर्का ब्लैक

ज़फ़ीरो प्रीमियम सीरीज

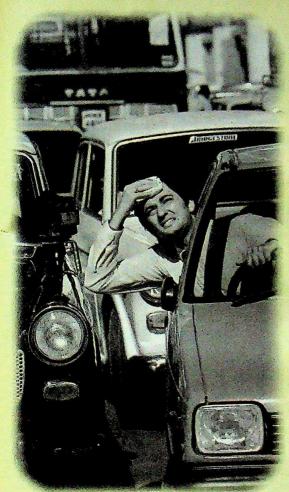


**700AGRES** स्पेन के सहयोग से

\* रंगों और डिज़ायन की व्यापक रेंज \* 24 घंटे में तैयार \* मजबूत और टिकाऊ \* रख-रखाव पर कोई खर्च नहीं \* सफाई में आसान \* खर्चा भी कम

कॉपोर ऑफिस: सी-7, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-110065. फोन: 6837833 (683643क) (683643क) प्रैनसार्थ के किस : 031-61053 KAST IN किस मोदी स्ट्रीट, दूसरी पिलिस, किसी के किस : 04, फोर, वास्तु-400023. फोन: 277119. फैक्स: 022-274428. टैलेक्स: 011-82577 KAST IN 2/6 शरत बोस रोड, सेंट्रल प्लाजा, कमरा नं. 203, कलकत्ता-700 020. फोन: 754820, 748012. टैलेक्स: 021-4842 KAST IN

## बुक्र है, घर में उटाल सावन रहता है!



AST IN



## 900%सम्पूर्ण स्नान

- मैल और छिपे कीटाणुओं को दूर करने के लिये



जब स्वाधारमार्ग्यामार्गान्तान्ते ।

इस पेज पर से एक सेलोटेप की पट्टी निकालने की कल्पना कीजिए... और महसूस कीजिए कि शिएट रेडियल्स की सड़क पर कैसी ज़बर्दस्त पकड़ है.

परिण

भरोसेम

में बने प्ल

उसे चोत गते हैं.

परिण

इन्हीं आए अ जी ह

के अपना सिएत । आनन्द



सिएट फ़ार्मूला-। रेडियल्स एक अलग ही दर्ज़े का टायर है. न अलग. बनावट अलग.

खास टेक्स्टाइल बेल्ट ट्रेड को और मज़बूत है. साथ ही ट्रेड का संपर्क सड़क से बराबर पाना खता है.

परिणाम : बेहतर पकड़ के साथ-साथ बेहतरीन , भरोसेमंद ब्रेकिंग और सुनियंत्रित स्टीयरिंग.

टायर की परिघि के साथ खड़ी या रेडियल में बुने प्लाई-कॉर्ड जहां टायर का लचीलापन बढ़ाते उसे चोट-धक्के बर्दाश्त करने में ज़्यादा सक्षम तते हैं.

परिणाम : आरामदेह सफ़र.

इन्हीं ख़ासियतों के कारण टायर ज़्यादा दिन चले, पेट्रोल ख़र्च ी आए और पंचर होने की नौबत भी कम आए.

जी हां. और इन सबसे बढ़कर है कार पर बेहतर नियंत्रण.

यही तो है जापान की याकोहामा रबर कम्पनी की विकसित क अपनाने का फ़ायदा.

ं सिएट <mark>फ़ार्मूला-। रेडियल्स. शानदार ड्राइविंग का</mark> । आनन्द.

### कार्मुला रेडियल्स

कार पर बेहतर नियंत्रण





इटावा में तहसीलदार सिंहः अब त्रिशुलधारी

#### राइफल को जगह त्रिशूल

तहसीलदार सिंह ने अपनी राइफल फेंककर एक ऐसा हिथियार धारण कर लिया है जो मौजूदा चुनावी लड़ाई में काफी कारगर साबित हो सकता है. और वह हिथियार है त्रिशूल. किवदंती बन चुका चंबल का यह दुर्दात डाकू, जिसे माफी मिलने के पहले 525 वर्ष के कारावास की सजा मिली थी, इटावा के जसवंतनगर से भाजपा उम्मीदवार है. सो, वे जरूरत पड़ने पर अपने पुराने साथियों की मदद ले सकते हैं. उधर उनके चुनावी दुश्मन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने यहां तक कह डाला था कि उन्हें अपने निर्वाचन क्षेत्र में जाने की जरूरत नहीं है. लेकिन अब वे इटावा में हर रोज हाजिर रहने की कोशिश कर रहे हैं.

इस बीच, तहसीलदार सिंह दोनों निलयों से यादव पर गोली दाग रहे हैं. अयोध्या में रामभक्तों के साथ जो कुछ हुआ उसके लिए वे यादव को असुर बता रहे हैं. "अब मैं राम की राह पर चल रहा हं. अब मैं रावण को परास्त कर सकता हं."

सिनेमाई आंख के साथ



चमक-दमक से चुनाव अभियान की रौनक बढ़ उमा जाती है. 'नई दिल्ली टाइम्स' से प्रसिद्धि पाने वाले

फिल्म निर्माता रोमेश शर्मा ने अपनी सिनेमाई आंख को इंका नेता उमा गजपित राजू की तरफ घुमा लिया है. वे विशाखापत्तनम से दूसरी बार चुनाव लड़ रहीं उमा के लिए बड़ी सिक्रयता से अभियान चला रहे हैं.

उन्होंने अपने अभियान के लिए 15 मिनट की एक वीडियो फिल्म भी बनाई है जिसमें उमा, राजीव और इंदिरा गांधी पर आकर्षक गाने हैं. शर्मा हर मतदान केंद्र की मतदान प्रवृत्ति के आंकड़ों का अध्ययन भी करते हैं और उमा के दौरे के कार्यक्रम भी तय करते हैं. लेकिन इसमें संदेह ही है कि उनके इन प्रयासों से मतदाता उमा की तरफ झक जाएगा.

#### रावण के मुंह में राम नाम

कलयुग में रावण ने राम को ही सहारा बना लिया है धारावाहिक रामायण में रावण की भूमिका निभाने वाले अरिवद त्रिवेदी साबरकांठा से भाजपा के उम्मीदवार हैं. वे मतदाताओं से कह कर रहे हैं, "राम के विरोध का क्या नतीजा होता है, यह मुझसे बेहतर और कौन जानेगा?" उनके प्रतिद्वंद्वी जनता दल के उम्मीदवार राजमोहन गांधी ने भाजपा द्वारा त्रिवेदी को फांसे जाने पर कहा, "जिस तरह रावण ने सीता का अपहण किया था, उसी तरह भाजपा ने राम का अपहरण कर लिया है."

अर्रावंद त्रिवेदी: राम का साथ



#### बाहुबल के सहारे

जरद सम्बना

राजनैतिक अलाड़े में दूसरे दिग्गज भी कूद पड़े हैं. बाहुबल व धनी मनोहर आइच को, जो मिस्टर युनिवर्स के नाम से जाने जां हैं, माजपा ने दमदम संसदीय सीट से अपना उम्मीदवार बनाया है 78 वर्षीय आइच प्रसिद्ध बॉडी बिल्डर हैं और असंख्य अंतरराष्ट्री। पुरस्कार जीत चुके हैं. वे भीड़ देखते ही अपना करतब दिखां लगते हैं. इस पर एक जिज्ञामु दर्शक की टिप्पणी थी, "आइन संभवतः हर किसी को यह बताना चाहते हैं कि राजनीति का बुवि से कोई लेना-देना नहीं है."

समर्थकों के साथ आइच



-CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मर्दों के लिए ओल्ड स्पाइस बॉडी टॉल्क. जो भी आए पास, उसे जादू का एहसास.



CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

्वेटॅल्क.तीन कि<del>टंगों</del> में उपलब्ध-<mark>औरिजनल</mark> लाङ्म <del>मरक</del>

तब दिखाः थी, "आइन ति का बुदि

लिया है ाले अर्रावद तदाताओं ह ोता है, यह नता दल ो फांसे जारे गा था, उसी

ीडि स्पाइस किमी की मस्तानी महक

### त्याजक ८५

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and eGangotri की नई पेशकश



सी 91016 महाराजापूरम संधानम (गायन) संकरी समकुरु; राम नीनू नामिन्ना; हिमगिरि तनैये/पदसनति मनिजना : एहि अन्नपूर्णे ; शनम्खम भजः



ए 91008 हरिप्रसाद चौरसिया (बांसरी) राग ललित/राग भूपाली



**및 91009** राम नारायण (सारंगी) राग मारवा/मिश्र देस और मिश्र भैरवी



सी 91017 टी एन कृष्णन (वायलिन) महा गणपतिम; मारि वेरे; रघुवमसा सुघा/ सारसाक्षा; पारुलन्ना माता; रमणै तरुवय



सी 91015 एम बालमुरली कृष्ण (गायन) नीदैया रादा: वेगमय बहदीस्वरा : ओंकारा : तिल्लाना



# VIAESTRO

हिन्दुस्तानी

बिस्मिल्लाह खान

राग रागेश्वरी/राग शिर्वि शंव

नी कान्हर



ए 91005 गंगुबाई हंगल (गायन) राग बिहाग/राग बागेश्री

पहली बार.... भारतीय संगीत के चोटी के उस्तादों के स्वर में हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत के खज़ाने में से उन्हीं की खिच के रागों का बेहतरीन गुलदस्ता. हर संगीतकार की अपनी पहचान की महक वाले इन रागों और कृतियों का चुनाव उन्होंने स्वयं किया है. यही कारण है कि डिजिटल पद्धति से आपके लिए खास तौर से रिकार्ड किए गए ये कैसेट आपको अनूठी संगीत लहरियों में झुला कर मस्त कर देंगे.

उस्तादों की पसंद - आपके लिए संगीत का ऐसा खजाना जो भारतीय संगीत विरासत के मौजूदा प्रतिनिधियों की महारत का आइना है. चुनींदा दुकानों में उपलब्ध 17 कैसेटों का अनूठा सेट डाक या कूरियर सेवा के रास्ते आपके घर के दरवाज़े पर उपलब्ध.



CC-0. In Public Persain G angri Collection, Haridwar दुड पस्तात



क्खा ।

मत ताल

सी 91014 े पेजें : वी दुरैस्वामी आयंगर विश्लिका उ वी दुरैस्वामा आयगरा अवन व वैकटासैल विहार ; वितेया मकं अपना प्पाराता ।परार । घन रागमलिका तानमः तिल्लाकृतिक दुः



लाह खान ए 91003 गेश्वरी/राग शिर्वि शंकर (सितार) राग आसा भैरव नी कान्हरा और मिश्र गारा धुन



叹 91004 भीमसेन जोशी (गायन) राग रामकली/राग शुद्ध कल्याण



ए 91002 मल्लिकार्जुन मंसूर (गायंन) राग शुक्ल बिलावल/राग रईसा कान्हरा और राग आडंबरी केदार



ए 91006 किशोरी अमोनकर (गायन) राग अहीर भैरव/राग संपूर्ण मालकौस



ए 91007 पंडित जसराज (गायन) राग बैरागी भैरव/राग दरबारी कान्हरा



ए 91010 शिव कुमार शर्मा (संतूर) राग भूपाल तोड़ी/राग कीरवाणी

## HOICE

संगीत



ए 91013 क्खा और जाकिर हुसैन (तबला) मत ताल/जय ताल और पश्तो



ए 91012 अस



ए 91011 जहीरुद्दीन और वसीफुद्दीन डागर (धुपद) राग ललित/राग कामबोझी

भेट 48 रु. (कर सहित). 1 से 4 कैसेट के आईर पर पैकिंग और शुल्क के रूप में 10 ह. अतिरिक्त. 5 या अधिक कैसेट के आईर का और वितरण शुल्क नहीं लगेगा.

षा ध्यान दें

तों से बाहर के वैकों पर 10 रु. अधिक जोहें. सि कलकता, मदास और दिल्ली से मेजे गए वैक/इाफ्ट का एम र्ष सी आर होना जरुरी है

विज पूरी कीमत मिलने पर ही रजिस्टर्ड डाक या कूरियर से कैसेट मेजे जाएंगे. निया आहर के बाद डिलीवरी के लिए कम से कम 3-4 सप्ताह तक

म्बार भेजने के लिए संलग्न आईर-फार्म का प्रयोग करें.

भाग का लिए सलग्न आहर-फार्म का प्रयोग करे. केने चैक/हाफ्ट और अन्य पुगतान 'म्यूज़िक टुडे' के नाम पर इस पते के पेजें : — म्यूज़िक टुडे, यो बा. 29, नई दिल्ली- 110001. मि आयार विकास और कीमतें केवल पारत में लागू होंगी. के पा हुआ आईर फार्म आप तक न पहुँचे तो कृपया सादे कागज़ हार ; वित्या मक्त अपना नाम, पता लिखकर अपने मुगतान के साथ इस पते पर भेजें :— का तानम ; तिल्ला के देहे, यो बा. 29, नई दिल्ली- 110001

CC-0. In Pub

चुनींदा दुकानों मे भी उपलब्ध

ī	अली ख़ान	(रुद्र वीणा)
1	आसावरी/राग	मालकौस

		4/4 0119/ 4/14
कोड सं.	कैसेटों की संख्या	हाँ, मैं 'म्यूज़िक टुडे' के कैसेट 48 ह. प्रति कैसेट की दर से खरीदना चाहता/चाहती हूँ. (कृपया 1 से 4 कैसेट तक के आर्डर पर पैकिंग और वितरण शुल्क के लिए
ए 91001		
ए 91002		10 रु. अतिरिक्त भेजें). मुझे ये कैसेट
ए 91003		अपने लिए 🛘 अपहार देने के लिए 🗖
ए 91004		चाहिए, विवरण नीचे है.
ए 91005		इसके लिए 'म्यूजिक टुडे' के नाम पर रु का कास किया हुआ चेक/
ए 91006		हिमांड ड्राफ्ट संलग्न है (दिल्ली से बाहर वाले चैक पर 10 रु. अतिरिक्त जोड़ें)
ए 91007		18418 हैं। यद सतान है (विस्ता से बाहर बार बन में 10 के कार्यान्य मार्के)
ए 91008		कुल देय राशि रु.
ਧ 91009		भेरा नाम
ਧ 91010	* The state of the	4(( -1)-1
ए 91011		पता
U 91012		पिन फोन
ए 91013	4	
सी 91014		उपहार पाने वाले का नाम
सी 9.1015		पता
	Gurukul Kangri	Collection, Haridwar

#### गांधी के अवतार

मंडल और मस्जिद की भीषण लफ्फाजी के बीच हर कोई महात्मा गांधी और उनके आदर्शों को भल गया लगता है. लेकिन नई दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र से भारतीय अवसरवादी दल के उम्मीदवार मदनलाल नहीं भूले हैं. वे मतदाताओं को न सिर्फ महात्मा गांधी के आदर्शों की याद दिलाते हैं, बल्कि उन्होंने ऊपर से नीचे तक महात्मा की वेश-भूषा भी धारण कर ली है. इसका खासा प्रभाव भी पड़ रहा है.

बाप की सर्वांगीण भूमिका निभाते हुए मदनलाल राम



मतदाताओं के सामने मदनलाल 'गांधी'

और लक्ष्मण का रूप ह किए हए अपने दो समर्थक बीच चलते हैं. वे अपने एम.एल. महात्मा गांधी जाने पर भी जोर देते "मैं महात्मा कहते हैं, अवतार हं. भूरे साहबों से को मक्त कराने के महात्मा का पूनर्जन्म हुआ इसके पहले मदनलाल दो चुनाव लड़ चुके हैं और बार उनकी जमानत जब्द गई. और इस बार अभि राजेश खन्ना और लाल आडवाणी के चनाव मैदा होने से मदन लाल अधि अधिक बेन किंग्सले का चौपट कर सकते हैं.

#### हरफनमौला के जौहर

कपिल देव भी 1991 के चनाव अभियान में अपना जौहर दिखाएंगे. लेकिन वे सिर्फ 'टाइगर' पटौदी के लिए अभियान चलाएंगे जो भोपाल से इंका के टिकट पर चनाव लड रहे हैं. कपिल ने सफाई दी, "मैं पटौदी के लिए इसलिए अभियान चलाऊंगा क्योंकि वे मेरे बहुत प्रिय मित्र हैं." उन्होंने इस बात से इनकार किया कि वे युवक कांग्रेस (इ) के सदस्य हैं. उन्होंने आगे कहा, "यदि मुझे समय मिला तो मैं चेतन चौहान के लिए भी समर्थन जुटाऊंगा." बहुत खुब कपिल. आप सही मायने में हरफनमौला हैं.



कपिलः दोस्ती की खातिर



निम्मी बाई: कोठे से बाहर

#### चकले से चुनाव मैदान तक

नई दिल्ली के 'रेड लाइट' इलाके जी.बी. रोड पर इन उनके कोठे पर आने वालों की कमी नहीं है. लेकिन इन ज्यादातर लोग चकला मालकिन 50 वर्षीया निम्मी बाई है जानने आते हैं कि उनका अभियान कैसा चल रहा है. ज्यांदातर पत्रकार और जिज्ञास कार्यकर्ता होते हैं. निम्मी चांदनी चौक लोकसभा सीट से निर्दलीय उम्मीदवार हैं. लोक का चुनाव लड़ने वाली वे देश की पहली वेश्या हैं.

लेकिन निम्मी बाई राजनीति की दुनिया में नई नहीं हैं. र में वेश्याओं के बच्चों के दाखिले के लिए चले आंदोलन में 🖓 सक्रिय भूमिका निभाई थी. हालांकि उन्हें इलाके की वेश्याओं का पक्का समर्थन मिलने का भरोसा है, लेकिन मु यह है कि उनमें से केवल 70 के ही नाम मतदाता सूची में द इम्रिलिए वे चाहती हैं कि अधिक से अधिक मतदाता, खा ाइलाके के दुकानदार, उनकी मदद को आगे आएं. एक मस - विल्लामी की: "यह एकमात्र ऐसी उम्मीदवार है जिनके दरवा कई मतदाताओं की भीड़ लगी होती है."

न रूप ध दो समर्थक वे अपने रा गांधी गेर देते हैं महात्मा साहबों से ाने के र्जन्म हुआ नलाल दो हैं और ानत जब्द बार अभि गौर लाल नाव मैदा ाल अधि सले का हैं.

पर इन किन इन ती बाई है रहा है. निम्मी र हैं. लोक

नहीं हैं. र लिन में उ लिकिन मु सूची में द दाता, खा एक मसर् के दरवा



Digitized by Arya Samaj Foundation Chennal and a Samou